सो रूपिया

पहेली आवृत्ति, प्रत ५,०००, जुलाई, १९६२
प्रथम पुनर्मुद्रण, प्रत ५,०००, नवम्बर, १९९२

मुद्रक
जितेन्द्र ठा. देसाई
नवजीवन मुद्रणालय, अमदावाद-३८० ०१४

प्रकाशक
विनोद रेवाशकर त्रिपाठी
मत्री, गूजरात विद्यापीठ मडळ
गूजरात विद्यापीठ, अमदावाद-३८० ०१४

अनुक्रमणिका

प्रकाशकनुं निवेदन

विनीत कक्षाना विद्यार्थीओने संस्कृत भाषाना अभ्यासमां मददरूप थाय एवो संस्कृत-गुजराती शब्दकोष तैयार करवानु गूजरात विद्यापीठे ठरावेलु आपणा समृद्ध प्राचीन साहित्य साथे ऊगती पेढीनो संबध साव न कपाई जाय ते माटे सस्कृत भाषानो अभ्यास खूब जरूरी छे. ते अभ्यास करवा माटे विद्यार्थीओ अने सामान्य प्रजा-जनोने उपयोगी एवा आधारभूत संस्कृत-गुजराती शब्दकोशनी घणी आवश्यकता हती ते आवश्यकता आ प्रकाशनथी पूरी थशे एवी आशा राखु छु

आ काम घणी जहेमत उठावीने करी आपवा माटे श्री गोपाळदास पटेलनो आभार मानु छु कोश विभागना कार्यकरो अने अन्य सहु कोई जेमणे आ कार्यमां मदद करी छे, ते सहुनो आ तके आभार मानु छुं

आ ग्रंथना प्रकाशन-खर्च पेटे भारत सरकारना वैज्ञानिक-संशोधन अने सास्कृतिक बाबतोना खाता तरफथी आर्थिक मदद मळी छे तेनो उल्लेख करता आनद थाय छे

ता. ६-७-’६२

संपादकनुं निवेदन

संस्कृत भाषा अने संस्कृति

भारतने पोतानु अस्तित्व जाळवी राखवु हशे, अने साची प्रगति साधवी हशे, तो सस्कृत भाषानु आराधन चालु राख्या विना तेने चालवानु नथी. कारण के तेनी सस्कृति ते भापाना ताणावाणामा वणायेली छे अने प्रजाकीय अस्मिता जोखममा नाख्या सिवाय, पहेरवाना कपडानी जोडनी जेम, सस्कृतिने बदली के फगावी दई शकाती नथी

तेथी ज ज्यारे ज्यारे भारतना राष्ट्रीय उत्थान माटेनी कोई पण हिलचाल शरू थई छे, त्यारे सस्कृत भाषा अने भारतीय सस्कृति तरफ ते चळवळोना नेताओनी दृष्टि सहेजे गई छे

भाषा ए आखरे तो अव्यक्त एवा मानव आत्माना आविर्भावनु एक व्यक्त साधन छे, एटले गीताकारे चेतवणी आपी छे ते अही पण लागु पडे छे — 'अव्यक्त व्यक्तिमापन्न मन्यन्ते माम् अबुद्धय'। व्यक्त एवा भापा-साधनने आत्मा जेवु के जेटलु महत्त्व आपी देवानी भूल न करीए परतु आत्मा पण स्थूल शरीर विना आविर्भाव न पामी शके, एटले भापारूपी स्थूल साधननु महत्त्व ओछु तो न ज आकी शकाय अलबत्त, ए भापानो उत्तरोत्तर विकास – परिवर्तन थई जे नवी नवी लौकिक – प्राकृत भाषाओ रूढ थाय, ते पण भारतीय सस्कृतिना प्रवाहने वहन करती होय; एटले भारतना इतिहासना पुनरुत्थानना केटलाय तवक्काओ पालि, प्राकृत, अपभ्रश आदि अने ते बाद खीलेली अत्यारनी आपणी भाषाओने आधारे पण प्रवर्त्या छे परतु ए बधी जुदी जुदी भापाओनी मणिमाळाना सूत्रात्मा रूप मुख्यत्वे सस्कृत भाषानो प्राणततु रहे छे, ए भूलवु न जोईए.

प्राकृत भापाओ प्रथम हती के सस्कृत भाषा, ए एक जुदो ऐतिहासिक सवाल छे परतु एक वात नक्की के, भारतवर्षना आत्मारूप मूळ सस्कृति सस्कृत भाषामा जेवी सर्वतोभद्र भावे प्रगट थई, तेवी आ स्थानिक – लौकिक भापाओमा सर्वतोभावे नथी प्रगट थई स्थानिक – लौकिक भाषाओमा तेना अमुक अमुक अगो ज जाणे एकागीपणे फूल्या – फाल्या परतु ए बधा एकागी अगोनो समन्वय के शुद्धीकरण मूळ स्रोतनी मदद द्वारा थता ज रहेवा जोईए. एटले शरूआतमा कह्यु के, भारतवर्षने सस्कृत भाषानु आराधन छोडचे चालवानु नथी.

आधुनिक वहेणनी दिशा

उपर कह्यु छे तेम, लौकिक – स्थानिक भाषाओ पण ए मूळ स्रोतने वहन करे ज छे एटले प्रजानो मोटो भाग ए लौकिक – स्थानिक देशी भाषाओ द्वारा ज पोताना लोकात्माने ओळखीने सस्कार-रस मेळवतो रहेवानो परतु समग्र देशनी सस्कृतिना धारण-पोषण-सशोधननी रीते विचारीए, तो प्रजाना अमुक वर्गनो पेला मूळ स्रोत साथेनो सपर्क चालु रहेवो ज जोईए.

तेथी ज स्वराजनी चळवळ वखते आपणी प्राचीन सस्कृति अने भाषा के भाषाओना स्रोतमा नाहीने शुद्ध – सस्कृत थवानो प्रयत्न विशेष तीव्र बन्यो हतो

परतु आजे स्वराज आव्या पछी, ए बाबतमा ओट ज आव्याना, एटलु ज नहि पण, विपरीत वहेण शरू थयाना लक्षण वरताय छे आजे ए मूळ सस्कृत भाषा तो शु, पण आपणी लौकिक – देशी भाषाओना मान पण छेक ज ओसरी गया छे, अने केटलाक लोको समाजवादी सस्कृति साथे तेना वाहन रूपे अग्रेजी भाषाने भारतवर्षमा कायम करवाना पोकार पाडे छे अने ए अग्रेजी भाषा द्वारा तेओ शु जाळववा के लाववा मागे छे? थोडोक यात्रिक कसब के थोडु भौतिक विज्ञान ए बे चीजोनो आपणे कशो उपयोग नथी एम न कहीए, तोपण ए बे विना जाणे भारतनो उद्धार नहि थाय एम मानवामा आवे छे, ए तो केवळ अतिरेक छे.

भारतवर्षनो उत्कर्ष यात्रिक – भौतिक सस्कृतिथी साधवानो प्रयत्न अत्यारे ज पहेलवहेलो थाय छे, एम नथी आपणो प्राचीन इतिहास ए प्रयत्नो अने तेमने मळेली निष्फळताना प्रकरणोथी अकित छे जूना ब्राह्मणग्रथोथी माडीने देव-असुर सग्रामना रूपकथी एवा प्रयत्नो वारवार आपणा इतिहासमा नोधाया छे अने छेक छेवटे गीताकारे पण 'आसुरी सपत्' उपर पोताना सचोट चाबखा लगाव्या छे एटलु ज नहि, पण ए आसुरी सपत् ज्यारे जोर पकडे छे, त्यारे त्यारे भगवान पोते अवतार लई तेनो विनाश करवा प्रवृत्त थाय छे, एम पण नोध्यु छे

भारतवर्षनी भौतिक साधनसपत्ति एवी छे के, आवी आसुरी सस्कृतिओ त्या झट प्रवर्ती शके परतु एवी आसुरी सस्कृतिओने रवाडे चडी, केटलाय साम्राज्यो नामशेष थई गया, ए पण भारतवर्षनो इतिहास कहे छे आधुनिक युगमा पाछी विदेशोमाथी शरू थयेली प्रबळ भौतिक सस्कृतिनी सगठित चडाई सामे गाधीजीए सत्य, अहिसा, सत्याग्रह वगेरे वावतोवाळी आध्यात्मिक-रचनात्मक सस्कृतिनु जोर ऊभु कर्यु हतु तेनी साथे ज राष्ट्रभाषा अने मातृभाषानो नारो पण बुलद थयो अने आपणी मूळ सस्कृति (अने तेना वाहन सस्कृत भाषा) तरफ पण वहेण वळ्यु हतु

परतु, गाधीजीनी विदाय बाद हवे फरी पाछी इजनेरी-दाकतरी-यत्रोद्योगी-विज्ञाननी प्रगति उपर भार मूकती समाजवादी सस्कृतिनी वातो जोर पकडवा लागी छे, अने राष्ट्रभाषा-मातृभाषाने स्थाने अग्रेजी भाषाने मूकीने तेने सौ गुणोना, सौ प्रगतिना, सौ सस्कारना अरे भारतीय एकताना आधार तरीके रजू करवानु शरू थयु छे

परिणामे, हवे अतिशयोक्तिनी रीते कहेवु होय तो, ब्राह्मणनी छोकरीओ शाळा-महाशाळामा सस्कृत भाषाने बदले 'सायन्स'ने अभ्यासना विषय तरीके ले छे अने राष्ट्रभाषा मातृभाषाने बदले अग्रेजीमा ज उच्च शिक्षा मळे ए माटे अदालती हुकमो मेळववामा आवे छे सस्कृत भाषाने अभ्यासना मुख्य विषय तरीके लेनारा तो गणित के विज्ञानमा न फावनारा 'बिचारा'ओ ज गणाय छे, अने आधुनिक भारतमा तेमने माटे जूना काशी-पडितो जेवी कगाळ स्थिति ज निर्माण पण थवा लागी छे

अलबत्त, अग्रेजी भाषा भणनारे लाचिया, दारूडिया के व्यभिचारी थवु, एवो कोई शाप तो नथी ज, के सस्कृत अने देशी भाषा भणनारा सौ दैवी सपत्‌वाळा ज थशे एवु कोई वरदान पण नथी परतु सस्कृतिनो आत्मा ए एवी निरवयव, सूक्ष्म, अविनाशी चीज छे, के तेनी उपासना के 'आत्म'हत्या – ए बेनो त्रीजो विकल्प नथी

आ संस्कृत कोश

आ सक्षिप्त 'विनीत' कोश एक रीते उपर जणावेली एवी भारतीय श्रद्धानु प्रतीक छे के, भारतीय सस्कृतिए पोतानो आत्मा खोवो न होय, तो सस्कृत भाषानो सपर्क छोडये नही चाले, तेथी तेना अभ्यासने माटे जरूरी सामग्री – आ कोश जेवी – उपलब्ध करवी जोईए, एम विद्यापीठे विचार्यु अलवत्त, अत्यारे अभ्यासक्रममा अग्रेजीने ज बार-बार कलाको (पीरियड) आपवाना के तेने पाचमा धोरणथी, त्रीजा धोरणथी के बाळपोथीथी शरू करवाना जे प्रयत्नो थाय छे, ते जोता आजनी भारतीय शाळाओमा आ भाषाना अभ्यासने घटतु स्थान के समय मळवा शक्य नथी छता 'सर्वनाशे समुत्पन्ने' जेवी दशामा डहापण वापरी, सस्कृत-भाषाना अभ्यासने जेटलो टेकवाय तेटलो टेकवी आपवो जोईए अने ते माटे उपयोगी एवु नानु सुलभ साधन गणीने आ कोश तैयार करेलो छे

मॅट्रिक-विनीतना विद्यार्थीने जे कक्षाना सस्कृत फकराओ अभ्यासक्रममा भणवाना आवे छे, तेमने मुख्यत्वे लक्षमा राखी आ कोशना शब्दो सघर्या छे अलबत्त, ए फकराओथी पाच के सात गणा कदनी 'गाइडो' एटली बधी सुलभ होय छे के, ते परीक्षा माटे तो ए 'गाइड' ज सौथी वधु उपयोगी थाय परतु, मॅट्रिक जेटलु सस्कृत भण्या पछी ए विद्यार्थीने सस्कृत साहित्यना मूळ ग्रथो

तरफ जवा मन थाय, (अने थवु पण जोईए,) तो तेने उपयोगी एवो एक कोश तैयार मळवो जोईए तो ज ते एटला भणतरने उपयोगमा लई, आगळ अभ्यास जारी राखी शके

मॅट्रिक-विनीत कक्षामा सामान्य रीते रामायण, महाभारत, पच महाकाव्य, प्रसिद्ध सस्कृत नाटको, अने कादबरी, कथासरित्सागर, हितोपदेश, पचतत्र आदि कथासाहित्यने आवरवामा आवे छे एटले आ कोशमा मुख्यत्वे ए साहित्यना शब्दो आवी जाय अने ए शब्दोना पण ए साहित्यमा वपरायेला अर्थो आवे, ए लक्षमा राख्यु छे बाकी, सस्कृत भाषाना शब्दोना अर्थो तो प्राचीन कोशकारोए अनेक अनेक नोंध्या होय छे सस्कृत भाषानी खूबी ज एवी छे के तेना शब्दोना (खास करीने धातुओना) अनेक अर्थो थाय अने तेथी ज ए भाषामा एकी साथे रामायण, अने महाभारतनी जुदी जुदी वात चालती होय एवा काव्यो अरे, महाकाव्यो जोवा मळे छे

आ कोशने विनीत कक्षाना विद्यार्थीने दृष्टिमा राखीने सक्षिप्त बनाववो, एम नक्की कर्युं तो खरु परतु ए शब्दोनी पसदगी करवानु तो छेवटे ए कोश तैयार करनार सेवकवर्गना वैयक्तिक धोरणने आधारे ज थाय उपरात ए कोश अमुक पानानो ज (अदाजे ७०० पाननो) करवो एवी काईक मर्यादा पण होवी घटे अने ते नक्की करवामा पण आवी हती एटले शरूआतमा सक्षेप करवा उपर ज वधु ध्यान अपातु जाय ए स्वाभाविक छे कोश अर्धो छपायो त्यारे कईक अदाज मेळवी शकाय तेवु थयु त्यार पछी शब्दो लेवानी बाबतमा अमुक निश्चित धोरण अपनावी शकायु

एटले कोश पूरो थता, पाछळथी अपनावेला ए धोरणने आगळना भागने पण लागु पाडवु जरूरी लाग्यु, तेम ज शक्य पण बन्यु एटले कोशने अते पूर्ति रूपे ए शब्दो उमेरी लीधा छे. एम जोके आवा नाना कोशमा, बे जगाए शब्द शोधवानु विद्यार्थीने मुश्केल लागशे खरु, पण बीजी आवृत्ति वेळा पूर्तिना ए शब्दो योग्य क्रममा भेगा करी लेवाशे, अने ए रीते सळग एक सक्षिप्त कोश उपलब्ध थशे.

आ कोशमा कुल २६,६०९ शब्दोना अर्थो आपेला छे.

आगळनो तबक्को

उपर जणाव्यु ते प्रमाणे आ कोशमा जाणीता काव्य-नाट्य कथाग्रथोना ज शब्दो लेवाया छे. पण आपणी भारतीय सस्कृतिना मूळ स्थानो सुधी पहोचवा इच्छनारने पुराण-स्मृति-दर्शन-उपनिषद ए साहित्यना ग्रथोना शब्दो पण मळवा ज जोईए जाणीता साहित्यना ग्रथोनो अभ्यास करी चूकेलाने अत्यारे वधी देशी

भाषाओमा उपलब्ध भाषांतरो द्वारा ए ग्रंथोनो अभ्यास मुश्केल तो न ज पडे; पण एक कोश एवो पण तैयार थवो जोईए के जेमा आ बधा शब्दो आवे वेद-ब्राह्मण ग्रंथोना शब्दो ए तो जाणे एक प्रकारे जुदी भाषाना शब्दो गणाय ए बधा शब्दो साथेनो बृहत् कोश पण गुजराती भाषामा होवो जोईए पण आ बधी तो बहु आगळनी वात थाय

परंतु पुराण-स्मृति-दर्शन-उपनिषद तथा वैदक-ज्योतिषना ग्रंथोना शब्दो-वाळो कोश तो तैयार करवानु शरू थवु ज जोईए तो ज आ संक्षिप्त कोशे आरंभेलु काम आगळ चाले- मोनियर विलियम्स, आप्टे, वगेरेना कोशो उपरथी ए शब्दो तारवी काढवानु काम बहु मुश्केल पण न गणाय.

एटले आ कोश ए बीजा आगळना कोशनी आवश्यकता जाणे पुरवार करवा माटेनो बनी रहे छे! अलबत्त, आ कोशने पण तेनी मर्यादामा आवता साहित्यना बधा शब्दोनो तेमा समावेश थाय ए रीते (पान के शब्दनी मर्यादा विना) पूरो करवो बाकी रहे छे ज पण ए तो आवृत्तिए आवृत्तिए सुधारा वधारा जेवु काम गणाय अने ए चालतु ज रहेवानु.

आ कोशनी गोठवणी

आ कोश जे कक्षाना विद्यार्थीओना उपयोग माटे विचारायो छे, तेमने शब्दोना अर्थो शोधवानु सुलभ थाय ते रीते एनी गोठवणी विचारी छे अलबत्त व्याकरण-पद्धतिथी जरा पण न भण्यो होय तेवा विद्यार्थीने आ कोशनो के कोई पण कोशनो उपयोग करवो शक्य न होय जेम के गुजराती भाषाना कोशमा पण 'गयो' ए प्रयोगनो अर्थ 'जवु' धातुमा शोधवा जेटलु व्याकरणनु ज्ञान विद्यार्थीने होवु जोईए ज तेम, **गच्छति, चकार, अघ्नन्, धुक्ष्व, अमृष्ट, अतृण्ढ, बिभ्यति, बिभराणि, जहीहि, धत्स्व** वगेरे रूपो साहित्यमा वपरायेला मळे, तो ते माटे कोशमा अनुक्रमे **गम्, कृ, हन्, दुह्, मृज्, तृह्, भी, भृ, हा, धा**, ए धातुओमा अर्थ शोधवो जोईए, एवी तो विद्यार्थीने खबर होवी घटे कोई पण कोश व्याकरणनी रीते बदलायेला रूपोनो पण शब्द-क्रममा अर्थ न आपी शके सद्भाग्ये संस्कृत भाषाना शिक्षणनी बाबतमा आपणी शाळाओमा व्याकरण-पद्धतिने छेक ज छोडी देवामा आवी नथी

आ कोशना शब्दोनी गोठवणीमा अनुसरवामा आवेला बे मुख्य मुद्दाओनी समज अही ज जणाववी घटे (१) उपसर्गो साथे वपराता धातुओनो अर्थ उपसर्गोना क्रममा आप्यो छे, मूळ धातुना ज पेटामा नहि जेम के **अधिगम्, अभ्यागम्, निगम्, निर्गम्, प्रत्यागम्, संगम्** ए धातुओने ए शब्दना क्रममा ज गोठव्या छे, सामान्य रीते संस्कृत कोशमा गम् धातुना पेटामा ज तेमने बधाने नखाय छे पण तेथी **'अधी'** धातुनो अर्थ **'इ'** धातुना पेटामा मळशे एवी खबर न होय, तेने मुश्केली पडे. अही तो **'अधी'** धातु तरीके ज

तेना क्रममा एनो अर्थ मळी जशे ज्या जरूर मानी त्या ए उपसर्गने छूटो पाडी कौंसमा फरीथी लख्यो छे. जेम के '**अधी**' (अधि + इ), '**व्यपे**' (वि + अप + इ).

(२) सस्कृत कोशमा बीजी मुख्य मुश्केली अनुनासिकना उपयोगवाळा शब्दोनो क्रम शोधवामा पडे छे जेम के सामान्य सस्कृत कोशमा **अंश, अंस, अंहस्** वगेरे शब्दो **अ** अक्षरथी शरू थता शब्दोनी छेक ज शरूआतमा आप्या हशे, अने **अंड, अंत, अंध,** वगेरे शब्दो **अण्ड, अन्त, अन्ध,** ए प्रकारे क्रम कल्पीने ए क्रममा मूक्या हशे आ कोशमा विद्यार्थीनी सगवड विचारी, गूजरात विद्यापीठना गुजराती जोडणीकोशनी रीते बधा अनुनासिकोने अवश्य अनुस्वाररूपे ज लखीने, दरेक स्वर ने अते ज एक साथे आप्या छे अर्थात् '**अ**' अक्षर पूरो थता अं थी शरू थता शब्दो, '**आ**' पूरो थया पछी **आं** थी शरू थता शब्दो, ए प्रमाणे

दरेक धातुनु त्रीजी विभक्ति एकवचननु रूप आप्यु होय तो उपयोगी थाय खरु, पण एनाथी मूळ धातुने शोधवा माटे कशी मदद न मळे एटले ज्या आदेश-ने कारणे धातुनु जुदु रूप थतु होय, त्या ज चोरस कौंसमा ते रूप आप्यु छे जेम के, **गम्** १ प० [गच्छति]

दरेक धातुनी साथे तेनु भूतकृदतनु रूप पण अपाय छे पण तेने मूळ धातु शोध-वामा उपयोगी न मानीने भूतकृदतनो शब्द आवे त्यारे ते जे धातुनु भूतकृदत होय ते कौंसमा वताव्यु छे जेम के **गूढ** ('गुह्' नु भू० कृ०) (उपसर्ग साथेना धातुनु भूतकृदत होय, त्या ते आ प्रमाणे जुदु नथी वताव्यु

सस्कृतमा भूतकृदतो कर्मणि भूतकृदतो मुख्यत्वे होय छे एटले कर्मणि भू० कृ० न लखता सक्षेपमा मात्र भू० कृ० ज लख्यु छे केटलाक वहु ओछा भूतकृदतो कर्तरि पण होय छे जेम के 'हतवत्'

ज्या शब्दनी अदर इ के उ नी पछी स् आववाथी स् नो ष् थई गयो होय छे, तेवे स्थळे कौंसमा ते जुदु दर्शाव्यु छे जेमके, **निषिध्,** (नि + सिध्), **निषेव्** (नि + सेव्).

जे शब्दो वहुवचनमा ज वपराय छे, तेमना प्रथमा विभक्ति वहुवचनना रूप ज मूळ शब्द तरीके मूक्या छे जेम के, **पौरजानपदाः** पु० व० व० परन्तु केट-लाक शब्दोना मात्र द्वि० व० के व० व० मा जुदा अर्थ थता होय, तेवाओने मूळ तो एकवचनमा ज मूकीने पछी अर्थोमा वचन दर्शावी जुदो अर्थ आप्यो छे जेम के, **पूर्वदेव** पु० (३) (द्वि० व०) नर अने नारायण, **पूर्वपूर्व** (२) पु० (व० व०) पूर्वजो.

नामधातुओनु त्रीजा पुरुष एकवचननु रूप ज मूळ शब्द तरीके मूक्यु छे, अने अर्थ धातुनी रीते कौंसमा दर्शाव्यो छे तेवी जगाए गण के पद ज्या मूळ आधार-कोशोमाथी मळ्या त्या ज दर्शाव्या छे जेम के **प्रकटयति** प० (दर्शाववु, प्रगट करवु)

च्वि रूप साथेना क्रियापदोना गण माटे पण तेम ज समजवु जेम के **क्रोडीकृ** आलिगनमा लेवु, भेटवु

धातुना प्रेरक अने कर्मणि रूपोना अर्थ ज्या आपवा जेवा लाग्या त्या जुदो फकरो पाडीने –प्रेरक० के –कर्मणि० एम लखीने स्वतत्र सख्याक्रम दर्शावीने आप्या छे जेम के, जुओ **स्था** धातु

अर्थो आपवामा मूळ व्युत्पत्तिने लक्ष्यमा राखीने अर्थ आप्यो छे **मधुसूदन** एटले मात्र श्रीकृष्ण अर्थ न आपता, "(मधु राक्षसने हणनार) श्रीकृष्ण" एम लख्यु छे, जेथी ए नाम शाथी पडचु छे ते पण लक्ष्यमा आवे ते ज प्रमाणे जुओ **गुडाकेश.**

चार, सात, आठ वगेरे सख्याओवाळा शब्दोमा वने त्या लबाण करीने पण ते चार, सात, के आठ वस्तुओ कई ते गणी बतावी छे जेम के, जुओ '**चतुर्दशरत्नानि**' के **सप्तसमुद्राः**, जेथी एटलु जाणवा बीजा ग्रथो सुधी दोडवु न पडे.

केटलाक शब्दोना अर्थो एकबीजाना सबधमा वधु जाणीता होय छे त्या पण साथे कौसमा ते बीजो शब्द दर्शाव्यो छे जेम के **पूर्त** एटले वाव कूवा इ० बधाववाथी थतु पुण्य ते शब्द, यज्ञयागादिथी थता पुण्यवाचक '**इष्ट**' शब्द साथे ज ('इष्टापूर्त') वधु वपराय छे. एटले पूर्त शब्दना अर्थमा 'इष्ट' ने पण कौसमा नोघ्यो छे

तहेवार वगेरेना दिवसोनी तिथि के महिनो ज्या निश्चित रूपे जणावी शकाय, त्या ते जणाववा प्रयत्न कर्यो छे

पण एक बाबतमा लाचारी कबूल करवी आवश्यक छे सस्कृत साहित्यमा वनस्पति के पशु-पखी सृष्टि साथे एटलो बधो गाढ परिचय प्रगट थाय छे, के जाणे ए बधी वनस्पतिओ, पशु, पखी, फूल-फळ, पण मनुष्योना जीवनसाथी — सहबधुओ ज होय तेथी ए साहित्यमा वृक्षो, पशुओ, पखीओ, फूल-फळ वगेरेना उल्लेखो घणा आवे छे अग्रेज कोषकारोए ए बधाने लॅटिन परिभाषाना नामोमा मूकवा प्रयत्न कर्यो छे पण आपणा देशी कोशकारोए मोटे भागे अर्थमा 'एक वृक्ष', 'एक फूल', 'एक पखी' एम कहीने चलाव्यु छे ते बधाना देशी भाषाना अर्थो शोधीने आपवा जोईए हवे वनस्पतिशास्त्र तथा पखीवर्णन इत्यादिना पुस्तको घणा बहार पडचा छे तेमाथी योग्य चोकसाई करी अर्थो निश्चित करीने मोगरो, जाई, जूई, बटेर, लावरी वगेरे जेवा परिचित अर्थो आपीए, तो ज ते बधा शब्दोना उपयोग पाछळनी उपमा के काव्य आपणे वधु माणी शकीए

आ कोशनु काम जुदे जुदे हाथे थयु छे एम एकठी थयेली सामग्री परथी हस्तलिखित प्रत तैयार करीने छपाववा प्रेसमा मोकलवानु थयु त्यारे जणायु के शब्दोनी पसदगीमा तथा अर्थ आपवानी रीतमा एकरूपता लाववानी जरूर छे, अने घणु बीजु करवानु रहे छे समय साथे होड बकीने ए बधु झटपट आटोपवानु

थयु छे. तेमां मुख्य दृष्टि आ कोश वापरनार वर्गने वधुमा वधु उपयोगी थवानी राखी छे ते वर्गने जे प्रमाणमा आ कोश उपयोगी नीवडशे, तेटले अशे आ कोश तैयार करवामा हिस्सो लेनार सौनी महेनत लेखे लागशे, ए कहेवानी जरूर न होय.

छेवटे, कोशने सळग तपासी जई प्रेस माटे तैयार करवानु काम धारी झडपथी आटोपी शकायु, तेनो यश विद्यापीठना श्री. शिवबालक बिसेनना मने माग्या मळेला सहकारने आभारी छे तथा पूर्ति माटे शब्दो तारवी आपी तैयार करी आपवानु झझटवाळु काम श्री नारणभाई जीभाईदास पटेले झडपथी पार पाडी आप्यु न होत, तो आ आवृत्ति वखते ए शब्दो कोशमा उमेरी लेवानु शक्य बन्यु न होत. ते बने मित्रोए आपेली मददनी हु अही साभार नोध लउ छु

अते, वधा पुरुषार्थोमा पचम तरीके सदासर्वदा व्यापी रहेनार पिता-गुरु परमात्मानी कृपा याद करीने, मारे माटे कईक मोटी 'फाळ' गणाय तेवु काम मने सोपी मने सळग प्रेरणा आपनार ते वखतना गूजरात विद्यापीठना महामात्र श्री. मगनभाई प्रभुदास देसाई प्रत्ये कृतज्ञता प्रगट करु छु.

२३–३–'६२ **गोपाळदास जीवाभाई पटेल**

संकेतोनी समज

अ० अव्यय (क्रियाविशेषण इ०)

अ० क्रि० अकर्मक क्रियापद

आ० आत्मनेपदी धातु

इच्छा० इच्छादर्शक रूप

उ० परस्मैपदी तेम ज आत्मनेपदी –एम उभयपदी धातु

उदा० उदाहरण तरीके, जेम के

कर्मणि० कर्मणि रूपमा अर्थ

गणित० गणितशास्त्रनो शब्द

ज्यो० ज्योतिषशास्त्रनो शब्द

द्वि० व० द्विवचन

न० नपुसक लिंग

नाट्य० नाट्यशास्त्रनो शब्द

न्या० न्यायदर्शननो शब्द

प० परस्मैपदी धातु

पु० पुंलिंग

प्रेरक० प्रेरक रूपमा अर्थ

ब० व० बहुवचन

बौद्ध० बौद्ध ग्रथोनो शब्द

भू० कृ० भूतकृदत (कर्मणि)

योग० योगदर्शननो शब्द

ला० लाक्षणिक अर्थ

व० कृ० वर्तमान कृदत

वि० विशेषण

वि० स्त्री० विशेषण स्त्रीलिंग

वेदान्त० वेदातदर्शननो शब्द

व्या० व्याकरणशास्त्रनो शब्द

स० ना० सर्वनाम (ते विशेषण पण गणाय एटले साथे वि० पण मूक्यु छे).

संगीत० सगीतशास्त्रनो शब्द

सांख्य० साख्यदर्शननो शब्द

स्त्री० स्त्रीलिंग

–अक्षरनी आगळनी आ निशानी ते अक्षरनो विकल्प दर्शावे छे, जेम के तुंबि (–बी) एटले तुंबि अने तुंबी बन्ने समजवाना छे.

१–२–३–४–५–६–७–८–९–१० धातुना अर्थनी शरूआतमा मूकेला आ आकडा ते कया गणनो छे ते दर्शावे छे

संस्कृत-गुजराती

विनीत कोश

अ

अ सस्कृत वर्णमाळानो पहेलो अक्षर, एक ह्रस्व स्वर (२) पु० विष्णु (३) अ० नकारार्थ दर्शावतो पूर्वग; उदा० अभाव (४) दया, निंदा, ठपको, सबोधन, निषेध –ए बतावतो उद्‌गार [न होय तेवु

अऋणिन् वि० करज विनानु, देवादार

अक न० सुखनो अभाव, दु ख (२) पाप

अकच वि० माथे वाळ वगरनु, टालियु (२) पु० केतु ग्रह

अकथ्य वि० न कहेवा लायक

अकरण वि० स्वाभाविक, अकृत्रिम (२) सर्व इद्रियोथी रहित (परब्रह्म) (३) न० कामकाज न करवु ते

अकरणि स्त्री० निराशा, निष्फळता

अकर्ण वि० कान वगरनु, बहेरु (२) पु० साप

अकर्मक वि० जेने कर्म नथी तेवु

अकर्मण्य वि० कर्म करवाने शक्तिमान नहि तेवु (२) न करवा लायक

अकर्मन् वि० काम वगरनु, आळसु (२) अकुशळ (३) अकर्मक (व्या०) (४) न० कर्मनो अभाव (५) अयोग्य कर्म, गुनो, पाप

अकल वि० अश–भाग विनानु

अकल्प वि० निरकुश (२) निर्बळ (३) जेनी तुलना न थई शके तेवु [भाविक

अकल्पित वि० कृत्रिम नहि तेवु, स्वा-

अकल्य वि० अस्वस्थ; रोगी (२) साचु; खरु

अकस्मात् अ० एकाएक; अणधारी रीते (२) निष्कारण

अकाम वि० इच्छारहित (२) कामपीडा-रहित (३) हेतुरहित, इरादा वगरनु

अकामतः अ० अनिच्छाए (२) इरादा वगर, असावधपणे [ग्रह

अकाय वि० शरीर वगरनु (२) पु० राहु

अकारण वि० कारण विनानु (२) प्रयो-जन विनानु [निष्कारण, व्यर्थ

अकारणम्, अकारणात्, अकारणे अ०

अकार्पण्य वि० कृपणता विनानु (२) दीनता दाखव्या विना मळेलु

अकार्य वि० नहि करवा योग्य (२) न० अयोग्य कार्य, खोटु कार्य

अकाल वि० कवखतनु, अयोग्य वखतनु (२) पु० अयोग्य समय, कवखत

अकालज, अकालजात वि० अकाळे जन्मेलु, कवखते उत्पन्न थयेलु

अकालसह वि० विलब सहन न करतु; अधीरु (२) लाबो वखत टकी न शके तेवु

अकालिकम् अ० अचानक (२) तरत ज

अकाड वि० अणधार्यु, आकस्मिक (२) अवसर विनानु (३) थड विनानु

अकांडपात पु० अकस्मात् बनेलो बनाव

अकाडे अ० अचानक, अकस्मात्

अकिल्बिष वि० निष्पाप

अकिंचन वि० निर्धन, गरीब

अकिंचनता स्त्री० दरिद्रता (व्रत)

अकिंचिज्ज्ञ वि० थोडु पण नहि जाण-नारु, अज्ञानी

अकिंचित्कर वि० कशु न करी शकनारु (२) निरुपयोगी

अकुतः अ० कोई ठेकाणेथी नहि, क्यायथी नहि (समासमा)
अकुतोभय वि० क्यायथी भय विनानु, निर्भय (२) सुरक्षित
अकुप्य न० हलकी धातु नहि ते—सोनु-रूपु (२) कोई पण हलकी धातु
अकुशल वि० कुशळ के होशियार नहि तेवु (२) अमगळ (३) अणगमतु (४) न० अनिष्ट, दुःख
अकुह वि० न छेतरे तेवु, प्रमाणिक
अकुंठ वि० बूठु नहि थयेलु (२) प्रति-वध विनानु (३) स्थिर (४) समर्थ
अकुंठित वि० प्रतिवध—रुकावट विनानु
अकूपार वि० जेनो अत खराब नथी तेवु (२) पार विनानु (३) पु० समुद्र (४) सूर्य (५) काचवो (कूपने न तजतो)
अकृच्छ्र वि० सहेलु, मुश्केली वगरनु
अकृत वि० नहि करेलु (२) खोटी रीते करेलु (३) तैयार नहि थयेलु (अन्न) (४) अपरिपक्व, अशिक्षित (५) नहि सरजायेलु (६) न० नहि करायेलु काम (७) कार्य नहि करवु ते (८) पूर्वे न साभळेलु कार्य [न जाणनारु
अकृतज्ञ वि० कृतघ्न, करेलो उपकार
अकृतबुद्धि वि० काची बुद्धिवाळु
अकृतात्मन् वि० अज्ञानी, मूर्ख (२) ईश्वरदर्शन नहि पामेलु
अकृतिन् वि० अकुशळ, अक्षम
अकृत्य न० खोटु काम (२) न करी शकाय तेवु काम
अकृत्रिम वि० स्वाभाविक [खेंचायेलु
अकृष्ट वि० नहि खेडायेलु (२) नहि
अक्का स्त्री० मा, माता
अक्त ('अज्'नु भू० कृ०) वि० खरडायेलु; लेपायेलु (घणु करीने समासने अते वपराय छे; उदा० तैलाक्त, घृताक्त)
अक्त्र न० कवच, बख्तर
अक्रतु वि० यज्ञरहित (२) सकल्परहित (परमात्मा)
अक्रम वि० क्रमरहित (२) गतिरहित (३) पु० क्रम—परिपाटी—शिष्टाचारनो अभाव
अक्रिय वि० क्रियारहित (२) निष्क्रिय
अक्रिया स्त्री० निष्क्रियता (२) कर्तव्यनी उपेक्षा [रहितता
अक्रोध वि० क्रोधरहित (२) पु० क्रोध-
अक्लिष्ट वि० नहि थाकेलु (२) नहि मूझायेलु (३) खडित—दूपित नहि तेवु (४) श्रमपूर्वक नहि थतु—सहज
अक्लिष्टकर्मन् वि० कर्म करवामा न थाकनारु
अक्लीब वि० साचु, अफर
अक्लीवम् अ० भय विना
अक्ष् १, ५, प० पहोंचवु (२) व्यापवु (३) एकठु करवु
अक्ष पु० धरी (२) पासो (३) पैडु (४) रथ, गाडु (५) विपुववृत्तथी उत्तर-दक्षिण कोई पण जगानु गोलीय अतर (६) त्राजवानी दाडी (७) जेना मणका बने छे ते बीज (८) रुद्राक्ष (९) १६ मासानु एक वजन (कर्ष) (१०) न० ज्ञानेंद्रिय (११) नेत्र [कुशळ
अक्षकुशल वि० पासा रमवानी विद्यामा
अक्षकूट पु० आखनी कीकी
अक्षत वि० ईजा पाम्या विनानु (२) अखड, भाग्या विनानु (३) पु० (ब० व०) धार्मिक क्रियामा वपराता वगर भागेला चोखा अथवा न छडेला जव, डागर वगेरे (४) न० कोई पण धान्य (५) हानि न थवी ते, उत्कर्ष
अक्षतयोनि स्त्री० जेनु कौमार खडित नथी थयु तेवी स्त्री [मुनि
अक्षपाद पु० न्यायदर्शनना प्रणेता गौतम
अक्षम वि० अशक्त, असमर्थ (२) सहन न करे तेवु, असहिष्णु
अक्षमा स्त्री० ईर्पा (२) अधीराई (३) क्रोध
अक्षमाला स्त्री० मणकानी माळा (२) वसिष्ठपत्नी—अरुधती

अक्षय वि० क्षय न पामतु;अविनाशी(२) अखूट (३) पु० परमात्मा [अखूट
अक्षय्य वि० क्षय के नाश न पामे तेवु(२)
अक्षर वि० अविनाशी; शाश्वत (२) पु० परमात्मा (३) न० वर्णमाळानो प्रत्येक वर्ण (४) मोक्ष (५) परब्रह्म
अक्षरन्यास पु० वर्णमाळा (२) लखाण
अक्षरशः अ० अक्षरे अक्षर, शब्दे शब्दना अर्थ प्रमाणे [ज्ञान
अक्षहृदय न० पासानी विद्यानु रहस्य के
अक्षांति स्त्री० क्षमानो अभाव (२) ईर्षा (३) क्रोध
अक्षांश पु० विषुववृत्तथी उत्तर के दक्षिणनु अतर–अक्ष वतावनार १८० अश छे ते
अक्षि न० आख (२) 'बे'नी सख्या
अक्षिगत वि० प्रत्यक्ष, दृष्टिगोचर (२) आखमा खूचतु, अप्रिय [पापण
अक्षिपक्ष्मन्, अक्षिलोमन् न० आखनी
अक्षिश्रवस् पु० साप
अक्षुण्ण वि० वटायेलु नहि तेवु (२) अजित, फतेहमद
अक्षेत्र वि० खेतर विनानु, खेड विनानु (प्रदेश) (२) न० खराब खेतर (३) कुपात्र शिष्य
अक्षौहिणी स्त्री० २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोडा, तथा १०९३५० पायदळनी वनेली महासेना
अखर्व वि० ठीगणु नहि एवु (२) मोटु
अखंड, अखंडित वि० खडित न थयेलु, आखु
अखिल वि० आखु; वधु, समस्त
अख्यात वि० अप्रसिद्ध (२) न कहेलु
अग वि० चाली न शके तेवु (२) जेनी पासे न जई शकाय तेवु (३) पु० वृक्ष (४) पर्वत (५) साप (६) सूर्य (७) 'सात'नी सख्या
अगण्य वि० गणी न शकाय तेटलु (२) गणनामा न लेवाय तेवु – तुच्छ
अगति स्त्री० उपाय के मार्ग न होवो ते (२) प्रवेश के पहोच नही ते (३) अवगति
अगतिक, अगतीक वि० निराधार (२) छेवटनु (उपाय)
अगद वि० नीरोगी (२) न बोलतु के कहेतु (३) पु० ओसड (४) तदुरस्ती
अगम्य वि० ज्या जई न शकाय तेवु (२) समजी न शकाय तेवु; गूढ; अज्ञेय (३) तजवा जेवु, निषिद्ध
अगम्या स्त्री० जेनी साथे सग निषिद्ध होय तेवी (स्त्री)
अगम्यागमन न० निषिद्ध स्त्री साथे व्यभिचार
अगरु पु० एक जातनु चदन [खाडो
अगाघ वि० घणु ऊडु (२) पु०, न० ऊडो
अगार न० रहेठाण, आवास, घर
अगुण वि० निर्गुण (परमात्मा) (२) सारा गुणो विनानु, निरुपयोगी (३) पु० दोष
अगुरु वि० वजनदार नहि एवु, हलकु (२) टूकु, ह्रस्व (पद्यमा) (३) जेने गुरु न होय तेवु, नगुरु (४) न० अगरु
अगृह पु० घर वगरनो – वानप्रस्थ
अगोचर वि० इद्रियातीत, अगम्य
अग्नि पु० अग्नि, आग (२) अग्निदेव (३) जठराग्नि (४) पित्तनो अग्नि (५) सोनु (६) 'त्रण'नी सख्या
अग्निकर्मन् न० अग्निमा होम करवो ते
अग्निकुमार पु० कार्तिकेय
अग्निकोण पु० अग्निखूणो (दक्षिण-पूर्व)
अग्निक्रिया स्त्री० प्रेत-सस्कार, शवने अग्निदाह देवो ते
अग्निक्रीडा स्त्री० आतशबाजी
अग्निगर्भ वि० जेमाथी अग्नि जन्मे एवु (२) सूर्यकात मणि (३) अरणी
अग्निज वि० अग्निमाथी उत्पन्न थयेलु (२) पु० कार्तिकस्वामी (३) न० सोनु
अग्निजिह्वा स्त्री० अग्निनी ज्वाळा
अग्नितनय पु० कार्तिकस्वामी

अग्नित्रय न० त्रण प्रकारना अग्नि (दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय)
अग्निदातृ वि० अग्निसंस्कार करनारु
अग्निदीपन वि० जठराग्नि प्रदीप्त करनारु [पणानी परीक्षा
अग्निपरीक्षा स्त्री० अग्नि वडे साचा-
अग्निपर्वत पु० ज्वाळामुखी पर्वत
अग्निप्रवेश पु० (स्त्रीनु) सती थवु ते
अग्निमथ पु० घर्षणथी अग्नि उत्पन्न करवो ते
अग्निमांद्य न० जठराग्निनी मदता
अग्निमुख पु० देव (२) ब्राह्मण (३) अग्निहोत्री
अग्निवर्धक वि० जठराग्नि वधारनारु
अग्निवाह पु० धुमाडो (२) बकरो
अग्निवाहन न० बकरो
अग्निशाला स्त्री० अग्निहोत्रनु स्थान
अग्निशिखा स्त्री० ज्वाला
अग्निष्टोम पु० एक प्रकारनो यज्ञ
अग्निसंस्कार पु० प्रेतक्रिया
अग्निहोत्र न० शास्त्रोक्त अग्निमा सवारसाज होम करवानु कर्म
अग्निहोत्रिन् पु० अग्निहोत्र करनार
अग्न्यस्त्र न० अग्नि वरसतु अस्त्र
अग्न्याधान न० मंत्रपूर्वक अग्निनु स्थापन (२) अग्निहोत्र
अग्न्युत्पात पु० आकाशमा देखातो अनिष्टसूचक प्रकाशवाळो उपद्रव (उल्का, धूमकेतु इ०)
अग्न्युपस्थान न० अग्निनी पूजा (२) अग्निहोत्र
अग्र वि० सौथी आगळनु; पहेलु (२) पु० अस्ताचल (३) न० टोच उपरनो – छेडानो भाग (४) ध्येय, हेतु (५) शिखर (६) कोई पण वस्तुनो श्रेष्ठ भाग (७) उत्कर्ष (८) प्रारम्भ (९) आधिक्य
अग्रग पु० आगेवान
अग्रगण्य वि० गणतरीमा पहेलु, श्रेष्ठ
अग्रज वि० प्रथम जन्मेलु (२) पु० मोटो भाई (३) ब्राह्मण
अग्रजन्मन् पु० मोटो भाई (२) ब्राह्मण
अग्रजा स्त्री० मोटी बहेन
अग्रणी वि० आगेवान (२) पु० अग्नि
अग्रतः अ० सौथी आगळ, मोखरे (२) हाजरीमा [जनार दूत
अग्रदूत पु० आगळथी समाचार लई
अग्रदेवी स्त्री० पटराणी [पूजानु मान
अग्रपूजा स्त्री० श्रेष्ठ पुरुषने अपातु प्रथम
अग्रबीज वि० डाळखी रोपवाथी ऊगे तेवु (२) जेनी कलम थई शके तेवु
अग्रभाग पु० प्रथम भाग, श्रेष्ठ भाग (२) शेष भाग
अग्रभुज् वि० जमवामा पहेलु (२) खाउधरु
अग्रभूमि स्त्री० अंतिम ध्येय, महत्त्वाकांक्षानु ध्येय (२) टोचनो भाग
अग्रमहिषी स्त्री० पटराणी
अग्रयान वि० सौथी आगळ चालनारु (२) न० मोखरानु सैन्य
अग्रयायिन् वि० आगळ जनारु
अग्रयोधिन् पु० मुख्य योद्धो
अग्रवात पु० ताजो पवन
अग्रसर पु० अग्रेसर, आगेवान
अग्रहस्त पु० हाथनो आगलो भाग (२) आगळीओ (३) सूढनो आगलो भाग (४) जमणो हाथ [मास
अग्रहायण पु० वर्षारंभ (२) मार्गशीर्ष
अग्रहार पु० राजा तरफथी (ब्राह्मणोने) अपायेल जमीन
अग्राणीक न० आगळनु सैन्य
अग्रासन न० प्रथम स्थान, माननु स्थान
अग्राह्य वि० ग्रहण न करी शकाय तेवु (२) स्वीकारी न शकाय तेवु
अग्रिम वि० अनुक्रममा प्रथम (२) मुख्य (३) उत्तम (४) पु० मोटो भाई
अग्रे अ० आगळ; पहेला (२) समक्ष; सामे (३) हवे पछी

अग्रेसर वि० आगळ जनार (२) पु० आगेवान, नेता
अग्र्य वि० सौथी आगळनु (२) प्रथम, श्रेष्ठ (३) पु० मोटो भाई
अघ वि० पापी; दुष्ट (२) न० पाप; दुष्कर्म (३) दुख, सकट (४) सूतक, अशौच
अघनाशन वि० पापनो नाश करनारु
अघमर्षण न० पापनाशक सूक्त – मत्र
अघर्म वि० ठडु, शीतळ
अघायु वि० पापी जीवन गाळनारु
अघासुर पु० एक राक्षसनु नाम – बक राक्षसनो भाई
अघोर वि० भयकर नही तेवु (२) पु० शिव (३) शिवनो भक्त
अघोष वि० अवाज वगरनु, शात (२) कठोर उच्चारवाळु (३) पु० वर्णमाळामा मुख्य पाच उच्चारस्थानोना पहेला बे वर्णो तथा श्, ष्, स् — एम तेरमानो प्रत्येक [बळद
अघ्न्य वि० नहि मारवा योग्य (२) पु०
अघ्न्या स्त्री० गाय [मद्य
अघ्रेय वि० न सूघवा लायक (२) न०
अच् पु० सस्कृत व्याकरणमा स्वरनु नाम
अचक्षुस् वि० आधळु, आख वगरनु, अध (२) न० बगडेली आख
अचर वि० स्थिर, स्थावर
अचरम वि० छेल्लु नहि तेवु, वचलु इ०
अचल वि० स्थिर, निश्चल, कायमनु (२) पु० पर्वत (३) शकु, खीलो (४) 'सात'नी सख्या
अचलपति पु० हिमालय पर्वत, मेरु पर्वत
अचला स्त्री० पृथ्वी
अचलाधिप पु० हिमालय पर्वत
अचित्त वि० अतर्क्य, अचिंत्य (२) समजण वगरनु, जड, मूर्ख
अचिर वि० अल्पजीवी, क्षणिक (२) हमणानु, तरतनु [स्त्री० वीजळी
अचिरद्युति, अचिरप्रभा, अचिरभास्
अचिरम्, अचिरस्य, अचिरात्, अचिराय, अचिरेण अ० बहु पहेला नहि तेम, हमणा, तरत, जलदी
अचिंतनीय वि० चिंतवी न शकाय तेवु; विचारमा न आवे तेवु
अचिंतित वि० ओचिंतु
अचिंत्य वि० जुओ 'अचिंतनीय'
अचेतन वि० चेतन वगरनु, निर्जीव (२) भान विनानु, बेशुद्ध [चित्त वगरनु
अचेतस् वि० चेतन वगरनु, अचेतन (२)
अचेष्ट वि० चेष्टारहित; क्रियारहित
अच्छ वि० स्वच्छ; निर्मळ; शुद्ध (२) पु० रीछ (३) स्फटिक
अच्छंदस् वि० वेद भणी न शके तेवु – यज्ञोपवीत-रहित (२) वेदाध्ययन माटे अनधिकारी (३) गद्यात्मक
अच्छिद्र वि० दोष वगरनु (२) काणा वगरनु (३) न० दोषरहित कार्य (४) दोषनो अभाव
अच्छिन्न वि० अखड
अच्छेद्य वि० टुकडा न करी शकाय तेवु
अच्छोद न० हिमालयना एक सरोवरनु नाम
अच्छोदन् वि० स्वच्छ पाणीवाळु
अच्युत वि० च्युत न थाय तेवु (२) अविनाशी (३) पु० विष्णु (४) कृष्ण
अज वि० नहि जन्मेलु; अनादि; सनातन (२) पु० परमात्मा, विष्णु, शकर, ब्रह्मा (३) जीवात्मा (४) चन्द्र (५) कामदेव (६) बकरो
अजगर पु० एक मोटो साप
अजन्मन् वि० जन्म विनानु, शाश्वत (२) पु० मोक्ष
अजपा स्त्री० वगर प्रयत्ने – श्वासोच्छ्वासथी थतो जाप (हस)
अजपाल पु० भरवाड
अजय वि० अजेय (२) पु० पराजय
अजया स्त्री० भाग

अजय्य वि० अजेय
अजर वि० जीर्ण के वृद्ध न थाय तेवु (२) अविनाशी (३) पु० देव
अजर्य वि० जुओ 'अजर' (२) न० मित्रता
अजस्र वि० न अटकतु, कायम रहेतु
अजस्रम् अ० सतत, कायम
अजा स्त्री० बकरी
अजागलस्तन पु० बकरीने गळे लटकतो आंचळ (२) तेवी निरुपयोगी वस्तु
अजात वि० नहि जन्मेलु (२) अविकसित
अजातशत्रु वि० जेने कोई शत्रु नथी तेवु (२) पु० युधिष्ठिरनु नाम
अजाति स्त्री० अनुत्पत्ति
अजानि पु० पत्नी विनानो पुरुष; विधुर
अजानिक वि० घेटा-बकरा चरावनार भरवाड
अजानेय पु० जातवान घोडो
अजि वि० गतिशील; चालतु (२) स्त्री० गति (३) फेंकवु ते
अजित वि० नहि जितायेलु (२) जीती न शकाय तेवु
अजिन न० आसन तरीके वपरातु वाघ वगेरेनु चामडु (खास करीने काळा मृगनु)
अजिर वि० उतावळु (२) न० आगणु, फळियु, रमतगमत वगेरे माटे रोकेली जगा (३) पु० देडको
अजिह्म वि० सरळ; सीधु (२) प्रमाणिक
अजिह्मग वि० सीधु जनार – चालनार (२) पु० बाण
अजीगर्त पु० साप
अजीर्ण वि० नहि पचेलु (२) जीर्ण नहि थयेलु (३) न० अपचो, अजीर्ण
अजीव वि० जीव विनानु, निर्जीव
अजेय वि० न जीती शकाय तेवु
अज्जुका, अज्जूका स्त्री० वेश्या (नाटकमा)
अज्ञ वि० नहि जाणतु (२) अज्ञानी; मूर्ख
अज्ञात वि० नहि जाणेलु, अजाण्यु (२) अणधार्यु
अज्ञातचर्या स्त्री०, अज्ञातवास पु० कोई न जाणे तेम गुप्त रहेवु ते, गुप्तवास
अज्ञान वि० अज्ञानी, मूर्ख (२) न० ज्ञाननो अभाव (३) अविद्या
अज्ञानिन् वि० जुओ 'अज्ञ'
अज्ञेय वि० न जाणी शकाय तेवु
अट् १ प० फरवु, रखडवु, भटकवु
अट वि० भटकनार, रखडनार
अटन न० फरवु – रखडवु – भटकवु ते
अटनि, अटनी स्त्री० धनुष्यनो खाचा-वाळो छेडो
अटल वि० दृढ, स्थिर
अटवि वि० जगल; अरण्य
अटविक पु० वनेचर, वनमा फरनार
अटवी स्त्री० जुओ 'अटवि'
अट्ट वि० ऊचु; मोटु (२) पु०, न० अटारी; झरूखो (३) किल्ला उपरनु सैन्यगृह (४) महेल (५) क्षौमवस्त्र (६) न० अन्न
अट्टहसित न०, अट्टहास पु०, अट्टहास्य न० मोटेथी खडखड हसवु ते
अट्टाल, अट्टालक पु० अटारी, झरूखो
अट्टालिका स्त्री० हवेली, महेल
अणक वि० तुच्छ; अधम
अणि पु० सोयनी अणि (२) सीमा, हद (३) गाडानी धरीनो खीलो
अणिमन् पु० सूक्ष्मता, नानापणु (२) नानु रूप धारण करवानी एक सिद्धि
अणिष्ठ वि० सौथी नानु
अणी स्त्री० जुओ 'अणि'
अणीयस् वि० वधारे नानु
अणु वि० घणु नानु (२) पु० परमाणु (३) नानामा नानो समयविभाग
अतट वि० तट वगरनु, सीधु; ऊभु (२) पु० पर्वतनी ऊभी भेखड
अतनु वि० नानु के पातळु नहि तेवु (२) अनग, कामदेव
अतपस्, अतपस्क वि० तप विनानु; असयमी
अतर्कित वि० अकल्पित, ओचितु

अतर्क्य वि० समजी न शकाय तेवु
अतल वि० तळिया विनानु, अगाध (२) न० सातमानु एक पाताळ
अतस् अ० आथी, तेथी (२) अहीथी; आमाथी (३) अत्यारथी
अतसी स्त्री० शण (२) अळसी [कुश
अतंत्र वि० ततु विनानु(वाद्य) (२) निरं-
अतंद्र, अतंद्रित, अतंद्रिल वि० आळस विनानु, चपळ (२) सावध; जाग्रत
अति अ० अतिशय, अमर्याद, हद बहारनु, —थी आगळ जतु, ए अर्थमा वपराय छे
अतिकथ वि० न मानवा जेवु(२)न कहेवा जेवु (३) नष्ट, मृत
अतिकथा स्त्री० अतिशयोक्तिवाळी वात (२) नकामी – अर्थ वगरनी वात
अतिकल्य न० वहेली सवार
अतिकाय वि० असाधारण कदनु
अतिकृच्छ्र वि० घणु मुश्केल (२) पु०, न० एक कठिन व्रत
अतिक्रम् १ उ० [अतिक्रामति – क्रमते], ४ प० [अतिक्राम्यति] हद बहार जवु; उल्लघन करवु (२) चडियातु थवु; श्रेष्ठ थवु (३) उपेक्षा करवी (४) वातल करवु (५) व्यतीत थवुं, पसार थवु (समयनु) (६) दबाववु, पकडवु
अतिक्रम पु० ओळगवु ते;उल्लघन (२) आक्रमण (३) पसार थवु ते (समयनु) (४) दबाववु ते —चडियाता थवु ते
अतिक्रमण न० मर्यादानु उल्लघन (२) अपराध; दोष (३) समयनु व्यतीत थवु ते
अतिक्रमणीय वि० ओळगवा जेवु (२) उपेक्षा करवा जेवु
अतिक्रांत वि० हद ओळगी गयेलु (२) चाल्यु गयेलु (३) वीती गयेलु (४) न० भूतकाळमा बनी गयेलु ते
अतिक्रांति स्त्री० उल्लघन
अतिग वि० (समासमा) चडियातु; श्रेष्ठ (२) घणु आगळ गयेलु; —थी वधारे
अतिगम् १ प० [अतिगच्छति] वीतवु (समयनु) (२) —थी वधी जवु (३) मटी जवु (४) उपेक्षा करवी (५) छटकी जवु
अतिगुण वि० उत्तम गुणवाळु, श्रेष्ठ (२) गुणहीन
अतिचर् १ प० उल्लघन करवु (२) बेवफा नीवडवु (३) उपेक्षा करवी (४) चडियाता थवु
अतिचार पु० उल्लघन, अतिक्रम (२) ग्रहोनु एक राशिमाथी बीजी राशिमा जवु ते, ग्रहोनो गतिमार्ग
अतिच्छत्र पु० बिलाडीनो टोप
अतिजीव् १ प० —नी पछी जीवता रहेवुं (२) वधु सरस रीते जीववु
अतितमाम् अ० सौथी वधारे, अत्यत (२) सौथी ऊचु (पदवीमा)
अतितराम् अ० घणु वधारे (२) घणु ऊचु (पदवीमां)
अतितॄ १ प० ओळगी जवु
अतिथि पु० महेमान, परोणो
अतिथिदेव वि० अतिथिने देव गणतु
अतिनिद्र वि० अत्यत निद्रावाळु (२) निद्रारहित
अतिपत् १ प० उल्लघन करवु —प्रेरक० मोडु करवु (२) उपेक्षा करवी; अनादर करवो (३) पसार थाय तेम करवु (४) बिनअसरकारक करवु (५) खेंची जवु; आचकी जवुं
अतिपतन न० वही जवु ते (समयनु) (२) उल्लघन (३) उपेक्षा; अनादर
अतिपत्ति स्त्री० वही जवु – वीती जवु ते (समयनु) (२) उल्लघन (३) निष्पत्ति न थवी ते
अतिपद् ४ आ० अतिक्रमवु(२)उल्लघन करवु [– सबध
अतिपरिचय पु० वधारे पडतो परिचय
अतिपात पु० वही जवु ते (समयनु) (२) उल्लघन (३) उपेक्षा, अनादर (४)

आवी पडवु ते (जेम के दु खनु) (५) विरोध (६) नाश [(समासमा)
अतिपातिन् वि० वेगमा पाछळ पाडी देतु
अतिप्रबंध पु० अतिवेगथी के एक पछी एक जलदी आववु ते
अतिप्रवृद्ध वि० अतिशय वधी गयेलु (२) प्रबळ के आक्रमक बनेलु
अतिप्रश्न पु० मर्यादा बहारनो प्रश्न (२) पूरतो जवाब मळवा छता फरी करातो प्रश्न
अतिप्रसग स्त्री० अत्यत आसक्ति (२) अति निकटता (३) तोछडापणु
अतिभू १ प० नीकळवु, ऊभु थवु (२) –थी वधी जवु
अतिभूमि स्त्री० पराकाष्ठा, अतिम हद (२) मर्यादानु उल्लघन
अतिमर्त्य वि० जुओ अतिमानुष
अतिमर्याद वि० मर्यादा बहारनु
अतिमात्र वि० प्रमाण बहारनु; अतिशय
अतिमात्रम् अ० वधारे पडतु होय तेम
अतिमानुष वि० माणसथी न थई शके तेवु
अतिमाय वि० मायाथी पर, मुक्त
अतिमुक्त वि० ससारनी मायाथी मुक्त (२) मोती (–ना हार)थी चडियातु (३) पु० एक लता (माधवी लता) (४) एक वृक्ष [वृक्ष
अतिमुक्तक पु० माधवी लता (२) एक
अतिमृत्यु वि० मृत्युने तरनारु (२) पु० मोक्ष
अतिया २ प० उल्लघन करवु, आज्ञानो भग करवो (२) चडियातु थवु
अतियात वि० वेगवतु
अतिरथ पु० बिनहरीफ योद्धो (रथमा बेसी लडनारो)
अतिरभस पु० अतिशय वेग
अतिरहस् वि० घणु झडपी – वेगीलु
अतिरिक्त वि० श्रेष्ठ – चडियातु (२) जुदु, भिन्न (३) खाली (४) अतिशय (५) वधारे पडतु, वधारानु
अतिरिच् (घणुखरु कर्मणि प्रयोगमा) –थी वधी जवु (२) वधारानु होवु
अतिरूप वि० अति रूपाळु (२) रूप वगरनु (३) पु० निराकार (ब्रह्म)
अतिरेक पु० अधिकता; अतिशयता (२) भिन्नता (३) वधारो, नकामो वधारो
अतिरोमश, अतिलोमश वि० घणा वाळवाळु (२) पु० मोटो वानर (३) जगली बकरो
अतिवर्तन न० क्षमा करवा योग्य अपराध
अतिवर्तिन् वि० चडियातु, श्रेष्ठ (२) उल्लघन करनार
अतिवह् १ प० पार लई जवु –प्रेरक० पसार करवु (समय) (२) –थी छटकवु (३) उपाडीने लाववु, खसेडवु (४) अनुसरवु (मार्ग)
अतिवाद पु० कठोर वाणी, निंदा, ठपको (२) वधारीने बोलवु ते (३) वधारे बोलवु ते
अतिवादिन् वि० बहु बोलनार (२) बीजानु तोडी पाडी पोतानी वात कहेनार
अतिवाहक पु० जीवना सूक्ष्म शरीरने दोरी जनार देव
अतिवाहन न० पसार करवु – व्यतीत करवु ते (२) अत्यत परिश्रम करवो ते; भारे बोजो ऊचकी जवो ते (३) दूर करवु ते [करेलु
अतिवाहित वि० पसार करेलु, व्यतीत
अतिविष्ठित वि० वीरताथी लडनारु (२) मर्यादानु उल्लघन करनारु
अतिवृत् १ आ० ओळगी जवु, उल्लघन करवु (२) पसार थवु (समयनु) (३) उपेक्षा करवी
अतिवृष्टि स्त्री० वधारे पडतो वरसाद
अतिवेल वि० मर्यादाने ओळगी गयेलु
अतिवेलम् अ० अत्यत (२) कवखते
अतिव्याप्ति स्त्री० लक्ष्य न होय तेवी वस्तुनो समावेश थवो ते (२) नियमनो गमेतेम खेंचीने विस्तार करवो ते

अतिशय वि० अधिक; घणु(२)श्रेष्ठ(३) पु० आधिक्य (४) श्रेष्ठता
अतिशयित वि०अधिक(२)ओळगी गयेलु
अतिशयिन् वि० अधिक, श्रेष्ठ
अतिशयोक्ति स्त्री० अत्युक्ति, वधारीने कहेवु ते (२) ए नामनो अलकार
अतिशी २ आ० चडियातु थवु, श्रेष्ठ थवु (२) हदथी वधारे ऊघवु [जवु –प्रेरक० [अतिशाययति] –थी वधी
अतिसर्ग वि० नित्य(२)मुक्त(३)पु०दान (४) परवानगी; रजा (५)काढी मूकवु ते
अतिसर्जन न० आपी देवु ते(२)उदारता (३)मारी नाखवु ते (४) वियोग
अतिसंधा ३ उ० छेतरवु
अतिसंधान न० छेतरपिंडी
अतिसार पु० सग्रहणीनो व्याधि
अतिसृज् ६ प० आपवु, आपी देवु (२) त्याग करवो;काढी मूकवु(३)परवानगी आपवी
अतिस्नेह पु० अति प्रेम
अती (अति+इ) २ प० उल्लघन करवु; ओळगी जवु (२)पराजय करवो (३) श्रेष्ठ थवु (४) उपेक्षा करवी (५)समयनु पसार थवु – वही जवु (६) वधी जवु; वधारे होवु (७) मरण पामवु
अतीत वि० ओळगी गयेलु (२) वीतेलु (३) समाप्त थयेलु (४) मृत
अतीव अ० घणु ज [(२) न० मन
अतींद्रिय वि० इद्रियथी पर – अग्राह्य
अतुल, अतुल्य वि० जेनी तुलना न थई शके तेवु, अनुपम
अतुषार वि० उष्ण, गरम
अतुषारकर, अतुहिनकर पु० सूर्य
अत्यय पु० व्यतीत थवु ते, अत, नाश (२)विपत्ति, जोखम, मुश्केली (३) दोष, अपराध (४) हुमलो (५) समजवु – समजाववु ते (६) उपर थईने चालवु – जवु ते
अत्यर्थ वि० प्रमाण बहारनु, अतिशय
अत्यर्थम् अ० घणु वधारे होय तेम
अत्यंकुश वि० निरकुश
अत्यत वि० घणु वधारे (२) अनत, शाश्वत (३) सपूर्ण, पूरेपूरु
अत्यंतगत वि० हमेशने माटे गयेलु
अत्यंतम् अ० घणु वधारे होय तेम (२) मरता सुधी (३) सपूर्णपणे
अत्यंताभाव पु० सपूर्ण अभाव
अत्याचार पु० शास्त्रविरुद्ध कार्य – निषिद्ध कार्य
अत्यारूढ वि० अतिशय वधी गयेलु
अत्यारूढि स्त्री० अति ऊचु स्थान –प्रसिद्धि [(३) साहस
अत्याहित न० सकट; विपत्ति(२)दुर्भाग्य
अत्युक्ति स्त्री० अतिशयोक्ति
अत्र अ० अही
अत्रत्य वि० आ स्थळनु
अत्रप वि० शरम वगरनु
अत्रभवत् वि० 'मान्य', 'पूज्य', 'आपश्री' –ए अर्थमा (सामे ऊभेल माटे) मानवाचक सबोधन (स्त्री० अत्रभवती)
अत्रस्त वि० बीक वगरनु, निर्भय
अत्रस्थ अ० अहीनु, आ स्थळनु (२) स्थानिक
अत्रातरे अ० आ दरम्यान
अत्रि पु० ब्रह्माना पुत्र अत्रि ऋषि, सप्तर्षिओमाना एक
अथ अ० ग्रथारभे वपरातो मगल शब्द (२) पछी; अनतर (३) 'जो एम मानीए तो' – एम बीजो पक्ष बतावे (४) अने (५) प्रश्न बतावे (६) तमाम – सपूर्ण एवो अर्थ बतावे (७) सशय – विकल्प बतावे
अथ किम् अ० 'हा', 'एम ज' – एवो अर्थ बतावे [बतावे
अथ च अ० 'ते ज प्रमाणे' – एवो अर्थ
अथ तु अ० 'पण', 'तेथी ऊलटु' – एवो अर्थ बतावे
अथर्व न० अथर्व वेद

अथर्वण पु० शंकर भगवान (२) अथर्व वेद
अथर्वन् पु० एक ब्राह्मण (२) एक मुनि (३) अथर्व वेद (४) शंकर (५) वसिष्ठ
अथवा अ० किंवा, के
अथातः अ० 'माटे' 'हवे' – एवो अर्थ बतावे
अथो अ० ('अथ' शब्दना जेवा घणाखरा अर्थमा)
अद् २ प० खावु, खाई जवु (२) नाश करवो
अदक्षिण वि० डाबु (२) होशियार-चालाक नहि तेवु (३) दक्षिणा वगरनु (यज्ञ इ०)
अदत्त वि० नहि अपायेलु (२) अयोग्य रीते अपायेलु (३) नहि परणावेलु
अदत्ता स्त्री० नहि परणावेली कन्या
अदत्तादायिन् वि० जे लेवानी अनुमति न होय ते लेनार (चोर)
अदभ्र वि० पुष्कळ
अदय वि० क्रूर, निर्दय
अदयम् अ० खूब ज तीव्रताथी – जुस्साथी
अदर्शन न० जोवु नहि ते (२) दर्शननो अभाव – लोप (३) गेरहाजरी
अदस् वि० (स० ना०) पेलु
अदायाद वि० वारस वगरनु (२) वारस थवानो जेने हक न होय तेवु
अदिति स्त्री० कश्यप ऋषिनी पत्नी, –देवोनी माता (२) पृथ्वी (३) वाणी (४) गाय
अदीन वि० दीन नहि तेवु, जुस्सादार (२) पैसादार
अदृश्य वि० देखी न शकाय तेवु
अदृष्ट वि० नहि जोयेलु (२) अणधार्यु (३) न० भाग्य, नसीब (४) नहि कल्पेली आफत
अदृष्टि वि० आधळु (२) स्त्री० क्रूर दृष्टि; वक्र दृष्टि (३) न देखावु ते
अदेय वि० न आपवा के आपी देवा जेवु
अदेश पु० अयोग्य के अनुचित स्थान
अद्धा अ० यथार्थ होय तेम (२) स्पष्ट होय तेम (३) नक्की होय तेम (४) आम; आ प्रमाणे
अद्भुत वि० आश्चर्यकारक (२) अलौकिक (३) पु० अद्भुत रस (४) न० आश्चर्य (५) आश्चर्यकारक बनाव
अद्मर वि० अकरांतियु खानार
अद्य अ० आज, आजे
अद्य त्रि० खावा लायक
अद्यतन वि० आजने लगतु; आजनु (२) आधुनिक
अद्यपूर्वम् अ० आज पहेला
अद्यप्रभृति अ० आजथी मांडीने
अद्यापि अ० हजु पण
अद्यावधि अ० आजथी मांडीने
अद्रव्य न० नकामी वस्तु
अद्रि पु० पर्वत (२) सूर्य (३) वृक्ष (४) इन्द्रनु वज्र (५) वादळ; वादळांनो समूह (६) एक जातनु परिमाण–माप (७) 'सात'-नी संख्या
अद्रिकन्या स्त्री० पार्वती
अद्रिपति पु० हिमालय पर्वत
अद्रिसार पु० लोढु
अद्रिसुता स्त्री० पार्वती
अद्रिहन् पु० इन्द्र
अद्रोह पु० द्रोहनो अभाव
अद्वय वि० एक (२) अद्वितीय (३) न० ऐक्य, अद्वैत
अद्वितीय वि० अजोड; सर्वश्रेष्ठ (२) एकलु
अद्वैत वि० द्वैतभाव-रहित (२) न० ऐक्य; अभेद
अद्वैतवादिन् पु० वेदांती
अद्वैध वि० जुदाईना भाव विनानु
अधम वि० नीच, हलकु (२) दुष्ट
अधमर्ण, अधमर्णिक पु० देवादार
अधमाग न० पग
अधर वि० नीचेनु (२) हलकु; नीच (३) आगळनु के पाछळनु (४) पु० नीचलो होठ
अधरतः, अधरतात् अ० नीचे; तळे; तळिये
अधरपान न० होठ उपर चुम्बन
अधरस्तात्, अधरस्मात् अ० नीचे, तळे; तळिये

अधरात् अ० नीचे, तळिये
अधरीकृ ८ उ० पाछळ पाडी देवु,हरावबु
अधरीभू १ प० खोटु ठरवु (अदालतमा)
अधरेद्युः अ० आगले दिवसे (२) गई कालने आगले दिवसे
अधरोत्तर वि० श्रेष्ठ अने कनिष्ठ(२) दूरनु अने नजीकनु (३) हमणानु अने पछीनु(४)अधिक अने न्यून(५)वहेलु अने मोडु (६) ऊलटी रीते
अधरौष्ठ पु० नीचलो होठ
अधर्म पु० शास्त्रविरुद्ध आचरण (२) अनीति (३)पाप
अधर्मिन् वि० धर्म विरुद्ध वर्तनारु, पापी
अधर्म्य वि०धर्मविरुद्ध (२) गेरकायदेसर
अधवा स्त्री० विधवा
अधश्चर पु० चोर
अधस् अ० नीचे, तळे [ति
अधस्करण न० हरावबु ते(२)नीचु पाडवु
अधस्तन वि० नीचे आवेलु – रहेलु
अधस्तल न० नीचेनु तळ, नीचेनो भाग
अधस्तात् अ० नीचे; तळे [अधोगति
अधःपात पु० नीचेनी तरफ पडवु ते,
अधि अ० उपर, ऊचे, अधिक, श्रेष्ठ, -ने लगतु, वधारानु, ए अर्थमा वपराय छे
अधिक वि० वधु, वधारे(२)मोटु(३) प्रख्यात(४)वधारानु(५)न० वधारो(६) नकामापणु(७)अ० वधारे, वधारे पडतु
अधिकरण न० अधिकारे – पदे नियुक्त करवु ते(२) स्थान(३) आश्रय(४) वाक्यमा शब्दनो सबध (५) विषय, प्रकरण, खड (६) अधिकार, हक (७) पूर्णस्वामित्व (८) न्यायमदिर (९) सरकारी खातु
अधिकर्द्धि (अधिक+ऋद्धि) वि० अतिशय वैभवसपन्न
अधिकाम वि० अतिशय कामनावाळु
अधिकार पु० सत्ता, पदवी (२)सोपेलु काम(३)राज्यव्यवस्था (४)स्वामित्वनो हक (५) ग्रथविभाग – प्रकरण (६)मुख्य नियम, जे बीजा नियमो पर अधिकार चलावे छे (७) शब्दनो वाक्यमा सबध
अधिकारवत्, अधिकारिन् वि० अधिकारवाळु; सत्तावाळु(२)योग्य;उचित (३) पु० व्यवस्थापक, अधिकारी (४) हकदार, वारसदार
अधिकृ ८ उ० अधिकार होवो – आपवो (२) सबध होवो; अनुलक्षवु (३) सहन करवु, अनुभववु (४) वश करवु, चडियाता थवु
अधिकृत वि० अधिकार पामेलु, नीमेलु (२) पु० अधिकारी, निरीक्षक
अधिकृत्य अ० उद्देशीने, सबधमा
अधिक्रम् १ उ० [अधिक्रामति–क्रमते] ऊचे चडवु (२) आक्रमण करवु
अधिक्षिप् ६ प० अपमान करवु (२)निंदा करवी; गाळ देवी (३) उपर नाखवु – फेकवु (४) –थी चडियाता थवु; पाछळ पाडी देवु
अधिक्षेप पु० अपमान, निंदा, गाळ (२) काढी मूकवु ते (३) फेकवु – नाखवु ते
अधिगण् १० उ० गणतरी करवी (२) ऊची किंमत आकवी
अधिगत वि० जाणेलु (२) प्राप्त करेलु
अधिगम् १ प० [अधिगच्छति] प्राप्त करवु; मेळववु (२) नजीक पहोचवु – जवु (३) जाणवु (४) सग करवो
अधिगम पु०, **अधिगमन** न० ज्ञान (२) प्राप्ति; लाभ (३) अभ्यास (४) स्वीकार (५) सग, समागम
अधिगुण वि० उत्कृष्ट; अधिक गुणवाळु (२)सारी रीते खेंचेलु (जेमके धनुष्यनी पणछ)
अधिज्य वि० पणछ चडावेलु (धनुष्य)
अधिज्यकार्मुक,अधिज्यधन्वन् वि० जेणे धनुष्यनी पणछ चडावी छे तेवु
अधित्यका स्त्री० पर्वतनी ऊची भूमि

अधिदेव पु०, **अधिदेवता** स्त्री०, **अधिदैव**, **अधिदैवत** न० श्रेष्ठ देव (२) अधिष्ठाता देव [अमलदार
अधिप, अधिपति पु० राजा (२) उपरी-
अधिपांशुल वि० उपरथी धूळवाळु
अधिप्रज वि० घणा संतानवाळु
अधिप्रजम् अ० प्रजा – संततिनी बाबतमां
अधिभू पु० स्वामी, श्रेष्ठ व्यक्ति
अधिभूत वि० पंचभूत वगेरेने लगतु (२) न० जड सृष्टि (३) परमतत्त्व
अधिमात्रम् अ० अत्यंत, अमाप
अधियज्ञ वि० यज्ञने लगतु (२) पु० सर्व यज्ञना अभिमानी विष्णु (३) मुख्य यज्ञ
अधिरथ वि० रथारूढ (२) पु० सारथि
अधिराज्, अधिराज पु० सार्वभौम राजा, चक्रवर्ती राजा [सर्वोपरी राज्य
अधिराज्य, अधिराष्ट्र न० साम्राज्य,
अधिरुह् १ प० उपर चडवु (२) सवारी करवी
–प्रेरक० [अधिरोह(-प)यति] उपर चडाववु (२) फरी पाछु स्थापित करवु (३) पणछ चडाववी (४) अर्पवु
अधिरूढ वि० उपर चडेलु, आरूढ थयेलु (२) अत्यंत वृद्धि पामेलु
अधिरोहण न० उपर चडवु ते
अधिवस् १ प० रहेवास करवो (२) २ आ० पहेरवु (वस्त्र)
अधिवास पु० निवासस्थान, निवास (२) खुशबो (३) यज्ञना आरंभमां देवतानु स्थापन (४) जन्मस्थान (५) भूख्या बेसी करेलु धरणु
अधिवासित वि० स्थापित करेलु (देवता) (२) सुगंधयुक्त करेलु [युक्त
अधिवासिन् वि० रहेलु, वसतु (२) सुगंध-
अधिविद् ६ उ० [अधिविन्दति-ते] एक उपर बीजु परणवु
अधिवेद, अधिवेदन पु० एक जीवती उपर बीजी स्त्री परणवी ते
अधिशी २ आ० –नी उपर सूवु (२) रहेवास करवो (३) –मां बेसवु
अधिष्ठा (अधि+स्था) १ प० [अधि-तिष्ठति] ऊभु रहेवु (२) उपर बेसवु (३) आचरवु, –नु अनुष्ठान करवु (४)-मां वसवु – रहेवु (५)-ना स्वामी बनवु; जीतवु – वश करवु (६) दोरवु; शासन करवु (७) उपयोग करवो
अधिष्ठातृ वि० नियममां राखनारु, नियामक (२) पु० अध्यक्ष, उपरी-अमलदार
अधिष्ठान न० स्थान, निवासस्थान (२) आश्रय (३) सत्ता (४) राज्य-सत्ता (५) पैडु (६) आशीर्वाद (७) बेठक, आसन, शय्या
अधिष्ठित वि० रहेलु (२) उपरी थईने रहेलु (३) स्थापेलु, नीमेलु (४) वसेलु
अधिस्यन्दम् अ० वधु वेगथी
अधी (अधि+इ) २ आ० अभ्यास करवो; भणवु; शीखवु (२) २ प० याद करवु
–प्रेरक० भणाववु, शीखववु
अधीकार पु० जुओ 'अधिकार'
अधीत वि० शीखेलु (२) जाणेलु (३) न० अध्ययन, अभ्यास
अधीति स्त्री० अभ्यास (२) याद
अधीतिन् वि० जेणे अभ्यास कर्यो छे तेवु, निपुण
अधीन वि० पराधीन, परतंत्र
अधीयान पु० विद्यार्थी (२) वेदनो अभ्यासी
अधीर वि० उतावळु (२) चंचळ (३) क्षुब्ध, गभरायेलु (४) बीकण
अधीरा स्त्री० कलहप्रिय स्त्री (२) वीजळी
अधीवास पु० लांबो डगलो [सम्राट
अधीश, अधीश्वर पु० सार्वभौम राजा,
अधुना अ० हमणां, हवे, आ समये
अधुनातन वि० आधुनिक
अधृति स्त्री० धैर्य – धारणानो अभाव

अधृष्य वि० अजेय; जेना उपर आक्रमण न थई शके एवु (२)नम्र; शरमाळ (३) गर्विष्ठ [अगोचर)
अधोऽक्षज पु० विष्णु (इद्रियज्ञानथी
अधोगति स्त्री० दुर्दशा, अवनति
अधोगमन न० नीचे जवु ते(२)अवनति; पडती
अधोदृष्टि स्त्री० नीची नजर
अधोद्वार न० गुदा
अधोऽधस् अ० वधु ने वधु नीचे
अधोमुख वि० नीचा मुखवाळु, नीचु मुख करेलु
अधोलोक पु० नीचेनी दुनिया – पाताळ
अधोवायु पु० अपानवायु
अध्यक्ष वि० दृष्टिगोचर (२) उपर नजर राखनार, नियता (३) पु० प्रमुख, मुख्य अधिकारी
अध्यक्षर न० 'ॐ' ए अक्षर – पद
अध्यय पु०, **अध्ययन** न० अभ्यास
अध्यवसान न० प्रयत्न; उद्योग; खत(२) तादात्म्य, तद्रूपता
अध्यवसाय पु० प्रयत्न; उद्योग; खत(२) निश्चय (३) उत्साह [उत्साहवाळु
अध्यवसायिन् वि० निश्चयवाळु (२)
अध्यवसो ४ प० निश्चित करवु (२) उत्साहवाळा थवु [खरु मानी लीधेलु
अध्यस्त वि० आरोपण करायेलु,खोटाने
अध्याक्रम् १ उ० [अध्याक्रामति-क्रमते] हुमलो करवो (२) जईने वेसवु – रहेवु
अध्याक्रांत वि० कबजो लेवायेलु, प्रवेशायेलु
अध्यागम् १ प० [अध्यागच्छति] जडवु; मळवु
अध्याचरित वि० वपरायेलु [परब्रह्म
अध्यात्म वि० आत्मा सवन्धी (२)न०
अध्यात्मचेतस् पु० आत्मानु चितन करनारु [वेदातनु ज्ञान
अध्यात्मज्ञान न० आत्मज्ञान; ब्रह्मज्ञान;
अध्यात्मम् अ० आत्माने लगतु होय तेम
अध्यात्मयोग पु० आत्मानु ध्यान
अध्यात्मरति वि० आत्मचितनमा मग्न रहेनारु [विद्या
अध्यात्मविद्या स्त्री० ब्रह्मविद्या, आत्म-
अध्यात्मिक वि० आत्मा सबधी;अध्यात्मने लगतु
अध्यापक पु० शिक्षक; विद्या आपनार
अध्यापन न० शिक्षण, शीखववु ते
अध्यापयितृ पु० शिक्षक, भणावनार
अध्याय पु० अध्ययन, अभ्यास (२) प्रकरण; सर्ग; परिच्छेद (३) अभ्यासनो योग्य समय
अध्यायिन् वि० भणनारु (विद्यार्थी)
अध्यारुह् १ प० उपर चडवु (२) –थी अधिक थवु
–प्रेरक० [अध्यारोपयति] उपर चडाववु (२) आरोपण करवु (३)जेवु न होय तेवु तेने मानवु [(३) दवायेल
अध्यारूढ वि० उपर चडेलु (२)चडावेलु
अध्यारोप पु० आरोपवु ते – वस्तुमा अवस्तुनु आरोपण करवु ते; भूल भरेलु ज्ञान
अध्यास् २ आ० रहेवु,स्थित थवु;स्थिति करवी (२)होद्दानो स्वीकार करवो (३) प्रवेश करवो; कबजो लेवो (४)समागम करवो
अध्यास पु० खोटु आरोपण,मिथ्याज्ञान (२)उप-प्रकरण (३)उपर वेसवु – रहेवु ते (४) उपर मूकवु ते
अध्यासित वि० वेठेलु, रहेलु (२)न० उपर वेसवु ते
अध्याहरण न०, **अध्याहार** पु० अर्थना स्पष्टीकरण माटे अनुक्त पद उमेरवु ते (२) अनुमान, तर्क
अध्याहृ १ उ० अध्याहार करवो
अध्युषित ('अधि+वस्'नु भू० कृ०) वि० वास करायेलु

अध्युषिते अ० मळसके, प्रभात समये
अध्युष्ट वि० साडा त्रण
अध्यूढ ('अधि+वह्'नु भू० कृ०) वि० अवलंबित (२) घणी समृद्धि के वृद्धि-वाळु (३) पु० कन्यावस्थामा थयेलो पुत्र [कर्युं छे ते स्त्री
अध्यूढा स्त्री० जेना पतिए बीजु लग्न
अध्येतृ पु० विद्यार्थी, शिष्य
अध्येत्री स्त्री० विद्यार्थिनी [चंचळ
अध्रुव वि० अनिश्चित (२) क्षणिक,
अध्वग पु० मुसाफर; वटेमार्गु (२) सूर्य
अध्वगामिन् वि० मार्गे जनारु;मुसाफरी करनारु [आकाश
अध्वन् पु० मार्ग, रस्तो (२) काळ (३)
अध्वर पु० यज्ञ [जाणनार ब्राह्मण
अध्वर्यु पु० यज्ञ करावनार, यजुर्वेद
अध्वांत न० परोढ के संध्याकाळनो प्रकाश (२) मुसाफरीनो अंत
अनक्षर वि० मूगु, अवाचक (२) अभण (३) बोलवाने अयोग्य (शब्द)
अनगार वि० घर विनानु
अनग्नि वि० अग्निहोत्र विनानु (२) सन्यासी (३) न परणेलु
अनघ वि० पाप वगरनु; पवित्र (२) दोष विनानु; सुन्दर (३) आपत्ति के विपत्ति विनानु
अनडुह पु० बळद
अनति अ० घणु वधारे नहि तेम
अनतिक्रम पु० अतिक्रम – उल्लंघननो अभाव, मध्यमसरता
अनतिक्रमणीय वि० उल्लंघन न करी शकाय के न करवा जेवु
अनद्यतन वि० आजनु नहि तेवु
अनधिकारचर्चा स्त्री० अधिकार–लायकात विना चर्चा करवी ते
अनधिगत वि० न मेळवेलु (२) नहि भणेलु
अनधिगतमनोरथ वि० जेना मनोरथ पूर्ण नथी थया तेवु – निराश
अनध्ययन न०, अनध्याय पु० न भणवानो; रजानो दिवस
अनन्य वि० बीजु नहि तेवु – अभिन्न (२) अद्वय, अपूर्व (३) एकाग्र, एकनिष्ठ
अनन्यगति स्त्री० एक ज मार्ग, एक ज आश्रय [उपाय विनानु
अनन्यगतिक त्रि० बीजा आश्रय के
अनन्यचित्त, अनन्यचेतस् नि० एकाग्र चित्तवाळु
अनन्यपूर्व पु० बीजी पत्नी विनानो पुरुष
अनन्यपूर्वा स्त्री० कदी बीजानी नथी थई तेवी स्त्री – कुमारिका
अनन्यभाज् वि० बीजा कोईने न भजतु; वफादार
अनन्यमनस् वि० जुओ 'अनन्यचित्त'
अनन्यविषय वि० बीजा कोईने लागु न पडतु
अनन्यसाधारण त्रि० असामान्य
अनन्वय पु० संबंधनो अभाव
अनन्वित वि० संबंध विनानु (२) असंगत (३) साथे न होय तेवु, विनानु
अनपकार पु० कोईनु अहित न करवु ते
अनपग वि० स्थिर, दृढ
अनपत्य वि० निःसंतान, वाझियु
अनपत्रप वि० शरम विनानु
अनपराध, अनपराधिन् वि० अपराध विनानु; निरपराधी [शाश्वतपणु
अनपाय वि० अविनाशी; अक्षय (२) पु०
अनपायिन् वि० शाश्वत; स्थिर
अनपेक्ष,अनपेक्षिन् त्रि०अपेक्षा – दरकार विनानु (२) लालसा वगरनु, निःस्पृही (३) संबंधथी पर
अनपेत वि० दूर नहि गयेलु (२) युक्त; सहित (३) छूटु न पडतु, वळगी रहेतु
अनभिज्ञ वि० अज्ञानी; मूर्ख (२) अपरिचित, अजाण्यु
अनय पु० अव्यवस्था (२) अनीति (३) दुःख, विपत्ति (४) छळ, कपट
अनर्गल वि० निरंकुश, छूटु

अनर्घ वि० अमूल्य (२) पु० खोटी के अयोग्य किंमत
अनर्घ्य वि० अमूल्य(२)सौथी वधु पूज्य
अनर्थ वि०निरुपयोगी;नकामु(२)अभागी (३) नुकसानकारक; अनिष्ट (४) अर्थ वगरनु (५) पु० निरुपयोगिता (६) प्रयोजन के उपयोग विनानी वस्तु (७) अनिष्ट, आफत
अनर्थक, अनर्थ्य वि० अर्थ वगरनु (२) प्रयोजन विनानु, लाभ वगरनु (३) दुर्भागी (४) न० निरर्थक प्रलाप
अनर्ह वि० अयोग्य, लायक नहि तेवु
अनल पु० अग्नि (२) जठराग्नि (३) क्रोधाग्नि [तेम
अनलम् अ० बस नहि तेम, पूरतु नहि
अनलस वि० आळस विनानु, उद्योगी
अनल्प वि० घणु; पुष्कळ [विनानु
अनवकाश वि० अवकाश-प्रसग-तक
अनवगीत वि० निंदित नहि तेवु
अनवग्रह वि० काबूमा न रहे तेवु
अनवच्छिन्न वि० छूटु पाडेलु नहि तेवु (२) सीमा के मर्यादा नहि करायेलु (३) निश्चित नहि करायेलु [अनिंदित
अनवद्य वि० दोप–खोड विनानु;
अनवरत वि० सतत, निरतर
अनवसर वि० अवकाश–फुरसद वगरनु (२) उचित काळ विनानु
अनवसित वि० पूरु न थयेलु, असमाप्त
अनवस्थ वि० अस्थिर, चचळ
अनवस्था स्त्री० अस्थिरता (२) अनिश्चितता (३) निर्णय अथवा छेडो न आववो ते; एक तर्कदोप [राखवी ते
अनवेक्षण न० काळजी–तपास न
अनशन न० उपवास (२) आमरणात उपवास [विनानु
अनसुय, अनसूयक वि० असूया–अदेखाई
अनग वि० अगरहित (२) पु० कामदेव
अनंगलेख पु० प्रेमपत्र
अनगशत्रु पु० शकर भगवान
अनजन वि० आजण विनानु (२) दोप विनानु (३) कशा सबध विनानु
अनंत वि० अपार (२) शाश्वत (३) पु० शेषनाग
अनतर वि० पछीनु (२) नजीकनु (३) अतर वगरनु–सतत, अखड
अनंतरम् अ० तरत ज (२) पछीथी
अनंतराय वि० अतराय–बाधा विनानु
अनतरीय वि० क्रममा तरत ज पछीनु
अनंद वि० आनदरहित, दु खपूर्ण
अनागत वि० नहि आवेलु (२) नहि मळेलु (३) भावि; भविष्यकाळनु [माणस
अनागतविधातृ पु० अगमचेतीवाळो
अनागस् वि० निर्दोष, निरपराधी
अनाघ्रात वि० नहि सूघेलु; नहि भोगवेलु
अनाचार वि० शास्त्रविहित आचारो न आचरनारु; निषिद्ध आचार आचरनारु
अनात्मन् वि० आत्मा, मन वगेरे विनानु (२) शरीरने लगतु (३) जेणे आत्मा जीत्यो नथी तेवु, अजितेंद्रिय (४) पु० शरीर वगेरे जड वस्तु
अनात्मक वि० आत्मा जेवी स्थिर वस्तु विनानु, क्षणिक
अनाथ वि० आश्रय वगरनु, असहाय (२) मावाप–स्वामी वगेरे विनानु
अनादर वि० आदर विनानु (२) पु० तिरस्कार, अपमान [तेवु
अनादि वि० जेनो आरम्भ के जन्म नथी
अनादिनिधन वि० आदि तथा अत विनानु [विनानु
अनादिमध्यान्त वि० आदि–मध्य–अत
अनादीनव वि० दूपण वगरनु
अनादृत वि० अनादर करायेलु; अनादर पामेलु [नथी तेवु, शाश्वत
अनाद्यनत वि० जेनो आरम्भ के अत
अनाधृष्ट, अनाधृष्य वि० न जीती के दबावी शकाय तेवु
अनापद् स्त्री० आपत्तिनो अभाव

अनाप्त वि० न मेळवेलु (२) मेळववामा निष्फळ गयेलु (३) अकुशळ (४) पु० अजाण्यो [पु०, न० आरोग्य; सुख
अनामय वि० नीरोगी, दुःखरहित (२)
अनामा, अनामिका स्त्री० टचली आगळी पासेनी आगळी
अनायत वि० असयत (२) टूकु
अनायत्त वि० परवश नहि तेवु, स्वतत्र
अनायास वि० प्रयत्न वगरनु (२) सहेलु; मुश्केल नहि तेवु (३) पु० मुश्केलीनो अभाव (४) सुगमता [तेवु
अनायुष्य वि० आयुष्यने हितकर नहि
अनारतम् अ० अनवरत, सतत
अनारभ पु० (कार्यनो) आरभ नहि करवो ते
अनारभण वि० आलबन विनानु
अनारोग्य वि० आरोग्यने प्रतिकूळ (२) न० मादगी, मदवाड [कन्या
अनार्तवा स्त्री० रजस्वला न थयेली
अनार्य वि० आर्यने न छाजे तेवु, हलकु (२) असभ्य (३) आर्यो विनानु (४) आर्य नहि ते जातिनु [सेवेलु
अनार्यजुष्ट वि० आर्योए न आचरेलु–
अनालव वि० आलबन वगरनु, निराधार
अनावर्तिन् वि० फरीथी पाछु न फरतु
अनाविद्ध वि० अणवीध्यु
अनाविल वि० स्वच्छ, निर्मळ
अनावृत वि० नही ढकायेलु, खुल्लु
अनावृत्त वि० पहेली वारनु, फरीवारनु नहि तेवु [मोक्ष
अनावृत्ति स्त्री० पाछु नहि फरवु ते (२)
अनावृष्टि स्त्री० वरसाद नहि थवो ते, दुष्काळ [नाशरहित
अनाश वि० आशा विनानु; निराश (२)
अनाशक वि० यथेच्छ भोग के भोजन रहित (२) नाशरहित (३) न० उपवास; आमरणात उपवास [रहित
अनाश्रव वि० न साभळतु (२) कर्मबध-
अनाश्वस् वि० भूख्यु, उपवासी

अनाश्वास वि० आधार लई न शकाय तेवु (२) अ० विश्रातिरहितपणे
अनास्था स्त्री० अनादर (२) अश्रद्धा
अनाहत वि० नहि हणायेलु – घवायेलु (२) कोरु; नवु; न वापरेलु (३) वगाडचा विना एनी मेळे थतु (ध्वनि) [तेवु
अनाहूत वि० बोलावेलु के निमत्रेलु नहि
अनिकेत वि० घरबार विनानु, एक ज स्थळे न रहेनारु (२) पु० सन्यासी
अनिच्छ वि० इच्छारहित (२) इच्छा न करतु
अनिच्छा स्त्री० नाखुशी, नामरजी
अनित ('अन्'नु भू० कृ०) वि० साथे न होय तेवु
अनित्य वि० अशाश्वत; नाशवत (२) अस्थिर (३) प्रासगिक
अनिभृत वि० गुप्त नहि तेवु (२) अविवेकी, धृष्ट (३) अस्थिर, चचळ
अनिमित्त वि० अकारण; सहज (२) न० योग्य कारणनो अभाव (३) अपशुकन
अनिमिष, अनिमेष वि० आखना पलकारा वगरनु, स्थिर (२) जाग्रत, सावधान (३) खिलेलु, खुल्लु (आख, फूल इ०) (४) पु० देव (५) माछलु
अनियत वि० निरकुश (२) अनिश्चित
अनियम पु० नियमनो अभाव (२) अनिश्चितता [अव्यवस्थित
अनियत्रित वि० स्वच्छदी (२)
अनिराकरण न० निवारण न करवु ते
अनिर्दिष्ट वि० निर्देश नहि करायेलु
अनिर्देश्य वि० निर्देश न थई शके तेवु
अनिर्वचनीय वि० अवर्ण्य, अवर्णनीय
अनिल पु० पवन (२) वायुदेव
अनिलसख, अनिलसारथि पु० अग्नि
अनिलाशन वि० उपवास करनारु – पवन ज खानारु (२) पु० साप
अनिवार्य वि० निवारी न शकाय तेवु
अनिशम् अ० निरतर, सतत

अनुयायिन् वि० पाछळ पाछळ जनारुं; अनुसरनारु (२) समान, सरखु (३) पु० अनुसरनार, अनुयायी
अनुयुज् ७ आ० प्रश्न पूछवो (२) परीक्षा लेवी (३) शिक्षण आपवु (४) आजीजी करवी
अनुयोक्तृ पु० परीक्षक (२) शिक्षक
अनुयोग पु० प्रश्न (२) तपास (३) विनती (४) निंदा, ठपको (५) उद्यम (६) योग–ध्यान (७) टीका; समजूती
अनुयोज्य पु० सेवक, नोकर
अनुरक्त वि० रगायेलु, लाल रगवाळु (२) आसक्त
अनुरक्ति स्त्री० आसक्ति, प्रेम
अनुरणन न० रणकार
अनुरथ्या स्त्री० पगथी, 'फूटपाथ'
अनुरसित न० पडघो
अनुरहसम् अ० खानगीमा, एकान्तमा
अनुरज् ४ उ० [अनुरज्यति–ते] लालाश धारण करवी (२) आसक्त थवु
अनुरजन न० प्रसन्न करवु ते, आनन्द आपवो ते
अनुराग पु० प्रेम, स्नेह (२) लालाश
अनुरागिन् वि० प्रेमवाळु, आसक्तिवाळु
अनुरुद् २ प० सहानुभूतिमा साथे रडवु
अनुरुध् ७ उ० अवरोधवु (२) पाळवु, मानवु (३) चाहवु (४) आग्रह करवो
अनुरूप वि० –ना जेवु (२) तुल्य (३) योग्य
अनुरोध पु० समति, स्वीकार (२) विनती, आग्रह (३) नियमनु पालन
अनुरोधिन् वि० अनुसरतु, पाळतु
अनुलग्न वि० लागेलु, वळगेलु
अनुलिप् ६ प० [अनुलिपति] लेप करवो, खरडवु
अनुलेप पु०, **अनुलेपन** न० लेप करवो ते (२) लेपनो पदार्थ, मलम
अनुलोम वि० अनुकूळ, क्रमने अनुसरतु
अनुलोमज वि० शास्त्रमान्य क्रमे, ऊतरता वर्णनी स्त्रीना उच्च वर्णना पुरुष साथेना लग्नथी जन्मेलु
अनुवचन न० पाठ, अभ्यास; पुनरावर्तन (२) खड, प्रकरण
अनुवद् १ प० बोलेलानु अनुकरण करवु (२) १ उ० रणकार करवो, पडघो पडवो (३) फरी बोली जवु
अनुवर्तन न० अनुसरण, आज्ञापालन
अनुवर्तिन् वि० अनुसरनारु, आज्ञा पाळनारु
अनुवश पु० वशावृक्ष
अनुवाक पु० वेदनो भाग–प्रकरण (२) अभ्यास, पुनरावर्तन
अनुवाद पु० पुनरुक्ति (२) कहेली वात समजूती साथे फरी कहेवी ते
अनुवादिन् वि० अनुवाद करनारु (२) सवादी, सुसगत
अनुविद्ध वि० वीधेलु (२) पूर्ण; व्याप्त; युक्त (३) (रत्नथी) जडेलु–जडित
अनुविधा ३ उ० विधान करवु (२) अनुसरवु, अनुकरण करवु
अनुवृत् १ आ० अनुसरवु
अनुवृत्ति स्त्री० समति (२) –नी मरजीने के आज्ञाने अनुसरवु ते (३) पुनरावर्तन
अनुवेध पु० वीधवु ते (२) ससर्ग (३) मिश्रण
अनुवेलम् अ० हर वेळा
अनुवेश्य वि० पडोशी
अनुव्यध् ४ प० [अनुविध्यति] वीधवु; फरी वीधवु (२) व्यापवु, मिश्रित थवु
अनुव्याध पु० जुओ 'अनुवेध'
अनुव्याहरण न०, **अनुव्याहार** पु० पुनरावृत्ति, पुनरुच्चार (२) शाप
अनुव्रज् १ प० वळाववा पाछळ जवु (२) अनुसरवु
अनुव्रत वि० वफादार (२) व्रत नियमनु यथोचित पालन करनारु

अनुशय पु० पश्चात्ताप (२) दुःख, खेद (३) आसक्ति (४) हाडवेर, आदवेर (५) संस्कार; वासना

अनुशास् २ प० समजाववु; शीखववु (२) हुकम करवो (३) राज्य करवु (४) शिक्षा करवी (५) प्रशंसा करवी

अनुशासक वि० अनुशासन करनारु

अनुशासन न० शिक्षा; उपदेश (२) नियम; कायदो (३) विवरण, समजूती (४) अमल करवो ते, राज्य चलाववु ते

अनुशासितृ, अनुशासिन्, अनुशास्तृ वि० अनुशासन करनारु

अनुशिष्ट वि० शिक्षित, विनीत (२) पुछायेलु (३) दर्शावायेलु

अनुशी २ आ० साथे सूवु (२) पस्तावो करवो

अनुशीलन न० सतत अभ्यास

अनुशुच् १ प० शोक करवो; पश्चात्ताप करवो [मळेलु

अनुश्रविक वि० शास्त्रमाथी जाणवा

अनुश्रु ५ प० [अनुशृणोति] साभळवु (२) परपराथी साभळता आववु

अनुषक्त वि० जोडायेलु, वळगी रहेलु

अनुषंग पु० गाढ सबध (२) साहचर्य (३) पूर्वापर सबध (४) शब्दोनो परस्पर सबध (५) अवश्य परिणाम

अनुषंगिन् वि० वळगेलु, जोडायेलु (२) परिणामरूपे साथे जनारु – साथे रहेलु

अनुषंज् (अनु + सज्) १ प० [अनुषजति] जोडावु, वळगी रहेवु

—कर्मणि० [अनुषज्यते, अनुषज्जते] (उपरनो ज अर्थ)

अनुष्टुभ् स्त्री० एक छद

अनुष्ठा (अनु + स्था) १ प० [अनुतिष्ठति] करवु, आचरवु (२) नजीक ऊभा रहेवु; मेवामा रहेवु (३) अनुसरवु; अनुकरण करवु (४) शासन करवु (५) शास्त्रोक्त कार्य विधिपूर्वक करवु

अनुष्ठान न० क्रिया करवी ते (२) धार्मिक क्रिया (३) कार्यनो आरभ, पूर्वतैयारी

अनुष्ठित वि० करेलु, आचरेलु

अनुष्ठेय वि० करवा जेवु, करवानु

अनुसरण न० अनुसरवु ते

अनुसंतन् ८ उ० फेलावु (२) चालु रहेवु

अनुसंधा ३ उ० शोधवु, तपासवु (२) शात पाडवु (३) अनुलक्षवु, विचारवु (४) अनुसरवु; साथे रहेवु (५) योजवु; तैयारी करवी

अनुसंधान न० चोकसाई, बारीक तपास (२) योग्य सबध (३) योजना; पूर्वतैयारी

अनुसार पु० अनुसरवु ते (२) रूढि, रिवाज (३) परिणाम

अनुसारणा स्त्री० पीछो पकडवो ते, पाछळ जवु ते

अनुसृ १ प० पाछळ जवु – अनुसरवु

अनुस्मृ १ प० स्मरण करवु

अनुस्यूत वि० –नी साथे जोडायेलु – गूथायेलु – सीवेलु – वणायेलु

अनुस्वार पु० स्वरनी पाछळ उच्चारातो अनुनासिक वर्ण के तेनु चिह्न ( )

अनुहृ १ प० अनुकरण करवु (२) १ आ० मळता आववु [नम्र, विवेकी

अनूचान वि० विद्वान (२) वेद भणेलु (३)

अनूदक न० वरसाद न पडवो ते, सूको काळ [सपूर्ण (२) घणु मोटु

अनून वि० न्यून के हलकु नहि तेवु –

अनूप वि० पुष्कळ पाणीवाळु; भेजवाळु (२) पु०, न० पुष्कळ पाणीवाळी के भेजवाळी जगा (३) नदीनो किनारो

अनूरु वि० जाघ विनानु (२) पु० अरुण; सूर्यनो सारथि

अनूरुसारथि पु० सूर्य

अनूह वि० अविचारी

अनृण, अनृणिन् वि० ऋणमुक्त

अनृत वि० मिथ्या, असत्य (२) न० असत्य, जूठ

अनेक वि० एक नहि – बहु
अनेकगुण वि० घणा प्रकारनु, विविध
अनेकचित्त वि० अस्थिर मनवाळु
अनेकधा अ० अनेक प्रकारे
अनेकरूप वि० घणा प्रकारनु(२)विविध रूपवाळु(३)अनिश्चित; अस्थिर मननु
अनेकवचन न० द्विवचन अथवा बहुवचन (व्या०)
अनेकशः अ० वारवार (२)अनेक प्रकारे (३) मोटी सख्यामा
अनेकसाधारण वि० घणानु सहियारु
अनेकांत वि० अनिश्चित (२) अनेक बाजुवाळु
अनेकांतवाद पु० वस्तुना अनेक पासा परत्वे जुदी जुदी रीते ज्ञान थाय छे – एवो जैन वाद
अनेकांतिक वि० अनिश्चित (२) [अप्रस्तुत, गौण
अनोकह पु० वृक्ष
अनौचित्य न० अनुचितता, अयोग्यता
अन्न न० (राधेलु) अनाज – खोराक
अन्नकूट पु० राधेला चोखानो ढग
अन्नदोष पु० निषिद्ध खोराक खावाथी लागतु पाप
अन्नपूर्णा स्त्री० दुर्गा देवी
अन्नप्राश पु०, अन्नप्राशन न० नाना छोकराने पहेलवहेलु अन्न खवडाववानो सस्कार
अन्नमय वि० अन्ननु बनेलु
अन्नमयकोश(-ष) पु० स्थूल शरीर
अन्य वि० बीजु(२)जुदु, निराळु(३) असामान्य, विलक्षण (४) अधिक, वधारानु [दुराचरणी
अन्यग, अन्यगामिन् वि० व्यभिचारी,
अन्यचित्त वि० जेनु मन बीजा पर लागु थयु छे तेवु [उपरात
अन्यत् वि० बीजु (२) अ० फरीथी,
अन्यतम वि० घणामानु एक
अन्यतर वि० बेमानु एक
अन्यतरेद्युस् अ० बेमाथी कोई पण दिवसे
अन्यतस् अ० बीजा तरफथी; बीजी बाजुएथी (२)बीजा कारणसर; बीजा हेतुथी (३) बीजी बाजु, ऊलटु (४) बीजी तरफ
अन्यत्र अ० बीजे ठेकाणे, बीजे प्रसगे (२) सिवाय (३) बीजा अर्थमा
अन्यथा अ० बीजी रीते, जुदी रीते (२) खोटी रीते (३) ऊलटु
अन्यथाख्याति स्त्री० (होय तेनाथी) अन्य रूपे ज्ञान थवु ते
अन्यथावृत्ति वि० बदलायेली वृत्तिवाळु
अन्यदा अ० बीजे वखते, बीजे प्रसगे
अन्यपुष्टा स्त्री० कोयल
अन्यभृत् पु० कागडो
अन्यभृता स्त्री० कोयल
अन्यमनस्, अन्यमनस्क, अन्यमानस वि० जेनु मन बीजे लागेलु छे तेवु; बेध्यान; व्यग्र मनवाळु (२) अस्थिर मनवाळु
अन्यरूप वि० बीजु रूप लीधेलु, वेशपलटो करेलु [सहियारु
अन्यसाधारण वि० बीजा घणानु
अन्यादृक्ष्,अन्यादृश्,अन्यादृश त्रि० बीजा प्रकारनु,बीजा जेवु; [illegible]; असाधारण
अन्याय वि० अयोग्य(२)न्याय विरुद्ध (३)अप्रमाणिक(४)पु० न्यायविरुद्ध कृत्य, गेरइनसाफ
अन्याय्य वि० न्यायविरुद्ध, अयोग्य
अन्येद्युस् अ० बीजे दिवसे (२) एक दिवस, एक वार
अन्योक्ति स्त्री० एक अर्थालकार – बोलवु एकने उद्देशीने अने लागु पाडवु कोई बीजाने, एवु वाणीनु चातुर्य (२) स्तुतिना शब्दोमा निंदा, अने निंदाना शब्दोमा स्तुति दर्शाववी ते
अन्योढा स्त्री० परस्त्री
अन्योन्य वि० परस्पर, एकमेक
अन्योन्यम् अ० परस्पर

अन्वक् अ० पाछळ पाछळ (२)पाछळथी
अन्वक्षम् अ० तरत ज पछी
अन्वय पु० वंश; संतति (२) पाछळ पाछळ जवु ते (३) संबंध (४) वाक्यमां शब्दोनो स्वाभाविक क्रम (व्या०) (५) कार्यकारण संबंध (६) पाछळ पाछळ जनार—अनुचर वर्ग (७) नित्य साहचर्य (न्या०)
अन्वयज्ञ पु० वंशावली जाणनार
अन्वयागत वि० वंशपरंपरागत
अन्वर्थ वि० यथार्थ, अर्थने अनुसरतु
अन्वहम् अ० दररोज
अन्वास् २ आ० पासे बेसवु, पासे रहेवु (२)—नी पछी बेसवु (३) सेवा करवी (४) धर्मक्रिया करवी
अन्वि (अनु+इ) २ प० पाछळ पाछळ जवु, अनुसरवु
अन्वित ('अन्वि'नु भू० कृ०) वि० युक्त, सहित (२) मन वडे समजायेलु (३) उचित, लायक
अन्विष् (अनु+इष्) ६ प० [अन्विच्छति], ४ प० [अन्विष्यति] शोधवु; शोध करवी; तपास करवी
अन्वीक्ष् १ आ० बारीकीथी जोवु—तपासवु [तपास
अन्वीक्षण न०, **अन्वीक्षा** स्त्री० बारीक
अन्वीत वि० जुओ 'अन्वित'
अन्वेषक वि० निरीक्षक, बारीक तपास करनारु [तपास
अन्वेषण न०, **अन्वेषणा** स्त्री० बारीक
अप् स्त्री० पाणी (ब० व० मां ज वपराय छे)
अप अ० दूर—अळगु, खोटु—खराब, ऊलटापणु—विरोध, निर्देश—उदाहरण, मजाक—मश्करी, बातल करवु, छुपाववु, —ए अर्थमां वपराय छे
अपकर्तृ वि० नुकसान करनारु विरोधी ० शत्रु
अपकर्मन् वि० खराब आचरणवाळु (२) न० ऋण चूकववु ते (३) अनुचित कार्य; खराब कृत्य [अपयश
अपकर्ष पु० अवनति; ह्रास (२) नामोशी;
अपकर्षण वि० लई लेनारु; खेंची जनारु (२) न० लई लेवु ते; दूर करवु ते (३) हलकु पाडवु ते
अपकार पु० अपकृत्य; हानि; द्रोह; दुष्टता (२) अनिष्ट चिंतववु ते
अपकारक, अपकारिन् वि० खोटु करनारु; नुकसान करनारु (२) कृतघ्नी
अपकीर्ति स्त्री० अपयश, बदनामी
अपकृ ८ उ० खोटु करवु; अपकार करवो (२) दूर करवु (३) ईजा करवी; नुकसान करवु
अपकृत न० अपकार, हानि, नुकसान
अपकृष् १ प०, ६ उ० पाछु खेंची लेवु; दूर खेंची जवु (२) लई लेवु; लई जवु (३) खेंची काढवु, सत्त्व काढवु (४) ओछु करवु (५) हलकु पाडवु, अपमान करवु (६) वाळवु, खेंचवु (धनुष्य)
अपकृष्ट वि० खेंची लेवायेलु, दूर करायेलु (२) हलकु, नीच (३) निषेध करायेलु, रोकायेलु (४) पु० कागडो
अपकॄ ६ प० [अपकिरति] वेरवु, विखेरवु, उछाळवु (२) ६ आ० [अपस्किरते] पगथी खणवु—खोतरवु (पशुनु आनंदमां)
अपक्रम् १ प० [अपक्रामति] दूर जवु, नासी जवु (२) समयनु वीतवु
अपक्रम पु० दूर जवु—नासी जवु ते (२) समयनु वीतवु ते (३) क्रमनो अभाव; खोटो क्रम
अपक्रिया स्त्री० नुकसान; ईजा (२) दोष
अपक्रोश पु० निंदा, गाळ
अपक्ष वि० पांख वगरनु (२) पक्ष के मित्र वगरनु (३) एके पक्षनु नहि तेवु (४) विरुद्ध

अपक्षपात पु० निष्पक्षपातपणु
अपक्षय पु० क्षय थवो ते, क्षीण थवु ते
अपगत वि० चाल्यु गयेलु; खसी गयेलु; –थी रहित, –विनानु
अपगति स्त्री० दुर्गति, दुर्दशा
अपगम् १ प० [अपगच्छति] जतु रहेवु (२) पसार थवु – वीतवु (समयनु)
अपगम पु० जतु रहेवु ते; वियोग; २ मृत्यु
अपघात पु० हणवु ते (२) निवारवु ते (३) कुमरण
अपचय पु० ओछु थवु ते (२) नुकसान
अपचर् १ प० विदाय थवु (२) उल्लघन करवु, आडे मार्गे जवु
अपचरित वि० गयेलु, मृत (२) न० अपराध, दोष
अपचायिन् वि० योग्य समान न करतु
अपचार पु० विनाश, अभाव (२) अपराध, दोष (३) कर्मना लोपथी प्राप्त थनारो दोष (४) अपकार, खराब आचरण (५) कुपथ्य
अपचि ३ प० सन्मानवु, आदर करवो (२) ५ उ० एकठु करवु, वीणवु –कर्मणि० क्षीण थवु, ओछु थवु (२) –थी रहित बनवु
अपचित वि० क्षीण थयेलु (२) आदर पामेलु, समानित
अपचिति स्त्री० क्षय, क्षीणता; नुकसान, नाश (२) खर्च (३) वसूलात, वदलो; प्रायश्चित्त (४) मान, आदर, पूजा
अपच्छाय वि० छाया विनानु (२) प्रकाश विनानु, झाखु (३) अपशुकनियाळ पडछायावाळु (४) पु० देव (जेने पडछायो न होय)
अपजात पु० खराव सतान, मावाप करता ऊतरता गुणोवाळु सतान
अपज्ञा ९ आ० [अपजानीते] सताडवु, छुपाववु (२) ना कहेवी
अपटीक्षेप पु० पडदो उछाळवो ते (उतावळमा के गभराटमा)
अपत्य न० सतान, वाळक
अपत्रप् १ आ० शरमावु
अपत्रप वि० बेशरम
अपत्रपा स्त्री० शरम
अपथ वि० मार्गरहित (२) पु०, न० मार्गनो अभाव (३) कुमार्ग
अपथ्य वि० अयोग्य, अहितकर (२) कुपथ्य
अपद वि० पग वगरनु (२) स्थान के होद्दा विनानु (३) पु० सापनी पेठे पेटे चालनार प्राणी (४) न० अयोग्य स्थळ (५) स्थाननो अभाव (६) आकाश
अपदश वि० दशथी दूरनु (२) छेडो–किनारी ('दशा') विनानु (वस्त्र)
अपदान न० परिशुद्ध आचरण; महान कृत्य (२) भूतकाळ के भविष्यकाळना तेवा सत्कृत्योनु वर्णन करतो ग्रथ
अपदार्थ पु० मिथ्या – असत् वस्तु (२) शब्दार्थ नही ते
अपदातर वि० तरत पछीनु
अपदिश् ६ प० उल्लेख करवो; दर्शाववु (२) वहानु काढवु, ढोग करवो
अपदेश पु० कथन; उल्लेख (२) मिष; बहानु (३) हेतु दर्शाववो ते (४) खराब स्थान
अपदेश्य वि० दर्शाववा – उल्लेखवा लायक (२) छळथी कहेवा लायक
अपद्रुत न० मोचा वळी नासी जवु ते
अपध्यान न० खोटो विचार, अहित इच्छवु ते (२) न चितववा योग्यनु चितन
अपध्यै १ प० खोटो विचार करवो, अहित इच्छवु
अपध्वस्त वि० निंदित (२) तजेलु (३) चूर्ण करेलु
अपध्वंस् १ आ० खसी जवु, चाल्या जवु (२) वढवु, ठपको आपवो
अपध्वस पु० अध पात, अधोगति

अपनय पु० लई लेवु ते(२)दूर करवु ते (३) खडन करवु ते (४) दुर्वर्तन; अनीति (५) हानि, अपकार

अपनयन न० लई लेवु ते(२)दूर करवु ते(३)देवामाथी मुक्त करवु – थवु ते (४) अन्याय

अपनी १ प० लई लेवु (२)दूर करवु ३) खेंचवु; खेची काढवु (तेल, वाण इ०) (४) उतारवु (कपडा, घरेणा इ०) (५)वाकात राखवु(६)दुर्वर्तन करवु

अपनीत वि० लई लीधेलु, काढी नाखेलु (२) विरुद्धनु; ऊलटु (३) चूकवी दीधेलु (४) दुर्वर्तनवाळु (५) न० दुर्वर्तन (६) छळ, कपट

अपनुति स्त्री० दूर करवु ते, खसेडवु ते

अपनुद् ६ प० दूर करवु, खसेडवु

अपभाष् १ आ० अपशब्द बोलवा, गाळ देवी, निंदा करवी

अपभाषण न० अपशब्द; गाळ (२) निंदा

अपभ्रष्ट वि० नीचे पडेलु (२)अपभ्रश पामेलु

अपभ्रश् १ आ० दूर पडवु, सगे पडवु –प्रेरक० खसेडवु, दूर करवु

अपभ्रंश पु० नीचे पडवु ते (२) विकृत थयेलो शब्द (३) सस्कृतने हिनावे अपभ्रष्ट थयेली एक भाषा

अपमर्द पु० कूडो; कचरो

अपमर्श पु० स्पर्श करवो –घसावु ते

अपमान पु० अनादर, तिरस्कार

अपमार्जन न० लूछी काढवु ते, साफ करवु ते

अपमृत्यु पु० आकस्मिक मृत्यु, कमोत

अपयशस् न० अपयश, अपकीर्ति

अपया २ प० जतु रहेवु, नासी जवु

अपर वि० जेनाथी श्रेष्ठ बीजु काई नथी तेवु;उत्तम (२)बीजु;अन्य;वधारानु (३) बीजानु (पोतानु नहि तेवु) (४) पछीनु; पाछळनु (काळस्थळमा) (५) पश्चिमनु (६)निकृष्ट; हलकी जातनु (७) पु० हाथीनो पाछलो पग (८) शत्रु

अपरक्त वि० रग वगरनु (२) लोही वगरनु, निस्तेज (३) असतुष्ट

अपरत्र अ० बीजे ठेकाणे

अपरम् अ० वळी, भविष्यमा, विशेषमा

अपररात्र पु० रात्रीनो उत्तर भाग

अपरस्पर वि० एक पछी बीजु होय तेवु, सतत जारी रहेतु (२) अन्योन्य

अपरंज् (कर्मणि०) [अपरज्यते] विरक्त थवु (२) असतुष्ट थवु

अपरा स्त्री० पश्चिम दिशा

अपराग पु० असतोष, वैर; स्नेहनो अभाव

अपराजित वि० नहि जितायेलु, अजेय

अपराजिता स्त्री० दशेराने दिवसे जेनु पूजन थाय छे ते – दुर्गादेवी (२) मादळियामा बधाती एक वनस्पति (टुचका तरीके) [तेवु

अपराजेय वि० अजेय; न हरावी शकाय

अपराद्ध वि० अपराधी (२)लक्ष चूकेलु (वाण इ०) (३) उल्लघन थवु ते (वेळा इ० नु)(४)न० गुनो,अपराध;दोष,ईजा

अपराध् ४, ५ प० अपराध करवो, दोष करवो

अपराध पु० दोष, गुनो (२) पाप

अपराधिन् वि० गुनो करनारु, अपराधी

अपराविद्या स्त्री० वेद-वेदाग (ब्रह्मविद्या सिवायनी विद्याओ) [पहोर

अपराह्ण पु० साज, दिवसनो पाछलो

अपरांत वि० पश्चिम सरहदे रहेतु (२) पु० पश्चिम सरहदे आवेलो देश

अपरांतक पु० सह्याद्रि पासेनी पश्चिम सरहदनो प्रदेश अथवा तेनो रहेवासी

अपरिग्रह वि० घरवार के परिवार विनानु (२) पु० धननो परिग्रह – स्वीकार न करवो ते (३) निर्धनता

अपरिच्छद वि० निर्धन, गरीब (परिवार – वस्त्र वगेरे विनानु)

अपरिच्छिन्न वि० स्पष्ट समजण विनानु (२) सतत, विच्छेद विनानु
अपरिच्छेद पु० स्पष्ट समजनो अभाव (२) सातत्य (३) विभाग के वैशिष्ट्यनो अभाव
अपरिमाण, अपरिमित, अपरिमेय वि० मापी न शकाय तेवु, अनंत
अपरिहार्य वि० टाळी न शकाय तेवु, अनिवार्य
अपरेद्युस् अ० बीजे दिवसे
अपरोक्ष वि० प्रत्यक्ष, दृष्टिगोचर थाय तेवु (२) दूर नहि तेवु
अपरोक्षम् अ० हाजरीमा, नजर आगळ
अपर्णा स्त्री० पार्वती (पादडा पण खावाना छोडी तप कर्यु होवाथी)
अपर्याप्त वि० पूरतु नहि तेवु, थोडु (२) असमर्थ, अशक्तिमान
अपर्याप्ति स्त्री० न्यूनता, अधूरापणु
अपर्युषित वि० ताजु, वासी नहि तेवु
अपलप् १ प० होवा छता नथी एम कहेवु (२) छुपाववु
–प्रेरक० छेतरवु [ना पाडवी ते
अपलाप पु० छुपाववु ते (२) होवा छता
अपवचन न० भूडु बोलवु ते
अपवद् १ प० निदा करवी, गाळ देवी (२) विरोध करवो, इनकारवु
अपवरक पु० घरनो खानगी ओरडो (२) हवानु बाकु
अपवर्ग पु० अंत, पूर्णाहुति (२) मोक्ष (३) त्याग (४) फेकवु ते (बाण इ०)
अपवर्जित वि० तजेलु (२) चूकते करेलु (देवु) (३) रहित – विनानु
अपवह् १ प० ऊचकीने लई जवु (२) हाकी काढवु, दूर करवु (३) छोडी देवु, त्याग करवो (४) बाद करवु
अपवारित वि० ढाकेलु (२) छुपावेलु
अपवारितकेन, अपवार्य अ० (नाटकमा) बाजुए, बीजाने ('प्रकाशम्' थी ऊलटु)
अपवाह पु० लई जवु ते, दूर करवु ते (२) बाद करवु ते
अपविद्ध वि० तजी देवायेलु (२) दूर करायेलु, उपेक्षित (३) नीच, हलकु
अपवृ ५ उ० उघाडवु, खुल्लु मूकवु
–प्रेरक० ढाकवु, छुपाववु
अपवृज् ७ आ० टाळवु, दूर करवु (२) खेंची काढवु
–प्रेरक० तजवु (२) वेरवु (३) भरपाई करवु (४) कापी नाखवु; छूटु पाडवु (५) ऊधु पाडवु (६) दान आपवु (७) समापवु
अपवृत् १ आ० पाछु फरवु, नीकळी जवु
–प्रेरक० पाछु वाळवु, हाकी काढवु
अपवृत्त वि० पाछु फरेलु (२) ऊधु वळेलु – वाळेलु (३) समाप्त करेलु (४) नीचे मुखे रहेलु
अपव्यध् ४ प० [अपविध्यति] भोकवु (२) फेकी देवु (३) त्याग करवो, नाखी देवु
अपव्यय पु० खोटु खर्च करवु ते, उडाउपणु
अपशकुन न० माठो शुकन
अपशब्द पु० नियम विरुद्धनो शब्द (व्या०) (२) निंदा (३) गाळ (४) ग्राम्य भाषा
अपश्चिम वि० जेनी पाछळ काई न होय तेवु (२) आगळनु – पहेलु (३) अत्यंत, अतिशय
अपसद पु० नीच के हलकी वर्णनो मनुष्य (२) नीच वर्णनी स्त्रीथी जन्मेलो मनुष्य – प्रतिलोमज (३) अधम; नीच (समासमा छेडे आवे छे, उदा० सूतापसद)
अपसरण न० पाछु जवु ते, नासी जवु ते
अपसर्प, अपसर्पक पु० गुप्तचर
अपसव्य वि० डाबु नहि तेवु – जमणु (२) ऊलटु, विपरीत
अपसारण न०, **अपसारणा** स्त्री० दूर करवु – काढी मूकवु ते, हटाववु ते

अपसृ १ प० दूर जवु, जतु रहेवु (२) अदृश्य थवु [छोडेलु (बाण)

अपसृत वि० गयेलु (२) पाछु फरेलु (३)

अपसृप् १ प० सरकी जवु (२) नासी जवु (३) छानुमानु जोवु —प्रेरक० हाकवु, खसेडवु

अपस्मार पु० भूली जवु ते (२) फेफरानो व्याधि, वाई

अपह वि० (समासने छेडे) निवारनारुं, दूर करनारु, नाश करनारु

अपहन् २ प० निवारवु; दूर करवु (२) हुमलो करवो (रोगे) (३) छडवु (डागरने)

अपहरण न० उपाडी जवु ते, काढी जवु ते (२) चोरी जवु ते [करवी

अपहस् १ प० मश्करीमा हसवुं; मश्करी

अपहसित न० जुओ 'अपहास'

अपहस्त पु० हाकी काढवा गळे हाथ मूकवो ते (२) लई लेवु ते; फेकी देवु ते

अपहस्तित वि० काढी मूकेलु, फेकी दीधेलु, तजी दीधेलु

अपहा ३ प० छोडी देवु, त्याग करवो (२) चूकते करवु (देवु)

अपहाय अ० तजीने (२) विना; सिवाय

अपहार पु० अपहरण (२) हानि (३) गुप्त राखवु ते (४) (बीजानु धन) खर्च करवु ते

अपहास पु० अकारण हसवु ते (२) मश्करीमा हसवु ते

अपहृ १ उ० लई लेवु, झूटवी लेवु, चोरी लेवु, लूटी लेवु, नाश करवो (२) फेरवी लेवु, खसेडी लेवु (मो) (३) आकर्षण करवु, वश करवु

अपहृत वि० लई लेवायेलु — छीनवी लेवायेलु, चोरायेलु [प्रेम, स्नेह

अपह्नव पु० छुपाववु ते, सताडवु ते (२)

अपह्नु २ आ० छुपाववु, सताडवु (२) इन्कारवु (३) बहानु काढवु

अपह्नुति स्त्री० छुपाववु ते

अपाकीर्ण ('अपाकृ'नु भू० कृ०) वि० तरछोडायेलु, तजायेलु

अपाकृ ८ उ० दूर करवु, निवारवु (२) तरछोडवु, तजवु

अपाकृति स्त्री० दूर करवु — निवारवु ते

अपाकॄ ६ प० [अपाकिरति] फेंकी देवु (२) अस्वीकार करवो, ना कहेवी

अपात्र न० नकामु वासण (२) नकामु के नालायक माणस (दान इ० माटे)

अपादान न० लई लेवु ते, दूर करवु ते (२) पचमी विभक्तिनो अर्थ (व्या०)

अपान पु० पाच प्राणवायुओमानो एक (जे गुदा वाटे नीकळे छे)

अपाप, अपापिन् वि० पापरहित, पवित्र

अपाय पु० विघ्न, हरकत (२) वियोग (३) अदृश्य थवु ते; अभाव (४) हानि; नाश (५) दुर्भाग्य; दुःख

अपायिन् वि० क्षणिक, नाशवत

अपार वि० किनारा विनानु (२) अत विनानु, पार विनानु (३) दुर्लंघ्य, दुर्गम (४) पु० समुद्र (५) न० नदीनो सामो किनारो

अपारवार वि० मर्यादा विनानु

अपार्थ, अपार्थक वि० निरर्थक, अर्थ विनानु [तेवु

अपार्थिव वि० अलौकिक, पृथ्वीनुं नहि

अपावरण न० उघाडवु — खुल्लु करवु ते (२) ढाकवु — सताडवु ते

अपावर्तन न० पाछु फरवु ते, पाछु काढवु ते (२) (जमीन पर) आळोटवु ते (३) मो पाछु फेरवी लेवु ते; अस्वीकार

अपावृ ५ उ० उघाडवु, खुल्लु करवु (२) ढाकवु

अपावृत वि० खुल्लु करायेलु (२) ढकायेलु

अपावृत्त वि० पाछु फरेलु (२) पाछु काढी मूकेलु, हरावेलु (३) (कर्तरि अर्थमा) काढी मूकेलु, अनादर करेलु

अपावृत्ति स्त्री० जुओ 'अपावर्तन'

अपाश्रय वि० आश्रय रहित, निराधार (२) पु० आशरो, आधार (३) चदरवो, छत (४) माथु

अपाश्रि १ उ० आशरो लेवो

अपास् ४ उ० फेंकी देवु (२) त्याग करवो, हाकी काढवु (३) अस्वीकार करवो, ना पाडवी

अपासु वि० निष्प्राण, मृत

अपास्त वि० फेंकी देवायेलु, तजायेलु

अपांग, अपांगक वि० जेनु अंग विकृत के खंडित छे तेवु (२) पु० आंखनो खूणो (३) कामदेव (४) अंत, छेडो

अपांगनेत्र वि० सुन्दर खूणावाळी आंखो वाळु (स्त्री) (२) कटाक्ष नाखती आंखोवाळु

अपि अ० नाम अथवा धातुनी साथे नीचेना अर्थमा वपराय छे – नजीक; समीप; तरफ (२) क्रि० वि० अथवा उभयान्वयी तरीके – अने, पण, वळी, तदुपरांत, विशेषमां, –ए अर्थे (३) जो के–तोपण (४) प्रश्नार्थमां वाक्यारंभे (५) आशा, इच्छा, अपेक्षा दर्शावे (विध्यर्थ साथे) (६) प्रश्नार्थ सर्वनाम 'किम्' नी साथे अनिश्चिततानो अर्थ दर्शावे; उदा० कोऽपि बाल (७) शंका, अनिश्चितता, संभव, तिरस्कार, उपेक्षा दर्शावे (८) भार दईने कथन करवा माटे वपराय (अद्यापि = आज पण)

अपिधा ३ उ० बंध करवु (२) ढांकवु, छुपाववु [ढांकण, आच्छादन

अपिधान न० ढांकवु – छुपाववु ते (२)

अपिनद्ध वि० पहेरेलु

अपि नाम अ० कदाच, संभव छे के, एम होय तो केवु सारु ?

अपिहित वि० बंध करेलु (२) ढांकेलु, छुपावेलु (३) नहि छुपायेलु, स्पष्ट

अपी (अपि + इ) २ प० प्रवेश करवो (२) पामवु; भोगववु (३) जोडावु; एक थवु

अपीत ('अपि + इ'नु भू० कृ०) वि० प्रवेशेलु (२) खोवायेलु (३) मृत

अपीति स्त्री० विलय; प्रलय (२) युद्धमां सामसामा आवी जवु ते

अपुत्र, अपुत्रक वि० पुत्र के वारस वगरनु

अपुनर् अ० एक ज वार (२) कायमनु

अपुनर्भव पु० फरी न जन्मवु ते; मोक्ष

अपुनरावृत्ति स्त्री० मोक्ष (२) मृत्यु

अपुष्ट वि० दूबळु, पोषण विनानु (२) मंद – धीमु (अवाज)

अपूप पु० वडु, पूडो (२) पूडा (मधमाखनो)

अपूर्ण वि० पूरु नहि थयेलु, अधूरु

अपूर्व वि० पहेलां नहि तेवु, असामान्य (२) विलक्षण, नवु, अद्‌भुत (३) अपरिचित (४) न० पाप अने पुण्य (जे भावि सुख के दुःखनु कारण थाय छे) (५) कर्मनु भावि परिणाम – फळ

अपे (अप + इ) २ प० जवु, जुदा पडवु (२) अदृश्य थवु; नाश पामवु (३) छूटा पडवु, –विनाना थवु

अपेक्ष् १ आ० आशा राखवी (२) राह जोवी (३) जरूर होवी, इच्छा होवी (४) नजरमां होवु (५) ख्याल राखवो

अपेक्षणीय वि० इच्छवा – आशा राखवा जेवु, ख्यालमां लेवा जेवु

अपेक्षा स्त्री० आशा, इच्छा (२) जरूर; अगत्य (३) उद्वेग, ख्याल (४) संबंध (५) काळजी

अपेक्षित वि० इच्छेलु (२) आशा रखायेलु (३) आवश्यक (४) ख्यालमां लेवायेलु

अपेक्षितव्य, अपेक्ष्य वि० जुओ 'अपेक्षणीय' [–थी रहित

अपेत वि० गयेलु (२) –थी जुदु पडेलु;

अपेय वि० न पीवा लायक

अपोढ ('अप + वह्'नु भू० कृ०) वि० लई जवायेलु, दूर करायेलु

अपोह् (अप + उह् अथवा ऊह्) १ उ०

हाकी काढवु, दूर करवु (२) तजवु (३) विरोध करवो, दलील करवी

अपोह पु० दूर करवु ते (२) तर्कथी शकानु निवारण करवु ते (३) विपरीत तर्क

अपोहन न० जुओ 'अपोह' (२) तर्कशक्ति

अपौरुष, अपौरुषेय वि० कायर, बीकण (२) मनुष्यथी नहि करायेलु; ईश्वर-कृत (३) न० कायरता, निर्वळता (४) ईश्वरी शक्ति

अप्यय पु० पासे जवु – जोडावु – मळवु ते (२) लय; नाश [(२) अप्रस्तुत

अप्रकृत वि० मुख्य नहि तेवु, प्रासगिक

अप्रगल्भ वि० अनुद्धत, नम्र (२) शरमाळ (३) बीकण, कायर

अप्रज वि० नि सतान (२) नहि जन्मेलु (३) प्रजा वगरनु (राज्य)

अप्रजाता स्त्री० वाझणी स्त्री

अप्रणीत वि० विधि – सस्कारथी पवित्र न करेलु (२) न रचेलु

अप्रतिकर्मन् वि० अजोड कर्म के सिद्धि-वाळु (२) सामनो के उपाय न थई शके तेवु

अप्रतिकार वि० जेनो उपाय नथी तेवु (२) सामनो न करवो ते

अप्रतिपक्ष वि० विनहरीफ (२) असदृश

अप्रतिपत्ति स्त्री० अस्वीकार; नहि लेवु ते (२) अक्रिया (३) उपेक्षा (४) समजणनो अभाव (५) अनिश्चय (६) तरतबुद्धि न स्फुरवी ते [विनानु

अप्रतिभ वि० शरमिंदु (२) प्रतिभा

अप्रतिम वि० अनुपम, विनहरीफ

अप्रतिरथ वि० जेनो सामनो करे तेवो बीजो योद्धो नथी तेवु

अप्रतिरूप वि० जेना समान रूपवाळु बीजु नथी तेवु (२) सरखामणी न थई शके तेवु

अप्रतिष्ठ वि० प्रतिष्ठा – आधार विनानु (२) अस्थिर; चचळ (३) ख्याति विनानु

अप्रतिष्ठित वि० प्रतिष्ठारहित; अस्थिर (२) ख्याति विनानु, अप्रसिद्ध

अप्रतिहत वि० अटकावी के रोकी न शकाय तेवु (२) रुकावट विनानु, निर्विघ्न (३) निराश नहि थयेलु

अप्रतीकार वि० जुओ 'अप्रतिकार'

अप्रतीत वि० असतुष्ट (२) अस्पष्ट अर्थवाळु (३) जेनी पासे जवु मुश्केल छे तेवु

अप्रतीति स्त्री० समजावु नहि ते (२) अविश्वास

अप्रत्यक्ष वि० नजरे न पडतु, परोक्ष

अप्रत्यय वि० अविश्वासु (२) अज्ञानी (३) पु० अविश्वास (४) न समजावु ते

अप्रधृष्य वि० अजेय, अजित

अप्रमत्त वि० प्रमाद रहित, सावध

अप्रमद वि० आनन्द के हर्ष वगरनु

अप्रमाण वि० अपरिमित; पुष्कळ (२) आधार, पुरावो के साबिती वगरनु (३) अविश्वसनीय

अप्रमेय वि० जेनी तुलना न थई शके तेवु (२) अपरिमित, अगाध (३) स्पष्ट न समजी शकाय तेवु, अगम्य

अप्रवृत्ति स्त्री० प्रवृत्तिनो अभाव, निष्क्रियता (२) प्रेरणानो अभाव – निरुत्साह

अप्रशस्त वि० प्रशसा करवा योग्य नही तेवु, तिरस्कार करवा योग्य

अप्रसक्त वि० अनासक्त

अप्रसग पु० आसक्तिनो अभाव (२) अयोग्य समय (३) सबधनो अभाव

अप्रस्तुत वि० असबद्ध (२) अर्थ वगरनु (३) आकस्मिक (४) तैयार नहि तेवु

अप्राकृत वि० ग्राम्य नहि तेवु (२) मौलिक नहि तेवु (३) असामान्य

अप्राप्त वि० नहि मेळवेलु (२) नहि आवेलु (३) नहि पहोचेलु

अप्राप्तकाल वि० अयोग्य समयनु;

प्रसगने अनुकूळ नहि तेवु (२) वयमा नहि आवेलु – पुख्त वयनु नहि तेवु
अप्रिय वि० न गमतु, प्रतिकूळ (२) न० प्रतिकूळ वर्तन (३) पु० शत्रु, विरोधी
अप्सरस् स्त्री० अप्सरा, स्वर्गनी वारागना
अप्सरस्तीर्थ न० अप्सराओने नाहवानु पवित्र स्थळ – तीर्थ
अप्सरा स्त्री० जुओ 'अप्सरस्'
अफल वि० निष्फळ, व्यर्थ, निरुपयोगी (२) वध्य (३) पुरुषत्वहीन
अफलाकांक्षिन् वि० फळनी इच्छा विना काम करनारु
अबद्ध वि० नहि बधायेलु, छूटु, स्वतत्र (२) अर्थशून्य, असबद्ध (३) पु० अशक्य वस्तु, अनुचित वस्तु
अबला स्त्री० स्त्री
अबाध वि० प्रतिबधरहित, निर्विघ्न (२) दु खरहित
अबाधित वि० प्रतिबध – विघ्न विनानु (२) जेनु खडन नथी थयु तेवु
अबुद्ध वि० नहि जाणनारु, मूर्ख (२) न० चेतनरहित – जड तत्त्व (३) अज्ञान
अबुद्धि स्त्री० अविद्या, अज्ञान (२) मूर्खता
अबुध् स्त्री० अज्ञान, बुद्धिहीनता
अबुध्(-ध) वि० अज्ञानी, मूर्ख (२) पु० अज्ञानी – मूर्ख माणस
अबोध वि० अज्ञानी, मूर्ख (२) पु० अज्ञान; मूर्खता, बुद्धि न होवी ते
अब्ज वि० पाणीमा जन्मेलु (२) पु० धन्वतरि (३) चन्द्र (४) कपूर (५) शख (६) न० कमळ (७) अबजनी सख्या
अब्जभव, अब्जयोनि पु० ब्रह्मा (कमळमा जन्मेला)
अब्द वि० पाणी आपनारु (२) पु० वादळ (३) पु०, न० वर्ष
अब्धि पु० समुद्र (२) भडार (ला०)
अब्धिज पु० चद्र (२) शख (३) न० मीठु
अब्धिजा स्त्री० लक्ष्मी (२) सुरा, मद्य
अब्रह्मण्य वि० ब्राह्मणने माटे अयोग्य (२) ब्राह्मणोनु विरोधी (३) न० दुष्कृत्य, पापकर्म
अभक्ष्य वि० नहि खावा योग्य; शास्त्रमा जे खावानो निषेध छे तेवु (२) न० अभक्ष्य पदार्थ
अभद्र वि० अमगळ, अशुभ (२) न० पाप, दुष्टता (३) शोक
अभय वि० भयरहित (२) पु० भयमाथी मुक्ति
अभयदान न० सलामती बक्षवी ते, अभयवचन
अभयवचन न० सरक्षणनु वचन आपवु ते
अभव पु० उत्पत्तिनो अभाव; जन्मनो अभाव (२) विनाश
अभव्य वि० न बनवानु, न बनवा जेवु (२) दुर्भागी, अभागियु (३) अशिष्ट
अभागिन् वि० जेनो भाग न होय तेवु (२) अभागी, दुर्भागी
अभाव वि० भाव – प्रेम विनानु (२) अस्तित्व विनानु (३) पु० न होवु ते (४) नाश, मृत्यु
अभि अ० तरफ, –नेमाटे, –नी सामे, उपर, चारे बाजु, घणु, अधिक, उत्तम, नजीक, पासे, –ना सबधमा, –एक पछी एक – एवा अर्थमा वपराय छे
अभिक वि० विषयासक्त, कामी (२) पु० प्रेमी, आसक्त
अभिकम् १० आ० प्रेम करवो, इच्छवु
अभिकाम वि० आसक्त, प्रेमी, इच्छा राखनारु (२) पु० प्रेम (३) इच्छा
अभिकांक्ष् १ उ० आशा राखवी (२) इच्छवु
अभिकांक्षा स्त्री० आशा, इच्छा
अभिकृ ८ उ० करवु, रचवु (२) –ने अर्थे करवु
अभिक्रम् १ उ० [अभिक्रामति–क्रमते] जवु, पासे जवु (२) ४ प० [अभि-

क्राम्यति] भटकवु (३) हुमलो करवो (४) आरभवु, तैयारी करवी
अभिक्रम पु० आरभ (२) नजीक जवु ते (३) हुमलो; आक्रमण (४) उपर चडवु ते (५) आरभेलु – माथे लीधेलु ते
अभिक्रुश् १ प० बूम पाडवी (२) विलाप करवो, शोक करवो (३) ठपको आपवानी रीने कहेवु
अभिक्रोश पु० बोलाववु – बूम पाडवी ते (२) विलाप करवो ते (३) निंदा करवी ते [चडियाता थवु
अभिक्षिप् ६ प० सामे फेंकवु (२) –थी
अभिख्या स्त्री० शोभा, सौन्दर्य (२) कहेवु ते; जाहेर करवु ते (३) बोलाववु ते (४) नाम (५) शब्द, पर्याय-शब्द (६) कीर्ति (खोटा अर्थमा)
अभिख्यात वि० प्रसिद्ध थयेलु
अभिगम् १ प० [अभिगच्छति] पासे जवु; मुलाकात लेवी (२) –नी पाछळ जवु (३) मळवु, जडवु (४) सभोग करवो (५) माथे लेवु (६) समजवु
अभिगम पु०, **अभिगमन** न० पासे जवु ते (२) सभोग, सेवन
अभिगम्य वि० पासे जवा योग्य (२) भय के सकोच विना पासे जई शकाय तेवु
अभिगतृ वि० सभोग करनारु (२) समजनारु [सभोग करनारु
अभिगामिन् वि० पासे जनारु (२)
अभिगीत वि० गीतमा गवायेलु – प्रशसायेलु (२) सारी रीते गायेलु
अभिगुप्त वि० सरक्षायेलु (२) छुपावेलु
अभिग्रह् ९ उ० लेवु, स्वीकारवु (२) झूटवी लेवु (३) जोडवु (हाथ) (४) धारण करवु, प्रगट करवु (फूल, फळ इ०)
अभिग्रह पु० लई लेवु – लूटी लेवु ते (२) हुमलो (३) युद्धनु आह्वान (४) फरियाद (५) सत्ता; वजन
अभिघात पु० प्रहार करवो ते (२) सामो प्रहार करवो ते (३) मारी नाखवु – नाश करवो ते
अभिचर् १ प० बेवफा नीवडवु, कोई प्रत्ये खोटी रीते वर्तवु (२) मेला काम माटे मत्रनो प्रयोग करवो
अभिचरण न०, **अभिचार** पु० मेला काम माटे मत्रप्रयोग करवो ते
अभिजन् ४ आ० [अभिजायते] उत्पन्न थवु, जन्मवु (२) फरी उत्पन्न थवु (३) वारसदार तरीके जन्मवु (४) बनी जवु, –मा रूपातर थवु
अभिजन पु० वश, कुळ (२) उत्पत्ति; जन्म (३) उच्च कुळमा जन्मवु ते (४) पूर्वज (५) कुळनो मुख्य माणस (६) जन्मस्थळ (७) कीर्ति, यश
अभिजात वि० उत्पन्न थयेलु; जन्मेलु (२) –ना हकदार तरीके जन्मेलु (३) –ने परिणामे जन्मेलु (४) उच्च कुळमा जन्मेलु, कुलीन (५) प्रिय, अनुकूळ (६) मनोहर (७) योग्य, लायक (८) पडित (९) न० ऊचा कुळमा जन्म, कुलीनता (१०) जातकर्म
अभिजित् वि० पूरेपूरो विजय मेळवनारु (२) विजय मेळववामा मदद करनारु
अभिजुष्ट वि० सेवायेलु [निष्णात
अभिज्ञ वि० जाणीतु, अनुभवी (२)
अभिज्ञा ९ उ० [अभिजानाति–जानीते] ओळखवु, पिछानवु (२) जाणवु, समजवु, परिचित होवु (३) गणवु, मानवु (४) कबूल राखवु (५) याद करवु
अभिज्ञा स्त्री० ओळखाण; स्मरण; स्मृति (२) एक सिद्धि (मनगमतु रूप धरवु, दूरथी साभळवु – जोवु – विचार जाणवा इ०नी)
अभिज्ञान न० ओळखाण, स्मरण (२) याददास्त माटेनु चिह्न
अभितप्त वि० तपेलु (२) दुःखी थयेलु
अभितराम नजीक, पासे

अभितस् अ० नजीक, पासे (२) मो आगळ, सामे (३) बने बाजुए (४) बधी बाजुए (५) संपूर्ण रीते, सर्वथा (६) जलदी

अभिद्रव पु०, **अभिद्रवण** न० आक्रमण, हुमलो

अभिद्रु १ प० आक्रमण करवु, हुमलो करवो

अभिधर्म पु० परम सत्य, तत्त्व (बौद्ध)

अभिधा ३ उ० संबोधवु, जणाववु (२) नाम आपवु

अभिधा स्त्री० नाम (२) शब्द, ध्वनि (३) शब्दनी अर्थ बताववानी शक्ति

अभिधान न० नाम (२) होद्दो, पदवी (३) कहेवु ते, दर्शाववु ते (४) कथन, समापण (५) शब्द (६) शब्दकोश

अभिधेय वि० कहेवा योग्य (२) नाम देवा योग्य (३) अर्थ (४) विषय, वस्तु

अभिध्या स्त्री० इच्छा, लोभ (२) पारकु धन लेवानी इच्छा

अभिध्यान न० इच्छा, लोभ (२) चिंतन; ध्यान

अभिध्यै १ प० इच्छवु, लोभ करवो (२) ध्यान करवु, चिंतववु

अभिनय पु० शरीरना अंगोनु मनोभावदर्शक हलनचलन (२) नाटकमा वेष भजववो ते

अभिनव वि० तद्दन नवु (२) जुवान, खीलत (३) अनुभव विनानु, काचु

अभिनह् ४ प० बाधी देवु, मजबूत बाधवु

अभिनद् १ प० प्रसन्न थवु (२) मुबारकबादी आपवी (३) प्रशसा करवी (४) इच्छा करवी, मरजी बताववी

अभिनंदन न० संतोष, प्रशसा (२) प्रोत्साहन, उत्तेजन

अभिनंदनीय, अभिनंद्य वि० स्तुति करवा योग्य, आवकारवा योग्य

अभिनियोग पु० मन परोववु ते, लीन थवु ते

अभिनिविश् ६ आ० प्रवेश करवो (२) आसक्त थवु

अभिनिवेश पु० भक्ति; प्रेम (२) आसक्ति (३) निश्चय; संकल्प (४) अज्ञानजन्य मृत्युनो भय

अभिनिष्क्रमण न० बहार नीकळी जवु ते (२) संन्यास

अभिनिष्पत्ति स्त्री० समाप्ति, सिद्धि

अभिनी १ प० नजीक लई जवु (२) अभिनय करवो

अभिनीत वि० नजीक लवायेलु – लई जवायेलु (२) भजवायेलु (३) सुन्दर, सुशोभित बनावायेलु (४) उत्तम, श्रेष्ठ (५) योग्य, अनुकूळ (६) क्षमाशील (७) कृपाळु

अभिनेतृ पु० अभिनय करनार, नट

अभिनेत्री स्त्री० नटी

अभिन्न वि० नहि भागेलु, अखड (२) असर नहि पामेलु; नहि बदलायेलु (३) जुदु नहि तेवु

अभिपत् १ प० नजीक जवु (२) हुमलो करवो (३) नीचे पडवु

अभिपद् ४ आ० पासे जवु (२) मानी लेवु, कल्पवु (३) मदद करवी (४) हुमलो करवो, ताबे करवु (५) –मा जोडावु, मग्न थवु (६) स्वीकारवु

अभिपन्न ('अभिपद्' नु भू० कृ०) वि० पासे आवेलु – गयेलु (२) नासी आवेलु, शरणे आवेलु (३) पीडायेलु, ग्रस्त (४) दुर्भागी, दुःखी (५) अपराधी (६) स्वीकारायेलु

अभिप्राय पु० हेतु, आशय, उद्देश (२) इच्छा (३) शब्दनो अर्थ, भावार्थ, फलितार्थ (४) संबंध (५) मंतव्य

अभिप्रे (अभि+प्र+इ) २ प० पासे जवु (२) इरादो होवो

अभिप्रेत वि० इच्छेलु (२ स्वीकारायेलु; पसंद करायेलु (३) प्रिय, अनुकूळ

अभिप्लव पु० दुःख, पीडा (२) ऊभरावु ते, पूर (३) जळप्रलय

अभिप्लुत वि० व्याप्त थयेलु, दबायेलु

अभिभव पु० पराभव, पराजय (२) अपमान, तिरस्कार (३) मानहानि (४) उत्कर्ष, प्रचार

अभिभावक, अभिभाविन् वि० पराजय करनारु, जीतनारु (२) चडियातु

अभिभाषण न० वातचीत

अभिभू १ प० हराववु, जीतवु, श्रेष्ठ थवु (२) हुमलो करवो (३) अपमान करवु, मानभग करवु

अभिभूत वि० हरावायेलु, अपमानित

अभिभूति स्त्री० पराजय (२) अपमान; मानभग, अनादर

अभिमत वि० इष्ट, प्रिय (२) पसद करायेलु (३) समानित (४) पु० प्रियजन, प्रेमी (५) इच्छा

अभिमन् ४ आ० इच्छवु, लोभ करवो (२) पसद करवु (३) ममत थवु (४) विचारवु धारवु, कल्पना करवी, ध्यानमा लेवु

अभिमर्द पु० मर्दन करवु ते (२) कचरी नाखवु ते (३) युद्ध, सग्राम

अभिमर्श (-र्ष) पु० स्पर्श (२) हुमलो, वळात्कार, सभोग

अभिमत्र् १० आ० (क्यारेक प० पण) मत्रपूर्वक सस्कारवाळु करवु (२) बोलाववु मत्र वडे तेडवु (३) मसलत करवी

अभिमान पु० अहकार, स्वमान, गर्व (२) पोताने ज अनुलक्षवु ते (३) मान्यता, कल्पना, अभिप्राय (४) प्रेम, इच्छा

अभिमानिन् वि० अहकारयुक्त; गर्विष्ठ (२) पोताने ज अनुलक्षनारु (३) माननारु कल्पनारु, –नो देखाड करनारु

अभिमुख वि० समुख, नजीक (२) तत्पर (३) अनुकूळ

अभिमुखम् अ० –नी तरफ; समुख; नजीक

अभिमृश् ६ प० स्पर्श करवो; सबध थवो (२) धीमेथी घसवु

अभिया २ प० नजीक जवु (२) हुमलो करवो (३) रच्यापच्या रहेवु, लीन थई जवु

अभियान न० नजीक जवु ते (२) कूच; प्रयाण (३) हुमलो करवो ते

अभियायिन् वि० पासे जतु (२) –नी सामे कूच करतु, हुमलो करतु

अभियुक्त वि० उद्योगी, तत्पर, निश्चयी, सावध (२) निष्णात; कुशळ (३) जेना उपर आरोप मुकायेलो छे तेवु (४) जेना उपर हुमलो करायेलो छे तेवु (५) नियुक्त (६) कहेवायेलु; बोलायेलु (७) विश्वास मूकतु

अभियुज् ७ आ० जोडावु, उद्योग करवो (२) आक्रमण करवु (३) आरोप मूकवो (४) हक करवो (५) अधिकार सोंपवो, नीमवु (६) कहेवु

अभियोक्तृ वि० हुमलो करनारु (२) आरोप मूकनारु, फरियादी

अभियोग पु० उद्योग, खत (२) तीव्र अभ्यास (३) आक्रमण (४) आरोप; फरियाद

अभिरक्त वि० लीन, आसक्त (२) मीठु, मधुर

अभिरत वि० अत्यत आसक्त, निमग्न

अभिरति स्त्री० अत्यत आसक्ति, प्रेम

अभिरम् १ आ० (क्दाक प० पण) आनन्द पामवु

–प्रेरक० आनन्द पमाडवु, खुश करवु

अभिराद्ध वि० आरावेलु, प्रसन्न करेलु

अभिराम वि० मनोहर, प्रिय, अनुकूळ (२) सुन्दर, आकर्षक

अभिरामम् अ० सुन्दर रीते, मनोहर रीते

अभिरुच् १ आ० गमवु (२) इच्छवु

अभिरुचि स्त्री० अत्यत रुचि; प्रीति, शोख

अभिरुत न० अवाज, घोघाट, बूम

अभिरूप वि० योग्य, अनुकूळ (२) सुन्दर, रम्य (३) मानीतु (४) विद्वान, शाणु

अभिलप् १ प० वातचीत करवी
अभिलष् १, ४ उ० इच्छा राखवी, अभिलाषा राखवी
अभिलषित न० अभिलाषा; उत्कट इच्छा
अभिलाप पु० कहेवु ते, कही बतावबु ते
अभिलाष पु० उत्कट इच्छा; अभिलाषा
अभिलुलित वि० क्षुब्ध, चचळ
अभिवद् १ उ० –ने काई कहेवु (२) दर्शाववु, उल्लेख करवो (३) प्रणाम करवा
–प्रेरक० मानपूर्वक प्रणाम करवा के करावना (२) वाजित्र वगाडवु
अभिवद् १ आ० मानपूर्वक प्रणाम करवा
अभिवादन न० आदरपूर्वक प्रणाम
अभिविनीत वि० केळवायेलु, सस्कारी
अभिवीक्ष् १ आ० जोवु, तपासवु (२) परीक्षा करवी (३) –नी तरफ लक्ष राखवु – ढळवु
अभिवृत् १ आ० पासे जवु, तरफ जवु, सामे ऊभा रहेवु (२) हुमलो करवो, धसी जवु (३) शरू थवु, [illegible] बनवु (४) –नी तरफ फेलावु
अभिवृध् १ आ० वधवु (२) वधारो थवो, समृद्ध थवु
अभिव्यक्त वि० स्पष्ट करायेलु, दर्शावायेलु (२) स्पष्ट, उघाडु
अभिव्यक्ति स्त्री० व्यक्त थवु – प्रगट थवु – स्पष्ट थवु ते
अभिव्यंज् ७ प० दर्शाववु, स्पष्ट करवु
अभिव्याप् ५ प० व्यापवु, समाववु
अभिव्याप्ति स्त्री० व्यापवु ते, समावेश
अभिशस्ति स्त्री० शाप (२) अनिष्ट, आपत्ति (३) निंदा, तहोमत
अभिशस् १ प० निंदा करवी, आरोप मूकवो (२) प्रशसा करवी
अभिशाप पु० शाप (२) आरोप; तहोमत
अभिषव पु० यज्ञनी पूर्वतैयारी रूपे नाहवु ते (२) निचोवीने रस काढवो ते (३) अर्क काढवो ते (४) सोमरस पीवो ते
अभिषंग पु० सबध, आसक्ति (२) आलिंगन, सभोग (३) पराभव, तिरस्कार (४) अणवार्यु संकट (५) शाप, निंदा (६) खोटु तहोमत (७) शपथ (८) भूत-प्रेतनी बाधा
अभिषंज् (अभि + सज्) १ प० [अभिषजति] सबधमा आववु (२) आसक्त थवु
अभिषिक्त ('अभि + सिच्'नु भू० कृ०) वि० जळथी छटायेलु, अभिषेक करायेलु, राज्याभिषेक करायेलु
अभिषिच् (अभि+सिच्) ६ उ० [अभिषिंचति–ते] सीचवु (२) अभिषेक करवो, गादीए बेसाडवु
अभिषेक पु० जळसिंचन के तेनो विधि (मूर्ति अथवा नवा राजा उपर)
अभिष्टु (अभि+स्तु) २ प० स्तवन करवु, स्तुति करवी
अभिष्यद् (अभि+स्यद्) १ आ० झरवु, टपकवु (२) ऊभरावु (स्नेह, दया इ० थी)
अभिष्यद पु० झरवु-टपकवु ते (२) आख झम्या करवी ते (रोग) (३) अतिशय वृद्धि, वधारानो – वधारे पडतो भाग
अभिष्वग पु० सबध, अत्यत आसक्ति
अभिसमापद् ४ आ० प्रवेशवु
अभिसमापन्न वि० समुख आवेलु
अभिसरण न० मळवा जवु ते (२) प्रेमीओनु संकेतस्थानमा मळवा जवु ते
अभिसंधा ३ उ० छेतरवु (२) ताकवु, लक्ष्य करवु (३) उद्देश राखवो (४) सधि करवी, मित्रता करवी (५) वचन आपवु, कबूल राखवु (६) आक्षेप करवो, कलक चडाववु
अभिसंधा स्त्री० वाणी; वचन (२) कपट
अभिसंधान न० वाणी, वचन, विचार (२) हेतु, लक्ष्य (३) छेतरपिंडी, छळ (४) सधि करवी ते (५) आसक्ति, रस
अभिसंधि स्त्री० वाणी, वचन (२)

हेतु, आशय, लक्ष्य (३) अभिप्राय (४) करारनी शरत (५) छेतरपिंडी
अभिसंपत् १ प० –नी तरफ ऊडवु–कूदवु (२) आसपास ऊडवु
अभिसंपत्ति स्त्री० –ना रूप बनी जवु ते
अभिसंपद् ४ आ० –नु रूप धरवु (२) प्राप्त करवु (३) जई पहोचवु
अभिसंपन्न वि० –पूरेपूरु बनलु (२) भराई गयेलु, छवाई गयेलु
अभिसंपात पु० भेगा मळवु ते (२) युद्ध, विग्रह (३) शाप
अभिसरंभ पु० वेरनी लागणी
अभिसंहित वि० माथेनु; सहित, जोडायेलु
अभिसार पु० संकेत प्रमाणे प्रेमीने मळवा जवु ते (२) प्रेमीनु मिलनस्थान (३) हुमलो, युद्ध (४) साथी; सोबती (५) बळ, सामर्थ्य
अभिसारिका स्त्री० संकेत प्रमाणे नियत स्थळे प्रेमीने मळवा जनारी स्त्री
अभिसृ १ प० जवु, पासे जवु (२) संकेत प्रमाणे मळवा जवु (३) हुमलो करवो [तैयार करवु, रचवु
अभिसृज् ६ प० आपवु, बक्षवु (२)
अभिहत वि० प्रहार पामेलु, ईजा पामेलु (२) पीडायेलु, हणायेलु (३) गुणायेलु (गणित०)
अभिहन् २ प० प्रहार करवो, मारवु; नाश करवो (२) रोकवु, हाकी काढवु (३) वगाडवु (ढोल वगेरे)
अभिहरण न० पासे लाववु ते (२) लूटी लेवु ते [न० नाम, शब्द
अभिहित वि० बोलायेलु; कहेवायेलु (२)
अभिहृ १ उ० लई जवु; खेंची जवु (२) पासे लाववु
अभी वि० भय विनानु
अभी (अभि+इ) २ प० नजीक जवु (२) पहोचवु, प्राप्त करवु, (३) सेवा करवी, अनुसरवु

अभीक वि० अत्यंत उत्सुक (२) कामुक; विषयी (३) भयंकर, क्रूर (४) पासे गयेलु (५) बीक वगरनु (६) पु० पति, स्वामी (७) कवि
अभीक्ष्ण वि० वारंवार थतु (२) सतत रहेतु, कायम (३) अतिशय
अभीक्ष्णम् अ० वारंवार, फरी फरी, सतत (२) अत्यंत (३) जलदीथी
अभीघात पु० जुओ 'अभिघात'
अभीप्सित वि० इच्छेलु (२) प्रिय (३) न० इच्छा
अभीप्सु वि० अभिलाषावाळु; इच्छावाळु
अभीमान पु० जुओ 'अभिमान'
अभीर पु० गोवाळ, भरवाड
अभीशाप पु० जुओ 'अभिशाप'
अभीशु पु० लगाम (२) किरण
अभीष् ६ प० [अभीच्छति] इच्छवु, अत्यंत इच्छा राखवी
अभीषु पु० जुओ 'अभीशु'
अभीष्ट वि० इच्छेलु, इष्ट, प्रिय (२) पु० प्रिय जन (३) न० इच्छित वस्तु
अभुक्त वि० नहि खायेलु, नहि भोगवेलु (२) जेणे खाधु नथी तेवु
अभुजिष्या स्त्री० दासी के गुलाम न न होय तेवी – स्वतंत्र स्त्री
अभूत वि० नहि थयेलु, अस्तित्वमा न होय तेवु (२) असत्य, मिथ्या
अभूतपूर्व वि० अपूर्व, लोकोत्तर
अभूति स्त्री० अस्तित्वनो अभाव (२) गरीबाई (३) असामर्थ्य (४) नाश
अभूमि स्त्री० अनुचित स्थान के विषय (२) –ना क्षेत्रनी, शक्यतानी के मर्यादानी बहार होवु ते
अभेद वि० अविभक्त, भेदरहित, एक ज (२) पु० अभिन्नता, ऐक्य, भेदनो अभाव (३) निकट संबंध
अभेद्य वि० भागी तोडी न शकाय तेवु (२) जेना भागला न थई शके तेवु (३) न० हीरो

अभ्यग्र वि० नजीकनु (२) नवु, ताजुं
अभ्यधिक वि० वधारे (२) श्रेष्ठ, उत्तम
अभ्यनुज्ञा ९ उ० [अभ्यनुजानाति – 'जानीते] समति आपवी (२) विदाय आपवी
अभ्यनुज्ञा स्त्री० समति, अनुमति (२) हुकम, आज्ञा (३) छूटी – रजा – विदाय आपवी ते [करवी
अभ्यर्च् १, १० प० अर्चन करवु, स्तुति
अभ्यर्ण वि० समीप, नजीक (२) न० सांनिध्य
अभ्यर्थ् १० आ० विनती करवी, आजीजी करवी (२) इच्छा करवी
अभ्यर्थन न०, अभ्यर्थना स्त्री० विनती आजीजी, अरज (२) अरजी
अभ्यर्दन न० पीडा, त्रास
अभ्यर्ह् १, १० प० पूजवु, समानवु
अभ्यर्हित वि० पूजित, पूज्य, मानवंत (२) योग्य, उचित
अभ्यवहार पु० खावु पीवु ते (२) भोजन
अभ्यवहार्य वि० खावा माटे योग्य, खावा लायक (२) न० खावु ते (३) भोजन
अभ्यवहृ १ उ० खावु (२) फेंकवु; नाखी देवु (३) एकठु करवु, मेळववु
अभ्यस् ४ उ० अभ्यास करवो, टेव पाडवी (२) वारवार करवु (३) शीखवु (४) फेंकवु, ताकवु (बाण)
अभ्यसन न० अभ्यास, वारवार आवर्तन करवु ते
अभ्यसूयक वि० ईर्ष्याळु, द्वेषी
अभ्यसूया स्त्री० ईर्ष्या, अदेखाई, द्वेष, क्रोध
अभ्यस्त वि० वारवार करी जोयेलु (२) महावरावाळु, टेवायेलु (३) द्वित्व पामेलु – बेवडायेलु (व्या०)
अभ्यंग पु० शरीरे तेल वगेरे पदार्थ चोळवा ते (२) लेप
अभ्यञ्ज् ७ प० खरडवु, चोपडवु
अभ्यञ्जन न० शरीरने तेल वगेरे चोळवु ते (२) आंखमां काजळ आंजवु ते
अभ्यन्तर वि० अंदरनु (२) अंदर समायेल पामेलु (३) परिचित, निखालस (४) निकटनु (५) न० अंदरनो भाग (वस्तु, स्थळ के समयनो)
अभ्यन्तरीकृ ८ उ० परिचित करवु, प्रवेश पमाडवो (२) दाखल करवु (३) निकटनु मित्र बनाववु
अभ्यागत वि० नजीक आवेलु, सामे पहोंचेलु (२) अतिथि तरीके आवेलु (३) पु० अतिथि, महेमान
अभ्यागम् १ प० [अभ्यागच्छति] नजीक आववु, सामा पहोंचवु (२) –ने जई पडवु (विरोधमां)
अभ्यागम पु० सामा पहोंचवु ते; आगमन, नजीक जवु (२) सांनिध्य (३) ऊभा थवु (आदर माटे) (४) मारवु – हणवु ते (५) वेर (६) युद्ध
अभ्यादा ३ आ० हाथ लेवु, झूंटवी लेवु, (२) धारण करवु पहेरवु (माळा) (३) उपाडी लेवु (गाननो तंतु)
अभ्यावर्तिन् वि० वारवार आवतु
अभ्याश पु० समीपता, नजीकपणु (२) त्वरा; झडप (३) व्यापवु – पहोंचवु ते
अभ्यास पु० वारवार पुनरावृत्ति (२) महावरो, टेव (३) भणवु ते; शीखवु ते (४) सामीप्य, नजीकपणु (५) द्विरुक्ति पामेला धातुनो पूर्व भाग (व्या०) (६) ध्रुवपद (संगीत०)
अभ्यासद् १ प० [अभ्यासीदति] प्राप्त थवु, पहोंचवु (२) –मां बेसवु –प्रेरक० हुमलो करवो
अभ्याहत वि० हणायेलु, प्रहार करायेलु (२) रुकावट पामेलु, अटकावायेलु (३) भूलभरेलु [लूटी लेवु ते
अभ्याहार पु० लावी आपवु ते (२)
अभ्याहार्य वि० खावानु

अभ्याहित ('अभि+आ+धा'नु भू० कृ०) वि० मूकेलु, उमेरेलु (बळतण इ०)

अभ्याहृ १ प० लई आववु, लावीने आपवु (२) उपाडी जवु, लूटी जवु

अभ्युक्षण न० जळ छाटवु ते, जळ छाटीने पवित्र करवु ते [मुजबनु

अभ्युचित वि० चालतु आवेलु, रिवाज

अभ्युच्चय पु० वृद्धि, समृद्धि

अभ्युच्छ्रित वि० उच्च, उन्नत

अभ्युत्था (अभि+उद्+स्था) १ प० [अभ्युत्तिष्ठति] सामे ऊठीने मान-आपवु (२) मळवा माटे ऊठवु - ऊभा थवु

अभ्युत्थान न० स्थान परथी ऊठीने मान आपवु ते (२) प्रयाण करवु ते, प्रयाण माटेनी तैयारी (३) उन्नति, उत्कर्ष, वृद्धि

अभ्युत्थित वि० ऊभु थयेलु, ऊठेलु (२) तैयार थयेलु, तत्पर थयेलु

अभ्युत्पत् १ प० - उपर कूदको मारवो

अभ्युत्पतन न० कूदको मारवो ते, हुमलो करवो ते

अभ्युदय पु० उन्नति, वृद्धि, आबादी (२) उत्सव (३) उदय थवो ते, ऊगवु (सूर्यादिनु) (४) इच्छित वस्तु सिद्ध थवी ते (५) आरभ

अभ्युदि (अभि+उद्+इ) २ प० (सूर्यादिनु) ऊगवु (२) ऊचे चडवु (३) उन्नत थवु, आबाद थवु (४) बनवु, थवु (५) सामे थवु

अभ्युदित ('अभ्युदि'नु भू० कृ०) वि० ऊगेलु (२) बनेलु, थयेलु (३) उन्नत - आबाद थयेलु (४) सूर्य ऊगी जाय छता सूई रहेनारु (५) सामे थयेलु (युद्धमा) (६) ('अभिवद्'नु भू० कृ०) वाणीमा बोलायेलु - उच्चारायेलु

अभ्युद्गत वि० मळवा सामु गयेलु (२) व्यापेलु (कीर्ति)

अभ्युद्यत वि० ऊचु करेलु (२) सज्ज थयेलु, तत्पर थयेलु (३) सामे रजू करेलु, वगर माग्ये आपेलु (४) उदय पामेलु, प्रगट थयेलु

अभ्युन्नत वि० ऊचु, उन्नत

अभ्युन्नति स्त्री० उन्नति, आबादी

अभ्युपगत वि० स्वीकारेलु, कबूल राखेलु (२) पासे गयेलु, सामु आवेलु

अभ्युपगम् १ प० [अभ्युपगच्छति] पासे जवु, आवी पहोंचवु (२) मददे आववु (३) मेळववु, प्राप्त करवु (४) कबूल करवु, कबूल राखवु

अभ्युपगम पु० आवी पहोंचवु ते (२) कबूल राखवु ते (३) वचन, करार (४) मान्यता, अभिप्राय

अभ्युपपत्ति स्त्री० मददे जवु ते (२) सात्वन, रक्षण (३) अनुग्रह, कृपा (४) वचन, करार

अभ्युपपद् ४ आ० (आपत्तिमाथी) छोडाववु, बचाववु (२) आश्वासन आपवु (३) मदद मागवी, शरणे जवु

अभ्युपपन्न वि० शरणागत, शरणे आवेलु (२) बचावेलु, मरक्षेलु

अभ्युपाय पु० वचन, करार (२) उपाय, साधन

अभ्युपायन न० लाच, रुशवत

अभ्युपे (अभि+उप+इ) २ प० पासे जवु, आवी पहोंचवु, प्रवेश करवो (२) स्थिति प्राप्त करवी - पामवी (३) वचन आपवु, कबूल करवु, स्वीकारवु (४) समत थवु, मान्य राखवु (५) ताबे थवु, शरणे जवु

अभ्युपेत वि० पासे आवेलु, सामे आवेलु (२) स्वीकारेलु

अभ्यूह् १ उ० दलील करवी, तर्क करवो

अभ्रूह पु० वादविवाद, चर्चा, दलील (२) तर्क, अनुमान

अभ्र् १ प० जवु (२) रखडवु

अभ्र न० वादळु (२) आकाश, वातावरण (३) अबरक

अभ्रक न० अबरक

अभ्रपुष्प न० आकाशकुसुम (असंभवित वस्तु)

अभ्रमु स्त्री० ऐरावतनी सहचरी

अभ्रंकष, अभ्रलिह वि० वादळाने अडके तेवु, घणु ऊंचु (२) पु० पवन

अभ्रित वि० वादळथी घेरायेलु

अम् अ० जराक (२) जलदी

अमनस्, अमनस्क वि० विचारहीन (२) बुद्धिहीन (३) बेदरकार, लक्ष विनानु (४) मन उपर काबू विनानु (५) प्रेमरहित

अमम वि० ममतारहित (२)निरभिमानी

अमर वि० अविनाशी (२) पु० देव

अमरगुरु पु० देवोना आचार्य – बृहस्पति

अमरतटिनी स्त्री० गगा नदी

अमरतरु पु० कल्पवृक्ष (२) देवदार

अमरपति पु० इद्र

अमरपुर न० स्वर्ग

अमराद्रि पु० मेरु पर्वत

अमराधिप पु० इन्द्र

अमरापगा स्त्री० गगा नदी

अमरालय पु० स्वर्ग

अमरावती स्त्री० इद्रनी नगरी

...गना स्त्री० देवनी स्त्री(२)अप्सरा

अमरा... ...० देवोनो राजा – इन्द्र

अमरेश्वर पु ...ना वहारनु; मर्यादानु

अमर्याद वि० मर्या... ...दा न जाळवतु, उल्लघन करतु (२) मर्या... ...० अनत

अनादर करतु (३) हद वहार... ...

अमर्ष पु० असहिष्णुता (२) क्रो... (३) अदेखाई

अमर्षण, अमर्षित, अमर्षिन् वि० क्रोधी, असहिष्णु (२) अदेखाईवाळु

अमल वि० निर्मळ, शुद्ध (२) श्वेत; प्रकाशित

अमंगल, अमगल्य वि० अशुभ (२) दुर्भागी

अमा वि० अमाप (२) अ० साथे, –नी साथे (३)स्त्री० चन्द्रनी सोळमी कळा (४) अमावास्या

अमात्य पु० प्रधान, सचिव

अमात्र वि० अमाप, मर्यादारहित

अमानन न०, अमानना स्त्री० अपमान; तिरस्कार, अवगणना

अमानिता स्त्री०नम्रता;निरभिमानीपणु

अमानुष, अमानुष्य वि० अलौकिक, अद्भुत (२) दिव्य

अमायिक, अमायिन् वि० निष्कपटी

अमावसी, अमावस्या, अमावासी, अमावास्या स्त्री० अमास

अमित वि० अमाप, अनत(२)अज्ञात

अमिताभ वि० अत्यत तेजस्वी

अमित्र पु० शत्रु, विरोधी, हरीफ

अमिष वि० छळ विनानु (२) पु० लौकिक भोग पदार्थ (३) मांस

अमुक वि० कोई एक, फलाणु

अमुतः अ० त्यांथी (२) परलोकमांथी

अमुत्र अ० त्यां, ते स्थळे (२) परलोकमां; बीजा जन्ममां

अमुष्यकुल न० खानदान कुळ; प्रसिद्ध कुळ

अमुष्यपुत्र पु० कुळवान पुत्र

अमूर्त वि० मूर्त रूप विनानु, निराकार

अमूल, अमूलक वि० मूळ वगरनु (२) उपादानकारण रहित (३) प्रमाण रहित, आधार विनानु

अमूल्य वि० जेनी किंमत आंकी न शकाय तेवु, घणु ज कीमती

अमृत वि० नहि मरी गयेलु (२) अविनाशी, अमर (३) अमरपणु निपजावनारु (४) सुन्दर, इष्ट (५) पु० ... देव (६) शिव, विष्णु (७) न० ...मोक्ष (८) स्वर्ग (९) अमर अमरपणु,

करे नेवो रस (१०) पाणी (११) घी (१२) दूध (१३) मिष्टान्न (१४) यज्ञमा वधेलु ते (१५) वगर माग्ये मळेलु ते (१६) मनगमती वस्तु
अमृतदीधिति, अमृतद्युति पु० चन्द्र
अमृतप पु० विष्णु (२) देव
अमृतभुज् पु० देव [मथन
अमृतमंथन न० अमृतप्राप्ति अर्थे (समुद्रनु)
अमृतलता, अमृतलतिका स्त्री० अमरवेल
अमृतसार वि० अमृतमय; अमृत जेवु मधुर
अमृता स्त्री० सुरा, मद्य (२) तुलसी, हरडे, गळो इ० केटलीक वनस्पतिनु नाम
अमृतांशु पु० चन्द्र
अमेधस् वि० बुद्धिहीन, मूर्ख
अमेध्य वि० यज्ञने माटे अयोग्य (२) अपवित्र (३) न० विष्टा
अमेय वि० अपरिमित, मापी न शकाय तेवु (२) अज्ञेय [अचूक, सफळ
अमोघ वि० कदी निष्फळ न नीवडतु,
अम्ल वि० खाटु (२) पु० खटाश, खाटो रस (३) न० छाश
अम्लान वि० नहि करमायेलु (२) झाखु नहि तेवु (३) स्पष्ट; चोख्खु
अय् १ उ० जवु
अय पु० जनार (समासने अते, उदा० 'अस्तमय') (२) सद्भाग्य
अयज्ञ वि० यज्ञ न करनारु
अयति वि० पूरो प्रयत्न न करनारु; यत्नमा मद
अयतिन् वि० अनिग्रही, असयमी
अयत्न वि० यत्न न करवो पडे तेवु (२) पु० यत्ननो अभाव
अयथा अ० जेम होवु जोइए, के जेवु धार्यु होय तेवु नहि तेम [नहि एम
अयथावत् अ० खोटी रीते, यथायोग्य
अयन वि० जतु (समासने अते) (२) न० गति (३) मार्ग (४) व्यूहनो प्रवेशमार्ग (५) आश्रयस्थान (६) विषुववृत्तनी उत्तरमा अने दक्षिणमा देखाती सूर्यनी गति (७) ए गतिने लागतो वखत (छ मास) (८) मोक्ष
अयमित वि० काबूमा नहि राखेलु के रहेलु (२) नहि कापेलु, सस्कारेलु नहि तेवु (नख इ०)
अयशस् वि० अपकीर्तिवाळु, बेआबरू थयेलु (२) न० अपयश, अपकीर्ति
अयस् न० लोढु (२) पोलाद (३) कोई पण धातु
अयस्कात, अयस्कांतमणि पु० लोहचुबक
अयःशंकु पु० भालो (२) लोढानो अणीदार खीलो [माग्ये मळेलु दान
अयाचित वि० नहि याचेलु (२) न० वगर
अयाचितव्रत न० वगर माग्ये जे मळे ते वडे जीववानु व्रत
अयाज्य वि० यज्ञ करवानु अधिकारी नहि तेवु; जेने माटे यज्ञ न करी शकाय तेवु [के नबळु नहि थयेलु
अयातयाम वि० ताजु; वापरवाथी जीर्ण
अयि अ० 'हे' एवा अर्थनु एक प्रेम-सबोधन (२) प्रार्थना, विनती, सौम्य प्रश्न इ०नो भाव दर्शावे छे
अयुक्त वि० नहि जोतरेलु (२) नहि जोडेलु (३) चचळ, असावध, बेध्यान (४) नहि रोकेलु—योजेलु (५) अनुचित, अयोग्य (६) खोटु, जूठु
अयुक्ति स्त्री० जोडायेलु न होवु ते (२) अयोग्यता (३) युक्तिपुर सर न होवु ते, असबद्धता
अयुग वि० एकलु (२) एकी सख्यावाळु (३, ५, ७, इ०)
अयुगपद् अ० एक साथे नहि तेवी रीते, एक पछी एक
अयुगल वि० जुओ 'अयुग'
अयुगार्चिस् पु० (सात ज्वाळावाळो) अग्नि
अयुग्म वि० जोडीमा नहि तेवु, एकलु, छूटु (२) एकी सख्यावाळु (३, ५, ७, इ०)

अयुग्मनेत्र, अयुग्मलोचन पु० (त्रण आखवाळा) शकर
अयुग्मशर पु०(पाच बाणवाळो)कामदेव
अयुत वि० जुदु करायेलु, नहि जोडायेलु (२) न० दश हजारनी सख्या
अये अ० 'हे' ए अर्थनु प्रेमसबोधन (२) आश्चर्य, विस्मय, क्रोध, शोक, भय, स्मरण, थाक इ० नो भाव दर्शावे छे
अयोग्य वि० अघटित, अनुचित (२) नकामु, निरुपयोगी (३) प्रतिकूळ, बध न बेसतु
अयोघन पु० हथोडो, घण
अयोजाल न० लोढानी जाळी
अयोध्य वि० हुमलो के सामनो न करी शकाय तेवु
अयोनि वि० अनादि, उत्पत्तिरहित (२) योनि द्वारा न जन्मेलु (३) शास्त्रविधि प्रमाणेना लग्नथी नहि जन्मेलु (४) जेना कुळनी खबर नथी तेवु
अयोनिज, अयोनिजन्मन् वि० सृष्टिक्रम प्रमाणे गर्भमाथी नही जन्मेलु
अयोनिजा, अयोनिसभवा स्त्री० सीता
अयोमुख पु० बाण [क्रूर, निर्दय
अयोहृदय वि० लोढा जेवा हृदयवाळु,
अर वि० उतावळु, वेगी (२) अल्प, थोडु (३) जतु, जनारु (समासने छेडे) (४) पु० पैडानो आरो
अरघट्ट, अरघट्टक पु० रेट
अरज, अरजस्, अरजस्क वि० धूळ वगरनु (२) मेलु नहि तेवु, स्वच्छ (३) रजोगुण विनानु (४) ऋतुस्राव प्राप्त न थयो होय तेवु [पथ्थर
अरणि पु० सूर्य (२) अग्नि (३) चकमकनो
अरणि पु०, स्त्री०, **अरणी** स्त्री० घसीने अग्नि उत्पन्न करवा वपरातो लाकडानो टुकडो (शमी वृक्षनो)
अरणीसुत पु० शुकदेव (२) अग्नि
अरण्य न० जगल, वन
अरण्यचर वि० जगली
अरण्यचद्रिका स्त्री० (अरण्यमा चादनी जेवी) व्यर्थ शोभा
अरण्यरुदन, अरण्यरुदित न० (अरण्यमा रडवा – बूम पाडवा जेवो) व्यर्थ विलाप; व्यर्थ प्रवृत्ति [(२) वानप्रस्थ
अरण्यवासिन् वि० अरण्यमा रहेनारु
अरण्यौकस् वि० जगलमा रहेनारु (२) वानप्रस्थ
अरति वि० असतुष्ट; उद्विग्न (२) निरुत्साही, मद (३) स्त्री० अप्रीति, अणगमो (४) उद्वेग, शोक (५) असतोष, चित्तनी अस्वस्थता
अरत्नि पु०, स्त्री० कोणी (२) एक हाथनु माप (कोणीथी टचली आगळीना छेडा सुधीनु) (३) हाथ
अरम् अ० जलदी, तरत ज, हमणा ज
अरर न० बारणु (जोडमानु दरेक)
अरविंद न० कमळ (लाल के नीलु)
अरविंदिनी स्त्री० कमलिनी (२) कमलसमूह (३) कमळनु सरोवर के तळाव
अरसिक वि० नीरस (२) लागणी वगरनु (३) रसनी कदर न करी शके तेवु
अराजक वि० राजा विनानु, अधाधूधीवाळु
अरात् अ० तत्काळ, जलदी
अराति पु० शत्रु, दुश्मन
अराल वि० वाकुचूकु (२) वाकवाळु (३) पु० वाको वळी गयेलो हाथ (४) मदोन्मत्त हाथी [स्त्री
अरालकेशी स्त्री० वाकडिया वाळवाळी
अरि पु० शत्रु, दुश्मन
अरित्र न० हलेसु (२) सुकान
अरिष्ट वि० सुरक्षित, कुशळ (२) शुभ (३) अशुभप्रद (४) अविनाशी (५) पु० शत्रु (६) अरीठानु झाड (७) लीमडानु झाड (८) मद्य, आसव (९) न० दुर्भाग्य, सकट

(१०) अनिष्ट सूचक उत्पात (११) मोतनी निशानी (१२) सुवावडीनो ओरडो (१३) मद्य, आसव
अरिसूदन पु० शत्रुनो नाश करनार
अरुचि स्त्री० अनिच्छा, नामरजी, अणगमो (२) भूख न लागवी ते
अरुज वि० नीरोगी (२) रोग दूर करनारु (३) स्वस्थ, दुःखरहित
अरुण वि० सध्याना रगनु; रताश पडतु; काळाश मिश्रित लाल वर्णनु (२) पु० सवारनो लालाश पडतो रग (३) सूर्यनो सारथि (४) सूर्य
अरुणप्रिय, अरुणसारथि, अरुणार्चिस् पु० सूर्य
अरुणित वि० लाल थयेलु, लाल रगे [रगायेलु
अरुणोदय पु० प्रातःकाळ, परोढियु
अरुंतुद वि० मर्मवेधक, तीव्र व्यथा करनारु
अरुन्धती स्त्री० वसिष्ठ ऋषिनी पत्नी
अरुष् वि० क्रोधरहित
अरूप वि० आकाररहित (२) कुरूप (३) भिन्न, असमान (४) न० खराब रूप, रूपनो अभाव
अरे अ० ऊतरता दरज्जाना माणसने सबोधवानो उद्गार (२) आश्चर्य, दुःख, चिता, क्रोध इ० सूचक उद्गार
अरेरे अ० क्रोध, शोक, तिरस्कार दर्शाववा वपरातो उद्गार
अरोग वि० नीरोगी, तदुरस्त (२) पु० तदुरस्ती, आरोग्य
अरोगिन्, अरोग्य वि० नीरोगी
अरोचक वि० न प्रकाशतु; तेजस्वी नहि तेवु (२) अणगमतु, कटाळो आपनारु (३) अरुचि उत्पन्न करे तेवु (४) पु० अरुचि; कटाळो [गमे तेवु; कदरूपु
अरोचिष्णु वि० तेजस्वी नहि तेवु (२) न
अर्क वि० अर्चनीय (२) पु० सूर्य (३) अग्नि (४) स्फटिक (५) आकडो
अर्कबंधु, अर्कबांधव पु० शाक्यमुनि; बुद्ध
अर्कोपल पु० लाल चूनी (२) सूर्यकात मणि
अर्गल पु०, न०, **अर्गला, अर्गली** स्त्री० आगळो, भूगळ, उलाळो (२) रुकावट – विघ्न करनार वस्तु
अर्घ् १ प० मूल्य वेसवु
अर्घ पु० किमत, मूल्य (२) देव अथवा महापुरुषनी पूजा माटेनो सामान
अर्घ्य वि० पूजवा योग्य, मान आपवा योग्य (२) न० पूजन, पूजा (३) पूजनसामग्री
अर्च् १ उ० पूजन करवु, मान आपवु, सत्कारवु (२) प्रकाशवु (३) १० प० पूजन करवु, सत्कारवु
अर्चन वि० पूजा करतु, सत्कारतु (२) न० पूजन, पूजा
अर्चना स्त्री० पूजन, अर्चन
अर्चा स्त्री० पूजा, अर्चन (२) पूजा करवा माटेनी मूर्ति
अर्चिष्मत् वि० ज्वाळावाळु, प्रकाशतु (२) पु० अग्निदेव (३) सूर्य
अर्चिष्मती स्त्री० अग्निनी नगरी अथवा लोकनु नाम
अर्चिस् न० प्रकाशनु किरण, ज्वाळा (२) प्रकाश, तेज (३) पु० अग्नि (४) प्रकाशनु किरण
अर्ज् १ प० मेळववु; कमावु; प्राप्त करवु (२) उपाडवु, लेवु (३) १० प० मेळववु, प्राप्त करवु
अर्जन न० मेळववु – कमावु ते
अर्जित वि० मेळवेलु, प्राप्त करेलु; कमायेलु
अर्जुन वि० श्वेत, शुभ्र (२) पु० पाडु राजानो त्रीजो पुत्र – अर्जुन (३) कार्तवीर्य – सहस्रार्जुन (४) एक वृक्ष
अर्जुनध्वज पु० हनुमान
अर्जुनी स्त्री० गाय
अर्णव पु० समुद्र (२) प्रवाह, मोजु, पूर

शक्तिमान होवु (५) –नी किंमतनु होवु (६) १० प० मान आपवु, पूजवु
अर्ह वि० पूज्य, समाननीय (२) योग्य; लायक; अधिकारवाळु (३) किमतनु; कीमती (४) समर्थ, शक्तिमान (५) पु० मूल्य, किमत (६) योग्यता
अर्हण न०, अर्हणा स्त्री० पूजन करवु ते; मान आपवु ते (२) पूजनसामग्री; भेट, बक्षिस [(४) पु० बुद्ध (५) तीर्थंकर
अर्हत् वि० पूज्य (२) योग्य (३) विख्यात
अर्हत वि० पूज्य, माननीय (२) योग्य (३) पु० बुद्ध (४) बौद्ध भिक्षु
अर्हा स्त्री० पूजा, अर्चना
अर्ह्य वि० पूज्य (२) स्तुत्य (३) उचित (४) मेळववा लायक
अलक पु०, न० वाळनी लट–गुच्छो (२) कपाळ उपरना वाकडिया वाळ
अलकनंदा स्त्री० गंगा (२) तेने मळती नदी [अलकापुरी
अलका स्त्री० कुबेरनी राजधानी –
अलकाधिप, अलकेश्वर पु० कुबेर
अलक्त, अलक्तक पु० अळतो
अलक्षण वि० शुभ चिह्नो विनानु (२) विशेष चिह्न के लक्षण विनानु (३) अपशुकनियाळ; अभागी (४) समजमां न आवे तेवु [लक्षण विनानु
अलक्षित वि० नहि जोयेलु (२) चिह्न के
अलक्ष्मी स्त्री० दुर्भाग्य, दारिद्र्य
अलक्ष्य वि० नजरे न पडतु, अज्ञात; अदृश्य (२) चिह्न के लक्षण विनानु
अलघु वि० भारे; वजनदार (२) ह्रस्व नहि तेवु, दीर्घ (मात्रा) (३) गभीर (४) तीव्र
अलम् अ० पूरतु – जोईए तेटलु होय तेम (२) शक्तिमान – समर्थ होय तेम (३) तुल्य – समान होय तेम (४) हवे बस, हवे नहि – एवा अर्थमा (५) शोभीतु – सुंदर – सुघड होय तेम

अलर्क पु० आठ पगवाळु एक कल्पित प्राणी (तीक्ष्ण दंष्ट्रा अने कांटाळा वाळवाळु)
अलस वि० आळसु (२) सौम्य, मंद (३) थाकेलु (४) धीमु, जड
अलस्य वि० आळसु
अलंकरण न० सुशोभित करवु ते (२) शोभा, शणगार (३) आभूषण, घरेणु
अलंकामता स्त्री० संपूर्ण तृप्ति
अलंकार पु० शोभा; सौन्दर्य (२) घरेणु; कोई पण शोभीती वस्तु (३) शब्द अथवा अर्थनी चमत्कृतिवाळी रचना
अलंकृ ८ उ० शणगारवु, सुशोभित करवु (२) रोकवु, वस करावबु
अलंकृत वि० विभूषित, शणगारेलु
अलंकृति स्त्री० शोभा, शणगार (२) घरेणु (३) शब्द के अर्थनी चमत्कृति-वाळी रचना – अलंकार
अलंक्रिया स्त्री० शणगारवानी क्रिया
अलंघनीय, अलंघ्य वि० ओळंगी न शकाय तेवु (२) जेने पहोंची न शकाय तेवु (३) सुरक्षित
अलंभूष्णु वि० समर्थ, शक्तिमान
अलात पु०, न० खोरणु, खोरियु
अलाबु (–बू) स्त्री० तुंबडु
अलाभ पु० न मळवु ते (२) हानि
अलि पु० भमरो
अलिक न० कपाळ, ललाट
अलिकुल न० भमराओनो समूह
अलिन् पु० भमरो
अलिनी स्त्री० भ्रमरसमूह
अलिंग वि० चिह्न विनानु (२) खराब चिह्नवाळु
अलिंजर पु० माटीनु मोटु वासण; माण
अलिंद पु० मुख्य बारणा परनु छजु (२) बारणा आगळनो चोक
अलीक वि० अप्रिय, प्रतिकूळ (२) खोटु, जूठु (३) न० कपाळ (४) अप्रिय – प्रतिकूळ एवु ते

अलोक वि० अदृश्य (२) निर्जन (३) मरण पछी (सुकृत्यनां अभावे) जेने कोई पण लोकनी प्राप्ति थती नथी तेवु (४) अवकाशनी पारनु (५) पु०, न० लोकनो अत – विनाश (६) पाताल (७) अभौतिक – आध्यात्मिक जगत
अलोकसामान्य वि० असामान्य
अलोक्य वि० परलोक – स्वर्ग न प्राप्त करावनारुं
अलोमक, अलोमिक वि० वाळ वगरनु
अलोल वि० शात; अक्षुब्ध (२) स्थिर; दृढ; चचळ नहि तेवु (३) तृष्णा वगरनु
अलोलुत्व,अलोलुप्त्व न० लोलुपतानो अभाव; विपयो प्रत्ये निरपेक्षता
अलौकिक वि० असामान्य, विलक्षण (२) दिव्य, अद्भुत (३) दुर्लभ
अल्प वि० नजीवु;क्षुल्लक (२) थोडु,नानु
अल्पक वि० सूक्ष्म, नानु (२) नीचु, हलकु, तुच्छ
अल्पज्ञ वि० थोडु जाणनारु
अल्पधी वि० आछी बुद्धिवाळु, मूर्ख
अल्पप्राण पु० उच्चार करता ओछो प्रयत्न करवो पडे तेवो वर्ण (व्या०)
अल्पभाषिन् वि० थोडु बोलनारु, मितभाषी
अल्पमेधस् वि० टूकी बुद्धि के समजवाळु
अल्पसत्त्व वि० अल्प बळ के हिमतवाळु
अल्पसार वि० थोडी किंमतनु
अल्पात् अ० जुओ 'अल्पेन'
अल्पाल्प वि० बहु थोडु
अल्पित वि० ओछु करायेलु (२) हलकु पाडेलु, अपमानित
अल्पीभू १ प० ओछु थवु, नाना थवु
अल्पेतर वि० मोटु; वधारे
अल्पेन अ० थोडा माटे, अल्प कारणथी (२) वहु सहेलाईथी, मुश्केली वगर
अल्ला स्त्री० मा, माता
अव् १ प० रक्षण करवु (२) प्रसन्न करवु; आनन्द आपवो (३) पमद करवु;इच्छवु

अव अ० उपसर्ग तरीके – दूरता, ओछापणु, नीचापणु, एवा अर्थमा वपराय छे (२) क्रियापदना धातुनी पूर्वे – निश्चय, व्यापकता, लघुता, अवज्ञा, आश्रय–आधार, शुद्धि, पराभव, अभाव, आज्ञा, नीचापणु, ज्ञान, एवा अर्थमा वपराय छे
अवकर पु० पूजो, कचरो
अवकर्ण् १० प० साभळवु
अवकर्तन न० कापवु ते, फाडवु ते (२) रणभूमि
अवकल्पित वि० –ने मळतु आवतु, बध [बेसतु
अवकाश पु० प्रसग, तक, योग्य समय (२) स्थान, जगा (३) आकाश, खाली जगा (४) वच्चेनो समय, वचगाळो (५) छिद्र, बाकोरु
अवकीर्ण वि० वेरायेलु, छवायेलु (२) भागेलु – चूरो करेलु (३) नाश करेलु (४) व्रतभग करेलु, व्रात्य बनेलु (५) वेरविखेर थतु, भागी पडतु
अवकुंचन न० सकोचन (२) वाकु वळवु – वाळवु ते
अवकुंठित वि० चारे तरफ घेरायेलु (२) खेचायेलु, आकर्षायेलु
अवकृत् ६ प० कापी नाखवु, फाडी लेवु
अवकृत वि० नीचु वळेलु
अवकृष् १ प० जोरथी खेचवु (२) खेची काढवु (३) दूर करवु
अवकृष्ट वि० खेची काढेलु (२) दूर करायेलु (३) काढी मूकेलु (४) नीचु; हलकु, अधम
अवकॄ ६ प० [अवकिरति] वेरवु, विखेरवु, पाथरवु (२) छाई देवु, भरी काढवु (३) वहार काढवु (४) खखेरी काढवु, तजवु (५) ६ आ० [अवकिरते] फेलावु (७) छूटु पडवु, खरी पडवु (८) वेवफा नीवडवु
अवक्लृप् १ आ० -ना समान होवु, योग्य

होवु, शक्य होवु (२) परिगमवु; सिद्ध करवु, मदद करवी
—प्रेरक० तैयार करवु (२) शक्य मानवु (३) योग्य रीते वापरवु

अवक्रमण पु०, **अवक्रान्ति** स्त्री० नीचे ऊतरवु ते, ऊतरी आववु ते (२) गर्भमा प्रवेश करवो ते

अवक्रोश पु० गाळ, निंदा (२) शाप (३) बेसूरो—कर्कश अवाज

अवक्षय पु० क्षय, नाश

अवक्षिप् ६ प० काढी नाखवु, फेंकी देवु (२) ठपको आपवो, निंदा करवी

अवक्षुत वि० छींक खावाथी के थूंक्याथी अपवित्र थयेलु [आक्षेप

अवक्षेप पु० ठपको, निंदा (२) वांधो,

अवगण् १० उ० अवगणना करवी, उपेक्षा करवी

अवगत वि० जाणेलु, समजेलु (२) जाणीतु, प्रसिद्ध (३) अवगति पामेलु (४) स्वीकारेलु, कबूल राखेलु

अवगति स्त्री० जाणवु ते, समजवु ते (२) निश्चित ज्ञान

अवगम् १ प० [अवगच्छति] जाणवु, समजवु (२) मानवु, गणवु (३) खातरी थवी [समजण, निश्चित ज्ञान

अवगम पु०, **अवगमन** न० ज्ञान,

अवगाढ ('अवगाह्'नु भू० कृ०) वि० अंदर पेठेलु, डूबेलु (२) नीचु, ऊंडु (३) जेमा स्नान करवामा आवतु होय तेवु

अवगाह् १ आ० स्नान करवु, नाहवु, डूबकी मारवी (२) प्रवेशवु, व्यापवु

अवगाह पु०, **अवगाहन** न० स्नान करवु ते (२) डूबकी मारवी ते, प्रवेशवु ते (३) विषयनो पूरो अभ्यास करवो ते (४) नाहवानु स्थान

अवगीत वि० बेसूरु गायेलु (२) निंदित; लोकापवाद पामेलु (३) दुष्ट, गर्हित; नीच (४) वारवार जोयेलु (५) न० निंदा-काव्य (६) ठपको, [illegible] (७) बेसूरु गायन

अवगुण पु० दोष; खामी

अवगुर् ६ उ० धमकी नाखे [illegible] करवो, [illegible]

अवगुर् १ उ० [illegible]; छुपाववु (२) [illegible]

अवगुंठन न० बुरखो (२) [illegible]

अवगुंठित वि० [illegible], [illegible]; छुपावेलु

अवगुफित वि० [illegible]

अवग्रह् ९ उ० [अवगृह्णाति-गृह्णीते] [illegible] (२) [illegible] पाडवु (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible] करवो (७) पकडवु (पशुने)

अवग्रह पु० समासना अवयवो [illegible] पाडवा ते (२) 'अ' नो लोप थयो होय, त्यारे 'अ' ने बदले मुकातु आवु 'ऽ' चिह्न (३) [illegible] (४) शिक्षा, दंड (५) अनावृष्टि (६) अंकुश (हाथी माटेनो) (७) विघ्न, अंतराय (८) भावना, [illegible] (९) हठ, आग्रह

अवघट्ट् १ आ० धक्को [illegible] (२) तोडवु, भागवु (३) स्पर्श करवो; घसवु (४) हलाववु

अवघात पु० हणवु—मारवु—प्रहार करवो ते (२) (अनाज) खाडवु ते (३) अकाळ-मरण

अवघुष् १ प० ढंढेरो पिटावी जाहेर करवु (२) बोलाववु, तेडाववु (सभा) (३) अवाजथी भरी काढवु

अवघुष्ट वि० ढंढेरो पिटावी जाहेर करेलु (२) बोलावेलु

अवघूर्ण् १ उ० चक्राकार फरवु—फेरववु, आम तेम डोलवु

अवघूर्ण वि० क्षुब्ध
अवघृष् १ उ० घसी नाखवुं; भूको करवो
अवघ्रा १ प० [अवजिघ्रति] सूंघवुं (२) चूमवुं (माथे)
अवघ्रात वि० सूंघेलुं (२) चूमेलुं
अवचन वि० बोल्या वगरनुं, चूप (२) न० कथननो अभाव, मौन (३) निंदा, ठपको
अवचनीय वि० अश्लील, न बोलवा योग्य (२) अनिंद्य
अवचय पु० एकठुं करवु ते, वीणवु ते
अवचि ३ प० पूजवुं, सन्मानवुं (२) ५ उ० वीणवुं, चूंटवु (३) तपासवुं, पसंद करवु (४) उतारी नाखवु (कपडु)
अवचिचीषा स्त्री० वीणवानी इच्छा
अवचूड पु० ध्वज – निशाननी नीचे लटकतो रखातो वस्त्रनो पटको (२) ध्वजनी टोच उपर रखाती चमरी वगेरे शणगार
अवचूडा स्त्री० माळा, हार
अवचूर्ण् १० प० चूर्ण वगेरे छांटवुं
अवचूल पु० जुओ 'अवचूड'
अवच्छद् १० प० आच्छादन करवुं
अवच्छाद पु० आच्छादन, ढांकण
अवच्छिद् ७ उ० कापवुं, फाडवुं (२) सीमित करवुं (जेमके स्थळ-काळ इ० थी) (३) जुदु पाडवु (विशिष्ट लक्षणोथी)
अवच्छिन्न वि० कापी नाखेलुं; जुदु पाडेलुं (२) मर्यादित, निश्चित (३) विशिष्ट गुणोने लीधे जुदु तरी आवतु
अवजि १ प० जीती लेवुं (२) पाछु मेळववुं (३) रोकवुं, अटकाववुं
अवजिति स्त्री० विजय
अवज्ञा ९ उ० [अवजानाति-जानीते] उपेक्षा करवी, तिरस्कार करवो
अवज्ञा स्त्री०, **अवज्ञान** न० तिरस्कार, अनादर, अपमान (२) [illegible]
अवट पु०, **अवटि** (–टी) स्त्री० खाडो

अवटुज पु० माथानी पाछळना वाळ
अवडीन न० पक्षीनुं ऊडवुं ते (नीचेनी तरफ)
अवतत वि० छवायेलुं; ढंकायेलुं (२) ढीलुं करेलुं – छोडी नाखेलुं
अवतन् ८ उ० नीचेनी बाजुए फेलावुं (२) उपर छावुं (३) ढीलुं करवुं, छोडी नाखवुं (पणछ)
अवतर पु० ऊतरवुं ते, अवतरण
अवतरण न० नीचे ऊतरवुं ते (२) स्नान माटे जळाशयमां ऊतरवुं ते (३) अवतार – जन्म (४) नदीमां ऊतरवाना पगथिया (५) नाहवानुं तीर्थस्थान (६) उतारो, टांचण
अवतरणिका स्त्री० ग्रंथने आरंभे कराती प्रार्थना (२) प्रस्तावना
अवतंस पु०,न० हार (२) काननुं घरेणुं 'एरिंग' (३) माथानुं घरेणुं, कलगी (४) भूषणरूप कोई पण वस्तु
अवतान पु० धनुष्यनी पणछ चडाववी ते (२) फेलावो – लता वगेरेनो विस्तार
अवतार पु० नीचे ऊतरवुं ते (२) उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (३) पृथ्वी पर देव के ईश्वरनुं अवतरवुं ते (४) रूप, आकृति (५) जळाशय, तीर्थ-स्थान (६) ऊतरवानी जगा, ओवारो
अवतीर्ण वि० नीचे ऊतरेलुं, प्रवेशेलुं (२) अवतार पामेलुं (३) ओळंगी गयेलुं, पार करी गयेलुं
अवतॄ १ प० नीचे ऊतरवुं (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible] (७) [illegible]
अवदंश पु० [illegible]
अवदात वि० [illegible] (४) [illegible]

अवदान न० पराक्रम, यशस्वी कृत्य (२) दंतकथानु वस्तु (३) खडन

अवदारण न० फाडवु—चीरवु ते (२) कोदाळी

अवदीर्ण वि० फाडेलु, चीरेलु (२) प्रवाही करेलु, ओगाळेलु (३) मूझायेलु, गूचवायेलु

अवदॄ ९ प० चीरी नाखवु, फाडी नाखवु

अवद्य वि० नही प्रगटवा योग्य (२) हलकु, नीचु (३) निंद्य (४) दूषित, खामीवाळु (५) पापयुक्त (६) न० दोष, खामी, अपूर्णता (७) दुर्गुण, पाप (८) निंदा, ठपको

अवद्यत् वि० भागी नाखतु

अवधा ३ उ० मूकवु (२) ध्यान आपवु; मन लगाडवु (३) वध करवु, वासवु

अवधान न० ध्यान, लक्ष, काळजी

अवधार पु०, **अवधारण** न०, **अवधारणा** स्त्री० निर्णय, निश्चय (२) मर्यादा बाधवी ते

अवधारणीय वि० निश्चय करवा योग्य

अवधारित वि० निश्चित करेलु

अवधार्य वि० जुओ 'अवधारणीय'

अवधि पु० ध्यान, लक्ष (२) मर्यादा, सीमा (स्थळ के समयनी) (३) छेडो, पराकाष्ठा, समाप्ति (४) समयनो गाळो (—थी माडीने — सुधी) (५) ठराव, सकेत, वायदो (६) प्रमाण, धोरण [अनादर करवो

अवधीर् १० आ० अवगणना करवी,

अवधीरणा स्त्री० उपेक्षा, तिरस्कार

अवधीरित वि० अनादर करेलु, अवगणना करेलु

अवधू ५ उ० हलाववु, कपाववु (२) दूर करवु, खखेरी नाखवु (३) तिरस्कारवु, अवगणवु

अवधूत वि० हलावेलु, कपावेलु (२) खखेरी काढेलु, तजेलु (३) अनादृत, तिरस्कृत (४) पाछळ पाडी देतु, चडियातु, पराजित करेलु (५) सासारिक आसक्तिथी छूटु थयेलु (६) पु० ससारी मवधो के आसक्ति त्यागनारो सन्यासी |(३) क्षोभ

अवधूनन न० हलाववु ते (२) उपेक्षा

अवधृ १० उ० निश्चय करवो (२) खातरी करवी (३) विचारवु, मानवु

अवधेय वि० मूकवा योग्य (२) लक्ष आपवा योग्य, मानवा योग्य (३) समजवा योग्य (४) न० ध्यान, लक्ष

अवध्य वि० वध नहि करवा योग्य

अवध्यै १ प० ध्यान न आपवु, अवगणना करवी

अवन न० रक्षण

अवनत वि० नीचु नमेलु

अवनति स्त्री० नीचु नमवु ते (२) वदन, नमन

अवनद्ध वि० 'बाधेलु (२) मढेलु (३) न० मृदग, ढोल

अवनम् १ प० नीचे नमी पडवु (२) नमन करवु [दोरडु

अवनाह पु० बाधवु ते (२) बाधवानु

अवनि स्त्री० पृथ्वी

अवनिज पु० मगळ ग्रह

अवनिभृत् पु० पर्वत (२) राजा

अवनिरुह पु० वृक्ष

अवनी स्त्री० जुओ 'अवनि'

अवपात पु० पडवु ते (२) खाडो (३) हाथी पकडवानो खाडो

अवपीड् १० प० दाबवु; चापवु

अवप्लु १ आ० कूदवु, कूदको मारवो

अवबुध् ४ आ० जागवु (२) जाणवु (३) ओळखवु

—प्रेरक० जगाडवु (२) याद करावयु (३) बोध आपवो, उपदेशवु

अवबोध पु० जागवु ते (२) जाणवु ते; ज्ञान (३) विवेकज्ञान (४) उपदेश

अवबोधक वि० दर्शावनारु, सूचवनारु (२) बोध – ज्ञान आपनारु (३) पु० जगाडनार – सूर्य (४) वैतालिक, चारण (५) गुरु, अध्यापक (६) इरादो, विचार
अवभास् १ आ० प्रकाशवु, प्रगट थवु
अवभास पु० प्रकाश, तेज (२) ज्ञान (३) आविर्भाव (४) मिथ्या ज्ञान
अवभुग्न वि० वाकु वळेलु
अवभृथ न० यज्ञनी पूर्णाहुति (२) यज्ञनी पूर्णाहुति वखते करातु स्नान
अवम वि० पापयुक्त, दुष्ट (२) नीच, अधम (३) हलकु, ऊतरतु (४) पछीनु, नजीकनु (५) सौथी नानु – छेवटनु (६) क्षय पामतु, घटतु
अवमत वि० उपेक्षित (२) तिरस्कृत
अवमन् ४ आ० उपेक्षा करवी, तिरस्कार करवो (२) हलकु पाडवु, हलकु गणवु
अवमर्द पु० कचरी नाखवु ते, उजाडवु ते, विध्वस
अवमर्श पु० स्पर्श
अवमर्ष पु० आलोचना, विचारणा
अवमर्षण न० असहिष्णुता (२) भूमी काढवु ते, भूली जवु ते
अवमान पु० **अवमानन** न०, **अवमानना** स्त्री० अवगणना; अपमान; तिरस्कार
अवमृश् ६ प० स्पर्श करवो (२) विचारवु –प्रेरक० अडके एम करवु (२) ध्वस करवो
अवयव पु० आखी वस्तुनो एक विभाग – अश (२) शरीरनो भाग (३) साधन – उपकरण (४) शरीर
अवर वि० नानु (वयमा) (२) पछीनु; पाछलु (समय के स्थळमा) (३) नीचु; हलकु, सौथी नीचु (४) पश्चिमनु (५) छेल्लु (६) अत्यत श्रेष्ठ
अवरज वि० पाछळथी जन्मेलु, नानु
अवरत वि० थोभेलु, अटकेलु (२) विश्राति करतु
अवरति स्त्री० थोभवु – अटकवु ते (२) विश्रांति
अवरुद्ध वि० अटकावायेलु, रूंधायेलु (२) गोधी राखेलु; पूरी राखेलु (३) छूपा वेशवाळु
अवरुध् ७ उ० अटकाववु; रुकावट करवी (२) पूरी राखवु, घेरी लेवु
अवरुह् प० नीचे ऊतरवु, नीचे जवु – प्रेरक० [अवरोहयति, अवरोपयति] नीचे उतारवु के स्थापवु (२) गादी उपरथी उठाडी मूकवु (३) रोपवु (वृक्ष)
अवरूढ वि० नीचे ऊतरेलु (२) मूळमाथी उखाडेलु
अवरेण अ० नीचे
अवरोध पु० विघ्न, अटकाव, अकुश (२) अत पुर (३) वाड, वाडो, पूरी राखवानी जगा (४) ढाकण (५) चोकीदार (६) घेरो (७) खाडो
अवरोपण न० उपाडी – उखेडी नाखवुं ते (२) नीचे उतारी पाडवु ते (३) रोपवु ते
अवरोह पु० नीचे ऊतरवु ते (२) वृक्षने वीटायेलो वेलो (३) स्वर्ग (४) ऊचा स्वर परथी नीचा स्वरमा आववु ते (सगीत०) (५) उपर चडवु ते (६) वडवाई जेवु मूळ
अवर्ण वि० रग विनानु (२) हीन, सारा गुण वगरनु (३) पु० अपवाद – कलक (४) निदा
अवर्ष पु० अनावृष्टि
अवलंब् १० आ० लटकवु, वळगवु (२) आधार – टेको लेवो (३) विलव करवो, मोडा थवु
अवलंब पु०, **अवलंबन** न० आश्रय, आधार, टेको
अवलंबित वि० आश्रये रहेलु (२) लटकतु (३) आधीन (४) शीघ्र, उतावळु (५) नीचे ऊतरेलु

अवलिप्त वि० अभिमानी, गर्विष्ठ (२) लेपायेलु, खरडायेलु
अवलीढ वि० चाटेलु (२) खाधेलु
अवलुंचन न० खेंची काढवु ते, उपाडी नाखवु ते [(२) लूटी लेवु ते
अवलुंठन न० आळोटवु के गबडवु ते
अवलुपन न० एकदम धसी आववु ते
अवलेप पु०, **अवलेपन** न० लेप (२) अहंकार, गर्व (३) संग, ऐक्य (४) शोभा, भूषा
अवलेह पु० चाटवु ते (२) चाटण
अवलोक् १ आ०, १० प० जोवु, निहाळवु, नीरखवु
अवलोक पु०, **अवलोकन** न० जोवु ते; निहाळवु ते (२) जोवानी शक्ति, नेत्र
अवलोकित वि० जोयेलु, तपासेलु (२) न० दृष्टि, नजर [–चुववु ते
अवलोप पु० कापी लेवु ते (२) करडवु
अवंश वि० स्वतंत्र; स्वाधीन (२) कोईने वश न थाय तेवु, असयत (३) परवश; पराधीन (४) निश्चित, आवश्यक
अवशिष् ७ प० (घणे भागे कर्मणिरूप वपराय छे) बाकी रहेवु, अवशेष रहेवु
अवशिष्ट वि० बाकी रहेलु, शेष रहेलु
अवशीर्ण वि० भागेलु, फुरचा ऊडी गया होय तेवु
अवशॄ ९ प० भागी जवु, फुरचा ऊडी जवा (२) चोतरफ ऊडवु–वीखरावु
अवशेष पु० बाकी रहेलो – बचेलो भाग
अवश्य वि० वश न करी शकाय तेवु, दुर्दान्त (२) अनिवार्य (३) आवश्यक
अवश्यम् अ० निःसंशय, नक्की, खचित
अवश्यंभाविन् वि० अनिवार्यपणे थवानु होय तेवु (२) थवाने निर्मायेलु
अवश्याय पु० हिम, धूमस, झाकळ (२) गर्व, अभिमान
अवष्टब्ध वि० पकडेलु, टेको लीधेलु (२) नजीकनु, पासेनु (३) रुकावट पामेलु, अटकावायेलु (४) बाधेलु; जोडेलु (५) जक्की, हठीलु (६) पाछळ पाडी देवायेलु
अवष्टभ् ५, ९ प० टेको लेवो; आधार लेवो (२) रोकवु (३) ढाकवु; आवरवु (४) टेको आपवो, पकडवु, वळगवु
अवष्टंभ पु० अभिमान, गर्व (२) आश्रय; टेको (३) धैर्य, दृढ निश्चय (४) लकवो; जकडाई जवु ते (५) उत्तमता
अवसक्त वि० वळगेलु, मलग्न
अवसक्थिका स्त्री० केड अने ढीचणनी आसपास कपडु बाधीने बेसवु ते
अवसथ पु० रहेठाण, निवास (२) गाम (३) पाठशाळा, मठ
अवसद् १ प० [अवसीदति] बेसी पडवु; खिन्न थवु, मूर्छित थवु (२) निराश थवु, थाकी जवु (३) नाश पामवु; बरबाद थवु
अवसन्न वि० खिन्न, निराश, हताश, नाउमेद (२) नष्ट, रहित, दूर थयेलु (३) पोतानु कार्य करवाने अशक्त
अवसर पु० प्रसंग, तक, समय (२) योग्य समय (३) जगा, अवकाश (४) समय, फुरसद
अवसर्ग पु० स्वतंत्रपणु, पोतानी मरजी प्रमाणे चालवानी छूट
अवसज् १ प० [अवसजति] वळगवु (२) वळगाडवु, मूकवु
अवसाद पुं० बेसी पडवु ते, बेहोश थवु ते (२) अंत, नाश (३) कामकाज करवानी अशक्ति
अवसादन न० विनाश (२) पोतानु काम करवानी अशक्ति
अवसान न० विराम, समाप्ति, अंत (२) मृत्यु (३) सीमा, हद (४) थोभवु ते [(३) निश्चय
अवसाय पु० अंत; समाप्ति (२) अवशेष
अवसायक वि० विनाश करनारु

अवसित वि० पूर्ण थयेलु (२) जाणेलु, निश्चित, खातरी करेलु (३) सारी रीते बांधेलु

अवसृज् ६ प० फेंकवु (२) काढी मूकवु; छूटु करवु (३) तजवु; पडतु मूकवु (४) सर्जवु, घडवु

अवसृष्ट ('अवसृज्'नु भू०कृ०) वि० [आपेलु (२) त्यागेलु

अवसेक पु० अभिषेक करवो ते, पाणी छाटवु ते [अभिषेकनु जळ

अवसेचन न० पाणी छाटवु ते (२)

अवसो ४ प० [अवस्यति] पूरु करवु; सिद्ध करवु (२) निश्चय करवो; समजवु (३) ऊतरवु; मुकाम करवो (४) नाश करवो (५) निष्फळ जवु; अत आववो (६) जाणवु (७) मुक्त करवु; छोडवु (८) दृढ रहेवु; आग्रही रहेवु

अवस्कर पु० विष्टा (२) गुह्य भाग (३) कूडोकचरो [मारवो

अवस्कंद् १ प० हुमलो करवो (२) कूदको

अवस्कंद पु०, **अवस्कदन** न० आक्रमण; हुमलो (२) ऊतरवु ते (३) लश्करनी छावणी (४) आरोप, आक्षेप

अवस्कॄ ६ उ० [अवस्किरति–ते] खणवु; खोतरवु

अवस्तरण न०, **अवस्तार** पु० ढाकण, आच्छादन (२) पाथरणु

अवस्तु न० नकामी – तुच्छ वस्तु (२) सत् न होवु ते; मिथ्यापणु

अवस्तॄ ९ प० [अवस्तृणाति] पाथरवु (२) ढाकवु (३) व्यापवु

अवस्था १ आ० [अवतिष्ठते] रहेवु (२) वळगी रहेवु, अनुसरवु (३) जीवता रहेवु (४) स्थिर ऊभा रहेवु, थोभवु (५) अळगा थवु – रहेवु

–प्रेरक० [अवस्थापयति–ते] मूकवु, राखवु, स्थापित करवु (२) स्थिर करवु, दृढ करवु, आश्वासन आपवु (३) छूटु पाडवु, जुदु करवु

अवस्था स्त्री० स्थिति, हालत (२) परिस्थिति (३) दशा, भूमिका (४) स्वरूप, आकार (५) प्रमाण (६) स्थिरता, दृढता

अवस्थाचतुष्टय न० बाल्य, कौमार, यौवन अने वार्धक्य, ए चार दशाओ

अवस्थात्रय न० जागृति, स्वप्न अने सुषुप्ति, ए त्रण अवस्थाओ

अवस्थाद्वय न० जीवननी बे स्थितिओ – सुख अने दुःख

अवस्थान न० रहेवु ते (२) रहेठाण, निवास (३) स्थिति (४) दृढता, स्थिरता (५) आधार, टेको

अवस्थित वि० रहेलु, वसेलु (२) दृढ, स्थिर (३) सज्ज, तत्पर (४) स्थिर, निश्चेष्ट (५) व्यवस्थित

अवस्थिति स्त्री० रहेवु ते (२) निवास

अवहन् २ प० मारी नाखवु; नाश करवो; दूर करवु (२) झूडवु, छडवु

अवहार पु० चोर (२) झूड, मगरमच्छ, ग्राह (३) युद्धविराम; लश्करने रणमेदानमाथी खसेडी लेवु ते (४) बोलाववु – निमत्रवु ते (५) थोभवु – अटकवु ते

अवहार्य वि० लई जवा योग्य (२) दड – सजा करवा योग्य (३) पूरु करवा योग्य (४) पाछु आपवा योग्य, भरपाई करवा योग्य [मश्करी (३) ठेकडी

अवहास पु० स्मित; हास्य (२) मजाक;

अवहित वि० मूकेलु (२) एकाग्र, सावधान (३) प्रख्यात

अवहेल पु०, **अवहेलन** न०, **अवहेलना**, **अवहेला** स्त्री० अपमान, अनादर, तिरस्कार

अवंति (–ती) स्त्री० माळवानी प्राचीन राजधानी – हालनु उज्जन

अवंध्य वि० सफल, फलोत्पादक

अवाक् अ० नीचे (२) दक्षिण तरफ

अवाग्मुख, अवाङ्मुख वि० नीचा मुखवाळु, नीचे मोए जोतु
अवाङ् वि० मूगु
अवाच् वि० जुओ 'अवाच्'
अवाची स्त्री० दक्षिण दिशा (२) पाताळ
अवाचीन वि० अधोमुख (२) नीच, निंद्य (३) विपरीत, प्रतिकूळ (४) दक्षिण दिशा तरफनु
अवाच्य वि० न कहेवा लायक; न बोलवा लायक (२) शब्दमा न वर्णवी शकाय तेवु
अवाच्य वि० दक्षिण तरफनु
अवाप् ५ प० प्राप्त करवु, मेळववु (२) पहोचवु (३) सहन करवु, वेठवु
अवाप्त वि० प्राप्त करेलु, मेळवेलु
अवाप्ति स्त्री० प्राप्ति, मेळववु ते
अवार पु० आ तरफनो किनारो
अवारपार पु० समुद्र
अवारितद्वार वि० खुल्ला बारणावाळु
अवारितम् अ० विघ्न के रुकावट विना, मरजी मुजब
अवाच् वि० नीचे वळेलु, नीचे नमेलु (२) –थी नीचे आवेलु (३) दक्षिणनु
अवाचित वि० नीचे नमावेलु (२) नीचे टपकतु
अवांतर वि० वच्चेनु (२) समाविष्ट, अदर आवेलु (३) गौण (४) बाह्य, आगतुक [दिशाओ वच्चेनो खूणो
अवांतरदिश्, अवातरदिशा स्त्री० बे
अविकत्थन वि० वडाई – आत्मश्लाघा न करनारु [विसवादी नहि तेवु
अविकल वि० सकल, सपूर्ण; आखु (२)
अविकल्प पु० शकानो अभाव (२) विकल्पनो अभाव
अविकल्पम् अ० नि शक
अविकार वि० फेरफार न थाय तेवुं
अविकार्य वि० विकार न पामे एवु, विकाररहित
अविक्रम वि० पराक्रम – बळ विनानु
अविक्रिय वि० फेरफार – विक्रिया विनानु
अविघ्न वि० हरकत – विघ्न विनानु (२) न० विघ्ननो अभाव, कल्याण
अविचारित वि० बराबर नहि विचारेलु (२) जेमा विचारवापणु बाकी नथी तेवु – निश्चित, स्पष्ट
अविचारिन् वि० विचार न करे तेवु, अविचारी, उतावळु
अवितथ वि० असत्य नहि तेवु – सत्य (२) निष्फळ नही तेवु – सफळ
अविदग्ध वि० कुशळ नहि तेवु, विन-अनुभवी, मूर्ख
अविदूषक वि० निर्दोष
अविद्य वि० विद्या वगरनु, अज्ञानी
अविद्या स्त्री० अज्ञान (२) ईश्वर सबधी अज्ञान – माया [पोकार
अविधा अ० 'धाजो' एवो मदद माटेनो
अविधेय वि० अनियत्रित, प्रतिकूळ, काबूमा न राखी शकाय तेवु
अविनय पु० अविवेक, असभ्यता (२) दुर्वर्तन, उद्धताई (३) अभिमान (४) दोष, अपराध
अविनाभाव पु० एकबीजा विना रही के होई न शके तेवो भाव के लक्षण
अविनीत वि० अशिक्षित, असस्कारी (२) असभ्य, अविनयी (३) उद्धत
अविभक्त वि० सयुक्त, भागला नही पडेलु (२) अखड, एकरूप (३) भिन्न नहि तेवु
अविभाव्य वि० नजरे न देखी शकाय तेवु
अविमृष्य वि० शका वगरनु, निश्चित
अविरत वि० न अटकेलु, सतत चालु रहेतु, अखड
अविरतम् अ० सतत, निरतर (२) गाढपणे, अखडितपणे (ऊघवु)
अविरल वि० जाडु; घट्ट (२) सतत चालतु (३) नजीकनु; पासेनु (४) स्थूळ; मोटु

अविरलम् अ० गाढपणे (२) सतत, निरंतर [नहि तेवु

अविरहित वि० छूटु न पडेलु, –विनानु

अविरामम् अ० सतत, निरंतर

अविलक्ष्य वि० निष्कपट, बहाना विनानु (२) उद्वेग विनानु (३) लक्ष विनानु (४) उपाय – प्रतीकार विनानु

अविलंबितम् अ० उतावळे, जलदीथी

अविवेक वि० विवेक-विचार विनानु (२) पु० अविचारीपणु, उतावळिया-पणु, साहस (३) जुदु न पाडवु ते

अविशेष वि० समान; तुल्य (२) पु०, न० समानता (३) ऐक्य, तादात्म्य

अविशेषज्ञ वि० भेद नहि जाणनारु, विवेक नहि करनारु [विना

अविशेषतः अ० भेद पाडया के समज्या

अविश्रान्त वि० विश्राति माटे थोभ्या विनानु, न अटकेलु

अविश्रान्तम् अ० सतत

अविषक्त वि० लागेलु – वळगेलु नहि तेवु (२) नियन्त्रित नहि तेवु

अविषय वि० अगोचर, अदृश्य (२) विषयो तरफ न वळेलु – न वळगेलु (३) पु० अभाव, न देखावु ते (४) गोचर न होवु ते, –थी पर होवु ते (५) इद्रियोना विषयो तरफ उपेक्षा

अविषह्य वि० सहन न करी शकाय तेवु (२) बीजाओथी पराभव न पामे तेवु, दुर्धर्ष (३) निश्चय न करी शकाय तेवु (४) अगोचर

अविष्कर पु० कूकडो

अविसंवादिन् वि० बराबर मळतु आवतु (२) जूठु न पडतु

अविहत वि० विरोध के रुकावट विनानु

अविहा अ० अरेरे! [निषिद्ध

अविहित वि० शास्त्रोक्त नहि तेवु,

अवी स्त्री० रजस्वला स्त्री

अवीचि वि० मोजा विनानु

अवृत्ति वि० निर्वाहना साधन विनानु (२) अविद्यमान (३) स्त्री० निर्वाहना साधननो अभाव (४) वेतन अथवा मजूरीनो अभाव

अवे (अव + इ) २ प० जाणवु; समजवु

अवेक्ष् १ आ० जोवु; तपासवु (२) लक्षमा लेवु, नजर समक्ष राखवु (३) सभाळ राखवी, रक्षण करवु (४) विचारवु (५) आशा राखवी

अवेक्षण न० जोवु ते (२) तपास, देखरेख, काळजी

अवेद्य वि० न जाणी शकाय तेवु, गूढ (२) न प्राप्त-करी शकाय तेवु

अवेलम् अ० समय विना, कसमये

अवैध वि० शास्त्रमान्य नहि तेवु, विधि – कानून मुजबनु नहि तेवु

अव्यक्त वि० अस्पष्ट, अप्रगट (२) अदृश्य, अगोचर (३) न० परब्रह्म (४) अज्ञान, अविद्या (५) सूक्ष्म शरीर (६) मूळ प्रकृति (सांख्य०)

अव्यक्तम् अ० अस्पष्टपणे

अव्यग्र वि० व्यग्र नहि तेवु; स्वस्थ, शांत (२) कामकाजमा के धधामा नहि लागेलु (३) निःस्पृह, उदासीन (४) लक्ष – काळजीवाळु

अव्यग्रम् अ० स्वस्थताथी, आरामथी

अव्यभिचार पु० नित्य साहचर्य (२) एकनिष्ठा, वफादारी

अव्यभिचारिन् वि० अनुकूळ (२) सद्गुणी, पवित्र, नीतिमान (३) एकनिष्ठ, वफादार (४) बधी वखते एकसरखु, अपवाद रहित

अव्यय वि० न बदलाय एवु, शाश्वत; अविनाशी (२) न खरचेलु (३) कर-कसरवाळु (४) अविनाशी फळ आपनारु (५) न० सर्व जाति, वचन अने विभक्तिमा न बदलानार शब्द (व्या०)

अव्यलीक वि० सत्य (२) प्रिय; अनुकूळ

अव्यवधान वि० समीपनु, पासेनु (२) खुल्लु (३) असावध, बेदरकार

अव्यवसायिन् वि० उद्यम रहित (२) अनिश्चयी

अव्यवस्थ, अव्यवस्थित वि० चचळ; अस्थिर(२)व्यवस्था वगरनु,अनियमित (३) कायदो के व्यवहारने न अनुसरतु

अव्यवहित वि० लगोलगनु, तद्दन पासेनु

अव्याकृत वि० प्रगट नहि थयेलु; अव्यक्त (२) समजमा न आवे तेवु, अतर्क्य

अव्याज वि० निष्कपट, कृत्रिम नहि तेवु, स्वाभाविक (२) पु०, न० स्वाभाविकता, अकृत्रिमता

अव्यापार वि० काममा न रोकायेलु, काम विनानु (२) पु० कामकाज न होवु ते (३) पोतानु काम नहि ते

अव्याहत वि० जेनो भग – विरोध के रुकावट न कराता होय तेवु,जेनु पालन थतु होय तेवु

अव्युत्पन्न वि० अकुशळ; अप्रवीण, अनुभव विनानु (२) व्युत्पत्तिथी सिद्ध नहि थयेलु (व्या०)

अश् ५ आ० व्यापवु (२) पहोचवु (३) मेळववु, भोगववु, अनुभववु (४) एकठु थवु [भोगववु

अश् ९ प० (कदीक आ०) खावु (२)

अशक्त वि० असमर्थ, अशक्तिमान

अशक्ति स्त्री० निर्बळता, नबळाई

अशक्य वि० शक्य नहि तेवु, असभव

अशन न० व्यापवु ते (२) खावु ते, भोगववु ते (३) अन्न [इच्छा

अशना, अशनाया स्त्री० भूख, खावानी

अशनि पु०, स्त्री० इद्रनु वज्र (२) वीजळी (३) अस्त्र

अशब्द वि० शब्दमा प्रगट नहि करेलु (२) शास्त्रमा नही दर्शावायेलु (३) पु० निंदा; गाळ [आश्रयरहित

अशरण, अशरण्य वि० निराधार,

अशरीर वि० शरीर रहित, अमूर्त (२)पु० परमात्मा (३)कामदेव

अशरीरिन् वि० शरीर विनानु (२) दैवी, शरीरधारी वडे न बोलातु

अशर्मन् वि० दुःखी (२) न० दुःख

अशक, अशकित वि० निर्भय (२) शकारहित |नीतिविरुद्ध

अशास्त्रीय वि० शास्त्रविरुद्ध (२)

अशित ('अश्'नु भू० कृ०) वि० खाधेलु (२) भोगवेलु

अशिव वि० अशुभ; अकल्याणकारी (२) कमनसीब (३)उग्र (४)न० दुर्भाग्य

अशिशिर वि० ठडु नहि तेवु – गरम

अशिष्ट वि० असस्कारी, ग्राम्य (२) शास्त्रमा नहि उपदेशेलु, शास्त्रविहित नही एवु |अपवित्र

अशुचि वि० स्वच्छ नहि तेवु, गदु,

अशुद्ध वि० अपवित्र (२) खोटु, भूलवाळु

अशुभ वि० अमगळ, अपशुकनियाळ (२) पापी (३) कमनसीब (४) न० पाप; शरमभरेलु कृत्य (५) कमनसीबी

अशून्य वि० खाली नहि तेवु (२) सूनु नहि तेवु |तमाम

अशेष वि० शेष विनानु; सपूर्ण; पूरेपूरु;

अशेषतः, अशेषम्, अशेषेण अ० पूरेपूरु होय तेम, कई पण बाकी न रहे तेम

अशोक वि० शोकरहित (२)पु० लाल पुष्पवाळु एक वृक्ष (३) सुख

अशोच्य वि० शोक नहि करवा योग्य

अशोभन न० दोष, अपराध, भूल

अशौच न० अपवित्रता, अशुद्धि, गदकी (२) सूतक

अशौंडीर्य न० कायरता, असामर्थ्य (२) स्वाभिमाननो अभाव

अश्मन् पु० शिला, पथ्थर (२) चकमक

अश्मवर्ष पु० करानो वरसाद

अश्मसार वि० लोढा के पथ्थर जेवु (२) पु०, न० लोढु (३) करवत

अश्मंतक पु० एक वृक्ष (अस्लोटक, कोविदारक इ०) (२) एक घास
अश्र पुं० खूणो (मोटे भागे समासने छेडे) (२) न० आसु (३) लोही
अश्रद्दधान वि० श्रद्धा न करतु
अश्रद्धा स्त्री० अविश्वास, अनास्था
अश्रद्धेय वि० विश्वास न करवा योग्य
अश्राव्य वि० न साभळवा लायक, न साभळी शकाय तेवु
अश्रांत वि० नहि थाकेलु (२) अ० थाक्या विना, सतत
अश्रि, अश्री स्त्री० खूणो (घर के ओरडानो) (२) धारवाळी बाजु (शस्त्र इ० नी)
अश्री स्त्री० दुर्भाग्यनी देवी
अश्रीक वि० दुर्भागी, समृद्ध नहि तेवु
अश्रीमत् वि० दुर्भागी, कमनसीब
अश्रील वि० जुओ 'अश्रीक'
अश्रु न० आसु
अश्रुत वि० नहि साभळेलु (२) वेदथी विरुद्धनु (३) शास्त्र नहीं भणेलु, अशिक्षित [असभ्य, ग्राम्य
अश्लील वि० वीभत्स, नठारुं (२)
अश्व पु० घोडो
अश्वतर पु० खच्चर
अश्वतरी स्त्री० खच्चरी
अश्वत्थ पु० पीपळानु वृक्ष
अश्वपाल पु० घोडानो खासदार
अश्वमुख पु० किन्नर
अश्वमुखी स्त्री० किन्नरी
अश्वमेध पु० एक यज्ञ, जेमा दिग्विजय करी आवेलो घोडो होमवामा आवे छे
अश्वशाला स्त्री० घोडानो तबेलो
अश्वसाद, अश्वसादिन् पु० घोडेसवार सैनिक
अश्वस्तन, अश्वस्तनिक वि० कालनु नहि – आजनु (२) कालने माटे सघरो न करनारु
अश्वहृदय न० अश्वविद्या
अश्वा स्त्री० घोडी [टुकडी
अश्वारोहणीय न० हयदळ; घोडेसवारोनी
अश्विनीकुमारौ, अश्विनौ पु० (द्विवचन) देवोना वैद्य गणाता बे देवो
अषाढ पु० असाड महिनो
अष्टक वि० आठ भागनु बनेलु (२) न० ऋग्वेदना आठ भागमानो दरेक (३) आठनो कोई पण समुदाय
अष्टधा अ० आठ प्रकारे
अष्टधातु पु० आठ धातुओ (सोनु, रूपु, ताबु, कथीर, पीतळ, सीसु, लोढु, पारो)
अष्टन् वि० आठ
अष्टपद पु० करोळियो (२) शरभ नामनु आठ पगवाळु एक कल्पित प्राणी (३) कैलास पर्वत (कुबेरनु धाम) (४) पु०, न० सोगठाबाजीनो पट
अष्टभुजा स्त्री० महालक्ष्मीदेवी
अष्टभोगाः पु० (ब० व०) आठ भोगो (अन्न, उदक, ताबुल, पुष्प, चदन, वसन, शय्या, अलकार)
अष्टम वि० आठमु
अष्टमहासिद्धय स्त्री० (ब० व०) आठ सिद्धिओ (अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता)
अष्टमंगल पु० चार पग, कपाळ, छाती खाध, तथा पूछडी जेना धोळा होय तेवो घोडो
अष्टमी स्त्री० आठमी तिथि, आठम (२) न० राज्याभिषेक वखतनी आठ शुकनियाळ वस्तुओनो समूह सिह, वृषभ, गज, कलश, पखो, निशान, वाद्य, दीप (३) शुकनियाळ गणाती आठ वस्तुओ (ब्राह्मण, अग्नि, गाय, सुवर्ण, घृत, सूर्य, जळ, राजा)
अष्टमूर्ति पु० शकर (पृथ्वी, जळ, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र, ऋत्विज – एवा आठ रूपवाळा)

अष्टरसाः पु० ब० व० शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स, अद्भुत – ए आठ रसो

अष्टविवाहाः पु० ब० व० ब्राह्म, दैव, आर्ष, गांधर्व, राक्षस, प्राजापत्य, आसुर अने पैशाच – ए आठ विवाहो

अष्टसिद्धय स्त्री० ब०व० जुओ 'अष्ट-महासिद्धय'

अष्टाध्यायी स्त्री० पाणिनी-रचित व्याकरण (आठ अध्यायवाळु)

अष्टापद पु० जुओ 'अष्टपद' पु० (२) पु०, न० सुवर्ण

अष्टावक्र पु० एक ऋषि (तेमना आठ अंग वांका हता तेथी)

अष्टांग वि० आठ अंगवाळु (२) न० शरीरना आठ अंग – बे हाथ, बे पग, बे ढींचण, छाती तथा कपाळ (के वाचा तथा मन), अथवा हाथ, पग, ढींचण, छाती, माथु, मन, वाणी अने दृष्टि – जेमना वडे दडवत् प्रणाम करवामां आवे छे ते

अष्टि, अष्ठि स्त्री० बीज (२) ठळियो

अस् २ प० थवु, होवु (२) ४ प० फेंकवु (३) दूर हांकी काढवु (४) डरावी काढवु (५) तजवु, छोडवु (६) १ उ० जवु (७) ग्रहण करवु (८) प्रकाशवु, दीपवु

असकृत् अ० वारंवार

असक्त वि० आसक्ति के संग विनानु (२) फलेच्छारहित

असक्तम् अ० आसक्ति विना (२) तरत ज (३) सतत, रुकावट विना

असक्ति स्त्री० अनासक्ति, संगरहितता

असच्चेष्टित न० नुकसान, पीडा, दुःख

असत् वि० अस्तित्वमां न होय तेवु (२) असत्य (३) दुष्ट, खराब (४) अव्यक्त; अप्रगट (५) कशु परिणाम लावी न शके तेवु

असती स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री

असत्कृत वि० अपमान करायेलु

असत्ता स्त्री० अस्तित्वनो अभाव (२) असत्यता (३) दुष्टता, दुराचरण

असत्य वि० खोटु, जूठु (२) काल्पनिक, अवास्तविक (३) जेनु परिणाम निश्चित नथी तेवु

असदृश वि० असमान (२) अनुचित

असद्ग्रह, असद्ग्राह पु० वालिश इच्छा (२) खराब अभिप्राय, पूर्वग्रह

असद्भाव पु० न होवु ते, अभाव (२) दुष्ट के खराब अभिप्राय (३) खराब स्वभाव

असद्वृत्ति वि० दुष्ट वृत्तिवाळु, दुष्ट विचारवाळु (२) स्त्री० खराब धंधो, हलको धंधो (३) दुष्टता

असन् न० लोही (बीजी विभक्ति बहुवचन पछी 'असृज्'ना रूपोमां ज)

असम वि० समान नहि तेवु, असमान (२) बेकी (संख्या) (३) अजोड (४) खाडा टेकरावाळु

असमवायिन् वि० जुदु पाडी शकाय तेवु; [आगंतुक

असमंजस वि० अस्पष्ट, समजी न शकाय तेवु (२) अनुचित, अयोग्य (३) मूर्खाईभरेलु

असमीक्ष्य अ० वगर विचार्ये

असमीक्ष्यकारिन् वि० वगर विचार्यु काम करनारु

असमेत वि० न आवेलु, गेरहाजर

असम्यच् वि० ठीक नहि तेवु, अघटित (२) अपूर्ण, अधूरु

असह, असहन वि० असहिष्णु, अधीरु (२) सहन न करी शके तेवु (३) ऊंचकी न शके तेवु

असहन पु० शत्रु (२) न० असहिष्णुता

असहनीय वि० जुओ 'असह्य'

असहाय वि० मित्र के साथी विनानु, एकलु, मददगार विनानु

असहिष्णु वि० सहन न करे तेवु (२) द्वेषी, ईर्ष्याळु [शक्य नही तेवु
असह्य वि० सहन न थई शके तेवु (२)
असंख्य, असंख्यात, असंख्येय वि० अगणित, गणी न शकाय तेवु
असंग वि० संसारमां आसक्ति विनानु (२) अकुंठित, बाधारहित, (३) मग – संबंध रहित, एकलु
असंगत वि० न जोडायेलु, असंबद्ध (२) मेळ न खाय तेवु; असमान (३) अनुचित; अशिष्ट (४) बाधारहित, अकुंठित
असंगति स्त्री० संगत – सोबत – मेळनो अभाव (२) असंभव
असंज्ञ वि० मूर्च्छित, बेभान
असंज्ञा स्त्री० मतभेद, विवाद
असंदिग्ध वि० संदेहरहित, निश्चित
असंनद्ध वि० शस्त्रसज्ज नहि थयेलु (२) पोते पंडित छे एम माननारु
असंनिधान न०, **असंनिधि** पु० दूर होवापणु (२) अभाव
असंनिवृत्ति स्त्री० फरी पाछु न फरवु ते, कायम माटे जवु ते
असंपात पु० निष्क्रियता, कामकाज बंध करवु ते [वगरनु
असंबद्ध वि० संबंध वगरनु (२) अर्थ
असंबाध वि० भीड वगरनु (२) खुल्लु, अवर जवर थई शके तेवु (३) पीडा विनानु
असंभव वि० अशक्य, असंभवित (२) पु० अशक्यता (३) अस्तित्व न होवु ते
असंभावना स्त्री० असंभव (२) कल्पवानी मुश्केली के अशक्यता (३) अनादर
असंभावनीय वि० असंभवित (२) कल्पी न शकाय तेवु
असंभावित वि० –ने लायक नहि तेवु
असंभाव्य वि० जुओ 'असंभावनीय'
असंभूति स्त्री० उत्पत्तिनो अभाव (२) विनाश (३) फरी न जन्मवु ते
असंभृत वि० अकृत्रिम; स्वाभाविक (२) सारी रीते नहि पोषेलु
असंभ्रम पु० क्षोभ के गभराटनो अभाव; शांति, स्थिरता
असंमत वि० परवानगी न होय तेवु (२) न गमतु (३) जुदा अभिप्रायवाळु (४) पु० शत्रु [लेनारु, चोर
असंमतादायिन् वि० परवानगी वगर
असंमूढ वि० मोहरहित, भ्रांतिरहित
असंमोह पु० मोहनो अभाव (२) यथार्थ ज्ञान
असंयत वि० संयमरहित (२) बंधनमुक्त
असंरंभ पु० निर्भयता
असंशय वि० संशय विनानु; संदेह वगरनु
असंशयम् अ० नि:शंक रीते; नक्की
असंस्कृत वि० संस्कार नहि पामेलु, प्राकृत (२) शुद्ध नहि करायेलु
असंस्तुत वि० अपरिचित; अजाण्यु (२) विसंवादी, प्रतिकूळ
असंस्थित वि० अव्यवस्थित; अनियमित (२) स्थिर नहि तेवु, चंचळ
असाधन वि० साधन वगरनु (२) न० सिद्ध न करवु ते
असाधनीय वि० सिद्ध न करी शकाय तेवु (२) उपचार न थई शके तेवु
असाधारण वि० असामान्य, खास, अनोखु (२) सहियारु नहि तेवु, आगवु
असाधु वि० सारु नहि तेवु, न गमे तेवु (२) दुष्ट, दुराचारी
असाध्य वि० जुओ 'असाधनीय'
असामयिक वि० कसमयनु, कवेळानु
असामंजस्य न० अघटितता, अनुचितता
असामान्य वि० असाधारण, विशेष, खास, अनोखु
असार वि० सार वगरनु, नि:सत्त्व (२) निरर्थक (३) तुच्छ (४) अशक्त, निर्बळ (५) गरीब, दरिद्र
असांप्रत वि० अयोग्य, अघटित

असि पु० तरवार
असित वि० धोळु नहि तेवु – काळु (२) पु० काळो रग (३) कृष्णपक्ष
असितगिरि पु० ए नामनो पर्वत
असितग्रीव पु० अग्नि (२) मोर
असितपक्ष पु० कृष्णपक्ष
असिता स्त्री० यमुना नदी (२) गळीनो [छोड
असिद्ध वि० सिद्ध नहि थयेलु (२) अपरिपक्व, काचु (३) अपूर्ण
असिद्धि स्त्री० सिद्ध – सावित न थवु ते (२) अपूर्णता, निष्फळता (३) अपरिपक्वता
असिधाराव्रत न० तलवारनी धार उपर ऊभा रहेवानु व्रत (अति कठिन व्रत)
असिपत्र वि० तलवारनी धार जेवा पादडावाळु (२) पु० शेरडी (३) एक नरकनु नाम (४) न० तलवारनु म्यान
असु पु० श्वास, प्राण (२) (ब० व०) पाच प्राण (प्राण, अपान इ०)
असुख वि० दुःखी, दिलगीर (२) कठिन, दुर्लभ (३) न० बेचेनी, दुःख
असुर वि० अलौकिक, दैवी
असुर पु० दैत्य (२) पिशाच
असुरगुरु पु० दैत्योना गुरु – शुक्राचार्य
असुररिपु, असुरसूदन पु० विष्णु
असुराचार्य पु० असुरोना गुरु – शुक्राचार्य
असुराधिप पु० दैत्योनो राजा – वलि
असुरारि पु० असुरनो शत्रु, देव (२) इन्द्र (३) विष्णु भगवान
असुरेंद्र पु० असुरोनो राजा – वलि
असुर्य वि० असुरोनु
असुसम वि० प्राणप्रिय, प्रेमी
असुहृद् पु० शत्रु
असूति स्त्री० वध्यत्व, न जन्मवु ते
असूयक वि० ईर्ष्याळु; द्वेषी (२) असतुष्ट; नाखूश
असूया स्त्री० ईर्ष्या, द्वेष (२) बीजाना गुणमा दोष जोवा ते (३) क्रोध

असूर्य वि० सूर्य वगरनु, प्रकाश वगरनु
असूर्यंपश्या स्त्री० सूर्यने पण न जोती – पतिव्रता स्त्री (२) राजानी स्त्री
असृक्पात पु० रक्तपात
असृग्धारा स्त्री० लोहीनी धारा
असृज् न० लोही
असृष्ट वि० न सर्जेलु (२) न तजेलु (३) [न दीधेलु
असौष्ठव वि० सुन्दरता वगरनु; कदरूपु
अस्खलित वि० अडग, स्थिर (२) रुकावट – भग विनानु (३) सुरक्षित, सहीसलामत (४) स्खलन – भूल विनानु
अस्त (अस्'नु भू० कृ०) वि० फेकेलु, मोकलेलु (२) समाप्त थयेलु
अस्त पु० जुओ 'अस्ताचल' (२) सूर्यास्त (३) पडती, अवनति
अस्तगमन न० सूर्यनु आथमवु ते
अस्तमन न० सूर्यास्त थवो ते
अस्तमय पु० सूर्यास्त (२) अस्त, पडती, नाश (३) ढाकी देवु ते
अस्ताचल पु० पश्चिम तरफनो एक कल्पित पर्वत, जेनी पाछळ सूर्य आथमतो मनाय छे
अस्ति अ० हयाती अने स्थिति बतावे (२) कथा के वार्ताना आरभे वधाराना शब्द तरीके आवे
अस्तित्व न० होवु ते, हयाती
अस्तु अ० 'हो' 'थाओ' 'भले', 'खेर' – एवा अर्थोमा वपराय (२) अनुज्ञा, पीडा, तिरस्कार, असूया, प्रकर्ष, अगीकार, प्रशसा, लक्षण, असूयापूर्वक अगीकार – ए अर्थो बतावे
अस्तेय न० चोरी न करवी ते
अस्तोक वि० थोडु नहि तेवु
अस्तोदयौ पु० द्वि० व० चडती अने पडती, अस्त अने उदय
अस्त्र न० फेंकवानु हथियार (२) कोई पण हथियार
अस्त्रमंत्र पु० अस्त्र फेंकता के पाछु [खेंचता भणवानो मत्र

अस्त्रलाघव न० अस्त्र फेंकवानी कुशळता
अस्त्रागार न० हथियारखानु
अस्थन् न० हाडकु
अस्थाग, अस्थाघ वि० अथाग, घणु ऊडु
अस्थान न० खराब स्थान, खोटु स्थान (२) अयोग्य स्थळ, विषय के प्रसग
अस्थाने अ० अयोग्य स्थाने – प्रसगे
अस्थि न० हाडकु (२) फळनी अदरनो ठळियो
अस्थिति वि० स्थिर नहि तेवु (२) निश्चित मर्यादा विनानु (२) स्त्री० स्थिरतानो के मर्यादानो अभाव
अस्थिपजर पु० हाडपिंजर
अस्थिर वि० स्थिर नही तेवु; चचळ (२) अनिश्चित, शकास्पद
अस्थिसभव पु० मज्जा
अस्नेह वि० तेल के चीकट विनानु (२) स्नेह विनानु
अस्पर्शन न० न अडकवु ते
अस्पद वि० हलन-चलन विनानु
अस्पृश्य वि० स्पर्श न थई शके तेवु
अस्पृह वि० स्पृहा विनानु, नि स्पृह
अस्फुट वि० अस्पष्ट
अस्मद् स० ना० 'हु' ना रूप जेना बने छे ते मूळ (२) तेनु पाचमी विभक्ति एकवचननु रूप
अस्मदीय वि० अमारु, आपणु
अस्मि अ० 'हु' (एवा अर्थमा वपराय छे)
अस्मिता स्त्री० अहता
अस्र पु० खूणो (२) न० आसु (३) लोही
अस्रप पु० राक्षस
अस्रु न० अश्रु, आसु
अस्व वि० धनहीन, गरीब (२) पोतानु नहि तेवु – पारकु
अस्वप्न वि० जागतु, निद्रारहित (२) पु० देव (३) निद्रारहितता
अस्वर्ग्य वि० स्वर्गप्राप्ति न करावे तेवु
अस्वस्थ वि० बेचेन, मादु
अस्वास्थ्य न० व्याधि; रोग (२) अस्वस्थता, बेचेनी
अह् १ आ० [अहते], १० उ० [अहयति-ते] जवु (२) प्रकाशवु (३) ५ प० व्यापवु (४) कहेवु, जणाववु (मात्र नीचेना पाच ज रूपो मळे छे – आत्थ, आहथु, आह, आहतु, आहु)
अह अ० स्तुति, निश्चय, वियोग, निषेध, दूर करवु, मोकलवु, रूढिथी विरुद्ध वर्तवु – अशिष्टाचार इ० अर्थो दर्शावे
अहत वि० नहि घवायेलु, नहि हणायेलु (२) धोया वगरनु, नवु, कोरु
अहन् न० दिवस, दिवसनो समय (२) दहाडो (रात अने दिवस बने मळीने) (३) आकाश (समासना आरभे 'अहन्'ने बदले – 'अहस्' के 'अहर्' अने समासने अते 'अह' 'अहम्' के 'अह्न' थाय छे) [एकवचन]
अहम् स० ना० 'हु' ('अस्मद्' नु प्रथमा
अहमहमिका स्त्री० स्पर्धा; चडसाचडसी
अहरहः अ० दिवसे दिवसे
अहरागम पु० दिवसनु आववु ते
अहर्निश न० दिवस अने रात, एक आखो दहाडो
अहर्पति पु० सूर्य
अहल्या स्त्री० गौतमऋषिनी पत्नी
अहस्कर, अहस्पति पु० सूर्य
अहह, अहहा अ० खेद, दु ख, थाक, आश्चर्य, सबोधन, दया, वगेरे दर्शावे (२) अरेरे ! अहोहो !
अहंकार पु० अभिमान, गर्व
अहंकारिन् वि० अभिमानी, गर्विष्ठ
अहंकृत् वि० 'हु कर्ता छु' एवा अहकारवाळु (२) गर्विष्ठ, अभिमानी
अहपूर्विका, अहंप्रथमिका स्त्री० प्रथम आववानी इच्छा, हरीफाई
अहंभाव पु०, **अहंमति** स्त्री० अभिमान
अह पति पु० सूर्य

अहःशेष पु०, न० सायकाळ
अहार्य वि० न लई लेवा योग्य (२) मेळवी न लेवाय तेवु – वफादार
अहि पु० साप (२) वृत्रासुर (३) मेघ
अहित वि० नहि मुकायेलु (२) अयोग्य (३) अपथ्य, नुकसानकारक (४) प्रतिकूल, शत्रुता धरावनारु (५) पु० शत्रु (६) न० नुकसान, हानि
अहिद्रुह्, अहिद्विष् पु० गरुड (२) नोळियो (३) मोर (४) कृष्ण (५) इन्द्र
अहिनिर्मोक पु० सापनी काचळी
अहिपति पु० शेषनाग (२) वासुकि नाग
अहिफेन पु०, न० अफीण
अहिम वि० उष्ण, गरम
अहिमकर, अहिमकिरण, अहिमतेजस्, अहिमधामन्, अहिमरुचि, अहिमाशु पु० सूर्य (उष्ण किरणोवाळो)
अहिंसा स्त्री० कोईने मारवु नहि ते (२) मन, वाणी के कर्मथी कोईने दु ख न देवु ते [तेवु
अहिंस्र वि० अहिंसक; कोईने दु ख न दे
अहीन वि० आखु, सपूर्ण (२) ऊतरतु नहि तेवु (३) – विनानु नहि तेवु
अहीर पु० गोवाळ, गोप [होमेलु
अहुत वि० नहि होमायेलु (२) खोटी रीते
अहेतुक, अहैतुक वि० हेतु विनानु, अकारण [आपमेळे
अहैतुकम् अ० बीजानी मदद विना,
अहो अ० शोक, धिक्कार, विषाद, दया, सबोधन, विस्मय, प्रशसा, वितर्क, असूया वगेरे दर्शावे (२) पादपूरक तरीके वपराय [बळनी प्रशसा
अहोपुरुषिका स्त्री० आपवडाई, पोताना
अहो बत अ० सबोधन, दया के थाक बतावे
अहोरात्र पु०, न० दिवस अने रात
अह्नाय अ० जलदी, एकदम, सत्वर
अह्रीक वि० शरम वगरनु, निर्लज्ज

अक् १० उ० आकवु, निशानी करवी (२) लाछन लगाडवु
अंक पु० आको, चिह्न (२) सख्यानु चिह्न, आकडो (३) डाघो, कलक (४) खोळो (५) नाटकनो विभाग (६) वाको आकडो के ओजार (७) बाजु, पडखु, सामीप्य (८) वाक, वळाक (९) स्थळ, स्थान
अंकगत वि० जुओ 'अकागत'
अंकन न० निशानी, निशानी करवी ते (२) निशानी करवानु साधन
अंकपरिवर्त पु० खोळामा आळोटवु ते, गाढ आलिंगन [धात्री, आया
अंकपालि (–ली) स्त्री० आलिगन (२)
अंकभाज् वि० खोळामा लीधेलु के केडे तेडेलु (२) हाथमा आवे तेवु, जलदी मळे तेवु
अंकमुख न० अकना जे भागमा वस्तुनु बीज तथा अत निरूपाया होय ते (नाटच०)
अंकागत वि० खोळामा – हाथमा आवी पडेलु, प्राप्त थयेलु
अंकित वि० निशानी अथवा छापवाळु (२) गणवामा आवेलु
अंकुर पु०, न० फणगो (२) थोडु खीलेलु फूल (३) समासमा 'अणियाळु' अर्थमा; (उदा० नखाड्कुर) (४) सतति – वशज (उदा० कुलाकुर)
अंकुरित वि० फणगा फूटचा होय तेवु
अंकुश पु०, न० हाथीने हाकवानु लोढानु साधन (२) काबू, दाब; नियमन
अंकूर पु० जुओ 'अकुर'
अंकूरित वि० जुओ 'अकुरित'
अंकूष पु० जुओ 'अकुश'
अंकोट, अंकोठ, अंकोल पु० एक छोड (२) अखरोट
अंग अ० 'ठीक', 'वारु', 'खरेखर' (२) 'किम्'नी साथे 'केटलु वधु वधारे'

के 'केटलु बधु ओछु' ओ अर्थमा वपराय छे

अंग न० शरीर (२) शरीरनो अवयव (३) एक आखी वस्तुनो भाग;विभाग; खातु (४) उपाय (५) मुख्य वस्तुनो गौण भाग (६) प्रत्यय लागे ते पूर्वनु शब्दनु रूप (व्या०)

अगक न० शरीर (२) अवयव

अगज वि० शरीरमा अथवा शरीर उपर उत्पन्न थयेलु, शरीरनु, शरीरमानु (२) पु० पुत्र (३) कामदेव (४) केश, वाळ (५) रोग (६) न० लोही (७) केश, वाळ

अंगजा स्त्री० पुत्री

अंगण न० आगणु

अगद पु० वालिना पुत्रनु नाम (२) न० हाथनु घरेणु, कडु

अंगन न० जुओ 'अगण'

अंगना स्त्री० स्त्री (२) सुन्दर स्त्री

अगप्रत्यग न० नाना मोटो प्रत्येक अवयव

अगभग पु० पक्षाघात, लकवो (२) (ऊघमाथी ऊठ्या पछी करे छे तेम) अगोने लाबा पहोळा करवा ते

अगभू पु० छोकरो (२) कामदेव

अगरक्षक पु० अगनी रक्षा करनार खास सैनिक

अगरक्षणी स्त्री० बख्तर

अगराग पु० शरीरे सुगधीदार वस्तुओनो लेप करवो ते (२) सुगधी लेप

अंगरुह न० वाळ, केश

अगविक्षेप, अंगहार पु० भावने व्यक्त करवा शरीरना अवयवोनी चेष्टा (२) एक जातनु नृत्य

अगहारि पु० अगचेष्टा (२) नृत्य माटेनो मच

अंगार पु०, न० कोलसो (सळगेलो के न सळगेलो) (२) मगळनो ग्रह

अगारक पु०, न० सळगतो कोलसो (२) मगळनो ग्रह (३) मगळवार (४) न० अग्निनो तणखो

अगारकमणि पु० प्रवाळ, परवाळु

अंगागिभाव पु० गौण अने मुख्यनो सबध

अगिन् वि० शरीरवाळु, मूर्तिमत (२) जेने गौण विभागो छे तेवु – मुख्य

अगीकरण न०, **अंगीकार** पु० स्वीकार

अगीकृ ८ उ० अगीकार करवु,स्वीकारवु

अगुल पु० आगळी (२) अगूठो (३) एक आगळनु माप

अंगुलि स्त्री० आगळी (२) अगूठो (३) हाथीनी सूढनो अग्रभाग (४) एक आगळनु माप

अगुलिका स्त्री० आगळी

अगुलिमुद्रा स्त्री० महोर करवानी – सील करवानी वीटी

अगुली स्त्री० जुओ 'अगुलि'

अगुलीक, अगुलीय, अगुलीयक न० आगळीनी वीटी

अंगुष्ठ पु० अगूठो (२) अगूठानु माप

अघस् न० पाप

अघ्रि पु० पग (२) वृक्षनु मूळ

अंघ्रिप पु० वृक्ष

अच् १ उ० जवु (२) वळवु, वाळवु (३) पूजवु, सत्कारवु (४) मागवु (५) १० उ० प्रगट करवु

अचल पु०, न० वस्त्रनो छेडो, कोर (२) खूणो (जेमके आखनो)

अचित वि० वळेलु, वाळेलु (२) वाकडियु, सुदर (जेम के भमर) (३) सन्मानेलु, पूजेलु (४) सुशोभित करेलु, गूथेलु (५) गयेलु

अज् ७ उ० आजवु (२) जवु, जई पहोचवु (३) दर्शाववु, प्रगट करवु (४) शोभवु, प्रकाशवु (५) समानवु (६) शणगारवु

अजन न० आजवु ते; लेप करवो ते (२) आजण, मेश (३) शाही (४) पु० आठ दिग्गजोमानो एक

अंजनशलाका स्त्री० आंजवानी सळी
अंजना स्त्री० हनुमाननी माता
अंजलि पु० खोबो, पुष्प के जळथी भरेलो खोबो (२) आदर के नमस्कार दर्शाववा हाथ जोडवा ते
अंजसा अ० सीधेसीधु (२) वास्तविक रीते, खरेखर (३) जलदी
अंड पु०, न० ईडु (२) वृषण (३) पेळनी कोथळी (४) मृगनी नाभिमानी कस्तूरीनी कोथळी
अंडकोश (-ष) पु० वृषण; पेळनी कोथळी
अंडज वि० ईंडामाथी जन्मेलु
अंत वि० नजीकनु (२) छेल्लु (३) सौथी नानु (४) सौथी हलकु, खराब (५) रम्य, मनोहर (६) पु० छेडो (७) कोर, किनार, शिरोभाग (८) सामीप्य, सानिध्य (९) अंत, छेवट (१०) मरण, नाश (११) निश्चय, निर्णय (१२) अंदरनो भाग; तळियानो भाग (१३) कुल संख्या के परिमाण (१४) स्वरूप, स्वभाव (१५) विभाग (१६) सीमा, हद (१७) छेवटनो भाग, शेष
अंतक वि० नाश करनारु (२) पु० मृत्यु, यम (३) सीमा, हद
अंतकर, अंतकरण, अंतकारिन् वि० नाश करनारु, अंत लावनारु
अंतकाल पु० मरणनो समय
अंतकृत् वि० अंत लावनारु — मरण लावनारु (२) पु० मृत्यु यम
अंतग वि० अंत सुधी जनारु; पार पामनारु, निष्णात
अंतगति वि० जुओ 'अंतगामिन्'
अंतगमन न० कार्यनी पूर्णता (२) मरण
अंतगामिन् वि० मरण पामनारु; नाशवंत
अंतचर वि० सरहदे फरनारु, सरहदे जनारु (२) कार्यना अंतने पहोचनारु
अंततस् अ० अंते, आखरे (२) छेल्लेथी (३) वस्तुताए (४) अंदर (५) अंतिम रीते ('मुख्यत'-थी ऊलटु) (६) अंगत.
अंतपरिच्छद पु० ढांकवानु वासण
अंतपाल पु० सरहदनु रक्षण करनार (२) द्वारपाळ
अंतर् अ० अंदर, वच्चे, मध्ये, अंदरना भागमा, छानु होय तेम, — वगेरे अर्थमा वपराय (समासमा अघोष व्यंजन पहेला 'र्' नो विसर्ग थई जाय)
अंतर वि० अंदरनु (२) नजीकनु (३) निकट संबंधवाळु (४) जुदु, बहारनु (५) न० अंदरनो भाग (६) अंतःकरण; मन; आत्मा (७) भेद; तफावत (८) वचगाळो, वच्चेनो भाग (९) आड, व्यवधान (१०) छिद्र; नबळी बाजु (११) हेतु (१२) प्रवेश (१३) समयनो गाळो (१४) अवकाश; जगा (१५) गेरहाजरी; वियोग (१६) वस्त्र (१७) प्रसंग; तक (१८) (समासमा अंते) बीजु, जुदु (उदा० 'अवस्थान्तर') (१९) —ने लगतु, -ने विषे, -ना संबंधे होवु ते (२०) क्रममा एक पगथियु वेगळु होवु ते (२१) उत्तमता; श्रेष्ठता (२२) प्रतिनिधि-पणु; अवेज (२३) विशिष्टता; जुदापणु (२४) खातरी, जामीन
अंतरंग वि० अंदरनु (२) नजीकनु (३) अत्यंत प्रिय (४) न० चित्त, अंतःकरण (५) निकटनो मित्र (६) अगत्यनो भाग
अंतरा अ० अंदर; अंदरखाने (२) मध्यमा; वच्चे (३) मार्गमा (४) —ने मळतु, —नी बरोबरीनु होय तेम (५) दरम्यान, वचगाळे (६) विना, सिवाय
अंतरात्मन् पु० जीव; अंतःकरण; मन
अंतरापण पु० शहेरनी मध्यमा आवेलु बजार
अंतराय पु० विघ्न, मुश्केली, हरकत
अंतराराम वि० अंतरमा शांति के सुख मेळवनारु

अंतराल न० वचली जगा, वचगाळो (२) अंदरनो भाग, वच्चेनो भाग
अंतरि (अंतर्+इ) २ प० वच्चे आववु; जुदु पाडवु (२) आडे आववु, न देखाय तेम करवु
अंतरिक्ष न० स्वर्ग अने पृथ्वी वच्चेनी जगा, अवकाश, वातावरण
अंतरित वि० वच्चे आवेलु, आडमा आवेलु, छूटु पडायेलु, न देखाय तेम करायेलु (२) ढकायेलु, छुपायेलु, रक्षायेलु (३) अटकावायेलु, रुकावट करायेलु (४) प्रतिबिंबित (५) दबायेलु, झाखु पडेलु (६) दूर करायेलु
अंतरीक्ष न० जुओ 'अंतरिक्ष'
अंतरीप पु० द्वीप
अंतरीय न० अंदरनु वस्त्र
अंतरे अ० अंदर, वच्चे
अंतरेण अ० सिवाय; विना (२) संबंधमा; विषे (३) वच्चे, मध्ये (४) दरम्यान (५) अंतरमा, हृदयमा
अंतर्गडु वि० निरर्थक, निरुपयोगी
अंतर्गत, अंतर्गामिन् वि० वच्चे पेठेलु (२) अंदर आवेलु (३) ढकायेलु, छुपायेलु (४) भूली जवायेलु (५) अदृश्य थयेलु (६) नाश पामेलु
अंतर्गूढ वि० अंदर छुपायेलु, गुप्त
अंतर्ज्ञान न० अंदरनु गूढ ज्ञान
अंतर्ज्योति वि० अंतरमा ज्ञानप्रकाशवाळु
अंतर्दशा स्त्री० (माणसनी स्थिति उपर) एक ग्रहनी महादशामा आवती बीजा ग्रहोनी टूकी दशा (ज्यो०)
अंतर्दहन न०, **अंतर्दाह** पु० अंदरनी (बळतरा – पीडा) (२) सोजो
अंतर्द्वार न० अंदरनु द्वार, गुप्तद्वार
अंतर्धा ३ उ० अंदर मूकवु – राखवु (२) अंदर समावी लेवु – लई लेवु (३) दर्शाववुं, देखाडवु (४) छुपाववु, नजरे न पडवु (५) ढाकी देवु, नजरे न पडे तेम करवु
–प्रेरक० [अन्तर्धापयति] अदृश्य करवु
–कर्मणि० अदृश्य थवु
अंतर्धा स्त्री० छुपावु – ढकावु ते
अंतर्धान न० अदृश्य थवु ते
अंतर्नगर न० राजानो किल्लो
अंतर्निवेशन न० घरनी अन्दरनो भाग
अंतर्निहित वि० अंदर छुपायेलु
अंतर्बाष्प वि० जेणे आंसु दबाव्या छे एवु (२) आंसुथी भरेलु
अंतर्भाव पु० अंदर होवापणु, समावेश (२) अंतरनी वृत्ति के भाव (३) अदृश्य थवु ते
अंतर्भिन्न वि० वींधेलु; आंतरिक कलहथी छिन्नभिन्न थयेलु
अंतर्भूत वि० समाविष्ट, –मा समायेलु (२) अंदर रहेलु
अंतर्भेद पु० आंतरिक कलह, कुसंप
अंतर्भौम वि० जमीननी अंदरनु
अंतर्मुख वि० अंदर वळेलु (२) आत्मचिंतनपरायण
अंतर्यामिन् पु० जीवात्मानु के आंतरिक वृत्तिओनु नियंत्रण करनारु, परब्रह्म
अंतर्लीन वि० अंदर छुपायेलु (२) अंदर रहेलु
अंतर्वती, अंतर्वत्नी स्त्री० गर्भिणी स्त्री
अंतर्वंश, अंतर्वंशिक पु० कंचुकी, अंतःपुरनो रक्षक
अंतर्वेदि वि० यज्ञभूमिनी अंदरनु (२) अ० यज्ञभूमिनी अंदर
अंतर्वेदि (–दी) स्त्री० गंगा-यमुना वच्चेनो दोआब
अंतर्हास पु० दबावी राखेलु हास्य; अंदरखाने हसवु ते
अंतर्हित वि० वच्चे मुकायेलु; छूटु पडायेलु (२) ढकायेलु, छुपायेलु (३) अदृश्य थयेलु
अंतवत् वि० अंतवाळु; नाशवंत, नश्वर
अंतवेला स्त्री० मरणनो समय
अंतश्चर वि० अंदर व्यापेलु, अंदर रहेलु

अंतसद् पुं० शिष्य, अंतेवासी
अंतस्ताप वि० अंदरथी तपेलु; अंदरथी बळतु (२) पु० आंतरिक ताप के ताव
अंतस्तोय वि० अंदर पाणीवाळु
अंत:करण न० अंदरनी इंद्रिय, मन-बुद्धि-चित्त-अहंकार
अंत:कोप पु० अंदरनो क्रोध, गुप्त क्रोध
अंत:पातिन् वि० अंदर आवेलु
अंत:पुर न० राणीवास, स्त्रीओनो आवास (२) अंत:पुरमा रहेती स्त्रीओ के राणीओ
अंत:पुरिक पु० कंचुकी; अंत:पुरनो रक्षक
अंत:प्रकोप न० अंदरनो (प्रजानो) असंतोष
अंत:सत्त्वा स्त्री० सगर्भा – गर्भिणी स्त्री
अंत:सलिल वि० जमीननी अंदर (वहेता) पाणीवाळु
अंत:संज्ञ वि० अंदरथी चैतन्ययुक्त, अंदर जेने संज्ञा – भान छे तेवु (वृक्ष इ०)
अंत:सार वि० अंदरना बळ के जोमवाळु (२) वजनदार (३) पु० अंदरनु तत्त्व; अंदरनी वस्तु [माणनारु
अंत:सुख वि० अंतरमा – आत्मामा सुख
अंत:स्थ वि० वच्चे रहेलु (२) पु० य् र् ल् व् – ए चारमानो दरेक व्यंजन (व्या०); अर्धस्वर (स्वर अने व्यंजन बनेना धर्मवाळो) [सान्निध्य
अंतिक वि० पासेनु, नजीकनु (२) न०
अंतिकचर पु० हजूरियो
अंतिम वि० छेल्लु (२) तरत ज पछीनु
अंते अ० छेवटे; छेडे (२) अंदर (३) समीपे
अंतेवासिन् पु० शिष्य (गुरुनी समीपे रहेनारो) (२) चांडाळ (गामने छेडे रहेनारो)
अंत्य वि० छेल्लु (२) तरत ज पछीनु (३) हलकु, नीचु (४) नश्वर (५) पु० म्लेच्छ; यवन (६) चांडाल (७) शब्दनु छेल्लु पद (८) न० एकडा उपर पदर मींडा मोठवता थती संख्या

अंत्यकर्मन् न०, अंत्यक्रिया स्त्री० अंत्य-संस्कार, अग्निसंस्कार
अंत्यज, अंत्यजन्मन्, अंत्यजाति, अंत्य-जातीय वि० [illegible]
अंत्याहुति, अंत्येष्टि स्त्री० [illegible]; मरणसंस्कार
अंत्र न० [illegible]
अंदु(-दू) स्त्री० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] [illegible]
अंध् १० उ० [illegible] (२) [illegible]
अंध वि० [illegible] (२) [illegible]; [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) न० [illegible] (६) अज्ञान, [illegible] (७) [illegible]; [illegible]
अंधक वि० [illegible]
अंधकार पु० [illegible]
अंधकूप पु० [illegible], [illegible], [illegible] (२) [illegible], [illegible]
अंधतमस, अंधतामस न० पूर्ण [illegible]; गाढ [illegible]
अंधतामिस्र पु०, न० पूर्ण अंधार (२) मानसिक अंधार – अज्ञान (३) [illegible] नरक (४) मरण
अंधस् न० अन्न
अंधु पु० कूवो
अंबक न० आंख (उदा० त्र्यंबक)
अंबर न० आकाश (२) वस्त्र (३) एक सुगंधी पदार्थ
अंबरिष, अंबरीष पु० एक विष्णुभक्त राजानु नाम (२) सूर्य (३) तावडी; [illegible]
अंबरौकस् पु० स्वर्गमा वसनार – देव
अंबा स्त्री० माता, मा
अंबालिका, अंबिका स्त्री० मा, माता
अंबु न० जळ, पाणी
अंबुज वि० जळमा उत्पन्न थयेलु (२) पु० शंख (३) न० कमळ

अंबुद, अंबुधर पु० वादळु
अंबुधि, अंबुनिधि पु० महासागर, समुद्र
अंबुप पु० समुद्र (२) वरुण
अंबुपति पु० वरुण
अंबुमुच् पु० वादळ, मेघ
अंबुरय पु० प्रवाह
अंबुराशि पु० समुद्र
अंबुरुह् न०, **अंबुरुह** पु०, न० कमळ (दिवसे खीलतु)
अंबुवाह पु० वादळ, मेघ (२) सरोवर (३) पाणी वहेनारो
अंभस् न० पाणी (२) आकाश
अंभोज वि० जलोत्पन्न (२) न० कमळ
अंभोजिनी स्त्री० कमळनो छोड (२) कमळनो समूह (३) कमळनु सरोवर के तळाव
अंभोद, अंभोधर पु० वादळु
अंभोधि, अंभोनिधि, अंभोराशि पु० महासागर, समुद्र
अंभोरुह् न०, **अंभोरुह** पु०, न० कमळ
अंश पु० भाग, हिस्सो (२) मिलकतमा हिस्सो (३) वर्तुळनो ३६० मो भाग (४) खभो
अंशावतार पु० जेमा ईश्वरनी विभूतिनो मात्र अंश होय तेवो अवतार
अंशिन् वि० भागीदार, हकदार (२) अवयवी, जेने अंशो होय तेवु
अंशु पु० किरण (२) अणी के छेडो (३) नानामा नानो भाग, अणु (४) वेग (५) वस्त्र (६) पातळो दोरो
अंशुक न० वस्त्र (२) बारीक अथवा रेशमी वस्त्र (३) झीणु के श्वेत वस्त्र (४) उत्तरीय
अंशुमत् वि० किरणवाळु, तेजस्वी, प्रकाशित (२) अणीवाळु (३) पु० सूर्य (४) चंद्र
अंशुमालिन् पु० सूर्य
अंस पु० भाग, हिस्सो (२) खभो
अंसल वि० मजबूत खभावाळु, बळवान
अंसविवर्तिन् वि० खभा तरफ वळेलु
अंह् १ आ० जवु (२) १० प० मोकलवु (३) बोलवु (४) प्रकाशवु
अंहस् न० पाप
अंह्रि पु० जुओ 'अंघ्रि'

आ

आ संमति, दुःख, शोक, अनुकंपा, स्मरण अने पादपूरण अर्थे वपराय (२) सामीप्य, चारे बाजुए, सर्व बाजुए, —ए अर्थमा नाम अने धातुनी पूर्वे आवे (३) गतिवाचक क्रियापदो साथे ऊलटो अर्थ दर्शाववा वपराय (उदा० 'आगच्छति' =आवे छे, 'आनयति' = लावे छे) (४) जुदा लखाता उपसर्ग तरीके, '—थी माडीने — सुधी' ए जातनी मर्यादा — सीमा दर्शावे (उदा० 'आ जन्मन' = जन्मथी ज, 'आ परितोषाद्' = संतोष थाय त्या सुधी) (५) 'सुधी'-'पर्यंत' -एवा अर्थमा समासमा पण जोडाय (उदा० 'आबालम्', 'आमरणम्') (६) विशेषणनी साथे अल्पता दर्शावे (उदा० 'आरक्त' = थोडु लाल)
आकच् १ आ० बाधवु
आकत्थन वि० बडाई मारनारु
आकर वि० श्रेष्ठ, उत्तम (२) पु० खाण (३) समूह, ढगलो
आकरग्रंथ पु० कोई विषयनी माहितीनो प्रमाणभूत ग्रंथ
आकरिन् वि० खाणमा पेदा थयेलु (२) सारी जातनु; उत्तम ओलादनु

आक्रु ८ उ०, ५ प० नजीक लाववु; हाकीने पासे लाववु
–प्रेरक० बोलाववु, निमत्रवु (२) प्रेरवु (३) पडकारवु (४) कोई पासे काई मागवु

आकृति स्त्री० आकार, रूप (२) शरीर; शरीराकृति (३) बाह्य देखाव

आकृष् १ उ०, ६ उ० खेचवु, आकर्षण करवु (२) खेंचीने वाळवु (धनुष्य) (३) खेचवु, वहार काढवु (४) वीणवु, एकत्रित करवु (५) लई लेवु, पडावी लेवु

आकृष्ट वि० खेचायेलु, आकर्षायेलु

आक्रम् १ उ० पासे जवु – पहोचवु (२) व्यापवु (३) हुमलो करवो (४) जीतवु; तावे करवु (५) श्रेष्ठ थवु, झाखु पाडवु (६) ऊचे चडवु (सूर्यनु आकाशमा) (७) माथे लेवु, शरू करवु (८) वजन मूकवु, दबाववु

आक्रम पु०, **आक्रमण** न० पासे जवु – पहोचवु ते (२) हुमलो (३) ओळगवु ते, वटी जवु ते (४) व्यापवु ते (५) दबाववु ते (भार वडे)

आक्रंद् १ उ० रडवु – विलाप करवो (२) वूम पाडवी, बोलाववु

आक्रंद पु० रुदन, विलाप (२) बोलाववु ते, वूम (३) युद्ध, लडाई (४) त्राता, रक्षक (५) रडवानु स्थान

आक्रंदन न० रुदन; विलाप (२) बोलाववु

आक्रंदित वि० बोलावेलु (२) विलाप करतु (३) न० पोकेपोक मूकीने रडवु ते (४) वूम, गर्जना [ति [बोलावतु

आक्रदिन् वि० विलाप करता करता

आक्रात वि० पकडायेलु, प्राप्त करायेलु; पराभव पमाडेलु (२) छवायेलु, व्याप्त (३) रोकायेलु (४) दबायेलु, कचरायेलु (५) सवारी करेलु

आक्राति स्त्री० उपर चडवु ते, पग मूकवो ते (२) वजन मूकवु ते, दबाववु ते (३) ऊगवु ते (४) बळ, जोर

आक्रीड पु०, न० क्रीडा, रमत (२) क्रीडोद्यान

आक्रुश् १ प० मोटेथी वूम पाडवी (२) ठपको देवो, वढवु (३) निंदा करवी (४) शाप आपवो

आक्रुष्ट वि० ठपको अपायेलु, निंदायेलु (२) वूम पाडेलु (३) शाप आपेलु

आक्रोश पु०, **आक्रोशन** न० मोटी वूम, वूम पाडीने बोलाववु ते (२) निंदा, गाळ (३) शाप (४) सोगद

आक्लिन्न वि० भीनु (२) दयार्द्र

आक्षिप् ६ प० फेकवु, पछाडवु (२) लोभाववु, आकर्षवु (३) अस्त्र वडे प्रहार करवो (४) वच्चेथी रोकवु (५) पाछु खेंची लेवु, झूटवी लेवु (६) हाकी काढवु (७) लटकाववु, फरकाववु (ध्वज इ०) (८) सूचववु, दर्शाववु (९) उपेक्षा करवी, नकारवु (१०) वाधो उठाववो (११) अपमान करवु (१२) चडियाता थवु, झाखु पाडवु (१३) कटाक्षमा कहेवु (१४) पसार करवु (समय)

आक्षिप्त वि० फेकेलु, नाखेलु (२) झूटवी लेवायेलु (३) निंदित, अपमानित (४) पराभूत (५) गूचवायेलु, मूझायेलु (६) आकर्षायेलु, लोभायेलु

आक्षिप्तिका स्त्री० रगभूमि पर आवती वखते पात्र वडे गवातु गीत

आक्षेप पु० फेकवु ते, खेंची काढवु ते, झूटववु ते (२) निंदा, ठपको, तिरस्कार (३) नाखी देवु ते, छोडी देवु ते (४) प्रलोभन, आकर्षण (५) चोपडवु – लगाववु ते (६) वाधो, शका (७) अनुमान, तर्क (८) उल्लेख, सूचना (९) न्यास, थापण

आक्षेपण वि० आकर्षक, मनोहर (२)

न० फेकवु – नाखवु – उछाळवु ते (३) गाळ भाडवी – तिरस्कार करवो ते (४) वांधो उठाववो ते
आक्षेपिन् वि० आकर्षनारु, खेंचनारु
आखडल पु० इद्र
आखु पु० उदर
आखुपत्र, आखुवाहन पु० गणपति (उदरना वाहनवाळा)
आखेट पु० शिकार
आखेटक पु० शिकारी (२) न० शिकार
आख्य वि० कहेनारु, वर्णन करनारु
आख्या २ प० कहेवु (२) – नामे कहेवु – ओळखवु [प्रतीति
आख्या स्त्री० नाम (२) शोभा (३) भास,
आख्यात वि० कहेवायेलु (२) प्रसिद्ध करायेलु (३) न० क्रियापद
आख्याति स्त्री० कहेवु ते (२) नाम (३) कीर्ति, प्रसिद्धि
आख्यान न० कहेवु – वर्णववु ते (२) पूर्वनु वृत्तांत कहेवु ते (३) कथा, वार्ता (४) पौराणिक के ऐतिहासिक महाकथा (महाभारत इ०) (५) नेनो सर्ग के खड (६) प्रत्युत्तर
आख्यानक न० नानी कथा, दतकथा
आख्यायिका स्त्री० वार्ता, कथा
आख्येय वि० कहेवा योग्य
आगत वि० आवेलु, आवी पहोचेलु (२) बनेलु (३) प्राप्त थयेलु, पामेलु
आगति स्त्री० आवी पहोचवु ते (२) प्राप्ति (३) उत्पत्ति, मळ (४) पाछु आववु ते (४) अकस्मात बनाव
आगम् १ प० [आगच्छति] आववु, आवी पहोचवु (२) प्राप्त थवु, पामवु –प्रेरक० लई जवु (२) –नु आगमन जाहेर करवु (३) समाचार मेळववा, माहितगार थवु (४) भणवु, शीखवु (५) आ० धीरज राखवी, राह जोवी
आगम पु० आगमन, आवी पहोचवु ते, देखावु ते (२) लाभ, प्राप्ति (३) उत्पत्ति; जन्म (४) वृद्धि, वधारो (५) प्रवाह (६) ज्ञान; विद्या (७) शास्त्र (८) शास्त्राभ्यास (९) पु०, न० तंत्रशास्त्र (१०) नदीनु मुख (११) मार्ग; मुसाफरी
आगमन न० आववु ते (२) पाछा फरवु ते (३) लाभ, प्राप्ति (४) उत्पत्ति
आगमापायिन् वि० उत्पत्ति अने विनाशवाळु, आवनारु अने जनारु
आगमित वि० भणावेलु (२) जाणेलु; अभ्यासेलु
आगमिन् वि० नजीकना भविष्यमा आवनारु (२) आगमशास्त्र भणेलु (३) आगंतुक, घूसी गयेलु [शिक्षा
आगस् न० अपराध, गुनो (२) पाप (३)
आगस्त्य वि० दक्षिण तरफनु (२) अगस्त्य ऋषि सबंधी [माणस, अतिथि
आगंतु पु० नवो आवेलो – अजाण्यो
आगंतुक वि० पातानी मेळे – वगर बोलाव्यु आवेलु (२) रखडतु – फरतु (ढोर इ०) (३) आकस्मिक, हमेशनु नहि एवु (४) घूसी गयेलु – मूळनु नहि एवु (पाठ इ०) (५) पु० अतिथि, अजाण्यो (६) घूसणियो (७) घूसी गयेलो पाठ
आगामिक वि० आवनारु, भविष्यनु
आगामिन् वि० जुओ 'आगमिन्'
आगामुक वि० आवनारु (२) भावि
आगार न० घर, निवासस्थान
आग्नेयकीट पु० अग्निमा झपलावतु एक पतंगियु (चोर लोको दीवो बुझाववा मोकले छे) [करातो यज्ञ
आग्रयण पु० नवु अन्न आववाने निमित्ते
आग्रह् ९ उ० पकडवु, जोरथी पकडवु (२) जोरथी खेंचवु (लगाम) (३) आग्रह करवो
आग्रह पु० पकडवु – लेवु ते (२) धार्यु करवानी वृत्ति, खत, निश्चय (३) हठ, जीद, ममत

आग्रहायण पु० मार्गशीर्ष मास
आघट्ट् १० प० अथडावु
आघट्टना स्त्री० घर्षण, अफळावु ते
आघर्ष पु०, **आघर्षण** न० परस्पर घर्षण
आघात पु० प्रहार (२) घा (३) हिंसा; नाश (४) कतलखानु, वधस्थान
आघूर्ण् १ आ०, ६ प० चकर चकर फरवु के फेरववु [नामु, ढंढेरो
आघोषण न०, **आघोषणा** स्त्री० जाहेर-
आघ्रा १ प० [आजिघ्रति] सूघवु (२) माथु चूमवु (३) हुमलो करवो, खाई जवु (ला०)
आघ्रात वि० सूघेलु (२) तृप्त
आचक्ष् २ आ० बोलवु, कहेवु, जणावयु, वर्णववु
आचम् १ प० [आचामति] आचमन करवु (२) चाटी जवु, पी जवु
आचम पु० आचमन
आचमन न० धार्मिक विधिनी शरूआतमा के जमता पहेला अने पछी हथेळीमा पाणी भरी पी जवु ते (२) ते माटेनु पाणी
आचर् १ प० आचरवु, वर्तवु (२) वारवार अवरजवर करवो
आचरण न० आचारमा मूकवु ते, अनुष्ठान (२) वर्तन (३) आचार, व्यवहार, रिवाज [योग्य
आचरणीय वि० आचरवा योग्य, करवा
आचरित वि० आचरेलु, करेलु (२) रूढि – परपराथी आचरायेलु (३) नियमथी नक्की करेलु (४) वमाहत करायेलु (५) न० वर्तन, आचार
आचार पु० वर्तन, आचरण (२) सदाचरण (३) परपराथी आचरवामा आवतो व्यवहार, शिष्टाचार
आचारपूत वि० सदाचरणथी पवित्र बनेलु
आचार्य पु० विद्या आपनार, गुरु (२) धर्मगुरु (३) जुदो सिद्धान्त प्रतिपादन करनार शास्त्रकार (४) विद्वान, पडित
आचार्यक न० आचार्यनु कर्म, शिक्षण (२) आचार्यनु पद (३) आचार्यनी पूजा (४) भाष्य करवु – समजाववु ते
आचार्यानी स्त्री० आचार्यपत्नी; गुरुपत्नी
आचि ५ उ० एकठु करवु; ढगलो करवो (२) पाथरी देवु, भरी काढवु
आचित वि० भरी काढेलु, पाथरी दीधेलु (२) बाधेलु, गूथेलु (३) सगृहीत
आचीर्ण वि० खवाई गयेलु (जतु इ० थी) (२) आचरायेलु
आच्छद् १० प० ढाकवु (२) सताडवु, गुप्त राखवु (३) पहेरवु
आच्छद् स्त्री० ढाकण (२) म्यान
आच्छन्न वि० ढकायेलु (२) पहेरेलु
आच्छाद पु० वस्त्र, कपडा
आच्छादन न० ढाकण, आवरण (२) वस्त्र, कपडा (३) झभ्भो, डगलो (४) चादर (५) छापरानु छाज
आच्छिद् ७ उ० छेदवु (२) झूटवी लेवु; खेंची लेवु (३) अवगणवु, ध्यानमा न लेवु (कथन) (४) अळगु करवु
आच्छिन्न वि० छीनवी लीधेलु (२) सारी रीते दूर करेलु, खसेडी नाखेलु
आच्छोटित वि० खेची काढेलु, तोडी नाखेलु (२) टचाका बोलावेलु (आगळी)
आज वि० बकरानु
आजनन न० श्रेष्ठ जन्म (२) अ० जन्मथी माडीने
आजन्म, आजन्मम् अ० जन्मथी माडीने
आजात वि० कुलीन, कुळवान
आजानु अ० ढीचण सुधी
आजानेय त्रि० सारी जातनु (घोडो इ०)
आजि पु०, स्त्री० युद्ध, लडाई (२) दोडवानी के लडवानी हरीफाई (३) रणभूमि (४) मेदान (शरतनु)
आजिमुख न० लडाईमा पहेली हरोळ
आजीव् १ प० –ना वडे, –ने आधारे जीववु

आत्मज्ञान न० पोताना संबधी ज्ञान (२) आध्यात्मिक ज्ञान, आत्मानो साक्षात्कार [संतुष्ट

आत्मतृप्त वि० आत्मतत्त्वमा तृप्त –

आत्मत्याग पु० स्वार्थत्याग (२) आत्महत्या

आत्मदर्श पु० अरीसो [आत्मज्ञान

आत्मदर्शन न० आत्मसाक्षात्कार (२)

आत्मन् पु० आत्मा, जीव, प्राण (२) पोते – पोतानी जात (३) परमात्मा (४) स्थूळ शरीर, देह (५) मन (६) बुद्धि (७) समज (८) आकृति; स्वरूप (९) जोम; वीर्य; यत्न (१०) वायु (११) पुत्र (१२) स्वभाव; प्रकृति (१३) विशिष्ट गुण (१४) ध्येय (१५) समासने अंते '–नु बनेलु' ए अर्थमा वपराय छे

आत्मना अ० पोते, जाते (२) 'द्वितीय,' 'तृतीय' वगेरे क्रमवाचक शब्दो साथे 'पोताने गणता' एवो अर्थ थाय छे

आत्मनिवेदन न० पोतानी जात के पोतानु बधु ईश्वरना चरणोमा समर्पी देवु ते

आत्मनीन वि० पोतानु (२) पोताने माटे उचित एवु (३) प्राणधारी; जीवतु (४) पु० पुत्र (५) साळो (६) विदूषक

आत्मप्रत्ययिक वि० जातअनुभवथी जाणनारु

आत्मप्रभव पु० जुओ 'आत्मज'

आत्मप्रशंसा स्त्री० पोतानी जातना वखाण

आत्मभू पु० ब्रह्मा (२) विष्णु (३) शंकर (४) कामदेव (५) पुत्र [वफादार

आत्मभूत वि० पोतामाथी जन्मेल (२)

आत्ममानिन् वि० अभिमानी, गर्वित (२) सर्व प्राणीने आत्मवत् माननारु

आत्मयोनि पु० जुओ 'आत्मभू'

आत्मवत् वि० पोताने वश चित्तवाळु (२) डाह्यु, समजणु (३) अ० पोतानी जेम

आत्मवश्य वि० आत्माना – पोताना काबूमा होय तेवु (२) पोतानी जात उपर काबूवाळु [ब्रह्मज्ञानी

आत्मविद् वि० आत्माने ओळखनारु,

आत्मविद्या स्त्री० ब्रह्मविद्या

आत्मवृत्ति वि० आत्मामा स्थिर वृत्तिवाळु (२) स्त्री० पोतानो धधो के कर्तव्य आचरवा ते (३) हृदयनी लागणी (४) पोताना संजोग मुजबनु कार्य

आत्मशुद्धि स्त्री० आत्मानी – पोतानी जातनी शुद्धि [आत्मस्तुति

आत्मश्लाघा स्त्री० आत्मप्रशंसा,

आत्मसंपन्न वि० जितेंद्रिय, जात उपर काबूवाळु (२) बुद्धिशाळी

आत्मसंभव पु० पुत्र (२) कामदेव (३) परमात्मा [स्वाभिमान

आत्मसंभावना स्त्री० आत्मश्लाघा,

आत्मसात् अ० संपूर्ण रीते पोताने स्वाधीन – पोतानु होय तेम

आत्मसिद्धि स्त्री० मोक्ष (२) पोताना हेतुनी सिद्धि – प्राप्ति

आत्मस्थ वि० स्वाधीन

आत्महत्या स्त्री० आपघात

आत्महन् वि० आत्मघाती

आत्मादिष्ट वि० आपमेळे सूझेलु

आत्मानुरूप वि० पोताने योग्य तेवु

आत्मापहार पु० जातने छुपाववी ते

आत्माराम वि० आत्मज्ञान माटे प्रयत्न करनारु (२) आत्मा ए ज जेने आनंदनु स्थान के साधन छे तेवु

आत्माश्रय वि० स्वाश्रयी

आत्मीकृ ८ उ० जीतवु

आत्मीय वि० पोतानु [काबूवाळु

आत्मेश्वर वि० पोतानी जात उपर

आत्मोद्भव पु० पुत्र (२) कामदेव

आत्मौपम्य न० पोताना जेवु मानवु ते

आत्म्य वि० पोतानु, पोतानी जातनु (२) (समासने अंते) –ना गुणधर्मवाळु

आत्ययिक वि० विनाशक (२) अनिष्ट (३) अगत्यनु, उतावळनु (४) मोडु (५) न० आफत, विपत्ति, संकट

आत्यंतिक वि० अनंत, सतत (२) खूब, पुष्कळ (३) सर्वश्रेष्ठ (४) आखरी, अंतिम, कायमनु

आथर्वण वि० अथर्ववेद संबंधी (२) पु० अथर्ववेद (३) अथर्ववेद भणनार (४) न० अभिचार वगेरे कर्म

आदर पु० संमान; मान (२) काळजी (३) उत्सुकता, आतुरता (४) प्रयत्न (५) आरंभ (६) आसक्ति (७) स्वीकार

आदर्श पु० अरीसो, दर्पण (२) असल अथवा मूळ प्रत (३) नमूनो (४) टीका, टिप्पणी (५) नकल

आदा ३ आ० लेवु, स्वीकारवु (२) पकडवु; कबजे लेवु (३) पहेरवु; धारण करवु (४) (खान-पान तरीके) वापरवु (५) लई जवु; पडावबु (कर, धन) (६) तोडी लेवु, चूंटी लेवु (७) वहन करवु (८) धरपकड करवी (९) ('वाच्', 'वचस्' – एवा शब्दो साथे) बोलवु, उच्चारवु

आदान न० ग्रहण, स्वीकार (२) मेळववु ते (३) व्याधिनु लक्षण, रोगनु निदान (४) बांधवु, केद पकडवु

आदि वि० पहेलु (२) मुख्य (३) मूळनु; पहेलानु (४) पु० प्रारंभ; शरूआत (५) मूळ कारण (६) प्रथम भाग – हिस्सो (७) समासमां 'वगेरे', एवा अर्थमां अंते आवे छे

आदिकर्तृ पु० सरजनहार (ब्रह्मा के विष्णु)

आदिकवि पु० ब्रह्मा (वेदोना गानार) (२) वाल्मीकि ऋषि (रामायण गानार)

आदित्य वि० सूर्यवंशनु (२) पु० देव (अदितिनो पुत्र) (३) सूर्य

आदित्यबंधु पु० शाक्यमुनि, गौतम बुद्ध

आदिम वि० प्रथम – मूळ

आदिश् ६ उ० दर्शाववु, सूचववु (२) हुकम करवो (३) उपदेशवु; जणाववु (४) भविष्य भाखवु (५) पडकारवु (६) अजमाववु, प्रयोग करवो

आदिष्ट वि० हुकम करेलु (२) उपदेशेलु, दर्शावेलु (३) कहेलु, भाखेलु (४) न० हुकम, आज्ञा (५) सलाह, सूचन, उपदेश

आदृ ६ आ० [आद्रियते] आदर आपवो; संमानवु (२) मन उपर लेवु, ध्यान उपर लेवु (३) –मां लागवु, मंडवु (४) इच्छवु; उत्सुक थवु

आदृत वि० आदर करेलु; सत्कारेलु (२) आदरवाळु (३) लक्षवाळु; प्रयत्नशील

आदेश पु० आज्ञा, हुकम (२) उपदेश, शिखामण (३) हकीकत, वर्णन (४) शास्त्राज्ञा, विधि (५) भविष्यकथन (६) संकल्प (व्रतादिनो)

आदेशिक पु० जोषी, भविष्य भाखनार

आदेशिन् वि० हुकम करनारु; प्रेरनारु

आद्य वि० प्रथम, मूळनु (२) श्रेष्ठ (३) तरत पहेलानु (४) खाद्य (५) समासने अंते '–थी शरू करीने, वगेरे' –ए अर्थमां (६) न० शरूआत (७) अन्न, अनाज

आद्यंत वि० आदि अने अंतवाळु (२) पहेलु अने छेल्लु

आद्यपातम् अ० पहेलेथी छेडे सुधी

आद्यून वि० (वेगरसपणे) खाउधरु

आधर्षित वि० अपमानित, अवमानित (२) तिरस्कृत, खंडन करेलु

आधा ३ उ० मूकवु (२) लगाववु; स्थिर करवु (३) लेवु, धारण करवु (४) उत्पन्न करवु; प्रेरवु (५) पूरु पाडवु; अर्पवु (६) नीमवु

आधातृ वि० आपनारु, मूकनारु

आधान न० मूकवु ते (२) लेवु – स्वीकारवु ते (३) अमल करवो – पार पाडवु ते (४) संस्कारपूर्वक अग्निनु स्थापन

(होम माटे) (५) अर्पवु, प्रेरवु; उपदेशवु (६) रचवु, उत्पन्न करवु (७) प्रयत्न, उद्यम (८) थापण; अनामत (९) मैथुन, गर्भाधान
आधार पु० टेको; अवलबन (२) आश्रय; मदद (३) पात्र; वासण (४) झाडना मूळनी आसपासनो क्यारो
आधि पु० मानसिक पीडा (२) शाप, आपत्ति, दुर्भाग्य (३) घरेणे मूकवु ते; गीरो मूकवु ते (४) स्थळ; स्थान
आधिकरणिक पु० न्यायाधीश
आधिक्य न० वधारो (२) श्रेष्ठता
आधिदैविक वि० अधिष्ठाता देवोने लगतुं (२) दैवकृत (सुख–दु ख)
आधिपत्य न० अधिपतिपणु, उपरीपणु
आधिभौतिक वि० पचमहाभूतने लगतु (२) भूतप्राणीने लगतु [स्वामित्व
आधिराज्य न० साम्राज्य, सपूर्ण
आधुनिक वि० हालनु; वर्तमान समयनु
आधूत न० हलावेलु (२) क्षुब्ध, ध्रूजतु
आधृ १० प० धारण करवु (२) टेको आपवो [सवार
आधोरण पु० हाथीनो महावत अथवा
आध्मा १ प० [आधमति] धमण धमवी; फुलाववु (२) फूकवु (शख इ०) –कर्मणि० फुलावु
आध्मात वि० फूलेलु, भरपूर, व्याप्त (२) घणु वधी गयेलु (३) अवाजथी भरायेलु (४) बळी गयेलु; दग्ध
आध्मान न० धमवु ते, फूकवु ते (२) वधी के फूली जवु ते (३) वडाई
आध्यात्मिक वि० आत्मा सबधी, आत्म-तत्त्व सबधी (२) मन वडे थयेलु (दु ख, शोक, मोह इ०)
आध्यायिक वि० वेदाध्ययनमा रत
आध्यै १ प० ध्यान धरवु (२) स्मरण करवु (३) चिंतन करवु, याद करवु
आध्वनिक वि० प्रवासी, वटेमार्गु

आनक पु० ढोल, नगारु (युद्धनु) (२) गर्जना करतु वादळ
आनत वि० नमेलु, प्रणाम करेलु (२) नीचे नमेलु (३) नम्र
आनति स्त्री० नमवु ते (२) नमस्कार; प्रणाम (३) नम्रता
आनद्ध वि० बाधेलु (२) मढेलु
आनन न० मुख; चहेरो (२) पुस्तकनो विभाग – खड
आनम् १ प० प्रणाम करवा (२) नमवु; नमी पडवु (३) नीचा पडवु
आनयन न० लाववु – आणवु ते (२) यज्ञोपवित (जनोई) आपवु ते
आनतर्य न० तरत ज पछी आववु ते (२) छेक निकटता, (देश-काळनी) वचगाळो न होवो ते
आनंत्य न० अनतता (२) शाश्वतता (३) उत्तम लोकनी प्राप्ति
आनंद् १ प० आनन्द पामवु, खुश थवु
आनंद पु० हर्ष, प्रसन्नता (२) परब्रह्म (३) न० परब्रह्म
आनंदन वि० आनददायक; सुखकारक
आनायिन् पु० माछीमार
आनी १ प० लई आववु, लाववु (२) उत्पन्न करवु (३) (स्थितिने) पमाडवु
आनीति स्त्री० पासे लई जवु ते
आनुकूल्य न० अनुकूलता, सगवड (२) कृपा, महेरबानी
आनुजीव्य न० सेवकनो आचार
आनुपूर्व न०, **आनुपूर्वी** स्त्री०, **आनुपूर्व्य** न० परिपाटी, क्रम
आनुयात्रिक पु० अनुचर, अनुयायी
आनुषंगिक वि० अमुकना सबधवाळु, सहवर्ती (२) गौण, प्रासगिक (३) सूचित, ध्वनित (४) अनिवार्य, अपरिहार्य (५) आसक्त, वारवार जतु आवतु (६) समान, सरखु
आनृण्य न० देवामाथी मुक्त थवु ते

आनृशस, आनृशंस्य वि० दयाळु; मायाळु (२) न० दयाळुपणु, दया
आन्वीक्षिकी स्त्री० आत्मविद्या (२) तर्कशास्त्र
आप् ५ प० मेळववु, पामवु (२) पासे पहोचवु (३) व्यापवु
आपगा स्त्री० नदी
आपण पु० बजार, दुकान (२) वेपार
आपणक, आपणिक वि० बजार सबधी; व्यापार सबधी (२) बजारमाथी प्राप्त थयेलु (जकात) (३) पु० दुकानदार; वेपारी (४) दुकानो उपरनो कर
आपत् १ प० हुमलो करवो; तूटी पडवु (२) पहोचवु, पासे आववु (३) वेग धसवु (४) थवु, बनवु (५) माथे आवी पडवु (६) स्फुरवु, लागवु
आपत्काल पु० दु खनो – सकटनो समय
आपत्ति स्त्री० –ना रूप थई जवु – बनी जवु ते (२) प्राप्ति (३) आफत; विपत्ति (४) भग, उल्लघन, दोष
आपद् ४ आ० नजीक जवु (२) –ना रूप बनवु; –नु रूप प्राप्त करवु (३) विपत्तिमा आवी पडवु (४) बनवु; थवु
आपद् स्त्री० सकट; विपत्ति (२) दुर्भाग्य
आपदा स्त्री० आपत्ति (२) दुर्भाग्य
आपद्गत, आपद्ग्रस्त वि० दु खमा आवी पडेलु, दु खी (२) दुर्भागी
आपद्धर्म पु० आपत्तिना समयनो धर्म, आपत्तिना समये न छूटके धर्मशास्त्रे जे करवानी रजा आपी होय ते आचार
आपन्न वि० पामेलु, प्राप्त (२) –मा जई पडेलु, –ने प्राप्त थयेलु (३) दु खमा आवी पडेलु (४) आवी पडेलु
आपन्नसत्त्वा स्त्री० गर्भिणी; सगर्भा स्त्री
आपस्कार न० शरीरनु थडियु
आपा १ प० [आपिबति] पी जवु (२) (कान के आग्व वडे) खूब ध्यानथी जोवु के साभळवु
आपात पु० उपर तूटी पडवु ते – धसी जवु ते (२) नाखवु ते; पाडवु ते (३) चालु क्षण; चालु समय (४) अचानक आववु ते
आपाततः अ० नजर पडता ज; तत्काळ
आपात्य वि० धसी आवतु; हुमलो करतु
आपाद पु० प्राप्ति (२) फलप्राप्ति
आपादन न० थाय एम करवु ते; कोई स्थितिमा लाववु ते
आपान न० (दारू) पीवानी महेफिल (२) दारूनु पीठु (३) हवाडो
आपिंजर वि० रताश पडतु
आपीड् १० प० दाबवु, भार देवो (२) पीलवु, कचरवु
आपीड वि० दु ख आपतु, ईजा करतु (२) कचरतु, पीलतु (३) पु० माथे बधाती कलगी, तोरो (४) झरणु
आपीत वि० पीळाश पडतु (२) थोडु पीधेलु [आउ, आचळ
आपीन वि० जाडु (२) पु० कूवो (३) न०
आपूर पु० प्रवाह; पूर (२) भरी काढवु ते
आपूरण वि० भरी काढतु, पूर्ण करतु (२) न० भरी काढवु ते
आपूर्यमाण वि० भरी कढातु; पूर्ण करातु
आपूष न० कलाई [नमस्कारायेलु
आपृष्ट वि० पुछायेलु (२) सत्कारायेलु;
आपॄ ९ उ० भरवु, पूर्ण करवु
आपेक्षिक वि० अपेक्षा ऊभु करतुं
आप्त ('आप्'नु भू० कृ०) वि० प्राप्त (२) विश्वासपात्र (३) यथार्थ ज्ञानवाळु (४) युक्ति – दलीलवाळु (५) कुशळ (६) सपूर्ण, पुष्कळ (७) परिचित; सबधी (८) पहोंचेलु, व्याप्त (९) पु० स्नेही, मित्र, सबधी (१०) विश्वासपात्र माणस
आप्तकाम वि० जेनी इच्छा पूर्ण थई छे तेवु (२) जेणे सर्व सासारिक वासनाओनो त्याग कर्यो छे एवु

आप्तकारिन् पु० विश्वासु नोकर के कर्मचारी
आप्तवचन न० विश्वासपात्र के प्रमाण-भूत माणसनु वचन (२) वेद के शास्त्रनु प्रमाणभूत वचन
आप्तवाच् वि० जेनु वचन प्रमाणभूत गणाय तेवु(२)स्त्री० जुओ 'आप्तवचन'
आप्ति स्त्री० प्राप्ति; लाभ (२) संयोग, संबंध (३) समाप्ति, परिपूर्णता
आप्याय पु० जाडा के पूर्ण थवु ते
आप्यायन न० पूर्ण के जाडु करवु ते, (२) प्रसन्न – तृप्त करवु ते, प्रसन्नता, तृप्ति (३) वृद्धि, विकास, पुष्टि
आप्यै १ आ० जाडा थवु, पूर्ण थवु –प्रेरक० जाडु करवु, पूर्ण करवु (२) संतुष्ट करवु, खुश करवु
आप्रच्छ् ६ आ० [आपृच्छते] विदाय मागवी; विदाय लेवी (२) पूछवु (३) प्रशंसा करवी [(वस्त्र, माळा इ०)
आप्रपदीन वि० पगना छेडा सुधी पहोंचतु
आप्लव पु०, **आप्लवन** न० डूबकु मारवु ते, नाहवु ते (२) बधी बाजुए पाणी छांटवु ते
आप्लाव पु० स्नान, डूबकी (२) महा-पूर (३) जळ छांटवु – उछाळवु ते
आप्लु १ आ० कूदवु, ऊछळवु (२) नाहवु, डूबकु मारवु
–प्रेरक० नवरावबु (२) धोवु; छांटवु; पलाळवु (३) छलकाववु, ऊभराववु (४) –ना उपर रेलाववु (पूर)
आप्लुत वि० नाहेलु (२) छांटेलु, भीनु करेलु (३) –थी रेलायेलु; ऊभरायेलु (४) ग्रस्त, छवायेलु
आप्लुष्ट वि० थोडु दाझेलु के बळेलु
आफलक पु० आड, वाड
आबद्ध वि० बांधेलु – बंधायेलु (२) रचायेलु – रचेलु (अंजलि, कूंडाळु इ०) (३) स्थिर करेलु
आबंध् ९ प० [आबध्नाति] बांधवु (२) रचवु (३) वळगवु
आबंध पु०, **आबंधन** न० दृढ बंधन (२) जोतरु, जूसरानु बंधन
आबाध पु० पीडा, ईजा (२) उपद्रव, हरकत, विघ्न [तापरूप क्लेश
आबाधा स्त्री० पीडा (२) त्रण प्रकारना
आब्दिक वि० वर्षनु, वर्षने लगतु
आभरण न० अलंकार (२) पोषण
आभा २ प० प्रकाशवु (२) देखावु
आभा स्त्री० प्रकाश, कांति, प्रभा (२) शोभा, सौंदर्य (३) सादृश्य (४) छाया, प्रतिबिंब
आभाणक पु० लोकोक्ति, कहेवत
आभाष् १ आ० वात करवी, संभाषण करवु, कहेवु (२) मोटेथी बूम पाडवी
आभाष पु०, न० संभाषण, वातचीत (२) प्रस्तावना; उपोद्घात (३) कहेवत
आभाषण न० संबोधन (२) वातचीत
आभाष्य वि० संबोधवा – कहेवा लायक
आभास् स्त्री० प्रकाश, तेज
आभास् १ आ० प्रकाशित करवु, प्रकाशवु (२) देखावु, –ना समान देखावु (३) आभास थवो
आभास पु० प्रकाश; तेज (२) प्रतिबिंब; छाया (३) सादृश्य, –ना जेवु देखावु ते (४) भ्रम; खोटो देखाव (५) इरादो; ख्याल [वगेरेथी करेलु
आभिचार, आभिचारिक वि० मंत्र तंत्र
आभिजन वि० वंशने कारणे मळेलु; वंश संबंधी (२) न० कुलीनता
आभिजात्य न० कुलीनता, खानदानी (२) पांडित्य (३) सौन्दर्य
आभिमुख्य न० –नी तरफ, –नी संमुख होवु ते (२) तत्परता, प्रवणता
आभिरामिक वि० प्रिय; सुन्दर; मनोरम
आभिषेचनिक वि० अभिषेक संबंधी
आभीर पु० अभीर, गोवाळ

आभील वि० भयकर(२)न० दुःख; पीडा
आभुग्न वि० थोडु वाकु वळेलु
आभृत वि० उत्पन्न करेलु; सरजेलु (२) पूर्ण, स्थिर
आभोग पु० वाक, वळाक (२) विस्तार; आसपासनो भाग (३) नागनी फेलावेली फणा (४) भोग, तृप्ति
आभ्यंतर वि० अदरनु, माहेलु
आभ्यासिक वि० अभ्यास के महावरा-माथी परिणमतु (२) निकटनु
आभ्युदयिक वि० उन्नति, आबादी के कल्याण करनारु (२) कशाना उदय के शरूआतने लगतु
आम् अ० 'हा', 'हा', 'हे' (स्वीकार, समति, स्मृति, निश्चय दर्शावे छे)
आम वि० काचु, अपरिपक्व (२) नहि रधायेलु (३) नहि पचेलु (४) पु० रोग (५) अजीर्ण (६) न० काचु के कूणु होवु ते (७) कबजियात, पराणे के खराब झाडो थवो ते
आमय पु० व्याधि, रोग (२) हानि; नुकसान, नाश (३) अजीर्ण
आमरणात, आमरणातिक वि० मरण पर्यतनु
आमर्द पु० कचरवु ते (२) चोळी नाखवु -दबाववु ते
आमर्श पु०, **आमर्शन** न० गाढ स्पर्श (२) लूछवु ते (३) सलाह; विचारणा (४) मनोवृत्ति
आमर्ष पु०, **आमर्षण** न० क्रोध, गुस्सो (२) अधीराई
आमलक पु० आमळु
आमजु वि० सुन्दर, रमणीय
आमंत्र् १० आ० बोलाववु, आमत्रण आपवु – नोतरवु (२) सबोधवु, कहेवु, वातचीत करवी (३) विदाय लेवी
आमत्रण न०, **आमंत्रणा** स्त्री० सबोधन, बोलाववु ते (२) वातचीत, कहेवु ते (३) निमत्रवु ते
आमत्रित वि० आमत्रेलु
आमंद्र वि० थोडी घेरी गर्जनावाळु
आमिष न० मास (२) शिकार, भोग्य पदार्थ (३) लाच (४) लोभ (५) लोभाववा माटेनी वस्तु (६) मोह उपजावनार पदार्थ
आमील् १० प० मीचवु (आख)
आमुक्त वि० छूटु करेलु (२) पहेरेलु (३) छोडेलु, फेकेलु, काढी नाखेलु
आमुख न० आरभ, शरूआत (२) ग्रथनी प्रस्तावना
आमुच् ६ उ० [आमुचति–ते] जवा देवु; छोडी देवु (२) पहेरवु; धारण करवु (३) छोडवु, फेकवु (४) काढी नाखवु, फेकी देवु (वस्त्र)
आमुष्मिक वि० परलोक नवधी
आमुष्यायण पु० जुओ 'अमुष्यपुत्र'
आमृद् ९ प० चोळी नाखवु (२) निचोवी नाखवु
आमृश् ६ प० स्पर्शवु, मर्दन करवु (२) पकडवु, खावु (३) हुमलो करवो (४) घसवु, लूछी नाखवु (५) विचार करवो
आमृष्ट वि० स्पर्शेलु (२) पकडेलु; हुमलो करेलु (३) मर्दन करेलु (४) लूछेलु
आमोक्षण, आमोचन न० छूटु करवु ते (२) छोडवु ते, फेकवु ते (३) पहेरवु–धारण करवु ते
आमोटन न० भूको के चूर्ण करवु ते
आमोद पु० आनद (२) सुगध
आमोदिन् वि० हर्षित (२) सुगधित
आम्ना १ प० [आमनति] शास्त्र-वाक्यरूपे कहेवु, प्रवर्तित करवु (२) याद करवु, अभ्यासवु
आम्नात वि० सारी पेठे अभ्यासेलु (२) कहेलु, उपदेशेलु, शास्त्रवाक्य रूपे प्रवर्तावेलु (३) मानेलु, गणेलु
आम्नाय पु० परपराथी चालता आवेल वेद वगेरे शास्त्र (२) परपराथी चालतो आवेलो आचार (३) शास्त्रोपदेश

आम्र पु० आंबानुं वृक्ष (२) न० केरी
आम्रवण न० आंबानुं वन
आम्ल वि० खाटुं (२) न० खटाश
आय पु० आववुं ते (२) लाभ, प्राप्ति (३) आवक, नफो (४) उपाय, साधन
आयत् १ आ० प्रयत्न करवो (२) आधार राखवो
आयत वि० दीर्घ, लांबु (२) मोटुं, विशाळ (३) खेंचेलुं, खेंचायेलुं (४) नियंत्रित (५) दूरनुं, भविष्यनुं
आयतन न० स्थान, ठेकाणुं (२) निवासस्थान (३) यज्ञस्थान (४) देव वगेरेनुं स्थान
आयतम् अ० लांबु – दीर्घ होय तेम
आयति स्त्री० लंबाई (२) विस्तार (३) भविष्यकाळ (४) फळ, परिणाम (५) प्रभाव; तेज (६) संयम; निग्रह (७) वंश; संतति [करनारुं, थाकेलुं
आयत्त वि० आधीन, तांबे (२) प्रयत्न
आयदर्शिन् वि० महेसूल उघरावनारु
आयम् १ उ० लंबाववुं, लांबु करवुं (२) निग्रह करवो, अंदर खेंचवुं (श्वास) (३) पकडवुं, लेवुं (४) –नी तरफ दोरवुं – लाववुं
आयस् ४ प० उद्यम करवो, प्रयत्न करवो (२) थाकी जवुं
–प्रेरक० पीडवुं, त्रास आपवो (२) थकववुं (३) पणछ चडाववी
आयस वि० लोढानुं के धातुनुं बनेलुं (२) लोढाना रंगनुं (३) न० लोखंड (४) लोखंडनुं बनेलुं कंई पण, शस्त्र, ओजार
आया २ प० आववुं (२) पामवुं, पहोंचवुं (कोई दशाने) (३) परिणमवुं
आयात वि० आवेलुं (२) पामेलुं; पहोंचेलुं (दशाने) (३) न० उद्रेक
आयाम पु० लंबाई, विस्तार (२) लांबु करवुं ते, विस्तारवुं ते (३) नियमन
आयास पु० अति यत्न; प्रयास (२) थाक
आयुक्त वि० नियुक्त (२) जोडायेलुं
आयुज् ७ आ० जोडवुं, जोतरवुं; बांधवुं (२) नीमवुं
आयुध पु०, न० शस्त्र, हथियार
आयुर्वेद पु० वैदक शास्त्र
आयुष न० आयुष्य
आयुष्कर वि० आयुष्य वधारनारु
आयुष्मत् वि० जीवतुं (२) लांबा आयुष्यवाळुं [जीवनशक्ति
आयुष्य वि० आयुष्यवर्धक (२) न० प्राण;
आयुस् न० आयुष्य, जीवन (२) प्राण
आयोग पु० निमणूक, सोंपणी (२) संबंध
आयोजन न० जोडवुं ते (२) उद्योग, प्रयत्न (३) लेवुं ते, एकठुं करवुं ते
आयोधन न० युद्ध (२) रणभूमि
आरक्ष पु०, **आरक्षा** स्त्री० रक्षण (२) हाथीना कुंभस्थळनो नीचलो भाग (३) लश्कर, सैन्य [न० जंगल, वन
आरण्य वि० अरण्यनुं; जंगली (२) पु०,
आरण्यक वि० जंगली, जंगलमां उत्पन्न थयेलुं (२) पु० अरण्यवासी (३) न० अरण्यमां रचायेलो के अरण्यवासीना धर्मो के तेमना चिंतनो निरूपतो ग्रंथ
आरत वि० थोभेलुं, अटकेलुं
आरति स्त्री० निवृत्ति, उपरति (२) आरती उतारवी ते
आरब्ध वि० शरू करेलुं
आरभ् १ आ० शरू करवुं, आरंभ करवो (२) उद्यम करवो
आरम् १ प० आनंद माणवो, रमवुं (२) विरमवुं; अटकवुं (३) थाक खावो
आरंभ पु० प्रारंभ, शरूआत (२) त्वरा (३) उद्यम (४) कार्य, क्रिया, व्यापार (५) वध, हिंसा
आरा स्त्री० चमारनी आरी
आरात् अ० नजीक, पासे (२) दूर
आराति पु० शत्रु, दुश्मन
आरात्रिक न० आरती

आराध् ५. १० प० प्रसन्न करवु (२) पूजा करवी, आदर करवो

आराधन न० प्रसन्न करवु ते, साधवु ते (२) प्रसन्नता, संतोष (३) पूजा; उपासना, सन्मान

आराधनीय वि० आराधवा योग्य (२) साधवा योग्य

आराधयितृ वि० पूजक, उपासक, सेवक

आराधयिष्णु वि० प्रसन्न करवा प्रयत्न करतु, सेववानी इच्छा राखतु

आराध्य वि० जुओ 'आराधनीय'

आराम पु० आराम, विश्रांति (२) आनंद (३) बाग, बगीचो

आराव पु० बूम, गर्जना (२) गुंजारव

आराविन् वि० अवाज करतु

आरास पु० चीस, बुमाटो

आरु २ प० बूम पाडवी

आरुज वि० पीडा करतु, त्रास आपतु

आरुत न० अवाज, ध्वनि

आरुध् ७ उ० घेरो घालवो (२) दूर राखवु, अटकाववु

आरुरुक्षु वि० उपर चडवानी के -ने प्राप्त करवानी इच्छावाळु

आरुह् १ प० ऊंचे चडवु (२) सवारी करवी (३) लेवु, माथे लेवु (प्रतिज्ञा इ०) (४) पामवु, पहोंचवु –प्रेरक० [आरोहयति, आरोपयति] ऊंचे चडाववु, उपर चडाववु (२) सवारी कराववी, बेसाडवु (३) पहोंचाडवु (४) स्थिर करवु, मूकवु (५) आरोपवु (६) पणछ चडाववी

आरूढ वि० उपर चडेलु, सवार थयेलु

आरूढि स्त्री० चडती, उन्नति

आरेचित वि० खाली करेलु (२) भेळवेलु (३) संकोचेलु

आरोग्य न० तंदुरस्ती, कुशळता

आरोध पु० घेरो

आरोप पु० मूकवु ते, लादवु ते (२) आरोप मूकवो ते (३) एक वस्तुना गुणनु बीजी वस्तुमा आरोपण करवु ते

आरोपण न० मूकवु ते; स्थापवु ते, चडाववु ते (२) वाववु ते (३) धनुष्यनी पणछ चडाववी ते

आरोह पु० ऊंचे चडवु ते, सवारी करवी ते (२) चडनार, सवारी करनार (३) ऊंची जगा, ऊंचाण; चडाव (४) पर्वत; ढगलो (५) गर्व; अभिमान (६) स्त्रीनो नितंब

आरोहक पु० सवारी करनार, सवार (२) हाकनार

आरोहण न० ऊंचे चडवु ते (२) –उपर सवार थवु ते (३) निसरणी (४) नृत्य माटेनी ऊंची रंगभूमि

आरोहिन् वि० ऊंचे चडनार (२) सवारी करनार

आर्जव न० सरळता, सीधापणु (२) नम्रता (३) प्रामाणिकता

आर्त वि० –थी पीडित (२) रोगी

आर्तनाद पु० दुःखनो अवाज

आर्तव वि० ऋतु संबंधी (२) स्त्रीओना मासिक ऋतुस्राव संबंधी (३) न० स्त्रीओनो मासिक ऋतुस्राव

आर्तस्वर पु० जुओ 'आर्तनाद'

आर्ति स्त्री० दुःख, पीडा (२) व्याधि (३) नाश (४) मानसिक दुःख, चिंता

आर्थ वि० शब्दार्थ संबंधी (२) पदार्थ संबंधी

आर्थिक वि० अर्थयुक्त; शब्दार्थने जाणनु (२) डाह्यु (३) संपत्तिमान (४) वास्तविक, खरु

आर्द्ध न० समृद्धि, विपुलता

आर्द्र वि० भीनु, भेजवाळु (२) कोमळ, मूकु नहि तेवु (३) ताजु (४) पीगळी गयेलु (स्नेह, दया इ० थी)

आर्ध वि० अर्ध (समासना प्रारंभमां, उदा० आर्धमासिक)

आर्य वि० आर्य जातिनु (२) आर्यने छाजे तेवु (३) सन्माननीय, लायक,

शिष्ट (४) उच्च, श्रेष्ठ (५) पु० आर्य जातिनो मनुष्य (६) ब्राह्मण, क्षत्रिय के वैश्य (७) समाननीय पुरुष (८) श्रेष्ठ कुळमा जन्मेलो माणस (९) ससरो (जेम के 'आर्यपुत्र' मा) (१०) न० पुण्य, शील (११) विवेक

आर्यक पु० दादो (२) समाननीय पुरुष

आर्यगृह्य वि० आर्यपक्षनु

आर्यजुष्ट वि० आर्योए सेवेलु – अनुसरेलु, आर्यने छाजतु

आर्यदेश पु० आर्य लोकोनो देश

आर्यपुत्र पु० समान्य पुरुषनो पुत्र (२) पतिनु संबोधन (नाटकमा)

आर्यमिश्र वि० पूज्य, समाननीय पुरुष (२) पु० सद्गृहस्थ, सज्जन पुरुष

आर्यवृत्त न० आर्यपुरुषनो सदाचार

आर्यसत्य न० आर्य – बुद्धे बतावेलु सत्य (दुःखनो उपाय वगेरे बाबत)

आर्या स्त्री० पूज्य के समाननीय स्त्री (२) सासु (३) पार्वती

आर्यावर्त पु० आर्योनु मूळस्थान (उत्तरमा हिमालय, दक्षिणमा विंध्य, तथा पश्चिम अने पूर्वमा महासागरथी घेरायेलो प्रदेश)

आर्ष वि० ऋषि संबंधी, ऋषिनु (२) पवित्र, अलौकिक (३) वेद संबंधी, वेदनु (४) पु० विवाहनो एक प्रकार (वर पासेथी गायनी एक-बे जोड लईने कन्या आपे)

आलक्ष् १० उ० जोवु [देखातु

आलक्ष्य वि० नजरे पडतु (२) थोडु

आलजाल न० छळकपटरूपी जाळ

आलप् १ प० बोलवु, कहेवु, वातचीत करवी

आलब्ध वि० स्पर्शायेलु, संयुक्त (२) मेळवेलु, जीती लीधेलु (३) वध करायेलु, हिंसित

आलभ् १ आ० स्पर्श करवो (२) मेळववु; प्राप्त करवु (३) वध करवो; कापवु (४) पकडवु; झालवु (५) जीती लेवु; मेळवी लेवु [गाम (४) निवासस्थान

आलय पु०, न० स्थान; धाम (२) घर (३)

आलयम् अ० मृत्यु पर्यंत

आलर्क वि० हडकायेला कूतरानु

आलवाल न० (वृक्षनी आसपासनो) क्यारो

आलस्य न० आळस

आलंब् १ आ० आधार राखवो, टेको लेवो (२) लटकवु (३) पकडवु, लेवु

आलंब वि० लटकतु (२) पु० आश्रय, आधार (३) पात्र

आलंबन न० आधार; टेको (२) कारण; हेतु (३) पात्र [टेको आपेलु

आलंबित वि० लटकतु (२) पकडेलु,

आलंबिन् वि० लटकतु (२) –ना आधारवाळु, –ने आश्रये रहेलु (३) टेको – आधार आपतु [हिंसा

आलभ पु०, आलभन न० स्पर्श (२)

आलान न० हाथीने बांधवानो थांभलो, ते माटेनु दोरडु (२) बंधन

आलाप पु० संभाषण, वातचीत (२) कही बताववु ते

आलापन न० संभाषण, वातचीत (२) स्वस्तिवाचन, आशीर्वचन

आलि पु० भमरो (२) वींछी

आलि स्त्री० सखी, सहचरी (२) हार; आवलि [(३) खणवु, स्पर्शवु

आलिख् ६ प० लखवु (२) चित्र काढवु

आलिप् ६ प० [आलिंपति] लेप करवो, चोळवु, खरडवु

आलिप्त वि० लेप करेलु, खरडेलु (२) लींपेलु, चोळेलु

आलिंग् १ उ०, १० प० भेटवु

आलिंगन न० भेटवु ते [आवलि

आली स्त्री० सखी, सहचरी (२) हार,

आलीं ४ आ० उपर बेसवु, अंदर घूसी जवु (२) मूर्छित थवु

आलीढ वि० चाटेलु, चाखेलु (२) ईजा पामेलु (३) न० लक्ष ताकती वखते जमणो ढींचण आगळ करी, डाबो पग पाछळ करी, भरातो पेतरो
आलीन वि० भेटेलु, वळगेलु, चोंटेलु
आलुड् १ प०, –प्रेरक० डखोळवु; हलाववु
आलुलित वि० थोडु क्षुब्ध थयेलु
आलुंचन न० चीरी नाखवु – फाडी नाखवु ते
आलून वि० चूंटेलु, तोडेलु, छेदेलु
आलेख पु० लखवु ते (२) पत्र, खत
आलेखन न० खोतरवु ते (२) चीतरवु ते (३) लखवु ते
आलेखनी स्त्री० पींछी, कलम
आलेख्य न० चित्र (२) लेख, लखाण
आलेख्यशेष वि० मृत (जेनु चित्र ज बाकी रह्यु छे तेवु)
आलोक् १ आ०, १० प० जोवु, निहाळवु (२) गणवु, मानवु (३) अभिनंदवु
आलोक पु० जोवु ते (२) देखावु ते, नजरे पडवु ते (३) प्रकाश, तेज (४) दृष्टिमर्यादा (५) ग्रंथविभाग (६) प्रशंसावचन
आलोकक पु० द्रष्टा, जोनार
आलोकन न० आलोकवु – जोवु ते
आलोकनीय वि० जोवा योग्य (२) विचारवा योग्य
आलोकित न० नजर, कटाक्ष
आलोच् १ आ०, १० उ० जोवु, विचारवु
आलोचित वि० जोयेलु, विचारेलु
आलोडित वि० डखोळेलु, हलावेलु (२) मिश्रित करेलु, भेळवेलु
आलोल वि० चंचळ (जेमके आंख) (२) शान्त, क्षुब्ध
आवपन न० वाववु ते, वेरवु ते (२) मुंडन, वाळ कपाववा ते
आवरण वि० ढांकनारु (२) न० ढांकवु ते (३) आवरण, ढांकण (४) एकावट (जेम के लज्जानी) (५) वंडो; भींत; कोट (६) वस्त्र (७) चामडानु मोजु (धनुष्य वापरती वखते पहेरवानु)
आवर्जन न० नमाववु ते, वाळवु ते (२) आपवु ते (३) जीती लेवु ते
आवर्जित वि० नमेलु, वळेलु (२) वहेवडावेलु, रेडेलु (३) नमावेलु, वश करेलु
आवर्त पु० चक्राकारे गोळ फरवु ते (२) पाणीनु वमळ, भमरो (३) मनमा वारंवार चिंतववु ते; चिंता –विचारणा (४) घोडाना शरीर परनो गूंचळिया वाळनो गुच्छो (शुभ गणाय छे) (५) संशय
आवर्तक पु० बार प्रकारना मेघोमानो एक (२) भमर उपरनो खाडो (३) चक्राकारे फरवु ते (४) मनमा आवर्तन करवु ते (५) पाणीनु वमळ [फरवु ते
आवर्तन न० पाछु फरवु ते (२) चक्राकारे
आवलि स्त्री० हार, ओळ (२) परंपरा
आवलित वि० थोडु वळेलु
आवली स्त्री० जुओ 'आवलि'
आवल्गित वि० ऊछळतु
आवल्गिन् वि० कूदतु, नाचतु
आवश्यक वि० जरूरनु, अगत्यनु (२) अनिवार्य
आवस् १ प० रहेवु (२) प्रवृत्त थवु, प्रवेश करवो (३) व्यतीत करवु, गाळवु (रात)
आवसति स्त्री० रात्रि, मध्यरात्रि
आवसथ पु० घर; निवासस्थान; विश्रांति-स्थान (२) विद्यार्थीओ के भिक्षुओ माटेनु निवासस्थान (३) गामडु (४) यज्ञनो अग्नि राखवानु स्थान
आवह् १ प० लाववु (२) आणु करवु (नवोढानु) (३) उपजाववु, पेदा करवु (शरम इ०) (४) दोरी जवु, लई जवु (५) पहेरवु, धारण करवु (६) अखत्यार करवु

आवह वि० लावनारु, उत्पन्न करनारु (उदा० दुःखावह)
आवाप पु० खेतरमां बीज वाववां ते (२) वृक्षनी आसपासनो क्यारो (३) शत्रु के परराष्ट्र अंगे विचारणा (४) ककण
आवास् १० प० सुगंधित करवु
आवास पु० निवासस्थान, घर (२) आश्रयस्थान
आवाह पु० एक धार्मिक विधि
आवाहन न० बोलाववु–निमंत्रवु ते (२) देवनु आवाहन [न० ऊननु वस्त्र
आविक वि० ऊननु (२) घेटा संबंधी (३)
आविद् २ उ०, –प्रेरक० जणाववु, निवेदन करवु (२) अगाउथी जाण करवु (३) बक्षिस आपवी
आविद्ध ('आव्यध्'नु भू० कृ०) वि० वींधायेलु, छेद पडायेलु (२) वाकु, वळेलु (३) जोरथी फेंकेलु (४) एकबीजा पासे नाखेलु [नि (२) अवतार
आविर्भाव पु० प्रकट थवु ते, प्रकट करवु
आविर्भू १ प० प्रकट थवु, देखावु
आविल वि० दूषित; मलिन (२) अस्वच्छ, गंदु (३) अशुद्ध (४) काळाश पडतु (५) झाखु, अस्पष्ट
आविश् ६ प० प्रवेश करवो (२) पासे जवु (३) कबजो लेवो (भय, क्रोध इ० लागणीओए) (४) अमुक स्थिति प्राप्त करवी (सुख, दुःख इ०)
आविष्करण न०, आविष्कार पु० प्रकट थवु ते, प्रकट करवु ते
आविष्कृ ८ उ० खुल्लु करवु; प्रकट करवु
आविष्कृत वि० प्रकट करायेलु–थयेलु (२) प्रसिद्ध थयेलु
आविष्ट वि० प्रवेशेलु (२) ग्रस्त (भूत-प्रेतादिथी के भयक्रोधादिथी) (३) तत्पर, मग्न
आविस् अ० प्रकट, खुल्लु, नजर सामे
आवुक पु० पिता, बाप (नाटकनी भाषामां)
आवुत्त पु० बनेवी
आवृ ५, ९, १०, उ० ढाकवु (२) वरवु; पसंद करवु (३) व्यापवु, भरी काढवु (४) रोकवु, निवारवु
आवृज् १ आ० आपवु (२) तरफ वळवु (३) पसंद करवु
–प्रेरक० वाळवु, नमाववु (२) जीती लेवु, मनावी लेवु, खुश करवु (३) भेगु करवु, लाववु (४) आपवु, वरसाववु (५) खेंची लेवु, काढी लेवु (६) ठालववु
आवृत् १ आ० गोळ फरवु (२) पाछु फरवु, पाछु वळवु (३) तरफ जवु
–प्रेरक० फेरववु (२) गबडाववु, उलटाववु (३) रेलाववु (आंसु) (४) पुनरावृत्ति करवी
आवृत्त वि० गोळ फरेलु (२) पाछु फरेलु के फेरवेलु (३) पुनरावृत्ति करेलु (४) गोखेलु (५) नासी गयेलु
आवृत्ति स्त्री० पुनरागमन, पाछा फरवु ते (२) पलायन (३) गोळ फरवु ते, आसपास फरवु ते (४) फरी फरीने जन्म-मरण पामवां ते (५) फरी फरीने अभ्यास (६) एकनी एक क्रिया फरी फरीने करवी ते
आवेग पु० जुस्सो, आवेश (२) क्षोभ, व्यग्रता (३) त्वरा, उतावळ
आवेश पु० प्रवेश (२) जुस्सो, ऊभरो (३) गुस्सो (४) अभिमान; अहंकार (५) अभिनिवेश, आसक्ति (६) वळगाड (भूत वगेरेनो)
आवेष्ट् १० प० ढाकवु, विंछाववु (२) आमळवु
आवेष्टन न० ढांकण (२) वीटवु–बांधवु ते (३) वाड, कोट
आश पु० खावु ते, भोजन
आशय पु० अभिप्राय; इरादो (२) विभव; समृद्धि; मिलकत (३) वासनारूप संस्कार (४) भाग्य; अदृष्ट (५) चित्त (६) शयन-

स्थान (७) सूवु ते – शयन (८) निवास-स्थान, आधारस्थान, आवार (९) पशुने पकडवा माटे करातो खाडो

आशंक् १ आ० शका करवी, वहेम लाववो (२) बीवु; डरवु (३) कल्पवु

आशंका स्त्री० शका; सशय (२) भय (३) अविश्वास, वहेम

आशस् १ आ० (कदीक प०) आशा राखवी, इच्छा राखवी (२) शुभ इच्छवु (३) प्रशसा करवी (४) डरवु (५) कहेवु

आशसा स्त्री० इच्छा (२) आशा (३) कल्पना (४) कथन

आशसु वि० आशावाळु, इच्छावाळु

आशा स्त्री० उमेद, धारणा (२) दिशा

आशाततु पु० आशानो तातणो

आशाबध पु० आशानु बधन, आशानो आधार, आश्वासन [वस्त्रवाळु)

आशावासस् वि० नग्न (दिशाओ रूपी

आशास् २ आ० आशीर्वाद आपवो (२) इच्छवु, आशा राखवी (३) हुकम करवो; आज्ञा करवी (४) प्रशसा करवी

आशास्य वि० आशीर्वादथी प्राप्त करवा योग्य (२) आशीर्वाद आपवा योग्य (३) इच्छवा योग्य (४) न० इच्छा (५) आशीर्वाद [खाउधरु

आशित वि० भोजनथी तृप्त थयेलु (२)

आशिन् वि० खानारु, खातु (समासमा; उदा० 'फलाशी')

आशिस् स्त्री० आशीर्वाद (२) इच्छा (३) सापनी दाढ

आशी २ आ० उपर सूवु (२) सूवामा पसार करवु (३) इच्छवु; प्रार्थवु (४) वसवु, रहेवु

आशीर्विष, आशीविष पु० (जेनी दाढमा विष छे तेवो) झेरी साप

आशु वि० उतावळु, वेगयुक्त (२) अ० जलदीथी, त्वराथी [पु० बाण

आशुग वि० जलदी जनारु; उतावळु (२)

आशुतोष वि० जलदीथी प्रसन्न थाय एवु (२) पु० शकर

आशुशुक्षणि पु० पवन (२) अग्नि

आश्चर्य वि० अद्‌भुत, विलक्षण (२) न० आश्चर्यकारक वस्तु के बनाव (३) अचबो; विस्मय

आश्मन वि० पथ्थरनु बनेलु

आश्यान वि० सुकाईने गठ्ठो थयेलु

आश्रम पु० साधु-तपस्वीनो निवास; झूपडी (२) तपोवन (३) जीवननो विभाग (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने सन्यास —ए चारमानो कोई पण)

आश्रमधर्म पु० तपस्वीनो धर्म (२) दरेक आश्रमनु कर्तव्य

आश्रमपद न० आश्रम अने तेनी आजु-बाजुनो प्रदेश, तपोवन

आश्रय पु० आधार (२) निवासस्थान (३) आश्रयस्थान (४) बाण राखवानु भाथु

आश्रयण वि० आश्रय लेतु – शोधतु (२) —ने लगतु, —ना सबधी

आश्रव वि० आज्ञाकित, नम्र (२) पु० वचन (३) करार (४) दोष; क्लेश

आश्रि १ आ० आधार लेवो, आश्रय लेवो (२) अनुभववु (३) चोटवु, वळगवु (४) पसद करवु

आश्रित वि० आशरे रहेलु – आवेलु (२) —मा रहेतु —वसतु; उपर रहेलु – बेठेलु – आवेलु (३) —ने उपयोगमा लेतु (४) —ने आचरतु (५) सबधी; —ने लगतु (६) पु० आशरे रहेलो सेवक – दास

आश्लिष् ४ प० भेटवु (२) चोटवु

आश्लिष्ट वि० आलिगन करेलु, भेटेलु (२) वळगेलु, चोटेलु

आश्लेष पु० आलिगन, भेटवु ते (२) निकट सबध

आश्वस् २ प० श्वास लेवो (२) आश्वासन पामवु, विश्वास राखवो

आश्वास पु० श्वास लेवो ते (२) सात्वन

आश्वासन, हिंमत, धीरज (३)ग्रथ-विभाग, सर्ग (४) समाप्ति
आश्वासन न० दिलासो, सात्वन(२) छुटकारानो – निवृत्तिनो श्वास लेवो ते
आश्वासिन् वि० सात्वना लेतु – पामतु
आश्विन पु० आसो महिनो (२) द्वि०व० अश्विनी कुमारो
आषाढ पु०असाड महिनो(२)ब्रह्मचारीने आपवामा आवतो खाखरानो दड
आस् अ० जुओ 'आ'
आस् २ आ० वेसवु (२) रहेवु, वसवु (३)शात बेसी रहेवु; विरोध न करवो; निष्क्रिय रहे (४) होवु (५) अमुक स्थितिमा चालु रहेवु(६)बाजुए राखवु; जतु करवु [धनुष्य
आस पु० वेठक, आसन (२)पु०, न०
आसक्त वि० चोटेलु, अनुरक्त (२) तल्लीन, तत्पर(३)अनवरत, अखड
आसक्ति स्त्री० अतिशय स्नेह – प्रीति (२)तत्परता, चोटी – वळगी रहेवु ते
आसत्ति स्त्री० गाढ सबध, सयोग(२) प्राप्ति, लाभ (३) वे शब्दो वच्चेनो सवध – अर्थसवध
आसद् १ प० [आसीदति] नजीक वेसवु (२) नजीक पहोंचवु – जवु – मळवु (३)पामवु, जडवु(४)हुमलो करवो; सामनो थवो (५) शरू करवु, माथे लेवु (६) मूकवु
आसन् न० मो ('आस्य' ना रूपोमा द्वितीया द्विवचन पछी विकल्पे मुकातो शब्द)
आसन न० वेसवु ते(२)वेसवानी वस्तु (३) वेसवा वगेरेनी रीतोमानी एक (४) थोभवु – पडाव नाखवो ते
आसन्न वि० नजीकनु; पासेनु(२)आवी पहोंचेलु, प्राप्त करेलु, पामेलु
आसन्नमृत्यु वि० जेनु मृत्यु नजीक आवेलु छे तेवु
आसव पु० सत्त्व, अर्क(२)गाळेलो दारू
आसग पु० आसक्ति (२) तल्लीनता; तत्परता (३) सबध, सयोग (४) पहेरवु – बाधवु ते
आसंज् १ प० [आसजति] बाधवु;जोडवु; पहेरवु(२)वळगी रहेवु;आधारे रहेवु; चोटवु
आसदिका स्त्री० नानी खुरशी
आसादन न० पासे मूकवु ते, स्थापन (२)प्राप्ति(३)आक्रमण, हुमलो
आसादित वि० प्राप्त, मेळवेलु (२) गयेलु, पहोंचेलु(३)सामनो करायेलु, हुमलो करायेलु
आसार पु० धोधमार वरसाद (२) घेरी वळवु ते (३) मित्र राजानु सैन्य (४) खाद्यसामग्री
आसिधार न० 'असिधारा' व्रत
आसीन वि० बेठेलु
आसुर वि० असुरोने लगतु (२) दैवी, आध्यात्मिक (३) पु० राक्षस (४) विवाहना आठ प्रकारोमानो एक(द्रव्य वडे कन्या खरीदवी ते)
आसेक पु० पाणी छाटवु – सीचवु ते
आसेव् १ आ० तत्परताथी आचरवु – अमल करवो (२) माणवु, भोगववु (३) सेवा करवी
आस्कद् १ प० हुमलो करवो; आक्रमण करवु (२) उपर कूदवु
आस्कद पु० हुमलो, अत्याचार (२) उपर थईने चालवु ते, उपर चडवु ते (३)कूदवु, ऊछळवु ते [पाथरणु
आस्तर पु० ढाकण; चादर(२)शेतरजी;
आस्तरण न० पाथरवु ते (२) पाथरणु (३) ओशिकु, रजाई, पथारी, शेतरजी
आस्तिक वि० ईश्वर अने परलोकना अस्तित्वमा माननारु(२)श्रद्धाळु
आस्तिक्य न० आस्तिकपणु
आस्तीर्ण वि० पाथरेलु(२)पथरायेलु
आस्तृ(–स्तॄ) ५, ९ उ० पाथरवु
आस्था १ उ० [आतिष्ठति – ते] ऊभा

रहेवु (२) उपर चडवु (३) आचरवु; करवु (४) पक्ष लेवो (५) स्वीकारवु; माथे लेवु
आस्था स्त्री० काळजी, दरकार (२) आदर, मान (३) श्रद्धा, आशा
आस्थान न० सभा (२) श्रद्धा (३) आदर (४) विश्रातिस्थान
आस्थित वि० रहेलु (२) प्रवृत्त; आचरतु (३) पामेलु, पहोचेलु (४) रोकेलु; व्याप्त
आस्पद न० स्थान, जगा (२) आश्रय-स्थान, निवासस्थान (३) पदवी, अधिकार (४) पात्र, विषय
आस्पदन न० कपवु, फरकवु
आस्फल् १० प० अफाळवु; पछाडवु (२) फफडाववु (३) टकार करवो (धनुष्यनो) (४) झणझणाववु (वीणा इ०) (५) फाडी नाखवु, चीरी नाखवु
आस्फालन न० अफाळवु ते, पछाडवु ते (२) फफडाववु ते
आस्फुट् १ प० ध्रुजाववु, फफडाववु (२) फाडवु (३) दळी नाखवु
आस्फोट पु०, **आस्फोटन** न० थाबडवु ते, पोला हाथे (कोणीनी उपरना भाग उपर) ठोकवु ते (२) ऊपणवु ते (३) प्रगट – जाहेर करवु ते
आस्य न० मुख, मो
आस्यंदन न० झरवु ते, वहेवु ते
आस्र न० लोही
आस्रप न० लोही पीनार राक्षस
आस्रव पु० क्लेश, दु ख; पीडा (२) स्राव (३) पाप, दोष
आस्वद् १ आ० चाखवु, खावु (२) सुख भोगववु
–प्रेरक० चाखवु, भोगववु (२) छेतरावु, लूटावु (ला०)
आस्वाद पु० चाखवु ते, खावु ते (२) स्वाद (३) भोगववु ते
आस्वाद्य वि० मीठु, स्वादु
आह अ० ठपको, हुकम, नाखवु – मोकलवु – ए अर्थ बतावे (२) एक अपूर्ण क्रियापदनु त्रीजो पुरुष एकवचननु रूप ('बोल्यो', 'कह्यु' ए अर्थ)
आहत वि० प्रहार करायेलु, घवायेलु (२) पग तळे कचरायेलु (३) मारी नाखवामा आवेलु (४) नष्ट करायेलु; दूर करायेलु (५) गुणायेलु
आहति स्त्री० वध (२) प्रहार (३) गुणाकार (४) आगमन
आहन् २ प० मारवु, प्रहार करवो (२) वगाडवु (घट अथवा ढोल) (३) मारी नाखवु
आहर वि० लावनारु (२) लेनारु (३) पु० लाववु ते, एकठु करी लाववु ते (४) श्वास लेवो ते
आहरण न० लाववु ते (२) लेवु ते (३) काढवु ते (४) अनुष्ठान (यज्ञनु) (५) कन्याने लग्न समये अपाती भेट
आहर्तृ वि० लेनारु (२) लावनारु (३) अनुष्ठान करनारु
आहव पु० युद्ध, लडाई (२) युद्ध माटे आह्वान – पडकार
आहवनीय वि० होमवा योग्य (२) पु० [होमनो अग्नि
आहार वि० लावनारु, मेळवनारु (२) लेवा जनारु (३) पु० लाववु ते (४) वापरवु ते (५) खोराक लेवो ते (६) खोराक
आहारवृत्ति स्त्री० आजीविका; निर्वाह
आहार्य वि० लाववा योग्य (२) लई जवा योग्य (३) खावा योग्य (४) कृत्रिम (५) न० नाटकनी वेशसजावट वगेरे बाबत
आहाव पु० पाणीनो हवाडो
आहित वि० मुकायेलु (२) करायेलु
आहिताग्नि पु० अग्निहोत्री ब्राह्मण
आहु ३ प० होम करवो, होमवु
आहुत वि० होमेलु
आहुति स्त्री० होमवु ते (२) होमवानी वस्तु – बलिदान
आहूत वि० बोलावेलु

आह्‌ १ उ० लाववु (२) नजीक लाववु; आपवु (३) पाछु लाववु (४) प्राप्त करवु;मेळववुं (५)धारण करवु (६)—नु कारण बनवु; उत्पन्न करवु (७) परणीने लाववु (कन्या) (८)यज्ञ करवो (९)खेची जवु; आकर्षण करवु (१०)जुदु करवु; दूर करवु (११) आहार करवो

आहृत वि० आणेलु; लावेलु (२)लीधेलु (३)खाधेलु (४) बोलायेलु;उच्चारायेलु

आहेय वि० साप सबधी [उद्गार

आहो अ० सशय, प्रश्न के गर्वदर्शक

आहोस्वित् अ० 'शका', 'सभव' दर्शावे

आह्निक वि० दिवसनु, दररोजनु (२) न० दररोज करवानु काम के विधि (३) ग्रथनो विभाग

आह्लाद्‌ १० उ० आनद पमाडवो

आह्लाद पु० आनद, हर्ष

आह्लादन न० खुश करवु ते, आनद पमाडवु ते

आह्व वि० नामनु, नामवाळु

आह्वय पु० नाम (समासने अते)

आह्वयन न० नाम

आह्वान न० बोलाववु ते (२) देवनु आवाहन करवु ते (३) कचेरीमा हाजर थवानो हुकम, 'समन्स' (४) पडकार (५) नाम

आह्वायक पु० दूत

आह्वे १ प० बोलाववु (२) आवाहन करवु (३) (युद्ध माटे) आह्वान करवु

आंगिक वि० शरीरनु (२) अवयवना हावभावथी दर्शावायेलु

आंजन वि० अजनने लगतु (२) पु० हनुमान (३) न० अजन, नेत्राजन

आंजनी स्त्री० मेश, नेत्राजन (२) मेशनी दाबडी

आंजनेय पु० हनुमान (अजनाना पुत्र)

आंतर वि० अदरनु, छानु, गुप्त (२) छेक अदरनु, आतरिक

आंतरिक्ष, आंतरीक्ष वि० अतरिक्षने लगतु (२) स्वर्गीय, दैवी

आंत्र न० आतरडु

आंदोलन न० हीचका खावा ते (२) झुलाववु ते, ढोळवु ते (चामर) (३) कप, ध्रुजारी

आः अ० स्मरण, क्रोध, शोक, दुख, विरोध दर्शावे छे

इ

इ अ० क्रोध, निंदा, दया, दुख, दाझ अने विस्मयसूचक चित्कार (२) पु० कामदेव; मदन

इ २ प० जवु, पासे जवु, पहोचवु (२) प्राप्त करवु, पामवु (३) पाछु जवु (४) वीतवु—पसार थवु (समय) (५) उत्पन्न थवु (६) विनती करवी; मागवु (७) होवु, देखावु

इ १ उ० जुओ 'अय्'

इ ४ आ० आववु, देखावु (२)दोडवु; भटकवु (३) जलदी जवु, वारवार जवु (४) याचवु

इक्षु पु० शेलडी

इक्ष्वाकु पु० अयोध्यामा थई गयेला सूर्यवशी राजानु नाम

इच्छा स्त्री० मरजी (२) कामना

इच्छासंपद् स्त्री० इच्छा सफळ थवी ते

इज्य वि० पूजवा योग्य (२)पु० गुरु, अध्यापक

इज्या स्त्री० यज्ञ (२) दान, भेट (३) पूजा (४) प्रतिमा, मूर्ति

इडा स्त्री० जुओ 'इला'

इत ('इ'नु भू० कृ०) वि० गयेलु (२) पाछु फरेलु (३) याद करेलु (४) पामेलु

इतर स० ना०, त्रि० बीजु, बेमानु बीजुं (२) बाकीना बीजा (ब०व०मा) (३) –थी जुदु (४) –थी ऊलटु (५) क्षुद्र, नीच

इतरतस्, इतरत्र अ० जुदी रीते, बीजी राते (२) अन्यत्र, बीजे ठेकाणे

इतरथा अ० बीजी रीते, ऊलटी रीते (२) नहि तो

इतरेतर स०ना०, वि० परस्पर; अन्योन्य

इतरेद्युस् अ० बीजे दिवसे

इतस् अ० अहीथी, आथी; आ समयथी, आ स्थळथी, आ बाजुथी (२) अही, आ बाजु, मारे पक्षे (३) आ कारणथी (४) आ दुनियामाथी

इतस् – इतस् अ० एक बाजु – बीजी बाजु

इतस्तत· अ० अही तही, आम तेम

इति अ० प्रकार, उद्देश्य, कारण, आधार, दृष्टात, अभिप्राय तथा वाक्य-समाप्ति दर्शावे (२) उतारो करेलो भाग दर्शाववा अते मुकाय (अवतरण-चिह्नना अर्थमा)

इतिकथ वि० विश्वास न मूकवा लायक (२) नष्ट-भ्रष्ट

इतिकथा स्त्री० निरर्थक वात

इतिकर्तव्य वि० अमुक विधि प्रमाणे करवा योग्य (२) न० कर्तव्य, फरज

इतिकर्तव्यता स्त्री० आवश्यक कर्तव्य (२) करवु जोईए ते कार्य

इतिवृत्त न० बनाव, हकीकत, वृत्तान्त (२) कथा, वार्ता

इतिह अ० आ प्रमाणे, परपरा प्रमाणे

इतिहास पु० दतकथा के परपराथी चालती आवेली वात (२) वीरकथा (३) तवारीख, भूतकाळनु वृत्तात

इत्थम् अ० आ प्रमाणे, ते प्रमाणे

इत्थभूत वि० आ प्रकारे बनेल

इत्यर्थ पु० तात्पर्य भावार्थ, टूको सार

इत्यर्थम् अ० आ हेतुथी

इत्यादि वि० वगेरे

इदम् स० ना०, वि० 'आ' (२) अ० आ प्रकारे, आ प्रमाणे

इदतन त्रि० आ समयनु, वर्तमान

इदानीम् अ० हवे, हमणा, आजकाल (२) आ समये पण

इदानीतन वि० हमणानु, आधुनिक

इद्ध ('इध्'नु भू० कृ०) वि० सळगावेलु; प्रदीप्त (२) प्रकाशित, तेजस्वी (३) चोख्खु, स्वच्छ (४) पळायेलु; अनुसरा-येलु (आज्ञा) (५) न० ताप, तडको (६) तेज, दीप्ति (७) आश्चर्य

इद्धदीधिति पु० अग्नि

इद्धा अ० उघाडु, खुल्लु, स्पष्ट

इध्म पु० बळतण, इधण

इन पु० सूर्य (२) राजा, स्वामी

इनकात पु० सूर्यकात मणि

इभ पु० हाथी

इभ्य वि० श्रीमत, धनिक (२) पु० राजा (३) हाथीनो महावत

इयत् वि० आटलु, एटलु

इयत्ता स्त्री० आटलापणु (२) प्रमाण; परिमाण (३) सीमा, हद [प्रकाश

इरम्मद पु० वीजळीना कडाका साथेनो

इरा स्त्री० [illegible] (२) वाणी (३) सरस्वती (४) जळ (५) अन्न

इरावत् वि० खानपानथी सुखी

इरिण न० खारवाळी जमीन

इरेश पु० परब्रह्म, विष्णु [फेंकवु

इल् ६ प०, १० उ० जवु (२) ऊंघवु (३)

इला स्त्री० पृथ्वी (२) गाय (३) वाणी

इलाधर पु० पर्वत

इलावृत्त न० पृथ्वीना नव खडो (वर्ष)-मानो एक खड

इव अ० पेठे, जेम (२) जाणे के (३) कदाच, क्याक, थोडुक (४) (प्रश्नार्थ शब्दो साथे) 'खरेखर – शु'?

इष् ६ प० [इच्छति] इच्छवु (२) पसद करवु (३) प्राप्त करवा यत्न करवो

(४) समत थवु (५) अपेक्षा राखवी (६) याचवु
इष पु० आसो महिनो
इषिका स्त्री० मुज घासनी वचली सळी (२) शर (वरु) नु राडु
इषु पु० बाण
इषुकार पु० बाण बनावनार
इषुधि पु० बाणनो भाथो
इष्ट ('इष्'नु भू० कृ०) वि० इच्छेलु(२) हितावह (३) प्रिय, मनगमतु (४) योग्य (५) पूजेलु (६) यज्ञ वडे पूजेलु (७) कल्पेलु (गणित) (८) पु० प्रियजन, प्रेमी (९) पति (१०) मित्र (११) न० इच्छा (१२) यज्ञ
इष्टका स्त्री० ईंट
इष्टकामदुह् वि० इच्छित फळ आपनारु
इष्टदेव पु०, **इष्टदेवता** स्त्री० प्रिय–पोतानी आस्थानो देव (२) कुळदेव
इष्टभागिन् वि० पोतानु इच्छेलु जेने मळ्यु छे तेवु
इष्टापत्ति स्त्री० इच्छेलु बनवु ते (२) विरुद्ध पक्ष तरफथी अनुकूळ कार्य के दलील
इष्टापूर्त न०, **इष्टापूर्ति** स्त्री० यज्ञ-यागथी तथा वावकूवा कराववाथी थतु पुण्य
इष्टि स्त्री० एक जातनो यज
इष्यत् वि० भविष्यनु, भावि
इष्वसन, इष्वस्त्र न० धनुष्य
इष्वास पु० धनुष्य (२) धनुर्धारी योद्धो
इस् अ० क्रोध, दुःख के शोक दर्शावे
इह अ० अही (२) आ दुनियामा (३) आ समये
इहत्य वि० अहीनु, आ दुनियानु
इहलोक पु० आ दुनिया, आ जीवन
इहामुत्र अ० आ लोकमा अने परलोकमा
इग् १ उ० हालवु, कपवु (२) जवु
इग वि० जगम, अस्थिर
इंगित ('इग्' नु भू० कृ०) वि० हालेलु; कपेलु (२) न० इशारो, सकेत (३) मनोविकारनु बाह्य चिह्न – चेष्टा (४) मननो गुप्त भाव
इंगुदी स्त्री० एक वृक्ष, इगोरियो
इंदिरा स्त्री० लक्ष्मी (२) शोभा; काति
इंदिवर न० भूरु कमळ
इंदिदिर पु० मोटो भमरो
इंदीवर न० भूरु कमळ
इंदु पु० चद्र (२) कपूर
इंदुकांत पु० चद्रकात मणि
इंदुमती स्त्री० पूर्णिमा (२) अज राजानी [पत्नी
इंदुमौलि पु० शकर; शिव
इंदुशेखर पु० जुओ 'इदुमौलि'
इंदूर पु० उदर
इंद्र पु० देवोनो राजा (२) मेघोनो राजा (३) अधिपति, शासक (४) राजा (५) आत्मा, जीव (६) ते ते वर्गमा 'श्रेष्ठ', 'उत्तम' एवो अर्थ दर्शावे (उदा० नरेंद्र, मृगेंद्र)
इंद्रकील पु० मदर पर्वत
इंद्रचाप पु० मेघधनुष्य
इंद्रजाल न० जादु, नजरबधी
इंद्रनील पु० नीलम
इंद्रमह पु० इद्रनी पूजा माटेनो उत्सव (२) वर्षाऋतु
इंद्रमह-कामुक पु० कूतरो
इंद्रलोक पु० स्वर्ग
इंद्रशत्रु पु० प्रह्लाद (२) वृत्र
इंद्रानुज पु० विष्णु, उपेन्द्र
इंद्रायुध न० वज्र (२) इद्रधनुष्य
इंद्रारि पु० असुर, राक्षस
इंद्रासन न० इद्रनु सिंहासन
इंद्रिय न० शरीरनु ज्ञान तथा कर्म माटेनु (बाह्य के आंतर) साधन
इंद्रियगोचर वि० इद्रियोथी जोई शकाय के समजी शकाय एवु (२) पु० इंद्रियनो विषय
इंद्रियग्राम न० इद्रियोनो समूह
इंद्रियसुख न० विषयभोगनु सुख

इंद्रियाराम वि० विषयासक्त
इंद्रियार्थ पु० शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श –ए पाच इंद्रियोना विषयोमानो दरेक
इंध् ७ आ० सळगाववु, प्रदीप्त करवु
इंधन न० सळगाववु ते (२) लाकडा, बळतण

ई

ई पु० कामदेवनु नाम, मदन (२) स्त्री० लक्ष्मी (३) अ० निराशा, दुःख, शोक, क्रोध, अनुकपा तथा संबोधननो अर्थ दर्शावे
ई ४ आ० जवु (२) २ प० जवु (३) पहोचवु (४) व्यापवु
ईक्ष् १ आ० जोवु, अवलोकवु (२) गणवु –मानवु (३) ध्यानमा लेवु; काळजी राखवी (४) विचारवु (५) जरूर होवी (६) सारु के खोटु भाग्य जोवु
ईक्षण न० जोवु ते (२) आख (३) दृष्टि, दर्शन (४) दरकार, काळजी
ईक्षा स्त्री० दृष्टि, नजर (२) अवलोकन, विचारणा
ईक्षिका स्त्री० दृष्टि, नजर (२) आख
ईक्षित ('ईक्ष्'नु भू० कृ०) वि० जोवायेलु, अवलोकायेलु (२) न० दृष्टि (३) आख
ईड् २ आ० स्तुति करवी, प्रशसा करवी
ईड्य वि० प्रशसा –स्तुति करवा योग्य
ईति स्त्री० अतिवृष्टि, अनावृष्टि, उंदर, तीड वगेरेनो उपद्रव
ईदृक्ता स्त्री० जात; गुणवत्ता ('इयत्ता' –'जथो' थी ऊलटु)
ईदृक्ष, ईदृश वि० आवु, आ प्रकारनु
ईप्सा स्त्री० प्राप्त करवानी इच्छा (२) इच्छा
ईप्सित वि० इच्छेलु, प्रिय, इष्ट (२) न० इच्छा
ईर् २ आ०, १ प० जवु, हालवु (२) १० उ० फेंकवु (३) उश्केरवु, प्रेरवु (४) उच्चारवु, कहेवु (५) हलाववु; गतिमान करवु (६) खेचवु, आकर्षवु
ईरिण न० ऊखर –वेरान जमीन
ईरित ('ईर्'नु भू० कृ०) वि० मोकलायेलु (२) उच्चारायेलु
ईर्या स्त्री० भिक्षुचर्या
ईर्षा स्त्री० जुओ 'ईर्ष्या'
ईर्षित न० ईर्ष्या
ईर्ष्य् १ प० ईर्ष्या करवी
ईर्ष्या स्त्री० अदेखाई
ईर्ष्यालु वि० अदेखु
ईश् २ आ० राज्य करवु, अधिकार चलाववो (२) शक्तिमान होवु (३) उपरीपणु करवु (४) परवानगी आपवी (५) मालिक होवु
ईश वि० [illegible] स्वामी होय तेवु (२) शक्तिमान (३) पु० अधिपति (४) पति, स्वामी (५) शकर (६) परमेश्वर
ईशान पु० शकर (२) राजा, स्वामी
ईशितव्य वि० अधीन (जेना उपर ईशपणु चाले)
ईशिता स्त्री० प्रभुता –श्रेष्ठता (२) आठ सिद्धिओमानी एक
ईशितृ पु० परमेश्वर
ईश्वर वि० सत्ताधीश (२) धनवान, श्रीमत (३) पु० राज्य करनार –राजा, अधिपति (४) श्रीमत माणस (५) पति (६) शकर (७) परमेश्वर
ईश्वरभाव पु० प्रभुता, राज्यकर्तापणु
ईषत् अ० थोडु, जरा

ईषत्कर वि० थोडु करनारु (२) सहेलाईथी थई शके तेवु(३)न०थोडु, अल्प
ईषत्पुरुष पु० हलको – नीच माणस
ईषदुष्ण वि० थोडु गरम
ईषदून वि० पूरु नहि तेवु, थोडु ओछु
ईषा स्त्री० गाडी के गाडानी ऊश (२) हळनो धोरियो [(३) वाण
ईषिका स्त्री० पीछी (२) जुओ 'इपिका'
ईषिर पु० अग्नि
ईह् १ आ० इच्छवु (२) मेळववा यत्न करवो
ईहा स्त्री० इच्छा (२) प्रयत्न (३) चेष्टा
ईहामृग पु० वरु (२) बनावटी मृग (३) एक जातनु नाटक
ईहित ('ईह्'नु भू० कृ०) वि० इच्छेलु (२) न० इच्छा (३) यत्न (४) चेष्टा

उ

उ अ० क्रोध, अनुकंपा, आशा, दया, समति, निश्चय, आश्चर्य, अनुमान तथा सबोधनना अर्थमा वपराय (२) 'अथ' 'न' अने 'किम्' साथे मुख्यत्वे आवे छे (जुओ 'अथो', 'नो', 'किमु')
उ – उ अ० एक तरफ – बीजी तरफ
उक्त ('वच्'नु भू०कृ०) वि० बोलायेलु; कहेवायेलु (२) न० कथन
उक्ति स्त्री० भाषण; कथन (२) कहेवत
उक्थ न० स्तोत्र
उक्ष् १, ६, उ० छाटवु (२) बहार फेकवु
उक्षण न० छाटवु ते (२) जल छाटीने पवित्र करवु ते
उक्षन् पु० बळद
उग्र वि० आकरु, जलद (२) क्रोधी (३) बिहामणु (४) जबरु
उचित ('उच्' नु भू० कृ०) वि० योग्य; घटित (२) रोजनु, परिचित, टेवायेलु
उच्च वि० ऊचु, उन्नत (२) मोटु, तीव्र
उच्चकै: अ० ऊचेथी
उच्चट् १ प० चाल्या जवु, अदृश्य थवु –प्रेरक० डरावी काढवु, हाकी काढवु (२) निर्मूळ करवु; नाश करवो
उच्चय पु० समूह, ढगलो (२) उन्नति; आबादी (३) वस्त्रनी गाठ (४) वीणवु – एकठु करवु ते (फूल)
उच्चर् (उद्+चर्) १ प० ऊचे चडवु (२) नीकळवु (अवाज) (३) उच्चारवु (४) १ आ० तजवु (५) बेवफा नीवडवु (६) उल्लघन करवु (७) –नी उपर चडवु
उच्चल् १ प० चालवा माडवु, जवा नीकळवु (२) दूर चाल्या जवु, नीकळी पडवु
उच्चाटन न० दूर करवु ते (२) खेची काढवु ते (३) एक अभिचार-प्रयोग
उच्चार पु० उच्चारवु ते, उच्चारण (२) विष्टा
उच्चावच वि० ऊचु अने नीचु
उच्चि (उद्+चि) ५ उ० एकठु करवु (२) वीणवु
उच्चैर्द्विष् वि० सबळ शत्रुओवाळु
उच्चैर्वाद पु० मोटी प्रशसा
उच्चैस् अ० ऊचे (२) मोटा अवाजथी (३) जोरथी (४) (विशेषणना अर्थमा) ऊचु, खानदान, विख्यात
उच्चैःशिरस् वि० उदात्त मनवाळु, उच्च पदवीवाळु
उच्चैःश्रवस् पु० इद्रनो घोडो
उच्छन्न वि० नाश करायेलु (२) लुप्त
उच्छल् (उद्+शल्) १ उ० ऊछळवु

उच्छादन न० आच्छादन (२) सुगंधी पदार्थोथी शरीरनु मार्जन
उच्छास्त्र वि० शास्त्रविरुद्ध (२) शास्त्रनु उल्लंघन करनारु
उच्छिख वि० ऊंची शिखा – कलगीवाळु (२) ऊंची शग – ज्वाळावाळु
उच्छिखंड वि० पीछा ऊंचा कर्या होय तेवु (मोर)
उच्छिद् ७ उ० उच्छेद करवो –कर्मणि० न मळवु, अभाव होवो
उच्छिन्न वि० उच्छेद करेलु (२) नीच; अधम [प्रतापी, खानदान
उच्छिरस् वि० ऊंचा माथावाळु (२)
उच्छिलींध्र वि० बिलाडीना टोप ऊंचा थया होय – ऊग्या होय तेवु
उच्छिष्ट वि० एठु, बोटेलु (२) खाता वधेलु (३) न० यज्ञ के भोजनमाथी वधेलु
उच्छून वि० सूजी गयेलु, फूली गयेलु
उच्छृंखल वि० उद्धत (२) स्वेच्छाचारी; निरंकुश [ते (२) समूळ नाश
उच्छेद पु०, **उच्छेदन** न० छेदवु – कापवु
उच्छोफ पु० फूली जवु ते
उच्छोषण वि० सूकवी नाखनारु
उच्छ्रय, उच्छ्राय पु० ऊगवु ते (२) ऊंचु करवु ते (३) ऊंचाई, उन्नति (४) वृद्धि, आधिक्य
उच्छ्रित वि० ऊंचु (२) उन्नत (३) समृद्ध (४) गर्विष्ठ
उच्छ्वस् २ प० श्वास लेवो (२) धीरज धरवी, निरातनो श्वास लेवो (३) खीलवु (४) निसासो नाखवो (५) ढीलु थवु, छूटी जवु (गाठनु)
उच्छ्वसित वि० श्वास लेतु (२) जीवेलु, स्फुरतु, ताजु थयेलु (३) आश्वासन पामेलु (४) फीकाई गयेलु (वाळ) (५) भृसाई गयेलु (६) न० श्वास, प्राण (जीवित) (७) निसासो
उच्छ्वास पु० श्वास, प्राण (२) निसासो (३) आश्वासन (४) मरण वखतनो श्वास चालवो ते (५) चोपडीनु प्रकरण के विभाग (६) वधवु ते, ऊंचु आववु ते
उच्छ्वासित वि० आश्वासित करेलु (२) ऊंचु करेलु (३) ढीलुं थयेलु, छूटी गयेलु [वध करवो
उज्जस् ४ प०, –प्रेरक० विनाश करवो;
उज्जागर वि० उश्केरायेलु
उज्जिघ्र वि० सूंघनारु
उज्जिहान ('उद्धा' ३ आ० नु व०कृ०नु रूप) वि० तजतु (२) ऊंचु करतु – चडावतु
उज्जृंभ् १ आ० बगासु खावु (२) विकास पामवु, खीलवु (३) भानमा आववु
उज्जृंभण न०, **उज्जृंभा** स्त्री० बगासु खावु ते (२) वधवु – विकास पामवु ते
उज्ज्वल् १ प० प्रकाशवु –प्रेरक० उजाळवु, प्रकाशित करवुं
उज्ज्वल वि० ऊजळु, देदीप्यमान
उज्झ् ६ प० त्याग करवो (२) फेंकवु; नाखवु
उज्झित ('उज्झ्' नु भू० कृ०) वि० तजेलु (२) नाखेलु, रेडेलु
उटज पु०, न० झूपडी, पर्णशाळा
उट्टंकन न० टाकवु ते, छापवु ते
उडु स्त्री०, न० तारो, नक्षत्र (२) न० पाणी
उडुप पु०, न० होडी, होडकु
उडुप, उडुपति, उडुराज पु० चंद्र
उड्डयन न० ऊंचे ऊडवु ते [भीषण
उड्डामर वि० श्रेष्ठ, समाननीय (२)
उड्डी (उद् + डी) १ आ० ऊंचे ऊडवु
उड्डीन वि० ऊडतु (२) न० ऊंचे ऊडवु ते
उत् अ० प्रश्न, तर्क, संशय, अतिपणु, उपर – ए अर्थ बतावनार उद्गार

उत अ० प्रश्न, सशय, अनिश्चितपणु, विरोध,समुदाय, अति तथा विकल्प —ए अर्थ दर्शावे (२) पादपूरण अर्थे वपराय
उत ('वे' नु भू० कृ०) वि० वणायेलु (२) सिवायेलु
उत वा अ० अथवा; अने; वळी
उताहो, उताहोस्वित् अ० सशय के प्रश्ननो भार दर्शावे
उत्क वि० उत्कठित (२) उद्विग्न (३) शून्यमनस्क (४) पु० इच्छा
उत्कच वि० वाळ ऊभा थया होय तेवु (२) वाळ विनानु (३) पूरेपूरु खीलेलु
उत्कट वि० मोटु (२) तीव्र, प्रवळ (३) नजरे पडे तेवु; स्पष्ट (४) मत्त; उन्मत्त (५) गर्विष्ठ (६) विषम, मुश्केल
उत्कर पु० समूह, ढगलो (२) कचरानो ढगलो, उकरडो (३) लूमखु, झूमखु
उत्कर्ष पु० ऊचे खेंचवु ते (२) अभिवृद्धि, अधिकता (३) वडाई, आत्मश्लाघा [अत्यत
उत्कल वि० दया उपजावे तेवु (२)
उत्कलाप वि० पीछानो कलाप ऊचो कर्यो होय तेवु
उत्कलिका स्त्री० चिंता; अस्वस्थता (२) आतुरता (३) कळी (४) तरग; मोजु
उत्कषण न० खेडवु ते
उत्कंठ वि० आतुर; उत्सुक [आशा
उत्कंठा स्त्री० तीव्र इच्छा; आतुरता (२)
उत्कंधर वि० डोकु ऊचु करेलु
उत्किर वि० ऊचे उराडनारु (समासने अते) [(२) कोतरेलु
उत्कीर्ण वि० ऊचु उराडेलु; ढगलो करेलु
उत्कुल वि० कुलने कलक लगाडनारु
उत्कूर्दन न० ठेकडो, कूदको
उत्कूल वि० किनारा उपर थईने वहेतु
उत्कृत् ६ प० कापवु, कतल करवु
उत्कृष् १ प० ऊचे खेंचवु (२) वृद्धि करवी (३) आकर्षण करवु (४) खेंची काढवु
उत्कृष्ट वि० खेंची काढेलु, उपर खेंचेलु (२) श्रेष्ठ (३) घणु, वधारे (४) खेडेलु (५) खणेलु (६) उखाडी काढेलु (७) आकर्षेलु
उत्कॄ ६ प० [उत्किरति] उराडवु (२) ढगलो करवो (३) खोदवु (४) कोतरवु
उत्कॄत् १० प० [उत्कीर्तयति] जाहेर करवु, विख्यात करवु, प्रशसा करवी
उत्कोच पु० लाच, रुशवत
उत्कोटि वि० अणीवाळु
उत्क्रम् १ उ० [उत्क्रामति–क्रमते], ४ प० [उत्क्राम्यति] ऊचे जवु – चडवु (२) उदय पामवु (३) उल्लघन करवु (४) नीकळी जवु, चाल्या जवु (५) मरण पामवु
उत्क्रांत वि० बहार नीकळी गयेलु (२) ओळगी गयेलु (३) ऊडी गयेलु (रग)
उत्क्रांति स्त्री० ऊचे अथवा बहार जवु ते (२) मरण पामवु ते
उत्क्रुश् १ प० मोटेथी बूम पाडवी (२) पोकारवु (३) जाहेर करवु
उत्क्रोश पु० पोकार, बूम, चीस (२) जाहेरात
उत्क्षिप् ६ प० फेकवु, फेकी देवु (२) ऊचु करवु, टटार करवु
उत्क्षिप्त वि० ऊचु फेकेलु (२) ऊंचु टेकवेलु – करेलु (३) अभिभूत थयेलु (४) उखाडी नाखेलु, फेकी दीधेलु; काढी नाखेलु
उत्क्षेप पु० ऊचे फेकवु ते, ऊचु करवु ते (२) मोकलवु ते (३) फेकी देवु ते
उत्खन् १ प० खोदी काढवु (२) उखेडी नाखवु – निर्मूळ करवु (३) खेंची काढवु (४) बहार काढवु (जेमके, म्यानमाथी तलवार)
उत्खात वि० खोदेलु (२) खेंची काढेलु (३) निर्मूळ करायेलु (४) न० खाडो-खैयो

उत्तट वि० किनारा उपर थईने वहेतु
उत्तप् (उद्+तप्) १ प० तपाववु (२) सतापवु [थयेलु (३) सतापेलु
उत्तप्त वि० तपावेलु, तपेलु (२) गुस्से
उत्तस् ४ प० चितातुर थवु, व्याकुळ थवु, सताप पामवो
उत्तम वि० श्रेष्ठ (२) मुख्य (३) प्रथम
उत्तमर्ण पु० लेणदार
उत्तमांग न० शरीरनु मुख्य अग – माथु
उत्तर वि० उत्तर दिशानु (२) उपरनु – ऊचु (३) श्रेष्ठ, मुख्य (४) (समयना क्रममा) पछीनु (५) भविष्यनु, अतनु (६) अधिक, वधारे (७) चडियातु, –थी पर, –थी वहार (८) डावु (९) युक्त, सहित, –नु मुख्यत्वे वनेलु, अनुसरातु (१०) पु० भावि परिणाम, भविष्यकाळ (११) न० उत्तर, जवाव (१२) बाकीनु – शेष ते (१३) आच्छादन (१४) उत्तर दिशा (१५) श्रेष्ठता, चडियातापणु (१६) परिणाम (१७) आधिक्य
उत्तरकाय पु० शरीरनो उपरनो भाग
उत्तरकाल वि० भविष्यनु (२) पु० भविष्यनो समय [क्रिया
उत्तरक्रिया स्त्री० मरण पछीनी अतिम
उत्तरत्र अ० पछीथी, आगळ (२) बीजी बाजु ('पूर्वत्र' थी ऊलटु) (३) उत्तर तरफ [तिवु, उद्धत
उत्तरदायक वि० सामो जवाव आपे
उत्तरपक्ष पु० उत्तर अथवा डावी बाजु (२) कृष्णपक्ष (३) वादमा पछीनो – जवावरूप भाग ('पूर्वपक्ष'थी ऊलटु)
उत्तरपथ पु० जुओ 'उत्तरापथ'
उत्तरपश्चिमा स्त्री० वायव्य खूणो
उत्तरपूर्वा स्त्री० ईशान खूणो
उत्तरम् अ० उपर (२) पछी
उत्तरमीमांसा स्त्री० वेदान्तदर्शन (पूर्वमीमांसा पछीनु)
उत्तरवयस् न० वृद्धावस्था, घडपण
उत्तरंग वि० ऊछळता मोजावाळु (२) ऊछळतु
उत्तरंगि वि० हाफतु [वारसो
उत्तराधिकार पु० वारस तरीकेनो हक;
उत्तरापथ पु० उत्तरनो मार्ग, दिशा के प्रदेश [राशिषट्कमा जवु ते
उत्तरायण न० सूर्यनु उत्तर तरफना
उत्तरार्ध पु०,न० शरीरनो उपरनो अर्ध भाग (२) ग्रथनो पाछलो अर्ध भाग
उत्तरासग पु० उत्तरीय वस्त्र
उत्तराहि अ० उत्तरे, उत्तर बाजुए
उत्तरीय, उत्तरीयक न० उपर ओढवानु वस्त्र
उत्तरेण अ० उत्तर तरफ, उत्तरे
उत्तरेद्युस् अ० बीजे दिवसे, पछीने दिवसे
उत्तरोत्तर वि० अधिकाधिक, वधु ने वधु, हमेश वधतु जतु (२) न० प्रत्युत्तर
उत्तरोत्तरम् अ० वधारे ने वधारे (२) सतत
उत्तंभ् (उद्+स्तभ्) ५, ९, प० टेको आपवो
–प्रेरक० वधारवु (२) उश्केरवु
उत्तभ, पु०, उत्तंभन न० टेको आपवो ते (२) आधार
उत्तस पु० घरेणु (२) शिरोभूषण, कलगी (३) कर्णभूषण [करेलु
उत्तसित वि० शिरोभूषण तरीके धारण
उत्तान वि० विस्तृत, पहोळु करेलु (२) मो ऊचु रहे तेम – चत्तु – पीठ उपर सूतेलु (३) उघाडेलु, ऊचु करेलु (४) खुल्लु, सकोच विनानु (५) छीछरु
उत्तानहृदय वि० खुल्ला हृदयवाळु
उत्ताप पु० खूव गरमी (२) सताप, त्रास (३) जुस्सो (४) गुस्सो (५) चिंता
उत्तार पु० उपर थईने लई जवु ते (२) पार करवु ते (३) किनारे ऊतरवु ते (४) वचाववु ते (५) –थी अळगा थवु – छूटवु ते

उत्तारण वि० पार करावनारु, बचावनारु (२) न० पार ऊतरवु ते (३) बचाववु ते (४) पार लई जवु ते
उत्ताल वि० मोटु, जबरु (२) भारे, तीव्र (अवाज) (३) भयकर, झनूनी (४) मुश्केल, कठिन (५) प्रगट, स्पष्ट (६) श्रेष्ठ, उत्तम (७) ऊचु
उत्तावल वि० उतावळु
उत्तिज् –प्रेरक० प० प्रेरवु, उश्केरवु
उत्तीर्ण वि० पार ऊतरेलु (२) बची गयेलु (३) अभ्यास पूरो करेलु, अनुभवी, कुशळ (४) उपकारमाथी मुक्त थयेलु
उत्तुंग वि० ऊचु, घणु ऊचु
उत्तॄ (उद्+तॄ) १ प० तरी जवु (२) बहार नीकळी आववु (पाणीमाथी) (३) पार करवु (मुश्केली) (४) नीचे ऊतरवु (५) छोडी देवु
उत्तेजन न० प्रोत्साहन; उश्केरणी; प्रेरणा (२) धार काढवी ते (३) मोकलवु ते
उत्तेजित वि० उश्केरेलु (२) मोकलेलु (३) धार काढेलु |शणगारेलु
उत्तोरण वि० ऊचा तोरण – कमानथी
उत्थ वि० (समासने अते) उत्पन्न थयेलु; ऊठेलु, नीपजेलु (२) ऊभु थतु; नीकळतु
उत्था (उद्+स्था) १ प० [उत्तिष्ठति] ऊभा थवु, ऊठवु (२) ऊगवु (सूर्यनु) (३) छोडी देवु, विरमवु (४) पाछु ऊछळवु (५) मळवु, हासल थवु (६) सबळ थवु (७) फरी सजीवन थवु (८) सक्रिय बनवु; यत्नवान थवु (९) चडियाता थवु –प्रेरक० [उत्थापयति] ऊचु करवु, ऊभु करवु (२) उगाडवु (धूळने) (३) उश्केरवु, प्रेरवु (४) सजीवन करवु (५) टेको आपवो, पुष्ट करवु
उत्थान न० ऊठवु ते, ऊभु थवु ते (२) उदय पामवु ते, ऊगवु ते (३) जागवु ते (४) पेदा थवु ते, उत्पत्ति (५) फरी सजीवन थवु ते (६) उद्यम, पुरुषार्थ (७) युद्ध माटेनी तैयारी
उत्थापन न० उत्थान करवु ते (२) समाप्ति
उत्थित ('उत्था'नु भू० कृ०) वि० ऊठेलु; ऊभु थयेलु (२) ऊचु थयेलु (३) वधावेलु (४) पेदा थयेलु (५) उद्यमी (६) पाछु ऊछळेलु (७) ऊचु, उच्च
उत्पक्ष्मन्, उत्पक्ष्मल वि० पापण ऊची करी होय तेवु
उत्पट् १० प० उखाडी नाखवु, उपाडी नाखवु (२) खेची काढवु (३) दूर करवु
उत्पत् १ प० ऊडवु, ऊछळवु, नीकळवु (२) कूदवु (३) उत्पन्न थवु; पेदा थवु
उत्पतन न० ऊछळवु ते, ऊडवु ते; नीकळवु ते (२) कूदवु ते (३) उत्पत्ति
उत्पताक वि० पताकाओ फरकती होय –ऊची चडावी होय तेवु
उत्पत्ति स्त्री० जन्म, पेदाश, प्रादुर्भाव (२) मूळ कारण (३) लाभ, पेदाश
उत्पथ पु० खोटो मार्ग, अवळो मार्ग
उत्पद् ४ आ० जन्मवु, उत्पन्न थवु (२) बनवु, थवु
उत्पन्न वि० जन्मेलु (२) नीपजेलु, बनेलु (३) प्राप्त थयेलु, मेळवेलु, कमायेलु
उत्पल न० कमळ, भूरु कमळ
उत्पलाक्ष वि० कमळ जेवी आखोवाळु
उत्पाटन न० निर्मूळ करवु ते
उत्पात पु० ऊछळवु ते (२) कूदवु ते (३) अनावृष्टि, रोगचाळो वगेरे उत्पन्न थवानु सूचन करतो अनिष्ट बनाव (४) आफत, विपत्ति
उत्पाद पु० उत्पत्ति
उत्पादक वि० उत्पन्न करनारु (२) प्राप्त करावनारु (३) पु० पिता
उत्पादिन् वि० उत्पन्न थयेलु (२) उत्पन्न करतु (समासमा छेडे)
उत्पाद्य वि० उत्पन्न करवा योग्य, उत्पन्न कराय एवु
उत्पिंजर, उत्पिंजल वि० पाजरामाथी छूटेलु (२) गाभरु, व्याकुळ

उत्पीड् १० प० दबाववु (२) निचोववु (३) पीलवु (४) क्लेश आपवो

उत्पीड वि० –नी साथे दबातु (२) पु० दबाववु–निचोववु ते (३) धसी आवतो प्रवाह–जथो (४) उपर थईने वहेतो वधारानो प्रवाह (५) फीण

उत्प्रबंध वि० सतत, अविरत

उत्प्रास पु०, **उत्प्रासन** न० मश्करी; कटाक्ष, ठठ्ठो

उत्प्रेक्ष् (उद+प्र+ईक्ष्) १ आ० ऊंचे जोवु (२) आशा राखवी (३) जोवु (४) कल्पना करवी (५) याद करवु

उत्प्रेक्षा स्त्री० धारणा, कल्पना (२) बेदरकारी

उत्प्लव पु० कूदको

उत्प्लु १ आ० कूदवु (२) ऊछळवु (३) उपर तरी आववु–तरवु

उत्फाल पु० कूदको, छलंग

उत्फुल्ल वि० खीलेलु, विकसेलु

उत्स पु० फुवारो, झरणु

उत्सक्त वि० आबाद–समृद्ध थतु

उत्सद् १ प० [उत्सीदति] नाश पामवु

उत्सन्न वि० उच्छिन्न, नष्ट

उत्सर्ग पु० तजवु ते, छोडवु ते (२) रेडवु ते (३) बक्षिस, भेट (४) छूटु मूकवु ते (उदा० वृषोत्सर्ग) (५) बलिदान, मानतामां मानेली वस्तु आपवी ते (६) खर्च करवु ते (७) मळमूत्रनु विसर्जन (८) समाप्ति (व्रत के अभ्यासनी) (९) सामान्य नियम ('अपवाद'थी ऊलटु)

उत्सर्पिन् वि० उपर सरकतु (२) ऊंचे ऊडतु, ऊंचु (३) ओळंगी जतु–पारतु (४) आगळ आवतु–देखातु

उत्सव पु० उजाणी, ओच्छव, आनंदनो दिवस (२) खुशी, आनंद (३) उत्कट इच्छा

उत्सह् १ आ० शक्तिमान थवु (२) हिंमत करवी, प्रयत्न करवो (३) उमंग दाखववो

उत्संग पु० खोळो (२) गंभीर; मध्य (३) अंदरनो भाग; मध्य भाग (४) उपरनो भाग (५) नितंब (६) पर्वतनो किनारो

उत्साद पु०, **उत्सादन** न० विनाश (२) मालिश, मसळवु ते (पग वगे.)

उत्सारण न० (रस्ता परथी) बाजुए खसेडवु ते, हटाववु ते

उत्साह पु० उद्योग, उद्यम (२) उमंग, होंश (३) प्रयत्न, खंत

उत्सिक्त वि० सींचायेलु–छंटायेलु (२) अभिमानी, घमंडी (३) छलकातु (४) गांडियु, अस्थिर

उत्सिच् ६ प० [उत्सिंचति] सींचवु, छांटवु (२) अभिमान करवु

उत्सुक वि० आतुर; हौंशीलु (२) अधीर; बेचेन (३) आसक्त (४) चिंतातुर

उत्सूत्र वि० (दोरामांथी) छूटु पडी गयेलु (२) नियमथी बहारनु

उत्सृ –प्रेरक० काढी मूकवु, दूर करवु, बाजुए खसेडवु

उत्सृज् ६ प० बहार काढवु, फेंकवु (२) तजवु, छोडी देवु (३) वाववु, रोपवु (४) आपवु, बक्षवु (५) (कोई स्थळे) मोकलवु (६) काढी मूकवु

उत्सृप् १ प० पाछे सरकवु–जवु

उत्सृष्ट वि० त्यजी दीधेलु (२) आपेलु (३) वापरेलु, उपयोगमां लीधेलु (४) रेडेलु, छोडेलु

उत्सेक पु० सींचवु–छांटवु ते, अभिषेक (२) छलकावु ते (३) अभिमान; घमंड

उत्सेध वि० ऊंचु (२) पु० ऊंचाई (३) जाडापणु, फूलेला होवापणु (४) शरीर (५) महानता, भव्यता

उत्स्मि १ आ० हसी काढवु, मजाक करवी

उद् अ० श्रेष्ठता, उच्चता, वियोग, अभाव, लाभ, प्रसिद्धि, आश्चर्य, चिंता,

मुक्ति, शक्ति – वगेरे अर्थमा वपराय (नाम अने क्रियापद पूर्वे)
उद, उदक न० जळ, पाणी
उदककार्य न० देहशुद्धि (२) पितृतर्पण; श्राद्ध [वारसदार
उदकदातृ वि० श्राद्ध करनारु (२)
उदकांत पु० जळाशयनो किनारो
उदकुंभ पु० पाणीनो घडो
उदग्र वि० ऊंची अणीवाळु (२) ऊंचु (३) मोटु; विस्तृत (४) उदार; भव्य; उत्कृष्ट (५) वयोवृद्ध (६) तीव्र; भयंकर; असह्य (७) उश्केरायेलु, झनूनी
उदग्रप्लुतत्व न० ऊंची छलंग के कूदको
उदङ्मुख वि० उत्तर तरफ मोंवाळु
उदच् वि० ऊंचे जनारु (२) उपरवास आवेलु (३) उत्तर तरफनु (४) पछीनु; पाछलु
उदधि पु० समुद्र, महासागर
उदधिकन्या स्त्री० लक्ष्मी
उदधिमेखला स्त्री० पृथ्वी
उदधिसुता स्त्री० लक्ष्मी [जाय)
उदन् न० पाणी (समासमां 'न्' ऊडी
उदन्या स्त्री० तरस
उदन्वत् पु० महासागर
उदपात्र न० जळपात्र
उदपान पु०, न० नानु खाबोचियु (२) कूवा पासेनी कूंडी, कूवो
उदपीति स्त्री० पाणी पीवानु स्थळ
उदप्लव पु० जळप्रलय
उदबिंदु पु० पाणीनु टीपु
उदभार पु० मेघ (२) पूर
उदय पु० चडवु ते, ऊगवु ते, वृद्धि, उन्नति (२) प्रगट थवु ते, उत्पत्ति (३) संपत्ति, लाभ, उत्कर्ष (४) परिणाम, फळप्राप्ति, सिद्धि (५) व्याज (६) आमदनी, महेसूल (७) एक कल्पित पर्वत, जेनी पाछळथी सूर्य उदय पामे छे एम मनाय छे (८) प्रारंभ
उदयन न० ऊगवु ते, उदय
उदर न० पेट (२) अंदरनो भाग – मध्यभाग (३) युद्ध – मारामारी, वध – कतल
उदरंभरि वि० पोतानु पेट भरनारु, स्वार्थी (२) अकरातियु खानारु
उदर्क पु० अंत (२) परिणाम (३) भविष्य – भविष्यकाळ (४) चडियाता होवु ते
उदर्चिस् वि० सळगतु, प्रकाशित, तेजस्वी (२) पु० अग्नि
उदवास पु० पाणीमा रहेवु ते, पाणीमा रही तप करवु ते
उदवाह पु० मेघ
उदश्रु वि० आंसु सारतु, रडतु
उदस् ४ प० ऊंचु करवु – धरवु (२) नीचे फेंकवु (३) दूर करवु; नाबूद करवु
उदहार वि० पाणी वही लावनारु (२) पु० वादळ
उदंच् वि० जुओ 'उदच्'
उदंच् १ उ० ऊंचु करवु, ऊंचु चडाववु (२) उच्चारवु (३) अ० क्रि० ऊंचे चडवु; उपर धमवु [पाणीनु वासण
उदंचन न० पाणी काढवानी डोल,
उदंत पु० समाचार, खबर
उदंभस् वि० पाणीथी भरेलु
उदात्त वि० उच्च, श्रेष्ठ (२) उदार (३) प्रख्यात (४) ऊंचु (स्वर)
उदान पु० श्वास उपर खेंचवो ते (२) शरीरमाना पांच प्राणवायुओमानो एक (३) आनंदनो उद्गार (बौद्ध०)
उदायुध वि० शस्त्र उगाम्या होय तेवु
उदार वि० सखी दिलनु, दानशील (२) खुल्ला मननु; निखालस (३) प्रमाणिक (४) सुंदर; मनोरम (५) उचित; योग्य (६) पुष्कळ (७) मोटु, भव्य
उदारम् अ० मोटेथी, मोटे अवाजे (२) दलीलो वडे
उदास् २ प० उदासीन रहेवु, बेफिकर रहेवु (२) तटस्थ रहेवु (३) निष्क्रिय रहेवु

उदास, उदासीन वि० निरपेक्ष, तटस्थ, बेफिकर (२) विरक्त, विषयों तरफ अप्रीतिवाळु

उदाहरण न० कहेवु ते, बोलवु ते (२) [दृष्टांत

उदाहृ १ प० कहेवु, उच्चारवु (२) दृष्टांत तरीके टाकवु

उदाहृत वि० कहेलु, कहेवायेलु (२) नाम दईने बोलावेलु (३) दृष्टांत तरीके टाकेलु

उदि १ प० उदय पामवु, ऊगवु

उदि २ प० ऊंचु आववु, ऊगवु (२) उत्पन्न थवु (३) बहार जवु, नासी जवु (४) सामा ऊभा रहेवु, नाश थवु (५) उन्नत थवु, वधवु

उदित ('उदि' नु भू० कृ०) वि० ऊगेलु, ऊंचे चडेलु (२) उन्नत, ऊंचु (३) वृद्धि पामेलु (४) उत्पन्न थयेलु (५) विख्यात (६) शरू थयेलु, आरंभायेलु (७) जागेलु, ऊठेलु (८) सज्ज, तैयार

उदित ('वद्' नु भू० कृ०) बोलायेलु, उच्चारायेलु

उदित्वर वि० ऊगतु; ऊगेलु (२) चडियातु

उदीक्ष् १ आ० ऊंचे जोवु, तरफ जोवु (२) अपेक्षा राखवी, राह जोवी

उदीची स्त्री० उत्तर दिशा [तरफनु

उदीचीन वि० उत्तर दिशानु, उत्तर दिशा

उदीच्य वि० उत्तर दिशामा आवेलु (२) पु० सरस्वती नदीनी उत्तर तरफ पश्चिम तरफनो प्रदेश

उदीर् २ आ० ऊंचे चडवु; ऊठवु (अवाज) (२) ऊपडवु (जवा के आववा) (३) उपर चडवु (४) उत्पन्न थवु

—प्रेरक० ऊंचु करवु (२) उच्चारवु, बोलवु (३) नाम पाडवु (४) फेंकवु, नाखवु (५) प्रगट करवु (६) प्रेरवु, उत्तेजवु (७) परिणमाववु

उदीरण न० उच्चारवु ते, बोलवु ते, कहेवु ते (२) फेंकवु ते (अस्त्र)

उदीर्ण ('उदीर्' नु भू० [illegible]) वि० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible]

उद्वृत्त पु० [illegible] (२) [illegible]

उद्गत [illegible]

उद्गति स्त्री० [illegible]

उद्गम १ प० [illegible] (२) [illegible] (प्रा० [illegible]) [illegible]

उद्गम पु० [illegible]

उद्गमनीय वि० [illegible] न० [illegible]

उद्गाढ वि० [illegible] (२) [illegible] [illegible]

उद्गातृ पु० [illegible]

उद्गार पु० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible] (७) [illegible]

उद्गारिन् वि० [illegible]

उद्गीथ पु० [illegible] (२) [illegible] मंत्र बोलवा ते

उद्गीर्ण ('उद्गृ' नु भू० कृ०) वि० बहार काढेलु (२) ओकी काढेलु (३) उपजावेलु, निपजावेलु

उद्गृ ६ प० [उद्गिरति] थूंकवु; ओकी करवी (२) बहार काढवु – नाखवु (३) मोमाथी काढवु, बोलवु, उच्चारवु (४) ओडकार आववो

उद्गॄ १ प० मोटेथी गावु (२) जाहेर करवु, जणाववु (गाईने)
उद्ग्रथ् १, ९ उ० बाधवु; जूथमा बाधवु (२) गूथवु, परोववु (३) छोडवु, उकेलवु (गाठ) [अबोडो]
उद्ग्रथन न० गूथवु ते, वाळवु ते (वेणी,
उद्ग्रह् ९ प० [उद्गृह्णाति] ऊचु लेवु; ऊचु करवु (२) खेची काढवु, पाछु काढवु (३) ग्रहण करवु, स्वीकारवु
उद्ग्राह पु० ऊचु करीने लेवु ते
उद्ग्रीव वि० डोक ऊची करी होय एवु
उद्घट् १ आ० ऊघडवु
—प्रेरक० उघाडवु (२) कोटलु काढी नाखवु, फोडवु (३) खुल्लु करवु, उघाडु पाडवु (४) प्रारभ करवो
उद्घट्टन न० घसावु ते, अफळावु ते (२) फाटी नीकळवु ते
उद्घाटक पु० चावी, कूची
उद्घाटन वि० उघाडनारु (२) प्रगट — खुल्लु करनारु (३) न० खोलवु ते, उघाडवु ते (४) खुल्लु करवु ते, स्पष्ट करवु ते
उद्घात पु० आरभ (२) उपोद्घात, उल्लेख (३) प्रहार (४) (गाडानु) ऊछळवु ते के तेनाथी पछडावु ते (५) ऊचाण, ऊचाई (६) प्रकरण, विभाग
उद्घातिन् वि० खाडाखैयावाळु
उद्घुष् १, १० प० मोटेथी बोलीने जाहेर करवु, घोषित करवु
उद्घुष्ट ('उद्घुष्'नु भू० कृ०) वि० जाहेर करेलु, घोषणा करेलु (२) न० अवाज, घोष
उद्घृष्ट वि० घसेलु
उद्घोष पु० मोटेथी जाहेर करवु ते (२) लोकमा प्रचलित वात (३) अवाज
उद्दंड वि० दड के दडो ऊचो कर्यो होय तेवु (२) भयकर, प्रचड
उद्दाम वि० अकुश के बधन विनानु, अनियत्रित (२) उग्र; जहाल (३) गर्विष्ठ
उद्दामम् अ० जोरथी, जुस्साथी
उद्दांत वि० उत्साही, प्रयत्नशील (२) नम्र, तावे थयेलु
उद्दिश् ६ उ० दर्शाववु, कहेवु (२) —ने उद्देशीने कहेवु (३) समजाववु, शीखववु (४) इरादो राखवो (५) —ने अर्पण करवु (६) भविष्य भाखवु
उद्दिश्य अ० उद्देशीने, सबधमा
उद्दिष्ट वि० दर्शावायेलु (२) उद्देशीने कहेवायेलु (३) इच्छेलु (४) शीखवेलु; उपदेशेलु
उद्दीप् ४ आ० सळगवु, सळगी ऊठवु
—प्रेरक० सळगाववु (२) उत्तेजवु, उश्केरवु
उद्दीपक वि० उश्केरतु, वधु तीव्र करतु (२) प्रकाशित करतु, सळगावतु
उद्दीपन न० सळगाववु – प्रगटाववु – प्रज्वलित करवु ते (२) उत्तेजन, उश्केरणी
उद्दृश् १ प० [उत्पश्यति] ऊचु जोवु (२) भविष्यमा जोवु, अपेक्षा राखवी (३) शका करवी
उद्देश पु० उद्देशवु ते (२) उदाहरण (३) हेतु, धारणा, इरादो (४) उल्लेख, सक्षिप्त कथन (५) स्थळ, प्रदेश (६) शोध, तपास
उद्देश्य वि० समजाववा योग्य (२) लक्ष्य करवा योग्य (३) न० हेतु, प्रयोजन (४) जेने उद्देशीने कई कहेवाय होय ते, कर्तापक्ष (व्या०)
उद्देहिका स्त्री० ऊधई
उद्द्युत् १ आ० बळवु, प्रकाशवु
—प्रेरक० प्रकाशित करवु, शोभाववु
उद्द्योत वि० प्रकाशित, तेजस्वी (२) पु० प्रकाश, तेज (३) ग्रथविभाग
उद्धत ('उद्धन्'नु भू० कृ०) वि० ऊचु करेलु, ऊचु थयेलु (२) अतिशय (३) उच्छृखल (४) पूर्ण (५) भव्य, तेजस्वी

उद्धति स्त्री० ऊचापणु (२) उच्छृखलता (३) ठोकर

उद्धन् (उद्+हन्) २ प० ऊचे चडवु-चडाववु (२) २ आ० आत्महत्या करवी

उद्धरण न० खेंची काढवु ते, काढी नाखवु ते (२) उद्धार करवो ते, वचाववु ते (३) निर्मूळ करवु ते, उखाडी नाखवु ते (४) ऊचु करवु ते

उद्धर्तृ वि० ऊचु करनारु (२) वचावनारु

उद्धर्ष वि० हर्षित (२) पु० अति आनद (३) उमग (४) उद्रेक [करनारु

उद्धर्षण वि० आनदकारक, रूवा ऊभा

उद्धा (उद्+हा) ३ आ० ऊचु ऊडवु, ऊचु चडवु, ऊचु करवु (२) विदाय थवु, दूर थवु

उद्धार पु० खेंची काढवु ते (२) वचाववु ते, छूटको करवो ते (३) ऊचु करवु ते (४) टाकवु ते (फकरो) (५) मुक्ति; मोक्ष (६) वचेलु ते (७) जुदो काढेलो भाग

उद्धुर वि० झूसरीमाथी मुक्त, अनियत्रित (२) स्थिर; दृढ (३) मोटु, भारे

उद्धू ५, ९ उ० हलाववु (२) खखेरी नाखवु (३) उश्केरवु, जाग्रत करवु

उद्धूत वि० हलावेलु, ऊछळेलु (२) ऊचु, मोटु (३) उन्नत (४) खीलेलु

उद्धूलन न० चूर्ण छाटवु ते (२) मसालो

उद्धृ १, १० प० उपर खेंचवु, ऊचु लाववु (२) वचाववु, उद्धार करवो (३) उखेडी नाखवु (४) चूटवु, वीणवु (५) वहन करवु

उद्धृत वि० उपर खेचेलु, ऊचु करेलु, उद्धारेलु (२) उखेडी नाखेलु (३) पसद करेलु (४) अवतरण तरीके लीधेलु

उद्धृषित वि० रूवा खडा थयेलु

उद्बद्ध वि० वाधेलु, जकडेलु

उद्बंध् ९ प० वाधवु, जकडवु (२) लटकाववु

उद्बंध वि० छोडी नाखेलु

उद्बध पु०, **उद्बंधन** न० वाधवु ते; लटकाववु ते (२) फासो खावो ते

उद्बाष्प वि० आसु भरेलु

उद्बाहु वि० हाथ ऊचा करेलु

उद्बुद्ध वि० जगाडेलु; उद्दीप्त (२) खीलेलु (३) स्मृतिमा ताजु करेलु

उद्बोध पु०, **उद्बोधन** न० जगाडवु ते, याद कराववु ते

उद्भट वि० उत्तम, श्रेष्ठ

उद्भव पु० उत्पत्ति, जन्म (२) मूळ; जन्मस्थान

उद्भावन न० कल्पना करवी ते, उत्प्रेक्षा (२) उत्पादन (३) चितन

उद्भास् १ आ० प्रकाशवु (२) नजरे पडवु —प्रेरक० प्रकाशित करवु (२) नजरे पडे तेम करवु [तेजस्वी

उद्भासिन्, उद्भासुर वि० प्रकाशित,

उद्भिज्ज पु० छोड, वनस्पति (बीज के जमीन फोडीने नीकळे ते)

उद्भिद् ७ उ० फाडवु
—प्रेरक० प्रगट करवु, विकसाववु
—कर्मणि० फूटवु, नीकळवु, देखावु

उद्भिन्न वि० पेदा थयेलु (२) अकुर रूपे नीकळेलु, फूटेलु (३) विकसेलु, खीलेलु (४) पकडावी दीधेलु

उद्भू १ प० उत्पन्न थवु (२) बनवु, थवु (३) ऊचे चडवु (४) मामु थवु, वड करवु

उद्भूत वि० उत्पन्न थयेलु, जन्मेलु (२) उन्नत (३) नजरे पडेलु

उद्भूति स्त्री० उत्पत्ति, जन्म (२) उन्नति, आबादी

उद्भेद पु०, **उद्भेदन** न० (भेदीने) बहार आववु ते, ऊगवु ते (२) विकसित थवु ते (३) देखावु ते

उद्भ्रांत वि० क्षुब्ध, गाभरु, व्याकुळ (२) भ्रमेलु; छळेलु (३) वीझेलु; घुमावेलु

उद्यत वि० ऊचु करायेलु, उपाडेलु (२) सज्ज, तत्पर (३) उद्योगी

उद्यम् १आ०[उद्यच्छते](कर्दीक प० पण) ऊंचे चडाववु; ऊंचु करवु (२)आपवु; अर्पण करवु (३)तैयार थवु, सज्ज थवु (४)उद्योग करवो (५)नियत्रण करवु

उद्यम पु० उद्योग, प्रयत्न (२) उपाडवु ते (३)दृढ निश्चय (४)तत्परता; तैयारी

उद्या २ प० ऊंचे चडवु, ऊंचु थवु (२) उत्पन्न थवु

उद्यान न०, पु० बाग

उद्यापन न० धर्मकर्म के व्रतादिनी समाप्तिनी विधि, तेनी उजवणी

उद्युक्त वि० कामभा परोवायेलु; उद्यमी (२) तत्पर

उद्युज् ७ उ० प्रयत्न करवो
 –प्रेरक० प्रयत्न करवा प्रेरवुं

उद्योग पु० महेनत, प्रयत्न (२) काम; धंधो रोजगार [यत्नील

उद्योगिन् वि० उद्योगी, प्रयत्नशील,

उद्योत पु० प्रकाश, तेज

उद्रिक्त वि० अतिशय, अधिक (२) देखाय तेवु, स्पष्ट

उद्रिच् (मुख्यत्वे कर्मणि०मा अने पचमी साथे) चडियाता थवु

उद्रेक पु० पुष्कळता; अतिशयता (२) चडियातापण

उद्वर्त पु० अधिकपण (२) लेप करवो ते (३)प्रलय काळ (४)छाडवु ते

उद्वर्तन न० ऊंचे थवु ते, वधवु ते (२) उन्नति (३)ऊछळवु ते (४)एक बाजुथी बीजी बाजु फरवु ते (५)दळवु – गाळवु ते (६)शरीरे सुगंधीदार लेप करवो ते

उद्वस् प्रेरक० देशनिकाल करवु; काढी मूकवु

उद्वह् १ प० परणवु (२)वहन करवु, धारण करवु (३) लई जवु उपाडी जवु (४)पूर्ण करवु, अंत सुधी लई जवु

उद्वह वि० लई जनारु (२) चालु राखनारु (कुळने) (३) मुख्य, श्रेष्ठ

(४) पु० पुत्र (५) लग्न (६) वश के कुळनो मुख्य आगेवान

उद्वहन न० लग्न; विवाह (२)ऊचकवु –टेकववु ते (३) सवारी करवी ते (४) धारण करवु ते (लज्जा इ०)

उद्वाह पु० लग्न, विवाह

उद्विग्न (उद्विज् नु भू० कृ०) वि० व्याकुळ, खिन्न [त्रास पामवो

उद्विज् ६ आ० उद्वेग करवो (२)बीवु;

उद्वीक्ष् १ आ० ऊंचु जोवु (२)निहाळवु

उद्वीक्षण न० ऊंचे जोवु ते (२) दृष्टि; नजर [फरकवो

उद्वीज् १० प० पवनो नाखवो (२)वायु

उद्वृत् १ आ० ऊंचे चडवु (२) फाटी जवु, तूटी जवु (३)गबडी पडवु (४) अभिमान करवु (५)छलकावु
 –प्रेरक० निर्मूळ करवु (२)ऊंचे फेकवु –चडाववु (३) घुमाववु, फेरववु (आख) (४) लेप करवो

उद्वृत्त वि० ऊंचु करेलु (२) छलकातु; वधी गयेलु (३)तोछडु, अभिमानी

उद्वेग पु० कपावु ते, व्याकुळता;गभराट (२) चिंता दुःख, शोक

उद्वेदि वि० ऊंची वेदी के सिंहासनवाळु

उद्वेल वि० किनारा परथी वही जतु (२) हद – मर्यादा ओळगतु

उद्वेल्ल् १ प० हालवु, उछळवु (२) गोळ वींटळावु

उद्वेष्टन वि० छूटु करेलु बधनमुक्त

उद्वेष्टनीय वि० छोडी नाखवा योग्य

उन्नत वि० ऊंचु, महान, प्रख्यात (२) पूर्ण, भरावदार (३) गर्विष्ठ मिजाज

उन्नति स्त्री० ऊंचाई (२) चडती, आबादी (३) मोटाई, महत्ता

उन्नद् १ प० गर्जना करवी

उन्नद्ध (उन्नह् नु भू० कृ०) वि० बांधेलु; काढेलु (२) उद्धत (३) खूब भरेलु (४) उत्तम

उन्नम् १ प० ऊचु आववु (२) घेराई रहेवु; तोळाई रहेवु (३) ऊचु करवु
उन्नमित वि० ऊचु करेलु, उपाडेलु (२) ऊचु, चडियातु
उन्नयन वि० ऊची करेली आखोवाळु
उन्नयन न० ऊचे लई जवु ते (२) ऊचु-सीधु करवु ते
उन्नह् ४ प० बाधवु (२) खेची काढवु (३) बधनमाथी छूटु थवु – करवु
उन्नाम पु० टटार थवु ते
उन्नाह पु० ऊचु नीकळवु ते (२) अतिशयता, अधिकता (३) उद्धताई
उन्निद्र वि० निद्रारहित (२) खीलेलु
उन्नी १ प० ऊचु लाववु; ऊचु करवु (२) निचोववु (३) वितर्क करवो, कल्पना करवी (४) छूटु पाडवु, एक बाजु लई जवु
उन्मज्जन न० पाणीमाथी बहार नीकळवु ते
उन्मत्त वि० गाडु, (भूतादिना) आवेशवाळु (२) नशो करेलु, छाकटु (३) अहकारी, गर्विष्ठ, उद्धत
उन्मथ् १, ९ प० डखोळवु (२) मारवु, मारी नाखवु; नाबूद करवु (३) उतरडी नाखवु
उन्मथन न० डखोळी नाखवु ते, वलोववु, ते (२) खखेरी नाखवु ते (३) वध; कतल
उन्मद् ४ प० उन्मत्त थवु
उन्मद वि० उन्मत्त (२) मद उपजावनारु
उन्मदन वि० कामावेशथी युक्त
उन्मदिष्णु वि० मदमत्त, उन्मत्त (२) उन्मत्त करनारु
उन्मनस्, उन्मनस्क वि० क्षुब्ध, अस्वस्थ (२) खिन्न (३) उत्सुक (४) चितातुर
उन्मयूख वि० प्रकाशित, तेजस्वी
उन्मस्ज् ६ प० [उन्मज्जति] बहार नीकळवु
उन्मंथ् १, ९ प० जुओ 'उन्मथ्'
उन्मयन न० जुओ 'उन्मथन'
उन्माथिन् वि० वलोवतु, डखोळतु (२) त्रास आपतु, पीडतु
उन्माद वि० गाडु (२) पु० गाडापणु, घेलछा (३) प्रबळ आवेश
उन्मार्ग वि० आडे के खोटे मार्गे चडेलु (२) पु० खोटो के ऊधो रस्तो (३) कुमार्ग, अनीतिनो मार्ग
उन्मिष् ६ प० आख उघाडवी (२) खीलवु (३) चमकवु [दृष्टि; नजर
उन्मिषित वि० खुल्लु, ऊघडेलु (२) न०
उन्मील् १ प० उघाडवु (आख) (२) खीलवु, खूलवु
उन्मील पु०, **उन्मीलन** न० ऊघडवु ते (आख), जागवु ते (२) खूलवु ते, विकसवु ते (३) देखावु ते; प्रगट थवु ते
उन्मुख वि० मुख ऊचु करेलु; सामे मुखवाळु (२) सज्ज, तैयार (३) तत्पर; आतुर (४) –ना मुखे बोलतु
उन्मुच् ६ उ० काढी नाखवु; छोडी नाखवु (२) मुक्त करवु (३) काढवु (अवाज) (४) छोडवु, फेकवु [करवु
उन्मूल् १० उ० उखेडी नाखवु, निर्मूळ
उन्मूलन न० निर्मूळ करवु ते
उन्मृष्ट ('उन्मृज्'नु भू० कृ०) वि० लूछी नाखेलु, भूसी नाखेलु
उन्मेष पु०, **उन्मेषण** न० आखनु ऊघडवु ते, आखनो पलकारो (२) खूलवु–खीलवु ते (३) प्रकाश, झबकारो
उप अ० सामीप्य, सामर्थ्य, दोष-खामी, अत, अध्ययन – उपदेश, मान, आरभ, प्रयत्न, व्याप्ति, दान – ए अर्थमा वपराय छे, खास करीने लघुता के गौणत्व दर्शावे छे
उपकथा स्त्री० नानी-वार्ता (२) मुख्य कथामा आवती आड-कथा
उपकरण न० सहाय, मदद (२) साधन (३) साधन-सामग्री
उपकर्तृ वि० उपकार करनारु

उपकल्पन न० तैयार करवु ते (२) अवेजीमा मूकवु ते
उपकंठ वि० समीप; नजीक (२) पु०, न० सानिध्य (३) गामनी नजीकनो भाग
उपकंठम् अ० गळे (२) नजीक
उपकार पु० भलु करवु ते, कल्याण (२) मदद, सहाय (३) शोभा, शणगार
उपकार्या स्त्री० राजमहेल, शाही तबू
उपकीर्ण वि० उपर विखेरेलु होय तेवु; छवायेलु
उपकूलम् अ० किनारे, किनारा उपर
उपकृ ८ उ० [उपकरोति, उपकुरुते] पूरु पाडवु, लावी आपवु (२) उपकार करवो; मदद करवी; सेवा करवी (३) [उपस्करोति, उपस्कुरुते] पूरु पाडवु (४) सेवा करवी (५) शणगारवु; शोभा करवी [उपकार
उपकृत न०, **उपकृति** स्त्री० मदद;
उपकॄ ६ प० [उपकिरति] वेरवु (२) [उपस्किरति] कापवु, चीरवु
उपक्लृप् १ आ० योग्य होवु (२) तैयार होवु (३) –मा परिणमवु, फळ आववु (४) थवु, बनवु
–प्रेरक० तैयार करवु (२) नियत करवु; नक्की करवु (३) कल्पवु; मानवु
उपक्लृप्त वि० नजीक लवायेलु (२) तैयार करेलु, बनावेलु (३) गौण
उपक्रम् १ आ० [उपक्रमते], ४ प० [उपक्राम्यति] नजीक जवु (२) आचरवु, करवा माडवु (३) आरभ करवो (४) हुमलो करवो – सामु थवु
उपक्रम पु० आरभ; शरूआत (२) पासे – आगळ आववु ते (३) योजना; उपाय (४) साहस के योजनापूर्वक आरभेलु कार्य
उपक्रमणिका स्त्री० प्रस्तावना (ग्रथनी)
उपक्रात वि० प्रारभेलु
उपक्रोश पु०, **उपक्रोशन** न० ठपको
उपक्रोष्टृ वि० ठपको आपनु; निदा करतु

उपक्षय पु० नुकसान, हानि (२) खर्च
उपक्षिप् ६ प० फेकवु (२) ठपको देवो; आळ मूकवु (३) सूचववु, इशारो करवो (४) माडवु, आरभवु
उपक्षेप पु० सामे फेकवु ते (२) सूचन; इशारो, उल्लेख (३) आक्षेप, धमकी; आळ (४) आरभ [पामनारु
उपग वि० (समासने अते) पासे जनारु;
उपगत वि० पहोचेलु; पासे आवेलु; मळेलु (२) अनुभवेलु (३) बनेलु (४) युक्त; सहित (५) स्वीकारेलु (६) मरण पामेलु
उपगम् १ प० [उपगच्छति] पासे जवु; आववु (२) पामवु; मळवु, प्राप्त करवु (३) माथे लेवु, स्वीकारवु
उपगम पु०, **उपगमन** न० नजीक जवु ते (२) ज्ञान, परिचय (३) प्राप्ति (४) वचन; करार (५) सग, समागम (६) स्वीकार (७) अनुभववु – सहवु ते
उपगीत वि० चारणोए गायेलु – वखाणेलु
उपगुह् १ आ० [उपगूहते] भेटवु; आलिगन करवु (२) सताडवु
उपगूढ वि० छुपायेलु (२) आलिगेलु, पकडेलु (३) न० आलिगन
उपगै १ प० कोईने गाई सभळाववु (२) गीतमा गाईने वखाणवु
उपग्रह् ९ प० [उपगृह्णाति – गृह्णीते] पकडवु, लेवु, मेळववु (२) तावे करवु; समजाववु; मेळवी लेवु (३) कबूल राखवु
उपग्रह पु० केदमा नाखवु ते (२) पराभव (३) केदी (४) समाधान, सधि (५) अनुकूळता, सहानुभूति (६) प्रोत्साहन; मदद
उपग्रहण न० पकडवु ते (२) स्वीकारवु ते
उपग्राह पु० उपहार, भेट
उपघात पु० ईजा, हानि (२) नाश (३) रोग (४) पोतानु कार्य करवानु असामर्थ्य
उपघ्न पु० टगोलगनो आधार – आश्रय
उपचय पु० सचय; वधारो; उमेरो (२) जथ्थो, ढगलो (३) आबादी, उन्नति

उपचर् १ प० सेवा करवी (२) पूजा करवी (३) वर्तवु, वर्तन राखवु (४) शुश्रूषा करवी (रोगीनी)

उपचर्या स्त्री० सेवाशुश्रूषा (रोगीनी)

उपचार पु० सेवाशुश्रूषा (२) सारवार; चिकित्सा (३) शिष्टाचार, सभ्यता (४) समान, सत्कार (५) व्यवहार, अनुष्ठान (६) पूजा-सत्कारनो विधि, तेनी साधन-सामग्री (७) लक्षणा द्वारा अर्थबोध थवो ते

उपचारिक वि० उपयोगी, साधनरूप

उपचि ५ उ० संग्रह करवो; वधारवु (२) एकठु करवु – वीणवु (३) उपर एकठु थवु, छवावु

उपचित वि० एकठु करेलु, संचित (२) वधेलु, मोटु थयेलु (३) मजबूत थयेलु, शक्तिमा वधेलु (४) खूब लगाडेलु-चोपडेलु |उन्नति

उपचिति स्त्री० संग्रह, वृद्धि (२) लाभ;

उपच्छंद् १० प० समजाववु; लोभाववु; मनाववु

उपच्छंदन न० फोसलाववु ते, मनाववु ते

उपजन् ४ आ० [उपजायते] जन्मवु, उत्पन्न थवु (२) बनवु; थवु (३) फरीथी जन्मवु

उपजल्पित न० वातचीत

उपजल्पिन् वि० सलाह – उपदेश आपत्

उपजात वि० जन्मेलु, थयेलु, बनेलु

उपजाप पु० कानमा गुसपुस करवी ते (२) छानी मसलतथी उश्केरवु ते

उपजीव् १ प० –ने आश्रये जीववु – निर्वाह करवो (२) –नो आधार लेवो; –माथी आधार मेळववो

उपजीवन न०, **उपजीविका** स्त्री० आजीविका, निर्वाह

उपजीविन् वि० –ने आधारे जीवनारु

उपजुष्ट वि० सेवायेलु

उपजोष पु०, **उपजोषण** न० प्रीति, मरजी (२) उपभोग, सेवन

उपजोषम् अ० मरजी [illegible] प्रमाणे (२) [illegible]

उपज्ञा स्त्री० [illegible] विना [illegible] छे, उदा० [illegible] (२) [illegible] |[illegible]

उपढौक् –[illegible]

उपतप् १ प० [illegible] (२) [illegible]

उपताप पु० [illegible] (२) [illegible]

उपतापिन् वि० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible]

उपतीर्थ न० [illegible]

उपत्यका स्त्री० [illegible] – नीचाणनी जमीन

उपदर्शक वि० [illegible]

उपदंश पु० [illegible] चटणी वगेरे [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible]

उपदा स्त्री० भेट, नजराणु

उपदिश् ६ प० [illegible]; [illegible] (२) दर्शाववु, [illegible] (३) [illegible] आज्ञा करवी |(३) [illegible]

उपदिष्ट वि० उपदेशेलु (२) दर्शावेलु

उपदेश पु० [illegible]; [illegible] (२) [illegible] (३) निर्देश, सूचन (४) बहानु, मिष

उपदेष्टृ पु० उपदेशक, गुरु, आचार्य

उपद्रव पु० संकट, आपत्ति (२) ईजा पीडा, नुकसान (३) सार्वजनिक संकट (आसमानी के सुलतानी) (४) हुल्लड

उपद्रष्टृ वि० नजीकमा रहीने जोनार, साक्षी |हुमलो करवो

उपद्रु १ प० –नी तरफ दोडवु (२)

उपद्रुत वि० उपद्रवथी पीडित

उपधा ३ उ० उपर, नीचे के अंदर मूकवु

(२) मोकलवु; उत्पन्न करवु (३) सोपवु (काम के अधिकार) (४) छेतरवु
उपधा स्त्री० उपर स्थापवु ते (२) छळ; कपट, युक्ति, उपाय (३) परीक्षा
उपधान न० समीप मूकवु ते (२) ओशीकु (३) विशेषता; श्रेष्ठता (४) प्रणय; प्रेम
उपधाव् १ उ० –नी तरफ दोडवु (२) मदद लेवा माटे दोडवु
उपधि स्त्री० छळ, कपट
उपध्मानीय पु० 'प्' अने 'फ्' नी वच्चे आवतो महाप्राण विसर्ग (व्या०)
उपनगर न० मुख्य नगरनु परु; 'सबर्ब'
उपनम् १ प० आवी पडवु, वळवु (२) बनवु, घटवु
उपनत वि० नजीक आवेलु; प्राप्त थयेलु; आवी पडेलु (२) बनेलु; थयेलु (३) रजू करेलु, अर्पेलु (४) तावे थयेलु, नमेलु
उपनति स्त्री० नमन (२) नजीक पहोंचवु ते (३) वलण
उपनद्ध वि० मढेलु; ढाकेलु
उपनयन न० नजीक लई जवु – लाववु ते (२) अर्पवु ते (३) यज्ञोपवीत आपवु ते
उपनिधा ३ उ० नजीक मूकवु – लई जवु (२) अर्पवु, सोपवु (३) उत्पन्न करवु
उपनिपातिन् वि० अचानक आवी पडतु
उपनिबद्ध वि० लखेलु; रचेलु (२) चर्चेलु
उपनिर्हार पु० हुमलो
उपनिविष्ट वि० रहेवास करीने रहेल (२) घेरो नाखेलु ['कॉलोनी'
उपनिवेश वि० संस्थान, वसाहत,
उपनिषद् स्त्री० वेदनी अतर्गत गणातो, तेना गूढ अर्थोने स्पष्ट करतो, तथा ब्रह्मविद्यानु प्रतिपादन करतो तात्त्विक ग्रंथ (२) गूढ रहस्य, गूढ विद्या (३) ब्रह्मज्ञान
उपनिहित वि० नजीक मूकेलु (२) वक्षेलु
उपनी १ प० पासे लई जवु, पासे लाववु (२) अर्पण करवु (३) –नी स्थितिए पहोंचाडवु – लई जवु (४) सिद्ध करवु, पेदा करवु (५) यज्ञोपवीत आपवु
उपनीत वि० पासे लवायेलु (२) जनोई दीधेलु (३) जाणेलु (४) मेळवेलु (५) बक्षिस करायेलु
उपनुन्न वि० हकायेलु, धकेलायेलु
उपनेतृ वि० पासे लई जनारु के लावनारु (२) पु० यज्ञोपवीत आपनार आचार्य
उपनेत्र न० चश्मा
उपन्यस् ४ प० नजीक – उपर – नीचे मूकवु (२) अनामत मूकवु, सोपवु (३) रजू करवु, सूचववु, दर्शाववु (४) समजाववु, वर्णन करवु
उपन्यस्त वि० पासे लवायेलु, मुकायेलु (२) कहेवायेलु; रजू थयेलु, सूचवायेलु (३) थापण तरीके सोपायेलु
उपन्यास पु० नजीक मूकवु ते (२) थापण, गीरो (३) सूचन, कथन (४) प्रस्तावना, रजूआत (५) समाधान
उपपति पु० यार
उपपत्ति स्त्री० उत्पत्ति, जन्म (२) कारण, हेतु (३) तर्क, दलील, युक्ति (४) पुरावो; प्रमाण (५) उपाय, इलाज, साधन (६) औचित्य, योग्यता (७) अत (८) संबंध (९) स्वीकार (१०) सिद्धि, प्राप्ति (११) अणधार्यु – अकस्मात एवु ते
उपपद् ४ आ० पासे जवु, पासे आववु (२) प्राप्त करवु (३) बनवु, थवु (४) संभवित होवु (५) छाजवु, शोभवु (६) हुमलो करवो (७) रजू करवु
उपपद न० पूर्वे बोलायेलो के आगळ मुकायेलो शब्द (२) समासनो पहेलो शब्द (३) उपाधि, अटक
उपपन्न वि० मेळवेलु, प्राप्त करेलु (२) –नी साथे आवेलु – रहेलु (३) योग्य, सुसंगत (४) साबित – सिद्ध थयेलु (५) संभवित, शक्य

उपपात पु० अकस्मात आवी पडवु ते (२)सकट, आपत्ति (३)नाश

उपपादन न० युक्तिपूर्वक साबित करवु ते (२)उत्पन्न करवु–सिद्ध करवु ते

उपपीड् १० प० दबाववु, कचडवु (२) पीडवु, दु ख देवु (३)ढाकी देवु, ग्रसवु

उपप्रदान न० भेट, नजराणु (२)लाच

उपप्लव पु०उपद्रव, पीडा (२)सकट, विघ्न (३) भय (४) दुर्भाग्य (५) उत्पात (६) (सूर्यचद्रनु) ग्रहण (७) प्रलय, नाश (८) क्षोभ (९) गहु ग्रह (१०) अघेर, विप्लव

उपप्लु १ आ० उपर तरवु (२) उपर फरी वळवु (३) हल्लो करवो, पीडवु (४) उपर कूदवु [ग्रसायेलु

उपप्लुत वि० हुमलो करायेलु;पजवायेलु;

उपबृहण न० वधारो, वृद्धि

उपबृहित वि० वृद्धिगत थयेलु, विस्तार पामेलु (२) सहित, युक्त

उपभुज् ७ उ० उपभोग करवो, भोगववु

उपभृत वि० नजीक आणेलु, —ने माटे मेळवेलु

उपभोग पु० भोगववु ते (२) माणवु –मजा लेवी ते (३) अनुभव, लहावो

उपभोग्य वि० भोगववा योग्य

उपमर्द पु०चोळवु–दाबवु–मर्दन करवु ते (२) नाश, वध (३) तिरस्कार

उपमा ३,४ आ०, २ प० तुलना करवी; उपमा आपवी

उपमा स्त्री० सरखामणी (२)मळतापणु

उपमान न० सरखामणी, तुलना (२) सरखामणी माटेनु धोरण, जेने आधारे सरखामणी थाय ते

उपमिति स्त्री०उपमा, सरखामणी (२) तेथी थतु ज्ञान (न्या०)

उपमेय वि०तुलना के सरखामणी करवा योग्य (२) न० जेने उपमा आपवामा आवी होय ते

उपयम् १ उ० [उपयच्छति–ते] परणवु (२) पकडवु, धारण करवु (३) स्वीकारवु (४) सूचववु

उपयंतृ पु० पति [प्राप्त करवी

उपया २ प० जवु, पहोचवु (२)स्थिति

उपयान न० नजीक जवु ते (२) पामवु ते, प्राप्ति [छाजतु, बधबेसतु

उपयुक्त वि० उपयोगी (२) योग्य,

उपयुज् ७ आ० कामे लागवु, कामे लगाडवु (२)उपयोग करवो, वापरवु (३)भोगववु; अनुभववु (४)आसवित राखवी (५) (वाहने) जोडवु

उपयोग पु० वापर, वपराश (२)खप, जरूरियात

उपयोगिन् वि० उपयोगमा आवे एवु; खपनु, कामनु (२)उपयोगमा लेनारु

उपरक्त वि० सकटग्रस्त (२) ग्रहणमा सपडायेलु (३) रगायेलु (४) पु० ग्रहणमा ग्रस्त सूर्य के चद्र

उपरत वि० थोभेलु, अटकेलु, विरमेलु (२)मृत (३)खसी गयेलु, पाछु हठेलु (४) ससारमाथी विरक्त थयेलु

उपरति स्त्री० विरमवु –थोभवुं – अटकवु ते(२)मृत्यु (३) उपेक्षा;विरक्ति

उपरम् १ आ० अटकवु; विरमवु;थोभवु (२) शात थवु

उपरम पु० अटकवु – विरमवु ते(२) निवृत्त थवु–विमुख थवु ते (३)मृत्यु

उपरंज् ४ उ० [उपरज्यति –ते] रातु थवु (२) ग्रहणमा सपडावु

उपराग पु० ग्रहण (२) लालाश, रग (३) सकट; विपत्ति ['वाईसरॉय'

उपराज पु० राजा पछीनो अधिकारी,

उपराम पु० उपरम, निवृत्ति (२) विराम, अटकवु ते (३) मृत्यु

उपरि अ० उपर, तरफ, आगळ, वधारे, उपरात, सबधमा, पछी, ऊचे, तरत ज – ए अर्थमा वपराय छे

उपरितन वि० उपरनु, वधु उपरनु
उपरिष्टात् अ० उपर, ऊचे, पछी, पछीथी, पाछळथी, आगळ उपर
उपरिष्ठ वि० उपर रहेलु
उपरुध् ७ उ० अटकाववु, हरकत करवी (२) घेरो घालवो (३) त्रास आपवो (४) केद करवु (५) छुपाववु
उपरोध पु० रुकावट, प्रतिवध, विघ्न (२) घेरवु ते (३) त्रास, पीडा
उपल पु० पथ्थर, खडक (२) रत्न
उपलक्ष् १० प० तपासवु; जोवु (२) लक्षमा लेवु, विचारवु (३) आकवु, निशानी करवी
उपलक्षण न० निहाळवु ते; जोवु ते (२) चिह्न, विशेष लक्षण
उपलब्ध वि० मळेलु, मेळवेलु (२) जाणेलु, समजेलु
उपलब्धि स्त्री० प्राप्ति; लाभ (२) बोध; [ज्ञान
उपलभ् १ आ० जोवु, जाणवु (२) प्राप्त करवु, मेळववू
उपलल् १० प० लाड लडाववा
उपलंभ पु० प्राप्ति (२) बोध, अनुभव (३) जाणवु ते; खातरी करवी ते (४) जोवु ते, दर्शन
उपलिप् ६ प० लेप करवो (२) लेपावु, [खरडावु
उपलेप पु० लेप करवो ते (२) लीपवु ते, लीपण
उपवन न० बगीचो, वाडी
उपवर्तन न० प्रदेश (२) राज्य (३) व्यायामशाळा (४) भेजवाळी जगा
उपवास पु० व्रत के नियम तरीके न खावु ते (इद्रियभोगमात्रनो त्याग करवो ते)
उपवाहन न० नजीक लाववु के लई जवु ते
उपवाह्य पु०, **उपवाह्या** स्त्री० राजानो हाथी (नर के मादा) (२) राजानु वाहन
उपविश् ६ प० वेसवु, नीचे वेसवु (२) पडाव नाखवो (३) आथमवु
उपविष्ट वि० वेठेलु (२) आवी पहोचेलु (३) –मा लागेलु – मडेलु
उपवीत न० यज्ञोपवीत – जनोई (२) यज्ञोपवीत आपवानी धार्मिक क्रिया
उपवृहण न० जुओ 'उपवृहण'
उपवेद पु० गौण वेद (आयुर्वेद, धनुर्वेद, गाधर्ववेद, स्थापत्यवेद)
उपवेश पु०, **उपवेशन** न० बेसवु ते (२) –मा लागवु ते (३) मूकवु ते (४) तावे थवु ते
उपशम पु० शात पडवु – विराम लेवो ते, शमवु ते (२) शाति, निवृत्ति (३) इद्रियनिग्रह
उपशमन न० शाति, निवारण, शमन
उपशय पु० नजीक सूवु ते (२) सतावानु स्थान, भराई रहेवानी जगा (शिकारीनी) (३) रोगनु शमन
उपशल्य न० गामनी भागोळ
उपशांति स्त्री० शात थवु ते, शात पाडवु ते (२) निवृत्त थवु ते
उपश्रुत वि० साभळेलु (२) स्वीकारेलु, वचन आपेलु
उपश्रुति स्त्री० साभळवु – कान माडवा ते (२) ज्या सुधीनु सभळाय ते अतर (३) एक अलौकिक वाणी, वनदेवतानी भविष्यसूचक वाणी (४) वचन, स्वीकारनु वचन
उपश्लिष् ४ प० आलिगवु (२) नजीक जवु – पहोचवु
–प्रेरक० नजीक स्थापवु – राखवु
उपश्लिष्ट वि० नजीकनु, नजीक मूकेलु
उपश्लोकयति (श्लोक वडे स्तुति करवी)
उपष्टंभ पु० टेको, आधार, उत्तेजन
उपसक्त वि० आसक्त
उपसद् १ प० [उपसीदति] पासे वेसवु (२) सेवा करवी (३) (मेळववा) प्रयत्न करवो (४) हुमलो करवो
उपसदन न० नजीक आववु के जवु ते

(२) गुरु पासे बेसवु ते, शिष्य थवु ते (३) पाडोश

उपसन्न वि० हाजर थयेलु, नजीक आवेलु (२) नजीक मूकेलु; उपर मूकेलु

उपसर्ग पु० मदवाड, व्याधि (२) दुर्भाग्य, दु ख, सकट, हानि (३) विघ्न (४) दुश्चिह्न, उत्पात (५) ग्रहण (६) धातुओ अने धातुओ उपरथी बनेला नामोनी पहेला जोडातो तथा तेमना मूळ अर्थमा विशेषता आणतो शब्द (व्या०)

उपसर्पण न० पासे जवु ते

उपसक्षेप पु० सार, तात्पर्य

उपसग्रह पु०, **उपसग्रहण** न० निभाववु ते, खुश राखवु ते (२) पग पकडीने नमस्कार करवा ते (३) स्वीकारवु ते (४) सग्रह करवो ते

उपसंपद् ४ आ० जई पहोचवु, आवी पहोचवु [मेळवी आपवु
–प्रेरक० नजीक लई जवु (२) आपवु;

उपसपन्न वि० प्राप्त थयेलु (२) पहोचेलु (३) सपन्न, युक्त (४) परिचित (५) मृत (६) यज्ञमा मारेलु (७) राधेलु (८) न० मसालो

उपसंस्कृ ८ पु० तैयार करवु, राधवु (२) शोभाववु; शणगारवु (३) पवित्र करवु

उपसंहार पु० एकत्र थवु ते, एकत्रित करवु ते (२) पाछु खेंची लेवु ते (३) सचय, सग्रह (४) टूकामा आटोपी लेवु ते; समाप्त करवु ते (५) टूकाण; सक्षेप; सार (६) सहार, नाश (७) हुमलो करवो ते, आक्रमण

उपसहृ १ प० एकत्रित करवु (२) उपसहार करवो, समाप्त करवु (३) सकोची लेवु; पाछु खेंचवु (४) निग्रह करवो

उपसाध् –प्रेरक० प० वश करवु (२) राधवु

उपसृ १ प० पासे जवु, नजीक जवु

उपसृप् १ प० नजीक जवु –पहोचवु

उपसृष्ट वि० छोडेलु, त्यागेलु (२) (ग्रहण इ० जेवा) उपद्रवथी ग्रस्त (३) पिशाचग्रस्त (४) पीडित (५) व्याप्त

उपसेव् १ आ० सेववुं; भोगववु (२) आसक्ति राखवी; भजवु

उपसेविन् पु० सेवक, नोकर

उपस्कन्न वि० क्षुब्ध, त्रस्त

उपस्कर पु० साधनसामग्री, साहित्य (२) घरखटलो (३) मसाला वगेरे पदार्थो (४) निंदा, ठपको (५) घरेणु

उपस्करण न० हिंसा, वध (२) शोभा, शणगार (३) मूळ गुणमा फेरफार करे तेवो सस्कार (४) साधन (हिंसा के शणगारनु)

उपस्कृ ८ उ० जुओ 'उपकृ'

उपस्कृत वि० तैयार करेलु; पूर्ण करेलु (२) ठपको अपायेलु (३) हणायेलु (४) एकठु करायेलु (५) शणगारेलु (६) गुणातर करेलु ['उपष्टभ'

उपस्तंभ पु०, **उपस्तंभन** न० जुओ

उपस्थ पु० मध्य भाग (२) खोळो (३) पु०, न० जननेंद्रिय (४) गुदा

उपस्था १ उ० [उपतिष्ठति–ते] पासे ऊभा रहेवु, सेवा करवी (२) सत्कार करवो (३) उपासना करवी (४) नजीक आववु (५) मळवु; जोडावु (नदीनु) (६) मित्रता करवी (७) हाजर थवु (८) बनवु, थवु (९) आशरे रहेवु

उपस्थान न० पासे ऊभा रहेवु ते (२) पासे आववु ते (३) उपासना; पूजा (४) नजीक मूकवु ते (५) उपासनागृह (६) अनुसधान, स्मरण; चितन (७) मेळववु ते, प्राप्ति

उपस्थित वि० आवी पहोचेलु, नजीक आवेलु, हाजर (२) आवी पडेलु (३) बनेलु (४) ज्ञात, प्राप्त (५) उपासेलु; पूजेलु

उपस्पर्शन न० आचमन (२) स्नान (३) कोगळाथी मुखशुद्धि करवी ते (४) दान; बक्षिस

उपहत वि० हणायेलु; ईजा पामेलु; नष्ट [(२) भ्रष्ट, अशुद्ध

उपहतक वि० अभागी, दुर्भागी

उपहस् १ प० हसवु, मश्करीमा हसवु, मश्करी करवी

उपहसित वि० हसी काढेलु (२) न० मश्करी, मश्करीमा हसवु ते

उपहा ३ आ० ऊतरवु, उपर आवी पडवु —कर्मणि० [उपहीयते] घटवु, ओछु थवु [नि माटेनी वस्तुओ

उपहार पु० भेट, बक्षिस (२) बलिदान,

उपहास पु० मश्करी, ठेकडी

उपहित वि० अदर – नजीक – उपर मुकायेलु (२) जोडायेलु (३) उपाधि-युक्त (४) कामे लीधेलु (५) आपेलु

उपहूत वि० बोलावायेलु

उपहूति स्त्री० बोलाववु – तेडवु ते

उपहृ १ प० नजीक लई जवु, नजीक लाववु (२) भेट आपवी (३) बलिदान आपवु (४) पीरसवु; वहेचवु (५) एकठु करवु (६) लई लेवु, नाश करवो

उपाकृ ८ उ० नजीक लाववु (२) बोलाववु, आमत्रवु (३) अर्पवु, बक्षवु (४) प्राप्त करवु (कीर्ति) (५) माथे लेवु, शरू करवु (६) (वधेरवा माटे के विधि माटे) तैयार करवु

उपाख्यान, उपाख्यानक न० नानु आख्यान (२) साभळेली वात कहेवी ते

उपागत वि० आवेलु (२) बनेलु (३) अनुभवेलु, पामेलु

उपागम् (उप+आ+गम्) १ प० [उपागच्छति] पासे जवु, पासे आववु (२) (अमुक स्थिति) पामवी; अनुभववु (३) आवी पडवु, बनवु (४) प्राप्त करवु

उपाचर् १ प० नजीक जवु (२) सेवा करवी (३) आमत्रित थवु (४) उपचार करवो (मादानो)

उपात्त वि० मेळवेलु, प्राप्त करेलु (२) लई लीधेलु, ग्रहण करेलु (३) गणेलु, मानेलु (४) उपयोगमा लीधेलु

उपादा ३ आ० लेवु; स्वीकारवु (२) प्राप्त करवु (३) –ने आपवु (४) धारण करवु (५) पकडवु, वळगवु (६) उपाडी जवु (७) अनुभववु (८) मानवु; गणवु (९) माथे लेवु; शरू करवु (१०) रूप धारण करवु (११) उपयोगमा लेवु

उपादान न० अगीकार, स्वीकार (२) लई लेवु ते; पडावी लेवु ते (३) कारण; समवायी कारण

उपादेय वि० लई शकाय तेवु (२) स्वीकार्य (३) पसद करवा योग्य (४) उत्तम, वखाणवा जेवु

उपाधा ३ उ० नजीक मूकवु; उपर मूकवु (२) आपवु (३) पहेरवु (४) उत्पन्न करवु (५) पकडवु; पकडी राखवु (६) करवु; बनाववु (७) फोसलाववु (स्त्रीने)

उपाधि पु० छळ, कपट, वचना (२) विशिष्टता, विशेष गुण (३) पदवी, खिताब (४) मर्यादा, निमित्त, हेतु (५) सज्ञा, चिह्न (६) कारण, हेतु

उपाध्याय पु० गुरु, शिक्षक

उपानह् स्त्री० जोडो, पगरखु

उपाय पु० इलाज, युक्ति (२) साधन, रस्तो (३) आरभ; शरूआत (४) पासे आववु ते, आवी पहोचवु ते

उपायन न० भेट, बक्षिस

उपारत वि० विरत थयेलु, विरमेलु (२) निवृत्त (३) –मा लागेलु, मग्न

उपारम् १ प० आनद माणवो (२) थोभवु, विरमवु

उपारूढ वि० वृद्धि पामेलु

उपार्जन न० प्राप्त करवु ते, कमावु ते

उपार्जित वि० मेळवेलु, कमायेलु

उपालभ् १ आ० ठपको आपवो, वाक काढवो (२) कापवु, वधेरवु

उपालभ पु०, **उपालभन** न० ठपको; महेणु [ते, आळोटवु ते
उपावर्तन न० पाछु फरवु ते (२) गबडवु
उपावृत् १ आ० पाछु फरवु (२) पासे जवु (३) आपवु (४) आळोटवु; गबडवु
उपाश्रय पु० आशरो, आधार (२) आश्रयस्थान
उपाश्रि १ उ० आश्रय लेवो
उपाश्रित वि० आशरो लेनारु (२) धारण करनारु, वहन करनारु
उपास् २ आ० पासे बेसवु (२) उपासना करवी, सेववु (३) पसार करवु (समय) (४) पहोचवु; जवु (५) रहेवु; पासे रहेवु (६) घेरो घालवो [सेवक
उपासक पु० भक्त; साधक (२) अनुयायी;
उपासन न०, **उपासना** स्त्री० आराधना; सेवा, भक्ति (२) ध्यान – चिंतन (३) धनुर्वेदनो अभ्यास
उपाहार पु० अल्प आहार, नास्तो
उपाहित वि० मूकेलु (२) अनामत मूकेलु (३) पहेरेलु (४) युक्त
उपाहृ १ उ० लई आववु, लाववु (२) आपवु, अर्पण करवु
उपाग पु० कपाळे करवामा आवतु चदननु टीलु (२) न० मुख्य विषयनो पेटा भाग, गौण अग – अगनु अग (३) वेदाग जेवा चार शास्त्र (पुराण, न्याय, मीमासा, धर्मशास्त्र) [(पाणी)
उपाच् (उप+अच्) १ उ० ऊचे चढाववु
उपात वि० छेडानी नजीकनु (२) पु० नजीकनो भाग – प्रदेश (३) कोर, छेडो, सीमा, हद (४) आखनो खूणो (५) निकटता, नजीकपणु
उपात्य वि० छेल्लानी पहेलानु (२) न० सानिध्य [गुप्त रीते
उपाशु अ० खानगीमा, धीमेथी (२)
उपे (उप+इ) २ प० पासे आववु, आवी पहोचवु (२) गुरु पासे जवु, शिष्य थवु (३) स्वीकारवु, आचरवु, धारण करवु, पामवु (स्थिति)
उपेक्ष् १ आ० उपेक्षा करवी, अवगणना करवी (२) बेदरकार रहेवु (३) तिरस्कार करवो (४) त्याग करवो (५) जोवु, विचारवु
उपेक्षण न०, **उपेक्षा** स्त्री० अनादर, तिरस्कार (२) त्याग (३) अनपेक्षा; उदासीनता (४) बेदरकारी
उपेत ('उपे' नु भू० कृ०) वि० नजीक आवेलु (२) युक्त, सहित
उपेय वि० पासे जवा योग्य (२) पाळवा लायक (३) उपायथी साधवा लायक
उपेंद्र पु० विष्णु (वामन अवतारमा इद्रना नाना भाई होवाथी)
उपोढ वि० एकठु थयेलु, सग्रहायेलु (२) नजीक लावेलु – आवेलु (३) आरभायेलु (४) परणेलु
उपोद्घात पु० आरभ (२) ग्रथनी प्रस्तावना (३) प्रसग, सायम
उपोषण, उपोषित न० उपवास
उपोह् (उप+ऊह्) १ प० धकेलवु, –नी तरफ खसेडवु
उप्त ('वप्' नु भू० कृ०) वि० वावेलु (२) नाखेलु (३) मूडेलु
उप्ति स्त्री० वावणी
उभ् ६ प० [उभति, उभति], ७ प० [उनप्ति], ९ प० [उभ्नाति] भरवु, छाई देवु [मा ज वपराय)
उभ स० ना०, वि० बन्ने, बे (द्वि० व०
उभय स० ना०, वि० बन्ने (अर्थमा द्विवचनी छता एकवचन के बहुवचनमा ज वपराय)
उभयतस् अ० बन्ने बाजुएथी
उभयथा अ० बन्ने रीते
उभयान्वयिन् वि० उभय (पद अथवा वाक्य) -ने जोडनारु (व्या०)
उम् अ० प्रश्न, सात्वन, समति, स्वीकार, क्रोध – ए भाव दर्शावे

उमा स्त्री० पार्वती (२) तेज; प्रभा (३) कीर्ति (४) रात्रि
उमापति पु० शकर
उमासुत पु० कार्तिकेय अथवा गणपति
उमेश पु० शकर
उरग पु० साप (पेटे चालनार)
उरगराज पु० शेषनाग (२) वासुकिनाग
उरगारि, उरगाशन पु० गरुड (२) मोर
उरगेंद्र पु० शेषनाग (२) वासुकिनाग
उरण, उरभ्र पु० घेटो
उररी अ० समति के स्वीकार दर्शावे (आ अर्थमा ते सामान्य रीते 'कृ', 'भू' अने 'अस्' धातु पूर्वे वपराय छे) (२) विस्तारनो अर्थ दर्शावे
उररीकृ ८ उ० स्वीकारवु; कबूल राखवु
उरस् वि० श्रेष्ठ, उत्तम (२) न० छाती
उरसिज, उरसिरुह पु० स्तन
उरस्त्राण न० कवच, बख्तर (छाती उपरनु)
उरस्य वि० परणेली स्त्रीथी थयेलु (सतान) (२) उत्तम, श्रेष्ठ
उरीकृ ८ उ० जुओ 'उररीकृ'
उरु वि० विशाळ, मोटु, विस्तृत (२) श्रेष्ठ (३) अत्यत (४) पुष्कळ
उर्णा स्त्री० ऊन
उरोज, उरोभू पु० स्तन
उर्वरा स्त्री० फळद्रुप जमीन
उर्वरित वि० अधिक, अतिशय (२) वधेलु, शेष रहेलु
उर्वशी स्त्री० स्वर्गनी एक अप्सरा
उर्वग पु० पर्वत (२) समुद्र
उर्वी स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन
उर्वीपति पु० राजा
उर्वीरुह पु० वृक्ष [(२) कोमळ तृण
उलप पु० जमीन पर फेलाती एक वेल
उलूक पु० घुवड (२) इद्र
उलूखल न० खाडणियो (लाकडानो)
उल्का स्त्री० रेखाना आकारे पडतो तेजनो ढगलो, आकाशनो अग्नि (२) खरतो तारो (३) मशाल (४) ज्वाळा
उल्कामुख पु० एक जातनु प्रेत (ज्वाळायुक्त मुखवाळु) (२) एक जातनु शियाळ
उल्ब न० गर्भ उपरनु आवरण, ओर
उल्बण वि० जाडु, घट्ट (२) घणु, अत्यत (३) मजबूत, मोटु (४) प्रगट, स्पष्ट (५) भपकादार (६) भयकर (७) पापयुक्त
उल्मुक पु० मशाल, खोरियु
उल्लप् १ प० दूर करवु, टाळवु
उल्ललित वि० कपतु, ध्रूजतु, क्षुब्ध (२) ऊछळतु, ऊचे जतु
उल्लस् १ प० कूदवु, ऊछळवु, फरफरवु (२) चळकवु, चमकवु (३) प्रगट थवु, देखावु (४) प्रतिबिंबित थवु (५) खीलवु, खूलवु
उल्लसित वि० तेजस्वी, स्फुरतु (२) उल्लासयुक्त (३) खेचेलु, वीझेलु (तरवार इ०)
उल्लघ् १ आ०, १० प० उल्लघन करवु
उल्लघन न० ओळगवु ते, अतिक्रम
उल्लाप पु० वाणी; उद्गार (२) कटाक्ष के तिरस्कारनु वचन, वक्रोक्ति (३) घाटो पाडीने बोलाववु ते (४) दुःख-भय-शोक वगेरेथी स्वरमा पडतो फरक
उल्लास पु० आनन्द (२) प्रकाश, भपको (३) प्रकरण
उल्लिख् ६ प० छेकवु (२) वलूरवु (३) खोतरवु, कोतरवु (४) घसवु; माजवु (५) चीतरवु, लखवु
उल्लिह् २ उ० [उल्लेढि, उल्लीढे] घसीने चकचकित करवु
उल्लिगित वि० प्रसिद्ध, जाणीतु (२) प्रगट थयेलु (विशिष्ट लक्षणोथी)
उल्लीढ वि० घसेलु, धार काढेलु
उल्लेख पु० निर्देश, सूचन (२) कथन; वर्णन (३) घसवु – वलूरवु – खोतरवु ते
उल्लोल वि० अति चचळ

उल्व न० जुओ 'उल्व'
उल्वण वि० जुओ 'उल्वण'
उशत् वि० सुन्दर (२) प्रिय (३) निर्मळ (४) बीभत्स, अमगळ
उशती स्त्री० तीखी वाणी
उशनस् पु० दैत्योना गुरु शुक्राचार्य
उशी स्त्री० इच्छा
उशीर पु०, न० वीरणनो वाळो
उष् १ प० बळवु, बाळवु (२) शिक्षा करवी (३) मारवु, मारी नाखवु
उषस् न० परोढ; प्रात काळ (२) परोढ वखतनु तेज (३) परोढनी देवता
उषसी स्त्री० सायकाळनु तेज
उषस्कर पु० चद्र
उषःकाल पु० परोढनो समय
उषा स्त्री० परोढ (२) प्रात काळनु तेज (३) रात्रि (४) बाणासुरनी पुत्री अने अनिरुद्धनी पत्नी
उषित ('वस्'नु भू० कृ०) वि० वसेलु (२) ('उष्'नु भू० कृ०) बळेलु
उषीर पु०, न० जुओ 'उशीर'
उष्ट्र पु० ऊट [माटीनु वासण
उष्ट्रिका स्त्री० ऊटडी (२) तेवा घाटनु
उष्ण वि० गरम (२) सखत, तीक्ष्ण (३) पु० न० उनाळो (४) गरमी; ताप, तडको (५) [illegible]
उष्णकर पु० सूर्य
उष्णग पु० उनाळो (२) [illegible]
उष्णगु, उष्णदीधिति पु० सूर्य
उष्णवारण पु० [illegible] (२) [illegible]
उष्णरश्मि पु० सूर्य
उष्णागम पु० उनाळो
उष्णांशु पु० सूर्य
उष्णीष पु०, न० पाघडी, फेंटो, मुगट
उष्म, उष्मक पु० [illegible] (२) उनाळो (३) [illegible] (४) [illegible]
उष्मन् पु० [illegible], गरमी (२) ग्रीष्म ऋतु, उनाळो
उष्मागम पु० उनाळो
उस्र पु० किरण (२) बळद
उस्वित् अ० [illegible]
उञ्छवृत्ति वि० खेतरमा पडेला दाणा वीणीने जीवनार
उदरु, उदुर, उदुरु, उन्दूरु पु० उंदर
उभ् ६, ७, ९ प० जुओ 'उम्भ्'

ऊ

ऊ अ० दया, रक्षण, सबोधनना अर्थ बतावे (२) वाक्यारभे वपरातो उद्गार
ऊढ ('वह्'नु भू० कृ०) वि० वहन करायेलु (बोजो), ऊचकी जवायेलु; लई जवायेलु (२) परिणीत (३) न० लग्न
ऊत ('अव्'नु भू० कृ०) वि० रक्षायेलु, मदद करायेलु (२) ('वे'नु भू० कृ०) वणायेलु, सिवायेलु
ऊति स्त्री० लीला (२) सीववु – वणवु – गूथवु ते (३) कृपा, मदद
ऊधन्य न० दूध
ऊधस् न० आउ, बावलु
ऊधस्य न० दूध
ऊन वि० ऊणु, ओछु, अपूर्ण (२) ऊणपवाळु, नबळु (३) बाद (सख्यावाचक शब्द साथे, उदा० 'एकोनविंशति') [उद्गार
ऊम् अ० प्रश्न, निदा के स्पर्धा बतावतो
ऊररी अ० जुओ 'उररी'
ऊरु पु० साथळ, जाघ
ऊरुस्तभ पु० जाघनो साधिवा, जाघवाळा भागनु अकडाई जवु ते
ऊर्ज् स्त्री० शक्ति; बळ, उत्साह (२) अन्न (३) रस (४) जळ

ऊर्ज पु० शक्ति, ताकात (२) उत्साह (३) ताण (४) प्रजोत्पादन शक्ति (५) कार्तिक मास (वळ आपनार)
ऊर्जस् न० सामर्थ्य (२) अन्न
ऊर्जस्वल, ऊर्जस्विन् वि० शक्तिमान; पराक्रमी, तेजस्वी
ऊर्जित वि० समर्थ, बळवान (२) श्रेष्ठ, उच्च, भव्य (३) वृद्धियक्त; चडियातु (४) न० सामर्थ्य, शक्ति
ऊर्ण न० ऊन (२) ऊननु वस्त्र
ऊर्णनाभ, ऊर्णनाभि, ऊर्णपट पु० करोळियो [वच्चेनी वाळनी रेखा
ऊर्णा स्त्री० ऊन (२) आखनी भमरो
ऊर्णायु वि० ऊननु (२) पु० घेटो (३) करोळियो (४) ऊननो कामळो
ऊर्णु २ उ० ढाकवु, सताडवु, वीटाळवु
ऊर्ध्व वि० ऊभु, ऊचु, उपरनु (२) सीधु, टटार (३) ऊचु करेलु, उन्नत (४) न० उच्चता, ऊचाई
ऊर्ध्वकाय पु०, न० शरीरनो उपलो भाग
ऊर्ध्वग, ऊर्ध्वगति, ऊर्ध्वगामिन् वि० ऊचे जनारु, चडनारु
ऊर्ध्वजानु, ऊर्ध्वज्ञ, ऊर्ध्वज्ञु वि० ढीचण ऊचा करीने वेठेलु
ऊर्ध्वदेह पु० मरण पछी थनारो देह (२) मरण पछी करवानी एक क्रिया
ऊर्ध्वबाहु वि० ऊचा हाथ करेलु
ऊर्ध्वम् अ० ऊचे (२) मोटेथी, मोटा अवाजे (३) पछी, पछीथी
ऊर्ध्वमुख वि० ऊचा मोवाळु, उपरनी वाजुए ऊघडतु
ऊर्ध्वरेतस् वि० जेना वीर्यनु पतन थतु नथी एवु, नित्य ब्रह्मचर्य पाळनारु
ऊर्मि पु० स्त्री० मोजु, तरग (२) प्रवाह (३) लागणीनो तरग; उत्कठा; सकल्प
ऊर्मिमालिन् पु० समुद्र, महासागर (तरगो रूपी माळाओवाळो)
ऊर्व पु० वडवानल (२) वादळ (३) समुद्र (४) पितृओनो एक वर्ग
ऊर्वरा स्त्री० जुओ 'उर्वरा'
ऊलूक पु० जुओ 'उलूक'
ऊषर वि० खाराशवाळु (जमीन) (२) पु०, न०
ऊष्म, ऊष्मन् पु० जुओ 'उष्म', 'उष्मन्'
ऊष्मोपगम पु० उनाळो
ऊह् १ उ० तर्क करवो (२) मानवु; धारवु, अपेक्षा राखवी (३) विचारणा करवी
ऊह पु० तर्क, कल्पना (२) परीक्षण; विचारणा (३) अध्याहार
ऊहापोह पु० चर्चा, विचारणा

ऋ

ऋ १ प० [ऋच्छति] जवु (२) ३ प० [इयर्ति] जवु (३) मळवु, मेळववु (४) ऊचु चडाववु (अवाज) (५) ५ प० [ऋणोति] ईजा करवी (६) हुमलो करवो —प्रेरक० [अर्पयति] नाखवु, फेकवु, मूकवु (२) आपवु, सोपवु (३) पाछु आपवु (४) वीधवु
ऋक्थ न० धन; मिलकत
ऋक्ष पु० रीछ (२) पु०, न० नक्षत्र (३) पु० ब० व० सप्तर्षिना तारा
ऋक्षराज पु० रीछोनो राजा, जावुवान (२) चद्र (नक्षत्रोनो राजा)
ऋग्वेद पु० चार वेदोमानो पहेलो वेद
ऋग्वेदसहिता स्त्री० ऋग्वेदनी ऋचाओनो व्यवस्थित सग्रह
ऋच् स्त्री० ऋग्वेद (२) ऋग्वेदनी ऋचा, मत्र (३) स्तुति, स्तोत्र (४) पूजा (५) शोभा

ऋच्छ् ६ प० जवु (२) अकडाई जवु, जड थई जवु (३) मूर्च्छा पामवी
ऋज् १ आ० [अर्जते] जवु (२) प्राप्त करवु, मेळववु (३) स्थिर थवु (४) तदुरस्त थवु – बळवान थवु (५) १ प० [अर्जति] कमावु
ऋजु, ऋजुक वि० सीधुं, सरळ (२) प्रमाणिक (३) अनुकूळ
ऋजुता स्त्री० सरळता, प्रमाणिकपणुं
ऋण न० देवु, करज
ऋणमुक्त वि० देवामांथी छूटेलु
ऋणमुक्ति स्त्री०, ऋणशोधन न० देवामांथी छूटवु ते
ऋणिक, ऋणिन् वि० देवादार
ऋत वि० साचु, खरु (२) योग्य (३) प्रमाणिक (४) न० दैवी नियम, अचळ नियम (५) मोक्ष (६) सत्य
ऋतधामन् वि० शुद्ध के साचा स्वभाववाळु (२) अविनाशी पदवाळु
ऋतम् अ० खरे ज, साचे ज
ऋतंभर पु० परमेश्वर (सत्यने टकावी राखनार)
ऋतंभरा स्त्री० सत्य प्रज्ञा (विपर्यास विनानी)
ऋति स्त्री० गमन (२) मार्ग (३) निंदा (४) समृद्धि (५) आक्रमण (६) स्पर्धा (७) दुर्दैव (८) रक्षण
ऋतु पु० बे महिनानो नियत काळ (छ ऋतुओमानी दरेक) (२) स्त्रीओनो मासिक स्राव (३) जुओ 'ऋतुकाल'
ऋतुकाल पु० स्त्रीओना मासिक अटकाननो समय (२) ऋतुप्राप्ति पछीना १६ दिवसना गर्भाधाननो समय
ऋतुपर्ण पु० एक राजा
ऋतुमती स्त्री० रजस्वला स्त्री (२) [illegible]
ऋतुराज पु० वसंत ऋतु
ऋतुसंहार पु० ऋतुओनो समूह (२) कालिदासनुं ए नामनुं काव्य
ऋतुस्नाता स्त्री० ऋतुकाल पछी (चोथे दिवसे) नाहीने शुद्ध थयेली स्त्री
ऋते अ० सिवाय, वगर
ऋत्विज् पु० यज्ञ करनार ब्राह्मण
ऋद्ध वि० समृद्ध
ऋद्धि स्त्री० समृद्धि, वृद्धि (२) पार्वती; दुर्गा (३) सिद्धि
ऋध् ४,५ प० वधवु, समृद्ध थवु (२) [illegible]
ऋभुक्ष पु० इंद्र (२) स्वर्ग (३) वज्र
ऋषभ पु० बळद, आखलो (२) उत्तम श्रेष्ठ – ए अर्थमां समासने छेडे वपराय (उदा० 'पुरुषर्षभ')
ऋषभध्वज पु० शंकर
ऋषि पु० मंत्रद्रष्टा; ज्ञान पामनारो (२) मुनि, तपस्वी, साधु
ऋषिकुल्या स्त्री० पवित्र नदी
ऋष्टि स्त्री० तलवार, बेधारी तलवार (२) कोई पण शस्त्र ([illegible])
ऋष्य पु० धोळा पगवाळु हरण

ॠ, ऌ, ॡ

ए

ए अ० संबोधन, स्मृति, दया, ईर्ष्या, तिरस्कार –ए भाव दर्शावे
ए (आ+इ) २ प० आववु (२) पामवु (दशा इ०)
एक स० ना०, वि० एक (२) एकलु (३) ए ज; जुदु नहि तेवु (४) स्थिर, न बदलायेलु (५) अद्वितीय, असामान्य (६) मुख्य, श्रेष्ठ (७) बे अथवा घणामाथी एक (८) समासमा वच्चे 'फक्त' एवा अर्थमा वपराय (उदा० दोषैकदृक्) (९) ब०व० बीजा; केटलाक
एकक वि० एकलु (२) ए ज
एककार्य वि० एक ज कार्य करनारु (साथीदार) (२) एक ज उपयोगवाळु
एकचक्र वि० एक ज पैडावाळु (सूर्यनो रथ) (२) एक ज राजाना अमल हेठळनु
एकचर वि० एकलु फरतु के रहेतु (२) पु० सन्यासी
एकचारिणी स्त्री० पतिव्रता स्त्री
एकचित्त, एकचेतस् वि० एकाग्र चित्तवाळु, एक ज लक्षमा तल्लीन थयेलु
एकच्छत्र वि० एक ज राजावाळु
एकजाति पु० शूद्र [एक ज कुटुंबनु
एकजातीय वि० एक ज जातनु अथवा
एकतम वि० घणामाथी एक
एकतर वि० बेमाथी एक, बेमानु एक
एकतस् अ० एक बाजुएथी; एक तरफथी (२) एके एके
एकता स्त्री० ऐक्य
एकतान वि० जुओ 'एकचित्त'
एकत्र अ० एक स्थळे (२) बधा मळीने
एकत्र – अपरत्र अ० एक बाजु – बीजी बाजु
एकदंडिन् पु० सन्यासी
एकदा अ० एक वार; एक वखत (२) एक ज समये; एक साथे [होय एवुं
एकदृश्य वि० जोवा माटेनु एकमात्र पात्र
एकदृष्टि स्त्री० स्थिर नजर
एकदेश वि० एक ज जगाए रहेतु (२) पुं० एक भाग – अवयव (आखानो)
एकधा अ० एक रीते (२) एकले हाथे (३) एकदम; एक ज वखते (४) कोईक वार
एकनिष्ठ वि० एक ज वस्तुमा निष्ठा के वफादारीवाळु (२) एक ज वस्तुमा एकाग्र थयेलु
एकपत्नी स्त्री० पतिव्रता स्त्री
एकपदी स्त्री० केडी, पगरवट
एकपार्थिव पु० एकमात्र – सर्वसत्ताधीश राजा
एकभक्ति वि० एक ज देवमा भक्ति के निष्ठावाळु (२) स्त्री० रोज एक ज टंक खावु ते
एकभार्या स्त्री० जुओ 'एकपत्नी'
एकभाव पु० एक ज भावना के निष्ठा होवी ते
एकभुक्त न० रोज एक वखत खावु ते
एकमनस् वि० एक ज – समान विचारवाळु (२) एकाग्र, एकचित्त
एकरस वि० एक ज वस्तुमा रस के आनंदवाळु (२) एक ज रस – प्रीतिवाळु (३) स्थिर, दृढ, वफादार
एकल वि० एकलु, एकाकी
एकवाक्य न० एकमती, सर्वानुमति
एकवारम् अ० एकदम; तरत ज (२) एक वखत; एक ज वखत
एकवीर पु० श्रेष्ठ योद्धो; मुख्य योद्धो
एकवेणी स्त्री० (पतिना वियोगमा) वाळने एक ज जूडा रूपे राखवा ते

एकशः अ० एक एक करीने
एकहायन वि० एक वर्षनी वयनु
एकाकिन् वि० एकलु
एकाक्ष वि० एक धरीवाळु (२) एक आखवाळु (३) पु० कागडो
एकाक्षर वि० एक अक्षरवाळु (२) न० गूढ मत्र ॐ
एकाग्र वि० एकलक्षी (२) तल्लीन
एकातपत्र वि० एकछत्र, सार्वभौम
एकायन वि० मात्र एकथी ज जवाय एवु (साकडु) (२) एकाग्र, एक ज अवलबनवाळु (३) न० एकात स्थळ (४) मळवानु सकेतस्थान (५) एकमात्र लक्ष के ध्येय (६) एक ज प्रकार; समानता (७) व्यावहारिक नीति
एकार्णव पु० सघळु महासागर रूप थई रहे ते, प्रलय
एकार्थ वि० एक ज अर्थ के हेतुवाळु
एकात वि० कोईना अवरजवर विनानु (२) एक बाजुनु, एकाकी (३) एक ज बाजु अथवा वस्तुने लगतु, 'अनेकात'थी विरुद्ध एवु (४) अतिशय; अत्यत (५) एकनिष्ठ (६) निश्चित; अटळ (७) पु० एकात स्थान (८) बीजा सौथी अलगपणु (९) निश्चित – अटळ नियम के सिद्धान्त (१०) एक ज लक्ष्य के मर्यादा (११) न० एक ज निश्चित नियम के सिद्धात
एकांततस्, एकांतम् अ० चोक्कसपणे, मात्र, फक्त (२) अत्यत, तद्दन (३) अलग होय तेम, एकलु ज होय तेम
एकातर वि० वच्चे एक आतरो पडे तेवु; क्रममा वच्चे एक मूकीने आवतु
एकांतिक वि० छेल्लु, छेवटनु
एकांतिन् वि० एकनिष्ठ
एकांते, एकांतेन अ० जुओ 'एकांततस्'
एकिक वि० एकलु
एकीकृ ८ उ० एकठु करवु (२) जोडवु
एकैक वि० एक एक; दरेक
एकैकशः अ० जुदु जुदु, एके एके
एकोदर पु० सगो भाई
एकोदरा स्त्री० सगी बहेन
एकोन वि० एक ओछु होय तेवु
एज् १ आ० धूजवु; कपवु (२) गतिमान थवु (३) १ प० प्रकाशवु
एडक पु० घेटो
एडुक, एडूक पु०, न० हाडका वगेरे जेवा अवशेष उपर रचेलु मदिर
एण, एणक पु० एक जातनो काळो मृग
एतद् स० ना०, वि० आ, ए, पेलु (बोलनारनी नजीकनु)
एतदीय वि० आनु, एनु; पेलानु
एतर्हि अ० हवे, हमणा
एतादृक्ष, एतादृश् (–श) वि० आवु; आ प्रकारनु
एतावत् वि० आटलु, एटलु
एध् १ आ० वधवु (२) आबाद थवु
एध पु०, एधस् न० बळतण, ईंधण
एनस् न० पाप
एरंड पु० दिवेलो
एला स्त्री० एलचीनो छोड (२) एलची
एव अ० मात्र; फक्त; ज
एवम् अ० आ प्रमाणे, आ रीते
एवंविध वि० एवु; ए जातनु
एषण न०, एषणा स्त्री० चाहना; इच्छा (२) आजीजी, विनति
एषणीय वि० इच्छवा योग्य
एषा स्त्री० इच्छा
एषिन् वि० इच्छावाळु
एष्टव्य वि० इच्छवा योग्य (२) न० इच्छा

ऐ

ऐ अ० संबोधन, आमत्रण के स्मृति दर्शावतो उद्‌गार
ऐकमत्य न० एकमत होवु ते
ऐकागारिक पु० चोर (एकला–सूना घरमा पेसनार)
ऐकाग्र्य न० एकाग्रता
ऐकात्म्य न० एकात्मता, अभेद; एक-स्वरूपत्व (२) परमात्मा साथे अभेद (३) आत्मानु एक होवापणु
ऐकांतिक वि० सपूर्ण, पूरेपूरु (२) निश्चित, चोक्कस; अवश्यंभावी (३) अलग, खानगी
ऐकांत्य न० सख्य, मित्रता (२) निश्चितता, अलगता
ऐक्य न० एकता (२) एकमती (३) अभेद (आत्मा अने परमात्मानो)
ऐक्ष्वाक वि० इक्ष्वाकु राजाना वशनु
ऐच्छिक वि० वैकल्पिक; मरजियात (२) स्वेच्छानुसारी; पोतानी मरजी मुजबनु
ऐणेय वि० मादा काळियारनु (२) पु० काळियार [परपरागत
ऐतिहासिक वि० इतिहासने लगतु (२)
ऐतिह्य न० परंपरागत वात के वर्णन
ऐदंपर्य न० मुख्य तात्पर्य
ऐन वि० सूर्यनु
ऐभ वि० हाथीनु; हाथी सबधी
ऐरावण, ऐरावत पु० इद्रनो हाथी
ऐलविल पु० कुबेर
ऐश वि० शकर सबधी (२) राजा सबधी
ऐशान वि० शकरनु
ऐशानी स्त्री० ईशान खूणो
ऐश्वर वि० ईश्वरनु; ईश्वरी (२) शकरनु
ऐश्वर्य न० ईश्वरपणु (२) सर्वोपरीपणु (३) मोटाई; साहेबी (४) विभूति; सपत्ति
ऐहलौकिक वि० आ लोकनु, आ दुनियानु, सासारिक
ऐहिक वि० आ दुनियानु, आ लोकनु, सासारिक (२) स्थानिक
ऐंदव वि० चद्रनु [अर्जुन के वालि
ऐंद्र वि० इद्रनु, इद्र सबधी (२) पु०
ऐंद्रजालिक वि० मायावी, जादुई; इद्रजाळ सबधी (२) पु० जादुगर
ऐंद्रि पु० (इन्द्रनो पुत्र) जयत, अर्जुन के वालि (२) कागडो [इद्रियोनु
ऐंद्रिय, ऐंद्रियक वि० इद्रियग्राह्य (२)
ऐंद्री स्त्री० पूर्व दिशा (२) इद्राणी

ओ

ओ अ० सबोधन, स्मरण, अनुकपा –ए भाव दर्शावे
ओक पु० घर; निवासस्थान (२) आश्रय
ओकस् न० घर (२) आश्रयस्थान
ओघ पु० पूरनु पाणी, प्रवाह (२) जळनो वेग (३) ढगलो, जथो
ओज, ओजस् न० प्रकाश, तेज (२) बळ, प्रतिभा, पराक्रम (३) जीवन-शक्ति, जननशक्ति, पौरुष (४) शुक्र धातुमाथी काति अने प्रभावरूपे विराजती शरीरनी एक धातु
ओजस्वत्, ओजस्विन् वि० तेजस्वी
ओत ('आ+वे'नु भू० कृ०) वि० वणेलु
ओतप्रोत वि० एकबीजानी साथे परोवायेलु–वणायेलु [(२) खीर
ओदन पु०, न० भात, राधेला चोखा
ओम् पु० वेदनो पहेलो अने पवित्र उच्चार, प्रणव–ॐ (२) अ० समति,

स्वीकार, आज्ञा, आरभ, निवारण, कल्याण —ए भाव दर्शावे
ओषधि स्त्री० वनस्पति (२) औषधिमा वपराती वनस्पति
ओषधिनाथ, ओषधिपति पु० चद्र
ओषधी स्त्री० जुओ 'ओषधि'
ओष्ठ पु० होठ
ओष्ठ्य वि० होठनु, होठनी मददथी [बोलातु (व्या०)

औ

औ अ० बोलाववामा, विरोध दर्शाववामां के निर्णय बताववामा वपरातो उद्‌गार
औचिती स्त्री०, **औचित्य** न० उचितपणु, योग्यता
औज्ज्वल्य न० उज्ज्वळता (२) अजवाळु
औत्पातिक वि० अनिष्ट, उत्पात के दुर्भाग्य सूचवनारु
औत्सुक्य न० अत्यत आतुरता; उत्सुकता (२) उत्कट इच्छा (३) चिंता (४) खत
औदरिक वि० खाउधरु
औदार्य न० उदारता, भव्यता (२) श्रेष्ठता, महत्ता (३) अर्थगाभीर्य
औदासीन्य, औदास्य न० बेदरकारी, उपेक्षा (२) विराग, उदासीनता (३) एकलापणु
औद्धत्य न० उद्धतपणु; धृष्टता
औद्वाहिक वि० लग्न सबधी (२) लग्नमा मळेलु (३) न० कन्याने मळेली भेट
औधस्य न० दूध
औपकार्या स्त्री० तबू, मडप
औपचारिक वि० गौण, लाक्षणिक; आलकारिक (२) उपचारने लगतु – उपचार पूरतु ज
औपदेशिक वि० उपदेश करीने निर्वाह चलावनारु (२) न० उपदेश करीने मेळवेलु धन
औपपत्तिक वि० तैयार (२) योग्य (३) उपपत्तिवाळु, तर्कशुद्ध
औपम्य न० उपमा (२) सादृश्य; समानता (३) तुलना
औपयिक वि० योग्य; घटित (२) प्रयत्न- [पूर्वक मेळवेलुं
औपवाह्य वि० सवारी माटेनु (२) पुं० राजानो हाथी (३) राजानुं वाहन
औपायिक वि० जुओ 'औपयिक'
औरस वि० पोतानी परणेली स्त्रीथी थयेलु (सतान) (२) शारीरिक (३) कुदरती; स्वाभाविक [बनावेलु
और्ण, और्णक, और्णिक वि० ऊननुं; ऊननु
और्ध्वदेह न० प्रेतसस्कार; मरणसस्कार
और्ध्वदेहिक, और्ध्ववैहिक वि० प्रेत सबधी (२) परमात्मा सबधी (३) न० प्रेतसस्कार (४) परलोक माटे उपयोगी एवु यज्ञ—दान आदि कर्म
और्व पु० वडवानल
औशन, औशनस वि० शुक्राचार्यनु; शुक्राचार्य सबधी
औशनसी, औशनी स्त्री० देवयानी
औशीर न० शय्या, पथारी (२) आसन (३) वीरणवाळानो बनावेलो लेप
औषध न० वनस्पति (२) ओसड; दवा
औषधि (–धी) स्त्री० जुओ 'ओषधि'
औषस वि० प्रात.काळ संबधी
औष्ट्रक न० ऊटोनो समूह
औष्ट्रिक वि० ऊटनु (२) पु० घाची-तेली
औष्ठ्य वि० जुओ 'ओष्ठ्य'
औष्ण्य, औष्म्य न० गरमी; उष्णता

क

क नाम के विशेषणने लागतो तद्धित प्रत्यय – अल्पता के वहाल बतावे छे; अर्थमा कशो फेर कर्या वगर पण लागे छे (उदा० बालक) (२) पु० ब्रह्मा (३) न० सुख, आनद (४) पाणी

ककुद् स्त्री०, **ककुद** पु०, न० पर्वतनु शिखर; टोच (२) खूध (३) राजचिह्न (छत्र, चामर वगेरे) (४) मुख्य, श्रेष्ठ (व्यक्ति)

ककुदिन् वि० श्रेष्ठ; मुख्य

ककुद्मत्, ककुद्मिन् वि० खूधवाळु (२) पु० पर्वत (३) आखलो

ककुभ् स्त्री० दिशा (२) शोभा, सौंदर्य (३) शिखर

कक्ष पु० बगल, काख (२) पासु, पडखु (३) स्त्रीनो कदोरो (४) वननो अतर्भाग (५) सूकु घास (६) राजानु अत पुर (७) आसपास आवेली भीत (८) ग्रहनो भ्रमणमार्ग (९) कछोटो (१०) न० नक्षत्र, तारो (११) पाप

कक्षा स्त्री० कमर, केड (२) कमरपटो; कदोरो (३) उत्तरीय वस्त्र (४) भीत; आसपासनी भीत (५) वाडो, चोक; आगणु (६) सादृश्य (७) घरनो मध्य-भाग, एकात भाग (८) पासु, पडखु (९) स्पर्धा (१०) वस्त्रनी किनारी; कोर (११) अत पुर

कक्षाग्नि पु० दावानळ [जगल

कक्ष्य न० त्राजवानु पल्लु (२) सूका घासनु

कक्ष्या स्त्री० तग; दोरडु (हाथी के घोडानु) (२) कदोरो (३) महेलनु अत पुर (४) दीवाल; भीत (५) कछोटो (६) समानता

कच् १ उ० बाधवु (२) प्रकाशवु (३) १ प० अवाज करवो

कच पु० केश, वाळ

कचग्रह पु० वाळ खेंचवा ते [लडवु ते

कचाकचि अ० एकबीजाना वाळ पकडीने

कचाचित वि० छूटा केशवाळु

कच्चित् अ० 'इष्ट उत्तर आपशे' ए अर्थमा प्रश्न पूछवामा वपराय छे (२) हर्ष, विकल्प, हेतु अने मगलप्रसग –एवो भाव दर्शावे

कच्छ पु०, न० किनारो; किनारानो प्रदेश, भेजवाळो भाग (२) कछोटो

कच्छप पु० काचबो

कच्छपी स्त्री० काचबी (२) सरस्वतीनी वीणा (३) वीणा

कच्छु (–च्छू) स्त्री० खस (रोग)

कज न० कमळ [अजन (३) शाही

कज्जल न० काजळ, मेश (२) आखनु

कट पु० एक तृण, तेनी सादडी (२) हाथीनु गडस्थळ – लमणो (३) द्यूतमा पासा फेकवानी एक रीत (४) श्रोणी; नितब (५) कटाक्ष (६) शब के तेनी ठाठडी (७) अतिशयता

कटक पु०, न० कडु, हाथनु घरेणु (२) कमरपटो, कदोरो (३) सादडी (४) पर्वतनी खीण आगळनो सपाट भाग (५) पर्वतनी भेखड के धार (६) हाथीना दतूशळ उपरनु कडु (७) सैन्य (८) छावणी

कटकिन् पु० पर्वत

कटन न० घरनु छापरु के छाज

कटप्रभेद पु० मद झरवा माडवो ते

कटाक्ष पु० वक्रदृष्टि, तीरछी आखे जोवु ते (प्रेम, सकेत के क्रोधमा)

कटारिका स्त्री० नानी कटार

कटाह पु० कढाई (२) घडानु ठीकरु

कटि स्त्री० कमर, केड (२) गडस्थळ (३) थापो, कूलो
कटितट पु० नितंब-प्रदेश
कटित्र न० घूघरीवाळो कदोरो (२) केड उपर वीटवानु वस्त्र
कटिशृंखला स्त्री० घूघरीवाळो कदोरो
कटिसूत्र न० केडनो पटो – कदोरो
कटी स्त्री० जुओ 'कटि'
कटु वि० कडवु (२) तीखु (३) तीव्र वासवाळु (४) दुर्गंधवाळु (५) ईर्ष्याळु; मत्सरवाळु (६) विकराळ, उग्र, दारुण (७) प्रतिकूळ, दु:खद (८) न० अकार्य; दुराचरण (९) ठपको, दूषण, आरोप
कटुक वि० कडवु (२) तीखु (३) अप्रिय; प्रतिकूळ
कटोदक न० मरण पाछळ अपाती जलांजलि (२) हाथीनो मद
कठिन वि० कठण, सखत (२) कठोर; निर्दय (३) दु:खदायक, असह्य (४) सखत; तीव्र (५) अघरु; मुश्केल (६) न० तपेलु; दोणी (२) टचली आगळी
कठिनिका, कठिनी स्त्री० खडी, चाक
कठोर वि० कठण, सखत (२) निर्दय (३) विकसित, पूर्ण
कडंकरीय, कडंगरीय वि० गोतर खवडाववा योग्य (२) पु० गाय, भेंस इ० ढोर
कडार वि० पीळाश पडतु, बदामी (२) गर्विष्ठ (३) पु० नोकर
कण् १ प० जवु (२) नाना थवु (३) रोवु, अनाज करवो (४) १० प० आंख मीचवी
कण पु० दाणो (२) लेश, सूक्ष्म भाग (३) धूळनी रजकण (४) जळबिंदु (५) अल्प संख्या (६) धान्यनु कणसलु (७) अग्निनो तणखो
कणप पु० भाला जेवु एक हथियार (२) अग्निवळथी लोढानी गोळीओ छोडतु हथियार
कणशस् अ० नाना कणमा – टीपे टीपे दाणे दाणे
कणिक पु० जुओ 'कण'
कणीका स्त्री० नानो कण; नानु बिंदु
कतम स० ना०, वि० कयु – कोण (अनेकमाथी)
कतर स० ना०, वि० (बेमाथी) कयुं – कोण
कति स० ना०, वि० केटली संख्यानु (ब० व०मा ज) (२) 'चित', 'चन' अने 'अपि' साथे वपराता 'केटलुक' एम अनिश्चितार्थ बतावे
कतिपय वि० केटलाक, थोडाक (अमुक निश्चित संख्या –एवो भाव बतावे)
कतिविध वि० केटला प्रकारनु
कत्ताशब्द पु० पासा फेकवानो अवाज
कत्थ् १ आ० बडाई मारवी (२) वखाणवुं (३) निंदा करवी
कत्थन वि० बडाईखोर (२) न० बडाश
कथ् १० उ० कहेवु (२) वातचीत करवी (३) जणाववु, दर्शाववु (४) वर्णन करवु, वखाणवु (५) खबर आपवी; फरियाद करवी
कथक वि० कहेनारु; बोलनारुं; वर्णवनारुं (२) पु० वक्ता (३) पुराणी (४) नट अने गायक
कथन वि० कहेनारु, वातोडियु (२) न० कहेवु ते, बोल (३) वर्णन
कथम् अ० केवी रीते, कई रीते, क्याथी (२) 'शु', 'हें', एम आश्चर्य दर्शावे (३) 'इव', 'नाम', 'नु', 'वा', 'स्वित्' साथे 'एवु ते शी रीते होय ?', 'एम ते केम होय ?'–एवो अर्थ दर्शावे (४) 'चित्', 'चन' अने 'अपि' साथे 'जेम तेम करीने', 'गमे तेम' – एवो अर्थ दर्शावे (५) भाग्ये; विरल ज
कथंकारम् अ० केवी रीते, केम करीने
कथा स्त्री० वार्ता, कहाणी (२) वृत्तांत (३) वर्णन; उल्लेख (४) वातचीत; संभाषण (५) विवाद, चर्चा
कथानक न० नानी वार्ता

कथाप्रबंध पु० वार्ता, कथा
कथाप्रसंग पु० वातचीतनो प्रसंग (२) मान्त्रिक, विषवैद्य
कथामात्र, कथाविशेष, कथाशेष वि० मरी गयेलु (जेनी मात्र वात ज बाकी रही होय तेवु) [प्रसग
कथांतर न० बीजी कथा (२) वातचीतनो
कथित ('कथ्'नु भू०कृ०) वि० कहेलु; वर्णवेलु (२) न० कथन, वातचीत
कथीकृत वि० जुओ 'कथामात्र'
कद् अ० 'कु'ने बदले समासना प्रथम पद तरीके 'दुष्टता', 'अल्पता', 'नीचता', 'अपूर्णता', 'दोष', 'खामी' —ए अर्थोमा लागे
कदक न० छत, चदरवो
कदन न० नाश; कतल [जुलम
कदर्थन न०, **कदर्थना** स्त्री० पीडा; त्रास;
कदर्थित वि० तिरस्कृत; अपमानित (२) त्रास पमाडेलु (३) निरुपयोगी
कदर्य वि० कजूस, कृपण (२) तुच्छ; हलकु (३) अणगमतु, खराब (४) पु० कजूस माणस
कदल, कदलक पु० केळ
कदलिका स्त्री० धजा (२) केळ
कदली स्त्री० केळ (२) एक जातनु हरण (३) हाथी उपरनी धजा
कदंब पु० कदब वृक्ष (मेघगर्जनाथी तेने कळीओ बेसती मनाय छे) (२) न० समूह [फूल (३) समूह
कदंबक पु० कदब वृक्ष (२) न० कदबनु
कदा अ० क्यारे (२) 'अपि', 'चन' अने 'चित्' साथे 'कोई वार', 'एक वार' —एवो अर्थ बतावे
कदाचार पु० खराब वर्तन
कदापि अ० कोई वार, कोईक वार
कदुष्ण वि० थोडु गरम, नवशेकु (२) कठोर (शब्द)
कद्रु (–द्र) वि० पीळाश पडता बदामी रगनु (२) काबरचीतरु (३) स्त्री० कश्यपनी पत्नी (नागोनी मा)
कनक न० सोनु
कनकदंड न० राजछत्र
कनकपट्ट न० जरीनु वस्त्र
कनकपत्र न० सोनानु एरिंग; एरिंग
कनकपर्वत पु० सुमेरु पर्वत
कनकमय वि० सोनानु बनेलु
कनकसूत्र न० सोनानो हार, कठी
कनकाचल पु० सुमेरु पर्वत
कनकांगद न० सोनानु कडु
कनिष्ठ वि० सौथी नानु, सौथी ओछु (२) उमरे सौथी नानु
कनिष्ठिका स्त्री० टचली आगळी
कनीयस् वि० वधारे नानु (बेमा)
कन्यका स्त्री० कन्या (२) दस वर्षनी छोकरी [हलकु
कन्यस् वि० नानु (उमरमा) (२) नीच;
कन्या स्त्री० छोकरी, कुवारी छोकरी (२) दस वर्षनी छोकरी
कपट पु०, न० छळ, प्रपच
कपटप्रबध पु० छेतरवानी युक्ति, प्रपच
कपर्द, कपर्दक पु० कोडी (२) जटा
कपर्दिका स्त्री० नानी कोडी
कपर्दिन् पु० (जटाधारी) शकर
कपाट पु०. न० बारणु, कमाड
कपाटवक्षस् वि० (कमाड जेवी) पहोळी छातीवाळु
कपाल पु०, न० खोपरी, खोपरीनु हाडकुं (२) घडानु ठीकरु (३) एक जातनी सधि (सरखी शरतोवाळी)
कपालपाणि, कपालभृत्, कपालमालिन्, कपालशिरस् पु० शकर
कपालिका स्त्री० माटीना वासणनो टुकडो — ठीकरु
कपालिन् वि० खोपरीवाळु (२) खोपरीओ पहेरनु (३) पु० शकर
कपि पु० वानर

कपिकेतन पु० जुओ 'कपिध्वज'
कपित्थ पु० कोठानु झाड (२) न० कोठु
कपिध्वज पु० अर्जुन (धजा उपर हनुमान होवाथी)
कपिरथ पु० रामचद्र (२) अर्जुन
कपिल वि० घेरा बदामी रगनु (२) पु० साख्यदर्शनना प्रणेता मुनि
कपिश वि० रतूमडु, बदामी रगनु
कपिंजल पु० चातक (२) तेतर
कपींद्र पु० हनुमान (२) सुग्रीव (३) जाबुवान [पण पखी
कपोत पु० कबूतर (२) होलो (३) कोई
कपोतवृत्ति स्त्री० आजीविकानो एक प्रकार (उपयोग जेटलु मेळवीने सचय न करवो ते)
कपोतहस्त पु० (भिक्षा) मागवा माटे के भयथी अमुक रीते हाथ जोडवा ते
कपोल पु० गाल (२) हाथीनु गडस्थल
कपोलकाष पु० जेनी साथे गाल के गडस्थळ घसवामा आवे ते
कपोलताडन न० (भूलनी कबूलात तरीके) गाल उपर तमाच मारवी ते
कपोलपालि(–ली) स्त्री० गालनी बाजु [विशाळ गाल के लमणा
कपोलभित्ति स्त्री० गाल अने लमणा (२)
कफ पु० वात, पित्त अने कफ ए त्रण धातुओमानो एक (२) खासी, उधरस (३) गळफो; बळखो [स्त्री० कोणी
कफणि, कफोणि पु०, स्त्री०, **कफोणी**
कबर वि० मिश्रित (२) जोडेलु, जडेलु (३) काबरचीतरु (४) पु० लट, वेणी
कबरी स्त्री० लट, वेणी
कबंध [illegible] न० माथा वगरनु धड (२) [illegible] ३) एक राक्षस
कम् १० [illegible] चाहवु (२) अत्यत इच्छवु
कमठ पु० [illegible]चवो
कमन वि० सुदर (२) कामुक (३) [illegible]वाळु (४) पु० प्रेमी, पति

कमनीय वि० सुदर; मनोहर (२) इच्छवा योग्य, इष्ट
कमल न० कमळ (२) जळ
कमलज पु० ब्रह्मा
कमलपत्राक्ष वि० कमळदळ जेवी आखोवाळु [–इद्र
कमलभृद्वाह पु० मेघ जेनु वाहन छे ते
कमला स्त्री० लक्ष्मी (२) सुदर स्त्री
कमलाकर पु० कमळनो समूह (२) कमलपूर्ण सरोवर [स्त्री
कमलाक्षी स्त्री० कमळ जेवा नेत्रवाळी
कमलापति पु० विष्णु
कमलालया स्त्री० लक्ष्मी
कमलासन पु० ब्रह्मा
कमलिनी स्त्री० कमळनी वेल (२) कमळनो समूह (३) कमळथी भरेलु सरोवर
कमली स्त्री० कमळनो समूह
कमलेक्षणा स्त्री० जुओ 'कमलाक्षी'
कमंडलु पु०, न०, **कमंडलू** स्त्री० कमडळ, सन्यासीनु जळपात्र
कमा स्त्री० शोभा, सौदर्य
कम्र वि० सुदर; मनोहर (२) कामासक्त
कर [illegible] समासने अते, उदा० [illegible] (२) पु० हाथ (३) हाथीनी सूढ (४) कर, खडणी (५) किरण (६) करो (वरसादनो)
करक पु० सन्यासीनु जळपात्र (कमडलु) (२) पु०, न० करो (वरसादनो)
करकमल न० कमळ जेवो सुदर हाथ
करका स्त्री० करो (वरसादनो)
करकिसलय पु०, न० कूपळ जेवो कोमळ हाथ (२) आगळी
करकुड्मल न० आगळी
करज पु० नख (हाथ उपरनो)
करट पु० हाथीनु गडस्थल (२) कागडो
करटक पु० कागडो
करटिन् पु० हाथी

करण वि० करनारु (२) पु० लहियो (३) न० करवु ते (४) कार्य, कर्म, कृत्य (५) कारण, हेतु (६) कोई पण क्रियानु साधन (७) इद्रिय (८) शरीर (९) दस्तावेज; खत; लेख (१०) ताल आपवो ते (सगीत०) (११) दिवसनो भाग (तिवा ११ करण होय छे) (१२) त्रीजी विभक्तिथी दर्शावातो अर्थ (व्या०)
करतल पु०, न० हथेळी
करतलगत वि० हाथमा रहेलु, हाथमानु
करतलामलक न० हाथमा रहेलु आमळु (तेनी जेम स्पष्ट जोई शकाय तेवु)
करताल पु०, **करतालक** न० हाथथी ताळी पाडवी ते (२) एक वाद्य – करताळ
करतालिका, करताली स्त्री० ताळी (२) ताल आपवा माटे अपाती ताळी (सगीत०) [आपनारु – सहायक
करद वि० कर आपतु, खडियु (२) हाथ
करपत्र न० करवत [आगळी
करपल्लव पु० कोमळ हाथ (२) कोमळ
करपाल पु० तलवार (२) गदा
करपीडन न० पाणिग्रहण
करपुट पु० अजलि, खोवो (२) ढाकणवाळी पेटी
करभ पु० हाथीनी सूढ (२) हाथीनु बच्चु (३) ऊटनु बच्चु (४) ऊंट (५) कोणीथी काडा सुधीनो हाथनो भाग
करभिन् पु० हाथी
करभोरु स्त्री० करभ (एटले के हाथीनी सूढ के हाथनो पाछलो भाग – तेना) जेवी सुदर जाघवाळी स्त्री
कररुह पु० हाथनो नख (२) तरवार
करवाल पु० तरवार
करवीर, करवीरक पु० कणेर, करेण (२) तरवार (३) स्मशान
करस्वन पु० ताळी पाडवी ते
करहाट पु० कमळनु मूळ के दाडो
करंक पु० हाडपिंजर (२) खोपरी (३) नानु पात्र (नाळियेरीना काचलानु) (४) (पान राखवानी) पेटी; एक पात्र
करंड पु० कडियो
करंडिका स्त्री० नानो कडियो
करंभ वि० मिश्र गधवाळु (२) सेकेलु; भूजेलु (३) पु० दही मिश्रित लोट (४) कादव [एक शिक्षा)
करंभवालुका स्त्री० गरम रेती (नरकनी
करंभा स्त्री० दही वलोववानी गोळी
कराग्र न० हाथनो आगलो भाग
कराघात पु० हाथ वडे करेलो प्रहार
कराल वि० भयकर; बिहामणु (२) मोटु; ऊँचु (३) तीव्र, उग्र (४) तीक्ष्ण, तीणु (५) विशाळ (६) दातरु
कराला स्त्री० दुर्गा [बिहामणु करेलु
करालित वि० भयभीत, त्रस्त (२)
करिका स्त्री० नखनो वलूरो
करिकुंभ पु० हाथीनु गडस्थळ
करिणी स्त्री० हाथणी
करिदंत पु० हाथीदात
करिन् पु० हाथी
करीर पु० वासनो फणगो – अकुर (२) रणमा थतो एक काटाळो छोड
करीष पु०, न० छाणु
करींद्र पु० श्रेष्ठ हाथी
करुण वि० दयाजनक, शोककारक (२) पु० करुणा, दया
करुणा स्त्री० दया, अनुकपा
करुणामय वि० करुणाथी भरेलु
करुणार्द्र वि० दयार्द्र, दयाळु
करुणाविमुख वि० निर्दय, निष्ठुर
करेणु पु० हाथी
करेणु (–णू) स्त्री० हाथणी
करोट न०, **करोटि** स्त्री० खोपरी
कर्क पु० काचबो (२) धोळो घोडो
कर्कट, कर्कटक पु० करचलो (२) वर्तुल काढवानु साधन, कपास

कर्कटि (–टी) स्त्री० काकडी, चीभडु
कर्कर वि० कठण, मजबूत (२) पु० हाडकु (३) मरडियो
कर्करी स्त्री० नाळचावाळु पात्र, झारी
कर्कश वि० कठोर, कठण (२) निर्दय (३) अत्यत, तीव्र (४) मजबूत, दृढ (५) अति आसक्त (६) व्यभिचारी
कर्कशा स्त्री० ककासियण, वढकारी
कर्कंधु (–धू) स्त्री० बोरडीनु झाड
कर्कारुक पु० तरबूचनो वेलो (२) न० तेनु फळ
कर्चूर न० सोनु (२) हरताळ
कर्ण पु० कान (२) सुकान (३) वासणनो कानो, हाथो के कडु (४) त्रिकोणमा काटखूणानी सामेनी वाजु
कर्णगोचर वि० साभळवामा आवे तेवु, साभळी शकाय तेवु
कर्णजप, कर्णजाप पु० चुगलीखोर
कर्णताल पु० हाथीए कान फफडाववा ते
कर्णधार पु० सुकानी
कर्णपथ पु० साभळी शकवानी मर्यादा
कर्णपरपरा स्त्री० एक कानेथी बीजे काने साभळवामा आववु ते
कर्णपाश पु० सुदर कान
कर्णपूर पु० काननी आसपास पहेरातु (फूल इ०नु) घरेणु
कर्णवेष्ट पु०, **कर्णवेष्टन** न० एक जातनु काननु घरेणु, एरिंग
कर्णशष्कुली स्त्री० काननो वहारनो भाग
कर्णाकर्णि अ० एक कानेथी वीजे काने
कर्णांतिक वि० काननी नजीकनु
कर्णिक वि० कानवाळु (२) जेना हाथमा सुकान छे तेवु (३) पु० सुकानी
कर्णिका स्त्री० काननु घरेणु (२) वचली आगळी (३) हाथीनी सूढनो अग्रभाग (४) कमळनो बीजकोश
कर्णिकाचल पु० सुमेरु पर्वत
...ार पु० एक वृक्षनु नाम (२) कमळकोश (३) न० कर्णिकार वृक्षनु पुष्प (सुदर रगवाळु होवा छता गंध विनानु होवाथी अणगमतु गणातु)
कर्णेजप पु० जुओ 'कर्णजप'
कर्णोपकर्णिका स्त्री० ऊडती वात
कर्तन न० कापवु ते, छेदन (२) कानवु ते
कर्तनी स्त्री० कातर
कर्तरिका, कर्तरी स्त्री० कातर (२) छरी, चप्पु (३) नानी तरवार
कर्तव्य वि० करवा योग्य (कार्य) (२) कापवा योग्य (३) न० कार्य, कर्म (४) फरज
कर्तृ वि० करनारु
कर्दम पु० कादव (२) कचरो (३) पाप
कर्पट पु०, न० जूनु के फाटेलु वस्त्र (२) कापड
कर्पण पु० एक शस्त्र
कर्पर पु० खोपरी (२) कढाई (३) माटीनु वासण (४) भागेला घडानु कलेडु – ठीवु [छोड
कर्पास पु०, न०, **कर्पासी** स्त्री० कपासनो
कर्पूर पु० कपूर
कर्बुर वि० कावरचीतरु (२) राखोडियु
कर्बुरित, कर्बूर वि० कावरचीतरु
कर्मकर पु० मजूर, कारीगर
कर्मकार पु० कारीगर; मजूर (२) लुहार
कर्मकांड पु०, न० धर्मकार्यो अने धर्मक्रियाओने लगतो वेदनो भाग
कर्मक्षम वि० कार्य करवाने समर्थ
कर्मठ वि० कार्यकुशळ (२) धार्मिक कर्मकाडमा मची रहेतु (३) उद्योगी
कर्मण्य वि० कार्यकुशळ; होशियार (२) न० उद्योग, प्रवृत्ति
कर्मन् पु० विश्वकर्मा (२) न० कार्य, क्रिया, काम (३) धधो, प्रवृत्ति (४) धर्मकर्म (नित्य-नैमित्तिक-काम्य) (५) नसीब, पूर्वकर्म (६) परिणाम, फळ (७) जेनी उपर क्रिया थती होय ते (व्या०)

कर्मपाक पु० जुओ कर्मविपाक
कर्मफल न० कर्मनु फळ – परिणाम
कर्मबंध पु०, **कर्मबंधन** न० कर्मनु बधन (२) कर्मना फळरूपे मळतो पुनर्जन्म
कर्मभूमि स्त्री० कर्म करवानु क्षेत्र (२) धर्मकर्म करवानो देश (भारतवर्ष)
कर्मयोग पु० उद्योग (२) यज्ञादि कर्मने अनुसरवा द्वारा मोक्ष मेळववानो मार्ग
कर्मविपाक पु० करेला कर्मनु फळ मळवु ते
कर्मसचिव पु० मत्री, प्रधान
कर्मसंग पु० सासारिक कर्मो अने तेमना फळो प्रत्येनी आसक्ति
कर्मसाक्षिन् पु० नजरे जोनार साक्षी (२) माणसना मारानरसा कर्म जोनार (सूर्य, चन्द्र, यम, काल अने पच-महाभूतो) [कार्यमा सफळता
कर्मसिद्धि स्त्री० कर्मफळनी प्राप्ति (२)
कर्मायतन न० इद्रिय, कर्मेंद्रिय
कर्मार पु० सराणियो, लुहार
कर्माशय पु० (सारामाठा) कर्मोनो सचय के तेनु स्थान
कर्मांत पु० कार्यनो अत; कर्मनी समाप्ति (२) धधोरोजगार (३) कार्यकर; सेवक
कर्मांतर न० चालु धर्मकार्य थोभ्यु होय ते वचगाळो (२) अन्य कर्म
कर्मांतिक पु० मजूर, कारीगर
कर्मिन् वि० उद्योगी (२) फळना हेतुथी धार्मिक कार्यो करनारु (३) पु० कारीगर [(२) कार्यकुशळ
कर्मिष्ठ वि० कर्म करवा उपर प्रीतिवाळु
कर्मेंद्रिय न० कर्म करवानी इद्रिय (हाथ, पग, वाणी, गुदा अने उपस्थ)
कर्वट पु० जिल्लानी राजधानी जेवु के बजारनु मोटु शहेर
कर्वर वि० कावरचीतरु
कर्शन वि० कृश बनावतु, पीडा करतु
कर्षक पु० खेड करनार, खेडूत
कर्षण न० खेडवु ते (२) खेचवु ते (३) दु ख देवु ते (४) एक शस्त्र (५) खेड; खेती
कर्षित वि० खेडायेलु (२) आकर्षायेलु (३) पीडा करायेलु (४) घसाई गयेलु
कर्षिन् वि० खेचनारु (२) आकर्षक (३) पु० खेडूत
कर्हि अ० क्यारे? कये वखते?
कर्हिचित्, कर्हिस्वित्, कर्ह्यपि अ० कदी पण, क्यारे पण
कल् १ आ० अवाज करवो (२) गणवुं (३) १० उ० पकडवु, लेवु, धारण करवु (४) गणतरी करवी, मापवु (५) धारवु, मानवु, गणवु, समजवु (६) प्रेरवु (७) १० प० हाकवु, धकेलवु (८) नाखवु, फेंकवु
कल वि० अस्पष्ट; मधुर (२) मिष्ट; धीमु; हळवु (३) झकार करतु; रणकतु (४) पूर्ण [कलबल; घोघाट
कलकल पु० कलरव, गुजारव (२)
कलकंठ वि० मधुर अवाजवाळु
कलत्र न० पत्नी, भार्या (२) नितव
कलधौत न० चादी, रूपु (२) सोनु
कलन वि० करनारु (समासने अते) (२) न० चिह्न (३) दोष (४) ग्रहण करवु ते (५) ज्ञान
कलना स्त्री० ज्ञान (२) ग्रहण करवु ते (३) पहेरवु – धारण करवु ते (४) उतारी नाखवु – काढी नाखवु ते
कलभ पु० हाथी के ऊटनु वच्चु (२) त्रीस वर्षनी वयनो हाथी
कलम पु० एक जातनी डागर (२) लेखणी
कलरव पु० मधुर ध्वनि
कलविंक पु० चकलो [महासागर
कलश पु०, न० लोटो, कळश (२)
कलशि (–शी) स्त्री० घडो, गोळी
कलस पु०, न० जुओ 'कलश'
कलसि (–सी) स्त्री० जुओ 'कलशि'
कलह पु० कजियो, ककास (२) युद्ध

कलहप्रिय वि० कलह जेने प्रिय छे तेवु (२) पु० नारद ऋषि

कलहस पु० राजहस (२) बतक

कलहातरिता स्त्री० पति साथे कलह करी रूसणु लई बेठेली स्त्री (पण अतरथी पस्ताती)

कलक पु० चिह्न, डाघ (२) बट्टो, लाछन (३) दोष, अपूर्णता

कलकित वि० कलकवाळु, कलक पामेलु

कला स्त्री० अश, भाग (२) सोळमो भाग (चन्द्रनो) (३) समयनो विभाग (१ मिनिट, ४८ सेकड, के ८ सेकड) (४) मूडी उपरनु व्याज (५) ललित कौशल्य के शिल्प (नृत्य, गीत वगेरे)

कलाधर, कलानिधि पु० चन्द्र

कलाप पु० जूडो, समूह (२) मोरना पीछानो समूह (३) कटिमेखला, कदोरो (४) भूषण (५) जटा (६) बाणनो भाथो

कलापक पु० जूडो, समूह (२) कदोरो (३) एक घरेणु (४) न० चार श्लोके भाव पूरो थतो होय तेवु काव्य

कलापिन् वि० बाणना भाथावाळु (२) कळा करेलु (मोर) (३) पु० मोर

कलाय पु० वटाणा

कलालाप पु० अव्यक्त मधुर अवाज (२) मधुर प्रिय वातचीत

कलावत् वि० कळाकुशळ (२) पु० चन्द्र

कलि पु० कजियो, कलह (२) युद्ध (३) कळियुग (४) पासानी एक टपकावाळी बाजु (५) स्त्री० कळी

कलिका स्त्री० कळी (२) चद्रनी कळा

कलिकार पु० नारदऋषि

कलित वि० लीधेलु, पकडेलु (२) भागेलु (३) वीणेलु, एकठु करेलु (४) रचेलु, बनावेलु (५) भेळवेलु; मेळवेलु (६) प्राप्त करेलु (७) गणेलु (८) छूटु पाडेलु (९) जाणेलु

कलिद्रुम पु० बहेडानु वृक्ष (२) देवदार

कलिल वि० व्याप्त, पूर्ण (२) मिश्रित; युक्त (३) गहन, अभेद्य (४) न० गोटाळो (५) ढगलो

कलिद पु० यमुना नदीनु उत्पत्तिस्थान – कलिद पर्वत [स्त्री० यमुना नदी

कलिदकन्या, कलिदतनया, कलिदसुता

कलुष वि० कादववाळु, मेलु, गदु (२) रूधायेलु, झखवायेलु (३) क्षुब्ध (४) दुष्ट, घातकी (५) विपरीत (६) न० पाप (७) मेल, गदकी; कादव

कलुषित वि० मेलु (२) कचवायेलु, रिसायेलु (३) दुष्ट, घातकी

कलेवर पु०, न० शरीर, देह

कल्क वि० दुष्ट, पापी (२) पु०, न० तेल वगेरेनो कचरो (३) कचरो, मेल (४) दभ, छेतरपिंडी (५) वाटीने बनावेलो लोदो, लूगदी (६) पाप (७) घूटीने करेलु बारीक चूर्ण

कल्कि, कल्किन् पु० विष्णुनो दशमो – छेल्लो अवतार

कल्प वि० शक्य, व्यवहारु (२) योग्य; साचु (३) दृढ, शक्तिमान (४) पु० शास्त्रनियम (५) सूचना, दरखास्त (६) अभिप्राय (७) धर्मकर्मनो विधि (८) विहित विकल्प (९) आचार (१०) एक वेदाग जेमा यज्ञक्रिया इ० नो उपदेश छे (११) महाप्रलय (१२) ब्रह्मानो दिवस (१००० युगनो) (१३) 'जेवु', 'सदृश', 'थोडुक ज ओछु' – एवा अर्थमा नाम के विशेषणने अते (उदा० 'प्रभातकल्पा')

कल्पक वि० विश्व-नियम प्रमाणेनु

कल्पक्षय पु० सृष्टिनो अत – प्रलयकाळ

कल्पतरु, कल्पद्रुम पु० इच्छेलु बधु आपतु मनातु स्वर्गनु वृक्ष

कल्पन न० रचना (२) विधान (३) करवु – आचरवु ते (४) कातरवु ते

कल्पना स्त्री० निश्चित करवु ते (२) आचरवु–अनुष्ठान करवु ते (३) रचना; गोठवण (४) शणगारवु ते (५) धारणा, ख्याल (६) कोई पण वावतनी मनमा थती प्रथम रचना

कल्पपादप पु० जुओ 'कल्पतरु'

कल्पलता, कल्पवल्ली स्त्री० कल्पवृक्षनी जेम इच्छेलु आपती मनाती लता

कल्पविद् वि० शास्त्रविधि जाणनारु

कल्पवृक्ष पु० जुओ 'कल्पतरु'

कल्पादि पु० सृष्टिनो आरभकाळ

कल्पांत पु० कल्पनो अत – जगतनो प्रलयकाळ

कल्पिक वि० योग्य, उचित

कल्पित वि० गोठवेलु, रचेलु (२) नक्की करेलु (३) तैयार करेलु, सज्ज करेलु (४) अटकळ करेलु, कल्पेलु

कल्मष वि० पापी, दुष्ट (२) मेलु, गदु (३) पु०, न० डाघो, मेल (४) पाप

कल्माष वि० रगबेरगी (२) धोळा अने काळा रगनु

कल्माषी स्त्री० यमुना नदी

कल्य वि० नीरोगी, तदुरस्त (२) सज्ज; तैयार (३) दक्ष, कुशळ (४) शुभ, अनुकूळ (५) न० परोढ (६) आवती काल (७) पु० उपाय (८) (अस्त्र) फेंकवु ते [तुच्छ वस्तु

कल्यवर्त पु० सवारनो नास्तो (२) न०

कल्याण वि० सुखी, सुभागी (२) मगळ, शुभ (३) सुन्दर (४) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ (५) प्रमाणभूत, साचु (६) न० सुख, सौभाग्य (७) सत्कर्म, पुण्य

कल्याणकृत् वि० कल्याण आचरनारु (२) शुभ (३) पुण्यशाळी

कल्लि अ० काले

कल्लोल पु० मोटु मोजु (२) आनद

कल्लोलिनी स्त्री० नदी

कल्हार न० धोळु कमळ

कव् १ आ० प्रशसा करवी (२) काव्य रचवु, वर्णन करवु (३) चीतरवु

कवच पु०, न० बख्तर (२) तावीज (३) मूठ-चोटमाथी रक्षण करतो मनातो मत्रोच्चार (हुम्–हूम)

कवर वि० जुओ 'कबर'

कवरी स्त्री० जुओ 'कबरी'

कवल पु०, न० कोळियो

कवलित वि० कोळियो करायेलु

कवाट पु०, न० जुओ 'कपाट'

कवि वि० सर्वज्ञ, क्रांतदर्शी (२) पु० ज्ञानी, विद्वान (३) कविता रचनार (४) शुक्राचार्य

कविका स्त्री० (घोडाना) मोढामा रहेतो लगामनो भाग

कविता स्त्री० काव्य, पदबध

कवोष्ण वि० कोकरवायु, नवसेकु

कव्य न० पितृओने अपातो बलि

कव्यवाह् (–ह) पु० अग्नि

कश पु० (मुख्यत्वे ब० व०मा) चाबुक

कशा स्त्री० चाबुक

कशिक पु० नोळियो

कश्मल वि० मेलु, गदु (२) अकीर्तिकर (३) न० खेद, निराशा (४) पाप

कश्मीरज पु० केशर

कष् १ उ० खणवु, घसवु (२) परीक्षा करवी (कसोटीना पथ्थर उपर) (३) ईजा करवी, नाश करवो

कष पु० खणवु – घसवु ते (२) कसोटी-नो पथ्थर

कषण न० घसवु ते, खणवु ते (२) कसोटी करवी ते (सोनानी)

कषा स्त्री० जुओ 'कशा'

कषाय वि० तूरु, कडूचु (२) सुवासित (३) गेरुवा रगनु, रगेलु (४) मधुर अवाजवाळु (५) पु०, न० कटाणो – कडूचो स्वाद (६) गेरुवो – भगवो रग (७) काट, मेल (८) कावो, उकाळो

(९)आसक्ति; वासना(१०)विलेपन (११)जडता, मूर्खता(१२)पु० राग
कषायित वि० रगवाळु, लाल रगनु
कष्ट वि० दुखमय, दुखकर (२) कठण, गहन (३) दुर्जय (४) न० दुख, सताप (५) महेनत, श्रम
कष्टम् अ० अरेरे! अफसोस!
कष्टसश्रय वि० कष्टयुक्त
कष्टि स्त्री० दुख, पीडा (२) कसोटी
कस्तुरिका, कस्तूरिका, कस्तूरी स्त्री० अमुक जातना हरणनी डूटीमाथी मळतो सुगधी पदार्थ
कह्लार न० धोळु कमळ
कंक पु० जेना पीछा शरपुख तरीके वपराय छे ते बगला जेवु पक्षी
कंकट, कंकटक पु० बख्तर (२) अकुश (हाथीनो) [ककणदोरो
कंकण पु० हाथे पहेरवानु कडु (२)
कंकणधर पु० वरराजा [वाळु घरेणु
कंकणी स्त्री० नानी घूघरी (२) घूघरी-
कंकत पु०,न०, **कंकतिका, कंकती** स्त्री० कासको [पक्षीना पीछावाळु बाण
कंकपत्र, कंकपत्रिन्, कंकवासस् पु० कक
कंकाल पु०, न० हाडपिंजर
कंकालशेष वि० हाडपिंजर ज मात्र रहयु होय तेवु
कंचुक पु० सापनी काचळी (२) कमखो; चोळी (३) कवच; बख्तर (४) शरीरने बराबर बधबेसतो जभ्भो
कंचुकित वि० बख्तर पहेरेलु
कंचुकिन् वि० बख्तरवाळु (२) पु० अत:पुरनो द्वारपाळ (३) साप
कंचुकीय पु० कचुकी (नाटय०)
कंचुलिका, कंचुली स्त्री० चोळी; काचळी
कंज पु० केश (२) ब्रह्मा (३) न० कमळ
कजर, कंजार पु० हाथी (२) सूर्य (३) ब्रह्मा (४) पेट (५) मोर
कंटक पु०, न० काटो (२) भोक, घोच (३) कोई पण वस्तुनी अणी (४) विघ्न; नडतर (५) रोमाच (६) नख (७) कटु वचन (८) माछलीनो काटो
कंटकित वि० काटावाळु (२) रोमाचित
कंटकिन् वि० काटावाळु (२) पीडा करनारु के देनारु
कंठ पु०, न० गळु (२) डोक (३) वासणनो काठो (४) अवाज (५) सामीप्य, निकटपणु
कंठगत वि० कठे आवेलु (प्राण) (२) कठ सुधी गयेलु – जतु
कंठाभरण न० गळानु आभूषण (हार इ०)
कंठाश्लेष पु० गळे आलिंगन
कंठी स्त्री० डोकमा पहेरवानु सेरवाळु एक घरेणु [(३) कबूतर
कंठीरव पु० सिंह (२) मद झरतो हाथी
कंठ्य वि० गळानु, कठनु
कडन न० (फोतरा काढवा) खाडवु ते
कडनी स्त्री० खाडणियो (२) सांबेलु
कंडिका स्त्री० नानो विभाग (२) फकरो
कडिल वि० मदमत्त (२) धृष्ट
कडु पु०, स्त्री०, **कंडू, कंडूति** स्त्री० वलूर, खंजवाळ
कंडूयन न० वलूरवु ते, खजवाळवु ते
कंडूल वि० खजवाळ ऊपडी होय तेवु (२) खूजली करे तेवु
कंतु पु० कामदेव (२) हृदय
कथा स्त्री० चीथरा सीवीने बनावेलु वस्त्र (तपस्वीओ पहेरे छे ते)
कंथाधारिन् पु० कथा पहेरनार तपस्वी
कंद पु०, न० जेमा खावानो गर होय तेवु मूळ – गाठ
कंदर पु०, न० गुफा, खीण
कंदरा(–री) स्त्री० गुफा
कंदर्प पु० कामदेव; मदन (२) प्रेम
कंदल पु०, न० नवो अकुर (२) गाल
कंदली स्त्री० केळ

कंदु पु०, स्त्री० भठ्ठी (२) दाणा भूजवानु पात्र
कंदुक पु० दडो (२) ओशिकुं
कदोट पु० नीलु कमळ [वादळु
कंधर पु० गरदन; गळु, डोक (२)
कधरा स्त्री० गळु, गरदन, डोक
कप् १ आ० कपवु, ध्रूजवु
कप पु० कपारो; ध्रुजारो
कपन वि० ध्रूजतु, कपतु (२) पु० शिशिर ऋतु (३) एक अस्त्र (४) न० ध्रूजवु ते
कपित ('कप्'नु भू० कृ०) वि० ध्रूजतु (२) कपावेलु, हलावेलु (३) न० कपवु ते
कप्र वि० कपतु, हालतु
कंवर वि० रगवेरगी, चित्रविचित्र
कंवल पु० कामळो
कवु वि० रगवेरगी, चित्रविचित्र रगतु (२) पु०, न० शख (३) कंकण
कंबुकंठी स्त्री० गळे शखना जेवी त्रण रेखावाळी स्त्री (भाग्यशाळी गणाय)
कंवुग्रीवा स्त्री० शखना आकारनी डोक (२) जुओ 'कवुकठी'
कवू वि० चोरी करनारु, लुच्चु (२) पु० चोर (३) कडु, ककण
कंवोज पु० शख (२) एक जातनो हाथी
कस पु०, न० कासु (२) प्यालो
कसक न० कासु
कंसद्विष्, कंसहन्, कंसारि पु० कसने मारनार (श्रीकृष्ण)
का स्त्री० पृथ्वी
काक पु० कागडो (२) निंद्य – हलको माणस (३) पाणीमा मात्र माथु वोळीने नाहवु ते
काकणी स्त्री० जुओ 'काकिणी'
काकतालीय वि० आकस्मिक; अणधार्यु ('काग वेसे ने ताड पडे' – तेना जेवु)
काकनिद्रा स्त्री० कागडा जेवी – जलदी जागी जवाय तेवी – निद्रा
काकपक्ष पु० जुलफु, कानशेरियु
काकपद न० (लखता रही गयेल) शब्द वगेरे उमेरवानु चिह्न (∧)
काकपुष्ट पु० कोयल
काकपेय वि० छीछरु
काकरुक, काकरूक वि० कायर, वीकण (२) पु० स्त्रीवश पुरुष
काकलि (–ली) स्त्री० कोमळ अने मधुर अवाज (२) मद अवाजवाळु एक वाद्य (चोरो ऊघता–जागतानी परीक्षा माटे वापरता कहेवाय छे)
काकवंध्या स्त्री० जेने एक ज वार प्रसव थाय तेवी स्त्री
काकारि पु० घुवड
काकिणि, काकिणिका, काकिनी स्त्री० कोडी (२) कोडी जेटली किमतनो सिक्को
काकी स्त्री० कागडी
काकु स्त्री० क्रोध, शोक के भयमा वोलता स्वरमा थतो फेरफार (२) करडाकी के व्यगमा वोलवु ते
काकुत्स्थ पु० ककुत्स्थनो वशज, सूर्यवशी राजाओने लगाडातु उपनाम
काकोदर पु० साप
काकोल पु० कागडो
काच पु० काच
काठिन, काठिन्य न० कठण होवापणु (२) कठोरता (३) अघरापणु
काण वि० एक आखवाळु (२) काणावाळु, फूटेलु
काणेलीमातृ पु० कुवारी मानो दीकरो
कातर वि० वीकण (२) व्याकुळ; क्षुब्ध (३) उत्सुक (४) भयथी चचळ वनेलु (आख इ०)
कातर्य न० भीरुता, वीकणपणु
कात्कृत वि० तिरस्कृत
कादंब पु० कलहस (२) वाण (३) न० कदव वृक्षनु फूल

कादंबर न० कदंबना पुष्पनो दारू
कादंबरी स्त्री० कदंबना पुष्पनो दारू (२) मद्य, दारू
कादंबिनी स्त्री० मेघपंक्ति
कानन न० अरण्य, जंगल
कानीन पु० कुंवारी कन्याने थयेलो पुत्र
कापथ पु० खराब मार्ग(२)कुमार्ग(ला०)
कापाल, कापालिक वि० कपाळनुं (२) पु० खोपरीनी माळा पहेरनार तथा पात्र तरीके वापरनार एक भिक्षु
कापुरुष पु० बीकण – बायलो पुरुष (२) अधम – तुच्छ पुरुष
कापेय वि० वानरनुं (२) न० वानरवेडा
काबंध्य न० कबंध – धड मात्र रहेवुं ते
काम पु० इच्छा, वासना (२) प्रेम, स्नेह (३) कामनानो विषय (४) विषय-सुखनी इच्छा – लालसा (५) चार पुरुषार्थमानो त्रीजो (६) कामदेव
कामकाम, कामकामिन् वि० विषयेच्छु
कामकार वि० इच्छानुसार वर्तनारुं, स्वेच्छानुसारी (२) पु० ऐच्छिक कार्य, स्वेच्छाथी करेलुं कार्य (३) फळनी इच्छाथी प्रेराईने कर्म करवुं ते
कामग वि० स्वेच्छाचारी
कामगति वि० इच्छेले स्थळे जई शके तेवुं, इच्छा मुजब गति करनारुं
कामचर, कामचार वि० इच्छा मुजब फरनारुं, बाधा विना जई शकनारुं
कामचार वि० अनियंत्रित, (२) पु० पोतानी मरजी मुजब वर्तवुं ते; स्वेच्छा-चार (३) विषयीपणुं (४) स्वार्थीपणुं
कामठ वि० काचबानुं
कामतस् अ० स्वैरपणे (२) जाणी जोईने; स्वेच्छाथी (३) कामवासनापूर्वक
कामद वि० इच्छेलुं आपनारुं
कामदा, कामदुह्, कामदुहा स्त्री० कामधेनु
कामदेव पु० कामवासनानो देव, मदन
कामधेनु स्त्री० मनकामना पूरी करनारी मनाती अलौकिक गाय
कामना स्त्री० वासना; इच्छा, अभिलाषा
कामनीय, कामनीयक न० रमणीयता
कामभोग पु० कामवासना तृप्त करवी ते
कामम् अ० इच्छा प्रमाणे (२) तृप्ति थाय त्यां सुधी (३) खुशीथी (४) भले ! हशे ! (५) धारो के, मानो के (६) निःसंशय, खरेखर (अनिच्छा के विरोधमां)
कामम् – न अ० 'आ सारुं . पण ए सारुं नहीं' – एवो अर्थ बतावे
काममूढ, काममोहित वि० कामवासना-ने वश बनेलुं; कामवासनाथी मूढ बनेलुं
कामयमान, कामयान, कामयितृ वि० कामी, कामासक्त
कामरूप वि० इच्छानुसार रूप धारण करनारुं (२) सुंदर; खूबसूरत [सक्त
कामवत् वि० कामी; प्रेमी (२) विषया-
कामवृत्त वि० विषयी; विषयासक्त (२) स्वेच्छाचारी [स्त्री० स्वेच्छाचार
कामवृत्ति वि० स्वेच्छानुसार वर्ततुं (२)
कामसख पु० वसंतऋतु (२) चैत्रमास
कामसखी स्त्री० चांदनी
कामसू वि० इच्छा पूर्ण करनारुं
कामसूत्र न० प्रेमप्रसंग, प्रेमप्रकरण (२) काम-पुरुषार्थ विषयक एक ग्रंथ
कामहैतुक वि० विषयभोगना हेतुवाळुं
कामातुर वि० कामवासनाथी पीडित
कामात्मन् वि० कामातुर
कामारि पु० (कामदेवने बाळनार) शिव
कामार्त वि० कामवासनाथी पीडित
कामांध वि० कामवासनाथी मूढ बनेलुं
कामिक वि० इच्छेलुं (२) इच्छा तृप्त करे तेवुं
कामित वि० इच्छेलुं (२) न० इच्छा
कामिन् वि० विषयी, विषयासक्त (२) इच्छावाळुं, इच्छतुं (३) पु० कामी पुरुष, प्रेमी

कामिनी स्त्री० प्रेमी स्त्री (२) सुदर स्त्री (३) कोई पण स्त्री
कामुक वि० इच्छुक (२) विपयी, कामी (३) पु० यार (४) कामी पुरुष
कामेप्सु वि० भोगनी इच्छावाळु
काम्य वि० इच्छवा योग्य (२) ऐच्छिक; खास हेतुथी करेलु ('नित्य'थी ऊलटु) (३) सुदर, रमणीय
काम्या स्त्री० इच्छा, कामना, धारणा
काय पु०, न० शरीर (२) वृक्षनु थड (३) समूह [करीने आवेलु
कायवत् वि० अवताररूपे – देह धारण
कायस्थ पु० ए नामनी ज्ञातिनो माणस (क्षत्रिय पुरुप अने शूद्र स्त्रीथी जन्मेल)
कायिक वि० शरीरने लगतु, शरीरनु
कायिका स्त्री० व्याज
कायिका वृद्धि स्त्री० गीरो मूकेल ढोर के मुद्दलना उपयोगथी व्याजरूपे मळतु जे कई ते
कायिन् वि० मोटा शरीरवाळु
कार वि० करनारु, रचनारु (समासने छेडे) (२) पु० वर्णने अते 'ते वर्ण के तेनो उच्चार' एवा अर्थमा (उदा० 'अकार') (३) रवानुकारी शब्दने अते 'ते रव' एवा अर्थमा (४) कार्य, कर्म (५) वल, यत्न
कारक वि० करनारु; करावनारु (समासने छेडे) (२) न० वाक्यमा नाम अने क्रियापद वच्चेनो अथवा नामनी साथे विभक्तिनो सबध धरावता शब्दो वच्चेनो सबध (छठ्ठी सिवायनी बधी विभक्ति)
कारण न० कार्यनी उत्पत्ति के प्रवृत्तिनु मूळ – बीज (२) हेतु, उद्देश (३) साधन (४) उत्पन्न करनार, जनक (५) मूळ तत्त्व (६) इद्रिय (७) शरीर (८) पूर्व वासना
कारणकारण न० आदि कारण, मूळ कारण (२) परमाणु
कारणकारितम् अ० –ने कारणे
कारणभूत वि० कारणरूप – साधनरूप बनेलु
कारणशरीर न० स्थूल-सूक्ष्म शरीरना मूळ कारणरूप देह (वेदात०)
कारणा स्त्री० तीव्र वेदना (२) प्रेरणा
कारणातर न० विशेष कारण (२) निमित्त कारण
कारंड, कारडव पु० एक जातनी बतक
कारा स्त्री० केद (२) केदखानु
कारागार, कारागृह, कारावेश्मन् न० केदखानु [क्रिया, कार्य
कारि पु० कारीगर, शिल्पी (२) स्त्री०
कारिका स्त्री० व्याकरण, दर्शनशास्त्र इ० ना सिद्धातोनु श्लोकबद्ध विवरण
कारित वि० करावेलु
कारिन् वि० करनारु, बनावनारु (समासने छेडे) (२) पु० कारीगर
कारु वि० शिल्पी, कारीगर
कारुणिक वि० दयाळु
कारुण्य न० करुणा, दया
कार्कश्य न० कर्कशता, कठोरता (२) निर्दयता, क्रूरता
कार्तस्वर न० सोनु
कार्तांतिक पु० ज्योतिषी
कार्तिक पु० कारतक मास
कार्तिकी वि० कारतक मासनु
कार्तिकेय पु० शकरना पुत्र – स्कद
कार्त्स्न्य न० सघळापणु, सकळपणु
कार्दम वि० कादववाळु
कार्पटिक पु० यात्राळु (२) सघ
कार्पण्य न० गरीबाई, दीनता (२) दया, अनुकपा (३) कृपणता
कार्पास वि० कपासनु बनावेलु, सुतराउ (२) पु०, न० कपासनु बनावेलु वस्त्र
कार्मण वि० कर्मकुशळ (२) न० जादु-विद्या, मत्र-औषधादिथी वशीकरण वगेरे करवु ते

कार्मुक न० धनुष्य
कार्य वि० करवा योग्य (२) न० करवानु होय ते, कामकाज (३) कर्तव्य, फरज (४) धंधो, प्रवृत्ति, साहस, जरूरी काम (५) धर्मकार्य (६) जरूर; गरज (७) प्रयोजन; हेतु (८) फरियाद (९) अनिवार्य परिणाम
कार्यकर्तृ पु० -ना हितमां काम करनारु
कार्यकारण न० कार्यनो खास हेतु-प्रयोजन (२) (द्वि० व०) कार्य अने कारण, हेतु अने प्रयोजन
कार्यकाल पु० कोई कार्य माटेनो उचित काळ, तक
कार्यगौरव न० कोई पण कार्यनी के प्रसंगनी अगत्य – महत्ता
कार्यचिंतक वि० विचारशील, डाह्यु
कार्यपदवी स्त्री० कार्यसरणी, कार्य करवानी रीत के क्रम
कार्यवशात् अ० हेतुसर, प्रयोजनथी
कार्यवस्तु न० अभिप्राय, उद्देश
कार्यविपत्ति स्त्री०, कार्यव्यसन न० असफळता, निष्फळता
कार्यहंतृ पु० कार्यमां विघ्न करनार, काम बगाडनार
कार्याकार्य न० करवा योग्य अने न करवा योग्य – सारु अने नरसु काम
कार्यार्थ न० कार्यनु निमित्त, कार्यनो हेतु
कार्यार्थिन् वि० काम पार पाडवानी इच्छा राखनारु (२) फरियाद करनारु
कार्श्य न० कृशता, दुर्बळता (२) ओछापणु (३) अल्पपणु (उदा० 'अर्थकार्श्य')
कार्षापण पु० एक सिक्को (२) एक वजन
कार्ष्ण वि० कृष्णनु, विष्णु संबंधी (२) कृष्ण-द्वैपायन व्यासनु
कार्ष्णायस वि० लोखंडनु बनावेलु (२) न० लोखंड
कार्ष्णि पु० कामदेव (कृष्णना पुत्र प्रद्युम्न तरीके) (२) शुकदेव
काल वि० काळु (२) पु० काळो रंग (३) समय (४) योग्य समय (५) समयविभाग (६) संहारकर्ता देव – रुद्र; शंकर (७) मृत्यु (८) मृत्युसमय (९) यम (१०) ईश्वर (११) दैव, नसीब (१२) आबोहवा, मोसम
कालकर्मन् न० मृत्यु (२) विनाश
कालकंठ वि० काळो डोकवाळु (२) पु० मोर (३) शंकर
कालकूट न० एक जातनु तीव्र विष (२) समुद्रमंथनमांथी नीकळेलु विष
कालक्रम पु० समयनु व्यतीत थवु ते (२) समय व्यतीत थवानो क्रम
कालचक्र न० काळनु सतत फरतु रहेतु चक्र (२) जिंदगीना वाराफेरा
कालज्ञ वि० योग्य समयने जाणनारु (२) पु० दैवज्ञ, जोषी
कालदंड पु० यमराजनो दंड; मृत्यु, मरण
कालधर्म, कालधर्मन् पु० समयने योग्य एवु कर्तव्य (२) काळनो नियम (३) अमुक समये अमुक परिणामो नीपजवा ते (४) मोत, यम
कालधौत न० सोनु के रूपु
कालनियोग पु० नियतिनो लेख – निर्णय
कालपर्यय पु० कालक्रम (२) कालातिक्रम, समयनु वीती जवु ते (३) कालनी विपरीतता
कालपाशिक पु० फांसी देनारो
कालयाप पु०, कालयापन न० कालक्षेप; ढील – विलंब करवा ते
कालयोग पु० नसीब
कालरात्रि (–त्री) स्त्री० घोर अंधारी रात (२) सृष्टिना प्रलयनी रात (दुर्गानु स्वरूप) (३) दिवाळीनी रात
कालविप्रकर्ष पु० बहु लांबो काळ जवो ते
कालसमन्वित, कालसमायुक्त वि० मृत
कालहरण न०, कालहानि स्त्री० विलंब
कालागरु न० काळु चंदन

कालाजिन न० काळा हरणनु चामडु
कालातिक्रम पु०, **कालातिक्रमण** न०, **कालातिपात, कालातिरेक** पु० मोडु करवु ते, विलब
कालातीत वि० जेनो समय वीती गयो होय तेवु, जूनु थई गयेलु
कालात्यय पु० विलब;वेळा वीती जवी ते
कालायस वि० लोखडनु बनेलु (२) न० लोखड
कालाववोध पु० समय अने सजोगनी [समज
कालांतक पु० यम
कालांतर न० वचगाळो, समयनो गाळो (२) वीजो समय
कालिका स्त्री० दुर्गा (२) काळु वादळ; काळा वादळोनो समुदाय
कालिमन् पु० काळाश
कालिंदी स्त्री० यमुना नदी
काली स्त्री० दुर्गा
कालुष्य न० मलिनता, गदापणु
कालेय, कालेयक न० एक सुगधी लाकडु; कालागरु
काल्पनिक वि० मात्र कल्पनामा रहेलु; कल्पित (२) कृत्रिम
काल्य वि० कालोचित (२) शुभ; अनुकूळ (३) न० परोढ, परोढियु
काव्य न० रसात्मक वाक्य के पदबध (२) पद्य, कविता (३) पु० असुरोना गुरु शुक्राचार्य
काश् १ आ० प्रकाशवु, चळकवु (२) देखावु (३) -ना जेवु देखावु
काश पु० एक जातनु घास (सादडी वगेरेमा वपरातु) (२) न० तेनु फूल
काशिन् वि० (समासने अते)-नी समान देखातु – शोभतु – चळकतु
काश्मीर, काश्मीरज न० केसर
काश्यपी स्त्री० पृथ्वी
काष पु० घसवु ते (२) जेनी साथे कशु घसवामा आवे ते
काषाय वि० लाल, भगवु (२) न० रातु के भगवु वस्त्र
काष्ठ न० लाकडु (२) सोटी (३) बळतण
काष्ठकुट, काष्ठकूट पु० लक्कडखोद पक्षी
काष्ठप्रदान न० चिता तैयार करवी ते
काष्ठा स्त्री० दिशा (२) मर्यादा, हद (३) पराकाष्ठा, अतिम हद
काष्ठिक पु० कठियारो
कास् १ आ० प्रकाशवु (२) उधरस खावी
कास पु० उधरस, खासी
कासार पु० तळाव, सरोवर
काहल न० अव्यक्त अवाज (२) एक वाद्य
काहलम् अ० अत्यत
कांक्ष् १ आ० आकाक्षा – इच्छा राखवी
कांक्षा स्त्री० आकाक्षा, इच्छा
कांक्षित ('काक्ष्'नु भू० कृ०) वि० इच्छित (२) न० इच्छा, आकाक्षा
कांक्षिता स्त्री० इच्छा, आकाक्षा
कांक्षिन् वि० आकाक्षा राखतु
कांचन वि० सोनानु, सोनानु बनावेलु (२) न० सोनु (३) धन, समृद्धि
कांचि स्त्री०, **कांचिकलाप** पु०, **कांची** स्त्री०, **कांचीकलाप** पु० स्त्रीनो कदोरो, घूघरीवाळो कदोरो
कांड पु०, न० भाग, विभाग, प्रकरण (२) बे पिराई वच्चेनो भाग, पेरी (३) डाळी (४) तीर (५) ढगलो, जथो (६) अवसर, समय, प्रसग
कांडपट पु० तबूनी आसपासनी कनात
कांडपात पु० बाणनु ऊडवु – पडवु ते (२) बाण जई शके तेटलु अतर
कांडपृष्ठ पु० सैनिक, शस्त्रोपजीवी (२) पोताना कुळ के वर्णने बफादार न रहेनारो (गाळ)
कांडीर पु० धनुर्धारी ('काडपृष्ठ'नी पेठे गाळ रूपे पण वपराय छे)
कांत पु० इच्छित, प्रिय (२) सुदर, मनोहर (३) सुखद, अनुकूल (४) पु० प्रीतम (५) वर, पति

कांता स्त्री० प्रिया (२) सुदर स्त्री
कांतार पु०,न० अरण्य, मोटु – निर्जन वन (२) दुर्गम रस्तो – खाडो इ०
काति स्त्री० शोभा, सौदर्य; मनोहरता (२) तेज, नूर, दीप्ति
कातिभृत् पु० चद्र
कातिमत् वि० सुदर, मनोहर (२) भव्य
कादविक पु० कदोई
कांदिशीक वि० नासभाग करवा माडेलु; भयभीत [कासु (३) घट
कांस्य वि० कासानु बनेलु (२) न०
कांस्यकार पु० कसारो
कांस्यताल पु० झाझ, कासीजोडा
कांस्यदोहन वि० कासानु पात्र भरीने दूध आपे तेवु
किट्ट, किट्टक न० काट (२) शरीरमाथी झरतो के नीकळतो मेल, मलमूत्र इ० (३) तेलमा ठरतो कचरो (४) कीटु
किण पु० घसारो पडीने (हाथ वगेरेमा) जामती गाठ, घानु चाठु
कितव पु० शठ, लुच्चो, कपटी
किम् स० ना०, वि० कोण? कयो? शु? (२) न० 'शो उपयोग'? 'शु प्रयोजन'? (ते ते नामनी तृतीया साथे, उदा० धनेन किम्)
किम् अ० 'कु' ने बदले, 'खराब', 'हलकु', 'नीचु' –ए अर्थमा (उदा० 'किंपुरुष')
किमपि (किम्+अपि) अ० कईक अशे, कईक (२) (जथो – गुण – स्वभाव अगे) निश्चितरूपे न कही शकाय तेम (३) घणुय, केटलुय
किमर्थम् (किम्+अर्थम्) अ० शा माटे?
किमग अ० 'तो पछी नी तो वात ज शी करवी?' – एवो अर्थ बतावे
किमिति (किम्+इति) अ० शा माटे? शा हेतुथी? [शके'?
किमिव (किम्+इव) अ० 'शु होई
किमु, किमुत अ० शु आ के ते? (२) शा माटे; वळी (३) केटलु वधारे; केटलु ओछु
कियत् अ० केटलु? केटलु मोटु? केटले दूर? (२) शी विसात? (३) केटलुक
किरण पु० तेजनी रेखा, रश्मि
किरात पु० पहाडी – जगली लोकोनी एक जात (२) वेपारी, वाणियो
किरीट पु०, न० मुगट (२) पु० वेपारी
किरीटिन् वि० मुगटवाळु
किल अ० खरेखर, नक्की (२) 'कहे छे के', 'साभळवामा आव्यु छे के' –एवो अर्थ बतावे (३) कृत्रिमता, ढोंग, आशा, अणगमो, तिरस्कार, हेतु, कारण –एवो अर्थ दर्शावे
किलकिल पु०, **किलकिला** स्त्री० हर्ष के आनदनो ध्वनि
किल्बिष न० पाप (२) अपराध, दोष (३) विपत्ति, दु ख (४) कपट (५) वेर
किशोर पु० नानो छोकरो (१६ वरसथी ओछी वयनो) (२) सूर्य (३) तरुण (४) वछेरो
किशोरी स्त्री० नानी छोकरी; कन्या
किसलय पु०, न० कूपळ, पल्लव
किंकणी स्त्री० घटडी (२) घूघरी
किंकथिका स्त्री० आनाकानी; सशय
किंकर पु० सेवक, नोकर
किंकर्तव्यता स्त्री० मूझवण, 'शु करवु' –एवो प्रश्न थाय तेवी परिस्थिति
किंकिणिका, किंकिणी, किंकिणीका स्त्री० जुओ 'किंकणी'
किंकिरात पु० एक जातनो पोपट (२) कोयल (३) मदन (४) अशोकवृक्ष (५) कदी न करमातु मनातु एक फूल (लाल के पीळु) [विनानु
किंक्षण वि० आळसु, समयनी किंमत
किंच अ० अने, वळी
किंचन अ० काईक अशे, कईक (२) कोई पण रीते नहि, जरा पण नहि
किंचित् अ० कईक; थोडुक

किंज वि० गमे त्या जन्मेलु (खानदान नहि तेवु) [वगेरेनो केसरततु
किंज न०, किंजल, किंजल्क पु० कमळ
किंतु अ० पण, परतु
किंदास पु० खराब नोकर
किंनर पु० तुच्छ–कदरूपो माणस (२) माणसनु शरीर अने अश्वनु मुख–ए आकारनो कुबेरनो गण, एक देवजाति
किंनु अ० आ के ते ? (२) केटलु वधारे ? केटल ओछु ? (३) शु वळी ? (४) परतु, छता
किं नु खलु अ० शाथी ते ? शु कारण होई शके ? (२) एम हशे खरु ? [थोडु ?
किंपाक पु० झेरकचोलु
किं पुनर् अ० केटलु वधारे ? केटलु
किंपुरुष पु० अधम–हलको माणस (२) माणसनु माथु अने घोडानु शरीर–ए आकारनो एक देव
किंप्रभु पु० खराब मालिक के राजा
किंवत् वि० तुच्छ
किंवदंति (–ती) स्त्री० लोकवायका
किंवराटक पु० उडाउ माणस ('कोडीनी ते शी विसात ?' –एम माननार)
किं वा अ० शु ? (२) के पछी
किंशुक पु० पलाश वृक्ष, खाखरो (२) न० खाखरानु फूल, केसूडानु फूल
किंसखि पु० खराब मित्र (प्रथमा एकवचन 'किंसखा')
किं स्वित् अ० शु वळी, क्याक
कीचक पु० पोलो वास
कीट पु० कीडो (२) 'क्षुद्र' –'निंद्य' –ए अर्थमा समासने छेडे
कीटघ्न पु० गधक
कीटज न० रेशम
कीटोत्कर पु० कीडीनो राफडो
कीदृक्ष, कीदृश् (–श) वि० कई जातनु ? केवा प्रकारनु ? [(४) कसाई
कीनाश पु० खेडूत (२) यम (३) कजूस
कीर पु० पोपट
कीर्ण ('कॄ' न० भू० कृ०) वि० विखरायेलु (२) छवायेलु
कीर्तन न० कहेवु–वर्णववु ते (२) वखाणवु ते (३) मंदिर; कलामय मकान
कीर्तनीय वि० वखाणवा योग्य
कीर्ति स्त्री० ख्याति, नामना, यश
कील, कीलक पु० खीलो (२) फाचर
कीलित वि० जडायेलु, खीलो ठोकायेलु (२) शूळीए दीधेलु (३) रोपायेलु
कु स्त्री० पृथ्वी
कु अ० नाम पूर्वे लागीने खराब, हलकु, निंदित, पापी–एवो अर्थ बतावे, ठपको, दुष्टता, नीचता, लघुता, अपूर्णता दर्शावे [वि० दुराचरणी
कुकर्मन् न० दुष्ट कार्य, दुराचरण (२)
कुकुर पु० कूतरो [तेनो अग्नि
कुकूल पु०, न० ढूणसा, फोतरा (२)
कुक्कुट पु० कूकडो
कुक्कुर पु० कूतरो
कुक्षि स्त्री० कूख (२) पेट (३) गर्भाशय (४) अदरनो भाग (५) खाडो (६) गुफा
कुक्षिंभरि वि० पेट भरवानी ज परवावाळु, स्वार्थी, खाउधरु (२) अदर व्यापी रहेलु
कुग्राम पु० (ज्या कोई राज्याधिकारी, वैद्य के नदी न होय तेवु) नानु गामडु
कुच पु० स्तन
कुज पु० वृक्ष (२) मगळनो ग्रह
कुट् ६ प० वाकु वाळवु–वळवु (२) छेतरवु (३) ४ प० फाडवु, भागवु, कूटवु, चूरो करवो
कुट पु०, न० घडो; लोटो (२) पु० किल्लो (३) हथोडो (४) वृक्ष (५) घर (६) पर्वत
कुटज पु० एक वृक्षनु नाम ('इन्द्रजव')
कुटि स्त्री० झूपडी (२) वळाक
कुटिर न० झूपडी
कुटिल वि० वक्र, वाकु; वाकु-चूकु (२) कपटी; अप्रमाणिक

कुबेर पु० धननो अधिपति देव, यक्षो अने किन्नरोनो राजा, उत्तर दिशानो दिक्पाल (ते कदरूपो मनाय छे त्रण पग, आठ दांत तथा आंखने ठेकाणे मात्र एक ज पीळा चाठावाळो)
कुब्ज वि० खूंधु, कूबडु
कुमार पु० नानो छोकरो (पांच वर्षनी अंदरनो) (२) युवराज (३) कार्तिकेय
कुमारक पु० कुमार (२) आंखनो डोळो
कुमारभृत्या स्त्री० नाना बाळकनी के गर्भिणीनी सार-संभाळ
कुमारव्रत न० अखंड ब्रह्मचर्यनुं व्रत
कुमारिका स्त्री० दसथी बार वर्षनी वयनी छोकरी (२) कुंवारी कन्या (३) दीकरी, पुत्री
कुमारिकापुर न० कन्याओनुं अंतःपुर
कुमुद् न० सफेद पोयणुं (२) रातुं कमळ
कुमुद पु०, न० सफेद पोयणुं (चंद्रोदये खीलतुं) (२) रातुं कमळ
कुमुदनाथ, कुमुदबांधव पु० चंद्र
कुमुदाकर पु० कमलपूर्ण सरोवर
कुमुदिनी स्त्री० सफेद पोयणानी वेल (२) कमळसमूह (३) ज्यां कमळ घणां होय तेवुं स्थळ
कुमुद्वत् वि० घणां कमळवाळुं
कुमुद्वती स्त्री० पोयणानी वेल (२) कमळसमूह (३) घणां कमळवाळुं स्थान
कुरब, कुरबक पु० जुओ 'कुरव'
कुरर पु० क्रौंच पक्षी
कुररी स्त्री० मादा क्रौंच पक्षी
कुरल पु० जुओ 'कुरर' [तेनुं फूल
कुरव, कुरवक पु० एक फूलझाड (२) न०
कुरंग, कुरंगक पु० मृग, हरण (२) चंद्रनुं कलंक [वाळी स्त्री
कुरंगनयना स्त्री० हरण जेवां चपळ नेत्र-
कुरंगनाभि स्त्री० कस्तूरी
कुरंगम पु० जुओ 'कुरंग' [वाळो)
कुरंगलांछन पु० चंद्र (हरणना चिह्न-
कुरंगाक्षी स्त्री० जुओ 'कुरंगनयना'
कुरु पु० (ब०व०) अत्यारना दिल्हीनी आसपासनो प्रदेश (२) ए देशना चंद्र-वंशी राजाओ
कुरुक्षेत्र न० दिल्ही नजीकनुं, पांडवो अने कौरवोना युद्धनुं स्थळ
कुरुवृद्ध पु० भीष्मपितामह
कुरूप वि० कदरूपुं, बेडोळ
कुर्कुट पु० कूकडो (२) कचरो
कुर्कुर पु० कूतरो
कुर्द् १ उ० जुओ 'कूर्द्'
कुर्दन न० जुओ 'कूर्दन'
कुर्पर पु० जुओ 'कूर्पर'
कुल न० कुटुंब, वंश (२) कुटुंबनुं निवासस्थान (३) ऊंचुं कुळ (४) टोळुं, जूथ (५) गोत्र, जाति; ज्ञाति
कुलक न० समूह (२) सळंग वाक्य-संबंधवाळा पांचथी पंदर श्लोकोनो समूह
कुलकन्यका स्त्री० ऊंचा कुळनी कन्या
कुलक्षण वि० अमंगळ लक्षणोवाळुं
कुलजन पु० सारा कुळमां जन्मेलो
कुलजात वि० ऊंचा कुळनुं (२) वंश-परंपरागत
कुलटा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री
कुलदेवता स्त्री० कुळनो इष्ट देव के देवी
कुलधन वि० कुळनी कीर्ति ए ज जेनुं धन छे तेवुं (२) न० कुटुंबे - कुळे मानेली मोंघी मिलकत
कुलधुर्य पु० मोटी उंमरनो पुत्र (जे कुटुंबनी धुरा वहन करी शके)
कुलनंदन वि० कुळनी कीर्ति वधारनारु
कुलपति पु० कुटुंबनो मुख्य पुरुष (२) दश हजार शिष्योने आश्रममां राखीने भणावनार आचार्य
कुलपर्वत पु० जुओ 'कुलाचल'
कुलपांसन वि० कुळने बट्टो लगाडनारु
कुलपुत्र पु० ऊंचा कुळमां जन्मेलो युवान

कुलपुरुष पु० ऊचा कुळमा जन्मेलो पुरुष (२) पूर्वज
कुलपूर्वक (–ग) पु० पूर्वज
कुलस्थिति स्त्री० कुळाचार
कुलाचल पु० मुख्य पर्वत, भारतवर्षमा सात दिशाए आवेला सात मुख्य पर्वतोमानो दरेक (मलय, सह्य, विंध्य इ०)
कुलापीड पु० कुळना मुगटरूप पुरुष
कुलाय पु०, न० पक्षीनो माळो
कुलाल पु० कुंभार
कुलालविन् वि० कुळनु भरणपोषण करनारु (२) कुळनु आधारभूत एवु
कुलांगना स्त्री० कुळवान स्त्री, ऊंचा कुळनी स्त्री [कुळद्रोही
कुलांगार वि० कुळने कलंक लगाडनार;
कुलिर पु०,न० करचलो
कुलिश पु०, न० इन्द्रनु वज्र
कुलिंग पु० पखी (२)चकलो (३)साप
कुलीन वि० कुळवान, ऊंचा कुळनु
कुलीर, कुलीरक पु०, न० जुओ 'कुलिर'
कुलीश पु०, न० जुओ 'कुलिश'
कुलोद्वह पु० वंशवेलो टकावी राखनार –कुळनो अग्रणी
कुल्य वि० ऊंचा कुळनु (२) कुळने लगतु (३) न० हाडकु (४) मास
कुल्या स्त्री० सद्गुणी स्त्री (२) नानी नदी, नहेर (३) खाई [वरसाद
कुवर्ष पु० अचानक पडेलो के धोधमार
कुवलय न० नील कमळ
कुवलयिनी स्त्री० नील कमळनो छोड (२) कमळसमूह (३) घणा कमळवाळु स्थान
कुविंद पु० वणकर
कुश पु० दर्भ (२) न० पाणी
कुशल वि० शुभ, कल्याणकारी (२) आरोग्यवान (३) प्रवीण, होशियार (४) न० कुशळता –सुख (५) कौशल्य
कुशलप्रश्न पु० 'कुशळ तो खरा ?' –एवी पूछपरछ
कुशाग्र वि० तीव्र, सूक्ष्म (दाभनी अणी जेवु)
कुशीलव पु० चारण, भाट (२) नट
कुशूल पु० भंडार; कोठार
कुशेशय न० कमळ [अर्क खेंचवो
कुष् ९ प० काढवु, खेंची काढवु (२)
कुष्ठ पु०, न० कोढ (व्याधि)
कुष्मांड पु० कोळु
कुसरित् स्त्री० नानी नदी
कुसीद पु० व्याजखाउ माणस (२) न० व्याज उपर धीरेलु नाणु (३) व्याजे पैसा धीरवानो धंधो
कुसुम न० फूल
कुसुमकार्मुक, कुसुमचाप पु० कामदेव
कुसुमप्रवृत्ति, कुसुमप्रसूति स्त्री० फूल बेसवा ते
कुसुमबाण पु० कामदेव
कुसुमस्तवक न० फूलोनो गुच्छो
कुसुमधय पु० मधमाख
कुसुमाकर पु० वसंतऋतु
कुसुमापचय पु० फूल वीणवा – चूंटवा ते
कुसुमापीड पु० कामदेव (२) फूलनी कलगी
कुसुमायुध पु० कामदेव
कुसुमांजलि पु० फूलथी भरेलो खोबो
कुसुमित वि० फूल खीलेया होय तेवु
कुसुमेषु पु० कामदेव
कुसुमोच्चय पु० फूलनो गुच्छ
कुसुंभ पु०, न० कसुंबानु वृक्ष (२) न० सोनु (३) कसुंबानो रंग
कुसूल पु० कोठार, भंडार
कुसृति स्त्री० छळकपट, शठता
कुहक पु० शठ, ठग (२) जादुगर (३) न० ठगाई, जादु
कुहकचकित वि० सावचेत, शंकाशील, छेतरावाथी डरतु
कुहका स्त्री० ठगाई (२) जादु
कुहर न० गुफा, बखोल

कुहु स्त्री० कोयलनो अवाज (२) अमावास्या

कुहुकंठ, कुहुरव पु० कोयल

कुहू स्त्री० जुओ 'कुहु'

कुहेडिका, कुहेडी, कुहेलिका स्त्री० धुम्मस

कुंकुम न० केशर

कुंचन न० वाकु – त्रासु वळवु ते

कुंचिका स्त्री० कूची [वळेलु, वाकु

कुंचित ('कुच्'नु भू० कृ०) वि० वाकु

कुंज् १ प० कूजवु [स्थान, लतामडप

कुंज पु०, न० वेला वगेरेथी छवायेलु

कुंजकुटीर पु० लतागृह, लतामडप

कुंजर पु० हाथी (२) (समासने छेडे) ते ते वर्गमा सर्वथी श्रेष्ठ (उदा० 'नरकुंजर')

कुंठ वि० बुठ्ठु (२) आळसु (३) मूर्ख

कुंठित ('कुठ्'नु भू०कृ०) वि० बुठ्ठु (२) शिथिल, निर्बळ [कूडी, पात्र

कुंड पु०, न० होज (२) यज्ञनी वेदी (३)

कुंडक पु०, न० माटीनी कूडी (पात्र)

कुंडल पु०, न० काननु घरेणु (२) गळानु घरेणु (३) हाथनु घरेणु (४) दोरडानो वीटो

कुंडिका स्त्री० कूडी, कूडु (२) कमडळ

कुंत पु० भालो

कुंतल पु० माथाना वाळ, झूलफु, लट

कुंद पु०, न० एक जातनो मोगरो (२) न० तेनु फूल [एक राशिनु नाम

कुंभ पु० घडो (२) हाथीनु गडस्थळ (३)

कुंभक पु० प्राणायाम वखते श्वास रूधी राखवो ते

कुंभकार पु० कुभार

कुंभज, कुंभजन्मन्, कुंभयोनि, कुंभसंभव पु० अगस्त्य ऋषि (२) वसिष्ठ ऋषि (३) द्रोणाचार्य

कुंभा स्त्री० वेश्या

कुंभिका स्त्री० नानो घडो

कुंभिन् पु० हाथी

कुंभिल पु० खातर पाडनार चोर

कुंभी स्त्री० नानो घडो (२) दोणी (राधवानी)

कुंभीनस पु० एक जातनो झेरी साप

कुंभीपाक पु० एक नरक

कुंभीर पु० लावा मोवाळो मगर (गगानो)

कुंभीरक, कुंभील, कुंभीलक पु० चोर

कूकुर पु० कूतरो

कूच पु० स्तन [(दुखनो)

कूज् १ प० कूजवु (२) ऊहकारो करवो

कूज, कूजन, कूजित न० कूजवु ते

कूट वि० खोटु, मिथ्या (२) पु०, न० कूड, ठगाई, छेतरपिंडी (३) पर्वतनी टोच, शिखर (४) ढगलो, समूह (५) न समजाय तेवु जे कई होय ते (रहस्य, कोयडो इ०) (६) हरणने पकडवानो फादो – जाळ (७) छुपावेलु हथियार – गुप्ति (८) हथोडो; घण (९) शहेरनो दरवाजो

कूटक न० कपट, छेतरवु ते (२) ऊंचाण (३) हळनु फळ – कोश

कूटकार पु० जूठो साक्षी

कूटकृत् वि० छेतरनारु, कपटी (२) खोटो दस्तावेज बनावनारु

कूटच्छद्मन् पु० ठग

कूटतुला स्त्री० खोटा त्राजवा

कूटपालक पु० कुभार (२) कुभारनो निभाडो – भठ्ठी

कूटपाश, कूटबंध पु० फादो, फासो

कूटमान न० खोटा काटला

कूटयुद्ध न० कपटी युद्ध, अधर्मनु युद्ध

कूटरचना स्त्री० जाळ, फासो (२) कपटजाळ के युक्ति

कूटसाक्षिन् पु० जूठो साक्षी

कूटस्थ वि० टोच पर-ऊचामा उचा स्थळे ऊभेलु (वंशावळीमां) (२) श्रेष्ठ (३) सर्व काळे एकरूप रहेनारु, अचळ (४) पु० परमात्मा

कूटागार न० उपरनी मेडी
कूणित वि० मीचेलु (२) सकोचेलु
कूप पु० कूवो (२) पोलाण, खाडो
कूपदड पु० कूवाथभ (वहाणनो)
कूपमंडूक पु० कूवामानो देडको (२) बिनअनुभवी माणस (ला०)
कूपयत्रघटिका स्त्री० रेट
कूपार पु० महासागर
कूपिका स्त्री० नदी वच्चेनो खडक
कूबर पु०, न०,**कूबरी** स्त्री० गाडानो धोरियो
कूर पु०, न० भात (राधेलो)
कूर्च पु०, न० दाढी (वाळ) (२)चूटी (३)कूचडो, पीछी, झूडो
कूर्द् १ उ० कूदवु (२)खेलवु
कूर्दन न० कूदवु ते (२)खेल
कूर्पर पु० कोणी (२)ढीचण
कूर्पास, कूर्पासक पु० चोळी, काचळी
कूर्म पु० काचबो
कूल न० किनारो, तीर, तट
कूलमुद्रुज वि० किनारो तोडी नाखनारु (नदी, हाथी इ०) [नाखनारु
कूलमुद्वह, कूलंकष वि० किनारो धोई
कूलकषा स्त्री० नदी
कूष्माड पु० कोळु
कृ० ८ उ० करवु, काम करवु (२) बनाववु (३) रचवु, बाधवु, तैयार करवु (४)गोठववु (५) उत्पन्न करवु (घडो, अवाज) (६) कहेवु, वर्णन करवु (७)परिणाम लाववु (८)अमल करवो, आचरवु (९)त्यागवु, काढवु (मळ-मूत्र) (१०)धारण करवु (११) मूकवु, राखवु (१२) नीमवु (१३) राधवु, पाक करवो (१४) गणवु; मानवु (उदा० 'तृणीकृत') (१५) विताववु, पसार करवु (समय) (१६) –तरफ वळवु, निश्चय करवो (उदा० 'मतिं करोति') (१७) उपयोगमा आववु
कृ० ५ उ० ईजा करवी, मारी नाखवु
कृकवाकु पु० कूकडो
कृच्छ्र वि० कष्टसाध्य (२) दुःखद; कष्टकारक (३) दुष्ट, अनिष्ट (४) कष्टकारक दशामा आवी पडेलु (५) पु०, न० सकट, पीडा, मुश्केली (६) उपवासादि शारीरिक कष्ट, तप
कृच्छ्रम्,कृच्छ्रात्,कृच्छ्रेण अ० मुश्केलीथी
कृत् ६ प० [कृन्तति] कापवु
कृत् वि० (समासने अते) करनारु (उदा० 'पापकृत्') (२) पु० धातुमाथी नाम, विशेषण आदि बनाववा वपरातो प्रत्यय (व्या०) (३)ए प्रत्यय लागीने बनतो शब्द (व्या०)
कृत ('कृ'नु भू० कृ०) वि० करेलु, आचरेलु (२) बनावेलु, रचेलु (३) हणायेलु (४) मेळवेलु, खरीदेलु (५) नीमेलु (६) न० कार्य, कर्म, करेलु ते (७) उपकार, सेवा, लाभ (८) सत्ययुग (१७२८००० वर्षनो) (९) चार चिह्नवाळी पासानी बाजु
कृतक वि० बनावेलु ('नैसर्गिक'थी ऊलटु) (२)दत्तक लीधेलु (३) ढोगथी करेलु, देखाव पूरतु [(२)चतुर, कुशळ
कृतकर्मन् वि० जेनु कार्य पूर्ण थयु छे तेवु
कृतकाम वि० जेनी कामनाओ पूर्ण थई छे तेवु, परितृप्त
कृतकृत्य वि० पोतानु कार्य – पोतानी फरज पूरी करी चूक्यु होय तेवु (२)तेना सतोषवाळु [जेने तक मळी छे तेवु
कृतक्षण वि० अधीराईथी राह जोतु (२)
कृतघ्न वि० बीजाए करेलो उपकार भूली जाय तेवु
कृतज्ञ वि० सामाना उपकारनी कदर करनारु (२)साचु कर्तव्य जाणनारु
कृतधी वि० सस्कारेली बुद्धिवाळु (२) बुद्धिशाळी, शाणु, विचारवत
कृतनामधेय वि० नामवाळु, –ना नामे ओळखातु

कृतपरिश्रम वि० अभ्यास करेलु, —नी पाछळ महेनत लीधी होय तेवु
कृतबुद्धि वि० स्थिर – निश्चयी बुद्धि-वाळु, डाह्यु, शाणु, शिक्षित
कृतम् अ० 'बस करो', 'बध करो' (तृतीया साथे)
कृतयुग न० सत्ययुग [होय तेवु
कृतरूप वि० परपरागत विधिओ जाणतु
कृतलक्षण वि० चिह्नित, अकित (२) गुणो वडे विख्यात
कृतवत् वि० जेणे कर्यु होय तेवु
कृतविद्य वि० विद्वान, पडित
कृतवेदिन् वि० कृतज्ञ
कृतवेश वि० वस्त्राभूपणथी अलकृत
कृतहस्त वि० प्रवीण (२) चतुर
कृतागस् वि० अपराधी, पापी
कृतात्मन् वि० सस्कारेला – शिक्षित – शुद्ध अत करणवाळु
कृतान्न न० रावेलु अन्न
कृतापराध वि० गुनेगार, अपराधी
कृताभिषेक वि० जेनो राज्याभिषेक करवामा आव्यो छे तेवु
कृतार्थ वि० जेनु कार्य सफळ थयु छे तेवु (२) सतुष्ट, सुखी [करवु
कृतार्थीकृ ८ उ० सफळ करवु (२) सतुष्ट
कृतालय वि० जेणे घर बाध्यु छे के माडच छे तेवु [नाख्यु छे तेवु
कृतावमर्ष वि० जेणे स्मृतिमाथी भूसी
कृतास्त्र वि० अस्त्रविद्यामा पारगत
कृताजलि वि० (याचना करवा) जेणे हाथ जोडेला छे तेवु
कृतात पु० यमराज (२) दैव, नसीव (३) साबित थयेलो सिद्धात
कृति स्त्री० करवु ते, आचरवु ते (२) कार्य, कृत्य (३) सर्जन, रचना (साहित्यनी) (४) जादु (५) वध
कृतिन् वि० कृतार्थ, कृतकृत्य (२) सुखी, सतुष्ट (३) सुभागी (४) चतुर, कुशळ (५) सद्गुणी, पवित्र (६) तावेदार
कृते, कृतेन अ० —ने माटे; —नी खातर, —ने निमित्ते (छठ्ठी विभक्ति साथे)
कृतोद्वाह वि० परणेलु
कृत्ति स्त्री० चामडु, मृगचर्म (२) भोजपत्र
कृत्तिका स्त्री० एक नक्षत्र
कृत्तिकापुत्र, कृत्तिकासुत पु० कार्तिकेय
कृत्तिवास, कृत्तिवासस् पु० शिव (चामडु ओढनार)
कृत्य वि० करवा योग्य, कर्तव्य (२) न० कर्तव्य, फरज (३) कार्य, काम (४) हेतु, प्रयोजन
कृत्यका स्त्री० जादुगरणी, डाकण
कृत्यवत् वि० कईक प्रयोजन – याचना – इच्छावाळु [मेली शक्ति
कृत्या स्त्री० क्रिया (२) मेली विद्या,
कृत्रिम वि० कुदरती के स्वाभाविक नहि तेवु, बनावटी; ऊभु करेलु (२) दत्तक (३) शणगारेलु
कृत्वस् अ० '—गणु', '-वार', '-वखत' (उदा० अष्टकृत्वस्)
कृत्स्न वि० आखु, बधु, सपूर्ण
कृपण वि० दीन, गरीब, दयापात्र (२) विवेक-विचार करवा अशक्तिमान (३) नीच, अधम (४) कजूस
कृपा स्त्री० दया, अनुकपा
कृपाण पु० तरवार, खड्ग
कृपालु वि० दयाळु
कृमि पु० कीडो, जीवडो
कृश् ४ प० ओछु थवु, घटवु, दूबळु थवु
कृश वि० दूबळु, पातळु (२) अल्प, थोडु (३) क्षुद्र
कृशानु पु० अग्नि
कृशानुरेतस् पु० शकर
कृशाश्विन् पु० नट 'एक्टर'
कृशांग वि० कृश शरीरवाळु, पातळु
कृशांगी स्त्री० पातळा – नाजुक बाधा-वाळी स्त्री

कृशोदर वि० कमर के पेटनो भाग पातळो होय तेवु

कृष् ६ उ० खेडवु (२) १ प० खेंचवुं; खेंची जवु, खेंची लेवु (३) दोरवु (४) वश करवु, जीतवु

कृषक पु० खेडूत

कृषि स्त्री० खेतीवाडी, खेती

कृष्ट ('कृष्'नु भू० कृ०) वि० खेंचेलु (२) आकर्षित (३) खेडेलु

कृष्ण वि० काळु (२) दुष्ट, खराब (३) पु० काळो रग (४) कृष्णपक्ष (५) व्यासमुनि (६) श्रीकृष्ण

कृष्णद्वैपायन पु० व्यासमुनि

कृष्णपक्ष पु० वद पक्ष, अधारियु

कृष्णवर्त्मन् पु० अग्नि

कृष्णसार पु० काळो मृग

कृष्णसारथि पु० अर्जुन

कृष्णा स्त्री० द्रौपदी (२) यमुना नदी

कृंतन न० कापवु ते

कॄ ६ प० [किरति] वेरवु, विखेरवु (२) पाथरवु; छाई देवु (३) ९ उ० [कृणाति, कृणीते] ईजा करवी, वध करवो

कॄत् १० उ० [कीर्तयति –ते] उल्लेख करवो, बोलवु (२) कहेवु, वर्णववु, जाहेर करवु (३) प्रशसा करवी

क्लृप् १ आ० [कल्पते] करवा माटे शक्तिमान के लायक होवु (२) थवु, बनवु (३) तैयार – सज्ज थवु के होवु (४) उपजाववु

–प्रेरक० तैयार करवु (२) नक्की करवु, इरादो राखवो (३) सजवु (४) पूरु पाडवु (५) मानवु, धारवु (६) कापवु, भाग पाडवा (७) अमलमा मूकवु, निपजाववु, बनाववु (८) रचवु (ग्रथ) (९) स्वीकारवु

क्लृप्त ('क्लृप्'नु भू०कृ०) वि० नक्की, निश्चित, तैयार, सज्ज (२) कापेलु (३) उपजावेलु (४) मानेलु, कल्पेलु

क्लृप्ति स्त्री० सिद्धि (२) युक्ति (३) रचना, गोठवण

केकर वि० बाडु

केका स्त्री० मोरनो अवाज

केकावल, केकिन् पु० मोर

केतक पु० केतकीनो छोड, केवडो (२) ध्वज (३) न० केतकीनु फूल

केतकी स्त्री० केतकीनो छोड, तेनु फूल

केतन न० घर, निवासस्थान (२) ध्वज (३) स्थान (४) निशान (५) तेडुं; निमत्रण (६) अवश्य करवानु कर्म

केतु पु० ध्वज, निशान (२) श्रेष्ठ व्यक्ति; आगेवान (समासने छेडे) (३) एक ग्रह; धूमकेतु (४) दीप्ति, प्रकाश

केतुयष्टि स्त्री० धजानो दंड

केदार पु० क्यारानी जमीन; क्यारो

केयूर पु०, न० हाथना कोणी उपरना भागमा पहेरातु घरेणु, बाजु

केलि पु०, स्त्री०, **केली** स्त्री० क्रीडा; रमत (२) रतिक्रीडा

केवल वि० विशिष्ट, असाधारण (२) एकलु, मात्र (३) सपूर्ण, समग्र (४) अनाच्छादित, खुल्लु (५) शुद्ध, सादु (६) निष्णात

केवलज्ञान न० भ्रांतिशून्य, विशुद्ध ज्ञान

केवलम् अ० मात्र, फक्त (२) सपूर्ण रीते, पूरेपूरु

केश पु० वाळ (२) माथाना वाळ

केशकर्मन् न० वाळ ओळवा ते

केशकलाप पु० वाळनो गुच्छो के समूह

केशपाश पु० केशनो जथो

केशर पु०, न० जुओ 'केसर'

केशरचना स्त्री० वाळ जुदी जुदी रीते ओळवा ते

केशरिन् पु० जुओ 'केसरिन्'

केशव पु० विष्णु (सुदर केशवाळा)

केशव्यपरोपण न० केश खेंचवा ते

केशहस्त पु० जुओ 'केशपाश'

केशाकेशि अ० परस्पर वाळ खेचीने (लडवु) [राक्षस
केशिन् पु० सिंह(२)श्रीकृष्ण(३)एक
केशिनिषूदन पु० केशीनो वध करनार – श्रीकृष्ण
केसर पु०, न० केशवाळी(२)हरकोई फूलनी अदर थतो ततु(३)वकुल वृक्ष
केसरिन् पु० सिंह (२) घोडो (३) ते ते वर्गमा श्रेष्ठ (समासने अते)
केंद्र न० मध्यबिंदु
कैटभ पु० एक राक्षस
कैटभजित्,कैटभरिपु,कैटभहन्, कैटभारि पु० विष्णु (कैटभने मारनार)
कैतव न० दावमा मूकेली वस्तु(२) जुगार(३)कपट, ठगाई(४)पु०शठ, ठग(५)जुगारी [खीलतु)
कैरव न० श्वेत कमळ, पोयणु (चद्र ऊग्ये
कैरवबंधु पु० चद्र
कैरविणी स्त्री० पोयणी(२)घणा पोयणा-वाळु जळाशय(३)पोयणानो समूह
कैलास पु० हिमालय पर्वतनु एक शिखर (शकर अने कुवेरनु निवासस्थान)
कै[illegible]नाथ पु० शकर (२) कुवेर
कैवत, कैवर्तक पु० माछी
कैवल्य न० केवल स्वरूप – ब्रह्म स्वरूप थवु ते(२)निर्लिप्तपणु; मोक्ष
कैशिक न० केशसमूह
कैशोर न० किशोर अवस्था
कैश्य न० केशसमूह
कोक पु० वरु(२)चक्रवाक(३)कोयल
कोकनद न० रातु कमळ
कोकबंधु पु० सूर्य
कोकिल पु० नर कोयल
कोकिला स्त्री० मादा कोयल
कोजागर पु० शरद पूनमनो उत्सव
कोटर पु०, न० वृक्षमानी बखोल
कोटि स्त्री० छेडो(२)धनुष्यनो अग्र-भाग(३)हथियारनो अग्रभाग (४) पराकाष्ठा, अतिम हद (५) चद्रनी कळानी बे अणीओमानी दरेक (६) शिखर(७)चर्चास्पद बाबतनी एक बाजु (८)करोड(सख्या) (९)वर्ग, जाति
कोटिमत् वि० धारवाळु, अणीवाळु
कोटिशस् अ० करोडोथी, करोड रीते
कोटी स्त्री० जुओ 'कोटि'
कोटीर पु० मुगट (२) जटा-गुच्छ
कोटीश्वर पु० करोडपति
कोट्ट पु० किल्लो; कोट
कोण पु० खूणो(२)खड्ग के शस्त्रनी तीणी धार(३)लाकडी के दडो(४) सारगी वगेरेनु कामठु (५) ढोल वगाडवानो डडूको
कोणप पु० राक्षस [इ० नो)ध्वनि
कोणाघात पु० अनेक वाद्योनो(ढोल,भेरी
कोदंड पु०, न० धनुष्य
कोद्रव पु० कोदरा
कोप पु० गुस्सो, क्रोध(२)वकरवु ते
कोपन वि० क्रोधजनक(२)गुस्सावाळु (३)वकरावनारु
कोपिन् वि० गुस्से थनारु (२) गुस्सो करनारु(३)वकरावनारु
कोमल वि० कुमळु; नाजुक, सुकुमार (२)नरम, मृदु(३)मधुर
कोरक पु०, न० कळी (२) कळीना आकारनु जे कई होय ते
कोरकित वि० कळीओथी छवायेलु
कोल पु० डुक्कर (२) तरापो, होडी (३)आलिंगन(४)खोळो
कोलाहल पु०,न० घोघाट, शोरबकोर
कोविद वि० अनुभवी, निपुण, कुशळ
कोविदार पु०,न० एक वृक्षनु नाम
कोश पु०, न० पाणी भरवानु वासण, डोल(२) पेटी, कबाट, कबाटनु खानु (३) म्यान (४) ढाकण, आवरण (५) कोठार, भडार (६) खजानो; तिजोरी (७) धन, सपत्ति (८)

शब्दकोश (९) बिडायेलु फूल (१०) दडो, गोळो
कोशक पु० ईंडु
कोशकार पु० म्यान बनावनार (२) रेशमनो कीडो (३) शब्दकोश रचनार
कोशकारक पु० रेशमनो कीडो
कोशकृत् पु० शेलडी
कोशगृह न० तिजोरी, संग्रहस्थान
कोशचंचु पु० बगलो
कोशनायक, कोशपालक पु० कोशाध्यक्ष; [खजानची
कोशलिक पु० लांच
कोशवासिन् पु० कोशमां रहेनार कीडो
कोशवृद्धि स्त्री० संपत्तिनो वधारो (२) अंडवृद्धि
कोशवेश्मन् न० भंडार; कोठार; तिजोरी
कोशशायिका स्त्री० तरवार (२) छरी
कोशशुद्धि स्त्री० अग्निपरीक्षा जेवी कसोटीथी शुद्ध ठरवु ते
कोशागार पु०, न० धनभंडार, तिजोरी (२) कोठार
कोशाध्यक्ष पु० खजानची (२) कुबेर
कोष पु०, न० जुओ 'कोश'
कोष्ठ पु० पेटनो मध्यभाग, कोठो (२) कोठार (३) घरनो मध्यभाग (४) न० कोट, भींत (५) कोटलु
कोष्ठागार पु० कोठार, भंडार
कोष्ण वि० थोडु गरम, हूंफाळु
कौक्षेय वि० कूखनु, पेटमानु (२) केडे बांधेलु, म्यानमां रहेलु
कौक्षेयक पु० तरवार
कौटिल्य पु० चाणक्य (२) न० कुटिलता; वक्रता (३) कपट
कौटुंबिक वि० कुटुंबनु, कुटुंबने लगतु (२) कुटुंबनो मुख्य माणस
कौणप पु० राक्षस
कौतुक न० इच्छा, आतुरता, अधीराई (२) जिज्ञासा (३) कुतूहल जाग्रत करे एवु कंई पण (४) उत्सव, क्रीडा (५) लग्न पहेलां हाथे दोरो बांधवानो विधि (६) आनंद, सुख
कौतुकक्रिया स्त्री० लग्नक्रिया
कौतूहल न० कुतूहल, इंतेजारी
कौपीन न० गुह्यांग, उपस्थ (२) लंगोटी (३) फाटेलु वस्त्र (४) कफनी (५) पाप, दुष्कर्म
कौबेर वि० कुबेरनु, कुबेरन [illegible]
कौबेरी स्त्री० उत्तर दिशा
कौमार वि० जुवान, कुंवारु (२) [illegible] (३) युद्धना देव – कार्तिकेय [illegible] (४) न० बाळपण (५) कुंवारा रहेवु ते
कौमारक न० बाळपण, नानपण
कौमारभृत्य न० नाना बाळकोने उछेरवा ते, बाळकोनी संभाळ [illegible]
कौमारराज्य न० युवराज पद
कौमारव्रत न० कुंवारा – ब्रह्मचारी रहेवानु व्रत
कौमुद पु० कार्तिक मास
कौमुदी स्त्री० ज्योत्स्ना, चांदनी (२) तेना जेवी शीतळ सुखप्रद वस्तु (३) कार्तिक-पूर्णिमा (४) आश्विन-पूर्णिमा (५) उत्सव (रोशनी करवानो)
कौमोदकी, कौमोदी स्त्री० विष्णुनी गदा
कौरव वि० कुरुवंशोत्पन्न, [illegible]
कौरव्य पु० कुरुनो वंशज (२) कुरुओनो राजा
कौल वि० वंशपरंपरागत; कुळनु (२) ऊंचा कुळनु (३) पु० वाममार्गी; शाक्त (४) न० वाममार्ग, शाक्त पंथ
कौलिक वि० वंशपरंपरागत (२) कुळनु; कुटुंबनु (३) पु० शाक्त (४) वणकर
कौलीन वि० कुलीन, ऊंचा कुळनु (२) पु० शाक्त (३) न० लोकापवाद, आळ (४) दुष्कर्म, कुकर्म (५) कुलीनता
कौलीन्य न० कुलीनता, कुळवानपणु
कौल्य वि० कुलीन, ऊंचा कुळमां जन्मेलु (२) न० कुलीनता

कौशल न० क्षेमकुशळ होवापणु (२) कुशळता, निपुणता
कौशलिक न० लाच
कौशलेय पु० कौशल्याना पुत्र – राम
कौशल्य न० जुओ 'कौशल'
कौशल्यायनि पु० जुओ 'कौशलेय'
कौशिक वि० म्यानमा रहेलु (२) रेशमी (३) कुशिकना वंशनु (४) पु० विश्वामित्र (५) इंद्र (६) घुवड (७) नोळियो (८) गारुडी (९) न० रेशमी वस्त्र
कौशिकाराति, कौशिकारि पु० कागडो
कौशिकी स्त्री० पृथ्वी (२) दुर्गा
कौशेय, कौषेय न० रेशम (२) रेशमी वस्त्र
कौसुम वि० फूलनु, फूल संबंधी
कौसुंभ वि० कसूंबी, लाल रंगनु
कौस्तुभ पु० समुद्रमंथनमाथी नीकळेला १४ रत्नोमानु एक, एक मणि (तेने विष्णु धारण करे छे)
कौंजर वि० हाथीनु [अर्जुन)
कौंतेय पु० कुंतापुत्र (युधिष्ठिर, भीम,
क्रकच पु० करवत (२) एक वाद्य
क्रतु पु० यज्ञ (२) विष्णु (३) संकल्प
क्रम् १ उ० [क्रामति, क्रमते], ४ प० [क्राम्यति] जवु, चालवु (२) पासे जवु (३) ओळंगी जवु (४) कूदवु (५) ऊंचे चडवु (६) चडियातु थवु (७) माथे लेवु (काम) (८) सिद्ध करवु – पार पाडवु (९) वृद्धि पामवी, विकास थवो
क्रम पु० पगलु, डगलु (२) पग (३) जवु ते; पसार थवु ते (४) पद्धति, अनुक्रम, परिपाटी (५) आचरण, आरंभ (६) पकड (७) हुमलो करता पहेलानी तैयारी (पशुनी)
क्रमण न० जवु ते, डग भरवु ते (२) डगलु, पगलु
क्रमतस् अ० क्रमे क्रमे; धीमे धीमे
क्रमशस् अ० क्रम प्रमाणे
क्रमागत, क्रमायात वि० अनुक्रमे – वंशपरंपराथी चालतु आवेलु
क्रमेलक पु० ऊंट
क्रय पु० खरीदवु ते, खरीदी
क्रयिक वि० खरीदनारु
क्रव्य न० काचु मांस
क्रव्यभुज्, क्रव्याद् (–द) पु० वाघ वगेरे हिंस्र प्राणी (२) राक्षस
क्रंद् १ प० बूम पाडवी, रडवु, विलाप करवो (२) दयाजनक रीते बोलाववु
क्रंदन, क्रंदित न० दुःखनो विलाप के पोकार (२) पडकार
क्रकचिक पु० लाकडा वहेरनारो
क्रांत ('क्रम्'नु भू० कृ०) वि० गयेलु (२) हुमलो करायेलु (३) आरूढ (४) अतीत (५) व्यापेलु (६) उल्लंघन करेलु
क्रांतदर्शिन् वि० सर्वज्ञ
क्रांति स्त्री० जवु ते, आगळ वधवु ते (२) ओळंगी जवु ते (३) पगलु (४) हुमलो करवो ते, तावे करवु ते
क्रिमि स्त्री० जंतु, कीडो
क्रिया स्त्री० करवु ते, पार पाडवु ते (२) कर्म, कार्य (३) प्रवृत्ति, शारीरिक क्रिया, मजूरी (४) शिक्षण (५) नृत्य-संगीत आदि कळा (६) अमल, आचरण ('शास्त्र' थी ऊलटु) (७) साहित्य-कृति (८) धार्मिक क्रिया, प्रायश्चित्त, श्राद्ध (९) व्याधिनो उपचार (१०) गति (११) क्रियापद
क्रियापद न० क्रिया बतावनारु पद (व्या०)
क्रियापर वि० कार्य करवाने तत्पर, कार्यमा प्रवृत्त
क्रियामाधुर्य न० शिल्पकळानु सौंदर्य
क्रियावत् वि० आचरणमा लागेलु; व्यवहारकुशळ (२) योग्य विधिथी क्रियाओ करनारु
क्रियाविशेषण न० क्रियापदना विशेषण तरीके वपरातो शब्द (व्या०)

क्री ९ उ० खरीदवु (२) विनिमय करवो
क्रीड् १ प० रमवु, खेलवु
क्रीडन न० रमवु ते, क्रीडा (२) रमकडु
क्रीडनक पु०, न०, क्रीडनीय, क्रीडनीयक न० रमकडु
क्रीडा स्त्री० रमत (२) मश्करी
क्रीडावेश्मन् न० क्रीडागृह
क्रीडित न० रमतगमत
क्रीडोद्देश पु० रमतगमतनु मेदान
क्रीत ('क्री'नु भू० कृ०) वि० खरीदेलु
क्रुद्ध ('क्रुध्'नु भू० कृ०) वि० गुस्से थयेलु, कुपित
क्रुध् ४ प० क्रोध करवो, गुस्से थवु
क्रुध् स्त्री० कोप, गुस्सो [करवो
क्रुश् १ प० बूम पाडवी (२) रडवु; विलाप
क्रुष्ट ('क्रुश्'नु भू० कृ०) वि० बोलावायेलु, पोकारेलु (२) न० पोकार, बूम (३) विलाप [उग्र
क्रूर वि० निर्दय (२) कर्कश, कठोर (३)
क्रोड पु० डुक्कर, वराह (२) छाती (३) वृक्षनी बखोल (४) मध्यभाग (५) न० बे खभा वच्चेनो भाग – छाती (६) अदरनो भाग – पोलाण (७) खोळो
क्रोडपत्र न० पूर्ति, वधारो (ग्रथ इ० नो)
क्रोडीकरण न० आलिगन, भेटवु ते
क्रोध पु० कोप, गुस्सो
क्रोधन वि० झट गुस्से थई जाय तेवु (२) न० कोप, क्रोध
क्रोधनीय वि० गुस्सो उपजावे तेवु
क्रोधेद्ध वि० कोपथी सळगी ऊठलु
क्रोश पु० बूम, विलाप (२) कोस, योजननो चोथो भाग
क्रोष्टु, क्रोष्टृ पु० शियाळ
क्रौर्य न० क्रूरता (२) भयकरता
क्रौंच पु० एक पक्षी (२) एक पर्वत (हिमालयनो पौत्र)
क्लम् १ प० [क्लामति], ४ प० [क्लाम्यति] थाकी जवु, थाक लागवो (२) खेद करवो, शोक करवो
क्लम, क्लमथ (–थु) पु० थाक, परिश्रम
क्लांत ('क्लम्'नु भू० कृ०) वि० थाकी गयेलु (२) निराश, खिन्न (३) कृश, करमाई गयेलु
क्लाति स्त्री० परिश्रम, थाक
क्लिद् ४ प० भीनु थवु, पलळवु
क्लिन्न ('क्लिद्'नु भू० कृ०) वि० आर्द्र, भीनु
क्लिश् ४ आ० (केटलाकने मते प० पण) क्लेश करवो, दुखी थवु, दुख पामवु (२) दुख देवु, जुलम करवो (३) ९ प० दुख देवु, पीडवु (४) दुख वेठवु
क्लिशित, क्लिष्ट ('क्लिश्'नु भू० कृ०) वि० क्लेश पामेलु, दुख पामेलु (२) झाखु थयेलु (३) असबद्ध – अस्तव्यस्त (४) परस्पर विरोधी (वाक्य) (५) अर्थनी खेचताण करवी पडे तेवु, स्पष्ट नहि तेवु (६) पजवणी करे तेवु, पीडा करे तेवु
क्लीब् १ आ० कायर बनवु, निर्वीर्य होवु (२) १० आ० बीकण – भीरु थवु
क्लीब वि० नपुसक (२) कायर, निर्वीर्य (३) भीरु, बीकण (४) अशक्त, उत्साह वगरनु (५) पु०, न० नपुसक (६) नान्यतर जाति (व्या०)
क्लेद पु० भीनाश, भेज (२) उपद्रव
क्लेश पु० दुख; त्रास (२) परिताप (३) क्रोध (४) ससारव्यवहार के तेनी चिंता (५) पाप [भीरुता
क्लैब्य न० कायरता (२) निर्बळता (३)
क्व अ० क्या ? क्यारे ? कये ठेकाणे ?
क्व – क्व अ० 'क्या आ ने क्या ते'
क्वचित् अ० कोईक दाखलामा, कोईक ठेकाणे
क्वचित् – क्वचित् अ० 'एक स्थळे आ ने बीजे स्थळे पेलु', 'कदीक – कदीक'
क्वण् १ प० अस्पष्ट अवाज करवो (२) गणगणवु (३) वगाडवु (वासळी)

क्वणित न० अवाज, वाद्यनो अवाज
क्वथ् १ प० उकाळवु
क्वाण पु० ध्वनि
क्वाथ पु० उकाळो – काढो
क्वापि अ० क्याक, कोई ठेकाणे
क्षण् ८ उ० ईजा करवी, घायल करवु (२) भागीने ककडा करवा
क्षण पु०, न० वखतनु एक माप;सेकडनो ४/५ भाग; पळ (२) विश्राति; फुरसद (३) योग्य समय; तक; अवसर (४) उत्सव; आनद, पर्व (५) निश्चय, नियम
क्षणकर पु० चद्र
क्षणक्षेप पु० क्षणनो विलब
क्षणचर पु० राक्षस
क्षणदा स्त्री० रात्री
क्षणदाकर पु० चद्र
क्षणदाचर पु० निशाचर, राक्षस
क्षणद्युति, क्षणप्रकाशा, क्षणप्रभा स्त्री० वीजळी
क्षणभंगुर वि० क्षणमा नाश पामे तेवु, [नाशवत
क्षणमात्रम् अ० क्षण वार माटे
क्षणविध्वसिन् वि० क्षणभगुर
क्षणिक वि० क्षण सुधी चालतु, क्षणमा नाश पामतु
क्षणेक्षणे अ० हरघडी, दरेक पळे
क्षत् स्त्री० मारी नाखवु ते, वध (२) ईजा, पीडा
क्षत ('क्षण्'नु भू० कृ०) वि० जखमी; घवायेलु (२) फाडी नाखेलु, भागी नाखेलु, कचरी नाखेलु, क्षीण करेलु (३) न० जखम, व्रण (४) वलूरो (५) पीडा, सकट
क्षतज न० रक्त, लोही
क्षतवृत्ति वि० आजीविकानु कांई साधन रहेवा देवामा न आव्यु होय तेवु
क्षति स्त्री० प्रहार, ईजा (२) व्रण; जखम (३) नाश (४) हानि, नुकसान (५) प्रमाद, भूल (६) पडती, क्षय

क्षत्तृ पु० सारथि (२) द्वारपाळ (३) क्षत्रिय स्त्रीने शूद्रथी थयेलो पुत्र (४) दासीपुत्र
क्षत्र पु०, न० क्षत्रिय जातिनो पुरुष (२) क्षत्रिय जाति (३) सैनिक (४) सामर्थ्य, शक्ति, सत्ता (५) हिंसा
क्षत्रबंधु पु० नामनो ज क्षत्रिय, अधम क्षत्रिय [वर्णनो पुरुष
क्षत्रिय पु० चार वर्णोमाना वीजा क्षत्रिय
क्षप् १० उ० फेकवु
क्षपणक पु० बौद्ध के जैन भिक्षु
क्षपा स्त्री० रात्रि
क्षपाकर पु० चद्र
क्षपाचर पु० राक्षस, निशाचर
क्षपानाथ पु० चद्र [करेलु
क्षपित वि० नाश करेलु; घटाडेलु; क्षीण
क्षम् १ आ० [क्षमते], ४ प० [क्षाम्यति] क्षमा करवी (२) सहन करवु (३) धैर्य राखवु, राह जोवी (४) शक्तिमान थवु – होवु (५) सामु थवु
क्षम वि० क्षमाशील (२) सहनशील (३) समर्थ, शक्तिमान (४) अनुकूळ (५) योग्य, लायक (६) सहन थई शके तेवु
क्षमणीय वि० सहन करवा योग्य (२) क्षमा करवा योग्य
क्षमा स्त्री० खामोशी, दरगुजर करवु ते, माफी (२) पृथ्वी
क्षमान्वित वि० क्षमावान, क्षमायुक्त
क्षमापन न० क्षमा – माफी मागवी ते
क्षमाभृत् पु० पर्वत (२) राजा
क्षमिन् वि० क्षमाशील, धैर्यवान
क्षय पु० घर, निवास (२) घसारो, क्षीण थवु ते, घटवु ते (३) एक रोग, घासणी (४) अत, नाश; ह्रास (५) प्रलय
क्षयकाल पु० प्रलयकाल
क्षयथु पु० खासी, उधरस, छींक
क्षयपक्ष पु० कृष्णपक्ष, अधारियु
क्षयरोग पु० एक रोग, घासणी

क्षीर पु०, न० दूध (२) पाणी
क्षीरकंठ पु० (धावतु) बाळक
क्षीरज न० दही
क्षीरधात्री स्त्री० धाव, धवडावनारी स्त्री
क्षीरधि, क्षीरनिधि, क्षीरवारिधि, क्षीर-समुद्र, क्षीरसागर, क्षीराब्धि पु० क्षीर – दूधनो महासागर
क्षीरिन् वि० दूधवाळु, दूध देतु
क्षीरोद, क्षीरोदधि पु० जुओ 'क्षीरधि'
क्षीव वि० उन्मत्त, दारू पीधेलु (२) उश्केराई गयेलु
क्षु २ प० छींक खावी (२) उधरस खावी (३) ९ उ०, ५ प० कूदको मारवो, ठेकडो मारवो
क्षुण्ण ('क्षुद्' नु भू० कृ०) वि० पग तळे रोळेलु, कचरेलु (२) खाडेलु, पीसेलु (३) जेना उपर घणी अवर-जवर होय तेवु (मार्ग) (४) घणा जणे आचरेलु, अनुसरेलु (५) उल्लघायेलु, भग करेलु (व्रत) (६) जितायेलु
क्षुण्णमनस् वि० पश्चात्ताप पामेलु
क्षुत् स्त्री० छींक
क्षुत्क्षाम वि० भूखथी कृश थयेलु
क्षुत न०, **क्षुता (–ति)** स्त्री० छींक
क्षुद् स्त्री० जुओ 'क्षुधा'
क्षुद् ७ उ० कचरी नाखवु, पग तळे रोळवु (२) पीसवु, खाडवु
क्षुद्र वि० नीच, हलकु (२) नानु, तुच्छ (३) दरिद्री, गरीब (४) कृपण (५) दुष्ट, क्रूर
क्षुद्रधान्य न० हलकु अनाज (सामो वगेरे)
क्षुद्रा स्त्री० मधमाखी (२) वेश्या, नाचनारी (३) कर्कशा
क्षुध् ४ प० भूख्या थवु
क्षुधा स्त्री० भूख
क्षुधान्वित, क्षुधार्त, क्षुधार्दित, क्षुधालु वि० भूख्यु, क्षुधातुर
क्षुधित ('क्षुध्'नु भू० कृ०) वि० भूख्यु
क्षुप पु० झाडवु ['क्षुभित'
क्षुब्ध वि० ['क्षुभ्'नु भू० कृ०] जुओ
क्षुभ् ४ प० कपवु, क्षोभ पामवो
क्षुभित ('क्षुभ्' नु भू० कृ०) वि० कपेलु; क्षोभ पामेलु, खळभळेलु (२) बीनेलु
क्षुर पु० अस्त्रो (२) बाण (३) खरी
क्षुरक्रिया स्त्री० हजामत करवी ते
क्षुरप्र पु० एक प्रकारनु बाण
क्षुरिका स्त्री० छरी, कटार
क्षुरिन् पु० वाळद, हजाम
क्षुरी स्त्री० जुओ 'क्षुरिका'
क्षुल्ल वि० नानु, अल्प
क्षुल्लक वि० नानु, अल्प (२) तुच्छ (३) दुष्ट, हलकु
क्षेत्र न० खेतर (२) स्थान, स्थळ (३) तीर्थक्षेत्र (४) देह (५) उत्पत्ति-स्थान (६) पत्नी
क्षेत्रज्ञ वि० कुशळ, चतुर (२) पु० आत्मा (३) परमात्मा (४) खेडूत
क्षेत्रपाल पु० खेतरनो रखेवाळ
क्षेत्रविद् वि० क्षेत्रज्ञ (२) पु० खेडूत (३) आत्मज्ञानी, ऋषि (४) आत्मा
क्षेत्रिन् पु० खेडूत (२) पति, स्वामी (३) जीवात्मा (४) परमात्मा
क्षेत्रीकृ ८ उ० –नु क्षेत्र बनाववु (२) मालिक बनवु
क्षेप पु० फेकवु ते, नाखवु ते, आम-तेम हलाववु ते (२) मोकलवु – छोडवु ते (३) अनादर (४) उल्लघन (५) विलब (६) व्यतीत करवु ते (समय)
क्षेपक वि० नाखनारु, फेंकनारु (२) वधारानु उमेरेलु (ग्रथमा)
क्षेपण न० फेंकवु ते (२) व्यतीत करवु ते (समय) (३) गाळ; तिरस्कार
क्षेपणि (–णी) स्त्री० जाळ (२) हलेसु (३) गोफण
क्षेम वि० सुख-शाति आपनारु (२) सुख-शातिवाळु, आबाद (३) पु०,

न० सुख-शांति (४) कल्याण, श्रेय (५) सुरक्षितता, सहीसलामती

क्षेमशूर वि० सुरक्षित स्थळे पराक्रमी; घरमां शूरु

क्षेम्य वि० सुखशांतिवाळु (२) आबाद

क्षोड पु० हाथीने बांधवानो थांभलो

क्षोणि स्त्री० पृथ्वी

क्षोणिपति, क्षोणिभुज् पु० राजा

क्षोणी स्त्री० पृथ्वी

क्षोद पु० खांडवु ते (२) जेनी उपर वाटवामां आवे छे ते पथ्थर (३) सूक्ष्मांश, रजकण

क्षोदीयस् वि० घणु नानु (२) तुच्छ

क्षोद्य वि० पग तळे कचरी नाखवा योग्य, उपर पग मूकवा योग्य

क्षोभ पु० कंपवु ते, ऊछळवु ते (२) खळभळाट (३) गभराट, व्यग्रता (४) उश्केरणी [खळभळाट करनार ते

क्षोभण न० उश्केरणी करनार ते,

क्षौणि स्त्री० जुओ 'क्षोणि'

क्षौणिधर, क्षौणिभृत् पु० पर्वत

क्षौणी स्त्री० जुओ 'क्षोणि'

क्षौद्र न० [illegible] (२) [illegible] (३) पाणी (४) [illegible]

क्षौम [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) न० [illegible] (६) [illegible]

क्षौर न० [illegible]

क्षौरिक पु० [illegible]

क्ष्मा स्त्री० [illegible]

क्ष्माप, क्ष्मापति, क्ष्माभुज् पु० [illegible]

क्ष्माभृत् पु० [illegible] (२) [illegible]

क्ष्वेड पु० [illegible]

क्ष्वेडित [illegible] (२) [illegible]

क्ष्वेल् १ प० [illegible]

क्ष्वेलन न०, क्ष्वेला, क्ष्वेलि, क्ष्वेलिका स्त्री० [illegible] (२) मश्करी

ख

ख न० आकाश (२) इंद्रिय (३) शरीरनु छिद्र (मो, कान, आंख, नाक वगेरे) (४) बिंदु, अनुस्वार, शून्य

खग पु० पक्षी (२) सूर्य (३) वायु (४) ग्रह

खगपति पु० गरुड

खगाधिप, खगेश, खगेंद्र पु० गरुड

खच् १ प० देखावु, बहार नीकळवु (२) १० प० बांधवु, जकडवु (३) जडवु (मणि वगेरेने) [पु० पक्षी

खचर वि० आकाशमां गति करतु (२)

खचित ('खच्'नु भू०कृ०) वि० बांधेलु, जकडेलु (२) सज्जड बेसाडेलु, जडेलु

खज, खजक पु०, खजा स्त्री० रवैयो; मथनदंड

खट्वा स्त्री० खाटलो

खट्वारूढ वि० आळसु (खाटले सूई रहेनु) (२) नीच, अधम (३) मूर्ख

खट्वांग पु० [illegible] — [illegible] (शिव वगेरेनी)

खड्ग पु० तलवार

खड्गपत्र न० [illegible]

ख[illegible] पु० आगियो (२) सूर्य

खन् १ उ० खोदवु, खोदी काढवु

खनक पु० खाणमां खोदनार — खाणियो (२) चोर (३) उंदर

खनन न० खोदवु ते

खनि स्त्री० खाण

खनित्र न० कोदाळी

खनी स्त्री० खाण [वस्तु

खपुष्प न० आकाशकुसुम — असंभवित

खर वि० कठण, कर्कश, नक्कर (२) तीक्ष्ण, तीव्र (३) अणीदार, धारवाळु

(४) तीखु (५) उष्ण (६) निर्दय (७) व्यथाकारक (शब्द) (८) पु० गधेडो
खरकुटी स्त्री० हजामनी दुकान, हजामती थेली
खरम् अ० तीव्रपणे, तीक्ष्णपणे
खरांशु पु० सूर्य
खर्जन न० वलूरवु ते
खर्जू स्त्री० वलूर, खूजली
खर्जूर पु० खजूरीनु वृक्ष (२) न० खजूर
खर्पर पु० खोपरी (२) भिक्षापात्र (३) ठीकरु, कलाडु
खर्म न० रेशम (२) पुरुषातन, मरदाई
खर्व वि० ठीगणु, वामणु (२) पु०, न० खर्वनी संख्या (१०,००,००,००,०००) (३) कुबेरनो एक निधि
खर्वट पु०, न० पर्वतनी तळेटी आगळ आवेलु शहेर (२) बसो गामडा वच्चेनु मुख्य शहेर
खर्वित वि० वामणु बनेलु
खल पु० शठ; दुर्जन (२) पु०, न० अनाजनु खळु – खळी (३) तेलनो नीचे जामतो कचरो (४) खरल
खलक पु० घडो (२) लोटो
खलति वि० टालवाळु, टालियु
खलि (–ली) स्त्री० तेलनो कचरो (२) खोळ [तिरस्कार, अपमान
खलीकार पु०, **खलीकृति** स्त्री० भत्सर्ना,
खलीन पु०, न० लगामनो मोढामा रहेतो भाग – चोकडु
खलु अ० खरेखर, नक्की (२) वाक्यालंकार तरीके पण वपराय छे
खल्ल पु० पथ्थरनो खल (२) चामडु; खाल (३) मशक, पखाल
खल्वाट वि० बोडा माथावाळु, टालियु
खष्प पु० क्रोध, गुस्सो (२) निर्दयता
खस पु० चामडीनो एक रोग
खंज् १ प० लगडावु
खंज वि० लूलु, लगडु
खंजन, खजरीट पु० एक पक्षी (जेनी पूछडी सतत हाल्या करे छे)
खंड् १ प० भागवु, कापवु, टुकडा करवा (२) पराजय करवो, हराववु (३) दूर करवु, नाबूद करवु
खंड वि० भागेलु (२) तूटक (सतत नहि तेवु) (३) पु०, न० भाग, टुकडो (४) पुस्तकनो विभाग, प्रकरण (५) समूह (६) पृथ्वीनो विभाग
खंडक पु०, न० टुकडो, भाग
खडन वि० भागनारु, तोडनारु, नाश करनारु (२) न० भागवु – तोडवु ते (३) ईजा करवी – करडवु ते (४) दलीलने तोडवी – जवाब आपवो ते (५) निराश करवु ते
खंडपरशु, खंडपर्शु पु० शकर (२) परशुराम [टुकडा
खंडशस् अ० ककडे ककडे (२) टुकडे
खंडशः कृ ८ उ० टुकडा करवा
खंडित ('खड्' नु भू० कृ०) वि० भागेलु; तूटेलु, नाश पामेलु (२) तोडेलु (दलील), जवाब आपेलु (३) निराश थयेलु, छेतरायेलु
खंडितवृत्त वि० भ्रष्टचरित्र, पतित
खंडिता स्त्री० बेवफा प्रेमी के पतिथी छेतरायेली अने तेथी रूठेली स्त्री
खडीकृ ८ उ० टुकडा करवा
खात ('खन्' नु भू० कृ०) वि० खोदेलु; खोदी काढेलु (२) न० खाडो, खाई
खाद् १ प० खावु
खादक वि० खानारु (२) पु० देवादार
खादन न० खोराक (२) खावु ते
खादिर वि० खेरना लाकडानु
खाद्य वि० खावा लायक, खावानु
खानि स्त्री० खाण [एक माप
खार पु०, **खारि (–री)** स्त्री० अनाजनु
खाडव न० कुरुक्षेत्रनु एक वन (तेने अग्निए बाळी नाख्यु हतु)
खिद् ४, ७ आ० दुःखी थवु (२) खिन्न थवु, थाकी जवु

गजगति स्त्री० हाथीना जेवी चाल
गजगामिनी स्त्री० हाथीना जेवी चाल-वाळी स्त्री
गजता स्त्री० हाथीओनु जूथ
गजदघ्न वि० हाथी जेटलु ऊचु
गजदंत पु० गणपति (२) हाथीदात (३) भीतमानी खीली, खीटी
गजद्वयस वि० जुओ 'गजदघ्न'
गजनिमीलिका स्त्री०, **गजनिमीलित** न० हाथीनी पेठे कशा तरफ आख बध करवी ते, जोता होवा छता, जोयानो ढोग करवो ते
गजपुंगव पु० मोटो–श्रेष्ठ हाथी
गजमुक्ता स्त्री०, **गजमौक्तिक** न० हाथीना कुभस्थळमा पेदा थतु मनातु मोती
गजयूथ न० हाथीनु टोळु
गजस्नान न० हाथीना स्नान जेवी निरुपयोगी प्रवृत्ति (हाथी नाह्या पछी शरीर उपर धूळ फेंके छे)
गजानन पु० गणपति
गजापसद पु० हलको हाथी, तुच्छ हाथी
गजारि पु० सिंह
गजारोह पु० महावत
गजेंद्र पु० श्रेष्ठ हाथी, मोटो हाथी
गडि पु० वाछडो, जुवान आखलो (२) आळसु बळद
गड्डुर (–ल) पु० घेटु
गड्डुरिका स्त्री० घेटानी हार
गड्डुरिकाप्रवाह पु० गाडरियो प्रवाह
गण् १० उ० गणवु, गणतरी करवी (२) किमत आकवी (३) दरकार राखवी (४) मानवु, -मा गणना करवी (५) ध्यानमा लेवु
गण पु० समूह, समुदाय, टोळु (२) वर्ग, मडळ (३) शकरनो अनुयायी वर्ग
गणक पु० गणितशास्त्री (२) ज्योतिषी
गणन न० गणवु ते, गणतरी करवी ते (२) मानवु–धारवु ते
गणना स्त्री० गणतरी (२) लेखु
गणपति, गणाधिपति पु० शकर (२) गजानन–गणेश
गणि स्त्री० गणवु ते; गणतरी (२) पु० [शास्त्रज्ञ
गणिका स्त्री० वेश्या (२) हाथणी
गणित ('गण्' नु भू० कृ०) वि० गणेलु (२) ध्यानमा–गणतरीमा लेवायेलु (३) न० गणितशास्त्र
गणिन् वि० गण–टोळु जेने छे तेवु (२) पु० आचार्य
गणेश पु० गणपति
गण्य वि० गणनामा लेवा जेवु (२) (समासने अते) –ना वर्गनु
गत ('गम्' नु भू० कृ०) वि० गयेलु (२) मृत (३) नष्ट (४) जाणेलु; समजेलु (५) (दशा) पामेलु (६) –ने लगतु, –ने विषेनु (समासमा) (७) न० गमन, जवु ते (८) गति; चाल
गतत्रप वि० निर्लज्ज, शरम विनानु
गतदिनम् अ० गई काले
गतप्रभ वि० शोभारहित, कातिरहित
गतप्राय वि० लगभग पूरु थयेलु–गयेलु
गतभर्तृका स्त्री० विधवा (२) जेनो पति परदेश गयो होय तेवी स्त्री
गतमनस्क वि० –नो विचार करतु
गतवयस् वि० वृद्ध, प्रौढ
गतव्यथ वि० जेनु दुःख दूर थयु छे तेवु [करतु
गतश्रम वि० श्रम के दुःखनो विचार न
गतसत्त्व वि० मृत, निर्जीव (२) नीच
गतसंग वि० आसक्ति विनानु (२) –थी विमुख, –ना प्रत्ये उपेक्षावाळु
गतस्पृह वि० स्पृहा विनानु (२) दया–माया विनानु
गतागत न० जवु-आववु ते (२) वार-वार जन्म-मरण (३) स्थळ बदलवु ते (४) भूत-भविष्यनु वर्णन
गताधि वि० चितामुक्त

गताध्वन् वि० जेणे मुसाफरी पूरी करी छे तेवु (२) अनुभवी, रहस्यने पामेलु

गतानुगतिक वि० बीजानु अंध अनुकरण करनारु, आगळ जनारने अंधपणे अनुसरनारु

गतायुस् वि० वृद्ध, अशक्त (२) मृत

गतार्तवा स्त्री० वृद्ध के वंध्या स्त्री

गतार्थ वि० निर्धन (२) अर्थ विनानु

गतासु वि० मृत, प्राणहीन

गतांत वि० अंतनी नजीक आवेलु

गति स्त्री० जवु ते, हालवु-चालवु ते (२) चाल (३) प्रवेश (४) अवकाश (५) प्रवृत्ति, क्रम (६) स्थिति, दशा (७) पहोंचवु ते, पामवु ते (८) मार्ग, रस्तो, उपाय (९) आशरो, शरणु (१०) डहापण, समज (११) जीवननी अवस्था (१२) कर्मफळरूपे मरणोत्तर प्राप्त थती स्थिति

गतिभंग पु० अटकवु ते, थोभवु ते

गतिहीन वि० आशरा के शरण विनानु

गतोत्साह वि० उत्साह नाश पामेलु

गत्वर वि० जंगम (२) क्षणभंगुर

गद् १ प० बोलवु (२) गणतरी करवी

गद पु० भाषण, वाक्य (२) व्याधि, रोग (३) बळराम (४) न० झेर

गदा स्त्री० लडाईनु एक हथियार

गदाग्रज पु० गद – बळरामना मोटाभाई – श्रीकृष्ण

गदाधर पु० विष्णु

गदित वि० कहेलु, वर्णवेलु

गदिन् वि० (हाथमां) गदावाळु (२) व्याधिग्रस्त

गद्‌गद वि० गळगळु (२) पु०, न० गळगळु थईने बोलवु ते

गद्‌गदम् अ० गळगळु थईने

गद्य वि० बोलवानु; कहेवानु (२) न० गवाय नहि एवु (पद्यथी ऊलटु) ते

गभस्ति पु०, स्त्री० प्रकाशनु किरण

गभस्तिमत्, गभस्तिमालिन् पु० सूर्य

गभीर वि० ऊंडु (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible]

गम् १ प० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible]

– [illegible]

गम वि० (समासने अंते) [illegible] (२) पु० [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible]

गमक वि० सूचक, [illegible] (२) [illegible]

गमन न० जवु ते, गति; [illegible] (२) [illegible] आववु ते (३) [illegible] माटे कूच (४) प्राप्त करवु ते (५) ज्ञान, समज (६) सहन करवु ते (७) [illegible]

गमनीय वि० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] उचित (५) [illegible] माटे योग्य (स्त्री-पुरुष) (६) [illegible]

गमागम पु० जवु अने आववु ते (२) समाधाननी [illegible]

गम्य वि० जुओ 'गमनीय'

गर पु० रोग (२) पु०, न० झेर

गरण न० गळवु ते (२) छांटवु ते (३) विष [झेर

गरद वि० झेर आपनार (२) पु०, न० [illegible]

गरल पु०, न० विष, झेर

गरिमन् पु० महत्त्व, मोटाई (२) भार, वजन (३) श्रेष्ठता (४) योग्यता, किंमत (५) आठ सिद्धिओमांनी एक

गरिष्ठ वि० सौथी भारे (२) सौथी वअगत्यन् [(२) वधु अगत्यनु

गरीयस् वि० (बेमा) वधु वजननु

गरुड पुं० पक्षीओनो राजा; विष्णुनु वाहन

गरुडकेतु, गरुडध्वज पु० विष्णु

गरुडाग्रज पु० अरुण (सूर्यनो सारथि)

गरुडांक पु० विष्णु

गरुत् पु० पखीनी पाख [(३) पक्षी

गरुत्मत् वि० पाखोवाळु (२) पु० गरुड

गर्गर पु० गागर, दही वलोववानु पात्र

गर्ज् १ प०, १० उ० गर्जना करवी (२) गाजवु

गर्जन न०, **गर्जना** स्त्री० गर्जवु ते, तेथी थतो के तेना जेवो ध्वनि – अवाज

गर्जित वि० गाजेलु (२) बडाश मारेलु (३) न० वादळानो गडगडाट

गर्त पु०, न०, **गर्ता** स्त्री० खाडो, खाई (२) गुफा

गर्दभ पु० गधेडो

गर्ध पु० उत्कट इच्छा, लोभ

गर्धन, गर्धित, गर्धिन् वि० लोभी; लालचु

गर्भ पु० गर्भाशय (२) माना पेटमा रहेलु जीवनु रूप (३) गर्भधारण (४) अदरनो भाग, मध्यभाग

गर्भगृह न० जुओ 'गर्भागार'

गर्भदास पु० जन्मथी ज दास – गुलाम

गर्भपात पु० गर्भस्राव, चोथे महिने गर्भ गळी जवो ते

गर्भभवन न० जुओ 'गर्भागार'

गर्भवती स्त्री० सगर्भा स्त्री

गर्भवास पु० गर्भनो उदरमा वास

गर्भवेश्मन् न० जुओ 'गर्भागार'

गर्भस्राव पु० जुओ 'गर्भपात'

गर्भागार न० गर्भाशय (२) अत पुर (३) मदिरनो गभारो

गर्भाधान न० गर्भ मूकवो ते के धारण करवो ते (२) एक सस्कार

गर्भिणी स्त्री० सगर्भा स्त्री

गर्भित वि० गर्भवाळु (२) –थी पूर्ण

गर्भतृप्त वि० जन्मथी ज सतोषी (२) धनथी के संततिथी तृप्त (३) आळसु

गर्भेशूर वि० बायलु, जुस्सा विनानु

गर्भेश्वर पु० गर्भश्रीमत

गर्व पु० अभिमान, गुमान

गर्वित ('गर्व्' नु भू० कृ०) वि० गर्ववाळु, अभिमानी

गर्ह् १, १० आ० ठपको देवो, तिरस्कारवु (२) आरोप मूकवो, आळ मूकवु (३) दिलगीर थवु

गर्हण न०, **गर्हणा, गर्हा** स्त्री० ठपको, तिरस्कार

गर्हित ('गर्ह्' नु भू० कृ०) वि० निंदेलु; तिरस्कारेलु (२) अधम, हलकु (३) न० तिरस्कार करवा योग्य कृत्य

गर्ह्य वि० निंद्य, तिरस्कारवा योग्य

गल् १ प० झरवु, टपकवु, गळवु (२) नीकळी पडवु, पडी जवु (३) अदृश्य थवु, नाश पामवु (४) गळवुं, खावु

गल पु० गळु, डोक [दबाववी ते

गलहस्त पु० गळु पकडवु ते; गळची

गलित ('गल्' नु भू० कृ०) वि० पडी गयेलु, नीचे पडेलु (२) टपकेलु, झरेलु; गळेलु (३) पीगळेलु (४) अदृश्य थयेलु, जतु रहेलु (५) छूटु थयेलु, ढीलु थयेलु (गाठ) (६) खाली थयेलु, टपकी गयेलु (७) गळेलु – गाळेलु (पाणी वगेरे) (८) वगडी गयेलु (९) ओछु थयेलु, घटी गयेलु [पाछली उमरनु

गलितवयस् वि० वृद्धावस्थामा आवेलु,

गल्ल पु० गाल

गल्लर्क, गल्वर्क पु० दारू पीवानु पात्र

गवय पु० गलकवल विनानु, वळदना आकारनु पशु

गवाक्ष पु० पवन आववा माटेनु बाकु (२) जाळियु, जाळी

गवांपति पु० गोवाळ (२) साढ (३) अग्नि (४) सूर्य
गवेष् १ आ०, १० प० शोधवु, शोध करवी (२) अत्यंत इच्छा करवी, प्राप्त करवा प्रयत्न करवो
गवेष वि० शोधतु (२) पु० शोध
गवेषण न०, गवेषणा स्त्री० शोध, तपास
गवेषित वि० शोधेलु, तपास करायेलु
गवोद्ध पु० उत्तम गाय अथवा साढ
गव्य वि० गायनु, गाय संबंधी (२) गायमांथी उत्पन्न थयेलु (दूध, छाण इ०) (३) गायने योग्य – हितकर (४) न० गायनु धण, गोसमूह (५) दूध (६) गोचर जमीन (७) गोरोचन (८) धनुष्यनी पणछ – दोरी
गव्यूत न०, गव्यूति स्त्री० बे कोस जेटलु अंतर (२) गोचर, चरो
गहन वि० गाढु, ऊंडु (२) दुर्गम (३) दुर्बोध, कठिन (४) गंभीर, भव्य (५) न० दुर्गम जंगल
गह्वर वि० ऊंडु, दुर्गम (२) मनमां गूंचवायेलु (३) न० ऊंडो खाडो (४) जंगल, झाडी (५) गुफा (६) दुर्गम स्थान (७) समस्या, कोयडो (८) पु० निकुंज, लतामंडप
गह्वरित वि० विचारमां खोवाई गयेलु (२) संतायेलु, छुपायेलु
गंगा स्त्री० गंगानदी
गंगाज पु० भीष्म (२) कार्तिकेय
गंगाद्वार न० हरिद्वार
गंगापुत्र पु० भीष्म (२) कार्तिकेय
गंगावतार पु० गंगानु स्वर्गमांथी पृथ्वी पर आववु ते [ति स्थान
गंगासागर पु० गंगा ज्यां समुद्रने मळे छे
गंगासुत पु० भीष्म (२) कार्तिकेय
गंगोद्भेद पु० गंगानु मूळ
गंगोल पु० एक मणि (गोमेद)
गंज पु०, न० खजानो, भंडार, कोठार (२) दाणापीठ

गंजन वि० चढियातु (२) [illegible]
गंड पु० गाल (२) हाथीनो गंडस्थल (३) गूमड (४) गेंडो (५) गांठ
गंडक पु० गेंडो (२) गांठ (३) गूमड (४) अंतराय, विघ्न [illegible]
गंडकी स्त्री० उत्तर हिंदनी एक नदीनु [illegible]
गंडग्राम पु० मोटु गाम
गंडभित्ति स्त्री० भींत जेवो पहोळो गाल (२) हाथीनो मद झरे छे ते भाग
गंडभेद पु० चोर
गंडमाल पु०, गंडमाला स्त्री० गळानी गांठ उपर सोजा आववा ते
गंडशैल पु० भूकंप वगेरेथी गबडी पडेलो मोटो पथ्थर [कुंभस्थळ
गंडस्थल न० हाथीना लमणानो भाग,
गंडीर पु० शूरवीर (२) पहेलवान (३) [illegible]
गडु पु०, स्त्री०, गडू स्त्री० [illegible], तणियो (२) गांठ (३) भालो
गंडूष पु० कोगळो (२) [illegible] (पाणीनो)
गंडोपधान न० गालमसूरियु
गंतव्य वि० जवा लायक, जवा माटेनु
गंत्री स्त्री० बळदगाडी
गंध पु० गंध; वास (२) सुवास (३) सुगंधी पदार्थ (४) गंधक (५) गर्व, अभिमान (६) चंदननो लेप (७) संबंध; सगाई (८) पाडोशी (९) लगारेक (१०) (समासमां) 'बहु ओछु' – एवो अर्थ बतावे (उदा० 'घृतगंधि') (११) न० सोडम, वास (१२) अगर
गंधक पु० एक खनिज पदार्थ
गंधकाली स्त्री० व्यासमाता – सत्यवती
गंधगज, गंधद्विप पु० उत्तम जातिनो हाथी
गंधन न० सतत प्रयत्न, खंत (२) हिंसा; वध (३) प्रगट करवु ते, सूचन
गंधर्व पु० देवोनो गवैयो, एक देवजाति (२) गायक (३) घोडो (४) मूआ पछीनी अने जन्म्या अगाउनी जीवनी स्थिति

गंधर्वनगर, गंधर्वपुर न० आकाशमा गधर्वोनु कल्पित नगर, मृगजळ पेठे आकाशमा देखाती नगरनी आकृति
गंधर्वविद्या स्त्री० सगीतशास्त्र
गंधर्वविवाह पु० विवाहनो एक प्रकार (जेमा वर-कन्या पोतानी मेळे छानी रीते देहसबध करी परणी जाय छे)
गंधवह, गंधवाह पु० पवन
गंधहस्तिन् पु० जुओ 'गधगज'
गंधाढ्य न० चदन
गंधि, गंधिक वि० (समासने अते)–ना गधवाळु (२) जेमा गधमात्र छे–बहु ओछु प्रमाण छे एवु (३) पु० सुगधी पदार्थ वेचनारो
गंधोली स्त्री० पीळी भमरी
गंभीर वि० जुओ 'गभीर'
गा १, २ आ०, ३ प० जवु (२) स्तुति करवी, वखाणवु (३) कोई स्थिति के दशाने पामवु
गाढ ('गाह्'नु भू० कृ०) वि० डूबकी मारेलु, प्रवेशेलु (२) खूब वसवाटवाळु, भीडवाळु (३) चपसीने वेठेलु, खूब दबायेलु (४) घट्ट, गाढु (५) ऊडु, दुर्गम (६) अत्यत, तीव्र
गाढतरम् अ० वधु चपसीने, वधु दबावीने, वधु तीव्रताथी [चपसीने
गाढम् अ० अत्यत भार दईने; तीव्रपणे;
गाढमुष्टि वि० कजूस, लोभी
गाढवचस् पु० देडको
गात्र न० देह (२) शरीरनो अवयव
गात्रक न० शरीर
गात्रयष्टि स्त्री० पातळी–नाजुक काया
गाथक पु० गवैयो
गाथा स्त्री० स्तोत्र (वेदनु नही एवु) (२) श्लोक (३) कथा, आख्यान (४) गावु ते, गीत (५) एक प्राकृत भाषा
गाथिक पु० जुओ 'गाथक'
गाथिका स्त्री० गीत, स्तोत्र
गाध् १ आ० रहेवु, ऊभा रहेवु (२) जवा नीकळवु, प्रवेशवु (३) तपासवु; शोधवु (४) गूथवु; रचवु (ग्रथ इ०)
गाध वि० छीछरु, पार करी शकाय एवु (२) न० छीछरा पाणीवाळु स्थान, उतार (३) लोभ, तृष्णा, कामना (४) तळियु, तळ [(गाधि राजाना पुत्र)
गाधिनंदन, गाधिपुत्र पु० विश्वामित्र
गान न० गीत (२) स्तुति (३) ध्वनि
गानीय न० गीत [जतु (मार्ग)
गामिक वि० (समासने अते) –जतु, लई
गामिन् वि० (समासने अते ज) जनारु (२) –नी उपर सवारी करनारु (३) लई जतु, दोरी जतु (४) –ने लागु पडतु; –ना सवधी
गाय पु० गायन, गावु ते
गायक पु० गानारो (२) नट
गायत्री स्त्री० एक वैदिक छद (२) एक प्रसिद्ध मत्र (सध्या वखते जपातो) (३) ब्रह्मानी पत्नी (४) दुर्गा
गायन पु० गायक (२) न० गावु ते (३) गावानो धधो
गारुड वि० गरुड जेवु (२) गरुड सवधी (३) पु०, न० मरकत मणि (४) सापना झेरनो मत्र (५) एक व्यूह
गारुडिक पु० गारुडी, सापनो मत्र जाणनार (२) मदारी
गारुत्मत वि० गरुडना आकारनु (२) गरुडनी शक्तिवाळु (अस्त्र)
गार्ध्य न० लोभियापणु
गार्हकर्मेधिक पु० गृहस्थनु कर्तव्य–धर्म
गार्हपत्य पु० गृहस्थे राखवाना त्रण अग्निमानो एक (२) ते अग्निनु स्थान
गार्हस्थ्य न० गृहस्थाश्रम, गृहस्थधर्म (२) घरखटलो
गालन न० गाळवु ते (प्रवाहीने) (२) ओगाळवु ते (३) गाळ भाडवी ते
गालि स्त्री० गाळ, अपशब्द

गाह् १ आ० डूबकु मारवु, नाहवु (२) ऊडु पेसवु, चोतरफ फरवु (३) हलाववु, वलोववु (४) तल्लीन थवु (५) छुपावु [मारवु ते

गाह पु०, गाहन न० नाहवु ते, डूबकु

गांग, गांगेय वि० गगा नदीनु, गगा उपरनु (२) पु० भीष्म (३) कार्तिकेय

गाडिव पु०, न० अर्जुननु धनुष्य

गाडिवधन्वन् पु० अर्जुन

गांडीव पु०, न० जुओ 'गाडिव'

गांडीवधन्वन् पु० जुओ 'गाडिवधन्वन्'

गाडीविन् पु० अर्जुन

गात्री स्त्री० बळदगाडी

गादिनी स्त्री० गगा

गादिनीसुत पु० भीष्म (२) कार्तिकेय

गाधर्व वि० गधर्वनु, गधर्वने लगतु (२) पु० गधर्व, स्वर्गनो गायक (३) आठ लग्नप्रकारोमानो एक, गधर्व विवाह (४) एक उपवेद – सगीतशास्त्र (५) घोडो (६) न० सगीतशास्त्र

गाधर्वक पु० गवैयो

गाधर्वकला, गाधर्वविद्या स्त्री० सगीत

गाधर्विक पु० गवैयो [(२) दुर्योधन

गाधारि पु० दुर्योधननो मामो – शकुनि

गाधारी स्त्री० गाधार देशना राजानी पुत्री – धृतराष्ट्रनी पत्नी – दुर्योधनादिनी माता – शकुनिनी बहेन

गाधिक पु० सुगधी पदार्थो वेचनारो (२) कारकुन (३) न० सुगधी द्रव्य

गाभीर्य न० ऊडाण (पाणीनु के अवाजनु) (२) गभीरता (अर्थनी के चारित्र्यनी) (३) उदारता

गिर् स्त्री० भाषा, वाणी, शब्द (२) वाणीनी देवता – सरस्वती

गिरा स्त्री० वाणी, भाषा (२) स्तुति

गिरि वि० पूज्य, सन्माननीय (२) पु० पर्वत, खडक

गिरिक पु० शिव

गिरिकंदर पु० पर्वतनी गुफा

गिरिजा स्त्री० पार्वती (२) गगा

गिरिजातनय पु० कार्तिकेय (२) गणपति

गिरिजाधव, गिरिजापति पु० शिव

गिरिज्वर पु० इद्रनु वज्र

गिरितनया स्त्री० पार्वती

गिरिदुर्ग पु० पर्वत उपरनो किल्लो

गिरिध्वज पु० इद्रनु वज्र [नदी

गिरिनदिनी स्त्री० पार्वती (२) गगा (३)

गिरिप्रस्थ पु० पर्वत उपरनो सपाट भाग

गिरिभिद् पु० इद्र (२) स्त्री० नदी

गिरिराज् (–ज) पु० हिमालय

गिरिव्रज न० मगधनी राजधानी – राजगृह

गिरिश पु० शिव (कैलासे रहेनार)

गिरिशृग पु० गणपति

गिरिसुता स्त्री० पार्वती

गिरीश, गिरींद्र पु० शकर (२) हिमालय

गिर्वाण पु० देव [खायेलु

गिलित ('गिल्'नु भू० कृ०) वि० गळेलु;

गीत ('गै'नु भू० कृ०) वि० गायेलु, गवायेलु (२) कहेवायेलु (३) न० गावु ते; गीत

गीतक न० गीत, गायन

गीतबंधन न० गावा माटेनु महाकाव्य

गीता स्त्री० केटलाक धार्मिक पद्यग्रथोने आपवामा आवेलु नाम, खास करीने श्रीमद् भगवद्गीता

गीति स्त्री० गीत (२) गावु ते (३) एक छद (४) साममत्र

गीतिका स्त्री० नानु गीत

गीर्ण ('गॄ'नु भू० कृ०) वि० गळी जवायेलु (२) वर्णवायेलु

गीर्वाण पु० देव

गुच्छ, गुच्छक पु० गोटो; झूडो (२) फूलनो गुच्छो (३) मोरना पीछानो झूडो

गुटिका, गुटी स्त्री० नानी गोळी (२) मोती

गुड पु० गोळ (खाद्य) (२) गोळो, दडो

गुडाकेश पु० शकर (२) अर्जुन (जटिया जेवा वाळ 'गुडा' उपरथी)
गुण् १० उ० गुणाकार करवो (२) आमत्रण आपवु (३) शिखामण आपवी
गुण वि० गुणवान (२) पु० मूळ लक्षण; धर्म (३) सद्गुण, सारो गुण (४) लाभ, उपयोग (५) असर, परिणाम (६) दोरी; दोरो; दोरडी (७) धनुष्यनी दोरी, पणछ (८) वीणा वगेरे वाद्यना तार (९) दीवानी वाट, दिवेट (१०) अधिकता, उत्कर्ष (११) प्रकृतिना घटक गणाता – सत्त्व, रजस् अने तमस् ए त्रण गुणोमानो दरेक
गुणकार पु० गौण वस्तुओ राधनार रसोइयो (२) भीमसेन
गुणकृत्य न० पणछ तरीकेनो उपयोग
गुणगान न० गुण गावा ते, गुणनु वर्णन करवु ते [गुणोथी आकर्षाय तेवु
गुणगृह्य वि० गुणोनी कदर करनारु,
गुणगौरी स्त्री० शील-गुणवती स्त्री
गुणग्रहीतृ वि० गुणनी कदर करनारु
गुणग्राम न० सद्गुणोनो समूह
गुणग्राहक, गुणग्राहिन्, गुणज्ञ वि० गुणनी कदर करनारु
गुणतः अ० गुण प्रमाणे, गुण अनुसार
गुणता स्त्री०, **गुणत्व** न० गौणपणु (२) उत्तमपणु; योग्यता (३) दोरडी होवापण
गुणन न० गुणाकार (२) गणतरी (३) गुणोनु कीर्तन
गुणनिका स्त्री० अभ्यास; पुनरावर्तन (२) माळा; हार (३) नृत्यकळा
गुणपूग न० गुणसमुदाय
गुणप्रकर्ष पु० गुणोनी उत्तमता
गुणराग पु० बीजाना गुणोमा आनंद – आसक्ति
गुणवत्ता स्त्री० सारा गुणोवाळा होवापणु (२) उत्तमता, श्रेष्ठता
गुणसंख्यान न० साख्यशास्त्र
गुणसंपद् स्त्री० गुणसमृद्धि
गुणाकर पु० गुणोनी खाण – सर्व सद्गुणो वाळो मनुष्य (२) शिव
गुणागुण पु० पाप-पुण्य, धर्म-अधर्म
गुणाग्र्य न० उत्तम गुण, मुख्य गुण
गुणाढ्य वि० सारा गुणोयुक्त
गुणातीत वि० सत्त्व वगेरे त्रण गुणोने – तेमना कार्योने ओळगी गयेलु (परमात्मा, मुक्त)
गुणानुबधित्व न० सद्गुणो साथेनो सबंध
गुणाश्रय पु० सद्गुणी
गुणांतर न० बीजो (सारो) गुण
गुणित वि० गुणेलु (२) ढगलो करेलु, एकत्रित करेलु
गुणिन् वि० गुणयुक्त; सद्गुणी (२) शुभ
गुणीभूत वि० गौण बनेलु, मूळ अर्थ के अगत्य विनानु थयेलु (२) गुणरूप बनेलु
गुणोत्कर्ष पु० गुणोनी बाबतमा श्रेष्ठता; उत्तम गुणोनी प्राप्ति
गुणोपेत वि० गुणयुक्त, सारा गुणवाळु
गुणौघ पु०, न० गुणोनो समूह
गुद न०, **गुदा** स्त्री० शरीरमाथी विष्ठा नीकळवानु द्वार
गुप् १ प० [गोपायति] रक्षण करवु, बचाववु (२) सताडवु, छुपाववु (३) ४ प० गभराई जवु; व्याकुळ थवु; व्यग्र थवु (४) १० उ० प्रकाशवु (५) बोलवु (६) सताडवु (७) १ आ० [गोपते] सताडवु; छुपाववु (८) १ आ० [जुगुप्सते] धिक्कारवु, तिरस्कारवु (९) निंदवु (द्वितीया के पचमी साथे)
गुप्त ('गुप्' नु० भू० कृ०) वि० रक्षायेलु, बचावेलु (२) गुप्त राखेलु, सताडेलु (३) खानगी, छानु (४) नजरे न पडतु, अदृश्य
गुप्तगति पु० गुप्तचर, जासूस
गुप्तचर वि० गुप्त रीते जनारु (२) पु० जासूस

गुप्ति स्त्री० रक्षण, बचाव (२) छुपाववु ते (३) ढाकवु ते; म्यानमा मूकवु ते (४) बधन, केद (५) भोयरु (६) किल्लो

गुरु वि० भारे, वजनदार (२) मोटु, विशाळ (३) दीर्घ, लाबु (४) महत्त्वनु (५) दु सह, तीव्र (६) पूज्य (७) पचवामा भारे (८) अभिमानी (९) श्रेष्ठ, उत्तम (१०) सामे न थई शकाय तेवु, प्रबळ (११) अमूल्य (१२) पु० पिता, पूर्वज, ससरो (१३) पूज्य के वडील माणस (१४) शिक्षक; अध्यापक (१५) आचार्य, धार्मिक सस्कार आपनार (१६) स्वामी; उपरी (१७) बृहस्पति (१८) द्रोणाचार्य

गुरुक वि० थोडुक भारे

गुरुकुल न० गुरुनु घर, विद्यापीठ

गुरुकृत वि० पूजेलु (२) घणु महत्त्व आपेलु, मोटु – उत्तम मानेलु

गुरुक्रम पु० गुरु द्वारा चाल्यु आवेलु परपरागत शिक्षण – उपदेश

गुरुचर्या स्त्री० गुरुसेवा

गुरुजन पु० वडील के पूज्य पुरुष

गुरुतर वि० वधु अगत्यनु (२) वधु पूज्य (३) वधु भारे (४) वधु मुश्केल

गुरुता स्त्री० वजन; भारेपणु (२) मुश्केली (३) महत्ता (४) पूज्यता (५) अगत्य

गुरुदक्षिणा स्त्री० अभ्यास पूरो कर्या पछी गुरुने आपवानी दक्षिणा

गुरुलाघव न० ओछु-वत्तु मूल्य के अगत्य

गुरुवर्तिता स्त्री० गुरु के वडील प्रत्येनु आज्ञाकितपणु

गुरुवर्तिन् पु० गुरुने घेर रहेतो विद्यार्थी

गुरुवृत्ति स्त्री० गुरु के वडील प्रत्ये आज्ञाकितपणे वर्तवु ते

गुरुव्यथ वि० भारे व्यथायुक्त

गुरुस्व (गुरु+स्व) न० गुरुनी मिलकत

गुर्जर पु० गुजरात देश के तेनो वतनी

गुर्वर्थ वि० अगत्यनु (२) पु० गुरुदक्षिणा

गुर्वंगना स्त्री० गुरुपत्नी

गुर्विणी, गुर्वी स्त्री० सगर्भा स्त्री

गुलिका स्त्री० दडो, मणको (२) गोळी (३) मोती

गुल्फ पु० घूटी, कूटण

गुल्म पु०, न० झाडी (२) किल्लो (३) सैन्यविभाग (४) वरोळ, ते वधवानो रोग (५) छावणी (६) तबू

गुह् १ उ० सताडवु, ढाकवु

गुह पु० कार्तिकेय

गुहा स्त्री० गुफा (२) खाडो (३) अत करण, बुद्धि (४) छुपाववु ते

गुहाशय वि० गुफामा रहेनारु, गुफामा सूनारु (२) हृदय के अत करणमा रहेनारु

गुह्य वि० सताडवा योग्य, गुप्त राखवा योग्य (२) गूढ (३) न० गुप्त वात, रहस्य (४) एकात स्थळ (५) पु० दभ; पाखड (६) काचबो

गुह्यक पु० कुबेरना भडारनो रक्षक; एक द्विजाति

गुज् १ प० गुंजवु, गुजारव करवो

गुंज पु० गुजारव (२) गुच्छो

गुंजन न० गुजवु ते; गुजारव

गुजा स्त्री० चणोठीनो छोड (२) चणोठी

गुंजित न० गुजारव, गणगणाट

गुंठन न० ढाकवु ते, छुपाववु ते (२) चोपडवु – चोळवु ते

गुंठित वि० घेरायेलु, ढकायेलु

गुंफ् ६ प० परोववु, गूथवु

गुंफित ('गुफ्'नु भू० कृ०) वि० गूथेलु, परोवेलु

गूढ ('गुह्'नु भू० कृ०) वि० सताडेलु; ढाकेलु (२) गुप्त, छानु राखेलु (३) खानगी (४) नजरे न पडे तेवु

गूढचार, गूढचारिन् पु० जासूस

गूर्जर पु० जुओ 'गुर्जर'

गूर्द पु० कूदको

गृद्ध ('गृध्' नु भू० कृ०) आसक्त

गृध् ४ प० लोभ करवो, अत्यत तृष्णा राखवी
गृध्नु वि० लोभी, इच्छावाळु, आतुर
गृध्य न० लोभ; तृष्णा
गृध्र वि० लोभी, विषयेच्छु, कामी (२) पु०, न० गीध
गृध्रपति, गृध्रराज पु० जटायु
गृष्टि स्त्री० एक वार वियायेली — जुवान गाय (२) जुवान पशु-मादा (समासमा)
गृह न० घर (२) पत्नी (३) गृहस्थाश्रम
गृह पु० व० व० निवासस्थान; घर (२) पत्नी (३) गृहस्थाश्रम; घरखटलो
गृहक न० वाटिका
गृहकर्तृ पु० घर बाधनार; सुतार
गृहगोधा स्त्री० घरोळी [गृहकलह
गृहच्छिद्र न० घरनी गुप्त वात (२)
गृहदारु न० घरनो थाभलो [स्त्री
गृहदीप्ति स्त्री० घरनी शोभारूप सद्गुणी
गृहपति पु० गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी (२) घरनो मुख्य माणस (३) गामनो मुखी — आगेवान
गृहमणि पु० दीपक, दीवो
गृहमेघ पु० घरोनो समुदाय
गृहमेधिन् पु० गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी
गृहयंत्र न० ध्वजदड
गृहसार पु० मिलकत
गृहस्थ पु० गृहस्थाश्रमी पुरुष
गृहस्थाश्रम पु० चार आश्रमो पैकी वीजो आश्रम (जेमा विद्याभ्यास पूरो करीने, लग्न करी, गृहस्थना कर्तव्य बजावे छे)
गृहिणी स्त्री० गृहस्थनी स्त्री, घरधणियाणी [— प्रतिष्ठा
गृहिणीपद न० गृहिणी तरीकेनी पदवी
गृहिन् पु० गृहस्थाश्रमी पुरुष
गृहीत ('ग्रह्'नु भू० कृ०) वि० लीधेलु; पकडेलु (२) स्वीकारेलु, कवूल करेलु (३) मेळवेलु (४) शीखेलु; समजेलु; जाणेलु (५) पहेरेलु
गृहीतिन् वि० शीखेलु, भणेलु
गृहेज्ञानिन् वि० घरमा डाह्यु, विनअनुभवी, मूर्ख [राचरचीलु
गृहोपकरण, गृहोपस्कर न० घरनु
गृह्य ('गृह्' उपरथी) वि० आकर्षवा योग्य; —थी प्रसन्न थतु (२) घेर पाळेलु; घरमा राखेलु (३) आधार राखतु (४) —नी वहार रहेलु (५) —ना पक्षनु (६) न० घरमा करवानो विधि
गृह्य ('ग्रह्' उपरथी) वि० लेवा लायक; पकडवा लायक (२) जोवा लायक (३) कवूल राखवा लायक
गॄ ९ प० बोलवु, बोलाववु (२) जाहेर करवु; घोष करवो (३) वर्णन करवु (४) स्तुति करवी (५) ६ प० गळी जवु; खाई जवु (६) काढी नाखवु; काढवु
गेय वि० गावाने योग्य (२) न० गीत
गेह न० घर, निवासस्थान
गेहिन् वि० गृहस्थाश्रमी
गेहिनी स्त्री० गृहिणी, भार्या
गेहेक्ष्वेडिन्, गेहेनर्दिन्, गेहेशूर पु० घरमा शूरो — बीकण माणस [ओशीकु
गेड्डुक, गेंदुक पु० रमवानो दडो (२)
गै १ प० गावु (२) वर्णन करवु (गीतमा)
गैरिक पु०, न० गेरु
गो पु०, स्त्री० पशु, ढोर (२) गायनु जे कई होय ते (दूध, मास, चामडु इ०) (३) इद्रनु वज्र (४) प्रकाशनु किरण (५) वाण (६) आकाश (७) स्त्री० गाय (८) पृथ्वी (९) वाणी, शब्द (१०) सरस्वती, वाणीनी देवता (११) दिशा (१२) पु० वळद; साढ (१३) इद्रिय (१४) शरीरनो वाळ (१५) सूर्य
गोकर्ण वि० गायना कानना आकारनु (२) पु० गायनो कान (३) साप (४) खच्चर (५) एक जातनु वाण (६) एक जातनो मृग (७) अगूठाना टेरवाथी अनामिका सुधीनु अतर (८) एक तीर्थ (दक्षिणनु)

गोकुल न० गायोनु धण (२) गायनी कोढ (३) श्रीकृष्ण ऊछर्या हता ते गाम
गोचर वि० ढोर जेना पर चरवा फरता होय तेवु (२) वारवार जतु – रहेतु (३) –ना क्षेत्रमा आवतु, –नी शक्तिनी मर्यादामा आवतु (४) पृथ्वी उपर फरतु (५) –वडे प्राप्त थई शके तेवु (६) पु० चरो; चरवानी जगा (७) क्षेत्र; निवास-स्थान (८) इद्रिय पहोंची शके ते क्षेत्र (९) मर्यादा; क्षेत्र, विषय (१०) काबू, सत्ता (११) दृष्टिमर्यादा, क्षितिज
गोणी स्त्री० धान्य भरवानो गण
गोत्र न० गायनी कोढ; वाडो (२) कुटुब; वश (३) नाम (४) समुदाय (५) पु० पर्वत
गोत्रज वि० एक ज गोत्रमा जन्मेल – उत्पन्न थयेलु
गोत्रपट पु० वशवृक्ष
गोत्रभिद् पु० इद्र
गोत्रस्खलन, गोत्रस्खलित न० नाम देवामा भूल करवी ते
गोदा स्त्री० गोदावरी नदी
गोदान न० गायोनु दान (२) वाळनी वाधा उतराववानो विधि
गोदुह् (–ह्) पु० गोवाळ
गोधर पु० पर्वत
गोधा स्त्री० धनुष्यनी पणछ न वागे माटे डावे हाथे वाधवानो पटो (२) घो
गोधुम, गोधूम पु० घउ
गोधूलि स्त्री० सध्याकाळ, गायोनो चरीने पाछी आववानो समय
गोध्र पु० जुओ 'गोधर'
गोनर्द पु० सारस पक्षी (२) शिव (आखलानी पेठे गर्जना करता)
गोप पु० गोवाळ (२) रक्षण करनार (३) गुप्त राखवु ते
गोपचाप पु० मेघधनुष्य
गोपति पु० गायोनो मालिक (२) आखलो; साढ (३) सूर्य (४) इद्र (५) श्रीकृष्ण (६) शकर (७) वरुण
गोपन न० रक्षण (२) गुप्त राखवु ते, सताडवु ते
गोपनीय वि० रक्षण करवा योग्य (२) छुपाववा योग्य (३) छानु
गोपाटलिक पु० गोवाळियो
गोपाध्यक्ष पु० श्रीकृष्ण
गोपानसी स्त्री० छापरानु [illegible]
गोपाल पु० गोवाळ (२) श्रीकृष्ण (३) राजा (४) शकर
गोपालधानी स्त्री० गायोनो घंट
गोपालि पु० शकर [करनार स्त्री
गोपिका स्त्री० गोवालण (२) रक्षण
गोपित वि० रक्षायेल, गुप्त राखेल
गोपी स्त्री० जुओ 'गोपिका'
गोपुच्छ पु० वांदरु (२) पूछ (गायनु पूछ)
गोपुर न० नगरनो दरवाजो (२) मंदिरनो दरवाजो (३) नगरदरवाजा
गोपेंद्र पु० श्रीकृष्ण [(२) विष्णु
गोप्तृ पु० रक्षण करनार (२) सताडनार
गोप्य वि० रक्षण करवा योग्य (२) छुपाववा योग्य [शके तेवु स्थान
गोप्रतार पु० गायो ज्या नदी ओळगी
गोमतल्लिका स्त्री० उत्तम गाय
गोमय पु० गोवाळियो
गोमय पु०, न० छाण
गोमायु पु० शियाळ
गोमुख पु०, न० एक वाद्य (२) न० गोमुखी; माळा फेरववानी थेली
गोयान न० बळदगाडु
गोयुत न० बे कोसनु अतर
गोरस पु० (गायना) दूध, दही, माखण इ०
गोरुत न० जुओ 'गोयुत'
गोरोचना स्त्री० गायना माथामाथी मळती के तेना पित्त या मूत्रमाथी बनावाती पीळी ओषधि
गोल पु०, न० दडो, गोळो (२) वर्तुळ
गोलक पु० गोळो, दडो (२) विधवानो जारज पुत्र (३) गोळो; गोळ घडो

गोवर न० गोवर, गायनु छाण
गोवाट पु० गायोनी कोढ, वाडो
गोविसर्ग पु० परोढियु (गायो चरवा छूटी मुकाय छे ते वेळा)
गोविंद पु० गायोने पाळनार (२)श्रीकृष्ण (३) बृहस्पति
गोवृंद न० गायोनो समूह
गोव्रज पु० गायोनो वाडो
गोष्ठ पु०, न० गायोनी कोढ (२)निवासस्थान (३) पु० सभा
गोष्ठि (–ष्ठी) स्त्री० सभा (२)समाज; मडळ (३)सभाषण, चर्चा (४)समूह, समुदाय (५)कौटुबिक सवध
गोष्पद न० गायनो पग (२) गायना पगलानो पडेलो खाडो (३) नानु खाबोचियु (गायना पगलाथी पडेला खाडामा समाय तेटला पाणीवाळु)
गोसंख्य पु० गोवाळियो
गोस्तन पु० गायनु अडण – बावलु
गोस्थान न० गायनी कोढ
गोस्वामिन् पु० गायोनो मालिक (२) (इद्रियनिग्रही) साधु (३)नामनी आगळ लगाडातो सन्मानदर्शक शब्द
गौड वि० गोळनु बनावेलु (२) गौड देशने लगतु (३) पु० एक प्रदेशनु नाम (प्राचीन बगाळ) (४)न० मीठाई
गौडी स्त्री० गोळनो दारू
गौण वि० मुख्य नहि तेवु; पेटामा आवतु (२) औपचारिक, लाक्षणिक
गौतमी स्त्री० द्रोणाचार्यनी पत्नी (२) गोदावरी नदी (३) (गौतम) बुद्धनो सिद्धात (४) न्यायदर्शन (गौतम मुनि प्रतिपादित) (५) दुर्गा
गौर वि० गोरु; धोळु (२)पीळाश पडतु लाल (३) चकचकित; प्रकाशित (४) स्वच्छ, सुदर
गौरक्ष्य न० गायना पालननु काम
गौरव न० भार, वजन (२)मोटाई; महत्ता (३) मान, आदर
गौरी स्त्री० पार्वती (२) रजोदर्शन नहि पामेली छोकरी (आठ वर्षनी) (३) गौर रंगना चहेरावाळी स्त्री (४) पृथ्वी (५) गोरोचना
गौरीकांत पु० शकर
गौरीगुरु पुं० हिमालय (पार्वतीना पिता)
गौरीनाथ, गौरीपति पु० शकर
ग्रथ् १ आ० [ग्रथते, ग्रथते] वाकु थवु; वाकुं वाळवु (२) दुष्ट थवु
ग्रथित ('ग्रथ्' तथा 'ग्रथ्' नु भू० कृ०) वि० बाधेलु, गूथेलु (२) रचेलु, लखेलु (३) गोठवेलु (४)गठायेलु; घट्ट थयेलु (५)कठण थयेलुं (६) हरावेलु; पकडेलु (७) ईजा पामेलु
ग्रस् १ आ० गळी जवु; कोळियो करी जवो (२) पकडवु (३) ग्रहण करवु (सूर्यचद्रने) (४) १ प०, १० उ० खाई जवु, कोळियो करवो
ग्रसिष्णु वि० गळी जनारु
ग्रस्त ('ग्रस्' नु भू० कृ०) वि० गळी जवायेलु (२) पकडायेलु (३) ग्रहण थयेलु (सूर्य के चद्र)
ग्रह् ९ उ० [गृह्णाति-गृह्णीते] पकडवु (२)लेवु, स्वीकार करवो (३) केद करवु (४) काबूमा लेवु, अटकाववु (५) आकर्षवु, वश करवु (६) समजाववु; पक्षमा लेवु (७) खुश करवु, सतोषवु (८)धारण करवु (९) जाणवु, समजवु (१०)मानवु, धारवु (११)इद्रियथी ग्रहण करवु (साभळवु इ०) (१२)उल्लेखवु, उच्चारवु (नाम) (१३) हरण करवु, लई लेवु (१४)खरीदवु (१५) पहेरवु (वस्त्र) (१६) धारण करवु (गर्भ) (१७) पालन करवु (व्रत, उपवास इ०) (१८)काम माथे लेवु
ग्रह पु० लेवु – ग्रहण करवु ते, लई लेवु ते (२) पकड (३) स्वीकार करवो ते (४) ग्रहण (सूर्यनु के चद्रनु) (५) चोरी, लूट

(६) उच्चारवु ते; लेवु ते (नाम) (७) नव ग्रहोमानो दरेक (८) राहु (९) अटकाव; विघ्न (१०) मगर (११) भूत, पिशाच वगेरे (१२) इंद्रिय (१३) इंद्रियथी थतु ज्ञान (१४) दया; कृपा (१५) उद्योग; खत (१६) धनुष्यनो मध्य भाग—पकड (१७) हेतु, उद्देश (१८) केद

ग्रहग्रामणी पु० सूर्य

ग्रहण न० लेवु—पकडवु ते (२) स्वीकार (३) उल्लेखवु ते, उच्चारवु ते (४) (वस्त्र) पहेरवु ते (५) जाणवु—समजवु ते (६) शीखवु ते, अभ्यासवु ते (७) इंद्रिय (८) आकर्षण (९) लग्न (१०) केदी (११) पडघो

ग्रहपीडन न० ग्रहण (सूर्य-चंद्रनु)

ग्रहाग्रेसर पु० चद्र

ग्रहालुंचन न० शिकारने फाडी खावो ते

ग्रहिल वि० लेवानी इच्छावाळु (२) जक्की; हठीलुं (३) भूतपिशाचना वळगाडवाळु [दिवादार

ग्रहीतृ वि० लेनारु (२) खरीदनारु (३)

ग्रंथ् ९ प०, १० उ० गूथवु, परोववु (२) गोठववु (३) रचवु

ग्रंथ प० बाधवु—गूथवु ते (२) पुस्तक; साहित्यकृति (३) मिलकत

ग्रंथि स्त्री० गाठ (२) वस्त्र के दोरडानी गाठ (३) शरीरनो साधो

ग्रंथिक पु० ज्योतिषी, जोषी

ग्रंथिछेदक पु० खीसाकातरु

ग्रंथित वि० जुओ 'ग्रथित'

ग्रंथिन् पु० पुस्तको वाचनार, पुस्तकियो (२) विद्वान [बाधेलु

ग्रंथिमत् वि० गाठोवाळु (२) गाठ वडे

ग्राम पु० गामडु (२) समुदाय; समूह (३) मूर्छनाना आश्रयरूप स्वरसमूह

ग्रामचैत्य पु० गामनो पवित्र पीपळो

ग्रामणी वि० श्रेष्ठ; मुख्य (गाम के ज्ञातिमा) (२) पु० गामनो मुखी (३) आगेवान, नेता

ग्रामिक वि० गामडानु; ग्राम्य; असभ्य (२) पु० गामडियो (३) गामनो मुखी

ग्रामीण वि० गामडियु; असभ्य (२) गामडानु (३) पु० गामडानो माणस

ग्रामेय वि० गामडानु; गामडियुं

ग्राम्य वि० गामडानुं; गामडामा रहेतु (२) पाळेलु (जानवर) (३) खेडेलुं ('वन्य' थी ऊलटु) (४) असभ्य; अश्लील (५) पु० गामडियो (६) न० ग्राम्य भाषा (७) प्राकृत वगेरे भाषा ('संस्कृत'थी जुदी) (८) कामभोग

ग्रावन् पु० पथ्थर, खडक (२) पर्वत

ग्रास पु० कोळियो (२) अन्न, खोराक (३) गळवु—गळी जवु ते (४) ग्रहण

ग्राह वि० पकडनारु, ग्रहण करनारुं; लेनारु (२) पु० पकडवु ते (३) स्वीकार (४) केदी (५) मगर (६) ज्ञान; समज (७) दुराग्रह; हठ (८) निर्णय, निश्चय

ग्राहक वि० लेनारु; ग्रहण करनारु; पकडनारु (२) समजावनारु (३) खरीदनारु (४) समावेश करतु

ग्राहकत्व न० ग्रहणशक्ति, समजशक्ति

ग्राहम् अ० (समासने अते) पकडीने

ग्राहित वि० पकडवा के लेवा फरज पडी होय तेवु (२) शीखवाडायेलु

ग्राहिन् वि० पकडनारु, लेनारु (२) चूटनारु, वीणनारु (३) समावतु (४) आकर्षतु (५) मेळवतु (६) पसद करतु (७) देखतु; जाणतु (८) खरीदतु

ग्राह्य वि० लेवा—पकडवा योग्य (२) समजवा योग्य (३) स्वीकारवा योग्य

ग्रीवा स्त्री० डोक; गळु

ग्रीष्म वि० उष्ण; गरम (२) पु० उनाळो (३) ताप; गरमी

ग्रीष्मवन न० गरमीमां सेवाती कुज

ग्रैव, ग्रैवेय वि० कठनु, गळानु (२) न० कठभूषण, हार (३) हाथीना गळानी साकळ

गैवेयक न० गळानु भूषण (२) हाथीना गळानी सांकळ

ग्लपन न० थाक, ग्लानि (२) करमावु ते

ग्लपित वि० थाकेलु (२) करमायेलु (३) कपायेलु

ग्लह् १, १० उ० जुगार रमवो; जुगारमा जीतवु (२) लेवुं, स्वीकारवु

ग्लह पु० जुगारी (२) पासो (३) होड

ग्लान ('ग्लै'नु भू० कृ०) वि० श्रमित; थाकी गयेलु

ग्लानि स्त्री० थाक, सुस्ती, मदता (२) पडती (३) नबळाई (४) अणगमो

ग्लुच् १ प० जवु (२) चोरवु (३) लई लेवु; छीनवी लेवु

ग्लै १ प० अणगमो होवो (२) थाकी जवु (३) निराश थवु (४) करमाई जवु

घ

घ वि० (समासने अंते) हणनारु, नाश करनारु (उदा० 'जीवघ')

घट् १ आ० उद्योग करवो; प्रयत्न करवो (२) बनवु, थवु, शक्य होवु (३) पहोचवु; आववु (४) जोडावु; संबंधमा आववु (५) १० उ० मारी नाखवु, ईजा करवी (६) साथे लाववु; जोडवु (७) प्रकाशवु
–प्रेरक० जोडवु; भेगु करवु; संबंधमा लाववु (२) सिद्ध करवु, बने तेम करवु (३) बनाववु; रचवु; घडवु (४) प्रेरवु

घट पु० घडो (२) हाथीनु गंडस्थळ

घटक वि० उद्यमी, प्रयत्नशील (२) योजनारु, सिद्ध करनारु, रचनारु (३) वस्तुना अंशरूप (४) पु० वर-कन्यानु लग्न गोठवी आपनार

घटकर्पर पु० भांगेला घडानु कलाडु

घटन न०, **घटना** स्त्री० प्रयत्न (२) बनाव; थवु – बनवु ते (३) सिद्ध करवु ते, करवु ते, घडवु ते (४) जोडवु ते (५) गति (६) कलह, कंकास

घटयोनि, घटसंभव पु० अगस्त्य ऋषि

घटस्थापन न० नवरात्रि वगेरे समये कळशनी दुर्गारूपे स्थापना

घटा स्त्री० प्रयत्न, उद्यम (२) समूह (३) हाथीनु लश्कर (४) सभा

घटाटोप पु० रथ, गाडी के बीजा सरसामान उपरनु आच्छादन

घटिका स्त्री० नानो घडो (२) २४ मिनिट जेटलो समय, घडी

घटिकायंत्र न० जुओ घटीयंत्र

घटित ('घट्'नु भू० कृ०) वि० जोडेलु; मेळवेलु (२) घडेलु, करेलु

घटी स्त्री० घडो (२) घडी (२४ मिनिट)

घटीयंत्र न० रेंट (२) घडी मापवानु यंत्र

घटोदर पु० गणपति

घटोघस् (घटोघ्नी रूप थाय) स्त्री० घडा जेवा मोटा आउवाळी गाय

घट्ट् १ आ०, १० उ० हलाववु (२) घसवु (३) तिरस्कार करवो (४) सताववु (५) दबाववु, सरखु करवु

घट्ट पु० नदीनो घाट – ओवारो (२) हलाववुं ते, क्षुब्ध करवु ते

घट्टन न० हलाववु ते, छछेडवु ते (२) बनाववु ते, रचवु ते

घट्टित वि० हलावेलु (२) रचेलु (३) दबावेलु, सरखु करेलु

घन वि० कठण, नक्कर (२) घाडु; गाढ (३) जाडु, भरेलु; पूर्ण विकसित (४) ऊंडु, गभीर (अवाज) (५) अखंड (६) दुर्भेद्य (७) तीव्र (८) पूर्ण; व्याप्त (९)

शुभ (१०) पु० वादळ; मेघ (११) गदा; घण (१२) न० झालर वगेरे वाद्य
घनध्वनि पु० मेघगर्जना
घनपदवी स्त्री० आकाश (वादळनो मार्ग)
घनम् अ० गाढपणे
घनवर्त्मन् न० जुओ 'घनपदवी'
घनवाहन पु० शंकर (२) इंद्र
घनवीथि स्त्री० जुओ 'घनपदवी'
घनव्यपाय पु० शरद ऋतु
घनश्याम वि० वादळाना जेवु काळु (२) पु० मेघ (३) श्रीकृष्ण
घनसमय पु० वर्षाऋतु
घनसार पु० कपूर (२) पाणी (३) पारो (४) मोटु वादळ
घनागम पु० वर्षाऋतु
घनाघन वि० दुष्ट; घातकी (२) साधा वगरनु, घट्ट, एकसरखु (३) पु० इंद्र (४) मदोन्मत्त हाथी (५) गाढु के वर्षतु वादळ (५) एकबीजा साथे संगठन
घनात्यय, घनांत पु० जुओ 'घनव्यपाय'
घनांबु न० वरसाद
घनोपल पु० (वरसादमा पडतो) करो
घनौघ पु० मेघघटा [पु० तेवो अवाज
घर्घर वि० अस्पष्ट – 'घरघर' एवु (२)
घर्घरा स्त्री० घूघरी (आभूषणनी) (२) एक जातनी वीणा [दाणा
घर्घरिका स्त्री० जुओ 'घर्घरा' (२) भूंजेला
घर्घरी स्त्री० जुओ 'घर्घरा'
घर्म पु० उष्णता; गरमी (२) ग्रीष्म ऋतु (३) प्रस्वेद; घाम [दूर करवी ते
घर्मछेद पु० तडको दूर करवो ते, गरमी
घर्मजल न० परसेवो
घर्मदीधिति, घर्मद्युति पु० सूर्य
घर्मपयस् न० परसेवो (२) गरम पाणी
घर्मांत पु० वर्षाऋतु
घर्मांबु, घर्मांभस् न० परसेवो
घर्मांशु पु० सूर्य
घर्मोदक न० परसेवो

घर्ष पु०, घर्षण न० घसवु ते; घसावु ते (२) दळवु – खाडवुं ते
घर्षित वि० घसेलु (२) दळेलुं; वाटेलुं
घस् १, २ प० खावु; खाई जवु
घस्मर वि० खाउधरु (२) भक्षक; नाशक
घस्र पु० दिवस
घंट पु० शिव
घंटा स्त्री० घंट
घंटिका स्त्री० घंटडी; घूघरी
घात पु० वध, नाश (२) प्रहार, घा
घातक वि० नाश करनारु
घातन न० मारी नाखवु ते; वध
घातिन् वि० घात करनारुं
घात्य वि० घात करवा योग्य
घार्तिक पु० अनारसु; एक पकवान
घास पु० अन्न (२) चारो
घुष् १ प०, १० उ० अवाज करवो; बूम पाडवी (२) घोषणा करवी; जाहेर करवु (३) प्रशंसा करवी (४) १ आ० चकचकित थवु, खूबसूरत थवु (५) १ प० ठार मारवु
घुसृण न० केसर
घूक पु० घुवड [चक्राकार भमवुं
घूर्ण् १ आ०, ६ प० गोळ गोळ फरवु;
घूर्णन न०, घूर्णना स्त्री० चक्राकारे फरवु ते [अणगमो (३) ठपको
घृणा स्त्री० दया; अनुकंपा (२) तिरस्कार;
घृणिन् वि० दयाळु (२) घृणायुक्त (३) लज्जाळु
घृत न० घी (२) तेज
घृतपूर, घृतवर पु० घेबर, एक पकवान
घृष् १ प० घसवु (२) घसीने साफ करवु (३) कचरवु; खाडवु; पीसवु
घृष्ट ('घृष्'नु भू० कृ०) वि० घसेलुं; दळेलु, वाटेलु
घृष्टि पु० रानी डुक्कर
घोट, घोटक पु० घोडो
घोणा स्त्री० नाक (२) नसकोरुं (३)

(घुवडनी) चाच (४) धरी जेमा रहे छे ते पैडानो भाग
घोर वि० भयकर, भयानक (२) उग्र; कराल
घोरदर्शन वि० भयकर आकृतिवाळु (२) पु० घुवड
घोष पु० ध्वनि, अवाज (२) गरबड (३) मेघगर्जना (४) जाहेरनामु, ढढेरो (५) अफवा (६) भरवाडनो वाडो, गोवाळोनो पडाव (७) मृदु व्यजननो उच्चार (व्या०) (८) पु० कासु
घोषण न०, **घोषणा** स्त्री० ढढेरो
घोषवती स्त्री० वीणा
घोषवृद्ध पु० भरवाडोनो मुखियो
घ्न वि० (समासने अते) नाश करनारु; मारी नाखनारु (उदा० 'वातघ्न')
घ्रा ३ प० [जिघ्रति] सूघवु, सूघीने पारखवु (२) चुबन करवु
घ्राण ('घ्रा' नु० भू० कृ०) वि० सूघेलु (२) न० सूघवु ते (३) वास (४) नाक
घ्राणेन्द्रिय न० नाक
घ्रात ('घ्रा' नु भू० कृ०) वि० सूघेलु
घ्रेय वि० सूघवा योग्य (२) न० सूघवानो पदार्थ (३) गध, वास

ङ

[ङ कठस्थानीय अनुनासिक वर्ण, आ व्यजनथी शरू थतो शब्द नथी।]

च

च अ० सयोग, समुच्चय, समाहार, निश्चय, शरत, पक्षातर, अवधारण, के पादपूरण तरीके वपरातो अव्यय (२) अने, तथा, पण, परतु, वळी, सिवाय, खरेखर, नक्की –ए अर्थ बतावे
चकास् २ प० प्रकाशवु (२) सुखी थवु; समृद्ध थवु
चकित वि० भयथी कपतु (२) बिवरावेलु (३) भयभीत (४) न० कपवु ते; ध्रूजवु ते (५) भय, भीति
चकितचकितम् अ० खूब बीनीने
चकितम् अ० भयभीतपणे
चकोर पु० चकोर पक्षी
चकोरदृश्, चकोरनेत्र, चकोराक्ष वि० (चकोर जेवी) सुदर आखवाळु
चक्र पु० चक्रवाक पक्षी (२) समुदाय
चक्र न० गाडीनु पैडु (२) एक शस्त्र (उदा० सुदर्शन चक्र) (३) कुभारनो चाक (४) घाणी (५) कूडाळु (६) समूह (७) राज्य, सत्ता, साम्राज्य (८) व्यूहरचना (९) सैन्य (१०) काळनु चक्र (११) क्षितिज (१२) पाणीनु वमळ (१३) प्रात, जिल्लो, तालुको
चक्रगति स्त्री० चक्राकारे फरवु ते
चक्रचक्र न० चक्रवाक पक्षीनु टोळु
चक्रधर पु० विष्णु (२) सम्राट
चक्रनेमि स्त्री० चक्रनो परिघ–घेरावो
चक्रपाणि पु० विष्णु
चक्रभ्रमि स्त्री० सराण
चक्रवर्तिन् पु० सार्वभौम राजा (२) श्रेष्ठ, उत्तम (पोताना वर्गमा)
चक्रवाक पु० चकवो पक्षी
चक्रवात पु० वटोळियो
चक्रवाल पु०, न० वर्तुल (२) समूह; समुदाय (३) क्षितिज (४) पु० चक्रवाक (५) लोकालोक पर्वत

चक्रव्यूह पु० (चक्राकारे) सैन्यनी एक रचना – व्यूह

चक्रसाह्वय पु० चक्रवाक

चक्रहस्त पु० विष्णु [श्रीकृष्ण; विष्णु

चक्रायुध पु० (चक्र जेनु आयुध छे तेवा)

चक्रार पु०, न० पैडानो आरो

चक्रावर्त पु० चक्राकारे भमवु – फरवु ते

चक्राह्व, चक्राह्वय पु० चक्रवाक

चक्रांग पु० हंस (२) चक्रवाक

चक्रिन् पु० विष्णु; श्रीकृष्ण (२) चक्रवर्ती राजा (३) चक्रवाक

चक्रेश्वर पु० विष्णु (२) जिल्लानो अधिकारी – शासक [त्याग करवो

चक्ष् २ आ० कहेवु; बोलवु (२) जोवु (३)

चक्षुर्विषय पु० दृष्टिमर्यादा (२) आंखनो विषय, दृश्य (३) क्षितिज

चक्षुष्पथ पु० दृष्टिमर्यादा

चक्षुष्मत् वि० आंखवाळु, जोवानी शक्तिवाळु (२) अगमचेतीवाळु

चक्षुष्य वि० सुंदर; प्रियदर्शन (२) आंखने हितकर (३) पु०, न० नेत्रांजन

चक्षुस् न० आंख (२) दृष्टि, नजर

चक्षुःश्रवस् पु० साप [नजर

चक्षूराग पु० आंखनी लालाश (२) प्रेमभरी

चट् १ प० [चटति] भागवु; जुदु पाडवु (२) १० उ० वींधवु, मारी नाखवु (३) हरकत करवी

चटक पु० चकलो

चटका, चटिका स्त्री० चकली

चटु पु० प्रिय भाषण, खुशामत

चटुल वि० चंचळ, अस्थिर (२) सुंदर; मनगमतु

चण वि० (समासने अंते) प्रख्यात, निष्णात (उदा० 'अक्षरचण,' 'माया-चण')

चण, चणक पु० चणा

चतस्रः ('चतुर्'नु स्त्री० ब०व०) चार

चतुर् वि० (ब० व०) चार (संख्या) (२) अ० चार वखत

चतुर वि० चालाक; कुशळ (२) उतावळु; चपळ (३) सुंदर; मनोहर

चतुरश्र (–स्र) वि० चार खूणावाळु (२) बधां अंगोमां प्रमाणसर, सुंदर

चतुरंग वि० चार अंगवाळु; चार विभाग-वाळु (२) न० (हाथी, घोडा, रथ, पायदळ –एवा पूरा चार विभाग वाळी) सेना

चतुरंगिणी स्त्री० चार अंगो पूरां होय तेवी ('चतुरंग') सेना

चतुरंत वि० चार छेडा के सीमावाळु

चतुरंता स्त्री० पृथ्वी

चतुरानन पु० ब्रह्मा (चार मुखवाळा)

चतुर्गुण वि० चारगणु, चोगणु

चतुर्थ वि० चोथु (२) न० चोथो भाग

चतुर्थाश्रम पु० संन्यास आश्रम

चतुर्दशभुवनानि न० ब०व० चौद लोक; समग्र विश्व

चतुर्दशरत्नानि न० ब० व० समुद्रमंथन वखते नीकळेलां चौद रत्नो (लक्ष्मी, कौस्तुभ, पारिजातक, सुरा, धन्वंतरि, चंद्रमा, कामदुघा गाय, ऐरावत हाथी, रंभा वगेरे अप्सरा, सात मुखवाळो घोडो (उच्चैःश्रवा), हलाहल विष, शार्ङ्ग धनुष्य, पांचजन्य शंख, अमृत)

चतुर्दंत पु० ऐरावत हाथी

चतुर्दिश न० चार दिशाओनो समूह

चतुर्दिशम् अ० चारे बाजुए

चतुर्धा अ० चार प्रकारे, चार रीते

चतुर्बाहु, चतुर्भुज् (–ज) पु० विष्णु

चतुर्मास न० अषाड शुक्ल एकादशीथी कार्तिक शुक्ल एकादशी सुधीनो समय – चातुर्मास

चतुर्मुख पु० ब्रह्मा

चतुर्युग न० सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि – ए चार युगनो समूह

चतुर्वर्ग न० धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष –ए चार पुरुषार्थोनो समूह

चतुर्वर्ण न० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र –ए चार वर्णोनो समूह

चतुर्विद्य वि० चारे वेद जाणनारु
चतुश्शाल न० जुओ 'चतुःशाल'
चतुष्क न० चारनो समूह (२) चार रस्ता मळे ते स्थळ – चकलु (३) चार खूणावाळु आगणु – चोक (४) चार स्तभवाळो मडप (५) चार पायावाळी बेठक (६) चार सेरवाळो हार
चतुष्कर्ण वि० चार काने साभळेलु (बे माणसे जाणेलु)
चतुष्काष्ठम् अ० चारे दिशामा
चतुष्कोण वि० चार खूणावाळु
चतुष्टय वि० चार अवयववाळु (२) चार प्रकारनु (३) न० चारनो समूह (४) चतुष्कोण
चतुष्पथ पु०, न० जुओ 'चतुःपथ'
चतुष्पद् (–द) वि० चार पगवाळु (२) पु० चोपगु प्राणी
चतुष्पाणि पु० विष्णु ['चतुष्पद्'
चतुष्पाद् (–द) वि० (२) पु० जुओ
चतुःपथ पु०, न० जुओ 'चत्वर'; चकलु
चतुःशाल न० चार मकानोथी बनेलो चोक, चार मकानोवाळी खडकी
चत्वर न० चार रस्ता मळे तेवु स्थळ – चकलु (२) चोक
चत्वारः ('चतुर्'नु पु० ब० व०) चार
चत्वारि ('चतुर्'नु न० ब० व०) चार
चत्वारिंशत् स्त्री० चालीस (सख्या)
चपल वि० हालतु, अस्थिर (२) क्षणिक; नाशवत (३) त्वरित, शीघ्र (४) साहसिक; अविचारी
चपला स्त्री० वीजळी (२) लक्ष्मी (३) जीभ (४) व्यभिचारिणी स्त्री (५) सुरा
चपेट पु०, **चपेटिका** स्त्री० तमाच
चम् १ प० पीवु (२) खावु
चमत्करण न०, **चमत्कार** पु०, **चमत्कृति** स्त्री० आश्चर्य, नवाई (२) आश्चर्यकारक बनाव के देखाव
चमर पु० चमरी गाय (२) पु०, न० तेना पूछडाना वाळनी बनती चमरी
चमरी स्त्री० चमरी गाय (२) मजरी
चमस पु०, न० एक पात्र (सोमरस पीवानु) (२) जव-चोखा वगेरेनु वडु
चमू स्त्री० सैन्य (२) एक सैन्यविभाग
चमूचर पु० सैनिक
चमूनाथ, चमूप, चमूपति पुं० सेनापति
चमूरु पु० एक मृग
चय पु० समूह, ढगलो (२) एकठु करवु – वीणवु ते (३) मकानना के किल्लाना पाया माटे जमीन खोदीने करेलो माटीनो ढगलो (४) गोठववु ते; खडकवु ते (५) स्थापवु ते (अग्नि)
चयन न० ढगलो करवो ते; एकठु करवु ते, वीणवु ते (२) अग्नि स्थापवो ते
चर् १ प० चालवु, जवु, फरवु, भटकवु (२) आचरवु, करवु (३) चरवु (घास इ०) (४) वर्तवु – वर्तन राखवु (कोई साथे) (५) फेलावु (६) जीववु
चर वि० चालतु, फरतु, चरतु इ० (२) आचरतु (समासने अते) (३) जगम (४) पहेला हतु तेवु (उदा० 'आढ्यचर' = पहेला पैसादार हतु तेवु) (५) पु० गुप्तचर
चरक पु० गुप्तचर, दूत (२) भटकतो भिक्षुक (३) प्रसिद्ध वैद्य मुनि
चरण पु०, न० पग (२) स्तभ; थाभलो (३) चोथो भाग (४) वेदनी शाखा (५) श्लोकनी एक पक्ति (६) न० भटकवु ते (७) आचरवु ते (८) कोई पण वर्गनो रूढ आचार
चरणकमल न० कमळ जेवा पग
चरणप पु० वृक्ष
चरणपतन न० पगे पडवु ते
चरणपात पु० पग मूकवो ते (२) पगे पडवु ते (३) पगलानो अवाज
चरणयोधिन् पु० कूकडो
चरणशुश्रूषा, चरणसेवा स्त्री० पगे पडवु ते (२) सेवा, भक्ति [जळ; चरणोदक
चरणामृत न० ऋषि इ० ना पग धोयेलु

क्षुब्ध (२) खसेडेलु (३) गयेलु (४) न० चालवु ते (५) हालवुं ते (६) एक नृत्य
चलुक पु० हाथनो खोबो (कोगळो करवानु पाणी लेवा माटे)
चषक पु०, न० दारू पीवानु पात्र
चषति पु० भक्षण (२) वध, नाश
चंक्रमण न० आम तेम फरवु ते
चंग वि० सुदर (२) निपुण (३) तदुरस्त
चंच् १ प० हालवु (२) कूदवु, ऊछळवु
चंचत्क वि० कूदतु (२) हालतु
चंचरिन्, चंचरीक पु० मोटो भमरो
चंचल वि० कपतु, हालतु (२) अस्थिर
चंचला स्त्री० लक्ष्मी (२) वीजळी
चंचु वि० प्रख्यात, जाणीतु (२) चतुर
चंचु (–चू) स्त्री० चाच
चंचूर्यमाण वि० वीभत्स चाळा करतु
चड वि० क्रोधी (२) उष्ण (३) भयकर
चंडम् अ० तीव्रपणे, भयकर रीते, गुस्साथी
चंडा स्त्री० दुर्गा (२) क्रोधी स्त्री
चंडाल वि० निर्दय, घातकी (२) पु० एक जातनो अत्यज
चंडाशु पु० सूर्य
चडि, चंडिका स्त्री० दुर्गा
चंडिमन् पु० क्रोध, गुस्सो (२) गरमी
चंडी स्त्री० दुर्गा [अथवा तेनो लेप
चंदन पु०, न० सुखडनु वृक्ष, लाकडु
चंदनगिरि पु० मलयाचल पर्वत
चंदनसार पु० उत्तम चदन
चंदनाचल, चंदनाद्रि पु० मलय पर्वत (ज्या चदनना वृक्षो वहु थाय छे)
चंदिर पु० चद्र (२) हाथी
चंद्र पु० चादो (२) (समासने अते) श्रेष्ठ (उदा० 'पुरुषचद्र')
चंद्रक पु० चद्र (२) आगळीनो नख (३) मोरना पीछामानी टीलडी
चंद्रकला स्त्री० चद्रबिंबनो सोळमो भाग
चद्रकवत् पु० मोर
चंद्रकांत पु० एक मणि (जेना उपर चद्रना किरण पडता तेमाथी पाणी झमे छे) (२) पु०, न० (रात्रे चद्रथी खीलतु) पोयणु
चंद्रकिन् पु० मोर
चंद्रचूड, चद्रचूडामणि पु० शंकर
चंद्रद्युति स्त्री० चद्रनु तेज (२) चादनी
चद्रपाद पु० चद्रकिरण
चंद्रप्रभा स्त्री० जुओ 'चद्रद्युति' [ओरडो
चंद्रप्रासाद पु० घरनी टोचे आवेलो
चंद्रमस् पु० चद्रमा; चादो
चंद्रमुख वि० चद्र जेवा सुदर मुखवाळु
चंद्रमौलि पु० शकर [चद्र-किरण
चंद्ररेखा, चंद्रलेखा स्त्री० चद्रनी कळा (२)
चंद्रवदन वि० चद्र जेवा सुदर मुखवाळु
चंद्रशाला स्त्री० अगासी (२) चादनी
चंद्रशेखर पु० शकर
चंद्रहास पु० चमकती तरवार (२) रावणनी तरवारनु नाम
चंद्रातप पु० चादनी, चद्रिका
चंद्रात्मज पु० वुध (ग्रह)
चंद्रानन वि० चद्र जेवा सुदर मुखवाळु (२) पु० कार्तिकेय
चंद्रापीड पु० शिव
चंद्रार्धमौलि, चंद्रार्धशेखर पु० (अर्धचद्र जेना मस्तके छे ते) शिव
चंद्रिका स्त्री० चद्रनो प्रकाश, चादनी
चंद्रोदय पु० चद्रनो उदय
चंद्रोपल पु० चद्रकात मणि
चंपक पु० चपो (२) न० तेनु फूल
चंपू स्त्री० गद्य अने पद्यवाळी, परिश्रम-साध्य एवी एक साहित्यकृति
चाकचक्य न० चकचकितपणु
चाक्षुष वि० चक्षु सबधी, (२) दृश्य; जोवा लायक (३) न० प्रत्यक्ष ज्ञान
चाक्षुषज्ञान न० प्रत्यक्षज्ञान (२) पुरावो
चाट पु० धूर्त, ठग [स्पष्ट वाणी
चाटु पु०, न० मधुर वाणी, खुशामत (२)
चाटुकार वि० खुशामत करनारु
चाटुक्ति स्त्री० मधुर वचन, खुशामत

चातक पु० एक पक्षी (वरसादना टीपा ज पीतु मनाय छे)
चातकानंदन पु० वर्षाऋतु (२) मेघ
चातुर वि० चतुर, डाह्यु, शाणु (२) चार वडे खेंचातु (वाहन)
चातुरंत वि० (चारे बाजुए समुद्रथी वीटळायेली) आखी पृथ्वीनु मालिक
चातुरी स्त्री० चतुराई
चातुर्य न० कुशलता, चतुराई
चातुर्वर्ण्य न० ब्राह्मणादि चार वर्ण (२) चारे वर्णना कर्तव्य
चातुर्विद्य न० चार वेदनो समूह
चाप पु० धनुष्य (२) मेघधनुष्य
चापल, चापल्य न० चपळता, चचळता (२) साहस (३) अस्थिरता
चामर पु०, न० चमरी
चामीकर न० सोनु
चामुंडा स्त्री० दुर्गानु विकराळ स्वरूप
चाय् १ उ० निहाळवु (२) समानवु
चार पु० जवु–चालवु ते, गति, सचार (२) गुप्तचर (३) करवु–आचरवु ते
चारक वि० जनारु, सचार करनारु, आचरनारु (२) पु० गुप्तचर (३) कारागृह, जेल [(राजा)
चारचक्षुस् वि० जासूसरूपी आखवाळुं
चारण पु० भाट, चारण, स्तुतिपाठक (२) नट, विदूषक, नाचनार (३) प्रवासी, यात्राळु (४) जासूस
चारदृश् वि० जुओ 'चारचक्षुस्'
चारभट पु० वीर सैनिक
चारिका स्त्री० परिचारिका, दासी
चारित्र, चारित्र्य न० चरित्र, वर्तन; आचरण (२) सदाचरण (३) स्त्रीनु शील (४) स्वभाव (५) कुलाचार
चारिन् वि० (समासने छेडे) जतु; फरतु, जीवतु, आचरतु (२) पु० पायदळनो सैनिक
चारु वि० सुदर (२) प्रिय, रुचिकर
चारुदर्शन वि० सुदर, स्वरूपवान
चारुवक्त्र वि० सुदर मुखवाळु
चारुवदना स्त्री० स्त्री [सुन्दर स्त्री
चारुव्रता स्त्री० एक मासना उपवास
चारुशिला स्त्री० रत्न
चारुशील वि० सदर चारित्र्यवाळु
चार्या स्त्री० मार्ग, रस्तो
चार्वंगी स्त्री० सुदर स्त्री
चार्वाक पु० नास्तिक मतनो प्रवर्तक
चार्वी स्त्री० सुदर स्त्री (२) कुबेरनी पत्नी (३) बुद्धि (४) प्रभा, तेज (५) चांदनी, चंद्रिका
चालन न० हलावव ते (२) चाळवु ते (चाळणीथी) (३) डोलवु सरकवु ते
चालनी स्त्री० चाळणी
चाष (–स) पु० चास पक्षी (२) शेरडी
चांचल्य न० चचळता, अस्थिरता (२) क्षणिकता
चांडाल पु० जुओ 'चंडाल'
चांद्र वि० चद्रनु, चद्र संबंधी (२) न० चांद्रायण व्रत
चांद्रमस वि० चंद्रनु, चद्रमानुं
चांद्रायण न० (खावाना रोज कोळियो वधारता–घटाडता जवानु) एक व्रत
चांद्री स्त्री० चांदनी, चद्रिका
चि ५ उ० वीणवु, एकठु करवुं (२) सग्रह करवो, ढगलो करवो (३) शोधवुं (४) जडवु; चोटाडवु (मणि-रत्न वगेरे) (५) ढाकी देवु, भरी काढवु
—कर्मणि० फळ बेसवु, सफळ थवू (२) वधवु, समृद्ध थवु
चि ३ प० निहाळवु (२) निरीक्षण करवु; तपासवु (३) निश्चय करवो
चि १ आ० धिक्कारवु (२) वेर लेवु
चि १ उ० [चायति –ते] –थी बीवुं (२) मान आपवु (३) निहाळवू
चिकर्तिषु वि० कापवा इच्छतु
चिकित्सक पु० वैद्य [ति, वैदुं
चिकित्सा स्त्री० रोगनो उपचार करवो
चिकित्सु वि० वैदकीय उपचार करनारुं

चिकिल पु० कादव; कीचड
चिकीर्षा स्त्री० करवानी इच्छा (२) जाणवानी इच्छा
चिकीर्षु वि० करवानी इच्छावाळु
चिकुर वि० अस्थिर; चचळ (२) अविचारी (३) पु० माथाना वाळ
चिकुरकलाप, चिकुरनिकर, चिकुरपक्ष, चिकुरहस्त पु० केशनो समूह – जूडो
चिक्कण वि० स्निग्ध; चीकणु (२) लीसु (३) चीकटवाळु
चिच्छक्ति स्त्री० चैतन्य
चित् १ प०, १० आ० जोवु, निहाळवु (२) जाणवु, समजवु (३) भानमा आववु, चेतना आववी (४) चितववु; लक्ष राखवु (५) गणवु, धारवु (६) चेतववु (७) शीखववु
चित् स्त्री० विचार (२) वुद्धि, समज (३) मन, अत करण (४) ज्ञान (५) चैतन्य, आत्मा (६) ब्रह्म
चित ('चि'नु भू० कृ०) वि० एकठु करेलु; वीणेलु; सग्रहेलु (२) मेळवेलु (३) ढकायेलु; भरेलु [लाकडानो ढगलो; चेह
चिता स्त्री० (मुडदु वाळवा गोठवेला)
चिति स्त्री० ढगलो (२) चिता (३) सग्रह करवो ते; वीणवु ते (४) गोठवणी; रचना
चितिका स्त्री० चिता, चेह
चित्त ('चित्' नु भू० कृ०) वि० जोयेलु; जाणेलु, विचारेलु, इच्छेलु (२) न० अत करण, मन (३) विचार, चिंतन (४) वुद्धिशक्ति; ज्ञान
चित्तचारिन् वि० पोतानी मरजीने अनुसरनारु [प्रीति, प्रेम
चित्तज, चित्तजन्मन् पु० कामदेव (२)
चित्तज्ञ वि० वीजानु मन जाणनारु
चित्तनिर्वृति स्त्री० सतोष, सुख
चित्तप्रमाथिन् वि० चित्तने मथी नाखनारु, चित्तमा तीव्र कामना ऊभु करनारु
चित्तविप्लव, चित्तविभ्रम, चित्तविभ्रंश पु० गाडपण; उन्माद
चित्तविश्लेष पु० मैत्री तूटी जवी ते
चित्तवृत्ति स्त्री० चित्तनी वृत्ति
चित्तवैकल्य न० चित्तनी व्याकुळता
चित्तहारिन्, चित्ताकर्षिन् वि० चित्तने हरी लेनारु; आकर्षक [अनुसरनारु
चित्तानुवर्तिन् वि० पोतानी मरजीने
चित्तापहारक, चित्तापहारिन् वि० चित्तने हरी लेनारु, सुदर
चित्तार्पित वि० चित्तमा धारण करेलु
चित्ति स्त्री० विचार; चिंतन (२) ज्ञान; समज (३) ख्याति [अग्नि
चित्य वि० चिता सबधी (२) पु० चितानो
चित्या स्त्री० चिता (२) यज्ञस्थान
चित्र वि० चित्रविचित्र (२) विविध (३) रम्य, सुदर (४) आश्चर्यकारक (५) नजरे पडे तेवु (६) पु० चित्रविचित्र रग (७) न० चीतरेलु ते, छबी (८) घरेणु (९) आश्चर्य, अद्‌भुत वस्तु
चित्रक पु० चितारो (२) वाघ के चित्तो (३) न० चदननु तिलक
चित्रकर पु० चितारो, चित्रकार
चित्रकर्मन् न० अद्‌भुत कृत्य (२) चीतरवु ते (३) चित्र (४) जादु (५) पु० जादुगर (६) चितारो
चित्रकार पु० चितारो
चित्रग, चित्रगत वि० चीतरेलु
चित्रगुप्त पु० मनुष्यना पापपुण्यनो हिसाब राखनार यमराजानो अधिकारी
चित्रन्यस्त वि० चीतरेलु
चित्रपट (–ट्ट) पु० चित्र (२) चीतरेलो पट
चित्रफलक न० चित्र दोरवानु पाटियु
चित्रभानु पु० सूर्य (२) अग्नि
चित्रम् अ० केवी नवाई! अद्‌भुत!
चित्ररथ पु० सूर्य (२) गधर्वोनो राजा
चित्रलिखित वि० चीतरेलु (२) मूगु, हाल्याचाल्या विनानु
चित्रलेखा स्त्री० चित्र (२) वाणपुत्री उपानी सखी
चित्रविचित्र वि० रगवेरगी

चित्रा वि० एक नक्षत्र
चित्रिणी स्त्री० चार प्रकारनी स्त्रीओमानी एक(पद्मिनी, चित्रिणी, शङ्खिनी, हस्तिनी)
चित्रित वि० चीतरेलु(२)रगबेरगी रगनुं
चित्रिन् वि० रगबेरगी (२) आश्चर्यकारक (३)काबरचीतरा वाळवाळु
चिद्घन, चिदात्मन् पु० परब्रह्म
चिदाभास पु० जीव [न० परब्रह्म
चिन्मय वि० ज्ञानमय; चेतनमय (२)
चिन्मात्र न० शुद्ध चेतन
चिपिट वि० चपटु
चिबुक न० हडपची, दाढी
चिर वि० दीर्घकालिक, लांबा समयनु (२) न० लांबो समय
चिरकार, चिरकारिक, चिरकारिन् वि० काम करवामा विलंब करनारुं
चिरकालिक, चिरकालीन वि० लांबा समयनु, जूनु
चिरजीविन् वि० चिरजीवी, दीर्घजीवी (२) पु० अश्वत्थामा, बळिराजा, व्यासमुनि, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम -ए सातमाथी दरेक (३) मार्कंडेय मुनि
चिररात्र पु० लांबो वखत
चिररात्राय अ० लांबा वखत सुधी;लांबा वखत बाद [रहे तेवु
चिरस्थायिन् वि० लांबा समय सुधी टकी
चिरंजीव वि० दीर्घायुषी, लांबु जीवनारु
चिरंटी स्त्री० युवावस्था पछी पण बापने घेर रहेती स्त्री
चिरंतन वि० पुराणु, पुरातन
चिरात्, चिराय अ० लांबा समय सुधी, लांबा समय पछी, अंते, छेवटे
चिरायुस् वि० दीर्घायुषी
चिरि पु० पोपट, शुक
चिरिकाक पु० एक जातनो कागडो
चिरिबिल्व पु० करज वृक्ष
चिरिंटी स्त्री० जुओ 'चिरंटी'
चिरेण अ० जुओ 'चिरात्'
चिर्भटि स्त्री० चीभडी (२) चीभडु
चिल्ल पु० चील, समडी
चिह्न न० निशानी, छाप (२) लक्षण
चिंचा स्त्री० आमली
चिंत् १० उ० चिंतन करवु, मनन करवु (२) संभाळ राखवी; चिंता राखवी (३)विचारी काढवु, शोधी काढवु
चिंतक वि० चिंतवनारु, विचारनारु (समासने छेडे)
चिंतन न०, चिंतना स्त्री० चिंतववु ते; विचारवु ते (२) चिंता, फिकर
चिंतनीय वि० जुओ 'चिंत्य' [फिकर
चिंता स्त्री० विचारणा; विचार (२)
चिंताकुल वि० व्यग्र, चिंतातुर
चिंतापर वि० चिंतामां पडेलु - डूबेलु
चिंतामणि पु० इच्छेलु आपनार मणि
चिंतित ('चिंत्'नु भू० कृ०) विचारेलु; चिंतवेलु(२)न० विचार, धारणा
चिंतितोपनत, चिंतितोपस्थित वि० विचारतावेंत हाजर थयेलु
चिंत्य वि० विचारवा - चिंतववा योग्य
चीत्कार पु० (हाथी, गधेडु इ०नी) चीस
चीन पु० चीन देश(२)पु० (ब०व०) चीन देशना लोको के राजाओ
चीनपिष्ट न० सिंदूर
चीनांशुक न० रेशमी वस्त्र, चीनमा बनेलु बारीक वस्त्र
चीर न० फाटेलु वस्त्र, चीथरु(२) वस्त्र; कपडु (३) बौद्ध भिक्षुनु वस्त्र (४) वल्कल [(२) कथाधारी
चीरपरिग्रह,चीरवासस् वि०वल्कलधारी
चीर्ण वि० आचरेलु [चीथरु; कपडु
चीवर न० भिक्षुक वगेरेनु वस्त्र (२)
चुद् १० उ० प्रेरवु; धकेलवु; हाकवु (२) त्वरा करवी (३) आग्रहपूर्वक विनंति करवी (४) (दलील के बाधो) रजू करवु, धरवु
चुप् १ प० धीमेथी - चूपकीथी चालवुं

चुबुक पु० हडपची, दाढी
चुर् १० उ० चोरवु, लई लेवु
चुरि(-री) स्त्री० चोरी
चुलुक पु० कोगळो (२) प्रवाही भरवा करेलो खोबो
चुल्लि(-ल्ली) स्त्री० चूलो
चुंचु वि० (समासने छेडे) विख्यात (२) निष्णात
चुंब् १, १० उ० चुंबन करवु
चुंबक पु० चुबनार (२) लोहचुबक
चुंबन न० चूमवु ते
चुंबित ('चुब्'नु भू० कृ०) चुबेलु
चुंबिन् वि० चुबन करतु (२) स्पर्शतु
चूचुक, चूचूक न० स्तननी दीटडी
चूडा स्त्री० चोटली (२) कलगी (मोर इ०नी) (३) कलगी (शणगारनी) (४) शिखर, टोच (५) चूडो, चूडी
चूडाकर्मन् न० वाळ उतराववानो सस्कार
चूडापाश पु० वाळनी लट – गुच्छो
चूडामणि पु०, **चूडारत्न** न० माथे पहेरातो मणि (२) (समासमां) ते वर्गमां श्रेष्ठ – उत्तम
चूडाल वि० चूडायुक्त; शिखावाळुं
चूत पु० आम्रवृक्ष, आबो
चूर्ण् १० उ० चूरो करवो; खाडवुं
चूर्ण पु०, न० भूको (२) पु० खडी; चूनो
चूर्णक पु० एक वृक्ष (शीमळानी जातनु)
चूर्णि स्त्री० चूरो करवो ते; भूको (२) भाष्य; टीका
चूर्णित वि० चूरो करायेलु
चूर्णी स्त्री० जुओ 'चूर्णि'
चूल पु० केश
चूला स्त्री० कलगी
चूलिका स्त्री० कूकडाना माथानी कलगी (२) नाटकमा बनवानी बावतोनी नेपथ्यमाथी सूचना
चूष् १ प० चूसवु, पीवु
चूष्य न० चूसवानो भोज्य पदार्थ
चेट, चेटक पु० नोकर, सेवक; गुलाम
चेटि, चेटिका, चेटी स्त्री० दासी
चेतक वि० चेतावनारुं (२) चेतनयुक्त
चेतन वि० चेतनयुक्त, सजीव (२) नजरे पडे के देखाई आवे तेवु (३) पु० प्राणी, मनुष्य (४) जीव, आत्मा
चेतना स्त्री० चेतनपणु, चैतन्य (२) शूधबूध, डहापण, समज
चेतस् न० चेतना; शुद्धि; भान (२) जीव, प्राण (३) बुद्धिशक्ति (४) चित्त; मन, अत करण
चेतोजन्मन्, चेतोभव, चेतोभू पु० कामदेव (२) प्रेम, प्रीति
चेद् अ० जो (वाक्यारभे वपरातो नथी)
चेदिपति, चेदिराज् (-ज) पु० चेदि देशनो राजा – शिशुपाळ
चेय वि० भेगु करवा – वीणवा योग्य (२) ढगलो करवा योग्य, गोठववा – स्थापवा योग्य
चेल न० वस्त्र (२) (समासने अते) खराब – दुष्ट (उदा० 'भार्याचेल' = खराब पत्नी)
चेलिका स्त्री० चोळी, 'बॉडिस'
चेष्ट् १ आ० हालवु; क्रिया करवी; गति करवी; चेष्टा करवी (२) यत्न करवो (३) आचरवु, वर्तवु
चेष्ट न० चेष्टा, चाळो
चेष्टा स्त्री० हालचाल; गति (२) चाळो; हावभाव (३) प्रयत्न (४) वर्तन; वर्तणूक
चेष्टित न० आचरण, वर्तन (२) हालचाल, चाळो, चेष्टा
चैतन्य न० चेतना, चेतनपणु (२) समज; ज्ञान (३) आत्मा (४) परमात्मा
चैत्त वि० चित्तने लगतु, मानसिक
चैत्य वि० चित्तने लगतु (२) पुं० जीवात्मा (३) न० कीडीनो राफडो (४) (बुद्धना अवशेष उपर बाधेल) स्तूप (५) स्मरणस्तभ, पाळियो (६) देवालय (७) यज्ञमडप (८) पूजाने स्थाने ऊगेलु पीपळानु के बीजु कोई वृक्ष

चैत्यपाल पु० चैत्यनो रखेवाळ
चैत्यमुख पु० यतिनु कमंडलु
चैत्यवृक्ष पु० पूजाने स्थाने ऊगेलो पीपळो
चैत्र पु० ते नामनो मास
चैत्ररथ न० कुबेरनु उपवन
चैत्रसख पु० कामदेव
चैद्य पु० चेदिराज, शिशुपाळ
चैल न० वस्त्र, कपडु
चोक्ष वि० शुद्ध, स्वच्छ (२) प्रमाणिक (३) सुंदर, देखावडु (४) कुशळ
चोच न० तज (२) छाल (३) चामडु
चोदना स्त्री० प्रेरवु-मोकलवु-वकेलवु-हांकवु ते (२) विधि, आज्ञा
चोदित ('चुद्'नु भू० कृ०) वि० प्रेरेलु, मोकलेलु, आज्ञा करेलु (२) दलील तरीके रजू करेलु
चोद्य वि० प्रेरवा योग्य, मोकलवा योग्य (२) उल्लेखवा योग्य (३) न० प्रश्न; शंका (४) आश्चर्य
चोर पु० चोरी करनार, चोरी जनार
चोरिका स्त्री० चोरी, लूट
चोरिकाविवाह पु० गुप्त लग्न
चोरित वि० चोरेलु (२) न० चोरी
चोल पु०, चोली स्त्री० चोळी; कबजो (२) पग सुधी पहोंचे तेवु वस्त्र
चोष्य वि० चूसवा योग्य (२) न० चूसवानो पदार्थ
चौक्ष वि० जुओ 'चोक्ष'
चौर पु० जुओ 'चोर'
चौर्य न० चोरी, लूट (२) गुप्तता; गुप्त राखवु ते
चौल न० चूडाकर्म
च्यवन न० च्युत थवु ते
च्यावन वि० च्युत करनारुं (२) न० काढी मूकवु ते; पदच्युत करवु ते
च्यु १ आ० नीचे पडी जवु, च्युत थवु (२) बहार नीकळवु – झरवु – टपकवु (३) चळवु; खसी जवु; च्युत थवु (४) लुप्त थवु, अदृश्य थवु
च्युत् १ प० टपकवु, झरवु (२) सरी पडवु, नीकळी पडवु
च्युत ('च्यु'नु भू० कृ०) वि० पडी गयेलु; च्यवेलु (२) नष्ट (३) भ्रष्ट (४) खोवायेलु
च्युति स्त्री० च्यववु ते, च्युत थवु ते (२) झरवु ते, टपकवु ते (३) अदृश्य थवु ते; नाश (४) –विनाना थवु ते

छ

छग, छगल पु० बकरो
छटा स्त्री० समुदाय; पंक्ति; परंपरा (२) तेजपुंज; तेजनो चमत्कार
छत्तर, छत्र पु० बिलाडीनो टोप (२) न० छत्री;
छत्रधर, छत्रधार पु० छत्र धारण करनार
[illegible] पु० सम्राट, चक्रवर्ती राजा
छत्रिका स्त्री० नानु छत्र (२) बिलाडीनो टोप (३) पु० हजाम
छत्रिन् वि० छत्रवाळुं छत्र धारण करनारु
छत्वर पु० घर (२) लतामंडप
छद् १, १० उ० ढांकवुं (२) ओढवु (३) संताडवु
छद पु०, छदन न० ढांकण; आच्छादन (२) पांख (३) पांदडु (४) म्यान
छदि स्त्री०, छदिस् न० छापरु के छाज
छद्मन् न० वेष, स्वांग (२) बहानु (३) कपट; युक्ति (४) घरनु छापरु
छद्मरूपेण अ० वेश धरीने; छूपे वेशे
छद्मिन् वि० कपटी; ढोंगी (२) (समासने अंते) –नो वेश लेनारु
छन्न ('छद्'नु भू० कृ०) वि० ढंकायेलु, ढांकेलु (२) छुपावेलु (३) खानगी
छर्द पु०, छर्दन न०, छर्दि, छर्दिका, छर्दिस् स्त्री० ऊलटी

छल पु०, न० छळ; कपट; (२) बहानु; मिष (३) शठता; लुच्चाई
छलन न०, **छलना** स्त्री० छळकपट
छलिक न० गीत-अभिनय साथेनु गीत
छलित वि० छेतरायेलु; ठगायेलु
छल्लि(-ल्ली) स्त्री० छाल
छवि स्त्री० चामडीनो वर्ण; रंग (२) शोभा, काति
छंद् १० उ० खुश – सतुष्ट करवु (२) समजाववु – पटाववु (३) ढाकवु (४) –मा राचवु [स्वच्छद; मनस्वीपणु
छंद पु० इच्छा; स्वेच्छा; रुचि (२)
छंदस् न० इच्छा; स्वेच्छा, रुचि (२) स्वच्छद, मनस्वीपणु (३) वेद (४) वृत्त, छद (५) एक वेदाग; छदशास्त्र
छंदानुवृत्त न०, **छंदानुवृत्ति** स्त्री० बीजाना छदने अनुसरवु – अनुकूळ थवु ते [सतुष्ट थयेलु – करेलु
छंदित ('छद्'नु भू० कृ०) वि० खुश;
छाग पु० बकरो
छागमुख पु० कार्तिकेय
छागरथ पु० अग्निदेव
छागल पु० बकरो
छागवाहन पु० जुओ 'छागरथ'
छात ('छो'नु भू० कृ०) वि० छिन्न (२) दुर्बळ; कृश
छात्र पु० शिष्य; विद्यार्थी
छात्रव्यंसक वि० जडसु शिष्य
छाद पु० छापरु; छाज
छादन न० ढांकण (२) न० छुपाववुं ते
छादित ('छद्'नुं भू० कृ०) वि० ढाकेलु (२) छुपावेलु
छाया स्त्री० छांयो, छायडो (तत्पुरुष समासने अंते 'गाढ छाया' अर्थमा 'छायम्' थाय छे) (२) प्रतिबिंब (३) काति; तेज (४) सौंदर्य; शोभा (५) वर्ण; रग (६) सादृश्य (७) भ्रम; भास (८) प्राकृतनु संस्कृत रूपांतर
छायातरु, छायाद्रुम पु० गाढ छायावाळुं झाड (२) 'नमेरु' वृक्ष
छायाद्वितीय वि० एकलु (पोतानी छाया ज साथमा छे एवु)
छायापथ पु० आकाशगगा
छांदस वि० वैदिक (२) वेद भणेलु (३) छद सबधी (४) पु० वेद भणेलो ब्राह्मण (५) वेद
छिक्का स्त्री० छीक
छिद् ७ उ० कापवु; छेदवु; फाडवु; चीरवुं (२) खलेल करवी, हरकत करवी (निद्रादिमा) (३) दूर करवु
छिद् वि० (समासने छेडे) कापनारु; छेदनारु, नाश करनारु
छिदा स्त्री० कापवु ते; छेदन
छिदुर वि० जलदी भागे तेवु; बरड (२) कापतु, छेदतु, भाग पाडतु (३) छिन्न; भागेलु; तूटेलु [(३) दोष; भूल; खामी
छिद्र वि० छिद्रवाळु (२) न० काणुं; छेद
छिद्रदर्शन, छिद्रदर्शिन् वि० छिद्र जोनारुं; दोषद्रष्टा
छिद्रानुजीविन्, छिद्रान्वेषिन् वि० बीजाना छिद्र शोधनारु, निंदाखोर
छिद्रित वि० छिद्रवाळु; काणावाळुं
छिन्न ('छिद्'नु भू० कृ०) वि० कापेलु; छेदेलु, भागेलु, तोडेलु, दूर करेलु
छिन्नभिन्न वि० कापीने जुदु करायेलुं
छिन्नमूल वि० मूळमाथी कापी नाखेलुं
छिन्नसंशय वि० सशय नाश पामेलु
छुर् १ प० कापवु (२) कोतरवु (३) ६ प० खरडवु; लेप करवो –प्रेरक० खरडवु
छुरण न० लेपवु ते, खरडवु ते
छुरित न० काप, कापो
छुरी, छूरिका, छूरी स्त्री० छरी; चप्पु
छेक वि० पाळेलु (पशु) (२) शहेरनी चतुराई के दुर्गुणवाळु
छेतृ वि० कापनारु (२) दूर करनारुं

छेद पु० कापवु – छेदवु ते (२) भाग, हिस्सो (३) खड, टुकडो (४) दूर करवु ते, अत; नाश (५) न होवु ते – न रहेवु ते [करनारु इ०

छेदक वि० कापनारु, भाग – मज

छेदन वि० कापनारु, छेदनारु (२) नाश करनारु (३) टुकडा करनारु, फाडनारु (४) न० कापवु – छेदवु ते; चीरवु ते; भाग पाडवा ते (५) भाग, टुकडो, कटको (६) दूर करवु ते; नाश करवो ते

छेदिन् वि० कापनारु; चीरनारु, तोडनारु

छेद्य वि० छेदवा – कापवा योग्य, कापी – छेदी शकाय तेवु

छो ४ प० [छ्यति] कापवु, कापी नाखवुं

छोटिका स्त्री० चपटी; चपटी वगाडवी ते

ज

ज वि० (समासने छेडे) जन्मेलु, उत्पन्न थयेलु, –थी पेदा थयेलु, –माथी बनेलु

जक्ष् २ प० [जक्षिति] खावु, खाई जवु

जगच्चक्षुस् पु० सूर्य

जगच्चित्र न० जगतनी अद्भुत वस्तु (२) जगतरूपी आश्चर्य [जगदवा – दुर्गा

जगज्जननी स्त्री० जगतनी माता–

जगत् वि० गतिमान, जगम (२) न० दुनिया, विश्व (३) शरीर, देह

जगती स्त्री० पृथ्वी (२) लोको (३) विश्व (४) एक छद

जगती न० द्वि० व० स्वर्ग अने पाताळ

जगतीधर पु० पर्वत

जगतीपति पु० राजा

जगतीरुह् पु० वृक्ष

जगतीश्वर पु० राजा

जगत्कर्तृ पु० जगत्कर्ता परमेश्वर (२) ब्रह्मा [अने पाताळ

जगत्त्रय न० स्वर्ग, मृत्युलोक (पृथ्वी)

जगत्पति पु० जुओ 'जगदीश'

जगत्यधीश्वर पु० राजा

जगत्सेतु पु० परमात्मा

जगत्स्रष्टृ पु० जगतनो सरजनहार (२) ब्रह्मा (३) शिव

जगदंबा, जगदंबिका स्त्री० दुर्गा

जगदात्मन् पु० परमात्मा

जगदाधार पु० काळ (२) वायु

जगदायु पु० पवन

जगदीप पु० सूर्य

जगदीश पु० जगतनो मालिक (विष्णु, शिव) [शिव (४) नारद (५) ब्रह्मा

जगद्गुरु पु० परमात्मा (२) विष्णु (३)

जगद्योनि पु० परमात्मा (२) विष्णु, शिव, ब्रह्मा (३) स्त्री० पृथ्वी

जगद्वंद्य पु० श्रीकृष्ण

जगन्नाथ पु० जगतनो नाथ – स्वामी (२) विष्णु, दत्तात्रेय (३) जगन्नाथनी मूर्ति (पुरीमा आवेली) (४) (द्वि०व०) विष्णु अने शिव [–ईश्वर; विष्णु

जगन्निवास पु० जगतमा व्यापी रहेनार

जगन्मातृ स्त्री० दुर्गा (२) लक्ष्मी

जग्ध ('अद्' तथा 'जक्ष्'नु भू० कृ०) वि० खावेलु

जग्धि स्त्री० भोजन, भक्षण

जघन न० केड, कमर, कूलो (२) लश्करनो पाछलो – अनामत भाग

जघनगौरव न० (मोटा) कूलानो भार

जघनचपला स्त्री० व्यभिचारिणी (२) नृत्यमा चपळ स्त्री

जघन्य वि० हलकु, निद्य (२) अतिम; छेल्लु (३) हलका कुळ के पदवाळु (४) पु० शूद्र, अत्यज

जघन्यज पु० नानो भाई (२) शूद्र
जटा स्त्री० बावाओ माथे राखे छे ते के तेवु केशनु झूड (२) वडवाई जेवु मूळ
जटाजूट पु० जटानो जूडो
जटाधर वि० जटा धारण करनारु (२) पु० शकर (३) तपस्वी
जटामंडल न० जटानो जूडो
जटामौलि पु० जटानो मुगट
जटाल वि० जटावाळु, जटाधारी (२) जटानी पेठे गूथायेलु
जटि स्त्री० जटा (२) वड (३) समूह
जटिन् पु० शकर (२) पीपळो
जटिल वि० जटाधारी, जटावाळु (२) अटपटु, गूचवायेलु (३) पु० शिव (४) तपस्वी
जटी स्त्री० जुओ 'जटि'
जठर वि० कठण (२) घरडु, वृद्ध (३) बाधेलु (४) पु०, न० पेट, उदर (५) गर्भाशय (६) बखोल, अदरनो भाग
जठराग्नि पु० खाधेलु पचावनारो जठरनो अग्नि – जठरनी शक्ति
जड वि० ठडु, अकडाई गयेलु (२) निश्चल, स्तब्ध (३) मूर्ख, ठोठ
जडता स्त्री०, **जडत्व** न० आळस, काम करवानो अणगमो (२) मूर्खपणु, बेवकूफाई (३) मूर्छा, बेभानपणु
जडिमन् पु० जडता, ठडापणु (२) मूर्खता, बेवकूफाई (३) मूर्छा
जडीकृ ८ उ० जड, हिलचाल विनानु के मूर्छित बनावी देवु
जतु न० लाख (२) अळतो
जतुगृह न० लाख वगेरेनु बनावेलु घर (पाडवोने सळगावी मूकवा)
जत्रु न० हासडीनु हाडकु, हासडी
जन् ४ आ० [जायते] जन्मवु, उत्पन्न थवु (२) ऊगवु, फूटवु (३) बनवु
जन पु० प्राणी, मनुष्य, व्यक्ति (स्त्री के पुरुष) (२) लोको, जनसमुदाय
जनक वि० उत्पन्न करनारु (२) पु० पिता (३) विदेह – मिथिलाना राजा – सीताना पिता
जनकतनया, जनकनंदिनी, जनकसुता, जनकात्मजा स्त्री० जनकपुत्री सीता
जनचक्षुस् न० सूर्य
जनता स्त्री० जन्म (२) जनसमाज
जनन वि० उत्पादक (२) न० जन्म; उत्पत्ति (३) उत्पन्न करवु ते
जननी स्त्री० माता
जनपद पु० जाति, प्रजा (२) देश, प्रदेश, राज्य (३) (पुर – नगरथी ऊलटु) गामडानो भाग, देश
जनप्रवाद पु० अफवा, लोकोक्ति
जनयितृ वि० उत्पन्न करनारु (२) पु० पिता (३) ब्रह्मा
जनयिष्णु पु० उत्पन्न करनार
जनलोक पु० सात लोकमानो पाचमो
जनवाद पु०, **जनश्रुति** स्त्री० अफवा; लोकोक्ति (२) आळ, कलक
जनसंबाध वि० लोकोनी भीडवाळु
जनस्थान न० दडकारण्यनो एक भाग
जनंगम पु० चाडाल
जना स्त्री० जन्म, उत्पत्ति [तेवु
जनाकीर्ण वि० लोको टोळे वळ्या होय
जनातिग वि० असामान्य, अलौकिक
जनाधिप पु० राजा
जनार्णव पु० मोटो जनसमुदाय, काफलो
जनार्दन पु० विष्णु, कृष्ण
जनांत पु० निर्जन स्थान (२) प्रदेश (३) यम (४) समुखता, सान्निध्य
जनांतिकम् अ० बीजा न साभळे तेम, एक बाजुए (नाटकमा)
जनि स्त्री० जन्म, उत्पत्ति (२) माता
जनित वि० जन्मेलु (२) जन्म आपेलु (३) बनेलु, थयेलु
जनितृ पु० पिता
जनित्री स्त्री० माता

जनी स्त्री० जुओ 'जनि'
जनुस् न० उत्पत्ति, जन्म (२) जीवन
जनौघ पु० लोकोनु टोळु
जन्मकील पु० विष्णु
जन्मकुडली स्त्री० जन्मपत्रिका
जन्मतिथि पु०, स्त्री०, जन्मदिन न०,
जन्मदिवस पु० जन्मनो दिवस
जन्मन् न० जन्म, उत्पत्ति (२) आयुष्य, जिदगी (३) पिता, जन्म आपनार
जन्मपादप पु० वशवृक्ष, वशावळी
जन्मभाज् पु० जन्मेलु ते, प्राणी
जन्मभाषा स्त्री० स्वभाषा, मातृभाषा
जन्मभूमि स्त्री० स्वदेश, वतन
जन्मभृत् पु० जुओ 'जन्मभाज्'
जन्मसाफल्य न० जन्मनी सफळता, कृतकृत्यता
जन्महेतु पु० जन्मनु कारण
जन्माष्टमी स्त्री० श्रीकृष्णनी जन्मतिथि – श्रावण वद आठम
जन्मातर न० पुनर्जन्म; बीजो जन्म (२) परलोक [जन्ममा करेलु
जन्मातरीय वि० बीजा जन्मनु, बीजा
जन्माघ वि० जन्मथी आधळु
जन्मिन् पु० प्राणी
जन्य वि० उत्पन्न थयेलु, जन्मेलु (२) (समासने अते) –वडे पेदा थयेलु, –माथी जन्मेलु (३) जाति, वश के कुटुबनु (४) पु० वरनो सबधी, मित्र के साथी (५) सामान्य माणस (६) न० जन्म, उत्पत्ति (७) जन्मेलु ते (८) देह (९) युद्ध; लडाई (१०) प्रजा, लोक
जन्या स्त्री० मातानी सखी (२) कन्यानी सखी (३) हाट (४) लोक
जप् १ प० जपवु, मनमा बोलवु, रटवु (२) मत्रनो जाप करवो [जपवी ते
जप पु० मत्र इत्यादिनु रटण (२) माळा
जपत् पु० तपस्वी
जपन न० जप, जप करवो ते
जपमाला स्त्री० जप करवानी माळा
जपा स्त्री० एक फूलछोड; तेनु फूल
जप्य वि० जप करवा योग्य (२) पु०, न० जप, जपनो मत्र
जभ् १ आ० बगासु खावु
जम् १ प० भोजन करवु, जमवु
जमदग्नि पु० परशुरामना पिता
जमन न० खावु ते
जय पु० विजय, जीत, फतेह (२) निग्रह (इद्रियादिनो) (३) सूर्य (४) इद्रनो पुत्र, जयत (५) युधिष्ठिर (६) विष्णुनो द्वारपाळ (७) अर्जुन (८) महाभारतनु नाम (९) जयजयकार (१०) वीरण
जयकुंजर पु० विजयी नीवडेलो हाथी
जयमंगल पु० राजाने बेसवा माटेनो उत्तम हाथी
जयलक्ष्मी स्त्री० विजयनी देवी
जयलेख पु० विजयनो दस्तावेज
जयशब्द पु० जयजयकार; चारणो वडे करातो 'जय' एवो पोकार
जयश्री स्त्री० विजयनी देवी
जयस्तभ पु० विजय के जीतनी यादगीरी माटे ऊभो करेलो स्तभ
जयत वि० विजयी (२) पु० इद्रनो पुत्र
जया स्त्री० दुर्गा
जयिन् वि० विजयी, फतेहमद (२) मनोहारी; चित्ताकर्षक
जय्य वि० जीतवा योग्य (२) जीती शकाय एवु
जरठ वि० वृद्ध; जीर्ण (२) कठण; कर्कश (३) विकसेलु; परिपक्व
जरत् वि० वृद्ध, जीर्ण; अशक्त
जरतिका, जरती स्त्री० वृद्ध स्त्री
जरद्गव पु० वृद्ध बळद
जरा स्त्री० वृद्धावस्था; घडपण
जराजीर्ण वि० वृद्धावस्थाथी अशक्त
जरायु न० सापनी काचळी (२) गर्भाशय (३) गर्भने वीटीने रहेतु पातळु पड

जरायुज पु० गर्भाशयमाथी उत्पन्न थतु प्राणी (मनुष्य, पशु वगेरे)
जरित वि० वृद्ध, अशक्त
जर्जर, जर्जरित वि० वृद्ध (२) जीर्ण थयेलु (३) पीडित, त्रस्त, घायल
जल वि० जड; बेवकूफ
जल न० पाणी
जलकुक्कुट पु० जळकूकडी
जलकेलि पु०, स्त्री० पाणीमा के पाणी वडे रमवु ते [अजलि
जलक्रिया स्त्री० पितृओने अपाती
जलक्रीडा स्त्री० जुओ 'जलकेलि'
जलचर, जलचारिन् पु० जळचर प्राणी
जलज वि० पाणीमा जन्मेलु – उत्पन्न थयेलु (२) पु० जळचर प्राणी, माछलु (३) चद्र (४) शेवाळ (५) पु०, न० शख
जलजंतु पु० माछलु वगेरे जळचर प्राणी
जलजीविन् पु० माछीमार
जलतरंग पु० पाणीनु मोजु
जलद पु० मेघ, वादळ
जलदागम पु० वर्षाऋतु
जलधर पु० मेघ (२) समुद्र
जलधि पु० समुद्र (२) एक सख्या (एकडा उपर पदर मीडा जेटली)
जलधिज पु० चद्र
जलनिधि पु० समुद्र
जलपटल न० मेघ, वादळ
जलप्रदान न० पूर्वजोने जलाजलि
जलप्रपात पु० धोध
जलमुच् पु० मेघ, वादळु
जलयत्र न० पाणीनो फुवारो (२) रेंट
जलयंत्रमंदिर न० पाणीमा बाधेलु अथवा फुवारावाळु मकान, ग्रीष्मगृह
जलयात्रा स्त्री० दरियाई मुसाफरी
जलयान न० नौका, वहाण
जलराशि पु० महासागर, समुद्र
जलरुह् (–ह) न० कमळ
जलवाह पु० मेघ (२) पाणी भरनारो
जलवाहक पु० पाणी भरनारो
जलशय, जलशयन, जलशायिन् पु० विष्णु [तळाव, जळाशय
जलस्थान न०, **जलस्थाय** पु० सरोवर;
जलाकर पु० झरो
जलागम पु० वर्षाऋतु
जलात्यय पु० शरद ऋतु
जलाधिप पु० जळनो देव – वरुण
जलार्द्र वि० भीनु (२) न० भीनु वस्त्र
जलावर्त पु० पाणीनु वमळ – भमरो
जलाशय वि० जळमा सूनारु – आराम करनारु (२) मूर्ख, बेवकूफ (३) पु० सरोवर; तळाव, समुद्र (४) माछलु
जलाश्रय पु० तळाव (२) पाणीमा बाधेलु घर [पितृओने अपाती जलाजलि
जलांजलि पु० पाणीनी अजलि (२)
जलूका स्त्री० जळो
जलेश पु० वरुण
जलेशय पु० विष्णु
जलेश्वर पु० वरुण
जलोका, जलौका स्त्री० जळो
जल्प् १ प० बोलवु; वात करवी (२) बडबडवु; अस्पष्ट बोलवु
जल्प पु० कथन; वातचीत (२) बक-वाद (३) तत्त्वनिर्णयनी इच्छाथी नहि पण परपक्ष-खडन अने स्वपक्ष-मडननी इच्छाए करेलो वाद (न्याय०)
जल्पक वि० बोल बोल करनारु (२) बकवाद करनारु
जल्पन वि० बोलतु (२) बकवाद करतु (३) न० कथन (४) बकवाद
जल्पित वि० बोलेलु, कहेलु (२) न० वातचीत (३) बकवाद
जव पु० त्वरा, उतावळ, वेग
जवन वि० वेगीलु, झडपी (२) न० त्वरा, वेग
जवनिका, जवनी स्त्री० पडदो; चक
जवा स्त्री० जुओ 'जपा'

जविन् वि० झडपी; वेगीलु
जहत् वि० तजतु, छोडी देतु
जहत्स्वार्था, जहल्लक्षणा स्त्री० एक जातनी लक्षणा, जेमा शब्दना वाच्यार्थनो त्याग थतो होय छे (व्या०)
जह्नु पु० एक प्राचीन राजा (तेणे गंगाने पुत्री तरीके ग्रहण करी हती)
जह्नुकन्या, जह्नुतनया स्त्री० गंगा
जंग पु० युद्ध, लडाई
जंगम वि० (स्थावरथी ऊलटु) गतिशील; खसी शके तेवु (२) सजीव प्राणीओ संबंधी (३) न० बीजे ठेकाणे लई जई शकाय तेवी वस्तु
जंगल वि० उज्जड, वेरान; निर्जन (२) न० अरण्य, वन, झाडी
जंघा स्त्री० जांघ, साथळ
जंघापथ पु० रस्तानी बाजुए पगपाळा चालवा माटेनो भाग, 'फूटपाथ'
जंघाबल न० नासी जवु ते
जंजपूक पु० अतिशय जप करनारु
जंतु पु० प्राणी (२) जीवात्मा (३) लोक; जनता (४) तुच्छ कोटीनु प्राणी
जंतुमती स्त्री० पृथ्वी
जंपती पु० द्वि० व० दंपती
जंबाल पु० कादव (२) लील
जंबालिनी स्त्री० नदी
जंबीर पु० बिजोरानु झाड
जंबु स्त्री० जांबुडानु वृक्ष (२) जांबु
जंबुक पु० शियाळ (२) नीच मनुष्य
जंबुखंड, जंबुद्वीप पु० मेरु पर्वतनी आजुबाजु आवेला सात खंडोमानो एक (जेमा भारतवर्ष आवेलो छे)
जंभ् १ आ० बगासु खावु
—प्रेरक० नाश करवो, दूर करवु
जंभ पु० जडबु (ब० व० मा) (२) दांत (३) भक्षण; चाववु ते (४) इंद्रे मारेलो एक राक्षसनु नाम (५) बगासु
जंभक वि० भक्षण करतु, चावतु (२) पु० दगाबाज माणस (३) [illegible]
जंभद्विष्, जंभभेदिन्, जंभरिपु पु० इन्द्र
जंभा स्त्री० बगासु
जंभारि पु० इन्द्र [जागता रहेवुं ते
जागर पु०, जागरण न० जागवु ते;
जागरूक वि० जागतु, सावध
जागुड पु० जेनु केसर थाय छे ते देश (२) न० केसर
जागृ २ प० जागवु (२) सावध रहेवुं
जाग्रत् वि० जागतु (२) सावध
जाघनी स्त्री० साथळ (२) पूंछडी
जांजिन् वि० योद्धो, लडवैयो
जाठर वि० जठरनु, पेटनु (२) पु० पाचनशक्ति (३) ओजरी
जाड्य न० जडता; मूर्खाई
जात ('जन्'नु भू० कृ०) वि० जन्मेलु, उत्पन्न थयेलु (२) पु० छोकरो, बेटो (३) प्राणी (४) न० जन्म; उत्पत्ति (५) वर्ग, जाति; समूह (६) बाळक
जातक वि० जन्मेलु (२) पु० नवु जन्मेलु बाळक (३) न० जन्मपत्री (४) जन्म समये करवामा आवतो संस्कार
जातकर्मन् न० 'जातक' (संस्कार)
जातकौतूहल वि० तीव्र इच्छावाळु
जातप्रत्यय वि० विश्वास उत्पन्न थयो होय तेवु
जातप्रेत वि० जन्मेलु अने मरी गयेलु
जातमन्मथ वि० प्रेममा पडेलु
जातमात्र वि० तरतनु जन्मेलु
जातरूप वि० सुंदर, तेजस्वी (२) न० सोनु (३) नग्नावस्था
जातवासक न० जुओ 'जातवेश्मन्'
जातवेदस् पु० अग्नि
जातवेश्मन् न० सुवावडीनो ओरडो
जाता स्त्री० पुत्री; दीकरी
जाति स्त्री० जन्म; उत्पत्ति (२) वर्ण के न्यात तथा योनिना भेदसूचक वर्ग, समुदाय (३) वर्गनी जुदी जुदी व्यक्तिओमा रहेलो समान धर्म (४) सप्तकना सात स्वरोमानो दरेक (संगीत०)

जातिक्षय पु० पुनर्जन्ममाथी मुक्ति
जातिधर्म पु० वर्णाश्रम धर्म, वर्णधर्म
जातिमत् वि० उच्च कुळमा जन्मेलु
जातिमह पु० जन्मदिवसनो उत्सव
जातिमात्र न० मात्र जन्म(जाति)थी ज प्राप्त थयेली स्थिति (कर्मथी नही)
जातिसंपन्न वि० उच्च कुळनु
जातिस्मर वि० पूर्वजन्मनी स्थिति याद करी शकनारु
जातिहीन वि० नीच जातिनु, अधम
जाती स्त्री० एक फूलनी वेल के तेनु फूल (मालती)
जातीय न० अमुक प्रकारना वासणोनो [समुदाय
जातु अ० कदी पण, जरा पण (२) कदाचित्, कदीक, सभव छे के
जातुधान पु० राक्षस
जात्य वि० एक ज जातिनु, सबधी (२) कुलीन (३) सुदर, मनोहर
जात्यध वि० जन्मथी ज आधळु
जानकी स्त्री० जनकपुत्री – सीता
जानपद पु० गामडियो (२) देश; गामडा वगेरे वाळो भाग (३) प्रजाजन
जानि स्त्री० जाया, पत्नी (बहुव्रीहि समासने छेडे 'जाया' ने बदले)
जानु न० ढीचण, घूटण
जाप पु० जप, मत्र जपवो ते
जापक वि० जप करनारु (२) जपने लगतु, जपथी मळेलु
जामदग्न्य पु० परशुराम (जमदग्निनो [पुत्र)
जामा स्त्री० पुत्री (२) पुत्रवधू
जामातृ पु० जमाई
जामि स्त्री० बहेन (२) पुत्री (३) पुत्रवधू (४) नजीकना सगपणवाळी स्त्री
जामित्र न० लग्नथी सातमु स्थान (ज्यो०) (पोतानी पत्नीनी बाबतमा भावि सद्भाग्य सूचवे)
जामेय पु० भाणेज
जाया स्त्री० पत्नी, भार्या
जायापती पु० द्वि० व० पतिपत्नी; दपती
जार पु० परस्त्रीनो प्रेमी, यार
जारज पु० व्यभिचारथी जन्मेलो पुत्र
जारण न० जीर्ण करवु ते (२) जीर्ण करनार वस्तु के मत्रप्रयोग
जारिणी स्त्री० व्यभिचारी स्त्री
जारूथ्य वि० प्रशसापात्र (२) जेमा दक्षिणादि खूब अपाता होय तेवु
जाल न० पखी, माछला वगेरे पकडवा माटेनी जाळ (२) करोळियानु जाळु (३) जाळीवाळु वस्तर (४) भीतमानु जाळियु, बारी (५) समूह, समुदाय (६) इद्रजाळ (७) अणविकस्यु फूल
जालक न० जुओ 'जाल' (२) वाळमा पहेरवानु एक घरेणु
जालकर्मन् न० माछीमारनो धधो
जालकारक पु० करोळियो
जालग्रथित वि० जाळाथी जोडायेलु (पजानी आगळीओ इ०)
जालपाद्(-द) पु० जाळाथी जोडायेला पगना पजावाळु प्राणी (जेमके, बतक)
जालाक्ष पु० नानु जाळियु, गवाक्ष
जालिक पु० माछीमार (२) शिकारी (३) ठग, शठ (४) करोळियो (५) प्रातनो सूबो (६) मदारी, जादुगर
जालिका स्त्री० जाळ (२) साकळीवाळु वस्तर (३) जळो (४) लोढु (५) करोळियो (६) विधवा स्त्री (७) जाळीदार बुरखो (८) समूह
जाल्म वि० क्रूर, घातकी (२) अविचारी (३) पु० चोर, शठ (४) नीच – पामर माणस
जाल्मक वि० नीच, हलकु
जाह्नवी स्त्री० गगानदी
जांगल वि० जगली (२) न० शिकार करी आणेलु मास
जाबूनद वि० सोनानु (२) न० सोनु (३) सोनानु घरेणु

जि १ प० जीतवु; हराववु (२) चडियाता थवु (३) जीतीने मेळववु (४) निग्रह करवो, सयममा राखवु
जिगीषा स्त्री० जीतवानी इच्छा (२) स्पर्धा [हरीफाईमा ऊतरेलु
जिगीषु वि० जीतवानी इच्छावाळु (२)
जिघत्सा स्त्री० खावानी इच्छा, भूख
जिघासा स्त्री० मारी नाखवानो इरादो
जिघासु वि० हणवानी इच्छा राखनारु (२) पु० शत्रु [इच्छा
जिघृक्षा स्त्री० पकडवानी–लेवानी
जिज्ञासा स्त्री० जाणवानी इच्छा
जिज्ञासु वि० जाणवानी इच्छावाळु
जित् वि० (समासने छेडे) जीतनारु
जित ('जि'नु भू० कृ०) वि० जितायेलु; तावे करेलु (२) जीतीने मेळवेलु (३) –थी वश थयेलु (४) न० विजय
जितकाशि पु० दृढ मूठी–मुक्को
जितकाशिन् वि० विजय वडे शोभतु; विजयोन्मत्त
जितश्रम वि० न थाके तेवु
जितात्मन्, जितेंद्रिय वि० जात उपर के इंद्रियो उपर विजय मेळवनारु; आत्मनिग्रही
जित्वर वि० जीत मेळवनारु, विजयी
जिन वि० विजयी (२) पु० बौद्ध के जैन सत (३) विष्णु
जिष्णु वि० विजयी (२) –ना करता चडियातु (समासने छेडे) (३) पु० सूर्य, इद्र, विष्णु; अर्जुन
जिहान वि० जतु, –नी तरफ जतु (२) मेळवतु; पामतु
जिह्म वि० वक्र; वाकु (२) कपटी; कुटिल; अप्रमाणिक (३) मद, सुस्त (४) झाखु; अधारियु (५) न० कपट; अप्रमाणिकता
जिह्मग वि० वाकुचूकु जनारु (२) धीमे चालनारु (३) पु० साप
जिह्मगति वि० वाकुचूकु चालनारु
जिह्मयोधिन् वि० अप्रामाणिक रीते लडनारु (२) पु० भीम
जिह्मित वि० वाकु वळेलु – वाळेलु
जिह्व पु०, **जिह्वा** स्त्री० जीभ
जिह्वालौल्य न० जीभनी लोलुपता
जीन वि० वृद्ध; जीर्ण (२) पु० चामडानी कोथळी
जीमूत पु० मेघ, वादळ
जीर्ण ('जॄ'नु भू० कृ०) वि० जूनु, प्राचीन (२) घसाई गयेलु, फाटी गयेलु (३) पाचन थयेलु
जीर्णोद्धार पु० जीर्ण थयेला मदिर वगेरेने फरी समरावबु ते
जीव् १ प० जीववु (२) सजीवन थवु (३) –ना वडे निर्वाह चलाववो
जीव वि० जीवतु, हयात (२) पु० प्राण (३) जीवात्मा (४) जीवन; आयुष्य (५) प्राणी (६) व्यवसाय; धधो
जीवक वि० जीवतु (२) –ना वडे आजीविका चलावतु (३) लावो वखत जीवतु (४) पु० प्राणी (५) नोकर (६) बौद्ध भिक्षु (७) गारुडी (८) व्याजे नाणा धीरनार शाहूकार
जीवजीवक पु० चकोर पक्षी
जीवत् वि० जीवतु
जीवधानी स्त्री० पृथ्वी
जीवन वि० सजीवन करनारु (२) पु० परमात्मा; परब्रह्म (३) न० जीववु ते (४) आयुष्य; जिंदगी (५) जीवन-शक्ति; प्राण (६) पाणी (७) आजीविकानु साधन (८) सजीवन करवु ते
जीवनिकाय पु० जीवधारी प्राणी
जीवनीय वि० निर्वाहोपयोगी (२) जीववा योग्य (३) न० पाणी (४) ताजु दूध [आजीविका
जीवनोपाय पु० निर्वाहनु साधन;
जीवन्मुक्त वि० छते देहे मुक्त थयेलु
जीवन्मुक्ति स्त्री० जीवन्मुक्त दशा

जीवपुत्रा स्त्री० जेनो पुत्र जीवतो होय तेवी स्त्री [प्राणीओ
जीवलोक पु० मृत्युलोक (२) जीवतां
जीवशेष वि० मात्र जीव ज बाकी रहे तेम नासी छूटेलु [होय तेवी स्त्री
जीवसू स्त्री० जेना बधा बाळको जीवता
जीवंजीव पु० चकोर पक्षी
जीवा स्त्री० धनुष्यनी पणछ (२) पृथ्वी (३) जीवन (४) आजीविका
जीवातु पु०, न० जीवन, अस्तित्व (२) पुनर्जीवन आपवु – सजीवन करवु ते
जीवात्मन् पु० जीवात्मा, जीव
जीवांतक पु० पारधी; शिकारी (२) खूनी, वध करनार
जीविका स्त्री० निर्वाह, निर्वाहसाधन (२) जीवन (३) पाणी
जीवित ('जीव्'नु भू० कृ०) वि० जीवतु; हयात (२) सजीवन करेलु (३) न० जीवन (४) आयुष्य (५) निर्वाह; आजीविकानु साधन
जीवितज्ञा स्त्री० रक्तवाहिनी, नाडी
जीवितनाथ पु० पति
जीवितव्य जीववा – जीवाडवा योग्य (२) न० आयुष्य, जीवन (३) जीववानी के जीवता थवानी आशा
जीवितसंशय पु० प्राणसकट, जीवनु जोखम (२) जीववानी अनिश्चितता
जीविताशा स्त्री० जीववानी आशा
जीवितेश पु० पति, प्रेमी (२) यमराज
जीविन् पु० (घणुखरु समासने अते) जीवतु (२) –ना वडे जीवतु (उदा० 'शस्त्रजीविन्') (३) पु० जीवतु प्राणी
जीवोत्सर्ग पु० प्राणत्याग करवो ते, जीव आपवो ते
जुगुप्सन न०, **जुगुप्सा** स्त्री० आरोप; निंदा, गाळ; ठपको (२) अणगमो, तिरस्कार
जुष् ६ आ० सतुप्ट थवु, प्रसन्न थवु (२) अनुकूळ थवु (३) गमवु, भोगववु; माणवु (४) सेववु (५) रहेवु, वारवार जवु (६) १ प०, १० उ० विचारवु, तर्क करवो (७) तपासवु (८) तृप्त थवु
जुष् वि० (समासने अते) आनद पामतु; रस लेतु (२) पासे जतु, सेवतु (३) पामतु; पहोचतु
जुष्ट ('जुष्'नु भू० कृ०) वि० सतुष्ट; प्रसन्न (२) सेवेलु (३) युक्त (४) प्रिय; अनुकूळ (५) प्रशसायेलु
जूट पु० जटा, केशसमूह
जृंभ् १ आ० बगासु खावु (२) विकसवु; खीलवु, फूलवु (३) विस्तरवु; फेलावु (४) प्रगट थवु, देखावु
जृंभ पु०, न० बगासु खावु ते (२) खीलवु ते, विकसवु ते
जृंभकास्त्र न० ऊघमा नाखनार अस्त्र
जृंभण न० बगासु खावु ते (२) (आळस खावा) अवयवो लाबा करवा ते (३) खीलवु ते (४) घेनमा नाखी देवु ते (५) जृम्भकास्त्र
जृंभा स्त्री० जुओ 'जृम्भ'
जृंभिका स्त्री० बगासु
जृंभित ('जृभ्'नु भू० कृ०) वि० बगासु खाधेलु (२) खीलेलु, विकसेलु (३) पणछ उतारी नाखेलु (४) न० बगासु (५) खीलवु – विकसवु ते
जॄ १ प० [जरति], ४ प० [जीर्यति], ९ प० [जृणाति], १० उ० [जारयति–ते] जीर्ण थवु, वृद्ध थवु, करमावु (२) नाश पामवु (३) पची जवु
जेतृ वि० विजयी, जीतनारु (२) पु० विजेता
जेमन न० जमवु ते [न० विजय
जैत्र वि० विजयी (२) पु० विजेता (३)
जैन वि० जैन मतनु अनुयायी
जैवातृक वि० दीर्घायुषी (२) पु० चद्र
जैह्म्य न० कुटिलता, वक्रता

जोटिंग पु० शिव (२) उग्र तपस्वी

जोष पु० संतोष; तृप्ति [सुखे, निराते

जोषम् अ० चूपकीथी; छानामाना (२)

ज्ञ वि० जाणनारु, परिचित (समासने अंते) (२) डाह्यु (३) पु० विद्वान (४) जीवात्मा [स्तुति

ज्ञप्ति स्त्री० जाणवु ते (२) बुद्धि (३)

ज्ञा ९ उ० [जानाति, जानीते] जाणवु, परिचित थवु (२) शोधी काढवु (३) समजवु; अनुभववु (४) कसोटी करवी; परीक्षा थवी (५) ओळखवु (६) गणवु; मानवु

–प्रेरक० [ज्ञापयति, ज्ञपयति] जणाववु; जाहेर करवु

ज्ञात ('ज्ञा'नु भू० कृ०) वि० जाणेलु; समजेलु (२) न० ज्ञान

ज्ञाति पु० पिता (२) पिता तरफनो सबंधी, पित्राई; ते आखो वर्ग (३) सगु माणस

ज्ञातिभाव पु० सगाई, सगापणु

ज्ञातिभेद पु० सगामा कुसप

ज्ञातृ वि० जाणनारु, डाह्यु, विद्वान

ज्ञान न० जाणवु ते, समजवु ते (२) विद्या (३) ब्रह्मज्ञान (४) खबर, माहिती (५) भान, प्रतीति (६) बुद्धिशक्ति (७) अभिप्राय, मत

ज्ञानकृत वि० जाणी बूजीने करेलु

ज्ञानचक्षुस् न० ज्ञानरूपी आख

ज्ञानतस् अ० जाणी जोईने, इरादापूर्वक

ज्ञानद पु० गुरु, आचार्य

ज्ञानदा स्त्री० सरस्वती

ज्ञानमय वि० ज्ञानरूप, ज्ञाननु बनेलु

ज्ञानयोग पु० मोक्ष माटे ज्ञान-चिंतन रूपी साधनमार्ग

ज्ञानवृद्ध वि० ज्ञानमा आगळ वधेलु, ज्ञानमा मोटु – श्रेष्ठ

ज्ञानित्व न० भविष्य भाखवु ते

ज्ञानिन् वि० ज्ञानी, डाह्यु (२) पु० भविष्य भाखनार, ज्योतिषी (३) आत्मज्ञानी

ज्ञानेंद्रिय न० ज्ञान ग्रहण करनार इंद्रिय (त्वच्, रसना, चक्षुस्, कर्ण ने घ्राण)

ज्ञापक वि० जणावनारु; कहेनारु, रजू करनारु (२) पु० गुरु; शिक्षक (३) राजदरबारनो एक अधिकारी (जे आवेदनपत्र रजू करे छे)

ज्ञेय वि० जाणवा के तपासवा योग्य

ज्या स्त्री० धनुष्यनी पणछ

ज्यानि स्त्री० जीर्णपणु, वृद्धता (२) तजवु ते (३) हानि

ज्यायस् वि० वधारे मोटु के चडियातु

ज्यायिष्ठ वि० उत्तम, श्रेष्ठ

ज्येष्ठ वि० सौथी मोटु (उमरमा) (२) सौथी उत्तम, श्रेष्ठ (३) पु० मोटो भाई (४) जेठ मास

ज्येष्ठा स्त्री० मोटी बहेन (२) वचली आंगळी (३) गंगा नदी (४) अढारमु नक्षत्र

ज्योतिर्मय वि० तारानु बनेलु

ज्योतिर्विद् पु० ज्योतिषी, जोषी

ज्योतिर्विद्या स्त्री० ज्योतिषशास्त्र (२) खगोळशास्त्र

ज्योतिश्चक्र न० राशिचक्र

ज्योतिष पु० ज्योतिषी, जोषी (२) न० ज्योतिर्विद्या

ज्योतिषिक पु० जोषी

ज्योतिषी स्त्री० तारो

ज्योतिष्क पु० ग्रह, नक्षत्र, सूर्य इ० आकाशना तेजस्वी पदार्थमानो दरेक

ज्योतिष्मत् वि० तेजस्वी, प्रकाशित (२) तारा, ग्रह वगेरेथी युक्त

ज्योतिष्मती स्त्री० रात्रि

ज्योतिस् न० प्रकाश, तेज (२) वीजळी (३) ग्रह, नक्षत्र वगेरे तेजस्वी पदार्थ (४) ज्योतिषशास्त्र (५) सूर्य अने चन्द्र (द्वि० व०मा)

ज्योतिःशास्त्र न० जुओ 'ज्योतिर्विद्या'

ज्योत्स्ना स्त्री० चादनी, चद्रप्रकाश (२) चद्रप्रकाशवाळी रात

ज्योत्स्नी स्त्री० चंद्रप्रकाशवाळी रात
ज्वर् १ प० ताव आववो, बीमार थवु (२) आवेशथी तपवुं
ज्वर पु० ताव
ज्वरित वि० ताव वडे बीमार थयेलु
ज्वल् १ प० सळगवु, बळवु, प्रकाशवु (२) सळगी जवु, बळी जवुं (३) बळतरा थवी
ज्वलन पु० अग्नि (२) न० बळवु–सळगवु ते
ज्वलित ('ज्वल्'नु भू० कृ०) वि० सळगेलु, सळगतु (२) प्रकाशित
ज्वाल वि० बळतु, सळगतु (२) पु० ज्वाळा; प्रकाश
ज्वाला स्त्री० ज्वाळा, प्रकाश
ज्वालामुखी स्त्री० ज्वाळामुखी पर्वत

झ

झगति, झगिति, झटिति अ० एकदम, जलदी, झट
झणझण न०, **झणझणा** स्त्री०, **झणत्कार** पु० रणकार, खणखण अवाज
झर पु०, **झरा (–री)** स्त्री० झरो, झरणु
झर्झर पु० झाझ (वाद्य) (२) कासीजोड (३) डाखलु (४) नेतरनी सोटी (५) कळियुग
झर्झरिन् पु० शिव
झर्झरी स्त्री० झाझ (वाद्य)
झला स्त्री० छोकरी, पुत्री (२) पतगियु (३) तडको, प्रकाश
झलि स्त्री० सोपारी [कासीजोड
झल्लक न०, **झल्लकी** स्त्री० झाझ (२)
झल्लरी स्त्री० झाझ (२) डाखलु
झल्लो स्त्री० डाखलु
झष पु० माछलु (२) मोटो मत्स्य
झषकेतन, झषकेतु पु० कामदेव, मदन
झषाक पु० कामदेव, मदन
झषोदरी स्त्री० व्यासमुनिनी माता – सत्यवती
झंकार पु० गुजारव, गणगणाट
झंकारिणी स्त्री० गगा
झंकृत न० जुओ 'झकार'
झंकृति स्त्री० धातुना घरेणाना जेवो खणखणाट
झंझा स्त्री० झझावात, वावाझोडु (२) धातुनो रणकार, खणखणाट
झंझानिल, झंझामरुत्, झंझावात पु० वरसाद साथेनो वटोळ
झंप पु०, **झंपा** स्त्री० कूदको
झांकारिन् वि० कर्कश अवाज पेदा करतु
झांकृत न० झाझरनो झणकार (२) झरणानो अवाज
झिल्ली स्त्री० तमरु (२) झाझ (वाद्य) (३) दिवेट (४) सूर्यप्रकाश

ञ

[ञ् तालुस्थानीय अनुनासिक; आ व्यंजनथी शरू थतो शब्द नथी।]

ट

टंक् १० उ० टाको मारवो, सीववु; जोडवु (२) टाकवु, कोतरवु
टंक पु०, न० कुहाडी, छीणी (२) तरवार (३) तरवारनु म्यान (४) टोच, शिखर (५) न० चलणी सिक्को
टंकण न० टकणखार
टंकशाला स्त्री० टकशाळ
टंकार पु० धनुष्यनो टकारव (२) बूम; पोकार, चीस
टंकिका स्त्री० कुहाडी
टंकृत न० टकार
टंग पु० टांग, पग (२) पावडो, कोदाळी
टंगा स्त्री० टाग; पग
टिट्टिभ पु० टिटोडो (एक पक्षी)
टिट्टिभी स्त्री० टिटोडी
टिप्पणी (–नी) स्त्री० टूंकी नोंध, टीप
टीक् १ आ० जवु, पहोंचवु, रहेवु
टीका स्त्री० समजूती आपवा करेलुं विवरण

ठ

ठक्कुर पु० मूर्ति, प्रतिमा; देवता (२) समान दर्शाववा प्रतिष्ठित माणसना नामने लगाडातो शब्द
ठिठा स्त्री० जुगारनो अड्डो

ड

डमर पु० हुल्लड, धाधल
डमरु पु० एक वाद्य, डाखलु
डयन न० ऊडवु ते (२) पालखी; डोळी
डवर वि० प्रसिद्ध; प्रख्यात (२) पु० समूह; समुदाय (३) सादृश्य, सरखापणु (४) आडंबर, देखाव (५) मोटो अवाज
डंबरनामन् वि० आडंबरी नामवाळुं
डाकिनी स्त्री० डाकण, स्त्रीपिशाच
डाकृति स्त्री० जुओ 'डाकृति'
डामर वि० भयंकर (२) सदृश, अनुरूप (सुंदर) (३) पु० हुल्लडनो अथवा उत्सवनो घोंघाट, धाधल
डांकृति स्त्री० घंटानाद
डिडिक पु० चित्रविचित्र वेशवाळो [भिखारी
डिंडिम पु० ढोल (दांडी पीटवानो)
डिंडिर, डिंडीर पु० फीण
डिंब पु० हुल्लड, दंगो, तोफान (२) बाळक; बच्चु (३) दडो, गोळो (४) दडा जेवो गोळ फूल-गुच्छ (५) भयनो घोंघाट (६) शरीर, देह (७) घूमतो भमरडो
डिंभ पु० छोकरो, बाळक (२) पशुनु बच्चु (३) फणगो, अंकुर
डिंभक पु० नानु बच्चु (२) बाळक
डी १ आ० ऊडवु (२) जवु
डीन ('डी'नु भू० कृ०) वि० ऊडेलु (२) न० ऊडवु ते
डुंडुभ (–म) पु० झेर विनानो साप
डोम, डोंब पु० एक हलकी मनाती जातिनो मनुष्य

ढ

ढक्का स्त्री० मोटु नगारुं
ढाल न० प्रहार—झाटको झीलवानु चामडानु एक साधन
ढुंढन न० ढूढवु ते
ढुंढि पु० गणपति
ढौक् १ आ० पासे जवु —प्रेरक० पासे लाववु (२) रजू करवु, अर्पवू
ढौकन न० अर्पवु ते (२)बक्षिस, लाच
ढौल पु० ढोल, नगारु

ण

[ण् मूर्धस्थानीय अनुनासिक; आ व्यंजनथी शरू थतो शब्द नथी।]

त

तक्र न० छाश
तक्रसार न० माखण
तक्ष् १, ५ प० छोलवु, चीरवु (२) घडवु (छोलीने) (३) घायल करवु
तक्षक पु० सुथार के कठियारो (२) विश्वकर्मा (३) एक नाग
तक्षण न० कापवु ते, छोलवु ते
तगर पु० एक वनस्पति (२) न० तेनु बनतु सुगधी चूर्ण
तज्ज्ञ वि० —जाणनारु, विद्वान (२) पु० डाह्यो माणस, तत्त्वज्ञानी
तट पु, न० ढोळाव, कराड (२)किनारो
तटस्थ वि० नदीकिनारे आवेलु (२) निष्पक्ष (३) वेदरकार, परायु, निष्क्रिय (४) पु० मित्र के शत्रु नहि तेवो — निष्पक्ष माणस
तटा स्त्री० जुओ 'तटी'
तटाक पु०, न० जुओ 'तडाग'
तटाकिनी स्त्री० मोटु तळाव
तटाघात पु० किनारा के भेखड सामे प्रहार करवो ते
तटिनी स्त्री० नदी
तटी स्त्री० भेखड, किनारो (२) ढोळाववाळी बाजु
तड् १० उ० मारवु, प्रहार करवो (२) वगाडवु (ढोल, ततुवाद्य इ०)
तडाग पु०, न० तळाव
तडित् स्त्री० वीजळी
तडित्वत् वि० वीजळी साथेनु, वीजळी-वाळु (२) पु० वादळ, मेघ
तडिन्मय वि० वीजळी जेवु चमकतु
तडिल्लता स्त्री० फाटावाळी वीजळी
तडिल्लेखा स्त्री० वीजळीनो लिसोटो
तत ('तन्'नु भ० कृ०) वि० पथरायेलु; विस्तृत (२) ढाकेलु, पाथरेलु (३) खेचेलु, चडावेलु (धनुष्य) (४)न० ततुवाद्य (५) पु० न० सतान
ततस् अ० त्याथी, तेमाथी (२) त्या (३) त्यारथी, पछीथी (४) तेथी; ते कारणे (५) ते उपरात, तेना करता वधारे (६) तो, तो पछी
ततस्ततः अ० अही तही (२) पछी—

आगळ चालो, आगळ शु ? (वातचीतमा)

ततस्त्य वि० त्यानु

ततः कथम् अ० पण, तो पछी शी रीते ?

ततः किम् अ० तेथी शु ? तेथी शो लाभ ? (२) पछी शु ? [पछी

ततःक्षणम्, ततःक्षणात् अ० तरत ज

ततःपरम् अ० तदुपरात

ततःप्रभृति अ० त्यारथी माडीने

ततामह पु० पितामह

तति स० ना०, वि० तेटला (पहेली-बीजी विभक्ति ब० व० नु रूप)

तति स्त्री० हार, ओळ, समुदाय

तत्काल पु० ते समय (२) वर्तमान समय

तत्कालम् अ० तरत ज, ते पछी तरत ज

तत्क्षण पु० वर्तमान समय (२) ए ज समय

तत्क्षणम्, तत्क्षणात् अ० तरत ज

तत्त्व न० वस्तुस्थिति, सत्य (२) साचु स्वरूप (३) मूळ तत्त्व (४) ब्रह्म, परमात्मा (५) शरीर

तत्त्वज्ञ वि० तत्त्वज्ञानी

तत्त्वज्ञान न० यथार्थ ज्ञान (२) आत्मज्ञान, परम तत्त्वनु ज्ञान

तत्त्वतस् अ० वास्तविक रीते; यथार्थपणे

तत्त्वदर्शिन्, तत्त्वदृश् वि० सत्य जाणनारु

तत्त्वनिकषग्रावन् पु० सत्य जाणवानी कसोटी

तत्त्वन्यास पु० विष्णुनी पूजामा मत्रोच्चारपूर्वक जुदा जुदा अगोए जुदी जुदी मुद्राओ लगाववानी क्रिया

तत्त्वविद् वि० जुओ 'तत्त्वज्ञ'

तत्त्वशुद्धि स्त्री० यथार्थ ज्ञाननु शोधन — निर्णय

तत्त्वसख्यान न० साख्य सिद्धांत

तत्त्वार्थ पु० सत्य, सत्य स्वरूप

तत्पर वि० ते पछीनु (२) अत्यत उत्सुक, तत्परायण [नि पहेलानु

तत्पूर्व वि० पहेली ज वार बनतु (२) करतु

तत्पूर्वम् अ० पहेली ज वार

तत्प्रथम वि० पहेली ज वार ते काम

तत्प्रथमम् अ० पहेली ज वार

तत्र अ० त्या, ते स्थळे (२) ते प्रसगे; ते बाबतमा [ठिकाणे ठेकाणे

तत्र तत्र अ० अही तही, दरेक स्थळे;

तत्रत्य वि० ते स्थळनु, त्यांनु

तत्रभवत् वि० तेओश्री (गेरहाजर व्यक्तिने माटेनु मानवाचक संबोधन)

तत्रभवती स्त्री० (गेरहाजर) स्त्रीने माटे वपरातु मानवाचक सबोधन

तत्रस्थ वि० त्यानु, त्या रहेलु

तत्समनतरम् अ० ते पछी तरत ज

तथा अ० तेम, ते प्रमाणे, आ प्रमाणे (२) अने, वळी, तेम ज (३) बराबर तेम ज, साचे, खरेखर

तथागत वि० तेवी स्थितिमा आवेलु, ते स्थिति पामेलु (२) ते जातनु (३) पु० गौतमबुद्ध (४) जिन, केवळज्ञानी

तथा च अ० अने वळी (२) तेम ज (३) एवु कहेवामा आव्यु छे के

तथापि अ० तोपण, तेम छता

तथाभाव पु० ते दशा — स्थिति (२) सत्य स्वरूप [पामेलु

तथाभूत वि० ते स्वरूपनु (२) ते दशाने

तथाविध वि० तेवु (२) ते प्रकारनु

तथाविधम् अ० ते ज प्रमाणे, तेमज

तथाविधान, तथाव्रत वि० —ए विधि के व्रतने अनुसरतु

तथाहि अ० दाखला तरीके (२) तेम ज

तथैव अ० ते ज प्रमाणे

तथ्य वि० यथार्थ, साचु, खरु (२) न० सत्य, वास्तविकता

तद् स० ना०, वि० ते (पु० प्रथमा एकवचनमा 'स.', स्त्री० प्रथमा एक वचनमा 'सा'; न० प्रथमा एक वचनमा 'तत्') (२) ते — प्रसिद्ध (३) ते ज, हतु ते ज (४) बे वखत वपराता

'अनेक' एवो अर्थ थाय (उदा० 'तेषु तेषु स्थानेषु') (५) न० परब्रह्म (६) आ लोक, आ दुनिया

तद् अ० त्या, ते स्थळे (२) तो, पछी (३) त्यारे, ते समये (४) तेथी; ते कारणथी

तदनंतरम् अ० त्यार पछी, तरत ज

तदनु अ० पछीथी, त्यार बाद

तदर्थ वि० जुओ 'तदर्थीय'

तदर्थम् अ० तेथी करीने, ते कारणे, ते माटे

तदर्थीय वि० ते माटेनु, ते ज अर्थ के [हेतुवाळु

तदर्ह वि० तेने योग्य, तेने लायकनु

तदवधि अ० त्या सुधी

तदवस्थ वि० ए दशाने पामेलु, ए स्थितिमां मुकायेलु

तदंत वि० ए – आ प्रमाणेना अतवाळु

तदा अ० त्यारे, ते समये

तदीय वि० तेनु

तदेकचित्त वि० तेमा ज चित्त के [लगनीवाळु

तद्गत वि० ते तरफ वळेलु; तेमा आसक्त

तद्देश्य पु० एक ज देशनो – देशवधु

तद्धित वि० तेने माटे सारु – हितकेर (२) पुं० नाम, सर्वनाम, विशेषण के अव्ययने लागीने नवो शब्द बनावतो प्रत्यय (व्या०)

तद्भव वि० तेमाथी थतु – जन्मतु (२) सस्कृतमाथी उद्भवेलु (शब्द)

तद्रूप वि० ए ज स्वरूपनु के गुणवाळु

तद्वत् अ० तेनी पेठे, ते प्रमाणे

तद्विद् वि० ते जाणनारु (२) सत्य जाणनारु

तद्विध वि० ते प्रकारनु

तन् ८ उ० विस्तारवु, लबाववु, लाबु करवु (२) पाथरवु; फेलाववु (३) छाई देवु, भरी काढवु (४) उत्पन्न करवु, अर्पवु (५) अनुष्ठान करवु (यज्ञ इ० नु) (६) रचवु (पुस्तक इ०) (७) वाळवु (धनुष्य)

तनय पु० पुत्र, वशज

तनया स्त्री० पुत्री

तनिका स्त्री० बाधवा माटेनु दोरडु

तनिमन् पु० कृशता, अल्पता, सूक्ष्मता

तनु वि० कृश, क्षीण, दूबळु, पातळु (२) नाजुक (३) सूक्ष्म (४) क्षुल्लक, नजीवु (५) छीछरु (६) स्त्री० देह; शरीर (७) मूर्ति (८) स्वरूप

तनुच्छद पु० बख्तर

तनुज पु० पुत्र (२) शरीर उपरनो वाळ

तनुजा स्त्री० पुत्री

तनुता स्त्री० कृशता, सूक्ष्मता, अल्पता

तनुत्यज् वि० शरीर छोडतु (मरण काळे) (२) साहसी

तनुत्याग वि० कजूस (२) पु० पोतानो जीव जोखममा नाखवो ते

तनुत्र, तनुत्राण न० बख्तर

तनुधी वि० अल्प बुद्धिवाळु

तनुप्रकाश वि० झाखा प्रकाशवाळु

तनुभृत् पु० प्राणी, मनुष्य

तनुमध्य वि० पातळी–नाजुक कमरवाळु

तनुरुह् (–ह) न० वाळ (२) पीछु

तनुलता स्त्री० नाजुक–पातळु शरीर

तनुवार न० बख्तर

तनुस् न० देह, शरीर

तनू स्त्री० शरीर (२) अवयव

तनूकृ ८ उ० ओछु करवु, पातळु करवु

तनूज पु० पुत्र (२) पीछु

तनूजा स्त्री० जुओ 'तनुजा'

तनूताप पु० देहकष्ट

तनूद्भव पु० जुओ 'तनूज'

तनूद्भवा स्त्री० जुओ 'तनुजा'

तनूनपात् पु० अग्नि (२) न० घी

तनूरुह न० शरीर उपरनो वाळ (२) पाख, पीछु (३) पु० पुत्र (४) वाळ

तन्मय वि० तल्लीन (२) तेनु बनेलु (३) तेनारूप बनेलु

तन्मात्र वि० मात्र ए ज, शुद्ध (२) न० मात्र ते ज, मात्र एटलु ज, बहु

अल्प-तुच्छ (३) पचमहाभूतनु शुद्ध सूक्ष्म रूप

तन्वग वि० नाजुक अवयववाळु

तन्वंगी स्त्री० नाजुक–सुदर स्त्री

तन्वी स्त्री० नाजुक–सुकुमार स्त्री

तप् १, ४ प० प्रकाशवु, तपवु (२) सताप पामवो, कष्ट वेठवु, तप करवु (३) तपाववु, कष्ट आपवु

तप पु० ताप, गरमी (२) सूर्य (३) ग्रीष्म ऋतु (४) तपश्चर्या

तपती स्त्री० सूर्यनी पुत्री (सवरणनी पत्नी अने कुरुनी माता)

तपन वि० तपतु, प्रकाशतु (२) पु० सूर्य (३) न० सताप, दु ख

तपनतनय पु० यम, कर्ण, सुग्रीव

तपनद्युति वि० सूर्य जेवु तेजस्वी (२) स्त्री० सूर्यप्रकाश

तपनसुता स्त्री० यमुना नदी

तपनीय न० सोनु (तपावीने शुद्ध करेलु)

तपर्त् पु० उनाळो

तपश्चरण न०, **तपश्चर्या** स्त्री० तप [करवु ते

तपस् न० प्रकाश (२) दु ख, ताप (३) तपश्चर्या (४) सप्तलोकमानो छठ्ठो लोक (५) स्त्री० माघ महिनो

तपस पु० सूर्य (२) चंद्र (३) पक्षी

तपस्य पु० फागण महिनो (२) अर्जुन

तपस्या स्त्री० तपश्चर्या

तपस्विन् वि० तप करनारु (२) विचारु, बापडु (३) पु० तपस्वी

तपस्विनी स्त्री० तप करती स्त्री (२) कंगाळ के दरिद्र स्त्री

तपःसमाधि पु० तपश्चर्या, तपश्चरण

तपःसुत पु० युधिष्ठिर

तपात्यय, तपांत पु० उनाळानो अत – चोमासानी शरूआत

तपोधन वि० तपरूपी धनवाळु, तपस्वी (२) पु० तपस्वी

तपोनिधि पुं० तपस्वी

तपोबल न० तपनु बळ

तपोमय वि० तप आचरतु (२) तपनु [बनेलु

तपोमूर्ति पु० तपस्वी (२) परमात्मा

तपोराशि पु० तपस्वी (२) विष्णु

तपोवन न० तप करवाने अनुकूळ एवु उपवन; तपस्वीओवाळु पवित्र वन

तपोवृद्ध वि० अत्यत तपस्वी

तप्त ('तप्'नु भू० कृ०) वि० तपेलु, तपावेलु (२) दु खी, सताप पामेल (३) आचरेलु (तप)

तम् ४ प० [ताम्यति] थाकी जवु (२) इच्छवु (३) पीडावु (मन के शरीरथी), झूरवु (४) श्वास रूधावो

तम एक तद्धित प्रत्यय, नाम, अने विशेषणने लागता 'सौथी श्रेष्ठ' एवो अर्थ बतावे (उदा० 'सुहृत्तम')

तमस् न० अधकार (२) मूर्च्छा, निद्रा (३) अज्ञान (४) क्रोध, मोह, दु ख, पाप, शोक (५) तमोगुण

तमस पु० अधकार (२) कूवो

तमस्काड पु०, न० भारे अधकार

तमस्तति स्त्री० अधकारनो फेलाव

तमस्विनी, तमा स्त्री० रात्री

तमाम् क्रियापद अने अव्ययने 'सौथी सारी रीते'–ए अर्थमा लागतो तद्धित प्रत्यय (उदा० 'पचतितमाम्')

तमाल पु० काळी छालवाळु एक वृक्ष

तमालपत्र न० तमालवृक्षनु पादडु (२) तमालफळना रसथी करातु तिलक

तमि स्त्री० रात्री, अधारी रात

तमिस्र वि० अधकारवाळु, काळु (२) न० अधकार (३) क्रोध; मोह

तमिस्रपक्ष पु० कृष्णपक्ष

तमिस्रा स्त्री० रात्री; अधारी रात्री

तमी स्त्री० जुओ 'तमि'

तमोगुण पु० अज्ञान-अधकार (प्रकृतिना सत्त्व, रजस्, तमस्-ए त्रण गुणोमानो एक) (साख्य०)

तमोनुद्(–द) पु० सूर्य (२) चद्र (३) अग्नि (४) दीप

तमोपह वि० अज्ञान–अधकार दूर करनारु (२) पु० सूर्य (३) चद्र

तमोमय वि० अधकारथी व्याप्त (२) अज्ञानमय

तमोरि पु० सूर्य (२) चद्र (३) अग्नि

तय् १ आ० जवु (२) रक्षण करवु

तय पु० रक्षण (२) रक्षक

तर एक तद्धित प्रत्यय, विशेषण अने नामने लागता 'बेमा वधु सारु' एवो अर्थ बतावे

तर वि० ओळगनारु, पार करनारु (२) चडियातु, जीतनारु (३) पु० ओळगवु–पार करवु ते (४) होडी, तरापो (५) मार्ग (६) नूर, भाडु

तरक्ष(–क्षु) पु० एक हिंसक जानवर, तरस (२) वाघ

तरण न० ओळगवु ते [स्त्री० होडी

तरणि पु० सूर्य (२) होडी, तरापो (३)

तरणितनया स्त्री० यमुना नदी

तरपण्य न० होडीनु नूर

तरल वि० चपळ; चचळ (२) अस्थिर, क्षणिक (३) चमकतु, प्रकाशित (४) प्रवाही (५) पु० कठीनो मध्य-मणि

तरलता स्त्री० चचळता, चपळता, अस्थिरता (२) चमक, तेज

तरवारि पु० तरवार

तरस् न० वेग (२) बळ, पराक्रम

तरस न० मास

तरस्विन् वि० झडपी, वेगीलु (२) बळवान, पराक्रमी

तरंग पु० मोजु (२) ग्रथनो भाग; अध्याय (३) घोडानु ठेकडा भरता चालवु ते

तरंगिणी स्त्री० नदी

तरंगित वि० मोजाथी ऊछळतु (२) चचळ (३) न० चकळ वकळ थवु ते

तरंड पु०, न०, **तरंडा, तरंडी** स्त्री० होडी, तरापो

तराम् क्रियापद अने अव्ययने लागता 'बेमाथी वधु सारी रीते'–ए अर्थमा लागतो तद्धित प्रत्यय [नौका

तरालु, तरांधु पु० सपाट तळियावाळी

तरि स्त्री० नौका, नाव

तरिणी स्त्री०, **तरित्र** न०, **तरित्री** स्त्री० नौका, होडी

तरी स्त्री० जुओ 'तरि'

तरीष पु० होडी; मछवो (२) समुद्र (३) प्रवीण अथवा योग्य पुरुष (४) स्वर्ग (५) काम, धधो (६) शोभा-शणगार

तरु पु० वृक्ष

तरुकोटर न० झाडनी बखोल

तरुखंड पु०, न० झाडनु झुड

तरुजीवन न० वृक्षनु मूळ

तरुण वि० जुवान (२) नवु, ताजु, कुमळु (३) तरतमा ज ऊगेलु (सूर्य इ०) (४) तरवराटवाळु, जीवतु (५) पु० युवक, जुवान माणस

तरुणिमन् पु० किशोरावस्था, जुवानी

तरुणी स्त्री० युवती, जुवान स्त्री

तरुतल न० झाडना मूळ पासेनी जगा

तरुमंडप पु० झाडोनी घटा–मडप

तर्क् १० उ० कल्पना करवी, अटकळ करवी, अनुमान करवु (२) विचारणा करवी (३) मानवु, धारवु (४) इरादो करवो (५) नक्की करवु; खातरी करवी

तर्क पु० कल्पना, अटकळ; अनुमान (२) विचारणा (३) न्यायशास्त्र (४) इरादो

तर्कविद्या स्त्री०, **तर्कशास्त्र** न० न्यायशास्त्र; 'लॉजिक'

तर्कित वि० तर्क करेलु, शका करेलु (२) चर्चेलु, विचारेलु

तर्कु पु०, स्त्री० रेंटियानी त्राक

तर्क्षु पु० तरस, एक हिंसक प्राणी

तर्ज् १ प०, १० उ० धमकी आपवी (२) ठपको आपवो (३) तिरस्कार करवो

तर्जन न०, **तर्जना** स्त्री० धमकी (२)

ठपको (३) शरमिंदु करवु ते; पाछळ पाडी देवु ते (४) गुस्सो
तर्जनी स्त्री० अगूठा पासेनी आगळी
तर्जित ('तर्ज्'नु भू०कृ०) वि० धमकावेलु (२) ठपको अपायेलु (३) शरमिंदु करायेलु (४) न० धमकी
तर्ण, तर्णक पु० वाछरडु
तर्पण न० तृप्त करवु ते (२) तृप्ति; सतोष (३) रोज करवाना पच महायज्ञोमानो एक – पितृयज्ञ
तर्पित वि० तृप्त थयेलु
तर्ष पु०, **तर्षण** न० तृषा, तरस (२) इच्छा [अभिलाषावाळु
तर्षित, तर्षुल वि० तरस्यु (२)
तर्ह् १ प० ईजा करवी (२) कतल करवु
तर्हि अ० ते समये, त्यारे (२) तो, ए बाबतमा
तल पु० न० तळियु, नीचेनो भाग (२) सपाटी (समासने छेडे घणी वार अर्थमा कशा फेरफार विना पण वपराय छे; उदा० 'भूतल') (३) झाड के कोई पण वस्तुनी नीचेनो भाग, तेनी छाया के आशरो (४) न० अरण्य, वन (५) हेतु, मूळ (६) तळाव (७) डाबा हाथे पहेरातु चामडानु मोजु
तलातल न० सप्त पाताळोमानु चोथु
तलिन वि० पातळु, सूक्ष्म (२) नीचेनु, तळेनु (३) न० बिछानु, पथारी
तलिनोदरी स्त्री० पातळी केडवाळी स्त्री
तल्प पु०,न० शय्या, पथारी (२) पत्नी (३) मिनारो (४) सरक्षक
तल्पल न० हाथीनी पीठनु हाडकु
तल्लिका स्त्री० कूची
तस्कर पु० चोर (२) (समासने अते) तुच्छ – तिरस्कार पात्र (उदा० 'जलदतस्कर') (३) कान
तस्करता स्त्री० चोरी (२) माभळवु ते
तस्थिवस् वि० ऊभेलु, स्थिर, स्थावर
तस्थु वि० स्थावर, स्थिर
तंच् ७ प० सकोचावु, संकुचित करवु
तंडुल पु० चोखा (२) छडेलु धान्य
तंति स्त्री० पक्ति, हार (२) दोरी, दोरडु (३) गाय (४) वणकर
तंतिपाल पु० गोवाळ [(४) सतति
तंतु पु० तातणो (२) दोरो (३) पाश
तंतुक पु० दोरो, दोरडु (समासने अते)
तंतुकीट पु० रेशमनो कीडो
तंतुनाभ पु० करोळियो
तंतुवाद्य न० तारवाळु वाद्य
तंतुवाय पु० करोळियो (२) वणकर
तंत्र् १० उ० शासन करवु, राज्य चलाववु (२) व्यवस्थित राखवु
तंत्र न० साळ (२) दोरो (३) हार, ओळ (४) मुख्य मुद्दो (५) सिद्धात (६) परिवार (७) शास्त्र (८) अधीनता (९) प्रकरण, भाग (१०) साधना के सिद्धि माटे मत्रतत्रादिना प्रयोग निरूपतो ग्रथ (११) कुळ, वश (१२) औषध, तेने लगतो मत्र (१३) व्यवस्था, प्रबध, नियमन (१४) सैन्य (१५) समूह (१६) वस्त्र (१७) कुटुबपोषण (१८) शासन, सत्ता (१९) कांई पण कार्य करवानो साचो क्रम के युक्ति
तंत्रक पु० धोया विनानु कोरु वस्त्र
तंत्रण न० कुटुबपोषण (२) शासन, नियत्रण, प्रबध
तंत्रि स्त्री० ततु, दोरो, तार (२) धनुष्यनी पणछ (३) वीणा
तंत्रिन् वि० ततुनु, ततुवाळु
तंत्रिल वि० राजकाजमा मग्न
तंत्री स्त्री० जुओ 'तत्रि'
तंद्रा स्त्री० आळस, सुस्ती, थाक (२) ऊघणशीपणु [थाकेलु
तंद्रालु वि० ऊघणशी, तद्रावाळु (२)
तंद्रि स्त्री० आळस, सुस्ती, घेन (२) थाक, मूर्छा

तंद्रित वि० जुओ 'तद्रालु'
तंद्री स्त्री० जुओ 'तद्रि'
ताजिक(-त) पु० ईराननो वतनी (२) उत्तम घोडानी एक जात
ताटस्थ्य न० तटस्थपणु
ताटंक पु० काने पहेरवानु मोटु एरिंग
ताड पु० प्रहार, मार (२) अवाज, नाद (३) घासनु पूळियु (४) पर्वत
ताडन न० मारवु ते, मार
ताडनी स्त्री० चाबुक
ताडि स्त्री० ताडवृक्ष (२) एक आभूषण
ताडित ('तड्'नु भू०कृ०) वि० मारेलु
ताडी स्त्री० जुओ 'ताडि'
ताड्यमान वि० मरातु, हणातु
तात पु० पिता (२) पुत्रो, शिष्यो वगेरेने सबोधवामा वपरातो प्रेमदर्शक शब्द (३) पूज्योने के वडीलोने लगाडातो समानसूचक शब्द
ताति पु० दीकरो, वशज (२) स्त्री० सतत चालु रहेवु ते, परपरा (उदा० 'अरिष्टताति')
तात्कालिक वि० एक ज समये थनारु-थयेलु (२) तरतनु ज, ते ज समयनु
तात्त्विक वि० वास्तविक, सत्य, खरु
तात्पर्य न० हेतु, मतलब (२) भावार्थ
तादर्थ्य न० समान इरादो के अर्थ होवो ते (२) -ने उद्देशीने होवु ते
तादात्म्य न० समानता, एकरूपता
तादृक्ष, तादृश् (-श) वि० तेना जेवु ज
तान पु० ततु, तातणो (२) आलाप (सगीत०) (३) न० विस्तार
तानव न० कृशता, अल्पता, तनुत्व
ताप पु० तडको, गरमी (२) पीडा; दु ख, सताप
तापत्य पु० कुरुराजा (२) अर्जुन
तापत्रय न० त्रण प्रकारनु दु ख (आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक)
तापन वि० प्रकाशित करतु (२) पु० सूर्य (३) ग्रीष्म ऋतु (४) न० सतापवु ते (५) मूझवण (नाटकमा)
तापनीय वि० सोनानु, सोनेरी
तापस वि० तप के तपस्वी सबधी (२) पु० तपस्वी
तापसक पु० खराब तपस्वी
तापसी स्त्री० तपस्विनी
तापस्य न० तपस्वीपणु
तापिच्छ पु० तमाल वृक्ष के तेनु फूल
तापित वि० सतप्त
तापिन् वि० ताप-पीडा उत्पन्न करतु
तापी स्त्री० तापी नदी (२) यमुना
ताम पु० ग्लानि के भय ऊभो करनार वस्तु (२) दोष (३) ग्लानि
तामर न० पाणी (२) घी
तामरस न० रातु कमळ
तामरसी स्त्री० कमळोवाळी तळावडी
तामस वि० अधकारमय (२) तमोगुणी (३) अज्ञानी (४) दुर्गुणी; दुष्ट
तामसिक वि० तमोगुण सबधी
तामिस्र पु० क्रोध, धिक्कार, द्वेष (२) एक नरक (३) कृष्णपक्ष
ताम्र वि० तावानु (२) तावाना रग जेवु लाल (३) न० तावु (४) तावाना जेवो लाल रग
ताम्रक पु० तावु
ताम्रकार, ताम्रकुट्ट पु० कसारो
ताम्रगर्भ न० मोरथूथु
ताम्रचूड पु० कूकडो
ताम्रपट्ट पु०, **ताम्रपत्र** न० तावानु पतरु (२) तेना परनो लेख
ताम्रपर्णी स्त्री० मलय पर्वतमाथी नीकळती एक नदी (मोती माटे मशहूर)
ताम्राक्ष पु० कागडो (२) कोयल
ताम्राश्मन् पु० पद्मराग मणि
ताम्रोपजीविन् पु० कसारो
तार वि० ऊचु, तीव्र (स्वर) (२) देदीप्यमान; चळकतु (३) पु० मोतीनी

स्वच्छता के पारदर्शकता (४) मोटु के सुदर मोती (५) ततु, तातणो (६) पु०,न० ग्रह अथवा तारो (७) आखनी कीकी (८) न० रूपु (९) बीजकोष (खास करीने कमळनो)

तारक वि० तारनारु, उद्धारनारु, रक्षण करनारु (२) पु० सुकानी (३) तारो (४) कीकी [कीकी

तारका स्त्री० तारो, खरतो तारो (२)

तारकिणी स्त्री० ताराओवाळी रात्रि

तारकित वि० ताराओथी भरेलु

तारण वि० उद्धारनारु, पार लई जनारु (२) न० जीतनार ते (३) उद्धारनार ते

तारणि (–णी) स्त्री० होडी, मछवो

तारतम्य न० तफावत, विशिष्टता (गुण, प्रमाण, मूल्य वगेरेनी सापेक्षता के चढता-ऊतरतापणु)

तारा स्त्री० ग्रह के तारो (२) कीकी

ताराधिप, तारापति पु० चद्र (२) वालि (३) बृहस्पति

तारापथ पु० आकाश, अतरीक्ष

तारामैत्रक न० आख मळता ज ऊभी थती प्रीति, आकस्मिक प्रेम

तारित वि० पार करेलु, उद्धारेलु

तारुण्य न० जुवानी

तारेय पु० बुधनो ग्रह (२) वालिनो ताराथी थयेलो पुत्र – अगद

तार्किक पु० नैयायिक (२) तत्त्ववेत्ता

तार्क्ष पु० कश्यप ऋषि [(४) पक्षी

तार्क्ष्य पु० गरुड (२) अरुण (३) रथ

तार्तीय, तार्तीयीक वि० त्रीजु

ताल पु० ताडवृक्ष (२) ताळी (३) फडफडाट (जेमके, हाथीना काननो) (४) ताल आपवो ते (संगीत०) (५) कामीजोड (६) ताळु (७) शकर (८) अगूठो अने वचली आगळी वच्चेनो टूको गाळो (९) ऊचाईनु अमुक माप

तालकेतु पु० भीष्म पितामह

तालपत्र न० ताडपत्र (लखवा माटे वपरातु) (२) काननु एक घरेणु

तालफल न० ताडफळ [एक ओजार

तालयंत्र न० ताळुकूची (२) वाढकापनु

तालवन न० ताडनु वन

तालवृंत न० पखो

तालव्य वि० तालुस्थानी

तालापचर, तालावचर पु० नर्तक, नट

तालिक पु० हाथनो खुल्लो पजो (२) ताळी (३) ग्रथ के हस्तप्रत बाधवानु ढाकण

ताली स्त्री० एक जातनो ताड (२) ताळी

तालीपट्ट न० एक जातनु कर्णभूषण

तालीवन न० ताडनु वन

तालु न० ताळवु

तालुस्थान वि० ताळवाना प्रदेशने लगतु – त्याथी उच्चारातु

तावक, तावकीन वि० तारु

तावत् वि० तेटलु, तेटलु मोटु, तेटलु वधारे (२) तमाम; समूचु (३) थोडुक, जरा (४) अ० प्रथम; पहेला (५) दरम्यान, त्या सुधी (६) हमणा ज, तरत ज (७) 'ज' (भार बताववा) (८) खरेखर; नक्की (९) सर्वथा, सपूर्णपणे

तावत्कृत्वस् अ० तेटली वार (गणतरी)

तावत्फल वि० एवा फळवाळु

तावन्मात्रम् अ० तेटलु ज

तावन्मात्रे अ० तेटला स्थळे

तांडव पु०, न० नृत्य, नर्तन (२) शकरनु भयकर नृत्य (३) नृत्यकळा

तांडवित वि० नचावेलु, नाचतु (२) जोसथी नाचता चक्राकारे फरतु

तांत ('तम्'नु भू०कृ०) वि० थाकेलु (२) पीडित (३) करमाई गयेलु

तांतव वि० ततु – तातणानु बनेलु (२) न० कातवु ते, वणवु ते

तान्त्रिक वि० तत्रशास्त्रने लगतु (२) तत्र के सिद्धातमा पारगत (३) पु० तत्रशास्त्रने माननार
तांबूल न० पान (२) सोपारी
तांबूलकरंक पु० पाननी पेटी
तांबूलवल्ली स्त्री० नागरवेल
तांबूलिक स्त्री० तबोळी, पान वेचनारो
तांबूली स्त्री० नागरवेल
तिक्त वि० कडवु (२) तीखु (३) सुवासित (४) पु० कडवो स्वाद
तिक्तगंधा स्त्री० राई
तिक्ततंडूला स्त्री० लीडी पीपर
तिग्म वि० तीक्ष्ण, उग्र
तिग्मकर, तिग्मतेजस्, तिग्मदीधिति, तिग्मद्युति, तिग्मरश्मि पु० सूर्य
तिग्मांशु पु० सूर्य (२) अग्नि
तिज् १ आ० सहन करवु (२) १० उ० के प्रेरक० धार काढवी, तीक्ष्ण करवु (३) उश्केरवु, क्षुब्ध करवु
तितिक्षा स्त्री० सहनशीलता, धैर्य
तितिक्षु वि० सहिष्णु, सहनशील (२) तजवानी इच्छावाळु
तितिर पु० तेतर पक्षी
तितीर्षा स्त्री० तरवानी इच्छा
तितीर्षु वि० तरवानी इच्छावाळु
तित्तिर, तित्तिरि पु० जुओ 'तितिर'
तिथि पु०,स्त्री० चाद्रमासनो कोई पण दिवस (दरेक पक्षमा पदर गणाय)
तिथिपत्री स्त्री० पचाग
तिथिप्रणी पु० चद्र
तिथी स्त्री० जुओ 'तिथि'
तिनिश पु० एक झाड (सीसमनी जातनु)
तिम् १ प० भीनु करवु (२) ४ प० भीनु थवु (३) शात थवु
तिमि पु० समुद्र (२) वहेल – मगर-मच्छ (३) माछलु
तिमिघातिन् पु० माछीमार
तिमित ('तिम्'नु भू०कृ०) वि० भीनु (२) निश्चल (३) शात
तिमिध्वज पु० शबर राक्षस
तिमिर वि० अधकारमय (२) पु०, न० अधकार (३) अधत्व
तिमिरारि पु० सूर्य
तिमिंगल पु० (तिमिने पण गळी जाय तेवो) मोटो मगरमच्छ
तिमी स्त्री० जुओ 'तिमि'
तिरश्ची स्त्री० पशुनी मादा
तिरश्चीन वि० त्रासु, तीरछु, वाकु
तिरस् अ० वाकी रीते (२) गुप्त रीते, अदृश्य होय तेम
तिरस्करिणी स्त्री० पडदो, बुरखो (२) अदृश्य थवानी विद्या
तिरस्कार पु० तुच्छकार, अनादर (२) ठपको; गाळ, निंदा (३) ढकाई जवु – अदृश्य थवु ते (४) छातीनु बख्तर
तिरस्कारिन् वि० पाछळ पाडी देतु; चडियातु
तिरस्कृ ८ उ० तिरस्कार करवो (२) ठपको आपवो, निंदवु (३) ढाकी देवु, सताडवु (४) चडियाता थवु (५) दूर करवु, खसेडी मूकवु
तिरस्कृत वि० तिरस्कार पामेलु (२) ठपको पामेलु (३) गुप्त, ढकायेलु (४) पाछळ पाडी देवायेलु
तिरस्कृति, तिरस्क्रिया स्त्री० जुओ 'तिरस्कार'
तिरोधा ३ उ० अदृश्य थवु; देखाता बध थवु (२) छुपाववु (३) चडियाता थवु, पाछळ पाडी देवु (४) हराववु, जीतवु (५) खसेडवु, दूर करवु
तिरोधान न० अदृश्य थवु ते (२) पडदो, ढाकण, बुरखो
तिरोभाव पु० अदृश्य थवु ते
तिरोभू १ प० अदृश्य थवु
तिरोहित वि० अदृश्य थयेलु (२) सताडेलु, ढकाई गयेलु
तिर्यक अ० त्रासु-तीरछु-वाकु होय तेम

तिर्यग्योनि स्त्री० पशुप्राणीनी सृष्टि
तिर्यच्, तिर्यंच वि० तीरछु, त्रासु (२) वाकु (३) पु०,न० पशु, जानवर (४) पखी, पक्षी
तिर्यंची स्त्री० पशुनी मादा
तिल पु० तलनो छोड, तल (२) कोई पण पदार्थनो सूक्ष्म कण (३) शरीर उपर तल जेवो डाघो
तिलक पु० सुदर फूलवाळु एक झाड (२) पु०, न० चाल्लो; टीलु (३) समासने अंते 'ते ते वर्गमा श्रेष्ठ – शणगाररूप' –एवा अर्थमा वपराय छे
तिलका स्त्री० एक जातनो हार
तिलकित वि० तिलक करेलु (२) शोभित
तिलखलि (–ली) स्त्री० तलनो खोळ
तिलपीड पु० घाणी फेरवनारो, घाची
तिलशः अ० तल जेवडा नाना अंशमा
तिलोत्तमा स्त्री० एक अप्सरा
तिलोदक न० पितृतर्पण अर्थे अपातु तिलयुक्त जल
तिष्ठद्गु अ० गायो (दोहवा माटे) साजे ऊभी रहे त्यारे (सध्या पछी कलाक जेटले समये)
तिष्य वि० पुष्य नक्षत्रमा जन्मेलु (२) भाग्यशाळी, शुभ (३) पु० पुष्य नक्षत्र (४) न० कळियुग
तितिड पु०, **तितिडिका, तितिडी, तितिलिका, तितिली** स्त्री० आमली
तीक्ष्ण वि० धारवाळु, तीव्र (२) तीखु (३) गरम (४) कठोर, कडक (५) तोछडु (६) होशियार, जोशीलु, उत्साही (७) पवित्र, धार्मिक, तपस्वी (८) हानिकारक, प्रतिकूळ
तीक्ष्णधार पु० तरवार
तीक्ष्णबुद्धि वि० होशियार, तीव्र बुद्धि- [वाळु
तीक्ष्णमार्ग पु० तरवार
तीक्ष्णांशु पु० सूर्य (२) अग्नि
तीर न० किनारो (२) कोर, कोराण
तीरित वि० फेंसलो आपेलु, चुकादो आपेलु (२) न० समाप्ति; परिपूर्णता
तीर्ण ('तॄ'नु भू०कृ०) वि० ओळगी गयेलु, तरी गयेलु (२) चढियातु (३) पराभव पामेलु (४) नाहेलु, नाहवा ऊतरेलु
तीर्थ वि० पवित्र (२) तारनारु (३) न० मार्ग, रस्तो; घाट, ओवारो (४) जळाशय (५) यात्रानु धाम, पुण्यक्षेत्र (खास करीने नदीने किनारे आवेलु) (६) उपाय, साधन (७) पूज्य के पवित्र माणस (८) आचार्य, गुरु (९) प्रधान, मत्री (१०) शिखामण; वोध (११) योग्य समय (१२) पु० शकराचार्ये सन्यासीओना स्थापेला दस वर्गोमानो एक (१३) सन्यासीना नाम पाछळ लगाडातो मानवाचक शब्द
तीर्थंकर पु० जैनधर्मनो प्रवर्तक (चोवीस छे) (२) साधु, तपस्वी (३) नवो सिद्धात प्रवर्तावनार आचार्य
तीर्थकाक पु० लोलुप मनुष्य (तीर्थ-स्थानना कागडा जेवो)
तीर्थचर्या स्त्री० तीर्थयात्रा
तीर्थध्वांक्ष पु० जुओ 'तीर्थकाक'
तीर्थभूत वि० पवित्र, पावनकारी
तीर्थयात्रा स्त्री० तीर्थनी यात्रा
तीर्थराज पु० प्रयागराज
तीर्थराजि (–जी) स्त्री० काशी
तीर्थवायस पु० जुओ 'तीर्थकाक'
तीर्थंकर पु० जुओ 'तीर्थंकर'
तीर्थिक पु० जात्राळु (२) तपस्वी ब्राह्मण (३) अन्य सप्रदायनो अनुयायी के आचार्य [करनारु)
तीर्थोदक न० तीर्थस्थाननु जळ (पवित्र
तीव्र वि० उष्ण, तीखु, कठोर; दु सह
तु अ० (वाक्यारभे कदी न आवे) पण; परतु (२) बीजी बाजु – ऊलटु

(३) हवे (४) पादपूरण अर्थे के भार दर्शाववा पण वपराय छे

तुक्खार, तुखार पु० विंध्यमा रहेती एक जाति (२) 'तुखार' घोडो

तुच्छ वि० तुच्छकारने पात्र, माल वगरनु (२) नजीवु, अल्प (३) कगाळ, दीन (४) त्यजायेलु

तुच्छदय वि० दयाहीन

तुद् ६ उ० मारवु, ईजा करवी (२) परोणाथी गोदाववु (३) पीडवु

तुद वि० पीडतु, दुःख देतु

तुन्नवाय पु० दरजी

तुम् ४,९ प० ईजा करवी, मारवु

तुमुल वि० घोघाटवाळु (२) भयकर; दारुण, उग्र (३) गूंचवायेलु, क्षुब्ध (४) पु०, न० घोघाट (५) युद्ध

तुर् स्त्री० वेग, झडप

तुरग पु० घोडो (२) मन; विचार

तुरगिन् पु० घोडेसवार

तुरंग, तुरंगक पु० घोडो

तुरंगकांता स्त्री० वडवा, घोडी

तुरंगवक्त्र पु० किनर

तुरंगसादिन्, तुरंगिन् पु० घोडेसवार

तुरायण वि० निःस्पृह, निरिच्छ (२) न० एक प्रकारनो यज्ञ (३) एक व्रत

तुरासाह् पु० इद्र

तुरि (–री) स्त्री० साळवीनो काठलो के कूचडो (२) पीछी (चित्रकारनी)

तुरीय वि० चोथु (२) चार भागनु बनेलु (३) न० चोथो भाग (४) तुर्य अवस्था (वेदात०)

तुर्य वि० चोथु (२) न० चोथो भाग (३) (जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति पछी) आत्मानी चोथी अवस्था – जेमा परमात्मा साथे अभेद थाय छे (वेदात०)

तुल् १ प०, १० उ० तोळवु, मापवु (२) (मनमा) तुलना करवी, विचारवु (३) सरखामणी करवी (४) ऊचु करवु (५) टेको करवो (६) शका करवी (७) कसोटी करवी

तुलन न० ऊचु करवु ते, ऊचकवु ते (२) तोळवु ते, वजन (३) तुलना, सरखामणी के परीक्षा करवी ते

तुलना स्त्री० सरखामणी (२) वजन करवु ते (३) ऊचकवु ते (४) मूल्य आकवु ते, परीक्षा – तपास करवी ते

तुलसी स्त्री० तुळसीनो छोड

तुला स्त्री० त्राजवु, त्राजवानी दाडी (२) वजन, माप (३) तोळवु ते (४) सादृश्य (५) तुला राशि

तुलाकोटि (–टी) स्त्री० नुपूर, कडलु

तुलादान न० पोताना वजन जेटलु सोनु-रूपु दानमा आपवु ते

तुलाधिरोहण न० समानता, सरखामणी

तुलापुरुष, तुलाभार पु० माणसना वजन जेटलु सोनु-रूपु (तुलादान माटे)

तुलामान न०, **तुलायष्टि** स्त्री० त्राजवानी दाडी

तुलित वि० तोळेलु (२) सरखु, समान

तुल्य वि० समान, सरखु (२) योग्य

तुल्यकक्ष वि० समान कोटीनु

तुल्यनक्तंदिन वि० रात अने दिवसनो फेर न समजतु (२) सरखा दिवस अने रातवाळु

तुल्यम् अ० एक साथे ज (२) समानपणे

तुवर वि० तूरु (२) पु० तुवेर

तुष् ४ प० सतुष्ट थवु, प्रसन्न थवु (२) शात थवु (३) सतोष आपवो

तुष पु० अनाजनु फोतरु, ढूणसु

तुषानल पु० फोतरानो अग्नि (२) ते वडे अपराधीने देहातदड देवानी सजा

तुषार वि० ठडु, शीतळ (२) पु० हिम, बरफ (३) झाकळ, ओस (४) ठडी

तुषारकिरण पु० चद्र

तुषारगौर वि० बरफ जेवु श्वेत (२) बरफ वडे श्वेत थयेलु (३) पु० कपूर

तुषाररश्मि पु० चद्र
तुषाराद्रि पु० हिमालय
तुषित पु० गणदेवतानो एक प्रकार
तुष्ट ('तुष्' नु भू० कृ०) वि० सतुष्ट
तुष्टि स्त्री० सतोष; प्रसन्नता (२) तृप्ति
तुहिन वि० शीतळ, ठडु (२) न० वरफ (३) झाकळ [वरफनो कण
तुहिनकण पु० झाकळनु बिंदु (२)
तुहिनद्युति, तुहिनरश्मि पु० चद्र
तुहिनाचल, तुहिनाद्रि पु० हिमालय
तुहिनाशु पु० चद्र
तुंग वि० ऊचु, उन्नत (२) मुख्य, प्रधान (३) उग्र (४) पु० पर्वत (५) ऊचाण, ऊचाई, टोच
तुंगिमन् पु० ऊचाई
तुंज पु० राक्षस
तुंड न० मुख, मो (२) चाच (३) सूढ
तुंद न० पेट, फाद
तुंदपरिमृज् (–ज) वि० पेट उपर हाथ फेरव्या करतु, एदी
तुंदि स्त्री०, न० पेट (२) डूटी
तुंदिक, तुंदित, तुंदिन्, तुंदिभ, तुंदिल वि० मोटा पेटवाळु, फादवाळु (२) भरेलु (३) मोटु
तुंदिलित वि० फादवाळु
तुंब पु० तुबडु
तुंबरु पु० एक गाधर्व
तुंबा स्त्री० लाबु तुबडु (२) ताबडी, दूधनु वासण
तुंबुरु पु० एक गाधर्व – तुंबरु
तूण पु० भाथो (वाणनो)
तूणमुख न० भाथानु मो
तूणि पु०, तूणी स्त्री०, तूणीर पु०, न० वाण राखवानो भाथो
तूर्णम् अ० वेगथी
तूर्य पु०, न० एक जातनु वाद्य
तूल पु०, न०, तूलक न० कपास
तूलकार्मुक न०, तूलचाप पु० पीजण
तूलदाहम् अ० रू वळे के वाळे तेम
तूलधनुष् न० पीजण
तूलपीठी, तूललासिका स्त्री० त्राक
तूलसेचन न० कातवु ते
तूला स्त्री० कपासनो छोड (२) दिवेट
तूलि स्त्री० चित्रकारनी पीछी
तूलिका स्त्री० चित्रकारनी पीछी (२) दिवेट (३) रजाई (४) मूस
तूली स्त्री० कपास (२) दिवेट (३) पीछी (वणकर के चित्रकारनी)
तूवर वि० जुओ 'तुवर'
तूष्णीक वि० चूप, मूंगु
तूष्णीम् अ० चूपकीथी, वोल्या विना
तूंबि (–बी) स्त्री० तुबडु
तृण न० घास, खड (२) तरणु (३) तुच्छ वस्तु (तरणा जेवी)
तृणगणना स्त्री० तृण समान गणवु ते
तृणद्रुम पु० ताड (२) खजूरी (३) नाळियेरी (४) सोपारीनु झाड
तृणधान्य न० वाव्या वगर ऊगतु धान्य
तृणावर्त पु० वटोळ [पाछु पाडी देवु
तृणीकृ ८ उ० तणखला जेवु गणवु (२)
तृतीय वि० त्रीजु [विभक्ति
तृतीया स्त्री० त्रीज (तिथि) (२) त्रीजी
तृद् १, ७ प० चीरवु, फाडवु (२) नाश करवु, वध करवो
तृप् ४, ५, ६ प० तृप्त थवु, सतुष्ट थवु (२) तृप्त करवु (३) १ प०, १० उ० तृप्त करवु, खुश करवु
तृप्त ('तृप्' नु भू० कृ०) वि० सतोष पामेलु, धरायेलु
तृप्ति स्त्री० तृप्त – सतुष्ट थवु ते
तृष् ४ प० तरस्या थवु (२) उत्सुक – आतुर थवु [आतुरता, तृष्णा
तृष् (–षा) स्त्री० तरस (२) अत्यत
तृषार्त वि० तरसथी पीडायेलु, तरस्यु
तृषित ('तृष्' नु भू० कृ०) वि० तरस्यु (२) अत्यत उत्सुक

तृष्णा स्त्री० तृषा (२) तीव्र इच्छा
तृष्णाक्षय पु० शांति; तृप्ति
तृह् ७ प०, १० उ०, ६ प० मारवु, मारी नाखवु
तृंह् ६ प० मारवु, मारी नाखवु
तृंहण न० मारी नाखवु ते
तॄ १ प० तरी जवु, ओळगवु (२) तरवु (पाणीमा)
तेज पु० तीव्रता (२) तीक्ष्णता, धार (३) जुस्सो (४) प्रकाश
तेजन न० वास (२) धार काढवी ते (३) प्रज्वलित करवु ते (४) शस्त्रनी अणी के धार
तेजनी स्त्री० सादडी (२) वाळनो गुच्छो
तेजस् न० तीक्ष्णता, धार (२) शगनी अणी (३) प्रकाश, उष्णता (४) तेजस्विता, शोभा, सौदर्य (५) जोम, उत्साह, पराक्रम (६) पच-महाभूतोमानु एक–अग्नि (७) वळ; प्रभाव (८) वीर्य (९) सत्त्व, अर्क (१०) अधीराई, क्रोध (११) सूर्य के तेवो बीजो आकाशनो तेजस्वी पदार्थ
तेजस्विन् वि० प्रकाशित (२) वळवान, पराक्रमी (३) भव्य
तेजोभग पु० अपमान, अनादर
तेजोमय वि० तेजस्वी, प्रकाशित (२) प्रतापी, जुस्सावाळु, शक्तिमान
तेजोमंडल न० तेजनु कूंडाळु (तेजस्वी पदार्थनी आसपासनु)
तेजोमूर्ति पु० सूर्य
तैक्ष्ण्य न० तीक्ष्णता
तैजस वि० तेजोमय, प्रकाशित (२) उग्र, वळवान, पराक्रमी
तैर्थिक वि० तीर्थ सबधी (२) पु० तपस्वी (३) नवो सिद्धात प्रतिपादन करनार (४) न० तीर्थोदक
तैल न० तेल
तैलाभ्यंग पु० शरीरे तेल चोळवु ते
तैलिक, तैलिन् पु० तेली, घाची
तोक न० बाळक
तोकवती स्त्री० बाळकोवाळी स्त्री
तोत्त्र न० परोणो (२) अकुश
तोद पु० दुःख, वेदना (२) हाकवु–गोदावव् ते
तोमर पु०, न० लोढानी गदा (२) भाला जेवु एक अस्त्र, ऊधा अर्धचद्रना फळावाळु बाण
तोय न० पाणी
तोयकर्मन् न० शरीरना जुदा जुदा भागोने पाणी वडे शुद्ध करवा ते (२) पितृओने जलाजलि अर्पवी ते
तोयक्रीडा स्त्री० जळक्रीडा
तोयद, तोयधर पु० मेघ, वादळ
तोयधि, तोयनिधि पु० महासागर
तोयमुच् पु० वादळ, मेघ
तोयराशि पु० महासागर (२) सरोवर
तोयवाह पु० वादळु
तोयव्यतिकर पु० नदीओनो सगम
तोरण पु०, न० कमानवाळो दरवाजो (२) शोभा माटे बनावेली कमान (३) न० गळु, गरदन
तोल पु०, न० माप, वजन (२) एक तोलो (वजन) [ऊचकवु ते
तोलन न० तोळवु–जोखवु ते (२)
तोष वि० सतोष आपनारु (२) पु० सतोष, तृप्ति [सतोष, तृप्ति
तोषण वि० सतोष आपनारु (२) न०
तोषित वि० सतुष्ट, प्रसन्न
तोषिन् वि० (समासने अते) –थी सतुष्ट थयेलु (२) सतोष आपनारु
त्मन् पु० पोतानी जात ('आत्मन्')
त्यक्त ('त्यज्'नु भू० कृ०) वि० त्यजेलु छोडेलु, त्यागेलु (२) आपी दीधेलु
त्यक्तजीवित, त्यक्तप्राण वि० जीवितनो त्याग करवा तत्पर थयेलु
त्यक्तलज्ज वि० निर्लज्ज, शरम वगरनुं

त्यज् १ प० तजवु, छोडी देवु (२) आपवु (३) –थी अळगा रहेवु – थवु
त्याग पु० तजवु ते, छोडी देवु ते (२) दानमा आपी देवु ते (३) औदार्य
त्यागिन् वि० त्याग करनारु (२) दानी (३) फळनी आशा त्यागनारु
त्याजित वि० त्याग करावायेलु (२) उपेक्षा करावायेलु (३) –विनानु थयेलु
त्याज्य वि० त्यागवा योग्य
त्रप् १ आ० शरमावु
त्रपा स्त्री० शरम, लज्जा
त्रपु न० कलाई (२) सीसु
त्रय वि० त्रण प्रकारनु (२) त्रण गणु (३) न० त्रणनो समूह
त्रयस् ('त्रि' नु प्रथमा ब० व०) वि० त्रण (सख्यावाचक शब्दना समासमा, उदा० 'त्रयोदश', 'त्रयश्चत्वारिंशत्)
त्रयी स्त्री० त्रण वेदोनो समूह (ऋग्-यजुर्- साम) (२) त्रणनो समूह
त्रयीधर्म पु० वेदोमा उपदेशेलो धर्म के कर्तव्य (यज्ञकर्म)
त्रस् १, ४ प० त्रासवु, कपवु, ध्रूजवु (२) बीवु, डरवु (३) –थी दूर नासवु
त्रस वि० जगम
त्रसरेणु पु० रजकण (सूर्यना हेरियामा ऊडतु देखातु)
त्रस्त ('त्रस्' नु भू० कृ०) वि० बीनेलु, त्रासेलु, भयभीत
त्रस्नु वि० भयभीत, भयथी ध्रूजतु
त्राण ('त्रै' नु भू० कृ०) वि० रक्षेलु रक्षित (२) न० रक्षण, बचाव (३) आधार, आश्रय
त्रात ('त्रै' नु भू० कृ०) वि० रक्षेलु (२) न० रक्षण
त्रातृ वि० रक्षण करनारु
त्रास पु० भय, डर
त्रासन वि० भयप्रद (२) न० भय पमाडवो ते (३) डरावavanु साधन
त्रासित वि० भय पमाडेलु, डरावेलु
त्रि वि० त्रण
त्रिक वि० तेवडु, त्रणगणु (२) न० त्रिपथ, त्रिभेटो (३) त्रिपुटी
त्रिकाल न० वर्तमान, भूत, भविष्य – ए त्रण काळ (२) प्रात काळ, मध्याह्न, सायकाळ –ए त्रण काळ
त्रिकालज्ञ, त्रिकालदर्शिन् वि० त्रणे काळना ज्ञानवाळु; सर्वज्ञ
त्रिकालम् अ० त्रण वखत, त्रण वार
त्रिकूट पु० लकानो एक पर्वत
त्रिकोण पु० त्रण खूणावाळी आकृति
त्रिगण पु० धर्म-अर्थ-काम –ए त्रण पुरुषार्थोनो समुदाय
त्रिगुण वि० (सत्त्व, रजस्, तमस् –ए) त्रण गुणवाळु (२) त्रण दोरानु बनेलु (३) त्रणगणु (४) पु० ब० व० त्रण गुणो (सत्त्व, रजस्, तमस्) (५) न० प्रकृति, प्रधान (सांख्य०)
त्रिचतुर वि० (ब० व०) त्रण के चार
त्रिजगत् न०, **त्रिजगती** स्त्री० स्वर्ग-मृत्यु-पाताळ –ए त्रण लोक
त्रिणता स्त्री० धनुष्य
त्रिणाक पु० स्वर्ग
त्रितय न० त्रणनो समुदाय
त्रिदश पु० देव
त्रिदशगोप पु० गोकळगाय, इन्द्रगोप
त्रिदशपति पु० इद्र
त्रिदशपुंगव पु० विष्णु
त्रिदशवधू, त्रिदशवनिता स्त्री० अप्सरा
त्रिदशवर्त्मन् न० आकाश
त्रिदशाचार्य पु० बृहस्पति
त्रिदशाधिप पु० इद्र
त्रिदशाधिपति पु० शिव
त्रिदशाध्यक्ष पु० विष्णु
त्रिदशायुध न० वज्र (२) मेघधनुष्य
त्रिदशालय, त्रिदशावास पु० स्वर्ग (२) मेरु (३) देव
त्रिदशांकुश न० वज्र
त्रिदशेंद्र पु० इद्र (२) शिव

त्रिदंड पु० सन्यासी धारण करे छे ते –त्रण दंडनो समुदाय (२) मन,वाणी अने कर्मनो निग्रह [सन्यासी

त्रिदंडिन् पु० त्रिदंड धारण करनार–

त्रिदिव न० स्वर्ग (२) अंतरीक्ष, आकाश

त्रिदिवगत वि० स्वर्गवासी – मृत

त्रिदिवालय पु० स्वर्ग

त्रिदिवौकस् पु० देव

त्रिदोष न० वात, पित्त तथा कफना प्रकोपथी थतो रोग – सनेपात

त्रिधा अ० त्रण प्रकारे, त्रण भागमा

त्रिधामन् पु० विष्णु (२) व्यास (३) शिव (४) अग्नि (५) मृत्यु (६) न० स्वर्ग

त्रिनयन, त्रिनेत्र पु० शंकर

त्रिपथ न० स्वर्ग, मृत्यु, पाताळ –ए त्रणनो समूह (२) त्रण रस्ता मळे तेवु स्थान – त्रिभेटो

त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी स्त्री० गंगानदी

त्रिपदिका स्त्री० त्रण पायावाळी बेठक के घोडी [(३) हाथीनो तंग

त्रिपदी स्त्री० त्रिपाई (२) गायत्री छंद

त्रिपाद् वि० त्रण पाद के चरणवाळु (२) त्रण चतुर्थांश (३) पु० विष्णु (वामनावतारमा)

त्रिपिटक न० सुत्त-विनय-अभिधम्म –ए त्रण प्रकारना बौद्ध धर्मग्रंथोनो समूह

त्रिपुर पु० त्रिपुरासुर (२) न० तेनी त्रण नगरीओनो समूह [शंकर

त्रिपुरघ्न, त्रिपुरदहन, त्रिपुरारि पु०

त्रिपुड्र, त्रिपुंड्रक पु० त्रण लीटीनु तिलक

त्रिफला स्त्री० हरडा, बहेडा अने आमळा –ए त्रणनो समुदाय

त्रिभंग न० त्रण ठेकाणेथी वळेलु होय एवी शरीरनी मुद्रा

त्रिभुज न० त्रिकोण

त्रिभुवन न० त्रण लोकनो समूह; त्रिलोक

त्रिभुवनगुरु पु० शिव

त्रिमार्गा स्त्री० गंगानदी

त्रिमूर्ति पु० ब्रह्मा, विष्णु, शंकर –ए त्रणेनु भेगु स्वरूप

त्रियामा स्त्री० रात्री

त्रिलिंग वि० नर-नारी-नान्यतर –ए त्रण जातिवाळु (विशेषण) (व्या०)

त्रिलोक न० त्रण लोकनो समूह (स्वर्ग-मृत्यु-पाताळ)

त्रिलोकनाथ पु० इंद्र (२) शिव

त्रिलोकरक्षिन् वि० त्रणे लोकनु रक्षण करनारु

त्रिलोकी स्त्री० जुओ 'त्रिलोक'

त्रिलोचन पु० त्रिनेत्र – शिव

त्रिवर्ग पु० धर्म, अर्थ अने काम –ए त्रण पुरुषार्थनो समूह (२) सत्त्व, रजस् अने तमस् –ए त्रण गुणनो समूह

त्रिवलि (–ली) स्त्री० पेट उपरना त्रण वाटा (सुंदर स्त्रीनु लक्षण)

त्रिवारम् अ० त्रण वार, त्रण वखत

त्रिविक्रम पु० विष्णु (वामनावतारमा)

त्रिविष्टप न० स्वर्ग [करीने करेलु

त्रिवृत् वि० त्रण गणु करेलु, त्रण भेगा

त्रिवृत्ति स्त्री० यज्ञ-अध्ययन-भिक्षा –ए त्रण वडे प्राप्त कराती आजीविका

त्रिवेणि (–णी) स्त्री० गंगा, यमुना अने सरस्वतीनु संगमस्थान

त्रिवेणु पु० सन्यासीनो त्रिदंड (२) रथनो धोरियो – ऊध

त्रिशंकु पु० एक सूर्यवंशी राजा – हरिश्चंद्रनो पिता

त्रिशिख न० त्रिशूळ

त्रिशूल न० त्रण अणीओवाळु एक आयुध

त्रिस् अ० त्रण वार, त्रण वखत

त्रिसरक न० त्रण वार मद्य पीवु ते

त्रिस्थली स्त्री० काशी, प्रयाग अने गया –ए त्रण धाम [त्रणनो समुदाय

त्रिस्थान न० माथु, गळु अने छाती –ए

त्रिस्रोतस् स्त्री० गंगानदी

द

द वि० (समासने छेडे) आपनारु, वधारनारु (उदा० 'जलद')

दक न० पाणी, उदक

दक्ष् १ प० वीजाने संतोष थाय तेम वर्तवु (२) १ आ० शक्तिमान थवु (३) जलदी करवु (४) वधवु (५) जवु (६) वध करवो
–प्रेरक० खुश करवु

दक्ष वि० प्रवीण, कुशळ (२) योग्य (३) सावध, तत्पर (४) पु० जमणी बाजु (५) एक प्रजापति (शिवना ससरा – सतीना पिता)

दक्षकन्या, दक्षतनया, दक्षसुता स्त्री० सती (बीजे जन्मे पार्वती) (२) नक्षत्र (२७ नक्षत्र-कन्याओ जेमने चंद्र साथे परणावी हती तेमानी दरेक)

दक्षिण वि० चतुर, कुशळ (२) जमणु, जमणी तरफ आवेलु (३) दक्षिण दिशा तरफनु (४) प्रमाणिक (५) योग्य (६) अनुकूळ, वश (७) सभ्य (८) पु० जमणो हाथ (९) अग्निहोत्रना त्रण अग्नि पैकी एक (१०) पु०, न० जमणी बाजु (११) दक्षिण दिशा

दक्षिणपश्चिमा स्त्री० नैर्ऋत्य खूणो

दक्षिणपूर्वा स्त्री० अग्नि खूणो

दक्षिणा अ० जमणी बाजुए (२) दक्षिण तरफ (३) स्त्री० धर्मकार्यमा ब्राह्मणने अपातु दान (४) प्रजापतिनी पुत्री अने यज्ञनी पत्नी (५) महेनतना बदलामा अपातो पुरस्कार (६) दक्षिण दिशा (७) दुधाळी गाय

दक्षिणाचार वि० प्रमाणिक, सदाचारी

दक्षिणापथ पु० दक्षिणदेश

दक्षिणायन न० सूर्यनु कर्क राशिमा जवु ते (२) न० कर्कसंक्रातिथी मकरसंक्राति सुधीनो समय

दक्षिणार्ह वि० दक्षिणा आपवा लायक

दक्षिणावर्त वि० डाबीथी माडीने जमणी बाजु तरफ वळतु (शंख) (२) पु० तेवो शंख (३) दक्षिणदेश

दक्षिणीय वि० दक्षिणाने योग्य

दक्षिणेतर वि० डाबु (हाथ के पग)

दक्षिणेन अ० जमणी बाजुए

दक्षिण्य वि० जुओ 'दक्षिणीय'

दग्ध ('दह्'नु भू० कृ०) वि० अग्निथी बळी गयेलु (२) शोकथी संतप्त (३) अशुभ (४) दुष्ट, निंद्य

दग्धजठर न० भूख्यु पेट, बळ्यु पेट

दघ्न वि० सुधी पहोंचतु, –जेटलु ऊंचु के ऊंडु –ए अर्थमा नामने छेडे जोडाय छे (उदा० 'उरुदघ्न')

दच्छद (दत् + छद) पु० होठ

दत् पु० ('दंत'ने बदले विकल्पे वपराय छे, एना पहेला पाच रूपो नथी) दांत

दत्त ('दा' नु भू० कृ०) वि० अपायेलु; भेट अपायेलु (२) मुकायेलु (३) रक्षायेलु (४) पु० दत्तकपुत्र (५) दत्तात्रेय (६) न० दान, बक्षिस

दत्तक पु० शास्त्रविधि प्रमाणे पोतानो करेलो (बीजानो) पुत्र

दत्तदृष्टि वि० तरफ जोतु

दत्तहस्त वि० टेका माटे हाथ आपेलु (२) मदद करायेलु

दत्तावधान वि० एकाग्र, लक्षवाळु

दत्ति स्त्री० बक्षिस, भेट

दद् १ आ० आपवु, बक्षिस आपवी

दद्रु पु० दादर; खरजवु (२) एक जातनो कोढ

दधि न० दही

दधीच पु० एक प्रख्यात ऋषि (वज्र बनाववा पोताना हाडका आपनार)
दधीचास्थि न० इन्द्रनु वज्र (२) हीरो
दधीचि पु० जुओ 'दधीच'
दधृष् वि० वेशरम; धृष्ट [माता
दनु स्त्री० कश्यपनी पत्नी – दानवोनी
दनुज पु० राक्षस; दानव
दनुजद्विष्, दनुजारि पु० देव
दभ्र वि० अल्प, थोडु
दम् ४ प० शात करवु, वश करवु (२) दमन करवु, निग्रह करवो (३) पळावु (पशुनु) (४) शात पडवु – थवु
दम पु० दमन करवु ते, निग्रह करवो ते (२) इद्रियनिग्रह (३) चित्तने पाप-प्रवृत्तिमाथी निवारवु ते
दमन वि० दमन करनारु, वश करनारु (२) इद्रियनिग्रही (३) न० इद्रिय-निग्रह, आत्मसयमन (४) शिक्षा, सजा (५) नाग, वध
दम्य वि० केळववा योग्य (काची उमरनु) (२) शिक्षा करवा योग्य (३) पु० वाछरडो; जुवान बळद (जेने केळववानी जरूर छे)
दय् १ आ० दया आववी, दया करवी (२) चाहवु (३) रक्षण करवु
दया स्त्री० कृपा, करुणा
दयालु वि० दयावाळु, कृपाळु
दयित वि० प्रिय (२) पु० पति, प्रेमी
दयिता स्त्री० पत्नी, प्रिया
दर वि० फाडनारु, चीरनारुं (समासने अते) (२) अल्प, थोडु (३) पु०, न० गुफा, वखोल; बाकु (४) शख (५) पु० बीक; डर
दरतिमिर न० बीकरूपी अधारु
दरम् अ० थोडुक, जराक
दरमथर वि० थोडुक धीमु
दरि स्त्री० गुफा, पर्वतनी वखोल
दरिद्र पु० गरीव, निर्धन
दरिद्रता स्त्री० निर्धनता; गरीबाई
दरिद्रा २ प० निर्धन – गरीब होवु (२) दु खी होवु (३) अल्प – आछु थवु
दरिभृत् पु० पर्वत
दरिमुख न० गुफा जेवु मो (२) मो जेवी गुफा (३) गुफानु मो
दरी स्त्री० जुओ 'दरि'
दर्दुर पु० देडको (२) मोरली – वासळी जेवु वाद्य (३) दक्षिणनो एक पर्वत
दर्दुरपुट पु० पावो वगेरे वाद्यनु मुख
दर्द्रु(–द्रू) पु० खरजवु, दादर
दर्प पु० अभिमान, गर्व
दर्पक पु० कामदेव (२) गर्व
दर्पकल वि० मधुर तथा अभिमानभर्या शब्दवाळु
दर्पण पु० अरीसो,
दर्पित वि० अभिमानी, गर्विष्ठ
दर्भ पु० कुश; दरभ
दर्भांकुर न० दर्भनी धारदार अणी
दर्वि(–र्वी) स्त्री० कडछी, पळी (२) सापनी फेलावेली फेण
दर्श पु० दृश्य, देखाव (घणु खरु समासमा उदा० 'दुर्दर्श') (२) अमावास्या (३) दर पडवे करातो यज्ञ – होम
दर्शक वि० दर्शावनारु; बतावनारु (२) जोतु, निहाळतु (३) समजावतुं
दर्शन वि० जोतु, निहाळतु (समासने अते) (२) दर्शावतु, शीखवतु (३) न० जोवु ते, निहाळवु ते (४) जाणवु – समजवु ते (५) नजर, दृष्टि (६) आख (७) तपास, निरीक्षण (८) दर्शाववु ते (९) देखावु ते, नजरे पडवु ते (१०) दर्शन करवा के मुलाकाते जवु ते (११) देखाव, स्वरूप (१२) तत्त्वज्ञाननो सिद्धात (१३) अभिप्राय, मत (१४) दर्पण
दर्शनपथ पु० नजर पहोची शके तेटलो प्रदेश, दष्टिमर्यादा

दर्शनीय वि० सुदर, जोवा योग्य (२) वताववा-रजू करवा योग्य (अदालतमा)
दर्शयितृ वि० दर्शावनारु (२) दोरनारु
दर्शं-दर्शम् अ० दरेक नजरे
दर्शित वि० दर्शावेलु, वतावेलु (२) समजावेलु, सावित करेलु
दर्शिन् वि० (समासने अते) जोतु; समजतु, नजर राखतु; दर्शावतु (२) —लेवानी ज पेरवी राखतु
दल् १ प० तोडवु, फोडवु; चीरवु; फाडवु (२) खीलवु, विकसवु
—प्रेरक० फाडवु, चीरवु (२) कापवु, टुकडा करवा (३) करमाई जवु
दल पु०, न० भाग, टुकडो (२) पाखडी; कुमळु पान [करवो ते
दलन न० भागवु-फोडवु-तोडवु-चूरो
दलित ('दल्'नु भू० कृ०) वि० भागेलु, तूटेलु, फोडेलु, फूटेलु (२) विकसेलु, खीलेलु (३) पग तळे रोळेलु
दव पु० जगल (२) दावानळ
दवथु पु० ताप (२) सताप, गुस्सो
दवदहन पु० दावानळ
दवाग्नि, दवानल पु० जुओ 'दवदहन'
दविष्ठ वि० सौथी वधारे दूर ('दूर'नु श्रेष्ठतात्मक रूप)
दवीयस् वि० वधारे दूर ('दूर' नु तुलनात्मक रूप)
दशक न० दशनो समूह
दशकंठ, दशकंधर, दशग्रीव पु० रावण
दशधा अ० दश प्रकारे, दश रीते
दशन् वि० दश, दस (सख्या)
दशन पु०, न० दात (२) करडवु ते
दशनच्छद पु० होठ
दशनपद न० दात वेठा होय तेनु चिह्न
दशनांशु पु० दातनो चळकाट
दशम वि० दशमु
दशमी स्त्री० दशमी तिथि (२) आयुष्यनो दशमो दशको (३) सैकाना छेल्ला दश वर्ष
दशमुख पु० रावण [चंद्रना पिता
दशरथ पु० अयोध्याना राजा, राम-
दशरूपक न० नाटकना दश प्रकार
दशवक्त्र, दशवदन पु० रावण
दशविध वि० दश प्रकारनु
दशशतनयन, दशशताक्ष पु० इद्र (हजार आखवाळो)
दशहरा स्त्री० गगानदी (दश पापनो नाश करनारी) (२) दशेरा
दशा स्त्री० वणेला ताकानी दशी —आतरी (२) वस्त्रनो छेडो (३) दिवेट (४) जीवननी अवस्था—स्थिति (बाल्य, यौवन इ०) (५) कर्मफळ रूपे प्राप्त थती स्थिति
दशानन पु० रावण
दशाभाग पु० खराव दशा
दशार्ध न० पाच (सख्या)
दशावताराः पु० व० व० विष्णुना दश अवतार (मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, वुद्ध अने कल्कि) [अत
दशांत पु० दिवेटनो छेडो (२) जीवननो
दशांतर न० जीवननी जुदी-जुदी (सुख-दु खवाळी) स्थिति
दशांश (दशन् + अश) पु० दशमो भाग
दशांश (दशा + अश) पु० खराव अवस्था, दु खना दहाडा
दशेरक पु० नानु ऊट (२) गधेडो
दष्ट ('दश्' नु भू० कृ०) वि० दशित; करडायेलु
दसेरक पु० जुओ 'दशेरक'
दस्यु पु० चोर (२) आवश्यक सस्कार न कर्या होवाथी वहिष्कृत माणस (३) राक्षस (४) शत्रु (५) जुलमी माणस
दह् १ प० वळवु, वाळवु (२) नाश करवो (३) दु ख देवु, पीडवु
दहन वि० वाळनारु (२) विनाशक (३) पु० अग्नि [पु० हृदयाकाश
दहर वि० नानु, सूक्ष्म, झीणु (२)

दंड् १० उ० शिक्षा करवी, दंड करवो

दंड पु०, न० दंडो, लाकडी, सोटी (२) राजदंड (३) ब्रह्मचारी के सन्यासीनो दंड (४) दांडो (कमळनो) (५) हाथो (छत्र इ० नो) (६) शिक्षा; सजा (७) शिक्षा तरीके लेवातुं नाणुं (८) सेना, लश्कर (९) नियमन, निग्रह (१०) राजनीतिशास्त्र

दंडक पु०, लाकडी, काठी (२) [illegible] स्तंभ (३) हार, ओळ

दंडक पु०, न०, दंडका स्त्री० नर्मदा अने गोदावरी नदी वच्चेनो प्रदेश

दंडकारण्य न० दंडक वन (दंडकारण्य)

दंडग्रहण न० सन्यास लेवो ते

दंडचक्र पु० सैन्यनो विभाग

दंडधर, दंडधार वि० शासन करनार; शिक्षा करनार (२) पु० राजा (३) सेनापति (४) यमराज

दंडन न० शिक्षा करवी ते, दंड करवो ते

दंडनायक पु० दंड करवानो अधिकार जेने छे ते (न्यायाधीश, फोजदार, राजा) (२) सेनापति

दंडनीति स्त्री० राजनीतिशास्त्र (२) न्याय आपवो ते (३) दुर्गा

दंडपाणि पु० यमराजा (२) पोलीस

दंडपाल, दंडपालक पु० मुख्य न्यायाधीश (फोजदारी गुनानो) (२) द्वारपाळ

दंडपाशक, दंडपाशिक पु० मुख्य पोलीस अधिकारी (२) फासी आपनारो

दंडमाणव, दंडमानव पु० दंडधारी सन्यासी के ब्रह्मचारी (२) आगेवान, नायक [(नमस्कार करवा ते)

दंडवत् अ० दंडनी पेठे लांबा पडीने

दंडाघात पु० लाकडीथी मारवु ते

दंडादंडि अ० सामसामा लाकडीए-लाकडीए (लडवु ते)

दंडाधिप पु० मुख्य न्यायाधीश (फोजदारी गुनानो)

दंडानीक न० [illegible]

दंडार पु० [illegible]

दंडिका स्त्री० [illegible]

दंडिन् वि० [illegible]

दंडोद्यम पु० [illegible]

दंत पु० [illegible]

दंतक पु० [illegible]

दंतकार पु० [illegible]

दंतकाष्ठ न० [illegible]

दंतच्छद पु० [illegible]

दंतधावन न० [illegible]

दंतपत्र [illegible]

दंतपत्रिका [illegible]

दंतपांचालिका [illegible]

दंतप्रक्षालन न० [illegible]

दंतवल्क, दंतवासस् न० होठ

दंतवीणा स्त्री० [illegible] (२) दांत वगाडवा ते (ठारथी)

दंतव्यापार पु० हाथीदांतनो धंधो

दंतालिका, दंतानी स्त्री० लगाम

दंतावल, दंतिन् पु० हाथी

दंतुर वि० लांबा अने बहार नीकळेला दांतवाळुं (२) ऊंचुं नीचुं (३) बहार ऊभा थया होय तेवुं, रोमांचित

दंतुरित वि० दांतवाळुं (२) ऊंचुं नीचुं; खरबचडुं (३) भरपूर थयेलुं; छवायेलुं

दंतोलूखलिक पु० भरडया–खांड्या विनानुं धान्य खानारो अरण्यवासी के तपस्वी

दंत्य वि० दंतस्थानी (वर्ण) (व्या०)

दंदशूक वि० करडकणु, झेरीलु (२) पु० साप (३) राक्षस
दंद्रम्यमाण वि० जुदे जुदे रस्ते जतु
दंपती पु० द्वि० व० पति अने पत्नी
दंभ पु० डोळ, ढोंग; छळकपट
दंभिन् पु० दंभी, ढोंगी
दंश् १ प० [दशति] डख मारवो; करडवु (२) १ प० [दशति], १० उ० [दशयति–ते] बोलवु (३) प्रकाशवु
दंश पु० डख मारवो ते; करडवु ते (२) सर्पदंश (३) दशनी जगा (४) दात (५) वगाई [(२) बख्तर
दंशन न० करडवु ते, डख मारवो ते
दंशित वि० करडायेलु; जेने कई करडयु होय तेवु (२) बख्तरधारी (३) तत्पर, सज्ज, एक लक्षवाळु
दंष्ट्रा स्त्री० मोटो दात (२) दाढ
दंष्ट्राल वि० मोटी दष्ट्रावाळु
दंष्ट्रिन् वि० जुओ 'दष्ट्राल' (२) पु० जगली डुक्कर (३) साप
दा १ प० [यच्छति] आपवु, आपी देवु (२) २ प० [दाति] कापवु तोडवु (३) ३ उ० [ददाति, दत्ते] आपवु (४) भेट आपवी (५) सोपवु (६) पाछु आपवु (७) लग्नमा आपवु (८) –देवु, रजा आपवी
दाक्षायण पु० दक्ष प्रजापतिनो वशज (२) न० सोनु, सोनानु घरेणु
दाक्षिणात्य वि० दक्षिण दिशानु, दक्षिण तरफ रहेलु (२) पु० दक्षिणनो वतनी
दाक्षिण्य न० कौशल्य, प्रवीणता (२) सभ्यता, विनय, शिष्टता (३) वधारे पडतो–देखावनो–विनय (रूठेली प्रेमिकाने मनाववा वतावातो) (४) दक्षिण दिशा सबधी
दाक्ष्य न० दक्षता, कुशळता, चतुराई (२) प्रमाणिकता (३) उद्यम, उद्योग
दाघ पु० बळवु ते, दाह
दाडिम, दाडिंव पु० दाडमडी (२) न० दाडम
दाढा स्त्री० दतूशळ; दाढ
दात ('दा' नु भू० कृ०) वि० कापेलु, लणेलु (२) ('दै' नु भू० कृ०) स्वच्छ करेलु, धोयेलु [आपवानु
दातव्य वि० आपवा योग्य (२) पाछु
दातृ वि० आपनारु; देनारु (२) दाता, उदार (३) पु० दाता
दात्यूह पु० एक पखी (कालकठक, जलकाक, चातक इ०)
दात्र न० दातरडा जेवु एक ओजार
दाद पु० बक्षिस, दान
दान न० देवु ते, आपवु ते (२) शीखववु ते (३) लग्नमा आपवु ते (४) बक्षिस, भेट (५) हाथीना गडस्थळमाथी झरतो मद (६) लाच
दानभिन्न वि० लाचथी फोडेलु
दानव पु० राक्षस; असुर
दानवर्षिन् पु० मदमा आवेलो हाथी
दानवारि न० मद (हाथीनो)
दानवारि पु० देव (दानवोनो दुश्मन)
दानवीर पु० मोटु दान करनार माणस
दानशील, दानशूर, दानशौंड वि० अत्यत उदार; दान करवामा तत्पर
दाम न० (समासने अते) हार, माळा
दामन् वि० दानशील
दामन् न० दोरडु; दामण (२) माळा
दामनी स्त्री० पगे बाधवानु दोरडु
दामांचल न० घोडाने पगे बाधवानु दोरडु
दामिनी स्त्री० वीजळी
दामोदर पु० श्रीकृष्ण
दाय पु० बक्षिस (२) भाग, हिस्सो
दायक वि० (समासने अते) आपनार (उदा० 'पिंडदायक')
दायभाग पु० वारसानी वहेंचणी
दायाद पु० वारसदार (२) सगो
दायिन् वि० (समासने अते) आपनारु; उत्पन्न करनारु (उदा० 'फलदायिन्')

दार पु० चीरो; फाट (२) पु० ब०व० जुओ 'दारा' [पु० पुत्र
दारक वि० चीरनारुं, फाडनारुं (२)
दारकर्मन् न० लग्न [बाळा; कन्या
दारकी स्त्री० पुत्री, दीकरी (२)
दारक्रिया स्त्री० लग्न
दारण न० फाडवुं-तोडवुं-चीरवुं ते
दारपरिग्रह पु० लग्न
दारव वि० लाकडानुं बनावेलुं
दारवी ('दारव' वि०नुं स्त्रीलिंग) लाकडानी बनावेली
दारसंग्रह पु० लग्न
दारा पु० ब० व० पत्नी
दारिका ('दारक' वि०नुं स्त्रीलिंग) फाडनारी, चीरनारी
दारिका स्त्री० पुत्री (२) फाट, चीरो
दारित वि० फाडेलुं, चीरेलुं
दारिद्र, दारिद्र्य न० निर्धनता, गरीबाई
दारु न० लाकडुं [सारथि
दारुक पु० देवदार वृक्ष (२) श्रीकृष्णनो
दारुकर्मन् न० जुओ 'दारुकृत्य'
दारुका स्त्री० लाकडानी पूतळी
दारुकृत्य न० लाकडानी कारीगरी (२) लाकडानुं बनाववानुं ते
दारुण वि० भयंकर (२) कठण, कठोर (३) निर्दय (४) तीव्र
दारोदर वि० जुगारने लगतुं
दार्ढ्य न० दृढता, मक्कमता (२) समर्थन करवुं ते (३) बळ, ताकात
दार्भ वि० दर्भनुं बनावेलुं
दार्शनिक पु० दर्शनशास्त्र जाणनारो
दाव पु० दावानळ, दव
दावाग्नि, दावानल पु० दावानळ; दव
दावित वि० दूभवेलुं, दुभायेलुं
दाश पु० माछीमार (२) दास, नोकर
दाशनंदिनी स्त्री० सत्यवती, व्यास-माता
दाशरथ, दाशरथि पु० दशरथनो पुत्र (२) राम
दाशार्ह पु० श्रीकृष्ण
दाशेयी स्त्री० जुओ 'दाशनंदिनी'
दाशेर पु० माछीमार (२) ऊंट
दाशेरक पु० माछीमार (२) [illegible]
दास पु० [illegible] (२) [illegible] [illegible]
दासानुदास पु० [illegible]
दासी स्त्री० नोकरडी (२) [illegible]
दासेय, दासेर पु० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible]
दास्य न० दासपणुं, गुलामी
दास्या:पुत्र पु० दासीनो पुत्र (गाळ)
दाह पु० बळवुं ते, बाळवुं ते (२) [illegible], [illegible], [illegible] (३) [illegible]
दाहक वि० बाळनार (२) पु० अग्नि
दाहन न० बाळवुं-बळावुं ते
दाहात्मक वि० [illegible]
दाहिन् वि० बाळनार (२) [illegible]
दाह्य वि० बळी शके एवुं (२) बाळी नाखवा योग्य
दाहिप पु० [illegible]
दांत ('दम्'नुं भू० कृ०) वि० जितेन्द्रिय, वश करेलुं, शांत (२) निग्रहवाळुं, संयमी
दांतिक वि० हाथीदांतनुं बनेलुं
दांपत्य न० पति-पत्नी-संबंध
दांभिक वि० दंभी, ढोंगी (२) पाखंडी
दिक्कन्या स्त्री० दिशाओनी कन्या
दिक्चक्र न० क्षितिज (२) सकल जगत
दिक्पाल पु० दिशानो रक्षक देव
दिगंत पु० दिशानो छेडो, क्षितिज
दिगंतर न० बीजी दिशा (२) अंतरिक्ष (३) बीजो देश, दूरनो देश
दिगंबर वि० दिशारूपी वस्त्रवाळु – नग्न (२) पु० नग्न भिक्षु (जैन के बौद्ध)
दिगीश, दिगीश्वर पु० जुओ 'दिक्पाल'
दिग्गज पु० दिशाओनुं रक्षण करनार आठ हाथीओमांनो दरेक

दिग्दर्शन न० मात्र दिशा दर्शाववी ते (२) सामान्य रूपरेखा
दिग्दंतिन् पु० जुओ 'दिग्गज'
दिग्दाह पु० दिशाओ बळती देखावी ते (एक उत्पात गणाय छे)
दिग्ध ('दिह्'नु भू० कृ०) वि० लेपायेलु, लेपेलु, खरडायेलु (२) झेर पायेलु, झेरी बनावेलू (३) पु० लेप (४) विष पायेलु बाण
दिग्नाग पु० जुओ 'दिग्गज'
दिग्भ्रम पु० दिशा न जडवी – समजावी ते
दिग्मात्र न० जुओ 'दिङ्मात्र'
दिग्मुख न० जुओ 'दिङ्मुख'
दिग्मोह न० जुओ 'दिग्भ्रम'
दिग्वधू स्त्री० दिशारूपी स्त्री
दिग्वासस् वि० जुओ 'दिगबर'
दिग्विजय पु० चारे दिशाओनो विजय; सपूर्ण विजय
दिङ्नाग पु० जुओ 'दिग्गज'
दिङ्मात्र न० मात्र सूचन – इशारो
दिङ्मुख न० आकाशनो भाग – दिशा
दिङ्मोह पु० जुओ 'दिग्भ्रम'
दित ('दो' नु भू० कृ०) वि० कापेलु; कपाई गयेलु, जुदु पडेलु
दिति स्त्री० कश्यप ऋषिनी स्त्री; दैत्योनी माता (२) कापवु ते
दितिज, दित्य पु० दैत्य, असुर, राक्षस
दित्सा स्त्री० आपवानी इच्छा
दिदृक्षा स्त्री० जोवानी इच्छा
दिदृक्षु वि० जोवानी इच्छावाळु
दिन पु०, न० दिवस (२) दिवस अने रात्रि (२४ कलाक)
दिनकर पु० सूर्य
दिनकर्तव्य न० जुओ 'दिनकृत्य'
दिनकर्तृ, दिनकृत् पु० सूर्य
दिनकृत्य न० रोज़ करवानु धर्मकर्म
दिनचर्या स्त्री० दररोजनो कार्यक्रम
दिनपाटिका स्त्री० रोजनी मजूरी; रोजी
दिनमणि पु० सूर्य
दिनमुख न० प्रात काळ
दिनागम पु० सवार, उष काळ
दिनात्यय पु० साज, सूर्यास्त
दिनादि, दिनारंभ पु० सवार; उष काळ
दिनावसान न०, **दिनांत** पु० सायकाळ
दिलीप पु० एक सूर्यवशी राजा; भगीरथनो पिता (२) (कालिदासना मते) रघुनो पिता
दिव् ४ प० [दिव्यति] प्रकाशवु, चळकवु (२) फेंकवु (बाण, अस्त्र) (३) पासाथी जुगार खेलवो (४) होडमा मूकवु [दिवस
दिव् स्त्री० स्वर्ग (२) आकाश (३)
दिव न० स्वर्ग (२) आकाश
दिवस पु०, न० दहाडो
दिवसकर, दिवसनाथ पु० सूर्य
दिवसमुख न० प्रात काळ, परोढ
दिवसविगम, दिवसांत पु० सायकाळ
दिवसेश्वर पु० सूर्य
दिवस्पति पु० इद्र
दिवा अ० दिवसे
दिवाकर पु० सूर्य
दिवातन वि० दिवसनु, दिवस सबधी
दिवानक्तम् अ० रातदिवस
दिवाभीत, दिवाभीति पु० घुवड
दिवावसान न० साज
दिवाशय वि० दिवसे सूनारु
दिवास्वप्न, दिवास्वाप पु० दिवसे सूवु ते
दिवांध वि० दिवसे आधळु (२) पु० घुवड
दिविषद्, दिविष्ठ, दिविसद्, दिविस्थ पु० स्वर्गमा रहेनार – देव
दिवोकस्, दिवौकस् (–स) पु० स्वर्गनो निवासी – देव
दिव्य वि० स्वर्गीय (२) दैवी, अलौकिक (३) तेजस्वी (४) कोई गुनेगार छे के नहि ते नक्की करवा अग्नि वगेरे द्वारा कराती परीक्षा

दिव्यचक्षुस् वि० दिव्यदृष्टिवाळु
दिव्यधुनी स्त्री० भागीरथी
दिव्यस्त्री, दिव्यांगना स्त्री० अप्सरा
दिश् ६ उ० बताववु, दर्शाववु (२) -ने हिस्सो नापवु, आपवु, सोंपवु (३) आज्ञा करवी, हुकम करवो (४) संमति आपवी, अनुज्ञा आपवी -प्रेरक० दर्शाववु, बताववु, [illegible] (२) हुकम करवो (३) [illegible]
दिश् स्त्री० दिशा (२) [illegible] (३) पद्धति (४) स्थळ, प्रदेश
दिशा स्त्री० पूर्व वगेरे चार दिशा-खूणामांनी दरेक (२) बाजु, तरफ
दिष्ट ('दिश्'नु भू० कृ०) वि० बतावायेलु, निर्देशायेलु, सूचवायेलु, वर्णवायेलु (२) विधाताए नियत करेलु (३) निश्चित थयेलु (४) न० दैव, नसीब (५) हुकम, आज्ञा
दिष्टभाव, दिष्टांत पु० मरण, मृत्यु
दिष्टि स्त्री० निर्देश, आज्ञा (२) सद्भाग्य (३) नसीब
दिष्टया अ० सारे नसीबे
दिष्टया वृध् '-ना बदल अभिनंदन घटे छे' (-ए अर्थमां)
दिह् २ उ० लेपवु, खरडवु
दी ४ आ० क्षीण थवु, नाश पामवु
दीक्ष् १ आ० दीक्षा लेवी के आपवी (२) समर्पित थवु -प्रेरक० प्रेरवु, फरज पाडवी
दीक्षा स्त्री० यज्ञ-व्रत-नियम माटे विधिपूर्वक संकल्प करवो ते (गुरु पासे) (२) यज्ञोपवीत धारण करवु ते (३) कोई कार्यने समर्पित थवु ते
दीक्षाश्रम पु० वानप्रस्थाश्रम
दीक्षांत पु० यज्ञने अंते दोषनिवारणार्थे करातो वधारानो यज्ञ (२) अवभृथस्नान
दीक्षित वि० दीक्षा लीधेलु (२) यज्ञ माटे संकल्प कर्यो होय तेवु (३) अभिषेक करेलु

दीधिति [illegible]
दीधितिमत् पु० सूर्य
दीन वि० [illegible]
दीनार पु० [illegible]
दीप् ४ आ० [illegible]
दीप पु० दीवो
दीपक वि० [illegible] (४) पु० दीवो
दीपन वि० [illegible]
दीपमाल, दीपभाजन न० कोडियु
दीपमाला स्त्री० दीपमाळ
दीपवर्ति स्त्री० दिवेट
दीपवृक्ष पु० दीवी (२) [illegible]
दीपशिखा स्त्री० दीवानी ज्योत
दीपालि (-ली), दीपावली स्त्री० दीवानी पंक्ति-हार (२) दिवाळी
दीपांकुर पु० दीवानी ज्योत
दीपिका स्त्री० दीवो, दीवी
दीपिन् वि० प्रदीप्त-उद्दीपित करनार (२) प्रकाशित, तेजस्वी
दीप्त ('दीप्'नु भू० कृ०) वि० सळगेलु; प्रदीप्त (२) प्रकाशित, तेजस्वी
दीप्ति स्त्री० तेज, प्रकाश (२) सौंदर्य; अतिशय कांति
दीप्र वि० तेजस्वी, प्रकाशित
दीर्घ वि० लांबु (२) विस्तृत (३) ऊंडु
दीर्घदर्शन, दीर्घदर्शिन्, दीर्घदृष्टि वि० दूरदर्शी, अगमचेतीवाळु, डाह्यु

दीर्घनिद्रा स्त्री० लाबी ऊंघ (२) मृत्यु
दीर्घबाहु वि० लाबा हाथवाळु
दीर्घम् अ० लाबा समय सुधी (२) ऊडे सुधी (३) दूर सुधी
दीर्घसत्र न० लाबो यज्ञ (२) पु० तेवो यज्ञ करनार
दीर्घसूत्र, दीर्घसूत्रिन् वि० नकामो लाबो विचार कर्या करनारु, नकामी वार लगाडनारु
दीर्घायु, दीर्घायुष्, दीर्घायुष्य वि० दीर्घायुषी – लाबु जीवनारु
दीर्घिका स्त्री० लाबु जळाशय (२) सामान्य कूवो के तळाव
दीर्ण ('दृ'नु भू० कृ०) वि० फाडेलु; चीरेलु (२) भयभीत, बीनेलु
दु ५ प० बाळी नाखवु (२) दुःख देवु; पीडवु (३) दुःखी थवु, दुःख पामवु –कर्मणि० पीडावु, दुःखी थवु
दुकूल न० रेशमी वस्त्र (२) बारीक वस्त्र
दुग्ध ('दुह्'नु भू० कृ०) वि० दोहेलु, दोही लीधेलु (२) न० दूध
दुग्धदा स्त्री० दूझणी गाय
दुघ वि० देनारु, आपनारु (समासने छेडे; उदा० 'कामदुघ') [पीडित
दुत ('दु'नु भू० कृ०) वि० दुःखित,
दुर् अ० 'दुस्' ने बदले स्वर तथा घोष व्यंजनो पूर्वे 'खराब', 'मुश्केल', 'कठण' –ए अर्थमा मुकाय छे
दुरक्षर न० अनिष्ट – अप्रिय शब्द
दुरतिक्रम वि० अजेय, अनुल्लघनीय, दुस्तर (२) अनिवार्य
दुरत्यय वि० दुर्जय (२) अगाध, दुष्प्राप
दुरधिग, दुरधिगम वि० दुष्प्राप, दुर्जय (२) दुर्ज्ञेय
दुरध्यय वि० शीखवु कठिन (२) दुष्प्राप
दुरध्यवसाय पु० मूर्खाईभरेली प्रवृत्ति
दुरध्व पु० दुर्गम मार्ग, खराब रस्तो
दुरन्वय वि० दुर्ज्ञेय (२) अयोग्य, अनुचित (३) मुश्केलीथी अनुसरी शकाय तेवु
दुरवाप वि० प्राप्त करवु मुश्केल
दुरंत वि० जेनो अत पामी शकाय नहि एवु (२) खराब अतवाळु (३) दुर्ज्ञेय (४) मुश्केलीथी ओळगी शकाय तेवु
दुराक्रम वि० अजेय (२) मुश्केलीथी पसार करी शकाय तेवु [करतु
दुराक्रंद वि० दयाजनक रीते विलाप
दुरागम पु० अन्यायथी करेली प्राप्ति
दुराग्रह पु० खोटो आग्रह, हठ
दुराचार वि० दुराचारी (२) दुर्वर्तनवाळु (३) पु० दुराचरण, दुष्टता
दुरात्मन् वि० दुष्ट, पापी
दुराधर्ष वि० जुओ 'दुर्धर्ष'
दुराधि पु० चिता (२) गुस्सो [तेवु
दुरानम वि० खेची के वाळी न शकाय
दुराप वि० दुष्प्राप (२) मुश्केलीथी पासे जई शकाय तेवु
दुरामोद पु० दुर्गंध
दुराराध्य वि० खुश के वश करवु मुश्केल
दुरारोह वि० चडवु मुश्केल
दुरालोक वि० जोवु मुश्केल (२) आजी नाखे तेवु
दुरावर, दुरावार वि० भरी के ढाकी न शकाय तेवु (२) रोकी के पूरी न शकाय तेवु [लिंगदेह
दुराशय वि० दुष्ट आशयवाळु (२) पु०
दुराशा स्त्री० दुष्ट आशा (२) व्यर्थ आशा [शकाय तेवु
दुरास वि० मुश्केलीथी सबध राखी
दुरासद वि० मुश्केलीथी पासे जवाय तेवु (२) दुष्प्राप (३) अजेय
दुरित न० पाप (२) सकट
दुरुक्त न०, **दुरुक्ति** स्त्री० कडवो बोल; खोटु लागे तेवी वाणी (२) निंदा, गाळ
दुरुत्तर वि० जवाब न आपी शकाय तेवु (२) पार न करी शकाय तेवु
दुरुदर्क वि० खराब परिणामवाळु (२) कशा परिणाम विनानु

दुरुदाहर वि० मुश्केलीथी उच्चाराय तेवु
दुरुद्वह वि० ऊचकी न शकाय तेवु
दुरुपसद, दुरुपस्थान वि० पासे न जई शकाय तेवु [तेवु
दुरूह वि० मुश्केलीथी तर्क करी शकाय
दुरोदर पु० जुगारी (२) पासानी पेटी (३) होड (४) न० जुगार
दुर्ग वि० दुर्गम (२) दुर्ज्ञेय (३) दुष्प्राप (४) खोटे मार्गे वळेलु (५) पु०, न० किल्लो (६) दुर्गम मार्ग (७) सकट; विपत्ति (८) पु० गूगळ
दुर्गत वि० कमनसीब (२) खराब अवस्थाने पामेलु, मुश्केलीमा आवी पडेलु (३) दरिद्र, कगाळ
दुर्गति स्त्री० दुर्दशा (२) दु खदारिद्रच
दुर्गम वि० मुश्केलीथी जई शकाय एवु (२) दुष्प्राप (३) दुर्बोध, दुर्ज्ञेय (४) न० दुर्गम स्थान [खराब गध
दुर्गंध वि० खराब गधवाळु (२) पु०
दुर्गा स्त्री० पार्वती
दुर्गानवमी स्त्री० कार्तिक सुद नोम
दुर्गुणित वि० बराबर अभ्यास न करेलु
दुर्ग्रह वि० दु साध्य, दुष्प्राप (२) मुश्केलीथी जिताय तेवु (३) दुर्गम; दुर्बोध (४) पु० हठ, जीद, धून
दुर्जन वि० दुष्ट, शठ (२) पु० दुष्ट माणस, शठ
दुर्जय वि० अजेय, अजित
दुर्जर वि० हमेशा जुवान रहेनारु (२) पची न शके तेवु (३) भोगवी न शकाय तेवु
दुर्जात वि० खराब कुळमा जन्मेलु; नीच (२) खराब स्वभावनु, दुष्ट (३) दु खी, कगाळ (४) खोटु; जूठु (५) न० सकट, विपत्ति, दुर्भाग्य
दुर्जाति वि० खराब – दुष्ट स्वभावनु (२) स्त्री० कमनसीबी
दुर्ज्ञेय वि० मुश्केलीथी जाणी शकाय एवु
दुर्णीत वि० असभ्य, अशिष्ट, धृष्ट (२) न० दुश्चरित्र, दुराचरण
दुर्दम, दुर्दमन, दुर्दम्य वि० दमन करवु मुश्केल, वश – तावे करवु मुश्केल
दुर्दर्श वि० मुश्केलीथी जोई शकाय एवु (२) आजी नाखे तेवु
दुर्दर्शन वि० कदरूपु
दुर्दशा स्त्री० खराब – माठी दशा
दुर्दांत वि० दमन न थई शके तेवु (२) गर्विष्ठ, तुमाखीवाळु
दुर्दिन न० खराब दिवस (२) वादळा के वरसादना तोफानवाळो दिवस (३) वरसाद (कोई पण वस्तुनो) (४) गाढ अधकार [दिवस
दुर्दिवस पु० अधारियो के वरसादवाळो
दुर्दृश वि० जोवु न गमे तेवु (२) मुश्केलीथी जोई शकाय तेवु
दुर्दैव न० दुर्भाग्य, कमनसीब
दुर्धर वि० निवारी –, रोकी न शकाय तेवु (२) असह्य (३) मुश्केलीथी सिद्ध करी शकाय तेवु (४) मुश्केलीथी याद करी शकाय तेवु
दुर्धर्ष वि० हुमलो न थई शके तेवु (२) पासे न जई शकाय तेवु (३) भयकर (४) तुमाखीभर्यु [उद्धतपणु
दुर्नय पु० खराब नीति (२) अनीति (३)
दुर्निग्रह वि० निग्रह न करी शकाय तेवु
दुर्निमित वि० बेदरकारीथी फावे तेम जमीन उपर मूकेलु – नाखेलु
दुर्निमित्त न० भावी अनिष्ट सूचवनारु खराब निमित्त (२) खोटु बहानु
दुर्निवार, दुर्निवार्य वि० निवारण न थई शके तेवु [कमनसीब
दुर्नीत न० दुष्ट वर्तन; दुराचरण (२)
दुर्नीति स्त्री० अव्यवस्था, अधेर
दुर्न्यस्त वि० खराब रीते गोठवेलु
दुर्बल वि० निर्बळ, अशक्त
दुर्बुद्धि, दुर्बुध वि० दुष्ट (२) मूर्ख

दुर्बोध वि० न समजी शकाय एवु
दुर्भग वि० कमनसीब (२) कदरूपु
दुर्भगा स्त्री० पतिने न गमती स्त्री (२) कर्कशा (३) विधवा
दुर्भर वि० मुश्केलीथी वहन करी शकाय तेवु, अति भारे लदायेलु (२) मुश्केलीथी पोषी शकाय – टेकवी शकाय तेवु [नसीब.
दुर्भाग्य वि० अभागी (२) न० कम-
दुर्भिक्ष न० दुष्काळ, दुकाळ
दुर्भिद, दुर्भेद, दुर्भेद्य वि० अभेद्य
दुर्मति वि० दुष्ट (२) मूर्ख, अज्ञ (३) स्त्री० दुष्ट बुद्धि, कुमति
दुर्मनस् वि० उदास, अस्वस्थ, व्याकुळ
दुर्मर न० खराब मोत, कुमरण
दुर्मंत्र पु०, **दुर्मंत्रणा** स्त्री०, **दुर्मंत्रित** न० खोटी सलाह, अवळी सलाह
दुर्मुख वि० कदरूपु (२) गाळ बोलनारु
दुर्मेधस् वि० मूर्ख, मदबुद्धिवाळु
दुर्योध, दुर्योधन वि० जेनी साथे लडवु कठिन छे तेवु, अजेय
दुर्योधन पु० धृतराष्ट्रनो मोटो पुत्र
दुर्लक्ष वि० जोवु मुश्केल (२) न० खोटु लक्ष – ध्येय
दुर्लभ वि० दुष्प्राप (२) विरल
दुर्ललित वि० अति लाडमा ऊछरेलु, तोफानी (२) हठीलु, जिद्दी (३) न० तोफान, अवळचडाई
दुर्वच वि० अवर्णनीय (२) कही न शकाय एवु (३) गाळ बोलतु, अपशब्द बोलतु (४) न० गाळ, अपशब्द
दुर्वचस् न० निंदा (२) अपशब्द
दुर्वर्ण पु० खराब रग (२) अशुद्धि (३) न० रूपु (४) एक जातनो कोढ
दुर्वसति स्त्री० दु खभर्यो रहेवास
दुर्वह वि० भारे, ऊचकी शकाय नहि तेवु
दुर्वाच्य न० गाळ, निंदा (२) अपकीर्ति (३) कठोर शब्द (४) माठा समाचार
दुर्वार, दुर्वारण वि० रोकी के निवारी न शकाय एवु
दुर्वासस् वि० योग्य पोशाक न पहेरेलु (२) नग्न (३) पु० एक ऋषि (महाक्रोधी तरीके जाणीता) [करनारु
दुर्विदग्ध वि० मूर्ख (२) खोटो गर्व
दुर्विध वि० कगाळ (२) दुष्ट, नीच
दुर्विनीत वि० खोटी केळवणी पामेलु, अशिष्ट, अविनयी (२) तोफानी, उद्धत (३) जक्की, जिद्दी
दुर्विपाक वि० माठु परिणाम लावनारु (२) पु० माठु परिणाम (३) पूर्वे करेल कर्मनु माठु फळ
दुर्विभाव्य वि० कल्पी के चितवी न शकाय तेवु [असभ्यता
दुर्विलसित न० तोफान, उद्धताई,
दुर्विलास पु० दुर्दैव, दुर्भाग्य
दुर्विष पु० शिव [खराब वर्तन
दुर्वृत्त वि० दुष्ट वर्तनवाळु (२) न०
दुर्व्यसन न० धून, लत (२) दुष्ट वलण
दुल् १० उ० आम तेम हलाववु, ऊचुनीचु करवु के उछाळवु
दुश्चर वि० आचरवु मुश्केल (२) पासे न जई शकाय तेवु (३) दुराचारी
दुश्चरित, दुश्चेष्टित वि० दुराचरणी (२) न० दुराचरण
दुष् ४ प० दूषित थवु, अपवित्र थवु (२) खराब थवु, गदु थवु (३) दोष करवो, पाप करवु, भूल करवी (४) व्यभिचारी बनवु, बेवफा नीवडवु –प्रेरक० गदु करवु, अपवित्र करवु; दूषित करवु (२) भ्रष्ट करवु (स्त्रीने) (३) दोष आरोपवो, निंदवु
दुष्कर वि० मुश्केलीथी थई शके एवु (२) न० कठिन कार्य, मुश्केली
दुष्कर्मन् वि० पापकर्म करनारु (२) न० दुष्कृत्य, पाप
दुष्काल पु० खराब समय (२) प्रलयनो समय (३) दुकाळ

दुष्कुल न० हीन कुळ, निंदित कुळ
दुष्कुह वि० अश्रद्धाळु, शंकाशील
दुष्कृत् पु० पापी
दुष्कृत न०, दुष्कृति स्त्री० पाप
दुष्कृतिन् पु० दुष्ट, पापी
दुष्ट ('दुष्' नु भू० कृ०) वि० गंदु, भ्रष्ट के दूषित थयेलु–करायेलु (२) अधम, दुराचरणी, हीन (३) न० दोष, अपराध, पाप
दुष्टता स्त्री०, दुष्टत्व न० दुष्टपणु
दुष्टात्मन् वि० दुष्ट अंतःकरणवाळु
दुष्ठु अ० खोटी रीते, खराब रीते
दुष्परिग्रह वि० पकडी राखवु मुश्केल
दुष्पूर वि० मुश्केलीथी भरी शकाय के संतोषी शकाय एवु
दुष्प्रणीत वि० खराब रीते गोठवेलु, खराब व्यवस्थावाळु (२) न० दुर्व्यवहार
दुष्प्रतर वि० तरवु के समजवु मुश्केल
दुष्प्रतीक वि० ओळखवु मुश्केल
दुष्प्रद वि० दुःख के शोक आपनारु
दुष्प्रधर्ष, दुष्प्रधृष्य वि० मुश्केलीथी आक्रमण थई शके एवु, अजेय
दुष्प्रवाद पु० आळ, बदगोई
दुष्प्रवृत्ति स्त्री० खोटा समाचार
दुष्प्रसह वि० असह्य (२) सामनो न थई शके तेवु
दुष्प्राप, दुष्प्रापण वि० दुर्लभ
दुष्यंत पु० एक चंद्रवंशी राजा, शकुंतलानो पति, भरतनो पिता
दुस् अ० नाम (अने कोई वार क्रियापद) पूर्वे 'दुष्ट' 'खराब', 'मुश्केल' वगेरे अर्थमा लागे छे
दुस्तर वि० मुश्केलीथी पार करी शकाय तेवु
दुस्सह वि० जुओ 'दुःसह'
दुह्, २ उ० दोहवु (२) दोही लेवु; –माथी खेंची लेवु (३) –माथी लाभ मेळववो (४) इच्छित वस्तु आपवी
दुहितृ स्त्री० दुहिता, पुत्री

दुंदुभ पु० एक जातनु नगारु (२) पाणीनो साप (३) एक जातनी माळा
दुंदुभि पु०, स्त्री० एक जातनु नगारु
दुंदुमायित न० नगारानो अवाज
दुःख वि० दुःखदायक, प्रतिकूळ, अप्रिय (२) मुश्केल, कठिन (३) न० पीडा, कष्ट (४) मुश्केली
दुःखकर वि० दुःखी करनारु
दुःखगत न० आपत्ति, विपत्ति
दुःखच्छेद्य वि० महामुश्केलीए कापी के दूर करी शकाय तेवु
दुःखदुःख न० महामुश्केली
दुःखम् अ० दुःखे, महामुश्केलीए
दुःखशील वि० झट उश्केराई जाय तेवु; चीडियु (२) राजी करवु मुश्केल (३) –नु दुःख सहन करवा टेवायेलु
दुःखाकृत वि० पीडित, दलित
दुःखान्वित, दुःखार्त वि० दुःखित, दुःखी
दुःखित वि० दुःख पामेलु, पीडायेलु (२) न० दुःख, पीडा
दुःखिन् वि० दुःखित (२) मुश्केल, दुःखदायक (३) कंगाळ
दुःखेन अ० महामुश्केलीथी
दुःशासन वि० जेना पर शासन चलाववु मुश्केल छे तेवु (२) पु० धृतराष्ट्रनो एक पुत्र
दुःषम, दुःसम वि० विषम (२) असमान (३) प्रतिकूळ, अनिष्ट, खराब
दुःसह वि० सहन न थई शके तेवु (२) सामनो न थई शके तेवु
दुःसंचार वि० जेमा थईने चालवु के पसार थवु मुश्केल छे तेवु
दुःसंधान, दुःसंधेय वि० साधी न शकाय तेवु (२) समाधान न थई शके तेवु
दुःसंस्थित वि० कदरूपु
दुःसाध (–ध्य) वि० मुश्केलीथी सिद्ध थई शके तेवु (२) मुश्केलीथी उपचार थई शके तेवु

दुःस्थ वि० दुखी, विपद्ग्रस्त (२) गरीब, कंगाळ (३) मूर्ख; अज्ञ

दुःस्थम् अ० अस्वस्थ-बीमार होय तेम

दुःस्थित वि० जुओ 'दुस्थ'

दुःस्मर वि० याद करवु मुश्केल के दुख-दायक होय तेवु

दू ४ आ० (केटलाकने मते 'दु'नु कर्मणि रूप) दुखी थवु; पीडा पामवी, खिन्न थवु (२) दुख आपवु

दूत, दूतक पु० दूत, कासद (२) पर-राज्यमा मोकलातो प्रतिनिधि

दूतिका, दूती स्त्री० सदेशो लई जनार स्त्री

दून ('दु'नु भू०कृ०) वि० दुखी, पीडित, खिन्न

दूर वि० आघेनु; लाबा समयनु, ऊचु (२) अतिशय, घणु (३) न० अतर, छेटु (स्थळ के काळमा)

दूरग, दूरगत वि० दूर गयेलु, दूरनु (२) खूब वधी गयेलु

दूरतः अ० दूरथी, छेटेथी, आघेथी

दूरदर्शिन् वि० दीर्घदृष्टिवाळु (२) पु० गीध (३) ज्ञातदर्शी ऋषि (४) विद्वान

दूरदृष्टि स्त्री० दीर्घदृष्टि (२) दूरनु जोवु ते

दूरपात, दूरपातिन् वि० दूरथी ताकीने [तोडी पाडे तेवु

दूरपात्र वि० पहोळा पात्रवाळु (नदी)

दूरपार वि० बहु पहोळु (नदी) (२) मुश्केलीथी पार करी शकाय तेवु

दूरबंधु वि० पत्नी अने सगासबधीथी अळगु पडेलु

दूरम् अ० आघे, छेटे

दूरवर्तिन् वि० दूर रहेलु, दूरनु

दूरविलंबिन् वि० खूब नीचु झझूमतु

दूरसंस्थ, दूरस्थित वि० दूर रहेलु

दूरात् अ० दूरथी, आघेथी (२) मोटा प्रमाणमा (३) दूरना समयथी

दूरापेत वि० तद्दन अप्रस्तुत

दूरारूढ वि० ऊचे चडेलु (२) खूब वधी गयेलु, तीव्र; जोरदार

दूरीकृत वि० दूर खसेडेलु (२) छूटु पाडेलु, लई लीधेलु (३) निवारेलु (४) पाछु पाडी दीधेलु

दूरे अ० आघु, छेटे

दूरेण अ० दूरथी (२) मोटा प्रमाणमा

दूरोत्सारित वि० दूर खसेडेलु

दूर्वा स्त्री० एक घास – दरो

दूष वि० (समासने छेडे) दोषित कर-नारु (उदा० 'पक्तिदूष')

दूषक वि० अपवित्र के भ्रष्ट करनारु (२) दोषजनक (३) उल्लघन करनारु (४) अधार्मिक, अपराधी

दूषण वि० दूषित करनारु, भ्रष्ट करनारु (२) न० दूषित करवु ते (३) उल्लघन करवु ते (४) दोष, कलक (५) (दलीलनु) खडन, विरोध करवो ते (६) दोष, अपराध, पाप

दूषित वि० दोषयुक्त करायेलु, अपवित्र के भ्रष्ट करायेलु (२) खडित, भग थयेलु के करायेलु (३) निंदित, कलकित (४) मेलु थयेलु, खरडायेलु (५) न० दोष, अपराध

दूष्य न० कपास (२) वस्त्र (३) तबू

दृ ६ आ० [द्रियते] (मुख्यत्वे 'आ' उपसर्ग साथे वपराय छे) जुओ 'आदृ'

दृक्पथ पु० दृष्टिमर्यादा

दृक्पात पु० दृष्टि – नजर नाखवी ते

दृक्संगम पु० नजरे जोवु तथा मळवु ते

दृग्गोचर वि० दृश्य, दृष्टिमर्यादामा आवतु (२) पु० दृष्टिनी मर्यादा – हद

दृढ वि० स्थिर, निश्चळ (२) मजबूत; सखत (३) अत्यत (४) निश्चित

दृढनाभ पु० अस्त्रने रोकवानो मत्र

दृढप्रत्यय पु० दृढ विश्वास – खातरी

दृढम् अ० सखत – मजबूत होय तेम (२) अत्यत, जोसथी (३) पूरेपूरु

दृढमन्यु वि० खूब गुस्सावाळु (२) खूब शोकवाळु

दृढसौहृद वि० दृढ मित्रतावाळु
दृढानुताप पु० भारे पस्तावो
दृति पु०, स्त्री० पाणीनी मसक, पखाल (२) लुहारनी धमण
दृप् ४ प० गर्व करवो, तुमाखी करवी (२) मदमत्त थवु (३) अति हर्षित थवु
दृप्त ('दृप्'नु भू०कृ०) वि० गर्विष्ठ, अभिमानी (२) प्रमत्त, मदमत्त
दृब्ध वि० बाधेलु, गूथेलु (२) वीनेलु
दृश् १ प० [पश्यति] जोवु, निहाळवु (२) मळवा जवु (३) समजवु, जाणवु (४) शोध करवी, तपासवु (५) अतर्दृष्टिथी जाणवु
दृश् वि० (समासने छेडे) जोनारु (२) जाणनारु (३) -ना जेवु देखातु (४) स्त्री० जोवु ते (५) दृष्टि, आख (६) ज्ञान, बुद्धि
दृश्य वि० जोवा योग्य, जोई शकाय तेवु (२) मनोहर, सुदर (३) न० दृश्य पदार्थ, दृश्य जगत
दृश्येतर वि० अदृश्य, न देखी शकाय तेवु
दृश्वन् वि० (समासने अते) जोनारु (२) समजनारु, परिचित
दृश्वर वि० जेणे जोयु छे तेवु
दृषत्सार न० लोढु
दृषद् स्त्री० शिला, पथ्थर
दृष्ट ('दृश्'नु भू०कृ०) वि० जोयेलु, निहाळेलु (२) जोई शकाय तेवु (३) जाणेलु, समजेलु (४) निश्चित
दृष्टदोष वि० दोषी, अपराधी
दृष्टव्यतिकर वि० दुर्भाग्य अनुभव्यु होय तेवु (२) अगाउथी अनिष्ट जोनारु
दृष्टात पु०, न० उदाहरण (२) शास्त्र
दृष्टि स्त्री० जोवु ते (२) नजर (३) आख (४) जाणवु ते, ज्ञान (५) मत, अभिप्राय, सिद्धात, वाद
दृष्टिक्षम वि० जोवालायक
दृष्टिक्षेप पु० नजर नाखवी ते
दृष्टिगत न० सिद्धात, मत
दृष्टिगोचर वि० जोई शकाय एवु, दृष्टिनी मर्यादामा आवी शके एवु
दृष्टिपथ पु० दृष्टिमर्यादा
दृष्टिपात पु० नजर करवी ते, जोवु ते
दृष्टिपूत वि० आखथी जोयेलु - तपासेलु (जेथी गदकीमा न पडाय)
दृष्टिप्रसाद पु० दृष्टि करवा जेटली कृपा
दृष्टिराग पु० आखमा प्रगट थतो भाव
दृष्टिविक्षेप पु० कटाक्ष
दृष्टिविभ्रम पु० प्रेमकटाक्ष
दृष्टिसभेद प० परस्पर नजर करवी ते
दॄ ४ प० [दीर्यति], ९ प० [दृणाति] फाडवु, चोरवु (२) टुकडा करवा —कर्मणि० फाटी जवु, चिराई जवु —प्रेरक० फाडवु, चीरवु, खोदवु (२) विखेरवु
देदीप्यमान वि० अति तेजस्वी, चकचकित
देय वि० आपवा योग्य (२) भेट आपवा योग्य (३) पाछु आपवानु (४) परणवा योग्य (५) न० दान, बक्षिस
देव वि० दिव्य (२) तेजस्वी (३) पु० सुर, देवता (४) इद्र, मेघ (५) राजा माटे वपरातु सबोधन (६) न० इद्रिय
देवकर्मन्, देवकार्य न० धर्मकृत्य, धार्मिक क्रिया (२) देवपूजा
देवकीनदन, देवकीसूनु पु० श्रीकृष्ण
देवकुल न० मदिर (२) देवोनो समूह
देवगति स्त्री० देवलोकनो मार्ग
देवगर्भ पु० जुओ 'हिरण्यगर्भ'
देवगुरु पु० देवोना पिता - कश्यप (२) देवोना गुरु - बृहस्पति
देवगृह न० मदिर (२) राजानो महेल
देवता स्त्री० देव (२) देवनी मूर्ति
देवतात्मन् वि० दिव्य प्रकृतिवाळु; दिव्य स्वरूपवाळु
देवदत्त वि० देवे आपेलु (२) देवने माटे अपायेलु (जमीन इ०) (३) पु०

अर्जुननो शख (४) 'अमुक' –'फलाणो' एवो अर्थ दर्शाववा माटे वपरातो शब्द
देवदारु पु०, न० देवदारनु वृक्ष
देवदुंदुभि पु० देवनु नगारु
देवदेव पु० शकर (२) विष्णु (३) ब्रह्मा (४) गणेश
देवधानी स्त्री० इद्रनी नगरी
देवन् पु० दियर
देवन पु० पासो (२) न० पासा खेलवा ते
देवनदी स्त्री० गगा (२) पवित्र नदी
देवना स्त्री० द्यूतक्रीडा
देवनागरी स्त्री० सस्कृत भाषा जेमा लखाय छे ते लिपि
देवनिकाय पु० स्वर्ग (२) देवोनो समूह
देवपथ पु० स्वर्ग, आकाश (२) आकाश-गगा
देवपादाः पु० ब० व० राजाने माटे वपरातु मानवाचक सबोधन
देवपुर न०, **देवपुरी** स्त्री० इद्रनी राज-धानी –अमरापुरी
देवप्रिय पु० शिव
देवभूमि स्त्री० स्वर्ग
देवभोग पु० देवोने लायक भोग
देवमणि पु० कौस्तुभ- मणि (२) सूर्य (३) घोडानी डोक उपरनो वाळनो भमरो
देवमातृक वि० वरसाद उपर आधार राखतु (नहेर वगेरे उपर नही)
देवयजन न० यज्ञ करायो होय ते भूमि
देवयज्ञ पु० पच महायज्ञोमानो एक
देवयज्य न०, **देवयज्या** स्त्री० देवनी मूर्तिनो वरघोडो
देवयान वि० मोक्ष आपनारु (२) न० विमान (३) पु० मोक्षनो मार्ग
देवयुग पु० सतयुग
देवर पु० दियर (२) पति
देवराज् (–ज) पु० देवोनो राजा इद्र
देवर्षि पु० नारद (२) (भृगु, अत्रि वगेरे) देवतुल्य ऋषि
देवलोक पु० स्वर्ग
देवस्व न० देवोनी मिलकत, धार्मिक [मिलकत
देवागार पु०, न० देवालय; मदिर
देवाधिप पु० इद्र
देवानांप्रिय पु० देवोने प्रिय (२) बकरो (३) मूर्ख, गमार (४) तपस्वी
देवायतन पु० मदिर, देवालय
देवारण्य न० देवोनु उपवन –नदनवन
देवारि पु० देवोनो शत्रु –दानव
देवालय पु० मदिर (२) स्वर्ग
देवांगना स्त्री० अप्सरा
देवितृ, देविन् पु० जुगारी
देवी स्त्री० देव स्त्री (२) देवता (दुर्गा, सरस्वती, सावित्री इ०) (३) राजानी पटराणी
देवृ पु० दियर
देश पु० स्थळ, स्थान (२) प्रदेश, विभाग, राष्ट्र (३) आखानो अश के बाजु (४) गोचर –क्षेत्र
देशक पु० राजा (२) आचार्य (३) भोमियो, मार्गदर्शक
देशकंटक पु० जाहेर आफत
देशकालज्ञ वि० योग्य स्थळ अने समय जाणनारु
देशधर्म पु० देशनो धर्म, स्थानिक [आचार
देशना स्त्री० सूचना, निर्देश, आज्ञा
देशरूप न० योग्यता, औचित्य
देशाचार पु० स्थानिक आचार-रिवाज
देशाटन न० प्रवास, मुसाफरी
देशांतर न० अन्य देश
देशिक वि० स्थानिक (२) पु० गुरु (३) प्रवासी (४) भोमियो
देशित वि० कहेलु, सूचवेलु आज्ञा करेलु (२) उपदेशेलु, सलाह आपेलु
देशीय वि० स्थानिक, प्रातिक (२) –नु रहेवासी (समासने छेडे, उदा० 'मगधदेशीय') (३) लगभग; नजीकनु (उदा० "अष्टादशवर्षदेशीया")

देश्य वि० सिद्ध करवा योग्य, बतावबा योग्य (२) स्थानिक, देशीय (३) लगभग, नजीकनु
देह पु०, न० शरीर
देहकर पु० पिता
देहकृत् पु० पंचमहाभूत (२) परमेश्वर (३) पिता
देहत्याग पु० मृत्यु (२) आपमेळे शरीर त्यागवु ते
देहधर्म पु० देहनो सहज धर्म (आहार, निद्रा इ०)
देहबद्ध वि० देहधारी; मूर्तिमंत
देहबंध पु० शरीरनु माळखु
देहभाज् वि० देहधारी
देहभृत् पु० प्राणी (खास करीने मनुष्य)
देहयात्रा स्त्री० मरण, मृत्यु (२) भोजन (३) आजीविका
देहयापन न० शरीरने पोषण आपवु ते
देहलि(-ली) स्त्री० उमरो
देहवत् पु० देहधारी, प्राणी
देहावरण न० वस्तर
देहांतर न० पुनर्जन्म, बीजो देह
देहिन् पु० देहधारी प्राणी, मनुष्य (२) जीवात्मा (शरीरमा बद्ध)
दै १ प० स्वच्छ करवु, शुद्ध करवु
दैतेय, दैत्य पु० दितिनो पुत्र – राक्षस
दैन, दैनदिन, दैनिक वि० दररोजनु
दैन्य न० दीनता, गरीबाई; कंगालियत
दैर्घ्य न० दीर्घता, लंबाई
दैव वि० देव संबंधी, दैवी (२) पु० आठ विवाह-प्रकारमानो एक (जेमा यज्ञ वखते, यज्ञ करावनार ऋत्विजने कन्या परणावी देवाय छे) (३) न० भाग्य, नसीब (४) धर्मकृत्य (५) देव (६) राजानु कर्तव्य
दैवगति स्त्री० नसीबनु फरवु ते
दैवचिंतक, दैवज्ञ पु० ज्योतिषी, जोषी
दैवत वि० दैवी, दिव्य (२) (समासने छेडे) –ने इष्टदेव मानतु (उदा० 'सूर्यदैवत') (३) न० देवता, देव (४) देवोनो समूह (५) मूर्ति
दैवतपति पु० इंद्र
दैवतस् अ० नसीबजोगे
दैवदत्त वि० सहज; कुदरती
दैवदुर्विपाक पु० नसीबनी प्रतिकूळता
दैवयोग पु० नसीबनो जोग
दैवरक्षित पु० देवोए रक्षेलु
दैवसिक वि० एक दिवसमा थतुं
दैवहत पु० दुर्भागी, कमनसीब
दैवाधीन, दैवायत्त वि० प्रारब्धने आधीन
दैवोपहत वि० कमनसीब, दुर्भागी
दैशिक वि० स्थानिक (२) राष्ट्रीय (३) ते स्थळनु परिचित (४) शीखवनारु; दर्शावनारु (५) पु० गुरु (६) भोमियो
दैहिक वि० देहने लगतु, देह संबंधी (२) देहमा थनारु – होनारु
दो ४ प० [द्यति] कापवु; भाग पाडवा (२) लणवु
दोग्धृ पु० दूध दोहनार (२) वाछरडु
दोर पु० दोरडु
दोर्दंड पु० दंड जेवो मजबूत हाथ
दोर्मूल न० बगल; काख
दोर्युद्ध न० हाथोहाथनी लडाई
दोल पु० हींचको, झूलो (२) हींचवु ते
दोला स्त्री० पालखी; डोळी (२) हींचको; झूलो (३) अनिश्चितता
दोलायमान वि० हींचतु, डोलतु (२) अनिश्चित, अस्थिर, संशयग्रस्त
दोलायुद्ध न० विजयनी अनिश्चितता-वाळु युद्ध
दोलारूढ वि० हींचका खातु (२) संशयग्रस्त; अनिश्चित
दोष पु० भूल; चूक (२) खोड, खामी (३) गुनो, वांक (४) लांछन (५) पाप (६) नुकसान, ईजा, बीमारी
दोषग्रस्त वि० अपराधी, गुनेगार (२) दोष के खामीथी भरेलु
दोषग्राहिन् वि० मात्र दोष जोनारु, दोषदृष्टिवाळु
दोषज्ञ वि० दोषने जाणनारु (२) पु० विद्वान माणस; डाह्यो माणस

दोषत्रय न० त्रिदोषनो व्याधि-सनेपात
दोषदृष्टि वि० मात्र दोष ज जोनारु
दोषन् पु०, न० हाथ (आना द्वितीया व०व० थी अगाऊनां पाच रूपो नथी)
दोषभाज् वि० दोषी; अपराधी (२) खोटु करनारु (३) दुष्ट, बदमाश
दोषल वि० दोषयुक्त, दूषित
दोषस् स्त्री० रात्री (२) न० अधकार
दोषा स्त्री० रात्रि, राततु अधारु (२) अ० राते, साजे
दोषाकर पु० चद्र
दोषातन वि० रातनु; राते थतु
दोषिक वि० दोषवाळु; खामीवाळु (२) पु० व्याधि, रोग
दोषिन् वि० दोषवाळु, खामीवाळु (२) दुष्ट, खराब [काढनारु
दोषैकदृश् वि० मात्र दोष ज जोनारु के
दोस् पु०, न० हाथ, बाहु (द्वितीया ब० व० पछी 'दोषन्' विकल्पे मुकाय छे)
दोह पु० दोहवु ते (२) दूध (३) दोहवानु पात्र
दोहद पु०, न० सगर्भा स्त्रीने थतो अभिलाष (२) तीव्र अभिलाष
दोहदिन् वि० तीव्र अभिलाषावाळु
दोहन वि० दूध आपनारु (२) इच्छित वस्तु आपनारु (३) न० दोहवु ते (४) दोहवानु वासण
दोहल पु० जुओ 'दोहद'
दोःशालिन् वि० मजबूत बाहुवाळु; बहादुर, लडायक
दोःस्थ पु० नोकर (२) सेवा (३) क्रीडा
दौत्य न० दूतनु कार्य, सदेशो लई जवो ते (२) सदेशो
दौरात्म्य न० दुरात्मापणु, दुष्टता
दौरुधरी स्त्री० चद्रनो गुरु अने शुक्र साथेनो योग (जन्मकाळ तरीके उत्तम गणाय छे)
दौर्गत्य न० दुर्गति; कगालियत
दौर्जन वि० दुर्जन सबधी
दौर्जन्य न० दुर्जनता
दौर्बल्य न० दुर्बळता, कगालपणु
दौर्मनस्य न० अणबनाव (२) खेद, बेचेनी, निराशा
दौर्मन्त्र्य न० खोटी सलाह
दौर्हृद न० वेर, अणबनाव (२) सगर्भावस्था (३) गर्भिणीनो दोहद
दौवारिक पु० द्वारपाळ
दौश्चर्य न० दुर्जनता; दुष्टता (२) दुष्कर्म
दौष्कुल, दौष्कुलेय, दौष्कुल्य वि० हलका कुळमा जन्मेलु
दौष्यंति पु० दुष्यतनो पुत्र
दौहदिक पु० वृक्षोनो-उपवनमो माळी (२) तीव्र अभिलाषा
दौहित्र पु० पुत्रीनो पुत्र, दोहितर
दौहित्री स्त्री० पुत्रीनी पुत्री
दौहृद न० जुओ 'दौर्हृद'
दौःशील्य न० दुःशीलता
दौःसाधिक पु० द्वारपाळ
द्यावापृथिव्यौ (द्यो+पृथिवी) स्त्री० द्वि० व० स्वर्ग अने पृथ्वी [धसवु
द्यु २ प० [द्यौति] हुमलो करवो, -तरफ
द्यु पु० अग्नि (२) न० दिवस (३) गगन (४) स्वर्ग (व्यजनथी शरू थता प्रत्ययो पहेला तथा समासमा 'दिव्' स्त्री० ने बदले 'द्यु' मुकाय छे)
द्युत् १ प० प्रकाशवु, शोभवु -प्रेरक० प्रकाशित करवु (२) समजाववु (३) स्पष्ट-प्रगट करवु
द्युति स्त्री० प्रकाश; काति (२) किरण
द्युमत् वि० तेजस्वी, कातिमान
द्युम्न न० तेज, काति (२) बळ, पराक्रम
द्युयोषित् स्त्री० अप्सरा
द्युसरित् स्त्री० गगा नदी
द्यूत पु०, न० जुगार, जूगटु
द्यूतकर पु० जुगारी
द्यूतक्रीडा स्त्री० जुगार खेलवो ते

द्यूतमंडल न० जुगार रमवानु स्थान (२) हारेलो जुगारी पैसा न चूकवे त्या सुधी तेनी आसपास आण तरीके दोरातु कूडाळु (जेने छोडी ते बहार जई शके नही)

द्यो स्त्री० स्वर्ग, अतरीक्ष (प्रथमा ए० व०नु रूप 'द्यौ' थाय, द्वद्वसमासमा 'द्यो'नु 'द्यावा' थाय छे)

द्योतक वि० प्रकाशित करनारु (२) समजावतु, प्रगट करतु, दर्शावतु

द्योतन वि० प्रकाशित, तेजस्वी

द्रढिमन् पु० दृढता (२) समर्थन

द्रम् १ प० चोतरफ दोडवु

द्रम्म न० एक जूनो सिक्को

द्रव वि० झमतु, टपकतु (२) प्रवाही ('कठिन'थी ऊलटु) (३) पु० ओगळवु ते (४) ओगळीने थयेलु प्रवाही (५) पलायन, नासी जवु ते

द्रविण न० धन, पैसो (२) सोनु (३) सामर्थ्य, बळ (४) वीर्य, पराक्रम

द्रविणाधिपति, द्रविणेश्वर पु० कुबेर

द्रविणोदय पु० धनप्राप्ति

द्रवीभू १ प० पीगळी जवु (दया इ०थी)

द्रवेतर वि० घन ('प्रवाही'थी ऊलटु)

द्रव्य न० वस्तु, पदार्थ (२) कोई वस्तुनो घटक पदार्थ (३) योग्य पात्र (४) धनसपत्ति, मालमिलकत

द्रष्टव्य वि० जोई शकाय तेवु (२) सुदर, मनोहर (३) जोवा, विचारवा के समजवा योग्य

द्रष्टुकाम वि० जोवानी इच्छावाळु

द्रष्टुमनस् वि० जोवानी मरजीवाळु

द्रष्टृ वि० जोनारु (२) साक्षात्कार करनारु (३) पु० न्यायाधीश

द्रह पु० ऊडु सरोवर (२) धरो

द्रा २ प० दोडी जवु (२) ऊघवु

द्राक् अ० जलदी; तरत ज

द्राक्षा स्त्री० द्राक्ष

द्राघ् १ आ० लाबु करवु, खेंचवु —प्रेरक० लाबु करवु (२) मोडु करवु

द्राघिष्ठ वि० अत्यत लाबु

द्राघीयस् वि० वधारे लाबु

द्रावण वि० नसाडी मूकनारु

द्रु १ प० दोडवु; वहेवु, नासी जवु (२) धसवु, हुमलो करवो (३) ओगळवु; द्रववु (४) ५ प० ईजा करवी

द्रु पु० वृक्ष (२) डाळ (३) पु०, न० लाकडु (४) गति

द्रुत ('द्रु'नु भू० कृ०) वि० शीघ्र; उतावळु (२) पीगळेलु, द्रवेलु (३) नासी गयेलु (४) न० नासी जवु ते

द्रुतम् अ० जलदीथी; त्वराथी

द्रुति स्त्री० द्रववु ते (२) नासी जवु ते

द्रुम पु० वृक्ष

द्रुमवासिन् पु० वानर

द्रुह् ४ प० द्रोह करवो; द्वेष करवो (२) ईजा के नुकसान करवा इच्छवु

द्रुह् वि० (समासने छेडे) ईजा करतु; शत्रुवट राखतु

द्रोग्धृ वि० द्रोह करनारु, हानि करनारु

द्रोण पु० मुशळधार वरसता मेघनो एक प्रकार (२) द्रोणाचार्य (३) पु०, न० एक माप (३२ शेर के ६४ शेरनु) (४) न० लाकडानु एक पात्र

द्रोणदुघा स्त्री० एक 'द्रोण' जेटलु (३२ के ६४ शेर) दूध आपती गाय

द्रोणमुख न० चारसो गामो वच्चेनु मुख्य शहेर [भारे वृष्टि

द्रोणवृष्टि स्त्री० (द्रोणमेघनी) अतिशय

द्रोणि (–णी) स्त्री० लाकडानु अडाकार पात्र (२) पर्वतो वच्चेनी खीण

द्रोह पु० द्वेष, अनिष्ट करवा इच्छवु ते (२) विश्वासघात; दगो (३) वड, वळवो (४) अपराध, गुनो

द्रोहिन् वि० द्रोह करनारु; अनिष्ट इच्छनारु (२) वड करनारु

द्रौणायन, द्रौणायनि, द्रौणि पु० द्रोणाचार्यनो पुत्र – अश्वत्थामा
द्रौपदी स्त्री० द्रुपद राजानी पुत्री – पांडवोनी पत्नी [राजानो पुत्र
द्रौपदेय पु० द्रौपदीनो पुत्र (२) द्रुपद
द्वय वि० बेवडु, बमणु (२) बे प्रकारनु (३) न० युग्म; जोडु
द्वयवादिन् वि० अप्रमाणिक (२) द्वैतवादी
द्वयस वि० '-सुधी पहोचतु', '-जेटलु ऊचु के ऊडु' (उदा० 'नितम्बद्वयस')
द्वंद्व पु० एक समास (व्या०) (२) न० जोडु, जोडकु (३) बे जण वच्चेनु युद्ध (४) एकात – गुप्त स्थळ
द्वंद्वचर पु० चक्रवाक पक्षी
द्वंद्वदुःख न० शीत-उष्ण, सुख-दुःख वगेरे द्वद्वोथी उत्पन्न थतु दुःख
द्वंद्वयुद्ध न० बे जण वच्चेनु युद्ध
द्वंद्वशस् अ० बब्बेना जोडकामा
द्वादशात्मन् पु० सूर्य
द्वापर पु०, न० चारमानो त्रीजो युग (२) बे टपकावाळी पासानी बाजु
द्वार् स्त्री० द्वार, दरवाजो; बारणु
द्वार न० बारणु (२) साधन, उपाय
द्वारका स्त्री० द्वारिका नगरी
द्वारप, द्वारपाल पु० दरवान
द्वारपिधान पु० बारणानो आगळो (२) समाप्ति, अंत
द्वारवती, द्वारावती स्त्री० द्वारिका
द्वारिक पु० द्वारपाळ
द्वारिका स्त्री० द्वारका
द्वारिन् पु० द्वारपाळ [वापरवु
द्वारेण ८ उ० माध्यम के साधन तरीके
द्वाःस्थ, द्वाःस्थित पु० द्वारपाळ
द्वि वि० (द्वि० व०) बे; बन्ने (पहेली विभ० 'द्वौ' पु०, 'द्वे' स्त्री०, 'द्वे' न०)
द्विक वि० बे सख्यावाळु (२) बीजु (३) बीजी वार बनतु (४) सेंकडे बे टका जेटलु (५) पु० कागडो (६) चक्रवाक
द्विगु वि० बे गायना बदलामा मळेलु (२) पु० एक समास (व्या०)
द्विगुण, द्विगुणित वि० बेवडु, बमणु
द्विज पु० ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य – ए त्रण वर्णोमानो दरेक (उपनयन-सस्कार रूप बीजो जन्म पामेलो) (२) ब्राह्मण (३) पक्षी, कोई पण अडज प्राणी (४) दात (५) तारो
द्विजपति, द्विजराज पु० चद्र
द्विजाति पु० जुओ 'द्विज'
द्विजिह्व पु० साप (२) चाडियो; चुगलीखोर [गरुडपक्षी
द्विजेश, द्विजेंद्र पु० चद्र (२) कपूर (३)
द्वितय वि० बने, बेउ (२) न० जोडकु
द्वितीय वि० बीजु (२) पु० पुत्र, दीकरो (कुटुबमा पिता पछी बीजु स्थान भोगवतो) (३) साथी, सोबती (समासने छेडे) (४) न० अर्धो भाग
द्वितीयम् अ० बीजी वार, फरीथी
द्वितीयवत् वि० सोबती – साथी साथेनु
द्वितीया स्त्री० बीज (तिथि) (२) पत्नी; सहचरी (३) बीजी विभक्ति (व्या०)
द्वितीयाश्रम पु० गृहस्थाश्रम
द्वित्र वि० (ब० व०) बे के त्रण
द्वित्व न० युगल, जोडु (२) द्वैत, बेपणु (३) बेवडायेलो प्रयोग (व्या०)
द्विध वि० बे प्रकारनु; बे रीतनु
द्विधा अ० बे प्रकारे, बे रीते
द्विप पु० हाथी
द्विपद् वि० बे पगवाळु
द्विपद पु० (बे पगवाळो) माणस
द्विपाद् वि० बे पगवाळु
द्विपाद पु० (बे पगवाळो) माणस (२) पक्षी (३) देव [वाघेला वाळ
द्विफालबद्ध पु० सेंथी पाडीने बे भागमा
द्विरद पु० हाथी [शरभ प्राणी
द्विरदाराति, द्विरदांतक पु० सिंह (२)
द्विरुक्ति स्त्री० पुनरुक्ति
द्विरेफ पु० भमरो (बे 'र्'-कार वाळो)

द्विलय पु० (गीत अने वाद्य पेठे) बे वस्तुओनु साम्य(२)बेवडो लय(?)
द्विवचन न० बेने माटेनु वचन(व्या०)
द्विवर्ग पु० बेनु जोडकु(प्रकृति-पुरुष; काम-क्रोध इ०)
द्विविध वि० बे प्रकारनु
द्विशस् अ० बब्बे, जोडकामा
द्विष् २ उ० द्वेष करवो, शत्रुता राखवी
द्विष् वि० द्वेषयुक्त, शत्रुतावाळु (२) पु० शत्रु, वेरी
द्विष, द्विषत् पु० शत्रु
द्विषतप वि० शत्रुने पीडनारु
द्विष्ट ('द्विष्'नु भू० कृ०) वि० धिक्कारायेलु(२)वेरी, विरोधी
द्विस् अ० बे वार
द्वीप पु०,न० बेट (२) आश्रय-स्थान (३) पृथ्वीनो खड (मेरुनी आसपास तेवा चार, सात, नव के तेर गणाय छे)
द्वीपवती स्त्री० पृथ्वी (२) नदी
द्वीपिन् पु० वाघ (२) चित्तो
द्वेधा अ० बे प्रकारे, बे वार
द्वेधाक्रिया स्त्री० बे भाग करवा ते
द्वेष पु० अणगमो, धिक्कार (२)शत्रुता
द्वेषण वि० द्वेष करनारु (२) पु० शत्रु (३) न० शत्रुता, वेर
द्वेषिन्, द्वेष्टृ पु० शत्रु, दुश्मन
द्वेष्य पु० द्वेष करवा योग्य(२)अप्रिय, प्रतिकूळ (३) पु० शत्रु
द्वैत न० बेपणु, भिन्नता
द्वैतवाद पु० प्रकृति-पुरुष, जीवात्मा-परमात्मा, ब्रह्म-जगत –ए जुदा भिन्न छे एम माननारो वाद
द्वैतीयीक वि० बीजु
द्वैध वि० बे प्रकारनु (२) बेवडु, बमणु (३) न० बे होवापणु (४) संशय, अनिश्चितता (५) विरोध, भेद
द्वैधीभाव पु० बे प्रकारे थवु – होवु ते (२) द्वित्व, भेदभाव (३) संशय, अनिश्चतता (४) वेर (५) प्रतिवाद (६)अदरथी एक अने बहारथी भिन्न एवो भेदभाव
द्वैधीभू १ प० बे भाग पडवा (२) अनिश्चितता थवी
द्वैपायन पु० वेदव्यास(द्वीपमा जन्मेला)
द्वैप्य वि० द्वीप सबधी, द्वीपमा रहेतु
द्वैमातुर पु० (बे माताओवाळु) गणपति (२) जरासध
द्वैमातृक वि० नदीना तेम ज वृष्टिना एम बे जळथी पाक थतो होय तेवो देश
द्वैरथ पु० प्रतियोद्धो, शत्रु(२)न० बे रथीओनु युद्ध
द्वैराज्य न० बे राजाओ वच्चे वहेचायेलो देश (२) सरहद
द्व्यर्थ वि० बे अर्थवाळु(२)बे हेतुओवाळु
द्व्यवर वि० ओछामा ओछु बे
द्व्याहिक वि० दर बे दिवसे आवतो

ध

धक् अ० (गुस्सानो उद्गार)
धगिति अ० एक क्षणमा; एकदम
धत्तूर पु० धतूरो
धन न० द्रव्य, मिलकत, खजानो(२) अत्यत मूल्यवान के प्रिय वस्तु
धनक पु० लोभ, तृष्णा
धनक्षय पु० धननो नाश
धनजात न० कुल मिलकत, समग्र कीमती वस्तुओ
धनद पु० कुबेर
धनदानुज पु० रावण (कुबेरनो नानो भाई)
धनधान्नि स्त्री० खजानो, तिजोरी
धनपति पु० कुबेर

धनप्रयोग पु० व्याजे पैसा धीरवानु काम
धनहर पु० वारस(२)चोर
धनहार्य वि० धनथी वश कराय तेवु
धनंजय पु० अर्जुन(२)अग्नि(३)विष्णु
धनाढ्य वि० धनवान, श्रीमत
धनाधिप, धनाधिपति, धनाध्यक्ष पुं० कुवेर (२) खजानची [करेलु
धनार्चित वि० कीमती वक्षिसोथी खुश
धनिक पु० धनवान, श्रीमत
धनिन् वि० श्रीमत, धनवाळु
धनु पु० धनुष्य
धनुर्गुण पु० धनुष्यनी दोरी
धनुर्ग्रह, धनुर्ग्राह पु० वाणावळी
धनुर्ज्या स्त्री० धनुष्यनी पणछ
धनुर्धर, धनुर्भृत् पु० बाणावळी
धनुर्विद्या स्त्री० वाणविद्या
धनुर्वेद पु० धनुर्विद्या (यजुर्वेदनो उपवेद)
धनुष्काड न० धनुष्य अने वाण
धनुष्खंड न० धनुष्यनो एक हिस्सो
धनुष्पाणि वि० हाथमा धनुष्यवाळु
धनुष्मत् पु० वाणावळी
धनुस् न० धनुष्य (वहुव्रीहि समासमा 'धन्वन्' थई जाय छे, उदा० 'अधिज्य-धन्वन्') (२) चार हाथनु माप
धनुःकांड न० धनुष्य अने वाण
धनुःखड न० धनुष्यनो खड–भाग
धनू स्त्री० धनुष्य
धनैषिन् वि० धननी इच्छा राखनारु (२) पु० पैसा मागतो लेणदार
धनोष्मन् पु० धननी गरमी–हूफ (२) धननी तीव्र इच्छा
धन्य वि० धन आपनारु (२) श्रीमत (३) सुखी, सद्भागी (४) उत्कृष्ट, सद्गुणी (५) आरोग्यप्रद, पथ्य (६) पु० सुखी के सद्भागी मनुष्य
धन्यवाद पु० आभार दर्शाववो ते (२) शावाशी आपवी ते
धन्वन् पु०, न० जळरहित प्रदेश, रण (२) धनुष्य (३) आकाश
धन्वंतरि पु० देवोनो वैद्य (समुद्रमथन वखते नीकळेला चौद रत्नोमानु एक)
धन्विन् पु० वाणावळी
धम् १ प० फूकवु
धमधमायते (भभूकवु, सळगवु)
धमनि (-नी) स्त्री० भूगळी, फूकणी (२) रक्तवाहिनी, नस
धम्मल, धम्मिल, धम्मिल्ल पु० पुष्प वगेरेथी गूथेलो अवोडो
धय वि० (वहुधा समासने छेडे) धावनारु, पीनारु (उदा० 'स्तनधय')
धर वि० (वहुधा समासने छेडे) पकडनारु, लई जनारु, धारण करनारु (उदा० 'गदाधर') (२) पु० पर्वत, पर्वत उपरनो किल्लो
धरण वि० धारण करनारु (२) न० धारण करवु ते (३) आश्रय, आधार
धरणि स्त्री० पृथ्वी (२) भूमि
धरणिधर पु० शेषनाग (२) पर्वत
धरणिधरसुता स्त्री० पार्वती
धरणिधृत् पु० पर्वत (२) शेषनाग
धरणिपुत्र पु० मगळ ग्रह (२) नरकासुर
धरणिभृत् पु० राजा (२) पर्वत (३) विष्णु (४) शेषनाग
धरणिसुत पु० जुओ 'धरणिपुत्र'
धरणी स्त्री० जुओ 'धरणि'
धरा स्त्री० पृथ्वी
धराधर पु० पर्वत (२) शेषनाग
धराधरेंद्र पु० हिमालय
धराधिप पु० राजा
धराभृत् पु० पर्वत
धरित्री स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन
धर्म पु० कर्तव्य, आचार (२) कोई पण वर्ग के पथनो परपरागत आचार (३) शास्त्रोक्त विधान–आचार (४) चार पुरुषार्थोमानो एक, पुण्य कर्म के तेनु उपार्जन (५) न्याय; प्रमाणिकता; नीति (६) निष्पक्षता (७) स्वभाव,

खासियत, विशिष्ट गुणधर्म (८) युधिष्ठिर (९) यम (१०) कुशळता, प्रवीणता [आचरवा इच्छतु
धर्मकाम पु० धर्मपरायण, धर्म ज
धर्मक्षेत्र न० भारतवर्ष (२) कुरुक्षेत्र
धर्मचक्र पु० धर्मनु चक्र–साम्राज्य
धर्मचर्या स्त्री० धर्माचरण
धर्मचारिणी स्त्री० पत्नी (२) सद्गुणी पत्नी [परायण
धर्मचारिन् वि० धर्म आचरनारु, धर्म-
धर्मज पु० युधिष्ठिर, धर्मराजानो पुत्र (२) कायदेसर जन्मेलो पुत्र
धर्मज्ञ वि० धर्म जाणनारु (२) शास्त्र अथवा कायदो जाणनारु [पत्नी
धर्मदाराः पु०ब०व० कायदेसर परणेली
धर्मद्रुह् वि० धर्मनु उल्लघन करनारु
धर्मध्वज, धर्मध्वजिन् पु० धर्मनो ढोग करनार, पाखडी [मालिक
धर्मनाथ पु० कायदेसर सरक्षक के
धर्मनिष्ठ वि० धर्मपरायण
धर्मपत्नी स्त्री० शास्त्रविधि प्रमाणे परणेली स्त्री
धर्मपथ पु० धर्मनो मार्ग
धर्मपर वि० धर्मपरायण
धर्मपाल पु० दड, शिक्षा (ला०)
धर्मपुत्र पु० कायदेसर पुत्र (२) धार्मिक क्रियाओ करवा माटे स्वीकारेलो पुत्र (३) युधिष्ठिर [वर्तनारु
धर्मप्रधान वि० धर्मने मुख्य मानीने
धर्मप्रवचन न० धर्मशास्त्र (२) कायदो समजाववो ते
धर्मप्रेक्ष्य वि० धर्माचरणी
धर्मबाह्य पु० धर्मथी विरुद्ध
धर्मभगिनी स्त्री० कायदेसर बहेन (२) गुरुकन्या (३) मानी लीधेली बहेन (४) समान धर्म आचरती होवाथी बहेन
धर्मभागिनी स्त्री० सद्गुणी पत्नी
धर्मभाणक पु० धर्मग्रथोनी कथा कहेनार
धर्मभृत् पु० राजा (२) धर्मपरायण, सदाचरणी माणस
धर्ममहामात्र पु० धार्मिक बाबतोनु निरीक्षण करनार अधिकारी
धर्ममूल न० वेद
धर्मयुग न० कृतयुग, सत्ययुग
धर्मरति वि० धर्माचरणमा प्रीतिवाळु
धर्मराज् पु० यम
धर्मराज वि० धर्मशील (२) पु० यम (३) युधिष्ठिर (४) राजा (५) जिन
धर्मराजन् पु० युधिष्ठिर
धर्मलक्षण न० वेद
धर्मलोप पु० अधर्म (२) कर्तव्यनु उल्लघन
धर्मवाद पु० धर्म के न्याय अगे वादविवाद
धर्मविप्लव पु० धर्मनु उल्लघन
धर्मवृद्ध वि० धर्मनी बाबतमा मोटुं
धर्मशाला स्त्री० धर्मशाळा (२) न्यायमदिर, कचेरी
धर्मशासन, धर्मशास्त्र न० कायदानो ग्रथ
धर्मसेतु पु० धर्म के न्यायनो आधार (२) शिव
धर्माक्षराणि न० ब० व० धर्मना सूत्रो
धर्माचार्य पु० धर्मगुरु
धर्मात्मन् वि० न्यायी, पुण्यशाळी
धर्माधिकरण न० न्यायमदिर (२) न्याय चूकववो ते (३) पु० न्यायाधीश
धर्माधिकार पु० धर्म अगेनी देखरेख; धार्मिक कार्योनी देखरेख (२) न्याय चूकववो ते (३) न्यायाधीशनो होद्दो
धर्माधिकारिन् पु० न्यायाधीश
धर्माधिष्ठान न० न्यायनी अदालत
धर्माध्यक्ष पु० न्यायाधीश (२) विष्णु
धर्मापेत वि० धर्मविहीन, अधर्मी
धर्मारण्य न० तपोवन [शाळी
धर्माश्रय, धर्माश्रित वि० धर्मी, पुण्य-
धर्मासन न० न्यायासन
धर्मिन् वि० धार्मिक, धर्मने अनुसरतु (२) सद्गुणी (३) -ना गुणधर्मवाळु (समासने अते)

धर्मिष्ठ वि० अत्यंत धर्मनिष्ठ
धर्मीपुत्र पु० नट
धर्मेंद्र पु० यमराज
धर्मोत्तर वि० न्यायी, निष्पक्ष (२) सद्‌गुणी, धर्मपरायण
धर्मोपचायिन् वि० धर्मपरायण; धर्मिष्ठ
धर्म्य वि० कायदेसर (२) धार्मिक, शास्त्रोक्त (३) अमुक गुणधर्मवाळु
धर्ष पु० गर्व, उद्धताई; धृष्टता (२) अधीरता, असहिष्णुता (३) बळात्कार (४) ईजा, नुकसान
धर्षण न० उद्धतता, अभिमान (२) अपमान, अनादर (३) हुमलो; बळात्कार (४) पराभव
धर्षित वि० बळात्कार करायेलु (२) पराभव पमाडेलु (३) अनादर करायेलु, अपमानित
धव पु० हालवु-ध्रूजवु-कंपवु ते (२) पुरुष (३) पति (४) मालिक (५) शठ; ठग (६) एक जातनु वृक्ष-धावडो
धवल वि० धोळु (२) सुंदर (३) निर्मळ (४) पु० श्वेत रंग (५) उत्तम सांढ
धवलपक्ष पु० शुक्लपक्ष (२) हंस
धवला स्त्री० श्वेत मुखवाळी स्त्री (२) धोळी गाय (३) बगली
धवलित वि० धोळु करेलु (२) धोळेलु
धवलिमन् पु० धोळापणु, धोळो रंग (२) फीकाश
धा ३ उ० मूकवु, स्थापवु; उपर मूकवु (२) -तरफ एकाग्र करवु-वाळवु (मन-विचार) (३) आपी देवु; बक्षिस करवु (४) पकडवु, लेवु (५) धारण करवु; समाववु (६) पहेरवु (७) दर्शाववु; देखाव धारण करवो (८) टेकववु; ऊंचकवु (९) उत्पन्न करवुं
धातु पु० मूळ घटक, अंगत्यनो अंश (२) मूळ तत्त्व (पृथ्वी-पाणी-तेज-वायु-आकाश) (३) शरीरमाना अगत्यना घटकोमानो दरेक (रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा अने शुक्र) (४) वात-पित्त-कफ ए त्रणमाथी दरेक (५) खनिज धातुओमानी दरेक (६) क्रियापदनु मूळ रूप (७) इंद्रिय
धातुमत् वि० धातुओथी समृद्ध
धातृ पु० उत्पादक, कर्ता (२) संरक्षक; पालक (३) ब्रह्मा (४) विष्णु (५) सप्तर्षि (६) विधाता, नसीब
धात्री स्त्री० दाई, उपमाता (२) माता (३) पृथ्वी (४) आमळी (वृक्ष)
धात्रेयिका, धात्रेयी स्त्री० धाव-मातानी पुत्री – बहेन (२) दाई, धाव
धान न०, **धानी** स्त्री० ठेकाणु, स्थान (उदा० 'राजधानी')
धानुष्क पु० बाणावळी
धान्य न० अनाज
धामन् न० घर, निवासस्थान (२) किरण, प्रकाश (३) प्रताप, बळ
धामवत् वि० बळवान; शक्तिमान
धार वि० धारण करनारु (२) वहेतु
धारक, धारण वि० धारण करनारु
धारणा स्त्री० धारण करवु ते (२) यादशक्ति (३) मनने एकाग्र राखवु ते (४) श्वास धारण करी राखवो ते (५) धैर्य, दृढता (६) निश्चित सिद्धांत (७) खातरी (८) समजण
धारयित्री स्त्री० पृथ्वी, धरित्री
धारा स्त्री० धार; प्रवाह (२) जोरथी वरसाद पडवो ते (३) पंक्ति, परंपरा (४) घोडानी गति (५) धार (चप्पु वगेरेनी) (६) पर्वतनी ढळती बाजु (७) रथनु पैडु अथवा तेनो परिघ
धारागृह न० फुवाराओथी ऊडता पाणीवाळु स्नानागृह
धाराधर पु० मेघ
धाराधिरूढ वि० पराकाष्ठाए पहोंचेलु
धारानिपात, धारापात पु० मुशळधार वरसाद (२) पाणीनी धार

धारायंत्र न० फुवारो (२) झारी
धारावर्ष पु०, न० मुशळधार के एकधारो पडतो वरसाद
धारावाहिन् वि० सतत चालु रहेतु
धारासंपात पु०, न० जुओ 'धारावर्ष'
धारासार पु० मुशळधार वरसाद
धारांकुर पु० वरसादनु फोरु के करो
धारिणी स्त्री० पृथ्वी [राखनारु
धारिन् वि० धारण करनारु (२) याद
धारोष्ण वि० ताजु दोहेलु – गरम
धार्तराष्ट्र पु० धृतराष्ट्रनो पुत्र (२) काळी चाच अने काळा पगवाळु हस जेवु एक पक्षी
धार्मिक वि० धर्माचरण करनारु (२) न्यायी (३) पु० न्यायाधीश (४) धर्मांध माणस (५) मदारी, ऐंद्रजालिक
धार्य वि० धारण करवा योग्य (२) सहन करवा योग्य (३) पहेरवा योग्य (४) मनमा राखवा योग्य
धाष्ट्र्य न० धृष्टता, उद्धताई, हिंमत
धाव् १ प० दोडवु, आगळ वधवु (२) –नी तरफ घसवु, हुमलो करवो (३) नासी जवु (४) १ उ० धोवु, साफ करवु (५) माजवु, ऊजळु करवु
धावक वि० दोडी जनारु (२) झडपी (३) धोनारु (४) पु० धोबी
धावन न० दोडवु ते (२) वहेवु ते (३) आक्रमण करवु ते (४) धोवु ते, स्वच्छ करवु ते (५) मांजवु ते
धावल्य न० धोळाश (२) फीकाश
धावित ('धाव्'नु भू० कृ०) वि० धोयेलु (२) –नी तरफ दोडतु (३) जलदी जतु
धावितृ पु० वेगे दोडनार
धि ५ प० खुश करवु; सतुष्ट करवुं (२) ६ प० पासे होवु, धारण करवु
धि पु० (समासने छेडे) भडार; निधि (उदा० 'जलधि')

धिक् अ० 'धिक्कार छे' –ए अर्थ बतावतो उद्‌गार
धिक्कार पु० तिरस्कार; ठपको
धिक्कृ ८ उ० धिक्कारवु; ठपको आपवो
धिक्कृत वि० धिक्कारायेलु; तिरस्कृत (२) न० धिक्कार, तिरस्कार
धिक्क्रिया स्त्री० तिरस्कार, ठपको
धिग्वाद पु० ठपको; निंदा
धिप्सु वि० छेतरवा इच्छतु, छेतरे तेवु
धिषण न० निवासस्थान
धिषणा स्त्री० बुद्धि (२) वाणी (३) स्तुति (४) पृथ्वी
धिष्ठित वि० बरावर गोठवायेलु – स्थपायेलु (२) दृढ करेलु, स्थिर करेलु (३) बहादुरीथी सामे थयेलु
धिष्ण्य पु० यज्ञना अग्निनुं स्थान (२) न० स्थान, निवासस्थान (३) नक्षत्र
धी ४ आ० अनादर करवो (२) आराधवु (३) धारण करवु, समाववु (४) सिद्ध करवु [कल्पना
धी स्त्री० बुद्धि, मन (२) विचार;
धीमत् वि० बुद्धिमान, विद्वान
धीर वि० धैर्यवाळु, निभय (२) दृढ; स्थिर (३) दृढ निश्चयी (४) शांत; स्वस्थ (५) गभीर (६) बुद्धिमान (७) मद; सौम्य
धीरचेतस् वि० दृढ निश्चयी
धीरता स्त्री०, धीरत्व न० धैर्य, हिंमत (२) गभीरता (३) पाडित्य, डहापण
धीरम् अ० दृढताथी, स्वस्थताथी
धीरोदात्त पु० (धीर अने उदात्त) नायकनो एक प्रकार (नाट्य०)
धीरोद्धत पु० (धीर पण उद्धत) नायकनो एक प्रकार (नाट्य०)
धीवर पु० माछीमार
धीवरी स्त्री० माछण
धु ५ उ० जुओ 'धू'
धुक्ष् १ आ० सळगाववु

धुत ('धु'नु भू० कृ०) वि० हलावेलु; कंपावेलु (२) तजेलु
धुति स्त्री० फफडाववु ते
धुनि (–नी) स्त्री० नदी
धुर् स्त्री० (प्रथमा ए०व० 'धूः') धूंसरी; धुरा (२) धोरियानो आगळनो भाग (ज्या जूसरु बंधाय छे) (३) धरीने बे छेडे (पैडा आगळ) खोसाती खीली (४) धोरियो, ऊध (५) बोजो; भार; जवाबदारी (ला०) (६) अग्रस्थान, उच्चस्थान (ला०) (७) गगानदी
धुर पु० (समासने छेडे) जूंसरुं; धोरियो (२) भार, बोजो (३) धरीना छेडा आगळनो खीलो
धुरंधर वि० धुरा धारण करनारुं (२) श्रेष्ठ; मुख्य, आगेवान
धुरा स्त्री० भार; बोजो
धुरीण, धुरीय, धुर्य वि० धूसरी वहन करनारु (२) धूसरी नाखवा योग्य (३) जवाबदारीवाळु (४) पु० भार वहन करनार पशु (५) जवाबदारी वहन करनारो माणस, आगेवान
धू ६ प० [धुवति], १ उ० [धवति–ते], ५ उ० [धूनोति, धूनुते, धुनोति, धुनुते], ९ उ० [धुनाति, धुनीते], १० उ [धूनयति–ते] हालवु; कपवु, हलाववु, कंपाववु (२) हलावीने काढी नाखवु, फेंकी देवु (३) फूकीने सळगाववु – प्रदीप्त करवु
धूत ('धू'नु भू० कृ०) वि० हलावेलु; कपावेलु (२) काढी नाखेलु के फेंकी दीधेलु (३) प्रदीप्त करायेलु (फूकीने)
धूतकल्मष, धूतपाप वि० पाप खंखेरी नाख्या होय तेवु; पापरहित
धूनन न० हलाववु ते
धूप १ प० [धूपायति] तपवु; तपाववु (२) १० उ० [धूपयति–ते] धूप करवो
धूप पु० सुगधी द्रव्य (२) तेने बाळवाथी नीकळती सुगंधी धूणी
धूपन न० धूप देवो ते (२) धूप
धूपायित ('धूप'नु भू०कृ०) वि० धूप दीधेलु (२) श्रमित, पीडित
धूपिक पुं० धूप बनावनारो
धूम पु० धुमाडो (२) झाकळ
धूमकेतन, धूमकेतु पु० अग्नि (२) पूंछडियो तारो (३) खरतो तारो
धूमग्रह पु० राहु
धूमज पु० वादळु
धूमप पु० धुमाडो पीने तपश्चर्या करनार
धूमपथ पु० कर्ममार्ग; यज्ञमार्ग (२) धुमाडो बहार नीकळवानो मार्ग – जाळियुं वगेरे
धूमयोनि पु० मेघ; वादळ
धूमायित वि० धुमाडाथी ढाकी काढेलु – भरी काढेलु; अधारियु करी दीधेलु
धूमित वि० धुमाडाथी काळु थयेलु
धूमोद्गार पु० धुमाडो नीकळवो ते
धूम्या स्त्री० गाढी धूणी; धूणीनु वादळ
धूम्र वि० धुमाडाना रगनु (२) न० पाप
धूर्गत वि० धोरिया उपर ऊभेलु (२) मुख्य, आगेवान
धूर्जटि पु० शकर
धूर्त वि० ठगारु; धुतारुं (२) विलासी, स्वेच्छाचारी (३) पु० शठ; जुगारी (४) ठगारो प्रेमी
धूर्तक वि० शियाळ (२) शठ
धूर्वी स्त्री० गाडीनो धोरियो
धूलि (–ली) पु०, स्त्री० धूळ; रज (२) भूको
धूसर वि० धूळिया के धोळा-पीळा रगनु
धृ ६ आ० [ध्रियते] जीवता होवु; जीवता रहेवु (२) टकी रहेवु, चालु रहेवु (३) निश्चय करवो (४) १ प० [धरति], १० उ० [धारयति–ते] कबजामा राखवु, मालिक होवु (५) पहेरवु (६) रूप धारण करवु (७) अकुश राखवो (८) स्थिर करवु (९) –नु देवु होवु, –नु उधार होवु

धृक् वि० (समासने छेडे) धारण करनारु; वहन करनारु
धृत् वि० (समासने छेडे) धारण करनारु
धृत ('धृ'नु भू० कृ०) वि० पकडेलु, लीधेलु, धारण करेलु (२) कबजामा राखेलु (३) साचवी राखेलु (४) पहेरेलु (५) मूकेलु (६) आचरेलु (७) निश्चयवाळु
धृतदंड वि० सजा करनारु (२) जेने सजा करवामा आवी होय तेवु
धृतमानस वि० निश्चयवाळु, निश्चयी
धृतराजन् वि० सारो राजा राज्य करतो होय तेवु (देश)
धृतात्मन् वि० दृढ निश्चयी, शात, स्वस्थ
धृति स्त्री० पकडवु ते, लेवु ते (२) कबजामा होवु ते (३) पोषवु ते, टेकववु ते (४) दृढता, स्थिरता (५) धीरज; धैर्य (६) तृप्ति, सतोष, आनद
धृतिमत् वि० दृढ, स्थिर (२) तृप्त; सुखी, सतुष्ट
धृतिमुष् वि० धैर्य हरी लेनारु
धृतैकवेणि वि० एक जूडामा ज वाळ राख्या होय तेवु (शोक-चिह्न तरीके)
धृष् १ प०, १० उ० ईजा करवी (२) अपमान करवु (३) आक्रमण करवु; हरावव् (४) भ्रष्ट करवु (५) ५ प० हिंमत करवी, धृष्टता करवी (६) खातरी होवी (७) अधीरु थवु (८) अभिमान करवु (९) सामनो करवो, पडकार करवो
धृष्ट ('धृष्'नु भू० कृ०) वि० हिंमतवान; बेशरम; उद्धत (२) निष्ठुर (३) पु० व्यभिचारी प्रेमी के पति
धृष्टद्युम्न पु० द्रुपद राजानो पुत्र; द्रौपदीनो भाई
धृष्णु वि० धैर्यवान, बहादुर (२) निर्लज्ज, उद्धत
धे १ प० धाववु, चूसवु (२) चुववु
धेनु स्त्री० गाय; दूध देती गाय (२) पृथ्वी (३) ते ते वर्गना नाम साथे ते वर्गनी मादा एवो अर्थ बतावे (उदा० 'वडवधेनु') (४) (समासने छेडे) हलकापणु – तुच्छपणु बतावे (उदा० 'खड्गधेनु')
धेय वि० पकडवा – लेवा योग्य (२) धवरावबा – पोषवा योग्य (३) पीवा-धाववा योग्य (४) आचरवा योग्य
धैर्य न० धीरज, दृढता, स्थिरता (२) धृष्टता, हिंमत
धैर्यवृत्ति स्त्री० दृढता, धीरज
धोरण न० वाहन (घोडो, हाथी इ०)
धौत ('धाव्'नु भू०कृ०) वि० धोवायेलु; धोयेलु (२) माजेलु, चकचकित करेलु (३) प्रकाशित
धौतापाग वि० उज्ज्वळ थयेला आखना खूणावाळु
धौति (–ती) अ० हठयोगनी एक क्रिया
धौरेय पु० भारवाहक पशु (२) घोडो (३) आगेवान, अग्रणी
ध्मा १ प० [धमति] श्वास बहार काढवो (२) फूकवु, धमवु (३) फूकीने अवाज करवो – वगाडवु (४) फूकीने अग्नि प्रदीप्त करवो
ध्मात ('ध्मा'नु भू०कृ०) वि० फूकेलु; फूकीने प्रज्वलित करेलु (२) फुलाई गयेलु, गर्विष्ठ
ध्यात ('ध्यै'नु भू०कृ०) वि० चिंतवेलु, ध्यान धरेलु
ध्यान न० चिंतन (२) एकाग्रता, लक्ष (३) समाधि
ध्यानगम्य वि० ध्यानथी ज जाणी शकाय तेवु
ध्यानस्थ वि० ध्यानमा मग्न
ध्यानिक वि० ध्यानथी मळी शकतु
ध्याम वि० मेलु, गदु
ध्येय वि० ध्यान धरवा योग्य; चिंतववा योग्य
ध्यै १ प० चिंतववु (२) ध्यान करवु
ध्र वि० (समासने छेडे) धारण करनारु (उदा० 'महीध्र')
ध्रुव वि० स्थिर, निश्चळ (२) निश्चित, नक्की (३) शाश्वत; हमेश रहेनारु

(४) पु० ध्रुवनो तारो (५) ध्रुवपद (६) उत्तानपाद राजानो भक्त पुत्र
ध्रुवम् अ० चोक्कस, नक्की
ध्रौव्य न० स्थिरता, ध्रुवता (२) निश्चितता
ध्वंस् १ आ० नीचे पडवु (२) पडीने टुकडा थवा, चूर्ण–भूको थवु (३) नाश थवो (४) निराश थवु (५) ढकाई जवु, ग्रस्त थवु [(३) मरण
ध्वंस पु० पडीने भागी जवु ते (२) नाश
ध्वंसकारिन् वि० नाश करनारु (२) बळात्कार – व्यभिचार करनारु
ध्वंसन वि० नाश करनारु (२) न० ध्वस; नाश (३) पडी जवु ते (४) चाल्या जवु ते [पामनारु
ध्वंसिन् वि० नाश करनारु (२) नाश
ध्वज पु० धजा, वावटो, पताका (२) ध्वजस्तभ (३) वावटा उपरनु निशान (उदा० 'मकरध्वज') (४) (समासने छेडे) ध्वजारूप – शोभारूप एवो माणस (उदा० 'कुलध्वज')
ध्वजपट पु०, न० जुओ 'ध्वजांशुक'
ध्वजयष्टि पु० ध्वजनो दड
ध्वजारोह पु० ध्वजा उपरनो एक शणगार [चडाववो ते
ध्वजारोहण न० ध्वज ऊचो करवो-
ध्वजांशुक न० धजा, वावटो
ध्वजिक वि० ढोंगी, दभी (धर्म अगे)
ध्वजिन् वि० ध्वज धारण करनारु (२) निशानीवाळु (३) पु० ध्वजधारी (४) कलाल (५) रथ (६) ढोंगी; दभी
ध्वजिनी स्त्री० सेना, लश्कर
ध्वजीकृ ८ उ० धजा रोपवी (२) बहाना तरीके वापरवु
ध्वजोच्छ्रय पु० ढोंग, दभ
ध्वन् १, १० प० अवाज करवो, उच्चार करवो (२) गणगणवु, गुजारव करवो (३) गर्जवु (४) पडघो पडवो
ध्वनन न० अवाज करवो ते (२) सूचववु ते (३) व्यंजना (अलकार०)
ध्वनि पु० अवाज (२) गर्जना (३) व्यग्यार्थ (अलकार०)
ध्वनित ('ध्वन्' नु भू० कृ०) वि० ध्वनिवाळु (२) सूचित, गर्भित (३) न० ध्वनि (४) गर्जना
ध्वस्त ('ध्वस्' नु भू० कृ०) वि० नीचे पडेलु (२) नाश पामेलु, खोवायेलु (३) छवायेलु (धूळ इ० थी)
ध्वस्ति स्त्री० नाश
ध्वान पु० ध्वनि (२) गुजारव
ध्वांक्ष पु० कागडो (२) (समासने छेडे) धिक्कार – तुच्छकार बतावबा वपराय छे (उदा० 'तीर्थध्वांक्ष') (३) बगलो
ध्वांत न० अधकार

न

न अ० न; ना, नहि
नकुल पु० नोळियो (२) पाच पाडवो-मानो चोथो (माद्रीनो पुत्र)
नक्त न० रात्री
नक्तचारिन् पु० घुवड (२) बिलाडी (३) चोर (४) पिशाच
नक्तम् अ० राते, रात्रि दरम्यान
नक्तचर पु० जुओ 'नक्तचारिन्'
नक्तंचर्या स्त्री० राते भटकवु ते
नक्तंतन वि० राते थतु
नक्तंदिनम्, नक्तंदिवम् अ० रातदिवस, दिवसे अने राते
नक्र पु० मगर
नक्रकेतन पु० कामदेव
नक्षत्र न० तारो (२) ताराना अमुक निश्चित २७ झूमखामानु दरेक

नक्षत्रनाथ पु० चंद्र [(३) विष्णु
नक्षत्रनेमि पु० चंद्र (२) ध्रुवनो तारो
नक्षत्रपथ पु० ताराओ भरेलुं आकाश
नक्षत्रमाला स्त्री० ताराओ – नक्षत्रोनी माळा के समूह (२) २७ मोतीनी माळा (३) हाथीना गळानो हार
नक्षत्रराज पु० चंद्र [ज्योतिःशास्त्र
नक्षत्रविद्या स्त्री० खगोळशास्त्र,
नख पु०, न० हाथपगना आंगळाना टेरवा उपर वधतो रहेतो कठण भाग (२) नहोर
नखपद पु० नखनो उझरडो
नखर पु०, न० नख, नहोर
नखव्रण पु० जुओ 'नखपद'
नखंपच वि० नखने रांधी नाखनार – नवळो पाडी देनारु [तेनी निशानी
नखाघात पु०, न० नखनो उझरडो,
नखानखि अ० सामसामा नख मारीने
नखाक पु० जुओ 'नखाघात'
नखिन् वि० नख – नहोरवाळु
नग पु० पर्वत (२) वृक्ष
नगज पु० पर्वतमा जन्मेलु
नगनदी स्त्री० जुओ 'नगापगा'
नगनिम्नगा स्त्री० जुओ 'नगापगा'
नगपति पु० हिमालय
नगभिद् पु० इंद्र, जुओ 'नगारि'
नगर न० मोटु शहेर
नगरंध्रकर पु० कार्तिकेय
नगरी स्त्री० नगर, शहेर
नगाधिप, नगाधिराज पु० हिमालय
नगापगा स्त्री० पर्वतनी नदी
नगारि पु० इंद्र (पर्वतोनी पांखोने कापी नाखनार)
नगेंद्र पु० हिमालय
नग्न, नग्नक वि० नागु, वस्त्ररहित
नग्नमुषितप्रख्य वि० लूंटीने छेक ज नागु करी नाखेलु
नग्नीकृत वि० नग्न करेलु (२) नागा रहेता पथमा भेळवेलु

नञ् पु० नकार
नट् १ प० नृत्य करवुं (२) अभिनय करवो (३) १० उ० नीचे पडवुं (४) प्रकाशवुं (५) ईजा करवी –प्रेरक० अभिनय करावो (२) नाच करावो, ना कहेवी, इनकार
नट पु० नटवो; नृत्य करनार (२) नाटकमां अभिनय करनार, 'एक्टर'
नटवर पु० मुख्य नट (२) नाटकनो सूत्रधार (३) श्रीकृष्ण
नटित न० अभिनय
नटी स्त्री० स्त्री-नट (२) मुख्य स्त्री-नट (सूत्रधारनी पत्नी मनाय छे)
नड पु०, न० एक जातनुं नेतर
नड्वल वि० बहु नेतरवाळुं
नत ('नम्'नुं भू० कृ०) वि० नमेलुं; नमन (२) नमनार वांकुं (३) गळेलुं; वांकुं
नतनाभि वि० पातळुं, नाजुक
नतभ्रू स्त्री० वांकी भमरोवाळी
नतांगी स्त्री० नमेला अंगवाळी स्त्री (२) स्त्री
नति स्त्री० नमवुं – वांकुं वळवुं ते (२) नम्रता (३) प्रणाम, नमन
नतोन्नत वि० ऊंचुं ने नीचुं, विषम
नत्यूह पु० एक जातनुं पक्षी
नद् १ प० अवाज करवो, बराडा पाडवो (२) गर्जना करवो (३) बूम पाडवी
नद पु० मोटी नदी (सिंधु जेवी) (२) प्रवाह, वहेळो
नदपति, नदराज पु० महासागर
नदी स्त्री० पर्वत इ० माथी नीकळीने वहेतो जळप्रवाह, सरिता
नदीकूल न० नदीकिनारो
नदीज पु० भीष्म (२) न० कमळ
नदीन (नदी + ईन), नदीपति पु० समुद्र, महासागर (२) वरुण
नदीमातृक वि० नदीना पाणीथी सीचाई थती होय तेवु

नदीमुख न० नदी ज्या समुद्रने मळे छे ते स्थान
नदीश पु० समुद्र, महासागर
नदीष्ण(-स्न) वि० नदीमा स्नान करनारु (२) नदीनी ऊडाई वगेरे जाणनारु (३) अनुभवी, कुशळ
नद्ध ('नह्' नु भू० कृ०) वि० बाधेलु; वीटेलु, जोडेलु (२) पहेरेलु
ननंदृ, ननांदृ स्त्री० नणद (२) साळी
ननु अ० प्रश्न, खातरी, निश्चय, विनय, अनुनय, परवानगी, सभ्रम, आक्षेप – ए अर्थ बतावे ('शु', 'खरेखर', 'रे', 'अरे')
नपात् पु० पौत्र (२) वशज
नपुंस्(-स) पु० नपुसक
नपुंसक पु०, न० षढ (२) न० नपुसकलिंग (व्या०)
नप्तृ पु० पौत्र (पुत्रनो के पुत्रीनो पुत्र)
नप्त्री स्त्री० पौत्री
नभ् १ आ० ईजा करवी
नभ वि० हिंसक, ठार मारनारु (२) पु० श्रावण मास (३) न० आकाश
नभश्चर वि० आकाशमा फरनारु (२) पु० देव (३) विद्याधर
नभस् पु० श्रावण मास (२) न० आकाश
नभस्तल न० अतरीक्ष, आकाशनु तळ
नभस्य पु० भादरवो महिनो
नभस्वत् वि० वादळावाळु, धूमसवाळु (२) जुवान (३) पु० पवन
नभःसद् पु० देव
नभःस्पृश् वि० आकाशने पहोचे एवु, [घणु ऊचु
नभोमंडल न० गगनमडल
नम् १ उ० नमन – वदन करवु (२) नीचु नमवु – वळवु (३) नमी पडवु, ताबे थवु (४) वाकु वळवु, वळी जवु –प्रेरक० नमाववु, वाळवु (२) ताबे करवु, खडियु बनाववु [नमावनार
नमन न० नमवु ते, नमस्कार (२) पु०
नमस् अ० नमस्कार-वदन (नाम जेवो अर्थ होवा छता ते अव्यय गणाय छे)
नमस वि० अनुकूळ
नमस्करण न०, नमस्कार पु० वदन
नमस्कृत वि० वदित, पूजित
नमस्कृति, नमस्क्रिया स्त्री० नमस्कार
नमस्य वि० पूज्य, मान्य (२) नम्र
नमस्यति प० (नमस्कार करवा)
नमस्या स्त्री० पूजा, वदना
नमित वि० नमी पडेलु, नीचु नमेलु
नमुचि पु० इद्रे हणेला एक राक्षसनु नाम (२) कामदेव
नमुचिद्विष् पु० इद्र
नमेरु पु० रुद्राक्षनु झाड
नमोवाकम् अ० 'नमस्कार' एवो शब्द बोलीने, नमस्कार करीने
नम्र वि० नीचु नमेलु, वळेलु (२) विनयी
नय वि० दोरनारु; लई जनारु, मार्ग दर्शावनारु (२) उचित; न्याय्य (३) पु० रीतभात, वर्तन (४) सदाचार, नीति (५) अगमचेती, दूरदर्शिता (६) राजनीति (७) योजना; तरकीब (८) नियम (९) सिद्धान्त, मत
नयचक्षुस् वि० राजनीतिज्ञ (२) अगमचेतीवाळु, डाह्यु, समजणु
नयन न० दोरी जवु ते, लई जवु ते (२) व्यतीत करवु ते (समय) (३) आख
नयनज न० आसु
नयनपथ पु० ज्या सुधी आख जोई शके ते मर्यादा, दृष्टिमर्यादा
नयनपुट न० पापण
नयनविषय पु० कोई पण दृश्य पदार्थ (२) क्षितिज (३) दृष्टिमर्यादा
नयनसलिल न० आसु
नयनाभिराम वि० मनोहर
नयनांचल, नयनांत पु० कटाक्ष (२) आखनो खूणो
नयनोपांत पु० आखनो खूणो
नयवादिन्, नयविद्, नयविशारद पुं० राजनीतिमा कुशळ पुरुष, मुत्सद्दी

नयशालिन् वि० सदाचारी, नीतिमान
नयशास्त्र न० राजनीतिशास्त्र (२) नीतिशास्त्र
नर पु० पुरुष (२) एक प्राचीन ऋषि (३) (ते ऋषिनो अवतार) अर्जुन
नरक पु० नरकासुर राक्षस (२) पु०, न० नरक, दोजख
नरकजित्, नरकरिपु पु० श्रीकृष्ण
नरदेव पु० राजा
नरद्विष् पु० राक्षस, पिशाच
नरनारायण पु० श्रीकृष्ण (२) द्वि०व० वे प्राचीन ऋषिओ, तेमना अवताररूप अर्जुन अने श्रीकृष्ण
नरपति, नरपाल पु० राजा
नरपुंगव, नरर्षभ पु० नरश्रेष्ठ
नरवाहन पु० कुबेर
नरव्याघ्र, नरशार्दूल पु० नरश्रेष्ठ
नरसख पु० नारायण
नरसिंह, नरहरि पु० विष्णुनो चोथो अवतार; नृसिंह
नराधम पु० नीच–हलको माणस
नराधिप, नराधिपति पु० राजा
नराश पु० राक्षस, पिशाच
नरांतक पु० मृत्यु
नरी स्त्री० स्त्री
नरेश, नरेश्वर पु० राजा
नरेंद्र पु० राजा (२) वैद्य, विषवैद्य
नर्त पुं० नृत्य, नाच
नर्तक पु० नाचनारो, नट (२) नृत्य शीखवनार (३) हाथी (४) शिव
नर्तकी स्त्री० नाचनारी गानारी; नटी
नर्तन पु० नाचनार (२) न० नृत्य
नर्तयितृ पु० नृत्य शीखवनार शिक्षक
नर्तित वि० नचावेलु; नाचेलुं (२) नाचतु, ऊछुनीचु थतु
नर्द् १ प० गर्जना करवी
नर्दन न० गर्जना (२) जयजयकार
नर्दित वि० गर्जना करेलु (२) जयजयकार करेलु (३) पु० पासानो एक दाव (४) न० गर्जना
नर्मगर्भ वि० मजाकवाळु (२) पु० यार; आशक [विदूषक
नर्मद वि० आनद आपनारु (२) पु०
नर्मन् न० क्रीडा (२) मश्करी, ठठ्ठो
नर्मसचिव, नर्मसुहृद् पु० विदूषक, आनद माटे रखातो सोवती
नर्मोक्ति स्त्री० मजाकमा कहेली वात
नल पु० एक जातनु वरु (२) निषध देशनो राजा; दमयतीनो पति (३) एक वानर (तेणे लकानो सेतु बाध्यो हतो) (४) चार हाथ जेटलु माप (५) न० नील कमळ
नलक न० शरीरनु कोई पण लाबु हाडकु
नलद न० सुगधी वाळो, वीरण
नलमीन पुं० एक जातनु मत्स्य
नलिका स्त्री० नळी (२) नाडी शिरा (३) बाणनो भाथो
नलिन पु० सारस पक्षी (२) न० कमळ (३) पाणी
नलिनी स्त्री० कमळनो छोड (२) कमळसमूह (३) कमळपूर्ण सरोवर (४) इंद्रनी नगरी
नलिनीखंड न० कमळनो समूह
नलिनीदल, नलिनीपत्र न० कमळनु पान
नलिनीषंड न० जुओ 'नलिनीखड'
नव वि० नवु, ताजु (२) आधुनिक
नवग्रहाः पु० ब० व० नव ग्रहो (सूर्य, चन्द्र, पांच ग्रह, राहु अने केतु)
नवछिद्र न० शरीर (मुख, बे कान, बे आंख, बे नसकोरा तथा मल अने मूत्रना बे द्वार – एम नव छिद्रवाळु)
नवता स्त्री० नवीनता (२) ताजापणु
नवति स्त्री० नेवु (संख्या)
नवदुर्गा स्त्री० (भद्रा, काली, चंडिका इ०) नव रूपो धारण करनारी – दुर्गा
नवद्वार न० जुओ 'नवछिद्र'

नवधा अ० नव प्रकारे
नवन् वि० (ब० व०) नव; ९ (समासनी शरूआतमां अंत्य 'न्' ऊडी जाय)
नवन न० वखाणवु ते [भंडार
नवनिधि पु० (ब०व०) कुबेरना नव
नवनी स्त्री०, **नवनीत** न० ताजु माखण
नवपाणिग्रहणा स्त्री० जुओ 'नवोढा'
नवम् अ० हालमा, तुरतमा
नवमल्लिका, नवमालिका स्त्री० एक फूलझाड
नवयौवन न० नवी जुवानी
नवयौवना स्त्री० जुवान स्त्री
नवरत्न न० नव रत्नो (मुक्ता, माणिक्य, वैडूर्य, गोमेद, वज्र, विद्रुम, पद्मराग, मरकत, नील) (२) विक्रमना दरबारना नव रत्न (धन्वतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, वेताल, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर, वररुचि)
नवरसाः पु०ब०व० शृगार, वीर, करुण, हास्य, अद्भुत, भयानक, बीभत्स, रौद्र अने शात—ए नव रस (काव्य०)
नवरात्र न० आसो महिनाना शुक्लपक्षना प्रथम नव दिवसो (दुर्गापूजाना)
नवशशिभृत् पु० शिव (चन्द्रकळा माथे धारण करनार)
नवसर पु०, न० नव मोतीनु एक घरेणु
नवांगी स्त्री० स्त्री
नवांबु न० नवु पाणी; ताजु पाणी
नवीकृ ८ उ० ताजु करवु (२) नवु करवु
नवीन वि० नवु (२) आधुनिक
नवेतर वि० जूनु
नवोढा स्त्री० तरतनी परणेली स्त्री
नव्य वि० जुओ 'नवीन'
नश् ४ प० नाश पामवु (२) अदृश्य थवु (३) नासी जवु (४) निष्फळ जवु —प्रेरक० भ्रष्ट करवु (२) खोई नाखवु, खोई नखाववु (३) भूली जवु
नश्वर वि० नाशवत; क्षणिक (२) विध्वसक; विनाशक
नष्ट ('नश्' नु भू० कृ०) वि० नाश पामेलु (२) खोवायेलु (३) अदृश्य थयेलु (४) नासी गयेलु (५) विनानु; रहित (समासमां) (७) भ्रष्ट
नष्टक्रिय वि० कृतघ्न
नष्टचेतन, नष्टचेष्ट वि० मूर्छित
नष्टरूप वि० अदृश्य
नष्टसंज्ञ वि० मूर्छित
नष्टातंकम् अ० चिंता के भय विना
नष्टात्मन् वि० बुद्धि के समज विनानु
नष्टार्थ वि० गरीब, धनहीन
नष्टाशंक वि० भय के शका विनानु
नस् स्त्री० नाक ('नासिका'ना द्वितीया द्वि० व० पछी विकल्पे मुकाय छे)
नस्या स्त्री० पशुना नाकमा परोवेली दोरी, नाथ
नह् ४ उ० बाधवु; वीटवु (२) (कपडा के बख्तर पहेरीने) सज्ज थवु
नहि अ० नही, नही ज
नंद् १ प० खुश थवु, प्रसन्न थवु
नंद पु० आनंद; हर्ष (२) श्रीकृष्णना पालक पिता (३) पाटलिपुत्रना नदवशनो स्थापक राजा
नंदक वि० आनंद आपनारु (२) —मा आनद लेनारु (३) पु० विष्णुनु खड्ग
नंदथु पु० आनद; हर्ष
नंदन वि० आनंददायक, सुखकर (२) पु० पुत्र (३) न० इद्रनु उपवन (४) आनद; हर्ष
नंदनद्रुम पु० नदनवननु वृक्ष
नंदनवन न० इद्रनु उपवन
नंदनंदन पु० श्रीकृष्ण
नंदना स्त्री० पुत्री
नंदा स्त्री० आनंद (२) नणद (३) समृद्धि (३) माटीनो नानो घडो (४) गौरी
नंदात्मज पु० श्रीकृष्ण
नंदि पु०, स्त्री० आनंद (२) समृद्धि
नंदिघोष पु० अर्जुननो रथ (२) आनंदनो अवाज

नंदिन् वि० आनदी, हर्षयुक्त (२) आनंददायक (३) –मा सुख मानतु (४) पु० पुत्र (५) नाटकनो सूत्रधार (६) शकरनो मुख्य अनुचर के पोठियो
नंदिनी स्त्री० पुत्री (२) नणद (३) (कामधेनु जेवी) सुरभि गायनी पुत्री
नंदीपटह पु० एक वाद्य
नंदीवर्धन पु० पुत्र
नंहस पु० भक्तो उपर कृपावत देव
ना अ० ना, नहि
नाक पु० स्वर्ग (२) आकाश (३) न० सुख, अत्यत सुख
नाकनारी स्त्री० अप्सरा
नाकसद् पु० देव (२) गाधर्व
नाकौकस् पु० देव
नाक्षत्र पु० जोषी
नाग पु० साप (२) पाताळमा रहेतु तथा मनुष्यनु मो अने सापनी पूछडीवाळु एक अर्धदैवी प्राणी (३) हाथी (४) ते ते वर्गमा श्रेष्ठ (समासने अते, उदा० 'पुरुषनाग') (५) भीतमानो खीलो, खीटी (कशु टीगाववा माटे)
नागकेसर पु० एक फूलझाड
नागदंत, नागदंतक पु० हाथीदात (२) भीतमानी खीटी
नागपति पु० ऐरावत हाथी (२) शेषनाग
नागर वि० नगरने लगतु (२) नगरमा ऊछरेलु, सस्कारी, चतुर (३) शहेरना दुर्गुणोवाळु (४) पु० नागरिक, शहेरमा रहेनार पुरुष
नागरक वि० जुओ 'नागरिक'
नागरता स्त्री० चालाकी; चतुराई
नागरिक वि० नगरमा ऊछरेलु (२) सभ्य, विवेकी (३) चतुर (४) पु० नगरमा वसनार (५) चतुर प्रेमी (६) पोलीस अधिकारी
नागरिकवृत्ति स्त्री० राजदरबारी रीत
नागरिपु पु० गरुड
नागरी स्त्री० देवनागरी लिपि (२) [चतुर स्त्री
नागलोक पु० पाताळ
नागाशन पु० गरुड (२) मोर (३) सिंह (हाथीने मारनार)
नागेन्द्र पु० श्रेष्ठ हाथी (२) ऐरावत (३) शेषनाग
नाट पु० नृत्य; अभिनय
नाटक पु० नृत्यकार, नट (२) न० नाट्य
नाटकाचार्य पु० नृत्यशिक्षक
नाटकीय वि० नाटकनु, नाटक संबधी
नाटकीया स्त्री० नाचनारी, नटी
नाटिका स्त्री० नानु नाटक
नाटितक न० चेष्टा, अभिनय
नाट्य न० नाटक (२) नृत्य (३) हावभाव; अभिनय (४) नृत्य के अभिनयनु शास्त्र के कळा (५) नटनो पहेरवेष
नाट्यप्रिय पु० शकर
नाट्यशाला स्त्री० रगभूमि, नृत्यशाळा
नाट्याचार्य पु० नृत्य शीखवनार
नाडि, नाडिका स्त्री० कोई पण छोडनी गोळ दाडी (२) कमळ वगेरेनी पोली दाडी (३) शिरा, नस (४) हाथ के पगनी नाडी (५) एक घडी (चोवीस मिनिट) (६) नळी, वासळी, काठलो इ०
नाडिंधम वि० नाडीओ उछाळे तेवु (भय इ०) (२) पु० सोनी
नाडी स्त्री० जुओ 'नाडि'
नाडीजंघ पु० एक जातनो बगलो (२) कागडो (३) एक मुनि
नाणक न० नाणु, चलणी सिक्को
नातिचिरे अ० टूंक समयमा
नातिदूर वि० अति दूर नही एवु
नातिवाद पु० गाळागाळी त्यागवी ते
नाथ् १ प० आजीजी करवी, याचवु (२) १ आ० आशिष आपवी
नाथ पु० स्वामी; नायक (२) रक्षक (३) पति (४) बळदना नाकमा परोवेली दोरी
नाथवत् वि० मालिक के रक्षकवाळु (२) तावेदार, गुलाम एवु

नाद पु० गर्जना, बूम (२) ध्वनि
नादिन् वि० गर्जना – अवाज करतु
नादेय वि० नदीमा जन्मेलु – थतु
नाद्य न० कमळ
नाना अ० जुदे जुदे प्रकारे, जुदे जुदे स्थळे (२) भिन्न-अलग होय तेम (३) समासनी शरूआतमा विशेषण तरीके) अनेक प्रकारनु; विविध (४) विना
नानारस वि० जुदा जुदा रसोवाळु
नानार्थ वि० जुदा जुदा अर्थवाळु (२) जुदा जुदा हेतु के प्रयोजनवाळु
नानाविध वि० अनेक प्रकारनु
नानुरक्त वि० अनुराग विनानु
नापित पु० हजाम, वाळद
नाभि पु०, स्त्री० डूटी, डूटी जेवो खाडो (समासने छेडे 'नाभ' थई जाय छे, उदा० 'पद्मनाभ') (२) पु० चक्र के पैडानो मध्य भाग (३) मध्यबिन्दु (४) नेता, आगेवान (५) सबध, सगाई (६) सार्वभौम राजा (७) स्त्री० कस्तूरी
नाभिगंध पु० कस्तूरीनी गध
नाभिज, नाभिजन्मन् पु० ब्रह्मा
नाभिनाडी स्त्री०, **नाभिनाल** न० नाळ (गर्भस्थ बाळकनी डूटी साथेनी)
नाभी स्त्री० जुओ 'नाभि'
नाभोग पु० देव (२) साप
नाम अ० नामे, नामे ओळखातु (२) खरेखर, खचित (३) कदाच, रखेने (४) एम ते होय ? (ठपको बताववा) (५) जाणे के, देखाव करीने (६) (आज्ञार्थ साथे) मानी लो, एम मानी लईए के (७) धमकी के गुस्सो दर्शावे (८) आश्चर्य दर्शावे
नामकरण, नामकर्मन् न० नाम पाडवु ते (विधि के सस्कार)
नामग्रह पु०, **नामग्रहण** न० नाम लेवु ते
नामग्राहम् अ० नाम दईने – लईने
नामधारक, नामधारिन् वि० नामनु ज, मात्र नामवाळु (तेवा गुण विनानु)
नामधेय न० नाम, सज्ञा (२) वस्तुनी सज्ञारूप शब्द (व्या०)
नामन् न० नाम
नाममात्र वि० मात्र नामवाळु (२) न० मात्र नाम के उल्लेख
नाममुद्रा स्त्री० उपर नामवाळी वीटी (महोर – छाप देवामा वपराती)
नामशेष वि० मात्र नाम ज बाकी रह्यु होय तेवु, मृत
नामांक वि० नामवाळु, नाम लखेलु
नामित वि० नमावेलु, वाळेलु
नाम्य वि० वाळी के नमावी शकाय तेवु
नाय पु० नेता, आगेवान (२) दोरवु ते (३) नीति (४) उपाय
नायक पु० नेता, आगेवान (२) मुख्य माणस, सरदार (३) नाटक के वार्तानु मुख्य पात्र
नायिका स्त्री० नाटकनु मुख्य स्त्री पात्र (२) पत्नी (३) गणिका
नार वि० माणसने लगतु (२) पु० पाणी (३) मनुष्यनो समूह
नारद पु० एक प्रसिद्ध देवर्षि
नाराच पु० लोखडी बाण (२) बाण
नारायण पु० विष्णु (२) 'नर' ऋषिना साथी प्राचीन ऋषि (जेमणे उर्वशीने जाघमाथी पेदा करी हती)
नारिकेर (–ल) पु०, **नारिकेलि (–ली)** स्त्री० नाळियेरनु झाड के तेनु फळ
नारी स्त्री० स्त्री
नारीकेलि (–ली) स्त्री० जुओ 'नारिकेर'
नारीनाथ वि० स्त्री मालिक होय तेवु
नाल वि० बरुनु, बरुवाळु (२) पु०, न० पोलो दड (खास करीने कमळनो) (३) गर्भमा बाळकनी डूटीए जोडायेलो नाडीसमूह (४) न० शिरा, नस (५) नीक, नहेर

नाला स्त्री० पोलो डाळलो (कमळनो)

नालि स्त्री० नस, नाडी (२) पोलो डाडलो (कमळनो) (३) २४मिनिटनो समय, घडी (४) नीक

नालिकेर पु०, **नालिकेलि** (–ली) स्त्री० नाळियेरनु झाड के तेनु फळ

नाली स्त्री० जुओ 'नालि'

नालीक पु० बाण (२) भालो (३) बरछी (४) कमळदंड

नावनीत वि० माखणनु (२) माखण जेवु पोचु – कोमळ (३) न० घी

नाविक पु० सुकानी (२) खलासी, वहाणवटी (३) नौकानो मुसाफर

नाव्य वि० नौकामां बेसीने ओळंगी शकाय एवु (२) स्तुत्य, प्रशस्य (३) न० नवीनता, नवीनपणु

नाश पु० अदृश्य थवु ते (२) संहार; पायमाली (३) मरण (४) दुर्भाग्य, आफत (५) नासी जवु ते

नाशन वि० नाश करनारु, दूर करनारु (समासमां) (२) न० विनाश (३) दूर करवु ते (४) मरण (५) विस्मरण

नाशिन् वि० नाश पामनारु, नाशवंत (२) नाश करनारु [कुमार

नासत्यौ पु० द्वि० व० बे अश्विनी-

नासा स्त्री० नाक (२) सूंढ

नासाग्र न० नाकनु टेरवु

नासारंध्र न०, **नासाविरोक** पु०, **नासा-विवर** न० नसकोरु

नासिका स्त्री० नाक (२) सूंढ

नासिर, नासीर पु० लश्करनो मोखरानो भाग (२) मोखरे धसनार योद्धो

नास्ति अ० न होय तेम

नास्तिक वि० वेद, ईश्वर तथा पुनर्जन्मने न माननारु

नास्तिवाद पु० नास्तिकवाद

नाहुष पु० ययाति राजा

नांत वि० अंत विनानु

नान्दीमुख [illegible] वि० [illegible] पार्ग, [illegible] [illegible] [illegible] संबंध

नारी स्त्री० स्त्री; [illegible] (२) [illegible]; [illegible] (३) [illegible] [illegible] [illegible] (४) [illegible]

नाडीनाद पु० [illegible]

नि अ० [illegible] [illegible] नामनी पूर्वे [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] – [illegible]

निकट वि० पासेनु, नजीकनु (२) पु०, न० सामीप्य, [illegible]

निकम् १० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

निकर पु० ढगलो (२) समूह; जथ्थो

निकर्तन न० [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ते (२) [illegible]

निकर्षण न० गाम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (२) [illegible]

निकष पु० कसोटीनो पथ्थर (२) कसोटी के परीक्षा करे तेवी कोई पण वस्तु (३) कसोटीना पथ्थर उपर करेली सोनानी रेखा

निकषग्रावन् पु० कसोटीनो पथ्थर

निकषण पु०, न० कसोटीनो पथ्थर (२) घसी काढवु ते

निकषा अ० नजीक, पासे

निकषोपल पु० कसोटीनो पथ्थर

निकाम वि० विपुल, यथेच्छ; [illegible] (२) –नी इच्छावाळु (३) पु०, न० इच्छा; मरजी

निकामम् अ० यथेच्छ रीते, मरजी मुजब (२) पुष्कळ, अत्यंत

निकाय पु० ढगलो; समूह (२) निवासस्थान (३) शरीर

निकाय्य पु० निवासस्थान
निकार पु० अपमान, तिरस्कार (२) वध (३) गाळ (४) विरोध
निकारण न० वध, कतल
निकाश पु० सानिध्य, नजीकपणु (२) सरखापणु (समासने अंते) (३) प्रकाश
निकाष पु० घसवु ते (सराण इ० उपर)
निकास पु० जुओ 'निकाश'
निकुरंब, निकुरुंब न० टोळु, समूह
निकुंज पु०, न० लतामंडप (२) गुफा
निकुंभिला स्त्री० लंकाना पश्चिम दरवाजे आवेली एक गुफा (२) ते तरफ आवेली भद्रकालीनी मूर्ति (३) ज्यां बलिदान अपाता होय ते स्थान
निकृ ८ उ० अपमान करवु, हलकु पाडवु, तावे करवु (२) ईजा करवी (३) खराब वर्तन चलाववु [नाखवु
निकृत् ६ प० [निकृंतति] कापवु, कापी
निकृत वि० अपमानित, तिरस्कृत (२) पीडित (३) वंचित (४) दुष्ट, नीच (५) न० तिरस्कार
निकृति वि० दुष्ट, नीच (२) स्त्री० दुष्टता, नीचता (३) अप्रमाणिकता, छेतरपिंडी (४) अपमान, तिरस्कार (५) दारिद्रय, दैन्य (६) पु० शठ
निकृष् १, ६ प० ओछु करवु, बाद करवु (२) खेंचवु, खेंची पाडवु
निकृष्ट वि० नीच, अधम (२) नजीकनु
निकृष्टयुद्ध न० हाथोहाथनी लडाई
निकृंतन वि० कापनारु के कातरनारु (२) न० कापवु के कातरवु ते (३) निकंदन (४) कापवानु के कातरवानु साधन
निकेत, निकेतक पु० घर, रहेठाण
निकेतन न० मकान; निवास
निक्वण, निक्वाण पु० अवाज, रव
निक्षिप् ६ प० नाखवु (२) नीचे मूकवु (३) सोंपवुं, थापण तरीके मूकवु (४) नीमवु, स्थापवु (५) फेंकी देवु, तरछोडी काढवु
निक्षिप्त वि० मूकेलु (२) नाखेलु (३) अनामत मूकेलु (४) तजी दीधेलु
निक्षेप पु० फेंकवु ते, नाखवु ते (२) थापण, अनामत (३) काढी मूकवु ते, तजी देवु ते
निक्षेपण न० नीचे मूकवु ते
निक्षेपित वि० मुकावेलु (२) लखावेलु, कोतरावेलु
निखन् १ प० खोदवु (२) दाटवु (३) रोपवु (४) खोसवु, भोंकवु
निखनन न० खोदवु ते (२) रोपवु ते
निखर्व वि० वामणु, ठींगणु (२) न० सो अबज
निखात वि० खोदेलु (२) रोपेलु
निखिल वि० आखु, बधु, तमाम
निखिलेन अ० पूरेपूरु, तमाम
निगड वि० साकळे बांधेलु (२) पु०, न० हाथीना पगे बंधाती साकळ (३) साकळ, हेड, बेडी
निगडन न० साकळे बांधवु ते
निगडित वि० साकळे बांधेलु
निगद् १ प० जाहेर करवु (२) जणाववु, कहेवु (३) संबोधवु (४) गणतरी करवी (५) नामथी ओळखवु
निगदित वि० कहेलु (२) प्रेरेलु
निगम् १ प० [निगच्छति] पासे जवु, प्राप्त करवु (२) -मां प्रवेश करवो
निगम पु० वेद, वेदवाक्य (२) वेदना अंगभूत के समजवामां सहायभूत ग्रंथ (३) देव के संतनो उपदेश (४) तर्कशास्त्र, नीतिशास्त्र (५) संघ, काफलो (६) शहेर (७) निश्चय, प्रतिज्ञा, खातरी (८) बजारनो मार्ग
निगमन न० तारवेलो निर्णय (२) अंत, उपसंहार
निगर पु०, **निगरण** न० गळी जवु ते
निगल, निगाल पु० गळी जवु ते (२) घोडानु गळु के डोक (३) साकळ

निगीर्ण वि० गळी जवायेलु, गळेलु (२) छुपायेलु, ढकायेलु

निगूढ वि० सतायेलु; सताडेलु (२) छानु, गुप्त (३) गूढ, रहस्यरुप

निगूढम् अ० गुप्त रीते

निगूहन न० सताडवु के गुप्त राखवु ते

निगृहित वि० पकडेलु, अटकावेलु; रोकेलु (२) हरावेलु (दलीलमा)

निगृहीति स्त्री० काबू; अकुश (२) पराभव, पराजय

निग्रह् ९ प० [निगृह्णाति] निग्रह करवो, अकुशमा राखवु (२) रोकवु, अटकाववु (३) सजा करवी (४) पकडवु, लेवु (५) वश करवु, हराववु (६) वध करवु, मीचवु

निग्रह पु० काबू, अकुश (२) निरोध, रुकावट (३) वश के तावे करवु ते (४) दूर करवु ते (५) केद; बधन (६) उपचार, उपाय (रोगनो) (७) शिक्षा, सजा (८) उल्लघन

निग्राह पु० एक प्रकारनो शाप (२) सजा

निघर्ष पु०, **निघर्षण** न० घसवु ते, घसावु ते

निघंट(–टु) पु०, शब्दसूचि; शब्दोनो कोश (खास करीने यास्के समजावेला वैदिक शब्दोनो)

निघात पु० प्रहार

निघ्न वि० तावेदार, अधीन

निघ्नान वि० हणतु, हणनारु

निचय पु० सग्रह, ढगलो (२) निधि, भडार (३) समूह (घटक भागोनो)

निचयिन् वि० –थी भरेलु, –थी पूर्ण

निचि ५ उ० एकठु करवु, ढगलो करवो (२) पाथरवु, ढाकवु, छावु

निचित वि० ढकायेलु, छवायेलु (२) परिपूर्ण (३) ढगलो करायेलु

निचुल पु० एक जातनु बरु (२) कालिदासनो (समकालीन) कविमित्र

निचुलक न० छातीनु बख्तर (२) पेटी (धनुष्य इ० नी)

निचुलित वि० पेटीमा मूकेलु

निचोल पु० ओछाड; ढाकण (२) बुरखो

निचोलक पु० चोळी, कबजो (२) छातीनु बख्तर

निज् ३ उ० धोवु, स्वच्छ करवु (२) [नाहवु, शुद्ध थवुं

निज वि० पोतानु (२) सहज (३) विशिष्ट, खास

निटल, निटिल न० कपाळ

निडीन न० पक्षीनु ऊडता ऊडता नीचेनी तरफ वळवु ते

नितराम् अ० अत्यत (२) पूरेपूरु, तद्दन (३) चोक्कस, नक्की (४) सतत

नितल न० एक पाताळ

नितंब पु० कूलो, थापो (स्त्रीनो) (२) पर्वतनो ढोळाव–बाजु (३) नदीना किनारानो ढोळाव

नितंबवती स्त्री० भारे अने ढळता नितब- [वाळी स्त्री

नितंबिन् वि० सुदर अने ढळता नितंबवाळु (२) सुदर ढोळाव के बाजुवाळु (पर्वत)

नितंबिनी स्त्री० जुओ 'नितबवती'

नितांत वि० अतिशय; असाधारण

नितांतम् अ० अत्यंत, घणुं ज

नित्य वि० शाश्वत, अविनाशी, कायमनु (२) अवश्य करवानु, वैकल्पिक नही तेवु (३) रोजनु, सामान्य ('नैमित्तिक'थी ऊलटु) (४) (समासने अते) हमेशा रहेतु (५) हमेशा रत रहेतु

नित्यकर्मन् न० दररोज करवानु धार्मिक कार्य

नित्यजात वि० नित्य जन्मवावाळु

नित्यम् अ० हमेशा

नित्यशस् अ० दररोज

निदर्शक वि० जोनारु (२) दर्शावनारु

निदर्शन वि० दर्शावनारु; जाहेर करनारु (२) उपदेशनारु (३) न०

दर्शन, दृश्य (४) दर्शाववु ते (५) पुरावो, साबिती (६) दृष्टांत

निर्दर्शिन् वि० गमतु, गोठे तेवु (२) समजवाळु [(३) परसेवो

निदाघ पु० उष्णता, गरमी (२) उनाळो

निदाघकर पु० सूर्य

निदाघकाल पु० उनाळो

निदाघधामन् पु० सूर्य

निदान न० दोरडु (२) मूळ कारण; कारण (३) रोगना कारणनी तपास

निदिध्यास पु०, **निदिध्यासन** न० निरंतर चिंतन

निदृश् –प्रेरक० दर्शाववु (२) साबित करवु (३) समजाववु, दृष्टांत आपवु

निदेश पु० आज्ञा, हुकम (२) कथन

निद्रा स्त्री० ऊंघ (२) सुस्ती; आळस

निद्रालस वि० ऊंघमां घेरायेलु

निद्रालु वि० निद्रायुक्त

निद्रित वि० ऊंघमां पडेलु

निधन वि० दरिद्री, गरीब (२) पु०, न० मृत्यु (३) अंत

निधनता स्त्री० गरीबाई

निधा ३ उ० मूकवु (२) सोंपवु (३) दबावी देवु (४) चिंतववु (५) संघरवु (६) याद राखवु

निधान न० मूकवु ते (२) राखवु ते; साचववु ते (३) संग्रह; निधि, भंडार

निधि पु० भंडार, खजानो, कोठार (२) समुद्र (३) वंशानुक्रमशास्त्र

निधिनाथ, निधीश पु० कुबेर

निधुवन न० कंपवु ते; क्षोभ (२) क्रीडा

निध्यै १ प० ध्यान धरवु, चिंतववु

निध्वान पु० ध्वनि, शब्द

निनद् १ प० अवाज करवो; गर्जना करवी (२) पडघो पडवो

निनद पु० ध्वनि (२) गुंजारव

निनंक्षु वि० मरी जवा इच्छतु (२) नासी जवा इच्छतु

निनाद पु० जुओ 'निनद'

निपत् १ प० नीचे पडवु, नीचे ऊतरवु (२) –नी तरफ फेंकावु (३) पगे पडवु (४) हुमलो करवो (५) भाग्यमां आवी पडवु
–प्रेरक० वध करवो, नाश करवो

निपा २ प० पीवु, चूसवु (२) चुंबवु (३) आंख के कान वडे रसपूर्वक जोवु के सांभळवु

निपात पु० नीचे पडवु ते, नीचे ऊतरवु ते (२) आक्रमण; हुमलो (३) फेंकवु ते, नाखवु ते (४) अकस्मात (५) नाश, मरण (६) मिश्रित थवु ते (७) अनियमित रूप, रूपाख्यान न थतु होय तेवो शब्द (अव्यय इ०)

निपातित वि० नीचे पडतु के ऊतरतु (२) विनाशक (३) नाश पामेलु

निपान न० पीवु ते (२) जळाशय (३) हवाडो (४) आधार

निपीड् १० उ० पीडवु, त्रास आपवो (२) दबाववु (३) जोरथी पकडवु

निपीडन न० जोरथी दबाववु ते (२) पीडवु ते, त्रास आपवो ते

निपीडना स्त्री० पीडा, दुःख

निपुण वि० प्रवीण, चतुर, अनुभवी (२) नाजुक, सूक्ष्म, तीव्र (३) पूरेपूरु, सचोट [सचोट रीते

निपुणम् अ० कुशळताथी (२) पूरेपूरु,

निबद्ध वि० बांधेलु (२) जोडेलु, संबद्ध (३) जडेलु, सज्जड बेसाडेलु (४) अटकावेलु (५) व्यापेलु

निबर्ह् १० उ० वध के नाश करवो

निबर्हण वि० नाश करनारु (२) न० वध, नाश, कतल

निबर्हित वि० नाश करेलु

निबंध् ९ प० बांधवु (२) सांकळ वडे बांधवु (३) जोडवु, स्थिर करवु (४) रचवु; रचना करवी

निबंध पु० बांधवु-जोडवु-वळगाडवु ते (२) आसक्ति, राग (३) रचवु ते (४) ग्रंथ (५) अंकुश, दाब

निबंधन न० बांधवु ते (२) रचना करवी ते (३) अंकुशमा राखवु ते (४) बंधन, बेडी (५) गाठ बंध (६) आधार, टेको (७) मूळ, कारण, हेतु (८) आश्रयस्थान

निबंधिन् वि० बांधतु, जोडतु (२) संबद्ध (३) उत्पन्न करतु

निबिड वि० गाढु (२) मुश्केल, कठण

निबिडित वि० गाढु (२) भारे (३) जकडीने दबावेलु

निबिरीस वि० निबिड, गाढु

निबुध् १ प० जाणवु, समजवु, शीखवु (२) गणवु, मानवु

निबृह् १, ६ प० नाश करवो

निबोध पु०, **निबोधन** न० जाणवु ते, समजवु ते (२) जणाववु ते

निभ वि० (समासने अंते)—ना जेवु, सदृश (२) पु०, न० तेज, प्रकाश (३) ढोंग, कपट (४) मिष, बहानु

निभल् १० उ० भाळवु, निहाळवु

निभालित वि० जोयेलु, निहाळेलु

निभृत वि० नीचे मूकेलु (२) —थी भरेलु, पूर्ण (३) अदृश्य, गुप्त (४) शांत, निश्चल, नीरव (५) विनयी, नम्र (६) दृढ निश्चयी (७) मीचेलु, बंध करेलु (८) एकांत

निभृतम् अ० छानी रीते, गुप्त रीते

निमग्न वि० डूबी गयेलु (२) तल्लीन (३) आथमेलु (४) ऊंडु

निमग्ननाभि, निमग्नमध्या स्त्री० जेनी नाभि ऊंडी छे तेवी स्त्री (२) पातळी केडवाळी स्त्री

निमज्जथु पु० डूबकु मारवु ते (२) पथारीमा पडवु ते, सूई जवु ते

निमज्जन न० डूबकु मारवु ते (२) डूबी जवु ते (३) लवलीन थवु ते

निमज्ज् ६ प० [निमज्जति] डूबी जवु, डूबकु मारवु (२) अदृश्य थवु (३) तल्लीन थवु [बोलाववु

निमंत्र् १० उ० निमंत्रण आपवु,

निमंत्रण न० निमंत्रवु ते, बोलाववु ते

निमित्त न० कारण, हेतु, प्रयोजन (२) बाह्य कारण ('उपादान'-कारणथी ऊलटु) (३) निशान, लक्ष्य (४) भविष्यसूचक चिह्न

निमिष् ६ प० आंखो मीचवी, पलकारो मारवो

निमिष पु० आंखनो पलकारो (२) आंखना पलकारा जेटलो समय

निमील् १ प० आंख बंध करवी (२) मरण पामवु (३) झांखु पडवु (४) बिडाई जवु (५) अदृश्य थवु, आथमवु

निमीलन न० आंख बंध करवी ते (२) आंख मींचवी ते: मृत्यु

निमीलित वि० बंध करेलु, मीचेलु (२) ढांकी दीधेल, छाई दीधेलु

निमेष पु० आंखनो पलकारो (२) पलकारा जेटलो समय [क्षण

निमेषांतर न० पलकारा जेटलो समय,

निम्न वि० ऊंडु, नीचु (२) न० ऊंडाण, नीची जमीन (३) नीच कृत्य

निम्नगा स्त्री० नदी (२) पर्वत उपरथी ऊतरतो प्रवाह

निम्ननाभि पु० नाजुक, पातळु

निम्नाभिमुख वि० नीचेनी तरफ वहेतु

निम्नित वि० ऊंडु, नीचु

निम्नोन्नत वि० ऊंचु-नीचु, विषम

नियत वि० नियममा रखायेलु, निग्रह करेलु, संयमित (२) निश्चित, नक्की (३) स्थिर, दृढ (४) अनिवार्य (५) दृढ रीते पाळलु (व्रत)

नियतम् अ० हमेशा, सतत (२) नक्की, चोक्कस [कर्तव्यकर्म

नियति स्त्री० संयम (२) नसीब (३)

नियम् '१ प० [नियच्छति] नियत्रणमा राखवु, निग्रह करवो (२) आपवु (३) शिक्षा करवी (४) नियमन करवु —प्रेरक० काबूमा राखवु, निग्रह करवो (२) बाधवु, जकडवु (३) ओछु के हळवु करवु (ताप इ०)

नियम पु० अकुश, दाव (२) धारो, कायदो (३) रीत, चाल (४) व्रत, प्रतिज्ञा (५) बधन, नियत्रण (६) योगना आठ अगोमानु एक

नियमन न० निग्रह, शासन, नियत्रण (२) बाधवु ते (३) नियम

नियमविधि पु० रोजनु धर्मकृत्य

नियमित वि० नियम के निग्रहमा रखायेलु (२) हळवु के मर्यादित करायेलु (३) शासित (४) निश्चित (५) पाळेलु (व्रत के तप)

नियंतृ पु० सारथि (२) शासक, नियमन करनार [नियमन, प्रतिबध

नियत्रण न०, **नियंत्रणा** स्त्री० निग्रह,

नियत्रित वि० निग्रह के नियत्रणमा रखायेलु [शासन करनारु

नियामक वि० नियमन करनारु (२)

नियुक्त वि० नीमेलु, योजेलु (२) आज्ञा के परवानगी अपायेलु (३) जोडेलु, बाधेलु (४) पु० अधिकारी, अमलदार

नियुज् ७ आ० नीमवु, निमणूक करवी (२) आज्ञा करवी (३) जोडवु, बाधवु (४) नियम करवो —प्रेरक० उपयोगमा लेवु

नियुद्ध न० कुस्ती, मल्लयुद्ध

नियोक्तृ पु० स्वामी, मालिक

नियोग पु० विनियोग, उपयोग (२) आज्ञा, हुकम (३) सोपवामा आवेलु काम, अधिकार, फरज (४) आवश्यकता, फरजियातपणु (५) सतान वगरनी विधवाए दियर के पासेना सगा साथे संतान माटे शास्त्रमान्य सबंध करवो ते

नियोगिन् पु० अधिकारी, अमुक काम माटे निमायेलो अमलदार

नियोजन न० योजवु के नीमवु ते (२) हुकम करवो ते

नियोजित वि० योजेलु, नीमेलु (२) जोडेलु (३) प्रेरेलु (४) उपयोगमा लीधेलु [माणस, सेवक

नियोज्य पु० अमुक काम माटे नीमेलो

निर् अ० ('निस्' ने बदले स्वर अने घोप व्यजन पूर्वे) '—माथी बहार', '—थी रहित, '—थी विनानु', '—थी दूर' —ए अर्थमा वपराय छे

निरक्षर वि० अभण

निरग्नि वि० यज्ञादि क्रिया सारु अग्नि नहि राखनारु; अग्निनो त्याग करनारु

निरत वि० अनुरक्त, आसक्त (२) विश्रात, थोभेलु

निरति स्त्री० अत्यत आसक्ति

निरतिशय वि० अनुपम, अद्वितीय

निरत्यय वि० सुरक्षित, भय विनानु (२) दोपरहित, स्वार्थरहित (३) पूरेपूरु सफळ

निरनुक्रोश वि० निर्दय, कठोर

निरनुरोध वि० प्रतिकूळ (२) निर्दय

निरन्वय वि० सततिहीन (२) असबद्ध, असगत (३) दृष्टि बहारनु (४) आकस्मिक (५) परिजन विनानु (६) पाछळ कशो अवशेप न रहे तेवु

निरपत्रप वि० निर्लज्ज, धृष्ट

निरपराध वि० निर्दोष, बेकसूर

निरपवाद वि० दोप के कलंक विनानु (२) अपवाद विनानु

निरपाय वि० विघ्न विनानु (२) अमोघ, निष्फळ न नीवडे तेवु

निरपेक्ष वि० अपेक्षा विनानु (२) परवा विनानु (३) इच्छा —आकाक्षा विनानु (४) निःस्वार्थ, अनासक्त (५) बेदरकार

निरापद् वि० विपत्ति विनानु
निराबाध वि० पीडा के विघ्न विनानु (२) पीडा के हेरानगति न करतु
निरामय वि० नीरोगी, तदुरस्त (२) खामी के कलंक विनानु (३) पु०, न० कल्याण, कुशळता, क्षेम
निरामिष वि० मास विनानु (२) विपयेच्छा विनानु (३) पगार के लाभ विनानु [(२) सकोचेलु
निरायत वि० खूब खेचेलु के लवावेलु
निरायति वि० जेनो अत नजीक छे तेवु
निरायास वि० महेनत वगरनु, सहेलु
निरारभ वि० कार्य के प्रवृत्ति रहित
निरालंब वि० आलवन विनानु (२) पोतानी जात पर ज आधार राखतु, स्वतत्र (३) सहाय विनानु, एकलु
निरालोक वि० अधकारमय, प्रकाग वगरनु (२) दृष्टि विनानु
निराश वि० आशारहित, हताग
निराशा स्त्री० नाउमेदी, हताशा
निराशिस् वि० उदासीन, इच्छा के तृष्णा विनानु (२) वरदान के लाभ विनानु
निराश्रय वि० आगरा विनानु (२) साथी के मित्र विनानु, एकलु
निरिंग वि० स्थिर, स्थावर
निरीक्ष् १ आ० निरीक्षण करवु, ध्यानथी जोवु (२) तपासवु, गोधवु (३) चिंतन करवु, विचार करवो
निरीक्षण न०, **निरीक्षा** स्त्री०, **निरीक्षित** न० दृष्टि, नजर, निहाळवु ते (२) गोधवु ते (३) आशा (४) ख्याल, विचार [पीडाओ विनानु
निरीति वि० अतिवृष्टि वगेरेनी
निरीह वि० इच्छा विनानु, नि स्पृह (२) निश्चेष्ट
निरुक्त न० एक वेदांग, व्युत्पत्तिशास्त्र
निरुक्ति स्त्री० व्युत्पत्तिथी शब्द समजाववो ते
निरुच्छ्वास वि० श्वास न चालतो होय तेवु (२) साकडु (३) मृत
निरुत्सव वि० उत्सव विनानु
निरुदर वि० फाद विनानु, पातळु
निरुद्ध वि० अटकावेलु, रोकेलु (२) अकुशमा रखायेलु (३) केद पूरेलु (४) ढाकेलु (५) –थी भराई गयेलु
निरुद्धति वि० ऊछळतु नहि तेवु (रथ)
निरुध् ७ उ० निरोध करवो, अटकाववु, रोकवु (२) केद पूरवु (३) नियत्रणमा राखवु
निरुपधि वि० माया – कपट विनानु
निरुपपद वि० कोई पण पदवी के इलकाब विनानु [करतु
निरुपप्लव वि० निर्विघ्न (२) पीडा न
निरुपस्कृत वि० शुद्ध, भ्रष्ट नहि थयेलु
निरूढि स्त्री० प्रसिद्धि (२) प्रवीणता
निरूप् १० उ० बारीकाईथी जोवु के तपासवु (२) निर्णय के निश्चय करवो (३) पसद करवु, नीमवु (४) अभिनय करवो (५) विचारणा करवी
निरूपण न० जोवु के तपासवु ते (२) अवलोकन, विवेचन (३) व्याख्या
निरेभ वि० नि शब्द
निरोध पु० अटकाववु ते, रोकवु ते (२) केद पूरवु ते (३) घेरी लेवु ते (४) निग्रह करवो ते (५) सपूर्ण नाश
निरोधक वि० अटकावनारु, रोकनारु
निरोधन न० अटकाववु ते (२) सयमन (३) कारागृहमा नाखवु ते
निर्ऋति स्त्री० नाश; विनाश (२) आफत, विपत्ति, दुर्भाग्य (३) मृत्यु के बरबादीनी देवता, नैर्ऋत्य अर्थात् दक्षिण-पश्चिम खूणानी देवी
निर्गम् १ प० [निर्गच्छति] बहार नीकळवु – जवु (२) फूटवुं, नीकळवु, उत्पन्न थवु (३) जता रहेवु, दूर थवु
निर्गम पु० बहार नीकळवु के जवु ते

निर्धौत वि० स्वच्छ करेलु, धोयेलु
निर्नमस्कार वि० अविनयी, उद्धत (२) जेनो कोई सत्कार नथी करतु तेवु, तुच्छकारायेलु
निर्नाणक वि० पैसा विनानु, गरीब
निर्नाथ वि० अनाथ, असहाय
निर्नाभि वि० डूटी खुल्ली रहे के डूटी सुधी न पहोचे तेवु (पहेरेलु वस्त्र)
निर्बल वि० नबळु, अशक्त
निर्बंध् ९ प० आग्रह करवो, हठ करवी
निर्बंध पु० आग्रह, हठ (२) आजीजी (३) भारे प्रयत्न
निर्भग्न वि० भागेलु, तूटेलु (२) वळेलु (३) हीन, कगाल
निर्भय वि० भयरहित, सुरक्षित
निर्भर वि० अतिशय, गाढ, तीव्र (२) (समासने अते) पूर्ण, भरेलु
निर्भरम् अ० अत्यत, गाढपणे
निर्भर्त्स् १० उ० ठपको आपवो, धमकी आपवी (२) शरमावी देवु, पाछु पाडी देवु [तिरस्कार, धमकी
निर्भर्त्सन न०, **निर्भर्त्सना** स्त्री० ठपको,
निर्भा २ प० प्रकाशवु, देखावु (२) प्रगट थवु
निर्भिद् ७ उ० भागवु, फाडवु (२) चीरवु (३) प्रगट करवु, खुल्लु पाडवु
निर्भिन्न वि० तोडेलु, फोडेलु (२) चीरेलु (३) खोलेलु (४) खुल्लु करेलु
निर्भुग्न वि० वळेलु (२) सीधु (३) एकबीजा साथे खूब दबायेलु
निर्भेद पु० भागवु, फोडवु के फाडवु ते (२) चीरो, फाट (३) खुल्लु के प्रगट करी देवु ते (४) नाश
निर्भोग वि० भोगमा आसक्ति विनानु
निर्मक्षिक वि० माखो विनानु (२) दखल वि एकात
निर्मथ न० ते
(२) f
निर्मद वि० मदमत्त नहि तेवु, शात (२) गर्विष्ठ नहि तेवु, नम्र
निर्मम वि० ममतारहित, विरक्त (२) नि स्वार्थ, नि स्पृह
निर्मर्याद वि० अनत, अमाप (२) मर्यादानु उल्लघन करनारु, दुष्ट, पापी (३) उद्धत, नियत्रण विनानु
निर्मल वि० स्वच्छ, शुभ्र (२) निष्पाप (३) तेजस्वी, प्रकाशित
निर्मथ् १, ९ प० मथन करवु, वलोववु (२) घसीने अग्नि उत्पन्न करवो (३) मारवु, कूटवु (४) पूरेपूरो नाश करवो
निर्मा ३ आ०, २ प० निर्माण करवु, बाधवु, रचवु (२) वसाववु (शहेर) (३) रचवु – लखवु (काव्य)
निर्माण न० मापवु ते (२) प्रमाण, मर्यादा (३) उत्पन्न करवु के रचवु ते (४) सर्जन, सरजेली वस्तु (५) आकार, घाट, रचना (६) ग्रथ
निर्मातृ वि० बनावनारु, रचनारु (२) उत्पन्न करनारु
निर्माथ पु० जुओ 'निर्मथ'
निर्मानुष वि० निर्जन
निर्माल्य वि० स्वच्छ, निर्मळ (२) न० स्वच्छता (३) देव उपर चडावेली के चडावीने उतारेली वस्तु (फूल इ०) (४) वापरीने काढी नाखेली वस्तु
निर्मित वि० बनावेलु, सरजेलु, रचेलु (२) कृत्रिम (३) अनुष्ठित
निर्मुक्त वि० छोडी मूकेलु, छूटु करेलु (२) ससार के तेनी आसक्तिमाथी मुक्त (३) निचोवीने काढेलु (४) पु० जेणे पोतानी काचळी तरत ज उतारी नाखी छे तेवो साप
निर्मुच् ६ प० [निर्मुचति] छोडी देवु, छुटकारो करवो (२) त्याग करवो
निर्मूल् १० उ० निर्मूळ करवु
निर्मूल वि० (२)
के प्रमाण २)

स.

निर्मूलन न० समूळ विनाश, निकंदन
निर्मृज् २ प० लूछी नाखवु, साफ करवु
निर्मृष्ट वि० लूछी नाखेलु
निर्मोक पु० मुक्त करवु ते (२)[illegible], चामडु (३) सापनी कांचळी
निर्मोक्ष पु० मुक्ति, छुटकारो
निर्यत् १० उ० बदलो लेवो के वाळवो (२)पाछु वाळवु (३) क्षमा करवु (४)बक्षिस करवु
–प्रेरक० छूटनी जवु, गणी लेवु
निर्यत् वि० बहार नीकळतु
निर्या २ प० बहार जवु (२) व्यतीत थवु, पसार थवु (समय)
–प्रेरक० हांकी काढवु (२)अनुष्ठान शरू करवु
निर्याण न० जवा नीकळवु ते, प्रस्थान (२) अदृश्य-लुप्त थवु ते (३) मृत्यु (४) मोक्ष (५) हाथीनी आंखनो खूणो (६)पगे बांधवानु दोरडु (ढोरने)
निर्यात वि० बहार नीकळेलु (२)बाजुए मूकेलु(धन) (३)पूरु परिचित
निर्यातन न० पाछु आपवु ते (थापण इ०) (२) देवु पाछु वाळवु ते (३) वेर लेवु ते (४) मारी नाखवु ते
निर्यातित वि० पाछु आपेलु
निर्यास पु०,न० वृक्ष वगेरेमांथी झरतो रस (२)अर्क
निर्यूह पु० टोच उपरनी घूमटी (२) अर्क (३) खूटी (४) दरवाजो (५) फूलनी कलगी (६) कबूतर वगेरेने बेसवा भींतमा रखातु लाकडु
निर्योग पु० पोशाक, शणगार (२) गायो बांधवानु दामण
निर्योगक्षेम वि० अप्राप्तनी प्राप्ति अने प्राप्तनी रक्षानी इच्छामांथी मुक्त, कई मेळववा-साचववानी भांजगड विनानु
निर्लक्षण वि० शुभ लक्षणो विनानु (२) अगत्यनु नहि तेवु, तुच्छ (३) [illegible]
(४)[illegible]
निर्लेप [illegible]
निर्लोभ [illegible]
निर्लुंठन [illegible]
निर्वचन [illegible]
निर्वपनम् [illegible]
निर्वप् [illegible]
निर्वपण न० [illegible]
निर्वर्ण् १० उ० [illegible]
निर्वर्त् १ प० [illegible] (२)[illegible] पूर्ण करवु
–प्रेरक० [illegible]
निर्वह् १ प० पार पडवु, सफळ थवु (२)पूरु थवु(३)–थी निभाव करवो
–प्रेरक० पूरु करवु, पार पाडवु (२) [illegible] (समय)
निर्वहण न० अंत, समाप्ति (२) [illegible] (३)नाटकना वस्तुने [illegible] भूमिका [illegible] लाववु ते (नाट्य०)
निर्वा २ प० फूंकावु, पवन नाखवो (२) टाढा थवु, टाढा पडवु (३) फूंक मारीने ओलवी नाखवु, बुझाई जवु (४)शांत पडवु – थवु
निर्वाच्य वि० कहेवाने अयोग्य (२) अनिंद्य, दोषरहित
निर्वाण ('निर्वा' नु भू० कृ०) वि० ओलवी नाखेलु (२) मुक्त (३) मृत (४) आथमेलु (५) शांत थयेलु – पडेलु (६) न० बुझाई जवु ते(७) अदृश्य थवु ते (८) मृत्यु (९) अतिम मुक्ति(१०)संपूर्ण शांति – तृप्ति

निर्वात वि० पवन वगरनु
निर्वाद पु० निंदा (२) लोकापवाद, आळ (३) अफवा (४) वादविवादनो अंत आववो ते
निर्वाप पु० तर्पण, श्राद्ध
निर्वापण न० तर्पण, श्राद्ध (२) बक्षिस, दान (३) ओलवी नाखवु ते (४) बीज विखेरवा के वाववा ते (५) शांत के ठंडु पाडवु ते (६) नाश, वध
निर्वापयितृ वि० ओलवी नाखनारु (२) ठंडु पाडनारु, शांत करनारु
निर्वापित वि० ओलवी नाखेलु (२) ठंडु पाडेलु (३) वध करेलु
निर्वास पु०, निर्वासन न० देशनिकाल करवु के थवु ते (२) वध, कतल
निर्वाह पु० जुओ 'निर्वहण'
निर्विकल्प वि० कोई विकल्प के शंका न होय तेवु (२) ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान-ना भान विनानु (समाधि)
निर्विकल्पम् अ० आनाकानी विना
निर्विकार वि० विकार के फेरफार विनानु (२) उदासीन, निःस्पृह
निर्विचार वि० अविचारी
निर्विचारम् अ० अविचारीपणे
निर्विघ्न वि० विघ्न के हरकत विनानु
निर्विण्ण ('निर्विद्' नु भू० कृ०) वि० खिन्न, कटाळेलु (२) दुःखित, शोकग्रस्त
निर्विद् ४ आ० –थी कटाळवु
निर्विद्ध वि० घवायेलु; हणायेलु (२) एकबीजाथी छूटु पडेलु
निर्विमर्श वि० अविचारी
निर्विवर वि० छिद्र के अवकाश विनानु (२) गाढु
निर्विवाद वि० विरोध के तकरार विनानु
निर्विश् ६ प० भोगववु, अनुभववु (२) शणगारवु (३) परणवु
निर्विशंक वि० शंका के भय विनानु
निर्विशेष वि० भेद के तफावत विनानु (२) तुल्य, समान
निर्विशेषम्, निर्विशेषेण अ० तफावत कर्या विना, समान रीते
निर्विषय वि० पोताना घर के उचित स्थानमाथी हाकी कढायेलु
निर्विष्ट वि० भोगवेलु, अनुभवेलु (२) परणेलु (३) पामेलु, पहोंचेलु (४) पेठेलु (६) वेठेलु, पडाव नाखेलु
निर्वीर्य वि० निर्बळ, पराक्रमहीन
निर्वृ ५ उ० सुख पामवु, तृप्त थवु
निर्वृत् १ आ० समाप्त थवु, अंत आववो (२) बनवु, थवु
–प्रेरक० सिद्ध करवु, समाप्त करवु
निर्वृत वि० सुखी, स्वस्थ, निश्चिंत, संतुष्ट (२) समाप्त
निर्वृति स्त्री० शांति, तृप्ति, सुख (२) समाप्ति (३) नाश, मृत्यु (४) मोक्ष
निर्वृत्त वि० सिद्ध, समाप्त (२) मृत
निर्वृत्तमात्र वि० तरतमा ज पूरु थयेलु
निर्वृत्ति स्त्री० सिद्ध थवु – समाप्त थवु ते (२) फळ, परिणाम (३) –थी निवृत्त थवु के दूर रहेवु ते (४) मोक्ष
निर्वेद पु० खेद; कटाळो, निराशा (२) दुःख, शोक (३) मानभंग (४) विरक्ति, वैराग्य
निर्वैर वि० वेररहित
निर्व्यपेक्ष वि० निःस्पृह, उदासीन
निर्व्यलीक वि० दंभ के जूठ विनानु
निर्व्यंजक वि० प्रगट – खुल्लु करनारु
निर्व्यंजन वि० दंभ वगरनु, प्रमाणिक
निर्व्याज वि० निष्कपट, प्रमाणिक (२) छळ के बनावट विनानु (३) पराक्रमथी मेळवेलु
निर्व्यापार वि० चेष्टा के प्रवृत्ति विनानु (२) बेकार; कामकाज विनानु
निर्व्यूढ वि० पूर्ण करेलु, निष्पन्न करेलु (२) वधेलु, विकसेलु (३) मापित

करेलु, बतावी आपेलु (४) त्यागेलु, पडतु मूकेलु (५) व्यूहरचनामा गोठवायेलु के गोठवेलु (६) काढी मूकेलु; धकेलो काढेलु

निर्व्यूह पु० खीटी (२) एक हथियार (३) टोच उपरनी घूमटी

निर्व्रीड वि० निर्लज्ज, धृष्ट

निर्ह्राद पु० मळत्याग करवो ते

निर्हार पु० लई जवु ते, दूर करवु ते (२) खेची काढवु ते (काटो इ०) (३) निर्मूळ करवु ते (४) शबने अग्निदाह माटे बहार लई जवु ते (५) खानगी द्रव्यसचय करवो ते (६) मळ-मूत्रनु विसर्जन करवु ते

निर्हृ १ प० बहार खेची काढवु (२) हरण करवु (३) शबने बाळवा बहार काढवु (४) दूर करवु (दोष इ०)

निर्ह्राद पु० ध्वनि, अवाज (२) पक्षीओनो कलरव

निर्ह्री, निर्ह्रीक वि० निर्लज्ज, बेशरम

निलय पु० सतावानी जगा (२) निवासस्थान, घर (३) विनाश (४) आथमवु ते

निलयन न० निवासस्थान, निवास (२) आश्रय स्थान, आशरो

निली ४ आ० चोटवु (२) उपर बेसवु, उपर ऊतरवु (३) सतावु, भरावु

निलीन वि० सतायेलु, अदृश्य थयेलु (२) भळी गयेलु, एकरूप थयेलु (३) घेरायेलु (४) पूर्ण (५) बदलायेलु, रूपातर पामेलु (६) नाश पामेलु

निवप् १ प० वाववु के विखेरवु (बीज) (२) पितृतर्पण करवु (३) वधेरवु (प्राणी)

निवपन न० पितृतर्पण करवु ते (२) वाववु – वेरवु – विखेरवु ते

निवर्तन न० पाछु आववु ते (२) पाछु वाळवु ते (३) न बनवु के थवु ते (४) –माथी विरमवु ते

निवर्हण वि० जुओ 'निबर्हण'

निवस् १ प० रहेवु (२) मोजूद होवु (३) मुकाम करवो (४) २ आ० कपडा पहेरवा के बदलवा

निवसन न० निवासस्थान (२) वस्त्र

निवह् १ उ० पाछे लई जवु के लाववु (२) ऊचकवु, वहन करवु

निवह वि० उत्पन्न करनारु, निपजावनारु (२) पु० समूह, ढगलो, जथो

निवात वि० पवनना झपाटा विनानु (२) न० वायुरहित स्थान (३) वायुना झपाटा न होवा ते, शाति; निष्कपता (४) मजबूत बखतर

निवाप पु० वाववानु धान्य, बियावु (२) पितृतर्पण (३) अर्पण, बक्षिस

निवापांजलि पु०, **निवापोदक** न० पितृओने पाणीनी अजलि अर्पवी ते

निवार पु०, **निवारण** न० निवारवु ते, रोकवु ते (२) अटकायत, इलाज

निवास पु० रहेवु ते (२) निवासस्थान (३) मुकाम करवो ते (४) वस्त्र

निवासन न० निवासस्थान (२) मुकाम करवो ते [पहेर्यु होय तेवु

निवासिन् वि० रहेतु; वास करतु (२)

निविद् २ प० (मुख्यत्वे प्रेरक रूपे) निवेदन करवु, जणाववु (२) जाहेर करवु, दर्शाववु (३) नजराणु करवु (४) –नी सभाळमा सोपवु

निविश् ६ आ० बेसवु (२) अटकवु, पडाव नाखवो (३) –उपर स्थिर करवु (४) प्रवेश करवो (५) तल्लीन थवु (६) परणवु (७) नीचे ऊतरवु

–प्रेरक० स्थिर – एकाग्र करवु (मनने) (२) मूकवु (३) बेसाडवु, स्थापित करवु (४) परणाववु (५) पडाव नाखवो (६) चीतरवु (७) लखवु (८) सोपवु

निविष्ट वि० बेठेलु (२) तल्लीन (३) पडाव नाखेलु (४) प्रवेशेलु

निवृ ५, ९, १ उ० घेरी लेवु —प्रेरक० निवारवु, रोकवु
निवृत् १ आ० पाछु फरवु (२) नासी जवु (३) विमुख थवु (४) अटकवु (५) अत आववो, पूरु थवु
निवृत ('निवृ'नु भू०कृ०) वि० चारे बाजुथी घेरायेलु (२) निवारेलु; अटकावेलु (३) न० बुरखो, पडदो
निवृत्त ('निवृत्'नु भू०कृ०) वि० पाछु फरेलु (२) चाल्यु गयेलु (३) —माथी विरमेलु (४) पूरु—समाप्त थयेलु
निवृत्तकारण वि० काई ज हेतु के प्रयोजन न रह्या होय तेवु
निवृत्तयौवन वि० जेनी जुवानी पाछी आवी छे तेवु [विनानु
निवृत्तलौल्य वि० इच्छा के लोलुपता
निवृत्तहृदय वि० विमुख थयेलु (२) अनुकंपावाळु बनेलु
निवृत्ति स्त्री० पाछु फरवु ते (२) अत, बध पडवु ते (३) प्रवृत्ति छोडी देवी ते (४) विमुख थवु ते
निवेदन न० जणाववु ते (२) जाहेर करवु ते (३) रजूआत (४) अर्पण करवु ते
निवेद्य न० नैवेद्य
निवेश पु० प्रवेश (२) मुकाम करवो ते, पडाव (३) निवासस्थान (४) घेराव, विस्तार (५) मूकवु ते (६) परणवु ते (७) नगर स्थापवु ते
निवेशन न० प्रवेश (२) निवासस्थान (३) लग्न (४) नगर वसाववु ते (५) छावणी, पडाव (६) शहेर
निश् स्त्री० रात्री ('निशा'ना द्वितीया द्वि०व०ना रूप पछी विकल्पे आवे छे)
निशठ वि० निष्कपट
निशब्द वि० न बोलतु, चूप
निशम् ४ प०, १० उ० साभळवु, ध्यान आपवु (२) निहाळवु, अवलोकवु
निशा स्त्री० रात्रि (२) स्वप्न
निशाकर पु० चद्र
निशागृह न० सूवानो ओरडो
निशाचर पु० राक्षस (२) चोर
निशाचरी स्त्री० राक्षसी (२) अभिसारिका (३) वेश्या
निशाट, निशाटन पु० राक्षस (२) घुवड
निशात वि० तीक्ष्ण, धारवाळु
निशात्यय पु० रात्रिनो अत—परोढ
निशानाथ पु० चद्र
निशामुख न० सायकाळ
निशाविहार पु० निशाचर, राक्षस
निशांत न० घर, निवास (२) अत पुर (३) पु० परोढ
निशित वि० धारवाळ, तीक्ष्ण
निशीथ पु० मध्यरात्रि (२) रात्रि, सूवानो समय
निशुभ्, निशुंभ् ६ प० [निशुभति] (पग तळे) रोळी नाखवु
निशुंभ पु० वध, कतल (२) (धनुष्यने) वाळवु के भागवु ते
निशुंभन न० वध, कतल
निश्चक्रम् अ० पूरेपूरु, तमाम
निश्चय पु० तपास, खातरी (२) निर्णय, ठराव (३) सकल्प; लक्ष्य
निश्चर् १ प० बहार नीकळवुं (२) उत्पन्न थवु
निश्चल वि० अचळ, स्थिर
निश्चाय पु० समुदाय
निश्चायक वि० निर्णायक
निश्चि ५ उ० निश्चय करवो
निश्चित वि० नक्की करेलु (२) न० निश्चय, निर्णय
निश्चितम् अ० नक्की करीने, नि सशय
निश्चिंत वि० चिंता विनानु (२) अविचारी
निश्चेतस् वि० उन्मत्त, पागल
निश्चेष्ट वि० चेष्टा विनानु, स्थिर (२) शक्तिहीन, दूबळु

निश्च्युत् १ आ० टपकवुं, [illegible]
निश्रम पु० सतत श्रम
निश्रयणी स्त्री० निसरणी
निश्राण पु० धार काढवानो पाणो (२) हथियार (तरवार)
निश्रेणि(-णी) स्त्री० निसरणी
निश्वस् २ प० श्वास अंदर लेवो (२) निसासो नाखवो
निश्वास पु० निसासो
निषक्त ('निषञ्ज्'नुं भू० कृ०) वि० नाखेलुं, वळगाडेलुं (२) प्रतिबिंबित थयेलुं (३) आसक्त
निषण्ण ('निषद्'नुं भू० कृ०) वि० बेठेलुं, अढेलीने बेठेलुं (२) खिन्न
निषद् (नि+सद्) १ प० [निषीदति] बेसवुं, अढेलीने बेसवुं (२) खिन्न थवुं, निराश थवुं (३) [illegible] (४) दुःखी थवुं
निषद्या स्त्री० हाट, बजार (२) नानो [खाटलो
निषध पु० नळराजाना देशनुं नाम (उत्तरनो कुमाऊ प्रदेश)
निषङ्ग पु० आसक्ति, वळगवुं ते (२) संबंध (३) भाथुं
निषज् (नि+सज्) १ प० [निषजति] वळगवुं, चोटवुं (२) आसपास वींटळावुं (३) प्रतिबिंब पडवुं (४) आगमन थवुं
निषाद पु० पारधी, माछीमार वगेरेनुं काम करनार एक आदिवासी जात (२) चांडाल (ब्राह्मण अने शूद्रीथी जन्मेलो) (३) संगीत सप्तकनो छेल्लो के सातमो स्वर
निषादित वि० बेसाडेलुं
निषादिन् वि० बेठेलुं, आडुं पडेलुं (२) पु० महावत
निषिक्त वि० सींचेलुं (२) रेडेलुं
निषिच् (नि+सिच्) ६ प० [निषिञ्चति] सिंचन करवुं, रेडवुं, छांटवुं (२) वीर्यसिंचन करवुं

[illegible]

निष्कपट वि० [illegible]
निष्करुण वि० दया [illegible]
निष्कर्ष पु० सार, [illegible] (२) [illegible]
निष्कर्षण न० [illegible] (२) निर्णय [illegible]
निष्कल् १० प० [illegible] हांकी काढवुं
निष्कल वि० क्षीण, दुर्बळ (२) अवयव–भाग विनानुं (३) [illegible]
निष्कल्मष वि० डाघ के कलंक विनानुं
निष्कस् –प्रेरक० हांकी काढवुं, देशनिकाल करवुं (२) खेंची काढवुं
निष्कंटक वि० कांटा वगरनुं (२) शत्रु विनानुं, भय के त्रास विनानुं
निष्कंप वि० निश्चल; स्थिर
निष्काम वि० कामना विनानुं (२) फळनी इच्छा विनानुं (३) निःस्वार्थ

निष्कारण वि० हेतुरहित, कारण वगरनु (२) निरुपयोगी (३) नि स्वार्थ
निष्कारणम् अ० निरर्थक, वगर कारणे
निष्कालिक वि० जेनु आयुष्य पूरु थवा आव्यु छे तेवु (२) अजेय
निष्कासित वि० काढी मूकेलु, हाकी काढेलु (२) वहार नीकळेलु (३) मूकेलु, स्थापेलु
निष्किंचन वि० गरीब, दरिद्री
निष्कुट पु० घर पासेनो वाग (२) अतपुर (३) वारणु, दरवाजो
निष्कुलाकृ ८ उ० छाल उतारवी के काढी नाखवी (२) निर्वंश करवु
निष्कुलीन वि० हलका कुळनु
निष्कुष् ९ प० फाडवु, चूथवु (२) खेंची काढवु (३) छोतरा काढवा
निष्कुषित वि० खेंची काढेलु (२) फाडी नाखेलु (३) काढी मूकेलु (४) खवाई गयेलु
निष्कूज वि० चूप, अवाज न करतु
निष्कूट वि० दयाहीन, क्रूर
निष्कृ ८ उ० दूर करवु, काढी मूकवु (२) टुकडा करवा
निष्कृति स्त्री० प्रायश्चित्त (२) उपकारनो वदलो वाळवो ते (३) माफी, क्षमा (४) घुतकारवु ते
निष्कृष् १ प० खेंचवु, खेंची काढवु (२) छीनवी लेवु (३) फाडवु, चीरवु
निष्कोषणक न० दात खोतरवानी सळी
निष्क्रम् १ उ० जतु रहेवु, विदाय थवु (२) वहार नीकळवु (३) अटकवु, वध थवु
निष्क्रम पु०, **निष्क्रमण** न० वहार नीकळवु ते (२) विदाय थवु ते
निष्क्रय पु० मूल्य, किंमत (२) वक्षिस (३) वदलो वाळवो ते (४) खरीदी (५) वेचाण (६) अदलोवदलो
निष्क्रांत वि० वहार गयेलु, विदाय थयेलु (२) ऊपसी आवेलु, ऊठेलुं
निष्क्रिय वि० अक्रिय (२) यज्ञादि क्रिया न करनारु (३) तत्त्वज्ञानी (सन्यासी) (४) न० परब्रह्म
निष्टन पु० निसासो, दु खनो उद्‌गार
निष्टप् १ प० तपाववु (२) शेकवु, तळवु (३) घसीने साफ करवु
निष्टानक पु० गर्जना, घोघाट (२) दु खनो ऊहकार
निष्टाप पु० सहेज तपाववु ते
निष्ठ वि० (समासने अते) –उपर के –मा रहेलु के आवेलु (२) –ना सवधी (३) –मा आसक्त, –मा रत, –मा तत्पर (४) –मा श्रद्धावाळु (५) उत्पन्न करनारु
निष्ठा स्त्री० अवस्था, स्थिति (२) पायो, आधार (३) स्थिरता, दृढता (४) आसक्ति, भक्ति, श्रद्धा (५) अत, परिणाम, समाप्ति (६) कुशळता, निपुणता (७) मृत्यु
निष्ठान न० चटणी, अथाणु (२) अधिष्ठान [वगेरे उमेरेलु
निष्ठानित वि० स्वादिष्ट करवा मसाला
निष्ठापित वि० पूरु – सिद्ध करेलु
निष्ठित वि० –मा के –उपर आवेलु (२) निष्ठावत (३) पूरु करेलु (४) स्थिर (५) निश्चित करेलु
निष्ठिव् १, ४, प० वहार काढवु (२) थूकवु [न० थूकवु ते
निष्ठीव पु०, न०, **निष्ठीवन, निष्ठीवित**
निष्ठुर वि० क्रूर (२) कठोर
निष्ठ्यूत वि० वहार काढेलु – फेंकेलु (२) थूकेलु (३) उच्चारेलु (४) न० थूक, थूकवु ते
निष्ण, निष्णात वि० प्रवीण, चतुर (२) पार पाडेलु (३) कबूलेलु
निष्पत् १ प० वहार नीकळवु, ऊडवु
निष्पत्ति स्त्री० उत्पत्ति (२) परिपाक (३) पूर्णता, समाप्ति

निष्पत्राकृ ८ उ० जोरथी बाण मारवु (जेथी बाण पीछा सुधी आरपार नीकळी जाय) (२) खूब वेदना थाय तेम करवु

निष्पद् ४ आ० –माथी नीकळवु (२) जन्मवु, उत्पन्न थवु

निष्पन्न वि० उत्पन्न (२) सिद्ध, समाप्त

निष्परिकर वि० तैयारी वगरनु

निष्परिग्रह वि० परिग्रह के मालमत्ता विनानु (२) पु० तपस्वी, त्यागी

निष्पर्याय वि० क्रम विनानु

निष्पंक वि० कादव विनानु, स्वच्छ

निष्पंद वि० स्थिर, कंपरहित (२) न० स्नेहनो गाठ (३) समूह

निष्पाप वि० पापरहित, निर्दोष

निष्पिष् ७ प० भूको करवो, दळवु (२) घसावु, छोलावु (३) हाथ चोळवा (४) दात पीसवा

निष्पीडन न० दबाववु ते, निचोववु ते

निष्पीडित वि० दबावेलु, निचोवेलु

निष्पूर्त न० वाव-कूवा, धर्मशाळा वगेरे बंधाववा ते

निष्पेष पु०, **निष्पेषण** न० खूब दबाववु ते (२) कचरी नाखवु ते (३) दळी नाखवु ते (४) अफाळवु के पछाडवु ते

निष्प्रतिकार, **निष्प्रतिक्रिय** वि० उपचार न थई शके तेवु (२) निर्विघ्न, रुकावट विनानु

निष्प्रतिघ वि० रुकावट विनानु

निष्प्रतिद्वंद्व वि० शत्रु के हरीफ विनानु

निष्प्रतीकार वि० जुओ 'निष्प्रतिकार'

निष्प्रत्याश वि० निराश, हताश

निष्प्रत्यूह वि० विघ्न के रुकावट विनानु

निष्प्रभ वि० निस्तेज (२) कमजोर

निष्प्रयोजन वि० कारण वगरनु (२) प्रयोजन विनानु (३) निरुपयोगी

निष्प्रवाण (–णि) न० नवु – कोरु वस्त्र

निष्प्राण वि० मृत्यु पामेलु, निर्जीव (२) नमालु, निर्बळ

निष्फल वि० फळ विनानु (२) व्यर्थ; फोगट (३) निरर्थक, नकामु (४) वंध्य

निष्यंद पु० स्रवव – टपकवु ते (२) स्राव, प्रवाह, टपकतो रस (३) परिणाम

निस् अ० क्रियापद पूर्वे –थी दूर, –नी बहार, खातरी, पूर्णपणे, उघाडापणुं, भोग, उल्लंघन वगेरे अर्थमां वपराय छे (२) धातु-साधित नहि एवा नामो पहेलां –नी बहार, –थी दूर, विनानु, रहित –एवा अर्थमां वपराय छे (स्वरो अने घोष व्यंजनो पूर्वे 'निस्' ना 'स्' नो र् थई जाय छे, ऊष्माक्षरो पहेलां तेनो विसर्ग थई जाय छे; 'च्', 'छ' पहेलां 'श्' थाय छे अने 'क्' तथा 'प्' पहेलां 'ष्' थाय छे)

निसर्ग पु० आपी देवु ते, बक्षिस (२) मळत्याग करवो ते (३) तजी देवु ते (४) सृष्टि (५) स्वभाव, प्रकृति

निसर्गज वि० कुदरती, स्वभावसिद्ध

निसर्गनिपुण वि० कुदरती रीते ज कुशळ

निसर्गभिन्न वि० कुदरती रीते ज जुदु

निसर्गसिद्ध वि० जुओ 'निसर्गज'

निसूदन वि० नाश करनु (२) न० हिंसा, वध [मारवु (३) आपी देवु

निसृज् ६ प० छूटु करवु, छोडवु (२)

निसृष्ट वि० आपेलु (२) तजेलु (३) परवानगी आपेलु

निसृष्टार्थ पु० एलची, दूत, वकील

निसृष्टार्थदूती स्त्री० नायक-नायिकाना मनोरथ जाणी से सफळ थाय तेवु कार्य पोतानी जाते ज करनारी

निस्तमस्क वि० अंधारा विनानु, प्रकाशित (२) पापरहित

निस्तल वि० तळिया विनानु (२) वर्तुळाकार (३) चल, हालतु

निस्तंतु वि० संतान विनानु (२) ब्रह्मचारी [चपळ, नीरोगी

निस्तंद्र (–द्रि) वि० आळसु नहि तेवु (२)

निस्तार पु० पार करवु ते, ओळगवु ते(२) –माथी बचवु के छूटवु ते(३) मोक्ष (४) देवु चूकववु ते (५) उपाय
निस्तिमिर वि० जुओ 'निस्तमस्क'
निस्तीर्ण वि० बचावेलु (२) पार करेलु (३) पूर्ण करेलु
निस्तुष वि० फोतरा विनानु (२) खोडखापण विनानु (३) साफ, स्वच्छ
निस्तॄ १ प० पार करवु, ओळगी जवु (२) पसार करवु (समय) (३) नासी छूटवु, –माथी बचवु (४) प्रायश्चित्त करवु, साटु वाळवु
निस्तेजस् वि० तेजोहीन, तेज विनानु
निस्त्रप वि० शरम विनानु, निर्लज्ज
निस्त्रिंश वि० त्रीसथी वधु (२) क्रूर, दया विनानु (३) पु० तरवार
निस्त्रैगुण्य वि० सत्त्व-रजस्-तमस् ए त्रण गुणोथी पर थयेलु
निस्पंद वि० चेष्टारहित, स्थिर (२) पु० ध्रूजवु ते, कपवु ते
निस्पृह वि० स्पृहा-इच्छा वगरनु
निस्यंद पु० जुओ 'निष्यद'
निस्यंदिन् वि० झमतु, झरतु, टपकतु
निस्रव, निस्राव पु० प्रवाह, झरणु (२) भातनु ओसामण
निस्वन पु०, **निस्वनित** न०, **निस्वान** पु० शब्द, अवाज
निहत वि० मारी नाखेलु, हणेलु (२) –मा ठोकेलु के खोसेलु
निहन् २ प० हणवु, नाश करवो (२) प्रहार करवो, मारवु (३) जीतवु (४) वगाडवु (ढोल) (५) दूर करवु
निहार पु० जुओ 'नीहार'
निहित वि० मूकेलु, स्थापेलु (२) अनामत मूकेलु, सोपेलु
निहीन वि० नीच, अधम
निह्नव पु० नामुकर जवु ते (२) छुपाववु ते (३) दरगुजर करवु ते
निह्नु २ आ० छुपाववु (२) नामुकर जवु
निह्नुत वि० छुपावेलु (२) नामुकर गयेलु [छुपाववु ते
निह्नुति स्त्री० नामुकर जवु ते (२)
निंज् २ आ० धोवु, स्वच्छ करवु
निंद् १ प० निंदा करवी, वखोडवु
निंदक वि० निंदा करनारु, वखोडनारु
निंदन न०, **निंदा** स्त्री० वदगोई, वगोवणी (२) ठपको
निंदित ('निंद्' नु भू० कृ०) वि० निंदा करायेलु (२) निषिद्ध (३) नीच, अधम [निषिद्ध
निंद्य वि० निंदा करवा योग्य (२)
निंब पु० लीमडो
निंस् २ आ० चुववु
निःक्षत्र, निःक्षत्रिय वि० क्षत्रियो विनानु
निःक्षिप् ६ प० जुओ 'निक्षिप्'
निःक्षिप्त वि० फेंकेलु के मोकलेलु (२) पसार करेलु (समय)
निःक्षेप पु० फेंकी देवु ते (२) पसार करवु ते (समय) (३) लूछवु ते (आसु)
निःशब्द वि० अवाज विनानु
निःशस्त्र वि० शस्त्र विनानु
निःशक वि० भय के शका विनानु
निःशकम् अ० शका के भय विना
निःशिष् –प्रेरक० पूरेपूरु नाबूद करवु (२) कशु शेष न राखवु
निःशेष वि० सपूर्ण, पूरेपूरु
निःशेषम्, निःशेषेण अ० पूरेपूरु होय तेम
निःश्रयणी, निःश्रयिणी स्त्री० निसरणी, दादर
निःश्रीक वि० शोभा के सौंदर्य विनानु (२) कमनसीब, दुःखी
निःश्रेणि (–णी) स्त्री० जुओ 'निःश्रयणी'
निःश्रेयस न० मोक्ष
निःश्वस् २ प० निसासो नाखवो (२) सिसकारो भरवो (३) (हाथीए) वराडवु (४) श्वास लेवो

निःश्वसन, निःश्वसित न०, निःश्वास पु० निसासो (२) श्वास बहार काढवो ते
निःसत्त्व वि० सत्त्वहीन, निर्बळ (२) हीन (३) मिथ्या, [illegible] (४) अविद्यमान
निःसपत्न वि० शत्रु के हरीफ विनानुं
निःससम् अ० कसमये (२) दुष्टतार्थी
निःसरण न० बहार नीकळवुं ते (२) मरण (३) निर्वाण, मोक्ष (४) उपाय
निःसरणि वि० उपाय के मार्ग विनानुं
निःसह वि० थाकेलुं (२) असह्य
निःसंग वि० संग के गबध विनानुं (२) निःस्पृह (३) निःस्वार्थ (४) निर्विघ्न
निःसंचार पु० हरवुं-फरवुं नहि ते
निःसंज्ञ वि० बेहोश
निःसंशय वि० संशय वगरनुं, नक्की
निःसंस्कार वि० असंस्कारी
निःसाधारम् अ० टेका के आधार विना
निःसार वि० सत्त्वहीन (२) तुच्छ (३) पु० बहार जवुं ते (४) समूह
निःसारण न० बहार काढवुं ते, हांकी काढवुं ते (२) घरनी बहार नीकळवानो मार्ग [काढेलुं
निःसारित वि० काढी मूकेलुं, हांकी
निःसीमन् वि० अमर्याद, अपार
निःसूत्र वि० दोरा विनानुं (२) आधार के मदद विनानुं [वहेवुं, झरवुं
निःसृ १ प० बहार नीकळवुं (२)
निःस्नेह वि० चीकट के भेज विनानुं (२) लागणी विनानुं
निःस्पर्श वि० कर्कश, कठण
निःस्पंद वि० निश्चल, स्थिर
निःस्पृह वि० स्पृहा के दरकार विनानुं
निःस्रव पु० सिलक, बाकी
निःस्राव पु० व्यय, खर्च (२) भातनुं ओसामण (३) बहार वहेवराववुं ते
निःस्व वि० धनहीन, गरीब
निःस्वन वि० अवाज विनानुं (२) पु० अवाज

निःस्वनाद पु० [illegible]
नी १ उ० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible]
नी पु० ([illegible]) [illegible], मार्गदर्शक, [illegible]
नीकाश स्त्री० [illegible]
नीच वि० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible], [illegible] (५) [illegible]
नीचा [illegible] (नदी) (२) [illegible]
नीचैस् अ० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible]
नीड पु०, न० पक्षीनो माळो (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible] अंदरनो भाग के बेठक (५) [illegible]
नीडज पु० पक्षी (२) माछलुं
नीत ('नी' नुं भू० कृ०) वि० [illegible] जवायेलुं, दोरी जवायेलुं (२) पमाडेलुं, पहोंचाडेलुं (३) [illegible]
नीति स्त्री० दोरवुं ते (२) वर्तवुं ते, वर्तन (३) शिष्टता, शिष्टाचार (४) डहापण (५) राजनीति (६) सदाचार
नीतिकुशल, नीतिनिपुण वि० राजनीतिज्ञ (२) शाणुं, डाह्युं
नीतिमत् वि० राजनीतिज्ञ (२) डाह्युं, शाणुं (३) धर्मनीति अनुसरतुं
नीतिव्यतिक्रम पु० राजनीति के धर्मनीतिना नियमनुं उल्लंघन
नीतिसंधि पु० राजनीतिनी रीत
नीध्र न० छापरानो छेडानो भाग
नीप वि० नीचे आवेलुं, ऊंडे आवेलुं (२) पु० पर्वतनी तळेटी (३) एक जातनुं कदंबवृक्ष, तेनुं फूल (चोमासामां थाय छे) (४) एक राजवंश
नीर न० पाणी [झांखुं
नीरक्त (निर्+रक्त) वि० रंग विनानुं,

नीरचर वि० जळचर
नीरज (निर्+रज) वि० धूळ विनानु (२) वासना विनानु
नीरज वि० पाणीमा थतु (२) पु० वीरणवाळो (३) न०कमळ (४) मोती
नीरत (निर्+रत) वि० आसक्त नहि तेवु
नीरद, नीरधर पु० मेघ, वादळ
नीरव वि० (निर्+रव) अवाज विनानु
नीरस (निर्+रस) वि० स्वाद विनानु (२) रस विनानु (३) निष्फळ; नकामु
नीरध्र (निर्+रध्र) वि० काणा विनानु (२) खूब नजीक नजीक आवेलु
नीराज् –प्रेरक० चळके तेम करवु, प्रकाशित करवु (२) आरती उतारवी
नीराजन न०, **नीराजना** स्त्री० शस्त्रो चळकता करवा ते (२) आरती
नीरुच् (निर्+रुच) वि० तेज विनानु, झाखु [रोग) वि० तदुरस्त
नीरुज् (–ज), **नीरोग** (निर् + रुज्,
नील् १ प० नीलु रगवु
नील वि० भूरु, श्यामल (२) पु० श्यामल रग (३) (रामना सैन्यमानो) एक वानर (४) एक पर्वत
नीलकंठ पु० मोर (२) शिव
नीलपटल न० काळु आवरण (२) आधळानी आख उपरनो अधारपडदो
नीलमणि पु०, **नीलरत्न** न० नीलम
नीलराजि स्त्री० गाढ अधारु
नीललोहित वि० जाबुडा रगनु (२) पु० शिव
नीलस्नेह पु० दृढ स्नेह
नीलांजन न० सुरमो (काळो)
नीलि पु० गळीनो छोड
नीलिका स्त्री० गळीनो छोड (२) शेवाळ
नीलिमन् पु० भूराश, काळाश
नीलिराग पु० दृढ प्रेम
नीली स्त्री० गळीनो छोड
नीलीभांड न० गळीनु वासण
नीलीराग पु० दृढ प्रेम
नीलोत्पल न० नील कमळ
नीवार पु० खेड्या विना ऊगेली डागर
नीवि (–वी) स्त्री० स्त्रीओना वस्त्रनी दूटीए वळाती गाठ (२) मूळ मूडी
नीहार पु० बरफ, हिम (२) धुम्मस, झाकळ (३) मळत्याग
नु अ० प्रश्न, वितर्क, विकल्प, अनुनय, अपमान, पश्चात्ताप, आदेश – ए अर्थ बतावे (२) प्रश्नार्थ सर्वनामो साथे 'खरेखर'? 'सभवित होई शके'? –ए अर्थमा वपराय (३) हवे, तेथी करीने (४)–नी पेठे (५) जलदीथी (६) आजथी माडीने, हवे पछी
नु २ प० वखाणवु, प्रशसा करवी
नुत ('नु' नु भू० कृ०) वि० प्रशसेलु
नुति स्त्री० स्तुति, प्रशसा
नुत्त ('नुद्' नु भू० कृ०) वि० धकेलायेलु, प्रेरायेलु (२) हाकी कढायेलु, दूर करायेलु
नुद् ६ उ० हाकवु, आगळ चलाववु (२) प्रेरवु, उश्केरवु (३) दूर करवु
नुद वि० (समासने अते) दूर करनारु, हाकी काढनारु ['नुत्त'
नुन्न ('नुद्' नु भू० कृ०) वि० जुओ
नू ६ प० [नुवति] वखाणवु
नूतन, नूत्न वि० नवु (२) ताजु (३) विचित्र, नवाईभरेलु
नूनम् अ० खरेखर, चोकस (२) मोटे भागे, घणे भागे (३) हवे, तेथी करीने
नूपुर पु०, न० झाझर
नृ पु० माणस (२) जण, व्यक्ति (स्त्री के पुरुष) (३) मानव जाति
नृकेसरिन् पु० नरसिंहावतार
नृजग्ध वि० मनुष्यभक्षी
नृत् ४ प० नाच करवो, नृत्य करवु (२) रगभूमि उपर अभिनय करवो
नृत्त, नृत्य न० नाच

नृप, नृपति पु० राजा
नृपनीति स्त्री० राजनीति
नृपशु पु० जानवर जेवो माणस
नृपसंश्रय पु० राजानो आश्रय
नृपात्मज पु० राजकुंवर
नृपात्मजा स्त्री० राजकुंवरी
नृपाल पु० राजा
नृपांगण(–न) न० राजदरबार
नृपांश पु० कररूपे राजाने अपातो भाग (अनाजनो छठ्ठो, आठमो इ० हिस्सो)
नृशंस वि० क्रूर, घातकी (२) न० घातकी कृत्य
नृशंसन न० क्रूरता
नृषद्, नृसद् स्त्री० बुद्धि
नृसिंह पु० (विष्णुनो चोथो) नरसिंह अवतार (२) मनुष्यमां श्रेष्ठ
नृसोम पु० महापुरुष
नृहरि पु० जुओ 'नृसिंह'
नेजन न० धोवुं ते (२) धोबीघाट
नेतव्य वि० दोरवा के लई जवा योग्य
नेतृ पु० नायक, आगेवान (२) गुरु
नेत्र न० आंख (२) रवैयानी दोरी, नेतरु (३) रेशमी वस्त्र
नेत्रगोचर वि० नजरनी मर्यादामां आवेलु, नजरे पडे तेवु
नेत्रनिंसिन् वि० आंखने स्पर्शतु (ऊन)
नेत्रांजन न० काजळ, आंजण
नेत्रोत्सव पु० जोवी गमे तेवी सुंदर वस्तु
नेदिवस् वि० अंदाज करनारु
नेदिष्ठ वि० सौथी वधु नजीक
नेदीयस् वि० वधु पासे
नेपथ्य न० आभूषण, शणगार (२) वस्त्र, पहेरवेश (३) नटनो पहेरवेश (४) नटो वस्त्रपरिधान करे ते स्थळ (पडदा पाछळ)
नेपथ्यविधान न० नटोना वस्त्राभूषण वगेरेनी गोठवण [परिघ
नेमि पु० पैडानो घेराव (२) धार (३)
नेमिवृत्ति वि० [illegible]
नेमी स्त्री० जुओ 'नेमि' [सं.
नेय वि० दोरी जवा योग्य, दोरी जवाय
नेष्ट वि० नहि इष्ट, खराब (२) अनिष्ट (३) [illegible] (४) अनिष्टकर माणस
नेष्टु पु० माटीनुं ढेफु
नैक वि० अनेक (२) [illegible] (३) [illegible] पण नहि, नेक
नैकटिक वि० नजीकनुं (२) पु० भिक्षु
नैकट्य न० निकटता, समीपता
नैकषा [illegible]
नैचाशास् [illegible] (२) [illegible] [illegible
नैकृतिक वि० दुष्ट, लुच्चो, नीच (२)
नैगम वि० वेद के शास्त्रने लगतुं (२) पु० वेदनुं [illegible] (३) उपाय, युक्ति (४) वेपारी (५) शहेरनो माणस
नैज वि० पोतानु, आत्मीय
नैतल न० नरक पाताळोमानुं एक (वितल)
नैतल्सद्मन् न० यम
नैत्यक न० (रोज करवानु) नैमित्त
नैदाघ पु० उनाळो
नैद्र वि० निद्राजनक (२) ऊंघ भरेलु (३) बिडायेलु (पांखडीओवाळु जेम)
नैपुण (–ण्य) न० निपुणता; कुशळता
नैभृत्य न० नम्रता (२) गुप्तता (३) चुपकीदी
नैमय पु० वेपारी
नैमित्त वि० निमित्त (भविष्य-सूचक चिह्न) संबंधी (२) पु० ज्योतिषी
नैमित्तिक वि० प्रसंगोपात्त, आनुषंगिक (२) पु० भविष्य भाखनार
नैमिष वि० क्षणिक (२) न० नैमिषारण्य (ज्यां सौतिए महाभारतनी कथा संभळावी हती) [नार
नैयायिक पु० न्याय – तर्कशास्त्र जाण-

नैरंतर्य न० सातत्य
नैराश्य न० निराशा (२) इच्छा के अपेक्षानो अभाव
नैर्ऋत पु० राक्षस
नैर्ऋती स्त्री० दुर्गा (२) नैर्ऋत्य खूणो
नैर्ऋत्य वि० दक्षिण-पश्चिम तरफनु
नैर्गुण्य न० गुणोनो अभाव, निर्गुणता (२) सारा गुणोनो अभाव
नैर्घृण्य न० क्रूरता, घातकीपणु
नैर्मल्य न० निर्मळता
नैवेद्य न० देवने धरेलो भोज्य पदार्थ
नैश, नैशिक वि० रात्रीनु, रात्री सबधी (२) राते देखातु
नैषध पु० (निषध देशनो) नळराजा
नैषधीय वि० नळराजा सबधी
नैष्कर्म्य न० कर्मरहितता (२) कर्म के कर्मना फळोमाथी छुटकारो (३) आत्मज्ञान (४) मोक्ष
नैष्किक वि० एक निष्कना मूल्यनु (२) पु० टकशाळनो उपरी
नैष्ठिक वि० छेल्लु, छेवटनु (२) निश्चित (३) स्थिर, दृढ (४) उत्तम, श्रेष्ठ, सपूर्ण (५) पूरेपूरु माहितगार (६) मरण पर्यंत ब्रह्मचर्य धारण करनारु (७) आवश्यक, करवु ज पडे तेवु (८) पु० नैष्ठिक ब्रह्मचारी
नैष्ठुर्य न० निष्ठुरता, कठोरता
नैसर्गिक वि० स्वाभाविक, कुदरती
नो (न+उ) अ० नहि, ना
नो चेत् अ० नहि तो [प्रेरवु ते
नोदन न० काढी मूकवु ते (२) हाकवु के
नोधा अ० नव-प्रकारे
नौ स्त्री० नौका, वहाण
नौका स्त्री० वहाण, होडी
नौक्रम पु० होडीओनो बनावेलो पुल
नौचर पु० खलासी
नौव्यसन न० मधदरिये वहाण डूबवु ते
नौसाधन न० नौकाओनो काफलो

न्यक् अ० तिरस्कार—तुच्छकार बतावे ('कृ' के 'भू' धातु साथे)
न्यक्करण न०, **न्यक्कार** पु० निंदा, तिरस्कार, अपमान
न्यग्भाव पु० नीचापणु (२) तिरस्कार
न्यग्भावित वि० तिरस्कृत (२) हलकु के पाछु पाडेलु
न्यग्रोध पु० वड [सुदर स्त्री
न्यग्रोधपरिमंडला स्त्री० सुविकसित—
न्यस् ४ प० नीचे मूकवु, नीचे फेकवु (२) दूर करवु, तजवु (३) उपर के अदर मूकवु (४) —ने सोपवु (५) बक्षवु, अर्पवु (६) रजू करवु (दलील)
न्यस्त ('न्यस्'नु भू० कृ०) नाखेलु, फेंकेलु (२) अदर के उपर मूकेलु (३) चीतरेलु (४) सोपेलु (५) तजेलु (६) न्यासविधिथी स्पर्शेलु (७) धारण करेलु
न्यस्तचिह्न वि० चिह्न के लक्षण विनानु
न्यस्तशस्त्र वि० जेणे आयुधो छोडी दीधा छे तेवु (२) नि शस्त्र
न्याय पु० रीत, पद्धति, धारो, रिवाज (२) योग्यता, वाजबीपणु (३) कायदेसर—धर्मानुसार वर्तन (४) फरियाद (५) फेंसलो, चुकादो (६) दृष्टात, कहेवत (७) (गौतम-प्रवर्तित) न्यायदर्शन
न्यायतः अ० योग्य रीते, विधि प्रमाणे
न्याय्य वि० यथार्थ, वाजबी, कायदेसर (२) हरहमेशनु
न्यास पु० मूकवु ते (२) चिह्न (३) थापण (४) चीतरवु के दोरवु ते (५) त्याग, सन्यास (६) मत्र अने विधि-सहित शरीरना जुदा जुदा अगोने देवताओने सोपवा ते—एक धर्मविधि
न्यासीकृ ८ उ० थापण तरीके मूकवु (२) —नी सभाळमा मूकवु [सूतेलु
न्युब्ज वि० नीचु नमेलु, वळेलु (२) ऊधु
न्यून वि० ओछु (२) हलकु, ऊतरतु (३) खोडवाळु (४) विनानु—रहित

न्यूनता स्त्री० –ना करता ऊतरतापणु (२) ऊणप, ओछापणु

न्यूनभाव पु० ओछु के ऊतरतु होवापणु

न्यूनाधिक वि० [illegible], असमान

न्युब्ज् (नि+उब्ज्) ६ प० [illegible], नमवु

प

प वि० (समासने अंते) पीनारु, पीतु (२) रक्षण करनारु

पक्कण पु० चाडाळनु झूपडु (२) [जगलीओनो वास

पक्ति स्त्री० राधवु ते (२) पचावयु ते (३) परिपक्व थवु ते (४) प्रतिष्ठा, गौरव

पक्व वि० राधेलु (२) पचावेलु (३) परिपक्व थयेलु, तैयार थयेलु (४) अनुभवी, चालाक (५) विनाशोन्मुख

पक्वान्न न० राधेलु अन्न

पक्ष पु० पाख (पखीनी) (२) पीछु (बाणने छेडे खोसेलु) (३) पडखु (४) कोई पण वस्तुनी बाजु (५) लश्करनी बाजु (६) पखवाडियु (शुक्ल के कृष्ण) (७) विभाग, जूथ (८) वश, कुळ (९) कोई पण विभागनो पक्षकार – अनुयायी

पक्षक पु० बाजुनु खानगी बारणु (२) पक्ष, बाजु (३) –ना पक्षनो माणस

पक्षचर पु० टोळामाथी विखूटो पडेलो हाथी (२) चद्र (३) अनुचर

पक्षच्छिद् पु० इद्र (पर्वतोनी पाखो कापनार)

पक्षता स्त्री० पक्ष लेवो के रजू करवो ते

पक्षति स्त्री० पाखनु मूळ (२) सुद पडवो

पक्षद्वार न० बाजुनु खानगी बारणु

पक्षपात पु० एक पक्षनी तरफदारी

पक्षपातिता स्त्री० पक्षपात (२) पाखो वडे ऊडवु ते

पक्षपातिन् वि० पक्षपात करनारु (२) –ना पक्षमा जोडानारु, अनुयायी

पक्षपुट पु० पाख

पक्षमूल पु० पाखनु मूळ

पक्षवत् वि० पाखवाळु (२) पक्षने अनुसरनारु (३) सारा कुळनु

पक्षहन् पु० पक्षी (२) [illegible]

पक्षिणी स्त्री० [illegible]

पक्षिन् वि० पाखवाळु (२) पक्षवाळु, पक्षमा जोडायेलु (३) पु० पक्षी (४) बाण (५) शिव [भाई)

पक्षिपति पु० सपाति (जटायुनो मोटो

पक्षिपुंगव पु० जटायु (२) गरुड

पक्षिराज् (–ज) पु० गरुड (२) जटायु

पक्षीय वि० (समासने अंते) –ना पक्षनु

पक्षीन्द्र पु० गरुड

पक्ष्मन् न० पापण (२) केसरतंतु (३) फूलनी पाखडी (४) हरणना वाळ (५) मूछना वाळ

पक्ष्मल वि० सुन्दर अने दीर्घ पापणो-वाळु (२) वाळथी भरेलु

पक्ष्य पु० पक्षनो अनुयायी

पच् १ उ०. राधवु; पकावबु (२) भठ्ठीमा नाखी सेकवु (ईंट) (३) पचाववु (अन्न) (४) परिपक्व थवु

पच वि० (समासने अंते) राधनारु

पचेलिम वि० पोतानी मेळे – स्वाभाविक रीते पाकतु (२) जलदी रधातु के पाकतु

पट् १ प० जवु (२) १० उ० के प्रेरक० फाडवु (३) बाकोरु पाडवु (४) छेद पाडवो, वीधवु (५) उपाडी – खेंची काढवु (६) १० उ० गूथवु; वणवु

पट पु०, न० कपडु; वस्त्र (२) पडदो (३) बुरखो (४) लखवा के चीतरवा माटेनु फलक (५) न० छाज, छापरु
पटच्चर पु० चोर (२) न० जीर्ण वस्त्र
पटच्छिदा स्त्री० कपडानी चीदरडी
पटभास पु० जाळीदार बारीनु वाकु
पटमंडप पु० तवू
पटल न० छापरु (२) आच्छादन (३) आख उपरनी छावरी (४) ढगलो, जथ्यो (५) पुस्तकनु प्रकरण के खड
पटलक पु, न० पडदो, आच्छादन; बुरखो
पटलिका स्त्री० ढगलो, जथ्थो (२) नानी पेटी [आच्छादन
पटवास पु० एक सुगधी द्रव्य (२)
पटवेश्मन् न० तवू
पटह पु० नगारु; ढोल
पटहघोषक पु० ढोलथी ढढेरो पीटनार
पटांचल पु० वस्त्रनो छेडो
पटि स्त्री० रगभूमि उपरनो पडदो (२) तवूनी कनात
पटिमन् पु० कुशळता, चतुराई
पटी स्त्री० जुओ 'पटि'
पटीक्षेप पु० जुओ 'अपटीक्षेप'
पटीर पु० चदन
पटीरजन्मन् पु० चदननु झाड
पटु वि० चतुर, होशियार (२) तीव्र, जोरदार (३) नीरोगी; स्वस्थ
पटुता स्त्री० कुशळता (२) चपळता
पटोत्तरीय न० उत्तरीय वस्त्र
पटोल पु० पडोळु
पट्ट पु०, न० पाटला के तख्ता जेवु सपाट जे कई ते (२) मुगट (३) पाघडी; फेंटो (४) पाटो (५) रेशम (६) उत्तरीय
पट्टक पु० पतरु (लेख कोतरवानु)
पट्टकर्मकर पु० वणकर
पट्टदेवी स्त्री० पटराणी
पट्टन न० शहेर; नगर
पट्टमहिषी, पट्टराज्ञी स्त्री० पटराणी
पट्टवस्त्र, पट्टवासस् वि० रेशमी के रगीन कपडा पहेरेलु [राज्याभिषेक
पट्टाभिषेक पु० मुगट पहेराववो ते,
पट्टांशुक पु० रेशमी वस्त्र (२) उत्तरीय
पट्टिका स्त्री० कपडानी पट्टी, चीदरडी (२) दस्तावेज (३) सपाट पतरुं इ०
पट्टिश (–स), पट्टीश (–स) पु० भाला जेवु एक धारदार हथियार
पठ् १ प० मोटेथी वाचवु (२) भणवु (३) टाकवु, उल्लेख करवो (४) जाहेर करवु, वर्णववु
पठक पु० वाचनार; भणनार
पठन न० वाचवु ते, भणवु ते
पठित ('पठ्'नु भू०कृ०) वि० भणेलु, वाचेलु [असर करतु
पठितसिद्ध वि० मोढे वोली जवाथी ज
पण् १ आ० सोदो करवो, विनिमय करवो, वेपार करवो, खरीदवु (२) होड वकवी, जुगार खेलवो (३) १ आ०, १० उ० प्रशसा करवी
पण पु० होड के जुगार (२) होडमा मूकेली वस्तु (३) शरत, करार (४) वेपार, सोदो (५) धन, मिलकत (६) मजूरी, वेतन
पणक्रिया स्त्री० होड वकवी ते
पणबंध पु० सधि करवी ते, करार
पणव पु० नानु ढोल
पणाय पु० नफो मेळववो ते
पणायितृ पु० वेचनार
पणांगना स्त्री० वेश्या
पणितृ पु० वेपारी
पण्य वि० वेचवा-खरीदवा लायक (२) पु० वेचवानी चीज, वेपारनो माल (३) वेपार (४) किमत
पण्यपति पु० मोटो वेपारी
पण्यविलासिनी स्त्री० वेश्या
पण्यवीथी, पण्यशाला स्त्री० बजार; हाट (२) दुकान

पण्यस्त्री, पण्यागना स्त्री० वेश्या
पत् १ प० पडवु, नीचे आववु, ऊतरवु (२) ऊडवु (३) आथमवु (४) पतित थवु, अधोगति पामवी (५) कगाळ थवु (६) नरकमा पडवु (७) आवी पडवु (८) उपर पडवु
पत पु० ऊडवु ते (२) नीचे ऊतरवु ते
पतग पु० पक्षी (२) सूर्य
पतत् वि० ऊडतु (२) ऊतरतु, नीचे आवतु (३) पु० पक्षी
पतद्ग्रह पु० पिकदानी
पतन न० नीचे आववु के ऊतरवु ते, उपर पडवु ते (२) आथमवु ते (३) अधोगति थवी ते (४) भ्रष्ट थवु ते (५) पडती ('उदय' थी ऊलटु)
पतनीय न० अधोगतिकारक पापकर्म
पतग पु० पक्षी (२) सूर्य (३) पतगियु, तीड, तीतीघोडो
पतंगम पु० पक्षी (२) पतगियु
पतगिका स्त्री० नानु पक्षी (२) नानी मधमाखी (३) धनुष्यनी पणछ
पताका स्त्री० धजा, ध्वज-दड (२) प्रख्याति, प्रसिद्धि (३) निशान, चिह्न
पताकास्थान न० अपेक्षित वस्तुने बदले तेना जेवु बीजु वस्तु अकस्मात् रजू कराय ते (नाटय०)
पताकिन् वि० धजा पकडनारु (२) धजाथी शणगारेलु (३) पु० धजा पकडनारो (४) ध्वज (५) रथ
पताकिनी स्त्री० सेना, लश्कर
पति पु० धणी, भर्ता (२) मालिक, स्वामी (३) राजा, हाकेम
पतित ('पत्' नु भू० कृ०) वि० पडेलु, नीचे ऊतरेलु (२) पतन पामेलु, भ्रष्ट थयेलु (३) पराजय पामेलु (युद्धमा) (४) राखेलु, मूकेलु
पतितस्थित वि० जमीन उपर गबडेलु
पतिदेवता, पतिदेवा स्त्री० पतिने देव माननारी – पतिव्रता
पतिव्रता स्त्री० पतिव्रत पाळनारी – सती
पतिंवरा स्त्री० पोतानी मेळे पति पसंद करनारी स्त्री [illegible]
पतीयती स्त्री० पतिने [illegible]
पत्काषिन् पु० [illegible]
पत्तन न० शहेर
पत्ति पु० पगपाळो, [illegible] (२) स्त्री० लश्करनी नानी टुकडी (जेमां [illegible], [illegible], [illegible] अने पांच प्यादां होय)
पत्तिक वि० [illegible]
पत्नी स्त्री० धार्मिक विधिथी परणेली स्त्री
पत्र न० पांदडुं (२) पांखडी (३) कागळ (लखेलो के लखवा माटेनो) (४) [illegible] पान (५) पातळुं [illegible], पतरुं, वरख (६) पक्षीनी पांख (७) पीछुं (८) बाणनुं पीछुं (९) वाहन (१०) छरीनुं के तरवारनुं पानुं (११) मों के शरीरना भाग उपर करेली रंग के चित्ररचना
पत्रपुट न० (पांदडानो) पडियो
पत्रभग पु०, **पत्रभंगि(–गी)** स्त्री० मों के शरीर उपर चंदन वगेरेथी करेली चित्ररचना
पत्ररथ पु० पक्षी
पत्ररेखा, पत्रलेखा, पत्रवल्लरी, पत्रवल्लि(–ल्ली) स्त्री० जुओ 'पत्रभग'
पत्रवाह पु० पक्षी (२) बाण
पत्रविशेषक पु० जुओ 'पत्रभग'
पत्रवेष्ट पु० काननु एक घरेणु
पत्रारूढ वि० लखेलु
पत्रालंबन न० पडकार (वादविवादमा)
पत्रिका स्त्री० लखवा माटेनो कागळ (२) दस्तावेज (३) काननु एक घरेणु
पत्रिन् वि० पाखवाळु (२) पीछावाळु (३) पादडावाळु (४) पृष्ठवाळु (५) पु० बाण (६) पक्षी (७) बाज पक्षी
पत्रोर्ण न० रेशमनु वस्त्र
पथ पु० मार्ग, रस्तो

पथदर्शक पु० मार्गदर्शक, भोमियो
पथिक पु० मुसाफर, वटेमार्गु (२) भोमियो, मार्गदर्शक [समुदाय
पथिकजन पु० मुसाफर के मुसाफरोनो
पथिकसार्थ पु० संघ, काफलो
पथिन् पु० (प्रथमा ए०व० 'पंथा', समासने अंते 'पथ' थाय) रस्तो, मार्ग, वाट (२) मुसाफरी (३) गोचर – क्षेत्र – मर्यादा (४) प्रणाली, शिरस्तो
पथ्य वि० हितकर, अनुकूळ (औषध, सलाह इ०) (२) न० हितकर खोराक (३) हित, कल्याण
पद् ४ आ० जवु (२) पासे जवु (३) पामवु (४) आचरवु
पद् पु० (पहेला पांच रूप नथी, 'पद' ना द्वितीया द्वि० व० पछी विकल्पे मुकाय छे) पग, चरण (२) चोथो भाग (श्लोक इ० नो)
पद पु० पग (२) डगलु, पगलु (३) पगलानी छाप (४) निशानी, चिह्न (५) स्थान, पदवी, होद्दो (६) श्लोकनु चरण (७) शब्द (विभक्ति इ० प्रत्यय साथेनो) (८) बहानु (९) शेतरंजना पट उपरनु खानु (१०) सिक्को (११) रस्तो [होद्दो
पदक न० डगलु, पगलु (२) पदवी,
पदक्रम न० पगला भरवां ते, चालवु ते
पदगति स्त्री० चालवानी रीत
पदच्छेद पु० वाक्यना शब्दनो वर्ग कहेवो ते (२) पदनु व्याकरण
पदन्यास पु० पगलु, डगलु (२) पगलानी छाप (३) अमुक रीते पग गोठववा ते (४) श्लोक के चरण रचवा ते
पदपंक्ति स्त्री० पगलानी पंक्ति (२) शब्दोनी गोठवणी
पदभ्रंश पु० होद्दा उपरथी दूर करावु ते
पदवि(–वी) स्त्री० रस्तो, मार्ग (२) होद्दो, अधिकार

पदशः अ० पगले पगले (२) शब्दे शब्दे
पदस्थ वि० पगवाळु (२) ऊंची पदवीवाळु
पदंक्र ८ उ० पग मांडवो, पग मूकवो (२) प्रवेश करवो
पदाजि, पदात(–ति) पु० पायदळ सैनिक (२) पगपाळु चालतु
पदातिन् वि० पायदळवाळु (२) पगे चालतु (३) पु० पायदळ सैनिक
पदात्यध्यक्ष पु० पायदळनो सेनापति
पदानुग पु० अनुयायी, साथी
पदार्थ पु० शब्दनो अर्थ (२) कोई पण वस्तु, द्रव्य [गोठवणी
पदावली स्त्री० शब्दोनी हारमाळा के
पदांतर न० बीजु पगलु (२) एक पगला जेटलु अंतर
पद्धति(–ती) (पद्+हति) स्त्री० रस्तो; मार्ग (२) हार, पंक्ति (३) रीत
पद्म पु० एक दिग्गज (२) सापनी एक जात (३) रामनु एक नाम (४) कुबेरना एक भंडारनु नाम (५) एक आसन (योग) (६) न० कमळ (७) हाथीना मो के सूंढ उपरनु चित्र (८) अबज (संख्या)
पद्मक न० एक व्यूहरचना (२) हाथीनी सूंढ के मो उपरनी चित्रावली (३) पद्मासन (४) एक जातनु काष्ठ
पद्मखंड न० कमळनो समुदाय
पद्मगुणा स्त्री० लक्ष्मी
पद्मज पु० ब्रह्मा
पद्मनाभ(–भि) पु० विष्णु
पद्मभव, पद्मभू पु० ब्रह्मा
पद्मराग पु०, न० माणेक
पद्मवर्चस् वि० कमळना रंगनु
पद्मषंड न० कमळनो समुदाय
पद्मा स्त्री० लक्ष्मी
पद्माकर पु० कमळोवाळु-मोटु सरोवर (२) कमळोनो समुदाय
पद्मालय पु० ब्रह्मा

पद्मालया स्त्री० लक्ष्मी
पद्मावती स्त्री० लक्ष्मी (२) एक नदी
पद्मासन न० कमळरूपी आसन (२) योगनु एक आसन
पद्मिन् वि० चटापटावाळु (२) कमळवाळु (३) पु० हाथी
पद्मिनी स्त्री० कमळनो वेलो (२) कमळनो समूह (३) कमळवाळु सरोवर (४) स्त्रीओना चार वर्गमांना प्रथम वर्गनी स्त्री (पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी) [समुदाय
पद्मिनीखंड, पद्मिनीषंड न० कमळोनो
पद्य वि० पदनु बनेलु, पद संबंधी (२) पगने लगतु (३) चिह्नवाळु (४) न० कविता, काव्य (५) स्तुति
पद्या स्त्री० मार्ग, केडी
पद्र पु० गाम, गामडु
पनस पुं० फणसनु झाड (२) कांटो
पन्नग पु० साप
पन्नगनाशन, पन्नगारि पु० गरुड
पयस् न० पाणी (२) दूध
पयस्विन् वि० दूधवाळु (२) रसवाळु
पयस्विनी स्त्री० दूझणी गाय
पयःपूर पु० सरोवर
पयोज न० कमळ
पयोजन्मन् न० वादळ, मेघ
पयोजयोनि पु० ब्रह्मा
पयोद पु० वादळ, मेघ
पयोधर पु० मेघ (२) स्तन (३) आंचळ
पयोधि, पयोनिधि पु० महासागर; समुद्र
पयोभृत्, पयोमुच् पु० वादळ
पयोवाह पु० वादळ, मेघ
पर वि० बीजुं (२) दूरनु (३) पार आवेलु, सामी बाजुए आवेलु (४) पछीनु (५) उत्तम, श्रेष्ठ (६) पारकु, अजाण्यु (७) विरोधी, सामा पक्षनु (८) उपरातनु, वधारानु, वधेलु (९) छेवटनु (१०) परायण
पर पु० अजाण्यो, पारको, परदेशी (२) शत्रु (३) न० पराकाष्ठा (४) परब्रह्म (५) मोक्ष (६) परलोक
परकलत्र न० परस्त्री
परकीय वि० पारकानु; बीजानु, पारकुं (२) अजाण्यु; विरोधी
परकीया स्त्री० बीजानी स्त्री
परग्लानि स्त्री० शत्रुने दबाववो ते
परचक्र न० शत्रुनु सैन्य (२) शत्रुए करेली चढाई [(३) शत्रुनु
परज वि० अजाण्य (२) हलकु, ऊतरतु
परजित वि० बीजा वडे जितायेलु (२) बीजा वडे पोषायेलु (३) पु० कोयल
परतस् अ० बीजा पासेथी (२) शत्रु पासेथी (३) –थी पार, –थी पछी
परतंत्र वि० पराधीन
परतीर्थिक पु० अन्य संप्रदायनो अनुयायी
परत्र अ० परलोकमां; बीजा जन्ममां (२) न० परलोक [धार्मिक माणस
परत्रभीरु पु० परलोकथी डरनार–
परदाराः पु० ब० व० परस्त्री
परदेश पु० विदेश (२) शत्रुनो देश
परधर्म पु० बीजानो धर्म – कर्तव्य
परपक्ष पु० शत्रुनो पक्ष
परपद न० श्रेष्ठ स्थान (२) मोक्ष
परपरिग्रह वि० पराधीन; परतंत्र
परपिंड पु० पारकानु अन्न
परपुरुष पु० बीजो पुरुष; अजाण्यो माणस (२) अन्य स्त्रीनो पति (३) विष्णु [पु० कोयल
परपुष्ट वि० बीजा वडे पोषायेलुं (२)
परप्रेष्य पु० दास, नोकर
परब्रह्मन् न० परम तत्त्व, ब्रह्म
परभाग पु० बीजानो भाग (२) उत्तमता (३) सद्भाग्य, समृद्धि (४) विपुलता; अतिशयता (५) शेष भाग
परभृत् पु० कागडो (कोयलने पोषनार)
परभृत पु० कोयल (नर)

परभृता स्त्री० (मादा) कोयल (कागडी-ना माळामा उछेराती होवाथी)
परम् अ० –थी पार; –थी बहार, पछीथी (२) ते पछी, त्यार बाद (३) परतु (४) नहि तो (५) अत्यत (६) घणी खुशीथी (७) फक्त (८) बहु तो
परम वि० श्रेष्ठ, उत्तम (२) बहु दूरनु; छेल्लु (३) मुख्य (४) पूरतु (५) न० उत्तम – ऊचो – मुख्य भाग (६) (समासने छेडे) –नु मुख्यत्वे बनेलु ते (७) –मा लवलीन एवु, ते
परमगति स्त्री० मोक्ष (२) मुख्य आधार (ईश्वर देव इ०)
परमप्रख्य वि० प्रसिद्ध, प्रख्यात
परमम् अ० स्वीकृति के कबूलात –एवो अर्थ बतावे [(२) संपूर्णपणे सफळ
परमसमुदय वि० अति कल्याणकारी
परमहंस पु० उत्तम कोटीनो सन्यासी
परमाणु पु० वधु विभाग न थई शके एवो नानामा नानो भाग
परमात्मन् पु० परमात्मा, परब्रह्म
परमापद् स्त्री० मोटामा मोटी विपत्ति
परमायुध न० चक्र, एक हथियार
परमार्थ पु० परमसत्य, परमतत्त्व, परमज्ञान (२) साचु के खरु होय ते (३) कोई पण उत्तम के अगत्यनी वस्तु
परमार्थतः अ० खरेखर, चोकसपणे
परमार्थदरिद्र वि० खरेखरु दरिद्र
परमिक वि० उत्तम, श्रेष्ठ
परमेश्वर पु० परमात्मा
परमेष्ठ वि० उत्तम, श्रेष्ठ
परमेष्ठिन् वि० टोचे ऊभेलु, श्रेष्ठ (२) पु० विष्णु, शिव, ब्रह्मा, गरुड के अग्निनु नाम (३) गुरु (४) अर्हंत
परमेष्वास पु० उत्तम बाणावळी
पररमण पु० परणेली स्त्रीनो यार
परलोक पु० मृत्यु पछीनो (स्वर्ग वगेरे वीजो) लोक
परवत् वि० परतत्र, पराधीन
परवत्ता स्त्री० पराधीनता
परवश, परवश्य वि० पराधीन, परतत्र
परवाच्य न० पारकानु छिद्र
परवाद पु० अफवा (२) वाधो, तकरार
परश पु० पारसमणि (जेना स्पर्शथी लोढु वगेरे सोनु बनी जाय)
परशु पु० फरशी, कुहाडो
परशुराम पु० जमदग्निना पुत्र, विष्णुनो छठ्ठो अवतार
परश्वध पु० कुहाडो, परशु
परश्वस् अ० आवती काल पछीने दिवसे
परस् अ० –थी पार; –थी दूर (२) बीजी बाजुए [होय तेम
परसात् अ० हाथमा (सोपेलु)
परस्तात् अ० पार; सामी बाजुए, –थी दूर (२) हवे पछी, पाछळथी (३) ब्राजुए
परस्त्री स्त्री० बीजानी परणेली स्त्री
परस्पर वि० एकबीजानु (२) (ब०व०) एकबीजा समान (३) स०ना०, वि० एकबीजु (एकवचनमा ज)
परस्परम् अ० एकबीजाने
परस्व न० बीजानी मिलकत
परहित वि० बीजानु हित करनारु के ताकनारु (२) बीजाने लाभ करनारु (३) न० पारकानु भलु
परंज पु० घाणी (२) तलवारनु फळु (३) न० इद्रनु खड्ग
परंतप वि० शत्रुओने पीडनारु
परंपर वि० एक पछी एक क्रममा आवतु (२) पु० प्रपौत्र
परंपरम् अ० अनुक्रमे, एक पछी एक
परपरा स्त्री० सतत प्रवाह (२) पक्ति; समुदाय (३) योग्य क्रम (४) वश
परंपरित वि० परपरामा होय तेवु, चालु
परंपरीण वि० वशपरपरागत (२) परपरागत
परःशत वि० सोथी वधु

पर:सहस्र वि० हजारथी वधु
परा अ० प्रधानपणु, मुख्यत्व, मोकळापणु, मुक्ति, प्रतिलोमपणु, त्याग, अनुक्रमनो अभाव, निंदा, घणापणु, अपमान, घर्षण, गति, भग, अनादर अने अनावृत्ति बतावे
परा स्त्री० वाणीना चार रूपोमानु प्रथम
पराक पु० एक तप
पराकृ ८ उ० अवगणवु, उपेक्षा करवी
पराक्रम् १ उ० पराक्रम दाखववु (२) पाछु फरवु (३) हुमलो करवो
पराक्रम पु० बहादुरी, शूरातन (२) प्रयास, साहस (३) हुमलो, आक्रमण
पराक्रात वि० बहादुर, शूरवीर (२) आक्रमण करायेलु (३) पाछु फेरवायेलु
पराग पु० फूलमानी रज (२) बारीक रज
परागत वि० मृत्यु पामेलु (२) व्याप्त, छवायेलु (३) फेलायेलु
परागम् १ प० [परागच्छति] पाछु फरवु (२) व्यापवु, छावु
पराङ्मुख वि० विमुख, पीठ फेरवी होय तेवु, प्रतिकूल (२) परवा वगरनु
पराच् वि० सामे पार – बीजी बाजुए आवेलु (२) पराङ्मुख, विमुख (३) प्रतिकूल (४) बहारनी बाजु वळेलु (५) पाछु वाळेलु (६) अ० दूर (७) बहारनी तरफ
पराचीन वि० ऊधी दिशामा वळेलु (२) विमुख, परवा विनानु (३) पछीथी बनेलु (४) बहिर्मुख (५) सामी बाजुए आवेलु [–थी हारवु ते
पराजय पु० जीतवु ते, हराववु ते (२)
पराजि १ आ० पराजय पमाडवु, हराववु, जीतवु (२) –थी हारी जवु (३) –ने तावे थवु
पराजित वि० हारेलु, जितायेलु
पराडीन न० पाछळनी बाजुए ऊडवु ते
परात्पर वि० उत्तमोत्तम (२) पु० परमपुरुष, परमात्मा
पराधीन वि० बीजाने आधीन; परतंत्र
परान्न न० बीजानु अन्न [जीवनारु
परान्नभोजिन् वि० पारकानु अन्न खाईने
परापत् १ प० पासे आववु (२) पाछु फरवु (३) पडी जवु, खोवावु
परापर वि० दूरनु अने नजीकनु (२) पहेलु अने पछीनु (३) वहेलु अने मोडु (४) उपरनु अने नीचेनु
पराभव पु० पराजय; हार (२) अनादर, तिरस्कार (३) अलोप थवु ते (४) विनाश [मा होय तेवु
पराभावुक वि० नाश पामवानी तैयारी-
पराभू १ प० हराववु (२) अलोप थई जवु (३) तावे थवु
पराभूत वि० हारेलु, पराजित (२) अनादर – अपमान पामेलु
पराभूति स्त्री० पराभव
परामर्श पु० पकडवु के खेचवु ते (केश) (२) नमाववु – खेचवु ते (धनुष्य) (३) बळात्कार (४) डखल, विघ्न (५) विचार, चिंतन (६) हळवेथी स्पर्श करवो ते
परामृश् ६ प० स्पर्श करवो (२) धीमेथी घसवु – दबाववु (३) हुमलो करवो (४) भ्रष्ट करवु (स्त्री के मदिर) (५) विचार करवो, चितववु (६) स्तुति करवी
परामृष्ट वि० पकडायेलु, स्पर्शायेलु (२) बळात्कार करेलु (३) विचारेलु, चितवेलु (४) सबद्ध (५) पीडित
परायण वि० अत्यत आसक्त (२) –ना आधारवाळु, –नु आश्रित (३) रक्षक; त्राता (४) –नी साथे सबधवाळु (५) –नी तरफ लई जतु (६) न० मुख्य के उत्तम ध्येय, आश्रय के प्रयोजन (७) सार, तत्त्व (८) दृढ भक्ति (९) सर्व रोगोनी रामबाण दवा
परायत्त वि० परतंत्र, पराधीन
परायन वि० जुओ 'परायण'

परार्थ वि० बीजा हेतु के अर्थवाळु (२) बीजा माटेनु (३) पु० उत्तम प्रयोजन के लाभ (४) बीजानु हित ('स्वार्थ' थी ऊलटु) (५) मोक्ष

परार्थम्, परार्थे अ० बीजाने माटे

परार्ध न० दश करोड अबज (एकडा उपर सत्तर मीडा जेटली सख्या)

परार्ध्य वि० दूरनी के सामेनो बाजुनु (२) आगळनी अर्धी बाजुने लगतु (३) सर्वश्रेष्ठ (४) सौथी वधु सुदर के कीमती (५) दिव्य, दैवी

परावर वि० दूरनु अने नजीकनु (२) पहेलानु अने पछीनु (३) ऊचु अने नीचु (४) सौने व्यापतु (५) न० कार्य अने कारण (६) समग्र विश्व

परावरज्ञ वि० भूत-भविष्य जाणनारु

परावर्त पु० पाछु फरवु के वळवु ते (२) अदलोवदलो, विनिमय

परावसथशायिन् वि० बीजाना घरमा सूई रहेनारु

परावृत् १ आ० पाछा फरवु के वळवु

परावृत्त वि० पाछु फरेलु (२) चक्राकार फरेलु (३) पाछु आपेलु

परावृत्ति स्त्री० पाछु फरवु ते (२) पलायन करवु ते (३) चक्राकारे फरवु ते (४) अदलबदल करवु ते

परास् (परा + अस्) ४ प० तजवु (२) दूर करवु, काढी मूकवु (३) इन्कारवु [वाळु

परासिसिषु वि० हाकी काढवानी इच्छा-

परासु वि० मृत, प्राणरहित

परासुता स्त्री०, **परासुत्व** न० मृत्यु (२) पराधीन जीवन

परासेध पु० केद [(३) इन्कारेलु

परास्त वि० फेंकी दीधेलु (२) पराजित

पराहत वि० पाछु धकेली काढेलु (२) मारेलु, ठोकेलु

पराहन् २ प० पाछु धकेली काढवु (२) हुमलो करवो (३) मारवु, ठोकवु

पराह्ण पु० बपोर पछीनो समय, पाछलो पहोर

परांच् वि० जुओ 'पराच्'

परि अ० (क्यारेक 'परी' पण) धातुओ अने धातुसाधित नामो आगळ. आसपास, उपरातमा – वधु, सामे – विरोधमा, अत्यत, –ए अर्थमा (२) उपसर्ग तरीके : –नी तरफ, –नी सामे, क्रमे – एक पछी एक, भागे – हिस्सामा, –माथी, सिवाय – बाद करता, वीत्या बाद, –ने परिणामे, –थी वधु, –अनुसार, –नी प्रमाणे, –उपरातमा –ए अर्थमा (३) धातु-साधित नहि एवा नामो पूर्वे घणु, अत्यत, –ए अर्थमा (४) अव्ययरूप समासोनी शरूआतमा : –सिवाय, –ने बाद करता, –थी वीटळायेलु के घेरायेलु –ए अर्थमा (५) विशेषण-रूप समासोने अते –थी थाकेलु के कटाळेलु –एवो अर्थ बतावे

परिकथा स्त्री० धार्मिक आख्यान

परिकर पु० परिवार, अनुयायी वर्ग (२) टोळु, समुदाय (३) प्रारभ, शरूआत (४) केड बाधवी ते, सज्ज थवु ते (५) केडे बाधवानु वस्त्र

परिकर्मन् पु० सेवक, नोकर (२) न० शरीरने शणगार, सुगध वगेरेथी सस्कारवु ते (३) पग रगवा ते (४) तैयारी (५) पूजा (६) मनने शुद्ध करवानो उपाय [त्रास पमाडेलु

परिकर्षित वि० खेंचेलु; ताणेलु (२)

परिकल् १० उ० आकलन करवु, समजवु (२) पकडवु

परिकल्पन न०, **परिकल्पना** स्त्री० नक्की करवु – ठराववु ते (२) गोठवणी करवी के रचवु ते (३) पूरु पाडवु के मदद करवी ते

परिकल्पित वि० ठरावेलु, कल्पेलु (३) वहेचेलु (४) तैयार करेलु (५) गोठवेलु, योजेलु
परिकंप पु० खूब ध्रूजवु ते (२) भारे डर
परिकीर्ण वि० वेरायेलु, विखरायेलु (२) भीडवाळु थयेलु
परिकीर्तन न० कहेवु के जणाववु ते (२) वडाश मारवी ते (३) बोलाववु ते
परिकृष् १ प० खेंचवु (२) दोरवु (सैन्य) (३) चिंतन करवु
परिकॄ ६ प० [परिकिरति] घेरवु (२) आपवु, सोपवु (३) विखेरवु
परिकृत् १० उ० [परिकीर्तयति -ते] कही बताववु, जणाववु (२) वखाणवु (३) बोलाववु
परिक्लृप् १ आ० परिणाम नीपजवु; परिणाम लाववामा कारणभूत थवु (२) बक्षवु (३) विचारवु
 -प्रेरक० नक्की करवु (२) मानवु; गणवु (३) तैयार थवु (४) अर्पण करवु (५) अमल करवो (६) सफळ करवु (७) योजवु, गोठववु
परिकोप पु० अत्यत कोप के गुस्सो
परिक्रम् १ उ० [परिक्रामति, परिक्रमते] फरवु, आम तेम फरवु
परिक्रम पु० आमतेम फरवु ते (२) प्रदक्षिणा करवी ते
परिक्रय पु०, **परिक्रयण** न० भाडु, रोजी (२) खरीदवु ते (३) विनिमय (४) पैसा आपीने सुलेह खरीदवी ते
परिक्रिया स्त्री० रक्षण माटे चारे तरफ वाड के खाई वडे घेरी लेवु ते (२) ध्यान आपवु ते, सभाळवु ते
परिक्री ९ आ० खरीदवु (२) (थोडा वखत माटे) रोजीए राखवु, नोकरीए राखवु (३) पाछु वाळवु, भरपाई करवु
परिक्लांत वि० थाकी के कटाळी गयेलु
परिक्लिश् ९ प० क्लेश के त्रास आपवो (२) ४ आ० त्रास पामवु, कंटाळवु
परिक्लिष्ट वि० कटाळेलु (२) थाकेलु
परिक्लेश पु० क्लेश; त्रास (२) थाक
परिक्षत वि० घायल थयेलु; ईजा पामेलु
परिक्षय पु० क्षय, नाश; हानि
परिक्षाम वि० दूबळु थई गयेलु
परिक्षिप् ६ प० घेरी वळवु (२) सांकळथी बांधवु (३) ठेकडी उराडवी
परिक्षिप्त वि० घेरायेलु, वीटळायेलु (२) वीखरायेलु (३) तजी देवायेलु
परिक्षीण वि० क्षीण थयेलु (२) खूटी गयेलु; ओछु थयेलु (३) नाश पामेलु
परिक्षेप पु० वेरवु-विखेरवु ते (२) घेरी लेवु ते (३) चोगरदम घेरती हद (४) तजी देवु ते
परिखा स्त्री० खाई
परिख्यात वि० विख्यात
परिख्याति स्त्री० प्रसिद्धि
परिगण् १० उ० गणतरी करवी (२) गणनामा लेवु
परिगणन न०, **परिगणना** स्त्री० गणतरी
परिगत वि० व्याप्त, घेरायेलु (२) चोतरफ फेलायेलु (३) समजेलु, जाणेलु (४) -थी युक्त के पूर्ण (५) मेळवेलु (६) हरावायेलु (७) पीडित
परिगम् १ प० [परिगच्छति] चोतरफ फरवु (२) घेरी वळवु (३) चोतरफ व्यापवु (४) प्राप्त करवु (५) जाणवु, समजवु (६) मरण पामवु
परिगाढ वि० अत्यत, घणु
परिगृहीत वि० ग्रहण करेलु (२) आलिंगन करेलु (३) वीटळायेलु (४) स्वीकारेलु (५) परणेलु
परिग्रह् ९ उ० भेटवु (२) वीटळावु (३) पकडवु (४) माथे लेवु, स्वीकारवु (५) कृपा करवी (६) टेको आपवो; मदद करवी (७) धारण करवु, पहेरवु (८) परणवु (९) पाछळ पाडी देवु
परिग्रह पु० स्वीकारवु ते, ग्रहण करवु ते (२) घेरी लेवु ते (३) वीटवु के पहेरवु

ते (४) मिलकत (५) लग्न करवु ते (६) पत्नी (७) पोताना रक्षणमा लेवु ते (८) अनुग्रह (९) दासदासी इ० परिवार (१०) राजानु अतःपुर (११) बक्षिस (१२) स्वागत करवु ते (१३) शाप (१४) शरीर (१५) वहीवट, कारभार (१६) समजण (१७) शाप (१८) शासन

परिग्रहीतृ पु० पति

परिघ पु० आगळो, उलाळो (२) विघ्न (३) गदा (लोखंडना खीलावाळी) (४) दरवाजो (५) त्या लेवातो कर

परिघगुरु वि० आगळा जेटलु भारे

परिघट्ट् १० उ० डखोळवु, हलाववु (२) दाबवु, घसवु

परिघट्टन न० हलाववु – डखोळवु ते

परिघस्तंभ पु० वारसाख

परिचक्ष् २ आ० कहेवु, जाहेर करवु

परिचतुर्दशन् वि० पूरु चौद, चौदथी वधु

परिचय पु० एकठु करवु ते, ढगलो (२) ओळखाण (३) अभ्यास, महावरो (४) वसवाट

परिचयकरुणा स्त्री० वधती जती ममता

परिचयवत् वि० पराकाष्ठाए पहोचेलु

परिचर् १ प० विचरवु (२) सेववु (३) पूजा करवी (४) सारवार करवी

परिचर पु० नोकर, सेवक

परिचर्या स्त्री० सेवा, चाकरी (२) पूजा (३) आचार (४) प्रदक्षिणा

परिचार पु० सेवा, शुश्रूषा (२) सेवक

परिचारक पु० सेवक (२) शूद्र

परिचारण न० सेवा

परिचारिका स्त्री० दासी

परिचि ५ उ० भेगु करवु (२) जाणवु (३) मेळववु (४) वधारवु (५) ३ प० अभ्यास करवो, परिचय करवो —कर्मणि० वधवु

परिचित वि० भेगु थयेलु, एकठु थयेलु (२) जाणीतु, ओळखाणवाळु (३) अभ्यासेलु, शीखेलु

परिचिति स्त्री० ओळखाण, परिचय

परिचित् १० उ० चितववु, विचारवु (२) याद करवु

परिचुंब् १ प० खूब आवेगथी चुबवु

परिचेतव्य वि० परिचय करवा योग्य

परिच्छद् १० उ० ढाकवु, ओढवु, वीटाळवु (२) सताडवु, छुपाववु

परिच्छद् स्त्री० परिवार, अनुयायीवर्ग

परिच्छद पु० आच्छादन, ढाकण (२) चदरवो (३) वस्त्र, पोशाक (४) परिवार, अनुयायीवर्ग (५) छत्र-चामर-वगेरे बाह्य उपकरण (६) वासण-कूसण वगेरे माल-मिलकत

परिच्छन्न वि० ढाकेलु, ढकायेलु (२) छायेलु (३) वीटळायेलु

परिच्छिद् ७ उ० कापी नाखवु, टुकडा करवा (२) छूटु पाडवु, भाग पाडवो (३) निर्णय आपवो, निश्चित करवु, विवेक करवो

परिच्छिन्न वि० कापी नाखेलु (२) निश्चित करेलु (३) मर्यादित

परिच्छेद पु० कापवु ते, भाग पाडवो ते, छूटु पाडवु ते (२) निश्चय, निर्णय (३) सीमा, हद (४) प्रकरण, खड

परिच्छेद्य वि० निश्चित करवा योग्य, निश्चय करी शकाय तेवु (२) मापवा के तोलवा योग्य

परिच्युत वि० —माथी च्युत थयेलु

परिजन पु० सेवक वर्ग, अनुयायी वर्ग (२) दासीओनो समुदाय (३) सेवक

परिजनता स्त्री० सेवा, सेवकपणु

परिज्ञप्ति स्त्री० सवाद (२) ओळखाण

परिज्ञा ९ उ० जाणवु, ओळखवु (२) नक्की करवु, शोधी काढवु

परिज्ञा स्त्री०, **परिज्ञान** न० सपूर्ण ज्ञान (२) ओळखाण

परिज्ञेय वि० जाणी के समजी शकाय तेवु (२)ओळखी शकाय तेवु

परिणत वि० वळेलु, नीचु नमेलु (२) परिपक्व, पाकट, वृद्ध (३) पूरेपूरु विकसेलु (४) पची गयेलु (५) –मा रूपातरित थयेलु (६)आथमेलु (७) पु० दतूशळ खोसवा नमेलो हाथी

परिणतप्रज्ञ वि० पाकट बुद्धिनु

परिणति स्त्री० वळवु ते, नमवु ते (२) परिपक्वता, विकास (३) रूपातर, पलटो (४) परिणाम, अत (५) वृद्धावस्था [विस्तृत, पहोळु

परिणद्ध वि० बधायेलु, वीटळायेलु (२)

परिणम् १ उ० वाका वळवु, नीचा नमवु (२) –मा रूपातर थवु, पलटावु (३)परिणमवु, वनवु (४)परिपक्व थवु, विकसित थवु (५) घरडु थवु (६) रधावु (७) आथमवु (८) पूरु थवु (९)व्यतीत थवु [विवाह

परिणय पु०, **परिणयन** न० लग्न,

परिणह् ४ उ० चोतरफ वीटळावु (२) चोतरफथी बाधवु

परिणाम पु० रूपातर थवु ते, फेरफार, विकार (२) पाचन (३) असर (४) परिपक्वता, विकास (५) अत, छेवट (६) वृद्धावस्था (७) व्यतीत थवु ते (समयनु)

परिणामदर्शिन् वि० अगमचेतीवाळु

परिणायक पु० नेता, भोमियो (२)पति

परिणाह पु० घेराव, विस्तार, व्याप

परिणाहिन् वि० मोटु, विशाळ

परिणिष्ठा स्त्री० सपूर्ण कुशळता

परिणिंसक वि० चाखतु, खातु (२)चुबतु

परिणी १ प० दोरवु, लई जवु (२)परणवु

परिणी पु० पति [पार पाडेलु

परिणीत वि० परणेलु (२) पूरु करेलु,

परिणीति स्त्री० लग्न, विवाह

परिणीवित वि० ढकायेलु

परिणेतृ पु० पति

परितप् १ प० तपाववु, गरम करवु (२) वाळवु; सळगाववु (३) दुःख-पीडा वेठवा (४)तप आचरवु

परितर्क् १० प० विचारवु, चितववु (२) तपासवु (अदालते)

परितस् अ० चोतरफ, दरेक वाजुए (२) –तरफ, –दिशामा

परिताप पु० सखत ताप के तडको (२) दुःख, पीडा (३) विलाप, शोक

परितापिन् वि० त्रास आपनारु

परितुष् ४ प० सतोष पामवो, खुशी थवु

परितुष्ट वि० सतुष्ट, खुश

परितृप् ४ प० तृप्त थवु, संतुष्ट थवु

परितोष पु० तृप्ति, सतोष (२) रुचि

परित्यज् १ प० त्याग करवो, तजवु (२) वाद करवु, छाडवु

परित्याग पु० तजवु ते (२) छोडी देवु ते, छाडवु ते (३) उदारता

परित्रस्त वि० वीनेलु, त्रासेलु

परित्राण न० रक्षण, बचाव

परित्रास पु० बीक, त्रास

परित्रै १ आ० रक्षण करवु, बचाववु

परिदश वि० पूरु दश (२)दशथी वधु

परिदहन न० बाळी नाखवु ते

परिदशित वि० वस्त्रथी ढंकायेलु

परिदा ३ उ० आपी देवु, सोपवु

परिदाह पु० बाळी नाखवु ते (२) वळतरा, पीडा (३) सताप

परिदेव पु० शोक, आक्रद

परिदेवन न०, **परिदेवना** स्त्री०, **परिदेवित** न० विलाप, आक्रद (२) पस्तावो, शोक

परिद्यून वि० खिन्न, दुःखी

परिधा ३ उ० पहेरवु, धारण करवु (२) आसपास मूकवु (३)–तरफ नाखवु के वाळवु (नजर)

परिधान न० पहेरवु के धारण करवु ते (२) वस्त्र (३) म्यान

परिघारण न० सहन करवु ते
परिघारणा स्त्री० धीरज
परिघाव् १ प० पाछळ पडवु
परिधि पु० वाड, भीत के तेवी आसपास आवेली वस्तु (२) सूर्य-चद्रनी आस-पासनु कूंडाळु, तेजनु कूडाळु (३) क्षितिज (४) आच्छादन, वस्त्र
परिधूसर वि० झाखु, मेलु, धूळियु
परिध्वंसिन् वि० विध्वस करनारु
परिनिष्ठा स्त्री० सपूर्ण ज्ञान (२) पेराकाष्ठा (३) मोक्ष
परिनिष्ठित वि० पूरेपूरु निष्णात (२) निश्चित, मुकरर (३) सपूर्ण थयेलु
परिपक्व वि० पूरेपूरु रधायेलु के शेका-येलु (२) पूरेपूरु पाकेलु के पाकट थयेलु
परिपणन न० बाहेधरी आपवी ते (२) होड बकवी ते
परिपत् १ प० गोळ फरवु, आटा मारवा (२) उपर तूटी पडवु (३) चोतरफ धसवु (४)—मा पडवु
परिपंथक पु० शत्रु, दुश्मन
परिपंथिन् वि० रुकावट के विघ्न करनारु (२) पु० दुश्मन (३) वाटपाडु, लूटारो
परिपा १ प० [परिपिबति] पीवु (२) २ प० [परिपाति] रक्षण करवु (३) पालन करवु (४) शासन करवु (५) राह जोवी
परिपाक पु० सारी रीते रधावु ते (२) सारी रीते पाचन थवु ते (३) परि-पक्वता (४) परिणाम (५) कुशळता
परिपाटल वि० आछा लाल रगनु
परिपाटि (–टी) स्त्री० पद्धति, प्रणाली (२) अनुक्रम, गोठवणी [करवु ते
परिपाठ पु० गणतरी (२) वारवार पठन
परिपालन न० रक्षण करवु ते (२) निभाववु ते (३) पोषवु ते
परिपीड् १० उ० पीडवु, त्रास आपवो (२) निचोववु (३) आलिगवु
परिपूत वि० शुद्ध करेलु, पवित्र (२) पूरेपूरु ऊपणेलु [तपास करवी
परिप्रच्छ् ६ प० [परिपृच्छति] पूछवु,
परिप्रश्न पु० फरी फरीने पूछवु ते
परिप्रेष्य पु० चाकर, नोकर
परिप्लव वि० तरतु (२) कपतु (३) अस्थिर (४) पु० डूबकु (५) नौका
परिप्लु १ आ० तरवु (२) डूबकु मारवु (३) कूदवु (४) पूर फरी वळवु
परिप्लुत वि० डूबेलु, मग्न
परिप्लुति स्त्री० छोळ, अतिशय होवु ते
परिबर्ह पु० परिवार, नोकरचाकर (२) सरसामान (३) भेट, बक्षिस (४) छत्र, चामर इ० राजचिह्न
परिबाध् १ आ० पीडवु, त्रास आपवो
परिबाधा स्त्री० कष्ट, पीडा (२) थाक, त्रास
परिबृंहित वि० वधेलु, समृद्ध थयेलु
परिभव पु० अपमान, अनादर, तिर-स्कार (२) पराजय, हार
परिभवास्पद न० अपमान के अनादरनु पात्र थवु ते
परिभाव पु० अनादर, अपमान
परिभावन न० एकठु थवु ते, भळी जवु ते (२) चिंतन, ध्यान
परिभावना स्त्री० अनादर (२) चिंतन
परिभाविन् वि० अनादर करनारु (२) पाछळ पाडी देनारु, चडियातु
परिभाष् १ आ० वातचीत करवी, कहेवु (२) समजाववु (३) उपदेश आपवो, प्रेरवु (४) परपरा नक्की करी आपवी
परिभाषण न० वातचीत, सवाद (२) ठपको (३) विधि, नियम
परिभाषा स्त्री० वातचीत, सवाद (२) ठपको (३) खुलासो (४) कोई पण विद्यानी निश्चित सज्ञा के शब्द (५) सामान्य नियम
परिभुक्त वि० खाधेलु (२) भोगवेलु

परिभुग्न वि० वाकु वळेलु, नमेलु
परिभुज् ७ आ० खावु (२) उपभोग करवो
परिभू १ प० हरावvु, जीतवु (२) अपमान करवु (३) नाश करवो (४) ईजा करवी (५) पीडवु, दुःख देवु
–प्रेरक० चिंतववु, विचारवु (२) समावेश करवो (३) चडियाता थवु (४) एकाग्र करवु
परिभूति स्त्री० पराभव (२) अनादर
परिभेद पु० ईजा
परिभोग पु० उपभोग (२) संभोग (३) बीजानी वस्तुनो गेरकायदे उपभोग
परिभ्रम् १ प० [परिभ्रमति], ४ प० [परिभ्रम्यति, परिभ्राम्यति] भमवु, भटकवु (२) चक्राकारे फरवु (३) आसपास गोळ फरवु
परिभ्रम पु० भमवु के भटकवु ते (२) चित्तभ्रम (३) प्रस्तुत विषयथी बहार जईने बोलवु ते
परिभ्रष्ट वि० पडी गयेलु, छूटु पडेलु (२) नासी गयेलु (३) रहित, विनानु (४) पदच्युत थयेलु के करेलु
परिभ्रंश पु० नासी छूटवु ते (२) –थी छूटु पडवु ते
परिमर पु० नाश, विनाश
परिमल पु० सुगंध (२) सुगंधी पदार्थो-थी करेलु मर्दन (३) संभोग (४) डाघ
परिमलन न० मर्दन [मेलु थयेलु
परिमलित वि० खुशबोदार करेलु (२)
परिमंथर वि० सुस्त, खूब धीमु
परिमंद वि० झाखु (२) धीमु, सुस्त (३) नबळु, कृश (४) अल्प, थोडु
परिमाण न० माप (२) तोल, वजन (३) संख्या
परिमाथिन् वि० पीडतु, त्रास आपतु
परिमार्ग् १० उ० शोधवु, खोळवु
परिमार्ग पु०, **परिमार्गण** न० शोधखोळ (२) स्पर्श, संबंध (३) लूछी काढवु ते
परिमार्जन न० लूछी नाखवु ते; साफ करवु ते [मापेलु (३) नियमित
परिमित वि० मापसरनु; मर्यादित (२)
परिमितकथ वि० थोडु के टूकमा बोलतु
परिमिति स्त्री० माप (२) प्रमाण, हद
परिमिलन न० स्पर्श (२) संसर्ग
परिमिलित वि० मिश्रित
परिमुच् ६ उ० [परिमुञ्चति – ते] छोडी मूकवु; मुक्त करवु (२) त्याग करवो (३) छोडवु, फेंकवु
परिमुह् ४ प० मोह पामवु (२) मूढ बनवु, मूझवणमा पडवु
परिमूढ वि० मूंझायेलु
परिमृज् २ प० लूछी नाखवु; साफ करवु (२) मसळवु, दबाववु
परिमृद् ९ प० दबाववु, मर्दन करवु (२) कचरवु (३) नाश करवो (४) लूछी नाखवु (५) १ प० पाछळ पाडी देवु, चडियाता थवु
परिमृदित वि० कचरेलु; छूदेलु (२) आलिंगन करेलु (३) चूर्ण करेलु
परिमृश् ६ प० स्पर्श करवो (२) पकडवु (३) चिंतववु (४) तपासवु [करवी
परिमृष् ४ प० गुस्से थवु (२) अदेखाई
परिमृष्ट वि० धोयेलु, साफ करेलु (२) स्पर्शेलु (३) आलिंगेलु (४) छवायेलु
परिमेय वि० मर्यादित, अल्प (२) मापी शकाय तेवु
परिमोक्ष पु० दूर करवु ते (२) मुक्त करवु ते (३) खाली करवु ते (४) निर्वाण
परिमोक्षण न० मुक्ति, मोक्ष (२) बंधनमाथी छूटु करवु ते
परिमोहन न० मोह पमाडे तेवु
परिम्लान वि० करमायेलु, चीमळायेलु (२) खिन्न, हताश (३) घटेलु, ओछु थयेलु (४) मेलु थयेलु
परिम्लै १ प० करमाई जवु (२) झाखु पडवु (३) खिन्न के हताश थवु (४) अलोप थवु

परियत्रणा स्त्री० नियमन
परिरक्ष् १ प० रक्षण करवु (२) छुपाववु
परिरब्ध वि० आलिंगेलु
परिरभ् १ आ० आलिंगन करवु
परिरंभ पु०, **परिरंभण** न० आलिंगन
परिरोध पुं० आडखीली, विघ्न
परिलघु वि० अति हलकु (२) पचवामा हलकु (३) घणु नानु
परिलघन न० अहीथी तही कूदवु ते
परिलंबन न० विलब करवो ते
परिलोलित वि० कपतु, ऊछळतु
परिवत्सर पु० पूरु एक वर्ष
परिवद् १ प० निंदा करवी
परिवर्जित वि० तजेलु (२) रहित (३) सपादित, अर्जित
परिवर्त पु० चक्राकार फरवु ते (२) समयनो गाळो व्यतीत थवो ते (३) पुनरावर्तन (४) फेरफार, पलटो (५) विनिमय, अदलोवदलो (६) चकळ वकळ फरवु ते (७) वारवार जन्मवु ते
परिवर्तन न० पडखु बदलवु ते (२) चक्राकार फरवु ते (३) समयना गाळानो अत (४) फेरफार, पलटो (५) विनिमय, अदलोबदलो
परिवर्तित वि० चक्राकारे फरेलु (२) अदलोबदलो करायेलु (३) उलटावेलु, पलटेलु (४) दूर करेलु, खसेडेलु
परिवर्तिन् वि० चक्राकारे फरतु (२) पलटातु, वदलातु
परिवर्धक पु० घोडानो खासदार
परिवर्धित वि० वधेलु (२) उछेरेलु
परिवह पु० सात वायु पैकी छठ्ठो वायु (सप्तर्षि तथा स्वर्गंगाने वहन करनार)
परिवाद पु० निंदा, आळ, कलक (२) तहोमत, आरोप (३) वीणा वगाडवानु साधन
परिवादिनी स्त्री० सात तारवाळी वीणा
परिवार पु० नोकरचाकरनो समुदाय (२) ढाकण, आच्छादन (३) वाड (४) म्यान [परिवार
परिवारण न० वेष्टन—आच्छादन (२)
परिवारता स्त्री० दासता, परतत्रता
परिवारित वि० घेरायेलु, वीटळायेलु
परिवास पु० वसवु ते (२) सुगध
परिवाह पु० ऊभराईने वहेवु ते (२) वधारानु पाणी वही जवा माटेनो मार्ग
परिवाहिन् वि० ऊभरातु
परिवीत वि० घेरायेलु, वीटळायेलु (२) फेलायेलु, व्यापेलु
परिवृ ५, ९, १० उ० घेरी लेवु
परिवृढ वि० गाढ, स्थिर (२) मोटु, घणु (३) पु० मालिक, स्वामी
परिवृत् १ आ० गोळ फरवु (२) अही तही फरवु (३) बदलवु, ऊलटवु (४) पाछु फरवु (५) थवु, वनवु (६) नाश पामवो; लुप्त थवु
परिवृति स्त्री० घेरी वळवु ते
परिवृत्त वि० चक्राकार फरेलु (२) पाछु फरेलु (३) अदलोबदलो करेलु
परिवृत्ति स्त्री० चक्राकार फरवु ते (२) पाछु फरवु ते (३) विनिमय, अदलोबदलो (४) अत (५) चारेकोर वीटळावु ते
परिवृध् १ आ० वधवु
परिवेत्तृ **परिवेदक** पु० मोटा भाई करता पहेला परणेलो नानो भाई
परिवेदन न० लग्न (२) मोटा भाईनी पहेला नाना भाईनु लग्न (३) संपूर्ण ज्ञान (४) प्राप्ति (५) दुख, वेदना
परिवेल्लित वि० वीटळायेलु, घेरायेलु
परिवेश पु० पीरसवु ते (२) तेजनु कूडाळु (सूर्यचद्रनी आसपासनु)
परिवेशन न० पीरसवु ते (२) घेरी वळवु ते (३) सूर्यचद्रनी आसपासनु कूडाळु

परिवेष पु० जुओ 'परिवेश'
परिवेषक पु० पीरसनारो नोकर
परिवेषण न० जुओ 'परिवेशन'
परिवेष्ट् १ आ० आच्छादन करवु –प्रेरक० वीटळावु, वीटवु
परिवेष्टन न० वीटळावु ते (२) आच्छादन (३) पाटो खेंची बांधवो ते
परिव्रज् १ प० परिव्रज्या लेवी
परिव्रज्या स्त्री० एक जगाएथी बीजी जगाए विचरवु – फरता रहेवु ते (२) घर छाडी सन्यासी थवु ते
परिव्राज् (–ज), परिव्राजक पु० सन्यासी
परिशब्दित वि० जणावेलु, उल्लेखेलु
परिशक् १ आ० शका लाववी (२) धारवु, कल्पवु (३) बीवु
परिशंका स्त्री० शका, अविश्वास (२) आशा, अपेक्षा
परिशंकिन् वि० बीतु; डरतु
परिशिष् ७ प० बाकी रहेवा देवु (२) (स्थळनो) त्याग करवो
परिशिष्ट वि० बाकी रहेलु, वधेलु (२) समाप्त (३) न० पुरवणी
परिशीलन न० स्पर्श, ससर्ग (२) गाढ सपर्क, अभ्यास
परिशुद्ध वि० शुद्ध करेलु (२) मुक्त थयेलु के करेलु (३) चूकवी दीधेलु
परिशुद्धि स्त्री० पूरेपूरु शुद्ध करवु ते (२) साचापणु, खरापणु
परिशुष् ४ प० सुकाई जवु, शोषावु
परिशुष्क वि० पूरेपूरु सुकाई गयेलु
परिशून्य वि० तद्दन खाली (२)–थी तद्दन रहित
परिश्रम पु० थाक, तकलीफ (२) यत्न, उद्यम (३) परिणाम
परिश्रय पु० सभा (२) आश्रय
परिश्रुत वि० साभळेलु (२) विख्यात
परिषद स्त्री० सभा, बेठक, मडळी
परिषेक पु०, **परिषेचन** न० सीचवु– छाटवु – रेडवु ते

परिष्कर पु० शणगार; अलंकार
परिष्कार पु० अलंकार, शणगार (२) रांधवु ते (३) [illegible]
परिष्कृ ८ उ० शणगारवु (२) साफ करवु, मांजवु
परिष्कृत वि० शणगारेलु (२) [illegible]-रेलु (३) स्वच्छ करेलु (४) रांधेलु (५) मांजेलु
परिष्यंद पु० रेलो, वहळो (२) झरवु ते
परिष्वक्त वि० आलिंगेलु, भेटेलु
परिष्वज् १ आ० आलिंगवु
परिष्वजन न०, **परिष्वंग** पु० आलिंगन (२) स्पर्श; संसर्ग
परिष्वज् १ आ० [परिष्वजते] आलिंगन करवु, भेटवु
परिष्वजन न० जुओ 'परिस्वजन'
परिसमाप्त वि० पूरु थयेलु (२) केन्द्रित थयेलु
परिसर पु० सीमा, हद (२) (नगर, पर्वत वगेरेनी) आसपासनी भूमि (३) नस, शिरा (४) पहोळाई
परिसर्पण न० आसपास घूमवु के फरवु ते
परिसंख्या २ प० गणतरी करवी
परिसंख्यान न० गणतरी
परिसृ १ प० आसपास वहेवु (२) चारेकोर फरवु
परिस्कद् १ प० आसतेम कूदवु
परिस्कंद वि० बीजाए उछेरेलु (२) पु० पालित सतान (३) नोकर (४) अगरक्षक
परिस्कंध पु० समुदाय, समूह
परिस्तृ ५ उ०, **परिस्तृ** ९ उ० पाथरवु (२) ढाकवु
परिस्तोम पु० हाथी उपर नाखवानी झूल (२) एक यज्ञपात्र
परिस्पंद पु० फरकवु – ध्रूजवु ते (२) वाळने फूल वगेरेथी शणगारवा ते (३) शणगार (४) चालु राखवु ते (५) पराक्रम, बहादुरी

परिस्फुरित वि० कंपतु, हालतु (२) चळकतु, चमकतु (३) खीलेलु
परिस्यंद पु० जुओ 'परिष्यद'
परिस्रव पु० वहेवु ते, रेलो (२) सरी के सरकी जवु ते
परिस्रुत वि० झमेलु, टपकेलु
परिहृत वि० ढीलु थयेलु – करेलु
परिहस् १ प० हसवु, मजाक करवी (२) चडियाता थवु, हसी काढवु
परिहा ३ प० तजवु, छोडी देवु –कर्मणि० –थी ऊतरता होवु (२) –मा अधूरा होवु, –थी रहित होवु (३) क्षीण थवु, दूबळु थवु (४) वीती जवु (५) –थी रहित करावु
परिहाणि(–नि) स्त्री० घटाडो (२) क्षीण थवु ते
परिहार पु० छोडी देवु – छाडवु ते, दूर करवु ते (२) निराकरण करवु ते
परिहार्य वि० तजवा के छाडवा योग्य
परिहास पु० मजाक, ठठ्ठो (२) हासी
परिहीण वि० –विनानु, रहित (२) ओछु, अधूरु, खूटतु
परिहृ १ प० दूर करवु, वर्जवु, तजवु (२) खडन करवु, जवाब आपवो (आक्षेप के आरोपनो) (३) छुपाववु
परिहृत वि० त्यागेलु, छाडेलु (२) दूर करेलु (३) लीधेलु, पकडेलु
परी (परि+इ) २ प० प्रदक्षिणा करवी (२) वीटळावु, घेराई वळवु (३) विचारवु, निरीक्षण करवु
परीक्ष् (परि+ईक्ष्) १ आ० परीक्षा करवी, चकासणी करवी
परीक्षक पु० परीक्षा करनार, तपासनार
परीक्षण न० परीक्षा करवी ते
परीक्षा स्त्री० तपास (२) कसोटी
परीक्षित वि० परीक्षा करेलु, चकासेलु
परीणाम पु० जुओ 'परिणाम'
परीणाह पु० जुओ 'परिणाह'
परीत वि० घेरायेलु, वीटळायेलु (२) विदाय थयेलु (३) वीतेलु (४) पकडायेलु (५) प्रदक्षिणा करायेलु
परीताप पु० जुओ 'परिताप'
परीतोष पु० जुओ 'परितोष'
परीदाह पु० जुओ 'परिदाह'
परीधान न० जुओ 'परिधान'
परीपाक पु० जुओ 'परिपाक'
परीप्सा स्त्री० मेळववानी–प्राप्त करवानी इच्छा (२) ताकीद, त्वरा
परीप्सु वि० सरक्षवानी इच्छावाळु (२) शोधी काढवानी इच्छावाळु
परीभव पु० जुओ 'परिभव'
परीमाण न० जुओ 'परिमाण'
परीवर्त पु० जुओ 'परिवर्त'
परीवाद पु० जुओ 'परिवाद'
परीवार पु० जुओ 'परिवार'
परीवाह पु० जुओ 'परिवाह'
परीवेश(–ष) पु० जुओ 'परिवेश'
परीष्ट वि० इच्छवा योग्य, उत्तम
परीष्टि स्त्री० शोध-खोळ, तपास (२) सेवा, चाकरी (३) पूजा-आदर
परीहार पु० जुओ 'परिहार'
परीहास पु० जुओ 'परिहास'
परुत् अ० गये वर्षे, परार
परुष वि० कर्कश, खरबचडु (२) निष्ठुर, निर्दय (३) तीव्र, तीणु
परुषाक्षर वि० कठोर शब्दो बोलनारु
परुषित वि० जेनी प्रत्ये कठोरताथी वर्तवामा आव्यु होय तेवु
परुषेतर वि० कर्कश नहि तेवु, कोमळ
परे(परा+इ) २ प० नासी जवु, भागी छूटवु (२) पामवु, पहोचवु (३) मरण पामवु
परे अ० त्यार पछी (२) भविष्यमा
परेण अ० दूर, पार (२) –ना करता वधु (३) पछीथी
परेत वि० मृत (२) पु० (भूत) प्रेत

परेतकल्प वि० मृतप्राय
परेतकाल पु० मृत्युसमय
परेतभर्तृ पु० यमराजा
परेतभूमि स्त्री० स्मशान
परेतर वि० दुश्मन नहि तेवु (२) पोतानु
परेद्यवि, परेद्युस् अ० बीजे दिवसे
परेधित वि० बीजाए पाळेलु के पोषेलु (२) पु० दास, नोकर (३) कोयल
परोक्ष वि० अप्रत्यक्ष, नजरे न पडतु (२) गेरहाजर (३) गुप्त, अजाण्यु (४) न० गेरहाजरी, नजर सामे न होवु ते [मानतु
परोक्षबुद्धि वि० निरपेक्ष (२) परोक्ष
परोढा स्त्री० परपत्नी
परोपकार पु० बीजा उपर उपकार करवो ते, बीजानु हित करवु ते
परोपदेश पु० बीजाने उपदेश आपवो ते
परोरजस् वि० रागद्वेष विनानु
पर्जन्य पु० मेघ, वादळ (२) वर्षा, वरसाद (३) इंद्र
पर्ण न० पाख (२) बाणनु पीछु (३) पान; पादडु (४) नागरवेलनु पान
पर्णकुटिका, पर्णकुटी स्त्री० झूंपडी
पर्णचीरपट पु० शंकर
पर्णल वि० खूब पादडावाळु
पर्णशाला स्त्री० पादडानी झूंपडी
पर्णसंस्तर पु० पांदडानी पथारीमां सूनारो
पर्णासि (–सि) पु० तुलसी
पर्णाहार पु० पादडां खाईने जीववु ते
पर्णिन् पु० वृक्ष (२) पलाश वृक्ष
पर्णोटज न० पादडांनी बनावेली झूंपडी
पर्पट पु० पापड
पर्यक् अ० चोतरफ, दरेक बाजुए
पर्यट् १ प० भटकवु, रखडवु
पर्यटक पु० रखडतो, भामटो
पर्यटन, पर्यटित न० रखडवु-भटकवु ते
पर्यय पु० पूरु थवु ते, समाप्त थवु ते (२) नकामु खोवु ते (समय) (३) फेर, पलटो (४) नाश
पर्यवदात वि० तद्दन पवित्र; शुद्ध (२) अति जाणीतु
पर्यवष्टंभ् ५, ९ प० घेरो घालवो
पर्यवष्टंभन न० घेरो घालवो ते
पर्यवसान न० अंत, समाप्ति (२) निश्चय, निर्णय
पर्यवसित वि० समाप्त थयेलु (२) नाश पामेलु (३) निश्चित थयेलु
पर्यवसो (परि + अव + सो) ४ प० पूरु करवु (२) नक्की करवु (३) परिणाम आववु (४) नाश पामवु
पर्यवस्कंद पु० कूदका मारवा ते
पर्यवस्था (परि + अव + स्था) १ प० [पर्यवतिष्ठति] स्थिर थवु, स्वस्थ थवु (२) बधे होवु, व्यापवु
पर्यश्रु वि० आंसु भरेलु, आंसु ऊभराता होय तेवु
पर्यस् (परि + अस्) ४ प० नाखवु; फेंकवु (२) चोतरफ फेंकवु; विखेरवु (३) ऊंधु वाळवु (४) गोळ फेरववु (५) छोडी देवु, व्यापवु
पर्यस्त वि० चोतरफ फेंकायेलु, विखेरेलु (२) घेरायेलु (३) बंधायेलु (४) ऊंधु वळेलु–वाळेलु
पर्यंक पु० पलंग, खाटलो (२) म्यानो; पालखी (३) घूंटण वाळी केड साथे बधातु वस्त्र (४) एक आसन (योगनु)
पर्यंकबंध पु० केड साथे घूंटण बंधाय एम कपडु बांधवु ते
पर्यंच् १ उ० गोळ फेरववु, आमळवु
पर्यंत वि० –थी जेनी सीमा बंधाय छे तेवु, –सुधीनु (२) पासेनु, नजीकनु (३) पु० घेराव (४) छेडो, सीमा (५) बाजु, पडखु (६) अंत; समाप्ति
पर्यंतदेश पु० पडोशनो – नजीकनो प्रदेश
पर्याकुल वि० डहोळायेलु (२) गभरायेलु (३) वीखरायेलु, अस्तव्यस्त

(४) आकुळव्याकुळ थयेलु (५) भरायेलु; पूर्ण [वीटवु, बाधवु

पर्याक्षिप् (परि + आ + क्षिप्) ६ प०

पर्यागम् १ प० [पर्यागच्छति] नजीक जवु (२) पूरु थवु (३) जीतवु (४) वीटळावु, वेरवु (५) पाछु आववु

पर्याण न० पलाण (घोडानु)

पर्याप् ५ प० पूरतु होवु, शक्तिमान होवु (२) परिपूर्ण होवु (३) वचाववु

पर्यापतत् वि० आमतेम दोडतु

पर्याप्त वि० मेळवेलु (२) परिपूर्ण (३) बधु, आखु (४) समर्थ (५) पूरतु (६) विशाळ (७) प्रचुर, अत्यत (८) मर्यादित

पर्याप्तम् अ० मरजी मुजब, धराईने

पर्याप्ति स्त्री० प्राप्ति (२) अत, समाप्ति (३) पूरतु होवु ते, परिपूर्णता (४) तृप्ति

पर्याय पु० गोळ फरवु ते, कूडाळे फरवु ते (२) वीतवु – पूरु थवु ते (समयनु) (३) नियमित आवर्तन थवु ते (४) वारो; क्रम (५) व्यवस्था, गोठवण (६) रीत, पद्धति (७) समानार्थ शब्द (व्या०) (८) तक; प्रसग (९) उपाय (१०) अत (११) रचना (१२) विपरीतता, पलटो

पर्यायत वि० घणु लाबु [करवी ते

पर्यायसेवा स्त्री० वारा प्रमाणे सेवा

पर्यायेण अ० अनुक्रमे, वारी प्रमाणे (२) अवारनवार (३) एकातरे

पर्यालोचित वि० विचारेलु, तपासेलु

पर्याविल वि० कादववाळु, डहोळु

पर्यावृत वि० ढाकेलु

पर्यासन न० गोळ फरवु ते (२) विनाश

पर्यासित वि० नीचे पटकेलु (२) विनष्ट

पर्युत्सुक वि० खिन्न, उदास (२) अत्यत उत्सुक, आतुर (३) क्षुब्ध

पर्युदस् ४ प० वारवु, निवारवु

पर्युपस्थान न० सेवाचाकरी [लेवो

पर्युपास् २ आ० सेवा करवी (२) आश्रय

पर्युपासन न० सेवा, उपासना

पर्युषण न० सेवा, भक्ति

पर्युषित वि० वासी, ताजु नही तेवु (२) रात रहेलु [शोध

पर्येषण न०, **पर्येषणा** स्त्री० तपास,

पर्वणी स्त्री० अमावास्या के पूर्णिमा (२) उत्सवनो दिवस

पर्वत पु० डुगर, खडक

पर्वतीकृ ८ उ० पर्वत जेवडु मोटु करवु

पर्वतीय वि० पर्वतनु, पर्वत सबधी

पर्वतोपत्यका स्त्री० पर्वतनी तळेटी

पर्वन् न० गाठ, साधो (२) अवयव, अग के सावो (३) भाग, विभाग; खड (४) निसरणीनु पगथियु (५) आठम, चौदश, पूर्णिमा तथा अमावास्या ए चार दिवसो (६) पूर्णिमा के अमावास्यानो दिवस (७) ग्रहण (सूर्य के चंद्रनु) (८) उत्सवनो दिवस

पर्वभाग पु० काडु

पर्शु पु० फरसी, कुहाडी

पर्षद् स्त्री० परिषद, मडळी (खास करीने धर्मविचार माटे मळेली)

पल न० मास (२) एक वजन के माप

पलल पु० राक्षस (२) न० मास (३) कादव, कीचड

पलाय् १ आ० पलायन करवु

पलायन न० नासी जवु ते

पलाल पु०, न० पराळ

पलाश पु० खाखरानु झाड (२) न० खाखरानु फूल, केसूडु (३) पाखडी

पलाशन पु० राक्षस (मास खानारो)

पलाडु पु० डुगळी

पलित वि० धोळु, भूखरु (२) धोळा वाळवाळु; वृद्ध (३) न० धोळो वाळ; पळियु (४) घणा के गणगारेला वाळ (५) केशपाश

पलितछद्मन् वि० पळिया पाछळ छुपायेलु (वृद्धावस्था)
पल्यंक पु० पलग
पल्याणित वि० पलाणेलु
पल्लव पु०, न० कूपळ; नवु पान (२) नवी डाळी (३) कळी (४) पालव, वस्त्रनो छेडो [छल्लु (ज्ञान)
पल्लवग्राहिन् वि० उपरचोटियु, उपर-
पल्लवित वि० नवी कूपळोवाळु (२) विस्तारित (३) अळताथी रंगेलु (४) पु० अळतो
पल्लविन् वि० कूपळोवाळु, अकुरित
पल्लि (–ल्ली) स्त्री० नानु गामडु (२) घरोळी
पल्वल न० नानु तळाव, खाबोचियु
पवत् वि० पावन करनारु (२) वेगे गति करतु
पवन वि० पवित्र, स्वच्छ (२) पु० वायु; हवा (३) प्राणवायु; श्वास (४) पावन करनार (वायु)
पवनतनय पु० भीम (२) हनुमान
पवनपदवी स्त्री० आकाश, अतरीक्ष
पवनभू पु० हनुमान (२) भीम
पवमान पु० पवन, वायु; हवा (२) गार्हपत्य अग्नि
पवमानसख पु० अग्नि
पवि पु० इद्रनु वज्र (२) गर्जना, कडाको
पवित्र वि० पावन, शुद्ध (२) पापरहित (३) न० घी होमवामा वपराता (बे) दाभ (४) जनोई
पशु पु० जानवर, चोपगुं प्राणी (२) यज्ञमा होमवानु प्राणी (बकरुं इ०) (३) जगली जानवर
पशुका स्त्री० कोई पण नानु जानवर
पशुघात पु० यज्ञ माटे पशुनो वध
पशुनाथ, पशुपति पु० महादेव
पशुमारम् अ० ढोरने मारे तेम
पश्च वि० पाछळनु (२) पश्चिमनु
पश्चात् अ० पाछळथी; पाछली बाजुए (२) पाछळ, पाछली बाजु (३) पछीथी (४) छेवटे (५) पश्चिम बाजुएथी (६) पश्चिम तरफ
पश्चात्कृत वि० पाछु पाडी दीधेलु
पश्चात्ताप पु० पस्तावो
पश्चादहस् अ० पाछले पहोरे
पश्चार्ध पु० पाछलो भाग; पाछळनो भाग (शरीरनो) (२) पछीनो अर्धो भाग (३) पश्चिम बाजु
पश्चिम वि० पश्चिम दिशानु, आथमणु (२) छेवटनु; छेल्लु (३) त्यार पछीनु, पाछळ थनारु
पश्चिमरात्र पु० रातनो छेवटनो भाग
पश्चिमा स्त्री० पश्चिम दिशा
पश्य वि० जोनारुं, जोतु
पश्यत् वि० जोतु; देखतु, निहाळतुं
पश्यतोहर पु० मालिक देखतो होय ने चोरनार (जेम के सोनी)
पश्यंती स्त्री० वाणीनी चार स्थितिमानी बीजी (जुओ 'परा') (२) वेश्या
पंक पु०, न० कादव; कीचड (२) तेना जेवो गाढ लोदो (३) पाप
पंकच्छिद् पु० डहोळु पाणी साफ करवा जेनु फळ वपराय छे ते झाड
पंकज न० कमळ
पंकजकोश पु० कमळनो दोडो
पंकजनाभ पु० विष्णु
पंकजन्मन् पु० ब्रह्मा
पंकजिनी स्त्री० कमळनो छोड-वेल (२) कमळनो समूह (३) घणा कमळ ऊगता होय तेवु स्थळ
पंकिल वि० कादव भरेलु
पंकेज, पंकेरुह (–ह) न० कमळ
पंक्ति स्त्री० हार, पगत, ओळ (२) एक ज ज्ञातिना जमवा बेठला लोकोनी पगत (३) दशनी सख्या
पंक्तिता स्त्री० हार; ओळ

पंक्तिपावन पु० पवित्र ब्राह्मण (आखी पगतने पवित्र करनार मनाय छे)
पंक्तिरथ पु० दशरथ राजा
पंगु वि० पागळु, लूलु
पंचक वि० पाचनु बनेलु, पाचने लगतु (२) पु० न० पाचनो समूह
पंचगव्य न० गायनु दूध, दही, घी, मूत्र अने छाण –ए पाच वस्तुओ
पंचगुणाः पु० ब० व० इद्रियोना पाच विषयो (रूप, रस, गध, स्पर्श अने शब्द)
पंचगुणी स्त्री० पृथ्वी
पंचतत्त्व न० पचमहाभूत (पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश)
पंचतपस् पु० पचाग्नि तपनारो तपस्वी
पंचत्वंगत वि० मृत (पचमहाभूतनी स्थिति पामेलु)
पंचन् वि० (ब०व०) पाच (समासनी शरूआतमा आवे त्यारे न् ऊडी जाय छे)
पंचनख पु० पाच नखवाळु प्राणी (हाथी, ससलु, काचबो, मगर, सिंह, वाघ इ०)
पंचनद पु० हालनो पजाब (शतद्रु–सतलज, विपाशा–बियास, ईरावती–रावी, चद्रभागा–चिनाब, वितस्ता–जेलम, ए पाच नदीओनो प्रदेश)
पंचपदी स्त्री० पाच पगला साथे भरवा ते
पंचप्राणाः पु० ब० व० शरीरना पाच वायुओ–प्राणो (प्राण, अपान, व्यान, उदान अने समान)
पंचबाण पु० कामदेव (अरविंद, अशोक, आबामोर, नवमल्लिका अने नीलोत्पल –ए पाच फूलरूपी बाणवाळो)
पंचभूत न० पृथ्वी, जल, वायु, तेज आकाश –ए पाच महाभूत
पंचम वि० पाचमु (२) चतुर (३) सुदर (४) पु० सगीतना सप्तकमा पाचमो स्वर (कोयलनो स्वर)
पंचवटी स्त्री० पीपळो, आमळी, आसोपालव, वड अने बीली –ए पाच वृक्षोनो समूह (२) नाशिक पासे आवेल दडकारण्यनो एक भाग (त्या राम वनवास रह्या हता) [इद्रियोनो समूह
पंचवर्ग पु० पाचनो समूह (२) पाच
पंचवीरगोष्ठ न० सभामडप
पंचवृत्तिता स्त्री० पाच इद्रियो उपर आधार राखवो ते
पंचशर पु० कामदेव (जुओ 'पचबाण')
पंचशाख पु० हाथ (२) हाथी
पंचशिख पु० सिंह [नीकोवाळु)
पचस्रोतस् न० मन (पाच इद्रियो रूपी
पंचाग्नि पु० पाच पवित्र अग्निनो समुदाय (दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, सभ्य अने आवसथ्य) (२) ए पाच अग्नि राखनार गृहस्थ
पंचातप वि० (चार बाजु) चार अग्नि अने उपर सूर्य ए पाच अग्नि वडे तप करनारु
पंचातिग वि० मुक्त
पंचानन पु० शिव (२) सिंह (पहोळु मुख होवाथी) (३) (समासने अते) ते ते विद्यामा पारगत (उदा० 'तर्कपचानन')
पंचामृत न० दूध, दही, घी, मध, साकर –ए पाचनु मिश्रण (२) पचमहाभूतोनो समूह
पंचायतन न०, **पंचायतनी** स्त्री० गणपति, विष्णु, शकर, देवी अने सूर्य –ए पाच देवोनो समुदाय
पंचाली स्त्री० ढीगली, पूतळी
पंचाशत्, **पंचाशति** स्त्री० पचास
पंचास्य पु० शिव (२) सिंह
पंचांग वि० पाच अगवाळु (जेम के 'प्रणाम' बाहु, जानु, शिर, वक्षस्, दृष्टि वडे करातो, अथवा 'अभिनय' चित्त, अक्षि, भ्रू, हस्त, पाद वडे करातो; अथवा 'राजनीति' कार्यारभ, पुरुष अने द्रव्यनु साधन, देशकाळ, मुश्केली-

ओनो सामनो अने कार्यसिद्धि —ए पाच अगवाळी) (२) न० टीपणु (तिथि, वार, नक्षत्र, योग, अने करण —ए पाच अगवाळु)
पंचिका स्त्री० खातावही
पंचोपचार पु० पूजाना पाच पदार्थो (गध, पुष्प, धूप, दीप अने नैवेद्य)
पंजर न० पाजरु (२) पु०, न० पासळीओनु पाजरु (३) हाडपिंजर (४) पु० शरीर [पोपट
पंजरशुक पु० पाजरामानो (पाळेलो)
पजिका स्त्री० शब्दे शब्दना अर्थवाळी टीका (२) खातावही (३) पचाग
पडा स्त्री० शाणपण (२) विद्याभ्यास
पंडित वि० डाह्यु, शाणु (२) कुशळ, होशियार (३) पु० विद्वान
पंडितजातीय वि० थोडु घणु होशियार
पडितमानिक, पडितमानिन् वि० पोतानी जातने पडित माननारु [करनारु
पंडितवादिन् वि० डाह्यु होवानो दभ
पडितमन्य वि० जुओ 'पडितमानिक'
पंपा स्त्री० एक सरोवर (दडकारण्यमा)
पा १ प० [पिबति] पीवु (२) चुम्बन करवु (३) अदर लेवु (आखथी, कानथी, श्वासथी इ०) (४) मद्यपान करवु
पा २ प० [पाति] रक्षण करवु (२) शासन करवु
—प्रेरक० [पालयति —ते] पालन करवु, रक्षवु (२) शासन करवु (३) पाळवु, पूरु करवु (प्रतिज्ञा इ०) (४) उछेरवु (५) —नी राह जोवी
पा वि० (समासने अते) रक्षण करनारु (२) पीनारु (जेमके, 'सोमपा')
पाक पु० राधवु ते (२) पकववु ते (ईंट इ०) (३) पाचन करवु —थवु ते (४) परिपक्व थवु ते (५) सिद्ध —पूर्ण थवु ते (६) परिणाम (७) परिणाम तरफ जवु ते (८) वाळ धोळा थवा ते (९) एक राक्षस (जेने इद्रे मार्यो हतो)
पाकाभिमुख वि० परिपक्वता के विकास माटे तैयार थयेलु
पाक्षिक वि० पखवाडियानु; पखवाडियाने लगतु (२) पक्षी सबधी (३) पक्ष, वाद इ० ने लगतु (४) वैकल्पिक
पाखड पु० नास्तिक (२) जैन के बौद्ध
पागल वि० उन्मत्त, गाडु
पाचक वि० राधनारु (२) परिपक्व करनारु (३) पचावनारु (४) पु० रसोइयो
पाचन वि० जुओ 'पाचक' वि०
पाटच्चर पु० चोर, डाकु
पाटन न० फाडवु —चीरवु —भेदवु ते
पाटल वि० आछु लाल, गुलाबी, तावाना रगनु (२) पु० गुलाब अथवा तावा जेवो लाल रंग (३) एक फूलझाड (४) न० तेनु फूल
पाटलित वि० लाल रगनु करायेलु
पाटलिपुत्र न० मगधनी राजधानी
पाटलोपल पु० एक मणि
पाटव पु० चतुरता, कुशळता (२) चपळता (३) साहस
पाटविक वि० प्रवीण, चतुर
पाटित वि० फाडेलु, चीरेलु (२) वीधेलु, वीधायेलु
पाटी स्त्री० गणित (शास्त्र)
पाटीर पु० चदन, सुखड
पाठ पु० भणवु —पढवु ते (२) वाचवु ते, अभ्यास (३) वेदोनु पठन (४) ग्रथनु मूळ लखाण (५) पाठातर
पाठक वि० शिक्षक, अध्यापक (२) पुराणी (३) विद्यार्थी
पाठन न० शीखववु —भणाववु ते
पाठशाला स्त्री० निशाळ, शाळा
पाठातर न० ग्रथनी बीजी प्रतमा मळतो जुदो पाठ
पाठित वि० भणावेलु, शीखवेलु
पाठीन पु० एक जातनु माछलु (२) एक फूलझाड

पाठ्य वि० पाठ करवा योग्य, भणवा योग्य (२) शीखववा योग्य
पाण पु० वेपार (२) वेपारी (३) रमतनो दाव (४) होड
पाणि पु० हाथ
पाणि स्त्री० पीठ, बजार
पाणिग्रह पु०, **पाणिग्रहण** न० लग्न
पाणिग्रहीतृ, पाणिग्राह पु० पति
पाणिघ पु० मृदग वगाडनार
पाणिघात पु० मुष्टियुद्ध करनार
पाणिज पु० नख
पाणितल न० हथेळी
पाणिदाक्ष्य न० हाथचालाकी
पाणिनि पु० सस्कृत भाषानु व्याकरण रचनार मुनि
पाणिनीय वि० पाणिनिए रचेलु
पाणिपल्लव पु० कूपळ जेवो कोमळ हाथ (२) आगळी
पाणिपात्र वि० हाथने खोबे पाणी पीनारु, हाथ रूपी पात्रवाळु
पाणिपीडन न० पाणिग्रहण
पाणिवाद पु० ताळी पाडवी ते (२) ढोलक वगाडवु ते
पाणीकरण न० परणवु ते
पात पु० ऊडवु ते (२) पडवु ते, नीचे आववु ते (३) विनाश (४) प्रहार (५) नाखवु–रेडवु–फेंकवु ते (६) बनवु–थवु ते
पातक पु०, न० पाप
पातकिन् वि० पापयुक्त, पापी
पातन वि० नीचे पाडनारु (२) न० नीचे पाडवु ते, नाखवु ते
पातंजल वि० पतजलिए रचेलु
पाताल न० पृथ्वीनी नीचे आवेला मनाता सात लोकमानो छेल्लो
पातित वि० नीचे नाखेलु, नीचे पाडेलु (२) नमावेलु (३) नीचु करेलु
पातिन् वि० नीचे आवतु–जतु–ऊतरतु (२) –मा समाविष्ट थतु (३) पाडनारु, फेंकनारु
पातिव्रत्य न० पतिव्रतापणु
पातुक वि० पतनशील
पात्र न० पीवानु वासण (२) कोई पण वासण (३) जेमा कई मूकवामा आवे ते (४) योग्य के लायक माणस (दान वगेरे माटे) (५) नट, अभिनेता (६) नदीना बे काठा वच्चेनो भाग
पात्रता स्त्री० योग्यता, लायकात
पात्रशेष पु० भोजननु बचेलु–वधेलु ते
पात्री स्त्री० पात्र, वासण
पात्रीकृ ८ उ० पात्र–योग्य बनाववु
पात्रेबहुल, पात्रेसमित पु० कामना समये नहि पण मात्र भोजनना समये भेगो थनार (२) दभी पुरुष
पात्रीकरण न० लग्न
पाथस् न० पाणी
पाथस्पति पु० समुद्र, महासागर
पाथेय न० मुसाफरीमा खावा माटेनु भातु
पाथोधि, पाथोनिधि पु० सागर, समुद्र
पाद पु० पग, चरण (२) किरण (३) पायो (खाटला इ० नो) (४) पर्वतनी तळेटी नजीकनी टेकरी (५) चोथो भाग (६) कडी के श्लोकनो चोथो भाग (७) थाभलो (८) तळियु (९) सोनानो एक सिक्को (एक तोलानो)
पादग्रहण न० पग पकडवा ते (नमस्कार)
पादचार पु० चालवु ते, फरवु ते
पादचारिन् वि० पगे चालनारु (२) पगपाळु ऊभु रहीने लडनारु (३) पु० मुसाफर, वटेमार्गु
पादत्राण न० जोडो, मोजडी
पादन्यास पु० पगनु हलनचलन
पादप पु० वृक्ष [पगवाट
पादपद्धति स्त्री० पगलानी पक्ति (२)
पादपीठ पु०, न० पग मूकवानो बाजठ
पादपूरण न० खूटती कडी उमेरवी ते

पादप्रक्षालन न० पग धोवा ते
पादप्रहार पु० लात
पादमुद्रा स्त्री० पगलानी छाप
पादमूल न० पगनी एडी (२) पर्वतनी तळेटी [वळगेलु
पादलग्न वि० पग पासे पडेलु, पगे
पादशौच न० पग धोवा ते
पादाग्र पु० पगनो आगलो भाग
पादाघात पु० लात [पायदळ
पादात पु० पायदळनो योद्धो (२) न०
पादानत वि० पगे पडेलु
पादारविंद न० कमळ जेवो पग—चरण
पादावनाम पु० पगे पडवु ते
पादाहति स्त्री० उपर पग मूकवो ते (२) लात, ठेस [(चालवाथी पडती)
पादांक पु० पगना तळियानी छाप
पादांत पु० पगनो छेडानो भाग
पादांतरे अ० एक पगला पछी (२) नजीक
पादुका स्त्री० पावडी, चाखडी
पादोदक न० पग धोवानु पाणी (२) जेमा पग धोया होय ते पाणी
पाद्य न० पग धोवा माटेनु पाणी
पान न० पीवु ते (२) दारू पीवो ते (३) पीणु (४) पीवानु वासण
पानक न० पीणु [स्थान
पानभूमि स्त्री० दारू पीवानो ओरडो—
पानागार पु०, न० पीठु, दारूनी दुकान
पानीय वि० पीवा योग्य (२) रक्षण करवा योग्य (३) न० पाणी (४) पीणु
पानीयवारिक पु० मठमा पाणी भरनार
पाप वि० दुष्ट, पापी (२) नीच, अधम (३) अपशुकनियाळ (४) न० धर्म विरुद्धनु कृत्य, दुष्कृत्य (५) पु० पापी माणस
पापगति पु० कमनसीब, दुर्भागी
पापग्रह पु० खराब ग्रह (मगळ, शनि, राहु के केतु)
पापघ्न वि० पापनो नाश करनारु
पापचर्य पु० पापी (२) असुर
पापदर्शन, पापदर्शिन् वि० बीजना दोषो जोनारु (२) बीजानु बूरुं ताकनारुं
पापभाज् वि० पापयुक्त
पापम् अ० खोटी रीते; अधर्मथी
पापर्द्धि स्त्री० मृगया
पापशील वि० स्वभावथी दुष्ट, पापी
पापात्मन् वि० पापी, दुष्ट
पापानुबंध पु० खराब परिणाम
पापारंभ वि० दुष्ट, पापी
पापिन् वि० पापयुक्त, पापी
पापिष्ठ वि० अतिशय पापी (सौमां)
पापीयस् वि० वधु पापी (बेमा)
पाप्मन् पु० पाप
पामन् पु० खसनो रोग
पामर पु० मूर्ख (२) दुष्ट; नीच
पामा स्त्री० खसनो रोग
पायस पु०, न० दूधपाक; खीर (२) न० दूध (३) अमृत
पायसपिंडारक पु० पायस खानार
पायिन् वि० पीतु, पीनारु
पायु पु० गुदा
पार् १० प० पूरुं करवुं (२) ओळंगवुं (३) शक्तिमान थवु (४) जीतवुं
पार पु०, न० सामी बाजु के किनारो (२) छेडो, अंत (३) पूरु—समग्र ते (४) पु० अंत, छेडो
पारक्य वि० पारकु (२) विरोधी (३) पु० शत्रु (४) न० (परलोकमां सुख पमाडे तेवु) पवित्र आचरण
पारग वि० सामे पार जनारुं (२) अंत सुधी जनारु, पूरेपूरु निष्णात (३) न० वचन पाळवु ते
पारगत वि० सामे पार पहोचेलु
पारग्रामिक वि० विरोधी—दुश्मन एवुं
पारण वि० पार लई जनारु (२) उद्धारनारु (३) न० सिद्ध करवु—पार उतारवु ते (४) उपवास पछी भोजन करवु ते (५) गळी जवु ते

पारणा स्त्री० उपवास पछी जमवु ते; पारणु (२) जमवु ते
पारतंत्र्य न० परतत्रता, पराधीनता
पारत्रिक, पारत्र्य वि० परलोक सबधी; परलोकमा उपयोगी
पारद पु० पारो
पारदारिक पु० परस्त्रीगामी
पारदार्य न० व्यभिचार, जारकर्म
पारदृश्वन् वि० डाह्यु, समजणु (२) पारगत, प्रवीण
पारमार्थिक वि० परमार्थ–परम तत्त्वने लगतु (२) यथार्थ, वास्तविक, सत्य (३) परमार्थनी परवा करतु (४) अति उत्तम
पारमिक वि० उत्तम, मुख्य, श्रेष्ठ
पारमित वि० सामे पार गयेलु
पारमिता स्त्री० सिद्धि, परिपूर्णता
पारयिष्णु वि० आनददायक (२) अत सुधी जई शकनारु, यशस्वी
पारलौकिक वि० परलोकने लगतु, परलोक माटे हितकर
पारस वि० ईरान देशनु
पारसीक पु० ईराननो वासी
पारंगत वि० पार गयेलु
पारंपर वि० आगळनु, भविष्यनु
पारंपरिण, पारंपरीण वि० परपराथी चाल्यु आवतुं, वशानुक्रमे चाल्यु आवतु
पारंपर्य न० परपराथी चाल्यु आववु ते
पारंपर्येण अ० क्रमथी, अनुक्रमथी
पारा स्त्री० एक नदी
पारापत पु० कबूतर, पारेवुं
पारायण न० सामे पार जवु ते (२) सूक्ष्म अभ्यास (३) पूरेपूरु–समग्र ते
पारावत पु० कबूतर, पारेवु
पारावार न० वने किनारा, नजीक अने दूरनो किनारो (२) पु० समुद्र
पाराशर, पाराशर्य पु० पराशर ऋषिना पुत्र–व्यास
पारिजात, पारिजातक पु० स्वर्गना पाच वृक्षोमानु एक (समुद्रमथनमाथी एक रत्न तरीके नीकळेलु)
पारितोषिक वि० आनदप्रद, सतोषप्रद (२) न० इनाम, बक्षिस
पारिपार्श्वक, पारिपार्श्विक पु० नोकर, हजूरियो (२) सूत्रधारनो मददनीश
पारिप्लव वि० चचल, अस्थिर, कपतु (२) तरतु (३) व्याकुळ, क्षुब्ध (४) पु० नाव, नौका (५) न० अशाति, व्याकुळता
पारिबर्ह पु० लग्न वखतनी भेट (२) परिजन–परिवार [परिभाषारूप
पारिभाषिक वि० चालु, सार्वत्रिक (२)
पारियात्र पु० सात 'कुलपर्वत'मानो एक (महेद्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष, विन्ध्य, पारियात्र)
पारिव्राजक, पारिव्राज्य न० भिक्षुपणु
पारिषद पु० सभामा हाजर रहेलो सभ्य
पारिषदाः पु० ब०व० देवनो परिवार
पारिहारिक पु० माळा बनावनार–माळी
पारिहार्य पु० हाथनु घरेणु–कडु
पारी स्त्री० पाणी पीवानु पात्र (२) दूध दोहवानु पात्र
पारीण वि० सामे पार जतु (२) (समास ने छेडे) पारगत, प्रवीण
पारुष्य न० कठोरता, कर्कशता (२) निष्ठुरता (३) अपशब्द
पारे अ० सामी बाजुए
पार्थ पु० पृथा–कुतीनो पुत्र (युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन) (२) राजा
पार्थक्य न० जुदाई, जुदापणु
पार्थसारथि पु० अर्जुनना सारथि–श्रीकृष्ण
पार्थिव वि० पृथ्वीने लगतु (२) माटीनु बनेलु (३) पृथ्वी उपर राज्य करतु (४) राजाने लगतु (५) पु० पृथ्वीनो वासी (६) राजा

पार्थिवी स्त्री० सीता (पृथ्वीनी पुत्री)
पार्य न० अंत (२) पार करवानुं साधन
पार्यन्तिक वि० छेल्लुं, छेवटनुं
पार्वण वि० पर्व संबंधी, पर्वने दिवसे [illegible] होतुं
पार्वत वि० पर्वतनुं, पर्वत संबंधी
पार्वती स्त्री० हिमालयनी पुत्री – दुर्गा
पार्वतीय पु० पर्वतवासी एक जाति
पार्वतीश पु० शंकर
पार्वतेय वि० पर्वतमांथी जन्मेलुं
पार्श्व वि० पासेनुं, नजीकनुं (२) पु०, न० बगल नीचेनो पांसळीओवाळो भाग (३) पडखुं, बाजु (४) नजीकपणुं
पार्श्वग, पार्श्वचर वि० नजीकनुं, पडखे ऊभेलुं (२) पु० नोकर, हजूरियो
पार्श्वतस् अ० पडखे, नजीकमां
पार्षद पु० सेवक, चाकर
पार्श्ववर्तिन् वि० पडखे रहेतुं, नजीकनुं (२) सेवा बजावतुं (३) पु० हजूरियो (४) साथी
पार्श्वस्थ वि० पडखे रहेलुं, नजीकनुं (२) पु० साथी (३) मददनीश
पार्श्वानुचर पु० नोकर, हजूरियो
पार्श्वायात वि० नजीक आवेलुं
पार्श्वासन्न वि० पासे ऊभेलुं के बेठेलुं
पार्श्वोपपीडम् अ० पडखां दबाववां पडे ते रीते (हसवुं)
पार्षत वि० 'पृषत्' – [illegible] काबर-चीतरा मृगने लगतुं
पार्षद पु० साथी, सोबती (२) परिजन – परिवार (देवनो) (३) परिषदमां [illegible] सभ्य
पार्ष्णि पु०, स्त्री० एडी (२) सैन्यनो पाछलो भाग (३) कोई पण वस्तुनो पाछलो भाग, पीठ (४) लात, पाटु
पार्ष्णिग्रह न० [illegible] पूंठेथी दबाववो ते
पार्ष्णित्राण पु० [illegible] [illegible] ते
पार्ष्णिग्राह पु० [illegible] पूंठेथी हुमलो

पाल् १० उ० रक्षण करवुं (२) पाळवुं (वचन, प्रतिज्ञा इ०)
पाल पु० पालक [अश्वपाल
पालक पु० रक्षक (२) राजा (३)
पालन वि० रक्षण करनारुं (२) न० रक्षण, पोषण (३) पाळवुं ते, पार पाडवुं ते (वचन, प्रतिज्ञा इ०) (४) धार काढवी ते (शस्त्रनी)
पालनीय वि० रक्षण करवा योग्य (२) पाळवा योग्य (वचन इ०)
पालयितृ वि० रक्षण करनारुं
पालि स्त्री० बूट, अणी (काननी) (२) छेडो, किनार (३) धार (४) हद; सीमा (५) पंक्ति; हार
पालित वि० रक्षायेलुं; पोषायेलुं (२) पूरुं करायेलुं (वचन इ०)
पाली स्त्री० जुओ 'पालि'
पाल्य वि० जुओ 'पालनीय'
पावक वि० पवित्र करनारुं, शुद्ध करनारुं (२) पु० अग्नि [अस्त्र
पावकास्त्र न० अग्निदेवनी शक्तिवाळुं
पावन वि० पापमांथी मुक्त करनारुं; शुद्ध करनारुं, पवित्र करनारुं (२) हवा उपर जीवनारुं
पावर पु० बेना अंकवाळी पासानी बाजु (२) ते पासानो दाव
पावित्र्य न० पवित्रता
पाविन् वि० शुद्ध – पवित्र करनारुं
पाव्य वि० शुद्ध–पवित्र करवा योग्य
पाश पु० बंध, दोरडुं; फासो (२) जाळ (पक्षी–प्राणी वगेरेने पकडवानी) (३) पासो (४) वरुणना हथियारनुं नाम (५) (समासने अंते) तिरस्कार–तुच्छता बतावे (उदा० 'छात्रपाश'); प्रशंसा दर्शावे (उदा० 'कर्णपाश'); जथ्थो बतावे (उदा० 'केशपाश')
पाशजाल न० संसाररूपी जाळ
पाशन न० जाळ; फासो

पाशभृत् पु० वरुण (२) पाश धारण करनार (योद्धो)
पाशव वि० पशु संबंधी
पाशहस्त पु० वरुण (२) यम
पाशिन् पु० वरुण(२)यम(३)पारधी
पाशी स्त्री० दोरडु, बंध
पाशुपत वि० शिवनु, शिव संबंधी (२) शिवे उपदेशेलु (३) पु० शिवभक्त
पाश्चात्य वि० पाछळनु, पछीनु (२) पश्चिमनु, पश्चिम संबंधी
पाषक न० पगमा पहेरवानो एक अलंकार
पाषंड वि० वेदमा न माननारु; नास्तिक (२) पुं० नास्तिक
पाषाण पु० पथ्थर
पाषाणशिला स्त्री० सपाट शिला
पाषाणहृदय पु० पथ्थर जेवा कठोर हृदयवाळु, क्रूर
पांचजन्य पु० श्रीकृष्णनो शंख
पांचभौतिक वि० पंचभूतनु बनेलु, पंचभूतवाळु
पांचरात्र न० एक वैष्णव संप्रदाय
पांचाल वि० पांचालोना देशनु
पांचालिका स्त्री० ढींगली, पूतळी
पांचाली स्त्री० द्रौपदी(२)पदरचनानी चार शैलीमानी एक (जुओ 'रीति'
पांडर वि० फीकाश पडतु धोळु
पांडव पु० पांडु राजानो पुत्र
पांडित्य न० पंडिताई, विद्वत्ता (२) चालाकी, कुशळता (३) डहापण
पांडिमन् पु० धोळापणु, फीकाश
पांडु वि० पीळाश पडतु धोळु (२) पु० पीळाश पडतो धोळो रंग (३) कमळो (रोग) (४)पांडवोना पितानु नाम
पांडुभाव पु० फीकु पडी जवु ते
पांडुर वि० फीकाश पडतु धोळु
पांडुरोग पु० कमळो (रोग)
पांडुलोह न० रूपु
पांड्य पु० दक्षिणना ते देशनो राजा
पांड्याः पु० ब० व० पांड्य देश के तेना रहेवासीओ
पांथ पु० मुसाफर, वटेमार्गु
पांशन वि० जुओ 'पांसन'
पांशु पु० जुओ 'पांसु'
पांशुल वि० जुओ 'पांसुल'
पांसन वि० (समासने छेडे)बट्टो के कलंक लगाडनारु(उदा०'कुलपांसन') (२) मेलु करनारु, बगाडनारु
पांसु पुं० धूळ (२) रजोटी
पांसुकृत वि० धूळथी छवायेलु
पांसुक्रीडन, पांसुक्रीडा स्त्री० धूळमां रमवु ते (बाळपणनी अवस्था)
पांसुल वि० धूळवाळु, मेलु (२) अपवित्र, कलंकित (३) बट्टो के कलंक लगाडनारु
पांसुला स्त्री० रजस्वला स्त्री (२) व्यभिचारिणी स्त्री(३)पृथ्वी
पिक पु० कोयल
पिकपंचम पुं० कोयलनो स्वर(जे पंचम सुर गणाय छे)
पिकांग पु० चातक पक्षी
पिचुमर्द, पिचुमंद पु० लीमडो
पिच्छ न० पीछु (२) पीछांवाळुं पुच्छ (मोरनु) (३) बाणनु पीछु
पिच्छल वि० लपसणु, लपसी पडाय तेवु
पिच्छिका स्त्री० मोरना पीछानी झूडी (जादुगरो वापरे छे ते)
पिच्छिल वि० चीकणु, (२) लपसी पडाय तेवु (३) पीछावाळु (४) पुं०, न० भातनु ओसामण
पिटक पु०, न० नेतरनो करंडियो (२) लाकडानी पेटी(३)फोल्लो
पिटका स्त्री० पेटी, टोपली (२) नानी फोल्ली
पिठर, पिठरक पु०, न० तपेलु
पिठरी स्त्री० तपेली
पिण्याक पु०, न० खोळ
पितरः ('पितृ') पु० ब० व० पितृओ
पितरौ ('पितृ')पु० द्वि०व० मातापिता

पितामह पु० पितानो पिता (२) ब्रह्मा
पितृ पु० पिता
पितृकानन न० स्मशान [आदि क्रिया
पितृकृत्य न०, पितृक्रिया स्त्री० पिंडदान
पितृक्षय पु० मृत्युतिथि (पितृनी)
पितृदेव वि० पिताने पूजनारु
पितृदेवत्य न० पितृओने निमित्ते करातो एक यज्ञ [पितानी मा – दादी
पितृप्रसू स्त्री० सायकाळ, संध्या (२)
पितृवन न० स्मशान
पितृव्य पु० बापनो भाई – काको
पितृसद्मन् न० स्मशान
पितृस्वसृ स्त्री० फोई
पित्त न० शरीरनी त्रण धातुओमानी एक (कफ-पित्त-वात)
पित्र्य वि० पिता संबंधी (२) पितृ-संबंधी (३) पु० मोटो भाई
पिधा (अपि+धा) ३ उ० बंध करवु; ढाकवु, छुपाववु (२) रुकावट करवी
पिधातव्य वि० बंध करवा योग्य, ढाकवा योग्य
पिधान न० जुओ 'अपिधान'
पिनद्ध वि० जुओ 'अपिनद्ध' [ढाकवु
पिनह् ४ उ० बाधवु (२) पहेरवु (३)
पिनाक पु०, न० शिवनु धनुष्य
पिनाकधृक्, पिनाकपाणि, पिनाकिन् पु० शिव ('पिनाक' धनुष्यवाळा)
पिपासा स्त्री० तरस [तरस्यु
पिपासित, पिपासिन्, पिपासु वि०
पिपील पु० मकोडो
पिपीलिक पु० कीडी (२) न० एक जातनुं सोनु (कीडीओए भेगु करेलु)
पिपीलिका स्त्री० कीडी (मादा)
पिप्पल पु० पीपळो (२) न० तेनु टेटु
पिप्पलि (–ली) स्त्री० लाबी पीपर
पिप्लु पु० शरीर उपरनो तल
पिब वि० पीनारु; पीतु
पियाल पु० एक झाड

पिशाच पु० भूत-प्रेत जेवी एक हीन योनि
पिशाचिका स्त्री० पिशाचणी
पिशित न० मास
पिशिताशन, पिशिताशिन् पुं० मासभक्षी – राक्षस, पिशाच (२) वरु
पिशुन वि० चाडियु, चुगलीखोर (२) चाडी खातु, जणावतु, याद करावतु (३) क्रूर, घातकी (४) नीच; अधम
पिशुनयति प० ('दर्शावी दे छे')
पिशुनित वि० कही दीधेलु, बतावी दीधेलु [करवो
पिष् ७ प० पीसवु; दळवु (२) नाश
पिष्ट ('पिष्'नु भू०कृ०) वि० दळेलु, पीसेलु (२) दबावेलु; कचरेलु (३) न० भूको, चूरो, लोट [व्यर्थ प्रवृत्ति
पिष्टपेषण न० (लोटने दळवा जेवी)
पिष्टसौरभ न० मुखड, चदन
पिष्टात पु० अबील, सुगधी चूर्ण
पिष्टोदक न० लोटने पाणीमा ओगाळी करेलु (दूध जेवु) प्रवाही
पिस्पृक्षु वि० स्पर्श करवानी इच्छावाळु
पिहित वि० जुओ 'अपिहित'
पिंग वि० दीवानी ज्योत जेवा राता – पीळा रगनुं
पिंगल वि० पीळचटा – बदामी रगनु (२) पु० बदामी रग (३) वादरो (४) एक ऋषि (छंद.शास्त्र रचनार)
पिंगलिमन् पुं० पीळचटो – बदामी रंग
पिंगाक्ष वि० लालाश पडती आंखवाळु (२) पु० शिव (३) वानर [तेवो रग
पिंजर वि० लालाश पडतु पीळु (२) पु०
पिंजरिक न० एक जातनु वाद्य
पिंजरित वि० पीळचटा – बदामी रगनु
पिंड वि० घन, नक्कर (२) गोळो वाळेलु, पिंडो करेलु (३) पु०, न० गोळो (४) ढेफु (५) कोळियो (६) श्राद्धमां पितृओने अपातो भातनो गोळो (७) अन्न, खोराक (८) आजीविका

(९) भिक्षा (१०) शरीर (११) पगनी पिंडी (१२) एकठु गणी – कुल जे थाय ते (१३) ढगलो, समुदाय
पिंडक पु० फोल्लो
पिंडद वि० अन्न के आजीविका आपनारुं (२) पिंडदान करवानु अधिकारी
पिंडदान न० श्राद्ध निमित्ते पितृने पिंड आपवो ते
पिंडपात पु० भिक्षा आपवी ते
पिंडभाज् वि० पिंडमा भाग मेळववानुं अधिकारी (२) पु० (ब०व०) पितृओ
पिंडालक्तक पु० एक जातनो लाल रग
पिंडि स्त्री० पिंडो, गोळो (२) घर
पिंडिका स्त्री० गोळ आकारनो सोजो (२) पगनी पिंडी (३) गडस्थळ
पिंडित वि० गोळो वाळेलु (२) एकत्रित करेलु
पिंडी स्त्री० जुओ 'पिंडि'
पिंडीशूर पु० कायर, बीकण (घरमा शूरो के लाडु भागवामा शूरो)
पिंडोदकक्रिया स्त्री० पितृओने पिंड, जळ वगेरे अर्पवा ते
पी ४ आ० पीवु
पीठ न० आसन, बेठक (२) दर्भासन (३) देवनु आसन (४) कोई पण वस्तुनी बेसणी, पडघी (५) प्रात, प्रदेश (६) सिंहासन, राज्यासन
पीठक पु०, न० एक जातनो म्यानो
पीठग वि० आसने बेसी रहेनारु (२) अपग
पीठमर्द पु० (नाटकमा) नायकने सहाय करनार साथी
पीठसर्प वि० अपग, लगडु
पीठिका स्त्री० बेठक (२) बेसणी (३) पुस्तकनो विभाग
पीड् १० उ० पीडवु, त्रास आपवो (२) घेरो घालवो (३) दबाववु, पीलवु
पीडन न० पीडवु – दुःख देवु ते (२) दबाववु ते, कचरवु ते (३) पकडवु ते (उदा० 'करपीडन') (४) ग्रसवु ते; ग्रहण [नुकसान
पीडा स्त्री० व्यथा, दुःख (२) ईजा;
पीडाकर वि० दुःखकर, कष्टदायक
पीडित ('पीड्'नु भू०कृ०) वि० पीडा पामेलु (२) दबायेलु, कचरायेलु (३) पकडेलु; ग्रहण करेलु (४) ग्रस्त
पीडितम् अ० सखत रीते, दबावीने
पीत ('पा'नु भू० कृ०) वि० पीधेलु (२) पाणी पायेलु (३) पीळा रगनु
पीतांबर पु० श्रीकृष्ण (पीळा वस्त्र धारण करनार) (२) पीळा वस्त्रधारी भिक्षु
पीथ पु० पीणु (२) न० पाणी [दार
पीन वि० जाडु, पुष्ट (२) गोळ, भराव-
पीयूष पु०, न० अमृत (२) दूध
पीयूषधामन्, पीयूषभानु पु० चद्र
पीव, पीवर, पीवस वि० जाडु
पुच्छ पु०, न० पूछडु (२) पाछलो भाग (३) मोरनु पीछावाळु पूछडु (४) कोई पण वस्तुनो अंतभाग
पुट पु०, न० थर, पड (२) पोलाण; बखोल (३) पडियो (पादडानो) (४) एना जेवु जे कई ते (५) आच्छादन, ढाकण (६) पोपचु (७) पु० करडियो, टोपली (८) एना जेवो कोई पण आकार (९) न० औषधने भठ्ठीमा मूकवा माटे बे पात्र सामसामे जोडी करेली रचना, संपुट
पुटक न० पडियो (२) एना जेवो करेलो खोबो (३) कमळ [कमळ
पुटकिनी स्त्री० कमळनो समूह (२)
पुटपाक पु० पादडामा वीटी कपडछाण करी भठ्ठीमा मूकी औषध तैयार करवानी रीत
पुटभेद पु० पोपचा उघाडवा ते (२) शहेर (३) एक वाजित्र, 'आतोद्य'
पुटभेदन न० शहेर
पुण्य वि० पवित्र (२) पुण्य प्राप्त थाय

एवु (३) शुभ, मागलिक (४) सुदर (५) न० सत्कर्म (६) तेनु फळ

पुण्यकीर्ति वि० जेनु नाम लेता के साभळता पुण्य थाय तेवु (२) सुप्रसिद्ध

पुण्यक्षेत्र न० पवित्र भूमि, तीर्थस्थान

पुण्यगृह न० सदाव्रतनु स्थान (२) मदिर

पुण्यजन पु० सदाचारी मनुष्य (२) राक्षस (३) यक्ष

पुण्यजनेश्वर पु० कुबेर (यक्षोनो स्वामी)

पुण्यदर्शन वि० सुदर देखाववाळु (२) जेना दर्शनथी पुण्य थाय तेवु

पुण्यभाज् वि० पुण्यशाळी

पुण्यलक्ष्मीक वि० समृद्ध, वैभवशाळी (२) मागलिक

पुण्यश्लोक वि० जेनु नाम लीधाथी पुण्य थाय तेवु (२) सारी कीर्तिवाळु (३) पु० नळ, युधिष्ठिर के जनार्दन (कृष्ण)

पुण्यश्लोका स्त्री० सीता (२) द्रौपदी

पुण्यानुभाव पु० प्रसन्न करे तेवो प्रभाव

पुण्याह न० सुखनो के मागलिक दिवस

पुण्योदय पु० संचित पुण्यकर्मोनु फळ मळवानु शरू थवु ते

पुत् न० ते नामनु नरक

पुत्तल पु० पूतळु

पुत्तलक पु०, **पुत्तलिका** स्त्री० ढीगली (२) मूर्ति, आकृति

पुत्तली स्त्री० पूतळी

पुत्तिका स्त्री० नानी मधमाखी (२) ऊधई (३) ढीगली

पुत्र पु० दीकरो (२) (समासने छेडे) ते ते वर्गनु नानु जे कई ते (उदा० 'असिपुत्र')

पुत्रक पु० नानो छोकरो (२) 'बेटा' एवो वहालसूचक उद्गार (३) ढीगली

पुत्रका स्त्री० जुओ 'पुत्रिका'

पुत्रकाम्या स्त्री० पुत्रोनी कामना

पुत्रकृतक पु० दत्तक पुत्र

पुत्रपौत्रीण वि० पुत्रो अने पौत्रो सुधी पहोचतु, वशपरपरा चालतु

पुत्रप्रवर पु० मोटो पुत्र

पुत्रवधू स्त्री० दीकरानी वहु

पुत्रिका स्त्री० पुत्री (२) ढीगली; पूतळी (३) (समासने अते) ते ते वर्गनु नानु जे कई ते (उदा० 'असिपुत्रिका')

पुत्रिकाधर्म पु० पुत्र वगरनो पिता पोतानी पुत्रीने 'तमारो पुत्र मने मळे' ए शरते परणावे ते

पुत्रिणी स्त्री० पुत्रवाळी स्त्री

पुत्रिन् वि० पुत्र के पुत्रोवाळु

पुत्री स्त्री० दीकरी

पुत्रीकृ ८ उ० पुत्र तरीके ग्रहण करवुं

पुत्रीय वि० पुत्र तरफनु (२) पुत्र संबधी

पुत्रेष्टि स्त्री० पुत्र मेळववा करातो यज्ञ

पुत्रौ पु० द्वि० व० पुत्र अने पुत्री

पुथ् ४ प० हानि करवी, ईजा करवी (२) १० उ० दीपवु, प्रकाशवु –प्रेरक० नाबूद करवु (२) दबावी देवु (अवाजने)

पुद्गल वि० सुदर (२) पु० परमाणु (३) जीवात्मा (४) शरीर (५) भौतिक पदार्थ

पुनर् अ० फरीथी; बीजी वार (२) ऊलटु, विरुद्ध दिशामा (३) परंतु; छता (४) वधारामां; उपरातमा

पुनरागत वि० पाछु आवेलु

पुनरागम पु०, **पुनरागमन** न० पाछु आववु ते, फरीथी आववुं ते

पुनरावर्तिन् वि० पुनर्जन्म पामनारुं

पुनरावृत्, **पुनरावृत्ति** स्त्री० पुनरावर्तन (२) पुनर्जन्म (३) नवी आवृत्ति

पुनरुक्त वि० फरीथी बोलेलु – कहेलुं (२) नकामु, निरर्थक (३) न० फरीथी कहेवु ते

पुनरुक्ति स्त्री० फरीथी कहेवु ते

पुनरुपगम पु० पाछु आववु ते

पुनर्जन्मन् न० फरी फरी जन्म धारण करवो ते (२) नवो जन्म थवो ते

पुनर्भव पु० फरीथी जन्मवु ते; पुनर्जन्म (२) वाळ (३) नख
पुनर्भाव पु० पुनर्जन्म
पुनर्वसु पु० ते नामनु सातमु नक्षत्र
पुनर्विवाह पु० पुनर्लग्न
पुनःप्रत्युपकार पु० उपकारनो बदलो
पुनीत वि० साफ करेलु, पवित्र करेलु
पुन्नामन् वि० 'पुत्' नामनु (नरक)
पुमर्थ (पुस् + अर्थ) पु० पुरुषार्थ; मानव जीवननु प्रयोजन (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष –ए चारमानु एक)
पुर् स्त्री० पुरी, नगरी (२) किल्लो
पुर वि० –थी भरेलु, पूर्ण (२) न० नगर, शहेर (३) किल्लो, कोट (४) मकान, घर (५) शरीर (६) अत पुर (७) पु० एक राक्षस
पुरतस् अ० –नी समक्ष, –नी सामे, –नी आगळ (२) पछीथी (३) पहेला
पुरद्वार न० नगरनो दरवाजो
पुररिपु पु० शकर
पुरशासन पु० विष्णु (२) शिव
पुरश्चरण न० होम सहित देवना नामनो जप (२) पूर्वतैयारी रूपे करातो विधि
पुरस् अ० (स्थळ के काळमा) आगळ; पहेलु (२) –नी सामे, –नी समक्ष (३) पूर्व दिशाए
पुरस्करण न० आगळ – मोखरे स्थापीने पूजा-सत्कार करवा ते
पुरस्कार पु० आगळ स्थापवु ते (२) पसद करवु ते (३) सत्कार करवो ते (४) पूजा (५) साथे होवु ते (६) गोठववु – तैयार करवु ते (७) प्रगट करवु ते (८) हुमलो के आक्षेप करवो ते
पुरस्कृ ८ उ० आगळ स्थापवु, आगेवान बनाववु (२) रजू करवु (३) अतिथि-सत्कार करवो (४) स्वीकारवु, अनुसरवु (५) बहानु धरवु (६) दर्शाववु
पुरस्कृत वि० आगळ-मोखरे स्थापेलु
पुरस्क्रिया स्त्री० पूजन-सत्कार करवा ते
पुरस्तात् अ० पहेला, आगळ (२) मोखरे (३) प्रारभमा (४) पहेला; अगाउ (५) पूर्व बाजुए (६) पछी
पुरंजन पु० जीवात्मा (२) हरि
पुरंदर पु० इंद्र (२) शिव (३) विष्णु
पुरंध्रि स्त्री० पति-पुत्रवाळी गृहिणी
पुरंध्रिका स्त्री० पत्नी
पुरंध्री स्त्री० जुओ 'पुरध्रि'
पुरःपाक वि० फळ आपवानी तैयारीमा होय एवु
पुरःप्रहर्तृ पु० मोखरे लडनार
पुरःफल वि० जेनु फळ नजीकमा ज – हाथवेंतमा होय तेवु
पुरःसर वि० –नी आगळ जतु (२) पु० आगळ जनार (३) सेवक; दास (४) अग्रेसर, आगेवान (५) (समासने अते) साथे के आगळ जतु
पुरःसरम् अ० साथे, पछी
पुरा अ० अगाउ, पूर्वे (२) अत्यार सुधी, अत्यार आगमच (३) प्रथम तो (४) थोडा समयमा, टूक वखतमा
पुराकल्प पु० जूनी वात, भूतकाळनी कथा (२) जूनी सृष्टि; जूनो युग
पुराकृत न० पूर्व जन्ममा करेलु कर्म
पुराण वि० प्राचीन, जूनु (२) पुराणु, आद्य (३) जीर्ण थयेलु (४) न० प्राचीनकथा, दतकथा (५) व्यासे रचेल १८ पुराणग्रथमानु दरेक
पुराणपुरुष पु० विष्णु (२) वृद्ध पुरुष
पुरातन वि० प्राचीन, पुराणु (२) जूनु, जीर्ण (३) पु० ब० व० प्राचीन पुरुषो (४) न० प्राचीन कथा (५) पुराण ग्रथ
पुराधिप, पुराध्यक्ष पु० नगरनो कोट-[वाळ
पुराराति, पुरारि पु० शिव
पुराविद् वि० पुरातन वातोनु जाणकार
पुरावृत्त वि० प्राचीन समयने लगतु (२) न० जूनु वृत्तात, इतिहास, दतकथा

पुरि स्त्री० शहेर(२)नदी [शरीर

पुरी स्त्री० नगरी;शहेर(२)किल्लो(३)

पुरीष न० विष्टा, मळ

पुरीषोत्सर्ग पु० मळत्याग करवो ते

पुरु वि० पुष्कळ, घणु(२)पु० फूलनो पराग(३)स्वर्ग(४)चद्रवशी एक राजा (५)एक राक्षस(जेने इद्रे हण्यो हतो)

पुरुष पु० नर, मनुष्य (२) मनुष्य जाति (३) आत्मा, जीवात्मा (४) परमात्मा (५) बोलनार, साभळनार अने ते सिवायनी व्यक्ति के पदार्थ—ए त्रण माटे प्रथम, मध्यम अने उत्तम 'पुरुष' एवी परिभाषा (व्या०)

पुरुषक पु०, न० घोडाए बे पग उपर ऊभा थई जवु ते

पुरुषकार पु० पुरुषप्रयत्न, उद्यम(२) पुरुषपणु, मरदानगी

पुरुषकेसरिन् पु० नरसिंह (अवतार)

पुरुषत्व न० मरदाई [पुरुष

पुरुषपशु पु० नरपशु, जानवर जेवो

पुरुषपुंगव पु० उत्तम पुरुष

पुरुषबहुमान पु० माणसजात तरफथी मळतु समान [माननारु

पुरुषमानिन् वि० पोताने वीरपुरुष

पुरुषर्षभ पु० उत्तम पुरुष (पुरुषोमा ऋषभ जेवो)

पुरुषव्याघ्र, -शार्दूल पुं० वीर पुरुष (पुरुषोमां वाघ जेवो) [जेवो)

पुरुषसिंह पुं० उत्तम पुरुष(पुरुषोमां सिंह

पुरुषाद्(-द)पु० राक्षस(मनुष्यभक्षी)

पुरुषाधिकार पु० पुरुष तरीकेनु कर्तव्य (२) पुरुष तरीकेनु मूल्याकन

पुरुषार्थ पु० मानव जीवनना धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष —ए चार प्रयोजनमानुं प्रत्येक (२) पुरुषप्रयत्न, उद्यम

पुरुषायुष(-स्) न० माणसनु आयुष्य

पुरुषोत्तम पु० उत्तम पुरुष (२) विष्णु

पुरुहूत पु० इद्र

पुरुहूतद्विष् पु० इद्रजित्(रावणनो पुत्र)

पुरूरवस् पु० चद्रवशनो स्थापक राजा

पुरोग, पुरोगम वि० आगेवान, अग्रेसर, श्रेष्ठ (२) (समासने अंते) —ना नेतृत्व हेठळनु

पुरोगामिन् वि० आगळ जनारुं, आगळ रहेनारु (२) आगेवान; अग्रेसर

पुरोजव वि० वेगमां चडियातु (२) पु० दास, नोकर

पुरोडाश पु० यज्ञमा होमवानो एक हवि

पुरोधस् पु० कुळगुरु (राजानो)

पुरोधा ३ उ० आगळ मूकवु, अग्रेसर बनाववु (२) पुरोहित बनाववु(३) (पदे) नीमवु

पुरोभक्तका स्त्री० नास्तो; हाजरी

पुरोभाग वि० डखलियु; घूसणियु (२) दोष जोनारु (३) अदेखु (४) पु० मोखरो, आगळनो भाग (५) डखल, घूसणियावेडा (६) अदेखाई

पुरोभागिन् वि० मनस्वी, स्वच्छदी (२) घूसणियु; डखलियु (३) दोष जोनारु (४) अदेखु

पुरोमारुत पु० सामो पवन

पुरोवर्तिन् वि० —नी समक्ष के आगळ होय तेवु

पुरोवात पुं० जुओ 'पुरोमारुत'

पुरोहित पु० कुळगुरु, गोर

पुलक पु० रोम; रुवाटु

पुलकित वि० रोमाचित [थवा ते

पुलकोद्गम पु० रोमाच, रुवाटा ऊभां

पुलाक पु०, न० तुच्छ धान्य (खाली के अपूर्ण दाणावाळु) (२)भातनो गोळो

पुलिन पुं०, न० भाठु, नदीनो रेतीवाळो काठो (२) नदी वच्चे थयेलो बेट

पुलिंद, पुलिंदक पु० एक जगली के पहाडी जाति, तेनो माणस(२)पारधी

पुलोमजा स्त्री० शची (इद्राणी)

पुलोमन् पुं० एक राक्षस(इद्रनो ससरो)

पुलोमारि पु० इद्र
पुष् १, ४, ९ प० पोषवु, उछेरवु (२) पोषण करवु (३) विकसाववु, वधारवु (४) प्राप्त करवु (५) दर्शाववुं, प्रगट करवु (६) खीलवु (७) प्रकाशवु
पुष् वि० पोषतु (२) व्यक्त करतु
पुष्कर न० नील कमळ (२) हाथीनी सूढनु टेरवु (३) ढोल उपरनु चामडु (४) तरवारनु फळु (५) आकाश, अतरीक्ष (६) पु० तळाव; सरोवर (७) एक जातनु ढोल (८) एक जातनो मेघ (जे दुकाळ लावे छे) (९) पु०, न० विश्वना सात महा द्वीपोमानो एक [आवे छे)
पुष्कराक्ष पु० विष्णु
पुष्करावर्तक पु० एक मेघ (जेनाथी दुकाळ
पुष्करिणी स्त्री० हाथणी (२) कमळो-वाळु तळाव (३) तळाव, सरोवर (४) कमळनी वेल [हाथी
पुष्करिन् वि० खूब कमळवाळु (२) पु०
पुष्कल वि० पुष्कळ, अति (२) पूर्ण, पूरेपूरु (३) समृद्ध, भव्य, सुदर (४) उत्तम, श्रेष्ठ
पुष्ट ('पुष्' नु भू० कृ०) वि० पोषेलु; पोषायेलु (२) जाडु, लठ्ठ, मोटु, भारे
पुष्टांग वि० हृष्टपुष्ट, जाडु
पुष्टि स्त्री० पोषण, पोषवु ते (२) वृद्धि, समृद्धि (३) हृष्टपुष्टता
पुष्टिद वि० पुष्टिकारक
पुष्प् ४ प० विकसवु, खीलवु
पुष्प न० फूल (२) स्त्रीनु रज (३) कुबेरनु विमान (४) पोखराज
पुष्पक न० फूल (२) कुबेरनु विमान
पुष्पकेतु, पुष्पचाप, पुष्पधनुस्, पुष्प-धन्वन् पु० कामदेव
पुष्पधारण पु० विष्णु
पुष्पध्वज पु० कामदेव
पुष्पपुर न० पाटलिपुत्र नगर (पटना)
पुष्पबाण पु० कामदेव
पुष्पमास पु० चैत्रमास (२) वसतऋतु
पुष्परजस् न० फूलनी रज, पराग
पुष्परथ पु० मुसाफरी माटेनो रथ
पुष्पराग पु० पोखराज
पुष्परेणु पु० पराग
पुष्पलावी स्त्री० माळण
पुष्पवती स्त्री० रजस्वला स्त्री
पुष्पवर्ष पु०, **पुष्पवर्षण** न० फूलोनो वरसाद [वाडी
पुष्पवाटिका, पुष्पवाटी स्त्री० फूलनी
पुष्पवृष्टि स्त्री० फूलनो वरसाद
पुष्पवेणी स्त्री० फूलमाळा
पुष्पशर, पुष्पशरासन पु० कामदेव
पुष्पाकर वि० फूल खूब थता होय तेवु (वसतऋतु)
पुष्पागम पु० वसतऋतु
पुष्पाजीव पु० माळी
पुष्पायुध पु० कामदेव
पुष्पासव न० मध
पुष्पासार पु० पुष्पोनो वरसाद
पुष्पाजलि पु० खोबो भरीने फूल (अर्पवा ते)
पुष्पिणी स्त्री० रजस्वला
पुष्पित वि० फूलवाळु, फूल भरेलुं (२) खीलेलु (३) फूल जेवु (वाणी) (४)—थी समृद्ध
पुष्पोद्गम पु० फूल बेसवा ते
पुष्पोद्यान न० फूलवाडी
पुष्य पु० पोष मास (२) एक नक्षत्र
पुस्त न० चोपडवु ते, रग करवो ते (२) माटी, लाकडु के धातुमाथी करेली आकृति (३) पोथी, हस्तप्रत
पुस्तक न० पोथी, चोपडी
पुस्तकर्मन् न० रग के लेप करवो ते
पुंख पु०, न० बाणनो पीछावाळो छेडो
पुंगव पु० आखलो, साढ (२) (समासने अते) ते ते वर्गमा श्रेष्ठ (उदा० 'मुनिपुगव')

पुंज पु० ढगलो

पुंजित वि० ढगलो थयेलु के करेलु (२) [भेगु दबायेलु

पुंडरीक न० कमळ (२) सफेद कमळ (३) पु० धोळो रग (४) दक्षिण-पूर्व दिशानो दिग्गज (५) एक यज्ञ

पुंडरीकाक्ष पु० विष्णु

पुंड्रक पु० लाल शेरडी (२) तिलक

पुंयोग (पुस् + योग) पु० पुरुष साथे सबध [(व्या०)

पुंलिंग (पुस् + लिंग) न० नरजाति

पुंवत् अ० पुरुष पेठे

पुंश्चल पु० व्यभिचारी पुरुष

पुंश्चली स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री

पुंस् पु० नर प्राणी (२) मनुष्य (३) नरजाति (व्या०) (४) एक नरक

पुंसवन (पुस् + सवन) न० सगर्भाने पुत्र जन्मे ते माटे करातो सस्कार (२) गर्भ (३) ऋतुस्नान पछीनो समय

पुंस्कोकिल पु० नर कोयल

पुंस्त्व न० पुरुषपणु (२) नरजाति

पू १, ४ आ०, ९ उ० पवित्र करवु; शुद्ध करवु (२) साफ करवु, ऊपणवु

पू वि० (समासने अते) साफ करनारु, पवित्र करनारु

पूग पु० समूह, ढगलो (२) मडळ (३) सोपारीनु झाड (४) न० सोपारी

पूगी स्त्री० सोपारीनु झाड

पूगीफल न० सोपारी

पूज् १० उ० पूजवु

पूजक वि० पूजनारु

पूजन न०, **पूजना** स्त्री० पूजा करवी ते

पूजा स्त्री० पूजन, आराधना, उपासना

पूजार्ह वि० पूज्य, मानपात्र

पूजासंभार पु० जुओ 'पूजोपकरण'

पूजित ('पूज्' नु भू० कृ०) वि० पूजायेलु, पूजा करायेलु [सामग्री

पूजोपकरण न० पूजा माटेनी साधन-

पूज्य वि० पूजवा योग्य

पूत ('पू' नु भू० कृ०) वि० शुद्ध करेलु, पवित्र करेलु (२) ऊपणेलु (३) सडेलु, गधातु

पूतक्रतायी स्त्री० शची, इद्राणी

पूतक्रतु पु० इद्र

पूतना स्त्री० एक राक्षसी

पूतपाप, पूतपाप्मन् वि० पापमुक्त

पूति वि० सडेलु, गधातु (२) स्त्री० पवित्रता, शुद्धि (३) दुर्गंध, बदबो; सडो (४) न० परु

पूतिक वि० सडेलु, गधातु

पूतिका स्त्री० कस्तूरी जेवु द्रव्य पेदा करनार बिलाडी जेवु प्राणी (२) सोमवल्लीना अभावे वपराती एक वनस्पति

पूतिवक्त्र वि० दुर्गंधी मुखवाळु

पूप पु० पूडो, अपूप

पूय् १ उ० गधावु (२) भेदवु, तोडवुं

पूय पु०, न० परु

पूर् ४ आ० पूरवु, भरवु (२) खुश करवु (३) १० उ० भरी काढवु (४) फूंकवु, हवा भरवी (५) ढाकवु, घेरवु (६) सतोषवु (कुतूहल इ०)

पूर पु० भरी काढवु ते (२) खुश करवुं ते (३) पाणीयी ऊभरावु – छलकावु ते (४) घा भरावो ते (५) नाक वाटे श्वास भरवो ते

पूरक वि० भरी काढतु (२) पूर्ण करनारु (३) सतोषनारु (४) पु० प्राणायाममा डाबे नसकोरेथी श्वास अदर भरवो ते

पूरण वि० पूरनारु, भरनारु (२) क्रमवाचक (उदा० द्वितीय, तृतीय) (३) न० भरी काढवु ते, पूर्ण करवु ते

पूरिक पु०, **पूरिका** स्त्री० पूरणपोळी

पूरित ('पूर्' नु भू० कृ०) वि० भरी काढेलु

पूरुष पु० जुओ 'पुरुष'

पूरोत्पीड पु० पूर आववु के ऊभरावु ते
पूर्ण ('पूर्' नु भू० कृ०) वि० पूरु, सपूर्ण, भरेलु (२) आखु, कुल (३) सिद्ध थयेलु (४) समाप्त थयेलु
पूर्णक पु० कूकडो (२) चास पक्षी
पूर्णकाम वि० जेनी कामनाओ पूर्ण थई छे तेवु (२) पु० परमात्मा
पूर्णकुंभ पु० पाणीथो भरेलो घडो (२) युद्धनो एक प्रकार (३) घडाना आकारनु भीतमा पाडेलु बाकु
पूर्णपात्र न० पूरो भरेलो प्यालो के घडो (२) २५६ खोबानु माप (३) उत्सव प्रसगे के वधामणी अर्थे (वस्त्रो, घरेणा वगेरेथी भरेलु) अपातु पात्र (पेटी के करडियो) (४) यज्ञने अते चोखा भरीने अपातु पात्र
पूर्णमानस वि० सतुष्ट
पूर्णमास पु० पूनमने दिवसे करवानो एक यज्ञ (२) चद्र
पूर्णमासी स्त्री० पूनम
पूर्णावतार पु० पूर्ण कळा साथेनो (विष्णुनो चोथो, सातमो के आठमो) अवतार (नृसिंह, राम के श्रीकृष्ण तरीकेनो)
पूर्णाहुति स्त्री० पूरी कडछी भरीने आहुति (होमनी समाप्ति वखते)
पूर्णि स्त्री० पूर्ण करवु ते, भरवु ते (२) पूनम
पूर्णिका स्त्री० एक जातनु पखी
पूर्णिमा, पूर्णिमासी स्त्री० पूनम
पूर्णेंदु पु० पूनमनो चद्र
पूर्त न० वावकूवा, धर्मशाळा वगेरे बधाववा रूपी पुण्यकर्म (अग्निहोत्रादिथी थतु ते 'इष्ट')
पूर्ति स्त्री० पूर्ण करवु ते (२) तृप्ति
पूर्व वि० पहेलु, प्रथम (२) पूर्व दिशानु, पूर्व दिशा तरफनु (३) प्राचीन; अगाउनु (४) प्राचीनकाळथी चालतु आवेलु (५) शरूआतनु, प्रारभनु (६) पु० पूर्वज (७) न० आगळनो भाग
पूर्वक वि० (समासने अते) -जेनी आगळ छे तेवु, -साथनु (२) पहेलानु, अगाउनु (३) पूर्व, प्रथम (४) पु० पूर्वज
पूर्वकाय पु० शरीरनो आगळनो भाग (२) माणसना शरीरनो उपरनो भाग
पूर्वकालिक, पूर्वकालीन वि० प्राचीन; पहेलानु
पूर्वक्रिया स्त्री० पूर्वतैयारी
पूर्वज वि० पूर्वे जन्मेलु (२) पु० मोटो भाई (३) पितृ
पूर्वजन्मन् न० पहेलानो जन्म (२) पु० मोटो भाई
पूर्वजा स्त्री० मोटी बहेन
पूर्वजाति स्त्री० पूर्वजन्म
पूर्वतस् अ० पूर्वमा, पूर्व तरफ (२) आगळ, -नी सामे (३) प्रथम, पहेला
पूर्वत्र अ० पूर्वे, पहेला
पूर्वदिश् स्त्री० पूर्व दिशा
पूर्वदिष्ट न० पूर्व कर्मोनु फळ
पूर्वदृष्ट वि० प्राचीनोए जणावेलु
पूर्वदेव पु० असुर (२) पितृ (३) (द्वि० व०) नर अने नारायण
पूर्वदेवता स्त्री० पितृ
पूर्वनिविष्ट वि० पू॰ करेलु
पूर्वपक्ष पु० शुक्ल पक्ष (२) चर्चा के निर्णय माटे कोई शास्त्रीय विषयनी बाबतमा रजू करेलो पक्ष के प्रश्न (३) अदालतमा वादीए रजू करेली वात
पूर्वपीठिका स्त्री० उपोद्घात
पूर्वपुरुष पु० ब्रह्मा (२) पिता, पितामह, प्रपितामह ए त्रणमानो कोई पण (३) पूर्वज [आतमा
पूर्वम् अ० अगाउ, पहेला (२) शरू-
पूर्वपूर्व वि० एकएकथी पहेलानु (२) पुं० (ब० व०) पूर्वजो

पूर्वबंधु पु० उत्तम के प्रथम मित्र
पूर्वभव आगळनो जन्म
पूर्वभाव पु० पूर्वजन्म
पूर्वमीमांसा स्त्री० जैमिनि रचित कर्मकांड प्रधान दर्शन ('उत्तर मीमांसा' अर्थात् वेदांतथी जुदु)
पूर्वरंग पु० नाटकनो मंगलाचरणवाळो भाग [जन्मेलो प्रेम
पूर्वराग पु० प्रत्यक्ष भेगा मळ्या पहेला
पूर्वरात्र पु० रात्रीनो प्रथम भाग
पूर्ववयस् वि० जुवान (२) न० जुवानी
पूर्ववर्तिन् वि० पहेलानु
पूर्ववृत्त न० पहेला बनेलो बनाव (२) पहेलानु चरित्र
पूर्वसंचित वि० अगाउ एकठु करेलु (जेमके, आगळना जन्ममा)
पूर्वसागर पु० पूर्व समुद्र
पूर्वंगम वि० आगळ – पहेला जनारुं
पूर्वा स्त्री० पूर्व दिशा
पूर्वाचल, पूर्वाद्रि पु० उदयाचल पर्वत
पूर्वापर वि० पूर्वनु अने पश्चिमनु (२) पहेलु अने छेल्लु (३) प्रारंभनु अने पछीनु (४) न० पहेला जे होय ते अने पछी जे होय ते
पूर्वार्ध पु०, न० प्रथमनो अर्धो भाग (२) शरीरनो उपरनो भाग
पूर्वाह्ण पु० बपोरनी पहेलानो भाग
पूर्विक वि० पहेलानु, अगाउनु
पूर्वेतर वि० पश्चिमनु
पूर्वेद्युस् अ० आगले दिवसे, गई काले (२) दिवसना प्रारंभमा, सवारे
पूर्वोक्त, पूर्वोदित वि० आगळ कहेलु
पूष पु० पोष महिनो
पूषन् पु० सूर्य [नाम
पूषात्मज पु० इंद्र (२) मेघ (३) कर्णनु
पूषानुज पु० वरसाद
पॄ ३ प० पूर्ण करवु (२) –माथी बहार काढवु, बचाववु, रक्षण करवु (३) पाळवु, वृद्धिंगत करवु
पॄ ९ प० रक्षवु
पृ ६ आ० [प्रियते] काममा रोकावु (मोटे भागे 'व्या' उपसर्ग साथे) –प्रेरक० कामे लगाडवु; काम सोंपवु (२) मूकवु, प्रेरवु, नाखवु
पॄ १० उ० पार लई जवु (२) सामे पार जवु, पूरु करवु (३) शक्तिमान थवु (४) उद्धार करवो, बचाववु
पृ ५ प० प्रसन्न करवु (२) खुश थवु
पृक्त ('पृच्' नु भू० कृ०) वि० मिश्रित; भळेलु (२) स्पर्शायेलु, संबद्ध (३) भरेलु, पूर्ण
पृच् १ प०, १० उ० स्पर्श करवो, संबंधमा आववु (२) विरोध करवो; रुकावट करवी (३) २ आ० संबंधमा आववु (४) ७ प० जोडवु, संबंध करवो
पृच्छक वि० तपास करनारु, पूछनारु
पृच्छा स्त्री० पूछपरछ (२) प्रश्न (भविष्यने लगतो)
पृत् स्त्री० लश्कर, सेना (पहेली पांच विभक्तिनां रूपो नथी, अने पछी 'पृतना' शब्दने बदले द्वितीया द्वि० व० पछी विकल्पे उमेराय छे)
पृतना स्त्री० सेना (२) युद्ध
पृथक् अ० जुदु जुदु, छूटु छूटु (२) भिन्न होय तेम (३) एक बाजुए, अलग (४) सिवाय, विना
पृथक्करण न०, **पृथक्क्रिया** स्त्री० घटक तत्त्वो जुदा पाडवा ते [भिन्न)
पृथगात्मन् पु० जीवात्मा ('परमात्मा'थी
पृथग्जन पु० असंस्कारी माणस (२) मूर्ख, अज्ञ (३) दुष्ट, पापी
पृथग्विध वि० विविध प्रकारनु
पृथवी स्त्री० पृथ्वी
पृथा स्त्री० कुंती
पृथाज, पृथातनय, पृथासुत, पृथासूनु पु० कुंतीना (युधिष्ठिर, भीम अने अर्जुन ए) पुत्रोमानो दरेक (मुख्यत्वे अर्जुन माटे वपराय छे)

पृथिवी स्त्री० पृथ्वी, धरती (२) पृथ्वी तत्त्व (महाभूत) [राजा
पृथिवीक्षित्, पृथिवीपाल, पृथिवीभुज् पु०
पृथिवीभृत् पु० पर्वत
पृथिवीरुह पु० वृक्ष
पृथिवीश पु० राजा
पृथु वि० विशाळ, मोटु, पहोळु (२) पुष्कळ, घणु (३) मोटु
पृथुक पु०, न० पौंआ (२) पु० बाळक
पृथुकीर्ति वि० विशाळ ख्यातिवाळु
पृथुजघन, पृथुनितंब वि० विशाळ के मोटा नितबवाळु [वाळु
पृथुप्रथ, पृथुयशस् वि० विशाळ ख्याति-
पृथुल वि० मोटु, विशाळ
पृथुश्री वि० अति समृद्ध
पृथ्वी स्त्री० धरती, धरणी (२) पृथ्वी तत्त्व (महाभूत)
पृथ्वीधर पु० पर्वत
पृथ्वीपति पु० राजा
पृश्नि वि० काबरचीतरु (२) स्त्री० पृथ्वी (३) देवकी (कृष्णनी माता)
पृश्निगर्भ पु० श्रीकृष्ण
पृश्निधर पु० विष्णु, श्रीकृष्ण
पृष् १ आ० छाटवु, सीचवु
पृषत् वि० टपकावाळु, काबरचीतरु (२) पु० काबरचीतरो मृग (३) न० टीपु, बिंदु (व०व०) [बिंदु
पृषत पु० काबरचीतरो मृग (२) पाणीनु
पृषतांपति पु० पवन, वायु
पृषत्क पुं० बाण (२) गोळ टपकु
पृष्ट ('पृष्' अथवा 'प्रच्छ्' नु०भू०कृ०) वि० पूछेलु (२) छाटेलु (३) न० प्रश्न
पृष्ठ न० पीठ, पाछळनो भाग (२) कोई जानवरनी पीठ (३) उपरनु तळ – सपाटी (४) पाछळनी के बीजी बाजु (५) घरनु सपाट छापरु (६) चोपडीनु पान (७) शेष रहेलु ते
पृष्ठके कृ ८ उ० मुलतवी राखवु (२) तजी देवु
पृष्ठग वि० पीठ पर सवारी करी होय तेवु
पृष्ठगामिन् वि० जुओ 'पृष्ठानुग'
पृष्ठगोप पु० लडता योद्धानी पूठ साचवनार योद्धो
पृष्ठतस् अ० पाछळथी (२) पूठे पूठे (३) पीठ उपर (४) पीठ पाछळ, गुप्त रीते
पृष्ठतः कृ ८ उ० पाछळ छोडवु, तजवु
पृष्ठपीठी स्त्री० पहोळी पीठ
पृष्ठभूमि स्त्री० मकाननो उपलो माळ
पृष्ठमास न० पीठ उपरनु मास (२) बाकीनु – छेवटनु मास
पृष्ठलग्न वि० पूठे लागेलु, अनुसरतुं
पृष्ठवंश पु० पीठनु हाडकु
पृष्ठानुग वि० अनुसरतु, पूंठे आवतु
पृष्ठ्य पु० भार वहन करनार घोडो
पृष्णि स्त्री० पगनी एडी, पानी
पॄ ३, ९ प० पूर्ण करवु (२) सतुष्ट करवु (आशा, इच्छा) (३) पवन भरवो – फूकवु (शख, वासळी) (४) तृप्त करवु (५) पोषवु
पेचक पु० घुवड
पेट पु० टोपली, पेटी (२) समुदाय (३) परिजनपरिवार [समूह, जथो
पेटक पु०, न० टोपली, डबो, पेटी (२)
पेटिका, पेटी स्त्री० करडियो, पेटी
पेट्टाल, पेट्टालक पु०, न० पेटी, करडियो
पेय वि० पीवा योग्य (२) न० पाणी (३) दूध (४) मद्य इ० पीणु
पेया स्त्री० चोखानी काजी
पेरा स्त्री० एक वाद्य
पेलव वि० नाजुक, कोमळ (२) पातळु
पेला स्त्री० एक वाद्य
पेलिन् पु० घोडो
पेशल वि० पोचु, नरम, नाजुक (२) पातळु, नानु (केड) (३) सुंदर; मनोहर (४) कुशळ, निपुण (५) चालाक (६) शणगारेलु
पेशि (–शी) स्त्री० मासनो टुकडो के

गोळो (२) स्नायुपेशी (३) एक वाद्य (४) ढाकण, म्यान
पेष पु० दळवु ते, कचरवु ते
पेषणि(-णी) स्त्री० घटी इ० दळवा-वाटवानु साधन
पेषल, पेसल वि० जुओ 'पेशल'
पैठर वि० (पिठर) तपेलीमा राधेलु
पैतामह वि० दादा (पिताना पिता) सबधी (२) ब्रह्मा सबधी [सबधी
पैतृक वि० पिता सबधी (२) पूर्वज-पितृ
पैप्पल वि० पीपळाना लाकडानु
पैशल्य न० कोमळता (२) कुशळता
पैशाच वि० पिशाच सबधी (२) पु० पिशाच (३) आठ विवाहना प्रकारो-मानो छेल्लो प्रकार (जेमा ऊघेली के बेहोश एवी कन्याने भ्रष्ट करे छे)
पैशुन(-न्य) न० चाडियापणु [रग
पैंगल्य न० पिंगळो (लालाश पडतो पीळो)
पोगंड वि० जुवान (५थी १६ वर्षनु)
पोटा स्त्री० पुरुषना लक्षणवाळी स्त्री (दाढी-मूछना वाळवाळी)
पोट्टलिका, पोट्टली स्त्री० पोटली
पोत पु० कोई पण प्राणीनु बच्चु (२) दश वर्षनो हाथी (३) नाव, वहाण (४) नानो छोड [छोड
पोतक पु० प्राणीनु बच्चु (२) नानो
पोतभंग पु० वहाण भागवु के डूबवु ते
पोतवणिज् पु० वहाणवटु करतो वेपारी
पोत्र न० डुक्करनु अणियाळु नाक (२) वहाण (३) हळपूणी
पोथ पु० प्रहार
पोथकी स्त्री० आख उपर थती आजणी
पोथित ('पुथ्'नु भू० कृ०) वि० नाश करेलु, वध करेलु
पोप्लूयमान वि० तरतु-तणातु आवतुं
पोलिका स्त्री० पूरी, पोळी
पोषक पु० पोषण करनार
पोषण न० पोषवु ते
पोषध पु० उपवासनो दिवस
पोषिन्, पोष्टृ वि० पोषण करनारु
पोष्य वि० पोषवा योग्य
पौगंड न० (५ थी १६ वर्षनी उमर सुधीनी) किशोर अवस्था
पौत्र पु० पुत्रनो पुत्र
पौत्रिक वि० पुत्र सबधी के पौत्र संबधी
पौनरुक्त(-क्त्य) न० वारवार कहेवु ते (२) वधारानु-नकामु होवु ते
पौर वि० शहेरने लगतु (२) शहेरमा वनेलु (३) पु० नागरिक, शहेरी [काज
पौरकार्य न० राजकाज, जाहेर काम-
पौरजन पु० नगरवासी (२) नागरिको
पौरजानपदाः पु० ब० व० शहेरना तेम ज गामडाना लोको
पौरमुख्य पु० शहेरनो मुख्य माणस, मुख्य नागरिक
पौरलोक पु० जुओ 'पौरजन'
पौरव वि० पुरु राजानो वशज
पौरवृद्ध पु० जुओ 'पौरमुख्य' [प्रथम
पौरस्त्य वि० पूर्व दिशानु (२) आगळनु;
पौरध्र वि० स्त्री सबधी, स्त्रीनु
पौराणिक वि० प्राचीन काळनु, पुराणु (२) पुराण सबधी (३) पुराणनु जाणकार
पौरांगना स्त्री० शहेरी स्त्री
पौरुष वि० पुरुष सबधी (२) मर-दानगीभर्यु (३) न० पुरुषप्रयत्न, उद्योग (४) वीरता, सामर्थ्य (५) आगळीओ अने हाथ ऊचा करी पुरुष ऊभो रहे तेटलु माप
पौरुषेय वि० पुरुषनु, पुरुषे रचेलु (२) मरदानगीभर्यु
पौरुष्य न० पुरुषपणु, मर्दाई
पौरुहूत वि० इद्र सबधी, इद्रनु
पौरोभाग्य न० दोष काढवा ते (२) मत्सर, अदेखाई (३) दुष्ट कर्म
पौरोहित्य न० पुरोहितपणु; गोरपदु

पौर्णमास वि० पूनमने लगतु (२) पु० ते दिवसे करातो विधि
पौर्त, पौर्तिक वि० (वावकूवा इ० बनाववा रूपी) पुण्यकर्म सबधी
पौर्व, पौर्वक वि० पूर्वनु, भूतकाळनु (२) पूर्व दिशा सबधी (३) परपरागत
पौर्वदेहिक, पौर्वदैहिक वि० पूर्व जन्मने लगतु, पूर्व जन्ममा करेलु
पौर्वापर्य न० पूर्वापर होवापणु, क्रम
पौर्वाह्णिक वि० पूर्वाह्णने लगतु
पौर्विक वि० आगळनु, पहेलानु (२) पूर्वजोनु (३) प्राचीन
पौलस्त्य पु० रावण (२) कुबेर
पौलोम पु० इद्र (पौलोमीनो पति)
पौलोमी स्त्री० शची, इद्राणी (पुलोमा राक्षसनी पुत्री)
पौषध पु० उपवासनो दिवस
पौषी स्त्री० पोष महिनानी पूनम
पौष्कर वि० नील कमळ संबधी
पौष्टिक वि० पुष्टिकारक
पौष्प वि० फूलनु, फूल सबधी
पौंडरीक वि० कमळनु बनावेलु, कमळ सबधी [शखनुं नाम (३) तिलक
पौंड्र पु० एक देशनु नाम (२) भीमना
पौंस्न वि० पुरुषने योग्य (२) मरदानगी-वाळु (३) न० मरदाई, पुरुषपणु
प्यै १ आ० वृद्धि थवी, वधवु
प्र अ० धातुओनी पूर्वे 'आगळ', 'दूर' ए अर्थमा वपराय (२) विशेषणोनी पूर्वे 'अतिशय', 'पुष्कळ' —ए अर्थमा वपराय (३) नामोनी पूर्वे 'आरभ', 'लबाई', 'ताकात', 'अधिकता', 'तीव्र-ता', 'संभव – मूळ', 'पूर्णता', 'वियोग', 'उत्कर्ष', 'इच्छा', 'भक्ति', 'विराम' —ए अर्थमा वपराय [नजरे पडे तेवु
प्रकट वि० खुल्लु, स्पष्ट, जाहेर (२)
प्रकटम् अ० स्पष्ट, खुल्लु; जाहेरमा
प्रकटयति प० (दर्शाववु, प्रगट करवु)
प्रकथ् १० उ० जाहेर करवु, जणाववु
प्रकर पु० ढगलो, समूह (२) झूमखु, गुच्छो (३) सहाय (४) धोवु ते
प्रकरण न० प्रसग, विषय (२) ग्रथनो विभाग, अध्याय (३) कोई पण बावत उपरनो सपूर्ण व्यवहार – मामलो (४) प्रस्तावना (५) कशु करवानु खास विधान करतु वचन (६) कविकल्पित वस्तुवाळु दशअकी नाटक
प्रकरी स्त्री० पछीना भागने समजाववा दाखल करेली उपकथा (नाट्य०)
प्रकर्ष पु० श्रेष्ठता, उत्कर्ष (२) आधि-क्य, तीव्रता (३) वळ, शक्ति (४) लबाई (५) आत्यतिकता
प्रकल् १० उ० अनुसरवु, पाछळ जवु (२) प्रेरवु (३) ईजा करवी
प्रकल्पित वि० रचेलु (२) निश्चित करेलु (३) आणेलु के रेडेलु (आसु)
प्रकंप् १ आ० कपवु, ध्रूजवु
प्रकंप पु० ध्रूजवु – कपवु ते (२) तीव्र कप के ध्रुजारो
प्रकपन वि० कपावनारु, ध्रुजावनारु (२) पु० पवन, वटोळ (३) न० जोरदार आचको के कप
प्रकाम वि० कामुक, विषयी (२) अत्यत, घणु, इच्छा मुजवनु
प्रकामत० अ० मरजी मुजब (२) राजी-खुशीथी [खानारु
प्रकामभुज् वि० धराई जवाय त्या सुधी
प्रकामम् अ० घणु, अत्यत होय तेम (२) यथेष्टपणे (३) मरजीथी, इच्छाथी
प्रकार पु० भेद, जात (२) रीत, तरेह
प्रकालन वि० नाश करनारु (२) पाछळ पडतु, पीछो पकडतु (३) न० सहार
प्रकाश् १ आ० प्रकाशवु (२) देखावु, नजरे पडवु (३) —ना जेवु देखावु —प्रेरक० देखाडवु, प्रगट करवु (२) खुल्लु करवु (३) जाहेर करवु, जणा-ववु (४) प्रकाशित – तेजवाळु करवु

प्रकाश वि० तेजस्वी, चळकतु (२) स्पष्ट, देखी शकाय तेवु, प्रगट (३) प्रसिद्ध (४) जाहेर (५) झाड वगेरे विनानु – चोख्खु (६) खीलेलु (७) (समासने अते) –ना जेवु देखातु, –ने मळतु आवतु (८) पु० तेज, काति, चळकाट (९) (ग्रथनामने अते) विवरण, खुलासो (१०) तडको (११) कीर्ति, प्रसिद्धि (१२) खुल्ली जगा (१३) ज्ञान

प्रकाशक वि० प्रकाश आपतु (२) प्रगट करतु, देखाडतु, खुल्लु करतु (३) खुलासो करतु, विवरण करतु

प्रकाशनारी स्त्री० वेश्या, गणिका

प्रकाशम् अ० जाहेरमा, खुल्ली रीते (२) मोटेथी, वधा साभळे तेम ('आत्मगतम्' थी ऊलटु)

प्रकाशात्मक वि० प्रकाशतु, तेजस्वी

प्रकाशात्मन् वि० तेजस्वी (२) पु० सूर्य (३) विष्णु (४) शिव

प्रकाशिन् वि० चळकतु, तेजस्वी, स्पष्ट

प्रकाशे अ० जाहेरमा (२) प्रगट (३) –नी हाजरीमा

प्रकाशेतर वि० अदृश्य

प्रकाश्य वि० प्रगट करवा योग्य, प्रकाशवा योग्य (२) न० प्रकाश

प्रकाड पु०, न० मूळथी शाखा सुधीनो थडनो भाग (२) शाखा, फणगो (३) (समासने अते) ते ते वर्गनु श्रेष्ठ होय ते (उदा० 'क्षत्रप्रकाड') (४) पु० वाहुनो उपरनो भाग

प्रकीर्ण वि० वेरायेलु – वेरेलु, विखेरायेलु (२) जाहेर करेलु (३) फरफरतु (४) गूचवायेलु, अव्यवस्थित (५) मिश्रित (६) नष्ट (७) गाढ लेपायेलु (८) न० परचूरण – मिश्र एवु ते

प्रकीर्णक पु०, न० चमरी, चामर (२) न० परचूरण वावतोनो सग्रह

प्रकीर्ति स्त्री० प्रशसा, कीर्ति (२) प्रख्याति (३) जाहेरात

प्रकीर्तित वि० जाहेर करेलु (२) वखाणेलु

प्रकुप् ४ प० गुस्से थवु, चिडावु (२) वधवु, तीव्र थवु

प्रकृ ८ उ० करवु, आरभवु (२) सिद्ध करवु, अमलमा मूकवु (३) हुमलो करवो, वळात्कार करवो (४) समानवु, पूजवु (५) उच्चारवु (६) आगळ मूकवु, प्रथम उल्लेख करवो (७) नीमवु (८) प्रकार – विभाग पाडवा

प्रकृत वि० सपूर्ण थयेलु, पूर्ण करेलु (२) शरू करेलु, आरभेलु (३) नीमेलु (४) साचु, स्वाभाविक (५) प्रस्तुत; जेनी वात चालु होय तेवु (६) न० मूळ वस्तु, उपाडेली – चालु वात

प्रकृति स्त्री० कोई पण वस्तुनु कुदरती स्वाभाविक रूप (तेथी ऊलटु 'विकृति') (२) स्वभाव, मिजाज (३) मूळ; वश, मूळ कारण (४) जड पदार्थोनु मूळ कारण (साख्य०) (५) व० व० राजानो अमात्य वर्ग (६) राजानो प्रजावर्ग

प्रकृतिकल्याण वि० कुदरती रीते सुदर

प्रकृतिकृपण वि० समजवामा स्वभावथी ज धीमु के अशक्तिमान

प्रकृतितरल वि० स्वभावथी ज चचळ

प्रकृतिपुरुष पु० प्रधान, राजपुरुष

प्रकृतिमत् वि० कुदरती, सामान्य (२) सात्त्विक वृत्तिवाळु

प्रकृतिमंडल न० आखु राज्य, आखो [प्रजावर्ग

प्रकृतिसिद्ध वि० कुदरती, स्वाभाविक

प्रकृतिसुभग वि० कुदरती रीते ज सुदर

प्रकृतिस्थ वि० मूळ स्वाभाविक स्थितिमा रहेलु के आवेलु (२) सहज, कुदरती (३) नीरोगी, रोगमुक्त थयेलु (४) नग्न, खुल्लु

प्रकृत्यमित्र पु० सामान्यपणे शत्रु होय ते

प्रकृष् १ प० खेची जवु, खेंचवु (२)

दोरवु (३) वाळवु (धनुष्य) (४) वधवु (५) पीडवु, पजववु
प्रकृष्ट विं० खेंचेलु (२) लवावेलु, लावु (३) श्रेष्ठ, चडियातु, उत्तम (४) मुख्य (५) तीव्र, अतिशय (६) त्रस्त
प्रकॄ ६ प० [प्रकिरति] वेरवु, विखेरवु (२) वाववु (वीज) (३) फूटी नीकळवु —कर्मणि० अलोप थवु
प्रकॄत् १० उ० [प्रकीर्तयति —ते] जाहेर करवु (२) वखाणवु
प्रक्लृप् १ आ० [प्रकल्पते] —ने अनुकूळ होवु (२) बनवु, थवु (३) सफळ थवु —प्रेरक० शोधी काढवु, योजवु (२) सुसज्ज करवु, तैयार करवु (३) नक्की करवुं, स्थापवु (४) आगळ वधारवु (५) वाधवु
प्रक्लृप्त वि० तैयार — सज्ज करेलु
प्रकोप पु० गुस्सो, क्रोध (२) उत्तेजना; उश्केरणी (३) वळवो
प्रकोष्ठ, प्रकोष्ठक पु० कोणीनी नीचेनो काडा सुधीनो हाथनो भाग (२) महेलना दरवाजानी पासेनो ओरडो (३) चोक
प्रक्रम् १ उ० [प्रक्रामति, प्रक्रमते] आगळ जवु — चालवु (२) कूच करवी, ऊपडवु (३) चाल्या जवु (४) आ० आरभवु (५) माथे लेवु, हाथमा लेवु (६) —नी प्रत्ये वर्तवु
प्रक्रम पु० डगलु, पगलु (२) प्रारभ (३) आगळ वधवु ते (४) क्रम, व्यवस्था, रीत, पद्धति
प्रक्रमण न० आगळ डगलु भरवु के वधवु ते (२) आरभ
प्रक्रात वि० गयेलु, गत (२) आरभेलु (३) हाथमा लीधेलु, प्रस्तुत (४) पूर्वोक्त (५) आगळ गयेलु
प्रक्रिया स्त्री० कार्यपद्धति, रीत (२) विधि, अनुष्ठान (३) प्रकरण, खड
प्रक्लिन्न वि० घणु ज भीनु (२) तृप्त (३) दयार्द्र बनेलु
प्रक्लेद पु० भीनाश
प्रक्लेदन वि० भीनु करनारु
प्रक्षल् १० उ० धोवु, साफ करवु (२) भूसी काढवु [करवु ते
प्रक्षालन न० धोई नाखवु ते, साफ
प्रक्षालित वि० धोयेलु, साफ करेलु
प्रक्षि ५, ९ प० क्षीण थवु, कृश थवु (२) नाश करवु, ईजा करवी
प्रक्षिप् ६ प० फेकवु, फेंकी देवु (२) दाखल करवु — उमेरवु
प्रक्षिप्त वि० फेंकेलु, —मा नाखेलु (२) —मा दाखल करेलु — उमेरेलु
प्रक्षुण्ण वि० कचरी नाखेलु
प्रक्षुद् ७ उ० कचरवु [उमेरवु ते
प्रक्षेप पु० फेंकवु — नाखवु ते (२)
प्रक्षोभ पु०, **प्रक्षोभण** न० क्षुब्ध करवु ते
प्रक्ष्वेडित वि० गर्जना करतु, घोघाट करतु (२) न० गर्जना, घोघाट
प्रखर वि० तीव्र (२) अति तीक्ष्ण
प्रख्य वि० स्पष्ट, नजरे पडतु (२) (समासने छेडे) -ना जेवु देखातु
प्रख्या २ प० जाहेर करवु (२) वखाणवु
प्रख्या स्त्री० प्रसिद्धि, विख्याति (२) रूप, देखाव (३) शोभा, काति (४) सादृश्य
प्रख्यात वि० विख्यात, प्रसिद्ध
प्रख्याति स्त्री० प्रसिद्धि, ख्याति (२) स्तुति, प्रशसा
प्रख्यापन न० जाहेर करवु ते, जणाववु ते
प्रगत वि० आगळ गयेलु (२) भिन्न
प्रगदित वि० स्पष्ट कहेवायेलु (२) बोलतु
प्रगम् १ प० [प्रगच्छति] आगळ वधवु (२) जवा नीकळवु (३) पहोचवु, प्राप्त करवु
प्रगम पु० प्रणय थता स्त्रीने रीझववानी पोता थकी कराती शरूआत

प्रगल्भ् १ आ० हिंमत करवी, शक्तिमान थवु (२) निश्चय करवो (३) धृष्टता करवी, तत्पर थवु

प्रगल्भ वि० शूरवीर (२) हिंमतवान, धृष्ट (३) परिपक्व (४) विकसित (५) कुशळ (६) उद्धत, बेशरम

प्रगल्भता स्त्री० धृष्टता, निर्लज्जता (२) उत्साह (३) सकोच न होवो ते (४) प्रतिभायुक्त होवु ते

प्रगडी स्त्री० शहेरनी फरतो कोट

प्रगाढ वि० –मा डूबेलु, अदर ऊतरेलु (२) अतिशय (३) दृढ (४) कठण (५) घणु आगळ वधेलु (६) न० मुश्केली, कष्ट

प्रगातृ पु० गवैयो [गीत

प्रगीत वि० गायेलु (२) गानारु (३) न०

प्रगुण वि० सरळ, सीधु, प्रमाणिक (२) उत्तम गुणोवाळु (३) लायकातवाळु, सद्गुणी (४) चतुर, होशियार [ते

प्रगुणन न० सुव्यवस्थित करवु ते; गोठववु

प्रगुणीकृ ८ उ० व्यवस्थित करवु (२) सरखु करवु, अनुकूळ करवु (३) उछेरवु; पोषवु

प्रगे अ० वहेली सवारे

प्रगेतन वि० सवारे करवानु

प्रगेनिश, प्रगेशय वि० सवारे सूई रहेनारु

प्रग्रह् ९ उ० [प्रगृह्णाति, प्रगृह्णीते] ग्रहण करवु, पकडवु (२) विग्रह करवो (३) अनुग्रह करवो

प्रग्रह वि० आगळ धर्यु होय तेवु (२) पकडतु, लेतु (३) पु० ग्रहण करवु ते, पकडवु ते (४) लगाम (५) चाबुक (६) अकुश, काबू (७) केद (८) अनुग्रह, कृपा (९) सग्रह (१०) जोडवु ते (हाथ)

प्रग्रहिन् वि० हाथमा लगाम पकडनारुं

प्रग्राह पु० पकडवु ते (२) धारण करवुं ते (३) त्राजवानी दोरी (४) लगाम

प्रघट् १ आ० मग्न थवु; व्यापृत थवुं (२) शरू करवु

प्रचक्ष् २ आ० कहेवु, बोलवु (२) गणवु, मानवु [जयो

प्रचय पु० चूटवु–वीणवु ते (२) समूह,

प्रचर् १ प० विचरवु, फरवु, भटकवु (२) प्रगट थवु, देखावु (३) प्रचार पामवु, फेलावु (४) कामे लागवुं, माथे लेवु

प्रचल् १ प० ऊछळवु, कपवु (२) जवा नीकळवु (३) कूदको मारवो (४) विचलित–क्षुब्ध थवु (५) प्रचारमा आववु (६) –मायो चलित थवुं

प्रचल वि० हालतु, कपतु, अस्थिर (२) प्रचलित, प्रचारमा आवेलु

प्रचलन न० ध्रूजवु–कपवु ते (२) पाछु भागवु ते (३) प्रचलित होवुं के थवुं ते

प्रचला स्त्री० काचिडो, सरडो

प्रचलाकिन् पु० मोर

प्रचलित वि० कपेलु, हालेलु, गतिमान (२) आमतेम फरतु (३) भटकतु (४) जवा नीकळेलु (५) प्रचारमा आवेलु, रूढ

प्रचंड वि० अति उग्र (२) बळवान; प्रतापी (३) अति उष्ण (४) भयंकर (५) असह्य (६) धृष्ट, हिंमतवान

प्रचंडसूर्य वि० सूर्य बहु तपतो होय तेवु (ऋतु)

प्रचाय पु० जुओ 'प्रचय'

प्रचार पु० विचरवु ते, भटकवु ते (२) प्रगट थवु ते, देखावु ते (३) उपयोगमा होवु ते, प्रचलित होवु ते (४) वर्तन, वर्तणूक (५) रूढि (६) चरवानी जगा, चरो (७) मार्ग, रस्तो (८) सचार, प्रवृत्ति (९) जाहेरात, ढढेरो

प्रचालन न० हलाववु–डखोळवु ते

प्रचि ५ उ० भेगु करवु, एकठु करवु (२) उमेरवु, वधारवु (३) कापी नाखवु

—कर्मणि० मोटु थवु, जाडु थवु (२) समृद्ध थवु, वधवु [करवु

प्रचुद् १० उ० प्रेरवु; धकेलवु (२) जाहेर

प्रचुर वि० घणु, पुष्कळ (२) मोटु, विशाळ (३) (समासने अंते) —थी भरपूर — पूर्ण

प्रचेतस् पु० वरुण (२) एक प्राचीन ऋषि

प्रचोदित वि० प्रेरेलु, उत्तेजेलु (२) विधान के आज्ञा करेलु (३) मोकलेलु

प्रच्छ् ६ प० [पृच्छति] पूछवु

प्रच्छद् १० उ० ढाकवु (२) संताडवु

प्रच्छद पु० ढांकण, ओछाड, चादर

प्रच्छन्न वि० ढंकायेलु, छवायेलु (२) गुप्त, छानु [काढवु ते

प्रच्छर्दन न० वमन करवु ते (२) बहार

प्रच्छादन न० ढाकवु ते, छुपाववु ते (२) उत्तरीय वस्त्र [(२) छुपावेलु

प्रच्छादित वि० ढाकेलु; आच्छादन करेलु

प्रच्छाय न० गाढ छायावाळु स्थान

प्रच्छिल वि० सूकु, निर्जळ

प्रच्यावित वि० हाकी काढेलु

प्रच्यु १ आ० दूर जवु, जता रहेवु (२) जुदु पडवु, खरी पडवु, नीचे पडवु (३) तजी देवु (धर्म) (४) —थी रहित बनवु, विनाना बनवु (५) झमवु, वहेवु (६) हाकवु, धकेलवु

प्रच्युत वि० खरी पडेलु (२) च्युत थयेलु, भ्रष्ट थयेलु (३) हाकी काढेलु

प्रजन् ४ आ० [प्रजायते] जन्मवु, उत्पन्न थवु (२) ऊगवु (३) जन्म आपवो, उत्पन्न करवु

प्रजन पु० पेदा करनार, जन्म आपनार (२) गर्भाधान करवु ते (३) पेदा करवु ते, जन्म आपवो ते

प्रजनन न० उत्पन्न करवु ते, गर्भाधान, प्रसूति (२) संतति (३) जननेंद्रिय

प्रजनिष्णु वि० उत्पन्न करनारु (२) वधनारु, ऊगनारु

प्रजल्प् १ प० बोलवु, कहेवु (२) जाहेर करवु (३) बबडवु, बहु बोलवु

प्रजल्प पु०, **प्रजल्पन**, **प्रजल्पित** न० नकामो बडबडाट (२) वातचीत

प्रजवन, प्रजविन् वि० वेगीलु, झडपी (२) पु० कासद [(४) लोको, रैयत

प्रजा स्त्री० उत्पत्ति (२) संतति (३) प्राणी

प्रजागर पु० जागरण, उजागरो (२) सावचेती, जागृति [रहेवु

प्रजागृ २ प० तपास राखवी (२) जागता

प्रजात वि० उत्पन्न थयेलु, जन्मेलु

प्रजातंतु पु० वंश, संतति

प्रजाति स्त्री० प्रजोत्पादन (२) प्रसूति

प्रजानाथ पु० राजा (२) ब्रह्मा

प्रजानिषेक पु० गर्भाधान (२) संतति

प्रजापति पु० ब्रह्मा

प्रजायिन् वि० जन्म आपनारु

प्रजावत् वि० संततिवाळु, प्रजावाळु

प्रजावती स्त्री० भाईनी वहु, मोटाभाई- नी वहु (२) संतानवाळी स्त्री

प्रजासृज् पु० ब्रह्मा

प्रजांतक पु० यम [उघाडवु

प्रजृंभ् १ आ० बगासु खावु (२) मो

प्रजेश, प्रजेश्वर पु० राजा

प्रज्ञ वि० शाणु, बुद्धिमान, डाह्यु (२) (समासने अंते) —नु जाणकार (३) पु० डाह्यो — शाणो माणस

प्रज्ञा ९ उ० जाणवु, —ना विषे माहित- गार थवु [आमंत्रवु

—प्रेरक० दर्शाववु (२) बोलाववु;

प्रज्ञा स्त्री० बुद्धि, समज, डहापण (२) विवेकबुद्धि (३) साचु — अलौकिक ज्ञान

प्रज्ञाचक्षुस् वि० अंध (२) पु० धृतराष्ट्र (३) न० मनरूपी आंख

प्रज्ञात वि० जाणेलु, समजेलु (२) प्रख्यात [चिह्न

प्रज्ञान न० बुद्धि, ज्ञान, डहापण (२)

प्रज्ञापित वि० कही दीधेलु, बतावी दीधेलु, बहार पाडी दीधेलु

प्रज्ञावाद पु० पंडिताईना वचन
प्रज्ञासहाय वि० डाह्यु, शाणु
प्रज्वल् १ प० प्रज्वलित थवु, सळगवु
प्रज्वलित वि० सळगी ऊठेलु, सळगतु (२) चळकतु, प्रकाशित
प्रडीन ('प्र+डी'नु भू०कृ०) वि० दरेक दिशामा ऊडतु (२) आगळनी तरफ ऊडतु
प्रणत वि० नीचु नमेलु (२) नमस्कार करतु (३) चतुर, निपुण (४) वाकु
प्रणति स्त्री० नमस्कार, प्रणाम (२) नम्रता, विनय
प्रणद् १ प० गाजवु, अवाज करवो
प्रणदित वि० गाजतु (२) गुंजारव करतु
प्रणम् १ प० प्रणाम करवा, वंदन करवु; नीचा नमवु [आदरथी आपेलु
प्रणमित वि० नमेलु (२) नम्रताथी के
प्रणय पु० ग्रहण करवु के स्वीकारवु ते (लग्नमा) (२) प्रेम; प्रीति (३) इच्छा; कामना (४) मित्रता (५) परिचय, विश्वास (६) कृपा (७) विनति (८) आदर [देखावनी तकरार
प्रणयकलह पु० प्रेमनी तकरार, मात्र
प्रणयकुपित वि० प्रेमने कारणे गुस्से थयेलु, गुस्सानो देखाव करतु
प्रणयन न० लाववु – दोरवु ते (२) अमलमा मूकवु ते, आचरवु ते (३) लखवु ते (४) फरमाववु ते (सजा)
प्रणयपेशल वि० प्रेमथी आर्द्र बनेलु
प्रणयप्रकर्ष पु० अत्यंत प्रेम, आसक्ति
प्रणयभंग पु० प्रेमनो भंग, बेवफापणु
प्रणयविघात पु० (विनतिनो) अस्वीकार
प्रणयविमुख वि० प्रेममाथी के मित्रता-माथी विमुख बनेलु
प्रणयस्पृश् वि० प्रेमथी प्रेरायेलु, प्रेमार्द्र
प्रणयापराध पु० प्रेम के परिचयनो भंग, बेवफापणु
प्रणयिता स्त्री० प्रेम, आसक्ति
प्रणयिन् वि० स्नेह – प्रीतिवाळु, प्रेमी (२) –नी इच्छावाळु, –ने झंखतु (३) परिचित (४) पु० मित्र, प्रेमी, साथी (५) पति, प्रियतम (६) याचक (७) भक्त
प्रणयिनी स्त्री० प्रेयसी, पत्नी, सखी
प्रणयोन्मुख वि० पोतानो प्रेम प्रगट करवाने उत्सुक एवु
प्रणव पु० ॐकार
प्रणश् ४ प० नाश पामवु (२) देखाता बंध थ‌वु (३) नासी छूटवु
प्रणाद पु० मोटो अवाज (२) गर्जना
प्रणाम पु० नमस्कार, नमन
प्रणामांजलि पु० बे हाथ जोडीने करेला प्रणाम [आगेवान
प्रणायक पु० सेनापति (२) मार्गदर्शक;
प्रणाय्य वि० वहालु, प्रिय (२) प्रमाणिक (३) विरक्त
प्रणाल पु०, **प्रणालिका, प्रणाली** स्त्री० परनाळ, पाणीनो मार्ग (२) परंपरा
प्रणाश पु० विनाश (२) मृत्यु
प्रणाशन वि० नाश करनारु (२) न० विनाश, ध्वंस
प्रणिगद् १ प० जाहेर करवु, जणाववु
प्रणिधा २ उ० मूकवु, नीचे मूकवु (२) जडवु, सज्जड चोटाडवु (३) –नी उपर नाखवु – स्थिर करवु (४) फेलाववु (५) मोकलवु (६) उपयोग करवो
प्रणिधान न० उपयोग (२) महाप्रयत्न, उद्यम (३) गाढ चिंतन, समाधि (४) कर्मफलनो त्याग
प्रणिधि पु० जासूस, बातमीदार (२) अनुचर (३) प्रार्थना, विनती
प्रणिधेय न० जासूस के बातमीदार मोकलवा ते (२) उपयोगमा लेवु ते
प्रणिपत् १ प० प्रणाम करवा
प्रणिपतन न०, **प्रणिपात** पु० प्रणाम
प्रणिपातप्रतीकार वि० नमनथी जेनो उपाय थई शके तेवु

प्रणिपातरस पु० आयुधो साथे बोलातो एक मत्र

प्रणिहन् २ प० वध करवो (२) नीचु नमाववु (हाथ) (३) वधु धीमेथी बोलवु ('अनुदात्त' करता)

प्रणिहित वि० मूकेलु, स्थिर करेलु (२) फेलावेलु (३) सोपेलु (४) एकाग्र थयेलु (५) स्वीकारेलु (६) मोकलेलु, प्रेरेलु (७) निश्चित

प्रणी १ प० दोरवु (लश्कर) (२) अर्पण करवु (३) लई जवु, स्थापवु (४) पवित्र करवु (मत्रोथी) (५) नाखवु (दड) (६) विधान करवु (७) रचवु (ग्रथ) (८) सिद्ध करवु, उपजाववु (९) स्थितिए पहोचाडवु (१०) दर्शाववु (११) फेकवु, प्रेरवु, छोडवु (१२) दूर करवु, नाश करवो

प्रणी वि० बनावनारु, रचनारु

प्रणीत वि० –नी समक्ष लावेलु, अर्पेलु (२) –ने पमाडेलु (३) आचरेलु (४) विधान करेलु (५) फेंकेलु, मोकलेलु (६) मत्र वडे सस्कारेलु

प्रणुत वि० वखाणेलु, प्रशसा करेलु

प्रणुद् ६ प० हाकवु, हाकी काढवु

प्रणुन्न वि० हाकवामा आवेलु (२) हाकी काढेलु

प्रणेय वि० दोरी जवाय तेवु, वश, अधीन (२) पामवा – मेळववा योग्य

प्रणोदित वि० हाकेलु, प्रेरेलु

प्रतत वि० फेलायेलु, विस्तरेलु

प्रततम् अ० निरतर, सतत

प्रतन् ८ उ० विस्तारवु, फेलाववु (२) दर्शाववु (३) रचवु (४) अनुष्ठान करवु (यज्ञनु) [(२) अल्प, तुच्छ

प्रतनु वि० घणु ज पातळु, कृश, सूक्ष्म

प्रतप् १ प० तपवु, सळगवु, प्रकाशवु (२) शेकवु (३) तपस्या करवी (४) पीडवु

प्रतप्त वि० गरम थयेलु (२) पीडित; त्रास पामेलु (३) तप आचरेलु

प्रतरण न० ओळगवु ते

प्रतर्क पु० तर्क, धारणा

प्रतान पु० डूक, कूपळ (२) वेलो (नीचे फेलातो) (३) विस्तार

प्रताप पु० गरमी; ताप (२) तेज; काति (३) रुआब (४) सामर्थ्य; प्रभाव, पराक्रम

प्रतार पु० पार लई जवु ते (२) ओळगी जवु ते (३) **ठगवु** – छेतरवु ते

प्रतारक वि० ठगनारु, छेतरनारु

प्रतारणा स्त्री० ठगाई, छेतरपिंडी

प्रतारित वि० छेतरेलु, ठगेलु

प्रति अ० क्रियापदो पूर्वे '–नी तरफ', '–नी दिशामा', '–फरीथी', 'ऊलटु', 'पाछु', '–नी उपर' –ए अर्थ बतावे (२) नामोनी पूर्वे, 'सादृश्य', 'विरोधी', 'ऊलटु', 'हरीफ' –ए अर्थ बतावे (३) अलग उपसर्ग तरीके (द्वितीया साथे) '–नी तरफ', '–नी सामे', 'सरखामणीमा', 'प्रमाणमा', 'नजीक', 'समये', 'दरम्यान', '–ना पक्षमा –तरफेणमा', 'हर–दरेक', '–ना सबधमा', '–ना मते', '–ना अभिप्राये', '–नी समक्ष' –ए अर्थ बतावे (४) (पचमी साथे) '–ने बदले', '–ना प्रतिनिधि रूपे', –ए अर्थ बतावे (५) अव्ययीभाव समासमा 'दरेकमा', 'हरेकमा', '–नी दिशामा' –ए अर्थ बतावे

प्रतिकर पु० बदलो वाळवो ते

प्रतिकर्तव्य न० बदलो लेवो ते

प्रतिकर्मन् न० प्रतीकार, बदलो, वेरनी वसूलात (२) इलाज, उपाय (३) शरीरना शोभा-शणगार (४) विरोध (५) तपस्या (६) प्रायश्चित्त

प्रतिकलम् अ० सतत

प्रतिकाय पु० प्रतिस्पर्धी, शत्रु (२) निशान, लक्ष्य (३) प्रतिमा, मूर्ति

प्रतिकार पु० प्रत्युपकार (२) बदलो लेवो ते (३) रोग वगेरेनो उपचार–

उपाय (४) विरोध, रुकावट (५) मदद (६) अनुकरण

प्रतिकार्य न० जुओ प्रतिकर्तव्य'

प्रतिकाश पु० प्रतिबिंब (२) देखाव, सादृश्य (३) समासने अंते '–ना जेवु', '–नी समान' –एवो अर्थ बतावे

प्रतिकितव पु० (जुगारमा) सामे रमनारो

प्रतिकूल वि० अनुकूळ नहि तेवु, विरुद्ध, ऊलटु (२) कर्कश, कठोर

प्रतिकृ ८ उ० बदलो वाळवो (२) उपचार –इलाज करवो (३) पाछु आपवु, पाछु मूकवु (४) वेर वाळवु

प्रतिकृत वि० प्रतिकार कर्यो होय तेवु, बदलो लीधो के वाळ्यो होय तेवु, उपाय कर्यो होय तेवु (२) उपकार कर्यो होय तेवु (३) न० बदलो (४) विरोध

प्रतिकृति स्त्री० बदलो, प्रतिकार (२) प्रतिबिंब (३) प्रतिमा (४) विरोध

प्रतिक्रिया स्त्री० बदलो लेवो ते, बदलो वाळवो ते (२) निवारण (३) विरोध (४) शणगार (५) आचरण (६) मदद, रक्षण

प्रतिक्षणम् अ० हर पळे, दरेक क्षणे

प्रतिक्षपम् अ० दरेक राते

प्रतिक्षिप् ६ प० –मा फेंकवु (२) मारवु, हिंसा करवी (३) निंदवु, तुच्छकारवु

प्रतिगद् १ प० जवाब आपवो

प्रतिगम् १ प० [प्रतिगच्छति] सामा जवु, आगळ जवु (२) पाछु फरवु

प्रतिगमन न० पाछु फरवु ते

प्रतिगर्ज् १ प० –नी सामे गर्जना करवी (२) सामनो करवो

प्रतिगृहीत वि० स्वीकारेलु (२) अनुमत, समत (३) परणेलु

प्रतिग्रह् ९ उ० [प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्णीते] पकडवु, टेकववु (२) स्वीकारवु, लेवु (३) सामनो करवो, हुमलो करवो (४) परणवु (५) आज्ञापालन करवु (६) –नो आशरो लेवो (७) स्वागत करवु

प्रतिग्रह पु० स्वीकारवु – लेवु ते, पकडवु ते (२) दान स्वीकारवानो हक (३) भेट, बक्षिस (४) सामेथी स्वागत करवु ते (५) लग्न

प्रतिग्रहण न० भेट स्वीकारवी ते (२) लग्न (३) पात्र, वासण (४) स्वागत

प्रतिघ पु० विरोध, सामनो (२) मारामारी (३) गुस्सो (४) दुश्मन (५) मूर्छा

प्रतिघात पु० सामनो, निवारण (२) वळतो प्रहार (३) पाछु ऊछळवु ते (४) मनाई, निषेध

प्रतिघातिन् वि० विरोधी, दुश्मन (२) रुकावट के विघ्न करनार (३) आजी नाखतु

प्रतिचिकीर्षा स्त्री० बदलो लेवानी इच्छा

प्रतिच्छद् १० उ० ढाकवु, आच्छादन करवु (२) छुपाववु, सताडवु

प्रतिच्छन्न वि० वीटेलु, ढाकेलु (२) सताडेलु (३) सपन्न, युक्त

प्रतिच्छद, प्रतिच्छंदक पु० छबी, प्रतिमा, आकृति (२) प्रतिनिधि

प्रतिच्छाया, प्रतिच्छायिका स्त्री० प्रतिबिंब (२) प्रतिमा

प्रतिजन्मन् न० पुनर्जन्म

प्रतिजीवन न० सजीवन थवु ते

प्रतिज्ञा ९ आ० सकल्प करवो, वचन-लेवु (२) निश्चयपूर्वक कहेवु (३) स्वीकारवु, मजूरी आपवी (४) माहितगार थवु, जाणवु

प्रतिज्ञा स्त्री० पण, नियम, शपथ (२) जाहेरात, निवेदन

प्रतिज्ञात वि० प्रतिज्ञा करेलु, सकल्प करेलु (२) स्वीकारेलु, मान्य राखेलु (३) न० प्रतिज्ञा, वचन

प्रतिज्ञापित वि० जुओ 'प्रज्ञापित'

प्रतिदर्शन न० देखाव

प्रतिदा १ प० [प्रतियच्छति] विनिमय करवो (२) ३ उ० [प्रतिददाति, प्रतिदत्ते] पाछु वाळवु
प्रतिदिनम् अ० दररोज, हमेशा
प्रतिद्वंद्विन् वि० शत्रुतावाळु (२) विरोधी, प्रतिकूळ (३) हरीफ
प्रतिध्वनि, प्रतिध्वान पु० जुओ 'प्रतिरव'
प्रतिनद् १ प० पडघो पडवो (२) बूम पाडीने जवाब आपवो
—प्रेरक० अवाजथी भरी काढवु
प्रतिनव वि० नवु, ताजु (२) तरतनु खीलेलु
प्रतिनंद् १ प० आशीर्वाद आपवो (२) स्वागत करवु, अभिनंदवु
प्रतिनाद पु० प्रतिध्वनि, पडघो
प्रतिनारी स्त्री० हरीफ स्त्री
प्रतिनिधि पु० अवेजी, –ने बदले काम करवा नियुक्त करेलो माणस (२) प्रतिमा, मूर्ति (३) जामीन
प्रतिनिनद पु० जुओ 'प्रतिनाद'
प्रतिनियत वि० नियत–नक्की थयेलु (२) अटळ, दृढ
प्रतिनिर्जित वि० हरावेलु, ताबे करेलु (२) रदबातल करेलु, पाछु खेंचेलु
प्रतिनिविष्ट वि० जक्की, दुराग्रही
प्रतिपक्ष वि० समान, सदृश (२) पु० सामो पक्ष (३) विरोधी, हरीफ (४) उपाय, प्रायश्चित्त
प्रतिपच्चंद्र पु० पडवानो चंद्र
प्रतिपण पु० होड, सामी होड
प्रतिपत्ति स्त्री० मेळववु ते, प्राप्ति (२) ज्ञान, भान, समज (३) स्वीकार (४) शरू करवुं ते, माथे लेवु ते (५) कार्य, कर्तव्य, वर्तन (६) निश्चय (७) समाचार (८) आदर, समान (९) दान (१०) उपाय, मार्ग, रस्तो
प्रतिपथम् अ० मार्गे, रस्ते
प्रतिपद् ४ आ० पामवु, पहोचवु (२) दाखल थवु, अनुसरवु (मार्ग) (३) स्वीकारवु (४) फरीथी प्राप्त करवु (५) पकडवु (६) मानवु, गणवु (७) माथे लेवु, हाथमा लेवु (कार्य) (८) समत थवु (९) आचरवु, अमल करवो (१०) वर्तवु (११) पाछु वाळवु (जवाब) (१२) जाणवु, समजवु
—प्रेरक० अर्पवु (२) साबित करवु (३) समजाववु (४) पाछु लई जवु
प्रतिपद् स्त्री० सुद पडवो
प्रतिपदम् अ० पदे पदे, पगले पगले (२) दरेक जगाए
प्रतिपदा (–दी) स्त्री० सुद पडवो
प्रतिपन्न वि० मेळवेलु, प्राप्त करेलु (२) साधेलु, आचरेलु (३) स्वीकारेलु (४) कबूल करेलु (५) जाणेलु, समजेलु (६) साबित करेलु
प्रतिपादन न० अर्पवु ते (२) साबित के सिद्ध करवु ते (३) शरूआत, आरंभ
प्रतिपादित वि० अर्पेलु (२) सिद्ध करेलु के थयेलु (३) समजावेलु (४) प्रगटेलु
प्रतिपाद्यमान वि० अपातु, देवातु
प्रतिपान न० पीवानु पाणी (२) पाणी पिवराववु ते
प्रतिपाल् –प्रेरक० रक्षण करवु (२) राह जोवी (३) आज्ञा पाळवी (४) उछेरवु (५) आचरवु, पाळवु
प्रतिपालन न० रक्षण करवु ते (२) आचरवु के पाळवु ते
प्रतिपुरुष पु० सरखो माणस, प्रतिनिधि (२) साथी (३) पुरुषनी आकृतिनु बावलु
प्रतिपूजित वि० सामु वदन करवामां आव्यु होय तेवु (२) सन्मानेलु
प्रतिपूरुष पु० जुओ 'प्रतिपुरुष'
प्रतिपूर्ण वि० विस्तृत, पहोळु
प्रतिपॄ –प्रेरक० पूरेपूरु भरी काढवु (२) तृप्त करवु, संतुष्ट करवु
प्रतिप्रदान न० पाछु वाळवु ते (२) कन्या-[दान
प्रतिप्लवन न० पाछो कूदको मारवो ते
प्रतिप्रिय न० प्रत्युपकार

પ્રતિફલ પુ૦, **પ્રતિફલન** ન૦ પ્રતિબિંબ (૨) બદલો [(૨) પાછું વાળેલું

પ્રતિફલિત વિ૦ પ્રતિબિંબિત થયેલું

પ્રતિબદ્ધ વિ૦ બધાયેલું, બાધેલું (૨) રોકેલું; અટકાવેલું (૩) જડેલું, સજ્જડ ચોટાડેલું (૪) ગૂથેલું

પ્રતિબલ વિ૦ શક્તિમાન (૨) સમાન બળવાળું (૩) ન૦ દુશ્મનનું સૈન્ય (૪) બળ, તાકાત

પ્રતિબંદી સ્ત્રી૦ સામો તેવો જ જવાબ, સામાની દલીલને તેને જ ભેરવવો તે

પ્રતિબંદ્ધતા સ્ત્રી૦ વિરોધ, ખડન

પ્રતિબંધ્ ૯ ૫૦ બાધી દેવું (૨) દૃઢ કરવું (૩) જડવું – સજ્જડ ચોટાડવું (૪) રોકવું, પ્રતિબધ કરવો

પ્રતિબંધ પુ૦ બાધવું કે જોડવું તે, સબધ (૨) અટકાવ, રુકાવટ, વિરોધ (૩) ઘેરો

પ્રતિબધિ પુ૦, સ્ત્રી૦ આક્ષેપ, વિરોધ (૨) બીજા પક્ષને પણ સમાનપણે લાગુ પડતી દલીલ [(૨) સખત બાધતું

પ્રતિબંધિન્ વિ૦ વિઘ્ન-ડખલ કરનારું

પ્રતિબંધી સ્ત્રી૦ જુઓ 'પ્રતિબધિ'

પ્રતિબાધ્ ૧ આ૦ નિવારવું (૨) રોકવું (૩) પીડા કરવી

પ્રતિબિંબ પુ૦, ન૦ પડછાયો, ચળકતી સપાટીમા પડતી પ્રતિચ્છાયા

પ્રતિબુદ્ધ વિ૦ જાગેલું, જાગ્રત થયેલું (૨) ભાનમા આવેલું (૩) ખીલેલું

પ્રતિબુધ્ ૪ આ૦ જાગવું (૨) જાણવું, અનુભવવું, સમજવું

–પ્રેરક૦ જગાડવું (૨) જણાવવું, માહિતગાર કરવું (૩) સોપવું

પ્રતિબોધ પુ૦ જાગવું તે (૨) જ્ઞાન, ભાન (૩) બોધ, ઉપદેશ (૪) બુદ્ધિ; તર્કશક્તિ (૫) સ્મરણ

પ્રતિબોધક વિ૦ જગાડનારુ (૨) ઉપદેશ આપનારુ, જણાવનારું

પ્રતિબોધન ન૦ જાગવું તે (૨) ઉપદેશ (૩) જ્ઞાન, સમજ; માહિતી

પ્રતિબોધિત વિ૦ જાગેલું, જગાડેલું (૨) શીખવેલું, ઉપદેશેલું

પ્રતિબ્રૂ ૨ ૫૦ જવાબ આપવો (૨) આ૦ ના પાડવી [મળવું – પ્રાપ્ત થવું

પ્રતિભજ્ ૧ ઉ૦ પોતાને ભાગે પાછું

પ્રતિભટ વિ૦ હરીફાઈ કરતું, સમાન (૨) પુ૦ હરીફ; વિરોધી (૩) સામાવાળિયો

પ્રતિભય વિ૦ ભયકર (૨) જોખમ ભરેલું (૩) ન૦ જોખમ, ભય

પ્રતિભા ૨ ૫૦ ભાસવું, પ્રકાશવું (૨) પ્રગટ થવું, દેખાવું (૩) મનમા આવવું– સ્ફુરવું (૪) યોગ્ય લાગવું

પ્રતિભા સ્ત્રી૦ દેખાવ, ભાસવું તે (૨) કાતિ, તેજ (૩) બુદ્ધિ, સૂઝ (૪) બુદ્ધિની છટા, અલૌકિક બુદ્ધિ (૫) પ્રતિબિંબ (૬) અચાનક દેખાવું તે

પ્રતિભાત વિ૦ પ્રકાશિત, તેજસ્વી (૨) જણાયેલું, સમજાયેલું

પ્રતિભાન ન૦ કાતિ, તેજ (૨) બુદ્ધિ; પ્રતિભા (૩) શીઘ્રબુદ્ધિ

પ્રતિભાનવત્ વિ૦ પ્રકાશિત; સુદર (૨) શીઘ્ર બુદ્ધિવાળું (૩) ધૃષ્ટ

પ્રતિભાવ પુ૦ સામો સમાન ભાવ

પ્રતિભાષ્ ૧ આ૦ જવાબ આપવો (૨) કહેવું (૩) નામે ઓળખવું

પ્રતિભાસ પુ૦ અચાનક સ્ફુરવું તે– દેખાવું તે (૨) દેખાવ, આભાસ

પ્રતિભાસન ન૦ દેખાવ, સમાન આકાર

પ્રતિભિદ્ ૭ ઉ૦ ભેદવું (૨) ખુલ્લું પાડી દેવું (ભેદ) (૩) ઠપકો આપવો (૪) નકારવું (૫) ગાઢ સસર્ગ હોવો

પ્રતિભિન્ન વિ૦ વીધાયેલું (૨) ગાઢ સપર્કવાળું (૩) ભાગેલું

પ્રતિભૂ પુ૦ જામીન

પ્રતિભેદ પુ૦ ભેદવું – ટુકડા કરવા તે (૨) શોધ (૩) ખુલ્લું પાડી દેવું તે

प्रतिभोग पु० भोग, आनद

प्रतिमल्ल पु० हरीफ, सामावाळियो

प्रतिमंडल न० सूर्य वगेरेनी आसपास देखातु वीजु कूडाळु

प्रतिमा स्त्री० मूर्ति (२) समानता, सादृश्य (समासमा –'नी समान' ए अर्थमा वपराय छे; उदा० 'देवप्रतिम,' 'अप्रतिम') (३) पडछायो, प्रतिबिंब

प्रतिमागृह, प्रतिमागेह न० मूर्तिओ ज्या राखी होय तेवु मकान

प्रतिमान न० आदर्श, धोरणरूप वस्तु (२) मूर्ति (३) सादृश्य (४) हाथीनो कुभस्थल नीचेनो भाग

प्रतिमानना स्त्री० पूजा

प्रतिमार्ग पु० पाछा फरवानो मार्ग

प्रतिमार्गम् अ० पाछु, पाछली तरफ

प्रतिमित वि० नकल करेलु (२) सरखावेलु (३) प्रतिबिंबित

प्रतिमुक्त वि० पहेरेलु, धारण करेलु (२) बाधेलु (३) सुसज्ज (४) बधनमाथी छोडेलु (५) फेंकेलु

प्रतिमुख वि० सामु मो राखीने ऊभेलु (२) नजीकनु, समुख

प्रतिमुखम् अ० तरफ, सामे, समक्ष

प्रतिमुच् ६ प० [प्रतिमुचति] मुक्त करवु, छूटु करवु (२) पहेरवु, धारण करवु (३) त्यागवु (४) फेंकवु

प्रतिमुहुः अ० वारवार

प्रतिमोचन न० ढीलु करवु ते; छूटु करवु ते, बदलो वाळवो ते (२) वसूलात, बदलो (वेरनो) (३) मुक्ति, छुटकारो

प्रतियत् १ आ० प्रयत्न करवो –प्रेरक० बदलो वाळवो के लेवो (२) पाछु वाळवु

प्रतियत्न वि० प्रयत्न करतु; सक्रिय (२) पु० प्रयत्न, उद्यम (३) सस्कारीने तैयार करवु ते (४) नवो गुण ऊभो करवो ते (५) इच्छा (६) विरोध, सामनो (७) बदलो लेवो ते

प्रतिया २ प० पाछा फरवु के जवु (२) समान थवु (३) पाछु अपावु

प्रतियात वि० सामनो करेलु (२) पाछु [वाळेलु

प्रतियातन न० बदलो लेवो ते

प्रतियातना स्त्री० मूर्ति, प्रतिमा

प्रतियान न० पाछा फरवु ते

प्रतियुध् ४ आ० युद्धमा सामसामा आवी [जवु

प्रतियुवति स्त्री० वेश्या (२) हरीफ स्त्री

प्रतियोग पु० विरोध, सामनो (२) प्रतिकार, उपाय (३) जवाब

प्रतियोगिन् पु० विरोधी, प्रतिपक्षी (२) सामो समान भाग (३) भागीदार; साथी

प्रतियोद्धृ पु० सामावाळियो, दुश्मन

प्रतियोध, प्रतियोधिन् पु० सामावाळियो, विरोधी

प्रतिरत वि० –मा आनद मानतु

प्रतिरथ पु० युद्धमा सामे आवनारो

प्रतिरथ्यम् अ० दरेक मार्गे

प्रतिरव पु० कलह; झघडो (२) प्रतिध्वनि; [पडघो

प्रतिरसित न० पडघो

प्रतिरुद्ध वि० अटकावेलु (२) घेरो घालेलु

प्रतिरुध् ७ उ० अटकाववु, रोकवु (२) घेरो घालवो (३) छुपाववु

प्रतिरूढ वि० पेठेलु (२) फरी स्थापित थयेलु (३) अनुकरण करेलु

प्रतिरूप वि० सरखा रूपवाळु (२) सुदर (३) योग्य, अनुरूप (४) अभिमुख (५) न० प्रतिमा, चित्र (६) अरीसा जेवी प्रतिबिंब पाडे तेवी वस्तु (७) उपमान

प्रतिरूपक वि० समान; सरखु (समासने छेडे) (२) न० चित्र (३) पडछायो (४) बनावटी आज्ञा

प्रतिरोधक वि० अटकावनारु (२) घेरनारु (३) पु० विरोधी (४) चोर, डाकु (५) विघ्न

प्रतिरोधिन् वि० जुओ 'प्रतिरोधक'
प्रतिलक्षण न० चिह्न, निशान
प्रतिलभ् १ आ० मेळववु (२) पाछु मेळववु (३) शीखवु, समजवु (४) अपेक्षा राखवी [निंदा, ठपको
प्रतिलंभ पु० प्राप्ति, मेळववु ते (२)
प्रतिलिखित वि० जवाब आपेलु
प्रतिलोम वि० ऊलटा क्रमनु (२) उपला वर्णनी स्त्री साथेनु (लग्न) (३) विरोधी, विपरीत (४) अधम, नीच (५) डावु (६) जक्की, हठीलु (७) अप्रिय
प्रतिलोमतः अ० ऊलटा क्रमे (२) शत्रुता के विरोध करीने
प्रतिवच् २ प० प्रत्युत्तर आपवो
प्रतिवचन(–स्) न० जवाब (२) पडघो
प्रतिवद् १ प० जवाबमा कहेवु (२) बोलवु (३) फरीथी कहेवु (४) विरोधमा के सामु कहेवु
प्रतिवस्तु न० सरखा रूपवाळी वस्तु (२) बदलामा आपेलु ते
प्रतिवाक्य न०, **प्रतिवाच्** स्त्री०, **प्रतिवाचिक** न० प्रत्युत्तर, जवाब
प्रतिवात पु० सामो पवन
प्रतिवातम् अ० सामे पवने [निषेध
प्रतिवाद पु० जवाब; प्रत्युत्तर (२) नकार;
प्रतिवादिन् पु० प्रतिपक्षी, विरोधी (२) दावामा बचावपक्षनो माणस
प्रतिवार पु०, **प्रतिवारण** न० अटकाववु – रोकवु ते
प्रतिवार्ता स्त्री० समाचार, वातमी
प्रतिवासरम् अ० दररोज
प्रतिवासिन् पु० पडोशी [ते
प्रतिविघात पु० सामनो के बचाव करवो
प्रतिविज्ञा ९ प० [प्रतिविजानाति] कृतज्ञतापूर्वक स्वीकारवु
प्रतिविटपम् अ० दरेक डाळीए (२) एक पछी एक डाळीए
प्रतिविद् २ प० स्वीकारवु; लेवु (२) ६ प० [प्रतिविंदति] मेळववु –प्रेरक० जणाववु (२) आपवु
प्रतिविधा ३ उ० इलाज करवो, प्रतिकार करवो (२) गोठववु, तैयार करवु (३) मोकलवु (४) सजा करवी
प्रतिविधान न० उपाय के प्रतिकार करवो ते (२) गोठवण; रचना
प्रतिवीर्य वि० सरखा बळवाळु
प्रतिवेलम् अ० दरेक वेळा, दरेक प्रसगे
प्रतिवेश पु० पडोशी (२) पडोश
प्रतिवेशिन् वि० पडोशी
प्रतिवेश्मन् न० पडोशीनु घर
प्रतिवेश्य पु० पडोशी
प्रतिव्यूढ वि० सामे व्यूहरचनामा गोठवेलु (२) विस्तृत
प्रतिशब्द पु० पडघो
प्रतिशम पु० शमन, नाश
प्रतिशयित वि० देव पासे इच्छित वरदान मेळववा भूख्यु सूई जनारु [सत्ता
प्रतिशासन न० हुकम करवो ते (२) हरीफ
प्रतिशिष्ट वि० मोकलेलु, विदाय करेलु
प्रतिश्रय पु० आश्रय (२) रहेठाण (३) सभागृह (४) यज्ञगृह
प्रतिश्रव पु० वचन, कबूलात (२) पडघो
प्रतिश्रु ५ प० वचन आपवु [पडघो
प्रतिश्रुत्(–ति) स्त्री० वचन, कोल (२)
प्रतिषिद्ध वि० मना करेलु
प्रतिषिध् (प्रति+सिध्) १ प० निग्रह करवो, निवारवु, रोकवु (२) मनाई करवी
प्रतिषेद्धृ वि० जुओ 'प्रतिषेधक'
प्रतिषेध पु० निवारण करवु ते, दूर करवु ते (२) मनाई, निषेध (३) ना पाडवी ते [मनाई करनारु
प्रतिषेधक वि० रोकनारु; अटकावनारु,
प्रतिषेधाक्षर न० नकार दर्शावतो शब्द
प्रतिष्टंभ पु० रुकावट, हरकत

प्रतिष्ठा (प्रति-स्था) १ प० [प्रतितिष्ठति] स्थिर थवु, दृढ थवु (२) रहेवु, वसवु (३) –ने आधारे टकवु (४)आथमवु
–प्रेरक० स्थापित करवु(२)सोपवु (३)वक्षवु

प्रतिष्ठा स्त्री० आधारस्थान, स्थान, पायो (२) निवास (३) दृढता, स्थिरता (४) टेको, शोभा (ला०) (५) मोटु पद (६) ख्याति, कीर्ति (७) स्थापित थवु ते (८) इच्छित वस्तु प्राप्त थवी ते, सिद्धि (९) मूर्तिनी स्थापना करवी ते (१०)पग

प्रतिष्ठान न० वेठक, पायो; स्थान; आधारस्थान (२) पग (३) चालु रहेवु ते, सातत्य

प्रतिष्ठासु वि० स्थिर रहेवा इच्छतु

प्रतिष्ठित वि० स्थापेलु, ऊभु करेलु, स्थिर करेलु, मूकेलु (२) विख्यात (३) निश्चित, नक्की थयेलु (४) समाविष्ट (५) जीवनमां स्थिर थयेलु – परणेलु (६) प्राप्त थयेलु; भागे आवेलु (७) लागु पडे तेवु (८)सिद्ध, परिसमाप्त

प्रतिसम वि० बरोबरियु

प्रतिसमाधान न० उपाय, इलाज

प्रतिसमासित वि० बरोबरियु, सामनो करी शके तेवु

प्रतिसर वि० अधीन; आश्रित (२) पु० अनुयायी, सेवक (३) कौतुकसूत्र (लग्न वखते बधातु) (४) तावीज

प्रतिसर्ग पु० प्रलय (२) गौण सृष्टि (मरीचि वगेरेए करेली) (३) प्रलय अने ते पछीनी फरीथी थयेली सृष्टि वर्णवतो पुराणनो भाग

प्रतिसव्य वि० ऊलटा क्रममा होय तेवु

प्रतिसंकाश पु० सरखापणु

प्रतिसक्रम पु० पडछायो; प्रतिबिंब (२) प्रलय, मूळ कारणमा पाछा समाई जवु ते

प्रतिसंख्यान न० कोई पण बाबतनी शात विचारणा(२)सांख्य सिद्धात

प्रतिसंदेश पु० सदेशानो जवाब

प्रतिसंधान न० फरीथी जोडवु ते (२) उपाय, साधन (३) आत्मनिग्रह

प्रतिसंधि पु० फरीथी जोडावु ते (२) अटकवु ते, उपरम

प्रतिसंहार पु० पाछु खेंची लेवु ते (२) आपी देवु ते(३)समावेश, सकोच

प्रतिसंहृ १ प० पाछु खेंचवु

प्रतिसंहृत वि० पाछु खेंची लीधेलु (२)निग्रह करेलु, सकोचेलु

प्रतिसीरा स्त्री० पडदो, कपडानी भीत

प्रतिसूर्य, प्रतिसूर्यक पु० आकाशमा बीजा सूर्य जेवु देखातु तेज(२)सरडो

प्रतिसृ १ प० पाछु सरी जवु (२) सामे धसवु, हुमलो करवो
–प्रेरक० पाछु सरकाववु (२) पाछु धकेली काढवु, हाकी काढवु

प्रतिसृष्ट वि० मोकलेलु (२) विख्यात (३) नकारेलु (४) प्रमत्त

प्रतिसेना स्त्री०, **प्रतिसैन्य** न० दुश्मननु [सैन्य

प्रतिस्पर्धा स्त्री० हरीफाई

प्रतिस्पर्धिन् वि० हरीफ

प्रतिस्पदन न० धबकारो, धडकवु ते

प्रतिस्रोतस् वि० सामे वहेणे जतु (२) अ० सामे वहेणे

प्रतिस्वन, प्रतिस्वर पु० पडघो

प्रतिहत वि० पाछु वाळेलु, पाछु धकेलेलु (२) अटकावेलु (३) हणायेलु, नाश पामेलु(४)अजाई गयेलु(५)बुठ्ठु थयेलु

प्रतिहति स्त्री० सामु मारवु ते (२) पाछु धकेलवु ते(३)पाछु ऊछळवु ते

प्रतिहन् २ प० सामो प्रहार करवो (२) अटकायत करवी, रोकवु, सामनो करवो (३) पाछु धकेलवु (४) नाश करवो (५) उपाय करवो

प्रतिहर्तृ पु० निवारण करनार; दूर करनार (२) नाश करनार
प्रतिहस्त, प्रतिहस्तक पु० प्रतिनिधि
प्रतिहस्तिन् पु० वेश्यावाडानो मालिक
प्रतिहस्तीकृ ८ उ० लेवु
प्रतिहार पु० सामु मारनार (२) दरवाजो (३) दरवान (४) मदारी (५) आगमन जणाववु ते
प्रतिहारण न० बारणामा प्रवेशवा माटेनी परवानगी, प्रवेश
प्रतिहारभूमि स्त्री० ऊमरो (मकान० इ० नो) (२) दरवान तरीकेनु पद
प्रतिहाररक्षी स्त्री० दरवान स्त्री
प्रतिहिंसा स्त्री० बदलो, वेरनी वसूलात
प्रतिहृ १ प० पाछु मारी काढवु (२) त्यागवु, वर्जवु (३) अवगणवु
प्रती (प्रति + इ) २ प० पाछु फरवु (२) पासे पहोचवु, पामवु (३) —ने भागे आववु, —ने माथे पडवु (४) खातरी राखवी, विश्वास होवो (५) समजवु, जाणवु, शीखवु (६) प्रख्यात थवु (७) खुश – प्रसन्न थवु (८) विरोधीनी सामे जवु
—प्रेरक० खातरी कराववी, विश्वास उत्पन्न करवो (२) लक्ष उपर लाववु (३) साबित करवु
प्रतीक पु० अवयव (२) न० मूर्ति, प्रतिमा (३) चिह्न, निशान
प्रतीकार पु० जुओ 'प्रतिकार'
प्रतीकाश पु० जुओ 'प्रतिकाश'
प्रतीक्ष् (प्रति + ईक्ष्) १ आ० जोवु, निहाळवु (२) अपेक्षा राखवी (३) राह जोवी [अपेक्षा राखतु
प्रतीक्ष, प्रतीक्षक वि० राह जोतु,
प्रतीक्षण न०, **प्रतीक्षा** स्त्री० राह जोवी ते (२) अपेक्षा, आशा (३) ध्यान, लक्ष
प्रतीक्षिन् वि० जुओ 'प्रतीक्ष'
प्रतीक्ष्य वि० राह जोवा योग्य (२) लक्षमा लेवा योग्य (३) समाननीय (४) पाळवा – वळगी रहेवा योग्य
प्रतीघात पु० जुओ 'प्रतिघात'
प्रतीची स्त्री० पश्चिम दिशा
प्रतीच्छक पु० लेनारो; स्वीकारनारो
प्रतीच्य वि० पश्चिमनु; पाश्चात्य
प्रतीत वि० नीकळेलु; ऊपडेलु (जवा माटे) (२) विदाय थयेलु, भूतकाळनुं वनेलु (३) मानेलु, विश्वास करेलु (४) साबित करेलु (५) ओळखेलु (६) प्रख्यात थयेलु (७) खातरीवाळु (८) दृढ संकल्पवाळु (९) खुश थयेलु (१०) डाह्युं, ज्ञानी
प्रतीति स्त्री० खातरी (२) मान्यता (३) निश्चित ज्ञान (४) ख्याति
प्रतीप वि० विरोधी, प्रतिकूळ (२) ऊलटा क्रमनु (३) पाछळ जतु, पछात रहेतु (४) अवळु, आडु
प्रतीपग वि० विरोधी; प्रतिकूळ
प्रतीपगति स्त्री०, **प्रतीपगमन** न० ऊलटी गति, ऊधी दिशाए जवु ते
प्रतीपतरण न० सामे प्रवाहे तरवु ते
प्रतीपम् अ० ऊलटु के प्रतिकूळ होय तेम
प्रतीपयति प० (पाछु वाळवु) [ते
प्रतीपवचन न० प्रतिकूळ के आडु बोलवु
प्रतीपविपाकिन् वि० ऊलटा परिणाम-वाळु (कर्ताने ज नुकसान करतु)
प्रतीर न० तट, काठो
प्रतीवेश पु० जुओ 'प्रतिवेश'
प्रतीवेशिन् वि० जुओ 'प्रतिवेशिन्'
प्रतीष् (प्रति+इष्) ६ प० [प्रतीच्छति] स्वीकारवु (२) स्वागत करवु (३) पालन करवु (आज्ञानु) (४) राह जोवी
प्रतीहार पु० जुओ 'प्रतिहार'
प्रतीहारी स्त्री० दरवान स्त्री (२) दरवान
प्रतुद् ६ प० घोचवुं, मारवु
—प्रेरक० हाकवुं; प्रेरवु; घोंच-परोणो करवो

प्रतुष्टि स्त्री० संतोष
प्रतूर्ण वि० झडपी, वेगीलु
प्रतृ १ प० ओळंगवु; पार करवु —प्रेरक० छेतरवु (२) लंबाववु, वधारवु [चाबुक
प्रतोद पु० अंकुश, परोणो (२) लावी
प्रतोली स्त्री० धोरी रस्तो
प्रत्त वि० आपेलु, दीधेलु (२) परणावेलु
प्रत्यक् अ० ऊलटु, विरुद्ध दिशामां (२) पश्चिम तरफ (३) अंदरनी बाजु (४) पहेलां
प्रत्यक्ष वि० देखी शकाय तेवु (२) आंखनी सामे होय तेवु (३) कोई पण इंद्रियथी जाणी शकाय तेवु (४) स्पष्ट (५) न० इंद्रियो द्वारा थतु ज्ञान, तेनु साधन के प्रमाण (न्याय०)
प्रत्यक्षम् अ० —नी समक्ष, —नी नजर सामे (२) जाहेरमां (३) स्पष्टताथी
प्रत्यक्षयति प० (प्रगट करवु, बतावबु)
प्रत्यक्षात् अ० जुओ 'प्रत्यक्षम्'
प्रत्यक्षिन् वि० नजरे जोनारु
प्रत्यक्षीकृ ८ उ० नजरे जोवु
प्रत्यक्षे अ० —नी नजर सामे
प्रत्यक्षेण अ० जुओ 'प्रत्यक्षम्'
प्रत्यक्स्रोतस् वि० पश्चिम तरफ वहेतु
प्रत्यगात्मन् पु० जीवात्मा [कि कहेलु
प्रत्यग्र वि० नवु, ताजु (२) वारंवार करेलु
प्रत्यग्रवयस् वि० जुवान, तरुण
प्रत्यच् वि० —तरफ वळेलु, अंदरनी बाजु वळेलु (२) —नी पाछळ होय तेवु (३) पछीनु (४) पाछु वळेलु के वाळेलु (५) पश्चिम तरफनु (६) अंदरनु (७) —नी समान (८) पु० जीवात्मा (९) भविष्यकाळ
प्रत्यनंतर वि० पासेनु, नजीकनु (२) वारसदार तरीके नजीकनु (३) तरत पछीनु (क्रममां) [ज नजीक
प्रत्यनंतरम् अ० तरत ज पछी, तरत
प्रत्यनीक वि० विरोधी, ऊलटु (२) पु० शत्रु (३) न० दुश्मननु सैन्य (४) दुश्मनावट [करेलो अपकार
प्रत्यपकार पु० अपकारना बदलामां
प्रत्यब्दम् अ० दर वर्षे [आववु
प्रत्यभिज्ञा ९ उ० ओळखवु (२) भानमां
प्रत्यभिज्ञा स्त्री० ओळखवु ते
प्रत्यभिज्ञान न० ओळखाण, ओळखवु ते (२) ओळखवा माटे आपेली निशानी
प्रत्यभिनंद् १ प० सामु अभिनंदन करवु (२) स्वागत करवु
प्रत्यभिभाषिन् वि० संबोधतु, —ने कहेतु
प्रत्यभियोग पु० सामो आरोप
प्रत्यभिवद् —प्रेरक० सामु अभिवादन करवुं, सामो नमस्कार करवो
प्रत्यभिवादन न० वंदन करनारने सामु वंदन करवु के आशीर्वाद आपवो ते
प्रत्यभ्युत्थान न० सत्कार करवा सामा ऊभा थवु ते
प्रत्यय पु० प्रतीति, खातरी (२) विश्वास, श्रद्धा (३) अभिप्राय, ख्याल (४) ज्ञान, वेदना, अनुभव (५) कारण, कार्यनो हेतु (६) रूपो के साधित शब्दो बनाववा शब्दने अंते लगाडाय छे ते (व्या०)
प्रत्ययकारक, प्रत्ययकारिन् वि० खातरी के विश्वास उपजावनारु
प्रत्यर्चित वि० जवाबमां सामो नमस्कार जेने कर्यो होय तेवु
प्रत्यर्थ् १० आ० पडकारवु
प्रत्यर्थ वि० उपयोगी, कार्यसाधक (२) न० जवाब (३) दुश्मनावट
प्रत्यर्थम् अ० दरेक पदार्थनी बाबतमां (२) दरेक दाखलामां
प्रत्यर्थिक पु० दुश्मन, विरोधी
प्रत्यर्थिन् वि० विरोधी, प्रतिवादी (२) पु० शत्रु (३) हरीफ (४) आरोपी (५) विघ्न [थयेलु
प्रत्यर्थिभूत वि० नडतर के डखलरूप

प्रत्यर्पण न० पाछु आपवु ते [तेवु
प्रत्यर्पित वि० जेणे पाछु सोपी दीधु होय
प्रत्यवमर्श (-र्ष) पु० सलाह, मसलत (२)चितन, ध्यान(३)धैर्य, सहनशीलता
प्रत्यवर वि० श्रेष्ठ नहि तेवु; हलकु
प्रत्यवसित वि० खाईने के पीने परवारेलु (२)जूनी (खोटी) टेवमा पाछु वळेलु
प्रत्यवस्कंद पुं०, न० अचानक हुमलो
प्रत्यवस्था (प्रति+अव+स्था) १ आ० [प्रत्यवतिष्ठते]सामनो के विरोध करवो (२) जुदा पडीने ऊभवु
प्रत्यवहार पु० सहार, प्रलय (२) पाछु खेंची लेवु ते
प्रत्यवाय पु० विघ्न, जोखम (२) ऊलटो मार्ग (३) पाप, दोष (४) निराशा (५)सत् वस्तुनु अदृश्य थवु ते
प्रत्यवेक्ष् (प्रति+अव+ईक्ष्) १ आ० तपास करवी, तपासवु
प्रत्यवेक्षण न०, **प्रत्यवेक्षा** स्त्री० लक्ष राखवु ते; काळजी राखवी ते
प्रत्यवेक्षितृ पु० निरीक्षक
प्रत्यस्त वि० फेंकी दीधेलु, तजी दीधेलु [अत
प्रत्यस्तमय पु० आथमवु ते (सूर्यनु)(२)
प्रत्यहम् अ० दररोज [अवयव
प्रत्यंग न० उपाग (२) दरेक अग के
प्रत्यंगम् अ० दरेक अगे, अगोपागे
प्रत्यंच् वि० जुओ 'प्रत्यच्'
प्रत्यंत वि० समीपनु (२) पु० सरहद (३) सरहदनो प्रदेश
प्रत्यंशम् अ० खभा उपर, खभे
प्रत्याकलित वि० गणतरी करेलु (२) वच्चे दाखल करेलु
प्रत्याकांक्ष् (प्रति+आ+कांक्ष्) १ आ० आशा के अपेक्षा राखवी
प्रत्याख्या (प्रति+आ+ख्या) २ प० ना पाडवी, नकारवु (२) मना करवी (३)पाछळ पाडी देवु, चडियाता थवु
प्रत्याख्यात वि० नकारेलु (२) मनाई करेलु (३) रद करेलु (४) वकेली काढेलु (५) पाछळ पाडी दीधेलु
प्रत्याख्यान न० नकारवु ते, अस्वीकार (२)ठपको (३)खडन
प्रत्यागम् (प्रति+आ+गम्) १ प० [प्रत्यागच्छति] पाछु फरवुं (२) भानमा आववु
प्रत्यागम पु०, **प्रत्यागमन** न० पाछु फरवु ते (२) आवी पहोचवु ते
प्रत्याघात पु० सामो प्रहार के धक्को
प्रत्यादान न० पाछु लेवुं ते (२) पाछु हाथ उपर लेवु ते (३) पुनरावर्तन
प्रत्यादिश् ६ प० छाडवु; त्यजवु (२) पाछु काढवु (३) नकारवु, अस्वीकार करवो (४) ढाकी देवु, पाछु पाडी देवु (५) बोलाववु (६) आज्ञा करवी (७) चेतवणी आपवी
प्रत्यादिष्ट वि० जणावेलु (२) हुकम करेलु (३)अस्वीकार करेलु, छाडेलु, दूर करेलु (४) झाखु के पाछु पाडी दीधेलु (५) चेतवेलु
प्रत्यादेश पु० हुकम (२) माहिती, जाहेरात (३)अस्वीकार, नकारवुं ते, निराकरण (४) झांखुं के पाछुं पाडी देनार (५) चेतवणी (अलौकिक) (६) ठपको (७) वारवु ते; निवारण
प्रत्यानयन न० पाछु मेळववु के लाववु ते
प्रत्यापत्ति स्त्री० पाछु मळवु के फरवु ते (२) वैराग्य [बुद्धिवाळु
प्रत्यापन्न वि० पाछु मळेलु (२) विपरीत
प्रत्यायन न० जुओ 'प्रत्यायना' (२) परणवु ते, घेर लाववु ते (वहुने) (३) आथमवु ते (सूर्यनु)
प्रत्यायना स्त्री० विश्वास पेदा करवो ते, प्रतीति कराववी ते (२) समजाववु ते (३) साबित करवु ते
प्रत्यायित वि० खातरी थई होय ते

प्रत्यावर्तन न० पाछा फरवु ते
प्रत्याशा स्त्री० आशा, विश्वास
प्रत्याश्वस्त वि० सात्वन पामेलु (२) फरी ताजु थयेलु
प्रत्याश्वासन न० आश्वासन; दिलासो
प्रत्यासत्ति स्त्री० निकटता (२) निकट सबध (३) खुशमिजाजी
प्रत्यासन्न वि० नजीकनु, पासेनु (२) पस्तावो करतु [एक व्यूहरचना
प्रत्यासर पु० सैन्यनो पाछलो भाग (२)
प्रत्यासंग पु० संबध, ससर्ग
प्रत्यासार पु० जुओ 'प्रत्यासर'
प्रत्याहत वि० पाछु हटावेलु
प्रत्याहरण न० पाछु मेळववु ते (२) पाछु खेंची लेवु ते (३) निग्रह करवो ते
प्रत्याहार पु० पाछा हठवु ते (२) पकडी राखवु ते, निग्रह करवो ते (३) प्रलय (४) संकोच, सक्षेप
प्रत्याहृ १ प० पाछु लई लेवु, पाछु मेळववु (२) पाछु खेंचवु (३) उच्चारवु (४) कहेवु, जणाववु (५) फरीथी गोठववु [करेलु
प्रत्याहृत वि० पाछु मेळवेलु (२) निग्रह
प्रत्युक्त वि० जवाबमा कहेलु
प्रत्युज्जीव् १ प० सजीवन थवु
प्रत्युज्जीवन न० सजीवन थवु ते (२) सजीवन करवु ते
प्रत्युत अ० ऊलटु, सामेथी
प्रत्युत्क्रांतजीवित वि० मरवा पडेलु
प्रत्युत्तर न० जवाब
प्रत्युत्थान न० सामे थवु ते (२) युद्धनी तैयारी करवी ते (३) कोई आवे त्यारे मानमा सामा ऊभा थवु ते
प्रत्युत्पन्न वि० फरी उत्पन्न थयेलु (२) तत्पर, तैयार (३) हाजर
प्रत्युत्पन्नबुद्धि, प्रत्युत्पन्नमति वि० समयसूचकतावाळु, योग्य काळे योग्य करवानु जेने झट सूझी आवे तेवु (२) स्त्री० समयसूचकता, तरतबुद्धि
प्रत्युद्गत वि० सत्कार करवा माटे सामु ऊभु थयेलु (२) सामु थयेलु
प्रत्युद्गति स्त्री० सत्कार माटे बेठा होय त्याथी ऊभा थवु ते
प्रत्युद्गम् १ प० [प्रत्युद्गच्छति] सत्कार करवा माटे सामु ऊभु थवु (२) तरफ धसवु के कूच करवी
प्रत्युद्गम पु०, **प्रत्युद्गमन** न० जुओ 'प्रत्युद्गति' [जोड
प्रत्युद्गमनीय न० धोयेला कपडानी
प्रत्युद्यम पु० प्रतीकार के सामनो करवानो प्रयत्न
प्रत्युद्यात वि० जुओ 'प्रत्युद्गत'
प्रत्युपकार पु० उपकारनो बदलो वाळवो ते (२) परस्पर मदद
प्रत्युपकृ ८ उ० उपकारनो बदलो वाळवो, सामो उपकार करवो (२) भरपाई करवु [वाळवो ते
प्रत्युपक्रिया स्त्री० उपकारनो बदलो
प्रत्युपदेश पु० सामो उपदेश
प्रत्युपपन्न वि० जुओ 'प्रत्युत्पन्न'
प्रत्युपमान न० उपमाननु पण उपमान होवु ते (२) आदर्श, जेना उपरथी बीजी वस्तुओनी गुणवत्ता मपाय ते
प्रत्युपवेश पु०, **प्रत्युपवेशन** न० नमाववा घेरो घालवो ते (२) सामे ऊभवु ते
प्रत्युपस्थित वि० पासे आवेलु, हाजर थयेलु (२) सामु थयेलु
प्रत्युपहार पु० पाछु सोंपवु ते, पाछु आपवु ते (२) भेट
प्रत्युप्त वि० जडी दीधेलु, सज्जड चोंटाडेलु – खोसेलु (२) वावेलु [काळ
प्रत्यूष पु०, न०, **प्रत्यूषस्** न० प्रात -
प्रत्यूह् १ उ० विरोध के सामनो करवो (२) डखल करवी, नडतर करवी (३) इन्कार करवो (४) चडियाता थवु (५) भेट चडाववी
प्रत्यूह पु० विघ्न, नडतर

प्रत्येक वि० दरेक
प्रत्येकम् अ० दरेकमा, दरेकने (२) एक वखते एक, जुदु जुदु
प्रथ् १ आ० वधवु (२) फेलावु (३) प्रसिद्ध थवु (४) प्रगट थवु (५) १० उ० फेलाववु, जाहेर करवु (६) प्रगट करवु, दर्शाववु (७) विस्तृत करवु
प्रथम वि० पहेलु, मुख्य, प्रधान (२) श्रेष्ठ, उत्तम (३) सौथी पहेलानु, सौथी प्राचीन (४) पहेलानु, अगाउनु
प्रथमगिरि पु० उदयाचल
प्रथमतस् अ० पहेलेथी, प्रथमथी (२) तरत ज; एकदम (३) अगाउ, –नो पसदगीमा प्रथम होय तेम
प्रथमदिवस पु० पहेलो दिवस
प्रथमम् अ० पहेली वार (२) अगाऊ, पहेला (३) एकदम, तरत ज (४) ताजेतरमा
प्रथमवयस् न० पहेली अवस्था, जुवानी
प्रथमा स्त्री० पहेली विभक्ति (व्या०)
प्रथमाश्रम पु० ब्रह्मचर्याश्रम (चार आश्रममा पहेलो)
प्रथमेतर वि० बीजु
प्रथमोदित वि० प्रथम कहेलु
प्रथा स्त्री० प्रसिद्धि, ख्याति
प्रथित ('प्रथ्' नु भू० कृ०) विस्तारेलु, वधेलु, पसरेलु (२) जाहेर थयेलु, प्रसिद्ध (३) दर्शावेलु, प्रगट
प्रथिमन् पु० विस्तार, विशाळता
प्रथिष्ठ वि० सौथी वधु विशाळ ('पृथु 'नुं श्रेष्ठतादर्शक रूप)
प्रथीयस् वि० (बेमा) वधु विशाळ, मोटु ('पृथु'नु तुलनात्मक रूप) (२) वधु विख्यात [(उदा० 'सुखप्रद')
प्रद वि० (समासने छेडे) –आपनारुं
प्रदक्षिण वि० जमणी बाजु आवेलु, जमणी बाजु जतु (२) आदरयुक्त (३) शुभ, शुभ शुकनरूप (४) कुशळ (५) अनुकूळ (६) पु०, न० प्रदक्षिणा करवी ते [प्रदक्षिणा करवी ते
प्रदक्षिणक्रिया स्त्री०, **प्रदक्षिणन** न०
प्रदक्षिणम् अ० डाबीथी जमणी बाजुए (२) जमणी बाजुए (पोतानी जमणी बाजु ते तरफ रहे ते रीते) (३) दक्षिण तरफ (४) सौ सारा वाना होय तेम
प्रदक्षिणा स्त्री० (पोतानी जमणी बाजु ते तरफ रहे ते प्रमाणे) आसपास गोळ फरवु ते (पूज्यभाव दर्शाववा)
प्रदक्षिणार्चिस् वि० जमणी बाजु ज्वाळाओ नीकळती होय तेवु [बाजु वळेलु
प्रदक्षिणावर्त, प्रदक्षिणावृत्क वि० जमणी
प्रदक्षिणीकृ ८ उ० प्रदक्षिणा करवी
प्रदग्ध वि० बळी गयेलु
प्रदर पु० फाडवु–चीरवु ते (२) फाट, चीरो (३) लश्करने वेरविखेर करवु ते (४) बाण (५) स्त्रीओनो एक रोग
प्रदर्शक वि० बतावनारु, प्रगट करनारु (२) पु० आचार्य, पेगबर
प्रदर्शन न० देखाव (२) प्रगट करवु ते, देखाडवु ते (३) शीखववु ते, समजाववु ते (४) दृष्टात
प्रदा ३ उ० आपवु, अर्पण करवु (२) शीखववु (३) परणाववु (४) चूकवी देवु (ऋण)
प्रदान न० आपवु ते, दान (२) लग्न (३) शीखववु ते (४) बक्षिस, भेट (५) खंडन (६) परोणो
प्रदाय न० भेट, बक्षिस
प्रदायक, प्रदायिन् वि० आपनारु
प्रदि पु० बक्षिस, भेट
प्रदिग्ध वि० खरडायेलु, लेपायेलु
प्रदिश् ६ प० बताववु, दर्शाववु (२) कहेवु, जणाववु (३) आपवु (४) हुकम करवो, प्रेरवु (५) सलाह आपवी
प्रदिश् स्त्री० बे दिशा वच्चेनो खूणो
प्रदीप पु० दीवो (२) –नु विवरण करतो ग्रंथ (ग्रंथना नामने छेडे)

प्रदीपन न० सळगाववु ते (२) उजाळवु ते (३) उश्केरवु ते
प्रदीप्त वि० सळगेलु, प्रकाशित (२) ऊंचु करेलु, फेलायेलु (३) उश्केरायेलु
प्रदुष् ४ प० दूषित थवु, बगडवु, भ्रष्ट थवु (२) पाप के अपराध करवो —प्रेरक० भ्रष्ट करवु (२) दोष काढवो
प्रदुष्ट वि० भ्रष्ट थयेलु (२) दुष्ट; पापी (३) स्वच्छंदी [करवु ते
प्रदूषण न० भ्रष्ट करवु ते, अपवित्र
प्रदृश् १ प० [प्रपश्यति] जोवु, निहाळवु (२) विचारवु, मानवु
प्रदेय वि० आपवानु (२) जणाववानु (३) परणाववानु (४) पु० भेंट
प्रदेश पु० दर्शाववु के सूचववु ते (२) देश, विभाग, प्रांत (३) स्थान, स्थळ (४) अंगूठो अने तर्जनी फेलावतां जेटलु अंतर थाय ते [आगळी — तर्जनी
प्रदेशनी, प्रदेशिनी स्त्री० अंगूठा पासेनी
प्रदेष्टृ पु० न्यायाधीश
प्रदोष वि० दुराचारी, भ्रष्ट (२) पु० दोष, पाप, गुनो (३) बळवो, अंधाधूंधी (४) रातनो शरूआतनो भाग
प्रदोषक पु० सांज
प्रदोषतिमिर न० समीसांजनु अंधारु
प्रद्युम्न पु० श्रीकृष्णनो पुत्र (कामदेवनो अवतार मनाय छे)
प्रद्योत पु० प्रकाश, तेज (२) किरण (३) उज्जयिनीनो प्रसिद्ध राजा
प्रद्रु १ प० नासी जवु, दोडी जवु (२) सामे वेगथी धसवु (३) हुमलो करवो
प्रद्रेक् १ आ० हणहणवु
प्रद्वार् स्त्री०, **प्रद्वार** न० बारणा के दरवाजा आगळनो भाग
प्रद्विष् २ उ० द्वेष करवो
प्रद्वेष पु०, **प्रद्वेषण** न० द्वेष, धिक्कार
प्रधन न० युद्ध, लडाई (२) विनाश
प्रधनाघातक वि० लडाई ऊभी करनारु
प्रधनांगण न० रणक्षेत्र
प्रधर्ष पु० बळात्कार, हुमलो
प्रधर्षक पु० हुमलो करनार (२) पजवनार
प्रधर्षण न०, **प्रधर्षणा** स्त्री० हुमलो; बळात्कार (२) अपमान, अनादर
प्रधर्षित वि० हुमलो करायेलु, पराभव पमाडेलु (२) तुमाखीवाळु
प्रधान वि० मुख्य, श्रेष्ठ (२) पुं०, न० राजानो मुख्य मंत्री, वजीर (३) उमराव (४) महावत (५) सेनाध्यक्ष (६) न० जगतनी मुख्य वस्तु (७) सत्त्व-रज-तम ए त्रण गुणोनी साम्यावस्थारूप मूळ प्रकृति, जगतनु मुख्य भौतिक कारण (सांख्य०)
प्रधानेन अ० मुख्यपणे
प्रधारणा स्त्री० एक वस्तु उपर मनने स्थिर करवु ते
प्रधाव् १ उ० आगळ दोडवु, दोडी जवुं (२) प्रसरी जवु (३) धोवु, साफ करवु (४) लूछी नाखवु
प्रधि पु० पैडानो गोळ घेरावो
प्रधी वि० उत्तम बुद्धिवाळु (२) स्त्री० उत्तम बुद्धि
प्रधूपित वि० आपेलु (२) तपावेलु (३) प्रगटावेलु, सळगावेलु (४) सतापेलु
प्रधृ १० उ० मूकवु, स्थिर करवु (२) निरधारवु, नक्की करवु
प्रधृष् ६ प० हुमलो करवो (२) पजववु (३) तावे करवु, हराववु —प्रेरक० हुमलो करवो (२) बळात्कार करवो (३) बरबाद करवु
प्रध्मा १ प० [प्रधमति] फूंकवु (२) नाश करवो
प्रध्यान न० ऊंडु ध्यान, चिंतन
प्रध्यै १ उ० ध्यान धरवु, चिंतववु (२) विचारी काढवु, योजवु
प्रध्वस्त वि० पूरेपूरु नष्ट
प्रध्वंस् १ आ० ध्वंस थवो, नाश पामवु
प्रध्वंस पु० विनाश
प्रध्वंसिन् वि० नाशवंत

प्रनष्ट वि० नाश पामेलु (२) खोवाई गयेलु (३) नासी गयेलु (४) देखातु बध थयेलु
प्रनृत् ४ प० नाचवु
 –प्रेरक० नचाववु, कपाववु
प्रनृत्त वि० नाचतु (२) न० नृत्य
प्रपक्ष पु० पाखनो छेडानो भाग (जेमके, लश्करनी)
प्रपतन न० ऊडवु ते (२) –मा पडवुं ते, नीचे पडवु ते (३) नीचे ऊतरवु ते (४) विनाश, मृत्यु (५) सीधी कराड (६) हुमलो
प्रपद् ४ आ० प्रवेशवु, डग भरवु (२) पासे जवु, पहोचवु (३) शरणे जवु (४) –नी स्थिति पामवी (५) पामवु; मेळववु (६) –नी प्रत्ये वर्तवु (७) कबूल राखवु
प्रपन्न वि० आवी पहोचेलु, जई पहोचेलुं (२) स्वीकारेलु, माथे लीधेलु (३) शरणु लीधु होय तेवु (४) –ने वळेलु (५) पामेलु, युक्त
प्रपलायन न० नासी के भागी जवु ते
प्रपलायित वि० नासी गयेलु (२) भगाडी काढेलु, हरावेलु
प्रपंच पु० देखाव, देखाड (२) विस्तार (३) विवरण (४) वैविध्य, विपुलता (५) दृश्य जगत; ससार (६) कपट, माया
प्रपंचचतुर वि० जुदा जुदा रूप धरवामा [कुशळ
प्रपंचवचन न० विस्तारवाळी वाणी
प्रपा स्त्री० परब (२) कूवो, टाकु (३) हवाडो (ढोरने पाणी पीवानो)
प्रपाठक पु० पाठ (२) ग्रथविभाग
प्रपात पु० विदाय थवु ते (२) पडवु ते (३) अचानक करेलो हुमलो (४) पाणीनो धोध (५) किनारो (६) सीधी कराड (७) स्खलन
प्रपान न० पीवु ते [स्त्री
प्रपापालिका स्त्री० परबे पाणी पानारी

प्रपितामह पु० पिताना दादा (२) ब्रह्माना पण पिता – परमात्मा
प्रपीड् १० उ० दबाववु, निचोववु (२) त्रास गुजारवो (३) निग्रह करवो
प्रपूरण न० भरी काढवु ते, पूर्ण करवु ते (२) अदर भरवु ते (३) सतोषवु ते (४) –साथे जोडवु ते (५) वाळवु ते (धनुष्यने)
प्रपॄ ९ प० भरी काढवु, पूर्ण करवु
 –कर्मणि० [प्रपूर्यते] भरी कढावु; पूर्ण कराव‍ु
प्रपौत्र पु० पौत्रनो पुत्र
प्रफुल्त वि० खीलेलु, विकसेलु
प्रफुल्ल वि० पूरेपूरु खीलेलु (२) पहोळु थयेलु (जेम के आख) (३) स्मित करतु, आनदी (४) चळकतु
प्रबर्ह वि० उत्तम, श्रेष्ठ
प्रबल वि० जोरावर; बलिष्ठ (२) अतिशय, तीव्र, मोटु (३) अगत्यनु
प्रबलम् अ० अतिशय, खूब होय तेम
प्रबंध पु० बधन, गाठ (२) अखडपणु; सातत्य (३) लाबो-चालु सवाद (४) ग्रथ, साहित्यरचना (५) गोठवण
प्रबाध् १ आ० पीडवु, जुलम गुजारवो (२) दबाववु, हाकी काढवु (३) गबडावी पाडवु, नाश करवो
प्रबुद्ध वि० जागेलु, जगाडेलु (२) डाह्यु, जाणकार (३) खीलेलु
प्रबुध् १ प०, ४ आ० जागवु (२) खीलवु (३) बोध थवो, जाणवु
 –प्रेरक० जगाडवु (२) जणाववु (३) खीलववु (४) शीखववु, समजाववु
प्रबोध पु० जागवु ते (२) खीलवु ते (३) जागरूकता, सावधानी, सावचेती (४) ज्ञान, तत्त्वज्ञान
प्रबोधन न० जागवु ते (२) जगाडवु ते (३) भानमा आववु ते (४) ज्ञान, डहापण (५) शिक्षण, सलाह

प्रब्रू २ प० जाहेर करवु (२) बूम पाडवी (३) कहेवु, बोलवु (४) प्रशंसा करवी (५) शीखववु
प्रभग्न वि० कचरी नाखेलु, हरावेलु
प्रभद्रक वि० अत्यंत सुंदर
प्रभव पु० उत्पत्तिस्थान, मूळ (२) जन्म, उत्पत्ति (३) नदीनु मूळ (४) उत्पन्न करनार कारण (५) समृद्धि (६) –माथी जन्मेलु (समासने अंते)
प्रभवितृ पु० स्वामी, नियंता
प्रभविष्णु वि० समर्थ, शक्तिमान (२) श्रेष्ठ (३) पु० स्वामी, मालिक
प्रभंजन पु० तोफानी पवन, वंटोळ
प्रभा २ प० देखावु (२) प्रकाशवु (३) सवार थवी (४) प्रकाशित करवु
प्रभा स्त्री० दीप्ति, तेज (२) किरण
प्रभाकर पु० सूर्य (२) पद्मराग मणि
प्रभात वि० तेजवाळु थवा लागेलु (२) न० परोढ, सवार [आवेलु
प्रभातकल्प, प्रभातप्राय वि० सवार थवा
प्रभातरल वि० देदीप्यमान
प्रभापल्लवित वि० कांति वडे देदीप्यमान
प्रभाप्रभु पु० सूर्य
प्रभाभिद् वि० देदीप्यमान
प्रभामंडल न० तेजनु कूंडाळु
प्रभालेपिन् वि० प्रकाशित, तेजस्वी
प्रभाव पु० प्रकाश, दीप्ति (२) प्रताप, तेज (३) बळ, पराक्रम, ताकात
प्रभावन वि० प्रभाववाळु, ताकातवान (२) उत्पादक (३) प्रगट करनारु (४) पु० रचयिता, विधाता
प्रभाष् १ आ० बोलवु, संबोधवु (२) जाहेर करवु (३) प्रगट करवु (४) समजाववु (५) बकवु
प्रभाषित वि० कहेलु, जाहेर करेलु
प्रभास् १ आ० प्रकाशवु (२) देखावु –प्रेरक० प्रकाशित करवु
प्रभास पु० प्रकाश, कांति
प्रभास्वर वि० प्रकाशित, तेजस्वी
प्रभिन्न वि० फाडेलु, फाटेलु (२) टुकडा थयेलु (३) कापी नाखेलु, जुदु पाडेलु (४) खीलतु, ऊघडतु (५) मदमां आवेलु (६) वीधेलु (७) पु० मद झरतो हाथी
प्रभिन्नकरट वि० (गंडस्थळ फाटया होय तेवु) मद झरतु [आंजण
प्रभिन्नांजन न० (तेल मिश्रित) एक
प्रभु वि० समर्थ, शक्तिशाळी (२) समोवडियु, सामनो करी शके तेवु (३) पु० स्वामी, मालिक, हाकेम
प्रभुता स्त्री० स्वामीपणु, सत्ता, प्रभाव (२) मालकी
प्रभू १ प० उत्पन्न थवु (२) होवु, थवु (३) देखावु (४) वधवु (५) समर्थ थवु, शक्तिमान थवु, पोतानी ताकात बताववी (६) –ना उपर काबू होवो, –ने दबाववु (७) –नु बराबरियु थवु (८) पूरतु थवु, समावी शकवु (९) –मां समावु [घणु, पुष्कळ
प्रभूत वि० –माथी उत्पन्न थयेलु (२)
प्रभूतता स्त्री०, **प्रभूतत्व** न० पुष्कळता
प्रभूतवयस् वि० घरडु, वृद्ध
प्रभृति स्त्री० आदि, शरूआत (आ अर्थमां बहुव्रीहि समासने अंते वपराय छे, उदा० इन्द्रप्रभृतयः = इन्द्र वगेरे)
प्रभृति अ० –थी मांडीने
प्रभेद पु० फाडवु – चीरवु ते (२) भाग पाडवा ते (३) मद झरवो ते (४) तफावत, भिन्नता (५) नदीनु मूळ
प्रभ्रष्ट वि० पडी गयेलु (२) न० वाळनी लटमां लटकावेली फूलमाळा
प्रभ्रंश् १ आ०, ४ प० पडी जवु, गबडी पडवु (२) –ना विनाना थवु (३) –माथी नासी छूटवु
प्रमत्त वि० मदमत्त, पीधेलु (२) गाडु (३) बेदरकार, प्रमादी (४) भूल करनारु, कर्तव्यभ्रष्ट

प्रमथ् १, ९ प० वलोववु (२) अत्यत पीडवु, त्रास आपवो (३) कापवु; चीरी नाखवु (४) बरबाद करवु (५) मारी नाखवु [एक वर्ग

प्रमथ पु० घोडो (२) शिवना पार्षदोनो

प्रमथन न० पीडवु ते (२) कचरवु ते (३) वलोववु ते (४) मारी नाखवु ते

प्रमथित वि० पीडेलु, रोळेलु (२) मारी नाखेलु (३) बराबर वलोवेलु (४) न० पाणी न उमेरेली छाश, मठो

प्रमथिन् वि० नाश करनारु

प्रमद् ४ प० [प्रमाद्यति] मदमत्त थवु (२) प्रमाद करवो, बेदरकार रहेवु (३) भूल करवी, अवळे मार्गे जवु (४) आळस करवु; समय वेडफवो (५) हर्षित थवु

प्रमद वि० पीधेल, उन्मत्त (२) छाकटु, भ्रष्ट (३) पु० हर्ष, आनद

प्रमदवन न० राजाना अतःपुरनी स्त्रीओने क्रीडा करवानो बगीचो — उपवन

प्रमदा स्त्री० सुदर युवान स्त्री (२) पत्नी (३) स्त्री

प्रमदाजन पु० युवती (२) स्त्रीजाति

प्रमदावन न० जुओ 'प्रमदवन'

प्रमनस् वि० हर्षित

प्रमन्यु वि० खीजवायेलु, गुस्से थयेलु (२) खिन्न, दिलगीर [नाखनारु

प्रमर्दन वि० मर्दन करनारु, कचरी

प्रमंथ् १, ९ प० जुओ 'प्रमथ्'

प्रमा २ प०, ३ आ० मापवु (२) बनाववु, रचवु (३) साबित करवु (४) गोठववु (५) जाणवु, समजवु (६) अटकळ करवी

प्रमाण न० माप (२) कद (३) मापवानो गज (४) पुरावो (५) साचा-खोटानी परीक्षा के निर्णय (६) निश्चित ज्ञान (७) तेनु साधन (प्रत्यक्ष, अनुमान वगेरे प्रमाणो) [कदनु

प्रमाणक वि० (समासने छेडे) मापतु;

प्रमाणपुरुष पु० छेवटनो निर्णय आपनार

प्रमाणभूत वि० प्रमाणरूप, कबूल राखवु पडे तेवु, विश्वासपात्र

प्रमाणयति प० (प्रमाणभूत गणवु, प्रमाणरूपे धरवु, साबित करवु)

प्रमाणशास्त्र न० प्रमाणभूत शास्त्र (२) तर्कशास्त्र, 'लॉजिक'

प्रमाणसूत्र न० मापवानी दोरी

प्रमाणाधिक वि० हमेश करता वधु; वधारे पडतु [-रूप (२) प्रमाणभूत

प्रमाणिक वि० प्रमाण, माप के धोरण

प्रमाणीकृ ८ उ० प्रमाणभूत मानवु (२) विश्वास करवो (३) नियत करवु, फाळे नाखवुं (४) मानवु, अनुसरवु (५) साबित करवुं (६) सलाह के परवानगी मागवी (७) मजूर राखवु, गणतरीमा लेवु

प्रमातामह पु० माताना पिताना दादा

प्रमाथ पु० अत्यंत पीडवु ते (२) वलोववु ते (३) वध, हत्या; विनाश (४) बळात्कार, अत्याचार

प्रमाथिन् वि० पीडतु; त्रास आपतु (२) नाश के वध करतु (३) क्षुब्ध करतु, वलोवी नाखतु (४) नीचे तोडी पाडतु (५) कापी नाखतुं

प्रमाद पु० बेदरकारी, दुर्लक्ष (२) मदमत्तता, छाकटापणु (३) बेहोशी; मूर्छा (४) गाडपण (५) भूल, गफलत (६) अकस्मात, आफत

प्रमादिन् वि० गाफेल, बेदरकार (२) छाकटु, पीधेलु (३) गाडुं

प्रमापण न० आकृति (२) वध, कतल

प्रमित वि० मापेलु (२) मर्यादित, थोडु (३) जाणेलुं, समजेलु (४) साबित करेलु (५) (समासने अते) अमुक मापनु [साचु ज्ञान

प्रमिति स्त्री० माप (२) निश्चित के

प्रमीत वि० मरण पामेलु (२) यज्ञमां होमेलु (३) पुं० यज्ञमां वधेरेलुं पशु

प्रमीला स्त्री० घेन, तद्रा
प्रमीलित वि० मीचेली आखवाळु
प्रमुख वि० सामे मोवाळु (२) मुख्य; आगेवान, प्रथम (३) समाननीय (४) (समासने अते) –आगेवान होय तेवु, साथे होय तेवु (उदा० वासुकिप्रमुखा) [आगळ
प्रमुखतस्, प्रमुखे अ० –नी सामे, –नी
प्रमुग्ध वि० मूर्छित (२) अत्यत सुदर
प्रमुच् ६ प० मुक्त करवु (२) फेंकवु (३) वहार काढवु, मोकलवु (४) छोडवु (गाठ के बधन) (५) काढी मूकवु (६) आपवु
प्रमुद् १ आ० खूब हर्षित थवु –प्रेरक० खुश करवु
प्रमुद् स्त्री० अत्यत हर्ष
प्रमुदित वि० अत्यत आनद पामेलु
प्रमुष् ९ प० दूर करवु, झाखु पाडवु (२) लूटी जवु, चोरी जवुं
प्रमुषित वि० चोरायेलु (२) दूर करायेलु, लई लेवायेलु [मूर्ख
प्रमूढ वि० मूढ बनेलु, मोह पामेलु (२)
प्रमृज् २ प० लूछी नाखवु, साफ करवु (२) दूर करवु, –विनाना थवु (३) प्रायश्चित्त करवु (४) पपाळवु
प्रमृष्ट वि० साफ करेलु, लूछेलु (२) माजेलु, ऊजळु
प्रमेय वि० मापी शकाय तेटलु, मर्यादित (२) साबित करवा योग्य (३) न० प्रमाणथी साबित करवानु ते (४) निश्चित ज्ञान
प्रमेह पु० ते नामनो रोग – परमियो
प्रमोद पु० आनद, हर्ष
प्रमोह पु० मोह; मूर्छा [गंदु
प्रम्लान वि० करमायेलु (२) मलिन,
प्रम्लै १ प० करमावु (२) उदास बनवु (३) थाकी जवु (४) मेला थवु
प्रयत् १ आ० प्रयत्न करवो
प्रयत वि० सयमी, निग्रही, तपस्वी (२) उद्यमी, यत्नवान
प्रयतन न० प्रयत्न, उद्यम
प्रयतात्मन् वि० संयमी, तपस्वी (२) प्रयत्नशील, उद्यमी
प्रयत्न पु० प्रयास, महेनत, उद्यम (२) श्रम, कष्ट, मुश्केली (३) भारे काळजी (४) प्रवृत्ति
प्रयत्नतः, प्रयत्नात् अ० महा महेनते, खतथी (२) भाग्ये (३) खास
प्रयम् १ प० [प्रयच्छति] आपवु (२) निग्रह करवो (३) परणाववु (४) भरपाई करवु (जेम के देवु)
प्रयस्त वि० वीखरायेलु, आम तेम फेंकायेलु (२) प्रयत्नशील
प्रया २ प० जवु, चालवु (२) जवा नीकळवु (३) चाल्या जवु, विदाय थवु (४) प्रगति करवी
प्रयाग पु० गगा-यमुनाना सगम उपरनु तीर्थस्थान (अलाहाबाद)
प्रयाण न० जवा नीकळवु ते, प्रस्थान (२) मुसाफरी (३) प्रगति, आगेकूच (४) शरूआत (५) मृत्यु (६) कोई पण प्राणीनो पृष्ठ-भाग
प्रयाणक न० प्रस्थान, मुसाफरी
प्रयाणकाल पु० विदायवेळा
प्रयाणभंग पु० पडाव (मुसाफरीमा)
प्रयात वि० गयेलु, विदाय थयेलु (२) मृत (३) पु० सवारी, चडाई (४) ऊची भेखड, कराड (५) न० चालवानी रीत – ढब
प्रयाम पु० अछत, तगी (पाणी, अनाज इ०नी) (२) निग्रह, सयमन (३) लवाण, लबाई
प्रयास पु० यत्न (२) मुश्केली, महेनत
प्रयुक्त वि० झूसरीए जोडेलु (२) उपयोग करेलु, वापरेलु (३) नीमेलु, (४) –माथी जन्मतु, परिणामरूप

(५) ध्यानमग्न (६) प्रेरेलु (७) गतिमान करेलु
प्रयुज् ७ आ० प्रयोग करवो; वापरवु (२) निमणूक करवी (३) आपवु (४) हलाववु; गतिमान करवु (५) प्रेरवु (६) आचरवु, करवुं (७) नाट्यप्रयोग करवो (८) व्याजे धीरवु (९) झूसरीए जोडवु (१०) फेंकवु (अस्त्र) (११) योग्य होवु, छाजवु
प्रयुत न० दश लाखनी सख्या
प्रयुद्ध वि० उग्रपणे लडनारु (२) न० युद्ध
प्रयोक्तृ वि० उपयोग करनारु (२) अमल करनारु (३) प्रेरनारु (४) लेखक, कर्ता (५) नाट्यप्रयोग करनारु (६) फेंकनारु (बाण इ०)
प्रयोग पु० उपयोग, वापर (२) फेंकवु ते, प्रयोग करवो ते (३) अभिनय करवो ते, भजववु ते (४) प्रत्यक्ष उपयोग, व्यवहार के अमल ('शास्त्र'थी ऊलटु) (५) योजना, युक्ति
प्रयोगचतुर, प्रयोगनिपुण वि० (कळानो) प्रयोग करवामा कुशळ, अनुभवी
प्रयोगातिशय पु० नाटकनी प्रस्तावनानो एक प्रकार (सूत्रधार पोतानु काम अधूरु राखी बीजा पात्रना प्रवेशनी सूचना करतो चाल्यो जाय ते)
प्रयोगिन् वि० प्रयोग करनारु (२) प्रयोजनवाळु (३) प्रेरनारु
प्रयोजक वि० योजनारु, करनारु, प्रेरनारु, नीमनारु इ० (जुओ 'प्रयुज्')
प्रयोजन न० उपयोग (२) जरूर, अगत्य (३) हेतु, लक्ष (४) उपाय; साधन (५) कारण, सबब
प्ररुच् १ आ० खूब प्रकाशवु (२) गमवु
प्ररुदित वि० खूब विलाप करतु
प्ररुह् १ प० ऊगवु (२) रुझावु (घा वगेरे)
प्ररूढ वि० ऊगेलु; विकसेलु (२) जन्मेलु, उत्पन्न थयेलु (३) वधेलु (४) खूब ऊडु गयेलु (५) लाबु वधेलु
प्ररोचन वि० रुचि उपजावनारु (२) न० प्रेरवु ते (३) उदाहरण, दृष्टात (४) लोभाववु ते, आकर्षवु ते (५) प्रदर्शन
प्ररोह पु० अकुर, फणगो (२) कुपळ; पल्लव (३) वशज (४) तेजनो अकुर
प्रलप् १ प० बोलवु; वात करवी (२) बकवाट करवो (३) फावे तेम असबद्ध बोलवु (४) विलाप करवो
प्रलपन न० बोलवु ते, वातचीत (२) बकवाट, प्रलाप (३) विलाप
प्रलपित वि० बोलेलु, बबडेलु (२) न० बोलवु ते
प्रलब्ध वि० छेतरायेलु; ठगायेलु
प्रलभ् १ आ० छेतरवु, ठगवु
प्रलय पु० विनाश (२) (कल्पने अते थतो) सृष्टिनो विनाश (३) मोटो विनाश, बरबादी (४) मृत्यु (५) मूर्छा
प्रलंब वि० लाबु, लबडतु (२) ऊचु; देखाई आवे तेवु (३) धीमु, विलब करतु (४) पु० लटकतु – लबडतु एवु ते (५) शाखा (६) कठे पहेरेली लाबी माळा (७) कठी (८) स्तन
प्रलंबित वि० लटकतु, झूलतु
प्रलंभ पु० मेळववु ते (२) छेतरवु ते
प्रलंभन न० छेतरवु ते (२) छेतरपिंडी; दगाबाजी (३) मश्करी
प्रलाप पु० वात, वातचीत (२) बकवाट, बबडाट (३) विलाप
प्रलापिन् वि० बोलतु, बोलनारु, वात करतु (२) बबडाट करतु, प्रलाप करतु
प्रली ४ आ० ओगळी जवु (२) भळी जवु, समाई जवु (३) अदृश्य थवु (४) नाश पामवो
प्रलीन वि० ओगळी गयेलुं (२) नाश पामेलु (३) मूर्छित (४) ढकाई गयेलु; छुपायेलु (५) मृत
प्रलुठ् १ प० जमीन उपर आळोटवु (२) क्षुब्ध थवु, ऊछळवुं
प्रलुप्त वि० लूटायेलु

प्रलुब्ध वि० छेतरनारु (२) छेतरायेलु; ललचायेलु; भ्रष्ट थयेलु
प्रलुभ् ४ प० लोभ करवो, लालसा करवी (२) ललचाववुं (३) भ्रष्ट करवुं
प्रलून वि० कापी नाखेलु; कपाई गयेलु
प्रलेप पु० लेप
प्रलेह पु० सूरण आदिनी एक कढी
प्रलोभ पु० अत्यत लोभ; लालसा (२) ललचाववु ते
प्रलोभन न० लोभाववु, आकर्षवु के ललचाववु ते (२) ते माटेनी वस्तु
प्रलोभ्य वि० आकर्षक, लोभावनारु
प्रलोल वि० खूब हालतु – कंपतु
प्रवक्तृ पु० शिक्षक, समजावनार (२) वक्ता (३) बोलनार
प्रवचन न० बोलवु – जाहेर करवु ते (२) शीखववु – समजाववु ते (३) विवरण; चर्चा (४) वक्तृत्व (५) शास्त्रग्रथ, सिद्धांत, दर्शन
प्रवण वि० नीचे ढळतु; नीचे नमतु; नीचे वहेतु (२) एकदम सीधु – ऊभु (३) वाकुं वळेलु (४) वलणवाळु (५) आसक्त, लागेलु (६) तत्पर
प्रवणीकृ ८ उ० अनुकूळ करवु
प्रवद् १ प० बोलवुं; कहेवु; सबोधवु (२) जाहेर करवु
प्रवप् १ उ० नाखवु (२) वेरवु, विखेरवु
प्रवयण न० परोणो (हाकवा माटेनो)
प्रवयस् वि० मोटी उमरनु (२) पुराणु
प्रवर वि० मुख्य, उत्तम (२) मोटामां मोटु (३) पु० गोत्रप्रवर्तक मुनि (४) वश, कुळ (५) सतति, वशज
प्रवरकल्याण वि० घणु सुदर
प्रवरजन पु० उत्तम माणस
प्रवर्ग पु० यज्ञनो अग्नि (२) विष्णु
प्रवर्ग्य पु० सोमयज्ञनो प्रारभिक विधि
प्रवर्तक वि० प्रवर्तावनारुं; स्थापनारुं (२) आगळ वधारनारुं (३) उत्पन्न करनारु (४) प्रेरनारु (५) पु० स्थापक; उत्पादक; कर्ता (६) प्रेरनार (७) न० पात्रनु रगभूमि उपर आववु ते
प्रवर्तन न० प्रवर्तवु ते; आगळ खसवु के वधवु ते (२) शरूआत (३) स्थापना (४) प्रेरणा (५) –मा वळगवु ते, –मा प्रयत्नशील थवु ते (६) बनवु ते; घटना; प्रवृत्ति
प्रवर्तना स्त्री० कार्यमा प्रेरवु ते
प्रवर्तित वि० प्रवर्तविलु; चलावेलु; घुमावेलु (२) स्थापेलु (३) प्रेरेलु (४) प्रज्वलित करेलु (५) बनावेलु, रचेलु
प्रवर्तिन् वि० प्रवृत्त थतु, आगळ चालतु (२) बनावतु (३) वापरतु (४) –माथी नीकळतु (५) फेलातु
प्रवर्ष पु० भारे वरसाद
प्रवर्षण न० पहेलो वरसाद (२) वरसवु ते
प्रवर्ह वि० जुओ 'प्रबर्ह'
प्रवस् १ प० वास करवो (२) प्रवास करवो; परदेश जवु
प्रवसन न० प्रवासे नीकळवु ते
प्रवह् १ प० वहन करवु
प्रवह पु० नगरथी बहार जवु ते (२) एक जातनो पवन (ग्रहोने गतिमान करतो) (३) पाणी जेमा वहीने भेगु थाय ते
प्रवहण न० म्यानो; पालखी (स्त्रीओ माटेनी) (२) वाहन (३) वहाण
प्रवह्लिका स्त्री० जुओ 'प्रहेलिका'
प्रवाच् वि० वक्तृत्वशक्तिवाळु (२) वातोडियु (३) बडाश मारनारु
प्रवात वि० अतिशय पवन आवे तेवु (२) न० वहेतो ताजो पवन (३) तोफानी पवन; वटोळ (४) पवनवाळी जगा
प्रवातशयन न० पवनवाळी जगामां गोठवेली शय्या
प्रवातसुभग वि० ताजा वहेता पवनने कारणे आनदप्रद एवु
प्रवाद पु० अवाज करवो ते; शब्द उच्चारवो ते (२) उल्लेख करवो ते, जाहेर

करवुं ते (३) वातचीत (४) लोकवायका (५) दतकथा (६) पडकार (७) निंदा, कलक (८) वहानु; मिष

प्रवाल पुं०, न० फणगो; कूपळ (२) परवाळु [दूर जवु ते

प्रवास पुं० परगाम वसवु ते; मुसाफरीए

प्रवासन न० परगाम रहेवु ते के जवु ते (२) देशनिकाल करवु ते (३) वध; कतल

प्रवासिन् पु० मुसाफर, वटेमार्गु

प्रवाह पु० वहेवु ते (२) वहेण (३) परंपरा (४) घटनाओनी परपरा (५) प्रवृत्ति

प्रविघटित वि० कापी नाखेलु; छूटुं पाडेलु [आगळ वधवु

प्रविचर् १ प० रखडवु, भटकवु (२)

प्रविचल् १ प० विचलित थवु, अवळा जवु (२) कपवु, ध्रूजवु

प्रविचारमार्ग पु० ब० व० (लडती वखते) एक बाजुथी बीजी बाजु ठेकडा भरवा ते

प्रवितत वि० विस्तीर्ण (२) वीखरायेलुं; अस्तव्यस्त (वाळ)

प्रविधा ३ उ० नक्की करवु; निर्णय करवो (२) बनाववु, करवु (३) चिंतन करवु; विचारवु

प्रविभक्त वि० छूटु पाडेलु, अलग करेलु

प्रविभाग पु० जुदु पाडवु ते, वहेचणी (२) भाग, हिस्सो

प्रविरल वि० घणा अतरवाळु (२) घणुं थोडु; भाग्ये ज जोवा मळतु

प्रविलुप्त वि० कापी नाखेलु, अळगु करेलु (२) भूसी नाखेलु

प्रविवाद पु० वादविवाद; तकरार

प्रविविक्त वि० अलग पाडेलु; अळगु (२) एकात, निर्जन

प्रविश् ६ प० पेसवु; दाखल थवु (२) शरूआत करवी; मडवु

प्रविषण्ण वि० खिन्न; उदास

प्रविषय पु० गोचर; क्षेत्र; पहोंच

प्रविष्ट वि० दाखल थयेलु; पेठेलु (२) —मा रोकायेलु; गूंथायेलु (३) ऊंडुं ऊतरी गयेलु (जेम के आख) [ते

प्रविष्टक न० रंगभूमि उपर दाखल थवुं

प्रविसृत वि० पथरातुं (२) नासी गयेलु (३) तीव्र [पाछु भगाडेलु

प्रविहत वि० नसाडी मूकेलु; मारीने

प्रवीण वि० चतुर; कुशळ; निपुण

प्रवीर वि० मुख्य; उत्तम (२) बळवान; पराक्रमी (३) पु० वीर पुरुष (४) मुख्य —विशिष्ट माणस

प्रवृ ५ उ० ढांकवु, आच्छादन करवु (२) पहेरवुं (३) पसद करवु

प्रवृत् १ आ० आगळ वधवु (२) —मांथी नीकळवु; उदय थवो (३) बनवुं; थवुं (४) आरंभ करवो (५) प्रयत्न करवो, प्रयत्नशील थवु (६) वर्तवु; आचरवु (७) होवु (८) सतत चालु रहेवु

प्रवृत वि० ('प्रवृ'नुं भू० कृ०) पसंद करेलु

प्रवृत्त वि० ('प्रवृत्'नुं भू० कृ०) शरू करेलु (२) शरू थयेलु; बेठेलु (ऋतु इ०) (३) —मां लागेलु (४) —तरफ जवा नीकळेलु (५) निश्चित; स्थिर करेलु (६) वहेतु

प्रवृत्तवाक् वि० वक्तृत्वशक्तिवाळु

प्रवृत्ति स्त्री० सतत आगळ वधवुं ते (२) ऊगम; मूळ; उद्भवस्थान (३) देखावु के प्रगट थवु ते (४) शरूआत थवी ते; बेसवु ते (ऋतुनु) (५) वलण; लगनी (६) वर्तन, वर्तणूक (७) धंधो; कामकाज (८) उपयोग; प्रचार (९) कर्ममय जीवन ('निवृत्ति'थी ऊलटु) (१०) समाचार; खबर [न इच्छतुं

प्रवृत्तिपराङ्मुख वि० समाचार आपवा

प्रवृद्ध वि० वधेलुं; विकसेलुं (२) पूर्ण; ऊंडु (३) तुमाखीभर्युं

प्रवृद्धि स्त्री० वृद्धि; विकास (२) समृद्धि

प्रवेक वि० उत्तम; श्रेष्ठ

प्रवेग पु० मोटो वेग
प्रवेण वि० अमुक खास जातनी बकरीनु
प्रवेणि (–णी) स्त्री० वेणी (२) (पतिना वियोगमा) गूथ्या वगरनी वेणी (३) हाथीनी पीठ उपर नाखवानी झूल
प्रवेदित वि० जणावेलु
प्रवेरित वि० आमतेम फेंकेलु के वेरेलु
प्रवेश पु० दाखल थवु ते, पेसवु ते (२) रगभूमि उपर आववु ते (३) बारणु; द्वार (४) लगनी, खत
प्रवेशक पु० वचगाळामा बनी गयेली घटना सूचववा बे अकोनी वचमा गौण पात्रोनो प्रवेश (प्रथम अकना आरभे के छेल्ला अकने अते न होय)
प्रवेशित वि० दाखल करेलु (२) नीमेलु (३) (अमुक स्थितिमां) नाखेलु (४) –नी समक्ष रजू करेलु
प्रवेश्य वि० दाखल करवा योग्य (२) –मा पेसवा के व्यापवा योग्य (३) वगाडवा योग्य (वाजित्र)
प्रव्यथ् १ आ० व्यथा पामवी (२) बीवु
प्रव्रज् १ प० देशनिकाल थवु (२) सन्यास लेवो, भिक्षु बनवु
प्रव्रजित वि० देशनिकाल थयेलु (२) सन्यासी थयेलु (३) पु० भिक्षु (बौद्ध के जैन (४) सन्यासी, तपस्वी
प्रव्रज्य न०, **प्रव्रज्या** स्त्री० बहार विचरवु – भटकवु ते (२) सन्यासी के भिक्षु तरीके विचरवु ते (३) सन्यास
प्रव्राज्, प्रव्राजक पु० सन्यासी
प्रशम् ४ प० [प्रशाम्यति] शात थवु, शात पडवु (२) अटकवु; बध पडवु (३) छीपवु, बुझावु (४) क्षीण थवु –प्रेरक० सात्वन पमाडवु, शात पाडवु (२) ठारी देवु, बुझावी देवु (३) अत लाववो (४) हराववु (५) रुझाववु, मटाडवु
प्रशम पु० शाति, स्वस्थता (२) विश्रांति (३) निवृत्ति, अत; नाश (४) सात्वना
प्रशमन वि० शात पाडनारु, शमावनारु (२) न० शात पाडवु ते, शमाववु ते (३) मटाडवु के रुझाववु ते (४) निवृत्ति, अत (५) सुरक्षित करवु ते
प्रशमित वि० शात थयेलु, शात पाडेलु (२) बुझावेलु (३) धोई काढेलु, प्रायश्चित्त करेलु
प्रशस्त वि० वखाणेलु (२) वखाणवा योग्य (३) उत्तम, श्रेष्ठ (४) शुभ, भद्र
प्रशस्ति स्त्री० स्तुति, वखाण, प्रशसा (२) कोईनी प्रशसा माटे लखातु काव्य
प्रशस्य वि० प्रशसा करवा योग्य
प्रशंस् १ प० प्रशसा करवी (२) जाहेर करवु (३) भविष्य भाखवु
प्रशंसनीय वि० वखाणवा योग्य
प्रशंसा स्त्री० स्तुति, वखाण (२) कीर्ति
प्रशाखा, प्रशाखिका स्त्री० डाळखी
प्रशास् २ प० शीखववु (२) हुकम करवो (३) शासन करवु (४) शिक्षा करवी (५) २ आ० प्रार्थवु, मागवु
प्रशासक पु० शासनकर्ता (२) गुरु
प्रशासन न० राज्य; अमल, शासन
प्रशासितृ, प्रशास्तृ पु० राज्यकर्ता, हाकेम (२) सलाहकार, निदर्शक
प्रशांत वि० शात थयेलु, शात पाडेलु (२) नीरव, गभीर (३) ताबे थयेलु (४) समाप्त (५) मृत (६) दूर थयेलु
प्रशांतबाध वि० बधा विघ्नो दूर थया होय तेवु
[चित्तवाळु
प्रशांतात्मन् वि० शमयुक्त के शात
प्रशिथिल वि० घणु ढीलु, धीमु के झाखु
प्रशिष्य पु० शिष्यनो शिष्य
प्रश्चोतन, प्रश्च्योतन न० झमवु ते, टपकवु ते, छटकाव
प्रश्न पु० सवाल, पूछपरछ (२) चर्चानो मुद्दो (३) उकेलवा माटेनो कोयडो (४) भविष्य जाणवा करातो पूछपरछ
प्रश्रय पु०, **प्रश्रयण** न० विनय, आदरभाव (२) स्नेह (३) आश्रय

प्रश्रित वि० नम्र, विनयी
प्रश्लेष पु० गाढ संबंध के आलिंगन
प्रश्वास पु० श्वास लेवो ते
प्रष्ठ वि० अग्रेसर, मुखियो, आगेवान
प्रसकल वि० खूब भरावदार
प्रसक्त वि० आसक्त, वळगेलु (२) चोटेलु (३) लगनीवाळु (४) नजीकनु (५) सतत, अखंड
प्रसक्तम् अ० सतत, चालु
प्रसक्ति स्त्री० आसक्ति (२) संबंध (३) लागु पडवु ते (४) खंत, प्रयत्न (५) प्राप्ति
प्रसत्ति स्त्री० कृपा, प्रसन्नता (२) निर्मळता; पारदर्शकता
प्रसद् १ प० [प्रसीदति] प्रसन्न थवु, खुश थवु (२) संतुष्ट थवु, शांत थवु (३) स्वच्छ थवु, निर्मळ थवु (४) सफळ थवु
प्रसन्न वि० स्वच्छ, निर्मळ (२) खुश, संतुष्ट (३) कृपावंत (४) स्पष्ट समजाय तेवु (५) साचु, खरु [लगभग साचु
प्रसन्नकल्प वि० लगभग शांत थयेलु (२)
प्रसन्नसलिल वि० स्वच्छ जळवाळु
प्रसन्ना स्त्री० मदिरा; दारू [पु० विष्णु
प्रसन्नात्मन् वि० कृपावंत, खुश थयेलु (२)
प्रसन्नेरा स्त्री० एक जातनी मदिरा
प्रसभ पु० जुलम, बळात्कार
प्रसभदमन न० बळात्कारे दमन करवु ते
प्रसभम् अ० बळात्कारे, जोरजुलमथी (२) अत्यंत (३) अनुचितपणे
प्रसर पु० आगळ वधवु के धपवु ते (२) निर्विघ्न गति (३) विस्तृत थवु ते (४) कद, जथ्थो (५) प्रवाह, पूर (६) अवकाश, तक (७) गोचर, क्षेत्र (आखनु)
प्रसरण न० दोडी जवु ते (२) नासी जवु ते (३) फेलावु ते [सरकतु
प्रसर्पिन् वि० आगळ वधतु, फेलातु (२)
प्रसव पु० जन्म आपवो ते, प्रसूति (२) संतति; फरजंद (३) जन्मस्थान; उत्पत्तिस्थान (५) फूल (६) फळ, परिणाम
प्रसवन न० बाळकने जन्म आपवो ते
प्रसवबंधन न० फूल-फळनु डीटु
प्रसववेदना स्त्री० प्रसव वखतनी पीडा
प्रसवंती स्त्री० प्रसव आपती स्त्री
प्रसवितृ पु० पिता
प्रसवित्री स्त्री० जननी; माता
प्रसवोन्मुख वि० प्रसूति के सुवावडनी तैयारीमा होय तेवु
प्रसव्य वि० ऊलटु (२) डाबी बाजु वळेलु के फरेलु (३) अनुकूळ
प्रसह् १ आ० सहन करवु (२) सामनो करवो (३) प्रयत्न करवो (४) हिंमत करवी, शक्तिमान थवु
प्रसह्य अ० बळात्कारे; जोरजुलमथी (२) अत्यंत (३) जीतीने (४) एकदम, तरत ज (५) अवश्य
प्रसंख्यान पु० भरपाई करवु ते (रकम) (२) न० गणतरी (३) चिंतन; मनन (४) कीर्ति, ख्याति
प्रसंग पु० आसक्ति, प्रीति (२) संबंध, समागम (३) व्यभिचार (४) –मा लागु रहेवु ते (५) बनाव, घटना (६) परिणाम आवी पडवु ते
प्रसंगवशात् अ० संयोगवशात्
प्रसंगिता स्त्री० आसक्ति, लगनी
प्रसंगिन् वि० आसक्त, संबद्ध (२) प्रासंगिक, कोईक वार बनतु (३) गौण
प्रसंज् १ प० [प्रसजति] आसक्त थवु –कर्मणि० चोटवु, वळगवु (२) परिणामरूपे आवी पडवु, प्रसंग आववो
प्रसंजित वि० बनावेलु; अस्तित्वमा आणेलु
प्रसंदान न० दोरडु, बंधन
प्रसाद पु० कृपा (२) शांति; स्वस्थता (३) निर्मळता (४) देव वगेरेने अर्पण करेलु भोजन (५) बक्षिस, भेट
प्रसादक वि० निर्मळ करनारु (२) शांत पाडनारु (३) खुश करनारु
प्रसादपराङ्मुख वि० कोईनी कृपा न

इच्छतु (२) कृपा पाछी खेंची लीधी होय तेवु
प्रसादिन् वि० जुओ 'प्रसादक'
प्रसाध् –प्रेरक० प्राप्त करवु (२) तावे करवु (३) सिद्ध करवु (४) आगळ धपाववु (५) शणगारवु; पहेराववु
प्रसाधक पु० मालिकने अलकार पहेरावनार सेवक
प्रसाधन न० साधवु के सिद्ध करवु ते (२) गोठववु ते (३) शणगारवु ते (४) शणगार (५) पु०, न० कासको
प्रसाधनविशेष पु० उत्तम शणगार
प्रसाधनी स्त्री० कासकी
प्रसाधिका स्त्री० राणी वगेरेने शणगार पहेरावनार स्त्री
प्रसाध्य वि० साधवा के सिद्ध करवा योग्य (२) सपादन करवा लायक (३) वश करवा योग्य
प्रसार पु० फेलावो, फेलावु ते (२) वेपारीनी दुकान – हाट
प्रसारित वि० फेलावेलु, विस्तारेलु (२) बहार मूकेलु, खुल्लु करेलु (वेचवा माटे)　[तेवु (साप)
प्रसारितभोग वि० फणा फेलावी होय
प्रसित वि० सीवेलु, जोडेलु (२) लगनी वाळु, लागेलु, मचेलु (३) तलपतु (४) अत्यत स्वच्छ (५) न० परु, पाच
प्रसिद्ध वि० जाणीतु, प्रख्यात (२) शणगारेलु (३) उत्तम
प्रसिद्धि स्त्री० ख्याति (२) सफळता, सिद्धि (३) शणगार
प्रसिध् ४ प० सिद्ध थवु, मळवु (२) सफळ थवु (३) प्रसिद्ध थवु (४) साबित थवु (५) शणगारावु　[जन्म आपवो
प्रसु १ प०, २, ४ आ० प्रसव करवो,
प्रसुप्त वि० गाढ निद्रामा पडेलु
प्रसू १ प०, २, ४ आ० जुओ 'प्रसु' (२) ६ प० फेंकवु (३) प्रेरवु
प्रसू वि० प्रसव करनारु, जन्म आपनारु (२) स्त्री० माता
प्रसूत वि० जन्मावेलु, उत्पन्न करेलु
प्रसूति स्त्री० जन्म आपवो ते (२) ईंडा मूकवां ते (३) जन्म; उत्पत्ति (४) प्रगट थवु ते, बेसवु ते (फूल इ०) (५) सतति (६) उत्पादक, पेदा करनार (७) मा (८) कारण　[कळी
प्रसून वि० पेदा थयेलु (२) न० फूल (३)
प्रसूनबाण पु० कामदेव, मदन
प्रसृ १ प० वहेवु, नीकळवु, ऊगम थवो (२) आगळ वधवु (३) फेलावु, व्यापवु (४) लावु थवु (जेम के हाथ) (५) वृत्ति थवी; वलण थवु (६) आरभ थवो, प्रवर्तवु (६) दृढ के गाढु थवु
प्रसृज् ६ प० त्याग करवो; छूटु करवु (२) वाववु, वेरवु (३) छोडवु, फेंकवु
प्रसृत वि० आगळ गयेलु (२) फेलावेलु; लबावेलु (३) फेलायेलु (४)–मा लागेलु; निष्ठावान, आसक्त (५) झडपी (६) प्रगट करेलु के थयेलु (७) सूक्ष्म अर्थ जाणनारु (८) राघेलु, तैयार थयेलु (९) पु० अजलि वाळी लाबो करेलो हाथ (१०) न० फूटी नीकळेलु ते, घास, छोड इ० (११) खेतीवाडी
प्रसृतज पु० परस्त्रीथी थयेलो पुत्र
प्रसृति स्त्री० प्रगति, आगळ वधवु ते (२) वहेवु ते (३) अजलि वाळी लाबो करेलो हाथ (४) खोबा जेटलु माप (५) झडप, वेग
प्रसृत्वर वि० फेलातु, प्रसरतु
प्रसृप् १ प० आगळ वधवु (२) फेलावु (३) सरकवु, सरवु (४) चोतरफथी आवी पडवु (जेम के अधारु)
प्रसृमर वि० प्रसरतु, नीकळतु
प्रसेक पु० झरवु के टपकवु ते (२) सीचवु के छाटवु ते
प्रस्कन्न वि० हुमलो करेलु के करायेलु (२) हरावेलु (३) पडी गयेलु, खोवायेलुं

प्रस्कंद् १ प० कूदी पडवु (२) हुमलो करवो
प्रस्कंदिका स्त्री० सग्रहणी (रोग)
प्रस्कुंद पु० चक्राकार वेदी
प्रस्खल् १ प० हडसेला खावा, धक्का वागवा (२) ठोकर खावी, लथडियु खावु
प्रस्तर पु० पादडा फूल वगेरेनी शय्या (२) पथारी (३) सपाटी (४) पथ्थर, शिला (५) दर्भनी एक मूठी (६) ग्रथनो भाग, फकरो
प्रस्तार पु० पादडा फूल वगेरेनी शय्या (२) पथारी (३) सपाटी (४) झाडी (५) घाट, ओवारो
प्रस्ताव पु० आरभ (२) प्रस्तावना (३) उल्लेख (४) प्रसग, अवसर (५) चालु मुद्दो, प्रकरण (६) प्रारभिक स्तवन
प्रस्तावना स्त्री० स्तुति, वखाण (२) आरभ, शरूआत (३) उपोद्घात
प्रस्तावसदृश वि० प्रसगने छाजे तेवु
प्रस्तावे अ० योग्य प्रसगे
प्रस्तावेन अ० योग्य प्रसगे, योग्य समये (२) प्रसगवशात्, कोईक प्रसगे
प्रस्तु २ उ० स्तुति करवी, वखाणवु (२) प्रारभ करवो (३) उत्पन्न करवु (४) कहेवु, प्रतिपादन करवु
प्रस्तुत वि० स्तुति करेलु, वखाणेलु (२) आरभेलु (३) सिद्ध करेलु, तैयार (४) बनेलु (घटना) (५) प्रासगिक, उपाडेलु (वातचीतना मुद्दारूपे)
प्रस्थ वि० जतु, रहेवा जतु (२) मुसाफरीए नीकळतु (३) दृढ, स्थिर (४) पु०, न० सपाट मेदान (५) पर्वतनी टोच (६) एक माप (३२ पल जेटलु) (७) तेटला वजननु जे कई ते
प्रस्था १ आ० [प्रतिष्ठते] प्रयाण करवु; जवा नीकळवु (२) तरफ जवु के आगळ धपवु (३) चालवु, खसवु
—प्रेरक० विदाय आपवी (२) काढी मूकवु (३) धकेलवु
प्रस्थान न० जवा नीकळवु ते (२) आगमन (३) मोकली देवु ते (४) सरघस (५) लश्करनी कूच (६) मृत्यु (७) पथ, सप्रदाय (८) भिक्षाव्रत
प्रस्थानत्रय न०, **प्रस्थानत्रयी** स्त्री० भगवद्गीता, उपनिषदो अने ब्रह्मसूत्र —ए त्रणनो समुदाय
प्रस्थापन न० मोकलवु, वळाववु के विदाय करवु ते (२) साबित करवु ते (३) उपयोग करवो ते
प्रस्थापनीय वि० मोकलवा योग्य, [वळाववा योग्य
प्रस्थापित वि० मोकलेलु, वळावेलु (२) स्थापित करेलु (३) प्रेरेलु, धकेलेलु (४) ऊजवेलु (उजाणी इ०)
प्रस्थायिन् वि० विदाय थतु, जतु, मुसाफरी के कूच करतु
प्रस्थित वि० मुसाफरीए नीकळेलु के ऊपडेलु (२) मृत (३) निर्मायेलु (४) न० विदाय थवु ते
प्रस्थिति स्त्री० विदाय (२) मुसाफरी
प्रस्नव पु० झरवु के झमवु ते (२) प्रवाह; धारा (जेमके दूधनी) (३) ब० व० आसु (४) पेसाब
प्रस्निग्ध वि० चीकणु, तेलवाळु (२) [नरम, कोमळ
प्रस्नु २ प० रेडवु (२) टपकवु, झमवु (३) २ आ० दूध आपवु
प्रस्नुत वि० झमतु, झरतु (२) आपतु
प्रस्नुतस्तनी वि० स्त्री० जेना स्तनमाथी (वात्सल्यने कारणे) दूध झमे छे तेवी
प्रस्नुषा स्त्री० पौत्रवधू
प्रस्फुट् १० उ० चीरवु, फाडवु (२) ऊघडवु, खूलवु (३) ताळी पाडवी
प्रस्फुट वि० खीलेलु (२) खुल्लु, जाहेर (३) स्पष्ट, उघाडु
प्रस्फुर् ६ प० स्फुरवु, ध्रूजवु (२) पहोळु थवु, प्रसरवु (३) दूर सुधी फेलावु
प्रस्फुरित वि० हालतु, कपतु
प्रस्मृति स्त्री० विस्मृति

प्रस्यंद् १ आ० झरवु (२) वहेवु (३) दोडी जवु [के वहेवु ते

प्रस्यंद पु०, **प्रस्यंदन** न० झरवु, टपकवु

प्रस्यंदिन् वि० आसु रेलावतु

प्रस्रव पु० झरवु, जोरथी नीकळवु के वहेवु ते (२) प्रवाह, वहेण (३) आचळ के स्तनमाथी नीकळतु दूध (४) पेसाव (५) पु० ब० व० रेलाता आसु

प्रस्रवण न० झरवु, वहेवु के नीकळवु ते (२) दूध वहेवु ते (स्तन के आचळमाथी) (३) धोध (४) झरो; फुवारो (५) पु० एक पर्वत ('जनस्थान'मा आवेलो)

प्रस्रविन् वि० रेलावतु (२) दूध आपतु

प्रस्राव पु० झमवु के वहेवु ते (२) पेसाब

प्रस्रु १ प० झरवु, जोसथी नीकळवु (२) रेलाववु, वहेवा देवु

प्रस्रुत वि० झरेलु, टपकेलु; नीकळेलु

प्रस्वन पु० मोटो अवाज

प्रस्वाप पु० ऊघ (२) स्वप्न (३) एक अस्त्र (ऊघमा नाखनारु)

प्रस्वापन वि० ऊघमा नाखनारु (२) न० तेवी शक्ति धरावतु अस्त्र

प्रस्विन्न वि० खूब परसेवो थयो होय तेवु

प्रस्वेद पु० अतिशय परसेवो

प्रहत वि० घायल करेलु, हणेलु (२) वगाडेलु (ढोल) (३) पराभव पमाडेलु

प्रहति स्त्री० प्रहार, घा

प्रहन् २ प० हणवु, वध करवो (२) मारवु, प्रहार करवो (३) वगाडवु (ढोल)

प्रहर पु० आखा दिवसनो आठमो भाग (त्रण कलाक), पहोर

प्रहरक पु० पहोर (२) पहेरो

प्रहरण न० प्रहार करवो ते (२) फेकवु ते (३) दूर करवु ते, काढी मूकवु ते (४) शस्त्र, अस्त्र (५) युद्ध, लडाई

प्रहरत् पु० योद्धो

प्रहरिन् पु० पहेरेगीर

प्रहर्तृ वि० प्रहार के हुमलो करनारु (२) लडनारु (३) बाण फेकनारु

प्रहर्ष पु० अतिशय आनद के हर्ष

प्रहर्षण न० अतिशय हर्ष पमाडनार ते (२) इच्छित वस्तु प्राप्त थवी ते

प्रहस् १ प० खडखडाट हसवु (२) हासी करवी (३) आनदमा आववु

प्रहसन न० खडखडाट हसवु ते (२) हासी; मश्करी (३) हासीप्रधान नाटक, फारस

प्रहसित वि० खूब हसेलु, खडखडाट हसतु (२) न० हास्य

प्रहा ३ प० त्यागवु, तजवु (२) छोडवु; फेकवु (३) –माथी विदाय थवु

प्रहाण न० त्याग (२) ध्यान

प्रहाणि स्त्री० हानि, नाश, अभाव

प्रहापण न० त्याग (२) विदाय

प्रहार पु० मारवु ते, घा करवो ते (२) युद्ध, रणसग्राम

प्रहास पु० अट्टहास (२) हासी, मजाक (३) नर्तक, नट (४) शिव (५) देखाव (६) रगोनी शोभा

प्रहासिन् वि० हसावनारु (२) हासी करनारु (३) –नी साथे हसतु (४) प्रकाशित

प्रहि ५ प० मोकलवु (२) फेकवु (३) –नी तरफ आख वाळवी

प्रहित वि० मूकेलु (२) फेलावेलु, लवावेलु (३) मोकलेलु, फेंकेलु (४) काढी मूकेलु [न० हानि, नाश

प्रहीण वि० छोडी दीधेलु, तजेलु (२)

प्रहृ १ प० प्रहार करवो (२) घा करवो (३) हुमलो करवो (४) फेंकवु, मारवु

प्रहृत वि० प्रहार करेलु (२) न० प्रहार

प्रहृष् ४ प० आनद थवो, हर्षित थवु (२) रोमाच थवो [थयेलु

प्रहृष्ट वि० हर्ष पामेलु (२) रोमाचित

प्रहेला स्त्री० रमतियाळपणु, स्वच्छद

प्रहेलिका स्त्री० कोयडो, समस्या

प्रह्लाद् १ आ० अति आनदमा आवी जवु

प्रह्लाद पु० अत्यत आनद (२) अवाज (३) हिरण्यकशिपुनो भक्त पुत्र

प्रह्लादक(–न) वि० हर्ष उपजावनारु
प्रह्व वि० ढाळवाळु, नमेलु(२)नीचु वळेलु(३)नम्र, विनयी(४)आसक्त
प्रह्वयति प० (नमाववु, ताबे करवु)
प्रह्वांजलि वि० कपाळे बने हाथ जोडीने नमन करतु (आदर बताववा)
प्रा २ प० भरवु, पूरवु
प्राक् अ० पहेला, अगाउ, पूर्वे(२) पहेलेथी ज(३)पूर्व दिशामा(४)सामे (५) सुधी (६) सवारे
प्राकट्य न० प्रगट थवु ते(२) प्रसिद्धि
प्राकरणिक वि० प्रस्तुत, जे प्रकरण ऊपडचु होय तेने लगतु
प्राकाम्य न० मरजी मुजब वर्तवु ते(२) स्वच्छंदीपणु(३)ते नामनी एक सिद्धि
प्राकार पु० भीत, वाड(२)किल्लो
प्राकारस्थ वि० बुरज उपरथी लडनारु
प्राकाश्य न० जाहेरात (२) प्रसिद्धि (३)चळकाट
प्राकृत वि० कुदरती, सहज, अकृत्रिम (२) सामान्य (३) सस्कार विनानु; अशिक्षित(४)तुच्छ, अगत्यनु नहि तेवु(५)प्रकृति सबधी(६)देशी के गामठी (भाषा) (७) पु० सामान्य पामर माणस(८)न० देशी के गामठी भाषा(९)पाछो प्रलय (प्रकृतिमा)
प्राकृतिक वि० कुदरती, स्वाभाविक
प्राक्कर्मन् न० पूर्वजन्ममा करेलु कर्म(२) प्रारभमा करवानु कार्य
प्राक्कृत न० पूर्वजन्ममा करेलु कर्म
प्राक्तन वि० पहेलानु, पूर्वनु(२)प्राचीन (३)पूर्वजन्मनु(४)न० दैव, भाग्य
प्राक्तनकर्मन् न० पूर्वजन्ममा करेलु कर्म
प्राक्तनजन्मन् न० पूर्वजन्म
प्राखर्य न० तीक्ष्णता, धार(२)तीव्रता, प्रखरता(३)दुष्टता(४)उत्साह
प्रागनुराग पु० पहेलांनो प्रेम
प्रागल्भ्य न० हिंमत, विश्वास(२)गर्व, तुमाखी (३) कुशळता (४) विकास, परिपक्वता(५)प्रागटच, देखाव(६) वक्तृता(७)दृढनिश्चयीपणु
प्रागवस्था स्त्री० पहेलानी अवस्था
प्रागुत्तर, प्रागुदंच् वि० उत्तर-पूर्वनु
प्राग्जन्मन् न०, **प्राग्जाति** स्त्री० पूर्वजन्म
प्राग्ज्योति पु० कामरूप देश
प्राग्भव पु० पूर्वजन्म
प्राग्भार पु० पर्वतनु शिखर (२) आगलो के छेडानो भाग(३)मोटो जथो
प्राग्रसर वि० अग्रेसर, आगेवान
प्राग्रहर वि० मुख्य, प्रधान
प्राग्र्य वि० मुख्य, श्रेष्ठ
प्राग्वचन न० पहेलाना ऋषिओए कहेलु के ठरावेलु ते
प्राग्वंश पु० पूर्ववश के पेढी (२) जेना थांभला पूर्वदिशाभिमुख होय तेवु यज्ञस्थान (३) यजमानना सगासबधी जेमा बेसे ते ओरडो
प्राग्वृत्त न० पहेलानु वर्तन
प्राग्वृत्तात पु० पहेलानी घटना के बनाव
प्राघुण, प्राघुणक, प्राघुणिक, प्राघूर्ण, प्राघूर्णिक पु० महेमान, अतिथि
प्राघूर्णिका स्त्री० आतिथ्य, सत्कार
प्राङ्मुख वि० पूर्व तरफ मोवाळु(२) –नी इच्छावाळु, –ना वलणवाळु
प्राच् वि० जुओ 'प्राच्'
प्राचंड्य न० प्रचडता
प्राचीन वि० पूर्व तरफनु (२)पहेलानु, अगाउनु(३)जूनु, पुराणु(४)पु० न० पूर्व तरफनो प्रदेश
प्राचीनबर्हिस् पु० इद्र
प्राचीमूल न० पूर्व दिशा तरफनु क्षितिज
प्राचीर न० वाड, कोट
प्राचुर्य न० प्रचुरता, पुष्कळपणु
प्राचेतस पु० मनु(२)दक्ष(३)वाल्मीकि
प्राच्य वि० सामेनु(२)पूर्व तरफनु(३) आगळनु(४)प्राचीन

प्राछ् वि० पूछतु, तपास करतु
प्राजन पु०, न० परोणो, चाबुक
प्राजापत्य वि० प्रजापति (ब्रह्मा) सबंधी (२) प्रजापतिथी जन्मेलु (३) पु० आठ विवाहप्रकारोमानो एक (जेमा कन्यानो पिता वर पासेथी कशु लीधा विना कन्यादान करे छे)
प्राज्ञ वि० प्रज्ञावान, बुद्धिशाळी (२) डाह्यु, शाणु (३) पु० डाह्यो के विद्वान माणस (४) जीव-चेतन (५) परब्रह्म
प्राज्य वि० घणु, अतिशय, पुष्कळ (२) मोटु (३) महत्त्वनु, ऊचु
प्राड्विवाक पु० न्यायाधीश
प्राण् २ प० श्वास लेवो (२) जीववु
प्राण पु० श्वास (२) जीवनशक्ति (३) देहमा रहेला पाच प्राणवायु (व०व०, प्राण-अपान-समान-व्यान-उदान) (४) वायु (५) सत्त्व, वळ (६) जीव (७) परमात्मा (८) इद्रिय (९) प्राण समान प्रिय जे काई होय ते (१०) जीवन (११) अन्न
प्राणकर्मन् न० प्राणोनु कार्य
प्राणघातक वि० प्राणनो नाश करनारु
प्राणत्याग पु० आत्महत्या (२) मोत
प्राणदक्षिणा स्त्री० जीवतदान
प्राणदयित पु० पति
प्राणदान न० बीजाने माटे प्राण अर्पण करवा ते (२) जीवतदान
प्राणदायक वि० जुओ 'प्राणप्रद'
प्राणद्रोह पु० प्राण लेवा ताकवु ते
प्राणधारण न० जीवननिर्वाह (२) तेनु साधन (३) जीवनशक्ति
प्राणपति पु० प्रियतम (२) पति (३) जीव (४) वैद्य [तेवु
प्राणपरिक्षीण वि० मृत्यु नजीक होय
प्राणपरिग्रह पु० जीवन, अस्तित्व
प्राणप्रद वि० सजीवन करनारु (२) जीव बचावनारु
प्राणप्रिय पु० पति (२) प्रियतम
प्राणभृत् वि० प्राणधारी (२) पु० प्राणी
प्राणमोक्षण न० मृत्यु (२) आपघात
प्राणयात्रा स्त्री० जीवननिर्वाह
प्राणवत् वि० प्राणयुक्त, जीवतु (२) बळवान, शक्तिशाळी
प्राणवल्लभा स्त्री० पत्नी (२) प्रियतमा
प्राणसमा स्त्री० पत्नी [जोखम
प्राणसदेह पु० जीवनु जोखम, मोटु
प्राणसार वि० प्राणवान, सवळ
प्राणहर, प्राणहारिन् वि० प्राण हर-नारु, घातक
प्राणाघात पु० हिसा
प्राणातिपात पु० प्राणवध, हिंसा
प्राणात्यय पु० जीव जवो ते, मृत्यु
प्राणायाम पु० श्वासने रोकवो ते (एक योग-प्रक्रिया)
प्राणातिक वि० प्राणघातक, मारक (२) मरता सुधीनु, जीवन साथे पूरू थाय तेवु (३) न० खून [सजीव प्राणी
प्राणिन् वि० प्राणवाळु, सजीव (२) पु०
प्राणेश पु० पति (२) प्रियतम
प्राणेशा स्त्री० पत्नी (२) प्रियतमा
प्राणेश्वर पु० जुओ 'प्राणेश'
प्राणेश्वरी स्त्री० जुओ 'प्राणेशा'
प्रातर् अ० सवारे (२) बीजे दिवसे सवारे
प्रातराश पु० सवारे करातो नास्तो
प्रातस्तराम् अ० वहेली सवारे
प्रातस्त्य वि० वहेली सवारनु
प्रात:काल पु० प्रभातनो समय, परोढ
प्रात:प्रहर पु० दिवसनो पहेलो पहोर
प्रातिकामिन् पु० दास के दूत
प्रातिपक्ष वि० विरोधी, ऊलटु (२) दुश्मनावटभर्यु, वेरी
प्रातिपक्ष्य न० वेर, दुश्मनावट
प्रातिपौरुषिक वि० वधा पुरुपोने सामान्य एवु (२) पुरुपार्थ के पराक्रम सबधी [ज्ञान
प्रातिभ न० प्रतिभाथी थतु साहजिक

प्रातिभाव्य न० जामीन(२)विरोध
प्रातिलोम्य न० प्रतिलोमपणु, ऊलटो क्रम(२)दुश्मनावट
प्रातिवेशिक, प्रातिवेश्य पु० पडोशी
प्रात्यक्षिक वि० प्रत्यक्ष जोई के जाणी शकाय एवु
प्राथमिक वि० प्रथम, पहेलु
प्रादक्षिण्य न० प्रदक्षिणा करवी ते
प्रादुरस् (प्रादुस्+अस्) २ प० प्रगट थवु
प्रादुर्भाव पु० अस्तित्वमा आववु ते(२) प्रगट थवु ते
प्रादुर्भू १ प० प्रगट थवु
प्रादुर्भूत वि० प्रगट थयेलु
प्रादुष्करण न० प्रगट थवु के करवु ते
प्रादुस् अ० प्रगट होय तेम, देखाय तेम
प्रादेश पु०,न० अगूठा अने तर्जनी वच्चेना अतर जेटलु माप
प्रादेशमात्र वि० थोडुक ज, नमूना जेटलु
प्रादेशिक वि० प्रदेशमा ज मर्यादित एवु
प्रादोष, प्रादोषिक वि० साज सबधी
प्राधनिक न० विनाशक हथियार
प्राधान्य वि० मुख्य होवापणु;अग्रेसरपणु
प्राधीत वि० सारी रीते भणेलु
प्राध्व वि० दूरनु(२)पु० लाबो मार्ग
प्राध्वम् अ० अनुकूळ होय तेम
प्राप् (प्र+आप्) ५ प० मेळववु, पामवु (२) पहोचवु (३) लबावु, विस्तरवु –प्रेरक० पहोचाडवु, पमाडवु
प्राप वि० पहोचतु, मळतु
प्रापक वि० पहोचाडनारु, पमाडनारु (२)प्राप्त करनारु
प्रापण न० पहोचवु ते, पामवु ते(२) पहोचाडवु के पमाडवु ते
प्रापणिक पु० वेपारी, सोदागर
प्रापिपयिषु वि० पहोचे के पामे एम करवा इच्छतु
प्राप्त('प्राप्'नु भू० कृ०)वि० पामेलु; पहोचेलु (२) मेळवेलु (३) जडेलु, मळेलु (४) वेठेलु, सहन करेलु (५) हाजर, आवेलु
प्राप्तकाल पु० योग्य अवसर
प्राप्तकालम् अ० योग्य अवसरे
प्राप्तक्रम वि० अनुकूळ, उचित
प्राप्तजीवन वि० फरी सजीवन थयेलु
प्राप्तदोष वि० दोषी; अपराधी
प्राप्तप्रसव वि० प्रसव थयो होय तेवु(२) प्रसवकाळ नजीक आव्यो होय तेवु
प्राप्तबीज वि० बीज वाववामा आव्यु होय तेवु
प्राप्तरूप वि० सुदर; देखावडु (२) पडित, शाणु(३)योग्य; लायक
प्राप्तव्य वि० प्राप्त करवा योग्य(२) पहोचवा योग्य, पहोची शकाय तेवु (३) योग्य, लायक
प्राप्तश्री वि० (बीजाने आधारे) जेणे वैभव मेळव्यो होय तेवु
प्राप्तार्थ वि० इच्छित वस्तु प्राप्त करी होय तेवु
प्राप्तावसर वि० जेने योग्य तक मळी [होय तेवु
प्राप्ति स्त्री० मेळववु ते, पामवु ते(२) पहोचवु ते(३)मळवु ते(४)गोचर, क्षेत्र(५)पूर्वकर्मनु फळ(६)नसीब
प्राप्य वि० जुओ 'प्राप्तव्य'
प्राप्यरूप वि० सहेलाईथी मेळवी शकाय [तेवु
प्राबल्य न० जोर, बळ (२) मुख्यता, उत्तमता (३) प्रामाण्य
प्राबोधिक पु० प्रभात, परोढ(२)सवारे उचित गीतो द्वारा बीजाने जगाडनार
प्राभव न० उत्तमता, श्रेष्ठता
प्राभंजनि पु० हनुमान (२) भीमसेन
प्राभातिक वि० प्रभातनु
प्राभृत, प्राभृतक न० भेट, नजराणु
प्रामाणिक वि० प्रमाणभूत, शास्त्रसिद्ध
प्रामाण्य न० प्रमाणभूत होवापणु(२) साबिती, प्रमाण
प्रामोदक, प्रामोदिक वि० हर्षकारक, [मनोहर

प्राय पु० मृत्यु (२) उपवास वडे मोत लाववु ते (३) मोटो भाग, मोटो हिस्सो (४) पुष्कळता (५) [समासने अते नीचेना अर्थोमा वपराय छे लगभग, मोटे भागे (उदा० मृतप्राय); –थी भरपूर, पुष्कळ होय तेवु (उदा० कष्टप्राय), –ने मळतु (उदा० अमृतप्राय)]

प्रायण न० शरूआत, प्रारभ; प्रवेश (२) जीवननो मार्ग (३) जाणी जोईने मोत स्वीकारवु ते (४) आशरो, आश्रय

प्रायभव वि० सामान्यपणे बनतु

प्रायशस् अ० सामान्यपणे, मोटे भागे

प्रायश्चित्त न० पाप धोई काढवा करवामा आवता तप के विधि

प्रायस् अ० घणु करीने, सामान्य रीते (२) कदाच (३) पुष्कळ प्रमाणमा

प्रायाणिक, प्रायात्रिक वि० मुसाफरी माटे जरूरी के ऊपयोगी एवु

प्रायुध् ४ आ० युद्ध करवु

प्रायेण अ० घणु करीने, मोटे भागे (२) कदाच, सभवित होय तेम

प्रायोपगमन न० आमरणात उपवास

प्रायोपविष्ट वि० आमरणात उपवास करवा बेठेलु ['प्रायोपगमन'

प्रायोपवेश पु०, **प्रायोपवेशन** न० जुओ

प्रायोपवेशिन्, प्रायोपेत वि० जुओ 'प्रायोपविष्ट'

प्रारब्ध ('प्रारभ्'नु भू० कृ०) वि० आरभेलु (२) न० आरभेलु कार्य (३) नसीब, भाग्य

प्रारभ् १ आ० आरभवु

प्रारंभ पु० आरभ, शरूआत (२) प्रवृत्ति; आरभेलु कार्य

प्रार्थ् १० आ० विनती करवी, याचना करवी (२) लग्न माटे मागणी करवी (३) आकाक्षा राखवी (४) तपास करवी (५) हुमलो करवो, तूटी पडवु

प्रार्थक वि० प्रार्थना करनारु, इच्छनारु (२) पु० अरजदार

प्रार्थन न०, **प्रार्थना** स्त्री० याचना, मागणी (२) इच्छा (३) अरजी

प्रार्थयितृ पु० भिखारी, याचक (२) अरजदार, उमेदवार

प्रार्थित ('प्रार्थ्'नु भू० कृ०) वि० प्रार्थेलु, याचेलु (२) इच्छेलु (३) शत्रु वडे सामनो के हुमलो करायेलु

प्रार्थिन् वि० प्रार्थना, याचना के इच्छा करतु (२) हुमलो करतु

प्रालंब वि० लटकतु, झूलतु (२) न० छाती सुधी पहोचतो हार के माळा

प्रालेय न० बरफ, हिम

प्रालेयाद्रि पु० हिमालय

प्रावरण, प्रावरणीय न० उत्तरीय वस्त्र

प्रावार, प्रावारक पु० उत्तरीय वस्त्र

प्रावारिक पु० उत्तरीय वस्त्र बनावनार

प्रावीण्य न० कुशळता, निपुणता

प्रावृ ५ उ० पहेरवु (२) वीटी वळवु; घेरवु

प्रावृट्काल पु० वर्षाऋतु

प्रावृष् स्त्री० वर्षाकाळ [सबधी

प्रावृषेण्य वि० वर्षाऋतुमा थतु, वर्षाऋतु

प्रावेण्य न० सुवाळा ऊननी कामळी

प्रावेशिक वि० प्रवेश सबधी (२) प्रवेश माटे शुभ होय तेवु

प्राश् (प्र+अश्) ९ प० खावु (२) पीवु

प्राश पु० खावु ते, –खाईने जीववु ते (२) अन्न, भोजन

प्राशस्त्य न० प्रशस्त, उत्तम होवापणु

प्राशा स्त्री० तीव्र आशा, इच्छा

प्राश्निक पु० परीक्षक

प्रास पु० फेंकवु ते, छोडवु ते (२) एक जातनु अस्त्र [वखते नखाती)

प्रासंग पु० एक जातनी धूसरी (पलोटती

प्रासंगिक वि० गाढ सबधथी नीपजतु (२) सबद्ध, सकळायेलु (३) कोईक वखत होतु (हमेश जोवा न मळतु)

प्रासाद पु० महेल, हवेली (२) राजमहेल (३) देवालय (४) अगाशी
प्रासादगर्भ पु० महेलनी मध्यनो ओरडो; महेलनो सूवानो ओरडो
प्रासादतल न० महेलनी छत के अगाशी
प्रासादपृष्ठ पु० महेलनी टोचे आवेलु छजु के अगाशी
प्रासादशृंग न० महेल के मंदिरनी टोच
प्रासादिक वि० प्रसाद – कृपा रूपे मळेलु (२) मायाळु, मित्रताभर्युं (३) सुंदर
प्रास्ताविक वि० प्रस्तावना के उपोद्घात रूप (२) प्रस्तुत (३) प्रसंगोचित
प्रास्थानिक वि० प्रस्थान – प्रयाणना समयने लगतु (२) प्रयाण माटे उचित के अनुकूळ एवु
प्राह् (प्र + अह्) (परोक्ष भूतकाळनु रूप 'प्राह' ज वपराशमा छे) जाहेर करवु (२) बोलाववु
प्राहुण पु० अतिथि, परोणो
प्राह्ण पु० दिवसनो प्रथम प्रहर
प्रांग न० 'पणव' नामनु वाद्य
प्रांगण (–न) न० आंगणु, फळियु (२) माळ (घरनो)
प्राच् वि० आगळनु, सामेनु (२) पूर्व तरफनु (३) अगाउनु [सीधु, टटार
प्रांजल वि० प्रामाणिक, सरळ (२)
प्रांजलिन् वि० बे हाथ जोडचा होय तेवुं
प्रांत पु० छेडो, किनारी (२) खूणो (जेम के, आंखनो) (३) सीमा, हद (४) छेडो, अंत
प्रांतर न० निर्जन के वेरान रस्तो
प्रांतविरस वि० अंते – परिणामे रस विनानु नीवडनारु
प्रांतवृत्ति स्त्री० क्षितिज
प्रांशु वि० ऊंचु, उन्नत (२) लबायेलु, लांबु (३) पु० ऊंचो माणस
प्रांशुप्राकार वि० लांबी दीवालोवाळु
प्रिय वि० वहालु, मानीतु (२) अनुकूळ, प्रसन्न करे तेवु (३) –चाहतु होय तेवु (४) मोघु (५) पति, प्रीतम (६) न० प्रेम (७) अनुकूळ – मनगमतु ते (८) मनगमता समाचार (९) खुशी, प्रसन्नता
प्रियक पु० एक जातनु हरण (२) एक जातनो कदंब (नीप) (३) प्रियंगु लता (४) न० एक फूल ('असन' वृक्षनु)
प्रियकारक वि० प्रिय करनारु (२) मायाळुताथी वर्तनारु (३) मित्र, हितैषी
प्रियकारित्व न० मायाळुताथी वर्तवु ते
प्रियकारिन् वि० मायाळुताथी वर्तनारु
प्रियकी स्त्री० 'प्रियक' हरणनु चामडु
प्रियजन पु० वहालु माणस [एवो पति
प्रियजानि पु० पत्नी जेने अति प्रिय छे
प्रियजीविता स्त्री० जीवन प्रिय होवु ते
प्रियतम वि० सौथी अत्यंत प्रिय एवु (२) पु० पति, प्रीतम
प्रियतमा स्त्री० पत्नी, प्रिया
प्रियतर वि० वधु प्रिय (बेनी तुलनामा)
प्रियदर्श वि० देखवु गमे तेवु, मनोरम
प्रियदर्शन वि० जुओ 'प्रियदर्श' (२) न० प्रियजन जोवा मळवु ते
प्रियदर्शिन् वि० कृपादृष्टिथी जोनारु (२) पु० अशोक राजा
प्रियदेवन वि० द्यूतप्रिय
प्रियधन्व पु० शिव
प्रियनिवेदन न० सारा समाचार
प्रियप्रश्न पु० क्षेमकुशळ अंगे प्रश्न
प्रियप्राय वि० अत्यंत प्रेमाळ के मायाळु
प्रियभाव पु० प्रेमनी लागणी
प्रियम् अ० गमतु होय ते रीते
प्रियमंडन वि० शणगार जेने प्रिय छे तेवु
प्रियवक्तृ वि० खुशामतियु
प्रियवचन वि० प्रिय – मधुर बोलनारु (२) न० प्रिय लागे तेवी वाणी
प्रियवाच् स्त्री० मधुर वाणी
प्रियवादिन् वि० प्रिय लागे तेवु बोलनारु; खुशामतियु

प्रियसख पु० वहालो मित्र
प्रियसखी स्त्री० वहाली के विश्वासु सखी
प्रियसवास पु० प्रियजननो सहवास
प्रियसुहृद् पु० प्रिय मित्र, खास मित्र
प्रियस्वप्न वि० निद्रा जेने प्रिय छे तेवु
प्रियहित वि० हितकर तेम ज प्रिय
प्रियंकर वि० प्रेमाळ, मायाळु
प्रियंगु स्त्री० एक वेल (तेने स्त्रीना स्पर्शथी फूल बेसे छे) [वनेलु
प्रियंभविष्णु, प्रियंभावुक वि० प्रेमपात्र
प्रियंवद वि० प्रिय लागे तेवु बोलनारु (२) पु० एक पखी
प्रिया स्त्री० पत्नी, प्रियतमा (२) स्त्री (३) एक जातनु मद्य
प्रियाख्य वि० सारा समाचार कहेनारु
प्रियाख्यान, प्रियाख्यानिक न० सारा समाचार
प्रियातिथि वि० जेने अतिथि प्रिय छे तेवु
प्रियाधान न० प्रिय करवु ते
प्रियार्थम् अ० महेरबानी तरीके
प्रियार्ह वि० प्रेम अथवा मायाळुताने पात्र (२) मायाळु
प्रियाल पु० एक वृक्ष, 'पियाल'
प्रियेण अ० खुशीथी
प्रियोपभोग पु० प्रिय जने (पुरुषे के स्त्रीए) करेलो उपभोग
प्री ९ उ० खुश करवु (२) खुश थवु (३) स्नेह बताववो (४) राजी रहेवु (५) ४ आ० सतुष्ट थवु (६) —ना उपर प्रेम थवो, चाहवु (७) १ प०, १० उ० खुश करवु
प्रीणन वि० खुश करतु (२) न० खुश करवु ते (३) खुश करनार वस्तु
प्रीणित वि० खुश थयेलु, राजी थयेलु
प्रीत ('प्री'नु भू० कृ०) वि० प्रसन्न, खुश (२) राजी, आनदी (३) सतुष्ट, तृप्त (४) प्रिय (५) मायाळु
प्रीति स्त्री० खुशी, तृप्ति, आनद; सतोष (२) कृपा (३) प्रेम, ममता (४) रुचि, लगनी, व्यसन
प्रीतिदान न०, **प्रीतिदाय** पु० प्रेमथी आपेली भेट [आपेलु धन
प्रीतिधन न० प्रेम के मित्रताने कारणे
प्रीतिपूर्वकम्, प्रीतिपूर्वम् अ० प्रेमपूर्वक
प्रीतिप्रमुख वि० मायाळु, प्रेमभाववाळु
प्रीतिभाज् वि० प्रेमपात्र (२) सतुष्ट; खुश
प्रीतिमय वि० प्रेम के प्रीतिने कारणे उद्‌भवेलु (जेम के आसु)
प्रीतियुज् वि० प्रिय, वहालु
प्रीतिरसायन न० प्रेम रूपी आजण (२) प्रेम के आनद उत्पन्न करनार पेय
प्रीतिसंयोग पु० प्रेमनो सबध
प्रीतिस्निग्ध वि० प्रेमभीनु (आख)
प्रीत्या अ० प्रेमथी, प्रीतिपूर्वक (२) खुशीमा आवीने, खुशीथी
प्रे (प्र+इ) २ प० जवु, पहोचवु (२) विदाय थवु (३) मरण पामवु
प्रेक्ष् १ आ० जोवु, निहाळवु
प्रेक्षक पु० जोनारो (२) निरपेक्षपणे मात्र निहाळनार
प्रेक्षण न० जोवु ते, निहाळवु ते (२) देखाव, दृश्य (३) आख (४) जाहेर देखाव के प्रदर्शन (५) नाटकनी रजूआत
प्रेक्षणक न० देखाव, आभास
प्रेक्षणीय वि० जोवा योग्य, जोवु गमे तेवु (२) विचारवा योग्य
प्रेक्षणीयक न० देखाव, दृश्य
प्रेक्षा स्त्री० जोवु ते (२) देखाव (३) जाहेर दृश्य के रजूआत (नाटक इ० नी) (४) विचार, विचारणा (५) शोभा, रमणीयता [काम करनारु
प्रेक्षाकारिन् वि० डाह्यु, विचारीने
प्रेक्षागार न० नाट्यशाला, 'थियेटर' (२) सभागृह [भजवातु नाटक
प्रेक्षाप्रपच, प्रेक्षाविधि पु० रगभूमि उपर
प्रेक्षित ('प्रेक्ष्'नु भू०कृ०) वि० जोयेलु, निहाळेलु (२) न० दृष्टि, नजर

प्रेक्षिन् वि० जोतु, निहाळतु (२)–ना जेवी नजर के आखवाळु
प्रेत ('प्रे'नु० भू०कृ०) वि० मृत्यु पामेलु (२) पु० मृत्यु बाद शरीरथी छूटो थयेलो जीवात्मा (३) भूत, पिशाच (४) नरकनो निवासी जीव (५) पितृओ
प्रेतकर्म न० जुओ 'प्रेतकार्य'
प्रेतकाय पु० मडदु
प्रेतकार्य, प्रेतकृत्य न० मरण पामेलानी अग्निदाह वगेरे उत्तरक्रिया
प्रेतगोप पु० मृत लोकोनो रक्षक (यमने त्यानो) [ढोल
प्रेतपटह पु० अग्निदाह वखते वगाडातु
प्रेतपति पु० यमराज
प्रेतमेध पु० पितृओना श्राद्ध माटेनो यज्ञ
प्रेतराज पु० यमराज
प्रेत्य अ० मरण पछी, परलोकमा
प्रेत्यभाव पु०मृत्यु पछीनी जीवनी स्थिति
प्रेत्यभाविक वि० पारलौकिक
प्रेप्सा स्त्री० प्राप्त करवानी इच्छा
प्रेप्सु वि० प्राप्त करवानी इच्छावाळु
प्रेमन् पु०, न० स्नेह, हेत (२) प्रीति; रुचि (३) पु० मजाक, हासी
प्रेयस् वि० वधु प्रिय ('प्रिय'नु तुलनात्मक रूप) (२) पु० प्रेमी, पति (३) प्रिय मित्र (४) पु०, न० खुशामत (५) हित (६) स्वर्ग वगेरे जेवु प्रिय लागतु फळ (कल्याणकर 'मोक्ष'थी ऊलटु)
प्रेयसी स्त्री० पत्नी, प्रियतमा
प्रेर् (प्र+ईर्) –प्रेरक० गतिमान करवु (२) प्रेरवु, धकेलवु (३) उश्केरवु (४) फेंकवु, नाखवु (नजर) (५) मोकलवु
प्रेरण न०, **प्रेरणा** स्त्री० प्रेरवु ते (२) प्रोत्साहन (३) आतरिक स्फुरण (४) नाखवु ते (५) मोकलवु ते (६) आज्ञा
प्रेरित ('प्रेर्'नु भू० कृ०) वि० प्रेरेलु, प्रेरायेलु (२) मोकलेलु (३) पु० दूत
प्रेष् ४ प० आगळ हाकवु (२) उच्चारवु; बोलवु (३) फेंकवु (४) १ उ० जवु –प्रेरक० फेंकवु (२) मोकलवु (३) विदाय करवु; काढी मूकवु
प्रेषण न० मोकलवु ते (२) सोंपेलु काम पार पाडवु ते
प्रेषणकृत् वि० सोपेलु काम पार पाडनारु
प्रेषणा स्त्री० जुओ 'प्रेषण'
प्रेषित ('प्रेष्'नु भू० कृ) वि० मोकलेलु (२) प्रेरेलु; दोरेलु (आख इ०) (३) काढी मूकेलु
प्रेष्ठ वि० सौथी प्रिय ('प्रिय'नु श्रेष्ठता-दर्शक रूप) (२) पु० पति, प्रियतम
प्रेष्य वि० आज्ञा करवा लायक (२) पु० दास (३) दूत
प्रेष्यभाव पु० दासपणु [झूलवु
प्रेंख् १ प० हालवु, कपवु (२) आम तेम
प्रेंख पु०, न० झूलो; हीचको (२) झूलवु के हीचवु ते [ते (३) हीचको
प्रेंखण वि० भमतु, घूमतु (२) न० हीचवु
प्रेंखोल् १० उ० हीचवु, झूलवु, कपवु
प्रेंखोल पु०, **प्रेंखोलन** न० झूलवु, हीचवु के कपवु ते
प्रैयरूपक न० सुदरता
प्रैष्य पु० दास, नोकर
प्रैष्यभाव पु० दासपणु
प्रोक्त ('प्र+वच्'नु भू० कृ) वि० कहेलु; जाहेर करेलु, उल्लेखेलु
प्रोक्ष् ६ प० पवित्र जळ छांटवु (२) छाटीने शुद्ध करवु (३) वध करवो
प्रोच्चल् १ प० चाली नीकळवु, मुसाफरीए नीकळवु
प्रोच्चंड वि० अत्यत भयकर
प्रोच्चारित वि० मोटेथी अवाज करतु
प्रोच्चैस् अ० घणा मोटा अवाजथी
प्रोच्छल् १ प० वही नीकळवु
प्रोच्छून वि० सूजी के सूणी गयेलु
प्रोच्छ्रित वि० घणु ऊचु
प्रोज्झ् (प्र+उज्झ्) ६ प० त्यागवु, तजवु
प्रोड्डी (प्र+उत्+डी) ४ आ० ऊचे ऊडवु

प्रोड्डीन वि० ऊंचे ऊडेलु के ऊडतु
प्रोत('प्रवे'नु भू० कृ०)वि० सीवेलु (२) ताणानी पेठे लाबु नाखेलु ('ओत' थी ऊलटु) (३) बधायेलु, जकडायेलु (४) परोवायेलु (५)–मा थईने आवेलु (६) जडेलु, बेसाडेलु (जेम के नग)
प्रोत्कट वि० घणु मोटु
प्रोत्कटभृत्य पु० मानीतो कारभारी, उच्च अमलदार
प्रोत्थित वि० –माथी नीकळेलु के फूटेलु
प्रोत्फुल्ल वि० पूरेपुरु विकसेलु(२)खूब पहोळु ऊघडेलु (आख)
प्रोत्सारण न०, **प्रोत्सारणा** स्त्री० दूर करवु ते (खसेडीने)
प्रोत्सारित वि० खसेडेलु, दूर करेलु(२) धकेलेलु, प्रेरेलु(३)आपेलु, बक्षेलु
प्रोत्साहन न० उत्साह आपवो ते; उत्तेजन
प्रोथ् १ उ० बरोबरिया थवु(२)पूरतु थवु(३)पूर्ण थवु (४) हरावबु (५) वध करवो
प्रोथ वि० प्रख्यात(२)मूकेलु, स्थापेलु (३)मुसाफरीए नीकळेलु(४)पु०,न० घोडानु नसकोरु (५) डुक्करना मोनु टोचलु (६) पु० कूलो
प्रोषित('प्रवस्'नु भू० कृ०)वि० प्रवासे गयेलु; परदेश गयेलु
प्रोषितभर्तृका स्त्री० जेनो पति प्रवासे गयो छे तेवी स्त्री (विरहिणी)
प्रोष्ण वि० अत्यत उष्ण – गरम
प्रोष्यपापीयान् वि० घरथी दूर रहेवाने कारणे पापी के तुच्छ बनेलु
प्रोह पुं० तर्क (२)हाथीनो पग के घूंटण
प्रोछन न० लूछी के भूसी नाखवु ते (२)वधेलु वीणी लेवु ते
प्रौढ वि० पूरेपूरु विकसेलु, परिपक्व, परिपूर्ण(२) पुख्त, आधेड (३) गाढ (४) भव्य (५) जोसीलु (६) धृष्ट (७) व्याप्त, रोकायेलु (८) –थी परिपूर्ण, –थी भरेलु(समासने छेडे)
प्रौढजलद पु० गाढु वादळ
प्रौढपाद वि० पग ऊचे (पाटली उपर) मूक्या होय तेवु
प्रौढपुष्प वि० पूरा खीलेला फूलवाळु
प्रौढप्रिया स्त्री० धृष्ट प्रियतमा
प्रौढयौवन वि० जुवानीना पुरबहारमा होय तेवु
प्रौढाचाराः पु० ब० व० धृष्ट वर्तणूक
प्रौढांगना स्त्री० शरमाळ नहि तेवी – धृष्ट स्त्री
प्रौढि स्त्री० प्रौढपणु, परिपक्वता, परिपूर्ण विकास (२) वृद्धि (३) महानता (४) धृष्टता, गर्व
प्रौढित्व न० भव्यता(२)धृष्टता
प्रौष्ठ पु० साढ, आखलो
प्रौष्ठपद पु० [illegible]रवो महिनो
प्रौष्ठपदा स्त्री०पूर्वाभाद्रपदा अने उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र (२५ मु अने २६ मु)
प्लक्ष पु० पीपळो (२) पुराणोक्त सात द्वीपोमानो एक
प्लक्षजाता स्त्री० सरस्वती नदी
प्लव वि० तरतु (२) ठेकतु (३) पु० तरवु ते (४) पूर आववु ते (५) ठेकडो मारवो ते (६) होडकु
प्लवक पु० कूदको मारनार (२) वादरो(३)देडको [वपरातो घडो
प्लवकुंभ पु० तरवामा(आधार तरीके)
प्लवग पु० वादरो (२) देडको
प्लवगराज पु० सुग्रीव
प्लवन वि० ढळतु, नमतु (२) न० तरवु ते (३) डूबकु, स्नान (४) ऊडवु ते (५) कूदवु ते (५) पूर
प्लवंग पु० वादरो (२) देडको (३) पीपळो (४) हरण
प्लवंगम पु० वादरो (२) देडको
प्लाव पु० कूदको, ठेकडो (२)ऊभरावु ते (३) गाळवुं ते (प्रवाहीने)

प्लावन न० नाहवु ते; डूबकु लगाववु ते (२) ऊभरावु ते (३) पूर
प्लावित वि० तरतु करेलु (२) पूर फरी वळ्यु होय तेवु (३) भीनु थयेलु, छटकाव थयो होय तेवु (४) लबावेलु (स्वर) (५) न० पूर
प्लीहन् पु० बरोळ
प्लु १ आ० तरवु (२) होडी वडे तरवु (३) कूदवु, ठेकवु (४) आमतेम हीचवु (५) नाहवु, डूबकी मारवी (६) फूकावु (पवननु)
—प्रेरक० तरे तेम करवु (२) धोई काढवु (३) पूरमा डुबाडी देवु
प्लुक्षि पु० अग्नि, आग (२) तेल
प्लुत ('प्लु' नु भू०कृ०) वि० तरतु (२) पूरथी डूबेलु के ऊभरातु (३) कूदेलु (४) लंबावेलु (स्वर) (५) ढकायेलु; व्याप्त (६) –मा नाहेलु (७) न० कूदको, ठेकडो (८) पूर
प्लुति स्त्री० पूर (२) कूदको; ठेकडो
प्लुष् १, ४, ९, प० वाळवु, दझाडवु (२) ९ प० छाटवु, भीनु करवु (३) लेप करवो, खरडवु (४) भरी काढवु
प्लुष्ट ('प्लुष्' नु भू० कृ०) वि० बळेलु; दाझेलु
प्लोष पु० बळवु ते, दाह
प्लोषण, प्लोषिन् वि० बाळी नाखतु, भस्मीभूत करतु

फ

फक्किका स्त्री० पूर्वपक्ष, चर्चानो विषय (२) पूर्वग्रह (३) कपट, जाळ
फट् अ० मत्रतत्रादिमा वपरातो एक उद्गार
फट पु० फणा, फेण
फण् १ प० फरवु, गमन करवु
—प्रेरक० तारवी लेवु
फण पु० सापनी फेण (२) पु०, न० नसकोरानो फेलावेलो भाग
फणक पु० कासकी, दातियो
फणकर, फणधर पु० साप
फणधरधर पु० महादेव, शकर
फणभृत् पु० साप
फणमंडल न० सापनु गूंचळु
फणवत् पु० साप
फणा स्त्री० सापनी फेण
फणाकर पु० साप
फणाटोप पु० फेलावेली के ऊंची करेली [फणा
फणाधर पु० साप
फणामणि पु० सापनी फणा उपर रहेतो [मनातो मणि
फणामंडल न० जुओ 'फणमडल'
फणावत् पु० साप
फणिन् पु० फणावाळो साप (२) राहु (३) महाभाष्यना कर्ता पतजलि
फणिपति पु० शेषनाग (२) वासुकि नाग
फणिमुख न० चोर वापरे छे ते खातरियु
फणींद्र पु० शेषनाग, अनत
फर्फर वि० अत्यत चचळ; चपळ
फल् १ प० फळवु, फळ उत्पन्न थवु (२) सफळ थवु (३) –ने हिस्से आववु (४) फाडी नाखवु, चीरवु (५) प्रतिबिंब पडवु
फल न० वनस्पतिनु फळ (२) परिणाम, पेदाश, फायदो (३) सतति (४) फलक पाटियु (५) फळु (तरवार इ० नु) (६) वृषण (७) प्रतिबिंब (८) हासडी (खभानी)
फलक न० पाटियु, पाटी (चित्र, द्यूत इ० माटेनु) (२) कोई पण सपाट स्थळ (३) ढाल (४) बाणनु

फळु (५) लाकडानी बेठक, बेसवा माटेनु पाटियु (६) वल्कल (पहेरवा माटेनी वृक्षनी छाल) (७) कमळकोश
फलतंत्र वि० पोतानो ज लाभ ताकनारु
फलद वि० फळ आपनारु (२) लाभदायी
फलधर्मन् वि० (फळनी पेठे) झट परिपक्व थई, नीचे पडी, नाश पामतुं
फलपूर पु० बिजोरु
फलप्रद वि० फळ आपनारु (२) लाभदायी
फलप्रेप्सु वि० फळ मेळववानी इच्छा राखनारु
फलबंधिन् वि० जेने फळ बधातु होय – बेसतु होय तेवु
फलभावना स्त्री० फळ मळवु ते; सफळता
फलभूमि स्त्री० करेला कर्मोनां फळ भोगववानु स्थान (स्वर्ग के नरक)
फलयोग पु० फळप्राप्ति, इष्ट वस्तु प्राप्त थवी ते (२) रोजी, महेनताणु
फलवत् वि० फळयुक्त, जेने फळ बेसता होय तेवु (२) लाभदायी
फलशालिन् वि० फळयुक्त, सफळ (२) फळ के परिणाममा हिस्सो मळवानो होय तेवु
फलसिद्धि स्त्री० फळ प्राप्त थवु ते, इच्छित वस्तु सिद्ध थवी ते
फलागम पु० फळ बेसवां ते (२) फळनी मोसम, शरद ऋतु
फलाढ्य वि० फळथी भरेलु
फलानुमेय वि० परिणामथी जेनु अनुमान थई शके तेवु
फलाहार पु० फराळ
फलित ('फल्'नु भू० कृ०) वि० फळ बेठा होय तेवु, फळ आपनारु (२) सिद्ध थयेलु (इच्छा)
फलिन् वि० फळ बेसे तेवु, फळयुक्त (२) लाभदायक, फळदायक (३) लोखडना फळावाळु (४) पु० वृक्ष
फलिन वि० फळयुक्त, फळ आपे तेवु
फलिनी, फली स्त्री० प्रियगुलता (आवानी पत्नी गणाय छे)
फलेग्रहि, फलेग्राहिन् वि० मोसममा फळ आपनारु (वध्य न रहेनारु)
फलोदय पु० फळनी उत्पत्ति (२) सफळ थवु ते, इच्छित सिद्ध थवु ते
फलोद्गम पु० फळ बेसवा ते
फलोपजीविन् वि० फळ वेचीने जीवनारु
फल्गु वि० तुच्छ; नमालु, निर्माल्य (२) नकामु, निरर्थक, अगत्यनु नहि तेवु (३) नानु, सूक्ष्म
फल्गुता स्त्री० असारता, तुच्छता
फल्गुन पु० फागण महिनो (२) इंद्र (३) अर्जुन
फल्गुनी स्त्री० (एकवचन, द्वि०व० अने ब०व०मा) एक नक्षत्र (पूर्वा अने उत्तरा)
फाणित न० उकाळेलो शेरडीनो रस, काकवी (२) दूधनी एक बनावट
फाल पु०, न० हळनु फळु (२) माथानी दरेक बाजु वाळ छूटा पाडीने ओळवा ते (३) कपाळ, भाल (४) भारो, एकत्रित बांधेलो झूडो (घास, लाकडां इ० नो)
फालिका स्त्री० टुकडो
फाल्गुन पु० फागण मास (२) अर्जुन
फाट पु०, स्त्री० उकाळो, क्वाथ
फुट्टक न० एक जातनु वस्त्र
फुट्टिका स्त्री० एक जातना वणाटवाळु पोत
फुत्कार पु० फूकवु ते (२) फूफाडो (३) चीस
फुत्कृ ८ प० फूकवु (२) चीस पाडवी
फुत्कृत वि० फूकेलु, फूकीने ऊभु करेलु (परपोटो) (२) चीस पाडी होय तेवु (३) न० फूकीने वगाडाता वाद्यनो अवाज (४) चीस
फुत्कृति स्त्री० जुओ 'फुत्कार' (२) फूकीने वाद्य वगाडवु ते (३) फूफाडो
फुप्फुस पु० फेफसु
फुराफुरायते (फफडवु)
फुल्ल् १ प० खीलवु, फूलवु, विकसवु

बलिन् वि० बळवान, मजबूत (२) पु० बलराम
बलिन, बलिभ वि० गडी के वाटावाळु
बलिभुज्, बलिभोज, बलिभोजन पु० कागडो [कर्यो होय तेवु
बलिमत् वि० बलिनो सामान तैयार
बलिविधान न० बलि अर्पवो ते
बलिव्याकुल वि० बलि अर्पवामा लागेलु
बलिष्ठ वि० ('बलवत्' के 'बलिन्'-नु श्रेष्ठतादर्शक रूप) सौथी बळवान
बलीक पु० छापरानो छेडानो भाग
बलीयस् वि० ('बलवत्' के 'बलिन्' नु तुलनात्मक रूप) वधु बळवान
बलीवर्द पु० बळद
बलीश पु० कागडो (२) कपटी माणस
बलेन अ० बळजबरीथी
बलोत्कट वि० अति बळवाळु
बलोपपन्न, बलोपेत वि० बळवान
बलौघ पु० मोटु सैन्य
बल्लव पु० गोवाळियो (२) रसोईयो (३) भीम (विराटने त्या रसोईया तरीके धारण करेलु नाम)
बल्लवयुवति (–ती) स्त्री० जुवान गोपी
बल्लवी स्त्री० गोवाळण
बष्कयणी (–नी), बष्कयिणी (–नी) स्त्री० जुवान वाछरडावाळी गाय (२) घणा वाछरडावाळी गाय
बस्ति स्त्री० नाभिनी नीचेनो भाग, पेडु
बस्तिक पु० एक जातनु बाण (खेंची काढता पण जेनु फळु शरीरमा रहे)
बहल वि० घणु वधारे, पुष्कळ (२) गाढ (३) गुच्छादार, गूचळियु (४) दृढ
बहलित वि० गाढु थयेलु, दृढ थयेलु
बहिरंग वि० बहारनु, बाह्य
बहिरुपाधि पु० बाह्य संजोग के परिस्थिति [करनारु
बहिर्दृश् वि० उपरचोटियो विचार
बहिर्मुख वि० बाह्य वस्तुओ प्रत्ये आसक्त (२) विमुख
बहिर्यात्रा स्त्री०, बहिर्यान न० परदेश जवु ते [विनानु, अव्यय
बहिर्विकार वि० विकार के फेरफार
बहिश्चर वि० बहार आवेलु, बहार फरतु, बाह्य
बहिष्करण न०, बहिष्कार पु० बहार काढवु ते (२) नात बहार मूकवु ते
बहिष्कृ ८ उ० बहिष्कार करवो
बहिष्प्राण पु० शरीर बहार पोतानो बीजो जीव होय तेना जेवु वहालु होय ते (२) धन, मालमिलकत
बहिस् अ० बहार (२) बारणा बहार (३) सिवाय (४) पृथक्, भिन्नपणे
बहिःसंस्थ वि० (शहेर) बहार आवेलु
बहु वि० घणु, पुष्कळ (२) संख्याबंध (३) वारवार थतु के करातु (४) मोटु (५) (समासना पूर्वपदमा)–जेमा घणु होय तेवु (उदा० 'बहुकंटक' = घणा कांटावाळु) (६) अ० अत्यंत
बहुकर वि० घणी रीते उपयोगी (२) उद्यमी (३) पु० झाडु काढनार (४) सूर्य
बहुंकार न० पुष्कळ होवापणु
बहुकारी स्त्री० सावरणी
बहुक्षम वि० धीरजवाळु [योगवाळु
बहुगुण वि० घणा गुण, प्रकार के उप-
बहुच्छल वि० छळकपटवाळु
बहुजन पु० घणी मोटी संख्याना माणसो
बहुतिथ वि० घणु लाबु (समय), घणा दिवसो वीत्या होय तेवु
बहुतृण न० घास जेवु तुच्छ के निरुपयोगी होय ते
बहुथा अ० बहुधा, घणे प्रकारे
बहुदर्शक, बहुदर्शिन् वि० विचारीने काम करनारु, शाणु
बहुदोष वि० घणा दोष के जोखमवाळु
बहुधन वि० अति धनवान
बहुधा अ० अनेक प्रकारे; विविध रीते (२) वारवार (३) अनेक स्थळे, अनेक दिशामा

बहुनाडिक पु० शरीर
बहुनाडीक पु० दिवस(२)थाभलो
बहुप्रकारम् अ० घणा प्रकारे
बहुप्रपंच वि० घणा विस्तारवाळु
बहुभाष्य न० वातोडियापणु
बहुभूमिक वि० घणा माळवाळु
बहुभोग्या स्त्री० वेश्या
बहुमत वि० घणाओमा आदर पामेलु (२) घणो आदर पामेलु (३) घणा मत के अभिप्रायवाळु
बहुमति स्त्री० मोटो आदर, समान
बहुमन् ४ आ० मोटु मानवु; कीमती मानवु, मानीतु गणवु
बहुमान पु० अति आदर, समान
बहुमाय वि० तरकटी, दगावाज
बहुमार्गगा स्त्री० गगानदी(२)व्यभिचारिणी के स्वच्छदी स्त्री
बहुमुख वि० अत्यत, पुष्कळ
बहुमूल्य वि० मूल्यवान, कीमती
बहुरूप वि० घणा रूपवाळु(२)चित्रविचित्र, कावरचीतरु
बहुल वि० गाढ, घाडु (२) पहोळु, विस्तृत (३) अतिशय; पुष्कळ(४) –थी भरेलु; –थी पूर्ण(५)पु० कृष्णपक्ष
बहुलम् अ० वारवार
बहुलगितिमन् पु० कृष्णपक्षनी काळाश
बहुला स्त्री० गाय
बहुलित वि० वधारेलु
बहुलीकृ ८ उ० जाहेर करवु, बहार पाडवु(२)गाढ बनाववु(३)वधारवु
बहुलीभाव पु० नामीचा थवु ते, जाणीता थवु ते, जाहेर थवु ते
बहुलीभू १ प० वधवु(२)जाहेर थवु; प्रसिद्ध थवु, नामीचा थवु
बहुविध वि० बहु प्रकारनु
बहुव्रीहि वि० पुष्कळ चोखावाळु(२) पु० एक समास(व्या०)
बहुशस् अ० अत्यत होय तेम(२)वारवार(३)सामान्यपणे
बहुशाख वि० घणी शाखाओवाळु(२) फेलातु, एकाग्र के निश्चित नही तेवु
बहुश्रुत वि० विद्वान, पडित (२) वेदोमा पारगत [वाळु
बहुसत्त्व वि० घणा जानवर के प्राणी-
बहुसाहस्र वि० हजारोनी सख्यावाळु
बहूदक पु० एक प्रकारनो भिक्षु(घेरघेर भिक्षा मागीने जीवतो), 'कुटीचक'
बहूपयुक्त वि० घणा उपयोगमा आवतु के लेवातु
बहूपाय वि० असरकारक
बह्वपाय वि० घणा जोखमवाळु
बंदि पु० बधन, केद(२)केदी
बंदिन् पु० वदी; चारण
बंदिस्थित वि० केदमा पूरेलु – पडेलु
बंदी स्त्री० जुओ 'बदि'
बंध् ९ प० वाघवु, जकडवु(२)पकडवु; केद करवु, बेडीमा नाखवु(३)रोकवु; दबाववु (४) खेंचवु, पकडी राखवु (जेम के आखोने) (५)–उपर स्थिर करवु, (जेम के आख के मनने) (६) साथे बाधवु(जेम के वाळने)(७)रचवु; वाधवु; गोठववु (८) उत्पन्न करवु (फळ इ०) (९) धारण करवु(भाव, लागणी) (१०) शिक्षा करवी
बंध पु० वधन;गाठ(२)चोटलानी गाठ (३)साकळ; बेडी(४)पकडवु ते(५) केद(६)गोठववु – रचवु ते(७)लागणी; भाव(८)सवध(९)जोडवु ते(१०) पाटो (११) अभिव्यक्ति, प्रदर्शन (१२)ससारवधन('मोक्ष'थी ऊलटु (१३)परिणाम(१४)आसन, बेसवा वगेरेनी रीत(१५)कविताना चरणोनी गोठवणी (१६) (नदीनी)सामे पार सुधीनो वाध [नाखवु ते
बंधकरण न० केद पकडवु ते, बेडीमा
बंधकी स्त्री० व्यभिचारिणी, वेश्या
बंधन वि० वाधनारु(२)रुकावट करनारु(३) (समासने अते) –ने आधारे

रहेलु (४) न० बाधवु ते, गाठ वाळवी ते (५) आसपास वीटाळवु ते (६) गाठ (७) केद (८) साकळ (९) केदखानु (१०) रचना (११) दाडी (फूल इ० नी) (१२) स्नायु (१३) ससारबधन
बंधु पु० सगु, सबधी (२) सोबती; साथी (३) मित्र (४) पति (५) भाई (६) जन्म अमुक वर्गमा होय पण ते वर्गना गुणो विनानु ते (उदा० 'क्षत्रबधु')
बधुकृत्य न० सगा-सबधी तरीकेनु कर्तव्य (२) मित्रताभर्यु कृत्य
बंधुजन पु० सगु, नातीलु (२) सगा-सबधीनो आखो वर्ग
बंधुजीव पु० एक फूलझाड (२) न० तेनु फूल (बपोरना ऊघडे छे)
बंधुता स्त्री० सबधीवर्ग (२) संबधीपणु
बंधुत्व न० बधुपणु, सगाई, मित्रता
बधुदा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री
बंधुप्रीति स्त्री० सगासबधीनो प्रेम (२) मित्र माटेनो प्रेम [सबधीथी घेरायेलु
बंधुमत् वि० सगासबधीवाळु (२) सगा-
बधुर वि० असमान, ऊचुनीचु (२) नमी गयेलु (३) वाकु (४) सुदर, मनोरम (५) न० ताज, मुगट (६) दोरडु, बध
बधुरित वि० वळेलु, नमेलु
बधुल वि० नमेलु (२) मनोहर (३) पु० जारज सतान (परस्त्रीनु परपुरुषथी)
बधूक पु० एक वृक्ष (२) न० तेनु फूल
बंधूर वि० असमान, ऊचुनीचु (२) मनोहर (३) वाकु, नमेलु (४) न० बाकुं
बंध्य वि० बाधवा योग्य, केद पकडवा योग्य (२) वध्य, निष्फळ
बंध्या स्त्री० वध्या, वाझणी
बंध्यापुत्र, बध्यासुत पु० वाझणीना पुत्र जेवी असभवित वस्तु
बंहिष्ठ वि० ('बहुल'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप) अतिशय; पुष्कळ (२) घणु नीचुं के ऊडु (३) घणु मजबूत के दृढ
बाढ वि० दृढ; मजबूत (२) पुष्कळ
बाढम् अ० हा, खरेखर, साचे ज, चोक्कस—ए अर्थो बतावे छे
बाण पु० तीर, शर (२) शरीर (३) पु०, न० आसमानी रगनु एक फूल
बाणगोचर पु० बाण पहोचे तेटलु क्षेत्र
बाणतूण, बाणधि पु० बाणनो भाथो
बाणपात पु० बाण जाय तेटलु अतर (२) जुओ 'बाणगोचर' (३) बाणशय्या
बाणयोजन न० बाणनो भाथो
बाणरेखा स्त्री० बाणथी थयेलो लाबो घा
बाणसंधान न० पणछ उपर बाण चडाववु ते
बाणाश्रय पु० भाथो
बाणासन न० धनुष्य
बादर वि० बोरडीनु (२) कपासनु बनेलु (३) स्थूल, मोटु ('सूक्ष्म'थी ऊलटु)
बादरायण पु० ब्रह्मसूत्रना कर्ता मुनि (सामान्य रीते वेदव्यास गणाय छे)
बादरायणसंबंध पु० काल्पनिक अथवा पराणे घटावेलो सबध
बाध् १ आ० त्रास आपवो, पीडवु (२) अटकायत करवी, रोकवु (३) हुमलो करवो (४) ईजा करवी (५) दूर करवु
बाध पु० जुओ 'बाधा'
बाधक वि० पीडनारु, त्रास आपनारु, पजवनारु (२) रद करनारु (३) अटकायत करनारु
बाधन न० त्रास, पजवणी
बाधा स्त्री० पीडा, त्रास (२) पजवणी (३) ईजा, हानि (४) जोखम (५) सामनो, विरोध, खडन
बाधित ('बाध्'नु भू० कृ०) वि० त्रास, पजवणी के पीडा थया होय तेवु (२) खडन करेलु, रद करेलु
बाधिर्य न० बहेरापणु
बाध्य वि० पीडा, सामनो, विरोध, अटकायत के खडन करवा योग्य

बार्हस्पत पु० एक संवत्सरनु नाम
बार्हस्पत्य पु० बृहस्पतिनो एक अनुयायी (नास्तिकवाद शीखवनार) (२) नास्तिक (३) न० बृहस्पतिनु अर्थशास्त्र
बाल वि० नानु (उंमरमा के विकासमा) (२) तरतनु ऊगेलु (सूर्य) (३) मोटु थतु (पडवाना चद्रनी पेठे) (४) अज्ञ, बिनअनुभवी (५) पु० बाळक (६) छोकरो, सगीर (सोळ वर्षथी नानी वयनो) (७) मूर्ख (८) वाळ
बालक वि० नानी उमरनु, बाळक जेवु (२) अज्ञ (३) पु० नानो वाळ; छोकरो (४) सगीर (५) मूर्ख (६) बाळहाथी (पाच वर्षनी वयनो)
बालकुंद न० ताजु कुद पुष्प
बालखिल्य पु० जुओ 'वालखिल्य'
बालचरित न० बाळपणनी क्रीडा (२) बाळपणनु चरित्र
बालचर्या स्त्री० बाळकनु आचरण
बालचद्र, बालचंद्रमस् पु० नानो चद्र (वधतो जतो) (२) अमुक आकारनु बाकु (चोरे भीतमां पाडेलु)
बालचूत पु० नानो आंबो
बालतृण न० नानु – कुमळु घास
बालधि पु० वाळवाळु पूछडु
बालबोध पु० बाळकोनु शिक्षण (२) शिखाउ माटे तैयार करेल ग्रथ
बालभार पु० वाळना भारवाळु पूछडु
बालभाव पु० बाळपण (२) घणा वाळ ऊगवा ते (३) बाळको (आखो वर्ग)
बालमित्र पु० बाळपणथी ज मित्र एवो ते
बालमृणाल पु० कमळनो कोमळ ततु
बाललता स्त्री० नानी – कुमळी वेल
बालव्यजन न० चामर
बालहस्त पु० वाळवाळु पूछडु
बाला स्त्री० बाळकी; छोकरी (२) सोळ वर्षनी नीचेनी जुवान छोकरी (३) युवती (सामान्यपणे)
बालाग्र न० वाळनी अणी के छेडो (२) छापरा नीचेनु कबूतरखानु
बालातप पु० सवारनो तडको
बालारुण वि० ऊगता सूर्य जेवु लाल (२) पु० सवारनो सूर्य
बालार्क पु० तरतनो ऊगेलो सूर्य
बालावबोध पु०, **बालावबोधन** न० बाळकोनु – छोकराओनु शिक्षण
बालावस्थ वि० नानी उमरनु, बाल्यावस्थामा होय तेवु
बालि पु० वालि, वानरोनो राजा
बालिका स्त्री० बाळा, बाळकी
बालिश वि० बाळक जेवु, छोकरवाद (२) नादान, वेसमज (३) पु० मूर्ख के जड माणस (४) नानो छोकरो
बालिशीकृ ८ उ० (बालिश जेवु) नादान के अविचारी करी मूकवु
बालेय वि० बलि – आहुतिने योग्य
बालेंदु पु० (शुक्लपक्षनी शरूआतनो) नानो चद्र (जे रोज वधे छे)
बाल्य न० बाळपण, बाल्यावस्था (२) नानी – वधवा योग्य स्थिति (चद्रनी) (३) समजशक्तिनी अपरिपक्वता (४) अज्ञान, वेसमज (५) निर्दोष अवस्था (गर्व इ० दोष विनानी)
बाल्हिक, बाल्हीक पु० बाल्हिक लोकोनो राजा (२) बल्ख जातिनो घोडो (३) व० व० ते जातिना लोक (४) न० केसर (५) हिंग
बाष्प पु० आसु (२) वराळ
बाष्पकल वि० आसुने कारणे अस्पष्ट
बाष्पकंठ वि० आसुथी रूधायेलु
बाष्पदुर्दिन वि० आसुथी घेरायेलु (आख)
बाष्पपूर पु० आसुनु जोरथी वहेवु ते
बाष्पप्रकर, बाष्पप्रसर पु० आसु वहेवा ते
बाष्पविक्लव वि० आसुथी विकळ थयेल
बाष्पाकुल वि० आसुथी झखवायेलु के विकळ बनेलु [काढवी)
बाष्पायते आ० (आसु सारवा, वराळ

बाष्पांबु न० आसु
बास्तिक न० बकरानु टोळु
बाहा स्त्री० बाहु, बाहु-लता
बाहीक वि० बहारनु, बाह्य
बाहु पु० भुजा, हाथ
बाहुबल न० हाथनु जोर, स्नायुनु जोर
बाहुबंधन पु० पीठना उपरना भागमा आवेलु खभानु पहोळु हाडकु (२) न० (आसपास) हाथ वीटवा ते
बाहुल पु० अग्नि
बाहुल्य न० बहुपणु, पुष्कळपणु (२) विविधता (३) सामान्य रीत
बाहुल्यात्, बाहुल्येन अ० सामान्य रीते (२) घणे भागे
बाहुविक्षेप पु० आम तेम हाथ नाखवा के हलाववा ते (२) तरवु ते
बाहुश्रुत्य न० बहुश्रुतता, विद्वत्ता
बाहूत्क्षेपम् अ० हाथ ऊचा करीने
बाह्य वि० बहारनु, बहार आवेलु (२) परदेशी, अजाण्यु (३) -नी सीमा बहारनु (४) नात बहार करेलु (५) जाहेर (६) पु० अजाण्यो, परदेशी (७) नात बहार मूकेलो माणस
बाल्हिक न० केसर
बाल्हिकाः पु० ब० व० 'बाल्हिक' जातिना लोक
बाल्हीक न० केसर
बाल्हीकाः पु० ब० व० जुओ 'बाल्हिका.'
बाह्वंतर न० छाती (बे बाहु वच्चेनु स्थळ)
बांधव पु० सगु, सबधी (२) मित्र (३) भाई (४) बधुकृत्य; मित्रनी मदद
बांधवजन पु० सगासबधीनो समूह
बिडाल पु० बिलाडो
बिडौजस् पु० इद्र
बिब्बोक पु० एक कामचेष्टा, गमवा छता अनादर दाखववो ते (२) अभिमानमा अनादरनो देखाड करवो ते
बिभित्सु वि० भेदवानी इच्छावाळु
बिभीषण वि० डरावतु, विवरावतु; भयकर (२) पु० रावणनो नानो भाई, विभीषण [तेवी वस्तु
बिभीषिका स्त्री० डर; भय (२) डरावे
बिभ्रज्जिषु पु० अग्नि
बिरुद पु० जुओ 'विरुद'
बिल पु० उच्चैःश्रवा (इद्रनो अश्व) (२) न० बाकु; छिद्र; दर; वखोल
बिलयोनि वि० इद्रना अश्व – उच्चैःश्रवानी जातनु के वशनु
बिलेशय पु० साप (२) उदर (३) ससलु
बिल्व पु० बीलीनु झाड (२) बीलु
बिस न० कमळनो रेसो के रेसावाळो दाडलो (२) कमळनो छोड के वेल
बिसकुसुम न० कमळ
बिसगुण पु० कमळना रेसानी दोरी
बिसतंतु पु० कमळनो रेसो
बिसपुष्प, बिसप्रसून न० कमळ
बिसिनी स्त्री० कमलिनी, कमळनी वेल (२) कमळनो समूह
बिंदु पु० टीपु; टपकुं (२) मीडु (३) हाथीना शरीर उपर करेलु रगनु टपकु (४) शून्य (५) अनुस्वार (व्या०)
बिंदुच्युतक पु० एक जातनी शब्द-रमत
बिंदूय आ० (टीपा बनवा, टपकवु)
बिंब पु०, न० जेनु प्रतिबिंब पडचु होय ते (२) सूर्यचद्रनु मडळ (३) मडळाकार कोई पण वस्तु (उदा० नितबबिंब) (४) प्रतिबिंब, पडछायो (५) अरीसो (६) मूर्ति (७) बीबु (८) न० घिलोडु
बिंबफल न० घिलोडु
बिंबिसार पु० मगधनो एक राजा (बुद्धनो समकालीन)
बिंबोष्ठ, बिंबौष्ठ वि० पाका घिलोडा जेवा होठवाळु (सुदर गणाय छे)
बीज न० बियु, बी (२) मूळ; मूळकारण (३) वीर्य (४) नाटक के कथानु मूळ वस्तु (५) पु० बिजोरु

बीजक पु० बिजोरु (२) घणा बीजवाळा केटलांक फळोनु नाम (३) न० यादी (४) बीज, बी
बीजगणित न० अक्षरगणित, 'एल्जिब्रा'
बीजनिर्वापण न० बीज वाववा ते
बीजन्यास पु० नाटकना वस्तुनु बीज प्रगट करवु ते
बीजपुष्प, बीजपूरण पु० बिजोरानु झाड
बीजवाप पु० बीज वावनारो, खेडूत
बीजाकृत वि० बीज वावेलु (खेतर)
बीजांकुर पु० बीजमाथी फूटेलो फणगो
बीभत्स वि० चीतरी चडे तेवु (२) बिहामणु, घोर (३) पु० तिरस्कार; चीतरी, अणगमो (४) न० चीतरी चडे तेवु काई पण [छाती
बुक्क पु०, न०, **बुक्कन्** पु० हृदय (२)
बुक्कस पु० चाडाळ
बुक्का स्त्री० हृदय
बुक्कार पु० सिंहनी गर्जना
बुक्की स्त्री० हृदय
बुद्ध ('बुध्'नु भू० कृ०) वि० जाणेलु, समजेलु (२) जागेलु (३) निहाळेलु (४) समजणवाळु, डाह्यु (५) विकसित (६) पु० गौतमबुद्ध (७) ज्ञानी के डाह्यो माणस, ऋषि (८) परमात्मा (९) न० ज्ञान
बुद्धि स्त्री० वस्तुने जाणवानी चित्तनी आकलन- के समज- शक्ति, अक्काल (२) समज, ज्ञान, माहिती (३) विवेक, डहापण (४) मन (५) तरतबुद्धि (६) मान्यता, अभिप्राय (७) हेतु, प्रयोजन (९) (मूर्छामाथी) भानमा आववु ते (१०) उपाय (११) महत् तत्त्व (सांख्य०)
बुद्धिकृत् वि० मानतु, धारतु
बुद्धिकृत वि० बुद्धिपुर सर करेलु
बुद्धिजीविन् वि० बुद्धि वडे जीवतु, विचारपूर्वक वर्ततु
बुद्धिपूर्वकम्, बुद्धिपूर्वम् अ० जाणीबूजीने, समजी-विचारीने
बुद्धिप्रागल्भी स्त्री० विवेकबुद्धिनी सचोटता के परिपक्वता
बुद्धिभेद पु० बुद्धिनु डामाडोळपणु
बुद्धिमत् वि० बुद्धिमान, बुद्धिशाळी (२) बुद्धिशक्तिवाळु (३) डाह्यु, समजदार (४) तीक्ष्ण बुद्धिवाळु
बुद्धिलक्षण न० बुद्धिनी निशानी
बुद्धिलाघव न० उपरचोटिया के तुच्छ एवी बुद्धि, अपरिपक्व बुद्धि
बुद्धिशस्त्र वि० बुद्धि वडे सज्ज
बुद्धिहीन वि० बुद्धि वगरनु, बेवकूफ
बुद्धींद्रिय न० ज्ञानेंद्रिय (श्रोत्र, त्वचा, आंख, जीभ, नासिका)
बुद्ध्यवज्ञान न० पोतानी बुद्धिनी अवगणना के अनादर
बुद्बुद पु० परपोटो
बुध् १ उ०, ४ आ० जाणवु, समजवु (२) निहाळवु, जोवु (३) मानवु, धारवु (४) ध्यान आपवु (५) विचारवु (६) जागवु, ऊंघमाथी ऊठवु (७) भानमा आववु
—प्रेरक० उ० जणाववु (२) शीखववु (३) सलाह आपवी (४) सजीवन करवु, भानमा लाववु (५) जाग्रत करवु (६) खिलाववु, विकसाववु
बुध वि० डाह्यु, शाणु, समजदार (२) बुद्धिशाळी (३) जागतु (४) पु० डाह्यो माणस (५) देव (६) एक ग्रह
बुध्न पु० वासणनी नीचेनु बूधु — तळियु
बुभुक्षा स्त्री० भूख, खावानी इच्छा (२) काई पण भोगववानी इच्छा
बुभुक्षित वि० भूख्यु, भूखथी पीडातु
बुभुक्षु वि० भूख्यु (२) भोगनी इच्छावाळु ('मुमुक्षु'थी ऊलटु) [जारी
बुभुत्सा स्त्री० जाणवानी इच्छा, इते-
बुभुत्सु वि० जाणवानी इतेजारीवाळु

बुभूषु वि० बनवा के थवानी इच्छावाळु (२)समर्थ के समृद्धिमान बनवानी इच्छावाळु (३)–नु हित इच्छतु
बुंद् १ उ० जोवु, निहाळवु (२) विचारवु, समजवु (३)साभळवु
बुंध् १० प० बाधवु(२)१ उ० जुओ 'बुद्'
बृह् १, ६ प० वधवु (२) गर्जवु
बृहत् वि० मोटु, विशाळ(२)पहोळु, विस्तरेलु (३)अफाट;पुष्कळ (४)बळवान(५)लावु, ऊचु (६) स्त्री० वाणी (७) न० वेद (८) एक साममत्र
बृहती स्त्री० मोटी वीणा (२)नारदनी वीणा (३)वाणी
बृहद्भानु पु० अग्नि(२)सूर्य
बृहस्पति पु० देवोना गुरु (२)एक ग्रह
बृह् १, ६ प० वधवु (२) गर्जवु (३) १ प०, १० उ० बोलवु (४)चळकवु
बृहण वि० पोषतु (२) न० गर्जना (हाथीनी) (३) पोषवु ते
बृंहित ('बृह्'नु भू०कृ०) वि० वधेलु; विकसेलु (२) गर्जेलु (३) न० गर्जना (हाथीनी)
बेह् १ आ० प्रयत्न करवो
बैल वि० बिल – दरमा रहेनारु
बैबिक पु० स्त्रीओ प्रत्ये प्रेम-समान दर्शाववामा प्रयत्नशील माणस
बोद्धव्य वि० जुओ 'बोध्य'
बोध पु० समज, ज्ञान (२)विचार (३) समजशक्ति, बुद्धि (४) जागवु ते, जाग्रदवस्था
बोधक वि० जणावनारु (२)शीखवनारु (३)दर्शक (४)जगाडनारु
बोधतस् अ० समजपूर्वक
बोधन वि० जाण – खबर करनारु (२) समजावनारु (३)जगाडनारु (४)सळगावनारु (५) पु० बुध ग्रह (६) न० समजाववु–जणाववु–शीखववु ते (७) अर्थ दर्शाववो ते (८) जगाडवु ते
बोधपूर्व वि० जाणतु, समजतु (२) जाणी-बूजीने करेलु [पूर्वक
बोधपूर्वम् अ० जाणी समजीने, इरादा-
बोधि पु० पूर्णज्ञान, साक्षात्कार
बोधिसत्त्व पु० बौद्ध मुमुक्षु, पूर्ण बोध प्राप्त करवाने मार्गे पळेलो साधक
बोध्य वि० जाणवा – समजवा योग्य (२) जाणी – समजी शकाय तेवु (३)जणाववा के खबर आपवा योग्य
बौद्ध वि० बुद्धिने लगतु (२) बुद्ध सबधी (३) पु० बुद्धनो अनुयायी
ब्रध्नमंडल न० सूर्यनु बिंब
ब्रह्मकूट पु० सपूर्ण विद्वान एवो ब्राह्मण
ब्रह्मकोश पु० समग्र वेद
ब्रह्मगौरव न० ब्रह्मास्त्रनो आदर
ब्रह्मघातक, ब्रह्मघातिन् पु० ब्रह्महत्या करनार
ब्रह्मघोष पु० वेदोनु पठन (२)समग्र वेद
ब्रह्मचर्य न० जीवननो प्रथम आश्रम, जे दरम्यान वेदो भणे छे तथा ब्रह्मचारी रहे छे (२) इद्रियनिग्रह, ब्रह्मचारी रहेवानु व्रत (३)पु० ब्रह्मचारी विद्यार्थी
ब्रह्मचर्या स्त्री० ब्रह्मचर्यव्रत
ब्रह्मचारिन् वि० वेद भणनारु (२) ब्रह्मचर्यव्रतधारी (३) पु० चार आश्रमोमाथी पहेला आश्रममा रहेलो, गुरुने घेर रही, ब्रह्मचर्य पाळी, विद्याभ्यास करनार विद्यार्थी
ब्रह्मज्ञ वि० ब्रह्मने जाणनारु, ब्रह्मवेत्ता
ब्रह्मज्ञान न० ब्रह्म अने जगतना अभेदनु ज्ञान, परमज्ञान, तत्त्वज्ञान
ब्रह्मण्य वि० ब्रह्म सबधी (२) ब्रह्मा सबधी (३) ब्राह्मण माटे उचित (४) ब्राह्मणना हितनु (५)पवित्र (६)पु० वेदवेत्ता [(३)अभिचार, मत्रतत्र
ब्रह्मदंड पु० ब्राह्मणनो शाप(२)ब्रह्मास्त्र
ब्रह्मदाय पु० वेद भणाववा ते (२) वारसामा मळेलु वेदज्ञान (३) ब्राह्मणनो वारसो

ब्रह्मन् न० परब्रह्म, परमतत्त्व (२) स्तुतिनो मत्र (३) शास्त्रवाक्य (४) वेद (५) ॐकार (६) ब्राह्मण वर्ण (७)ब्राह्मणनु सत्त्व – तेज(८)तपस्या (९) ब्रह्मचर्य (१०) वेदनो ब्राह्मण खड(११)समृद्धि (१२) अन्न(१३) सत्य (१४) पु० जगतनी रचना करनार – ब्रह्मा(१५)ब्राह्मण (१६) सोमयज्ञना चार ऋत्विजोमांनो एक (१७)गुरु ग्रह(१८)ब्रह्मलोक
ब्रह्मनिर्वाण न० ब्रह्म साथे अभेद, मोक्ष (२) ब्रह्मानद
ब्रह्मनिष्ठ वि० ब्रह्मना चितनमा लवलीन
ब्रह्मपारायण न० पूर्ण वेदनो अभ्यास
ब्रह्मपाश पु० ब्रह्मा जेना अधिष्ठाता छे एवु एक अस्त्र
ब्रह्मपुर न० हृदय(२)शरीर
ब्रह्मप्राप्ति स्त्री० ब्रह्म साथे अभेद थवो ते
ब्रह्मबधु पु० मात्र जन्मथी ब्राह्मण (पण कर्मथी नही)
ब्रह्मभुवन न० ब्रह्मलोक [तेवु; मुक्त
ब्रह्मभूत वि० ब्रह्म साथे अभेद थयो होय
ब्रह्मभूय न० ब्रह्मप्राप्ति(२)ब्राह्मणपणु
ब्रह्ममय वि० वेदरूप; वेद सबधी; वेदमाथी नीपजेलु(२)ब्राह्मणने योग्य
ब्रह्ममीमांसा स्त्री० वेदात सिद्धात (ब्रह्मना स्वरूप विषेनो)
ब्रह्मयज्ञ पु० वेदनु अध्ययन-अध्यापन (पच महायज्ञोमानो एक)
ब्रह्मयोनि वि० ब्रह्माथी उत्पन्न थयेलु (२)स्त्री० वेदोनो के ब्रह्मानो कर्ता
ब्रह्मरध्र न० मस्तकमा मानेल एक छिद्र, ज्याथी नीकळेलो जीव ब्रह्मलोकमा जाय छे
०राक्षस पु० भूत थयेलो पापी ब्राह्मण
ब्रह्मवर्चस् (–स) न० ब्रह्मचर्य, वेदाभ्यास के ब्रह्मज्ञानथी उत्पन्न थतु तेज
ब्रह्मवादिन् पु० वेद भणावनार (२) वेदात मतनो अनुयायी
ब्रह्मविद्या स्त्री० ब्रह्मनु ज्ञान
ब्रह्मविहार पु० शुद्ध-बुद्ध-मुक्त स्थिति
ब्रह्मव्रत न० ब्रह्मचर्यव्रत
ब्रह्मसत्र न० वेदनु अध्ययन-अध्यापन, ब्रह्मयज्ञ(२)ब्रह्मचितन
ब्रह्मसायुज्य न० ब्रह्म साथे अभेद
ब्रह्मसूत्र न० यज्ञोपवीत(२)बादरायणरचित वेदातसूत्र
ब्रह्मस्तंब पु० विश्व, जगत
ब्रह्मस्थली स्त्री० वेद भणवानी शाळा
ब्रह्महत्या स्त्री० ब्राह्मणनी हत्या
ब्रह्मानंद पु० ब्रह्म साथे अभेदनो आनद
ब्रह्मावर्त पु० सरस्वती अने दृशद्वती नदी वच्चेनो देश (हस्तिनापुरथी वायव्यमा)
ब्रह्माश्रम पु० ब्रह्मचर्याश्रम
ब्रह्मास्त्र न० ब्रह्मा जेना अधिष्ठाता छे तेवु अस्त्र
ब्रह्मांगभू पु० घोडो(२)मत्रो बोली जेणे पोताना अवयवोने स्पर्श कर्यो छे ते
ब्रह्मांड न० मूळ अड, जेमाथी विश्व उत्पन्न थयु छे(२)विश्व
ब्रह्मांडभांडोदर न० ब्रह्माडरूपी पोलाण
ब्रह्मिष्ठ वि० वेदपारगत, वेदवेत्ता
ब्राह्म वि० ब्रह्मा सबधी (२) ब्रह्म सबधी (३) ब्राह्मणोनु (४) वेदाभ्यासने लगतु, ब्रह्मज्ञानने लगतु(५) वेदविहित, शास्त्रविहित (६) ब्रह्मलोक सबधी(७)पु० विवाहना आठ प्रकारोमानो एक (कोई पण दायजो लीधा विना आभूषणयुक्त कन्या परणावी देवी ते – श्रेष्ठ प्रकार)
ब्राह्मण वि० ब्रह्मने जाणनारु (२) ब्राह्मण संबधी (३) ब्राह्मणने उचित (४) पु० चार वर्णोमाना प्रथम वर्णनो पुरुष(५)न०यज्ञक्रियामा कया वेदमत्रोनो प्रयोग करवो तेना नियमो वगेरेनी चर्चा करतो वेदनो खड (मत्रखडयी जुदो) (६)ए प्रकारना ग्रथोनो समुदाय

ब्राह्मणक पु० नीच ब्राह्मण
ब्राह्मणब्रुव पु० मात्र नामनो ज ब्राह्मण (ब्राह्मणना कर्म न करनारो)
ब्राह्मणातिक्रम पु० ब्राह्मणोनो अनादर
ब्राह्मणी स्त्री० ब्राह्मण वर्णनी के ब्राह्मणनी स्त्री (२) बुद्धि (३) एक जातनो कांचिडो
ब्राह्मण्य न० ब्राह्मणोनो समुदाय
ब्राह्ममुहूर्त पु० दिवसनो शरूआतनो समय, सूर्योदय पहेलानी बे घडी
ब्राह्मी स्त्री० ब्रह्मनी शक्ति (२) वाणी (३) सरस्वती (४) धर्माचार; वेदविधि (५) एक वनस्पति
ब्रुव, ब्रुवाण वि० (समासने छेडे) नामनु ज, नाम प्रमाणेना आचरणवाळु नहि तेवु (उदा० 'ब्राह्मणब्रुव')
ब्रू २ उ० बोलवु; कहेवु (२) जाहेर करवु (३) नाम आपवु, नामे ओळखवु

भ

भ न० तारो; नक्षत्र, ग्रह; राशि
भक्त ('भज्' नु भू०कृ०) वि० वहेचेलु; भाग पाडेलु (२) भजेलु, पूजेलु (३) तत्पर, लीन (४) वफादार (५) राधेलु (६) (समासने छेडे) चाहेलु, गमतु होय तेवु (७) पु० उपासक, भजनारो (८) न० भाग; हिस्सो (९) राधेलो भात (१०) अन्न, भोजन (११) वेतन; रोजी
भक्ताग्र पु०, न० भोजननो ओरडो (साधुओना मठमा)
भक्ति स्त्री० विभाग पाडवा ते (२) विभाग, हिस्सो (३) उपासना, भजन (४) विश्वास; श्रद्धा (५) रचना, गोठवण (६) पक्ति, क्रम (७) शणगार (८) उपचार; लक्षणा
भक्तिगंधि वि० भक्तिनो अश बहु ओछो होय तेनु, नामनी ज भक्तिवाळु
भक्तिचित्र न० चितरामण
भक्तिच्छेद पु० चितरामणनी के शणगारनी पक्तिओ – रेखाओ
भक्तिपूर्वकम् अ० भक्तिथी
भक्तिभाज् वि० एकनिष्ठ, वफादार (२) भक्तियुक्त
भक्तियोग पु० एकनिष्ठ भक्ति
भक्ष् १० उ० खावु, भक्षण करवु (२) वापरी नाखवु (३) नकामु खर्ची नाखवु (४) करडवु
भक्ष पु० खावु ते (२) भोजन
भक्षक वि० खानारु; –खाईने जीवनारु (२) खाउधरु
भक्षण वि० खानारु (२) न० खावु ते
भक्षणीय वि० खावा योग्य
भक्षिका स्त्री० भोजन (२) (समासने अते) –खावु ते
भक्ष्य वि० खावा योग्य (२) न० कोई [पण भोज्य
भक्ष्यभक्षकौ पु० द्वि० व० खावानी वस्तु अने खानार (ए बे)
भक्ष्याभक्ष्य न० खावा योग्य अने न खावा [योग्य पदार्थ
भग पु० सूर्य (२) सद्भाग्य, नसीब (३) समृद्धि (ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान अने वैराग्य –ए छनो समूह) (४) कीर्ति; यश (५) स्त्रीनी गुह्येंद्रिय (६) न० उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र
भगदेव पु० अत्यत कामी पुरुष
भगदैवत न० उत्तराफल्गुनी नक्षत्र
भगनेत्रहर पु० शिव
भगवत् वि० समृद्धिमान (२) पूज्य, पवित्र (देवोने माटे तथा आदरणीय पुरुषो माटे वपराय छे) (३) पु० देव (४) विष्णु, शिव, जिन; बुद्ध इ०

भगवती स्त्री० दुर्गा (२) लक्ष्मी (३) कोई पण आदरणीय स्त्री
भगवदीय पु० विष्णुभक्त
भगिनिका स्त्री० नानी बहेन
भगिनी स्त्री० बहेन (२) ऐश्वर्यवाळी के भाग्यवान स्त्री (३) कोई पण स्त्री
भगिनीपति पु० बनेवी
भगिनीय पु० बहेननो पुत्र; भाणो
भगीरथ पु० एक सूर्यवंशी राजा (जे गंगाने पृथ्वी पर लाव्यो हतो)
भग्न ('भज्' नु भू० कृ०) वि० भांगेलु; तूटेलु (२) हताश थयेलु (३) रोकेलु, अटकावेलु (४) छेक ज हरावेलु (५) नष्ट
भग्नपरिणाम वि० (कार्य) पूरु करता अटकावायेलु [निराश बनेलु
भग्नमनोरथ वि० मनोरथोनी बाबतमां
भग्नव्रत वि० पोताना व्रत-प्रतिज्ञानो भंग करनारु; व्रत खंडित कर्युं होय तेवु
भग्नाश वि० हताश, निराश
भग्नी स्त्री० बहेन [होय तेवु
भग्नोद्यम वि० जेनो प्रयत्न विफळ गयो
भज् १ उ० भाग पाडवा, हिस्सा पाडवा (२) हिस्सो मेळववो (३) स्वीकारवु (४) —नो आशरो लेवो (५) सेववुं, अपनाववु (६) भोगववु, अनुभववु (७) तहेनातमां रहेवु; सेवा करवी (८) पूजवु; उपासवु (९) पसंद करवु (१०) उपभोग करवो (११) —ने भागे आववु (१२) अनुग्रह करवो (१३) —मां मंडवु, —मां लागवु
भजन न० भजवु ते, सेववु ते (२) धारण करवु ते, मालिक होवु ते (३) भाग पाडवा ते (४) —नी तहेनातमां रहेवु ते
भजमान वि० भाग पाडतु (२) भोगवतु (३) छाजतु, उचित
भट पु० वीर, लडवैयो, योद्धो (२) भाडूती सैनिक (३) दास, नोकर
भट्ट पु० स्वामी, मालिक (२) पंडित; विद्वान (३) भाट, चारण
भट्टारक वि० पूज्य, सम्माननीय (२) पु० संत, ऋषि (३) देव (४) राजा
भट्टिनी स्त्री० पटराणी नहि तेवी राणी (२) खानदान महिला
भण् १ प० बोलवु, कहेवु (२) वर्णववु (३) नामथी ओळखवु (४) अवाज करवो
भणन, भणित न०, **भणिति** स्त्री० बोल; वाणी, वातचीत [संबोधन
भदंत पु० बौद्ध भिक्षु माटेनु मानवाचक
भद्र वि० समृद्ध; सुखी (२) शुभ; कल्याणकर (३) मुख्य, आगेवान (४) अनुकूळ (५) मनोहर, सुंदर (६) मायाळु, कृपाळु (७) प्रशंसापात्र (८) प्रिय (९) कुशळ; प्रवीण (१०) न० सुख; सद्‌भाग्य; समृद्धि (११) पु० एक जातनो हाथी
भद्रक वि० शुभ, मंगळ (२) सद्‌गुणी (३) सुंदर (४) पु० एक कठोळ (५) देवदार वृक्ष (६) न० बेसवानु एक आसन (७) अंतःपुर
भद्रकांत पु० सुंदर पति के प्रेमी
भद्रदिश् स्त्री० शुभ दिशा (दक्षिण)
भद्रपीठ न० राजसिंहासन
भद्रमुख वि० 'शुभमुखवाळु' (मानवाचक संबोधन)
भद्रमुखी स्त्री० (शुभ मुखवाळी) भली स्त्री, आदरणीय स्त्री
भद्रंकर वि० कल्याणकारक, मंगळकारी
भद्रा स्त्री० सुभद्रा, कृष्ण—बळरामनी बहेन (२) गाय (३) स्वर्गंगा
भद्राकरण न० हजामत
भद्राकृ ८ प० हजामत करवी
भद्रासन न० राजानु सिंहासन (२) योगनु एक आसन [बोलवु, कहेवु
भन् १ प० पूजवु (२) बूम पाडवी (३)
भय न० बीक, डर (२) जोखम
भयप्रद वि० भय उपजावनारु, भयंकर
भयस्थान न०, **भयहेतु** पु० भयनु कारण
भयंकर वि० भयजनक (२) जोखमवाळु
भयानक वि० भयंकर

भयापह वि० भय दूर करनारु
भयालु वि० बीकण, बीनेलु
भयावह वि० भयमा नाखनारु; जोखमकारक [सरातु)
भयोत्तर वि० भययुक्त (भय वडे अनु-
भर वि० (समासने छेडे) धारण करनारु; भरणपोषण करनारु इ० (२) पु० बोजो, भार (३) मोटो जथो-सख्यासमुदाय (४) पुष्कळपणु (५) उत्तमता; श्रेष्ठता
भरण वि० भरणपोषण करनारु (२) धारण करनारु (३) न० पोषवु ते (४) धारण करवु ते (५) रोजी, पगार (६) पु० भरणी नक्षत्र
भरत पु० दुष्यत – शकुंतलानो पुत्र (जेना नाम परथी 'भरतवर्ष' नाम पडचु छे) (२) दशरथ – कैकेयीनो पुत्र (३) नाट्यशास्त्रना कर्ता मुनि (४) नट (५) भाडूती सैनिक
भरतखंड पु० भरतवर्षना एक भागनु नाम
भरतपुत्र पु० नट
भरतवर्ष पु० भारत (प्राचीन नाम)
भरतवाक्य न० सस्कृत नाटकमा अते मुकातो आशीर्वादनो श्लोक
भरताग्रज पु० राम (भरतना मोटाभाई)
भरात् अ० जुओ 'भरेण'
भरि वि० (समासने छेडे) भरनारु, पोषनारु (उदा० 'उदरभरि')
भरित वि० पोषेलु (२) –थी भरेलु (३) भारवाळु, बोजावाळु
भरेण अ० पूरेपूरु होय तेम, पोतानी सघळी ताकातथी
भर्ग पु० शिव (२) तेज, दीप्ति
भर्गस् न० तेज, दीप्ति
भर्जन वि० शेकनारु (२) नाश करनारु (३) न० शेकवु ते (४) तवो
भर्तव्य वि० वहन करवा–ऊचकवा योग्य (२) भाडे राखवा योग्य
भर्तृ पु० पति, स्वामी (२) शेठ; मालिक (३) नायक, आगेवान (४) रक्षक; पोषक (५) जगतना स्रष्टा
भर्तृचित्त वि० पतिनो विचार करतु
भर्तृदारक पु० राजकुमार; युवराज (नाटकमा सबोधन)
भर्तृदारिका स्त्री० राजकुमारी (नाट्य०)
भर्तृप्रिय. भर्तृभक्त वि० मालिकने वफादार एवु [स्त्री
भर्तृमती स्त्री० पति जीवतो होय तेवी
भर्त्स् १० उ० ठपको आपवो; तिरस्कारवु (२) धमकी आपवी
भर्त्सन न०, **भर्त्सना** स्त्री० धमकी (२) ठपको, तिरस्कार
भर्मन् न० भरणपोषण (२) वेतन; रोजी
भल्ल पु० रीछ (२) पु०, न० एक जातनु अर्धचद्राकार बाण (३) बाणना अमुक भागनु नाम
भल्लूक पु० रीछ
भव वि० (समासने छेडे) –माथी उत्पन्न थनारु (२) पु० सत्ता, अस्तित्व (३) जन्म, उत्पत्ति (४) मूळ (५) ससार (६) समृद्धि (७) श्रेष्ठता (८) शिव (९) प्राप्ति
भवच्छिद् वि० पुनर्जन्मनो नाश करनारु
भवच्छेद पु० पुनर्जन्मनो नाश
भवत् वि० होतु, थतु (२) स० ना० (मानार्थे) आप, तमे (क्रियापदना त्रीजा पुरुषना रूप साथे)
भवती स्त्री० (मानार्थे) आप, तमे
भवदीय वि० आपनु; तमारु
भवन न० अस्तित्व (२) जन्म, उत्पत्ति (३) निवासस्थान (४) पात्र; स्थान (५) मकान (६) खेतर
भवनीय वि० थवानी तैयारीमा होय तेवु
भवभूति पु० एक प्रसिद्ध कवि
भवमोचन पु० श्रीकृष्ण [जगतनो अत
भववीति स्त्री० ससारमाथी मुक्ति (२)

भवसागर पु० जुओ 'भवाब्धि'
भवात्मज पु० गणेश (२) कार्तिकेय
भवादृक्ष, भवादृश्, (–श) वि० आपना जेवु, तमारा समान
भवानी स्त्री० पार्वती
भवानीगुरु पु० हिमालय(पार्वतीना पिता)
भवानीपति पु० शकर
भवाप्ययौ पु० द्वि० व० उत्पत्ति अने [नाश
भवाब्धि पु० ससाररूपी सागर
भवाभवौ पु० द्वि० व० सपत्ति अने आपत्ति
भवांतर न० बीजो जन्म (आगळनो के [पाछळनो)
भवितव्य वि० थवा के होवा लायक (२) तरतमा ज थवानु एवु (३) न० थवानु ते, नियत थयेलु ते
भवितव्यता स्त्री० नसीब, नियति
भवितृ वि० भविष्यमा थनारु(२)तरतमा थवानु
भविष्य वि० भविष्यमा थनारु(२)न० [भविष्यमा बनवानु ते
भविष्यत् वि० भविष्यमा बनवानु, बनवानी तैयारीमा होय तेवु (२) न० भविष्यकाळ
भवोच्छेद पु० ससारभ्रमणनो नाश
भव्य वि० भविष्यमा बनवानु (२) सभवित (३) उचित (४) उत्तम (५) शुभ (६) सुदर (७) शात; स्वस्थ (८) न० अस्तित्व (९) भविष्यकाळ (१०) परिणाम, फळ (११) सुफळ, समृद्धि
भष् १ प० भसवु (२) ठपको आपवो, [वढवु
भस वि० प्रकाशतु, दीपतु
भसित वि० भस्मीभूत करेलु(२)न० भस्म, राख
भस्त्रा, भस्त्रिका, भस्त्री स्त्री० धमण [(२)चामडानी मसक
भस्मन् न० राख, भस्म
भस्मभूत वि० मृत
भस्मसात् अ० राखोडी रूपे
भस्मावशेष वि० मात्र राखरूपे बाकी रहेलु (बाळी नाखेलु)
भस्मीकृत वि० राखोडीरूप बनावी दीधेलु (बाळी नाखेलु) (२) भस्म बनावेलु (धातुने मारीने) (३) चूर्णरजरूप बनावेलु
भस्मीभूत वि० राखोडी बनेलु, बाळी नाखेलु (२) नकामु तुच्छ बनी गयेलु
भंग पु० तूटवु–भागवु–छूटु पडवु ते, तोडवु–छूटु पाडवु ते (२) चूटवु ते (३) टुकडो; हिस्सो (४) नाश; पडती; विनाश (४) विखेरी नाखवु ते (५) पराजय, उथलावी पाडवु ते, पराभव (६) निष्फळता, निराशा (७) नकारवु ते, ना पाडवी ते (८) रुकावट, विघ्न, डखल (९) भागी के नासी जवु ते (१०) गडी (११) मोजु (१२) वळाक, मरोड
भंगि स्त्री० तूटवु ते, तोडवु ते (२) मोजु, तरग (३) वळाक, मरोड (४) आडकतरी रीते कहेवु ते (५) मिष; बहानु (६) युक्ति, छळ (७) पगथियु (८) पद्धति, प्रकार, रीत
भंगिन् वि० बरड, भागी जाय तेवु
भंगिनी स्त्री० नदी
भंगिभक्ति स्त्री० जुदा जुदा पगथिया के मोजां रूपे रचना अथवा गोठवण
भंगिभाषण न० वक्रोक्ति
भंगिविकार पु० मो मरोडीने करेली चेष्टा [के चाळो
भंगी स्त्री० जुओ 'भंगि'
भंगुर वि० बरड, भागी जाय तेवु (२) क्षणिक, नाशवत (३) वाकु (४) कुटिल, कपटी
भंग्यंतरेण अ० आडकतरी रीते, जुदी [रीते
भंज् ७ प० भागवु, तोडवु, फाडवु (२) विफळ करवु(३)रुकावट-डखल करवी (४) हरावबु (५) १० उ० प्रकाशित करवु (६) प्रकाशवु (७) बोलवु
भंजक वि० भागनारु; तोडनारु
भंजन वि० भांगनारु, तोडनारु (२) रोकनारु (३) न० भागवु के तोडवु ते (४) दूर करवु ते (५) हरावबु ते

भंड् १ आ० भाडवु (२) मजाक करवी (३) १० उ० भाग्यशाळी करवु के थवु
भंड पु० मश्करो, भाड
भंडिका, भंडी स्त्री० मजीठ
भंडीर पु० वडनु झाड
भा २ प० दीपवु, प्रकाशवु (२) जणावु, देखावु (३) अस्तित्व होवु (४) फूकवु, फूकावु (५) खुश थवु
भा स्त्री० प्रकाश, तेज; काति (२) छाया, पडछायो (३) सादृश्य
भाग पु० हिस्सो, विभाग (२) भाग पाडवो के वहेचवो ते (३) नसीबे होवु ते (४) आखानो विभाग के अंश (५) अवकाश, जगा
भागधेय पु० कर; वेरो (२) न० हिस्सो, भाग (३) नसीब (४) सद्भाग्य (५) समृद्धि, सुख
भागवत वि० भगवत्–विष्णुनु भक्त एवु (२) देव सबधी (३) पु० विष्णुनो भक्त (४) न० ए नामनु पुराण
भागशस् अ० भाग प्रमाणे (२) भागथी
भागहर पु० वारसामा हिस्सेदार
भागार्थिन् वि० हिस्सानी इच्छावाळु
भागिन् वि० भागवाळु, भाग पडावतु (२) मालिक (३) नसीबदार (४) हिस्सेदार, हिस्सानु अधिकारी
भागिनेय पु० बहेननो दीकरो, भाणेज
भागीरथी स्त्री० गगा नदी
भाग्य वि० भागवा योग्य, भागी शकाय तेवु (२) भाग–हिस्साने पात्र (३) भाग्यशाळी, नसीबवान (४) न० नसीब (५) सद्भाग्य (६) समृद्धि
भाग्यक्रम पु० नसीबनो वारोफेरो
भाग्यरहित वि० कमनसीब
भाग्यवत् वि० नसीबदार (२) समृद्ध
भाग्यवशात् अ० दैवयोगे, नसीबजोगे
भाग्यविप्लव पु० दुर्दैव, कमनसीब
भाग्यसंपद् स्त्री० सद्भाग्य, समृद्धि
भाग्यायत्त वि० नसीबने अधीन
भाग्येन अ० नसीबजोगे; सद्भाग्ये
भाग्योदय पु० सद्भाग्यनो उदय थवो ते
भाज् १० उ० भाग पाडवो, वहेचवु
भाज् वि० (समासने छेडे) हिस्सेदार के भागीदार बनतु के थतु (२) मालिक एवु; –वाळु (३) हकदार (४) भोगवतु; अनुभवतु (५) –मा वसतु (६) –मा लागु रहेतु (७) –नो आशरो लेतु (८) पूजतु (९) करवा योग्य एवु, कर्तव्य
भाजन न० भाग पाडवो ते (२) भागाकार (३) पात्र; आधारस्थान (४) लायक वस्तु के माणस
भाजिन् पु० नोकर
भाट, भाटक न० भाडु
भाण पु० नाटकनो एक प्रकार (तेमां रंगभूमि उपर एक ज पात्र प्रवेशे छे)
भात ('भा' नु भू० कृ०) वि० प्रकाशित; उज्ज्वळ (२) पु० प्रातःकाळ
भाद्र, भाद्रपद पु० भादरवो महिनो
भान न० ज्ञान (२) देखावु ते (३) प्रकाश [(३) सूर्य
भानु पु० प्रकाश (२) प्रकाशनु किरण
भानुभू स्त्री० यमुना [पु० सूर्य
भानुमत् वि० तेजस्वी (२) सुदर (३)
भामा स्त्री० क्रोधी स्त्री
भामिनी स्त्री० सुदर जुवान स्त्री (२) क्रोधी स्त्री (मुख्यत्वे प्रेमनु सबोधन)
भार पु० बोजो, वजन (२) ज्या सौथी वधु घमसाण मच्यु होय ते भाग (रणभूमिनो) (३) अतिशयता, पराकाष्ठा (४) परिश्रम, मजूरी (५) मोटो जथो (६) (सोनाना २००० पल जेटलु) एक वजन (७) कोईना उपर नाखेल कामनो बोजो (८) झूसरी
भारक वि० (समासने छेडे) –नो भार लादेलु (२) बोजो (३) एक वजन

भारत वि० भरतनु के भरतमाथी ऊतरी आवेलु (२) पु० भरतनो वंशज (३) भरतवर्षनो वतनी (४) नट (५) न० भरतवर्ष (६) महाभारत ग्रंथ (७) भरत मुनिए प्रवर्तविलु संगीत अने नाट्यनु शास्त्र

भारतवर्ष न० जुओ 'भरतवर्ष'

भारती स्त्री० वाणी (२) वाणीनी देवी सरस्वती (३) एक साहित्य-शैली

भारद्वाज पु० द्रोणाचार्य (२) सप्तर्षिमाना एक ऋषि (३) अगस्त्य (४) मंगळ ग्रह (५) न० हाडकुं

भारवाह पु० भार वहेनारो

भारसह वि० भार ऊचकी शके तेवु

भारसाधन वि० मोटा के अघरा काम पार पाडनारु

भारसाह वि० जुओ 'भारसह'

भारंड पु० एक कल्पित पक्षी

भाराक्रांत वि० अतिभारथी लदायेलु

भारिक, भारिन् वि० भार ऊंचकनारु (२) भारे वजनदार (३) पु० भार ऊचकनार माणस, हमाल

भारोपजीवन न० भार वहीने जीववु ते, मजूर – हमालनु जीवन

भार्गव पु० शुक्राचार्य (२) परशुराम (३) जमदग्नि (४) कुभार

भार्या स्त्री० (विधिसर परणेली) पत्नी

भाल न० कपाळ, ललाट

भालचंद्र, भालदृश्, भाललोचन पु० शिव

भालुक, भालूक, भाल्लुक, भाल्लूक पु० [रीछ

भाव पु० अस्तित्व (२) बनवु के थवु ते (३) स्थिति, स्वरूप; अवस्था (४) प्रकार, पद्धति (५) पद, होद्दो (६) वास्तविकता; सत्य (७) भक्ति, निष्ठा, भावना (८) मूळ स्वभाव (९) वलण; वृत्ति; अभिप्राय; धारणा (१०) मनोवृत्ति; लागणी (११) तात्पर्य, अर्थ, रहस्य (१२) निश्चय (१३) हृदय, आत्मा (१४) कोई पण सत् वस्तु के पदार्थ (१५) प्राणी (१६) चिंतन, भावना (१७) चेष्टा, कामचेष्टा (१८) जन्म (१९) संसार; जगत (२०) संकल्प (२१) आदरणीय व्यक्ति (नाट्य०) (२२) कल्याण (२३) रक्षण (२४) प्रारब्ध (२५) वासना (२६) प्रभुत्व

भावक वि० निपजावनार (२) पोतानु हित साधनारु (३) कल्पना करनारु (४) सौंदर्य माटे कदर के रुचिवाळु

भावगति स्त्री० अंतरनो भाव दर्शाववानी शक्ति

भावगम्य वि० मनना भावथी कल्पेलु

भावत्क वि० आपनु

भावन वि० सर्जक, निपजावनारु (२) हित के कल्याण साधनारु (३) पु० सर्जनार, हेतु, कारण (४) शिव (५) न० सर्जवु के प्रगट करवु ते (६) कोईनु हित वधारवु ते (७) कल्पनाशक्ति (८) भावना, श्रद्धा; निष्ठा (९) चिंतन, मनन (१०) ज्ञान, समज (११) पर्यालोचन, तपास

भावना स्त्री० सर्जवु के प्रगटाववु ते (२) हित के कल्याण साधवु ते (३) कल्पना; धारणा (४) निष्ठा, श्रद्धा (५) चिंतन; मनन (६) औषधने कोई रसमा बोळी पुट आपवो ते

भावनायुक्त वि० विचार करतु, चिंता- [युक्त

भावबंधन वि० हृदयने मोह पमाडनारु (२) हृदयोने जोडनारु

भावमिश्र पु० सद्गृहस्थ (नाट्य०)

भावयितृ वि० उत्कर्ष साधनारु

भावरूप वि० वास्तविक; खरु

भावविकार पु० कोई पण सत् पदार्थनो गुणधर्म

भावशून्य वि० साचा प्रेम विनानु

भावस्थ वि० (एक जण प्रत्ये ज) निष्ठावाळु, वफादार

भावस्थिर वि० हृदयमा दृढमूळ थयेलु

भावस्निग्ध वि० हार्दिक प्रेमवाळु

भावंगम वि० सुदर, मनोहर

भावाकूत न० मनना गुप्त विचार

भावात्मक वि० वास्तविक, खरु

भावार्थ पु० तात्पर्य, मतलब (२) तत्त्व, सार

भावाव वि० स्नेहाळ, दयाळु (२) [नाजुक, कोमळ

भाविक वि० साहजिक, कुदरती (२) भावभर्यु (३) भविष्यनु

भावित वि० सर्जायेलु, पेदा थयेलु; प्राप्त थयेलु (२) प्रगट करेलु (३) चिंतवेलु, विचारेलु, कल्पेलु, धारेलु (४) ओळखेलु (५) मनन करेलु (६) –थी व्याप्त (७) –मा पलाळेलु (८) –थी सुगंधित करेलु (९) प्रेरेलु, स्थिर करेलु (१०) वश करेलु (११) प्रसन्न थयेलु के करेलु

भावितबुद्धि वि० जुओ 'भावितात्मन्'

भावितभावन वि० पोतानु तेम ज बीजानु हित साधनारु

भाविता स्त्री० बनवानो के थवानी दशा (२) भविष्यमा थवानु नियत होवु ते

भावितात्मन् वि० परमात्माना चिंतनथी पवित्र थयेला हृदयवाळु (२) पवित्र, एकनिष्ठ (३) चिंतनशील, मननशील (४) –मा लागेलु

भाविन् वि० बनतु के थतु (२) भविष्यमा थनारु, भविष्यनु (३) बनी शके के थई शके तेवु (४) नियत होय तेवु (५) एकनिष्ठ

भाविनी स्त्री० सुदर स्त्री (२) शीलवती के खानदान स्त्री (३) स्वेच्छाचारिणी के कामुक स्त्री

भावुक वि० बनवा के थवानी तैयारीमा होय तेवु (२) समृद्ध, सुखी (३) शुभ (४) रसिक; कदरदान (५) पु० बनेवी (नाट्य०) (६) समृद्धि

भावैकरस वि० मात्र प्रेमभावथी प्रवर्ततु

भाव्य वि० बनवानी के थवानी तैयारीमा होय तेवु (२) भविष्यनु (३) आचरवा के कल्पवा योग्य (४) सावित करवा योग्य (५) तपास करवा के विचारवा योग्य (६) न० जे बनवानु निश्चित होय ते

भाष् १ आ० बोलवु, कहेवु (२) –ने विषे कहेवु (३) बोलाववु [व्याख्यान

भाषण न० बोलवु ते, कहेवु ते (२)

भाषा स्त्री० वातचीत, वाणी (२) बोली, जबान (३) चालु–बोलाती बोली (४) व्याख्या, विवरण (५) सरस्वती (वाणीनी देवी)

भाषांतर न० बीजी भाषा (२) तरजुमो

भाषित ('भाष्'नु भू०कृ०) वि० बोलेलु; कहेलु (२) न० वाणी, बोली, भाषा

भाषितेशा स्त्री० सरस्वती

भाषिन् वि० (समासने छेडे) बोलतु, कहेतु (२) वातोडियु

भाष्य न० बोलवु ते (२) विस्तृत विवरण

भाष्यभूत वि० विवरण के टीकारूप एवु

भास् १ आ० प्रकाशवु, चमकवु (२) स्पष्ट थवु, समजावु; देखावु

भास् स्त्री० प्रकाश; तेज, चळकाट (२) प्रकाशनु किरण (३) प्रतिबिंब (४) शोभा, प्रताप

भास पु० दीप्ति, कांति (२) तरंग, कल्पना (३) एक कवि (४) एक पक्षी

भासुर वि० प्रकाशित; तेजस्वी

भास्कर पु० सूर्य (२) अग्नि (३) शिव (४) न० सोनु (५) चोरे भीतमा करेलु बाकु

भास्कराध्वन् पु० आकाश

भास्मन वि० भस्मनु बनेलु

भास्वत् वि० तेजस्वी, चळकतु (२) पु० सूर्य (३) प्रकाश

भास्वर वि० प्रकाशित, देदीप्यमान (२) पु० सूर्य (३) दिवस (४) अग्नि
भांड न० पात्र, वासण (२) पेटी, खोखु, खानु (३) ओजार, साधन (४) वाजित्र (५) दुकानदार के वेपारीनो मालसामान (६) कीमती माल के वस्तु(७)घोडा उपर नाखवानो सामान(८)चाळा, चेष्टा(९)आभूषण (१०) साधनसामग्री; उपकरण(११) मूडी, मूळ धन
भांडपति पु० वेपारी
भांडमूल्य न० माल-सामानरूपी मूडी
भांडागार पु०, न० भडार(२)खजानो
भांडार न० भडार [सामान
भांडा. पु० ब० व० वेपारीनो माल-
भांडिनी स्त्री० टोपली, पेटी
भांडीर पु० वडनु झाड
भिक्ष् १ आ० भीखवु, मागवु (२) भिक्षा तरीके मागवु
भिक्षा स्त्री० भीख, याचना(२)दानधर्म तरीके आपेलु के मळेलु ते(३)आजीविकानु साधन [(२)पु० भिखारी
भिक्षाचर वि० भिक्षा माटे भटकनारु
भिक्षाटन न० भीख माटे भटकवु ते (२)पु० भिखारी
भिक्षान्न न० भिक्षामा मळेलु अन्न
भिक्षापात्र, भिक्षाभांड न० भीख मागवा माटेनु पात्र
भिक्षायण (–न) न० जुओ 'भिक्षाटन'
भिक्षाशन न० जुओ 'भिक्षान्न'
भिक्षाशिन् वि० भिक्षा मागीने जीवनारु (२) अप्रमाणिक
भिक्षाहार पु० जुओ 'भिक्षान्न'
भिक्षित ('भिक्ष्' नु भू० कृ०) वि० भीखेलु, मागेलु, याचेलु
भिक्षु पु० भीख मागनार (२) भिक्षा उपर जीवनार (ब्रह्मचारी, सन्यासी, जैन-बौद्ध परिव्राजक इ०)
भिक्षुक पु० भिखारी
भित्त न० खड, टुकडो(२)भीत, आड
भित्ति स्त्री० भागवु के फाडवु ते (२) भीत, आड (३) चित्र वगेरे माटेनो पडदो के स्थान(४)टुकडो, खड (५) फाट, चीरो (६) भीत जेवी सपाटी
भिद् वि० (समासने छेडे) फाडनारु, चीरनारु, तोडनारु
भिद् १ प० [भिंदति] कापीने भाग पाडवा (२) ७ उ० भागवु, फाडवु, वीधवु (३) खोदवु (४) –मा थईने पसार थवु (५) छूटु पाडवु; खसेडवु (६) तोडवु (करार, प्रतिज्ञा इ०), उल्लघन करवु (७)दूर करवु (८) खडित करवु, डखल करवी (९) पलटवु, बदलवु (१०) विकसाववु, खिलाववु (११) विखेरी नांखवु (१२) छोडी नाखवु, ढीलु करवु (बधन-गाठ) (१३) भेद के कुसप ऊभा करवा(१४)समजाववु के समजवु (रहस्य-तात्पर्य) (१५) छोडवु, ढीलु करवु (१६) खुल्लु करवु (रहस्य) (१७) मूझववु, डराववु
भिदा स्त्री० फाडवु, चीरवु, भागवु के तोडवु ते (२) वियोग, विच्छेद (३)भेद, तफावत(४)प्रकार
भिदुर वि० भागी जतु, तूटी जतु, चिराई जतु (२) बरड, झट भागी जाय तेवु (३) मिश्रित
भिद्य पु० जोरथी वहेतो नद
भिन्न ('भिद्' नु भू० कृ०) वि० फाडेलु, फाटेलु, चीरेलु, भागेलु (२) छूटु पडेलु के पाडेलु (३) वीखराई गयेलु (४) खीलेलु (५) जुदु (६) जुदु जुदु, अनेकविध (७) मिश्रित, भळेलु के भेळवेलु (८) खडु थयेलु (जेम के गाळ) (९) फोडेलु (लाच इ० थी) (१०) उन्मार्गगामी

भूगोल पु० पृथ्वीनो गोळो
भूचर वि० जमीन उपर फरतुं के रहेतु ('जलचर थी ऊलटु)
भूत ('भू'नु भू० कृ०) वि० बनेलु; थयेलु (२) वस्तुताए बनेलु, साचु (३) योग्य, उचित (४) भूतकाळनु (५) मळेलु (६) समान, सरखु (७) पु० पुत्र, बाळक (८) न० कोई पण सत् वस्तु (मानव, दैवी के निर्जीव पण) (९) पिशाच; प्रेत (१०) मूळतत्त्व (पाच छे पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, आकाश) (११) भूतकाळ (१२) कल्याण, हित
भूतकर्तृ, भूतकृत् पु० ब्रह्मा
भूतगण पु० सृष्टिना प्राणीओनो समुदाय (२) भूत-प्रेतनो आखो वर्ग
भूतगत्या अ० साचेसाच
भूतग्राम पु० बधा प्राणीओनो समुदाय
भूतचिंतक पु० जीव के चैतन्य तो पचभूतोनो स्वभाव छे, एवु माननारो वादी, 'स्वभाववादी'
भूतजननी स्त्री० बधा प्राणीओनी माता
भूतधात्री स्त्री० पृथ्वी (२) निद्रा
भूतनाथ पु० शिव
भूतपति पु० शिव (२) आकाश (३) अग्नि [मरी गयेलु
भूतपूर्व वि० पहेलांनु, अगाउनु (२)
भूतपूर्वम् अ० अगाउ, पहेलां
भूतप्रकृति स्त्री० सौ प्राणीओनुं मूळ
भूतभर्तृ वि० सौ प्राणीओने पोषनारु
भूतभावन पु० विष्णु (२) ब्रह्मा
भूतभृत् वि० महाभूतोने धारण करनारु (२) प्राणीओनु भरणपोषण करनारु
भूतयज्ञ पु० प्राणीमात्रने उद्देशीने अपातो बलि (पचमहायज्ञो पैकी एक)
भूतल न० पृथ्वीनी सपाटी [ते
भूतसमागम पु० प्राणीओनु भेगा मळवु
भूतसर्ग पु० सृष्टिनु के महाभूतोनु सर्जन (२) सृष्टिना प्राणीओनो वर्ग के कोटी
भूतसाक्षिन् पु० प्राणीओनु बधु जोनार के जाणनारो साक्षी
भूतसृज् पु० ब्रह्मा
भूतस्थान न० सौ प्राणीओनु निवासस्थान (२) भूतप्रेतनु निवासस्थान
भूतात्मन् वि० पवित्र अतरवाळु (२) पचभूतनु बनेलु (जेमके शरीर) (३) पु० जीवात्मा (४) ब्रह्मा, विष्णु इ०
भूतानुकंपा स्त्री० सौ प्राणीओ प्रत्ये दयाभाव [स्थिति; हकीकत
भूतार्थ पु० साची वात, साची वस्तु-
भूतावास पु० शरीर (२) शिव (३) विष्णु
भूति स्त्री० अस्तित्व; हयाती (२) जन्म; उत्पत्ति (३) कल्याण; सुखसपत्ति (४) सफळता, सद्भाग्य (५) समृद्धि (६) प्रताप, भव्यता (७) राखोडी, भस्म (८) रगीन पटाओथी करातो हाथीनो शणगार (९) तपश्चर्याथी मळती अलौकिक सिद्धि के सामर्थ्य
भूतेश पु० ब्रह्मा (२) विष्णु (३) शिव
भूतेश्वर पु० शिव
भूतौदन पु० भूत-पिशाचनी असर दूर करवा खवातो भात
भूत्यर्थम् अ० समृद्धि माटे
भूदेव पु० ब्राह्मण
भूधर वि० पृथ्वीने टेकवतु (२) पृथ्वी उपर रहेतु (३) पु० पर्वत (४) शिव (५) शेषनाग (६) राजा
भूप पु० राजा
भूपति पु० राजा (२) शिव (३) इद्र
भूपाल पु० राजा
भूपुत्र पु० मगळ ग्रह (२) नरकासुर
भूपुत्री स्त्री० सीता
भूभर्तृ पु० राजा (२) पर्वत
भूभुज् पु० राजा
भूभृत् पु० पर्वत (२) राजा
भूमन् पु० मोटो जथो के सख्या
भूमि स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन (३) प्रदेश (४) स्थळ के जगा (५) मकाननो

माळ(६)भूमिका(नाट्य०)(७) पात्र; स्थान, विषय(८)हद, सीमा
भूमिकंप पु० धरतीकंप
भूमिका स्त्री० भूमि, जमीन (२) प्रदेश, जगा(३)मकाननो माळ(४) पायरी(समाधि इ०नी) (५)नाटकमा अभिनय माटेनो भाग के स्वांग(६) प्रस्तावना(ग्रंथनी)
भूमिकाभाग पु० ऊमरो (घरनो)
भूमिगृह न० भोंयतळ नीचेनो ओरडो
भूमिचल पु०, **भूमिचलन** न० धरतीकंप
भूमिधर पु० पर्वत(२)राजा
भूमिपुरंदर पु० राजा(२)दिलीप राजा
भूमिभृत् पु० पर्वत(२)राजा
भूमिरुह पु० वृक्ष
भूमिलाभ पु० मृत्यु
भूमिलेपन न० लीपण
भूमिवर्धन पु०, न० शब, मडदु
भूमिसत्र न० जमीन दानमा आपवी ते
भूमिसमीकृत वि० जमीनदोस्त करेलु
भूमिसंनिवेश पु० कोई पण देशनो सामान्य देखाव के घडतर
भूमिसुत पु० मंगळ ग्रह(२)नरकासुर
भूमिष्ठ वि० जमीन उपर रहेलु के ऊभेलु
भूमिंजय पु० विराटनो पुत्र, उत्तर
भूमी स्त्री० जुओ 'भूमि'
भूमीश्वर, भूमींद्र पु० राजा(२)पर्वत
भूम्यनंतर पु० पासेना प्रदेशनो राजा
भूय न० होवु के बनवु ते, –नी स्थिति पामवी ते (उदा० 'ब्रह्मभूय')
भूयशस् अ० घणु करीने, मुख्यत्वे(२) अत्यंत(३)वळी, उपरांत
भूयस् वि० वधारे, पुष्कळ(२)वधु मोटु(३)घणु मोटु, सख्यावध(४) –थी पूर्ण, –वधु जेमा होय तेवु (५) अ० अत्यंत, खूब(६)वळी, उपरांत (७) वारंवार
भूयसा अ० अति, अत्यंत (२) मोटे भागे, सामान्यपणे
भूयस्त्व न० पुष्कळ होवापणु(२)प्रधानता
भूयिष्ठ वि० पुष्कळ, अत्यंत(२)मुख्य, अगत्यनु(३)घणु मोटु, घणु वधारे(४) मोटे भागे होय तेवु, मोटा प्रमाणमा होय तेवु(६)लगभग आखु [अत्यंत
भूयिष्ठम् अ० घणे भागे, मोटे भागे (२)
भूयोदर्शन न० वारंवार जोवु ते
भूयोभूयस् अ० वारंवार
भूर् अ० त्रण व्याहृतिओमानी एक(२) सात पाताळोमाथी छेक नीचेनु
भूरि वि० घणु, पुष्कळ (२) मोटु (३)अ० अत्यंत, अति(४)वारंवार
भूरिकालम् अ० लांबा वखत सुधी
भूरिधामन् वि० घणा तेजवाळु
भूरिव्यय वि० उडाउ, अति खर्चाळ
भूरिशस् अ० बहुश , अनेक प्रकारे
भूरुह्(–ह) पु० वृक्ष
भूर्ज पु० भोजपत्रनु झाड(२)न० लखवा माटे वपराती तेनी छाल
भूर्जपत्र पु० भोजपत्रनु झाड
भूर्लोक पु० पृथ्वी, भूलोक
भूष् १ प०, १० उ० शणगारवु
भूषण न० आभूषण(२)शणगार
भूषाय आ० (आभूषण तरीके उपयोगमा आववु) [गारेलु, अलंकृत
भूषित ('भूष्'नु भू० कृ०) वि० शण-
भूष्णु वि० थतु, बनतु (२) उत्कर्ष इच्छतु, समृद्ध थवा इच्छतु
भूसुत पु० मंगळ ग्रह(२)नरकासुर
भूसुता स्त्री० सीता
भूसुर पु० भूदेव, ब्राह्मण
भृ १, ३ उ० भरवु (२) व्यापवु; भरी काढवु (३) वहन करवु, टेकववु(४) भरणपोषण करवु(५)धारण करवु, मालिक होवु (६)पहेरवु (७)अनुभववु, वेठवु(८) –ने अर्पवु, –मा उपजाववु (शोभा इ०) (९)स्मृतिमा राखवु
भृकुटि(–टी) स्त्री० भमर, भवु

भृकुंश(–स) पु० स्त्री-वेशधारी नट
भृग् स्त्री० ज्वाळा
भृगु पु० एक ऋषि (२)जमदग्नि (३) शुक्राचार्य (४)शुक्र ग्रह (५)शुक्रवार (६)भेखड; कराड
भृगुकच्छ पु०, न० भरूच (शहेर)
भृगुज, भृगुतनय पु० शुक्राचार्य (२) शुक्र ग्रह [(३)शौनक
भृगुनंदन पु० परशुराम (२) शुक्राचार्य
भृगुपतन न० कराड उपरथी पडवु ते
भृगुपति, भृगुशार्दूल, भृगुश्रेष्ठ, भृगुसत्तम पु० परशुराम
भृगुसुत, भृगुसूनु पु० परशुराम (२) शुक्राचार्य (३)शुक्र ग्रह
भृत् वि० (समासने छेडे) धारण करतु (२)टेकवतु, पोषतु (३)लावतु
भृत ('भृ'नु भू० कृ०) वि० ऊचकेलुं; वहन करेलु (२)टेकवेलु; पोषेलु (३) –थी युक्त, –थी पूर्ण (४)भाडे लीधेलु (५) पु० पगारदार नोकर
भृतक वि० पोषेलु (२) भाडे राखेलु (३) पु० पगारदार नोकर
भृति स्त्री० धारण करवु के पोषवु ते (२) –ने अर्पवु ते, –मां उपजाववु ते (३) पगार, भाडु (४) मूडी
भृत्य वि० पोष्य; जेनु भरणपोषण करवु पडे ते (२)पु० नोकर, आश्रित (३)राजानो कर्मचारी
भृत्यता स्त्री०, भृत्यभाव पु० दासपणु
भृत्यर्थम् अ० भरणपोषण माटे
भृत्यवर्ग पु० परिवार, नोकरवर्ग
भृत्यवात्सल्य न० नोकरो प्रत्ये मायाळुता
भृत्यायते आ० (नोकरनी जेम वर्तवु)
भृश वि० मजबूत, गाढ, पुष्कळ (२) वारवार थतु
भृशकोपन वि० झट गुस्से थई जाय तेवु
भृशदंड वि० कडक सजा करनारु
भृशदु:खित, भृशपीडित वि०अत्यत दु:खी
भृशम् अ० अत्यंत; अति (२)वारवार
भृष्ट ('भ्रस्ज्'नु भू० कृ०) वि० शेकेलु; भूजेलु
भृंग पु० भमरो
भृंगराज पु० भागरो (२)एक जातनो मोटो भमरो (३)एक पक्षी
भृंगार पु०, न० सोनानी झारी (२)झारी
भृंगी स्त्री० भमरानी मादा
भेक पु० देडको (२)बीकण माणस
भेड पु० घेटो (२) तरापो
भेडी स्त्री० घेटी
भेतव्य वि० जेनाथी डरवु जोईए तेवु
भेतृ वि० फोडनारुं; तोडनारु, भागनारु (२) डखल करनारु (३) रहस्य खुल्लुं करी देनारुं
भेद पु० भागवु, फाडवु, तोडवु के चीरवु ते (२)विभाग पाडवा ते (३)आरपार वींधवु ते (४)फाट; चीरो (५)फूटवु ते (६)विभाग (७) घा (८) जुदाई, विशिष्टता (९) बदलवु ते, विकृति उत्पन्न करवी ते (१०) कुसप (११) (रहस्य)बहार पाडी देवु ते (१२)दगो, द्रोह (१३)द्वैत ('अद्वैत'थी ऊलटु)
भेदक वि० भेदनारु; फाडनारु; तोडनारु, जुदु पाडनारुं; वींधनारुं (२)जुलाब लगाडे तेवु (३)बदलनारुं, फेरवनारु
भेदन वि० जुओ 'भेदक' (२) न० तोडवु, फाडवु के चीरवु ते
भेदसह वि० जुदु पाडी शकाय के फोडी शकाय तेवु (लांच इ० थी)
भेदाभेदौ पु०द्वि०व० सप-कुसप; समतिमतभेद (२) एकरूपता अने तफावत
भेदित वि० फाडेलु, तोडेलु; भाग पाडेलु
भेदिन् वि० भागनारु, तोडनारु इ०
भेदिर, भेदुर न० वज्र
भेदोन्मुख वि० फूटवानी के खीलवानी तैयारीमा होय तेवु [योग्य
भेद्य वि० फाडवा, चीरवा के वींधवा

भेरि(–री) स्त्री० नगारु, ढोल
भेरुंड वि० भयंकर, बिहामणु(२)पु० एक पक्षी
भेषज वि० मटाडे तेवु, नीरोगी बनावे तेवु(२)न० दवा, औषध (३) उपचार; उपाय
भैक्ष वि० भिक्षा वडे जीवतु(२)न० भीख(३)भीखीने मेळवेलु होय ते
भैक्षभुज् पु० भिखारी, याचक
भैक्षव वि० भिक्षुक सबधी
भैक्षवृत्ति स्त्री० भीखीने जीववु ते
भैक्षुक न० भिखारीओनो समुदाय
भैक्ष्य न० भीखीने मेळवेलु अन्न इ०
भैम वि० भीम सबधी(२)भयकर पराक्रम करनारु (३) पु० भीमनो वशज
भैमी स्त्री० दमयती (भीमराजानी पुत्री)
भैरव वि० भयकर, बिहामणु(२)पु० शिवनु एक स्वरूप(३)भय, डर(४) न० भय, डर
भैरवी स्त्री० दुर्गानु एक स्वरूप
भैषज न० दवा, औषध
भैषज्य न० उपचार करवो ते, दवा करवी ते (२) दवा, औषध
भोक्तृ वि० खानारु, भोगवनारु(२) अनुभवनारु (३) पु०मालिक, भोगवनार (४) पति (५) प्रियतम
भोग पु० खावु ते(२) भोगववु ते (३) परिणाम, फळ(४) मालकी (५) आवक; लाभ(६)–नी उपर शासन करवानु होवु ते (७)कामभोग (८)भोगपदार्थ (९)भोज्य पदार्थ(१०)मूर्तिने धरावेलु भोजन (११) वाक, वळाक (१२) सापनी फेलावेली फणा
भोगकर पु० उपभोग के आनद आपनार
भोगतृष्णा स्त्री० कामभोग के ससारभोगनी तृष्णा
भोगधर पु० साप
भोगपति पु० जिल्ला के प्रातनो हाकेम
भोगभूमि स्त्री० स्वर्ग इ० लोक (ज्या कर्मोना फळ ज भोगववाना होय छे)
भोगवत् वि० उपभोग के आनद आपनारु (२) सुखी, समृद्ध (३) कूडाळा के वळाकवाळु (४) पु० साप (५) पर्वत
भोगवती स्त्री० पातालगगा (२)नागण
भोगावली स्त्री० चारणे करेली स्तुति
भोगिन् वि० खानारु, भोगवतु(२)अनुभवतु, वेठतु(३)वापरनारु, मालिक (आ त्रण अर्थोमा, समासने छेडे) (४) वळाक के कूडाळावाळु (५) मोटा विपुल शरीरवाळु (६)फणावाळु(७) कामभोगमा आसक्त (८) समृद्ध, धनवान (९) पु० साप (१०) राजा
भोगिराज पु० शेषनाग
भोग्य वि० भोगववा योग्य (२) अनुभववा के वेठवा योग्य (३) लाभदायक
भोग्यवस्तु न० भोगपदार्थ
भोज वि० भोग आपनारु (२)भोगनु जीवन जीवनारु (३) पु० धारानगरी (माळवा)नो एक प्रसिद्ध राजा
भोजकुल न० विदर्भ–वराडना भोजराजाओनो वश
भोजन वि० खवरावतु, पोषतु(२)अकरातियु खानारु(३)न० खावानी वस्तु (४)खावु ते(५)उपयोगमा लेवु ते (६)उपभोगनो कोई पण पदार्थ(७) समृद्धि, मिलकत [भोजन
भोजनविशेष पु० स्वादु के विशिष्ट
भोजनाच्छादन न० भोजन अने वस्त्र
भोजनाधिकार पु० भोजन इ० उपर देखरेख राखवानु काम के अधिकार
भोजनीय वि० खावा योग्य(२)खवरावva योग्य(आश्रित)(३)न० भोजन
भोजा पु० ब० व० एक जातिना लोक
भोजिन् वि० (समासने छेडे) खातु, भोगवतु के मालिक एवु(२) खवरावतु; पोषतु

भोज्य वि० खावानु, खावा योग्य (२) भोगववानु, भोगववा योग्य (३) अनुभववा के वेठवा योग्य (४) न० अन्न, भोजन (५) खावानी चीजोनो सग्रह (६) मीठाई; पकवान (७) भोग (८) लाभ (९) मर्मस्थानमा घा

भोज्या स्त्री० भोज लोकोनी राजकुवरी (२) कुट्टणी, दूती [खेद बतावे छे)

भोस् अ० अरे, ओ, हे, ओहो (प्रश्न के

भौत वि० भूतप्राणी सबधी (२) पचभूत सबधी (३) भूत-पिशाच सबधी (४) गाडु, आवेशयुक्त

भौतिक वि० भूतप्राणी सबधी (२) महाभूतनु बनेलु (३) भूत-पिशाच सबधी (४) वळगाडवाळु

भौम वि० भूमि – पृथ्वीने लगतु (२) पृथ्वी उपरनु (३) माटीनु बनेलु (४) मगळ ग्रह सबधी (५) पु० मगळ ग्रह (६) नरकासुर (७) न० माळ (मकाननो) (८) धान्य, अनाज

भौमदिन न० मगळवार

भौमन पु० विश्वकर्मा

भौमब्रह्मन् न० वेदो, ब्राह्मणो अने यज्ञो –ए त्रणनो समुदाय

भौवन पु० जुओ 'भौमन'

भ्रम् १, ४ प० भमवु; भटकवु (२) कूडाळे फरवु, आसपास फरवु (३) अवळे मार्गे जवु (४) फेलावु, प्रचारमा आववु (५) फरकवु, थरथरवु (६) डामाडोळ थवु (७) भूलमा पडवु –प्रेरक० आसपास के गोळ फेरववु (२) भटके तेम करवु (३) भूलमा नाखवु (४) फेरववु, घुमाववु (हाथमा) (५) ढोल पीटीने जाहेर करवु

भ्रम पु० भटकवु ते (२) गोळ फरवु ते (३) भूलमा पडवु ते (४) गूचवण, मूझवण (५) भमरो; वमळ (६) फुवारो

भ्रमण न० भमवु, भटकवु के गोळ फरवु ते (२) –माथी खसवु ते (३) भूलमा पडवु ते (४) लथडियु (५) तमर

भ्रमणीविलास पु० आनद-यात्रा

भ्रमर पु० भमरो (२) जार, कामी (३) भमरडो (४) कुभारनो चाकडो

भ्रमरकरंडक पु० भमराओ भरेली पेटी (राते दीवा ओलववा चोरो राखे)

भ्रमरबाधा स्त्री० भमराओथी पजवणी

भ्रमराभिलीन वि० भमराओ जेने वळग्या होय तेवु

भ्रमरित वि० भमराना रगनु थई गयेलु

भ्रमरी स्त्री० भमरी

भ्रमि स्त्री० भमवु के घूमवु ते, गोळ फरवु ते (२) वमळ, भमरो (३) मूर्छा

भ्रमित वि० भमावेलु, गोळ फेरवेलु (२) भ्रमथी मानी लीधेलु

भ्रष्ट ('भ्रश्'नु भू० कृ०) वि० खरी पडेलु, नीकळी पडेलु (२) क्षीण थयेलु (३) नासी गयेलु (४) दुराचरणी

भ्रष्टक्रिय वि० विहित कर्मो न करनारु

भ्रष्टश्री वि० दुर्भागी

भ्रष्टाधिकार वि० काढी मूकेलु, होद्दा उपरथी दूर करेलु

भ्रस्ज् ६ उ० [भृज्जति-ते] भूजवु, शेकवु

भ्रंश् १ आ०, ४ प० सरी पडवु, खसी पडवु, पडी जवु (२) ठोकर खावी (३) –माथी खसी पडवु (४) खोवु, गुमाववु (५) नासी जवु (६) क्षीण थवु (७) अलोप थवु

भ्रंश पु० पडी जवु के सरी पडवु ते (२) क्षीण थवु ते (३) नाश पामवु ते (४) अलोप थवु ते (५) नासी जवु ते

भ्रंशन न० नीकळी पडवु के पडी जवु ते

भ्रंशिन् वि० पडी जतु, नीकळी पडतु (२) भ्रष्ट थतु (३) नाश पमाडतु

भ्राज् १ आ० प्रकाशवु, चळकवु

भ्राजिन् वि० चमकतु, चळकतु

भ्राजिष्णु वि० तेजस्वी, कातिमान

भ्रातरौ पु० द्वि० व० भाई अने वहेन
भ्रातृ पु० भाई(२)बधु, मित्र
भ्रातृगंधिक(–न्) पुं० नामनो ज भाई
भ्रातृजाया स्त्री० भोजाई, भाईनी पत्नी
भ्रातृव्य पु० भत्रीजो (२) प्रतिस्पर्धी, शत्रु, विरोधी
भ्रात्र्य न० भाईपणु [भ्रम
भ्राम पु० आम तेम भटकवु ते(२)भूल;
भ्रामक वि० भ्रममा नाखनारु (२) फेरवनारु, घुमावनारु
भ्रामरी स्त्री० दुर्गा (२) डाबेथी जमणे प्रदक्षिणा करवी ते
भ्रामिन् वि० भ्रममा पडेलु
भ्राष्ट्रक पु०, न० तवो, कढाई
भ्रांत ('भ्रम्'नु भू० कृ०) वि० भमेलु; भटकेलु(२)गोळ घूमतु के घूमेलु(३) भूलमा पडेलु (४) मूझायेलु (५)न० भटकवु ते (६) भूल
भ्रांतबुद्धि वि० मूझायेली के भूलमा पडेली बुद्धिवाळु
भ्रांति स्त्री० भटकवु ते(२)गोळ फरवु ते (३) भूल, गोटाळो, भ्रम (४) मूझवण (५) सशय (६) अस्थिरता
भ्रुकुटि(–टी) स्त्री० जुओ 'भ्रूकुटि'
भ्रू स्त्री० भमर, भवु
भ्रूकुटि(–टी) स्त्री० भवा चडाववा ते
भ्रूक्षेप पु० भवा चडाववा ते
भ्रूण पु० गर्भ (२) बाळक, छोकरो (३) श्रोत्रिय के विद्वान ब्राह्मण
भ्रूणहत्या स्त्री० गर्भहत्या (२)श्रोत्रिय के विद्वान ब्राह्मणनी हत्या
भ्रूभंग, भ्रूभेद पु० भवा चडाववा ते
भ्रूभेदिन् वि० भवा चडावतु
भ्रूविकार, भ्रूविक्षेप पु० भवा चडाववा ते
भ्रूविचेष्टित न०, **भ्रूविभ्रम, भ्रूविलास** पु० विलासमा भवा नचाववा ते

म

मकर पु० मगर; मगरमच्छ
मकरकेतन, मकरकेतु, मकरध्वज पु० कामदेव, मदन (२) सागर, समुद्र
मकरंद पु० फूलमानु मध (२) एक फूल-झाड, कुद [समुद्र
मकराकर, मकरालय, मकरावास पु०
मकरिका स्त्री० अमुक प्रकारनो माथानो पहेरवेश (खास करीने स्त्रीनो)
मकार पु० 'म' वर्ण (२) 'म' थी शरू थता आ पाच पदार्थोमानो दरेक: मद्य, मत्स्य, मास, मैथुन अने मुद्रा
मकुट न० मुगट
मक्षिक पु०, **मक्षिका** स्त्री० माखी
मक्षिकामल न० मीण
मक्षीका स्त्री० माखी
मख पु० यज्ञ (२)उत्सव(३)पूजन
मखद्विष् पु० राक्षस [करनार)
मखमृगव्याध पु० शिव (दक्षयज्ञनो ध्वस
मखाशभाज् पु० देव
मगध पु० एक प्राचीन देशनु नाम (बिहारनो दक्षिण भाग) (२)चारण
मगधेश्वर पु० मगध देशनो राजा (२) परतप नामनो राजा (३) जरासध
मग्न ('मस्ज्'नु भू० कृ०) वि० डूबेलु (२)तल्लीन
मघ न० वक्षिस(२)समृद्धि
मघव, मघवत् पु० इद्र
मघवन् वि० दानेशरी (२) पु० इद्र (३)घुवड(४)व्यास मुनि [वाळु
मच्चित्त वि० मारामा आसक्त चित्त
मज्जन् पु० मज्जा

मज्जन न० डूबकु लगाववु ते (२) स्नान (३) डूबवु ते (४) मज्जा
मज्जा स्त्री० हाडकामानो मावो
मटक पु०, न० शव, मडदु
मटची (-ती) स्त्री० करानी वृष्टि
मठ पु०, न० तपस्वीनी कोटडी (२) सन्यासीओने रहेवानु मकान (३) विद्यालय [जवाबदारी
मठचिंता स्त्री० मठनी व्यवस्था इ० नी
मठायतन न० विद्यालय, मठ
मठिका स्त्री० तपस्वीनी कोटडी
मड्मडायित वि० गळी जवायेलु
मणि पु० रत्न (२) घरेणु (३) ते ते वर्गमा श्रेष्ठ एवु ते (४) स्फटिक (५) गठ्ठो के ईंट जेवो आकार (धातुनो)
मणिक पु०, न० पाणीनो घडो
मणिकार पु० झवेरी
मणित न० रतिक्रीडा वखतनो गणगणाट
मणितुलाकोटि स्त्री० पगनु रत्नमय घरेणु
मणिदंड वि० रत्नजडित हाथावाळु
मणिपुष्पक पु० सहदेवना शखनु नाम
मणिबध पु० काडु (२) -उपर रत्न जडवा के चोटाडवा ते
मणिबंधन न० काडु (२) वीटी अथवा कडानो ते भाग ज्या रत्न जडाय छे (३) मोतीनु घरेणु [महेल
मणिभित्ति, मणिमंडप पु० शेषनागनो
मणिमंथ न० खनिज मीठु, सिंधव
मणिमेखल वि० मणिना कदोरावाळु
मणिरत्न न० रत्न
मणिविग्रह वि० मणिओ जडेलु
मणिसर पु० कठहार
मतल्लिका, मतल्ली स्त्री० (नामने छेडे) 'ते वर्गनु श्रेष्ठ' एवो अर्थ दर्शावे छे (उदा० 'गोमतल्लिका' = उत्तम गाय)
मतंग पु० हाथी (२) एक ऋषि (३) त्रिशकु राजा
मतंगज पु० हाथी
मताक्ष वि० पासा रमवामां कुशळ
मति स्त्री० बुद्धि; समज (२) मन; हृदय (३) विचार; मान्यता; धारणा (४) इरादो; प्रयोजन (५) निश्चय (६) समान, आदर (७) इच्छा, वृत्ति; वलण (८) सलाह (९) याददास्त
मतिगति स्त्री० विचारनु वलण
मतिगर्भ वि० बुद्धिशाळी; कुशळ
मतिप्रकर्ष पु० बुद्धिमत्ता
मतिभ्रम पु० बुद्धिने भ्रम थई आववो ते
मतिमत् वि० बुद्धिमान
मतिशालिन् वि० बुद्धिशाळी; होशियार
मतिक्ष् ८ उ० विचार के निश्चय करवो
मत्क वि० मारुं; मारा सबधी
मत्कुण पु० माकण
मत्त ('मद्'नु भू० कृ०) वि० मदमत्त; पीधेलु (२) गाडु (३) मद-गळतु (४) गर्विष्ठ (५) स्वच्छदी (६) कामोन्मत्त
मत्तकाशिनी, मत्तकासिनी स्त्री० अति मोहक स्त्री
मत्तपालक पु० पीधेलो गाडा जेवो माणस
मत्तवारण, मत्तेभ पु० मद-झर हाथी
मत्प्रिय वि० मने वहालु एवुं
मत्या अ० जाणी बूजीने (२) -मानीने; -धारीने; कल्पीने
मत्सर वि० इर्ष्याळु; अदेखु (२) लोभी; तृष्णाळु (३) स्वार्थी (४) पु० अदेखाई, ईर्ष्या (५) वेर; द्वेष (६) गर्व (७) लोभ (८) क्रोध
मत्सरिन् वि० इर्ष्याळु; अदेखु (२) वेरी, द्वेषी (३) लोभी, स्वार्थी
मत्स्य पु० माछलु
मत्स्यकीश पु० हाथी
मत्स्यगंधा स्त्री० सत्यवती; व्यासनी माता
मत्स्यजीवत्, मत्स्यजीविन्, मत्स्यबंध, मत्स्यबंधिन् पु० माछीमार
मत्स्यंडिका, मत्स्यंडी स्त्री० उकाळेला शेरडीना रसनी राब

मत्स्याद वि० माछला खानारु
मत्स्यावतार पु० विष्णुनो माछला तरीकेनो पहेलो अवतार (दशमानो)
मत्स्याशिक वि० माछला खानारु
मत्स्याः पु० ब० व० विराट राजानो देश तथा तेना लोको
मत्स्योद्वर्तन न० एक जातनु नृत्य
मथ् १, ९ प० वलोववु (२) दळवु, कचरवु (३) खूब त्रास आपवो (४) ईजा करवी (५) नाश करवो
मथन वि० वलोवी नाखनारु (२) ईजा करनारु (३) नाश करनारु (४) घर्षण करनारु (५) न० वलोववु ते (६) घसवु ते (७) हानि, नाश
मथित ('मथ्'नु भू० कृ०) वि० वलोवेलु (२) कचरेलु, दळेलु (३) पीडेलु (४) नाश करेलु (५) न० मठो (पाणी उमेर्या विनानी जाडी छाश)
मथिन् पु० रवैयो
मथुरा, मथूरा स्त्री० यमुनाकिनारे आवेलु प्राचीन नगर (श्रीकृष्णनु जन्मस्थान)
मद् समासनी शरूआतमा वपरातु प्रथम पुरुष सर्वनामनु एकवचननु रूप (उदा० 'मच्चित्त', 'मद्भक्त', 'मन्मना')
मद् ४ प० पीधेलु के मदमत्त थवु (२) गाडा थवु (३) —मा आनद माणवो; खुशी थवु
—प्रेरक० [मादयति] मत्त के गाडु करवु (२) [मदयति] हर्षित करवु (३) कामोन्मत्त करवु (४) आ० खुश थवु
मद् १० आ० खुश करवु, सतुष्ट करवु
मद् १ प० गर्व करवो
मद पु० केफ, नशो (२) गाडपण (३) कामवासना (४) हाथीने मस्तीमा आवता गडस्थळमाथी झरतो रस (५) कामना, तृष्णा (६) गर्व, अभिमान (७) अत्यत हर्ष (८) सुदरता
मदकल वि० अस्पष्ट उच्चार करतु, धीमेधीमे बोलतु, मंद अवाज करतु (२) मदमत्त (३) अस्पष्ट छता मधुर एवु
मदखेल वि० कामवासनाने कारणे विलासयुक्त बनेलु
मदज्वर पु० गर्व के अभिमानरूपी ताव
मदन वि० मत्त करे तेवु; मादक (२) खुश करे तेवु (३) पु० कामदेव (४) कामवासना (५) वसतऋतु
मदनकलह पु० सभोग, मैथुन
मदनक्लिष्ट वि० जुओ 'मदनातुर'
मदनतंत्र न० कामशास्त्र
मदनपीडा, मदनबाधा स्त्री० कामवासनानी पीडा
मदनमह, मदनमहोत्सव पु० कामदेव [निमित्ते करातो उत्सव
मदनलेख पु० प्रेमपत्र
मदनसंदेश पु० प्रेमनो सदेशो
मदनातुर वि० कामवासनाथी पीडित
मदनावस्थ वि० प्रेममा पडेलु
मदनावस्था स्त्री० प्रेममा पडवु ते
मदनांतक पु० शिव (कामदेवना नाशक)
मदनीय वि० मादक
मदनोत्सुक वि० जुओ 'मदनातुर'
मदप्रसेक पु० वीर्य सीचवु ते
मदभंग पु० गर्व ऊतरवो ते
मदमुच् वि० मद गळतो होय तेवु
मदयितृ वि० मादक
मदर्थे अ० मारे माटे
मदवीर्य न० मद के कामनाथी थयेलो जुस्सो (२) प्रेमने कारणे प्रगटेलु पराक्रम
मदस्रुति स्त्री० मद झरवो ते
मदाकुल वि० मद झरवाने कारणे गाडु बनेलु (२) कामोन्मत्त
मदालस वि० मदने कारणे धीमु के [सुस्त बनेलु
मदांध वि० मदमत्त, मदोन्मत्त (२) कामोन्मत्त
मदिर वि० मादक, मद उपजावनारु (२) [हर्ष उपजावनारु
मदिरदृश्, मदिरनयना, मदिरलोचना स्त्री० जुओ 'मदिराक्षी'

मदिरा स्त्री० दारू, मद
मदिराक्षी स्त्री० मादक-मोहक आंखोवाळी स्त्री [आंखोवाळु
मदिरायतनयन वि० लांबी मादक
मदिरेक्षणा स्त्री० जुओ 'मदिराक्षी'
मदिरोत्कट, मदिरोन्मत्त वि० मद्य पीने उन्मत्त बनेलु [(हळ इ०)
मदी स्त्री० प्यालो (२) खेतीनु ओजार
मदीय वि० मारु, मारा संबंधी
मदोत्कट वि० मदमत्त, मदोन्मत्त (२) कामोन्मत्त
मदोत्सव पु० आंबो
मदोदग्र, मदोद्धत, मदोन्मत्त वि० पीवेलु; नशाथी उन्मत्त बनेलु (२) मद के गर्वथी जुस्सामां आवेलु
मद्गु पु० लश्करी जहाज
मद्य वि० मादक (२) न० दारू
मद्यप पु० दारूडियो [पीणु
मद्यपान न० दारू पीवो ते (२) मादक
मद्र पु० एक देश (२) ए देशनो राजा (३) न० हर्ष, आनंद
मद्रनाभ पु० एक मिश्रजाति
मद्रिका स्त्री० मद्र देशनी स्त्री
मद्वचन न० मारो आदेश के संदेश
मधु वि० मीठु, गळ्यु, सुखदायक (२) न० मधमाखीओए एकठो करेलो फूलनो रस, मध (३) एक जातनु मीठु मध (४) मधपूडो (५) पु० वसंतऋतु (६) चैत्र महिनो (७) विष्णुए हणेला एक राक्षसनु नाम
मधुक वि० मीठु, गळ्यु
मधुकर पु० (नर) मधमाख (२) व्यभिचारी पुरुष
मधुकरी स्त्री० (मादा) मधमाख
मधुकार, मधुकारिन् पु० (नर) मधमाख
मधुगंधि, मधुगंधिक वि० मधुर वासवाळु (२) मधनी वासवाळु
मधुच्युत् (-त) वि० मध झरतु होय तेवु
मधुतम वि० अति गळ्यु के मादक
मधुनिषूदन, मधुनिहंतृ पु० विष्णु (मधु राक्षसने हणनार)
मधुप पु० मधमाख (२) दारूडियो
मधुपर्क पु० दहीं, पाणी, घी, मध अने साकर-ए पांचनु मिश्रण (महेमान अथवा वरराजाने अपाय छे) (२) महेमानना स्वागतनो विधि
मधुपान न० दारू पीवो ते
मधुपुर न०, **मधुपुरी** स्त्री० मथुरा
मधुभिद् पु० जुओ 'मधुसूदन'
मधुमक्षिका स्त्री० मधमाख
मधुमथ, मधुमथन पु० जुओ 'मधुसूदन'
मधुमाधवी स्त्री० एक मादक पीणु
मधुमाधवौ पु० द्वि० व० चैत्र अने वैशाख
मधुर वि० मीठु, गळ्यु (२) मधयुक्त (३) मनोहर (४) मंजुल अवाजवाळु
मधुरम् अ० मीठाशथी, प्रिय लागे तेम
मधुरस वि० गळ्या स्वादवाळु (२) पु० शेरडी (३) गळपण (४) ताड
मधुरा स्त्री० मथुरा नगरी
मधुराक्षर वि० मीठा अवाजवाळु
मधुरालाप वि० मीठा अवाजे बोलतु (२) पु० मीठो अवाज, मीठो राग
मधुरिपु पु० जुओ 'मधुसूदन'
मधुरिमन् पु० माधुर्य, मधुरता
मधुरेण अ० भलाईथी, भलमनसाईथी; मीठाशथी [धन के वातचीत
मधुरोपन्यास पु० मीठा शब्दोमां संबो-
मधुलिह्, मधुलेह, मधुलेहिन्, मधुलोलुप पु० मधमाख
मधुवन न० मधु नामनो राक्षस रहेतो हतो ते वन (यमुनाकिनारे)
मधुवार पु० वारंवार दारू पीवो ते (मुख्यत्वे बहुवचनमां वपराय छे)
मधुव्रत पु० मधमाख
मधुशिष्ट, मधुशेष न० मीण
मधुश्च्युत् वि० मध झरतु होय तेवु

मधुश्री स्त्री० वसतऋतुनी शोभा
मधुसख, मधुसहाय पु० कामदेव
मधुसूदन पु० (मधु राक्षसने हणनार) श्रीकृष्ण (२) मधमाख
मधुहन् पु० (मधुपूडानो नाश करी) मध एकठु करनार (२) जुओ 'मधुसूदन'
मधूक पु० मधमाख (२) महुडानु झाड (३) न० महुडानु फूल (४) जेठीमध
मधूच्छिष्ट, मधूत्थ, मधूत्थित न० मीण
मधूद्यान न० वसतनो बगीचो [रहेठाण)
मधूपघ्न न० मथुरा नगरी (मधु राक्षसनु
मध्य वि० वच्चेनु, वचलु (२) वच्चे आवतु (३) मध्यमसरनु, मध्यम कोटी के कक्षानु (४) निष्पक्ष (५) न्यायसर एवु (६) पु० न० वच्चेनो भाग (७) केंद्र (८) केड, शरीरनो वचलो भाग (९) पेट (१०) कोई पण वस्तुनी अदरनो भाग (११) वचली दशा के स्थिति (१२) न० करोड अबज (सख्या) [वच्चे
मध्यतस् अ० वच्चेथी, –माथी (२)
मध्यनिहित वि० अदर खोसेलु
मध्यप्रविष्ट वि० वचमा पेठेलु के घूसेलु (विश्वास मेळवीने) [कमर
मध्यभाग पु० वचलो भाग (२) केड,
मध्यम् अ० –नी वच्चे, अदर
मध्यम वि० वच्चे आवेलु के ऊभेलु (२) वचली कक्षानु के कोटिनु (३) वचला कदनु (४) वच्चे जन्मेलु, वचेट (५) तटस्थ, निष्पक्ष (६) पु० स्वरसप्तकनो पाचमो स्वर (७) मध्यनो प्रदेश के भाग (८) निष्पक्ष राजा (९) भीम (१०) न० केड, कमर (११) वच्चेनो भाग
मध्यमक वि० छेक वच्चेनु (२) सहियारु (३) न० वस्तुनो अदरनो भाग
मध्यमलोकपाल पु० राजा [मणि
मध्यमोपल पु० हारनो मुख्य के वचलो
मध्यरात्र पु०, **मध्यरात्रि** स्त्री० मधरात
मध्यलोक पु० पृथ्वी, मृत्युलोक
मध्यस्थ वि० वचमा आवेलु (२) तटस्थ, निष्पक्ष (३) निरपेक्ष (४) पु० बे पक्ष वच्चे न्याय तोळनारो
मध्यस्थता स्त्री० तटस्थता (२) वचली स्थिति (३) मध्यमसरता (४) निष्पक्षता (५) निरपेक्षता
मध्या स्त्री० वचली आगळी (२) जुवान स्त्री (रजस्वला थवा लागेली)
मध्यात् अ० वच्चेथी
मध्याह्न पु० बपोर
मध्ये अ० वच्चे (२) अदर (ए अर्थमा समासना पहेला पद तरीके मोटे भागे आवे छे, उदा० 'मध्येगगम्')
मध्येन अ० आरपार के वच्चे
मध्यापात वि० गळूआतमा मधनो स्वाद होय तेवु [आहुति आपवी ते
मध्वाहुति स्त्री० स्वादु वस्तुओनी यज्ञमा
मन् १ प० गर्व करवो (२) पूजवु (३) १० आ० गर्व करवो (४) रोकवु (५) ४, ८ आ० मानवु, धारवु (६) मानी लेवु, गणवु (७) समान करवु, आदर करवो (८) समजवु, जाणवु (९) कबूल राखवु, स्वीकारवु (१०) इरादो राखवो
–प्रेरक० उ० मान आपवु, आदर करवो (२) आ० पोतानी जातने मोटी मानवी [धारणा, तर्क
मनन न० विचारवु ते, चिंतन (२)
मनस् न० मन (२) समजशक्ति, विचारशक्ति, विवेकशक्ति (३) कल्पना, धारणा (४) इरादो, हेतु (५) इच्छा, कामना (६) ध्यान (७) वलण, वृत्ति (८) मनोबळ (९) प्राण, जीव
मनसा गम् १ प० विचारवु, चिंतववु
मनसिज, मनसिशय पु० कामदेव, मदन
मनस्कार पु० मननी एकाग्रता

मनस्तः अ० मनमाथी
मनस्ताप पु० मानसिक सताप के पीडा
मनस्विन् वि० डाह्यु, बुद्धिशाळी, कुशळ (२) उदार चित्तवाळु (३) एकाग्र (४) स्थिर के दृढ मनवाळु
मनस्विनी स्त्री० धीर चित्तवाळी स्त्री (२)अभिमानी स्त्री(३)शीलवती स्त्री
मनःकृ ८ उ० –नी उपर मन स्थिर करवु, –नी प्रत्ये मन वाळवु
मनःपूत वि० पोताना अतरात्माए मान्य करेलु के शुद्ध मानेलु
मनःप्रसाद पु० मननी प्रसन्नता
मनःशल्य न०मनमा शूळ जेवी चिंता
मनःशिल पु०, **मनःशिला,** स्त्री० एक खनिज पदार्थ (लाल रगनो)
मनःशीघ्र वि० मन जेटलु वेगवत
मनःस्थैर्य न० मननी स्थिरता–दृढता
मनाक् अ० अल्प के थोडु होय तेम(२) धीमेथी (३) फक्त, मात्र
मनाका स्त्री० हाथणी
मनीषा स्त्री० इच्छा, कामना(२)बुद्धि; समजशक्ति (३) विचार, ख्याल
मनीषित वि० इच्छेलु, चाहेलु (२) प्रिय, मनगमतु (३) न० इच्छा (४) इच्छेली वस्तु
मनीषिता स्त्री० डहापण
मनीषिन् वि० शाणु, डाह्यु(२)ज्ञानी, विचारवत (३)पु० ज्ञानी ऋषि
मनु पु०विवस्वतना पुत्र, मानवकुळना पिता (२) ब्रह्माना चौद पुत्रोमाना दरेक (३)मत्र(४)ब० व० मानसिक शक्तिओ
मनुज पु० मनुष्य, माणस
मनुष्य वि० माणसने हितकर एवु (२) पु० मानव, माणस
मनुष्यकार पु०मनुष्यनो पुरुषार्थ–प्रयत्न
मनुष्यजाति स्त्री० माणस जात
मनुष्यता स्त्री०, **मनुष्यत्व** न० माणस तरीकेनो जन्म
मनुष्यदेव पु० राजा(२)ब्राह्मण
मनुष्यधर्मन् पु० कुबेर
मनुष्ययज्ञ पु० (मनुष्ये करवाना पाच यज्ञो पैकी एक) अतिथिसत्कार
मनुष्ययान न० पालखी, म्यानो
मनुष्यशोणित न० माणसनु लोही
मनुष्येश्वर पु० राजा
मनोगत वि० मनमा आवेलु के रहेलु, मनमा छुपावेलु (२) इच्छेलु (३) न० इच्छा(४)विचार, ख्याल
मनोग्राहिन् वि० मनने मोहनारु
मनोज, मनोजन्मन् वि० मनमा जन्मेलु के जन्मतु(२)पु० कामदेव
मनोजव वि० मनना तरग जेटलु झडपी (२)झट समजी ले तेवु
मनोजिघ्र वि० सामाना विचारो समजी के कल्पी लेनारु
मनोज्ञ वि० सुदर, मनगमतु
मनोनिग्रह पु० मननो सयम के निग्रह
मनोनीत वि० पसंद करेलु, गमतु
मनोनुग वि० मनने अनुकूळ, मनगमतु
मनोभव वि० मनमा उत्पन्न थयेलु, मनथी कल्पी लीधेलु (२) पु० कामदेव (३) तीव्र कामना
मनोभिराम वि० मनने प्रसन्न करे तेवु
मनोभू पु० कामदेव, मदन
मनोयायिन् वि० मनना तरग प्रमाणे जतु (२) मनना विचार जेटलु वेगीलु
मनोरथ पु० इच्छा(२)इच्छेली वस्तु
मनोरथकृत वि० स्वेच्छाए पसद करेलु (जेम के पति)
मनोरथदायक पु० एक कल्पवृक्ष
मनोरथद्रुम पु० कल्पवृक्ष
मनोरथबंध पु० मनोरथ बाधवा ते
मनोरथबधबधु, मनोरथबंधु पु० कामना तृप्त करनार मित्र
मनोरथसिद्धि स्त्री० इच्छा पूरी थवी ते
मनोरथांतर पु० अतरथी इच्छेली वस्तु के व्यक्ति

मनोरम वि० सुदर; आकर्षक
मनोरंजन न० मनने राजी करवु ते (२) मजा; आनद
मनोराग पु० (हृदयनो) प्रेम, राग
मनोरुज् स्त्री० हृदयनी वेदना के शोक
मनोलौल्य न० मननो तरग
मनोवृत्ति स्त्री० मननी वृत्ति (२) इच्छा (३) मननु वलण
मनोहर वि० सुदर, रम्य
मनोहर्तृ, मनोहारिन् वि० मनोहर
मनोह्लाद पु० मननो आह्लाद – खुशी
मन्मथ पु० कामदेव (२) कामवासना
मन्मथलेख पु० प्रेमपत्र
मन्मन पु० धीमेथी (बीजु न साभळे तेम) करेली वातचीत (२) कामदेव
मन्य वि० (समासने छेडे) – पोताने अमुक मानतुं (जेम के 'पडितंमन्य')
मन्यु पु० क्रोध, गुस्सो (२) शोक, खेद (३) दीन अवस्था (४) यज्ञ
मन्युमत् वि० क्रोधी (२) दुःखी (३) जुस्सादार
मन्वंतर न० एक मनुनो समय के युग (४३,२०,००० वर्षनो)
ममता स्त्री०, **ममत्व** न० मारापणु, मालकीपणानो भाव (२) आसक्ति (३) घमड
मय वि० '–नु बनेलु, '–थी भरेलु' (उदा० 'काष्ठमय') (२) पु० एक दानव, असुरोनो शिल्पी
मयूख पु० किरण
मयूखमालिन् पु० सूर्य
मयूखिन् वि० प्रकाशयुक्त, तेजस्वी
मयूर पु० मोर (२) एक कवि
मयूरपत्रिन् वि० मोरना पीछा खोसेलु (बाण)
मयूरी स्त्री० ढेल
मरकत न० लीलो मणि, लीलम
मरण न० मृत्यु, मोत
मरणधर्मन् वि० मरणशील
मरणनिश्चय वि० मरवाना निश्चयवाळु
मरणमंडन न० (पति पाछळ सती थनारी स्त्री पहेरे छे ते) मरणना आभूषणो अने पोशाक पहेरवा ते
मरणात्मक वि० मोत उपजावे तेवु
मरंद, मरंदक पु० फूलमानु मध
मराल वि० पोचु, चीकणु (२) मृदु, कोमळ (३) पु० हस (४) कारडव पक्षी
मरिच, मरीच न० मरी
मरीचि पु०, स्त्री० प्रकाशनु किरण (२) मृगजळ (३) अग्निनो तणखो (४) पु० दश प्रजापतिमाना एक (५) श्रीकृष्ण
मरीचिका स्त्री० मृगजळ
मरीचिन् वि० जुओ 'मरीचिमत्'
मरीचिप वि० तेजना कण पीनारु
मरीचिमत् वि० तेजस्वी (२) पु० सूर्य
मरीचिमालिन् वि० तेजस्वी (२) पु० सूर्य
मरु पु० रेतीनु रण; पाणी विनानो वेरान प्रदेश (२) खडक, पर्वत (३) मद्यपान न करवु ते [(३) वायुदेव (४) देव
मरुत् पु० पवन, वायु (२) प्राणवायु
मरुत पु० वायु (२) देव
मरुत्पट पु० सढ
मरुत्पति पु० इद्र
मरुत्पथ पु० आकाश
मरुत्वत् पु० इद्र (२) मेघ (३) हनुमान
मरुत्सख वि० पवन जेनो मित्र छे तेवु (मेघ) (२) पु० अग्नि (३) इद्र
मरुत्सुत पु० हनुमान (२) भीम
मरुधन्व, मरुधन्वन् पु० वेरान प्रदेश, रण [वेरान
मरुपथ पु०, **मरुपृष्ठ** न० रण, निर्जळ
मरुवक पु० एक फूल [वेरान प्रदेश
मरुस्थल न०, **मरुस्थली** स्त्री० रण,
मर्कट पु० माकडु
मर्तव्य न० मोत
मर्त्य वि० मरणधर्मी (२) पु० मनुष्य (३) मृत्युलोक, पृथ्वी (४) न० शरीर

मर्त्यधर्मन्, मर्त्यधर्मिन् वि० मरणधर्मी (२)पु० मनुष्यप्राणी [पृथ्वी

मर्त्यभुवन न०, **मर्त्यलोक** पु० मृत्युलोक;

मर्द वि० मर्दन करतु, दळी नाखतु (२) पु० दळवु के कचरवु ते

मर्दन वि० दळनारु के कचरनारु (२) न० दळवु के कचरवु ते (३) लेप करवो ते (४) मसळवु ते (५) दाबवु ते, गदडवु ते (६) नाश करवो ते

मर्दल पु० एक जातनु वाद्य (तबला जेवु)

मर्मच्छिद्, मर्मच्छेदिन् वि० मर्मवेधी

मर्मज्ञ वि० अदरनु रहस्य के तात्पर्य जाणनारु (२) कोई पण बाबतमा ऊडी दृष्टिवाळु

मर्मत्र न० बख्तर

मर्मन् न० ज्या वागवाथी मृत्यु थाय तेवो शरीरनो कोमळ भाग (२) कोई पण नबळो के वीधी शकाय तेवो भाग (३) तात्पर्य, रहस्य [जाणनारु

मर्मपारग वि० ऊडु रहस्य के तात्पर्य

मर्मभेदिन् वि० मर्मवेधी (२) पु० बाण

मर्मर वि० 'फडफड' एवो अवाज करतु (पादडा, कपडा इ०) (२) गणगणतु (३) पु० 'फडफड' एवो अवाज (४) गणगणाट

मर्मविद् वि० जुओ 'मर्मज्ञ'

मर्मस्थल, मर्मस्थान न० ज्या वागवाथी मोत नीपजे तेवु कोमळ स्थान (शरीरनु) (२) नबळो के वीधी शकाय तेवो भाग

मर्मस्पृश् वि० मर्मस्थानने वीधे तेवु

मर्मातिग वि० मर्मस्थानने आरपार के ऊडे सुधी वीधतु

मर्माविध्, मर्मोपघातिन् वि० मर्मस्थानने वीधी नाखे तेवु

मर्यादा स्त्री० हद, सीमा (२) अत, छेडो (३) सीमाचिह्न (४) रूढि के नीतिए स्थापेली सीमा (५) शिष्टाचारनो नियम (६) करार

मर्यादाव्यतिक्रम पु० मर्यादानु उल्लघन करवु ते [सलाह

मर्श पु० विचार, मसलत (२) उपदेश,

मर्शन न० घसवु के मसळवु ते (२) तपास, विचारणा (३) सलाह (४) समजाववु ते (५) स्पर्श; सभोग (स्त्रीनो)

मर्ष, मर्षण न० सहनशीलता, क्षमा

मर्षित वि० सहन करेलु, क्षमा करेलु

मर्षिन् वि० क्षमा करतु, सहन करतु

मल वि० गदु (२) लोभी, दुष्ट (३) नास्तिक (४) पु०, न० गदकी (५) विष्टा; छाण (६) नैतिक दोष, पाप (७) शरीरमाथी नीकळती कोई पण गदी चीज

मलन न० दबाववु के कचरवु ते

मलपंकिन् वि० गदकीथी ढकायेलु

मलमल्लक न० लगोटी, कौपीन

मलमास पु० अधिक मास

मलय पु० दक्षिणनो एक पर्वत (चदन वृक्ष माटे प्रसिद्ध) [लाकडु, चदन

मलयज पु० चदन वृक्ष (२) न० चदननु

मलयवात, मलयसमीर, मलयानिल पु० मलय पर्वत उपरथी आवतो दक्षिणनो पवन (विरहीने सतावतो गणाय छे)

मलिन वि० मेलु, गदु (२) काळु (३) पापयुक्त, दुष्ट (४) वादळथी ढकायेलु (५) न० पाप (६) गदु वस्त्र

मलिनयति प० (मेलु करवु, कलकित करवु, अपजश अपाववो)

मलिनिमन् पु० मेलाश, गदकी (२) काळाश (३) पाप

मलिनीभू १ प० मेलु थवु, गदु थवु

मलिम्लुच पु० चोर, डाकु (२) राक्षस (३) मच्छर [दुष्ट, पापी

मलीमस वि० गदु, मेलु (२) काळु (३)

मलोत्सर्ग पु० मळत्याग

मलोपहत वि० गदु के मेलु थयेलु

मल्ल वि० मजबूत, पहेलवान जेवु (२) सारु, उत्तम (३) पु० मजबूत माणस (४) पहेलवान, कुस्तीबाज

मल्लक पु० दीवी (२) कोडियु (३) पात्र, वासण

मल्लघटी स्त्री० एक जातनु नृत्य

मल्लिका स्त्री० एक फूल-वेल(जाई) (२) तेनु फूल (३) दीवी (४)अमुक आकारनु माटीनु वासण

मल्लिकाक्ष पु० वदामी चाच अने पग-वाळो एक हस(२)आख उपर धोळां चाठावाळो एक जातनो घोडो

मल्लिकार्जुन पु० श्रीशैल उपर आवेलु शिवलिंग

मश पु० मच्छर, डास [थेली, मसक

मशक पु० मच्छर, डास(२)चामडानी

मशकी स्त्री० मादा मच्छर

मशी, मषि (–षी) स्त्री० जुओ 'मसि'

मषीभू १ प० काळु थवु

मसार, मसारक पु० इद्रनील मणि

मसि पु०, स्त्री० शाही (२) घुमाडानी मेश (३) मेश

मसिधानी स्त्री० शाहीनो खडियो

मसिपण्य पु० लहियो

मसिपथ पु० कलम

मसी स्त्री० जुओ 'मसि'

मसीगुडिका स्त्री० शाहीनो डाघो

मसीधानी स्त्री० शाहीनो खडियो

मसीपटल न० मेशनु पड

मसृण वि० चीकणु, चीकटु(२)कोमळ, नाजुक, सुवाळु(३)मधुर (४)मनोहर (५) चमकतु [(२)नरम करेलु

मसृणित वि०सुवाळु करेलु;चळकतु करेलु

मस्कर पु० पोलो वास

मस्करिन् पु० सन्यासी (दडी)

मस्ज् ६ प० [मज्जति] नाहवु, डूबकु मारवु (२) डूबी जवु (३) खिन्न थवु –प्रेरक० डुबाडवु (२) –मा खोसवु

मस्तक पु०,न० माथु(२)टोच, शिखरनो भाग [भाग

मस्तिष्क न० मगज, माथानी अदरनो

मह् १ प०, १० उ०आदर करवो, ममान करवु, पूजवु (२) खुश करवु (३)वधा-रवु (४) १ आ० वधवु, वृद्धिगत थवु

मह पु० उत्सव (२) यज्ञ, होम

महत् वि० महान, मोटु(२)पुष्कळ; सख्याबध (३) विस्तृत (४) बळवान (५)तीव्र (६)गाढ (७)अगत्यनु (८) ऊचु, खानदान (९)वहेलु अथवा मोडु (१०)वधु, खूब (११)न० खूबपणु, अनतपणु (१२)राज्य (१३)परमात्मा (१४)अ० खूब, अत्यत [नी वीणा

महती स्त्री० एक जातनी वीणा(२)नारद-

महत्तत्त्व न० साख्यशास्त्रे गणावेला पचीस तत्त्वोमानु बीजु, बुद्धितत्त्व

महत्तर वि० वधु मोटु (२) पुं० मुख्य के वृद्ध माणस (३) गामनो मुखी के वृद्ध आगेवान (४) दरबारी (५)कारभारी

महत्त्व न० मोटाई(२)अगत्य(३)तीव्रता

महदायुध न० मोटु हथियार

महदाशा स्त्री० मोटी आशा

महनीय वि० आदरणीय, समाननीय

महर् अ० पृथ्वी उपरना सात लोकमानो चोथो (स्वर् अने जनस् वच्चेनो)

महर्द्धि वि० मोटा वैभव के समृद्धिवाळु (२) स्त्री० मोटी समृद्धि

महर्षभ पु० मोटो आखलो [बुद्ध

महर्षि पु० महान ऋषि (२) शिव (३)

महस् न० उत्सव, उत्सवनो प्रसग (२) आहुति, होम (३)प्रकाश, तेज (४) जुओ 'महर्' (५) आनद, भोग (६) बळ, सामर्थ्य [समर्थ

महस्विन् वि० तेजस्वी (२) महान:

महा ('महत्'ने बदले कर्मधारय अने बहुव्रीहि समास वगेरेनी शरूआतमा मुकातु रूप) [(२) पु० शिव

महाकर्मन् वि० महान कृत्यो करनारु

महाकाय वि० मोटा शरीरवाळु (२)पु० हाथी (३) शिव

महाकाल पु० शिवनु प्रलयकारी रूप (२) बार ज्योतिर्लिंगमाना एकनु उज्जयिनीमा आवेलु मंदिर
महाकालफल न० काळा बीवाळु एक लाल फळ
महाकाव्य न० मोटु काव्य (रघुवंश, कुमारसंभव, किरातार्जुनीय, शिशुपालवध अने नैषधचरित –ए पांच मुख्यत्वे गणावाय छे)
महाकुल, महाकुलीन वि० ऊंचा कुळनु
महाक्रतु पु० (मोटो यज्ञ) अश्वमेध
महाक्ष पु० शिव [(औषध)
महागुण वि० रामबाण के अमोघ एवु
महाग्रह पु० राहु (२) सूर्य
महाजन पु० माणसोनो समुदाय (२) टोळु, आखी वस्ती (३) कोई धंधानो के ज्ञातिनो मुखियो (४) वेपारी
महाज्ञानिन् पु० पंडित (२) भविष्य भाखनारो (३) शिव
महाज्यैष्ठी स्त्री० जेठ महिनानी पूनम
महाज्वर पु० मोटी पीडा
महातल न० सात पाताळोमानु एक
महात्मन् वि० महान आत्मावाळु; महान (२) महाबळवान
महात्यय पु० मोटो भय, जोखम
महादुर्ग न० मोटी आफत
महादेव पु० शिव
महादेवी स्त्री० पार्वती (२) पट्टराणी
महाधन वि० कीमती, मूल्यवान
महाधी वि० मोटी बुद्धिवाळु
महाधुर्य पु० मोटो बळद
महानट पु० शिव
महानस पु०, न० रसोडु
महानिद्र वि० गाढ निद्रामा पडेलु
महानिल पु० वटोळियो
महानील पु० एक जातनो मणि
महानुभाव वि० भव्य, बळवान; खानदान, यशस्वी, उदात्त (२) सदाचारी; न्यायी (३) समाननीय
महान्वय वि० खानदान कुळनु
महापथ पु० राजमार्ग (२) मृत्यु
महापद्म पु० कुबेरनो एक निधि (२) नारद (३) एक मोटी संख्या
महापात पु० दूर सुधी ऊडवु ते
महापाप्मन् वि० अति पापी – दुष्ट
महापुरुष पु० सज्जन; सत्पुरुष
महाप्रलय पु० ब्रह्मानु सो वर्षनु आयुष्य पूरु थता थतो सकळ सृष्टिनो प्रलय
महाप्रश्न पु० गूंचवाडाभर्यो सवाल
महाप्रस्थान न० मृत्यु (२) मरणनी इच्छाथी उत्तर तरफ (हिमालयमां) हमेश माटे चाली नीकळवु ते
महाप्राणता स्त्री० अतिशय बळ के सत्त्ववाळा होवु ते
महाप्लव पु० मोटु पूर
महाबल वि० घणु बळवान
महाबाध वि० भारे पीडा उपजावनारुं
महाबाहु वि० लांबा हाथवाळु, बळवान (२) पु० विष्णु
महाभाग वि० अति भाग्यवान, अति समृद्ध (२) अति यशस्वी; अति विख्यात (३) अति सद्गुणी के सच्चरित्र
महाभागिन् वि० महा भाग्यशाळी
महाभिजन वि० खानदान कुळनु (२) पु० खानदान कुळ
महाभुज वि० जुओ 'महाबाहु'
महाभूत न० पांच महाभूतोमानु दरेक (पृथ्वी–जळ–तेज–वायु–आकाश)
महाभोग पु० मोटो उपभोग के सुख (२) मोटी फणा (३) नाग
महामणि पु० अति कीमती रत्न
महामनस्, महामनस्क वि० उदार चित्तवाळु (२) गर्विष्ठ [मोटो वरघोडो
महामह पु० उत्सव निमित्ते नीकळतो
महामंत्र पु० वेदनो पवित्र मंत्र (२) (सापनु झेर उतारवानो) शक्तिशाळी मंत्र
महामात्य पु० मुख्य प्रधान, वडो प्रधान

महामात्र वि० कद के जथामा मोटु (२) उत्तम, श्रेष्ठ (३) पु० राज्यनो मोटो अधिकारी, मुख्य प्रधान (४) महावत
महामान्य वि० अति आदरने पात्र
महामाय वि० मोटी मायावाळु; मायावी (२) पु० शिव (३) विष्णु
महामास न० मनुष्यनु मास
महामृग पु० हाथी
महामृध न० महा युद्ध
महायज्ञ पु० नित्य करवाना पाच यज्ञमानो दरेक (ब्रह्म–देव–पितृ–भूत–नृ)
महायशस् न० घणु विख्यात
महायान न० नागार्जुने प्रवर्तविल बौद्ध सप्रदाय ('हीनयान'थी भिन्न)
महारजत न० सोनु
महारजन न० सोनु (२) केसूडो (३) हळदर
महारथ पु० मोटो रथ (२) मोटो योद्धो (एकलो दश हजार धनुष्यधारीओ साथे लडी शके ते) (३) मनोरथ
महाराज पु० मोटो राजा, चक्रवर्ती (२) राजा के तेमना जेवाओ माटे आदरनु सबोधन
महाराजाधिराज पु० चक्रवर्ती राजा
महाराज्य न० सिंहासनारूढ राजानु पद के प्रतिष्ठा [महाप्रलय
महारात्रि (–त्री) स्त्री० मधरात (२)
महारुरु पु० एक जातनु काळियार हरण
महार्घ वि० कीमती, मूल्यवान
महार्घ्य वि० अमूल्य; घणु कीमती
महार्चिस् वि० ऊची ज्वाळाओ नीकळती होय तेवु
महार्णव पु० महासागर
महार्ह वि० अति कीमती, अमूल्य
महावराह पु० विष्णुनो वराहरूपे त्रीजो अवतार
महावात पु० तोफानी पवन
महाविस्तर वि० मोटा विस्तारवाळु
महावीर पु० महा पराक्रमी योद्धो (२) सिंह (३) इंद्रनु वज्र (४) विष्णु (५) गरुड (६) हनुमान
महावेग वि० घणु झडपी के वेगवाळु
महावेल वि० मोटा मोजावाळु
महाव्रत न० एक मोटु व्रत (एक महिना सुधी पाणी पण न पीवानु) (२) कोई पण मोटु कर्तव्य के नियम
महाशन वि० खाउधरु, तृप्त न थाय तेवु
महाशनिध्वज पु० वज्रना चिह्नवाळो मोटो ध्वज (इंद्रनो)
महाशय वि० उदार चित्तवाळु, सज्जन (२) पु० तेवो माणस (३) महासागर
महाशंख पु० एक मोटी सख्या (१००० अबज) (२) कुबेरनो एक निधि
महाशासन वि० मोटी राजसत्तावाळु (२) मोटा हुकमोवाळु
महाश्मन् पु० मणि
महासती स्त्री० शुद्ध, पतिव्रता स्त्री
महासत्त्व वि० महान बळशाळी (२) न्यायी; सदाचारी (३) पु० मोटु प्राणी (४) शाक्य मुनि (५) कुबेर [मूल्यवान
महासार वि० महाबळवाळु (२) कीमती;
महासाहसिक पु० लूटारो, वाटपाडु
महासेन पु० कार्तिकेय (२) मोटा सैन्यनो सेनापति [(३) शिव
महांग वि० मोटा अगवाळु (२) पु० ऊट
महांजन पु० एक पर्वत [स्त्री० पृथ्वी
महि पु०, न० महिमा (२) पु० वृद्धि (३)
महिका स्त्री० हिम, झाकळ (२) पृथ्वी
महिकांशु पु० चद्र [समानित
महित ('मह्'नु भू०कृ०) वि० पूजायेलु,
महिमन् पु० महिमा, मोटाई (२) महत्ता; सत्ता (३) मोटु पद (४) आठ सिद्धिओमानी एक (मरजी प्रमाणे मोटा कदवाळा थवानी)
महिला स्त्री० स्त्री (२) मदमत्त स्त्री (३) प्रियगुल्लता
महिष पु० पाडो (२) महिषासुर

महिषध्वज पु० यम
महिषासुर पु० दुर्गाए मारेलो एक राक्षस
महिषी स्त्री० भेस(२)पट्टराणी
महिष्ठ वि० सौथी मोटु('महत्'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)
मही स्त्री० पृथ्वी(२)जमीन(३)राज्य
महीक्षित् पु० राजा
महीधर, महीध्र पु० पर्वत
महीन (मही+इन) पु० राजा
महीनाथ, महीप, महीपति, महीपाल, महीपुरंदर पु० राजा
महीपृष्ठ न० धरातल
महीभुज् पु० राजा
महीभृत् पु० पर्वत (२) राजा
महीमडल न० पृथ्वीनो घेरावो(२)आखी पृथ्वी [मान के आदर पामवा)
महीयते आ० (खुश थवु, समृद्ध थवु,
महीयस् वि० ('महत्'नु तुलनात्मक रूप) वधु मोटु(कद, बळ के अगत्यमा) (२)पु० महापुरुष
महीरुह(-ह) पु० वृक्ष, झाड
महीसुर पु० भूदेव, ब्राह्मण
महेच्छ वि० महाशय, उदार चित्तवाळु (२) महत्त्वाकाक्षी
महेश, महेशान पु० शिव, महादेव
महेश्वर पु० महाराजा(२)शिव(३) विष्णु (४) परमात्मा
महेश्वरसख पु० कुबेर
महेषु पु० मोटु बाण
महेष्वास पु० मोटो बाणावळी
महेद्र पु० इद्र(२)एक पर्वत
महेद्रमंत्रिन् पु० बृहस्पति
महेंद्रवाह पु० ऐरावत हाथी
महोक्ष पु० मोटो आखलो
महोत्सव पु० मोटो उत्सव के आनदनो प्रसंग (२) कामदेव
महोत्साह वि० उद्यमी, खतीलु(२)पु० खत, उद्यम(३)मोटु अभिमान
महोदधि पु० महासागर
महोदय वि० अति समृद्ध; भाग्यवान, महायशस्वी(२)पु० सद्भाग्य, उन्नति, समृद्धि (३) मोक्ष (४) मालिक, स्वामी(५)महापुरुष
महोद्यम वि० जुओ 'महोत्साह'
महोरग पु० मोटो साप
महोरस्क वि० पहोळी छातीवाळु
महोर्मिन् पु० महासागर
महौघ वि० मोटा प्रवाहवाळु (२)पु० एक घणी मोटी संख्या (एकडा उपर ५२ मीडा)
महौजस् वि० अत्यत तेजस्वी(२)घणु पराक्रमी(३)पु० पराक्रमी योद्धो(४) न० महाबळ, पराक्रम
महौषध न० रामबाण दवा
महौषधि स्त्री० चमत्कारी शक्तिवाळी वनस्पति (२) दूर्वा, दरो
मंक् १ आ० जवु (२) शणगारवु
मंकुक पु० एक वाजित्र
मंक्षु अ० जलदी, शीघ्र (२) अति; अत्यत (३) साचे ज, खरेखर
मंग् १ उ० जवु (२) शोभवु
मंगल वि० शुभ, शुकनियाळ (२) भाग्यशाळी (३) न० शुकनियाळ होवु ते (४) सुख-समृद्धि, सद्भाग्य, हित; कल्याण (५) शुकन (६) शुकनियाळ पदार्थ (७) मगळ ग्रह
मंगलकाल पु० मागलिक समय
मगलक्षौम न० शुभ प्रसगे पहेरातु रेशमी वस्त्र
मंगलगृह न० पवित्र मकान के मदिर
मंगलतूर्य न० शुभ प्रसगे वगाडातु ढोल के तूरी जेवु वाजित्र [पादडु
मंगलपत्र न० तावीज तरीके वपरातु
मंगलपाठक पु० भाट; चारण
मंगलपात्र न० शुभ प्रसगे देवो समक्ष मुकातु पाणी भरेलु पात्र

मंगलप्रतिसर पु० पति जीवे त्यां सुधी परणेली स्त्री वडे गळामा पहेराती सेर के दोरो
मंगलमात्रभूषण वि० मगलसूत्र, केसर-तिलक वगेरे मागलिक आभूषणोथी ज शणगारायेलु
मंगलवादिन् वि० अभिनदन के आशी-र्वादना वचनो बोलनारु
मंगलवृषभ पु० शुभ चिह्नोवाळो वळद
मंगलसमालंभन न० मागलिक वस्तु-ओनो लेप (शुभ प्रसगे स्नान वखते लगाडाय छे)
मंगलसूत्र न० जुओ 'मगलप्रतिसर'
मंगलाचरण न० कोई पण कार्य के ग्रथरचनानी निर्विघ्न समाप्ति माटे शरूआतमा कराती प्रार्थना (२) आशीर्वाद उच्चारवो ते
मंगलालंकृत वि० मागलिक शणगारोथी विभूषित एवुं
मंगलालंभन न० शुभ पदार्थनो स्पर्श
मंगलाष्टक न० लग्न प्रसगे वर-वधूने आशीर्वाद माटे बोलातो श्लोक
मंगल्य वि० शुभ;कल्याणकर(२)सुदर, मनोरम(३)पवित्र;पावन
मगुल न० पाप, अनिष्ट
मंच पु० पलग (२) माचडो, व्यास-पीठ (३) खेतरमा बाधेलो माळो
मंचक न० पलग (२) माचडो
मंज् १ उ० माजवु, साफ करवु
मंजरि स्त्री० कूपळ, फणगो (२) फूलनो गुच्छो (३) फूलनी दाडी (४) मोती (५) लता
मजरिचामर न० मजरीरूपी चामर
मंजरी स्त्री० जुओ 'मजरि'
मजरीचामर न० जुओ 'मजरिचामर'
मजिष्ठ वि० खूलता लाल रगनु
मंजिष्ठा स्त्री० मजीठ
मंजीर पु०, न० नूपुर
मंजु वि० सुदर, रम्य, मधुर
मंजुगिर् वि० मधुर अवाजवाळु
मंजुल वि० सुदर, रम्य (२) मधुर, मीठु
मंजुवाच्, मंजुवादिन् वि० मीठु के मधुर बोलनार
मंजुषा, मंजुषिका स्त्री० पेटी, पटारो
मंजुस्वन, मंजुस्वर वि० मीठा के मधुर अवाजवाळु
मंजूषा, मंजूषिका स्त्री० जुओ 'मजुषा'
मंड् १ प०, १० उ० शणगारवु (२) १ आ० पहेरवु, धारण करवु
मंड पु०, न० प्रवाही उपर जामती तर (२)भातनु ओसामण(३)दूधनी मलाई(४)दारूनो मद्यार्कवाळो भाग
मंडक पु० एक जातनो पातळो पूडलो
मंडन वि० शणगारतु (२) घरेणानु शोखीन (३) न० घरेणा पहेरवा ते (४) घरेणु, आभूषण
मंडनप्रिय वि० घरेणानु शोखीन
मंडप पु० माडवो (२) तबू (३) देव माटे ऊभु करेलु मकान
मंडपिका स्त्री० नानो माडवो
मंडल वि० गोळाकार के वर्तुलाकार एवु (२) पु० साप (३) कूतरो (४) न० कूडाळु, वर्तुल, चक्र, कोई पण वर्तुलाकार वस्तु (५) जादुगरे दोरेलु जादुई कूडाळु (६) बिंब (सूर्य-चद्रनु) (७) सूर्य के चद्रनी आसपासनु कूडाळु (८) गृह-नक्षत्रनी कक्षा (९) टोळु; समुदाय (१०) जिल्लो, प्रात (११) राज्यनी पासेना के दूरना पडोशीओथी बनतु कूडाळु (१२) ऋग्वेदना १० खडमानो दरेक (१३) कूडाळु थाय तेवी गति के चाल(१४)जुगारनो पट
मंडलनाभि पु० वर्तुळनु केंद्र
मंडलयति प० (गोळ फरवु, कूडाळु बनाववु) [वड
मंडलवट पु० कूडाळु बने ते रीते जामेलो

मंडलायित वि० गोळ कूडाळु बनतु के बनावतु होय तेवु (२) न० गोळो, दडो
मंडलावृत्ति स्त्री० गोळ चक्कर फरवु ते
मंडलिन् वि० कूडाळु बनावतु, कूडाळु वळतु होय तेवु (२) प्रांत उपर राज्य करतु (३) पु० साप (४) प्रांताधिकारी
मंडली स्त्री० कूडाळु (२) टोळी, समुदाय
मंडलीक पु० खडियो राजा
मंडित ('मंड्'नु भू०कृ०) वि० शणगारेलु
मंडुक न० ढालनो हाथो
मंडूक पु० देडको
मंडूककुल न० देडकानो समुदाय
मंडूकयोग पु० देडका पेठे निश्चल बेसी करातु ध्यान
मंतव्य वि० विचारवा लायक (२) कल्पी शकाय तेवु (३) मान्य राखवा लायक
मंतु पु० अपराध, दोष (२) मानवजात (३) सलाह (४) स्त्री० बुद्धि, समजशक्ति
मंत्र् १० आ० (कोई वार प० पण) मंत्रणा करवी, सलाह करवी, सलाह लेवी (२) सलाह आपवी (३) मंत्र बोलवा (४) बोलवु, वात करवी
मंत्र पु० वेदनु स्तोत्र-के तेनो शब्दसमूह (कोई देवने संबोधायेलो) (२) वेदनो संहिताभाग ('ब्राह्मण' भागथी जुदो) (३) गूढशक्तिवाळो शब्दसमूह (४) मंत्रणा, विचारणा, सलाह (५) गुप्त योजना, रहस्य (६) उपाय, युक्ति
मंत्रकर्कश वि० कठोर राजनीतिनी तरफेण करतु
मंत्रकृत् पु० वेद-मंत्रनो रचनारो (२) मंत्र भणनारो (३) सलाहकार (४) राजदूत, एलची
मंत्रकृत वि० मंत्रोथी पवित्र करेलु
मंत्रगंडक पु० एक प्रकारनु तावीज (२) ज्ञान, विद्या [ओरडो
मंत्रगृह न० (राजानो) मंत्रणा माटेनो
मंत्रग्रह पु० मंत्रीओनी सलाह लेवी ते
मंत्रजिह्व पु० अग्नि
मंत्रज्ञ वि० वेदमंत्र जाणनारु (२) सलाह आपवामा कुशळ (३) पु० सलाहकार (४) विद्वान ब्राह्मण [सलाह
मंत्रण न०, **मंत्रणा** स्त्री० विचारणा (२)
मंत्रदर्शिन्, **मंत्रदृश्** वि० वेदमंत्रो जेने स्फुर्या होय तेवु (२) श्रोत्रिय, वेद जाणनारु (३) सलाहकार
मंत्रधर, **मंत्रधारिन्** पु० सलाहकार
मंत्रपूत वि० मंत्र वडे पवित्र करेलु
मंत्रप्रचार पु० मंत्रणा के सलाहनो शिरस्तो के क्रम
मंत्रप्रयोग पु० मंत्रशक्तिनो उपयोग
मंत्रभेद पु० गुप्त वात प्रगट करी देवी ते (२) मंत्रणा जाहेर करी देवी ते
मंत्रयुक्ति स्त्री० मंत्रप्रयोग करवो ते
मंत्रवत् वि० मंत्र साथेनु (२) दीक्षित
मंत्रवादिन् पु० वेदमंत्र पढनारो (२) जादुगर, तान्त्रिक
मंत्रशक्ति स्त्री० मंत्रतंत्रनी शक्ति
मंत्रश्रुति स्त्री० कोईनी गुप्त मंत्रणा सांभळी लेवी ते [गुप्त राखवी ते
मंत्रसंवरण न० कोई योजना के मंत्रणा
मंत्रसाधन न० मंत्र वडे वश करवु ते, मंत्र वडे साधवु के सिद्ध करवु ते (२) मंत्रतंत्रथी चमत्कारी शक्ति मेळववी ते
मंत्रसाध्य वि० मंत्रतंत्रथी वश कराय के असर पहोंचाडाय तेवु (२) मंत्रणा के विचारणाथी मळे तेवु
मंत्रसिद्ध वि० मंत्रतंत्रनी शक्ति प्राप्त करेलु, तेनाथी असरकारक बनेलु
मंत्रसिद्धि स्त्री० मंत्र सिद्ध करवो ते (२) मंत्र साधवाथी मळती शक्ति
मंत्राधिराज पु० मंत्रोनो अधिनायक (वेताल) [प्रयत्न करवो ते
मंत्राराधन न० मंत्रना बळे मेळववा
मंत्रि पु० जुओ 'मंत्रिन्'

मंत्रित ('मंत्र्' नु भू० कृ०) वि० सलाह लीधेलु (२) सलाह आपेलु (३) कहेलु (४) मंत्रेलु (५) नक्की करेलु (६) न० सलाह
मंत्रिता स्त्री०, **मंत्रित्व** न० मंत्रीपणु
मंत्रिधुर वि० मंत्रीपद वहन करे तेवु
मंत्रिन् वि० सलाह आपवामा कुशळ (२) मंत्रो जाणनारु (३) पु० मंत्री, सलाहकार (४) मंत्रप्रयोग जाणनारो
मंत्रिपति, मंत्रिप्रधान, मंत्रिप्रमुख, मंत्रिमुख्य, मंत्रिवर, मंत्रिश्रेष्ठ पु० मुख्य प्रधान, वडो प्रधान
मंत्रोक्त वि० मंत्रमा के सूक्तमा कहेलु
मंथ् १, ९ प० जुओ 'मथ्'
मंथ पु० वलोववु ते (२) नाश करवो ते (३) रवैयो (४) एक मिश्र पीणु
मंथन पु० रवैयो (२) न० वलोववु ते (३) घसीने अग्नि उत्पन्न करवो ते
मंथर वि० सुस्त, मंद, निष्क्रिय (२) मूर्ख (३) मोटु; पहोळु (४) वांकुं वळेलु (५) सूचक
मंथरविवेक वि० विवेकशक्तिमा मंद
मंथरा स्त्री० कैकेयीनी दासी
मंथाचल, मंथाद्रि पु० मंदर पर्वत (रवैया तरीके समुद्रमंथन वखते वापर्यो होवाथी)
मंथान पु० रवैयो
मंद वि० धीमु, सुस्त (२) बेदरकार (३) जड, मूर्ख (४) ऊंडु – पोलु (अवाज) (५) धीमु, हळवु (जेम के स्मित) (६) नानु, अल्प (जेम के पेट) (७) कमजोर (जेम के मंदाग्नि)
मंदक वि० मूर्ख (२) राग-द्वेष के मान-अपमाननी लागणी विनानु
मंदकर्ण वि० ओछु सांभळतु
मंदकारिन् वि० धीमी गतिथी के मूर्खपणे काम करतु
मंदचेतस् वि० जड बुद्धिनु (२) बेध्यान (३) लगभग मूर्छित एवु
मंदच्छाय वि० झाखु, कांति विनानु
मंदता स्त्री०, **मंदत्व** न० धीमापणु, सुस्ती (२) जडता (३) मूर्खता (४) नबळापणु (५) नानापणु, ओछापणुं
मंदधी वि० मंद बुद्धिवाळु, मूर्ख
मंदपुण्य वि० कमनसीब, दुर्भागी
मंदप्रज्ञ, मंदबुद्धि वि० जुओ 'मंदधी'
मंदभागिन्, मंदभाग्य, मंदभाज् वि० अभागियु, दुर्भागी, दुखियारु
मंदभास् वि० झाखु [धीमेथी
मंदम् अ० धीरे धीरे (२) हळवेथी,
मंदमति, वि० जुओ 'मंदधी'
मंदमंदम् अ० धीमे धीमे
मंदमेधस् वि० जुओ 'मंदधी'
मंदर वि० धीमु, जड (२) गाढु (३) मोटा कदवाळु (४) पु० एक पर्वत (जेने समुद्रमंथन वखते रवैया तरीके वापर्यो हतो)
मंदरम् अ० धीमेथी
मंदविभव वि० गरीब, दरिद्री
मंदविसर्पिन् वि० धीमे धीमे सरकतु
मंदवीर्य वि० नबळु
मंदाकिनी स्त्री० गंगा नदी (२) स्वर्गंगा
मंदाक्ष न० लाज, शरम
मंदाग्नि वि० मंद पाचनशक्तिवाळु (२) पु० मंद जठराग्नि
मंदायते आ० (धीमा चालवु; ढील करवी)
मंदार पु० स्वर्गना पांच वृक्षोमानु एक (२) न० एनु फूल
मंदारमाला स्त्री० मंदार फूलोनी माळा
मंदासु वि० मंद पडी गयेला प्राणवाळु; मरवानी तैयारीमा होय तेवु
मंदिर न० निवासस्थान, घर (२) महेल (३) देवमंदिर
मंदीकृ ८ उ० धीमु करवु, ओछु करवु
मंदीभू १ प० धीमु पडवु, ओछु थवु
मंदुरा स्त्री० तबेलो [उपरी
मंदुरापति, मंदुरापाल पु० तबेलानो

मंदोत्साह वि० उमग विनानु; उत्साह मद पडी गयो होय तेवु
मंदौत्सुक्य वि० नामरजीवाळु, उत्सुकता न रही होय तेवु
मंदोदरी स्त्री० रावणनी पटराणी
मंद्र वि० घेरु, गभीर (अवाज) (२) पु० घेरो अवाज (३) एक जातनो हाथी (४) एक जातनु ढोल
मा २ प०, ३, ४ आ० मापवु (२) मर्यादित करवु (३) तुलना करवी (४) समावु, समावेश थवो (५) गोठववु (६) अनुमान करवु (७) रचवु
मा अ० नहि; ना (२) रखे
मा स्त्री० लक्ष्मी (२) माता
माकर वि० (मकर अर्थात्) मगरमच्छने [लगतु
माकरंद वि० (मकरद अर्थात्) फूलोना मधने लगतु के तेनु बनेलु (२) मकरदथी भरेलु
माकराकर पु० महासागर (मकर–मगरमच्छनी खाण के भडार)
माकद पु० आबो
माक्षिक, माक्षीक वि० मधमाखने लगतु (२) न० मध (३) एक उपधातु (औषधिमा वपराय छे)
मागध वि० मगध देश सबधी (२) पु० मगधनो राजा (३) एक मिश्रजाति (वैश्य पिता अने क्षत्रिय माताथी थयेला सतानो) (४) भाट, चारण
मागधी स्त्री० मगधनी राजकुमारी (२) मगधनी भाषा (चार मुख्य प्राकृत भाषाओमानी एक) (३) साहित्यनी एक शैली
माघ पु० महा महिनो (२) एक कवि ('शिशुपालवध' महाकाव्यनो कर्ता)
माघमा स्त्री० करचली
माघवत वि० इद्र सबधी, इद्रनु
माघवतचाप न० मेघधनुष्य
माघवन वि० इद्र सबधी के इद्र-वडे शासित एवु
माचिरम् अ० तरत, विलव विना
माणवक पु० छोकरो, किशोर (२) वामन, ठीगणो (३) भणतो विद्यार्थी (४) सोळ सेरनी मोतीनी माळा
माणिक्य न० माणेक
मातरिश्वन् पु० वायु, पवन
मातलि पु० इद्रनो सारथि
मातलिसारथि पु० इद्र
मातंग पु० हाथी (२) चाडाळ (३) किरात (४) ते ते वर्गनी श्रेष्ठ व्यक्ति
मातंगनक्र, मातंगमकर पु० हाथी जेवडो मोटो मगर
मातंगी स्त्री० पार्वती (२) चाडाळ स्त्री
माता स्त्री० मा, जननी
मातामह पु० माना पिता
मातामही स्त्री० मानी मा
मातुल पु० मामो
मातुलिंग, मातुलुंग पु० बिजोरानु झाड
मातुल्य न० मामानु घर
मातृ स्त्री० माता, मा (२) लक्ष्मी (३) दुर्गा (४) गाय (५) पृथ्वी (६) ब० व० दिव्य माताओ (८, ७ के १६)
मातृक वि० मा पासेथी मळेलु (२) माता सबधी (३) पु० मामो
मातृका स्त्री० माता (२) दादी (मानी मा) (३) धावमाता (४) मूळ, जन्मस्थान (५) चमत्कारी शक्तिवाळी मनाती आकृतिओ के वर्णोमाथी दरेक
मातृगंधिनी स्त्री० कुमाता, दुष्ट माता
मातृदेव वि० माताने देव गणतु
मातृबंधु पु० माना पक्षनो सगो
मातृमंडल न० दिव्य माताओनु मडळ
मातृष्वसृ स्त्री० माशी, मानी बहेन
मातृष्वसेय पु० माशीनो दीकरो
मात्र अ० '–ना जेवडु', '–ना कदनु – मापनु' (२) '–सुधी पहोचतु' (आ अर्थमा एने समासमा थतु 'मात्रा' शब्दनु रूप पण गणी शकाय)

मात्र न० (लवाई–पहोळाई–ऊचाई–कद–अतर–सख्या वगेरेनु) माप (उदा० 'अगुलिमात्रम्', 'क्षणमात्रम्') (२) (कोई पण बाबतनु) समस्तपणु के आखो वर्ग (उदा० 'जीवमात्रम्') (३) (कोई पण बाबतमा)ए एक ज; बीजु वधु नहि ते (उदा० वाचा-मात्रेण) (४) (भूतकृदत साथे) अमुक क्रिया थई के तरत ज, एवो अर्थ बतावे छे (उदा० भुक्तमात्रे)

मात्रा स्त्री० माप (२) धोरण, नियम (३) मापनो एकम(४)अश(५)अणु (६) छेक नहि जेवु ते (७) हिसाब, गणतरी (८) मालमिलकत (९) काव्य के सगीतमा समयनी गणनानो एकम(१०)मूळ भौतिक तत्त्व(११) भौतिक सृष्टि (१२) नागरी वर्णोना मथाळे आवतु '`' इ० चिह्न

मात्राभस्त्रा स्त्री० पैसानी कोथळी

मात्रालाभ पु० धनप्राप्ति

मात्रास्पर्श पु० बाह्य भौतिक पदार्थोनो इद्रिय साथेनो सयोग

मात्सर्य न० अदेखाई (२) अणगमो

माथक पु० नाश करनारो

माथुर वि० मथुरामा बनेलु के मथुरानु

मादक वि० मदमत्त करनारु (२) हर्षित करनारु [मारा सरखु

मादृक्ष,मादृश्(–श) वि० मारा जेवु;

माद्री स्त्री० पाडु राजानी बीजी राणी (सहदेव-नकुलनी माता)

माधव वि० मध जेवु – गळ्यु (२) मधनु बनेलु (३) वसत ऋतुने लगतु(४) पु० श्रीकृष्ण (५) वसतऋतु (काम-देवनो मित्र) (६) वैशाख महिनो (७) इद्र (८) (ब० व०) यादवो

माधविका स्त्री० एक लता

माधवी स्त्री० मधमाथी बनावेलु पेय (२) वासतीलता (सफेद सुगधी फूल थाय छे) (३) पृथ्वी (४) तुलसी

माधुकर वि० मधुकर – मधमाख सबधी के तेना जेवु (उदा० 'माधुकरी वृत्ति')

माधुकरी स्त्री० घेर घेरथी थोडु लईने भिक्षा भेगी करवी ते (जेम मधमाख अनेक फूलोमाथी मध एकठु करे छे) (२) पाच घेरथी मागेली भिक्षा

माधुर न० मल्लिकालतानु फूल

माधुरी स्त्री० मीठाश, मधुरता (२) शराब, मध

माधुर्य न० मधुरता, मीठाश (२) आकर्षक सौदर्य (३) (स्त्रीने तेना प्रियतम माटे होय तेवो) श्रीकृष्ण प्रत्ये प्रेमभाव

माध्यम वि० वच्चेनु, वचलु, मध्यनु

माध्यस्थ, माध्यस्थ्य न० निष्पक्षता(२) अपेक्षा न राखवी ते (३) झघडामा पतावट माटे वच्चे पडवु ते

माध्वीक न० महुडानो दारू (२) द्राक्ष-नो दारू (३) द्राक्ष

मान् १ आ० [मीमासते] विचारवु (२) १ प०, १० उ० मान आपवु

मान पु० आदर, समान (२) आत्म-समान; आत्मविश्वास (३) घमड, अभिमान, मोटाई (४) मान घवा-यानी लागणी (५) अदेखाईथी चडेलो गुस्सो (स्त्रीने) (६) गुस्सो (७) न० माप, धोरण(८)प्रमाण, साबिती (९) सरखापणु

मानकलह, मानकलि पु० अदेखाई-भरेला गुस्साथी ऊभी थयेली तकरार

मानग्रहण न० रूठवु ते

मानद वि० मान – आदर करतु (२) गर्विष्ठ (३) अभिमान तोडनारु

मानदंड पु० मापवानो गज

मानधन वि० खब मान मळ्यु होय के मळतु होय तेवु

मानन न०, **मानना** स्त्री० मान, आदर, समान (२) वध करवो ते

माननीय वि० मान आपवा योग्य

मानपर, मानभृत् वि० अति गर्विष्ठ
मानमहत् वि० अति गर्विष्ठ
मानव वि० मनुनु अथवा तो मनुना वंशनु (२) मनुष्य संबंधी (३) पु० मनुष्य, माणस (४) ब० व० प्रजाना माणसो (५) माणसजात
मानवत् वि० अभिमानी; गर्विष्ठ
मानवदेव पु० राजा, नृपति
मानवराक्षस पु० माणसना रूपमा राक्षस - पिशाच
मानस वि० मनने लगतु, मानसिक (शारीरिकथी भिन्न) (२) मनमाथी जन्मेलु, संकल्पथी पेदा करेलु (३) मानस सरोवर उपर रहेतु (४) न० मन, हृदय; जीव (५) कैलास पर्वत उपरनु पवित्र सरोवर
मानसजन्मन् पु० मदन, कामदेव (२) हंस (मानस सरोवर तेमनु वतन छे तेथी)
मानसार पु०, न० अभिमाननी मोटी [मात्रा के कोटी
मानसिक वि० मन संबंधी (२) काल्पनिक (३) मनमा आचरेलु (पाप)
मानसूत्र न० सोनानो के रूपानो कंदोरो (२) मापवानो गज
मानसौकस् पु० हंस (मानस सरोवरे [रहेतो)
मानसोत्क वि० मानस सरोवर तरफ जवा उत्सुक एवु
मानावभंग पु० मान अथवा गुस्सानो [नाश
मानांध वि० मान के अहंकारमा मत्त
मानित वि० समानेलु, आदर करेलु (२) न० मान के आदर बताववा ते
मानिता स्त्री०, **मानित्व** न० अभिमान (२) आदर, समान
मानिन् वि० मानतु, धारतु, गणतु (समासने छेडे) (२) मान आपतु (समासने छेडे) (३) अभिमानी, स्वमानवाळु (४) समाननीय, आदरणीय (५) रूठेलु (६) पु० सिंह
मानिनी स्त्री० स्वमानी स्त्री (२) (मानभंग थवाथी पति प्रत्ये रूठेली स्त्री)
मानुष वि० मनुष्यनु; मनुष्य संबंधी (२) मायाळु, माणसाईभर्यु (३) पु० मनुष्य, माणस (४) न० मानवजात (५) मानव प्रयत्न (६) मनुष्यपणु
मानुषता स्त्री०, **मानुषत्व** न० माणसपणु (२) माणसजात
मानुषराक्षस पु० जुओ 'मानवराक्षस'
मानुषी स्त्री० मनुष्य स्त्री
मानुष्य, मानुष्यक न० माणसपणु (२) मनुष्यनु शरीर (३) मानवजात (४) मनुष्यलोक (५) मनुष्योनो समूह
मानोत्साह पु० आत्मविश्वासथी उत्पन्न थतु जोस के पराक्रम
मानोन्नति स्त्री० खूब सन्मान
मान्मथ वि० मन्मथे – कामदेवे उत्पन्न करेलु, प्रेमने लगतु
मान्य वि० मान आपवा योग्य
माप, मापति पु० विष्णु (लक्ष्मीपति)
मापन न०, **मापना** स्त्री० मापवु ते, मापणी (२) बनाववु – रचवु ते
माम वि० मारु, मारा संबंधी (२) प्रिय मित्र, मामो (संबोधनमां)
मामक वि० मारु, मारा पक्षनु (२) स्वार्थी (३) पु० मामो
मामकीन वि० मारु
माय वि० मायाशक्ति धरावनारु (२) पु० मायावी; जादुगर (३) पिशाच
माया स्त्री० छळ; प्रपंच (२) इंद्रजाळ (३) आभास, भ्रम (४) अविद्याशक्ति, जेने कारणे आ मिथ्या जगत देखाय छे (वेदांत०) (५) कुशळता
मायाजल न० आभासरूप जळ
मायाप्रयोग पु० माया – छळकपट वापरवा ते (२) जादुई करामत करवी ते
मायामय वि० माया, आभास के भ्रमरूप (२) मिथ्या (३) जादुई

मायामृग पु० मायावी हरण
मायायोधिन् वि० माया के छळकपटथी लडनारु [वापरेला शब्दो
मायावचन न० खोटा – छळकपटथी
मायाविन् वि० माया, छळकपट के वापरनारु, तेमा कुशळ (२) मिथ्या, भ्रम के आभासरूप (३) पु० जादुगर
मायिन् वि० जुओ 'मायाविन्' (२) पु० जादुगर (३) छळकपट करनारो (४) शिव (५) ब्रह्मा (६) कामदेव
मायूर वि० मोरनु, मोर सबधी, मोरमाथी उत्पन्न थयेलु (२) मोरना पीछानु बनेलु (३) मोर जोडेलु (वाहन) (४) मोरने प्रिय (५) न० मोरनु टोळु
मायूरक, मायूरिक पु० मोर पकडनारो (२) मोरना पीछांनी वस्तुओ बनावनारो [जीवनारु
मायोपजीविन् वि० माया – छळकपटथी
मार पु० हिंसा, वध (२) विघ्न, डखल (३) कामदेव (४) कामविकार (५) मृत्यु (६) शयतान जेवो ललचावीने नाश करनार देव (बौद्ध०)
मारक वि० हणनारु, मारनारु (समासने छेडे) (२) पु० कामदेव (३) महामारी (४) न० बधा प्राणीओनो प्रलयकाळे नाश
मारकत वि० मरकत मणिनु
मारजित् पु० शकर (२) बुद्ध भगवान
मारण न० वध, हिंसा (२) शत्रुनो नाश करवा मत्रतत्रनो प्रयोग करवो ते
मारव वि० मरुभूमि सबधी
मारात्मक वि० खूनी; हिंसक
मारारि पु० शिव (कामने बाळनार)
मारांक वि० कामविकारना लक्षणवाळु
मारि स्त्री० महामारी, मरकी
मारित वि० हणेलु (२) नष्ट करेलु
मारिष पु० (सूत्रधार वडे मुख्य नटने करातु) मानवाचक सबोधन (नाट्य०)
मारी स्त्री० जुओ 'मारि'
मारीच पु० एक राक्षस (जेणे मायावी मृगनु रूप धरी सीताने हरणमा मदद करी हती) (२) कश्यप ऋषि (३) न० पीपरनी वेलोनु झुड
मारुत वि० मरुत् देवो सबधी (२) पवन सबधी, पवनवाळु (३) पु० पवन (४) वायुदेव (५) प्राणवायु
मारुतसूनु पु० हनुमान (२) भीम
मारुतायन न० बारी (गोळ आकारनी)
मारुति पु० हनुमान (२) भीम
मारुती स्त्री० वायव्य खूणो (२) मरुतो – देवोनी पुत्री
मार्कट वि० मर्कट – माकडा जेवु
मार्ग् १ प०, १० उ० शोधवु, खोळवु (२) –नी पाछळ पडवु (३) मेळववा प्रयत्न करवो (४) मागवु, याचवु (५) १० उ० जवु (६) शणगारवु
मार्ग वि० मृग सबधी, मृगनु
मार्ग पु० रस्तो (२) गोचर, क्षेत्र (३) (घानो) डाघ, चिह्न (४) पद्धति; रीत, शैली (५) रूढि (६) नृत्य, संगीत के अभिनयनी उच्च शैली (७) न० हरणोनु टोळु
मार्गण वि० शोधतु, खोळतु (२) पूछतु (३) मागतु (४) न० भीखवु के मागवु ते (५) आजीजी करवी ते (६) तपास (७) पु० भिखारी (८) बाण
मार्गणा स्त्री० मागवु के याचवु ते (२) तपास करवी ते (३) शोधवु ते
मार्गतोरण न० रस्ता उपर ऊभी करेली अभिनदन माटेनी कमान के दरवाजो
मार्गद्रुम पु० रस्तानी बाजुए ऊगेलु झाड
मार्गविनोदन न० मुसाफरीमा आनदप्रमोदनु साधन [मागशर महिनो
मार्गशिर, मार्गशिरस्, मार्गशीर्ष पु०
मार्गस्थ वि० मुसाफरी करतु, मार्गे चडेलु
मार्गागत, मार्गायात पु० मुसाफर

न० मांगलिकता, सद्भाग्य (३) आशीर्वाद (४) उत्सव (५) तावीज
मांगल्यमृदंग पु० शुभ प्रसंगे वगाडातुं नगारु
मांजिष्ठ वि० मजीठ जेवु रातु (२) [मजीठथी रंगेलु
मांजिष्ठिक वि० मजीठथी रंगेलु
मांडलिक वि० प्रांत संबंधी (२) पु० प्रांतनो सूबो (३) त्रणथी दस लाखनी आवकवाळो राजा
मांत्रिक पु० मंत्रतंत्र जाणनारो
मांथर्य न० धीमापणु सुस्ती (२)नवळाई
मांदुरिक पु० घोडानी मावजत करनारो
मांद्य न० धीमापणु; सुस्ती (२) मूर्खता; जडता (३) नवळाई, बीमारी
मांद्यव्याज पु० मांदगीनो ढोंग
मांस् न० मांस (पहेला पांच रूप नथी; बाकीना रूप 'मांस'नी बीजी विभक्ति बहुवचनथी विकल्पे मुकाय छे)
मांस न० प्राणीना शरीरनो स्नायु-रूप भाग (२) फळनो गर
मांसक्षय पु० शरीर (मांसनु धाम)
मांसल वि० मांसवाळु (२) भरावदार; जाडु (३) ऊंडु (ध्वनि) (४) कादवमां के जथामां वधेलु (५) गाढु
मांसलता स्त्री० करचली (चामडीनी)
मांसाद वि० मांसाहारी
मांसौदन पु० भात मिश्रित मांस (२) मांसनु भोजन
मित ('मा' नु भू० कृ०) वि० मापेलु (२) सीमा आंकेलु (३) थोडु, मर्यादित
मितद्रु पु० समुद्र
मितभाषिन्, मितवाच् वि० मर्यादित बोलनारु [रांधनारु)
मितंपच वि० कंजूस, कृपण (बहु थोडु
मिताक्षर वि० टूंकु (२) पद्यमां रचेलु
मिताहार वि० मर्यादासर खानारु
मित्र पु० सूर्य (२) न० दोस्त
मित्रकर्मन्, मित्रकार्य, मित्रकृत्य न० मित्रनु कार्य (२) मित्र तरीकेनु कृत्य, मित्रताभर्युं कृत्य
मित्रता स्त्री०, **मित्रत्व** न० दोस्ती
मित्रविंद पु० अग्नि
मित्रसाह वि० मित्र प्रत्ये उदार
मियस् अ० अरसपरस, एकबीजाने (२) खानगीमां (३) वाराफरती
मिथिला स्त्री० विदेह देशनी राजधानी
मिथुन वि० जोडकारूप (२) न० जोडकु
मिथुनेचर पु० चक्रवाक
मिथ्या अ० खोटी रीते; छळकपटथी, अयथार्थपणे (२) ऊलटु (३) नकामु; निष्प्रयोजन [करनारु
मिथ्याकारुणिक वि० करुणाळुतानो ढोंग
मिथ्याक्रय पु० खोटी किंमत
मिथ्याचार वि० दांभिक, मिथ्याचारी (२) पु० दांभिक के अघटित व्यवहार
मिथ्याजल्पित न० खोटी अफवा
मिथ्यादृष्टि स्त्री० खोटा सिद्धांतने वळगवु ते, नास्तिकता
मिथ्यापवाद पु० खोटु आळ
मिथ्यापंडित पु० मात्र देखावमां ज पंडित के विद्वान एवु [करनारु
मिथ्याप्रतिज्ञ वि० प्रतिज्ञानो भंग
मिथ्याफल न० काल्पनिक लाभ के फायदो
मिथ्याभिशंसन न० खोटु आळ
मिथ्यावादिन् वि० जूठु बोलनारु
मिथ्यावृत्त वि० दुराचारी
मिथ्याव्यापार पु० बीजाना काममां नाहक घालमेल करनारो
मिथ्योपचार पु० दंभथी बतावेली मायाळुता; दंभथी करेली सेवा
मिमंक्षु वि० नाहवानी के डूबकुं मारवानी इच्छावाळु
मिल् ६ उ० मळवुं, जोडावु, साथे थवु; भेगा थवु (२) बनवु, थवु (३) भेटवु (४) मळता थवु (अभिप्राय साथे) (५) मेळ खावो [बनतु
मिलत् वि० मळतु, जोडातु (२) थतु;

मिलद्व्याघ वि० शिकारीओथी घेरायेलु; शिकारीओ एकठा थया होय तेवु
मिलन न० मळवु – एकठा थवु ते
मिलित ('मिल्' नु भू० कृ०) वि० मळेलु; एकठु थयेलु (२) जोडायेलुं (३) भेगु करेलु, मिश्रित
मिलिंद पु० भमरो, नर मधमाख
मिलीमिलिन् पु० शिव
मिश्र् १० उ० मिश्रण करवु (२) उमेरवु
मिश्र वि० मिश्रित, भेगु थयेलु के करेलु (२) सवधी, जोडायेलु (३) अनेकविध (४) पु० आदरणीय पुरुष (मोटा पुरुषो तथा विद्वानोना नाम पछी सामान्यपणे लगाडाय छे)
मिश्रण न० मिश्र करवु ते (२) सरवाळो
मिश्रित (मिश्र् नु० भू० कृ०) वि० मिश्र करेलु; भेळवेलु (२) उमेरेलु
मिष् ६ प० आखनो पलकारो मारवो (२) असहायपणे जोई रहेवु (३) स्पर्धा करवी (४) १ प० छाटवु; भीनु करवु
मिष पु० स्पर्धा (२) न० बहानुं (३) छळ
मिष्ट वि० मीठु, गळ्यु (२) मिष्टान्न
मिष्टान्न न० स्वादिष्ट वानी; मीठाई
मिहिका स्त्री० हिम, झाकळ (२) कपूर
मिहिकाख्य् पु० चद्र (श्वेत किरणवाळो)
मिहिर पु० सूर्य
मी ४ आ० मरवुं; नाश पामवुं
मीन पु० माछलु (२) मत्स्यावतार
मीमांसक पु० मीमासा–तपास–विचारणा करनार (२) पूर्वमीमासा मतनो अनुयायी [(२) पूर्वमीमांसा दर्शन
मीमांसा स्त्री० ऊडी विचारणा, तपास
मीमांसामांसलप्रज्ञ पु० मीमासा दर्शनना सेवनथी जेनी बुद्धि जाडी थई गई छे ते
मील् १ प० मीचवु (आख) (२) मीचावु; –बध थवु (आख के फूल) (३) ऊडी जवु; झाखु थवु, नाश पामवु –प्रेरक० बध करवु
मीलन न० आख मीचवी ते (२) बिडावु ते (फूलनु) [मीचायेलु (२) बिडायेलु
मीलित ('मील्' नु भू० कृ०) वि०
मुकुट न० मुगट, ताज (२) शिखर; टोच
मुकुर पु० अरीसो (२) कळी
मुकुल पु०, न० फूलनी कळी (२) कळीना आकारनु जे कई ते
मुकुलयति पु० (बध करावव के करवु)
मुकुलित वि० कळीओ बेठी होय तेवु (२) अर्धुं मीचायेलु (३) बिडायेलु, बध
मुकुंद पु० विष्णु के श्रीकृष्ण (मुकु – मोक्ष आपनार)
मुकुंदा स्त्री० एक जातनु मृदंग
मुक्त ('मुच्' नु भू० कृ०) वि० ढीलु करेलु (२) छूटु करेलु, छोडी मूकेलु (३) तजी दीधेलु, काढी नाखेलु, फेंकी दीधेलु (४) नीचे पडी गयेलु (५) नमी पडेलु, ढीलु थई गयेलुं (६) मोक्ष के उद्धार पामेलु (७) खीलेलु (८) प्रवर्तावेलु (९) पु० जीवन्मुक्त
मुक्तक न० एक अस्त्र (२) पूर्ण अर्थवाळो स्वतत्र श्लोक
मुक्तकर वि० उदार, दानेशरी
मुक्तकंठम् अ० ऊचा सादे; मोटा अवाजे
मुक्तबंधन वि० बंधनमांथी छूटु थयेलुं के करेलु
मुक्तलज्ज वि० बेशरम
मुक्तशैशव वि० युवान; पुख्त
मुक्तसंग वि० राग के आसक्ति रहित
मुक्तहस्त वि० जुओ 'मुक्तकर'
मुक्ता स्त्री० मोती
मुक्ताकलाप पु० मोतीनी माळा
मुक्ताकारता स्त्री० मोती जेवो आकार के देखाव होवो ते
मुक्तागार न० मोतीनी छीप
मुक्तागुण पु० मोतीनो हार
मुक्ताजाल न० मोतीनो कदोरो
मुक्तापटल न० मोतीनो जथ्थो

मुक्ताफल न० मोती
मुक्तामणि पु० मोती
मुक्तामणिसर पु० मोतीनो हार
मुक्तावलि(-ली) स्त्री० मोतीनी माळा
मुक्तासन वि० आसन उपरथी ऊभुं थतु (२)न० योगनु एक आसन; सिद्धासन
मुक्ताहार पु० मोतीनो हार
मुक्ति स्त्री० मुक्त थवु – छूटवु ते(२) संसारमाथी छूटवु ते, मोक्ष(३)तजवु ते (४) छोडवु के फेंकवु ते(५)ऋण भरपाई करवु ते [सिवाय
मुक्त्वा अ० तजीने(२)बाद राखीने;
मुख न० मो (२) चहेरो (३)अग्रभाग (४)अणी; धार(४)टोचडु; दीटडी (५) दिशा(६)खुल्लो भाग(७)नदी समुद्रने ज्या मळे ते भाग(८)बारणु(९) आरभ, शरूआत (१०) उपोद्घात (११) (समासने अते)मुख्य – अग्रेसर
मुखग्रहण न० मुख चूमवु ते
मुखचंद्र पु० चद्र जेवु मुख [चूर्ण
मुखचूर्ण न० मो उपर लगाडवानुं सुगधी
मुखतस् अ० मुखथी, मोढाथी
मुखदोष पु० जीभ के अवाजनो अपराध
मुखपट पु० मो उपरनो बुरखो
मुखपिंड पु० (अन्ननो) कोळियो
मुखप्रसाधन न० मो शणगारवु ते
मुखभंग पु० मो पर तमाच के प्रहार (२) मोनो चाळो
मुखभंगी स्त्री० मोनो चाळो
मुखमधु वि० मोढे मीठु बोलनारु
मुखमारुत पुं० श्वास
मुखमुद्रा स्त्री० चूपकीदी, चूप रहेवु ते
मुखर वि० वाचाळ, वातोडियु (२) चालु अवाज करतु (३) गाजतु (समासने छेडे) (४) प्रगट करतु; दर्शावतु (५) पु० आगेवान
मुखरयति प० (गाजे तेम करवु, बोले तेम करवु; जाहेर करवु)
मुखराग पु० मो के चहेरानो रग
मुखरित वि० अवाजवाळु करेलु के थयेलु
मुखरीकृ ८ उ० अवाज के ध्वनिवाळु करवु (२) बोले तेम करवु
मुखलेप पु० मृदगना मो पर काळो लेप चडाववो ते
मुखवास पु० श्वासने सुगधीदार करे तेवी सुगध
मुखव्यादान न० बगासु खावु ते
मुखशोष पु० राहु ग्रह
मुखस्राव पु० लाळ
मुखहास पु० मुखनु हास्य के प्रसन्नता
मुखासव पु० अधररस
मुख्य वि० मोने लगतु (२) प्रमुख; आगेवान (३) पु० मुखी; आगेवान
मुख्यतः, मुख्यशः अ० मुख्यत्वे करीने
मुग्ध वि० मूर्छित, बेभान(२)मूंझायेलु; मूढ (३) मूर्ख, अज्ञ (४) भोळु (५)कामविकारथी अणजाण; निर्दोष; बाळक जेवु(६)सुदर, मनोहर (७) नवु – शरूआतनु (चद्र)
मुग्धत्व न० भोळपण, निर्दोषता (२) सुदरता; मनोहरता
मुग्धदृश् वि० सुदर आखोवाळु
मुग्धधी, मुग्धमति वि० मूर्ख, भोळु
मुग्धविलोकित न० सुदर कटाक्ष
मुग्धस्वभाव पु० भोळपण, निर्दोषता
मुग्धा स्त्री० भोळी जुवान छोकरी
मुग्धाक्षी स्त्री० मनोहर आखोवाळी स्त्री
मुग्धालोक वि० देखवामा मनोहर एवु
मुच् १ आ० [मोचते] छेतरवु (२) ६ उ०[मुचति – ते] छूटु करवु, मुक्त करवु, जवा देवु, ढीलु मूकवु (३) खुल्लु करवु, काढवु (अवाज) (४) तजवु, छोडी देवु (५) वक्षवु
–प्रेरक० छोडाववु, छूटु कराववु (२)मुक्त करवु, उद्धारवु (३)वक्षवुं (४) छूटु करवु (धूसरीमाथी)

मुच् वि० (समासने छेडे) छूटु करतु (२) मोकलतु, फेकतु, काढतु, तजतु
मुचुलिंद पु० एक जातनु मोटु सतरु
मुद् १ प०, १० उ० कचरवु (२) मारवु (३) ठपको आपवो (६ प० पण) (४) १० उ० भेळववु (५) साफ करवु (६) १ आ० आनद पामवो, हर्षित थवु
मुद्, मुदा स्त्री० हर्ष, आनद (२) तृप्ति
मुदित ('मुद्' नु० भू० कृ०) वि० हर्षित; आनदित (२) न० आनद, हर्ष
मुदिर पु० मेघ, वादळ
मुद्ग पु० मग (२) मुद्गर; गदा
मुद्गर पु० हथोडो (२) एक जातनी गदा
मुद्गरक पु० हथोडो, घण
मुद्र वि० आनददायक
मुद्रण न० मुद्रा–महोर मारवी ते (२) छाप मारवी–छापवु ते (३) बंध करवु ते
मुद्रयति प० (छाप मारवी, महोर मारवी; बंध करी देवु)
मुद्रा स्त्री० सील के महोर, तेने माटेनी वीटी (२) छाप; चिह्न, निशानी (३) परवानो (४) चलणी सिक्को (५) चाद; पदक (६) बध करवु के वासी देवु ते (७) पूजा वखते आगळीओ वाळीने कराती आकृति (८) विशिष्ट रेखाओथी कराती आकृति (९) जळपरी
मुद्रास्थान न० ज्या मुद्रा (माटेनी वीटी) पहेराय छे ते स्थान (आगळीनु)
मुद्रांकित वि० महोर मारी होय तेवु
मुद्रिका स्त्री० नानी महोर के मुद्रा (२) मुद्रा माटेनी वीटी (३) छाप (४) चलणी सिक्को
मुद्रित वि० छाप मारेलु, महोर करेलुं (२) वध करेलु (३) अणखील्युं
मुधा अ० व्यर्थ, फोगट, नाहक (२) खोटी रीतें; मिथ्या
मुनि पु० ऋषि, तपस्वी (२) व्यास (३) अगस्त्य (४) पाणिनि (५) बुद्ध
मुनिभेषज न० हरडे (२) उपवास
मुनिवृत्ति स्त्री० तपस्वीनु जीवन जीववुं ते; वानप्रस्थाश्रम [व्रत
मुनिव्रत न० मौन रहेवानु तपस्वीओनु
मुमुक्षा स्त्री० मोक्षनी इच्छा
मुमुक्षु वि० मोक्षनी इच्छावाळु (२) तजवा, छोडवा के फेंकवानी इच्छावाळु (३) पु० मोक्षनी इच्छावाळो
मुमूर्षा स्त्री० मरवानी इच्छा
मुमूर्षु वि० मरवानी अणीए होय तेवु
मुर पु० श्रीकृष्णे मारेलो एक राक्षस
मुरज पु० ढोल, मृदग
मुरजित् पु० मुरारि; श्रीकृष्ण
मुरला स्त्री० केरल देशनी एक नदी
मुरली स्त्री० वासळी
मुरलीधर पु० श्रीकृष्ण
मुरवैरिन् पु० मुरारि; श्रीकृष्ण
मुरारि पु० श्रीकृष्ण (मुर राक्षसने मारनार)
मुर्छ् १ प० मूर्छा पामवी (२) वधवु तीव्र थवु; गाढ थवु (३)–नी उपर असर करवी (४) –नी सामे शक्ति होवी –प्रेरक० मूर्छित करवु (२) तीव्र करवु, वधारवु (३) मोटो अवाज काढवो–वगाडवु (वाजित्र)
मुर्मुर पु० छूणसा – फोतरांनो अग्नि
मुशल्ल न० दडो
मुष् ९ प० चोरवु, लूटवु, लई लेवु (२) अपहरण करवु (३) दूर करवु (४) बरबाद करवु (५) ग्रस्त करवु, ढाकी देवु (६) मोहित करवु (७) पाछळ पाडी देवु (८) छेतरवु (९) १ प० मारवु (१०) ४ प० चोरवु (११) भागी नाखवु
मुष् वि० चोरतु (२) दूर करत (३) पाछळ पाडी देतु
मुषक पु० उदर

मुषल पु० साबेलु
मुषलिन् पु० बळराम
मुषित ('मुष्'नु भू० कृ०) वि० चोरायेलु; लूटी जवायेलु, उपाडी जवायेलु (२) –थी रहित करायेलु (३) छेतरायेलु
मुषितक न० चोरायेली मिलकत
मुषितत्रप वि० बेशरम, शरम विनानु
मुष्ट ('मुष्' नु० भू० कृ०) वि० चोरायेलु(२)आकर्षायेलु
मुष्टि पु०, स्त्री० मुक्की, मूठी (२)मूठी भरीने थाय ते माप(३)हाथो
मुष्टिकाः पु० ब० व० एक बहिष्कृत जातिना लोक (डोब)
मुष्टियुद्ध न० मुक्काबाजी
मुष्टिवध पु० पाक बरबाद थवो ते
मुष्टीमुष्टि अ० सामसामा मुक्का मारीने
मुसल पु०, न०, साबेलु(२)गदा(३) घटनु लोलक
मुसलायुध पु० बळराम
मुस्त पु०, न०, **मुस्ता** स्त्री० एक जातनु घास – मोथ
मुह् ४ प० मूर्छा पामवी, बेभान थवु (२) मूझाई जवु (३) मूढ बनवु(४) भूल करवी
मुहुर्मुहुः अ० फरी फरीने, वारवार
मुहुस् अ० वारवार, पुन पुन (२) क्षणभर, घडीभर(३)वाक्यमा जुदा जुदा खडमा वपराय त्यारे–'एक-वार (आम). .तो बीजी वार (आम)' –एवो अर्थ बतावे छे
मुहूर्त पु०, न० क्षण, पळ (२) ४८ मिनिट जेटलो समय (३) समय(शुभ के अशुभ) [वगेरे बनावाय छे)
मुंज पु० एक घास (जेनी जनोई, दोरी
मुंड् १ प० मूडवु(२)कचरवु
मुंड वि० बोडेलु, मूडेलु (२) टोचना पादडा तोडी नाखेलु (३) बूठु; अणी वगरनु (४) पु० बोडेला माथावाळो माणस (५) उपरनी डाळो विनानु वृक्षनुं थड(६)न० माथु
मुंडन न० माथु बोडाववु ते
मुंडमंडली स्त्री० बोडेला माथा-वाळाओनु टोळु (२) सैनिक नहि तेवाओनु खाली टोळु
मुंडित वि० बोडेलु, मूडेलु
मुंडिन् वि० हजामत करेलु, बोडेलु
मूक वि० मूगु, चूप(२)दीन(३)पु० मूगो(४)दीन माणस
मूकांडज वि० चूप पखीओवाळु(वन)
मूढ('मुह्'नु भू० कृ०) वि० मूझाई गयेलु (२)शु करवु-न करवु ते न समजातु होय तेवु, विवेकरहित(३) मूर्ख; अज्ञ (४) भ्रमित, भूलमा पडेलु (५)पु० मूर्ख के अज्ञ माणस(६)न० मननी मूढता, विवेकरहितता
मूढग्राह पु० गेरसमज, खोटी समज
मूढचेतन (–स्), मूढधी वि० मूर्ख, अज्ञ
मूढप्रभु पु० मूर्ख शिरोमणि
मूढवात वि० तोफानना सपडायेलु
मूत्र न० पेशाव
मूत्रयति प० (पेशाब करवो)
मूर्ख वि० बेवकूफ (२) जड बुद्धिनु (३) पु० जड, बेवकूफ माणस
मूर्खपंडित पु० भणेलो मूर्ख
मूर्खमंडल न० मूर्खाओनी मडळी
मूर्च्छ् १ प० वधवु, वृद्धिगत थवु
मूर्च्छन वि० मूर्छा लावनारु (२) वधारनारु (३) न० मूर्छित थवु ते (४)वृद्धि(५)पारा वगेरेने मारवानी प्रक्रिया
मूर्च्छना स्त्री० मूर्च्छा (अर्थ १, २) (२) सात स्वरोनो क्रमसर आरोह अवरोह–थाट (३)रागप्रतिपादक–वादी स्वरने तेनी जोडेना स्वर सुधी लई जवो ने, तेने कपाववो ते(सगीत०)

मूर्च्छा स्त्री० बेशुद्धि, बेभान दशा (२) पारा वगेरेने मारवानी प्रक्रिया (३) मूर्च्छना (अर्थ २, ३)

मूर्च्छापगम पु० मूर्छा दूर थवी ते

मूर्च्छित ('मूर्च्छ्'नु भू० कृ०) वि० मूर्छा पामेलु, बेशुद्ध (२) मूर्ख, अज्ञ (३) वधी गयेलु (४) मूझायेलु

मूर्छ् १ प० जुओ 'मूर्च्छ्'

मूर्त वि० बेभान (२) मूर्ख (३) मूर्तिमान, शरीरधारी (४) भौतिक; स्थूल

मूर्ति स्त्री० आकृति, देह (२) अवतार; मूर्तिमान स्वरूप (३) (देव-देवीनी) प्रतिमा (४) शरीरनो अवयव

मूर्तिधर वि० मूर्तिमान, देहधारी

मूर्तिमत् वि० भौतिक; स्थूल (२) शरीरधारी, मूर्तिमत

मूर्तिसंचर वि० जुओ 'मूर्तिधर'

मूर्धग वि० माथा उपर बेठेलु

मूर्धज पु० माथाना वाळ, केश (२) माथा उपरनो टोप

मूर्धन् पु० माथु, मस्तक (२) ऊचामा ऊचो के आगळ पडतो भाग; टोच (३) आगेवान (४) मोखरानो भाग

मूर्धन्य वि० माथामा रहेलु के माथा उपरनु (२) मुख्य (३) मूर्धस्थान सबधी के त्याथी उच्चारातु (ऋ, ॠ, ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्, र् अने ष् —ए वर्णोनो वर्ग)

मूर्धाभिषिक्त वि० राज्याभिषेक करेलु (२) मुख्य के खास (उदाहरण) (३) पु० अभिषिक्त राजा

मूर्धांत पु० माथानी टोच

मूर्वा, मूर्विका, मूर्वी स्त्री० मोरवेल (जेना ततुनी धनुष्यनी पणछ के क्षत्रियनी जनोई बनावाय छे)

मूल न० मूळियु, जड (२) कोई पण वस्तुनो नीचेनो भाग (३) कोई पण वस्तुनो छेडो (ज्याथी ते बीजी साथे जोडाती होय) (४) शरूआत, प्रारभ (५) पायो, मूळ स्थान (६) कोई पण वस्तुनु तळियु के तळियानो भाग (७) पूजी; मूडी (८) राजानो पोतानो प्रदेश (९) मूळ कारण (१०) वर्गमूळ (गणित०) (११) मूळ ग्रथ के वाक्य (जेना पर टीका के भाष्य लखाय)

मूलक वि० —माथी नीकळतु; —ने आधारे रहेलु (समासने अते)

मूलकारण न० मुख्य के मूळ कारण

मूलघातिन् वि० समूळ नाश करनारु

मूलच्छिन्न वि० मूळ के शरूआतमांथी ज कापी नाखेलु के कपाई गयेलु

मूलज वि० वृक्षोना मूळ आगळ थयेलु (जेम के राफडो) (२) मूल नक्षत्रमा जन्मेलु

मूलद्रव्य, मूलधन न० मुद्दल; मूडी

मूलपुरुष पु० वशनो मूळपुरुष

मूलप्रकृति स्त्री० प्रकृति; जगतनु आदि कारण (साख्य०)

मूलप्रतीकार पु० मालमिलकत अने स्त्रीनी रक्षा करवी ते, धनदाररक्षा

मूलबल न० मुख्य अथवा वशपरपरा चालतु आवेलु लश्कर

मूलभृत्य पु० जूनो के वशपरपराथी चालतो आवेलो नोकर

मूलसाधन न० मुख्य साधन; मुख्य उपाय

मूलहर वि० निर्मूळ करनारु, समूळ नाश करनारु

मूलाधार न० दूटी (२) गुदा अने उपस्थनी वच्चे आवेलु चक्र (योग०)

मूलायतन न० मूळ निवासस्थान

मूलोच्छेद पु० समूळ नाश

मूल्य न० किमत (२) वेतन, रोजी (३) मूळ मूडी

मूष पु० उदर (२) मूस

मूषक, मूषिक पु० उंदर (२) चोर

मूषिकोत्कर पु० (उंदर वगेरेए) दर खोदता करेलो माटीनो टेकरो

मूषी स्त्री० उदरडी
मृ ६ आ० [म्रियते] (अमुक काळना रूपोमा प० पण)मरवु, नाश पामवु
मृग् ४ प०, १ आ० शोधवु, खोळवु (२) शिकार करवा पाछळ पडवु (३) मेळववा प्रयत्न करवो (४) तपासवु (५) याचवु (६) वारवार जवु–आववु
मृग पु० चोपगु प्राणी, पशु (२) जगली प्राणी (३) हरण (४) चद्र उपरनु तेवा आकारनु चिह्न (५) मागशर महिनो
मृगकानन न० घणा मृगोवाळु वन
मृगचर्या स्त्री० मृगनी पेठे जीववु ते (वनमा रहेवु इ०, एक तप)
मृगचारिन् वि० मृगचर्या आचरतु (भक्त); तपस्वी
मृगजल न० मृगजळ
मृगजीवन पु० पारधी
मृगतृष्णा, मृगतृष्णिका स्त्री० मृगजळ
मृगदृश् स्त्री० मृग जेवी आखोवाळी स्त्री
मृगधुव वि० मृगनो शिकार करवामा जाननो सट्टो खेलतु; मृगयानु रसियु
मृगधर पु० चद्र
मृगनयना स्त्री० हरिणाक्षी स्त्री
मृगनाभि पु० कस्तूरी (२) कस्तूरी मृग
मृगपति पु० सिंह
मृगपोत, मगपोतक पु० हरणनु बच्चु
मृगप्रभु पु० सिंह
मृगमद पु० कस्तूरी
मृगमंद्र पु० हाथीओनी एक जात
मृगया पु० शिकारे नीकळवु ते
मृगयाधर्म पु० शिकारना नियमो
मृगयु पु० शिकारी, पारधी
मृगराज पु० सिंह (२) चद्र
मृगराजधारिन् पु० शिव
मृगराजलक्ष्मन् वि० चद्र जेना मस्तक पर छे तेवु (शिव) (२) 'सिंह'ना नाम के चिह्नवाळु
मृगरोचना स्त्री० गोरोचन
मृगलांछन पु० चद्र
मृगलेखा पु० चद्र उपरनी मृग आकारनी [रेखा
मृगव्य न० शिकार
मृगशाव पु० हरणनु बच्चु
मृगशीर्ष पु० मागशर महिनो
मृगाक्षी स्त्री० हरण जेवा नेत्रोवाळी स्त्री
मृगाजिन न० हरणनु चामडु
मृगाधिप, मृगाधिपति, मृगाधिराज पु० सिंह (जानवरोनो राजा)
मृगाराति, मृगारि पु० सिंह
मृगावित् (–द्) पु० शिकारी
मृगांक पु० चद्र
मृगांगना, मृगी स्त्री० मृगली, हरणी
मृगेक्षण न० हरण जेवी आख
मृगेक्षणा स्त्री० जुओ 'मृगाक्षी'
मृगेंद्र पु० सिंह
मृच्छकटिका (मृद् + शकटिका) स्त्री० माटीनी गाडी (रमकडु)
मृज् २ प०, १० उ० साफ करवु, वाळी के लूछी काढवु (२) मसळवु; थाबडवु (३) पाणीथी धोवु, माजवु
मृजा स्त्री० साफ करवु, धोवु के माजवु ते (२) शुद्धि [कपडावाळु
मृजावत् वि० चोख्खाईवाळु (२) सारा
मृड् ६, ९ प० माफ करवु (२) खुश करवु (३) खुश थवु
मृडा, मृडानि, मृडी स्त्री० पार्वती
मृणाल पु०, न० कमळ वगेरेनी नाळमा होतो ततु (३) एक जातना कमळोनु ततुवाळु मूळियु
मृणालभंग पु० कमळना ततुनो टुकडो
मृणालसूत्र न० कमळ-नाळनो ततु
मृणालिका स्त्री० कमळनो दाडो अथवा ततु (२) कमळनी वेल के फूल
मृणालिनी स्त्री० कमळनी वेल (२) कमळनो समूह (३) कमळो घणा थता होय तेवु स्थान
मृणाली स्त्री० जुओ 'मृणालिका'

मृण्मय वि० माटीनु; माटीनु बनावेलु
मृत ('मृ'नु भू० कृ०) वि० मरण पामेलु (२) मरण पामेला जेवु (३) मारेलु (पारो इ०) (४) न० मोत
मृतक पु०, न० मडदु (२) न० मरणनु सूतक [बेभान
मृतकल्प वि० लगभग मरेला जेवु;
मृतनिर्यातक पु० शबने स्मशानमा वहन करी जनार – डाघु
मृतपा पु० हलकी वर्णना लोक (जेओ मडदाने साचवे छे, उपाडे छे, तथा तेना कपडा इ० ले छे)
मृतसंजीवनी स्त्री० मरेलाने जीवतु करवानी विद्या
मृत्तिका स्त्री० माटी
मृत्पिंड पु० माटीनु ढेफु
मृत्पिंडबुद्धि वि० जड बुद्धिनु
मृत्यु पु० मरण; मोत (२) यम
मृत्युनाशन न० अमृत [मर्त्यलोक
मृत्युलोक पु० यमलोक (२) पृथ्वी;
मृत्युंजय पु० शिव
मृत्स्ना स्त्री० माटी
मृद् ९ प० दबाववु; मसळवु (२) कचरवु; चूर्ण करी नाखवु (३) घसवु, –ने घसावु (४) चडियाता थवु (५) लूछी नाखवु
मृद् स्त्री० माटी (२) ढेफु, रोडु
मृदंग पु० बने बाजुएथी वगाडाय तेवु तबला जेवु वाद्य
मृदंगकेतु पु० युधिष्ठिर
मृदित ('मृद्'नु भू० कृ०) वि० दबायेलु, कचरायेलु (२) लूछी नाखेलु
मृदु वि० नरम, कोमळ, पोचु (२) नबळु (३) मध्यम (४) धीमु (५) अ० धीमेथी, मधुरताथी
मृदुगिर् वि० मृदु – धीमा अवाजवाळु
मृदुपूर्वम् अ० धीमेथी, कोमळताथी
मृदुल वि० मृदु, कोमळ (२) न० पाणी
मृदुसूर्य वि० सूर्य धीमेथी तपतो होय तेवु (दिवस)
मृद्ग वि० माटीमा ऊगतु के थतु
मृद्वंगी स्त्री० नाजुक स्त्री
मृद्वी, मृद्वीका स्त्री० द्राक्षनी वेल के द्राक्षनु झूमखु
मृध न० लडाई, युद्ध
मृन्मय वि० जुओ 'मृण्मय'
मृश् ६ प० स्पर्श करवो (२) दबाववु (३) विचारणा करवी
मृष् १ प० छाटवु (२) १ उ० सहन करवु; वेठवु (३) छाटवु (४) ४, १० उ० सहन करवु, वेठी लेवु (५) आववा देवु; परवानगी आपवी (६) क्षमा आपवी (७) भूली जवु
मृषा अ० फोगट, नाहक (२) खोटेखोटु
मृषावाच् स्त्री० कटाक्षमा बोलवु ते
मृषावाद पु० असत्य कथन
मृषोद्य न० जूठु, जूठ
मृष्ट ('मृज्' के 'मृश्' नु भू० कृ०) वि० साफ करेलु; स्वच्छ (२) खरडेलु, लेपेलु (३) स्पर्शेलु (४) विचारेलु (५) भावे तेवु
मेखला स्त्री० कदोरो (२) वीटनारी कोई पण वस्तु (३) ब्राह्मण, क्षत्रिय अने वैश्य ए त्रण वर्णो जे त्रण सेरनो कदोरो पहेरे छे ते (४) पर्वतनो नितंब भाग
मेखलापद न० नितंब
मेखलिन् पु० ब्रह्मचारी (विद्यार्थी)
मेघ पु० वादळ [(रावणनो पुत्र)
मेघनाद पु० मेघगर्जना (२) इंद्रजित
मेघराजि स्त्री० वादळोनी पंक्ति
मेघवाहन पु० इंद्र
मेघश्याम वि० मेघ जेवु श्याम (राम अथवा कृष्ण)
मेघसंघात पु० वादळ एकठा थवा ते
मेघस्तनित न० मेघगर्जना
मेघागम पु० वर्षाऋतु
मेघाटोप पु० गाढ वादळ
मेघाडंबर पु० वीजळीनो कडाको

मेघालोक पु० वादळ नजरे पडवा ते
मेघोदय पु० वादळ ऊंचे आववां ते
मेचक वि० काळा रंगनुं (२) पु० काळो रंग(३)मोरना पींछामानो चांदो
मेचकित न० काळा रंगनु
मेढ पु० घेटो (२) महावत
मेढी स्त्री० थांभलो (पशु बांधवानो)
मेढीभूत वि० मूळ केंद्र(जेनी आसपास बधु फरे)
मेथि पु० जुओ 'मेढी'
मेद पु० चरबी
मेदस् न० मेदधातु(२)शरीरनी जाडाई
मेदस्विन् वि० चरबीवाळु (२) जाडु; मजबूत [स्थळ; जगा
मेदिनी स्त्री० पृथ्वी (२) जमीन (३)
मेदुर वि० जाडु (२) स्निग्ध, सुंवाळु (३) गाढु, छवायेलु; पूर्ण
मेदुरित वि० गाढु थयेलु (२) चीकणु
मेध पु० यज्ञ (२) यज्ञमां होमवानु पशु (३) आहुति
मेधज पु० विष्णु
मेधा स्त्री० बुद्धि (२) यादशक्ति
मेधाविन् वि० बुद्धिमान; डाह्यु (२) सारी स्मरणशक्तिवाळु (३) पु० पंडित, विद्वान
मेध्य वि० यज्ञने योग्य (२) यज्ञ संबंधी (३) पवित्र (४) बुद्धिमान
मेनका स्त्री० स्वर्गनी एक अप्सरा (२) हिमालयनी पत्नी
मेना स्त्री० हिमालयनी पत्नी
मेय वि० मापवा योग्य, मापी शकाय तेवु (२) ज्ञेय, जाणी शकाय तेवु
मेरु पु० एक काल्पनिक पर्वत (जेनी आसपास ग्रह-नक्षत्र फरे छे) (२) माळानो मुख्य मणको [मेळावडो
मेल, मेलक पु० मिलाप(२)मेळो(३)
मेलन न० मिलाप (२) जोडाण (३) मिश्रण (४) लडाई, सामनो
मेला स्त्री० संयोग(२)एकठा थवु ते; मंडळी; सभा(३)सुरमो (४) शाही (५) गळी (६) एक मोटी संख्या
मेव वि० पुष्कळ, घणु
मेष पु० घेटो (२) मेष राशि
मेषपालक पु० भरवाड
मेषयूथ न० घेटानु टोळु
मेह पु० मूतरवु ते (२) मूतर(३) मधुप्रमेह (४) घेटो; बकरो
मैत्र वि० मित्रनु; मित्र संबंधी (२) मित्रे आपेलु (३) मित्रताभर्यु (४) मित्रदेव संबंधी (मुहूर्त) (५)पु० मित्र (६) उत्तम ब्राह्मण (७) न० मित्रता
मैत्रक न० मित्रता
मैत्रावरुण(-णि) पु० वाल्मीकि (२) अगस्त्य (३) वसिष्ठ
मैत्रेय वि० मित्रनु, मित्र संबंधी
मैत्र्य न० मित्रता, दोस्ती
मैथिल पु० मिथिलानो राजा – जनक
मैथिली स्त्री० सीता
मैथुन वि० लग्नथी जोडायेलु (२) न० लग्न (३) कामसंभोग
मैथुनीभाव पु० कामसंभोग
मैनाक पु० एक पर्वत(हिमालयनो पुत्र; समुद्रनी मित्रताने कारणे तेनी पांखो कपाती बची गई छे)
मैरेय, मैरेयक पु०, न० एक जातनु नशाकारक पेय (सुरा अने आसवनु मिश्रण) [चामडी
मोक न० प्राणीनी उतारी काढेली
मोक्तव्य वि० छूटु करवा योग्य (२) त्यागवा योग्य (३)उपर फेंकवा योग्य
मोक्ष् १ प०, १० उ० मुक्त करवु; छूटु करवु (२)फेंकवु (३)तजी देवु
मोक्ष पु० मुक्ति (२) बचाव (३) नीचे गरी पडवुं ते (४) छूटु के ढीलु करवु ते (५) फेंकवु के वेरवु ते
मोक्षण न० मुक्त के छूटु करवु ते

(२) बचाववु ते (३) ढीलु करवु ते (४) तजवु ते (५) फेंकवु के वेरवु ते
मोक्षद्वार पु० सूर्य
मोघ वि० व्यर्थ, निरर्थक (२) असफळ (३) हेतु–प्रयोजन विनानु (४) तजी दीधेलु (५) आळसु
मोघकर्मन् वि० व्यर्थ क्रियाविधिमा रत
मोघम् अ० नाहक, व्यर्थ
मोघीकृ ८ उ० निष्फळ बनाववु
मोचन वि० –माथी मुक्त के छूटु करनारुं (२) न० मुक्त के छूटु करवु ते
मोटन न० कचरवु, दळवु, दबाववु के मरडी नाखवु ते (२) पु० पवन
मोट्टायित न० गेरहाजर प्रियतमनो उल्लेख थता के तेनी याद आवतां स्त्रीथी अजाण्ये दर्शावाता भाव–चेष्टा
मोद पु० हर्ष, आनद; खुशी (२) सुगध
मोदक वि० खुश करतु, आनद आपतु (२) प्रसन्न, खुशी (३) न० लाडु
मोदककार पु० कदोई
मोदन वि० खुश करनारु (२) न० आनद (३) खुश करवानी क्रिया
मोष पु० चोर, डाकु (२) चोरी, लूट (३) चोरेली वस्तु
मोह पु० मूर्छा, बेहोशी (२) मूझवण (३) मूर्खता, मूढता (४) भूल
मोहकलिल न० मोहरूपी कीचड
मोहन वि० मूढ बनावनारु, मूझवणमा नाखे तेवु (२) मोहित करनारु (३) भ्रमित करनारु (४) पु० शिव (५) कामदेवना पाच बाणोमानु एक (६) न० मूढ बनाववु ते, भ्रममा नाखवु ते मोहित करवु ते (७) सभोग (८) शत्रुने भ्रमित करवा वपरातो जादुमत्र
मोहित वि० मूढ बनेलु; मूंझायेलु (२) मोहित थयेलु, भ्रमित थयेलु
मोहिन् वि० मूढ बनावनारु, मूझवणमा नाखनारु (२) मोहित करनारु
मोहिनी स्त्री० समुद्रमंथन वखते विष्णुए राक्षसोने मोहित करवा माटे लीधेलु सुदर स्त्रीनु स्वरूप
मौकलि, मौकुलि पु० कागडो
मौक्तिक न० मोती
मौक्तिकसर पु० मोतीनो हार
मौक्तिकावली स्त्री० मोतीनी सेर
मौखर्य न० वाचाळपणु (२) गाळ; निदा
मौख्य न० प्रधानपणु; मुख्यपणु
मौग्ध्य न० अज्ञता; अणसमज (२) निर्दोषता, भोळपण (३) सुदरता
मौढ्य न० मूढता, मूर्खता (२) मूर्छा
मौन न० चुपकीदी, चूप रहेवु ते (२) खील्या विनानी दशा
मौनिन् वि० मौनव्रत पाळनारुं (२) पु० ऋषि, मुनि
मौर्ख्य न० मूर्खता
मौर्य पु० चद्रगुप्तथी शरू थयेलो [राजवश
मौर्व वि० मूर्वा घासनु बनावेलु
मौर्वी स्त्री० धनुष्यनी पणछ (२) मूर्वा घासनो बनावेलो कदोरो (क्षत्रियो धारण करे छे)
मौल वि० मूळनु; प्राचीन (२) खानदान कुळनु (३) वशपरपराथी ते पद उपर चालतु आवेलु (४) आर्थिक (५) पु० घरडो के वशपरपराथी चाल्यो आवेलो प्रधान
मौलि वि० मुख्य; उत्तम (२) पु० मस्तक, माथानी टोच (३) कोई पण वस्तुनो टोचनो भाग (४) पु०, स्त्री० मुगट (५) जटा (६) ओळेला वाळ के अबोडो
मौलिक वि० मुख्य, प्रधान (२) हलका कुळनु ('कुलीन' थी ऊलटु)
मौल्य न० मूल्य, किंमत
मौसल वि० गदाथी लडायेलु (युद्ध)
मौहूर्त, मौहूर्तिक पु० ज्योतिषी, जोषी
मौंजी स्त्री० मुजनी त्रण सेरनो बनावेलो (ब्राह्मण वडे पहेरातो) कदोरो

मौंड्य न० माथु मूडी काढवु ते (२) टालियापणु
म्ना १ प० [मनति] मनमा गोखवु (२) खतथी अभ्यासवु
म्रक्ष् १ प० घसवु (२) ढगलो करवु (३) मारवु (४) १० उ० ढगलो करवो (५) घसवु (६) अस्पष्ट बोलवु
म्रक्षित ('म्रक्ष्' नुं भू० कृ०) वि० घसेलु, खरडेलु
म्रदिमन् पु० कोमळता, मृदुत्व
म्लात वि० करमाई गयेलु (२) झाखु पडी गयेलु, ऊडी गयेलु
म्लान ('म्लै' नु भू० कृ०) वि० करमायेलु, चीमळायेलु (२) थाकेलु (३) कृश के क्षीण थयेलु (४) खिन्न थयेलु (५) मेलु, काळु
म्लानव्रीड वि० बेशरम
म्लानि स्त्री० झाखु पडवु, करमावु के चीमळावु ते (२) थाक, खिन्नता (३) काळापणु [ओछु थतु
म्लायिन् वि० कृश थतु, करमातु (२)
म्लेच्छ् १ प०, १० उ० अस्पष्ट बोलवु; जगलीनी पेठे बोलवु
म्लेच्छ पु० आर्य नहि तेवो (सस्कृत भाषा स्पष्ट न बोलतो), परदेशी (२) बहिष्कृत माणस, दुष्ट, पापी
म्लेच्छभोजन पु० घउं (२) न० जव
म्लै १ प० करमावु, चीमळावु (२) खिन्न थवु (३) थाकी जवु (४) दूबळा पडवु (५) अदृश्य थवु, ऊडी जवु (६) क्षीण थवु
म्लैच्छ् १ प०, १० उ० जुओ 'म्लेच्छ्'

य

यकृत् न० काळजु, 'लीवर'
यक्ष् १ आ० पूजवु; आदर करवो (२) १ प० झडप करवी
यक्ष पु० कुबेरना सेवक गणाता देवोनो वर्ग (२) न० प्रेत
यक्षकर्दम पु० केसर, अगरु, कस्तूरी, कपूर अने चदन ए पाच पदार्थोनो समभागे बनावेलो खुशबोदार लेप
यक्षराज्(–ज) पु० कुबेर
यक्षिणी स्त्री० यक्ष स्त्री
यक्षी स्त्री० यक्ष स्त्री (२) कुबेरनी पत्नी (३) यक्षोनो वर्ग
यक्षेश्वर, यक्षेंद्र पु० कुबेर
यक्ष्म, यक्ष्मन् पु० क्षयरोग
यज् १ उ० यज्ञ करवो (२) होम करवो (जे देवने अर्थे होम कराय ते द्वितीया विभक्तिमा आवे, जे वस्तुनो होम कराय ते तृतीयामा) (३) पूजवु
यजत्र पु० अग्निहोत्र करनार
यजन न० यज्ञ करवो ते (२) यज्ञ (३) यज्ञस्थान
यजमान पु० पैसा आपी ऋत्विज पासे यज्ञ करावनारो (२) मिजमान (३) कुटुबनो वडो
यजिन् वि० यज्ञ करनारु (२) पूजनारु
यजुर्वेद पु० त्रणमानो बीजो वेद (ऋग्-यजुर्-साम०) [छे) (२) यजुर्वेद
यजुस् न० यजुर्वेदनो मत्र (गद्यमा होय
यज्ञ पु० आहुति होमी देवने पूजवानु वेदोक्त कर्म (२) वैश्वदेवादि स्मार्त कर्म (३) विष्णु (४) अग्नि
यज्ञद्रव्य न० यज्ञमा वपराती वस्तु
यज्ञधीर वि० यज्ञविधिनु जाणकार
यज्ञभागभुज् पु० देव
यज्ञभागेश्वर पु० इद्र
यज्ञभावित वि० यज्ञ वडे पूजेलु के सत्कारेलु, यज्ञ वडे सतुष्ट थयेलु
यज्ञभृत् पु० विष्णु

यज्ञवाट पु० यज्ञ माटे आतरेली तथा तैयार करेली जगा
यज्ञवेदि(–दी) स्त्री० यज्ञनी कुड
यज्ञशरण न० यज्ञ माटेनो मडप
यज्ञशिष्ट न०, यज्ञशेष पु०, न० यज्ञमा वधेलु – वचेलु ते (भोजन)
यज्ञसूत्र न० यज्ञोपवीत
यज्ञसेन पु० द्रुपद राजा
यज्ञात्मन् पु० विष्णु
यज्ञाग न० यज्ञनु अग – भाग (२)यज्ञ करवामा उपयोगी कोई पण साधन
यज्ञांशभुज् पु० देव (यज्ञमा तेमने हिस्सो अपाय छे)
यज्ञिय वि० यज्ञ सबधी; यज्ञने योग्य (२) पु० देव (३) द्वापर युग (४) न० यज्ञसामग्री
यज्ञीय वि० यज्ञ माटेनु, यज्ञ सबधी
यज्ञोपवीत न० जनोई
यज्वन् वि० यज्ञ करतु, यज्ञ करनारु (२) पु० विधि प्रमाणे यज्ञ करनारो
यत् १ आ० यत्न करवो (२) सावचेत के जाग्रत रहेवु
यत ('यम्' नु भू० कृ०) वि० सयत; निग्रह करेलु (२) प्रयत्नशील (३) मर्यादित, मध्यमसरनु
यतगिर् वि० वाणीनो निग्रह करनारु
यतचित्तात्मन् वि० मन अने शरीर जेना काबूमा छे तेवु
यतम स० ना०, वि० (घणामाथी) जे
यतर स० ना०, वि० (बेमाथी) जे
यतव्रत वि० व्रतो पाळतु
यतस् अ० ज्याथी (२) जे कारणे (३) कारण के (४) ज्यारथी माडीने
यतस्ततः अ० ज्याथी त्याथी (२)ज्या त्या (३) जेनी तेनी पासेथी
यतात्मन् वि० सयमी
यति स० ना०,वि०(ब०व० ना ज रूप चाले छे, प्रथमा अने द्वितीयामा 'यति' रूप थाय) जेटलु (सख्या, कद)
यति पु० संयमी; [illegible]; त्यागी (२) स्त्री० निग्रह, काबू (३) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] [illegible] विराम
यतो यतः अ० ज्यां ज्याथी, ज्या ज्याथी (२) ज्या ज्या, जे जे दिशामा
यत्कारणम्, यत्कारणात् अ० कारण के, कारण के, —ने कारणे, [illegible]
यत्कृते अ० जेने माटे
यत्त वि० [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible]
यत्न पु० प्रयत्न, [illegible] (२) काळजी (३) श्रम, कष्ट
यत्नतः अ० काळजीथी; यत्नथी
यत्नवत् वि० काळजीवाळु; [illegible]
यत्नात् अ० महाप्रयत्ने (२) यत्नथी; काळजीथी(३) [illegible] प्रयत्न करवा छता
यत्नेन अ० महाप्रयत्ने; यत्नथी
यत्र अ० ज्या (२) ज्यारे
यत्र तत्र अ० [illegible] ठेकाणे; ठेर ठेर
यत्रत्य वि० ज्यानु; ज्या [illegible]
यत्र यत्र अ० ज्या ज्या [[illegible]
यत्रसायंगृह वि० ज्यां सांज पडे त्या
यत्सत्यम् अ० [illegible]; [illegible] साचु तो
यथर्तु (यथा + ऋतु) अ० ऋतु – मोसम प्रमाणे; योग्य ऋतु वेळाए
यथा अ० जेम (२) जेम के (३) जेवु के (४) दाखला तरीके (५) जेवी रीते (६) ('तथा' नो साथे सबंधमा) जेवु (तेवु), जेम (तेम); जेवी रीते (तेवी रीते), जेम जेम (तेम तेम), जो आ खरु होय (तो)
यथाकथित वि० पहेला कह्यु छे तेवु
यथाकर्तव्य वि० करवाने योग्य होय तेवु
यथाकर्म अ० कर्म प्रमाणे; सजोग प्रमाणे
यथाकल्पम् अ० नियम के विधि मुजब
यथाकामम् अ० मरजी मुजब
यथाकाल पु० योग्य समय

यथाकालम् अ० योग्य समये
यथाकृत वि० रूढि के आचार प्रमाणे करेलु
यथाकृतम् अ० रूढि मुजब
यथाक्रमम् अ० क्रम प्रमाणे, अनुक्रमे
यथाक्षमम् अ० शक्ति मुजब
यथाक्षेमेण अ० अनुकूळता प्रमाणे; सहीसलामतीथी
यथाखेलम् अ० रमता रमता
यथाख्यानम् अ० पहेला कह्या के जणाव्या मुजब
यथागत (यथा+आगत) वि० मूर्ख
यथागतम् अ० आव्यु होय ते ज मार्गे
यथाचित्तम् अ० मरजी मुजब
यथाजात वि० मूर्ख [मुजब
यथाज्ञानम् अ० समज प्रमाणे; जाण
यथाज्येष्ठम् अ० पदवी के उमर मुजब
यथातथ वि० यथार्थ, खरेखरु (२) बराबर; चोक्कस (३) न० कोई वस्तुनो विगतवार साचो अहेवाल
यथातथम् अ० जेम होय तेम, बराबर; खरेखर (२) उचितपणे
यथातथा अ० फावे तेम, गमे तेम
यथातथ्यम्, यथातथ्येन अ० खरेखर; बराबर, साचेसाच
यथादर्शनम् अ० जोया प्रमाणे
यथानिर्दिष्ट वि० उपर–अगाउ जणाव्यु छे तेवु (२) विधि–नियम मुजबनु
यथानुपूर्व्या अ० क्रम प्रमाणे
यथानुरूपम् अ० उचित होय तेम
यथापुरम् अ० पहेलानी पेठे
यथापूर्व, यथापूर्वक वि० पहेलाना जेवु
यथापूर्वकम्, यथापूर्वम् अ० पहेलानी जेम (२) यथा क्रमे
यथाप्रदेशम् अ० उचित स्थाने (२) दर्शाव्या मुजब (३) बधी बाजुए
यथाप्रधानतः, यथाप्रधानम् अ० दरज्जा प्रमाणे, क्रम प्रमाणे
यथाप्रस्तुतम् अ० शरू कर्या मुजब; अते; छेवटे (२) सजोगो अनुसार
यथाप्राणम् अ० ताकात प्रमाणे; पोतानी सर्व ताकातथी
यथाप्राप्त वि० सजोगो अनुसारनु (२) पहेलाना नियम अनुसार
यथाबलम् अ० जुओ 'यथाप्राणम्'
यथाभागम्, यथाभागशः अ० भाग प्रमाणे (२) पोतपोताने स्थाने (३) योग्य स्थाने
यथाभिप्रेतम् अ० मरजी मुजब
यथाभिमत वि० इच्छा मुजबनु
यथाभिमतम् अ० मरजी मुजब
यथाभीष्ट वि० इच्छा मुजबनु
यथामति अ० बुद्धि–समज प्रमाणे
यथामुखीन वि०–नी बराबर सामु जोतु होय तेवु (छठ्ठी विभक्ति साथे)
यथाम्नातम्, यथाम्नायम् अ० वेदमा कह्या के फरमाव्या मुजब
यथायथम् अ० उचित होय तेम (२) अनुक्रमे (३) धीमे धीमे
यथायोग्य वि० योग्य, उचित
यथारसम् अ० रस प्रमाणे
यथारुचि अ० रुचि प्रमाणे [पणे
यथारूपम् अ० देखाव मुजब (२) योग्य-
यथार्थ वि० साचु, खरु (२) अर्थ प्रमाणेनु, अन्वर्थ, सार्थ (३) योग्य; घटतु
यथार्थता स्त्री० छाजतु होवापणु, उचितता (२) खरु होवापणु
यथार्थनामन् वि० नाम प्रमाणे जेना कृत्य छे तेवु
यथार्थाक्षर वि० अक्षर प्रमाणेनु, अक्षरमा जणाव्या मुजबनु
यथार्ह वि० लायकात मुजबनु (२) योग्य, घटतु (३) अनुकूळ
यथार्हम् अ० लायकात के किंमत मुजब
यथालब्ध वि० हाथमा आवी गयु होय तेवु; प्राप्त थई चूक्यु होय तेवु

यथावकाशम् अ० अवकाश प्रमाणे (२) प्रसग प्रमाणे (३) उचित स्थाने
यथावत् अ० उचित होय तेम (२) नियम प्रमाणे (३) बराबर
यथावस्थम् अ० सजोग प्रमाणे
यथाविधि अ० विधि मुजब
यथावीर्य वि० गमे तेवी ताकातवाळु
यथावीर्यम् अ० ताकातनी बाबतमा (२) ताकात प्रमाणे
यथावृत्त वि० बन्यु होय ते मुजबनु (२) न० कोई पण बनावनो साचो अहेवाल (३) पहेलानो बनाव
यथावृद्धम् अ० उमरना क्रम प्रमाणे
यथाशक्ति, यथाशक्त्या अ० शक्ति प्रमाणे
यथाशीघ्रम् अ० जेम बने तेम जलदी
यथाश्रुतम्, यथाश्रुति अ० साभळ्या प्रमाणे (२) वेदविधि प्रमाणे
यथासमयम् अ० उचित समये (२) करार मुजब, रूढि मुजब
यथासर्वम् अ० बधी विगतोमा
यथासुखम् अ० खुशी प्रमाणे, सुख थाय तेम [उचित, योग्य
यथास्थित वि० खरेखरु; साचु (२)
यथास्थितम् अ० साचेसाचु (२) सजोग अनुसार [मुजब
यथास्थिति अ० हमेश मुजब; सजोग
यथास्वम् अ० पोतपोतानु होय ते मुजब (२) व्यक्तिगत रीते (३) घटतु होय तेम, उचित होय तेम
यथेक्षितम् अ० नजरे जोया मुजब
यथेच्छ वि० इच्छा मुजबनु
यथेच्छम् अ० मरजी मुजब
यथेष्ट वि० इच्छा मुजबनु
यथेष्टम् अ० मरजी मुजब
यथैव अ० जेम
यथोक्त वि० कह्या प्रमाणेनु
यथोचित वि० योग्य; लायक
यथोचितम् अ० उचित होय तेम
यथोत्तरम् अ० क्रम प्रमाणे
यथोदित वि० कह्या प्रमाणेनु
यथोदितम् अ० कह्या प्रमाणे
यथोद्गमनम् अ० चढता प्रमाणमा
यथोद्दिष्ट वि० उल्लेख्या मुजबनु
यथोद्दिष्टम् अ० उल्लेख्या मुजब
यथोद्देशम् अ० उल्लेख्या—दर्शाव्या मुजब
यथोपपन्न वि० जेवु हाजर हतु तेवु; मळी आव्यु तेवु (२) स्वाभाविक
यथौचित्य न० उचितता; योग्यता
यद् वि० जे (२) (वेधराय त्यारे) समूचु; तमाम (उदा० यो यः) (३) ('वा' साथे) जे कोई पण (उदा० 'यो वा', 'को वा') (४) ('किम्' साथे) गमे ते; कोई पण (उदा० 'येन केन')
यद् अ० 'आ जे ' (एम शरूआत करवा) (२) कारण के
यदपि अ० जोके
यदर्थम्, यदर्थे अ० कारण के; जे कारणे
यदा अ० ज्यारे
यदाप्रभृति अ० ज्यारथी माडीने
यदा यदा अ० ज्यारे ज्यारे
यदि अ० जो (२) कदी पण (३) जो कदाच [पडे तो
यदि वा अ० के, अथवा कदाच, जरूर
यदीय वि० जेनु, जेना सबधी
यदु पु० ययातिनो देवयानीथी उत्पन्न थयेलो पुत्र (२) मथुरा नजीकनो प्रदेश
यदुनंदन पु० श्रीकृष्ण
यदृच्छा स्त्री० मरजी मुजब वर्तवु ते; स्वेच्छाचारिता (२) अकस्मात (त्रीजी विभक्ति एकवचनमा – 'अकस्मातथी' एवा अर्थमा वपराय छे)
यदृच्छातस् अ० अकस्मातथी
यदृच्छाशब्द पु० अर्थ विनानो तथा प्रमाणसिद्ध नहि तेवो शब्द (जेम के विशेषनाम)
यदृच्छासंवाद पु० आकस्मिक संभाषण (२) अकस्मात मिलाप

यद्भविष्य पुं० 'जे थवानु छे ते थशे' एवु मानीने बेसी रहेनारो
यद्यपि अ० जोके, अगर जो
यद्वत् अ० जे प्रमाणे
यद्वा अ० अथवा तो
यद्वा तद्वा अ० गमे तेम, एलफेल
यद्वृत्त न० साहस (२) घटना
यभ् १ प० सभोग करवो
यम् १ प० [यच्छति] अकुशमा राखवु; निग्रह करवो (२) आपवु
यम वि० जोडकारूपे जन्मेलु (२) पु० नियत्रण करवु ते, अकुशमा राखवु ते (३) आत्मनिग्रह (४) कोई पण मोटु नैतिक के धार्मिक कर्तव्य (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, ए पाच) (५) मृत्युनो देव, यमराज (६) जोडकु (७) द्वि० वि० जोडकारूपे रहेला के जन्मेला (अश्विनीकुमार, नकुल-सहदेव) (८) न० जोडकु, जोडु
यमक वि० जोडकामा जन्मेलु (२) वेवडु (३) पु० निग्रह, अकुश (४) न० (भिन्न अर्थना समान शब्दोनी पुनरावृत्ति थती होय तेवो) एक शब्दालकार (काव्य०)
यमज वि० जोडकारूपे जन्मेलु
यमद्वितीया स्त्री० भाईबीज
यमधानी स्त्री० यमनु धाम
यमपट पु०, **यमपट्टिका**, स्त्री० कपडानो पडदो, जेना पर यमपुरीनी सजाओना चित्र बताव्या होय छे
यमराज् पु० यमराज (मृत्युना देव)
यमल वि० जोडकामानु एक एवु (२) पु० बे (सख्या) (३) द्वि०व० जोडकु
यमलार्जुनौ पु० द्वि० व० श्रीकृष्णे खाडणियो भरावी तोडी पाडेला बे अर्जन वृक्षो
यमवत् वि० सयमी, जितेद्रिय
यमशासन पु० शिव
यमशासनालय पु० हिमालय
यमश्राय न० यमनु धाम
यमायते आ० (यम जेवा थवु)
यमातक पु० शिव (२) यमराज
यमित वि० सयम – अकुशमा आणेलु के राखेलु (२) बाधेलु, पकडी राखेलु
यमिन् वि० सयम–निग्रहमा राखनारु (२) पु० सयमी, यति
यमी स्त्री० यमनी जोडिया बहेन, यमुना नदी
ययाति पु० एक चद्रवशी राजा (नहुषनो पुत्र; देवयानी अने शर्मिष्ठानो पति)
यर्हि अ० ज्यारे (२) कारण जे
यव पु० जव (२) एक जव जेटलु वजन (३) आगळी उपरनी यवाकार रेखा (शुभ गणाय छे)
यवद्वीप पु० जावा बेट
यवन पु० ग्रीस देशनो रहेवासी - ग्रीक (२) परदेशी, म्लेच्छ
यवनिका, यवनी स्त्री० यवन स्त्री (प्राचीन काळमा राजाओ पोताना धनुष्यबाण ऊचकवा तहेनातमा राखता) (२) पडदो (३) बुरखो
यवप्ररोह पु० जवनो अकुर
यवस न० चरवानु घास
यवागू स्त्री० चोखा के जवनी काजी
यवांकुर पु० जवनो अकुर
यविष्ठ वि० ('युवन्' नु श्रेष्ठतादर्शक रूप) सौथी वधु जुवान, नानु (२) पु० नानो भाई
यवीयस् ('युवन्' नु तुलनात्मक रूप) बेमा वधु जुवान के नानु
यशस् न० ख्याति; कीर्ति, यश (२) गुणसमुदाय
यशस्कर वि० यश आपनारु
यशस्य वि० कीर्ति करनारु
यशस्विन् वि० जाणीतु, प्रख्यात (२) उत्तम, श्रेष्ठ
यशःकाय न० यशरूपी शरीर
यशःप्रख्यापन न० यश फेलाववो ते

यशःशरीर न० जुओ 'यश काय'
यशःशेष वि० (जेनो मात्र कीर्ति बाकी रही छे तेवु) मृत
यशोदा स्त्री० नदनी पत्नी, श्रीकृष्णनी पालक माता [विख्यात
यशोधन वि० यशरूपी धनवाळु; अति
यष्टि स्त्री० लाकडी (२) गदा (३) दाडो (धजानो) (४) शाखा, डाळी (५) दोरो (सेरनो) (६) कोमळ के नाजुक एवु जे कई ते (उदा० 'अगयष्टि')
यष्टिनिवास पु० मोर वगेरेने बेसवा माटेनी लाकडी (२) ऊचा दंडा उपर ऊभु करेलु कबूतरखानु
यष्टिप्राण वि० नबळु, ताकात वगरनु (लाकडीरूपी आधारवाळु)
यष्टी स्त्री० जुओ 'यष्टि'
यष्टृ पु० यज्ञथी यजन-पूजन करनारो
यष्ट्युत्थान न० लाकडीने टेके ऊठवु ते
यस् १, ४ प० आयास – प्रयत्न करवो –प्रेरक० त्रास उपजाववो
यस्मात् अ० जेथी; जे कारणे
यंतृ वि० नियत्रण करनारु, अकुशमा राखनारु (२) दोरनारु (३) पु० नियामक, शासक (४) हाकनार (रथ – वाहन इ० नो) (५) महावत
यंत् १, १० उ० नियत्रण करवु, अकुश-मा राखवु (२) बाधवु (३) फरज पाडवी
यत्र न० जकडी-पकडी राखनार के टेकारूप जे होय ते (२) बधन; वध, गाठ; लगाम (३) कोई पण क्रिया करवा माटे सचा जेवी युक्ति, रचना के साधन (४) आगळो, ताळु, चावी (५) तावीज तरीके वपराती आकृति (६) काणु पाडवानु साधन, सारडो
यत्रक पु० यत्रविद्या जाणनारो (२) नियामक; अकुशमा राखनारो (३) न० पाटो (घानो) (४) कोथळो; झोळो
यत्रकरडिका स्त्री० जादुई करडियो
यत्रकर्मकृत् पु० कारीगर
यंत्रकोविद पु० यत्र चलाववानु के वापरवानु जाणनारो
यंत्रगृह न० तेल काढवानी घाणी (२) त्रास गुजारवानो ओरडो
यंत्रचेष्टित न० जादुटोणानो प्रयोग
यंत्रण न०, **यंत्रणा** स्त्री० रुकावट, नियत्रण, अकुश (२) बध, बाधवु ते (३) पीडा; त्रास (४) पाटो (५) रक्षण करवु ते [साळो
यंत्रणी स्त्री० पत्नीनी नानी बहेन,
यंत्रतक्षन् पु० यत्र बनावनारो (२) जादुटोणा करनारो [(बारणु)
यंत्रदृढ वि० आगळाथी बध करेलु
यंत्रधारागृह न० फुवाराओवाळु स्नानगृह [करातो पूतळी
यंत्रपुत्रिका स्त्री० दोरीथी सचालित
यंत्रप्रवाह पु० पाणीनो कृत्रिम प्रवाह
यंत्रमुक्त न० एक जातनु हथियार–अस्त्र
यंत्रशर पु० यत्र वडे छोडातु बाण
यंत्रारूढ वि० रेंट जेवा चक्र पर चडावेलु के चडेलु
यंत्रिका स्त्री० जुओ 'यत्रणी'
यंत्रित ('यत्र्'नु भू०कृ०) वि० जकडेलु, बाधेलु (२) नियत्रित, अकुशमा राखेलु (३) प्रेरायेलु (४) नियमना शिस्तमा रहेलु (५) बराबर खेंचेलु (६) आकर्षायेलु
यंत्रितकथ, यंत्रितवाच् वि० पराणे चूप करेलु के थयेलु, जीभ जाणे पकडी राखी होय तेवु
या २ प० जवु (२) चडाई करवी (३) जवा देवु, पडतु मूकवु (४) लुप्त थवु (५) व्यतीत थवु; चाल्या जवु (६) माथे लेवु, वहोरवु (७) संभोग करवो –प्रेरक० जाय तेम करवु (२) हाकी काढवु; दूर करवु (३) व्यतीत करवु, पसार करवु
याग पु० यज्ञ, होम

यागेश्वर पु० शिवनु स्फटिकनु एक लिंग
याच् १ उ० भीख मागवी, आजीजी करवी (२) लग्न माटे मागु करवु
याचक पु० भिखारी (२) अरजदार
याचन न०, **याचना** स्त्री० भीख मागवी ते (२) आजीजी करवी ते
याचित ('याच्' नु भू० कृ०) वि० याचेलु, भीखेलु (२) जरूरी, आवश्यक (३) न० याचना, भीख (४) मागीने मेळवेली भिक्षा
याचितक न० मागीने मेळवेलु अर्थात् वापरवा उछीनु आणेलु ते
याचितृ पु० भिखारी (२) अरजदार (३) (लग्न माटे) मागु करनारो
याच्ञा स्त्री० याचना, भीख (२) भिखारीवेडा (३) अरज, आजीजी (४) लग्न माटेनु मागु
याच्ञाभंग पु० मागणी निष्फळ जवी ते
याच्य न० याचना-विनती करवी ते
याच्यता स्त्री० –नी इच्छा के प्रार्थना करे तेवी स्थिति, प्रार्थनीयता
याजक पु० यज्ञ करावनारो, पुरोहित
याजन न० यज्ञ कराववो ते
याजिन् वि० (समासने छेडे) यज्ञ करनारु (उदा० सोमयाजिन्)
याज्ञवल्क्य पु० वाजसनेयी संहिता (शुक्ल यजुर्वेद) ना प्रवर्तक प्राचीन ऋषि (२) एक स्मृतिकार
याज्ञसेन(–नि) पु० शिखंडी
याज्ञसेनी स्त्री० द्रौपदी
याज्ञिक वि० यज्ञ संबंधी, यज्ञनु (२) पु० यज्ञ करनार के करावनार पुरोहित
याज्य वि० यज्ञ संबंधी, होमवानु (२) जेने माटे यज्ञ कराय छे ते (३) यज्ञ करवानी जेने शास्त्र प्रमाणे परवानगी छे ते (४) पु० यज्ञ करनारो के करावनारो (५) बीजा माटे यज्ञ करनारो [मंत्र के ऋचा
याज्या स्त्री० (आहुति वेळाए) बोलातो
यात् वि० जतु
यात ('या' नु भू० कृ०) वि० गयेलु (२) व्यतीत थयेलु (३) –दशाने पामेलु (४) न० गमन, गति (५) कूच (६) भूतकाळ
यातन न० बदलो वाळवो ते (वेर इ०नो)
यातना स्त्री० बदलो (वेर इ० नो) (२) तीव्र वेदना, त्रास (३) यम नरकमा पापीओ उपर जे वेदनाओ नाखे छे ते
यातयाम, यातयामन् वि० वासी थयेलु, वपरायेलु, निरुपयोगी बनेलु (२) अर्धुंपर्धुं रंधायेलु (३) थाकी गयेलु; घसाई गयेलु; वृद्ध; जीर्ण
यातव्य वि० जवा लायक (२) चडाई करवा योग्य (३) राक्षसो के तेमनी माया सामे उपयोगी ('यातु' उपरथी) (४) पु० शत्रु [पवन
यातु पु० मुसाफर (२) राक्षस (३)
यातुधान पु० राक्षस
यातुनारी स्त्री० राक्षसी
यातृ स्त्री० पतिना भाईनी पत्नी (देराणी के जेठाणी) (२) पु० वटेमार्गु (३) हांकनारो (४) वेर वाळनारो
यात्रा स्त्री० जवु ते, मुसाफरी, प्रवास (२) लश्करनी कूच (३) तीर्थयात्रा (४) उत्सव, मेळो (५) सरघस (६) आजीविका, निर्वाह (७) समयनु व्यतीत थवु ते (८) व्यवहार, रूढि, रीत (९) एक प्रकारनु नाटक
यात्रिक वि० कूच करतु (२) यात्रा के कूच संबंधी (३) जीवनयात्रा माटे जरूरी (४) रूढिगत, चालु, सामान्य (५) पु० वटेमार्गु, मुसाफर (६) न० कूच (लश्करनी) (७) (कूच माटेनो) पुरवठो, साधनसामग्री
यात्रोत्सव पु० उत्सव के समारंभनु सरघस [प्रमाणिकता
याथातथ्य न० साची वात, सत्य (२)

याथात्म्य न० तत्त्व, साचु स्वरूप
याथार्थ्य न० यथार्थपणु, साचु स्वरूप (२) उचितपणु (३) इच्छेलो अर्थ सिद्ध के प्राप्त थवो ते
यादव वि० यदुना वशनु
यादस् न० जलचर प्राणी
यादृक्ष वि० जेवु
यादृच्छिक वि० आपोआप – स्वेच्छाए प्राप्त थयेलु के करायेलु (२) आकस्मिक (३) स्वेच्छाचारी
यादृश्(–श) वि० जेवु
यादृश-तादृश वि० जेवु तेवु, सामान्य
यादोनाथ पु० समुद्र (२) वरुण
यान न० जवु ते, सवारी करीने जवु ते (२) मुसाफरी (३) सामे चडाई करीने जवु ते (४) सरघस (५) वाहन (६) पालखी, म्यानो (७) वहाण, जहाज (८) ज्ञाननु के मोक्षनु साधन (उदा० 'हीनयान', 'महायान') (९) विमान [वहाण, नौका
यानपात्र न०, **यानपात्रिका** स्त्री०
यानमुख न० रथनो अग्रभाग, धुरा
यानशाला स्त्री० गाडी या रथ राखवानु मकान, 'गॅरेज' [गादी
यानास्तरण न० वाहनमा पाथरवानी
यापक वि० जाय एम करनारु (२) आपनारु, वक्षनारु
यापन वि० जाय एम करनारु (२) मटाडनारु (३) टेकवनारु; जोगवनारु (जीवनने) (४) न० काढी मूकवु ते (५) मटाडवु ते (रोगने) (६) व्यतीत करवु ते (समयने) (७) विलंब (८) निर्वाह (९) प्रयोग, अमल (१०) उपदेश
यापना स्त्री० जुओ 'यापन'
याप्य पुं० बापनो मोटो भाई
याप्ययान न० पालखी, डोळी
याभ पु० सभोग, मैथुन
याम पु० सयम, निग्रह (२) त्रण कलाक जेटलो समय – प्रहर (३) वाहन, गाडी (४) देवोनो एक वर्ग
यामतूर्य न०, **यामदुंदुभि** पु० प्रहर बताववा वगाडातु घडियाळ - घट
यामवती स्त्री० रात्री
यामवृत्ति स्त्री० पहेरा उपर होवु ते
यामि स्त्री० बहेन (२) रात्री (३) पुत्रवधू (४) नरकयातना
यामिक पु० पहेरेगीर
यामिका, यामिनी स्त्री० रात्री
यामिनीनाथ, यामिनीपति पु० चद्र
यामी वि० स्त्री० यमे करेली, यम सबधी (२) स्त्री० जुओ 'यामि'
यामुन वि० यमुनानु
याम्य वि० दक्षिण दिशानु (२) यमनु के यम जेवु (३) पु० यमनो दूत (४) जमणो हाथ (५) शिव के विष्णु (६) न० भरणी नक्षत्र
याम्या स्त्री० दक्षिण दिशा (२) रात्री
यायजूक पु० वारवार यज्ञ करनारो
यायावर वि० भटक्या करतु, स्थिर निवास विनानु (२) पु० विचर्या करतो भिक्षु (३) अश्वमेध माटेनो अश्व
यायिन् वि० (समासने छेडे) मुसाफरी करतु (२) जतु (३) चडाई करतु
यावक पु०, न० जवनु भोजन- (२) अळतो (३) छाणमाथी मळता जव वीणीने जीवनारो (व्रतधारी)
यावज्जन्म, यावज्जीवम्, यावज्जीवेन अ० जीवता सुधी, आखी जिदगी सुधी
यावत् वि० जेटलु, जेटला प्रमाणनु (२) अ० ज्या सुधी (३) दरम्यान (४) जेटलु (५) जेथी करीने
यावत्कालम् अ० ज्या सुधी (२) क्षण वार
यावत्-तावत् अ० ज्या सुधी – त्या सुधी (२) जेवु – के तरत ज (३) दरम्यान (४) ज्यारे – त्यारे

यावदर्थ वि० जरूर प्रमाणेनु (२) अर्थ समजाय ते माटे जोईए तेटलु (शब्दो)
यावदर्थम् अ० बधा अर्थमा (२) जरूरी होय तेटलु [छेवट सुधी
यावदंतम्, यावदंताय अ० अत सुधी;
यावदंत्य वि० जीवता सुधीनु
यावन वि० यवन सबधी; यवननु (२) पु० दुश्मन, हुमलाखोर
यावन्मात्र वि०जेटला कद के विस्तारनु, जेवडु मोटु (२) तुच्छ
याष्टीक पु० गदाधारी योद्धो (२) छडीवाळो पहेरेगीर
यांत्रिक वि० यत्र सबधी (२) यत्र वडे करेलु (३) कृत्रिम ('साहजिक'थी ऊलटु) [करवानी इच्छावाळु
यियक्षत्, यियक्षमाण, यियक्षु वि० यज्ञ
यियासा स्त्री० जवानी इच्छा
यियासु वि० जवानी इच्छावाळु (२) चडाई के कूच करवा इच्छतु
यु २ प० जोडवु (२) मिश्रित करवु (३) ३ प० छूटु पाडवु (४) ९ उ० बाधवु (५) जोडवु (६) मिश्रित करवु (७) १० आ० निदवु
युक्त ('युज्' नु भू० कृ०) वि० जोडेलु, वळगाडेलु (२) बाधेलु (३) गोठवेलु (४) साथेनु, सहित (५) लागेलु, लगनीवाळु (६) उपयोगमा लीधेलुं (७) नियुक्त (८) सबधी (९) कुशळ, चतुर (१०) योगयुक्त (११) नियमवान (१२) वाजबी, योग्य, खरु, साचु (१३) पु० योगी
युक्तचेतस् वि० योगयुक्त, योगाभ्यासी
युक्तचेष्ट वि० योग्य रीते वर्तनारु
युक्तदंड वि० योग्य रीते सजा करनारु
युक्तम् अ० योग्य होय तेम; खरेखर
युक्तरूप वि० योग्य; घटित, छाजतु
युक्तवादिन् वि० योग्य रीते बोलतु; योग्य एवु बोलतु
युक्ति स्त्री० जोडाण, सबध (२) उपयोग; वापरवु ते (३) धूसरीमा जोडवु ते (४) रूढि, प्रयोग (५) उपाय, योजना (६) करामत (७) छाजवु ते, घटित होवु ते (८) दलील (९) तर्क, प्रमाण (१०) हेतु, कारण (११) रचना, गोठवणी
युक्तिकथन न० दलीलो कही बताववी ते
युक्तिमत् वि० चालाक, चतुर (२) दलीलवाळु (३) –नी साथे जोडेलु
युक्त्या अ० –ना साधनथी (२) कुशळता के चालाकीथी (३) योग्य रीते
युग पु० न० धूसरी (२) न० जोडकु, युग्म (३) समयनो विभाग (कृत, सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि – ए चारमानो दरेक) (४) बहु लाबो समय
युगपद् अ० एकी साथे, एकी वखते
युगबाहु वि० लाबा बाहुवाळु
युगमात्र न० धूसरीनी लबाई जेटलु माप (चार हाथ जेटलु)
युगल, युगलक न० जोडु; जोडी
युगावधि पु० जगतनो प्रलय
युगांत पु० धूसरीनो छेडो (२) युगनो अत – प्रलय (३) मध्याह्न
युगांतर न० एक जातनी धूसरी (२) पछीनो पेढी (३) आकाशनो बोजो भाग
युगी स्त्री० पुष्कळता; समृद्धि
युग्म वि० बेकी नबरनु (२) न० जोडु, जोडकु (३) जोडाण (४) सगम
युग्मचारिन् वि० जोडकामा फरनारु
युग्य वि० धूसरीए जोडवा लायक (२) धूसरीनु (३) धूसरीमा जोडेलु (४) –थी खेंचातु (वाहन) (५) पु० वाहने जोडेलु के जोडवानु प्राणी (खास करीने रथनो घोडो) (६) न० वाहन, रथ
युज् ७ उ० जोडवु, वळगाडवु, उमेरवु (२) धूसरीए जोडवु (३) –वाळु होवु (४) उपयोगमा लेवु, प्रयोजवु (५) नियत करवु (६) लक्ष एकाग्र करवु

(७) सज्ज करवु (८) आपवु, वक्षवु (९) १ प०, १० उ० जोडवु (१०) ४ आ० मनने एकाग्र करवु (११) १० आ० निंदवु
युज् वि० (समासने छेडे) –थी जोडायेलु; –थी खेंचातु (२) युक्त, सहित, –वाळु (३) बेकी सख्यानु
युत ('यु'नु भू० कृ०) वि० जोडेलु, जोडायेलु (२) युक्त, –वाळुं, सहित (३) बाधेलु, लागेलु (४) छूटु पाडेलु के पडेलु (५) न० चार हाथनु माप
युतक वि० जोडेलु; जोडायेलु (२) न० जोडु (३) मित्रता, सबध (४) स्त्रीओनो एक पोशाक (५) स्त्रीना वस्त्रनो छेडो – अचळ (६) लग्ननी भेट
युति स्त्री० जोडाण, सबध (२) सहित होवु ते (३) सरवाळो
युद्ध ('युध्'नु भू० कृ०) वि० लडाई करेलु (२) हरावेलु (३) न० लडाई
युद्धक न० युद्ध, लडाई
युद्धद्यूत न० युद्धरूपी सट्टो
युद्धावहारिक न० लडाईमा मेळवेली लूट
युध् ४ आ० लडाई करवी, युद्ध करवु (२) लडाईमा हराववु
युध् स्त्री० युद्ध (२) पु० योद्धो, वीर
युधिष्ठिर पु० पाच पाडवोमा सौथी मोटो (कुतीनो पुत्र)
युयुत्सा स्त्री० लडवानी इच्छा
युयुत्सु वि० लडवा इच्छतु
ययुधान पु० सात्यकि
युवक पु० जुवानियो
युवजानि पु० जेनी पत्नी युवान छे ते
युवति (–ती) स्त्री० तरुण स्त्री के मादा
युवन् वि० जुवान उमरनु (२) मजबूत, नीरोगी (३) उत्तम (४) पु० जुवानियो (५) ६० वर्षनी उमरनो हाथी
युवराज पु० पाटवी कुवर
युष्मद् न० ना० (बीजो पुरुष सर्वनामनु मूळ पद) तु, तमे
युष्मदर्थम् अ० तमारे माटे
युष्मदीय वि० तमारु; तमारी मालकीनु (२) पु० तमारो देशबधु
युष्मादृश् (–श) वि० तमारा जेवु
युंजान वि० जोडतु (२) योग्य (३) सफळ; समृद्ध (४) पु० सारथि (५) योगी (६) ब्राह्मण (योगसाधक)
यूक पु०, **यूका** स्त्री० जू
यूकालिक्ष न० जू अने लीख (२) लीखना जेटलु वजन के माप
यूति स्त्री० सयोग, मेळाप
यूथ न० टोळु, समुदाय
यूथचारिन् वि० टोळामा फरतु (जेम के वादरा)
यूथनाथ, यूथप, यूथपति पु० टोळानो नायक (सामान्य रीते हाथीनो)
यूथबंध पु० टोळु, समुदाय
यूथशः अ० टोळाभा
यूथिका, यूथी स्त्री० जूई
यूथ्य वि० (समासने छेडे) टोळामानु, –ना टोळानु (२) टोळानु अग्रेसर एवु
यूथ्या स्त्री० टोळु
यूप पु० यज्ञ माटेनो स्तभ (ज्या बलिदाननु पशु वधाय छे)
यूपद्विप पु० यज्ञस्तभनी आसपास वीटातु कपडु
यूष, यूषन् पु०, न० मग वगेरेनो उकाळो–ओसामण ('यूषन्'ना प्रथम पाच रूप नथी, 'यूष'ना द्वि०ब०थी तेनु रूप विकल्पे जोडाय छे.)
येन अ० जेथी करीने, जे कारणे
योक्तव्य वि० जोडवा लायक (२) सोपवा लायक (३) उपयोगमा लेवा योग्य (४) (सजा) फरमाववा योग्य
योक्तृ पु० झूसरीए जोडनारो (२) गाडी हाकनारो (३) उश्केरनारो
योक्त्र न० दोरडु (झूसरीनु), जोतर (२) नेतरु
योग पु० जोडवु ते (२) जोडाण, सबध (३) स्पर्श (४) उपयोगमा लेवु ते (५) साधन, रीत, पद्धति (६) परिणाम

(७) युक्ति, छळ (८) योजना (९) प्रयत्न, उद्यम (१०) उपाय, उपचार (११) जादु, मत्र (१२) प्राप्ति (१३) व्यवहार, अमल (१४) शब्दनो रूढिथी थतो अर्थ (१५) ध्यान, समाधि (१६) पतजलिए प्रवर्तविलु दर्शन (१७) योग-दर्शनना अनुयायी (१८) ताकात, शक्ति (१९) समत्व

योगक्षेम पु० जे वस्तु न मळी होय ते मेळववी तथा जे मळी होय तेनु सरक्षण करवु ते (२) कुशळता, आबादी

योगचूर्ण न० जादुई चूर्ण; जादुई शक्तिओवाळु चूर्ण

योगतस् अ० —ने परिणामे, —ना उपायथी (२) योग्य रीते (३) समयसर (४) प्रयत्न करीने, सर्व ताकातथी

योगधारणा स्त्री० समाधियोग

योगनिद्रा स्त्री० अर्धी निद्रा अने अर्धी समाधि एवी अवस्था; जाग्रत अने निद्रा वच्चेनी अवस्था (२) युगने अते विष्णुनी निद्रा (३) प्रलय अने उत्पत्ति वच्चेनी ब्रह्मानी महानिद्रा

योगपट्ट पु० समाधि वखते पीठ अने ढीचण आसपास रखातु वस्त्र

योगपादुका स्त्री० पवनपावडी

योगबल न० समाधिमा स्थित थवानी शक्ति (२) अलौकिक सिद्धि

योगभ्रष्ट वि० योगसाधनामाथी च्युत थयेलु; साधना अधूरी रही होय तेवु

योगमाया स्त्री० योगसिद्धिनु अलौकिक बळ (२) सृष्टिना सर्जन माटे ईश्वरे धारण करेली शक्ति; तेनु साकार स्वरूप

योगयात्रा स्त्री० योग सिद्ध करवानो —परमात्मा साथे एक थवानो मार्ग

योगरोचना स्त्री० अदृश्य के अभेद्य बनाववानी चमत्कारी ताकातवाळु मलम के लेप [योग जाणनारु

योगविद् वि० योग्य उपाय जाणनारु (२)

योगविधि पु० योग — समाधिनी साधना

योगसमाधि पु० समाधिमा जीवनु लव-लीन थई जवु ते [मेळवनारो

योगसंसिद्ध पु० योगमां सिद्धि — पूर्णता

योगाचार पु० योगसाधना (२) विज्ञान-वादी बौद्धोनो सिद्धात (३) जादु के मायानो प्रयोग [योगमा सिद्ध थयेलु

योगारूढ वि० योगाभ्यासमा पावरधु,

योगिन् वि० युक्त, सबद्ध, —वाळु (२) योगसिद्धिवाळु (३) योग साधनारु (४) पु० योग साधनारो

योगिनी स्त्री० चमत्कारी शक्तिवाळी जोगणी (२) शिव के दुर्गानी तहेनातमा रहेनारी देवीओनो वर्ग (सामान्य रीते आठ गणाय छे)

योगेश्वर पु० योगमा सिद्ध थयेलो (२) सिद्धिओ प्राप्त करनारो (३) जादुगर

योग्य वि० उचित, लायक (२) छाजतु; घटतु (३) उपयोगी (४) —ने माटे शक्तिमान एवु (५) योग माटे लायक (६) न० वाहन

योग्यता स्त्री० शक्ति, सामर्थ्य (२) लायकात, उचितपणु (३) पवित्रता

योग्या स्त्री० अभ्यास, महावरो (२) शस्त्रविद्यानो अभ्यास

योजक वि० धूसरीमा जोडनारु (२) जोडनारु; जोगवनारु (३) योजना करनारु, गोठवनारु

योजन न० जोडवु ते (२) उपयोगमा लेवु ते (३) तैयारी; गोठवण (४) चार क्रोश अथवा आठ के नव माईल जेटलु अतर (५) उश्केरवु के प्रेरवु ते

योजनगधा स्त्री० कस्तूरी (२) व्यासनी माता सत्यवती

योजना स्त्री० जोडाण, सबध (२) उपयोग (३) रचवु ते

योजनीय वि० जोडवा योग्य, गोठववा योग्य (२) उमेरवा योग्य (३) उपयोगी (४) नीमवा योग्य

योजयितृ वि० जोडतु (२) योजना करनारु; गोठवनारु (३) पु० रत्न जडनारो
योजित वि० ब्रूसरीमा जोडेलु (२) उपयोगमा लीधेलु (३) सबद्ध
योत्र न० जुओ 'योक्त्र'
योद्धव्य न० युद्ध करवा योग्य
योद्धृ पु० योद्धो, सैनिक
योध पु० लडवैयो, योद्धो (२) लडाई, सग्राम, युद्ध
योधन न० युद्ध, लडाई (२) शस्त्र (३) पु० योद्धो ['बॅरेक'
योधागार पु०, न० सैनिकोनो निवास,
योधिन् पु० योद्धो
योनि स्त्री० जननस्थान, गर्भाशय (२) स्त्रीनु गुह्याग (३) उत्पत्तिस्थान, मूळ स्थान (४) जाति, जन्मनो प्रकार (५) मूळ कारण (६) वासना (७) बीज
योनिज वि० गर्भाशयमाथी जन्मेलु
योनिसकट न० पुनर्जन्म
योषा, योषित्, योषिता स्त्री० नारी; स्त्री, तरुण स्त्री
यौगपद्येन अ० एकीसाथे
यौगिक वि० उपयोगी (२) सामान्य; चालु (३) व्युत्पत्तिसिद्ध (शब्द) (४) योग सबधी के योगथी नीपजेलु
यौतक न० खानगी मिलकत (२) लग्न वखते स्त्रीने (पोतानी मालकीनी राखवा) अपाती पहेरामणी
यौन वि० योनि सबधी (२) लग्नथी ऊभु थयेलु (३) न० लग्न (४) योनि; उत्पत्तिस्थान (५) गर्भाधान सस्कार
यौवत न० जुवान स्त्रीओनो समुदाय (२) जुवान स्त्रीनो गुण (सौदर्य इ०)
यौवन न० युवानी; जोबन
यौवनदर्प पु० जुवानीनु अभिमान (२) जुवानने स्वाभाविक एवु साहस
यौवनवत् वि० जोबनवाळु, युवान
यौवनश्री अ० जुवानीनी सुदरता
यौवनस्थ वि० जुवान (२) परणाववा योग्य (३) ताजु
यौवनारंभ पु० खीलती जुवानी
यौवनांत वि० जुवान अवस्था ज छेवट सुधी रहे तेवु
यौवनीय वि० जुवानीभर्यु
यौवराज्य न० युवराजनु पद
यौष्माक, यौष्माकीण वि० तमारु

र

रक्त ('रज्'नु भू० कृ०) वि० रगायेलु, रगेलु (२) रातु, लाल (३) अनुरक्त; आसक्त (४) प्रिय (५) सुदर, मनोहर (६) न० लोही
रक्तकंठ, रक्तकंठिन् वि० मधुर अवाजवाळु (कोयल)
रक्तपट पु० एक जातनो याचक
रक्तमंडल वि० राता बिंबवाळु (२) अनुरक्त प्रजावाळु (३) न० रातु कमळ
रक्ताक्ष पु० पाडो (२) कबूतर (३) सारस (४) चकोर पक्षी
रक्ताधरा स्त्री० किन्नरी
रक्ष् १ प० रक्षण करवु (२) गुप्त राखवु (३) बचाववु (४) टाळवु (न करवु) (५) पालन करवु (व्रत के प्रतिज्ञा) (६) —थी सावचेत रहेवु
रक्ष वि० रक्षण करनारु, बचावनारु
रक्षक वि० रक्षण करनारु, बचावनारु (२) पु० पालक (३) पहेरेगीर
रक्षण न० बचाववु ते, साचववु ते (२) पु० विष्णु
रक्षणा स्त्री० रक्षण करवु ते
रक्षपाल पु० रक्षण के बचाव करनारो
रक्षस् न० राक्षस

रक्षःप्रकांडक पु० श्रेष्ठ राक्षस
रक्षा स्त्री० रक्षण (२) राखडी, तावीज (३) राखोडी
रक्षाकरंड पु० रक्षा माटे बधातु अलौकिक शक्ति धरावतु तावीज
रक्षागृह न० प्रसूतिगृह
रक्षापरिघ पु० आगळो, भोगळ
रक्षापाल, रक्षापुरुष पु० पहेरेगीर
रक्षाप्रतिसर पु० तावीज
रक्षाप्रदीप पु० भूत-पिशाच दूर राखवा सळगतो रखातो दीवो
रक्षामणि पुं० भूत-पिशाचथी बचवा पहेरातु रत्न के घरेणु
रक्षामंगल न० भूत-पिशाचादिथी बचवा करातो विधि
रक्षारत्न न० जुओ 'रक्षामणि'
रक्षिक पु० रक्षक (२) पोलीस
रक्षिजन पु० रक्षकोनी टुकडी
रक्षित ('रक्ष्' नु भू० कृ०) वि० रक्षेलु
रक्षितक न० सरक्षण
रक्षितृ, रक्षिन् वि० रक्षण करनारु (२) पु० रक्षक (३) पहेरेगीर
रक्षोघ्न पु० राक्षसोनो नाश करनार एक मत्र (२) न० हिंग
रक्ष्ण पु० रक्षण
रघु पु० एक सूर्यवंशी राजा (दिलीपनो पुत्र, अजनो पिता) (२) ब० व० रघुना वशजो
रघुनंदन, रघुनाथ, रघुपति पु० राम
रघुप्रतिनिधि पु० अज राजा
रघुश्रेष्ठ, रघुसिंह पु० राम
रघूद्वह पु० (रघुओमा श्रेष्ठ) राम
रच् १० उ० गोठववु, तैयार करवु, योजवु (२) बनाववु; सर्जवु, उत्पन्न करवु (३) लखवु; ग्रथ रचवो (४) उपर मूकवु, खोसवु के चोटाडवु (५) शणगारवु
रचन न०, **रचना** स्त्री० गोठवणी (२) रचवु ते, सर्जन (३) अमल, व्यवहार (४) ग्रथ, निबध (५) वाळ ओळीने गोठववा ते (६) लश्करनी व्यूहरचना
रचित ('रच्' नु भू० कृ०) वि० रचेलुं (२) गोठवेलु (३) गूथेलु (४) लखेलु
रचितपूर्व वि० पहेला भजवेलु
रचितार्थ वि० कृतार्थ
रज पु० जुओ 'रजस्'
रजक पु० धोबी
रजत वि० श्वेत, धोळु (२) चादीनु बनावेलु (३) न० चादी, रूपु (४) सोनु (५) मोतीनु घरेणु के हार
रजतकूट पु० मलय पर्वतनु एक शिखर
रजताद्रि पु० कैलास
रजनि स्त्री० रात्री
रजनिकर पु० चद्र
रजनिचर पु० निशाचर, राक्षस (२ चोर (३) (रातनो) रखवाळ
रजनिमन्य वि० रात जेवु देखातु
रजनी स्त्री० रात्री
रजनीकर पु० चद्र
रजनीचर पु० जुओ 'रजनिचर'
रजनीपति, रजनीरमण पु० चद्र
रजस् न० रज, धूळ (२) फूलनो पराग (३) सूक्ष्म कण (४) विकार, विकृति (५) रजोगुण (६) स्त्रीनो मासिक रजस्राव (७) पाप
रजस्वल वि० रजवाळु, रजथी छवायेलु (२) रजोगुण के विकारथी भरेलु
रजस्वला स्त्री० मासिक ऋतुधर्ममा आवेली स्त्री (२) परणाववा योग्य थयेली कन्या
रजोगुण पु० प्रकृतिना त्रण गुणोमानो बीजो (सत्त्व, रजस्, तमस्)
रजोजुष् वि० रजोगुण सेवतु
रजोनिमीलित वि० विकारथी अध बनेलुं
रज्जु स्त्री० दोरडु, दोरी
रज्जुक पु० रज्जु, दोरडु
रज्जुपेडा स्त्री० दोरडीनो बनावेलो [झोळो

रट् १ प० चीस पाडवी, बूम पाडवी (२) मोटेथी जाहेर करवु (३) आनदथी बूम पाडवी (४) वगाडवु; अवाज करवो

रटित न० बूम; चीस

रण् १ प० रणकार करवो, रणकवु

रण पु०, न० युद्ध (२) रणागण

रणक्षिति स्त्री०, रणक्षेत्र न०, रणक्षोणी, रणक्षौणी, रणक्ष्मा स्त्री०, रणतल पु० रणभूमि, लडाईनु मेदान

रणत् वि० युद्ध करतु (२) अवाज करतु (३) गमन करतु, जतु

रणत्कार पु० रणको; रणकार (२) अवाज (३) गुंजारव

रणधुर् (–रा) स्त्री० युद्धनो मोखरो

रणपंडित वि० युद्धकुशळ (२) पु० योद्धो

रणभू, रणभूमि स्त्री० लडाईनु मेदान

रणमूर्धन् पु० युद्धनो मोखरो (२) लश्करनी आगली हरोळ

रणरणक पु०, न० राग; प्रेम (२) चिंता, उद्वेग; चचराट (प्रिय वस्तु माटे) (३) पु० कामदेव

रणलक्ष्मी स्त्री० युद्धनी देवता (२) युद्धमा जीतवा के हारवानु भाग्य

रणशिरस्, रणशीर्ष न० जुओ 'रणमूर्धन्'

रणशौंड वि० युद्धमा कुशळ

रणाजिर न० रणभूमि

रणातिथि पु० रणभूमि उपरनो महेमान (जेनी साथे लडवु जोईए)

रणातोद्य न० रणभूमिनु नगारु

रणापेत वि० रणभूमिमाथी भागी गयेलु

रणाग न० हथियार, तरवार

रणागण (–न) न० रणभूमि

रणांतकृत् पु० विष्णु

रणित न० रणकारो

रत ('रम्'नु भू० कृ०) वि० खुश, संतुष्ट (२) अनुरक्त, आसक्त (३) न० आनंद (४) संभोग

रति स्त्री० आनंद, तृप्ति, प्रीति (२) आसक्ति, अनुराग (३) प्रेम (४) रति-सुख; संभोग (५) कामदेवनी पत्नी

रतिकर वि० आनंद आपनार (२) अनुरक्त, कामी [illegible]

रतिद्रुति (–ती) स्त्री० [illegible]

रतिपति, रतिप्रिय, रतिरमण पु० काम-देव; मदन [illegible]

रतिसर्वस्व न० [illegible]

रत्न न० मणि अथवा कीमती पत्थर (२) [illegible] (३) [illegible] श्रेष्ठ होय ते

रत्नगर्भा स्त्री० पृथ्वी

रत्नच्छाया स्त्री० रत्नोनो प्रकाश

रत्नतल पु० [illegible]

रत्ननाभ पु० विष्णु

रत्ननिधि पु० समुद्र (२) मेरु पर्वत

रत्नपारायण न० [illegible]; बधा रत्नोमा श्रेष्ठ हतु ते

रत्नप्रदीप पु० रत्ननो दीवो

रत्नवत् वि० रत्नवाळु; रत्नोथी भरपूर (२) रत्नोथी सुशोभित

रत्नषष्ठी स्त्री० अमुक [illegible] छठ्ठी तिथिए पाळवानु एक व्रत के उपवास (एक धार्मिक व्रत)

रत्नसानु पु० मेरु पर्वत

रत्नसू वि० रत्नो पेदा करनार (२) स्त्री० पृथ्वी

रत्नाकर पु० रत्ननी खाण (२) समुद्र

रत्नाचल पु० [illegible] एक काल्पनिक पर्वत (मेघगर्जना थता जे रत्नो पेदा करे छे); 'रत्नरोहण' पर्वत

रत्नाढ्य वि० रत्नोथी भरपूर

रत्नावली स्त्री० मोतीनी माळा

रत्नि स्त्री० कोणी (२) कोणीथी माडीने वाळेली मूठी सुधीनु अतर के माप (३) पु० वाळेली मूठी

रथ पु० उपर घूमटवाळु सवारीनुं एक वाहन (२) लडाई माटनु घोडा जोडेलु एक वाहन

रथकर, रथकार पु० सुतार
रथकुटुंबिन् पु० सारथि
रथकूबर पु०, न० रथनो धोरियो
रथक्षोभ पु० रथमा आवतो आचको
रथचरण पु० रथनु पैडु (२) सुदर्शनचक्र (३) चक्रवाक पक्षी [करवी ते
रथचर्या स्त्री० रथमा बेसी मुसाफरी
रथपाद पु० जुओ 'रथचरण'
रथपुंगव पु० उत्तम योद्धो
रथशक्ति स्त्री० रथनी ध्वजानो दड
रथशिक्षा स्त्री० रथ हाकवानी विद्या
रथारथि अ० रथ सामे रथ आवी जाय तेम (नजीक नजीकनु युद्ध)
रथांग पु० चक्रवाक पक्षी (२) न० रथनु चक्र के पैडु (३) रथनो कोई पण भाग (४) चक्र (खास करीने विष्णुनु) (५) कुभारनो चाकळो
रथागपाणि पु० विष्णु (सुदर्शन-धारी)
रथिन् वि० रथनु मालिक (२) रथ हाकनारु (३) रथमा बेसनारु (४) पु० रथवाळो (५) रथमा बेसी लडनारो
रथेश पु० रथमा बेसी लडतो योद्धो
रथेशा(-षा) स्त्री० रथनो धोरियो
रथोपस्थ पु० रथनी बेठक
रथ्य पु० रथनो घोडो (२) रथनो भाग
रथ्यचय पु० घोडाओनी टुकडी
रथ्या स्त्री० रथ जाय तेवो मार्ग – धोरी मार्ग (२) घणा रस्ता भेगा थता होय ते स्थान (३) रथोनो समुदाय
रथ्यापंक्ति स्त्री० शेरीओनी पक्ति
रथ्यामुख न० रस्तानो प्रवेशभाग
रद पु० चीरवु ते (२) खणवु ते (३) दात
रदखडन न० दतक्षत, दांत बेसाडवा ते
रदन पु० दात (२) न० –चीरवु के खणवु ते
रध् ४ प० ईजा करवी, मारी नाखवु –प्रेरक० [रधयति] ईजा करवी; पीडवु (२) राववु
रभ् १ आ० आरभ करवो (२) आलिंगन करवु (३) उत्सुक थवु (४) साहस करवु
रभस वि० झनूनी, जुस्सावाळु (२) तीव्र; गाढ (३) अविचारी, साहसिक (४) पु० जुस्सो, वेग (५) साहस, अविचारीपणु (६) गुस्सो (७) खेद, दिलगीरी (८) आनद, हर्ष (९) तीव्र इच्छा; उत्सुकता
रम् १ आ० आनद पामवु; आनद माणवो (२) –मा रत थवु, –थी हर्ष पामवो (३) क्रीडा करवी (४) सभोग करवो (५) विरमवु, थोभवु
रमण वि० आनद आपनारु, मनोरजक; मनोहर (२) पु० प्रियतम, पति (३) कामदेव (४) न० सभोग, रतिक्रीडा
रमणी स्त्री० सुदर जुवान स्त्री (२) पत्नी; प्रियतमा (३) कोई पण स्त्री
रमणीय वि० मनोहर, सुदर
रमा स्त्री० प्रियतमा; पत्नी (२) लक्ष्मी देवी, समृद्धिनी देवी (३) सद्भाग्य (४) शोभा (५) सपत्ति
रमाकांत, रमानाथ, रमापति पु० विष्णु
रम्य वि० सुदर, रमणीय (२) प्रिय, सुखकर; मनगमतु
रम्या स्त्री० रात्री
रम्यांतर वि० वच्चेना स्थान रम्य के मनोहर कराया छे तेवु
रय पु० नदीनो प्रवाह (२) वेग, झडप (३) खत, उत्सुकता [अन्न
रयि पु० न० पाणी (२) सपत्ति (३)
रल्लक पु० ऊननु वस्त्र, कामळो (२) पापण (३) एक जातनो मृग
रव पु० चीस, बूम, गर्जना (२) पखीओनो कलरव (३) अवाज
रवण वि० चीस पाडतु, गर्जतु, अवाज करतु (२) पु० ऊट (३) कोयल (४) भमरो
रवि पु० सूर्य (२) आकडानु झाड
रवितनय पु० कर्ण (२) शनिग्रह

रविवंश पु० सूर्यवंश(राजाओनो)
रशना स्त्री० जुओ 'रसना'
रश्मि पु० दोरडु, दोरो(२)लगाम(३) परोणो, चाबुक(४)किरण(५)पांपण
रश्मिग्राह पु० सारथि
रश्मिमत्, रश्मिमालिन्, रश्मिमुच रश्मिवत् पु० सूर्य
रस् १ प० बूम पाडवी; अवाज करवो (२)रणकवु(३)१० उ० स्वाद लेवो, चाखवु; अनुभववु (४)चाहवु
रस पु० प्रवाही; द्रव(२)झाड वगेरेनु घटक प्रवाही (३) पाणी (४)स्वाद (५) स्वाद माटेनो पदार्थ(६) कोई पण बाबत माटेनी रुचि (७) प्रेम; स्नेह (८) आनद (९) काव्य जोवा-सामळवाथी स्थायी भावोनो उद्रेक थता थतो अलौकिक आनद (शृंगार, हास्य, करुण, वीर, रौद्र, भयानक, अद्‌भुत, बीभत्स अने शात ए नव प्रकारनो)(१०) सार, सत्त्व(११) पारो,पारा वगेरे धातुनी भस्म(१२) जीभ (१३) शरीरनी घटक सात धातुओमानी प्रथम; अन्ननु प्रथम रूपातर (१४) झेर; झेरी पेय
रसक न० मासनो सेरवो
रसज्ञ वि० रसनी कदर-परख करनारुं (२)पु० वैद(३)कीमियागर
रसज्ञा स्त्री० जीभ
रसद पु० वैद्य
रसन न० चीस पाडवी ते; अवाज करवो ते;रणकार(२)मेघगर्जना (३)स्वाद (४) जीभ (५) अनुभव-जाण
रसना स्त्री० दोरो; दोरडु(२)लगाम (३) स्त्रीनी कटिमेखला के कंदोरो (४) जीभ (५) स्वादनी इंद्रिय
रसप्रबंध पु० काव्य के नाटकनी रचना
रसमय वि० रसात्मक, रसनु बनेलुं(२) रसवाळु, प्रवाही(३)सुदर; मनोहर (४) प्रेममांथी नीपजतु
रसवत् वि० रसभर्यु (२) स्वादु (३) सुदर(४) प्रेमभर्यु (५) भेजभर्यु
रसवती स्त्री० रसोडु (२) रसोई
रससिद्ध वि० काव्य के रसनु जाणकार
रसा स्त्री० एक पाताळ; नरक(२) भूमि; जमीन (३) जीभ
रसातल न० सात पाताळोमानु एक(२) नरक(३)जमीन; भूमि
रसात्मक वि० रसनु बनेलु, रसवाळु (२)स्वादवाळु (३) अमृतमय (४) प्रवाही (५) सुदर; मनोहर
रसाधिक वि० रसाळ; स्वादु (२) आनंदोथी भरेलु; भोगपदार्थोथी भरपूर
रसायन न० वृद्धावस्थाने अटकावनार तथा आयुष्य वधारनार कोई पण औषधि(२)ए प्रमाणे आनद के तृप्ति आपनार कोई पण वस्तु
रसाल पु० आंबो(२) न० छाशनी एक बनावट (३) धूप
रसालवनी स्त्री० आंबावाडी;आंबानुं वन
रसालसाल पु० आंबानु झाड
रसाला स्त्री० जीभ (२) दहींनी एक मीठी वानी(३)दूर्वा; दरो (४)द्राक्ष
रसास्वाद पु० रस चाखवो ते (२) काव्यनो रस माणवो ते
रसांतर न० बीजो स्वाद (२) बीजो भाव के रस (३) बीजो आनंद
रसिक वि० स्वादु; रसभर्यु (२) सुदर(३)रसनुं कदरदान(४) -मां रस लेनु, -मा आसक्त (समासने छेडे)(५)पुं० रसनी कदरवाळो(६) भोगासक्त-कामुक पुरुष
रसित ('रस्'नु भू० कृ०)वि० चाखेलुं (२)रसयुक्त (३)अस्पष्ट अवाज करतु (४)न० बूम; अवाज(५)गर्जना
रस्य वि० रसभर्यु; स्वादु
रह् १ प०, १० उ० तजी देवुं
रहण न० तजी देवुं ते
रहस् अ० छानी रीते; गुप्तपणे

रहस् न० एकात स्थान, गुप्तस्थान (२) निर्जनस्थान (३) गुप्त वात, रहस्य
रहस्य वि० छानु, गुप्त (२) न० गुप्त वात (३) गुप्त मन्त्र के प्रयोग (अस्त्रनो) (४) गूढ सिद्धांत (५) उपनिषद
रहस्यम् अ० गुप्त रीते, छानी रीते
रहस्याख्यायिन् वि० गुप्त वात कहेतु
रहाट पु० अमात्य (२) झरणु (३) पिशाच
रहित वि० तजायेलु (२) छूटु पडेलु; विनानु बनेलु (३) एकलु (४) न० एकांत गुप्तस्थान [वेठेलु
रहीभूत वि० एकांतमां के खानगीमा
रंक वि० दरिद्र, दीन (२) पु० भिखारी (३) भूखे मरतो माणस
रंकु पु० हरण, मृग
रंग पु० रग; वर्ण (२) राग, प्रीति (३) रगभूमि (४) रणभूमि (५) अखाडो (६) प्रेक्षकगण; सभासदो (७) नाच, नृत्य; खेल (८) पु०, न० कलाई
रंगदेवता स्त्री० रणभूमि के अखाडो वगेरेनी अधिष्ठाता देवी
रंगपीठ न० नृत्यभूमि
रंगप्रवेश पु० अभिनय माटे पात्रनु रगभूमि उपर दाखल थवु ते
रंगबीज न० रूपु [रणक्षेत्र
रंगभूमि स्त्री० नाटकनो तख्तो (२)
रंगमंडप न० नाटकशाळा
रंगवाट पु० नाटक, नृत्य वगेरे माटे आतरेली जगा
रंगसंगर पु० रगभूमि उपर हरीफाई
रंगाजीव पु० नट (२) रंगरेज
रंगावतरण न० रगभूमि उपर प्रवेश करवो ते (२) नटनो धधो
रंगावतारक, रंगवतारिन् पु० नट
रंगांगण (—न) न० अखाडो, हरीफाई वगेरे थवानां होय ते स्थान
रंगोपजीविन् पु० रंगरेज
रंघ् १ उ० जवु; वेगथी जवुं (२) १० उ० प्रकाशवु (३) बोलवुं
रंघस् न० वेग, झडप
रंज् १, ४ उ० राता रगवाळु थवु (२) रगवु (३) प्रेममा पडवु (४) खुशी थवु; राजी थवु
—प्रेरक० रगवु (२) खुश करवु (३) मनावी लेवु
रंजक वि० रग करनारु (२) राग के प्रीति उत्पन्न करनारु (३) खुश करनारु
रंजन वि० रगनारु (२) खुश करनारु (३) न० रगवु ते (४) रग (५) राजी करवु ते; सतुष्ट करवु ते
रंजित वि० रगेलु (२) खुश थयेलुं
रंड वि० अपग वनेलु (२) वेवफा
रंडा स्त्री० विधवा (२) वेश्या
रंतव्य वि० रमवा के क्रीडा करवा योग्य (२) न० क्रीडा; उपभोग; रमत
रंतिदेव पु० एक चद्रवशी राजा (मोटा पशुयज्ञो करनार)
रंध् ४ प० जुओ 'रध्'
रंधन न०, **रंधि** स्त्री० ईजा करवी के नाश करवो ते (२) राधवु ते
रंध्र न० छिद्र, काणु; फाट (२) ज्यायी हुमलो करी शकाय तेवी नवळी जगा (३) दूषण, दोष (४) तोफान
रंध्रप्रहारिन् वि० नवळे स्थाने हुमलो करनारु [नवळु स्थान शोधनारु
रंध्रानुसारिन्, रंध्रान्वेषिन् वि० छिद्र के
रंभा स्त्री० केळ (२) गौरी (३) एक अप्सरा (४) वाघडवु के वराडवु ते
रंभोरु वि० केळना जेवी मनोहर —भरेली— जांघवाळु, सुदर
रंह् १ प० जलदी गति करवी; उतावळ करवी (२) वहेवु
रंहस् न० वेग, झडप
राका स्त्री० पूर्णिमा, पूनमनी रात
राकाचंद्र, राकापति, राकारमण, राकेश पु० पूर्ण चंद्र
राक्षस वि० राक्षसनु, राक्षसी (२) पुं० दानव; दैत्य; असुर (३) विवाहना

आठ प्रकारोमानो एक (कन्याना सगावहालाने मारी-कापीने कन्याने रडती बळजबरीथी उपाडी जवी ते)

राग पु० रगवु ते (२) रग (३) लाल रग (४) लाल अळतो (५) प्रेम, आसक्ति; कामवासना (६) लागणी (७) आनद (८) गुस्सो, क्रोध (९) मनोरजन थाय तेवी गावानी रीत (मुख्य राग ६ गणाय छे) (१०) मत्सर, ईर्ष्या (११) रजोगुण

रागमय वि० रातु; लाल (२) प्रिय (३) प्रेमयुक्त

रागबंध पु० प्रेम प्रगटाववो ते

रागलेखा स्त्री० रगनी रेखा के निशानी

रागवत् वि० जुओ 'रागमय'

रागात्मक वि० राग उत्पन्न करनारु; रागमय [गणाय छे)

रागिणी स्त्री० रागणी (३० के ३६

रागिता स्त्री० रगवाळु होवु ते (२) प्रेमयुक्त होवु ते (३)–ने माटे आसक्ति

रागिन् वि० रगेलु (२) रगनारु (३) रातु, लाल (४) प्रेमयुक्त (५) अति आसक्त (६) पु० रगारो (७) प्रेमी (८) विषयासक्त – कामी

राघ् पु० शक्तिमान के कुशळ माणस

राघव पु० रघुनो वशज (खास करीने राम) (२) एक जातनु मोटु माछलु

राज् १ उ० चळकवु, प्रकाशवु, शोभवु (२) –ना जेवु देखावु के शोभवु

राज्(–ज) पु० राजा (२) ते ते वर्गनु श्रेष्ठ ते (उदा० शखराज्)

राजक पु० नानो – सामान्य राजा (२) न० राजाओनो समुदाय

राजकरण न० अदालत [करनारो

राजकर्तृ पु० राज्याभिषेक वखते मदद

राजकला स्त्री० चद्रबिंबनो सोळमो भाग (चद्रनी प्रथम कळा)

राजकलि पु० खराब राजा

राजकुमार पु० राजानो कुवर

राजकुल न० राजानु कुल (२) राजदरबार (३) कचेरी, अदालत (४) राजमहेल (५) राजा (मानवाचक उल्लेख) (६) राजसेवक [अमात्य

राजगुरु पु० राजानो सलाहकार के

राजगुह्य न० महागूढ वस्तु

राजगृह न० राजानो महेल (२) मगधनी राजधानीनु नाम (पाटलिपुत्रथी ७५ थी ८० माईल दूर आवेलु)

राजघ पु० राजानो वध करनारो

राजत वि० रूपानु बनेलु (२) न० रूपु

राजतस् अ० राजाथी, राजा पासेथी

राजताल पु०, **राजताली** स्त्री० सोपारीनु झाड

राजदंड पु० राजसत्तानो सूचक दड (२) राजाए करेलो दड के शिक्षा

राजदंत पु० आगलो दात

राजदूत पु० राजानो प्रतिनिधि

राजदेय न० राजाने भरवानो कर

राजद्रोह पु० राजा सामे बळवो

राजद्वार् स्त्री०, **राजद्वार** न० राजमहेलनो दरवाजो.

राजद्वारिक पु० राजानो द्वारपाळ

राजधर्म पु० राजानु कर्तव्य

राजधानिका स्त्री०, **राजधानी** स्त्री० राजानु निवासस्थान, ते शहेर

राजन् पु० (तत्पुरुष समासने अते 'राज' थई जाय) राजा (२) क्षत्रिय (३) चंद्र (४) यक्ष (५) सोमवल्ली

राजनय पु०, **राजनीति** स्त्री० राज्यवहीवट (२) राजकारण, 'पोलिटिक्स'

राजन्य पु० क्षत्रिय (२) राजकुटुबनो माणस (३) अग्नि

राजन्यक न० क्षत्रियोनो समूह

राजन्वत् वि० सारा राजावाळो देश

राजपथ पु० राजमार्ग

राजपुत्र पु० राजकुवर (२) क्षत्रिय

राजपुत्री स्त्री० राजकुवरी (२) रजपूत जातिनी स्त्री

राजपुरुष पु० राजानो नोकर(२)वजीर
राजप्रकृति स्त्री० राजानो अमात्य
राजमार्ग पु० धोरी रस्तो, मुख्य मार्ग (२) राजानो व्यवहार – रीत
राजमुद्रा स्त्री० राजानी महोर – 'सील'
राजयक्ष्म, राजयक्ष्मन् पु० (चद्रने थयेलो रोग) क्षयरोग
राजराज् पु० राजाधिराज(२)चद्र
राजराज पु० सम्राट, राजाधिराज(२) चद्र(३)कुबेर
राजराज्य न० कुबेरनु पद
रार्जाषि पु० ऋषि जेवो राजा, क्षत्रिय छता तपस्वी जीवन गाळनार (उदा० पुरूरवस्, जनक, विश्वामित्र)
राजलक्ष्मन् न० राजचिह्न
राजलक्ष्मी स्त्री० राजानी विभूति-वैभव
राजवंश पु० राजानो वश
राजविद्या स्त्री० राज्यशास्त्र; राजनीति (२) विद्याओमा श्रेष्ठ विद्या
राजवृक्ष पु० गरमाळानु झाड (२) चारोळीनु झाड
राजवृत्त न० राजानो व्यवहार
राजशासन न० राजानो हुकम – आज्ञा
राजशास्त्र न० राजनीतिशास्त्र
राजस वि० रजोगुण युक्त
राजसभा स्त्री० अदालत, कचेरी
राजससद् स्त्री० अदालत; कचेरी
राजसूय पु० सर्वोपरी राजा वडे करातो यज्ञ (तेना राज्याभिषेक वखते)
राजस्व न० राजानी मिलकत (२) राजाने आपवानो कर [धोळो हस
राजहंस पु० लाल पग अने चाचवाळो
राजासन न० राजगादी, सिहासन
राजि स्त्री० पक्ति, रेखा (२) राई
राजिका स्त्री० पक्ति (२) राई
राजित वि० प्रकाशित
राजिल पु० एक जातनो (झेरी नहि तेवो) साप
राजीव पु० एक जातनु हरण(२)न० नीलकमळ [जेवी आखवाळु
राजीवनेत्र, राजीवलोचन वि० कमळ
राजेंद्र पु० उत्तम राजा
राजोपकरण न० ब० व० छत्र चामर वगेरे राजचिह्न
राज्ञी स्त्री० राणी
राज्य न० राजसत्ता (२) राजानी हकूमतनो प्रदेश (३) राजशासन
राज्यपरिक्रिया स्त्री० राजशासन
राज्यभंग पु० राजशासन ऊखडी जवु ते
राज्यभाज् पु० राजा [थवु ते
राज्यभ्रंश पु० राजगादीएथी पदभ्रष्ट
राज्याधिदेवता स्त्री० राज्यनी कुळदेवता
राज्याभिषेक पु० राजाने गादीए बेसाडवानो विधि
राज्याश्रममुनि पु० पवित्र राजा
राज्यांग न० राजशासनमा जरूरी अग (राजा, प्रधान, मित्र, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, अने सैन्य) (२) किल्लो (३) लश्कर
रात्रि स्त्री० रात(२) रातनु अधारु
रात्रिक वि० (समासने छेडे) अमुक रात (के दिवस) सुधी चालतु
रात्रिचर पु० राक्षस(२)चोर(३)पहेरेगीर
रात्रिचरी स्त्री० पिशाचिनी
रात्रिचर्या स्त्री० राते फरवु ते
रात्रिजागर पु० राते जागवु ते(२)कूतरो
रात्रिरक्षक पु० चोकीदार
रात्रिदिवम्, रात्रिदिवा अ० रातदिवस
रात्री अ० जुओ 'रात्रि'
रात्र्यंध वि० रताधळु
रात्र्यागम पु० रात आववी – पडवी ते
राद्ध ('राध्' नु भू० कृ०) वि० आराधेलु, खुश करेलु (२) सिद्ध करेलु (३) राधेलु (४) तैयार – सज्ज करेलु
राद्धांत पु० पुरवार थयेलो – निश्चित सिद्धांत, साबित थयेली हकीकत
राध् ५ प० आराधवु, खुश करवु, शात करवु (२) सिद्ध करवु (३) तैयार करवु

(४)—ने भागे आवी पडवु (४ प० पण) (५)वध करवो, ईजा करवी; नाश करवो (६)४ प० अनुकूळ थवु (७) सिद्ध—पूर्ण थवु (८) —नु हित जोवु (९) सफळ नीवडवु
राध पु० वैशाख महिनो
राधा स्त्री० समृद्धि, सिद्धि (२)एक प्रसिद्ध गोपी (३) कर्णने उछेरनारी पालक माता
राधेय पु० कर्ण
राम वि० आनद आपनारु (२) सुदर (३) श्याम (४) श्वेत (५) पु० परशुराम (६) बळराम (७)रामचद्र (दशरथना पुत्र)
रामगिरि पु० एक पर्वत (केटलाकने मते बुदेलखंडनो चित्रकूट; अथवा नागपुर नजीकनो रामटेक)
रामचंद्र पु० राम (दशरथना पुत्र)
रामणीयक वि० सुदर, रम्य (२) न० सुदरता, रमणीयता
रामण्यक न० रमणीयता
रामभद्र पु० राम, रामचद्र
रामा स्त्री० सुदर स्त्री (२) प्रिया (३) कोई पण स्त्री (४) खानदान स्त्री
राव पु० बूम, चीस (२)अवाज, नाद
रावण वि० चीसो पाडतु (२) पुं० लंकानो राक्षस राजा
रावणि पु० इद्रजित (रावणनो पुत्र) (२) रावणनो कोई पण पुत्र
रावित न० अवाज
राशि पु०, स्त्री० ढगलो, समूह (२) नक्षत्रना बार झूमखामानु प्रत्येक (मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुभ अने मीन) (३) गणितनो आकडो (सरवाळा, गुणाकार इ० थी मळतो)
राष्ट्र न० राज्य, साम्राज्य (२)प्रात; प्रदेश (३) लोक; प्रजा
राष्ट्रभेद पु० राज्यना भागला थवा ते
राष्ट्रिक पु० देश के राज्यनो वतनी (२) शासक, 'गवर्नर'
राष्ट्रिय, राष्ट्रीय वि० राज्यनु; राष्ट्रनु (२) पु० राजा (३) राजानो साळो (४) राज्यनो अमलदार
रास् १ आ० चीस पाडवी, बूम पाडवी
रास पु० बूमाबूम; घांघळ (२)अवाज (३)एक जातनु गोळ कूडाळामा करातु नृत्य (जेमके, श्रीकृष्ण-गोपिकाओनु)
रासक न० एक जातनु गौण नाटक
रासभ पु० गधेडो
राहित्य न० रहितपणु, अभाव
राहु पु० एक राक्षस, सूर्य—चद्रने ग्रसे छे ते ग्रह (२) ग्रहण
राहुग्रसन न० ग्रहण (सूर्य—चद्रनु)
राहुशत्रु पु० चद्र
रांकव वि० रकु मृगना वाळनु बनेलु (२) न० रंकु मृगना वाळनु बनावेलु वस्त्र (३)कामळो [वासनो दड
रांभ पु० सन्यासी के ब्रह्मचारीनो
रिक्त ('रिच्'नु भू० कृ०) वि० खाली करेलुं (२)खाली (३)छूटु पाडेलु (४) निरुपयोगी (५) न० खाली जगा (६) निर्जन स्थळ; वेरान
रिक्तपाणि, रिक्तहस्त वि० खाली हाथवाळु, कशी भेट न लावनारु
रिक्तीकृ ८ उ० खाली करवु (२) छोडी देवु (३)चोरी जवु [सोनु
रिक्थ न० वारसो (२) मिलकत (३)
रिच् ७ उ० खाली करवु (२) —रहित करवु, —विनानु करवु (३) छूटु पाडवु (४)तजी देवु (५) १, १० प० तजी देवु (६) छूटु पाडवु
रिपु पु० शत्रु; दुश्मन
रिपुकाल पु० मृत्युनो देव
रिपुसूदन वि० शत्रुनो नाश करनारु
रिरंसा स्त्री० क्रीडा करवानी इच्छा
रिष् १, ४ प० ईजा करवी (२)हणवुं

रिष्ट ('रिष्'नु भू० कृ०) वि० ईजा करेलु, हणेलु (२) कमनसीब (३) न० ईजा, नुकसान (४) कमनसीब (५) पाप (६) हानि (७) समृद्धि, क्षेम
रिह् १ प० [रेहति] हणवु
रिंग् १ प० सरकवु, खसवु
रिंगि स्त्री० जवु के सरकवु ते
रीढा स्त्री० अपमान; अवज्ञा
रीण ('री'नु भू० कृ०) वि० टपकेलु; झमेलु (२) नष्ट; क्षीण
रीति स्त्री० जवु-वहेवु ते (२) गति (३) वहेण (४) सीमा, रेखा (५) पद्धति, रीत (६) रूढि (७) कासु
रु २ प० बूम पाडवी, चीस पाडवी; गर्जना करवी, गुजारव करवो, अवाज करवो (२) १ आ० जवु (३) ईजा करवी; मारी नाखवु
रुक्म वि० चमकतुं; प्रकाशित (२) सोनेरी (३) पु० सोनानु घरेणु (४) न० सोनु (५) लोढु
रुक्मपात्री स्त्री० सोनानी थाळी
रुक्मपुंख वि० सोनानां पीछावाळु (जेम के बाण)
रुक्मपृष्ठक वि० सोनानो ढोळ चडावेलु
रुक्मरथ, रुक्मवाहन पु० द्रोणाचार्य
रुक्मिणी स्त्री० विदर्भना भीष्मकनी पुत्री; श्रीकृष्णनी पत्नी; प्रद्युम्ननी माता
रुक्मिन् वि० सोनाना घरेणावाळु (२) सोनानो ढोळ चडावेलु (३) पु० रुक्मिणीनो भाई
रुग्ण ('रुज्'नु भू० कृ०) वि० भांगेलु; तूटेलु (२) वाकु वळेलु (३) ईजा पामेलु (४) बीमार, मादु
रुच् १ आ० प्रकाशवु, शोभवु (२) गमवुं (जे वस्तु गमे ते प्रथमा विभक्तिमां, अने जेने गमे ते चतुर्थीमा)
रुच् (-चा) स्त्री० तेज, कांति (२) शोभा; सुंदरता (३) वर्ण; देखाव (समासने अंते) (४) रुचि, इच्छा
रुचि स्त्री० प्रकाश, तेज; कांति (२) प्रकाशनु किरण (३) देखाव; वर्ण (समासने छेडे) (४) स्वाद (५) भूख (६) इच्छा (७) गमवु ते; प्रीति
रुचिकर वि० स्वादु; भावे तेवु (२) इच्छा ऊभी करनारु (३) भूख लगाडनारुं
रुचित वि० प्रकाशित; कांतिमान (२) स्वादु (३) प्रसन्न
रुचिधामन्, रुचिभर्तृ पुं० सूर्य
रुचिर वि० तेजस्वी; कांतिमान (२) स्वादु (३) भूख लगाडनारु (४) प्रसन्न
रुची स्त्री० जुओ 'रुचि'
रुज् ६ प० टुकडा करवा; नाश करवो (२) हानि करवी, पीडवु (३) वाळवु; नमाववु (४) १० उ० वध करवो
रुज् (-जा) स्त्री० भागवु ते; तूटी जवु ते (२) पीडा, वेदना (३) बीमारी; मादगी (४) थाक; परिश्रम
रुत ('रु'नु भू० कृ०) वि० अवाज करेलु (२) भागीने टुकडा करेलु (३) न० बूम; अवाज; गुजारव (घोडानो, पखीनो, भमरानो इ०)
रुतज्ञ पु० पक्षी वगेरेना अवाज उपरथी भविष्य भाखनारो
रुद् २ प० रडवु (२) चीस पाडवी
रुदन, रुदित न० रडवु ते, विलाप
रुद्ध ('रुध्'नु भू० कृ०) वि० रोकेलु, अटकावेलु (२) घेरेलु (३) वध करेलुं (४) ढाकेलु
रुद्र वि० भयंकर; बिहामणु (२) अनिष्ट दूर करनारुं (३) पु० शिवना गौणरूप मनाता ११ देवोनो वर्ग (४) शिव (५) अग्नि (६) ब० व० प्राणो-इंद्रियो
रुद्रदर्शन वि० भयंकर; बिहामणु
रुद्राक्ष पु० एक वृक्ष (२) न० तेनुं बी (जेनी माळा बने छे)
रुध् ७ उ० रोधवु; रोकवुं; अटकाववुं (२) टकावी राखवु (३) वध करवु

(४)वच्चे घेरी लेवु (५)बाधवु, पूरवु (६) ढाकवु; सताडवु (७) पीडवु
रुधिर वि० लाल रगनु (२)न० लोही (३)पु० लाल रंग (४)मगळग्रह (५) एक रत्न [लोहीथी तरबोळ
रुधिरप्लावित वि० लोहीथी खरडायेलु;
रुरु पु० एक जातनु हरण
रुशत् वि० मर्मवेधी (शब्द)
रुष् ४ प० रोप करवो, रोषे भरावु (२) १ प० ईजा करवी, वध करवो (३)पजववु, चिडववु
रुष् (-षा) स्त्री० रोष, गुस्सो
रुषित, रुष्ट ('रुष्'नु भू० कृ०) वि० गुस्से थयेलु, रोषे भरायेलु
रुह् १ प० ऊगवु, फणगो फूटवो (२) वधवु, विकसवु (३) घा रुझावो (४) पामवु, पूर्ण थवु (इच्छा)
-प्रेरक० [रोपयति-ते, रोहयति-ते] रोपवु; वाववु (२) ऊचु करवु (३) -ने सोपवु (४)-तरफ ताकवू के फेकवु
रुह (-ह) वि० (समासने छेडे)-मा ऊगतु, -मा थतु (उदा० 'पकेरुह')
रुंड वि० अपग थयेलु-करायेलु (२) पु०, न० धड (माथा विनानु)
रुक्ष वि० खडबचडु, कठण, कठोर (२) क्रूर (३) लूखु, चीकाश वगरनुं (४) उग्र (स्वाद) (५) सूकु
रूढ ('रुह्'नु भू० कृ०) वि० ऊगेलु; फूटेलु (२) उत्पन्न थयेलु (३) वधेलु (४) ऊचु चडेलु (५)मोटु, दृढ (६) रूढि प्रमाणेनु, प्रचलित (७)लादेलु, भार भरेलु (८) प्रख्यात
रूढग्रंथि वि० गठाई गयेलु
रूढयौवन वि० युवावस्था पामेलु
रूढव्रण वि० घा रुझाया होय तेवु
रूढसौहृद वि० दृढ मित्रतावाळु
रूढि स्त्री० रुढ थयेली रीति के रिवाज (२) उत्पत्ति; जन्म (३) विकास; वृद्धि (४) ख्याति; प्रसिद्धि (५) रूढ-प्रचलित थयेलो अर्थ
रूप् उ० १० घडवु; आकार आपवो (२) भजववु, अभिनय करवो (३) निहाळीने जोवु (४) वर्णन करवु
रूप वि० अनुरूप (२) न० आकृति; देखाव(२)वर्ण(३)कोई पण दृश्य पदार्थ (४) सुदर आकृति (५)कुदरती स्थिति (देश, काळथी भिन्न) (६)एक चलणी सिक्को (७)रूपु (८) (समासने अते) '-नु बनेलु, -ना देखाववाळु' एवा अर्थमा (उदा० 'तपोरूप', 'धर्मरूप')
रूपक वि० शरीरी; स्थूल (२) लाक्षणिक (शब्द इ०) (३) पु० एक सिक्को; रूपियो (४)न०आकृति, रूप (समासने अते) (५)आविष्कार (६)मूर्ति (७) नाटक (८) एक अलकार (काव्य०)
रूपकार, रूपकृत् पु० सलाट, शिल्पी
रूपण न० रूपकवाळु वर्णन (२)तपास; परीक्षण
रूपधर वि० -नु रूप धारण करनारु; -ना वेशमा छुपायेलु [करवु ते
रूपपरिकल्पना स्त्री० -नु रूप धारण
रूपवती स्त्री० सुदर स्त्री
रूपविपर्यय पु० रूप बगडी जवु ते
रूपसंपत्ति, रूपसंपद् स्त्री० श्रेष्ठ रूप
रूपाजीवा स्त्री० वेश्या (रूप वडे जीवनारी) [मूर्तिमान
रूपिन् वि० -ना जेवु देखातु (२)
रूपोच्चय पु० सुदर स्वरूपोनो सग्रह
रूप्य वि० सुदर, मनोहर (२) छाप मारेलु (३) न० रूपु (४) रूपानु के सोनानु चलणी नाणु (५) सोनु
रूषित ('रूष्'नु भू० कृ०) वि० शणगारायेलु (२)खरडायेलु; लेपायेलु (३) मेलु थयेलु (४) सुगधित करेलु
रे अ० सबोधनार्थे वपरातो अव्यय
रेक पु० सदेह, संशय (२) हलको-बहिष्कृत माणस

रेखा स्त्री० लीटी, लेखा (२) पक्ति (३) चित्रनी रेखा
रेखामात्रम् अ० रेखा जेटलु – थोडु पण
रेचक पु० श्वास बहार काढवो ते (पूरक'थी ऊलटु) (२) पिचकारी (३) न० जुलाब
रेचित वि० साफ – खाली करेलु
रेणु पु०, स्त्री० धूळ, रज (२) पराग
रेणुक पु० शस्त्रो उपर बोलातो एक मत्र
रेणुका स्त्री० परशुरामनी माता; जमदग्निनी पत्नी
रेतस् न० वीर्य, शुक्र
रेफ वि० दुष्ट, नीच (२) पु० 'र्' वर्ण
रेभ वि० मोटो अवाज करतु
रेवती स्त्री० २७ मु नक्षत्र (३२ ताराओ-वाळु) (२) बलरामनी पत्नी (३) गाय
रेवा स्त्री० नर्मदा नदी
रै पु० द्रव्य, धन (२) सोनु (३) अवाज
रैमय न० सोनु
रैवत वि० समृद्ध (२) पुष्कळ (३) सुदर
रैवतक पु० द्वारिका नजीकनो पर्वत
रोग पु० व्याधि, बीमारी
रोगभाज् वि० मादु, बीमार
रोगिन् वि० मादु, बीमार
रोचक वि० प्रकाशित करतु (२) अनुकूळ, मनगमतु (३) भूख वधारतु (४) न० भूख (५) भूख वधारनार औषध (६) पु० काचना के कृत्रिम घरेणा बनावनारो
रोचन वि० प्रकाशित करनारु (२) प्रकाशित, सुदर, रमणीय, मनगमतु (३) भूख वधारनारु
रोचना स्त्री० सुदर स्त्री (२) उज्ज्वळ आकाश (३) गोरोचना
रोचमान वि० तेजस्वी (२) मनोहर; सुदर (३) न० घोडानी गरदन उपरनो वाळनो गुच्छो
रोचिनी स्त्री० गोरोचना
रोचिस् न० प्रभा; तेज, काति
रोदस् न०, रोदसी स्त्री० पृथ्वी तथा आकाश
रोध पु० अटकाववु – रोकवु ते (२) अटकायत, प्रतिबध (३) बध करवु ते (४) घेरो (५) बध
रोधक वि० रोकनारु, अटकावनारु
रोधन पु० बुधग्रह (२) न० अटकायत, रुकावट, प्रतिबध, केद इ०
रोधस् न० बध (२) किनारो (३) पर्वतनो ढोळाव (४) स्त्रीनो नितब
रोधिन् वि० अटकावनारु, रोकनारु (२) भरी काढतु, ढाकी देतु
रोप पु० रोपवु ते (२) ऊचु करवु ते (३) बाण (४) छिद्र
रोपण न० रोपवु – ऊभु करवु-ते (२) वाववु ते (३) रुझावु ते (४) पु० बाण
रोपशिखिन् पु० बाणोथी थयेलो अग्नि
रोपित वि० रोपेलु, ऊभु करेलु (२) ताकेलु (बाण) (३) जडेलु (रत्न)
रोमक पु० रोम शहेर (२) रोमवासी
रोमकूप पु०, न० चामडी उपरनु छिद्र (ज्याथी वाळ नीकळे छे)
रोमन् न० रुवाटु, रूवु
रोमराजि, रोमलता स्त्री० (दूटी उपरनी) रुवाटानी पक्ति
रोमवत् वि० रुवाटावाळु
रोमविकार पु०, रोमविक्रिया स्त्री०,
रोमविभेद पु० रोमाच
रोमश वि० वाळवाळु, रुवाटीवाळु (२) पु० घेटु (३) भूड
रोमहर्ष पु० रोमाच
रोमहर्षण वि० रोमाचकारक, दग करी मूके तेवु (२) न० रोमाच
रोमथ पु० पशुओनु वागोळवु ते
रोमावलि (–ली) स्त्री० रुवाटानी पक्ति (दूटी उपरनी)
रोमाक पु० रोम – वाळनु चिह्न
रोमाकुर, रोमाच पु० रूवाडा खडा थई जवा ते

रोमोद्गम, रोमोद्भेद पु० रोमाच
रोरुदा स्त्री० अतिशय रोवु ते
रोलंब पु० भमरो
रोष पु० गुस्सो; क्रोध
रोषण वि० क्रोधी, झट गुस्से थतु
रोषणता स्त्री० क्रोध; गुस्सो
रोषित वि० गुस्से थयेलु
रोह वि० ऊगतु (२) ऊचु थतु–चडतुं (३) सवारी करतु (४) पु० ऊचाई (५) ऊचु चडवु ते (६) फणगो; कळी (७) उत्पादक कारण (८) सवार (घोडा इ० नो) [(लकामा)
रोहण, रोहणगिरि पु० एक पर्वत
रोहि पु० एक जातनो मृग
रोहिण पु० वड
रोहिणी स्त्री० राती गाय (२) ४थु नक्षत्र; एक दक्ष कन्या (चद्रने अतिशय प्रिय छे) (३) बलरामनी माता (४) जेने ऋतुस्राव तरतमा ज शरू थयो होय तेवी कन्या
रोहिणीतनय पुं० वलराम
रोहिणीपति पु० चंद्र
रोहिणीशकट पु० रोहिणी नक्षत्र (गाल्ली जेवा आकारनुं)
रोहित वि० लाल रंगनु; रातुं (२) पु० रातो वर्ण (३) हरिश्चद्रनो पुत्र
रोहिताश्व पु० अग्नि
रौक्म वि० सोनानु
रौक्मिणेय पु० प्रद्युम्न
रौक्ष्य न० रूखापणु; सूकापणु (२) कठोरता, क्रूरता (३) गरीवाई
रौचनिक वि० पीळाश पडतु
रौद्र वि० रुद्र जेवु; भयंकर, क्रोधी (२) रुद्र सवधी (३) अनिष्ट लावनारु
रौधिर वि० लोहीवाळु; लोहीनु
रौप्य वि० रूपानु
रौरव वि० रुरु मृगना चामडानु (२) भयंकर (३) कपटी (४) पु० एक नरक
रौहिणेय पुं० वलराम
रौही स्त्री० रोहि मृगनी मादा

ल

लकुट पु० गदा; दडो
लक्ष् १ आ० जोवु; निहाळवु (२) १० उ० देखवु (३) दर्शाववु (४) व्याख्या करवी (५) गौण अर्थ वताववो–थवो (६) ताकवु (७) विचारवु
लक्ष न० लाख (संख्या) (२) लक्ष्य; निशान (३) चिह्न (४) बहानु, मिष
लक्षण न० चिह्न, विशिष्टता (२) निशानी (रोगनी) (३) गुण; विशिष्ट धर्म (४) तेवा धर्मनु कथन के व्याख्या (५) शरीर उपरनु शुभ के अशुभ सूचक चिह्न (६) नाम, विशेषनाम (७) उत्तमता, श्रेष्ठता, सारो गुण (८) हेतु; लक्ष (९) ढोंग; बहानु (१०) गुह्येंद्रिय
लक्षणसंनिपात पु० छाप लगाववी ते
लक्षणा स्त्री० उद्देश, हेतु (२) लक्ष्यार्थथी शब्दनो वोध करावनार शक्ति (व्या०)
लक्षणिन् वि० लक्षणो युक्त
लक्षित ('लक्ष्'नु भू० कृ०) वि० नजरे पडेलु; देखायेलु (२) दर्शावेलु (३) अंकित करेलु (४) व्याख्या करेलु (५) तपासेलु (६) विचारेलु
लक्षिन् वि० शुभ लक्षणोवाळु
लक्षीकृ ८ उ० लक्ष्य करवु (२) उद्देशवु
लक्ष्मण वि० लक्षणवाळु (२) शुभ लक्षणवाळु (३) नसीबदार; समृद्ध (४) पु० रामना नाना भाई; सुमित्राना पुत्र (५) न० निशानी; चिह्न (६) नाम

लक्ष्मन् न० चिह्न; निशानी; विशिष्ट गुण (२)डाघ (३) व्याख्या (४) मुख्य एवु ते
लक्ष्मी स्त्री० सद्भाग्य; समृद्धि (२) सिद्धि (३) सौंदर्य; काति (४) विष्णुनी पत्नी, श्री (५) राज्यलक्ष्मी
लक्ष्मीनिरीक्षित वि० लक्ष्मी देवीनुं कृपापात्र; अति धनवान
लक्ष्मीपति पु० विष्णु (२) राजा
लक्ष्मीवत् वि० भाग्यवान, समृद्ध (२) सुदर; मनोहर [धनवान माणस
लक्ष्मीश पु० विष्णु (२) आबो (३)
लक्ष्य वि० जोवा लायक; जोई शकाय तेवु (२) ओळखी शकाय तेवु (३) जाणी शकाय तेवु (४) निशानी करवा योग्य (५) ताकवा योग्य (६) व्याख्या करवा योग्य (७) विचारवा योग्य (८) पु० शस्त्रो उपर वोलवानो मत्र (९) न० निशान (१०) चिह्न (११) जेनी व्याख्या करवानी छे ते (१२) लक्षणाथी प्राप्त थतो गौण अर्थ (१३) मिष, ढोग (१४) लाख (सख्या)
लक्ष्यभेद, लक्ष्यवेध पु० निशान वीधवु ते
लक्ष्यसुप्त वि० ऊघवानो ढोग करतु
लक्ष्यालक्ष्य वि० माग्ये देखातु
लग् १ प० लागवु; वळगवु (२) –ना सवधमा आववु (३) असर थवी (४) जोडायेला होवु (५) –नी पछी तरत बनवु (६) समय लागवो – व्यतीत थवो (७) १० उ० चाखवु (८) मेळववु
लगित वि० चोटेलु; वळगेलु, जोडायेलु
लगुड (–र, –ल) पु० लाठी; लाकडी
लग्न ('लग्'नु भू० कृ०) वि० चोटेलु; वळगेलु; सवद्ध (२) तरत ज पछी आवतु–बनतु (३) न० ग्रहो वगेरेनो मार्ग मळतो होय ते विंदु (४) सूर्य राशिमा दाखल थाय ते क्षण (५) शुभ क्षण (कोई काम करवा माटे)
लग्नक पु० जामीन
लग्नकाल पु० जुओ 'लग्नवेला'
लग्नदिन, लग्नदिवस पु० कोई पण कार्य करवा माटे शुभ दिवस
लग्नवेला स्त्री०, लग्नसमय पु० (लग्न वगेरे क्रिया माटे) शुभ मुहूर्त – समय
लग्नाह पु० कोई कार्य माटे शुभ दिवस
लघयति प० (हळवु करवु, ओछु करवुं; अवगणवु, पाछु पाडी देवु)
लघिमन् पु० हलकापणु (वजनमा) (२) तुच्छता; अल्पता (३) हीनपणु; नीच-पणु (४) हलका थई जवानी योगसिद्धि
लघिष्ठ वि० सौथी वधु हलकु ('लघु'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)
लघीयस् वि० बेमा वधु हलकु ('लघु'नु तुलनात्मक रूप)
लघु वि० हलकु (२) नानु (३) टूकु (४) तुच्छ (५) नीच; हीन (६) नवलु (७) झट वळी शके तेवु; चपळ (८) झडपी (९) सहेलु (१०) पचवामा हलकु (११) ह्रस्व – टूकु (१२) इष्ट; अनुकूळ (१३) सुदर (१४) नानु (उंमरमा) (१५) भार के परिवार विनानुं (१६) अ० जलदी (२) तुच्छकारथी
लघुक्रमम् अ० झडपी पगले
लघुचेतस् वि० हलका मननु (२) अस्थिर
लघुता स्त्री०, लघुत्व न० नानापणु (२) हलकापणु (३) तुच्छपणु (४) ऊचा कुळनु न होवु ते (५) अवगणना (६) चपळता (७) टूकापणु (८) कुशळता (९) अविचारीपणु
लघुभव पु० हलका कुळमा जन्मवाळो
लघुभोजन न० हळवु भोजन – नास्तो
लघुविक्रम वि० झडपी पगलावाळु
लघुवेधिन् वि० कुशळताथी ताकी शकनारु [झडपी पगलावाळु
लघुसमुत्थान वि० झट ऊभु थतु (२)
लघुहस्त वि० कुशळ; चालाक; निष्णात
लघूकृ ८ उ० अवगणवु; तुच्छकारवुं

(२) (वजनमा) हलकु करवु (३) टूकु करवु; ओछु करवु (दिवसोने)
लघ्वी स्त्री० नाजुक स्त्री (२) नानी गाडी (३) वि० स्त्री० टूकी
लज् १, ६ आ० शरमावु; लज्जा पामवी (२) १ प० निंदा करवी (३) १० प० देखावु, प्रकाशवु (४) ढाकवु, सताडवु
लज्ज् ६ आ० लज्जा पामवी; शरमावु
लज्जा स्त्री० लाज, शरम (२) शरमाळपणु
लज्जाकर वि० शरमावु पडे तेवु–[निंदनीय
लज्जान्वित वि० शरमाळ, लज्जाळु
लज्जारहित वि० बेशरम
लज्जालु वि० शरमाळ (२) पु० लजामणीनो छोड
लज्जावह वि० जुओ 'लज्जाकर'
लज्जित वि० शरमाळ (२) शरमायेलु (३) न० शरमावानी चेष्टा के भाव
लटभ वि० सुदर, लावण्यवान
लट्वा स्त्री० वाळनी लट (२) व्यभिचारिणी स्त्री
लड्डु, लड्डुक पु० लाडु
लता स्त्री० वेल, वेलो (२) समासने छेडे कोमळ, नाजुक, पातळु –ए अर्थमा बाहु, भुज वगेरे शब्दो साथे वपराय छे (३) शाखा (४) चाबुकनी दोरी (५) नाजुक स्त्री (६) मोतीनी सेर
लतागृह पु०, न० वेलोनो मडप
लताप्रतान पु० केटलीक वेलमा फूटतो पान विनानो अकोडो (जे बीजा आधारने वीटळाय छे)
लतावेष्टन, लतावेष्टितक न० लता पेठे वीटळावारूपी आलिंगन
लतात न० फूल
लतांतबाण पु० (पाच फूलरूपी बाणवाळो) कामदेव
लतिका स्त्री० नानी वेल
लप् १ प० बोलवु; वातचीत करवी (२) कानमा गुसपुस करवी (३) विलाप करवो
लपन न० मो (२) बोलवु ते
लब्ध ('लभ्'नु भू० कृ०) वि० प्राप्त करेलु (२) लीधेलु (३) जोयेलु (४) न० मेळवेली वस्तु (५) लाभ, नफो
लब्धकाम वि० इच्छेलु मळयु होय तेवु
लब्धनामन् वि० यशस्वी
लब्धप्रत्यय वि० विश्वास मेळव्यो होय तेवु [छूटवाळ
लब्धप्रसर वि० रुकावट विना फरवानी
लब्धप्रसाद वि० मानीतु
लब्धलक्ष वि० जेणे निशान ताक्यु होय तेवु (२) अस्त्रविद्यामा कुशळ
लब्धलक्षण वि० जेने तक मळी होय तेवु (कईक करवानी)
लब्धलक्ष्य वि० जुओ 'लब्धलक्ष'
लब्धवर्ण वि० विद्वान (२) प्रख्यात
लब्धवर्णभाज् वि० विद्वानोनो आदर करनारु, विद्वानोने सेवनारु
लब्धश्रुत् (–त) वि० बहुश्रुत; विद्वान
लब्धावकाश, लब्धावसर वि० जेने तक मळी छे तेवु (२) जेने (काम करवा) क्षेत्र मळयु छे तेवु (३) अवकाश के फुरसदवाळु
लब्धास्पद वि० स्थान मळयु होय तेवु
लब्धांतर वि० तक मळी होय तेवु (२) प्रवेश मळयो होय तेवु
लब्धि स्त्री० प्राप्ति (२) नफो, लाभ
लब्धोदय वि० उत्पन्न थयेलु, ऊगेलु, ऊचु आवेलु (२) उन्नति पामेलु
लब्ध्रिम वि० मेळवेलु; प्राप्त करेलु
लभ् १ आ० मेळववु, पामवु (२) मालिक होवु (३) लेवु, स्वीकारवु (४) पकडवु (५) मळवु, जडवु (६) जाणवु; समजवु (७) शक्तिमान थवु; परवानगी होवी (कशु करवानी)
–प्रेरक० [लभयति–ते] ले एम करवु; लेवरावववु (२) आपवु (३) मेळववु

लभ्य वि० प्राप्त करी शकाय तेवु(२) जडी शके तेवु(३)उचित,योग्य(४) पहोचाडवा लायक

लय पु० चोटवु ते, जोडाण(२)सतावु ते(३)पीगळी जवु ते(४)देखाता बध थवु ते, नाश, लोप, प्रलय(५)एकाग्र ध्यान–चिंतन(६)विश्राम, थोभवु ते (७)विश्रातिनु स्थान(८)नृत्य, गीत अने वाजित्रनो मेळ–सबध (९) सगीतमा कोई स्वर काढवामा लागतो समय (द्रुत, मध्य, विलबित) (१०) मूर्छा (११) वाणनी झडपी गति

लयन वि० विश्रातिस्थान, घर (२) विश्राति (३) वळगवु–चोटवु ते

लल् १ उ० लीला–क्रीडा करवी (२) १० उ० के प्रेरक० [लालयति–ते] रमाडवु, लाड लडाववा (३) इच्छवु (४) १० उ० [ललयति–ते] लालन करवु (५)इच्छवु(६)जीभ हलाववी

ललंडुब न० भमरडो

ललत् वि० रमतु, क्रीडा करतु (२) आम तेम फरकतु–हालतु–घूमतु

ललना स्त्री० स्त्री (२) पत्नी (३) स्वच्छदी स्त्री (४) जीभ

ललनिका स्त्री० नानी अथवा दु खी स्त्री

ललंतिका स्त्री० लाबो हार के माळा

ललाट न० कपाळ

ललाटपट्ट पु० कपाळनी सपाटी

ललाटतप वि० कपाळने तपावतु (२) अति त्रास आपनारु (३) पु० सूर्य

ललाटिका स्त्री० कपाळ उपर पहेराती सोनानी सेर (२) चदन वगेरेथी करेलु कपाळ उपरनु तिलक

ललाम वि० सुदर, मनोहर(२)कपाळ उपर सफेद डाघ–निशानवाळु(३) न० कपाळनु आभूषण, शणगार(४) ते ते वर्गनु श्रेष्ठ ते(५)कपाळ उपरनु निशान (६) तिलक, टीलु (७) निशानी (८) धजा (९) पु० घोडो (१०) पु०, न० शणगार

ललामन् वि० अलकार, भूषण(२) ते ते वर्गनु श्रेष्ठ ते(३)ध्वजा(४)तिलक

ललित वि० क्रीडा करतु (२)विलासी (३)सुदर, रम्य(४)इष्ट(५)हळवु; नरम (६) न० क्रीडा, लीला (७) विलासनी चेष्टा (८) मनोहरता, सुदरता (९) कोई पण साहजिक चेष्टा (१०) निर्दोषता, सरळता

ललितपद वि० शृगार रसना शब्दोवाळु

ललितललित वि० अति सुदर

ललितलुलित वि० शिथिल छता सुदर

ललिता स्त्री० सुदर स्त्री(२)स्वच्छंदी स्त्री (३) दुर्गानु एक स्वरूप

ललिताभिनय वि० सुदर अभिनयोवाळु

ललितार्थ वि० शृगार रसना शब्दोवाळु

लव पु० चूटवु ते(२)ळणवु ते(पाक) (३)भाग, अश(४)कण, टीपु, बहु नानु प्रमाण (समासने अते) (५) समयनो बहु सूक्ष्म अश (पलकारानो छठ्ठो भाग) (६) वाळ, ऊन (७) रामना एक पुत्रनु नाम

लवण वि० खारु (२) सुदर (३) पु० खारो रस–स्वाद (४) खारो समुद्र (५) मधु राक्षसनो पुत्र (शत्रुघ्ने मार्यो हतो) (६) एक नरक (७) न० मीठु

लवणजल पु० समुद्र

लवणस्यति प० (मीठानी इच्छा करवी)

लवणार्णव, लवणालय पु० समुद्र

लवणातक पु० शत्रुघ्न(लवण राक्षसने मारनार)

लवणाबुराशि पु० समुद्र, महासागर

लवणाभस् प० समुद्र

लवणिमन् प० खारापणु(२)लावण्य

लवन न० कापवु–लणवु ते(२)दातरडु

लवम् अ० थोडु पण

लवली स्त्री० एक वेल

लवंक पु० एक झाड
लवंग पु० लवगनु झाडवु (२) न० लवंग
लवित्र न० दातरडु
लश् १० उ० कोई कळा अभ्यासवी
लशुन, लशून न० लसण
लष् १,४ प० इच्छवु, अभिलाषा करवी (२) १० उ० जुओ 'लश्'
लषित ('लष्'नु भू० कृ०) वि० अभिलषित; इच्छेलु
लस् १ प० चळकवु; चमकवु (२) देखावु; नजरे पडवु (३) आलिंगवु (४) नाचवुं, कूदवु
—प्रेरक० नाचता शीखवे एम करवुं (२) जुओ 'लश्'
लसदंशु वि० चमकतां किरणोवाळु [(सूर्य)
लसित ('लस्'नु भू० कृ०) वि० नाचेलु, कूदेलु; नाचतु; कूदतु (२) देखायेलु; नजरे पडेलु
लस्ज् १ आ० [लज्जते] शरमावु
—प्रेरक० शरमाववु
लहरि (–री) स्त्री० मोजु; लहेर
लंका स्त्री० रावणनी नगरी
लंकाधिपति, लंकानाथ, लंकापति पु० रावण अथवा विभीषण
लंकारि पु० राम
लंकेश पु० जुओ 'लकाधिपति'
लंगिमन् पु० सुदरता
लंघ् १ उ० कूदवु, ऊछळवु (२) उपर चडवु (३) ओळगवु (४) लाघो के उपवास करवो (५) हुमलो करवो; खाई जवु, ईजा करवी (६) १० उ० उपर थईने कूदी जवुं, ओळगवु (७) उपर चडवु (८) उल्लघन करवु; न मानवु (९) अनादर करवो (१०) रोकवु; अटकाववु (११) हुमलो करवो; पकडवु, ईजा करवी (१२) खावु (१३) चडियाता थवु; झाखु पाडी देवु
लंघन न० कूदवुं ते; ओळंगवु ते, जवुं ते (२) उपर चडवु ते (३) हुमलो करवो ते (४) उल्लघन करवु ते; अवगणवु ते (५) अपमान (६) ईजा (७) उपवास (८) सभोग (९) घोडानी एक चाल
लंघनीय वि० ओळगी शकाय तेवु (२) आगळ नीकळी जवा योग्य (३) अनादर करी शकाय तेवु
लंघित ('लंघ्'नु भू० कृ०) वि० ओळगेलु; कूदी जवायेलु (२) उल्लंघन करायेलु (३) अनादर करेलु (४) हुमलो करायेलु; पीडायेलु; ग्रस्त
लंघ्य वि० जुओ 'लघनीय'
लंपट वि० लोभी (२) विषयासक्त (३) पु० कामी पुरुष; जार
लंब् १ आ० लटकवुं; लवडवुं (२) –ने वळगी रहेवु; –ने आधारे रहेवुं (३) नीचे नमवु; नीचे जवु (४) पाछु पडवु; विलब करवो
—प्रेरक० लवडाववु, लटकाववु (२) लाबु करवु (जेम के हाथ) (३) जोडवुं
लंब वि० लटकतु; लवडतु (२) –ने वळगेलु, –नी उपर झझूमतुं (३) मोटु; लांबु, ऊचु
लंबित ('लंब्'नु भू० कृ०) वि० लटकतु, लवडतु (२) नीचे गयेलु–डूबेलु (३) –ने आधारे रहेलुं; वळगेलु
लंबोदर वि० मोटा पेटवाळु (२) पुं० गणेश (३) खाउधरो
लंबोदरजननी स्त्री० पार्वती
लंभ पु० प्राप्ति (२) मळवु ते (३) लाभ
लंभन न० प्राप्ति (२) पाछुं मेळववु ते
लंभनीय वि० मेळवी शकाय तेवु, मेळववा योग्य
लंभित वि० मेळवेलु, प्राप्त करेलु (२) आपेलु (३) लगाडेलु; उपयोगमां लीधेलुं (४) जन्मेलु
ला २ प० लेवु; मेळववु; उगामवुं
लाकुटिक वि० दंडो के लाकडीथी सज्ज एवु (२) पु० पहेरेगीर

लाक्षणिक वि० लक्षण जाणनारु (२) सूचक; खास लक्षण सूचवनारुं (३) लक्षणाथी सूचित थतु (४) गौण
लाक्षा स्त्री० लाख (२) अळतो
लागुडिक वि० जुओ 'लाकुटिक'
लाघव न० लघुता; अल्पता; नानापणुं (२) अविचारीपणु (३) तुच्छता (४) अनादर; अवगणना (५) झडप; वेग (६) चपळता (७) टूकापणु; सक्षिप्तता
लाघवकारिन् वि० लघुता पमाडनारुं; अनादरने पात्र बनावनारु
लाघविन् न० जादुगर
लाज न० वीरणवाळो
लाजाः पु० ब० व०, स्त्री० ब० व० भीना के घाणी फोडेला दाणा
लाटाः पुं० ब० व० एक प्रदेश अने तेना लोक [एक प्राकृत बोली
लाटिका, लाटी स्त्री० एक शैली (२)
लात ('ला' नु भू० कृ०) वि० लीधेलुं
लाभ पु० मळवु ते; प्राप्ति (२) नफो; फायदो (३) भोगववु ते (४) जीतवुं ते (५) समृद्धि; संपत्ति
लालन न० लाड लडाववां ते
लालस वि० लालसावाळु (२) आसक्त; अनुरक्त (३) पुं० लालसा
लालसा स्त्री० उत्कट इच्छा (२) आजीजी; विनंती (३) दोहद (गर्भिणीनो)
लाला स्त्री० लाळ; थूंक
लालाटिक वि० कपाळ संबंधी; कपाळ उपरनु (२) नसीबने आधीन
लालायते आ० (लाळ काढवी)
लालित वि० लाड लडावेलु (२) इच्छेलुं (३) न० आनद; प्रेम
लालित्य न० सुदरता; मनोहरता; मधुरता (२) शृंगारचेष्टा
लाव वि० कापी नाखतुं (२) नाश करतुं
लावक पु० कापनारो (२) लणनारो (३) एक पंखी; लावरी
लावणिक वि० मीठावाळु (२) मीठानो वेपार करनारु (३) लावण्यवान
लावण्य न० खारापणु (२) सौंदर्य
लावण्यलक्ष्मी स्त्री० अति सुदरता
लास पु० नाचवुं – कूदवु ते
लासक वि० रमतु, कूदतु (२) आम तेम घूमतु (३) नचावतु; कुदावतु
लासन न० आम तेम घुमाववु ते
लासिक वि० नाचतु
लासिका स्त्री० नाचनारी (२) वेश्या
लास्य न० नृत्य; नाच (२) गायन अने वाजित्र साथेनु नृत्य (३) हावभावयुक्त नृत्य (४) पु० नाचनारो; नट
लांगल न० हळ
लांगलध्वज, लांगलिन् पु० बळराम
लांगूल न० पूछडु [पटपटाववी ते
लांगूलचालन, लांगूलविक्षेप न० पूछडी
लांछन न० चिह्न; निशानी (२) नाम (३) कलक (४) चंद्रनो डाघ
लांछित वि० चिह्नवाळु; (२) नामथी ओळखातु (३) शोभावेलु, सजावेलु
लांठनी स्त्री० कुलटा
लिक्षा स्त्री० लीख
लिख् ६ प० लखवु (२) चीतरवु (३) खोतरवु; खणवुं [खोतरवु ते
लिखन न० लखवु ते (२) चीतरवु ते (३)
लिखित ('लिख्' नु भू० कृ०) वि० लखेलु (२) चीतरेलुं (३) खोतरेलु; कोतरेलु (४) न० लखाण; दस्तावेज (५) चित्र (६) ग्रंथ; निबध [वर्णवायेलुं
लिखितपठित वि० लखायेलु–वचायेलु;
लिख्या स्त्री० लीख
लिप् ६ उ० [लिंपति – ते] लींपवुं (२) लेप करवो (३) खरडवु; मेलु करवुं (४) सळगाववु, बाळी नाखवु
–प्रेरक० दोष ढोळवो (२) खरडवुं
लिपि स्त्री० लेपवु ते (२) लखवुं ते; लखाण (३) भाषाना वर्णो लखवानी रीत (४) लखाण; दस्तावेज

लिपिक पु० लहियो
लिपिकर पु० लहियो (२) लेपनारो, धोळनारो, कडियो इ०
लिपी स्त्री० जुओ 'लिपि'
लिप्त ('लिप्' नु भू० कृ०) वि० लीपेलु (२) चोपडेलु, खरडेलु (३) विष चोपडेलु (बाण इ०) [इच्छा
लिप्सा स्त्री० पाछु मेळववानी इच्छा (२)
लिप्सु वि० लाभनी इच्छावाळु; मेळववानी इच्छावाळु
लिह् २ उ० चाटवु (२) चाखवु
लिंग न० चिह्न, निशानी, प्रतीक (२) खोटु निशान; ढोग (३) पुरावो, साबिती (४) हेतु (न्या०) (५) जाति-दर्शक चिह्न (६) शिवनु प्रतीक (जे पूजाय छे) (७) सूक्ष्म शरीर, लिंग देह (८) अनुमान (९) उपाधि
लिंगदेह पु०, लिंगशरीर न० देहथी छूटो पडेलो जीव जेनो आश्रय करीने रहे छे ते सूक्ष्म शरीर (पाच प्राण, पाच ज्ञानेंद्रिय, पाच सूक्ष्मभूत, मन अने बुद्धि —ए सत्तरनु बनेलु)
लिंगिन् वि० चिह्नवाळु (२) —ना वेशवाळु, ढोगी (३) सूक्ष्म शरीरवाळु (४) पु० ब्रह्मचारी; ब्राह्मण तपस्वी
ली १ प०, ४ आ० पीगळवु, ओगळवु (२) ९ प०, ४ आ० चोटवु, वळगवु (३) ४ आ० भेटवु (४) अढेलीने बेसवु के सूवु (५) छुपावु; छुपाईने रहेवु (६) —मा लवलीन के आसक्त थवु (७) अलोप थवु [चाखेलु
लीढ ('लिह्' नु भू० कृ०) वि० चाटेलु;
लीन ('ली' नु भू० कृ०) वि० चोटेलु, वळगेलु (२) छुपायेलु (३) आराम करतु, अढेलीने सूतेलु (४) पीगळेलु (५) एकरूप थयेलु; निकट संबंधथी जोडायेलु (६) लवलीन (७) लुप्त थयेलु
लीनता स्त्री० —मा छुपाई जवु ते

लीला स्त्री० क्रीडा; रमत (२) शृंगार-चेष्टा; विलास (३) सुगमता; सरळता रमतमां के सहेलाईथी थवु ते (५) देखाव; मळतापणु (६) सौंदर्य (७) ढोग, वेष (८) अनादर; तुच्छकार
लीलाकमल न० हाथमा लीला अर्थे राखेलु कमळ
लीलाखेल वि० लीलाथी खेलतु के फरतुं
लीलागार पु०, न०, लीलागृह, लीलागेह न० क्रीडागृह; आनद-प्रमोदनु स्थान
लीलाचतुर वि० लीलायुक्त हावभावथी सुदर देखातु
लीलातामरस न० जुओ 'लीलाकमल'
लीलादग्ध वि० प्रयत्न विना—रमतमा ज बाळी नाखेलु
लीलानटन, लीलानृत्य न० आनंद-माटे करेलु नृत्य, लीलायुक्त नृत्य
लीलापद्म न० जुओ 'लीलाकमल'
लीलाभरण न० मात्र खुशी खातर पहेरेलु (किंमत विनानु) आभूषण
लीलायित न० लीला
लीलारविंद न० जुओ 'लीलाकमल'
लीलावज्र न० इद्रना वज्र जेवा आकारनु एक ओजार
लीलावती स्त्री० सुदर—मनोहर स्त्री (२) विलासी स्त्री (३) दुर्गा
लीलाशुक पु० लीला अर्थे पाळेलो पोपट
लीलासाध्य वि० सहेलाईथी सिद्ध करी शकाय तेवु
लीलांग वि० रमणीय अवयवोवाळु
लुट् १, ४ प० लोटवु, आळोटवु (२) लूटवु (३) १ आ० सामनो करवो
लुठ् १ प० मारवु; ठोकी पाडवु (२) १ आ० जमीन उपर आळोटवु (३) १० उ० लूटवु (४) ६ प० आळोटवु, गबडवु
लुठित वि० आळोटतु; गबडतु (२) न० जमीन उपर आळोटवु ते (घोडानु)

लुड् १ प० वलोववु; डखोळवु
लुप् ४ प० मूझावु (२) लोपावु; नाश पामवु (२) ६ उ० तोडी नाखवु, कापी नाखवु (३) लूटी जवु (४) लोपवु
—प्रेरक० भागवु; तोडवु (२) बाद करवुं; अवगणवु (३) च्युत करवु
लुप्त ('लुप्' नु० भू० कृ०) वि० भागेलु; तोडेलु (२) खोई बेठेलु; विनानु थयेलु (३) लोपायेलु; वपराश विनानु थई गयेलु
लुप्तपिंडोदकक्रिय वि० पिंडदान, श्राद्ध वगेरे विनानुं थयेलु
लुब्ध ('लुभ्'नु भू० कृ०) वि० लोभायेलु; लोभी (२) पु० शिकारी (३) व्यभिचारी—कामी पुरुष
लुब्धक पु० शिकारी (२) लोभी माणस (३) कामी—व्यभिचारी पुरुष
लुभ् ६ प० मूझववु (२) ४ प० लोभावु; तीव्रपणे इच्छवु (३) लोभाववु; आकर्षवु
लुल् १ प० चकळ-वकळ थवु; गोळ फरवु (२) क्षुब्ध करवु; डखोळवु (३) दबाववु; कचरवु
—प्रेरक० हलाववु
लुलित ('लुल्'नु भू० कृ०) वि० कपावेलु, आम तेम हलावेलु (२) स्पर्शायेलु, डखोळायेलु (३) वीखरायेलु (जेम के वाळ) (४) कचरायेलु, रगदोळायेलु (५) दबातु; अडकतु (६) थाकेलु, नमी गयेलु (७) सुंदर
लुंच् १ प० तोडवु, चूटवु, खेंची काढवु
लुंचन न० खेंची काढवु ते
लुंचित ('लुंच्'नु भू० कृ०) वि० खेंची काढेलुं; तोडी लीधेलु
लुंट् १ प०, १० उ० लूटवु, चोरवुं
लुंटाक वि० लूटी लेतु (२) पु० लूटारो
लुंठ् १ प० जवु (२) हलाववु, डखोळवु (३) लूटवु (४) आळसु थईने आळोटवु
लुंठन न० लूटवु—चोरवु ते (२) सामनो करवो के रोकवु ते
लू ९ उ० कापवु, तोडवु, लणवु (२) तद्दन नाश करवो
लूता स्त्री० करोळियो (२) कीडी
लूतातंतु पु० जाळु (करोळियानु)
लून ('लू'नु भू० कृ०) वि० कापेलु; छेदेलु (२) चूटेलु (३) न० पूछडी
लेख पु० लखाण, दस्तावेज; पत्र (२) देव (३) उझरडो [चित्रकार
लेखक पु० लखनार; लहियो (२)
लेखन न० लखवु ते (२) वलूरवु ते (३) कोतरवु ते; खोतरवुं ते
लेखनी स्त्री० लेखण, कलम
लेखपट्ट, लेखपत्र न०, लेखपत्रिका स्त्री० लेख, पत्र (२) दस्तावेज
लेखप्रभु पु० इंद्र [कासद
लेखहार, लेखहारिन् पु० पत्र लई जनारो
लेखा स्त्री० लीटी, रेखा, पंक्ति (२) लखवु ते, चीतरवु ते (३) चंद्रनी रेखा (४) छाप (५) छेडो, किनार (६) पटो, चास, लीटो
लेखानुजीविन् पु० दास तरीकेना अधिकारवाळो देव
लेखिका स्त्री० नानी रेखा
लेखिन् वि० खोतरतु, खणतु
लेखिनी स्त्री० कलम (२) कडछी
लेख्य वि० लखवानु के चीतरवानु होय तेवु (२) न० लखवानी कळा (३) लखवु ते (४) दस्तावेज (५) लेख
लेप पु० लीपवु—खरडवु—चोपडवु ते (२) मलम (३) छो, 'प्लास्टर' (४) हाथे चोटेलु भोजन (५) डाघ, कलंक, दोष
लेप्य वि० लेप करवा योग्य (२) छादीने बनावेलु (मूर्ति)
लेलिह पु० साप (२) एक जातनो कीडो
लेलिहान पु० साप (२) शिव
लेश पु० अल्प अंश, रजकण (२)

अल्पता, नानापणु (३)समयनो एक सूक्ष्म विभाग (बे कळा जेटलो)
लेष्टु पु० ढेफु
लेह पु० चाटनारो; चाखनारो
लेह्य वि० चटाय तेवु, चाटवा योग्य (२) चाटीने खावानी वस्तु (३) अन्न
लेंड न० लीडी; लीडु
लोक् १ आ० जोवु (२) १० उ० दीपवुं, प्रकाशवु (३) जाणवु (४) निहाळवुं
लोक पु० भुवन, विश्वनो विभाग(स्वर्ग–पृथ्वी–पाताळ ए त्रण; के चौद अथवा सात) (२)भूलोक, पृथ्वी (३) मानवजात (४) प्रजा (५) समुदाय, वर्ग (६) प्रदेश; प्रांत (७) लोकोनो सामान्य व्यवहार (८) निजस्वरूप (९)प्रकाश (१०) भोग्य वस्तु (११) चक्षुरिंद्रिय (१२) इंद्रियविषय
लोककंटक पु० दुर्जन मनुष्य
लोककांत वि० लोकप्रिय
लोकगति स्त्री० माणसोनु वर्तन
लोकचारित्र न० लोकोनो व्यवहार
लोकतंत्र न० जगतव्यवहारनु चक्र
लोकत्रय न०, लोकत्रयी स्त्री० स्वर्ग–मृत्यु–पाताळ ए त्रण लोक
लोकधातृ पु० शिव
लोकनाथ पु० ब्रह्मा (२) विष्णु (३) शिव (४) राजा, सम्राट (५) बुद्ध
लोकप पु० जुओ 'लोकपाल'
लोकपक्ति स्त्री० लोकमा आदर–कीर्ति
लोकपथ पु०, लोकपद्धति स्त्री० जगतनी चालु रीत – व्यवहार
लोकपरोक्ष वि० जगतथी छानु – अदृश्य
लोकपाल पु० दिक्पाल (२) राजा
लोकपितामह पु० ब्रह्मा
लोकप्रवाद पु० लोकवायका
लोकभर्तृ वि० लोकने पोषनारुं – टकावनारुं
लोकभावन, लोकभाविन् वि० जगतनु हित करनारु – वधारनारु
लोकमार्ग पु० रूढि
लोकयज्ञ पु० लोकमा नामना माटेनी इच्छा; लोकैषणा
लोकयात्रा स्त्री० लोकव्यवहार (२) रूढि (३) संसारयात्रा (४) आजीविका; निर्वाह
लोकरव पु० लोकवायका; किंवदंती
लोकरावण वि० लोकने पीडनारु
लोकवचन न० लोकवायका; किंवदंती
लोकवर्तन न० जगतनो जेनाथी निर्वाह थाय छे ते साधन ['लोकवचन'
लोकवाद पु०, लोकवार्ता स्त्री० जुओ
लोकविरुद्ध वि० लोकमतथी ऊलटु
लोकविश्रुत वि० प्रख्यात; विश्वविख्यात
लोकविसर्ग पु० जगतनो अंत (२) जगतनु सर्जन [रूढि (२) गपसप
लोकवृत्त न० जगतनो सामान्य व्यवहार;
लोकवृत्तांत, लोकव्यवहार पु० सामान्य रूढि, लोकाचार (२) घटनाओनो क्रम
लोकश्रुति स्त्री० किंवदंती, लोकवायका (२) चोतरफ प्रसिद्धि
लोकसंग्रह पु० आखु विश्व (२) जगतनु हित-कल्याण (३) लोकने संतुष्ट करवा ते (४) लोक साथेना संबंधथी मळतो अनुभव [युक्त
लोकसंपन्न वि० व्यावहारिक डहापणथी
लोकसंबाध पु० लोकोनी भीड, लोकनो अवर-जवर [साक्षी छे तेवु
लोकसाक्षिक वि० आखु जगत जेनु
लोकसाक्षिकम् अ० साक्षीओनी समक्ष
लोकसाक्षिन् पु० ब्रह्मा (२) अग्नि
लोकसात् अ० लोकोना भला माटे
लोकसाधारण वि० लोकप्रचलित
लोकसीमातिवर्तिन् वि० अलौकिक
लोकस्थिति स्त्री० संसारदशा (२) संसारव्यवहार (३) जगतनु टकी रहेवापणु (४) सार्वत्रिक नियम
लोकहास्य वि० लोकोमा हास्यपात्र एवु

लोकहित वि० जगत के मानवजातने हितकर एवु (२) न० लोकोनु हित
लोकंपृण वि० लोकव्यापी
लोकाचार पु० प्रचलित आचार – रूढि
लोकातिग, लोकातिशय, लोकातीत वि० असामान्य; अलौकिक [मात्मा
लोकात्मन् पु० विश्वनो आत्मा, पर-
लोकाधिक वि० जुओ 'लोकातिग'
लोकानुग्रह पु० लोकोनु कल्याण – हित
लोकानुराग पु० परमार्थवृत्ति
लोकापवाद पु० लोकोमा वगोणु
लोकायत न० चार्वाक मत
लोकायतिक पु० चार्वाक मतनो अनुयायी
लोकालोक पु० लोक–पृथ्वीने किनारे गोळ फरतो आवेलो एक काल्पनिक पर्वत (सूर्य एनी अदर रहेतो होवाथी तेनी वहार केवळ अधकार छे)
लोकातर न० परलोक
लोकातरित वि० मृत
लोकोत्तर वि० असामान्य, असाधारण
लोकोपक्रोशन न० लोकोमा अपकीर्ति फेलाववी ते
लोक्य वि० लोकव्यापी (२) प्रचलित; रूढ (३) साचु (४) उत्तम लोक प्राप्त करावनारु [कीकी (३) काजळ
लोचक पु० मूर्ख माणस (२) आखनी
लोचन न० जोवु ते (२) आख
लोचनपरुष वि० कदरूपु
लोचनापात पु० कटाक्ष, नजर
लोचनाचल पु० आखनो खूणो
लोड् १ प० मूर्ख के गाडा थवु –कर्मणि० मूझावु, गूचावु
लोत्र न० चोरेलु धन, लूट
लोध्र पु० एक फूलझाड
लोप पु० लई लेवु के लूटी लेवु ते (२) नाश, हानि (३) लुप्त थई जवु ते; वपराशमाथी नीकळी जवु ते (आचार) (३) उल्लघन, भग (४) अभाव (५) वाद करवु – पडतु मूकवु ते
लोपामुद्रा स्त्री० अगस्त्य ऋषिनी पत्नी
लोपिन् वि० हानि–ईजा करतु (२) रुकावट करतु (३) ओछू करतु, घटाडतु
लोभ पु० लालच, तृष्णा
लोभनीय वि० लोभावे – आकर्षे तेवु
लोभमोहित वि० लोभथी मूढ बनेलु
लोभविरह पु० लोभनो अभाव
लोमन् पु० मनुष्य के जानवरना शरीर उपरना वाळ [नाम
लोमपाद पु० अग देशना एक राजानु
लोमवाहिन् वि० पीछावाळु
लोमश वि० बहु रूवावाळु (२) पु० एक मुनि (३) घेटो
लोमहर्ष पु० रोमाच
लोमहर्षण, लोमहर्षिन् वि० रोमाचकारी
लोमहारिन् वि० जुओ 'लोमवाहिन्' (२) वधानो क्रममा सग्रह करनारु
लोल वि० हालतु, कपतु, फरफरतु (२) क्षुब्ध, अस्थिर (३) चचळ (४) क्षणिक; क्षणभगुर (५) उत्सुक (६) लोभी, कामी
लोलव पु० मोटो काळो भमरो
लोला स्त्री० लक्ष्मी (२) वीजळी (३) जीभ (चपळ होवाथी)
लोलाक्षि न० चकळ-वकळ थती आख
लोलाक्षिका स्त्री० कचळ-वकळ थती आखोवाळी स्त्री
लोलित वि० हालतु, कपतु
लोलुप वि० अति लोभी, लालचु
लोलुपा स्त्री० ललुता
लोलुभ वि० अति लोभी, लोलुप
लोष्ट पु०, न० माटीनु ढेफु; रोडु
लोष्टक पु० माटीनु ढेफु, रोडु
लोष्टघातम् अ० ढेफां–रोडा वडे मारीने
लोह वि० रातु, रताश पडतु (२) तांबानु (३) लोढानु बनावेलु (४) पुं०, न० तावु (५) लोढु (६) पोलाद (७) कोई पण धातु (८) सोनु (९) हथियार

लोहबद्ध वि० लोढाना खीलावाळु; लोढानी अणीवाळु
लोहमणि पु० सोनानो गठ्ठो
लोहाग्र न० बाणनु लोढानु फळुं
लोहित वि० लाल, रातु (२) तावानु (३)पु० लाल रग(४)मगळ ग्रह(५) एक जातनो मणि, माणेक (६) न० तावु (७)लोही(८)एक जातनु चदन
लोहितक वि० रातु(२)पु० एक जातनो, मणि, माणेक (३) मगळ ग्रह
लोहितकृष्ण वि० काळाश पडतुं लाल
लोहितति प० (राता थवु)
लोहिताश्व पु० अग्नि
लोहिताग पु० मगळ ग्रह
लोहितेक्षण वि० लाल आखोवाळु
लोहिनी स्त्री० रक्तवर्णी स्त्री
लौकायतिक पु० चार्वाक मतनो अनुयायी
लौकिक वि० ऐहिक; आ लोकनु(२) सामान्य, प्राकृत (३) रोजिंदु;सर्वत्र रूढ (४) भौतिक;दुन्यवी (५) न० कोई पण दुन्यवी आचार – रूढि
लौकिकज्ञ वि० दुनियानी रीत के व्यवहार जाणनारु [जनता
लौकिकाः पु० ब० व० सामान्य लोको;
लौल्य न० लोलुपता, उत्सुकता (२) चचळता; अस्थिरता
लौह वि० लोखडनु (२) तावानु (३) धातुनु (४) ताम्र रगनु (५) न० लोढु
लौहित्य पु० ब्रह्मपुत्रा नदी(२)न० रताश
लौही स्त्री० देगडी

व

व अ० –नी पेठे
वक्तव्य वि० कहेवा लायक, जणाववा लायक(२)निंदवा लायक(३)नीच; हीन(४)जवाबदार(५)आश्रित (६) न० वातचीत (७) निंदा, ठपको
वक्तव्यता स्त्री० निंदा, ठपको (२) दासपणु, पराधीनता
वक्तृ पु० वक्ता, बोलनारो(२)भाषण करनारो(३)अध्यापक; शिक्षक(४) विद्वान – ज्ञानी – डाह्यो माणस
वक्त्र न० मुख, मो
वक्त्रपरिस्पंद पु० वातचीत; भाषण
वक्र वि० वाकु (२) आडकतरु (३) वाकडियु (४) अप्रमाणिक, दगाबाज (५)क्रूर(६)पु० मगळ ग्रह(७)शनि
वक्रग्रीव पु० ऊंट
वक्रचंचु पु० पोपट
वक्रतुंड पु० गणपति (२) पोपट
वक्रपुच्छ पु० कूतरो
वक्रप्लुत वि० आडा अवळा कूदका मारतु
वक्रभणित न० वाकु बोलवु ते (२) आडकतरु कहेवु ते
वक्रित वि० वाकु, वळेलु
वक्रिमन् पु० वाकापणु; वळाक (२) आडकतरु बोलवु ते(३)बेवचनीपणु, लुच्चाई, बोलीने फरी जवुं ते
वक्रोक्ति स्त्री० कटाक्षनु वचन (२) वांको बोल (३) एक काव्यालकार, जेमा काकु के श्लेषथी वाक्यनो जुदो ज अर्थ करवामां आवे छे (काव्य०)
वक्रोष्ठि स्त्री० मद हास्य, स्मित
वक्षस्, वक्ष स्थल न० छाती
वक्षोज, वक्षोरुह (–ह) पु० स्तन
वच् २ प० बोलवु; कहेवु (२) वर्णववु, जणाववुं (३)बोलाववु (४)अर्थ दर्शाववो(५)निंदवुं; ठपको आपवो(६) १० प० जणाववु, कहेवु
–प्रेरक० बोले तेम करवु, बोलाववु (२) वाचवु (३) कहेवु, जणाववुं
वचन न० बोलवु–कहेवुं ते(२)वाणी,

कथन, बोलेलु ते (३) फरी बोली जवु ते (४) शास्त्रवाक्य (५) आज्ञा; हुकम (६) सलाह; उपदेश (७) अर्थ थवो ते (शब्दनो) (८) सख्या (व्या०)

वचनकर वि० आज्ञानु पालन करनारु

वचनक्रिया स्त्री० आज्ञापालकपणु

वचनगौरव न० आज्ञा प्रत्ये आदर; आज्ञा शिरोधार्य करवी ते

वचनपटु वि० बोलवामां होशियार; वक्तृत्वशक्तिवाळु [कहेवु ते

वचनशत न० सो वार – वारंवार

वचनसहाय पु० वातचीतनो सोबती

वचनस्थित वि० आज्ञापालक

वचनावक्षेप पु० गाळ देवी ते

वचनीय वि० कहेवा योग्य (२) ठपको आपवा योग्य (३) न० निंदा; ठपको

वचनेस्थित वि० जुओ 'वचनस्थित'

वचनोपन्यास पु० सूचक वाणी, आडकतरी रीते सूचववु ते

वचस् न० वाणी, शब्द, वाक्य (२) आज्ञा, हुकम (३) सलाह; उपदेश

वचसांपति पु० बृहस्पति (२) गुरुग्रह

वचस्विन् वि० वक्तृत्व शक्तिवाळु

वचःक्रम पु० वातचीतनो क्रम, वातचीत

वचःप्रवृत्ति स्त्री० बोलवानी कोशिश

वचोमार्गातीत वि० शब्दोमा कही शकाय तेथी मोटु के तेथी पर

वचोहर पु० दूत

वज्र वि० कठण (२) कठोर (३) पु०,न० इन्द्रनु आयुध (दधीचिना हाडकामाथी बनावेलु) (४) वज्र जेवु कोई पण भेदक हथियार (५) मणि वगेरे वीधवानी हीरानी शारडी (६) हीरो (७) पु० सैन्यनो एक व्यूह (८) न० पोलाद (९) कठोर भाषा

वज्रकीट पु० लाकडामा के पथ्थरमा काणु पाडनार एक कीडो

वज्रकील पु० वज्र

वज्रघोष वि० वज्र के वीजळीना कडाका जेवा अवाजवाळु

वज्रधर पु० इन्द्र (२) घुवड

वज्रनाभ पु० कृष्णनु चक्र

वज्रपतन न० वज्रनु पडवु ते (२) वीजळी पडवी ते

वज्रपाणि पु० इन्द्र (२) घुवड

वज्रपात पु० जुओ 'वज्रपतन'

वज्रमणि पु० हीरो [कठोर

वज्रमय वि० अत्यत कठण (२) क्रूर;

वज्रमुख पु० एक जीवडु (ऊडु कोतरनारु)

वज्रलेप पु० एक जातनो सखत चोटी जनारो लेप (२) कदी उखेडी न शकाय तेम चोटी जवु ते

वज्रव्यूह पु० एक जातनो लश्करी व्यूह

वज्रसंघात वि० वज्रनी कठिनतावाळु

वज्रसार वि० वज्र के हीरा जेवु कठण

वज्राकर पु० हीरानी खाण

वज्राघात पु० वज्रनो के वज्र जेवो प्रहार

वज्रायुध पु० इन्द्र

वज्राशनि पु० इन्द्रनु वज्र

वज्रांक वि० हीराजडित

वज्रिन् पु० इन्द्र (२) घुवड

वट् १ प० वीटाळवु, वीटवु (२) १० उ० कहेवु (३) वाटवु, भाग पाडवा (४) बाधवु, जोडवु

—कर्मणि० वटावु, कचरावु

वट पु० वडनु झाड (२) गोळी (३) वर्तुलाकृति (४) वडु (खावानु)

वटाकर, वटारक पु० दोरडु

वटी स्त्री० दोरी (२) गोळी

वटु पु० छोकरो (२) ब्रह्मचारी

वडभि (–भी) स्त्री० जुओ 'वलभि'

वडवा स्त्री० घोडी (२) दासी (३) वेश्या (४) अश्विनी अप्सरा, जेने घोडीरूपे सूर्यथी बे अश्विनो रूपी पुत्रो थया हता

वडवाग्नि, वडवानल पु० समुद्रमा रहेलो मनातो अग्नि (दक्षिण ध्रुव

आगळ वडवामुख नामनी बखोलमाथी भभूके छे)
वडवाभर्तृ पु० उच्चैःश्रवा घोडो
वडवामुख पु० दक्षिण ध्रुव पासे पाताळ लोकमा जवानु प्रवेशद्वार (२) त्याथी भभूकतो वडवाग्नि
वणिक्कटक पु० काफलो, सघ
वणिग्ग्राम पु० वेपारीओनु मडळ
वणिग्वृत्ति स्त्री० वेपार
वणिज् पु० वेपारी; वणिक
वणिज्य न०, **वणिज्या** स्त्री० वेपार
वत् वि० मालकी, –युक्त होवापणु वगेरे अर्थो बतावबा लगाडातो प्रत्यय (२) अ० –नी पेठे, प्रमाणे –एवो अर्थ बताववा नाम के विशेषणने लागे छे
वतंस पु० जुओ 'अवतस', आभूषण
वतु अ० 'चूप' एवा अर्थनो उद्‌गार
वत्स पु० वाछरडु, पशुनु बच्चु (२) दीकरो, बेटो (वहालमा सबोधन) (३) सतान (४) एक देश (उदयन राजानो; कौशाबी तेनी राजधानी) (५) ब० व० ते देशना लोको
वत्सतर पु० वाछरडो; जुवान बळद
वत्सतरी स्त्री० वाछरडी; जुवान गाय (जेणे बच्चाने हजु जन्म नथी आप्यो)
वत्सर पु० वर्ष, साल
वत्सराज पु० वत्स देशनो राजा
वत्सरूप पु० नानु वाछरडु
वत्सल वि० सतान प्रत्ये मायाळु (२) स्नेहाळ (३) न० ममता, वत्सलता
वत्सलयति प० (वात्सल्यभाववाळु करवु)
वत्सा स्त्री० वाछरडी (२) नानी छोकरी (वहालमा)
वत्सिन्, वत्सिमन् पु० बाळपण, किशोरा- [वस्था
वद् १ प० बोलवु, कहेवु (२) जाहेर करवु (३) वर्णववु (४) विधान करवु (५) दर्शाववु (६) अवाज करवो; गावु (७) आ० प्रकाशवु (८) प्रावीण्य के प्रामाण्य दाखववु
–प्रेरक० वगाडवु (वाजित्र) (२) पाठ करवो, बोलवु
वदत् वि० बोलतु; कहेतु
वदन न० मुख; चहेरो
वदनपवन पु० श्वास
वदनोदर न० जडबु
वदान्य वि० वक्तृत्व-शक्तिवाळु (२) मायाळुपणे बोलनारु (३) उदार (४) पु० उदार माणस
वदावद वि० बोलकणु; वाचाळ
वदि अ० कृष्णपक्षमा
वध् १ प० वध करवो ('हन्'ना विकल्प तरीके मुख्यत्वे वपराय छे)
वध पु० मारी नाखवु ते (२) प्रहार (३) गुणाकार (४) विजेता (५) वधक
वधक वि० वध करनारु, नाश करनारु (२) पु० फासीगरो (३) खूनी
वधनिग्रह पु० देहातदड
वधस्तंभ पु० फासी देवानो माचडो
वधार्थीय वि० वध माटेनु होय तेवु, कतल माटेनु (२) वध्य (३) वधक
वधु स्त्री० पुत्रवधू (२) जुवान स्त्री
वधुटी स्त्री० जुओ 'वधूटी'
वधू स्त्री० परणनार कन्या (२) पत्नी (३) पुत्रवधू (४) कोई पण स्त्री के कन्या (५) पोतानाथी नानी उमरना सगानी पत्नी (६) मादा (पशुनी)
वधूटशयन पु० कठेरो; बारी
वधूटी स्त्री० युवान स्त्री (२) पुत्रवधू
वध्य वि० वध करवा योग्य (२) देहातदडनी शिक्षा पामेलु (३) पु० जेनो वध करवानो छे ते (४) शत्रु
वध्यभू, वध्यभूमि स्त्री० ज्या फासी के शूळी अपाय ते स्थान
वध्यमाला स्त्री० देहातदड आपवानो होय तेने पहेराववानी माळा
वध्यशिला स्त्री० कापी नाखवा माथु जेनी उपर रखाय ते शिला (२) कतलखानु

वध्यस्थान न० जुओ 'वध्यभू'
वध्र न०, **वध्री** स्त्री० चामडानी दोरी
वन् १ प० समानवु; आदर करवो (२) मदद करवी (३) अवाज करवो (४) लीन होवु (५) ८ उ० याचवु; मागवुं (६) शोधवु; मेळववा इच्छवु
वन न० जंगल (२) झुंड; समुदाय (३) पाणी (४) निवासस्थान [रहेतु
वनकाम वि० वनमी रुचिवाळु; वनमा
वनग वि० जंगलनु वतनी
वनगज पु० जंगली हाथी
वनगहन न० जंगलनो गीच भाग
वनग्रहण न० वनने घेरो घाली अवरजवर बंध करवो ते
वनग्राहिन् पु० वनने घेरीने हाकोटा करनारो (शिकार माटे)
वनचर वि० वनमां रहेनारु–विचरनारुं (२) पु० अरण्यवासी (३) जगली प्राणी
वनज्योत्स्ना स्त्री० एक प्रकारनी फूलवेल
वनदेवता स्त्री० वननी अधिष्ठाता देवता
वनधारा स्त्री० झाडोनी पंक्ति
वनप पु० वननो रखवाळ
वनप्रस्थ वि० वानप्रस्थ (२) पु० माळनी ऊंची जमीन उपरनु जगल
वनबर्हिण पु० जगली मोर
वनमाला स्त्री० वनना पुष्पोनी माळा (ढींचण सुधी लटकती)
वनमालिन् पु० श्रीकृष्ण [वादळ
वनमुच् वि० पाणी वरसावतु (२) पु०
वनराजि (–जी) स्त्री० वृक्षोनी पंक्ति के जूथ (२) वननो लांबो प्रदेश (३) वननी पगदडी
वनरुह न० कमळ
वनलता स्त्री० वननी वेली
वनवर्तिका स्त्री० बटेर पक्षी
वनवास पु० वनमा वसवु ते (२) जगलनुं जीवन (३) वनवासी माणस
वनश्वन् पु० वाघ (२) शियाळ
वनसद् पु० वनवासी; जगलनो माणस
वनस्थ पु० तपस्वी (२) हरण
वनस्थली स्त्री० वननो प्रदेश के भूमि
वनस्पति पु० मोटु जगलनु झाड (खास करीने जेने फूल वगर फळ बेसे) (२) कोई पण वृक्ष (३) थड (४) थाभलो
वनापगा स्त्री० जगलनो वहेळो
वनाब्जिनी स्त्री० पाणीनी अंदर थती कमळनी वेल
वनायु पु० जेना घोडा वखणाय छे तेवो एक प्रदेश (२) पुरूरवानो पुत्र
वनायुज पु० 'वनायु' प्रदेशनो घोडो (अरबी?) [वनमा उजाणी
वनाश वि० पाणी उपर जीवतु (२) पु०
वनांत पु० वननो छेडो–किनारो (२) वनप्रदेश [भाग
वनांतर न० बीजु वन (२) वननी अंदरनो
वनिका स्त्री० उपवन [पूजेलु
वनित वि० याचेलु; मागेलु (२) सेवेलु;
वनिता स्त्री० स्त्री (२) पत्नी (३) प्रिया
वनिष्णु वि० याचनारु; याचतु
वनी स्त्री० झाडी
वनीपक, वनीयक पु० मागण, याचक
वनेचर वि० वनमा रहेतु–फरतु (२) पु० वनवासी माणस (३) तपस्वी (४) जगली प्राणी (५) राक्षस
वनोपप्लव पु० दावानळ [जगली प्राणी
वनौकस् पु० वनवासी (२) तपस्वी (३)
वन्य वि० वनने लगतु, वनमा पेदा थतु (२) पाळेलु नहि तेवु; जगली (३) लाकडानु (४) पु० जगली प्राणी (५) जगली छोड (६) वानर (७) न० वननी पेदाश (फळ, फूल इ०)
वन्यवृत्ति वि० जगलना आहारथी जीवतु
वन्या स्त्री० मोटु वन; झाडीओनो समुदाय (२) पूर
वन्याश्रम पु० वानप्रस्थाश्रम
वन्येतर वि० जंगली नहि तेवु – पाळेलुं

वर्ज वि० विनानु; रहित
वर्जक वि० (समासने छेडे) त्यागतु; छोडतु (२) विनानु; रहित
वर्जन न० छोडवु ते; त्यागवु ते
वर्जम् अ० बाद करीने; छोडीने; सिवाय (समासने अंते)
वर्जित ('वृज्'नु भू०कृ०) वि० त्यागेलु; छोडेलु (२) बाद राखेलु (३) विनानु
वर्ज्य वि० त्यागवा योग्य; छांडवा योग्य (२) –सिवायनु
वर्ण् १० उ० रगवु; चीतरवु (२) वर्णववु (३) वखाणवु (४) फेलाववु
वर्ण पु० रग (२) सूरत; देखाव (३) माणसोनो विभाग – जाति (चार वर्ण) (४) जात, प्रकार (५) अक्षर; शब्द (६) प्रशसा (७) गीतमा वस्तुनो क्रम (८) ध्वनि, अवाज
वर्णक पु० नटनो वेश (२) रंग (चीतरवा माटे) (३) लेप माटे वपराती कोई पण वस्तु; सुगधी लेप (४) भाट; चारण (५) वक्ता (६) वर्ण; अक्षर (७) नमूनो (८) न० रग (९) प्रकरण, विभाग (१०) कूडाळु; वर्तुळ
वर्णतस् अ० वर्णथी [(२) कलम
वर्णतूलिका स्त्री० चित्रकारनी पीछी
वर्णधर्म पु० दरेक वर्णनु पोतानु कर्तव्य
वर्णन न० चीतरवु ते (२) वर्णववु के वर्णवेलु ते; बयान
वर्णना स्त्री० वर्णन (२) प्रशसा
वर्णपरिचय पु० सगीतमा कुशळता
वर्णमाला स्त्री० भाषाना मूळाक्षर
वर्णवर्ति, वर्णवर्तिका स्त्री० चितारानी पीछी (२) कलम; लेखणी
वर्णविक्रिया स्त्री० वर्णो सामे वेरभाव
वर्णवृत्त न० अक्षरमेळ छद ('मात्रा वृत्त'थी भिन्न)
वर्णश्रेष्ठ पु० ब्राह्मण
वर्णसंकर पु० भिन्न वर्णना स्त्री पुरुषना लग्नथी थती वर्णनी भेळसेळ (२) जुदा जुदा रगोनी मिलावट
वर्णापकृष्ट पु० शूद्र
वर्णावर वि० वर्णमां हलकु – ऊतरतुं
वर्णाश्रमाः पु० ब० व० चार वर्ण अने चार आश्रम
वर्णिका स्त्री० नटनो स्वाग (२) रग (३) शाही (४) कलम (५) खडी
वर्णिकापरिग्रह पु० पात्रनो स्वाग के भूमिका [(२) चीतरेलु (३) प्रशसेलुं
वर्णित ('वर्ण्'नु भू०कृ०) वि० वर्णवेलु
वर्णिन् वि० (समासने अते) –ना रग के देखाववाळु (२) –ज्ञातिनु; –वर्णनु (३) पु० चितारो (४) लहियो (५) ब्रह्मचारी; विद्यार्थी (६) चारमाथी कोई पण वर्णनो माणस
वर्णिलिंगिन् वि० ब्रह्मचारी–विद्यार्थीनो स्वाग के चिह्नो धारण करनारु
वर्णोदक न० रगीन पाणी
वर्ण्य वि० वर्णववानु; प्रस्तुत (२) रगसबधी [आजीविका
वर्त पु० (मुख्यत्वे समासने छेडे) निर्वाह;
वर्तक वि० जीवतु; अस्तित्व धरावतु (२) –मां लगनीवाळु; उपासक (३) पु० बटेर पक्षी (४) घोडानी खरी
वर्तन वि० रहेतुं; होतु (२) पु० वामन; ठीगणो (३) न० होवु ते; जीववु ते (४) रहेवु ते, निवास (५) हालचाल; कर्म (६) निर्वाह, आजीविका (७) पगार, रोजी (८) वेपार; लेवड-देवड (९) गोळो; दडो (१०) रगवु – चोपडवु ते
वर्तमान वि० जीवतु, अस्तित्वमा होय तेवु; समकालीन (२) गोळ फरतु (३) –मां रहेतु (४) पु० वर्तमानकाळ (५) न० वर्तमानकाळ (६) हाजरी
वर्ति स्त्री० गोळ वीटीने बनावेलुं ते; (२) अजन–लेप जेवी शृंगारनी कोई चीजनी गोळी के गोळो (३) दीवानी दिवेट (४) वणेला कपडानी दशी

वर्तिका स्त्री० चीतरवानी पीछी (२) दीवानी दिवेट; मसाल उपर वीटेली वाट (३) रंग (४) बटेर पक्षी (मादा) (५) लाकडी

वर्तित वि० वीटेलुं; आमळेलु (२) अस्तित्वमा आणेलु (३) सिद्ध करेलुं (४) वितावेलु (समय)

वर्तिन् वि० (मुख्यत्वे समासने छेडे) रहेनारुं; रहेतुं (२) जतु (३) वर्ततु (४) आचरतु (५) पालन करतु (आज्ञानु)

वर्ती स्त्री० जुओ 'वर्ति' [न० कूडाळु

वर्तुल वि० गोळाकार; वर्तुलाकार (२)

वर्त्मन् न० रस्तो; मार्ग (२) चीलो; रूढि (३) अवकाश, तक

वर्त्मपात पु० मार्गमां वच्चे आववु ते (२) मार्गमांथी आडा फटावु ते

वर्त्स्यत् वि० बनवानी के वधवानी तैयारीमा होय तेवु

वर्धक, वर्धकि, वर्धकिन् पु० सुतार

वर्धकी स्त्री० वेश्या

वर्धन वि० वधारनारु (२) न० वधवु ते (३) कापवु ते (४) विनाश

वर्धमान वि० वधतु (२) पु० एक जिल्लो (आजनो वर्दवान) (३) २४ मा जैन तीर्थंकर (४) पु०, न० अमुक आकारनु पात्र

वर्धमानक पु० एक जातनु ढाकणा जेवुं पात्र (२) माथे के हाथमा दीवा राखी नाचनार लोकोनो एक वर्ग

वर्धमानगृह न० क्रीडागृह

वर्धित वि० वधेलु (२) मोटु करेलुं (३) कापेलु (४) भरेलु

वर्धिष्णु वि० वृद्धि पामतु; वधतु

वर्ध्र न० चामडानो पटो (२) चामडु

वर्ध्रिका, वर्ध्री स्त्री० चामडानो पटो

वर्मन् पु० क्षत्रियोना नामने लागतो एक शब्द ('चडवर्मन्') (२) न० कवच; बख्तर (३) छाल

वर्महर वि० बख्तर धारण करवा के युद्धमा ऊतरवा जेटली उमरनु

वर्य वि० मुख्य; श्रेष्ठ, प्रधान (घणुं-खरु समासने अते)

वर्ष पु०, न० वरसाद (२) कोई पण वस्तुनु वरसादनी पेठे वरसवु ते (बाण, फूल इ०) (३) सवत्सर (४) दुनियानो विभाग–खड (कुरु, हिरण्मय, रम्यक, इलावृत, हरि, केतुमाल, भद्राश्व, किंनर, भारत) (५) भारतवर्ष (६) दिवस (७) निवासस्थान

वर्षगिरि पु० जुओ 'वर्षपर्वत'

वर्षघ्न वि० वरसादमाथी रक्षतु

वर्षण न० वरसवु ते

वर्षत्र न० छत्री

वर्षधर पु० वादळु (२) अत.पुरनो नपुं-सक रखवाळ के नोकर

वर्षपर्वत पु० दुनियाना जुदा जुदा विभागोने जुदा पाडती पर्वतमाळामानी दरेक (हिमवान्, हेमकूट, निषध, मेरु, चैत्र, कर्णी, शृंगी - ए सात)

वर्षप्रवेग पु० वरसादनु सखत झापटु

वर्षवर पु० अंत.पुरनो नपुसक रखवाळ के नोकर

वर्षा स्त्री० वरसादनी ऋतु; चोमासु

वर्षाकाल पु० वर्षाऋतु

वर्षाघोष (वर्षा+आघोष) पु० देडको

वर्षामद (वर्षा+आमद) पु० मोर

वर्षारात्र पु० चोमासानी रात (२) वर्षा ऋतु [ऋतु

वर्षावसान न०, **वर्षावसाय** पु० शरद

वर्षिष्ठ वि० ('वृद्ध'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप) अति वृद्ध (२) वलिष्ठ (३) समृद्ध

वर्षीयस् वि० ('वृद्ध'नु तुलनात्मक रूप) वधु मोटु – वृद्ध – वलवान – अगत्यनु

वर्षुक वि० वरसतुं; पाणी वरसावतु

वर्षोपल पु० करो (२) एक मीठाई

वर्ष्मन् न० देह; शरीर (२) कद; ऊचाई

(३) सुदर आकार (४) तळ, सपाटी जेमके पर्वतना)
वर्ह् १ आ० जुओ बर्ह् (२) १० उ० दीपवु; प्रकाशवु (३) बोलवु
वर्ह पु०, न० जुओ 'बर्ह'
वर्हिण वि०, पु०, वर्हिन् पु० जुओ 'बर्हिण', 'बर्हिन्'
वर्हिस् पु०, न० जुओ 'बर्हिस्'
वल् १ आ० उतावळे जवु (२) वळवु; गोळ फरवु (३) आसक्त थवु (४) वधवु (५) ढाकवु, ढकावु
वलक न० सरघस
वलक्ष वि० सफेद
वलक्षगु पु० चद्र
वलग्न पु०, न० कमर, केड
वलज पु० अनाजनो ढगलो (२) न० खेतर (३) अनाज (४) युद्ध
वलजा स्त्री० सुदर स्त्री
वलन न० -तरफ वळवु ते (२) गोळ कूडाळामा फरवु ते (३) क्षोभ
वलना स्त्री० तरफ फरवु-वळवु ते (२) चित्रनी आकृतिओ दोरवी ते
वलभि(-भी) स्त्री० छापरानो ढाळ; छापरानु लाकडानु छाज (२) घरनी छेक टोचनी मेडी (३) सौराष्ट्रनी एक नगरी
वलय पु०, न० कडु, ककण (२) जाळु, गूचळु (३) परणेली स्त्रीनो कदोरो (४) वर्तुळ, घेरावो (समासने अते) (५) न० टोळु [गोळ कूडाळु करतु
वलयित वि० वीटायेलु; घेरायेलु (२)
वलयीकृ ८ उ० ककणनी पेठे गोळ वीटवु
वलंतिका स्त्री० एक चेष्टा-अभिनय
वलि स्त्री० करचली, करचोली (२) पेट उपरनो वाटो (स्त्रीनी सुदरतानी निशानी गणाय छे) (३) छापरानो टोचनो भाग (ज्या बे ढाळ भेगा थाय छे) (४) सुगधी लेप वडे शरीर उपर करेली रेखा (५) चामरनो हाथो
वलित ('वल्'नु भू० कृ०) वि० वळेलु; गोळ फरेलु (२) घेरायेलु (३) करचली पडेलु (४) फेंकेलु, नाखेलु
वलिन, वलिभ वि० करचलीवाळु
वली स्त्री० जुओ 'वलि'
वलीक न० छापरानो बहार नीकळतो किनारीनो भाग
वलीपलित न० करचली अने धोळा वाळ
वलीभृत् वि० वाकडियु (वाळ)
वलीमुख, वलीवदन पु० वानर
वल्क पु०, न० झाडनी छाल (२) वस्त्र (३) खड (४) माछलीनु भीगडु
वल्कल पु०, न० झाडनी छाल (२) तेनु बनावेलु वस्त्र
वल्कलिन् वि० छाल आपतु, छाल थती होय तेवु (२) वल्कल पहेरनारु
वल्कवासस् न० छालनु बनावेलु वस्त्र
वल्ग् १ प० जवु (२) हलाववु; कपाववु (३) ठेकडो भरवो (४) नाचवु (५) खुश थवु (६) खावु (७) बडाश मारवी
वल्गक पु० ठेकडा मारनारो, कूदनारो
वल्गन न० ठेकडा मारवा-कूदवु ते
वल्गा स्त्री० लगाम
वल्गित ('वल्ग्'नु भू० कृ०) ठेकडो मार्यो होय तेवु; कूदेलु (२) नचावेलु; कूदावेलु (३) न० घोडानी ठेकडावाळी चाल (४) बडाश मारवी ते
वल्गु वि० मनोहर, सुदर (२) मधुर; मीठु (३) मूल्यवान (४) अ० सुदर रीते
वल्गुनाद वि० मधुर अवाज करतु
वल्गुलिका स्त्री० वदो (२) कुप्पी (तेलनी)
वल्मीक पु०, न० कीडीनो राफडो (२) पु० वाल्मीकि मुनि
वल्ल पु० त्रण गुजा जेटलु वजन
वल्लकी स्त्री० वीणा
वल्लभ वि० वहालु, प्रिय (२) प्रियतम; पति (३) मानीतो माणस (४) शुभ लक्षणवाळो घोडो

वल्लभजन पु० प्रियतमा
वल्लभपाल पु० अश्वपाल, खासदार
वल्लभा स्त्री० प्रियतमा, पत्नी
वल्लरि(–री) स्त्री० वेल, लता (२) शाखाओवाळी दाडी
वल्लव पु० गोवाळियो
वल्लि स्त्री० वेल (२) पृथ्वी
वल्ली स्त्री० वेल
वश् २ प० इच्छवु (२) प्रकाशवु
वश वि० तावे;–नी असर के अकुश हेठळनु (२) आज्ञापालक (३) मोहित (४) पु०, न० कावू, सत्ता, तावेदारी
वशग वि० बीजानी मरजीने अनुसरनारु, वश–तावे थयेलु (२) पु० दास; नोकर [सरनारु
वशवर्तिन् वि० बीजानी मरजीने अनु-
वशंगम् १ प० वश थवु, तावे थवु
वशंवद वि० वश–तावे थयेलु, –नी असर हेठळ आवेलु
वशा स्त्री० स्त्री (२) पत्नी (३) कन्या (४) हाथणी (५) वध्या (स्त्री)
वशिता स्त्री०, **वशित्व** न० वश करवु ते (२) मोहित करवु ते (३) बीजाने वश करवानी सिद्धि (४) जात उपर काबू
वशिन् वि० समर्थ (२) वश थयेलु; तावेदार (३) वासनाओ कावूमा लीधी होय तेवु [णनु साधन–कारण
वशीकरण न० वश करवु ते (२) आकर्ष-
वशीकृ ८ उ० तावे करवु, वश करवु (२) मोहित करवु [थयेलु
वशीकृत वि० वश थयेलु (२) मोहित
वश्य वि० वश करी शकाय तेवु (२) वश करेलु, वश थयेलु (३) कावू हेठळनु; आज्ञापालक (४) पु० दास, नोकर
वश्या स्त्री० आज्ञापालक पत्नी
वषट् अ० देवने आहुति आपती वखते वोलातो शब्द (देवनी चतुर्थी साथे)
वषट्कृत वि० ('वषट्' उच्चार साथे) होमेलु

वस् १ प० रहेवु, वसवाट करवो (२) होवु, मळी आववु (३) २ आ० धारण करवु; पहेरवु (४) ४ प० स्थिर होवु (५) १० प० रहेवु (६) १० उ० कापवु; छेदवु (७) चाहवु (८) स्वीकारवु (९) १० उ० [वसयति–ते] सुगधित करवु
वसति(–ती) स्त्री० वास, निवास (२) घर; निवासस्थान (३) शिविर (४) रात्रि (ज्यारे पडाव कराय छे)
वसथ न० माळो (पखीओनो)
वसन न० वसवु ते, निवास (२) घर (३) वस्त्र, (४) कदोरो (स्त्रीनो)
वसनपर्याय पु० वस्त्र बदलवा ते
वसना वि०, स्त्री० (समासमा) वस्त्रथी आच्छादित एवी (२) वीटळायेली
वसंत पु० वसत ऋतु (चैत्र अने वैशाख) (२) विदूपकनु उपनाम (नाटकमा)
वसंतबंधु, वसंतयोध पु० कामदेव
वसंतसख पु० कामदेव (२) मलयानिल
वसंतावतार पु० वसत ऋतु वेसवी ते
वसंतोत्सव पु० होळीनो उत्सव
वसा स्त्री० मेद, चरवी
वसान वि० रहेतु
वसिष्ठ पु० ते नामना एक ऋषि, सूर्यवशी राजाओना पुरोहित
वसु वि० मधुर (२) सूकु (३) न० धन, समृद्धि (४) रत्न (५) सोनु (६) पाणी (७) घी (८) पु० (व० व०) देवोनो एक वर्ग (आठ छे) (९) किरण (१०) कोणीथी मूठी सुधीनु माप
वसुक पु० आकडो (२) न० दरियानु मीठु
वसुदा स्त्री० पृथ्वी
वसुदेव पु० श्रीकृष्णना पिता
वसुद्रुम पु० उदुवर वृक्ष
वसुधा स्त्री० पृथ्वी (२) स्वर्ग (३) जमीन
वसुधाधर पु० पर्वत
वसुधाधिप पु० राजा [धानी
वसुधारा, वसुभारा स्त्री० कुबेरनी राज-

वसुमत् वि० धनवान
वसुमती स्त्री० पृथ्वी
वसुरेतस् पु० अग्नि
वसुश्रेष्ठ न० घडतर सोनु (२) रूपु
वसुषेण पु० कर्ण
वसुंधरा स्त्री० पृथ्वी
वसूक पु०, न० जुओ 'वसुक'
वसोर्धारा स्त्री० वसुओ माटे घीनी धारा (२) घी होमवानु पात्र (३) मदाकिनी (स्वर्गनी गगा)
वस्तव्यता स्त्री० निवास, रहेठाण
वस्ति पु०, स्त्री० जुओ 'बस्ति'
वस्तु न० पदार्थ, चीज, सत् पदार्थ (२) मालमिलकत (३) सार, तत्त्व (४) घटक द्रव्य (५) नाटक के कथानो विषय, 'प्लॉट'
वस्तुतस् अ० वस्तुताए, खरेखर
वस्तुपुरुष पु० नायक (नाटक के कथानो)
वस्तुरचना स्त्री० वस्तुनी गोठवणी के खिलवणी (नाटक इ० मा)
वस्तुवृत्त न० साची बाबत के बीना (२) सुदर प्राणी
वस्तूपहित वि० योग्य पदार्थने लागु करेलु, योग्य पदार्थमा अजमावेलु
वस्त्य न० निवासस्थान, घर
वस्त्र न० कपडु, कापड
वस्त्रधाविन् वि० वस्त्र धोनारु
वस्त्रपरिधान न० वस्त्र पहेरवा ते
वस्त्रपूत वि० कपडाथी गाळेलु
वस्त्रोत्कर्षण न० वस्त्र उतारी नाखवा ते
वस्य पु० घर
वस्या स्त्री० अवस्था
वस्वोकसारा, वस्वौकसारा स्त्री० इद्रनी नगरी–अमरावती (२) कुबेरनी नगरी अलका (३) ते बनेने स्पर्शती नदी
वह् १ उ० ऊचकवु; वहन करवु; उपाडी जवु (२) आगळ धकेलवु – लई जवु (३) लाववु, लई आववु (४) धारण करवु; टेकववु (५) हरी जवु (६) परणवु (७) मालिक होवु – पासे होवु (८) काळजी राखवी (९) अनुभववु (१०) (अकर्मक अर्थ) खसवु, चालवु (११) वहेवु (नदीनु) (१२) वावु (पवननु)
–प्रेरक० ऊचकाववु, लेवराववु (२) हाकवु, धकेलवु (३) उपर थईने जवुं; पसार थवु (४) वापरवुं, धारण करवु
वहन न० वहन करवु – लई जवु ते (२) वहेवु ते (३) वाहन (४) नौका
वहनभङ्ग पु० वहाण तूटी जवु ते
वहनीय वि० वहन करवा योग्य; लई जवा लायक
वहित वि० वहन करायेलु (२) विख्यात [(३) प्राप्त थयेलु
वहित्र न० वहाण; नौका
वह्नि पु० अग्नि (२) जठराग्नि
वह्निधौत वि० अग्नि जेवु शुद्ध
वह्निसंस्कार पु० शबनो अग्निसस्कार
वह्निसाक्षिकम् अ० अग्निनी साक्षीए
वह्य न० गाडी (२) वाहन; सवारी
वंक पु० नदीनो वाक (२) वळाक
वंका स्त्री० जीन के पलाणनो आगळनो ऊभो भाग
वंक्षु स्त्री० गगा नदीनी एक शाखा (२) (पामीरमाथी नीकळती) आमुदरिया नदी; 'ऑक्सस'
वंग पु० (ब०व०) बगाळ देश (२) न० कलाई (३) सीसु [टोपली
वंगेरिका, वंगेरी स्त्री० नेतरनी नानी
वंच् १ प० जवु; पहोचवु (२) गुपचुप जवु
–प्रेरक० –थी दूर रहेवु, –थी बची नीकळवु (२) छेतरवु (३) –थी रहित करवु, विनानु राखवु
वंचक वि० लुच्चु, छेतरनारु (२) पु० ठग; लुच्चो (३) शियाळ
वंचन न०, **वंचना** स्त्री० ठगवु – छेतरवु ते (२) युक्ति, छेतरपिंडी (३) भ्रम (४) –विनानु करवु ते; रुकावट करवी के थवी ते [करायेलु
वंचित वि० छेतरायेलु (२) विनानु

वंचुलक पु० एक पखी
वंजुल वि० वाकु (२) पु० नेतर; वरु (३) एक फूल (४) अशोक वृक्ष (५) एक पखी
वंजुलक पु० जुओ 'वचुलक'
वंट् १ प०, १० उ० भाग पाडवा; हिस्सो वहेचवो
वंट वि० बाडु, पूछडी विनानु (२) वाढु
वंठ् १ आ० एकला जवु
वंठ वि० वाढु [(२) स्तुति करवी
वंद् १ आ० वदन करवु, नमस्कार करवा
वंदन न० नमस्कार; प्रणाम (२) स्तुति
वंदनमालिका स्त्री० दरवाजे लटकावाती माळा, तोरण [स्तुति
वंदना स्त्री० नमस्कार, प्रणाम (२)
वंदनीय वि० वदन करवा योग्य
वंदारु वि० स्तुति करतु (२) वदन करतु, नम्र, विनयी
वंदि स्त्री० केद (२) स्त्री केदी
वंदिन् पु० बदी, भाट (२) बदीवान
वंदी स्त्री० जुओ 'वदि'
वंद्य वि० पूज्य, वदन करवा योग्य (२) प्रशसापात्र [नमेलु (३) सुदर
वंधुर वि० अस्थिर, चचळ (२) वाकु;
वंध्य वि० वाधवा के केद पकडवा लायक (२) जोडवा लायक (३) जेने सतान के फळ न थाय तेवु [गाय
वंध्या स्त्री० वाझणी स्त्री (२) वाझणी
वंश पु० वास (२) कुळ; पुत्रपुत्रादिनो क्रम (३) वासळी (४) समुदाय (सरखी वस्तुओनो) (५) पाटडो (६) गाठ; साधो (वासमा)
वंशकर वि० वशनी स्थापना करनारु (२) वश चालु राखनारु (३) पु० पुत्र
वंशकर्मकृत् पु० वासनु काम करनारो
वंशकृत्य न० वासळी वगाडवी ते
वंशचर्मकृत् पु० वास साथे चामडानु काम करनारो
वंशज वि० —ना वशमा उत्पन्न थयेलु (२) वासनु बनेलु (३) सारा वशमा जन्मेलु (४) पु० वारसदार, सतान
वंशधर वि० वशने टकावनारु—चालु राखनारु (२) कुटुम्बने पोषनारु (३) पु० वारसदार [भूगळी
वंशनाडिका, वंशनाडी स्त्री० वासळी के
वंशबाह्य वि० कुटुबमाथी बहिष्कृत
वंशभृत् पु० कुळनो वडो (२) कुळने पोषनारो
वंशभोज्य वि० परपराथी मळेलु (२) न० वशपरपराथी चालती आवेली मिलकत
वंशवन न० वासनु वन
वंशवर्धन वि० वशनी उन्नति करनारुं (२) पु० पुत्र (३) न० वशनी उन्नति करवानु काम
वंशवितति स्त्री० वासनी झाडी (२) वश-विस्तार [होवु ते
वंशसंपत् स्त्री० ऊचा कुळनु—खानदान
वंशस्थिति स्त्री० वश चालु रहेवो ते
वंशागत वि० वशपरपराथी—वारसामा मळेलु
वंशावली स्त्री० पेढीनामु
वंशी स्त्री० वासळी
वंश्य वि० सारा कुळनु (२) पु० वारसदार, सतति (ब० व०) (३) पूर्वज (४) कुटुबनो कोई पण माणस (५) पाटडो
वा २ प० फूकावु (२) जवु (३) ४ प० सुकाई जवु (४) बुझाई जवु (५) १० उ० खुश थवु (६) पूजवु [विकल्पे
वा अ० अथवा (२) वळी (३) पेठे (४)
वा—वा अ० का तो आम के का तो तेम
वाक पु० वाणी (२) सहिता (वेद) (३) न० बगलाओनो समूह
वाकोवाक्य न० तर्कशास्त्र
वाक्चपल वि० गमेतेम—अविचार्यु बोलनारु [छुपावीने बोलवु ते
वाक्छल न० वाणीनु छळ, साची वात
वाक्पटु वि० बोलवामा चतुर गवु

वाक्पारीण वि० वाणीथी पर एवु, वर्णन न करी शकाय तेवु
वाक्पारुष्य न० कठोर वाणी (२) आक्षेप, आळ; बदनक्षी
वाक्प्रचोदनात् अ० मौखिक आज्ञा अनुसार, हुकमने कारणे
वाक्प्रतोद पु० वाणीरूपी परोणो; परोणानी पेठे भोकाय तेवु बोलवु ते
वाक्प्रलाप पु० खूब बोलवु ते
वाक्य न० पूर्ण अर्थ बतावतो शब्द-समूह (२) वचन, कथन (३) आज्ञा (४) नियम [कहेवु ते
वाक्यभेद पु० पहेला कहेलाथी जुदु
वाक्यशेष पु० बोलता शेष रहेलु होय ते, अधूरु वाक्य
वाक्यसारथि पु० आगळ पडीने बोलनारो, मुख्य बोलनारो
वाक्योपचार पु० बोलवु ते
वाक्शलाका स्त्री०, वाक्शल्य न० वीधे तेवी वाणी
वाक्शस्त्र न० शाप
वाक्संतक्षण न० कटाक्षवाळी वाणी
वागर्थ पु० (द्वि० व०) शब्द अने तेनो अर्थ [वाणी
वागसि पु० तरवारनी पेठे कापे तेवी
वागात्मन् वि० शब्द के वाणीरूप एवु
वागीश पु० वक्तृत्व-शक्तिवाळो (२) बृहस्पति (३) ब्रह्मा
वागुरा स्त्री० जाळ, फादो
वागुरिक पु० पारधी; व्याध
वागृषभ पु० पडित; विद्वान, वक्ता
वाग्जाल न० खाली भारे शब्दो बोलवा ते (कार्य के अमल कर्या विना)
वाग्दत्ता स्त्री० वाग्दान थयी विवाह कर्या होय तेवी कन्या
वाग्दंड पु० ठपको (२) वाणीनो निग्रह
वाग्दान न० सगाई; विवाह करवानु वचन आपवु ते
वाग्दुष्ट पु० गाळ भाडनारो (२) यथाकाळे जनोई न दीधेलो ब्राह्मण
वाग्दोष पु० वाणीनो दोष (न बोलवानु होय त्या बोलवु ते)
वाग्बंधन न० बोलतु बंध करवु ते
वाग्मिन् वि० वक्तृत्वशक्तिवाळु (२) वाचाळ (३) पु० तेवो माणस
वाग्वज्र पु० वज्र जेवी कठोर भाषा
वाग्विद् वि० वक्तृत्वशक्तिवाळु
वाग्विभव पु० भाषा उपरनो काबू; वर्णन करवानी शक्ति
वाग्व्यवहार पु० मोढानी चर्चा
वाग्व्यापार पु० बोलवानी रीत (२) बोलवानो अभ्यास के टेव
वाङ्मनस न० वाणी अने मन
वाङ्मय वि० वाणी के शब्दनु बनेलु (२) वाणी – शब्द संबंधी (३) वाणीयुक्त (४) वक्तृत्व-छटावाळु (५) न० वाणी; भाषा (६) वक्तृत्वछटा
वाङ्मात्र न० मात्र वाणी के शब्द
वाच् स्त्री० वाणी, भाषा (२) शब्द, ध्वनि (३) वचन; खातरी (४) सरस्वती देवी
वाचक वि० बोलतु; कहेतु; खुलासो करतु (२) अर्थ दर्शावतु (३) पु० बोलनारो (४) वाचनारो (५) संदेशो लई जनारो [बोलवु ते
वाचन न० वाचवु ते (२) कहेवु ते;
वाचस्पति पु० बृहस्पति (२) वेद
वाचस्पत्य न० भाषण; वक्तृत्वछटा-वाळु कथन [मौन रहेनारु
वाचंयम वि० जीभ पकडी राखनारु;
वाचा स्त्री० वाणी, बोली (२) शास्त्र-वाक्य (३) शपथ
वाचाट वि० वातोडियु, वधारे पडती अथवा नकामी वातो कर्या करनारु (२) बडाश मारनारु
वाचाल वि० अवाज करतु, घोघाट

करतु (२) वातोडियु (३) बडाश मारनारु [क्रिया

वाचालता स्त्री० वाचाळ बनाववानी

वाचासहाय पु० वातो करीने आनद पामी शकाय तेवो साथी-सोबती

वाचिक वि० वाचाने लगतु (२) शाब्दिक; मोढानु (३) पु० वक्तृत्व-छटावाळु भाषण (४) न० मोए कहेवरावेलो सदेश

वाचोयुक्ति वि० बोलवामा कुशळ एवु (२) स्त्री० बोलछा; भाषण (३) चतुराईभरी वातचीत

वाच्य वि० जेने कहेवानु के सबोधवानु छे तेवु, कहेवा योग्य(२)शब्द वडे सीधु कहेवायेलु (लक्ष्य के व्यग्य नहि तेवु) (३) निंदा करवा योग्य,ठपको आपवा योग्य (४) न० निंदा, ठपको (५)शब्दनो अभिधाशक्तिथी नीकळतो अर्थ

वाच्यता स्त्री०, **वाच्यत्व** न० निंदा; ठपको (२) अपकीर्ति

वाज पु० पाख (२) पीछु (३) बाणनु पीछु (४) न० घी (५) अन्न

वाजसनि पु० सूर्य (२) अन्नदाता

वाजसनेयिन् पु० याज्ञवल्क्य

वाजिन् वि० वेगीलु, झडपी (२) मजबूत (३) पाखवाळु (४) पु० घोडो (५) सूर्य (६) पखी

वाजिभू, वाजिभूमि स्त्री० ज्या घोडा बहु होय तेवी जगा

वाजिमेध पु० अश्वमेध यज्ञ

वाजीकरण न० कामभोगनी शक्ति वधारनार औषध के प्रयोग

वाट पु०, न० वाडो, वाड के भीतथी घेरेली जगा (२) वाडी (३) जिल्लो

वाटक पु० जुओ 'वाटिका'

वाटधान पु० जमीनदार

वाटिका स्त्री० वाडी, उपवन (२) घरथाळनी जमीन

वाडव पु० ब्राह्मण (२) वडवाग्नि

वाण पु० अवाज (२) बाण (३) सो तारवाळी वीणा

वाणिज, वाणिजिक पु० वेपारी

वाणिज्य न०, **वाणिज्या** स्त्री० वेपार

वाणिनी स्त्री० चतुर-तरकटी स्त्री (२) नटी, नाचनारी (३) स्वच्छदी अने मदमत्त स्त्री

वाणी स्त्री० बोली, भाषा (२) बोलवानी शक्ति (३) अवाज (४) ग्रथ (५) स्तुति (६) सरस्वती देवी

वात वि० फूकायेलु, फूकेलु (२) पु० वायु, पवन (३) शरीरनी त्रण धातुमानी एक-वायु (३) सधिवा (४) बेवफा के धृष्ट यार

वातकिन् वि० सधिवावाळु

वातपट पु० सढ

वातात्मज पु० हनुमान (२) भीम

वातायन पु० घोडो (२) न० बारी, हवा माटेनु बाकु (३) झरूखो

वातायमान वि० पवननी पेठे दोडतु

वातालि(-ली) स्त्री० वटोळियो

वाताश्व पु० पवनवेगी घोडो

वाताहति स्त्री० पवननो तीव्र झपाटो

वातिक वि० पवनना तोफानवाळु (२) सधिवावाळु (३) गाडु (४) पु० वातव्याधिथी थयेलो ताव (५) खुशामतियो (६) एक देवयोनि

वातुल, वातूल वि० वातव्याधिवाळु (२) गाडु (३) बडाईखोर (४) पु० पवननो वटोळ

वात्या स्त्री० पवननु तोफान

वात्सल्य न० सतान प्रत्येनु वहाल

वात्सल्यबंधिन् वि० सतान प्रत्ये ममता के वहाल देखाडतु

वात्स्यायन पु० न्यायभाष्यना कर्तानु नाम (२) कामसूत्रना कर्तानु नाम

वाद पु० बोलवु ते, वातचीत करवी

ते(२)वाणी, वातचीत(३)विधान; कथन (४) अहेवाल (५) चर्चा, विवाद (६) जवाब (७) विवरण, खुलासो (८) सिद्धांत
वादक पु० वक्ता(२)वाजित्र वगाडनारो
वादग्रस्त वि० चर्चास्पद
वादचंचु वि० हाजरजवाबी
वादन न० वाजित्र वगाडवु ते(२) पु० वाजित्र वगाडनारो [स्तुतिपाठक
वादिक पु० जादुगर, मदारी(२)भाट,
वादित्र न० वाद्य, वाजित्र(२)वाजित्र उपर वगाडेलु संगीत
वादिन् वि० बोलनारु, वातचीत करनारु (२) वाद-विवाद करनारु (३) कहेवातु, –ने नामे ओळखातु (४) मनोरंजन थाय तेवी रीते बोलनारु – वात करनारु (५) पु० बोलनारो (६) वाद-विवाद करनारो (७) उपदेशक (८) समजावनारो
वाद्य न० वाजित्र (२) वाद्य-ध्वनि
वाध्रीणस पु० गेंडो
वान ('वा' तथा 'वै' नु भू० कृ०) वि० ऊडी गयेलु, उडावायेलु(२) (पवनथी) सुकायेलु
वान वि० वननु, वन संबंधी
वानप्रस्थ पु० त्रीजा आश्रममा आवेलो; वानप्रस्थाश्रमी (२) तपस्वी
वानर पु० वांदरो
वानरी स्त्री० वांदरी
वानरेंद्र पु० सुग्रीव के हनुमान
वानस्पत्य वि० लाकडानु(२)झाड नीचे करेलु (यज्ञ) [एक देश
वानायु पु० हिंदनी वायव्ये आवेलो
वानायुज पु० वानायु देशनो घोडो
वानीर पु० एक जातनु नेतर – वरु
वानीरक पु० मुंज घास
वानेय वि० वनमा थतु के रहेतु (२) प्राणी संबंधी
वान्य वि० वननु, वन संबंधी
वान्या स्त्री० वन-उपवननु झुंड
वाप पु० वाववु ते (२) वणवु ते (३) मुंडवु ते [जळाशय
वापि, वापिका स्त्री० वाव; कूवो;
वापिविस्तीर्ण न० वाव जेवा आकारनु वाकु (भींतमा चोरे पाडेलु)
वापी स्त्री० जुओ 'वापि'
वाम वि० डाबु (२) डाबी बाजुए आवेलु (३) ऊलटु, विरुद्ध; प्रतिकूळ (४) हीन, अधम (५) सुंदर, मनोहर (६) पु० डाबो हाथ (७) शिव (८) न० दुर्भाग्य (९) धन, मिलकत (१०) सुंदर वस्तु
वामक वि० डाबु(२)ऊलटु; प्रतिकूळ (३)पु० एक मिश्र जाति [तरफथी
वामतस् अ० डाबी बाजुए (२) डाबी
वामदृश् स्त्री० (सुंदर आंखोवाळी)स्त्री
वामन वि० ठींगणु (२) नानु; टूंकु (३) नम्र, नमेलु (४) हीन; अधम (५) पु० ठींगणो माणस (६) विष्णुनो पांचमो अवतार (बलिराजाने नमाववा माटे थयेलो)
वामनयना स्त्री० जुओ 'वामदृश्'
वामनिका स्त्री० ठींगणी – वामन स्त्री
वामनी वि० संपत्ति लावनारु
वामनीकृत वि० ठींगणु बनावेलु (२) दबावी दीधेलु
वामभ्रू स्त्री० सुंदर आंखोवाळी स्त्री
वाममार्ग पु० तंत्रोक्त–पंच 'मकार' नी साधनावाळो मार्ग
वामलूर पु० कीडीनो राफडो
वामलोचना स्त्री० सुंदर आंखोवाळी स्त्री
वामशील वि० वक्र स्वभावनु (२) पु० कामदेव
वामस्वभाव वि० उमदा चारित्रवाळु
वामा स्त्री० स्त्री(२)सुंदर स्त्री
वामाचार पु० जुओ 'वाममार्ग'

वामांगी स्त्री० सुदर स्त्री
वामी स्त्री० घोडी (२) हाथणी (३) शियाळवी (४) गधेडी
वामेतर वि० जमणु [स्त्री
वामोरु (–रू) स्त्री० सुदर जघावाळी
वाम्य न० उच्छृखलता; उद्दडता
वायक पु० ढगलो, समूह (२) वणकर
वायन, वायनक न० देव–ब्राह्मणने उत्सव के पारणाने प्रसगे अपाती मिष्टान्न वगेरेनी भेट
वायव वि० वायुनु, वायु सबधी
वायवी स्त्री० वायव्य दिशा
वायवीय, वायव्य वि० वायुनु, वायु सबधी, वायुने लगतु
वायव्या स्त्री० उत्तर-पश्चिम खूणो
वायस पु० कागडो (२) न० कागडाओनो समुदाय
वायु पु० पवन, वात (२) वायुदेवता (३) वातरोग (४) शरीरना पाच वायुमानो दरेक [गाडु
वायुग्रस्त वि० वातव्याधिवाळु (२)
वायुनिघ्न वि० गाडु
वायुपुत्र पु० हनुमान (२) भीम
वायुभक्ष पु० वायु भक्षण करीने जीवनारो–तपस्वी (२) सर्प, साप
वायुरुग्ण वि० पवन वडे तूटी पडेलु
वार् न० पाणी, जळ
वार पु० ढाकण (२) समुदाय, मोटी सख्या (३) ढगलो (४) टोळु (५) अठवाडियानो दिवस (६) वारो (७) वार, वखत (व० व०मा 'घणी वार' अर्थ थाय) (८) तक, प्रसग (९) दरवाजो (१०) नदीनो सामो किनारो
वारक वि० रोकनारु, अटकावनारु (२) पु० वारो (३) घोडो
वारण वि० निवारनारु, रोकनारु (२) न० रोकवु के निवारवु ते (३) विघ्न (४) सामनो (५) कमाड (६) पु० हाथी (७) हाथीनी सूढ (८) अकुश (हाथी माटेनो) (९) कवच
वारणपुष्प पु० एक जातनो छोड
वारणसाह्वय न० हस्तिनापुर
वारनारी स्त्री० वेश्या, गणिका
वारबाण पु०, न० कवच, बख्तर
वारमुख्या स्त्री० मुख्य वेश्या
वारयितृ पु० पति, धणी
वारयुवति स्त्री० गणिका, वेश्या
वारयोषित्, वारवधू, वारवनिता, वारविलासिनी स्त्री० वेश्या, गणिका
वारंवारम्, वारवारेण अ० फरी फरी; वारे वारे, पुन पुन
वाराणसी स्त्री० काशी, बनारस
वाराशि (वार्+राशि) पु० समुद्र
वाराह वि० वराहने लगतु, वराहनु (२) पु० डुक्कर, भूड
वाराहकल्प पु० अत्यारनो चालु कल्प (ब्रह्माना आयुष्यना बीजा अर्धनो पहेलो दिवस)
वारांगना स्त्री० वेश्या, गणिका
वारांनिधि पु० समुद्र
वारि न० पाणी (२) स्त्री० हाथीने बाधवानु दोरडु (३) हाथीने पकडवा तैयार करेलो खाडो
वारिगर्भ पु० वादळ
वारिचर वि० जलचर (२) पु० तेवु प्राणी
वारिज वि० पाणीमा उत्पन्न थयेलु (२) पु० शख (३) न० कमळ
वारित वि० रोकेलु; अटकावेलु, वारेलु (२) रक्षेलु, बचावेलु
वारिद पु० वादळ, मेघ (२) पूर्वजोने जलाजलि अर्पनारो
वारिधर पु० वादळ
वारिधि पु० समुद्र
वारिपथ पु०, न० दरियाई मुसाफरी
वारिमुच् पु० मेघ, वादळ
वारियंत्र न० पाणी काढवानो रेट

वारिराशि पु० समुद्र(२)सरोवर
वारिरुह न० कमळ
वारिवाह, वारिवाहन पु० मेघ
वारी स्त्री० जुओ 'वारि' स्त्री०
वारीट पु० हाथी
वारीश पु० समुद्र (२) विष्णु
वारुण वि० वरुणदेवनु, वरुण संबंधी (२) वरुणने अर्पित एवु (३) पाणीनु; पाणीमानु (४) पश्चिम दिशानु (५) न० पाणी (६) शतभिषज् नक्षत्र (७) पु०, न० पश्चिम दिशा
वारुणि पु० अगस्त्य मुनि (२) भृगु
वारुणी स्त्री० पश्चिम दिशा (२) मदिरा
वारुण्य वि० वारुणी—मदिरा संबंधी
वार्क्ष वि० झाडनु, झाडनु बनेलु (२) झाडनी छालनु बनेलु (३) न० जंगल
वार्ता स्त्री० जुओ 'वार्त्ता'
वार्त्त वि० नीरोगी (२) असार (३) न० आरोग्य, क्षेम (४) कुशळता
वार्त्ता स्त्री० रहेवु ते (२) समाचार, खबर (३) आजीविका, धंधो (४) खेती (वैश्यनो धंधो) [वाहक, कासद
वार्त्तानुकर्षक पु० जासूस (२) संदेश-
वार्त्तामात्र न० मात्र ऊडती वात (२) उपरचोटियु ज्ञान
वार्त्तावह पु० दूत, कासद [समाचार
वार्त्ताव्यतिकर पु० किंवदंती (२) खराब
वार्त्ताहर पु० दूत, कासद
वार्त्तिक वि० समाचारने लगतु (२) विवरणरूप एवु (३) पु० जासूस (४) वैश्य, वेपारी (५) न० कहेवायेल —नही कहेवायेल—अधूरा कहेवायेल अर्थनु विवरण करनार ग्रंथ
वार्त्रघ्न पु० अर्जुन [समुदाय
वार्द्धक न० वृद्धावस्था (२) घरडाओनो
वार्द्धक्य न० घडपण
वार्द्धुष, वार्द्धुषिक पु० व्याजखोर
वार्धि पु० महासागर [डानी दोरी
वार्ध्र न०, वार्ध्री स्त्री० वाधर; चाम-
वार्मुच् पु० मेघ, वादळ
वार्य वि० पसंद करवानु (२) मूल्यवान (३) पु० दीवाल, कोट (४) न० वर; वरदान (५) (ब०व०) मिलकत
वार्वाह पु० मेघ, वादळ
वार्षिक वि० वर्षा ऋतुनु (२) दर वरसे थतु (३) एक वरस टको रहेनारु
वार्षिकी स्त्री० आखु वरस जेना पाणी वहे छे तेवी नदी
वार्ष्णेय पु० वृष्णिनो वंशज (२) श्रीकृष्ण
वालखिल्य पु० अंगूठाना कदना ६०,००० देवताओ (ब्रह्माना शरीरमाथी उत्पन्न थयेला तथा सूर्यना रथनी आगळ जता मनाय छे)
वालधि पु० वाळवाळु पूछडु
वालि पु० वानरोनो राजा, सुग्रीवनो मोटो भाई
वालुका स्त्री० रेती (२) चूर्ण
वाल्मिकी, वाल्मीक, वाल्मीकि पु० रामायणना रचनार ऋषि
वाल्लभ्य न० वल्लभ—प्रिय होवापणु
वाव अ० आगाउना शब्द उपर भार मूकवा वपरातो प्रत्यय
वावदूक वि० वातोडियु, वाचाळ
वावात वि० प्रिय; मानीतु [होय)
वावाता स्त्री० मानीती राणी (शूद्र वर्णनी
वावृत् ४ आ० पसंद करवु
वाश् ४ आ० बूम पाडवी; चीस पाडवी (२) गुंजारव करवो, कूजवु (पक्षी ओए) (३) बोलाववु
वाशक वि० बूम पाडतु, गाजतु
वाशित न० पक्षीओनी चीस—बूम (२) बोलाववु ते [पत्नी
वाशिता स्त्री० हाथणी (२) स्त्री (३)
वाशी स्त्री० फरसी—भालो वगेरे जेवु हथियार (२) अवाज, वाणी
वाष्प पु०, न० जुओ 'बाष्प'
वास् १० उ० सुवासित करवु (२)

मसालवाळु करवु, आथवु (३) ४ आ० जुओ 'वाश्'
वास पु० सुगध, गध (२) निवास; रहेठाण (३) घर (४) वस्त्र
वासक वि० सुगधित करनारु (२) वसावनारु (३) पु० सुगध (४) न० कपडा, वस्त्र
वासकसज्जा स्त्री० मुलाकाते आवनार प्रियतमने मळवा सज्ज थई रहेली स्त्री (नायिका) [ओरडो
वासका स्त्री० निवासस्थान (२) सूवानो
वासगृह न० अदरनो ओरडो (२) सूवानो ओरडो, शयनगृह
वासतांबूल न० सुगधी पदार्थोवाळु पान
वासतेय वि० रहेवा योग्य
वासतेयी स्त्री० रात (२) घर
वासन न० सुवासित करवु ते (२) रहेवु ते (३) निवासस्थान (४) पेटी–करडियो–वासण इ० (५) कपडा; वस्त्र (६) ढाकण
वासना स्त्री० स्मृतिमाथी प्राप्त थतु ज्ञान (२) पूर्वे करेला सारा नरसा कर्मोनो रहेतो संस्कार (३) कल्पना (४) अज्ञान, खोटो ख्याल (५) इच्छा, अपेक्षा, वलण (६) गमवु ते, रुचि (७) सुगधित करवु ते
वासपर्यय पु० रहेठाण बदलवु ते
वासभवन न० निवासस्थान, घर
वासयष्टि स्त्री० पाळेला पखीने बेसवा माटेनी लाकडी के थभ
वासयोग पु० अबील [वारो
वासर पु०, न० दिवस, वार (२)
वासरमणि पु० सूर्य
वासरसंग पु० प्रभात [पु० इद्र
वासव वि० वसुओ सबधी (२) इद्रनु (३)
वासवदत्ता स्त्री० उज्जयिनीना राजानी पुत्री, वत्सराज उदयननी पत्नी
वासवदिश् स्त्री० पूर्वदिशा
वासवानुज पु० विष्णु, श्रीकृष्ण
वासवि पु० इद्रनो पुत्र जयत (२) अर्जुन (३) एक वानरनु नाम
वासवी स्त्री० व्यासनी माता
वासवेय पु० व्यास
वासवेश्मन् न० जुओ 'वासगृह'
वासस् न० वस्त्र, कपडा (२) पडदो
वासंत वि० वसतऋतुनु; वसत ऋतुमां थतु (२) युवान (३) काळजीवाळु; खंतीलु (४) पु० मलयानिल
वासंतिक वि० वसत ऋतुनु (२) पु० विदूषक (३) नट
वासंती स्त्री० एक फूलवेल (सुगधी फूलवाळी) (२) एक वसतोत्सव
वासंतीपूजा स्त्री० चैत्रमासमा थती दुर्गानी पूजा
वासागार न० जुओ 'वासगृह'
वासि पु०, स्त्री० फरसी-वासलो
वासित ('वास्' नु भू० कृ०) वि० सुगधित करेलु (२) आथेलु, मसालो चडावेलु (३) वस्त्रो पहेरेलु (४) वसवाट करायेलु (५) स्वच्छ करेलु (६) न० पक्षीओनो कलरव
वासिता स्त्री० जुओ 'वाशिता'
वासिष्ठ वि० वसिष्ठनु [नदी
वासिष्ठी स्त्री० उत्तरदिशा (२) गोमती
वासी स्त्री० जुओ 'वाशी'
वासुकि, वासुकेय पु० सर्पोनो राजा
वासुदेव पु० (वसुदेवनो वशज) श्रीकृष्ण (२) कपिल ऋषि
वासू स्त्री० कन्या, जुवान छोकरी (मुख्यत्वे नाटकमा वपराय छे)
वास्तव वि० वास्तविक, खरु
वास्तवा स्त्री० प्रभात
वास्तविक वि० साचु, खरु
वास्तव्य वि० रहेतु, वसतु, दतनी (२) रहेवा योग्य (३) पु० रहेवासी निवासी (४) न० निवासस्थान; घर

वास्तु पु०, न० घर बधाय के बाधवानु होय ते भूमि (२) घर; रहेठाण
वास्तुकर्म न० मकान बाधवानी क्रिया
वास्य वि० ढाकवा योग्य (२) वसाववा योग्य (३) पु०, न० फरसी
वाह् १ आ० प्रयत्न करवो
वाह वि० वहन करनारु (समासने अते) (२) पु० ऊचकनारो (३) भार वहन करनार प्राणी (४) घोडो (५) आखलो, साढ (६) पाडो (७) वाहन (९) प्राप्त करवु ते (१०) दश कुभ के चार भार जेटलु माप
वाहक वि० वहन करनारु, ऊचकनारु (२) पु० हमाल (३) घोडेसवार (४) वाहन हाकनारो
वाहन न० ऊचकवु ते, वहन करवु ते (२) हाकवु ते (जेम के घोडाने) (३) सवारी माटे के भार खेचवा वपरातु गाडी वगेरे साधन (४) ते माटे वपरातु प्राणी (५) हलेसु
वाहनप पु० घोडा वगेरे प्राणीओने सभाळनारो, खासदार
वाहना स्त्री० सेना
वाहयान वि० हाकनारु (घोडाने)
वाहवाह पु० घोडेसवारी
वाहिन् वि० वहन करनारु (२) पु० रथ
वाहिनी स्त्री० सेना (२) ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोडा अने ४०५ पायदळनो बनेलो सैन्य-विभाग (३) नदी (४) वळावा तरीके मोकलाती टुकडी
वाहिनीपति पु० सेनापति (२) समुद्र
वाहीक वि० अधर्मी वर्तनवाळु (२) पु० (ब० व०) पजाबनी एक तिरस्कृत जाति (३) बळद [बळद सबधी
वाहेयिक वि० वाहीक लोक सबधी (२)
वाह्य वि० वहन करायेलु, खेंचायेलु (२) पु० (बळद वगेरे) बोजो खेचनार प्राणी (३) न० गाडी, गाडु

वाह्लिक वाह्लीक पु० एक देश (आजनु बल्ख) (२) ते देशनो घोडो (३) न० हींग
वांछ् १ प० वासना राखवी; इच्छवु
वांछा स्त्री० वासना; इच्छा
वांछित ('वांछ्' नु भू० कृ०) वि० वांछेलु, इच्छेलु (२) न० वासना
वांत ('वम्' नु भू० कृ०) वि० वमन करेलु; ओकेलु (२) बहार काढेलु –नीकळेलु (३) नाखी दीधेलु; पडी गयेलु [वंधु
वातोक् ८ उ० भांगी नाखवु; तजी
वि अ० छूटापणु, जुदापणु, विभाग, विशेषता, व्यवस्था, गोठवणी, विरोध, दूर जई रहेवु, गति करवी, विचारणा, गाढपणु वगेरे अर्थ बतावता नाम तथा क्रियापदने लागतो पूर्वग (२) नाम तथा विशेषणने लागी अभाव – रहितता, तीव्रता, मोटापणु, विविधता, तफावत, ऊलटापणु – विरोध, फेरफार, अयटितता वगेरे अर्थ बतावे
वि पु०, स्त्री० पक्षी (२) घोडो
विक वि० जळरहित (२) मूळ विनानु
विकच वि० खीलेलु, ऊघडेलु (कमळ इ०) (२) वीखरायेलु (३) वाळ विनानु (४) प्रगट (५) उज्ज्वळ
विकचित वि० खुलेलु, खीलेलु
विकट वि० कदरूपु (२) भयंकर; उग्र, जगली (३) मोटु, विशाळ (४) गर्विष्ठ (५) सुदर (६) मोटा दातवाळु (५) पु० गणेश
विकटायित न० चमकारो, झबकारो
विकत्थ् १ आ० बडाई मारवी (२) कटाक्षमा स्तुति करवी
विकत्थन वि० बडाईखोर (२) कटाक्षमां स्तुति करतु (३) न० बडाई (४) खोटी स्तुति

विकत्था स्त्री० वडाई मारवी ते (२) कटाक्षमा स्तुति करवा ते (३) मोटेथी जाहेर करवु ते [निशानी
विकरण पु० संस्कृत धातुना गणनी
विकराल वि० भयानक, डरामणु
विकर्तन पु० सूर्य (२)आकडानो छोड
विकर्तृ वि० विघ्न करनारु [कर्म
विकर्मन् वि० दुराचारी (२) न० निषिद्ध
विकर्मस्थ वि० दुराचारी
विकर्षण पु० कामदेवना पाच बाणोमानु एक (२) न० खेंचवु ते, खेंची काढवु ते (३) न खावु ते, उपवास
विकल् १० उ० विकळ – पागळु करवु
विकल वि० पागळु, अपग; खोडीलु (२) गभरायेलु, व्याकुळ (३) –रहित, –विनानु (समासमा) (४) खिन्न, हताश (५) निरुपयोगी
विकलकरण वि० नखाई गयेला अवयववाळु; मुस्त
विकलकरुण वि० दयामणु
विकलयति प० (व्याकुळ – हताश करवु)
विकला स्त्री० कलानो ६० मो भाग
विकलाग वि० अपग, खोडीलु, वधाराना नकामा अवयववाळु
विकल्प पु० शका, सदेह (२) अनिश्चय, आनाकानी (३) करामत, युक्ति (४) चाली शके तेवी अनेक बाबतोमाथी एक पसद करवानी छूट होवी ते (५) विविधता, अनेक प्रकार (६) कल्पनो विभाग (७) उत्पत्ति
विकल्पक वि० वहेंचनारु, हिस्सो पाडनारु (२) बदली नाखनारु
विकल्पिन् वि० सदेहवाळु
विकल्मष वि० निष्पाप, निष्कलक
विकस् १ प० खीलवु, विकसवु
विकसित ('विकस्'नु भू० कृ०) वि० विकसेलु, खीलेलु
विकस्वर वि० खीलतु, विकसतु (२) मोटु – स्पष्ट सभळाय तेवु (अवाज)
विकंकट पु० एक वृक्ष (जेना लाकडानी कडछी – स्रुचा बनावाती)
विकंप् १ आ० कपवु, ध्रूजवु
विकंपित वि० ध्रूजतु, कपावेलु (२) अस्थिर (३) ऊछळतु
विकार पु० स्वभाव के स्वरूपमा फेरफार, कुदरती स्थितिमा पलटो थवो ते, (२) फेरफार, विक्रिया (३) बीमारी, रोग (४) वलण अथवा प्रयोजन बदलाई जवा ते (५) लागणी (६) क्षोभ (७) चहेरामा फेरफार थवो ते (८) मूळ प्रकृतिमाथी विकसेलु – परिणमेलु ते [योजन
विकारण वि० कारण विनानु, निष्प्र-
विकारहेतु पु० प्रलोभन [थयेलु
विकारित वि० बदलायेलु, विकारवाळु
विकारिन् वि० फेरफार के विकार थाय तेवु (२) बदलातु (३) भ्रष्ट थतु (४) प्रेमनी असरवाळु बनेलु [शके एवु
विकार्य वि० जेमा विकार–फेरफार थई
विकाल, विकालक पु० सध्या; साज (२) अयोग्य समय [(३) प्रकाशवु
विकाश् १ आ० देखावु (२) खीलवु
विकाश पु० प्रदर्शन, देखाडवु ते (२) खीलवु – विकसवु ते (३) सीधो के खुल्लो मार्ग (४) वाको के तीरछो मार्ग (५) हर्ष, आनद (६) आकाश (७) तीव्र इच्छा
विकाशिन्, विकाषिन् वि० नजरे देखातु; प्रकाशी ऊठतु (२) खीलतु (३) प्रकाशतु
विकास पु० खीलवु ते (२) वृद्धि
विकासिन् वि० जुओ 'विकाशिन्'
विकांक्षा स्त्री० विसवाद (२) आनाकानी, अनिश्चय (३) कांक्षारहितपणु
विकिर पु० वीखरायेलो के वेरेलो भाग (२) फाडी खानार के वेरनार ते, पखी [वीखरायेलु (वाळ)
विकीर्ण वि० विखेरेलु, वेरेलु (२)
विकीर्णमूर्धज वि० वीखरायेला वाळवाळु

विकुक्षि, विकुक्षिक वि० मोटी फाद के पेटवाळु
विकुंठा स्त्री० विष्णुनी मातानु नाम
विकुंठित वि० बुठ्ठु (२) नबळु
विकूबर वि० धोरिया विनानु
विकृ ८ उ० विकार थवो; बदलावु; विक्रिया थवी (२) कदरूपु करवु (३) उपजाववु (४) हानि करवी (५) उच्चारवु, अवाज करवो (६) विविध प्रकारे शणगारवु (७) निंदवु
विकृत वि० बदलायेलु, रूपातर पामेलु (२) रोगी, बीमार (३) खडित, कदरूपु (४) अपूर्ण (५) न० फेरफार, विकार (६) बीमारी (७) अणगमो; तिरस्कार (८) अपकृत्य, ईजा, हानि (९) गर्भस्राव
विकृति स्त्री० (मन, आकृति वगेरेमा) फेरफार, विकार (२) अस्वाभाविक के आकस्मिक घटना (३) बीमारी, रोग (४) क्षोभ, गुस्सो (५) लागणी, आवेश
विकृष् १ प० खेचवु (२) वाळवु (धनुष्य) (३) खेची लेवु, –रहित करवु (४) नाबूद करवु
विकृष्ट वि० आम तेम खेचेलु (२) खेचायेलु – आकर्पायेलु (३) विस्तृत, लाबु [वाळु
विकृष्टसीमान्त वि० विस्तृत सीमाओ-
विकॄ ६ प० [विकिरति] विखेरवु, वेरवु (२) फाडवु, टुकडा करवा (३) विकृत – भ्रष्ट करवु (४) उकेलवु (गाठ) [विकल्प होवो
विक्लृप् १ आ० शका करवी (२) –प्रेरक० शका करवी (२) विचारवु; चिंतववु (३) धारवु, मानवु (४) जुदी रीते गोठववु (५) रचवु
विकेश वि० छूटा वाळवाळु (२) वाळ विनानु (जेमके माथु)
विकोश (–ष) फोतरा विनानु (२) म्यान विनानु, म्यान बहार काढेलु
विक्रम् १ आ० डगलु भरवु (२) हरावबु, जीतवु (३) पराक्रम करवु के बतावबु (४) आगळ धपवु
विक्रम पु० डगलु, पगलु (२) गति; चालवु ते (३) हराववु ते (४) पराक्रम (५) उज्जयिनीनो प्रख्यात राजा (६) वळ; ताकात
विक्रमण न० डगलु, पगलु (२) पराक्रम
विक्रमार्क पु० विक्रम राजा
विक्रमिन् वि० पराक्रमी, शूर
विक्रय पु० वेचाण, विनिमय
विक्रायक वि० वेचतु, वेचनारु
विक्रांत वि० ओळगायेलु, ओळगेलु (२) पराक्रमी, वळवान (३) विजयी (४) पु० वीर (५) न० डगलु, पगलु (६) बळ, पराक्रम (७) वैक्रांत मणि
विक्रिया स्त्री० विकार, फेरफार (२) क्षोभ, लागणीनो आवेश (३) गुस्सो (४) ऊलटु थवु ते, अनिष्ट (५) (भवा) सकोचवा–चडाववा ते (६) भ्रष्टता [विनिमय करवो
विक्री ९ आ० [विक्रीणीते] वेचवु;
विक्रीत वि० वेचायेलु, वेचेलु
विक्रुश् १ प० मोटेथी बोलाववु, हाक मारवी (२) बोलवु, उच्चारवु (३) गाळ देवी, निंदवु
विक्रोश पु०, **विक्रोशन** न० बोलाववु ते; बूम पाडवी ते (२) गाळ भाडवी ते
विक्लव वि० बीनेलु; चमकेलु, गभरायेलु (२) बीकण (३) –थी दवायेलु, –थी अभिभूत थयेलु (४) क्षुब्ध, विह्वळ (५) दुखित, पीडित (६) अणगमावाळु (७) ठोकर खातु (८) न० क्षोभ, व्याकुळता (९) डर
विक्लवता स्त्री० डर
विक्लिष्ट वि० अत्यत पीडित; दुखित (२) हानि पामेलु

विक्लेद पु० पूरेपूरु भीजाई जवु ते (२) भेज (३) क्षय पामवु ते
विक्षत वि० घवायेलु, हणायेलु (२) खणायेलु, छाप पडी होय तेवु (खरी वगेरेथी) (३) ग्रस्त, पीडित (४) न० घा, प्रहार
विक्षाव पु० ध्वनि, अवाज (२) खासी, छीक वगेरेथी थतो अवाज
विक्षित वि० बरबाद थयेलु, दुःखी
विक्षिप् ६ प० विखेरवु, वेरवु (२) फेंकवु (३) भीसवु (४) वाळवु, नमाववु (धनुष्य)
विक्षिप्त वि० विखेरायेलु, आमतेम फेंकायेलु (२) तरछोडेलु (३) मोकलेलु (४) क्षुब्ध, व्यग्र, व्याकुळ (५) विस्तृत, पहोळु करेलु
विक्षुभ् १ आ०, ४, ९ प० क्षुब्ध-व्याकुळ थवु (२) मूझववु, गूचववु
विक्षेप पु० विखेरवु—आमतेम फेंकवु ते (२) आमतेम हलावव्—फेरववु ते (३) मोकलवु ते (४) व्यग्रता, मूझवण (५) भय, डर (६) नकामु जवा देवु ते (समय)
विक्षोभ पु० ऊछळवु ते, खळभळवु ते (२) मननो क्षोभ (३) झघडो (४) फाडवु—चीरवु ते
विखनस् पु० ब्रह्मा
विखंडित वि० तोडेलु, फोडेलु (२) चीरेलु (३) खडित करेलु, अमुक अग कापी नाखेलु
विखानस पु० एक जातनो तपस्वी
विख्या २ प० प्रसिद्ध थवु (२) जोवु, निहाळवु (३) बोलाववु, नाम देवु (४) प्रकाशित करवु
विख्यात वि० प्रख्यात, प्रसिद्ध
विख्याति स्त्री० प्रसिद्धि, ख्याति
विगण् १० प० गणतरी करवी (२) गणनामा लेवु, मानवु; विचारवु (३) उपेक्षा करवी
विगत वि० विदाय थयेलु, चाल्यु गयेलु, लुप्त थयेलु (२) मृत (३) —विनानु, —रहित (समासमा)
विगतकल्मष वि० पापरहित, निर्दोष
विगतभी वि० निर्भय
विगतलक्षण वि० कमनसीब, भाग्यहीन
विगतस्पृह वि० निःस्पृह
विगतासु वि० मृत; प्राणरहित
विगद वि० नीरोगी, आरोग्यवान
विगम् १ प० [विगच्छति] चाल्या जवु, व्यतीत थवु (समय) (२) विदाय थवु (३) लुप्त—अदृश्य थवु —प्रेरक०—व्यतीत करवु, पसार करवु
विगम पु० अत, समाप्ति (२) विदाय-अदृश्य थवु ते (३) तजी देवु ते (४) विनाश (५) मृत्यु (६) वियोग
विगर्ह् १ उ० ठपको आपवो, निंदवु (२) तिरस्कारवु
विगर्हण न०, **विगर्हणा**, **विगर्हा** स्त्री० निंदा, ठपको, तिरस्कार
विगर्हित वि० निंदेलु, तुच्छकारेलु (२) ठपको आपेलु (३) निंद्य, दुष्ट (४) न० निंदा
विगल् १ प० गळवु, टपकवु, झरवु (२) छूटी पडवु, नीकळी जवु (३) ओगळी जवु (४) अदृश्य थवु
विगलित वि० झमेलु, टपकेलु (२) लुप्त थवु, अदृश्य थवु (३) छूटो पडेलु, नीकळी पडेलु (४) ओगळी गयेलु (५) वीखराई गयेलु (वाळ)
विगाढ वि० नाहेलु, डूबकी मारेलु, डूबेलु (२) गाढ, अत्यन्त
विगान न० ठपको, निंदा, आळ (२) विरुद्ध—विरोधी वचन
विगाह् १ आ० स्नान करवु (२) डूबकी मारवी (३) पेसवु, प्रवेश करवो (४) [illegible] (५) आचरवु (६) [illegible]

नीकळवु (३) क्षुब्ध थवु, खळभळवु (४) भ्रष्ट थवु, चलित थवु
विचलित वि० खसेलु, चलित थयेलु (२) (आखे) झाखप वळी होय तेवु, अध
विचार पु० मनथी चिंतववु ते (२) तपास, चर्चा (३) काम चालवु ते (अदालतमा) (४) विवेक-विचार (५) निश्चय, निर्णय (६) परिणामनो ख्याल, अगमचेती
विचारक पु० तपास करनारु, परीक्षा करनारु (२) नेता, भोमियो (३) जासूस
विचारण न० विचारणा, तपास, परीक्षा (२) सशय, आनाकानी
विचारणा स्त्री० तपास, परीक्षा, चर्चा (२) आनाकानी, सशय
विचारमूढ वि० मूर्ख (२) विचारवामा भूलेलु
विचारित वि० विचारेलु, चितवेलु, [तपासेलु, चर्चेलु
विचारिन् वि० भटकतु (२) स्वच्छदी (३) विचार करतु, तपास करतु
विचि ५ उ० एकठु करवु, सग्रह करवो (२) शोधवु, खोळवु (३) तपासवु (४) वीणवु, पसद करवु
विचि पु०, स्त्री० मोजु, तरग
विचिकित्सा स्त्री० सशय, अनिश्चितता (२) भूल (३) साचु स्वरूप शोधवु ते
विचित्र वि० चित्रविचित्र, विविध रगनु (२) विविध (३) चीतरेलु (४) सुदर, मनोहर (५) आश्चर्यकारक, चकित करे तेवु (६) न० आश्चर्य
विचित्ररूप वि० विविध, विविध रूपवाळु
विचित्रवीर्य पु० शातनु राजानो पुत्र
विचिन्वत्क पु० शोध, तपास (२) वीर माणस
विचिंत् १० उ० विचारवु (२) याद करवु, चितववु (३) मानवु, गणवु
विचिंतन न०, **विचिंता** स्त्री० विचार (२) काळजी, दरकार
विची स्त्री० मोजु, तरग
विचीर्ण वि० वसवाट कर्यो होय तेवु —मा विचर्या होय तेवु (२) प्रवेशायेलु
विचेतन वि० भान वगरनु, मृत (२) जड (३) मूझायेलु (४) मूर्ख
विचेतस् वि० मूर्ख, अज्ञ (२) मूझायेलु, गूचवायेलु, खिन्न (३) दुष्ट
विचेय न० तपास
विचेष्ट् १ आ० हिलचाल करवी; हालवु (२) वर्तवु (३) प्रयत्न करवो
विचेष्ट वि० हिलचाल विनानु
विचेष्टन न० अवयवो हलाववा ते (२) लात मारवी, आळोटवु (घोडानु)
विचेष्टा स्त्री० प्रयत्न (२) हालचाल (३) वर्तणूक
विचेष्टित वि० प्रयत्न करेलु (२) तपासेलु (३) मूर्खाईभरेली रीते करेलु (४) न० कृत्य, कार्य (५) प्रयत्न (६) करतूत
विच्छ् ६ प० जवु, खसवु (२) १० उ० प्रकाशवु (३) बोलवु
विच्छर्दक पु० जुओ 'विच्छद'
विच्छर्दन न०, **विच्छर्दिका** स्त्री० वमन, ऊलटी (२) तेनो रोग
विच्छर्दित वि० वमन करेलु (२) अवगणेलु (३) तजेलु, छोडी दीधेलु (४) घटाडेलु, ओछु करेलु
विच्छद, विच्छदक, पु० महेल, घणा माळवाळु मकान
विच्छाय वि० छाया विनानु (२) झाखु (३) पु० रत्न (४) न० पखीओना टोळानो पडछायो
विच्छाया स्त्री० जुओ 'विच्छाय' न०
विच्छित्ति स्त्री० कापी नाखवु ते, तोडी नाखवु ते (२) जुदु पाडवु ते (३) अभाव; न होवु ते (४) अटकवु ते (५) शरीरने रग-लेप इत्यादियी रगवु ते (६) सीमा (घर इ०नी) (७) स्त्री दडे सौंदर्यमदथी कराती पोशाक, शणगार इ० प्रत्ये बेदरकारीरूपी विलासचेष्टा

विच्छिद् ७ उ० कापवु, तोडवु; छूटु पाडवु (२) उच्छेद करवो

विच्छिन्न वि० कापी नाखेलु (२) छूटु पाडेलु; तोडेलु (३) रोकेलु; अटकावेलु (४) समाप्त करेलु (५) ढंकायेलु

विच्छुर् ६ प० लेप करवो, खरडवु, रजथी ढांकवु (२) जडवु–बेसाडवु

विच्छुरण न० (रज-चूर्ण) छांटवुं ते

विच्छुरित वि० (रज-चूर्णथी) छांटेलु, खरडेलु (२) बेसाडेलु, जडेलु

विच्छेद पु० कापवु–छूटु पाडवु ते (२) भागवु ते (३) अटकवु ते, बंध पडवु ते (४) ग्रंथनु प्रकरण

विच्युति स्त्री० च्युत थवु ते, छूटु पडवु ते (२) अधोगति थवी ते (३) गळी जवु ते (गर्भ इ० नु)

विज् ३ उ० भाग पाडवा (२) छूटु पाडवु, विवेक करवो (३) ७ आ०, ७ प० ध्रूजवु (४) क्षुब्ध थवु, भयथी कांपवु (५) पीडावु, त्रासवु

विजन् ४ आ० जन्मवु, उत्पन्न थवु (२) उत्पन्न करवु (३) ऊगवु, फूटवु

विजन वि० निर्जन, एकांत (२) न० निर्जन–एकांत स्थळ

विजय पु० जय, फतेह, हराववु ते (२) देवोनो रथ (३) अर्जुन (४) एक मुहूर्त (५) एक व्यूह

विजयदंड पु० लश्करनो अमुक विभाग

विजयंत पु० इंद्र

विजया स्त्री० दुर्गा (२) तेमनी एक अनुचरी (३) विश्वामित्रे रामने शीखवेली एक विद्या (४) हरडे

विजयाभ्युपाय पु० विजयनो उपाय

विजयाह्वय वि० 'विजय' नामवाळु (जेमके बिजापुर)

विजयिन् पु० विजेता

विजयोन्मत्त वि० विजयथी उन्मत्त बनेलु

विजल्प पु० बकवाद (२) वातचीत

विजल्पित वि० बोलेलु, वातचीतमां कहेलु (२) बकवाद करेलु

विजात वि० जन्मेलु (२) व्यभिचारथी जन्मेलु (३) सद्गुणी

विजानत् वि० जाणकार, डाह्यु

विजानता स्त्री० कुशळता; चालाकी

विजि १ आ० जीतवु; हराववु (२)–थी चडियाता थवु, पाछळ पाडी देवु (३) जीतीने मेळववु (४) विजयी थवु

विजिगीषा स्त्री० जीतवानी इच्छा (२) हरीफाई, चडियाता थवानी इच्छा

विजिगीषु वि० जीतवानी इच्छावाळु (२) महत्त्वाकांक्षी (३) पु० योद्धा (४) हरीफ, विरोधी

विजिज्ञासा स्त्री० स्पष्ट जाणवानी इच्छा

विजित वि० जीतेलु, हरावेलु

विजितात्मन् वि० आत्मनिग्रही, संयमी

विजिति स्त्री० विजय

विजिहीर्षा स्त्री० विहरवानी इच्छा

विजिह्म वि० वांकु वळेलु (२) अप्रामाणिक (३) तीरछु (नजर, कटाक्ष) (४) शून्य (५) फीकु, झांखु

विजृंभ् १ आ० बगासु खावु (२) खीलवु; विकसवु (फूल) (३) व्यापवु, भरी काढवु (४) देखावु, प्रगट थवु (५) वृद्धिगत थवु–विकसवु

विजृंभण न० बगासु (२) खीलवु के खूलवु ते (३) प्रगट करवु ते, व्यक्त करवु ते (४) शृंगारक्रीडा

विजृंभिका स्त्री० बगासु खावु ते, (श्वास माटे) मों पहोळु करवु ते

विजृंभित वि० बगासु खातु होय तेवु, मों पहोळु कर्यु होय तेवु (२) खीलेलु, खूलेलु (३) प्रगट करेलु (४) न० रमत; क्रीडा (५) इच्छा (६) प्रदर्शन, देखाड (७) आचरण, वर्तन (८) फळ, परिणाम (९) बगासु

विज्ञ वि० जाणकार, डाह्यु; समजणु

(२)चतुर, होशियार(३)पु० डाह्यो के विद्वान माणस
विज्ञप्त वि० वीनवेलु (२) जणावेलु
विज्ञप्ति स्त्री० विनति (२) जाहेरात (३) उपदेश
विज्ञा ९ उ० जाणवु(२)समजवु(३) –नी पासेथी शीखी लेवु–जाणी लेवु (४)मानवु, गणवु(५)परिचित होवु (६)परखवु (७) समजाववु –प्रेरक० [विज्ञापयति]अरज करवी; विनती करवी (२) जणाववु, कहेवु (३) शीखववु [प्रख्यात
विज्ञात वि० जाणेलु, समजेलु (२)
विज्ञान न० ज्ञान, डहापण, समज(२) परख (३) कुशळता, प्रवीणता(४) लौकिक अनुभवथी मळेली समज (आध्यात्मिक के परमतत्त्वनी समज ते 'ज्ञान') (५) ज्ञानेंद्रिय (६) माहिती (७) अतींद्रिय विषयक ज्ञान
विज्ञानयोग पु० यथार्थ ज्ञान मेळववानु साधन–प्रमाण [उपदेशक
विज्ञापक वि० माहिती आपनारु (२)
विज्ञापन न०, **विज्ञापना** स्त्री० अरज, विनती (२) जाण करवी ते, आदरपूर्वक माहिती आपवी ते (३) उपदेश
विज्ञापित वि० आदरपूर्वक निवेदन करेलु-जणावेलु (२) विनति करेलु (३)माहितगार करेलु (४) उपदेशेलु
विज्ञाप्य न० विनति
विज्ञेय वि० जाणी शकाय तेवु(२)शीखवु पडे तेवु (३) गणनामा लेवा योग्य
विज्वर वि० ज्वर–चिंता–पीडाथी रहित एवु
विट पु० जार; कामुक(२) (नाटकमा) विदूषक जेवो नायक के गणिकानो साथी (संगीत–कविता इ०मा निष्णात मनाय छे) (३) धूर्त, ठग
विटप पु० डाळी, शाखा (२) झाडवु (३) कुपळ (४) झुंड (५) लता
विटपिन् पु० झाड, वृक्ष (२) वड
विटंक वि० मनोहर, पु० रमणीय (२) पु० घर वगेरेनी टोच उपर कबूतरो माटे रखातो भाग (३) ऊंचामा ऊंचु स्थान, टोच
विटंकित वि० अंकित (२) अलंकृत
विट्पति पु० (विश्+पति) जमाई (२) राजा (३) वैश्योनो मुखियो
विडंब् १० उ० अनुकरण करवु, नकल करवी (२) उपहास करवो, मजाक करवी(३)छेतरवु, ठगवु(४)पीडवु, सतापवु (६) रूपांतर करवु
विडंब पु० अनुकरण, नकल (२) पीडवु के सतापवु ते
विडंबक वि० नकल करतु, अनुकरण करतु (२) उपहास के फजेती करतु
विडंबन न०, **विडंबना** स्त्री० अनुकरण, नकल(२)ढोंग, वेष (३) छळ (४) पीडा, सताप, त्रास(५)उपहास, फजेती
विडीन न० पखीओनी ऊडवानी एक रीत
विडोजस् **विडौजस्** पु० इंद्र
वितड् १० प० ताडन करवु, मारवु
वितत वि० फेलायेलु, विस्तरेलु (२) लांबु, पहोळु(३)अनुष्ठित, आचरेलु (४)आच्छादित(५)खेंचेलु (पणछ) (६)वाळेलु, पणछ चडावेलु(७) न० तारवाळु वाद्य (८) वेलनो फणगो अथवा वीटळातो ततु
वितति स्त्री० विस्तार, फेलावो(२) जथो, समूह (३) पंक्ति
विततोत्सव वि० जेणे उत्सवनु आयोजन कर्यु होय तेवु [निरर्थक
वितथ वि० जूठु, खोटु (२) मिथ्या,
वितथयति प० (मिथ्या करवु)
वितन् ८ उ० फेलाववु, विस्तारवु(२) व्यापवु, भरी काढवु (३) रचवु, बनाववु(४)खेंचवु, पणछ चडाववी(५) उत्पन्न करवु, अर्पवु(६)रचवु–लखवु (ग्रंथ) (७)प्रगट–व्यक्त करवु(८)

सिद्ध करवु, पार पाडवु (९) सज्ज-तैयार करवु [पु० कामदेव
वितनु वि० पातळु, नाजुक; सुंदर(२)
वितप् १ आ० तपवु,प्रकाशवु(२)तापवु
वितमस्, **वितमस्क** वि० अंधकार विनानु, प्रकाशित (२)शुद्ध, निष्कलंक
वितरण न० पार करी जवु ते (२) बक्षिस, भेट (३) तजी देवु ते
वितर्क् १० उ० तर्क के कल्पना करवी (२)मानवु,धारवु(३)अपेक्षा राखवी (४)शाधी काढवु, निश्चित करवु
वितर्क पु० दलील; तर्क, अनुमान(२) धारणा, मान्यता (३) कल्पना (४) संशय (५)चर्चा-विचारणा(६)खोटी कल्पना के धारणा(७)हेतु, प्रयोजन
वितर्दि, **वितर्दिका**, **वितर्दी**, **वितर्द्धि** (-र्द्धी)स्त्री० चोक के आंगणामां ऊभो करेलो चोतरो, बेसवानी ऊंची चोखडी जगा(२)ओसरी, वरंडो
वितल न० सात पाताळ पैकी बीजु
वितंडा स्त्री० पोतानो पक्ष ज न होय अने सामा पक्षनु खंडन कर्या करवु ते (२) खोटो बकवाद, नकामी माथाझीक
वितंत्री स्त्री० बेसूरी वीणा(तार ऊतरी जवाथी)
वितान वि० खाली; शून्य (२) मूर्ख (३) खिन्न, उदास (४) दुष्ट, स्वच्छंदी (५) पु०, न० विस्तार (६) चंदरवो (७) ओशीकु (८) जथो; समूह (९) यज्ञ; आहुति (१०) न० विश्रांति, फुरसद
वितानक पु०,न० विस्तार(२)ढगलो जथो(३)चंदरवो [देवु
वितानायते आ०(चंदरवा तरीके काम
वितायमान वि० फेलातु
वितीर्ण वि० ओळंगी गयेलु(२)आपेलु, बक्षेलु(३)नीचे ऊतरेलु
वितुन्न वि० भोंकायेलु; चिरायेलु

वितृण वि० तृणारहित
वितृष्णा स्त्री० तीव्र इच्छा
वितॄ १ प० ओळंगवु, पार करवु(२) आपवु, बक्षवु(३)उत्पन्न करवु
वित्त वि० ('विद्' नु भू० कृ०)शोधेलु; जडेलु (२) मळेलु; मेळवेलु (३) तपासेलु (४) जाणीतु, प्रसिद्ध(५) न० धन, मिल्कत(६)शक्ति(७)सोनु
वित्तक वि० प्रख्यात (२) कीर्तिवान
वित्तप, **वित्तपति**, **वित्तपाल** पु० कुबेर
वित्तपेटा(-टी) स्त्री० पैसानी कोथळी
वित्तमात्रा स्त्री० मिल्कत; रकम
वित्तसमागम पु० धनप्राप्ति, आवक
वित्तेश पु० कुबेर
वित्तेहा स्त्री० धननी इच्छा
वित्रस् १,४ प० बीवु; त्रासवु
वित्रास पु० भय, त्रास, डर
विद् २ प० जाणवु, समजवु, खोळी काढवु, नक्की करवु (२) अनुभववु (३) गणवु, मानवु
—प्रेरक० जणाववु, कहेवु (२) शीखववु, समजाववु (३) अनुभववु
विद् ४ आ० विद्यमान होवु (२) थवु
विद् ६ उ०|विंदति-ते|मेळववु,प्राप्त करवु (२) खोळी काढवु, ओळखवु (३) अनुभववु (४) परणवु
विद् ७आ० |विन्ते| जाणवु, समजवु (२)गणवु, मानवु (३) मळवु(४) विचारवु, चिंतववु (५) तपासवु
विद् १० आ० कहेवु; जणाववु (२) अनुभववु (३) रहेवु
विद् वि० (समासने अंते) जाणकार, परिचित (२) पु० डाह्यो माणस, विद्वान (३) स्त्री० ज्ञान (४) बुद्धि
विद पु० पंडित; डाह्यो माणस
विदग्ध वि० बळी गयेलु(२)रांधेलु(३) पची गयेलु (४) नाश पामेलु (५) होशियार; चतुर (६) चालाक;

युक्तिबाज (७) सुदर (८) पु० डाह्यो के विद्वान माणस (९) जार, कामी
विदग्धता स्त्री०, विदग्धत्व न० चालाकी; कुशळता [एवु
विदग्धवचन वि० बोलवामा कुशळ
विदर पु० फाडवु–चीरवु के फाटवु ते (२) फाट; चीरो [नळनी राणी
विदर्भजा, विदर्भतनया स्त्री० दमयंती;
विदर्भाः पु० व० व० आजना वराड प्रातनु प्राचीन नाम (२) ते देशना वतनी लोक
विदल् १ प० भागवु, चीरवु, फाडवु (२) खोदवु (३) ऊघडवु, पहोळु थवु
विदलन न० फाडवु–कापवु–चीरवु ते
विदंश पु० तरस लगाडे तेवु तीखु खावानु ते (चटणी-अथाणु)
विदारण न० फाडवु–चीरवु–तोडवु ते (२) पीडवु, त्रास आपवो ते (३) वध, कतल
विदारु पु० सरडो, काचडो
विदासिन् वि० नाश पामतु
विदाहिन् पु० वळतरा ऊभी करे तेवो खाद्य पदार्थ
विदिक्चंग पु० एक जातनु पीळु पखी
विदित ('विद्'नु भू० कृ०) वि० जाणेलु समजेलु, भणेलु (२) जणावेलु (३) प्रसिद्ध, जाणीतु (४) कबूलेलु (५) पु० पडित, विद्वान (६) न० ज्ञान, माहिती (७) प्रसिद्धि (८) मेळववु ते, प्राप्ति
विदितात्मन् वि० प्रसिद्ध, जाणीतु (२) आत्मज्ञानी (३) पु० परमेश्वर
विदिथ पु० ज्ञानी (२) ऋषि
विदिशा स्त्री० दशार्ण देशनी राजधानी (२) माळवानी एक नदी
विदीपक पु० दीवो, फानस
विदीर्ण वि० फाडेलु, चीरेलु
विदुर पु० धृतराष्ट्र तथा पाडुनो नानो भाई (दासी-पुत्र)
विदुल पु० एक जातनु नेतर
विदुष पु० ज्ञानी, पडित
विदुषी स्त्री० पडित स्त्री
विदूर वि० आघेनु, दूरनु (२) पु० एक पर्वतनु के शहेरनु नाम, ज्याथी वैदूर्य मणि मळे छे
विदूरभूधर, विदूराद्रि पु० एक काल्पनिक पर्वत (लकानो) ज्या मेघगर्जनाथी रत्न पेदा थता मनाय छे
विदूषक वि० भ्रष्ट करनार, कलक लगाडनारु (२) गाळ के आळ देनारु (३) मश्करु (४) पु० मश्करो (खास करीने नाटकमा नायकनो रमूजी अने विश्वासु मित्र) (५) टीका करनारो, प्रतिपक्ष करनारो
विदूषण न० भ्रष्टता (२) कलक (३) ठपको, गाळ [टुकडा करवा
विदृ ९ प०, ६, १ उ० फाडवु, चीरवु,
—कर्मणि० चिराई जवु, फाटी जवु (दुःख इ० थी)
—प्रेरक० फाडी नाखवु, चीरी नाखवु
विदेश पु० परदेश
विदेह वि० देह के देहसबध विनानु (२) मृत (३) पु० विदेह प्रात (४) जनक राजा [प्राचीन देश
विदेहाः पु० व० व० मिथिला नामनो
विद्ध ('व्यध्'नु भू० कृ०) वि० वीधायेलु, घवायेलु (२) फटकारायेलु (३) फेकायेलु, मोकलायेलु (४) एक बीजाने वळगेलु–चोटेलु (५) सदृश
विद्यमान वि० हयात, वर्तमान, हाजर (२) खरु, वास्तविक
विद्या स्त्री० ज्ञान, शास्त्र (२) साचु ज्ञान; तत्त्वज्ञान (३) मत्र, तत्रविद्या
विद्यागम पु० विद्या प्राप्त करवी ते
विद्यागुरु पु० ज्ञान आपनार गुरु
विद्याधन न० विद्यारूपी धन (२) विद्या वडे मेळवेलु धन
विद्याधर पु० एक देवयोनिनो देव

विद्याधार पु० मोटो पंडित
विद्यावल न० जादुई शक्ति
विद्याभ्यास न० विद्या भणवी ते
विद्यार्जन न० विद्या प्राप्त करवी ते
विद्यार्थिन् पु० भणनारो, शिष्य
विद्यावंश पु० कोई पण विद्या के शास्त्र शीखवनारा गुरुओनो वंशानुक्रम
विद्याविहीन वि० अभण, अज्ञानी
विद्यावृद्ध वि० ज्ञाननी बाबतमा मोटु, ज्ञानमा घणु आगळ वधेलु
विद्याहीन वि० जुओ 'विद्याविहीन'
विद्युत् १ आ० प्रकाशवु, दीपवु (२) प्रकाशित करवु; चमकाववु(आ अर्थमा सामान्यपणे प्रेरक०)
विद्युत् स्त्री० वीजळी (२) कडाका साथे पडती वीजळी
विद्युता स्त्री० वीजळी
विद्युत्त न० वीजळीनो चमकारो
विद्युत्वत् वि० वीजळीओवाळु (२) पु० वादळु, मेघ
विद्युत्संपातम् अ० क्षणवारमा
विद्युदुन्मेष पु० वीजळीनो चमकारो
विद्युल्लता, विद्युल्लेखा स्त्री० वीजळीनो लांबो के वांकोचूंको लिसोटो
विद्योत वि० चमकतु, झळकतु
विद्रधि पु० गूमडु, फोल्लो
विद्रव पु० नासी जवु–भागी जवु ते (२) भय, डर (३) वही जवु ते (४) ओगळी जवु ते (५) निंदा, गाळ
विद्रावित वि० नसाडी मूकेलु (२) विखेरी नाखेलु (३) पिगळावेलु
विद्रु १ प० नासी जवु, दोडी जवु (२) पीगळवु (३) भागी जवु, तूटी जवु –प्रेरक० भगाडी मूकवु, विखेरी नाखवु
विद्रुत वि० नासी गयेलु, पलायित (२) गभरायेलु, बीनेलु (३) ओगळीने प्रवाही बनेलु (४) न० नासी जवु ते
विद्रुति स्त्री० नासी जवु ते; पलायन
विद्रुम पु० परवाळु (२) कणगो
विद्वज्जन पु० विद्वान माणस, पंडित
विद्वत्त्व न० विद्वत्ता, पंडिताई
विद्वस् वि० जाणतु; जाणनारु (२) डाह्यु, ज्ञानी (३) पु० विद्वान; पंडित
विद्विष् (–ष) पु० शत्रु, दुश्मन
विद्विष्ट वि० धिक्कारेलु, अणगमतु
विद्वेष पु० द्वेष, वेर (२) अनादर (गर्वथी करेलो)
विद्वेषण पु० दुश्मन, वेरी (२) न० द्वेष करावको ते, एक तंत्रविद्या
विध् ६ प० वींधवु, छेदवु (२) पूजवु; सत्कारवु (३) १ आ० याचवु
विध पु० प्रकार, जात (२) रीत, पद्धति (३) गडी–पड (समासने अंते, उदा० त्रिविध)
विधनता स्त्री० गरीबाई
विधर्मन् वि० खोटी रीते वर्ततु, बेदफा
विधवा स्त्री० जेनो पति मरी गयो होय तेवी स्त्री
विधा ३ उ० करवु; बनाववु, उत्पन्न करवु; आचरवु, सिद्ध करवु (२) विधान करवु, (शास्त्रे) आज्ञा करवी (३) बनाववु, घडवु (४) नीमवु (५) पहेरवु (६) –तरफ प्रेरवु (मनने); –उपर स्थिर करवु (७) गोठववु (८) तैयार करवु (९) आपवु (१०) मूकवु (११) ग्रसवु
विधा स्त्री० प्रकार, रीत, पद्धति
विधातृ पु० विधाता, पेदा करनारो, सर्जनारो (२) ब्रह्मा (३) वक्षनारो (४) नसीब (५) विश्वकर्मा (६) माया, भ्रम
विधान न० गोठववु ते (२) आचरवु–करवु ते (३) सृष्टिरचना (४) योजवु ते, प्रयोग करवो ते (५) आज्ञा, हुकम (६) नियम; शास्त्राज्ञा (७) पद्धति, रीत (८) उपाय (९) हाथीओने मत्त

करवा अपातु भोजन (१०) कृति, कार्य (११) यत्न (१२) चिकित्सा (१३) प्रतीकार (१४) दान, बक्षिस (१५) दैव

विधायिन् वि० गोठवनारु, करनारु, सर्जनारु (२) हुकम करतु (३)—ना हाथमां सोंपतु [(वाहनने)

विधारण न० रोकवु के अटकाववु ते

विधि पु० करवु ते, कृत्य; क्रिया (२) पद्धति, रीत (३) विधान, हुकम, नियम (४) कोई पण धार्मिक क्रिया (५) वर्तणूक, वर्तन (६) सर्जन, रचना (७) विधाता, ब्रह्मा (८) नसीब, दैव (९) उपाय

विधित्सा स्त्री० करवानी इच्छा-इरादो

विधिदृष्ट वि० जेनो नियम के विधान होय तेवु (शास्त्रमां)

विधिपूर्वकम् अ० विधि—रीत प्रमाणे

विधियोगतः विधियोगात् अ० दैववशात्, नसीबजोगे [घन

विधिलोप पु० विधि के विधाननु उल्ल-

विधिवशात् अ० नसीबजोगे

विधिविपर्यय पु० कमनसीब, दुर्दैव

विधु पु० चंद्र

विधुति स्त्री० कंपवु ते, हलाववु ते (२) दूर करवु ते, नाश

विधुर वि० धुरा विनानु (रथ) (२) पीडित, दुःखित (३) वियोगथी पीडित (४)—विनानु, —रहित (५) विरोधी, शत्रुवटवाळु (६) अशक्तिमान, करी के आचरी न शके तेवु (७) नमी पडेलु, झूकी गयेलु (८) पु० जेनी पत्नी मरी गई होय तेवो पुरुष (९) न० भय, चिंता डर (१०) वियोग (पतिथी के पत्नीथी) (११) दुःख, आफत

विधुरदर्शन न० आपत्ति आवी पडवी ते

विधुरित वि० फीकु, निस्तेज

विधुवन न० कंप, ध्रुजारी

विधुंतुद पु० राहु (चंद्रने पीडनारो)

विधू ५, १० उ०, ६ प० हलाववु; कंपाववु (२) दूर करवु, खखेरी नाखवु (३) अनादर के तिरस्कार करवो (४) तजवु, छोडवु

विधूत वि० हलावेलु, कंपावेलु (२) अस्थिर (३) दूर करेलु, खखेरी नाखेलु (४) तजेलु (५) न० अनादर, तिरस्कार

विधूतकल्मष वि० पापमांथी मुक्त थयेलु

विधूतकेश वि० पोताना वाळ आमतेम हलाव्या होय तेवु

विधूतनिद्र वि० जागेलु

विधूति स्त्री०, **विधूनन** न० क्षोभ, कंप, ध्रुजारो (२) अनादर (प्रेमनो)

विधूम वि० धुमाडा विनानु

विधृ १० उ० पकडवु (२) धारण करवु, पहेरवु (३) टेको आपवो (४) अटकाववु, रोकवु

विधृत वि० पकडेलु (२) छूटु पाडेलु (३) धारण करेलु, धरेलु (४) अटकावेलु (५) टेको आपेलु

विधेय वि० करवा के आचरवा योग्य (२) हुकम, आज्ञा के नियम करवा योग्य (३)—नु परवश होय तेवु, —नी असर, काबू के वळ हेठळ होय तेवु (४) आज्ञाधारक, वश (५) कर्मचारी, कशु काम सोंपवामां आव्यु होय तेवु (६) न० कर्तव्य, करवानु कार्य (७) पु० दास; नोकर

विधेयज्ञ पु० पोतानु कर्तव्य जाणनारु

विध्वंस् १ आ० भागी पडवु (२) विखेराई जवु (३) नाश पामवु

विध्वंस पु० विनाश, बरबादी (२) शत्रुता, अणगमो (३) अपमान

विध्वंसिन् वि० नाश पामतु (२) नाश करतु (३) भ्रष्ट करनारु (स्त्रीने)

विध्वस्त वि० नष्ट करेलु (२) विखेरी नाखेलु (३) ग्रस्त, झांखु पडेलु

विनत वि० वाकु वळेलु, नमेलु (२) नीचु ढळतु (३) ऊडु ऊतरेलु, नीचु गयेलु (४) वाकु (५) विनयी, नम्र
विनता स्त्री० अरुण अने गरुडनी माता
विनतात्मज पु० गरुड के अरुण
विनति स्त्री० नमवु – वळवु ते (२) नम्रता (३) विनती
विनद् १ प० अवाज करवो, रणकवु (२) गर्जना करवी (३) चीसोथी भरी काढवु
–प्रेरक० टहुकार करे तेम करवु
विनद पु० अवाज, शब्द
विनम् १ प० वळवु, नमवु
–प्रेरक० वाळवु (धनुष्य)
विनम्र वि० वाकु वळेलु (२) नीचु नमेलु (३) ऊडु गयेलु (४) नम्र
विनय पु० तालीम, उपदेश, शिक्षण (२) सभ्यता, शिष्टाचार (३) नम्रता (४) दूर करवु –काढी नाखवु ते (५) दड, शिक्षा (६) धधो, कामकाज
विनयकर्मन् न० शिक्षण, तालीम
विनयन न० दूर करवु ते, काढी नाखवु ते (२) शिक्षण, तालीम
विनर्द् १ उ० गर्जना करवी, गाजवु
विनर्दिन् वि० अवाज करतु, गर्जतु
विनश् ४ प० नाश पामवु, मरी जवु (२) लुप्त थवु, अदृश्य थवु (३) निष्फळ थवु, बरबाद थवु
विनशन पु० सरस्वती नदी ज्या लुप्त थाय छे ते स्थान (२) न० नाश, लुप्त थवु ते
विनष्ट वि० नाश पामेलु (२) खोवायेलु, लुप्त थयेलु (३) भ्रष्ट थयेलु
विनष्टि स्त्री० नाश, पायमाली
विनस वि० नाक वगरनु
विना अ० सिवाय; वगर
विनाकृत वि० विनानु, –रहित थयेलु; तजायेलु (२) एकलु
विनाभव, विनाभाव पु० वियोग
विनायक पु० दूर करनारो (विघ्नोने) (२) गणेश (३) नायक, मार्गदर्शक (४) गुरु (५) गरुड
विनाश पु० नाश, बरबादी (२) दूर करवु ते (३) मृत्यु (४) कार्यब्रह्म, क्षणभगुर दुनिया
विनाशधर्मन्, विनाशधर्मिन् वि० क्षणभगुर, नाश पामे तेवु
विनाशोन्मुख वि० नाश पामवानी तैयारीमा होय तेवु [वेरायेलु
विनिकीर्ण वि० आम तेम वीखरायेलु के
विनिकृत वि० अनादृत, अपमानित (२) ईजा के हानि पामेलु
विनिकृ ६ आ० फेंकी देवु, दूर करवु; तजवु (२) विखेरवु, वेरवु
विनिक्षिप् ६ आ० सोंपवु, आपी देवु (२) उपर के अदर मूकवु (३) फेंकी देवु, उथलावी काढवु
विनिगड वि० साकळ के बधन विनानु
विनिग्रह् ९ प० [विनिगृह्णाति] निग्रह करवो, अटकायत करवी, अमल करवी (२) पकडवु [ते; दबाववु ते
विनिग्रह पु० काबूमा के नियत्रणमा लेवु
विनिद्र वि० निद्रारहित, जागतु (२) खीलेलु, ऊघडेलु, विकसेलु
विनिपत् १ प० नीचे पडवु; तरफ धसवु – ऊतरवु (२) हुमलो करवो
–प्रेरक० बरबाद करवु (२) नीचे पाडवु (३) मारी नाखवु
विनिपन्न वि० नष्ट
विनिपात पु० पतन; पडवु ते (२) आपत्ति, बरबादी (३) क्षय, मृत्यु (४) नरक, अधोगति (५) बनवु के थवु ते (६) दुःख, कष्ट
विनिपातगत वि० मुश्केलीमा आवी पडेलु, दुर्भागी [विध्वसक
विनिबर्हण वि० काचरी नाखनारु;

विनिमय पु० लेवड-देवड, अदलो-बदलो
विनिमेष पु० (आखनो) पलकारो (२) इशारो
विनियत वि० काबूमा लीधेलु के राखेलु (२) मर्यादित; प्रमाणसर एवु
विनियम् १ प० [विनियच्छति] काबूमा लेवु (२) मर्यादित करवु
विनियुज् ७ आ० वापरवु, उपयोगमा लेवु (२) नीमवु (३) वहेंचवु; भाग पाडवा (४) छूटु-जुदु करवु (५) छोडवु (बाण)
–प्रेरक० नीमवु, योजवु (२) हुकम करवो (३) अर्पवु (४) उपयोग के अमल करवो
विनियोक्तृ वि० नीमनारु, योजनारु
विनियोग पु० जुदु पाडवु ते (२) तजवु ते (३) उपयोग करवो ते, उपयोगमा लेवु ते (४) निमणूक (५) विघ्न
विनिर्गम् १ प० [विनिर्गच्छति] बहार जवु (२) अदृश्य थवु, देखाता बंध थवु (३) चाल्या जवु, विदाय थवु (४) –माथी छूटवु [थवु ते
विनिर्गम पु० अदृश्य थवु ते (२) विदाय
विनिर्जय पु० विजय, फतेह
विनिर्जि १ प० जीतवु, ताबे करवु
विनिर्णय पु० पूरेपूरो निर्णय–निश्चय (२) खातरी (३) निश्चित नियम
विनिर्मित वि० –नु बनावेलु (२) रचेलु; सर्जेलु (३) निर्माण थयेलु
विनिर्वृत् १ आ० बंध पडवु; अटकवु, समाप्त थवु (२) सिद्ध थवु; पूरु थवु (३) न बनवु के थवु
–प्रेरक० सिद्ध करवु, पूरु करवु
विनिर्वृत्त वि० बहार नीकळेलु, प्रगट थयेलु (२) कृतकृत्य, पूर्ण, सिद्ध
विनिविद् २ प० जणाववु, कहेवु (२) पोतानी जातने जाहेर करवी (३) दर्शाववु; देखाडवु (४) अर्पवु
विनिविश् ६ प० –मा बेसवु, –मा मुकावु
–प्रेरक० मूकवु, स्थापवु (२) वसाहत करवी (३) दाखल करवु
विनिवृ १० उ० (के प्रेरक०) निवारवु; रोकवु (२) मना करवी
विनिवृत् १ आ० पाछा फरवु (२) थोभवु, समाप्त थवु (३) –थी विमुख थवु, –थी अटकवु
–प्रेरक० अटकाववु, बंध करवु (२) रोकवु (३) त्यागवु
विनिवृत्त वि० पाछु फरेलु (२) अटकेलु, थोभेलु, विरमेलु
विनिवृत्ति स्त्री० अटकाववु, थोभाववु के दूर करवु ते (२) समाप्ति
विनिवेश पु० प्रवेशवु के वसाहत करवी ते (२) छाप पडवी ते
विनिश्चि ५ उ० निश्चय करवो
विनिश्चितम् अ० चोकस, नक्की
विनिष्पत् १ प० धसी जवु, ऊडी नीकळवु (२) नासी जवु
विनिहत वि० हणायेलु, घवायेलु, मरायेलु (२) तद्दन ताबे थयेलु (३) पु० दैवी आपत्ति (४) दुश्चिह्न
विनिहतात्मन् पु० जेना आत्मा नाश पाम्यो होय तेवु [निमायेलु
विनिहित वि० मुकायेलु, मूकेलु (२)
विनिहितदृष्टि वि० उपर दृष्टि स्थिर करी होय तेवु, उत्कंठापूर्वक जोतु
विनिहितमनस् वि० –मा लागेलु
विनिह्नुत वि० ना पाडेलु, इन्कारेलु (२) छुपावेलु, संताडेलु
विनी १ उ० दूर करवु, नाश करवु (२) शीखववु, तालीम आपवी (३) ताबे करवु, वश करवु (४) शांत पाडवु, (गुस्सो, आ०) (५) व्यतीत करवु (समय) (६) खर्चवु, वापरवु (आ०) (७) आपी देवु (खडणी तरीके, आ०) (८) दोरी जवु, लई जवु (९) प्रेरवु, हुकम करवो

विनीत वि० लई जवायेलु, दूर करायेलु (२) सुशिक्षित, तालीम पामेलु (३) सभ्य, शिष्टाचारवाळु (४) नम्र; विनयी (५) काढी मूकेलु; मोकली दीधेलु (६) केळवेलु (७) शिक्षा करी होय तेवु (८) संयमी (९) सुंदर (१०) फेलावेलु, पाथरेलु

विनीतवेष पु० सादो पोशाक

विनीति स्त्री० शिष्टाचार (२) आदर

विनुद् ६ प० भोकवु (२) (वीणा वगेरे) वगाडवु (३) दूर करवु
 –प्रेरक० हाकी काढवु; दूर करवु (२) व्यतीत करवु (समय) (३) आनंद पमाडवो (४) आनंद मानवो

विनेतृ पु० नायक, नेता (२) गुरु, शिक्षक (३) राजा (४) शासक, शिक्षा के सजा करनारो

विनेय पु० शिष्य

विनोद पु० दूर करवु ते (२) आनंद, रमत, क्रीडा [करवु ते

विनोदन न० क्रीडा, खेल (२) दूर

विनोदरसिक वि० सुख–आनंदमां प्रीतिवाळु [दूर करेलु

विनोदित वि० आनंद पमाडेलु (२)

विन्न ('विद्'नु भ०कृ०) वि० जाणेलु (२) मळेलु, मेळवेलु (३) चर्चेलु, तपासेलु (४) मूकेलु, स्थापेलु (५) परणेलु

विन्यस् ४ प० मूकवु (२) –तरफ प्रेरवु, –मां लगाडवु (३) थापण तरीके सोंपवु (४) गोठववु

विन्यस्त वि० मूकेलु, नीचे मूकेलु (२) जडेलु, बेसाडेलु (३) गोठवेलु (४) थापण तरीके मूकेलु (५) न० गोठवणी, स्थापना

विन्यास पु० थापण तरीके सोंपवु ते; थापण (२) गोठवणी, रचना (३) (अवयवोनी) स्थापना (४) प्रदर्शन

विप् १० उ० फेंकवु (२) १ आ० धूजवु; कंपवु [विकसेलु, परिपूर्ण थयेलु

विपक्व वि० पूरेपूरु पक्व थयेलु (२)

विपक्ष वि० सामा पक्षनु; विरोधी; वेरी (२) पु० दुश्मन, सामावाळियो (३) हरीफ स्त्री के शोक (४) चर्चामां सामो पक्ष लेनारो (५) निष्पक्षता; निरपेक्षता

विपक्षभाव पु० शत्रुवट, वेरभाव

विपक्षरमणी स्त्री० हरीफ स्त्री (प्रेममां)

विपच् १ प० परिपक्व थवु; परिणत थवु, फळ नीपजवु (२) पचाववु (३) वाफवु; पकाववु

विपट् १० उ० फाडी काढवु, चीरो नाखवु (२) खेंची काढवु, निर्मूळ करवु (३) लुल्लु करवु (४) हाकी काढवु

विपण् १ प० वेचवु (२) होड बकवी

विपण पु०, **विपणन** न० वेचाण; वेचवु ते (२) नानो वेपार (३) नानु बजार के हाट (४) सोदो [माल (३) वेपार

विपणि स्त्री० बजार (२) वेचवानो

विपणिन् पु० वेपारी, दुकानदार

विपणी स्त्री० जुओ 'विपणि' [समय

विपत्काल पु० आपत्तिनो समय, दुर्भाग्यनो

विपत्ति स्त्री० आफत, मुश्केली (२) मोत, विनाश (३) यातना (४) अंत (५) पु० वीर पायदळ सैनिक

विपत्तिकाल पु० जुओ 'विपत्काल'

विपथ पु० आडो मार्ग, अवळो मार्ग

विपद् ४ आ० निष्फळ जवु, शून्य परिणाम आववु (२) आपत्ति–दुर्भाग्यमां आवी पडवु (३) अपंग के अशक्त थवु (४) मरी जवु, नाश पामवु

विपद्, विपदा स्त्री० विपत्ति, आफत, मुश्केली (२) मोत

विपन्न ('विपद्'नु भू० कृ०) मृत (२) नष्ट (३) आपद्ग्रस्त (४) अशक्त. मूर्छित [होय तेवु

विपन्नदीधिति वि० जेनु तेज चाली गयु

विपन्नदेह वि० मृत
विपरिक्रान्त वि० पराक्रमी; बहादुर
विपरिगा ३ प० ऊथली पडवू; ऊंधु पडवु (जेमके गाडु)
विपरिणम् –प्रेरक० –मा रूपातर करवु –कर्मणि० –मा परिणमवु, –मा रूपातर थवु (२) खोटु परिणाम के रूपातर थवु
विपरिवर्तनविद्या स्त्री० कोई माणस पाछो फरे ते माटेनी विद्या-मत्र
विपरिवृत् १ आ० गोळ फरवु, भमवु (२) गबडवु (३) आम तेम भटकवु (४) घेरी वळवु
विपरिश्रमता स्त्री० थाक न लागवो ते, थाक न लाग्यो होय तेवी स्थिति
विपरी (विपरि+इ) २ प० ऊलटी दिशामा फरवु (२) निष्फळ जवु (३) खराब परिणाम आववु (४) गोळ फरवु, पाछा फरवु
विपरीत वि० ऊलटु, अवळु, ऊंधु (२) विरुद्ध, सामेनु (३) नियमथी ऊलटु (४) खोटु; जूठु (५) प्रतिकूळ (६) अवळी रीते वर्तनारु [वर्तनारु
विपरीतकारक वि० अवळु –प्रतिकूळ
विपरीतता स्त्री०, **विपरीतत्व** न० अवळापणु, ऊलटापणु, विरोध
विपर्यय वि० ऊलटु, अवळु (२) पु० विरुद्धपणु, अलटापणु, अवळापणु (३) पलटो, बदलो (४) अभाव, रहितपणु (६) विनाश (७) विनिमय (८) भ्रम, भूल (९) दुर्भाग्य (१०) शत्रुता (११) प्रलय
विपर्यस् ४ प० उलटाववु, अवळु करवु, ऊंधु करवु (२) पलटाववु, बदलवु (३) खोटु समजवु (४) विपरीत थवु, बदलावु
विपर्यस्त वि० पलटायेलु, ऊंधु –अवळु करेलु (२) विरुद्ध, ऊलटु (३) खोटी रीते साचु मानेलु [विपर्यय
विपर्याय पु० अवळापणु, ऊलटापणु;
विपर्यास पु० पलटो, बदलो (२) अवळापणु, ऊलटापणु, प्रतिकूळ होवापणु (४) विनिमय (५) भ्रम, भूल (६) (समयनु) व्यतीत थवु ते
विपल न० पळनो ६० मो के छठ्ठो भाग, समयनो अति सूक्ष्म अश
विपश्चित् वि० विद्वान, डाह्यु, पडित (२) पु० ज्ञानी माणस
विपंचिका, विपची स्त्री० वीणा (२) रमत, क्रीडा
विपाक पु० राधवु ते (२) पचवु ते (३) परिपक्व थवु ते (४) फळ, परिणाम (५) पलटो, बदलो (६) अणधारी आफत (७) करमावु–चीमळावु ते
विपाट पु० एक प्रकारनु बाण
विपाटल वि० घणु ज रातु [नाखेलु
विपाटित वि० उखाडी काढेलु, फाडी
विपाठ पु० एक जातनु मोटु बाण
विपादन न० वध, नाश
विपाश्, विपाशा स्त्री० पजावनी पाच नदीओमानी एक (आजनी बियास)
विपाडु, विपांडुर वि० पीळाश पडतु
विपिन वि० गहन; गाढ (२) न० अरण्य; झाडी (३) समूह, जथो
विपिनौकस् पु० वादरु
विपुरुष वि० निर्जन, खाली
विपुल वि० मोटु, विशाळ (२) घणु, पुष्कळ (३) गाढ, ऊडु (४) रोमाञ्चयुक्त (५) पु० मेरु (६) हिमालय
विपुष्ट वि० पूरु पोपण न पामेलु
विपुंसक वि० नपुसक, नामर्द [घास
विपूय वि० पवित्र करनारु (२) न० मुज
विप्र पु० ब्राह्मण (२) ऋषि, डाह्यो माणस (३) अश्वत्थ वृक्ष
विप्रकर्ष पु० अतर, दूरपणु (२) तफावत (३) खेची जवु के हरण करी जवु ते
विप्रकार पु० अपमान, अनादर (२) अपकार, अपकृत्य (३) दुष्टता (४) विरोध, सामनो

विप्रकीर्ण वि० वीखरायेलु, पथरायेलु (२) छूटु; ऊडतु (वाळ)

विप्रकृ ८ उ० पजववु, त्रास आपवो, पीडवु(२)खोटु लगाडवु, खोटी रीते वर्तवु(३)असर करवी, बदलवु(४) कदरूपु बनाववु, बगाडवु (५) (शाहेद तरीके) लाववु, नीमवु

विप्रकृत वि० हणायेलु, पीडायेलु(२) अनादर करायेलु(३)छछेडेलु, पजवेलु

विप्रकृष् १ प० दूर करवु, दूर खेंची जवु

विप्रकृष्ट वि० खेंची जवायेलु, दूर करेलु (२) आघु; दूरनु (३) लबायेलु

विप्रणश् ४ प० नाश पामवु, लुप्त थवु

विप्रतिपत्ति स्त्री० मतभेद, विरोध(२) गूचवण, मूझवण(३)दुश्मनावट(४) भूल, खोटु समजवु ते(५)सशय(६) निपुणता, प्रवीणता

विप्रतिपद् ४ आ० मतभेद के विरोध होवो (२) आनाकानी करवी (३) खोटो जवाब आपवो

विप्रतिपन्न वि० परस्पर विरोधी एवु (२)मूझायेलु (३)अवरोधायेलु(४) विरोध के प्रतीकार करायेलु

विप्रतिषेध पु० निग्रह, काबू(२)सरखी अगत्यना बे कार्योनो परस्पर विरोध

विप्रतिसार, विप्रतीसार पु० पस्तावो (२) गुस्सो (३) दुष्टता

विप्रत्यय पु० अविश्वास [आहार

विप्रदह पु० फळ-मूळ वगेरेनो सूको

विप्रदुष्ट वि० भ्रष्ट, दुराचारी

विप्रधर्ष पु० पजवणी, छेडती

विप्रनष्ट वि० खोवायेलु (२) नकामु

विप्रपात पु० कराड, ज्याथी आगळ भयकर खाडो आवतो होय तेवी जगा

विप्रमुक्त वि० मुक्त के छूटु करेलु(२) ढीलु करेलु, छोडी नाखेलु(३)फेंकेलु, छोडेलु; ताकेलु(४) (समासमा) –थी रहित, –विनानु

विप्रमुच् ६ प० [विप्रमुञ्चति] छोडवु; मुक्त करवु (२) फेंकवु, ताकवु

विप्रयुक्त वि० छूटु पाडेलु(२)–विनानु (३)–माथी मुक्त करेलु

विप्रयुज् ७ आ० छूटु पाडवु, (कोईने) –विनानु करवु
–कर्मणि० –थी छूटु पडवु

विप्रयोग पु० छूटु पडवु ते(२)प्रेमीओनो वियोग – विरह(३)तकरार(४)अभाव

विप्रलप्त न० वादविवाद(२)बकवाद(३) विलाप [नासीपास थयेलु

विप्रलब्ध वि० छेतरेलु, ठगायेलु(२)

विप्रलब्धृ वि० छेतरनारु

विप्रलभ् १ आ० छेतरवु, ठगवु(२) अनादर करवो (३) उल्लघन करवु

विप्रलय पु० पूरेपूरो प्रलय

विप्रलभ पु० छेतरवु ते, ठगवु ते(२) निराशा(३)भ्रम(४)खोटु बोलीने के वचन न पाळीने छेतरवु ते(५)तकरार (६) छूटा पडवु ते, वियोग, विरह

विप्रलभन न० छेतरामणी, ठगाई

विप्रलुप्त वि० झूटवी लीधेलु(२)दखल करायेलु

विप्रलून वि० कापेलु, चूटेलु, वीणेलु

विप्रवस् १ प० (घरथी दूर)प्रवासे होवु (२) प्रवासेथी पाछा फरवु
–प्रेरक० दूर करवु, काढी मूकवु

विप्रवाद पु० मतभेद, जुदो अभिप्राय

विप्रवास पु० (घरथी दूर) परदेशमा रहेवु ते [जुओ 'विप्रवास'

विप्रवासन न० देशनिकाल करवु ते(२)

विप्रश्निक पु० दैवज्ञ, भविष्य भाखनारो

विप्रसन्न वि० खूब खुश थयेलु

विप्रस्व न० ब्राह्मणनी मिल्कत

विप्रहत वि० मारी पाडेलु; हरावेलु (२) रोळी नाखेलु

विप्रहाण न० लुप्त थवु ते, वध थवु ते

विप्रहीण वि० च्युत, भ्रष्ट (२) लुप्त

विप्रिय वि० अप्रिय, अणगमतु (२) न० अणगमतु कार्य, अपराध

विप्रुष् स्त्री० बिंदु, टपकु

विप्रोषित ('विप्रवस्' नु भू० कृ०) वि० प्रवासे गयेलु, गेरहाजर (२) देशनिकाल करायेलु

विप्लव पु० आमतेम ऊछळवु के तणावु ते (२) विरुद्धता (३) तोफान, धाधळ (४) हानि, नाश (५) प्रतिकूळता (६) अधाधूधी (७) शत्रु तरफथी भय (८) दर्पण उपरनो मेल (९) उल्लघन (१०) नौकानु तोफानमा डूबी जवु ते

विप्लु १ आ० आमतेम ऊछळवु –तणावु (२) मूझावु (३) बरबाद थवु
–प्रेरक० तरे के तणाय तेम करवु (२) अपात्रने शीखववु (३) बगाडी मूकवु; बरबाद करवु (४) मूझववु

विप्लुत वि० आमतेम तणातु (२) डूबी गयेलु, उपर पाणी फरी वळ्यु होय तेवु (३) मूझायेलु (४) बरबाद करेलु (५) लुप्त (६) भ्रष्ट, स्वच्छदी, दुराचारी (७) खोटु ठरे तेवु (८) क्षुब्ध, व्याकुळ (९) न० कूदवु–ऊछळवु ते, तोडीने नीकळी जवु ते

विप्लुतनेत्र वि० (आसु वगेरेथी) आखो ऊभराई गई होय तेवु

विप्लुतभाषिन् वि० न समजाय तेवु बोलतु, तोतडातु

विप्लुष् स्त्री० बिंदु, टपकु (पाणीनु)

विफल वि० निष्फळ, नकामु

विबुद्ध वि० जगाडेलु, जागतु (२) विकसेलु, खीलेलु (३) कुशळ, होशियार

विबुध् १ पा०, ४ आ० जागवु (२) भानमा आववु (३) जोवु, खोळी काढवु
–प्रेरक० जगाडवु (२) भानमा लाववु

विबुध पु० डाह्यो के ज्ञानी माणस, ऋषि (२) देव (३) चद्र

विबुधद्विष्, विबुधशत्रु पु० राक्षस

विबोध पु० जागवु ते, जगाडवु ते (२) जोवु ते; खोळवु ते (३) ज्ञान (४) भानमा आववु ते (५) दुर्लक्ष (६) खुल्लु करवु ते, प्रगट करवु ते

विब्रू २ उ० बोलवु (२) –विषे कहेवु (३) खोटु कहेवु (४) समजाववु, अर्थ करी बताववो (५) झघडवु (६) असमत थवु

विभक्त वि० वहेचेलु, हिस्सा पाडेलु (२) छूटु पडेलु (३) विविध (४) शणगारेलु (५) मापेलु (६) पु० कार्तिकेय

विभक्ति स्त्री० विभाग; हिस्सो, भाग (२) नामनो क्रिया साथे सबध देखाडनार प्रत्यय (व्या०)

विभज् १ उ० भाग पाडवा, वहेची आपवु (२) विवेक करवो, सारासार विचारवो (३) –माथी छूटु पाडवु

विभज्य अ० भाग पाडीने, जुदु पाडीने

विभव पु० सपत्ति, वैभव (२) शक्ति, सामर्थ्य (३) ऊचु पद (४) पालन (५) मोक्ष (६) विकास, उत्क्राति

विभंग पु० भागवु ते, तूटवु ते (२) अटकाववु –रोकवु ते (३) वाळवु –ऊचु चडाववु ते (भमर) (४) गडी, करचोली (५) पगथियु, निसरणी (६) प्रगट थवु –करवु ते (७) विभाग, खड

विभगुर वि० अस्थिर, चचळ (नजर)

विभंज् ७ प० भागवु, टुकडा करवा

विभा २ प० दीपवु, प्रकाशवु (२) देखावु, नजरे पडवु (३) परोढ थवु

विभा स्त्री० तेज, काति (२) किरण (३) सौंदर्य, शोभा

विभाकर पु० सूर्य (२) अग्नि

विभाग पु० भाग, हिस्सो (२) टुकडो, खड, अश (३) गोठवणी

विभात न० परोढ, प्रभात

विभाव पु० स्थायी भावोने उद्दीप्त करनार वस्तु के परिस्थिति (काव्य०)

विभावक वि० प्रगट करतु, दर्शावतु (२) चमकतु (३) मेळवी आपतु

विभावन न०, **विभावना** स्त्री० तत्त्व-निर्णय (२) चर्चा, परीक्षण (३) कल्पना, धारणा (४) विकास (५) पालन (६) दर्शन (७) प्रगट करवु ते

विभावनीय वि० दृश्य

विभावर वि० प्रकाशित; तेजस्वी

विभावरी स्त्री० रात्रि (२) वाचाळ स्त्री (३) दुराचारी स्त्री [जातनो हार

विभावसु पु० सूर्य (२) अग्नि (३) एक

विभावित वि० प्रगट करेलु; देखाय तेम करेलु (२) जाणेलु, समजेलु, अवधारित करेलु (३) कल्पेलु; अनुमान करेलु (४) सिद्ध थयेलु के करेलु

विभावितैकदेश वि० एक अंशमा जे पकडाई गयु छे—दोषित पुरवार थयु छे तेवु [शकाय तेवु

विभाव्य वि० समजी शकाय—चिंतवी

विभास् स्त्री० प्रकाश, तेज

विभिद् ७ उ० भागवु, तोडवु (२) भोंकवु; वींधवु (३) जुदु पाडवु (४) छोडवु (गाठ) (५) भंग करवो (६) भेदभाव ऊभो करवो

—कर्मणि० वदलावु

—प्रेरक० जुदु करवु (२) भेदभाव ऊभो थाय तेम करवु (३) दूर करवु; हांकी काढवु

विभिदा स्त्री० भेद

विभिन्न वि० भागेलु, तूटेलु (२) वींधायेलु, घवायेलु (३) हांकी काढेलु, विखेरी काढेलु, दूर करेलु (४) हताश (५) मिश्रित (६) प्रगट करेलु के थयेलु (६) बेवफा नीवडेलु (७) पु० शिव

विभी वि० निर्भय

विभीतक पु० बहेडानु झाड

विभीषण वि० भयकारक (२) पु० रावणनो भाई (रामनो भक्त)

विभीषा स्त्री० डराववानी इच्छा

विभीषिका स्त्री० डर, भय (२) डराववानु साधन (चाडियो)

विभु वि० बळवान, शक्तिशाळी (२) मुख्य, श्रेष्ठ (३) शक्तिमान (४) संयमी, आत्मनिग्रही (५) सर्वव्यापी (६) पु० आकाश (७) स्वामी, राजा (८) सम्राट; राजा (९) शिव

विभुग्न वि० वळेलु, वाळेलु

विभुता स्त्री० सामर्थ्य; प्रभाव

विभू १ प० देखावु; प्रगट थवु (२) व्यापवु (३) पूरता थवु; शक्तिमान थवु

—प्रेरक० विचारवु, चिंतववु (२) जाणवु (३) निहाळवु (४) प्रगट करवु (५) धारवु, कल्पवु (६) पुरवार करवु (७) रक्षवु

विभूति स्त्री० शक्ति; सामर्थ्य (२) ऐश्वर्य, संपत्ति (३) अलौकिक शक्ति—सिद्धि (४) विस्तार

विभूष् १० उ० शणगारवु

विभूषण न० आभूषण, अलंकार

विभूषा स्त्री० आभूषण, अलंकार

विभूषित वि० शणगारेलु, अलंकृत (२) न० आभूषण, शणगार

विभेद पु० भागवु, जुदु पाडवु; टुकडा करवा (२) विभाग, भागला, जुदापणु (३) वींधवु—घायल करवु ते (४) विरोध (५) वेर (६) भवा चडाववा ते (७) विविधता

विभ्रम् १, ४, प० भटकवु, भमवु (२) गोळ फरवु (३) मूंझावु, गूंचवावु (४) पटपटाववु (पूछडी)

विभ्रम पु० आमतेम भटकवु ते (२) गोळ फरवु ते (३) भ्रम, भूल (४) व्याकुळता (५) व्याकुळताने कारणे घरेणां वगेरे अस्थाने पहेरवा ते (६) विलास-चेष्टा (७) सौंदर्य, शोभा (८) क्षोभ, गाभरापणु (९) गर्व, अभिमान

विभ्रष्ट वि० पडी गयेलु, जुदु पडेलु;

नीकळी गयेलु (२) विनष्ट (३) लुप्त (४)–विनानु, रहित

विभ्रंश् १ आ० [विभ्रंशते], ४ प० [विभ्रश्यति] नीचे गरी पडवु – सरकी पडवु – टपकी पडवु (२) विनाश पामवो (३) अवनत थवु (४) खोवु (५) लुप्त थवु (६) निष्फळ नीवडवु

विभ्रंश पु० नीकळी – सरी पडवु ते (२) अवनति; विनाश (३) कराड (ज्याथी नीचे पडी जवाय)

विभ्राज् १ आ० दीपवु; प्रकाशवु

विभ्रांत वि० गोळ फरेलु– फरतु (२) क्षुब्ध, व्याकुळ (३) भूल करतु (५) चोतरफ फेलायेलु (यश)

विमत वि० जुदा अभिप्रायवाळु (२) असगत (३) अपमानित (४) सगयग्रस्त

विमति वि० मूर्ख (२) स्त्री० मतभेद (३) अणगमो (४) मूर्खता (५) झघडो; तकरार

विमत्त वि० मद झरतु, उन्मत्त

विमथ् १ प० जुओ 'विमथ्'

विमद वि० मद – अभिमान रहित (२) आनदरहित, खिन्न

विमन् –प्रेरक० अपमान करवु

विमनस्, विमनस्क वि० नाखुश, खिन्न (२) बेध्यान (३) व्याकुळ, गाभरु

विमनीकृत वि० नाखुश थयेलु (२) मनोभाव बदलायो होय तेवु (३) खिन्न

विमन्यु वि० क्रोधरहित (२) शोकरहित

विमर्द पु० दबाववु - कचरवु - छूदवु ते (३) मसळवु - घसवु ते (४) बगाडवु ते (५) स्पर्श करवो ते (६) खरडवु ते (७) युद्ध; लडाई (८) विनाश, बरबादी

विमर्दन न०, **विमर्दना** स्त्री० दबाववु– कचरवु–छूदवु ते (२) घसवु ते (३) विनाश; वध (४) युद्ध

विमर्दित वि० दबावेलु, कचरेलु, खाडेलु (२) घसेलु (३) खरडेलु

विमर्श पु० विचारणा (२) नाटकमां वस्तुना फलित थता जता विकासमा कोई अकस्मातथी रुकावट के पलटो थवो ते (नाट्य०) (३) जुओ 'विमर्शन'

विमर्शन न० विचारणा; तपास; चर्चा (२) तर्क (३) आनाकानी; संशय (४) पाछला कर्मोनो सस्कार–वासना

विमर्शिन् वि० विचार के तपास करतु

विमर्ष पु० नाखुशी, अणगमो (२) अधीरता, असहनशीलता

विमर्षिन् वि० असहनशील, अधीर (२) अणगमावाळु

विमल वि० निर्मळ; स्वच्छ, पारदर्शक (२) सफेद, उज्ज्वळ

विमलाक्ष वि० वाळना दश गूचळा – आवर्तवाळु (घोडो)

विमलाद्रि पु० गिरनार पर्वत

विमंथ् ९ प० विखेरवु (२) विनाश करवो (३) गूचववु, गाभरु बनाववु

विमातृ स्त्री० सावकी मा, अपर माता

विमान वि० मानरहित, अनादृत (२) पु०, न० अपमान (३) आकाशमा फरी शके तेवु वाहन (४) कोई पण वाहन (नौका इ०) (५) सात माळनो महेल (६) म्यानो

विमानगामिन् पु० देव

विमानचारिन् वि० विमानमा फरतु

विमानधुर्य पु० म्यानो ऊचकनारु

विमानन न०, **विमानना** स्त्री० अनादर, अपमान, तिरस्कार (२) ना पाडवी ते; नकार

विमानयान वि० विमानमा फरतु

विमानराज पु० उत्तम दैवी वाहन

विमानवाह पु० म्यानो ऊचकनारो

विमानित वि० अपमानित, अनादृत

विमार्ग पु० खराब रस्तो (२) खदळो मार्ग, दुराचार

विमार्गगा स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री

विमार्गगामिन्, विमार्गप्रस्थित वि० दुराचारी

विमिश्र, विमिश्रित वि० मेळभेळ थयेलु, मिश्रणवाळु

विमुक्त वि० छूटु करेलु, मुक्त करेलु–थयेलु (२) तजी दीधेलु, छोडी दीधेलु (३) फेंकेलु, नाखेलु (४) युक्त

विमुक्तमौनम् अ० मौन तजीने

विमुक्ति स्त्री० छुटकारो (२) मोक्ष

विमुख वि० मो फेरवी लीधु होय तेवु (२) पराङ्मुख, निवृत्त (३) विरुद्ध, प्रतिकूळ (४) –रहित, –विनानु (समासमा, उदा० 'करुणाविमुख')

विमुग्ध वि० मूझायेलु, मूढ बनेलु

विमुच् ६ प० [विमुचति] मुक्त करवु, छूटु करवु (२) छोडवु, गाठ खोली नाखवी (३) तजवु, छोडवु (४) अनामत राखवु, बाजुए काढवु (५) टपकाववु (आसु) (६) फेंकवु (७) उतारी नाखवु (कपडा)

विमुह् ४ प० मूझावु (२) मोहित थवु (३) मूढ बनवु, मूर्ख बनवु

विमृद् ९ प० दबाववु (२) कचरवु; छूदवु (३) नाश करवो; बरबाद करवु

विमूढ वि० मूझायेलु; मूढ बनी गयेलु (२) लोभायेलु, मोहित थयेलु (३) मूर्ख (४) डाह्यु, पडित

विमूढात्मन् वि० मूढ बनेलु, मूर्ख

विमोक्ष पु० मोक्ष, छुटकारो (२) फेंकवु ते (३) अर्पण, बक्षिस

विमोचन न० छोडवु ते (जेमके झूसरीमाथी) (२) छुटकारो (३) मोक्ष

वियत् न० आकाश

वियत्पताका स्त्री० वीजळी

वियन्मध्यहंस पु० सूर्य

वियु ३ प० छूटा पडवु (२) –थी रहित बनवु (३) रोकवु

वियुक्त वि० छूटु पडेलु (२) –थी तजायेलु (३) –थी रहित

वियुज् ७ आ० तजवु (२) दूर थावु; –रहित थवु

वियुज्य अ० दूर छूटु, अलग थईने एक

वियुत वि० जुदु पाडेलु (२) –रहित

वियोग पु० जुदा पडवु ते (२) अभाव

वियोगिनी स्त्री० प्रेमी के पतिना विरहवाळी स्त्री

वियोजित वि० जुदु पाडेलु –थी रहित करेलु

वियोनि वि० अधम कुळनु (२) स्त्री० पशुजातिनी योनि

विरक्त वि० रंग गयेलु (२) रंग जतो रह्यो होय के ऊडी गयो होय तेवु (३) आसक्तिरहित, अणगमावाळु (४) वैराग्यवाळु

विरक्ति स्त्री० असंतोष, अणगमो (२) वैराग्य, आसक्तिनो अभाव

विरच् १० उ० गोठववु (२) रचवु; करवु (३) उत्पन्न करवु

विरचन न० **विरचना** स्त्री० गोठवणी (२) रचवु ते, आयोजन (३) लखाण

विरचित वि० रचेलु (२) गोठवेलु (३) लखेलु (४) शणगारेलु

विरज वि० रज, दोष के वासनाथी रहित

विरजस्, विरजस्क वि० रजरहित (२) वासनारहित

विरजा स्त्री० दुर्वा (२) एक नदी

विरत वि० थोभेलु, अटकेलु (२) समाप्त

विरतप्रसंग वि० –ना व्यापार के क्रियामाथी अटकेलु

विरति स्त्री० अंत, समाप्ति (२) संसारनी आसक्तिओमाथी विरत थवु ते

विरम् १ प० अंत आववो (२) थोभवु; अटकवु, बध पडवु (बोलता इ०)

विरम पु० अंत, समाप्ति (२) सूर्यास्त

विरल वि० वच्चे खाली अंतर होय तेवु, गाढ नहि तेवु (२) भाग्ये मळतु, वारवार जोवा न मळतु (३) अल्प; थोडुक ज (संख्या के जथो) (४) दूरनु (अंतर के समय)

विरलभक्ति वि० विविधता विनानु; एकसरखु

विरलम् अ० भाग्ये, वारवार नहि तेम

विरस वि० स्वाद विनानु (२) न गमे तेवु; त्रास उपजावे तेवु (३) क्रूर; लागणीरहित

विरह पु० वियोग, छूटा पडवु ते (खास करीने प्रेमीथी) (२) अभाव, न होवापणु

विरहित वि० विहोणु, विनानु (२) –थी छूटु पडेलु (३) एकाकी [(२) एकाकी

विरहिन् वि० प्रेमीजनथी छूटु पडेलु

विरंच, विरंचि पु० ब्रह्मा

विरंज् १, ४ उ० रूखा थई जवु के रग ऊडी जवो (२) धिक्कारवु, अणगमो थवो (३) वैराग्य थवो

विरंजित वि० स्नेह ओछो थयो होय तेवु, विरक्त थयेलु

विराग पु० रग बदलावो ते (२) वलण बदलावु ते, असतोष, अणगमो (३) वैराग्य, आसक्तिनो अभाव

विराज् १ उ० दीपवु, प्रकाशवु (२) –ना जेवु देखावु (३) शोभी ऊठवु

विराज् वि० उत्तम, श्रेष्ठ (२) शासक–राजकर्ता एवु (३) पु० क्षत्रिय (४) ब्रह्माड (५) ब्रह्मानु प्रथम सतान

विराज् पु० गरुड (पखीओनो राजा)

विराजित वि० प्रकाशित, प्रकाशतु (२) प्रगट थयेलु के करेलु

विराट पु० मत्स्य देशनो राजा (पाडवो तेने त्या गुप्तवास रहेला)

विरात्र पु०, न० रातनो अतभाग

विराध् ४ प० अपराध करवो, खोटु लगाडवु

विराम पु० अत; थोभवु ते (२) विश्राति

विराव पु० अवाज; कोलाहल

विरावण वि० राव–पोकार करावनारु

विराविणी स्त्री० अवाज; रणकार

विरिब्ध पु० स्वर, ध्वनि

विरिंच, विरिंचि पु० ब्रह्मा

विरु २ प० रडवु, विलाप करवो (२) अवाज करवो (३) बूम पाडवी

विरुग्ण वि० भागीने टुकडा थयेलु (२) बूठु थयेलु

विरुच् १ आ० दीपवु, प्रकाशवु (२) प्रगट थवु, देखावु (३) आगळ पडता थवु (४) खुश करवु

विरुच पु० अस्त्र उपर बोलातो मत्र

विरुत वि० चीस पाडेलु (२) अवाज भरेलु, गाजतु (३) न० चीस के बूम पाडवी ते (४) कोलाहल (५) गुजारव, कलरव

विरुति स्त्री० चीसो पाडवी ते

विरुद पु०, न० राजानी स्तुति–प्रशसा

विरुदित न० मोटी चीस (२) विलाप

विरुद्ध वि० रूधेलु, अटकावेलु (२) ऊलटु, प्रतिकूळ, सामेनु (३) न० विरोध, दुश्मनावट

विरुध् ७ उ० विरोध करवो
–कर्मणि० विरुद्ध होवु, विरोध होवो

विरुह् १ प० ऊगवु (२) ऊचे चडवु
–प्रेरक० रुझावु (घानु) (२) रोपवु (३) देशनिकाल करवु

विरूढ वि० ऊगेलु, फूटेलु (२) नीकळेलु, जन्मेलु (३) वधेलु (४) खीलेलु (५) उपर चडेलु (६) रुझायेलु (घा)

विरूप वि० कदरूपु, बेडोळ (२) जुदा रूप के स्वभाववाळु

विरूपक वि० कदरूपु, भयकर

विरूपाक्ष पु० शिव (त्रिलोचन)

विरेचन न० जुलाब, रेच

विरोक पु०, न० छिद्र; काणु

विरोचन पु० सूर्य (२) चद्र (३) अग्नि (४) प्रह्लादनो पुत्र, बलिनो पिता

विरोचनसुत पु० बलिराजा

विरोध पु० विरुद्धता (२) नाकनो; दखल (३) घेरो (४) निग्रहण (५) द्वेष; शत्रुवट (६) कजियो, तकरार

विरोचन न० विरोध, सामनो; दखल (२) घेरो (३) द्वेष; कजियो (४) असगतता

विरोधिन् वि० विरोध, सामनो के दखल करनारु (२) घेरो घालनार (३) विरुद्ध, असगत (४) द्वेष – शत्रुवट राखनारु (५) कजियाखोर

विरोपण, विरोहण न० रूझ लाववी ते (२) रोपवु ते

विलक्ष् १० उ० लक्षमा लेवु, जोवु (२) जुदु पाडवु (३) मूझावु

विलक्ष वि० मूझायेलु (२) विस्मित (३) लज्जित (४) अस्वाभाविक; कृत्रिम (५) लक्ष चूकेलु (वाण) (६) विशिष्ट लक्षण के लक्ष रहित

विलक्षण वि० विशिष्ट लक्षण विनानु (२) वीजु; जुदु (३) विचित्र, असामान्य (४) अशुभ लक्षणवाळु (५) निस्तेज

विलग् १ प० वळगवु [पातळु

विलग्न वि० वळगेलु, चोटेलु (२) कृश,

विलज्ज् ६ आ० शरमावु, लज्जित थवु

विलप् १ प० कहेवु, वोलवु (२) विलाप करवो; शोक करवो (३) नकामो वडबडाट करवो

विलपन न० शोक, विलाप, आक्रंद (२) नाहक वडबडाट [करवो ते

विलपनविनोद पु० रुदन वडे शोक दूर

विलपित न० शोक, आक्रंद, विलाप

विलभ् १ आ० दूर करवु (२) वक्षवु (३) पसद करवु [नाश; अत, मृत्यु

विलय पु० ओगळी जवु ते (२) लय,

विलस् १ प० प्रकाशवु (२) देखावु (३) विलास करवो, क्रीडा करवो (५) गरजवु, पडघो पडवो

विलसत् वि० प्रकाशतु, चळकतु (२) विलास करतु (३) पडघो पडतो होय तेवु; गरजतु [विलास

विलसन न० चमकवु–प्रकाशवु ते (२)

विलसित वि० प्रकाशित; चमकतु (२) देखातु, व्यक्त (३) न० चमकवु ते, चमकारो (४) प्रागटच (५) विलास (६) परिणाम

विलंघ् १० उ० ओळगवु; अतिक्रमण करवु (२) –तरफ ऊचे जवु (३) तजवु वाजुए राखवु (४) चडियाता थवु; पाछळ पाडी देवु (५) अनादर करवो

विलंघन न० ओळगवु ते, उल्लघन

विलंघित वि० ओळगेलु; उल्लघेलु (२) –ने पाछळ पाडी दीवेलु (३) विफळ करेलु

विलंव् १ आ० लवडवु; लटकवु (२) नीचे नमवु – आयमवु (सूर्यनु) (३) विलव करवो (४) अवलववु

विलंव पु० लटकवु ते (२) ढील, धीमाश

विलंवन न० लटकवु ते (२) विलव

विलंबित वि० लटकतु, लवडतु (२) अवलवित (३) विलव करतु, विलव थयो होय तेवु (४) धीमु (५) न० ढील, विलव

विलंविन् वि० लटकतु, लवडतु (२) ढील–विलव करतु [रुदन

विलाप पु० शोक करवो ते, कल्पात,

विलापन न० शोक करावे तेवु कृत्य

विलास पु० रमत, क्रीडा (२) शृगारचेष्टा (३) सौंदर्य (४) आनदीपणु

विलासचेष्टित न० शृगारचेष्टा, शृगारिक हावभाव

विलासन न० विलास, क्रीडा

विलासवती स्त्री० शृगारिक हावभाववाळी स्त्री, विलासी स्त्री

विलासिन् वि० विलासयुक्त (२) पु० कामी पुरुष [प्रिय स्त्री (३) वेश्या

विलासिनी स्त्री० स्त्री (२) विलास-

विलिख् ६ प० लखवु (२) चीतरवु (३) खणवु (४) अदर खोसवु

विलिप् ६ प० [विलिंपति] चोपडवु, लीपवु, खरडवु

विली ४ आ० चोटवु (२) नीचे ऊतरवु, उपर वेसवु (३) ओगळी जवु, लय पामवु (४) लुप्त थई जवु (५) ९ प० ओगळवु
विलीन वि० चोटेलु, वळगेलु (२) उपर वेठेलु, उपर ऊतरेलु (३) ओगळी गयेलु (४) मृत, नष्ट, लुप्त थयेलु
विलुड् –प्रेरक० क्षुब्ध करवु, उछाळवु (२) उथलाववु
विलुप् ६ प० खेंची नाखवु, तोडी नाखवु, कापी नाखवु (२) लूटी जवु (३) बगाडवु (४) नष्ट करवु, अदृश्य थाय तेम करवु (५) खाई जवु (६) भूसी नाखवु –कर्मणि० नष्ट थवु, लुप्त थवु
विलुप्त वि० तोडी नाखेलु, भागी नाखेलु (२) झूटवी लीधेलु (३) नष्ट
विलुभ् ४ प० अस्तव्यस्त थवु –प्रेरक० लोभाववु (२) आनद पामे तेम करवु
विलुल् १ प० हलाववु; कपाववु (२) अस्तव्यस्त करवु [(२) अस्तव्यस्त
विलुलित वि० हालतु, अस्थिर, ऊछळतु
विलुंठन न० लूटवु ते
विलेख पु०, **विलेखा** स्त्री० बाकु, खणवा खोतरवाथी पडेलो खाडो
विलेपन न० चोपडवु–खरडवु ते (२) लेप, सुगधी पदार्थोनो लेप
विलेपिन् वि० चोटे तेवु, चीकणु
विलोक् १० उ० जोवु, निहाळवु (२) तपास करवी [निहाळवु ते (२) दर्शन
विलोक पु०, **विलोकन** न० जोवु–
विलोकित वि० जोयेलु (२) तपासेलु (३) न० दृष्टि, नजर
विलोचन वि० विपरीत दृष्टिवाळु (२) न० आख (३) नजर, दृष्टि
विलोचनपात पु० नजर नाखवी ते
विलोडन न० क्षुब्ध करवु ते, वलोववु ते (२) (पाणी) उछाळवु ते
विलोप पु०, **विलोपन** न० लूटी जवु ते (२) नाश; लोप
विलोप्तृ पु० लूटारो
विलोभन न० लोभाववु ते, प्रलोभन (२) प्रशसा, खुशामद
विलोम वि० विपरीत, ऊलटु (२) अवळा क्रमनु [अस्तव्यस्त
विलोल वि० चचळ; अस्थिर (२)
विलोलन न० हलाववु – डखोळवु ते
विलोहित वि० राता रगनु
विव वि० पखी उपर सवारी करतु
विवक्षा स्त्री० कहेवानी इच्छा (२) इच्छा (३) अर्थ, हेतु (४) आनाकानी, सशय [(३) न० हेतु, अर्थ
विवक्षित वि० कहेवा धारेलु (२) इच्छेलु
विवक्षु वि० कहेवानी इच्छावाळु, कहेवाने तत्पर थयेलु |करवो
विवद् १ आ० विवाद करवो (२) झघडो
विवदन न० तकरार, फरियाद
विवर न० काणु, छेद (२) खाली जगा; पोलाण (३) निर्जन स्थळ (४) दोष, छिद्र (५) पाताळ
विवरण न० प्रगट करवु ते (२) खुल्लु करवु ते (३) व्याख्या, समजूती, टीका
विवरप्रवेश पु० (इच्छित प्राप्त करवाना उपाय तरीके) ऊडी वखोलमा प्रवेश करवो ते
विवर्जित वि० छोडेलु, तजेलु (२) रहित, विनानु (३) वहेचेलु
विवर्ण वि० फीकु, रग विनानु, निस्तेज (२) खराव रगनु (३) पु० वर्ण वहार काढेलु, वहिष्कृत
विवर्त पु० गोळ – चक्राकार फरवु ते (२) पाछा गवडवु – फरवु ते (३) रूपातर, अवस्थातर (४) भ्रम, आभास (वेदात०)
विवर्तन न० गोळ – चक्राकार फरवु ते (२) गवडवु ते – फरवु ते (३) नीचे गवडवु – ऊतरवु ते (४) पाछु गवडवु के फरवु ते (५) वदलायेली स्थिति, परिवर्तन

विवर्तवाद पु० बाह्य जगत भ्रम–आभास छे, ब्रह्म ज सत्य छे एवो वेदांतदर्शननो सिद्धांत
विवर्तित वि० गोळ फरेलु के फेरवेलु (२) घुमावेलु (३) कापीने टुकडा करेलु
विवर्धन न० वृद्धि, वधारवु ते (२) कापवु ते
विवल् १ प० कूदवु, ऊछळवु
विवश वि० परवश, असहाय; जात उपर काबू विनानु (२) स्वतंत्र, तावे न थयेलु (३) वेशुद्ध (४) मृत
विवस् १ प० परगाम के परदेशमां रहेवु (२) वसवाट करवो (३) २ आ० कपडा बदलवा (४) पहेरवु
–प्रेरक० देशनिकाल करवु
विवस्वत् पु० सूर्य (२) आ मन्वंतरना मनु
विवह् १ प० हांकी काढवु, दूर करवु (२) परणवु
विवाद पु० तकरार, झघडो, फरियाद (२) चर्चा (३) विरोध (४) आज्ञा
विवादिन् वि० झघडतु, तकरार करतु; फरियाद करनारु
विवास पु०, **विवासन** न० देशनिकाल करवु ते (२) वियोग, विच्छेद
विवाह पु० परिणय, लग्न
विवाहदीक्षा स्त्री० लग्नविधि
विवाहनेपथ्य न० लग्न माटेनो पहेरवेश
विवाहित वि० परणेलु
विविक्त ('वि+विज्' तथा 'वि+विच्'नु भू० कृ०) वि० जुदु करेलु; अलग पाडेलु (२) निर्जन, एकांत (३) एकलु (४) जुदु तारवेलु (५) निर्दोष (६) –थी मुक्त, विनानु (७) ज्ञानयुक्त
विविक्तसेविन् वि० एकांत स्थान इच्छतु, एकाकी
विविग्न वि० बीनेलु; गाभरु
विविच् ३, ७ उ० छूटु–जुदु करवु (२) विवेक करवो (३) निर्णय करवो (४) विवरण करवु (५) जाणकार (६) न० निर्जन–एकांत स्थान
विवित्सा स्त्री० जाणवानी इच्छा
विविध वि० अनेक प्रकारनु, भातभातनु
विवृ ५, ९ उ० टांकवु (२) उघाडवु; खुल्लु करवु (३) प्रगट करवु; दर्शाववु (४) बोलवु (५) विवरण करवु (६) फेलाववु
विवृज् १० उ० के प्रेरक० वर्जवु, त्यागवु (२) –विनानु करवु (३) वातल राखवु (४) वहेंचवु
विवृत् १ आ० गोळ–चक्राकार फरवु (२) गबडवु (३) बाजुए खसेडवु, वाळवु (४) बनवु, थवु (५) पाछा वळवु (६) जुदा जुदा रूप धारण करवा
विवृत वि० खुल्लु, प्रगट (२) स्पष्ट (३) जाहेर करेलु (४) विवरण करेलु
विवृतद्वार वि० उघाडा दरवाजा–बारणावाळु
विवृतभाव वि० खुल्ला दिलनु
विवृतम् अ० खुल्ले खुल्लु; प्रगटपणे
विवृत्त वि० गोळ फरतु, गबडतु; घूमतु
विवृत्ति स्त्री० गोळ फरवु ते (२) गबडवु ते (३) वेगळु खसी जवु ते (४) विकास
विवृद्ध वि० वधेलु, मोटु थयेलु (२) पुष्कळ, घणु
विवृद्धि स्त्री० वृद्धि, वधारो, विकास (२) समृद्धि
विवृध् १ आ० वधवु (२) समृद्ध थवु (३) ऊंचु जवु
–प्रेरक० वधारवु, विकसाववु (२) ऊंचु करवु (३) –ना निमित्ते (–ने) अभिनंदवु
विवेक पु० सारासार समजवानी–छूटा पाडवानी बुद्धि (२) विचारणा; तपास (३) साचु ज्ञान
विवेकज्ञ वि० विवेकबुद्धिवाळु
विवेकदृश्वन् पु० विवेकबुद्धिवाळो माणस
विवेकपदवी स्त्री० विचारणा

विवेकपरिपंथिन् वि० विवेकशक्तिने –विवेकबुद्धिने रूंधनारु
विवेकविश्रांत वि०मूर्ख, डहापण विनानु
विवेकिन् वि० विवेकबुद्धिवाळु, समजु
विवेचन न०, **विवेचना** स्त्री० विवेक-विचार (२)विचारणा, चर्चा(३) निश्चय; निर्णय
विवोढृ पु० वर(२)जमाई
विब्वोक पु० जुओ 'विब्बोक'
विश् ६ प० प्रवेशवु, पेसवु(२)प्राप्त थवु; भागे आववु
विश् पु० वैश्य(२)माणस (३)लोक (४)स्त्री० प्रजा (५) जाति, वंश (६)पुत्री(७)मपत्ति
विशद वि० स्वच्छ, निर्मळ(२)श्वेत (३)कातिमान, सुदर(४)स्पष्ट, प्रगट (५)चितारहित, प्रसन्न (६)कुशळ (७)पु० सफेद रग (८)एक जातनी गध (९)एक जातनो स्पर्श
विशन न० –मा पेसवु ते
विशल्य वि० चिंता के मुश्केलीमाथी मुक्त एवु(२)काटा के बाण विनानु
विशस् १ प० कापी नाखवु
विशसन न० वध, कतल (२)नाश (३) युद्ध (४) पु० तरवार
विशस्त वि० कापेलु(२)उद्धत (३) प्रशसित, प्रसिद्ध [कल्पना करवी
विशंक् १ आ० शका करवी, बीवु(२)
विशंक वि० डर विनानु
विशंकट वि० मोटु (२) ताकातवाळु
विशंकम् अ० बीन्या विना
विशंका स्त्री० सशय, डर
विशाख पु० कार्तिकेय
विशाखा स्त्री० १६ मु नक्षत्र(बे तारा होवाथी द्वि० व० मा वपराय छे)
विशातन न० सहार करवो ते(२) मुक्त–छूटु करवु ते [कतल, वध
विशारण न० फाडवु–चीरवु ते (२)
विशारद वि० कुशळ, होशियार; प्रवीण(२)विद्वान, डाह्यु(३)प्रसिद्ध (४)प्रगल्भ, धृष्ट(५)पु० बकुल वृक्ष
विशाल वि० विस्तृत, मोटु, पहोळु (२)–थी भरपूर(३)प्रख्यात
विशालकुल न० खानदान कुटुंब
विशाला स्त्री० उज्जयिनी नगरी
विशालाक्ष पु० महादेव(२)विष्णु(३) गरुड [पु० बाण
विशिख वि० शिखा–टोच विनानु(२)
विशिष् ७ प० जुदु पाडवु–तारववु(२) वधारवु(३)चडियाता थवु –कर्मणि० जुदा होवु, चडियाता होवु
विशिष्ट वि० विशेषतावाळु, असाधारण (२) निराळु, खास (३) –थी युक्त (४) उत्तम, विलक्षण (५) पु० विष्णु
विशीर्ण वि० टुकडा थई गयेलु (२) क्षीण थयेलु, करमाई गयेलु (३) गरी पडेलु(४)खर्ची के उडावी दीधेलु
विशीर्णमूर्ति वि० जेनु शरीर नाश पाम्यु छे तेवु(२)पु० कामदेव
विशुद्ध वि० शुद्ध करेलु के थयेलु(२) निर्दोष, पापमुक्त (३) निष्कलंक, निर्मळ [शीलवाळु
विशुद्धसत्त्व वि० पवित्र अंत करण के
विशुद्धि स्त्री० शुद्धि, निर्मळता, भेळसेळरहित होवापणु (२) खरापणु, चोकसाई(३) भूल दूर करवी ते(४) समानता
विशुध् ४ प० पवित्र–शुद्ध थवु –प्रेरक० शुद्ध करवु (२)शकामाथी मुक्त करवु (३) योग्य छे एम पुरवार करवु
विशून्य वि० तद्दन खाली
विशूल वि० भाला विनानु
विशृंखल वि० शृंखला–बंधन–नियंत्रण विनानु(२)स्वच्छंदी

विशृ –कर्मणि० [विशीर्यते] शीर्ण थई जवु, टुकडे टुकडा थई जवु (२) क्षीण थई जवु, करमावु (३) लुप्त थई जवु

विशेष वि० खास (२) पुष्कळ (३) पु० जुदु तारववु ते (४) तफावत; भेद (५) खास विशिष्टता, खास लक्षण (६) मादगीमा सुधारो (७) अवयव (८) एक प्रकार, एक जात (समासने अते; उदा० 'वृक्षविशेष') (९) उत्तम; श्रेष्ठ (समासने अते, उदा० 'अतिथि-विशेष')

विशेषक वि० जुदु पाडनारु (२) मर्यादित करनारु (३) पु०, न० विशेष लक्षण, चिह्न के गुण (४) केसर–चदन वगेरेथी करेलु तिलक (५) सुगधी द्रव्योथी मो अने शरीर उपर चित्ररेखाओ करवी ते (६) न० श्लोकनी त्रण कडीओनो समुदाय (जेमा व्याकरणनी रीते एक ज वाक्य थतु होय छे)

विशेषकरण न० सुधारो

विशेषज्ञ वि० विद्वान, डाह्यु (२) कदर-दान, परख करनारु

विशेषण वि० विशेष बतावनारु, जुदु पाडनारु (२) न० तफावत, भेद; विशिष्ट लक्षण (३) विशेष्यनो गुण बतावनार शब्द (व्या०) (४) –चडियाता थवु ते '

विशेषणपद न० खिताब, इलकाब

विशेषतस् अ० खास करीने (२) –ना प्रमाणमा (३) व्यक्तिगत, जुदु जुदु

विशेषविद् वि० जुओ 'विशेषज्ञ'

विशेषित वि० जुदु –अलग पडेलु (२) व्याख्या – मर्यादा करेलु (३) कोई गुण-थी विशिष्ट (४) उत्तम, श्रेष्ठ

विशेष्य वि० विशिष्ट करवा योग्य (२) उत्तम, श्रेष्ठ (३) न० विशेषणथी जेनो गुण बतावातो होय ते शब्द (व्या०)

विशोक वि० शोक विनानु (२) पु० शोकरहित थवु ते (३) अशोकवृक्ष

विशोधन न० साफ करी नाखवु ते; निर्मूळ करवु ते (२) पाप, अपूर्णता वगेरे दूर करवा ते (३) प्रायश्चित्त

विश्रण् १० उ० आपी देवु

विश्रब्ध ('वि + श्रभ्' नु भू० कृ०) वि० विश्वासु, –मा विश्वासवाळु (२) डर विनानु, खातरीवाळु (३) शात; चितारहित (४) दृढ, स्थिर

विश्रब्धम् अ० विश्वासपूर्वक; खातरी-पूर्वक [रीते ऊघतु

विश्रब्धसुप्त वि० शातियी – नि:शक

विश्रम् ४ प० विश्राति करवी, आराम करवो (२) अटकवु, थोभवु

विश्रम, विश्रमण पु० विसामो; विश्राति

विश्रवस् पु० रावणनो पिता

विश्रंभ् १ आ० विश्वास मूकवो –प्रेरक० विश्वास ऊभो करवो; आश्वासन आपवु

विश्रंभ पु० खातरी, विश्वास (२) रहस्य, खानगी वात (३) विसामो; विश्राति (४) प्रणयकलह

विश्रंभकथा स्त्री० खानगी के परिचितो वच्चेनी वातचीत [राखतु

विश्रंभप्रवण वि० विश्वासु, विश्वास

विश्रंभभूमि पु० विश्वासपात्र माणस

विश्रंभालाप पु० जुओ 'विश्रंभकथा'

विश्रंभिन् वि० विश्वास करतु (२) विश्वासपात्र

विश्राणन न० दान; बक्षिस

विश्राणित (विश्रण्' नु भू० कृ०) वि० बक्षेलु; दानमा आपेलु

विश्राम पु० थोभवु–अटकवु ते (२) विसामो, आराम (३) शाति; स्वस्थता (४) विश्रातिस्थान

विश्राव पु० ख्याति, प्रसिद्धि (२) अवाज, ध्वनि

विश्रांत वि० थोभेलु, अटकेलु (२) विश्राति पामेलु (३) शात; स्वस्थ

विश्रांतकथ वि० मूगु, चूप

विश्रांति स्त्री० आराम; विसामो (२) थोभवु–अटकवु ते
विश्रुत वि० प्रख्यात; प्रसिद्ध (२) न० प्रसिद्धि, ख्याति
विश्रुति स्त्री० ख्याति, प्रसिद्धि
विश्लथ वि० शिथिल, ढीलु (२) सुस्त; नमी गयेलु
विश्लिष् ४ प० छूटा पडवु (२) छूटी के तूटी जवु [करवु
–प्रेरक० छूटा पाडवुं (२) –रहित
विश्लिष्ट वि० छूटु पडेलु के पाडेलु (२) ढीलुं करेलु (३) ऊतरी गयेलु (अवयव)
विश्लेष पु० वियोग
विश्लेषित वि० छूटु पडेलु–पाडेलु (२) फाडी–चीरी नाखेलु
विश्व वि० आखु, समग्र (२) दरेक, तमाम (३) व्यापक (४) पु० ब० व० अमुक वर्गना दश देवो (५) पु० जीवात्मा (५) न० समग्र जगत
विश्वकर्मन् पु० देवोनो शिल्पी (२) सूर्य
विश्वजनीन, विश्वजनीय, विश्वजन्य वि० समग्र मानव जात माटे हितकर
विश्वजित् पु० एक यज्ञ
विश्वतस् अ० चोतरफ; बधी बाजुथी
विश्वतोमुख वि० दरेक बाजुए मुखवाळु
विश्वपा पु० बधानो रक्षण करनारो (२) अग्नि (३) सूर्य (४) चंद्र
विश्वमूर्ति वि० बधा रूपो धरनारु; सर्वव्यापी
विश्ववेदस् वि० सर्वज्ञ (२) ऋषि एवु
विश्वव्यापक, विश्वव्यापिन् वि० सर्वव्यापक एवु
विश्वस् २ प० विश्वास राखवो के मूकवो (२) नचित के डर विनाना थवु
–प्रेरक० विश्वास ऊभो करवो
विश्वसनीय वि० विश्वास करवा लायक (२) विश्वास ऊभो करे तेवु
विश्वसृज् पु० ब्रह्मा (२) मयासुर
विश्वस्त ('विश्वस्' नु भू० कृ०) –मा विश्वास मूक्यो होय तेवु (२) विश्वास राखतु (३) नीडर; खातरीवाळु (४) विश्वास मूकवा योग्य
विश्वस्ता स्त्री० विधवा
विश्वंभर वि० बधाने पोषनारु (२) पु० परमात्मा (३) विष्णु (४) अग्नि
विश्वंभरा स्त्री० पृथ्वी [ब्रह्मा
विश्वात्मन् पु० परमात्मा (२) शंकर (३)
विश्वाधार पु० जगतनो आधार
विश्वामित्र पु० एक प्रसिद्ध मुनि
विश्वास पु० भरोसो, श्रद्धा, पतीज
विश्वासघात पु० विश्वासनो भंग करवो ते
विश्वासपात्र न० रोसापात्र माणस
विश्वासभंग पु० जुओ 'विश्वासघात'
विश्वासभूमि पु० विश्वासपात्र माणस
विश्वेदेवा० पु० ब० व० अमुक दश देवोनो वर्ग
विष् स्त्री० विष्टा (२) कन्या
विष न० झेर (२) पाणी (३) कमळतंतु (४) झेरी हथियार
विषकुंभ पु० झेर भरेलो घडो
विषकृत वि० झेर भेळवेलु
विषक्त ('विषज्' नु भू० कृ०) बराबर चोटाडेलु (२) बराबर वळगेलु (३) लटकावेलु (४) उत्पन्न करेलु (५) रोकायेलु, लीन
विषघ्न वि० झेरनो नाश करनारु, झेरनी असर दूर करनारु
विषण्ण ('विषद्' नु भू० कृ०) वि० उदास, खिन्न, हताश
विषण्णमुख वि० खिन्न मुखवाळु
विषण्णरूप वि० खिन्न, उदास
विषद् १ प० [विषीदति] खिन्न थवु; हताश थवु, दुःखित थवु (२) डरवु
विषद पु० मेघ

विषदिग्ध वि० झेरथी खरडेलु; झेरी
विषद्रुम पु० झेरी वृक्ष
विषधर, विषभुजंग, विषभृत् पु० साप
विषम वि० खरबचडु, खाडा टेकरावाळु (२) अनियमित, असमान (३) एकी (सख्या) (४) मुश्केल (५) दुर्गम (६) वाकु (७) त्रासजनक (८) भयकर (९) प्रतिकूळ (१०) एकातरु (११) पु० एक ताल (सगीत०) (१२) न० खाडा टेकरावाळु स्थान (१३) दुर्गम स्थळ (१५) सकट, मुश्केली
विषमज्वर पु० आतरे आवतो ताव
विषमपत्र पु० सप्तपर्ण वृक्ष
विषमशर पु० जुओ 'विषमेषु'
विषमशील वि० चीडियु (२) पु० विक्रमादित्य राजा
विषमायुध पु० कामदेव (पाच बाणोवाळो होवाथी)
विषमावतार पु० खाडा-टेकरावाळी जमीन उपर ऊतरवु ते (२) साहस करवु ते
विषमित वि० वाकु, सरखु नहि तेवु (२) भवा चडावेलु (३) दुर्गम बनावेलु
विषमीभू १ प० विषम बनवु (२) ठोकर खावी, आमतेम पडवु
विषमुच् पु० साप
विषमेक्षण पु० शिव (त्रण लोचनवाळा)
विषमेषु पु० कामदेव (पाच बाणवाळो)
विषय पु० दरेक इद्रियनो ग्राह्य के भोग्य पदार्थ (२) लौकिक वस्तु के व्यवहार (३) सांसारिक भोग, कामभोग (४) पदार्थ (५) लक्ष, ध्येय (६) गोचर, क्षेत्र (७) वस्तु, प्रकरण, मुद्दो, बाबत (८) स्थान स्थळ (९) प्रदेश, देश, राज्य (१०) आश्रयस्थान
विषयक वि० कोई बाबतने लगतु (२) विषय के वस्तुवाळु, ते वस्तुने चर्चतु
विषयग्राम पु० भोगविषयोनो समूह
विषयपराङ्मुख वि० लौकिक व्यवहारो तरफ वैराग्यवाळु
विषयस्नेह पु० विषयोमा आसक्ति
विषयाधिकृत पु० प्रदेश के प्रांतनो सूबो
विषयाधिपति पु० राजा
विषयाभिरति स्त्री०, **विषयाभिलाष** पु० भोगविषयमा आसक्ति
विषयिन् वि० विषयभोगने लगतु (२) पु० विषयासक्त पुरुष (३) कामदेव (४) राजा (५) विषयोनु ज्ञान करनारो – जीवात्मा
विषयैषिन् वि० विषयासक्त
विषयोपसेवा स्त्री० विषयासक्ति
विषरस पु० झेरी प्रवाही
विषवृक्ष पु० झेरी वृक्ष
विषवेग पु० झेरनु प्रसरवु ते; झेरनी असर
विषवैद्य पु० मत्रथी झेर उतारनारो (२) झेरनी दवा वेचनारो
विषव्यवस्था स्त्री० झेर देवायु होय तेवी अवस्था (२) झेरनी असर
विषह् ('वि+सह्') १ आ० सहन करवु (२) सामनो करवो; टकी रहेवु (३) शक्तिमान थवु
विषहृदय वि० झेरी हृदयवाळु; झेरीलु
विषह्य वि० सहन करी शकाय तेवु (२) सामनो करी शकाय – जीती शकाय तेवु
विषज् १ प० [विषजति] चोटाडवु, वळगाडवु; लटकावबु
विषाक्त वि० विष चोपडेलु, झेरी
विषाण पु०, न० शिगडु (२) हाथी के सूवरनो दतूशळ (३) फूकीने वगाडवानु शिगडाना आकारनु वाद्य (४) शिखर, टोच
विषाणिन् वि० मोटा दतूशळ के शिगडावाळु (२) पु० तेवु प्राणी (३) हाथी (४) आखलो
विषाणी स्त्री० जुओ 'विषाण'

विषाद पु० खेद, दिलगीरी (२) हताशा, निराशा (३) ग्लानि, सुस्ती
विषादिन् वि० हताश, उदास, खिन्न
विषुव न० मेष अने तुलामा संक्रांति (ज्यारे दिवसरात सरखा होय छे)
विषुवसमय पु० संक्रांतिनो काळ
विषूचिका स्त्री० कोगळियु, 'कॉलेरा'
विष्क पु० २० वर्षनी उमरनो हाथी
विष्कंभ् ५, ९ प० दखल करवी (२) टेको आपवो
विष्कंभ पु० दरवाजानो आगळो (२) विस्तार, लंबाई (३) जुओ 'विष्कंभक'
विष्कंभक पु० बे अंको वच्चे आवतो भाग, जेमां हलका के मध्यम पात्रो नाटकनी वातोने अने वस्तुना विभागोने वच्चे शु बनी गयु ते टूंकमां कही बतावीने जोडी आपे छे (नाट्य०) (२) विस्तार, लंबाई
विष्किर पु० विखेरवु ते, खोतरवु–खणवु ते (२) कूकडो वगेरे पक्षी
विष्टप पु०, न० लोक, भुवन
विष्टपहारिन् वि० जगतने खुश करनारु
विष्टब्ध ('विष्टभ्' नु भू० कृ०) वि० टेकवेलु, स्थिर करेलु (२) रोकेलु (३) जड–अक्कड बनेलु
विष्टर पु० आसन, बेठक (२) कुशदाभनी पूळी (३) कुशनु बनावेलु तपस्वीनु आसन
विष्टरभाज् वि० बेठक उपर बेठेलु
विष्टरश्रवस् पु० विष्णु, कृष्ण
विष्टंभ् ('वि+स्तभ्') ५, ९ प० रोकवु; अटकाववु (२) टेको लेवो (३) टेको आपवो (४) व्यापवु (५) निश्चित – स्थिर करवु
—प्रेरक० रुकावट करवी (२) जड-अक्कड बनाववु
विष्टंभ पु० स्थिर–दृढ करवु ते (२) नडतर, विघ्न (३) लकवो (४) टेको (५) सहन करवु ते, सामनो करवो ते
विष्टा स्त्री० विष्ठा, मळ
विष्टि स्त्री० धंधो, उद्योग (२) वेतन (३) वेठ (४) मोकलवु ते [मालिक
विष्टिकर पु० वेठियाओनो–गुलामोनो
विष्टिकर्मान्तिक पु० वेठियो
विष्ठा स्त्री० मळ, विष्टा (२) पेट
विष्ठित वि० स्थित (२) हाजर के नजीक होय तेवु
विष्णु पु० ब्रह्मा–विष्णु–महेश्वर ए त्रिमूर्तिमांना बीजा देव, जे जगतनु पालन करे छे तथा अवतारो ले छे
विष्णुगुप्त पु० चाणक्य [क्षीरसागर
विष्णुपद न० आकाश, अंतरिक्ष (२)
विष्णुपदी स्त्री० गंगा नदी
विष्फार पु० धनुषनो टंकारव
विष्यंद् १ आ० वहेवु, टपकवु
विष्यंद पु० वहेवु – टपकवु ते
विष्वक् अ० बधे ठेकाणे, बधी बाजुए
विष्वक्सेन, विष्वक्सेन पु० विष्णु
विष्वग्गति वि० सर्वव्यापी; दरेक विषयमां प्रवेशवाळु
विष्वच् वि० व्यापक
विष्वद्र्यच्, विष्वद्र्यंच् वि० बधी बाजु जतु – पहोंचतु, सर्वव्यापी
विष्वंच् वि० जुओ 'विष्वच्'
विसर पु० मोटो जथो, ढगलो (२) टोळु (३) फेलावु ते
विसर्ग पु० छोडवु – काढवु – फेंकवु ते (२) वरसाववु ते (३) आपी देवु ते, दान (४) विदाय आपवी ते (५) सर्जन, सृष्टि (६) त्याग (७) मळत्याग करवो ते (८) सृष्टि-व्यापार
विसर्जन न० काढवु – फेंकवु – वरसाववु ते (२) आपी देवु ते, दान (३) मळत्याग करवो ते (४) त्याग करवो ते (५) विदाय आपवी ते (६) सर्जन
विसर्प पु० सरकवु – खसवु ते (२) आमतेम फरवु ते (३) फेलावु ते

(४) कोई पण कार्यनो आणधार्यो के न इच्छेलो अंत

विसर्पिन् वि० सरकतु, खसतु (२) भटकतु, फरतु (३) वधतु, फेलातु

विसंकट वि० भयंकर, बिहामणु

विसंकुल वि० गाभरु – व्याकुल नहि तेवुं; स्वस्थ

विसंज्ञ वि० मूर्छित (२) भ्रांत

विसंवद् १ प० विरुद्ध के विसंगत होवु (२) वचनभंग करवो (३) छेतरवु (४) खोटु के विरुद्ध कहेवु –प्रेरक० निष्फळ जाय तेम करवु (२) विरुद्ध करवुं (३) साबित करवामां निष्फळ जवु

विसंवाद पु० वचनभंग करवो ते, छेतरवु ते (२) विरुद्ध के असंगत होवु ते

विसंवादन न० वचनभंग करवो ते

विसंवादिन् वि० छेतरतु (२) असंगत, विरुद्ध (३) जुदु पडतु

विसंष्ठुल, विसंस्थुल वि० क्षुब्ध, अस्थिर (२) समान – सरखु नहि तेवु

विसारिन् वि० फेलातु, वीखरातु (२) सरकतु (३) विस्तृत [शोक

विस्मरण न०, **विस्मरणा** स्त्री० दुःख;

विसृ १ प० फेलावुं, प्रसरवुं (२) पाछा फरवु

विसृज् ६ प० तजी देवु (२) जवा देवु (३) मोकलवु – विदाय आपवी (४) आपवु (५) फेंकवु, छोडवु (६) उच्चारवु (७) सर्जवु (८) –माथी जातने मुक्त करवी

विसृत वि० फेलायेलु, पथरायेलु (२) लवायेलु (३) मोकलेलुं (४) गरी पडेलु (५) उच्चारेलु [सरकतु

विसृत्वर वि० फेलातु, पथरातु (२)

विसृप् १ प० जवु, खसवु (२) चोतरफ ऊडवु के भटकवु (३) फेलावु (४) पडवु (५) नासी जवु

विसृमर वि० सरकतु, धीमेथी खसतु

विसृष्ट ('विसृज्'नु भू० कृ०) वि० छोडेलु – काढेलु – फेंकेलु (२) सर्जेलु (३) त्यागेलु (४) मोकलेलु (५) विदाय करेलु (६) आपेलु

विस्तर पु० फेलावो; विस्तार (२) बारीक विगतो, विगतवार वर्णन (३) पुष्कळता, जथो; संख्या (४) बेठक, पथारी

विस्तार पु० प्रचार; फेलावो (२) पहोळाई, मोटाई (३) फेलायेलो प्रदेश (४) बारीक विगतो

विस्तीर्ण वि० फेलायेलु, प्रसरेलु (२) पहोळु, मोटु, विशाळ

विस्तृ ५ उ० विस्तारवु; फेलाववुं (२) ढांकवु (३) विखेरवु

विस्तृत वि० फेलायेलु; प्रसरेलु (२) पहोळु; मोटु (३) विकसेलु

विस्तृ ९ उ० जुओ 'विस्तृ'

विस्था १ आ० [वितिष्ठते] जुदा ऊभा रहेवु (२) रहेवु, स्थिर रहेवु (३) फेलावु [टीपु; कण

विस्पंद पु० टपकवु – झरवु ते (२)

विस्फर् ६ प० जुओ 'विस्फुर्'

विस्फार पु० कंप; ध्रुजारी, धडकाट (२) धनुष्यनो टंकार (३) पहोळु –करवु उघाडवु ते

विस्फारित वि० ध्रुजावेलु; कंपावेलु (२) ध्रूजतु, कंपतु (३) टंकार करेलु (४) पहोळु – खुल्लु करेलु

विस्फुर् ६ प० ध्रूजवु; कंपवु, धडकवु (२) आमतेम खसवु; छूटवा प्रयत्न करवो (३) चळकवु, चमकवु (४) धनुष्यनो टंकार करवो (५) (आंखो) पहोळी करवी – फाडवी

विस्फुरित वि० ध्रूजतु, कंपतु (२) फूलेलु; मोटु थयेलु (३) चमकतु

विस्फुर्ज् १ प० जुओ 'विस्फूर्ज्'

विस्फुलिंग पुं० तणखो
विस्फूर्ज् १ प० गाजवु (२) पडघो पडवो (३) वधवु (४) चमकवु; देखावु; प्रकाशवु
विस्फूर्ज पु० गाजवु ते
विस्फूर्जथु पु० गर्जना, गडगडाट (२) घूघवाट करतु धसी आववु ते (मोजानु) (३) वीजळीनी जेम अचानक देखावु ते
विस्फूर्जित न० गर्जना, गडगडाट (२) परिणाम (३) सपाटो (पवननो) (४) (भवा) सकोचवा ते
विस्फोट पु० फोडलो (२) फूटवु – कडाको थवो ते
विस्फोटक पु० फोडलो
विस्मय पु० अचबो, आश्चर्य, नवाई (२) गर्व (३) सदेह
विस्मयपद न० नवाई पामवा जेवी वस्तु
विस्मयंकर, विस्मयंगम वि० आश्चर्यचकित करे तेवु [चकित
विस्मयाकुल, विस्मयाविष्ट वि० आश्चर्य-
विस्मरण न० भूली – वीसरी जवु ते
विस्मापन वि० नवाई पमाडे तेवु
विस्मि १ आ० आश्चर्य पामवु, नवाई पामवी (२) गर्व करवो [मानी
विस्मित वि० आश्चर्यचकित (२) अभि-
विस्मृ १ प० वीसरी जवु, भूली जवु
विस्मृत वि० भूली जवायेलु
विस्मृति स्त्री० विस्मरण, भूली जवु ते
विस्मेर वि० आश्चर्यचकित
विस्र वि० –नी गंधवाळु (२) न० काचा मासनी दुर्गंध
विस्रगंध, विस्रगंधि, विस्रगंधिन् वि० काचा मासनी दुर्गंधवाळु
विस्रब्ध वि० जुओ 'विश्रब्ध' [विना
विस्रब्धम् अ० विश्वासपूर्वक, सकोच
विस्रव, विस्राव पु० झरवु – टपकवु ते
विस्रस्, विस्रसा स्त्री० क्षीणता, क्षय
विस्रस्त वि० ढीलु, अशक्त (२) छूटी गयेलु
विस्रंभ पु० जुओ 'विश्रभ'
विस्रंस् १ आ० सरी पडवु, ढीलु थई जवु
विस्रंसन वि० नीचे गरी पडे तेम करतु (२) ढीलु करतु; छोडी नाखतु (३) न० गरी पडवु ते (४) ढीलु करवु के छोडी नाखवु ते
विस्रु १ प० टपकवु, झरवु (२) पीगळी जवु; ओगळी जवु
विस्वन् १ प० गर्जवु, चीस पाडवी
विस्वर वि० बेसूरु (२) अवाज विनानु
विहग पु० आकाशगामी एवु ते (२) पखी (३) बाण (४) मेघ
विहत वि० पूरेपूरु हणेलु (२) ईजा पामेलु (३) सामनो के रुकावट करायेलु
विहति स्त्री० हणवु ते (२) निष्फळता, पराजय (३) हताशा, अनादर
विहन् २ प० हणवु, वध करवो; नाबूद करवु (२) सखत प्रहार करवो – मारवु (३) विघ्न करवु (४) ना पाडवी, नकारवु (५) निराश करवु (६) छूटु पाडवु
विहर पु० लई जवु ते (२) छूटु पाडवु ते (३) बदलवु ते (४) विहार, क्रीडा
विहरण न० हरण करवु ते (२) फरवु ते, चक्रमण (३) विहार, क्रीडा
विहर्तृ पु० भटकनारो (२) लूटारु
विहस् १ प० धीमेथी हसवु; स्मित करवु (२) हसी काढवु; मजाकमा उडाववु
विहसित न० स्मित; धीमु हास्य
विहस्त वि० हाथ विनानु (२) मूझायेलु, गाभरु, व्याकुळ (३) असमर्थ, अशक्तिमान
विहंग पु० पक्षी (२) बाण (३) मेघ
विहंगम वि० आकाशमा फरतु (२) पु० पखी (३) सूर्य
विहंगमा, विहंगमिका, विहंगिका स्त्री० कावडनो दाडो
विहा ३ प० तजवु

विहाय अ० छोडीने, तजीने (२) छतां (३) –नो अपवाद करीने (४) –थी वधु होय तेम [पखी
विहायस् पु०, न० आकाश (२) पु०
विहायस पु० आकाश
विहार पु० लई जवु – हरी जवु ते (२) भटकवु ते, फरवु ते, चक्रमण (३) क्रीडा, खेल, रमत (४) (हाथ–पग इ०) हलाववु ते, फेरववु ते (६) बगीचो, उपवन (६) जैन के बौद्ध मदिर के मठ (७) बिहार देश (८) (यज्ञ करनार) यजमाननु घर
विहारदासी स्त्री० भिक्षुणी
विहारदेश विहारभूमि पु० (ढोरने) चरवानु बीड, चरो
विहारवत् वि० –नो आनद लेतु
विहारिन् वि० विहार – क्रीडा करतु; आनद करतु (२) वधतु (३) सुदर
विहित ('वि+धा' नु भू० कृ०) वि० करेलु, आचरेलु (२) गोठवेलु, नियत (३) आज्ञा करेलु (४) मूकेलु (५) न० आज्ञा, विधान
विहिति स्त्री० आचरण, कृत्य (२) गोठवणी
विहीन वि० तजायेलु (२) विनानु; रहित (३) हीन, हलकट
विहृ १ प० हरी जवु, लई जवु (२) दूर करवु, नाबूद करवु (३) पडवा देवु (आसु) (४) व्यतीत करवु (समय) (५) आनद करवो, क्रीडा करवी (६) रहेवु
विहृत वि० विहार कर्यो होय तेवु (२) न० विहार, क्रीडा (३) चक्रमण
विहृति स्त्री० दूर करवु – लई जवु ते (२) विहार, क्रीडा (३) विस्तार
विहेठक पु० हानि करनारो (२) निंदक
विहेल् –प्रेरक० आ० पजववु
विह्वल् १ प० हालवु, कपवु
विह्वल वि० क्षुब्ध; व्याकुळ (२) गाभरु (३) पीडित
विंद वि० मेळवनारु; पामनारु (२) पु० दिवसनु एक खास मुहूर्त
विंध्य पु० एक पर्वत
विंध्यवासिनी स्त्री० दुर्गानु एक नाम
विंशति स्त्री० वीस (सख्या)
वी (वि+इ) २ प० चाल्या जवु, दूर थवु (२) व्यय – फेरफार थवो (३) खर्च करवु
वीकाश पु० प्रकाश; तेज, काति
वीक्ष् १ आ० जोवु, निहाळवु (२) गणवु, मानवु
वीक्षा स्त्री० –तरफ जोवु ते (२) तपास (३) ज्ञानशक्ति (४) बेहोशी
वीक्षण न० आख
वीक्षणा स्त्री० दृष्टि, नजर (२) तपास
वीक्षित न० दृष्टि, नजर
वीचि पु०, स्त्री० तरग, मोजु (२) फुरसद (३) आनद (४) चचळता
वीचिक्षोभ पु० मोजाओनु ऊछळवु ते
वीची स्त्री० मोजु, तरग
वीज् १ आ० जवु (२) १० उ० पखाथी पवन नाखवो (३) पपाळवु
वीजन न० पखो नाखवो ते (२) पखो
वीटा स्त्री० गिल्ली दडो (२) तप माटे मोमा रखातो धातु के पथ्थरनो गोळो
वीटि, वीटिका, वीटी स्त्री० पाननी बीडी (२) चोळीनी गाठ
वीणा स्त्री० एक ततुवाद्य
वीणापाणि पु० नारद
वीणावाद पु० वीणा वगाडनारो
वीणिन् वि० वीणा वगाडतु
वीत ('वि + इ' नु भू० कृ०) वि० गयेलु, विदाय थयेलु (२) जवा दीधेलु; छूटु करेलु (३) बाद राखेलु (४) –विनानु, –रहित (मोटे भागे समासमा उदा० 'वीतशक') (५)

पहेरेलु (६) न० (हाथीने) अकुश भोंकवु ते

वीतभय वि० निर्भय, भयरहित

वीतराग वि० आसक्ति के तृष्णा विनानु (२) रग विनानु

वीतसूत्र न० जनोई, उपवीत

वीति पु० घोडो (२) स्त्री० जवु ते (३) उत्पत्ति (४) भोग, भोजन (५)काति, तेज (६) निवृत्ति, अत

वीथि स्त्री० रस्तो, मार्ग (२) पक्ति (३) बजार, दुकान (४) घोडाने केळववानु मेदान

वीथिका स्त्री० मार्ग, रस्तो (२)चित्रो दोरेली भीत, कागळनो वीटो, जेना उपर चित्रो दोर्यां होय

वीथी स्त्री० जुओ 'वीथि' [वेलु

वीथीकृत वि० पक्ति के ढगलामा गोठ-

वीनाह पु० कूवानु ढाकण के मथाळु

वीप्सा स्त्री० व्याप्ति (२) पुनरुक्ति

वीर वि० शूरवीर, बलिष्ठ (२) उत्तम, श्रेष्ठ (३) पु० पराक्रमी योद्धो (२) वीररस (३) नट (४) पुत्र (५) पति (६) यज्ञनो अग्नि

वीरण न० सुगधी वाळो

वीरपट्टिका स्त्री० कपाळ उपर पुरुषो वडे पहेरातो सोनानो पटो

वीरपान न० सैनिको युद्ध पहेला के पछी जे स्फूर्तिदायक पीणु पीए छे ते

वीरलोक पु० इद्रनु स्वर्ग (वीर लोको पामे छे ते) [होय तेवी स्त्री

वीरवती स्त्री० पति अने पुत्र जीवता

वीरस्थान न० वीरासन (२) स्वर्ग

वीरहन् पु० अग्निहोत्र न करनार ब्राह्मण (२) बालहत्या करनारो

वीरायते आ० (वीरनी पेठे पराक्रम करवु)

वीराशंसन न० रणभूमि

वीरासन न० योगनु एक आसन (२) एक ढीचण टेकवीने बेसवु ते

वीरुध् स्त्री० लता, फेलाती वेल

वीरुध पु० वृक्ष

वीरुधा स्त्री० जुओ 'वीरुध्'

वीर्य न० बळ, ताकात (२) शुक्रधातु (३) तेज (४) सोनु [मेळवेलु

वीर्यशुल्क वि० पराक्रम वडे खरीदेलु–

वीवध पु० भार, बोजो (२)अनाजनो सचय (३) मार्ग, रस्तो (४) भार वहेवानी जूसरी [इच्छावाळु

वुवूर्षु वि० वरवानी – पसद करवानी

वृ १ प० ९ उ० पसद करवु (२) वरदान मागवु (३) लग्न माटे पसद करवु (४) मागवु, याचवु (५) ढाकवु (६) घेरवु (७) निवारवु (८) १० उ० पसद करवु (९) लग्न माटे पसद करवु (१०) याचवु

वृक पु० वरु

वृकोदर पु० भीमसेन

वृक्ष पु० झाड

वृक्षक पु० नानु झाड (२) झाड

वृक्षतक्षक पु० झाड कापनारो

वृक्षांघ्रि पु० वृक्षनु मूळ

वृज् २ आ० तजवु, छाडवु (२) ७ प० तजवु (३) पसद करवु (४) प्रायश्चित्त करवु (५) हरी जवु, लई लेवु (६) १ प०, १० उ० तजवु (७) वाद राखवु, छाडवु

वृजिन वि० वाकु, वळेलु (२) दुष्ट, पापी (३) पु० वाळ (४)दुष्ट माणस (५) न० पाप (६) दुःख, आपत्ति (आ अर्थमा पु० पण)

वृत् ४ आ० पसद करवु, गमवु (२) वहेंचवु (३) १० उ० प्रकाशवु

वृत् १ आ० होवु, रहेवु (२) बनवु, थवु (३) प्रवर्तमान थवु (४) निर्वाह थवो (५) घूमवु, फरवु (६) लव-लीन थवु (७) वर्तन राखवु (८) अनुसरवु (९) अर्थ थवो – होवो (१०) परिणाम लाववु

–प्रेरक० घुमाववु (२) आचरवु (३) निर्वाह करवो (४) वर्णवी वताववु (५) टपकाववु (आसु)

वृत ('वृ' नु भू० कृ०) वि० वरेलु, पसद करेलु (२) ढाकेलु, छुपावेलु (३) वीटळायेलु, घेरायेलु

वृति स्त्री० पसद करवु ते (२) छुपाववु ते (३) याचवु ते (४) वाड

वृत्त ('वृत्' नु भू० कृ०) वि० थयेलु; वनेलु, अस्तित्वमा आवेलु (२) पूरु थयेलु (३) आचरेलु (४) व्यतीत, भूत (५) गोळ आकारनु (६) मृत (७) दृढ, स्थिर (८) ढाकेलु (९) न० घटना, वनाव (१) अहेवाल, वृत्तात, समाचार (११) धधो, रोजगार (१२) वर्तन, आचरण (१३) सद्वर्तन (१४) रूढि, परपरा (१५) वर्तुळ (१६) छद

वृत्तचूड (–ल), वृत्तचौल वि० चूडाकरण – वाळ उतारवानो सस्कार थयो होय तेवु [आकारनु

वृत्तवत् वि० चारित्रवान (२) गोळ

वृत्तशस्त्र वि० शस्त्रविद्यामा पारगत एवु

वृत्तसमाप्तिलिपि स्त्री० हस्तप्रतने अते मुकाती नागरी 'छ' जेवी गाळ आकृतिओ [होय तेवु गोळ

वृत्तानुपूर्व वि० धीमे धीमे साकडु थतु

वृत्तानुवर्तिन् वि० आज्ञापालक

वृत्तात पु० घटना, वीना (२) समाचार (३) अहेवाल

वृत्ति स्त्री० अस्तित्व (२) अमुक स्थितिमा होवु – रहेवु ते, स्थिति (३) क्रिया, गति (४) वर्तन (५) व्यवसाय, धधो (६) जीवनयात्रा, निर्वाह (७) पगार, वेतन (८) व्यवहार, वर्ताव (९) विवरण, व्याख्या (१०) गोळ फरवु ते (११) चक्रनो घेरावो (१२) भिन्न रसोमा उपयोगी मानेली वर्णन करवानी शैली (कौशिकी, सात्वती, आरभटी अने भारती) (१३) शब्दनो अर्थ सूचवनारी शक्ति (अभिधा, लक्षणा, व्यजना)

वृत्तिचक्र न० परस्पर वर्तावनी परिपाटी, एक बीजा साथेनु वर्तन

वृत्तिभंग पु० आजीविकानो अभाव

वृत्तिभाज् वि० होमादि रोजिदा व्यापार के पुण्य-पाप आदि प्रवृत्ति करनार

वृत्तिवैकल्य न० जुओ 'वृत्तिभग'

वृत्र पु० इद्रे मारेलो एक राक्षस (अधकारनु मूर्त रूप) (२) वादळ, मेघ

वृत्रशत्रु, वृत्रहन् पु० इद्र

वृत्वन् पु० आकाश

वृथा अ० फोगट, व्यर्थ; नाहक, अघटितपणे, मूर्खताथी, खोटी रीते

वृथाकार पु० मिथ्या – खाली देखाव, वास्तविक नहि पण आभासरूप एवु

वृथामति वि० मिथ्या बुद्धिवाळु, मूर्ख

वृद्ध ('वृध्' नु भू० कृ०) वि० वधेलु, मोटु थयेलु (२) घरडु (३) वर्षो गयेलु के मोटु थयेलु (नामासने अते उदा० 'वयोवृद्ध', 'ज्ञानवृद्ध') (४) मोटु (५) भेगु थयेलु (६) डाह्यु; समजणु (७) पु० घरडो माणस (८) आदरपात्र माणस

वृद्धयुवति स्त्री० कुट्टणी (२) दायण (प्रसूति करावनारी)

वृद्धश्रवस् पु० इद्र

वृद्धि स्त्री० वधवु ते, विकास; वधारो (२) चद्रनी कळानु वधवु ते (३) समृद्धि (४) उन्नति (५) व्याज (६) नफो (७) कापी नाखवु ते (८) पीडा

वृद्धिमत् वि० वृद्धि पामतु (२) समृद्ध

वृध् १ आ० वधवु, वृद्धि थवी (२) चालु रहेवु, टकवु (३) ऊचु चडवु (४) ('दिष्ट्या' साथे) अभिनदनने पात्र थवु (५) १० उ० बोलवु (६) प्रकाशवु

वृश्चिक पु० वीछी [ध्र्यवान थवु
वृष् १ प०,वरसवु (२) १० आ० साम-
वृष पु० साढ, आखलो (२) दरेक वर्गनु मुख्य ते (समासने अते; उदा० 'मुनिवृष') (३) इंद्र (४) पुण्य (५) कोई पण नर जानवर (६) उदर
वृषण पु० अडकोष
वृषदर्भ वि० इंद्रनो गर्व हरनारु
वृषदंश, वृषदशक पु० विलाडो
वृषध्वज पु० शिव
वृषन् पु० आखलो, साढ (२) कोई पण वर्गनु श्रेष्ठ ते (३) इंद्र
वृषभ पु० आखलो (२) कोई पण नर जानवर (३) कोई पण वर्गनु श्रेष्ठ ते (समासने अते, उदा० 'द्विजवृषभ')
वृषभध्वज पु० शिव
वृषभस्कंध वि० पहोळा खभावाळु
वृषल पु० शूद्र, बहिष्कृत माणस (२) चद्रगुप्त मौर्य
वृषली स्त्री० शूद्रा
वृषलीपति पु० शूद्रानो पति
वृषसेन पु० कर्ण [वाळु
वृषस्कंध वि० साढ जेवा पहोळा खभा-
वृषस्यती स्त्री० पुरुष-समागमनी इच्छा-वाळी स्त्री
वृषाकपि पु० शिव (२) विष्णु (३) इंद्र (४) अग्नि (५) सूर्य
वृषाक पु० शिव [(कुशनु) आसन
वृषी स्त्री० तपस्वी के ब्रह्मचारीनु
वृष्ट ('वृष्'नु भू०कृ०) वि० वरसेलु
वृष्टि स्त्री० वरसवु ते, वरसाद
वृष्णि वि० नास्तिक (२) क्रोधी (३) पु० श्रीकृष्णना पूर्वजनु नाम (४) श्रीकृष्ण (५) घेटो
वृष्णिगर्भ पु० श्रीकृष्ण
वृष्णिपाल पु० भरवाड
वृष्य वि० पौष्टिक, वीर्यवर्धक
वृसी स्त्री० जुओ 'वृषी'
वृहत् वि० जुओ 'बृहत्
वृहती स्त्री० नारदनी वीणा (२) वाणी
वृहतीपति पु० बृहस्पति
वृत पु० दीटु
वृताक पु० वताक [झूमखु, गुच्छो
वृंद न० टोळु, समूह (२) ढग, जथो (३)
वृंदा स्त्री० तुलसी (२) राधिका
वृंदार पु० देव
वृंदारक वि० घणु, मोटु (२) उत्तम (३) मनोहर (४) आदरणीय (५) पु० देव (६) कोई पण वर्गमा श्रेष्ठ (समासने अते)
वृंदावन न० गोकुळ नजीकनु वन
वृंदिष्ठ वि० घणु मोटु (२) अति सुदर ('वृंदारक'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)
वृंदीयस् वि० (बेमा) वधु मोटु के सुदर ('वृंदारक'नु तुलनात्मक रूप)
वॄ ९ उ० पसद करवु, वरवु
वे १ उ० वणवु (२) गूथवु, बाधवु
वेक्षण न० देखरेख राखवी ते
वेग पु० जुस्सो (२) गति, झडप (३) क्षोभ (४) प्रवाह (५) बळ, ताकात (६) प्रसरवु ते (जेम के झेरनु) (७) साहस; अविचारी कृत्य (८) बाणनी गति
वेगतस् अ० वेगथी; उतावळथी
वेगवाहिन् वि० वेगथी जतु
वेगसर पु० खच्चर
वेगानिल पु० वेगथी ऊभो थयेलो वटोळ
वेगित वि० वेगवाळु करेलु (२) वेग-वान (३) क्षुब्ध [वृद्धिगत
वेजित वि० गाभरु; व्याकुळ (२)
वेणा स्त्री० एक नदी (कृष्णाने मळे छे)
वेणि स्त्री० वाळनो गूथेलो चोटलो (२) शणगार वगर एक ज जूडामा वाळ गूथी पीठ उपर लटकता राखे ते (पतिवियोगमा) (३) प्रवाह (४) बे के वधु नदीओनो संगम
वेणिका स्त्री० वेणी (२) चालु प्रवाह

वेणिबंध पु० वाळनो गूथेलो चोटलो
वेणिसंहार पु० छूटा वाळने वेणीमा वाधवा ते
वेणी स्त्री० जुओ 'वेणि'
वेणु पु० वास (२) नेतर, वरु (३) वासळी (४) पताका
वेणुक पु० वासळी (२) वासळी वगाडनारो (३) न० वासनो परोणो
वेतन न० पगार, रोजी
वेतस पु० नेतर, वरु
वेतसगृह न० नेतरनो वनेलो मडप
वेतसवृत्ति वि० नेतरनी पेठे वळी –नमी जतु
वेतसी स्त्री० नेतर, वरु
वेतंड पु० हाथी
वेताल पु० एक जातनु भूत, मडदामा पेठेलु भूत (२) द्वारपाळ
वेतालसाधन न० वेताळने साधी तेनी मदद मेळववी ते [मेळवनारो
वेतृ पु० ज्ञाता (२) ऋषि (३) पति (४)
वेत्र पु०, न० नेतर, वरु, वास (२) दडो (३) वृत्रासुर [चोकीदार
वेत्रधर, वेत्रधारक पु० छडीदार;
वेत्रयष्टि, वेत्रलता स्त्री० नेतरनो दड
वेत्रवती स्त्री० एक नदी (आजे जेने बेटवा कहे छे)
वेत्रवल्ली स्त्री० एक जातनो सुदर वास (जेमाथी मोती मळतु कहेवाय छे)
वेद पु० ज्ञान (२) पवित्र ज्ञान, हिदुओना प्राचीन धर्मग्रथ (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्ववेद) (३) कर्मकाड, यज्ञप्रक्रिया (४) स्मृति साहित्य ('आम्नाय' ने आधारे प्रवर्तेलु)
वेददृष्ट वि० वेदोए फरमावेलु के मान्य राखेलु
वेदन न०, वेदना स्त्री० जाणवु ते (२) लागणी (३) पीडा; दु:ख (४) मिलकत (५) लग्न
वेदमातृ स्त्री० गायत्रीमत्र (२) सरस्वती, सावित्री अने गायत्री
वेदवाद पु० कर्मकाड
वेदविद्वस् त्रि० वेद जाणनार
वेदव्यास पु० (वेदोने गोठवनार) व्यासमुनि
वेदस् न० धन, मिलकत
वेदाग न० वेदना छ अंगो (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छद, ज्योतिष) –मानु दरेक
वेदात पु० हिंदु तत्त्वज्ञानना छ दर्शनोमानु छेल्लु दर्शन, उत्तरमीमासा
वेदि स्त्री० यज्ञ माटेनो कुड (२) वच्चेथी साकडो एवो अमुक आकारनो कुड (जेथी स्त्रीनी कमर तेनी साथे सरखावाय छे) (३) मदिर के महेलना आगणानो चोतरो (४) ऊचु आसन (५) मुद्रा, महोर
वेदिका स्त्री० यज्ञकुड (२) जुओ 'वेदि' अर्थ २ (३) बेठक (४) आगणानी वच्चे आवेलो छाजवाळो चोतरो (५) मडप [थयेली)
वेदिजा स्त्री० द्रौपदी (यज्ञकुडमा उत्पन्न
वेदित वि० जणावेलु
वेदिन् वि० जाणनारु (२) परणनारु
वेदी स्त्री० जुओ 'वेदि'
वेद्य वि० जाणवानु, जाणवा लायक (२) शीखवा – समजवा योग्य (३) परणाववानु
वेध पु० वीधवु ते (२) दर, छिद्र; खाडो (३) ऊडाई (खाडानी) (४) सूर्य, ग्रह, नक्षत्र वगेरेनु स्थळ नक्की करवु ते
वेधक पु० (रत्नो) वीधनारो
वेधस् पु० स्रष्टा (२) ब्रह्मा (३) ब्रह्मा पछीनो गौण स्रष्टा (दक्ष इ०)
वेधिन् वि० वीधनारु
वेप् १ आ० ध्रूजवु, कपवु

वेपथु पु० कंप, ध्रुजारी
वेपन न० कंप, ध्रुजारी (२) पणछनो टंकार करवो ते
वेम पु०, **वेमन्** न० साळ (वणवानी)
वेला स्त्री० वेळा, समय (२) मोसम, तक (३) फुरसद, अवकाश (४) प्रवाह (५) दरियाकिनारो (६) सीमा, मर्यादा
वेल्ल् १ प० जवु, खसवु (२) हालवु, कपवु
वेल्लन न०, **वेल्लना** स्त्री० हालवु–कपवु ते (२) गबडवु ते (जमीन उपर) (३) मोजानु ऊछळवु ते (४) जोरथी घूमडवु ते
वेल्लित ('वेल्ल्' नु भू० कृ०) वि० कपतु, कपेलु (२) वाकु
वेश पु० प्रवेश (२) घर, रहेठाण (३) वेश्यावाडो (४) पोशाक (५) सोग (६) वेश्याजन
वेशनारी, वेशवधू, वेशवनिता स्त्री० वेश्या
वेशंत, वेशांत पु० नानु खाबोचियु (२) अग्नि
वेश्मन् न० घर, निवासस्थान
वेश्मवास पु० सूवानो ओरडो
वेश्या स्त्री० गणिका
वेश्यापण पु० वेश्याने आपवानो दर
वेष पु० पोशाक, पहेरवेश
वेष्ट् १ आ० वीटवु, घेरवु (२) पहेरवु –प्रेरक० वीटाळवु, घेरवु
वेष्टन न० वीटवु ते, वीटळावु ते (२) ढाकण (३) फेंटो
वेष्टित ('वेष्ट्' नु भू० कृ०) वि० वीटेलु, घेरेलु (२) पहेरेलु (३) रोकेलु, अटकावेलु
वेसर पु० खच्चर
वेसवार पु० गरम मसालो
वेहत् स्त्री० वध्या गाय (२) गर्भ गळी जतो होय तेवी गाय
वै १ प० सुकावु (२) सुस्त थवु
वै अ० पादपूरण, **संबोधन तथा** अनुनय एवा अर्थ बतावतो **अव्यय**
वैकक्ष, वैकक्षिक न०, **वैकक्षिकी** स्त्री० जनोई पेठे पहेरातो हार
वैकट्य न० विकटता (२) मोटापणु
वैकर्तन पु० कर्णनु नाम
वैकर्तनकुल न० सूर्यवंश
वैकल्पिक वि० विकल्पे थतु के लेवातु (२) अनिश्चित
वैकल्य न० दोष, खामी (२) अपगता (३) असामर्थ्य, अशक्ति (४) व्याकुळता (५) अभाव
वैकालिक वि० समीसाजने लगतु
वैकिंकर पु० मृत्यु
वैकुंठ वि० दुर्धर्ष (२) पु० विष्णु (३) न० विष्णु लोक
वैकुंठीय वि० विष्णु के वैकुंठने लगतु
वैकृत वि० बदलायेलु (२) विकार पामेलु (३) सात्त्विक (४) न० फेरफार, परिणाम (५) धिक्कार, तिरस्कार (६) स्थिति के देखावमा थयेलो फेरफार, कद्रूपापणु (७) अनिष्टसूचक घटना (८) कपट
वैकृतविवर्त पु० शोचनीय स्थिति दुःखी अवस्था
वैकृत्य न० फेरफार, परिणाम (२) दुःखी अवस्था (३) अकुदरती बनाव (४) वेर, धिक्कार
वैक्रान्त न० एक जातनु रत्न
वैक्लव, वैक्लव्य न० व्याकुळता, गभराट, क्षोभ (२) दुःख, विफळता
वैखरी स्त्री० वाणीनी चोथी कोटी –स्पष्ट उच्चारायेली वाणी (२) वाणी, बोलवानी शक्ति
वैखानस वि० तपस्वीने लगतु; तपस्वीए आचरवानु (२) पु० वानप्रस्थ तपस्वी (३) प्रजापति – ब्रह्माना वाळ अने नखमाथी पेदा थयेल तपस्वी
वैगुण्य न० गुणरहितता (२) अनुकूळताने अभाव (३) गुणोमा भेद के विरोध होवापणु (४) नीच होवापणु

वैघसिक वि० वधेलु भोजन खानारु (तपस्वीओनो एक वर्ग)
वैचक्षण्य न० विचक्षणता, कुशळता
वैचित्त्य न० दुःख; खेद
वैचित्र, वैचित्र्य न० विचित्रता (२) विविधता (३) आश्चर्य (४) विकळता
वैजन्य न० एकांत; निर्जनता
वैजयंत पु० इंद्रनो महेल (२) इंद्रनो ध्वज (३) ध्वज (४) इंद्र
वैजयंतिका स्त्री० धजा, पताका (२) मोतीनो एक जातनो हार
वैजयंती स्त्री० धजा, पताका (२) हार, माळा (३) विष्णुनी माळा
वैडूर्य न० एक मणि
वैणव वि० वांसनु (२) वांसनो दंड (३) वांसनु फळ के बीज
वैणविक पु० वांसळी वगाडनारो
वैणिक पु० वीणा वगाडनारो
वैतथ्य न० खोटापणु, जूठापणु
वैतनिक वि० पगारथी – वेतनथी काम करनारु (२) पु० मजूर, नोकर
वैतरणि(–णी) स्त्री० नरकनी एक नदी
वैतस वि० नेतर संबंधी (२) नेतर जेवु (बळवान सामे नमी जनारु)
वैतस्तिक वि० वेंत लांबु (बाण)
वैतंसिक पु० पारधी, पंखी पकडनारो (२) खाटकी, मांस वेचनारो (३) न० फांदामां नाखवु ते
वैतान वि० यज्ञ संबंधी (२) न० यज्ञकर्म (३) चंदरवो [आहुति
वैतानिक वि० यज्ञ संबंधी (२) न०
वैतान्य न० खिन्नता
वैतालिक पु० भाट, चारण, स्तुतिगानथी राजाने जगाडनारो (२) जादुगर, वेताल साधनारो (३) न० ६४ कळाओमांनी एकनु ज्ञान
वैतृष्ण्य न० तृष्णानी शांति; तृष्णानो अभाव (२) तरस छीपवी ते
वैत्तपाल्य वि० कुबेर संबंधी
वैद पु० डाह्यो माणस
वैदग्ध, न०, वैदग्धी स्त्री०, वैदग्ध्य न० निपुणता, कुशळता (२) गोठवणीनी कुशळता (३) चतुराई, चालाकी
वैदर्भ पु० विदर्भ देशनो राजा (२) न० संदिग्ध वाणी
वैदर्भी स्त्री० दमयंती (२) रुक्मिणी (३) साहित्यनी अमुक शैली (काव्य०)
वैदिक वि० वेदोने लगतु, वेदविहित (२) पवित्र (३) पु० वेद जाणनारो ब्राह्मण (४) न० वेदवाक्य
वैदुषी स्त्री०, **वैदुष्य** न० विद्वत्ता
वैदूर्य न० एक मणि
वैदेशिक वि० विदेश – परदेशनु (२) पु० परदेशी माणस
वैदेश्य वि० विदेशी (२) न० परदेशीपणु
वैदेह पु० विदेहनो राजा (जनक) (२) विदेहनो वतनी (३) वेपारी (४) वैश्यनो ब्राह्मण स्त्रीथी थयेलो पुत्र
वैदेहाः पु० ब० व० विदेहना लोको
वैदेही स्त्री० सीता
वैद्य वि० वेदो संबंधी, आध्यात्मिक (२) वैदां संबंधी (३) पु० डाह्यो – पारंगत माणस (४) वैदु करनार (५) ब्राह्मणथी वैश्य स्त्रीने थयेलो पुत्र (६) शूद्रने वैश्य स्त्रीथी थयेलो पुत्र
वैद्यक न० वैदक, वैदु
वैद्युत वि० विद्युतने लगतु (२) न० वीजळीनु तेज – प्रकाश
वैध वि० विधि – धाराधोरण मुजबनु
वैधर्म्य न० भिन्नता; विशिष्ट गुणोनो भेद (२) विरुद्धता (३) विरुद्ध धर्म के कर्तव्यवाळा होवापणु (३) अधार्मिकता
वैधव वि० चंद्र संबंधी (२) पु० बुधग्रह
वैधवेय पु० विधवानो पुत्र
वैधव्य न० विधवापणु
वैधस वि० ब्रह्माए रचेलु (२) विधि – नसीबथी बनेलु

वैधुर्य न० वियोग (२) चित्तक्षोभ
वैधृत न०, **वैधृति** स्त्री० सूर्य अने चद्रनो अमुक योग (अशुभ गणाय छे)
वैधेय वि० विधि प्रमाणेनु (२) मूर्ख (३) पु० बेवकूफ माणस
वैनतेय पु० गरुड (२) अरुण
वैनत्य न० विनय, नम्रता
वैनयिक वि० विनय – शिष्टाचारने लगतु (२) शिष्टाचार प्रमाणे वर्ते तेम करनारु (३) पु० रणगाडी
वैनायक वि० गणेश सबधी
वैपरीत्य न० विपरीतपणु (२) असबद्धता
वैप्रतिसम वि० प्रतिस्पर्धी विनानु
वैफल्य न० विफळता, निष्फळता
वैबोधिक पु० पहेरेगीर (२) समय जणावी जगाडनारो
वैभव न० समृद्धि, ऐश्वर्य (२) बळ, [शक्ति
वैभ्राज न० एक देवोद्यान
वैमनस्य न० खिन्नता, खेद (२) बीमारी
वैमातृक, वैमात्र, वैमात्रक, वैमात्रेय पु० ओरमान भाई
वैमानिक वि० दैवी विमानमा लई जवातु के सवारी करतु (२) पु० देव
वैमानिकी स्त्री० देवागना
वैमुख्य न० विमुखता, पाछा फरवु ते (२) अणगमो
वैमूढक न० स्त्रीना वेशमा पुरुषोए [करेलु नृत्य
वैयग्र, वैयग्र्य न० व्यग्रता, मूझवण (२) कोई पण वस्तुमा लवलीनता – भक्ति
वैयर्थ्य न० व्यर्थता, निरुपयोगीपणु
वैयवहारिक वि० रुढि प्रमाणेनु, सामान्य
वैयाकरण पु० व्याकरणशास्त्री
वैयाख्य पु० व्याख्या, विवरण
वैयाघ्र वि० वाघनु, वाघ सबधी (२) व्याघ्रचर्मथी ढाकेलु
वैयात्य न० निर्लज्जता; धृष्टता
वैयास वि० व्यासमाथी आवेलु
वैयासकि पु० शुकदेव
वैयासिक वि० व्यासनु, व्यास सबधी
वैर न० वेर; शत्रुवट, द्वेष, झेर (२) शत्रुसैन्य (३) वीरता, शौर्य
वैरकृत् वि० झघडाखोर (२) पु० दुश्मन
वैरक्त, वैरक्त्य न० विरक्ति (२) अप्रीति
वैरनिर्यातन न०, **वैरयातना, वैरशुद्धि** स्त्री०, **वैरसाधन** न० वेरनी वसूलात
वैरागिक, वैरागिन् पु० वेरागी, वैराग्ययुक्त एवो ते (२) बावो, साधु
वैराग्य न० सासारिक वासनारहितपणु (२) विरक्ति, अणगमो (३) खेद (४) रग बदलाई के ऊडी जवो ते
वैराज वि० ब्रह्मा सबधी
वैराट वि० विराट सबधी (२) घा विनानु (३) घरडु (४) पु० इद्रगोप
वैरानुबंधिन् वि० वेर ऊभु करनारु
वैरिन् वि० वेरी (२) पु० शत्रु (३) वीर
वैरूप्य न० कुरूपता (२) विविध रूप होवा ते [राजा
वैरोचन वि० सूर्य सबधी (२) पु० बलि-
वैरोचनि पु० विरोचननो पुत्र – बलि
वैलक्षण्य न० विलक्षणता, विचित्रता (२) विरुद्धता (३) भिन्नता
वैलक्ष्य न० मूझवण, गूचवण (२) दभ, ढोग (३) शरम (४) विपरीतता
वैवक्षिक वि० कहेवा धारेलु
वैवर्ण वि० (भूरो-पीळो इ०) रग विनानु
वैवर्ण्य न० विवर्णता, फीकाश (२) भेद, विभिन्नता (३) वर्णथी च्युत थवु ते
वैवस्वत पु० यम (२) सातमा मनु (आ मन्वतरना अधिष्ठाता)
वैवाहिक वि० विवाह सबधी (२) पु०, न० लग्न (३) लग्ननो उत्सव, लग्ननी तैयारीओ (४) पु० पुत्रवधूनो के जमाईनो बाप
वैवाह्य वि० लग्न सबधी (२) [illegible]
वैशद्य न० [illegible], [illegible]
वैशस वि० [illegible] विनाश [illegible] (२) न० वध, [illegible] (३) पीडा; [illegible]

वैशसन न० कतल, वध
वैशपायन पु० व्यासना एक शिष्य (जनमेजयने महाभारतनी कथा तेमणे सभळावी हती) [नो खैयो
वैशाख पु० वैशाख महिनो (२)वलोववा-
वैशारद वि० कुशळ, निपुण (२)ज्ञानी (३) न० गाढ ज्ञान
वैशारद्य न० निपुणता
वैशिक वि० वेश्याओ वडे सेवातु — आचरातु (२) पु० वेश्याओनो सगो
वैशिष्टय न० विशिष्टता, खासियत (२)उत्तमता
वैशेषिक वि० विशिष्ट, खास (२) वैशेपिक दर्शन सबधी (३)न० छ दर्शनोमानु एक, कणाद-दर्शन
वैश्य पु० चार वर्णोमानो त्रीजो (खेती, वेपार अने गोरक्षा करनारो वर्ण)
वैश्रवण पुं० कुबेर(२)रावण
वैश्वदेव वि० विश्वेदेव सबधी(२)न० विश्वेदेवोने अपातो बलि
वैश्वस्त्य न० विधवापणु
वैश्वानर वि० सर्व मानवजात संबधी, सर्व मनुष्योने माटे योग्य एवु (२) सामान्य, सार्वत्रिक (३) ज्योतिश्चक्र सबधी(४) पु० अग्नि(५)जठराग्नि (६) परमात्मा (स्थूल शरीरोनो अभिमानी)
वैश्वानरी स्त्री० चद्रना मार्गनो एक विभाग (भाद्रपदा अने रेवती नक्षत्रो) (२) वर्षना प्रारभे करातो एक यज्ञ
वैश्वासिक वि० विश्वासु
वैष पु० कतल
वैषमेषव वि० विषमेषु — कामदेव सबधी
वैषम्य न० विषमता (२) खरबचडा-पणु, खाडाखैयावाळा होवापणु (३) आफत, सकट (४)अन्याय (५)भूल
वैषयिक वि० विषय—वस्तु सबधी (२) इद्रियविषय सबधी
वैष्णव वि० विष्णु सबधी (२)विष्णुनी उपासना करनारु (३)न० वैकुंठ
वैसारिण पु० माछलु
वैसारिणकेतन पु० मीनकेतन — कामदेव
वैहायस वि० आकाशमा होवु ते, आकाश सबधी (२)न० आकाश, अत-रिक्ष (३)आकाशमा ऊडवु ते
वैहारिक वि० विहार — क्रीडा माटेनु
वैहार्य वि० मजाक करवा योग्य (साळो के पत्नीना सगा)
वैहासिक पु० विदूषक, मश्करो
वोढृ पु० हमाल (२)आगेवान (३)पति (४)बळद (५)सारथि
व्यक्त ('व्यज्'नु भू० कृ०) वि० खुल्लु, प्रगट, स्पष्ट (२) ज्ञानी (३) न० अव्यक्त तत्त्वमाथी विकसित कार्य
व्यक्तम् अ० स्पष्टताथी, निश्चितपणे
व्यक्ति स्त्री० प्रगट — स्पष्ट करवु के थवु ते (२) भेद; विवेक (३)साचु स्वरूप (४)कोई पण वर्ग के जातिमानु एक
व्यग्र वि० व्याकुळ, मूझायेलु (२)गभ-रायेलु (३)व्यापृत, लवलीन
व्यग्रता स्त्री०, व्यग्रत्व न० व्याकुळता, गभराट, मूझवण (२) उत्सुकता, लवलीनता
व्यच् ६ प० [विचति] छेतरवु, ठगवु
व्यजन न० पखो
व्यतिकर पु० सयोग, सबध, जोडाण (२) मिश्रण, एकठु करवु ते (३) अथडावु ते (४) रुकावट, विघ्न (५) प्रसग, बनाव, घटना (६) विनिमय (७)क्षोभ (८)विनाश (९)व्यापवु ते
व्यतिकरित वि० व्याप्त
व्यतिकीर्ण वि० मिश्रित (२)सबद्ध (३) आम तेम हलावेलु
व्यतिक्रम् १ उ० उल्लघन करवु, अपराध करवो (२)टाळवु, बेदरकार रहेवु (३)व्यतीत करवु (समय)

व्यतिक्रम पु० उल्लंघन (२) लोप (३) अनादर (४) ऊलटापणु (५) दोष, पाप
व्यतिक्षेप पु० झघडो, टंटो
व्यतिचुंबित वि० संबद्ध, स्पर्शतु
व्यतिपात पु० जुओ 'व्यतीपात'
व्यति २ प० भेळववु, मिश्रित करवु
व्यतिरिक्त वि० छूटु, जुदु, भिन्न (२) चडियातु [चडियाता होवु
व्यतिरिच् –कर्मणि० छूटा पडवु (२)
व्यतिरेक पु० भिन्नता, भेद (२) अलगपणु (३) उत्तमता, श्रेष्ठता (४) अमुक एक वस्तु न होय तो बीजी अमुक पण न होय एवो संबंध के नियम (न्याय०) (५) एक अर्थालंकार, जेमां उपमेयने उपमान करतां श्रेष्ठ बताव्यु होय (काव्य०)
व्यतिरेकिन् वि० जुदु, भिन्न (२) चडियातु; उत्तम (३) बाद करतु
व्यतिविद्ध वि० वीटळायेलु (२) वींधायेलु
व्यतिषक्त वि० अरसपरस जोडायेलु –संबद्ध (२) मिश्रित
व्यतिषंग पु० परस्पर संबंध (२) एकबीजामां जोडावु –अटवावु –गूंचवावु ते (३) शत्रुवटथी सामनो –अथडामण (४) विनिमय
व्यतिषज् १ प० [व्यतिषजति] माथे जोडवु, संबंधमां लाववु (२) मंडोववु (रमतमां)
व्यतिषजन न० एकबीजाने जोडवु ते
व्यतिहार पु० विनिमय, अदलोबदलो
व्यतिहृत वि० विरहित
व्यती २ प० ओळंगवु, उल्लंघन करवु (२) व्यतीत थवु (समय) (३) पाछळ मूकवु, आगळ जवु
व्यतीत वि० पसार थयेलु, वीती गयेलु (२) मृत (३) तजेलु
व्यतीपात पु० अनिष्टसूचक चिह्न, उत्पात (२) ज्योतिषमां अशुभ मनातो १७ मो योग
व्यतीहार पु० जुओ 'व्यतिहार'
व्यत्यय पु० पसार थवु ते (२) निरोध (३) ऊलटापणु (४) अदलोबदलो
व्यत्यस् २ आ० [व्यतिहे, व्यतिसे, व्यतिस्ते] चडियाता थवु (२) ४ उ [व्यत्यस्यति –ते] ऊलटु करवु
व्यत्यस्त वि० ऊलटु करेलु (२) विरुद्ध (३) असंबद्ध (४) चोकडी पडे तेम गोठवेलु (हाथ, पग इ०)
व्यत्यास पु० ऊलटो क्रम (२) विरोध (३) अदलोबदलो करवो ते
व्यथ् १ आ० व्यथा पामवी, दुःखी थवु (२) क्षुब्ध थवु
व्यथक वि० व्यथा करनारु
व्यथन वि० भारे व्यथा करनारु
व्यथा स्त्री० दुःख, पीडा (२) डर, बीक (३) क्षोभ, मूंझवण
व्यथित ('व्यथ्' नु भू० कृ०) व्यथा-पामेलु, पीडित (२) भय पामेलु, गभरायेलु
व्यध् ४ प० [विध्यते] वींधवु (२) आरपार भोंकवु (३) फरकाववु (विजयमां)
व्यध पु० वींधवु ते
व्यधिक्षेप पु० गाळ भांडवी ते
व्यपकृष् १ प० खेंची जवु (२) अवळे मार्गे लई जवु
व्यपगत वि० चाल्यु गयेलु; लुप्त थयेलु (२) –माथी पडी गयेलु, विनानु बनेलु
व्यपगम् १ प० [व्यपगच्छति] दूर जवु, खसी जवु (२) अदृश्य थवु, लुप्त थवु
व्यपगम पु० दूर थवु ते, लुप्त थवु ते
व्यपत्रप् १ आ० शरमथी मों फेरवी लेवु (२) शरमिंदा थवु
व्यपत्रप वि० निर्लज्ज, बेशरम
व्यपत्रपा स्त्री० शरमिंदगी

व्यपदिश् ६ प० कहेवु; –नामथी बोलाववु (२) खोटु कहेवु (३) ढोग करवो (४) दर्शाववु; जणाववु
व्यपदेश पु० कहेवु – जणाववु ते (२) नाम; उपनाम (३) कुळ, वश (४)ख्याति, कीर्ति(५)वहानु; मिष
व्यपदेशिन् वि० (समासमा) –नी सलाहने अनुसरतु (२) नामवाळु
व्यपदेश्य वि० नामथी ओळखवा लायक
व्यपनय पु० लई जवु – दूर करवु ते (२) गेरवर्तणूक
व्यपयान न० नासी – भागी जवु ते
व्यपरुह् –प्रेरक० [व्यपरोपयति] निर्मूळ करवु (२) रहित करवु
व्यपरोपण न० निर्मूळ – नाबूद करवु ते (२) काढी मूकवु ते (३) तोडी लेवु – कापी नाखवु ते
व्यपवृत् १ आ० पाछा फरवु (२) तजवु; छोडी देवु
व्यपश्रि १ उ० विनती करवी
व्यपाय पु० अभाव (२) अत; लोप
व्यपाश्रय पु० आशरो; आधार
व्यपाश्रयणा स्त्री० विनंती
व्यपास्त वि० काढी मूकेलु, हाकी काढेलु, दूर करेलु
व्यपे (वि + अप + इ) २ प० जुदा पडवु, छूटा पडवु (२)–थी मुक्त थवु
व्यपेक्ष् १ आ० अपेक्षा राखवी (२) दरकार राखवी, गणनामा लेवु
व्यपेक्ष वि० अपेक्षा राखतु, उत्सुक (२) निरपेक्ष (३) गणनामा लेतु
व्यपेक्षक वि० निरीक्षण करनारु; लक्ष राखनारु
व्यपेक्षा स्त्री० अपेक्षा; आकाक्षा (२) आदर; लक्ष, काळजी (३) अरसपरस सबध के आधार
व्यपेत वि० छूटु पडेलु; दूर गयेलु(२) ऊलटु(३)अनीतिमान
व्यपोढ वि० हाकी काढेलु; दूर करेलु (२) विरुद्ध, ऊलटु (३) दर्शावेलु
व्यपोह् १ उ० धोई काढवु, प्रायश्चित्त करवु(२)हाकी काढवु, दूर करवु
व्यपोह पुं० हाकी काढवु – दूर करवु ते (२)समूह(३)इनकार, नकार
व्यभिचर् १ प० उल्लघन करवु; बेवफा नीवडवु (२) अपराध करवो (३)मार्ग के नियमथी ऊलटा जवु
व्यभिचार पु० मार्ग, मर्यादा के नियमथी भ्रष्ट थवु ते; उल्लघन; भंग (२) अपराध, दोष (३) बेवफापणु (४) नियमना अपवाद–अनियमितता
व्यभिचारिन् वि० मर्यादा के नियमनु उल्लघन करतु (२) अनियमित (३) खोटु; जूठु (४) बेवफा (५) स्वच्छदी (६) अस्थिर; बदलाय तेवु
व्यभिचारिभाव पु० रसनी उत्पत्तिमा जे स्थायी भावने पुष्ट करी चाल्यो जाय छे ते क्षणिक भाव
व्यभीचार पु० जुओ 'व्यभिचार'
व्यय् १० उ० [व्यययति–ते] जवु, गमन करवु(२)खर्चवु; आपी देवु(३)१ उ० [व्ययति–ते] जवु(४)१० उ० [व्यापयति–ते] फेकवु(५)हांकवु
व्यय वि० बदलाय तेवु; नाश पामे तेवु (२) पु० नाश (३) खर्च (४)विघ्न (५)किमत, बलिदान(६) उडाउपणु (७) धन, मिलकत
व्ययगुण वि० खरचाळ, उडाउ
व्ययपर वि० उडाउ [अर्थहीन
व्यर्थ वि० निरुपयोगी, फोगट (२)
व्यलीक वि० खोटु, जूठु (२) अप्रिय (३) जूठु नहि तेवु (४)न० अप्रिय–प्रतिकूळ एवु ते (५) दु.ख–शोकनु कारण एवु ते (६) अपराध, दोष (७) युक्ति, छेतरपिंडी (८) पाप
व्यवच्छिद् ७ उ० कापी नाखवु; छूटु

पाडवु, चीरी नाखवु (२) निश्चित करवु (३) जुदु तारववु
व्यवच्छेद पु० कापी नाखवु – चीरी नाखवु ते (२) जुदु – छूटु पाडवु ते (३) निर्णय (४) नाश (५) प्रकरण
व्यवदान न० शुद्धि
व्यवधा ३ उ० वच्चे – आडे मूकवु (२) छुपाववु, ढाकवु, (३) छूटु पाडवु
व्यवधान न० आड, पडदो, ढाकण
व्यवधि पु० व्यवधान, आड, पडदो
व्यवसाय पु० उद्योग, उद्यम (२) निश्चय, निर्णय (३) अनुष्ठान, कार्य (४) धधो, व्यापार (५) व्यवहार, आचरण (६) युक्ति
व्यवसायिन् वि० उद्यमी (२) निश्चयी (३) आचरनारु, करनारु (४) धधामा वळगेलु (५) पु० वेपारी
व्यवसित वि० प्रयत्न करनारु (२) माथे लीधेलु (३) निश्चय करेलु (४) न० निश्चय, निर्णय (५) युक्ति, करामत
व्यवसिति स्त्री० निर्णय (२) प्रयास
व्यवसो ४ प० प्रयास करवो (२) इच्छवु (३) निश्चय करवो (४) माथे लेवु
व्यवस्था १ आ० [व्यवतिष्ठते] क्रमसर गोठवावु (२) अलग मुकावु (३) स्थिर थवु (४) – ना उपर अवलववु –प्रेरक० –नी उपर मूकवु, तरफ प्रेरवु (२) गोठववु (३) निश्चित करवु
व्यवस्था स्त्री० गोठवणी (२) निश्चितपणु (३) स्थिरता (४) नियम, विधि, कानून (५) करार
व्यवस्थान न० गोठवण, बदोवस्त (२) नियम, निर्णय (३) स्थिरता, दृढता (४) मर्यादा, निश्चित हद
व्यवस्थापित वि० गोठवेलु, निश्चित
व्यवस्थित वि० क्रमसर गोठवेलु (२) निश्चित, नियत
व्यवस्थिति स्त्री० जुओ 'व्यवस्थान'

व्यवहार पु० वर्ताव, आचरण (२) धधो, कामकाज (३) वेपार (४) व्याजवटु (५) रूढि, परपरा (६) सवध (७) अदालती तपास (८) फरियाद
व्यवहारक पु० वेपारी
व्यवहारतंत्र न० रोजिंदा व्यवहारनी प्रक्रिया
व्यवहारार्थिन् वि० फरियादी
व्यवहारासन न० न्यायासन
व्यवहारिन् वि० वेपार–धधो–कामकाज करतु (२) फरियादी (३) रूढि प्रमाणेनु (४) पु० वेपारी
व्यवहित वि० दूर मूकेलु (२) (वच्चे आडथी) जुदु पडेलु (३) विघ्नित (४) ढकायेलु, छुपायेलु (५) निकट सवधवाळु नहि तेवु (६) करायेलु (७) दूरनु
व्यवहृ १ प० व्यवहार–धधो–कामकाज करवा (२) अदालतमा फरियाद करवी
व्यवहृति स्त्री० प्रक्रिया, व्यवहार, आचरण (२) वेपार, धधो
व्यवाय पु० पृथक्करण, घटक छूटा पाडवा ते (२) ढाकवु – छुपाववु ते (३) विघ्न (४) ऊडा पेसवु ते (५) मैथुन, सभोग
व्यश् ५ आ० भरी काढवु, व्यापवु
व्यष्टि स्त्री० समष्टिनो प्रत्येक अश के व्यक्ति
व्यस् ४ प० उछाळवु, विखेरवु; दूर फेंकवु (२) नाश करवो (३) भाग पाडवा, गोठववु (४) ऊधु वाळवु (५) हाकी काढवु, दूर करवु
व्यसन न० दूर फेंकवु ते, दूर करवु ते (२) जुदु पाडवु ते (३) उल्लघन, भग (४) नाश, पराजय, पडती (५) नवळी बाजु (६) आफत, जोखम, सकट, दु ख (७) आथमवु ते (सूर्य इ० नु) (८) कुटेव (९) खूब मडवु ते (१०) टेव, लत

व्यसनब्रह्मचारिन् पु० साथे दुःख भोगवनारो [लागेलु

व्यसनसंस्थित वि० पोतानी लतमा

व्यसनातिभार पु० भारे विपत्ति के सकट

व्यसनिन् वि० कशानी खोटी लते चडेलु (२)कमनसीब,–नी पीडावाळु(३) कोई पण बाबतमा अतिशय लागेलु (समासमा)

व्यसु वि० प्राणरहित; मृत

व्यस्त वि० उछाळेलु, फेंकेलु (२) विखेरी नाखेलु (३) दूर करेलु (४) जुदु पाडेलु (५) 'समस्त'थी ऊलटु – जुदु जुदु एक एक एवु (६) विविध(७) ऊलटु (जेम के प्रमाण) (८) सादु, समासमा जोडायेलु नहि तेवु (शब्द)

व्यस्तन्यास वि० करचली पडी गयेलु; पीखाई गयेलु [छे तेवु

व्यस्तवृत्ति वि० जेनो अर्थ बदलाई गयो

व्यंग वि० शरीर विनानु (२) एकाद अवयव विनानु; पागळु [वाळु

व्यगार वि० अगारा विनानु, ठडा चूला-

व्यंगिता स्त्री० एकाद अग विनाना थवु के होवु ते

व्यंग्य वि० आडकतरी रीते सूचित थतु (२)न० सूचितार्थ, गर्भितार्थ

व्यंज् ७ प० स्पष्ट करवु (२)दर्शाववु

व्यंजक वि० स्पष्ट करनारु; व्यक्त करनारु(२)आडकतरी रीते सूचवनारु (वाचक के लाक्षणिकथी भिन्न) (३) पु० योग्य चेष्टाथी अतरनो भाव प्रगट करवो ते(नाट्य०)

व्यंजन न० प्रगट–स्पष्ट करवु ते (२) निशान, चिह्न (३) याद करावनार वस्तु(४)वेश, सोग(५) स्वरनी मदद विना जेनो उच्चार नथी थतो ते वर्ण (६)उमरमा आव्यानी निशानी(७) मसालावाळी–चटणी जेवी वानी (८) मसाला माटे वपराती वस्तु (९) शब्दनी व्यजनाशक्ति

व्यंजनधातु पु० वाद्य वगाडवु ते; वीणा वगाडवी ते [शब्दनी शक्ति

व्यंजना स्त्री० व्यग्यार्थनो बोध करवानी

व्यंतर पु० भूत, एक पिशाच योनि

व्यंशुक वि० नग्न, वस्त्ररहित

व्यंस् १० उ० विभाग करवो; वहेंचवु (२)छेतरवु

व्यंसक पु० ठग

व्यंसन न० ठगवु ते(२)वहेचवु ते

व्यंसित वि० छेतरायेलु(२)हारेलु(३) निष्फळ –विनअसरकारक बनावेलु

व्याकरण न० भाषाना शुद्ध प्रयोगो, नियमो वगेरेनु शास्त्र (२) पृथक्करण (३) प्रगट करवु ते

व्याकीर्ण वि० आमतेम फेकायेलु, वेरायेलु के वीखरायेलु(२)अस्तव्यस्त

व्याकुल वि० गभरायेलु; गाभरु (२) क्षुब्ध, मूझायेलु (३) व्यापृत, रोकायेलु (४) चमकतु, फरकतु

व्याकुलित वि० व्याकुळ के गाभरु बनेलु

व्याकृ ८ उ० प्रगट करवु, स्पष्ट करवु (२)समजाववु(३)कही बताववु (४) छूटु पाडवु [विकसित

व्याकोश(–ष) वि० प्रफुल्लित;

व्याक्षिप् ६ प० आम तेम उछाळवु – फेकवु (२) आकर्षवु (मनने)

व्याक्षेप पु० आमतेम उछाळवु ते (२) विघ्न, रुकावट(३)विलव(४)बीजी बाजु खेचाई जवु ते(लक्षनु) (५)गाळ (६) फेकवु – नाखवु ते

व्याक्षेपिन् वि० हाकी काढतु

व्याख्या २ प० कहेवु, जणाववु(२) समजाववु (३) नाम पाडवु, कहेवु (४) विवरण करवु

व्याख्या स्त्री० कहेवु ते(२)विवरण

व्याख्यान न० निरूपण (२) विवरण (३) भाषण

व्याघट्टन न० वलोववु ते(२)घर्षण

व्याघात पु० प्रहार करवो ते (२) अफाळवु ते (३) विघ्न (४) विरोध (५) भग, उल्लघन (६) पराजय
व्याघूर्णित वि० अमळातु, पडु पडु थतु
व्याघ्र पु० वाघ (२) उत्तम (समासमा; जेमके 'पुरुपव्याघ्र')
व्याघ्री स्त्री० वाघण
व्याज पु० कपट (२) बहानु (३) करामत
व्याजगुरु पु० देखाव मात्रमा गुरु एवो ते
व्याजपूर्व वि० –ना मात्र देखाववाळु
व्याजस्तुति स्त्री० देखीती स्तुति मारफते निंदा, एक अलकार (काव्य०)
व्याजिह्म वि० वाकु (२) मेल्यु थयेलु
व्याड पु० हिंसक पशु (२) ठग (३) इद्र
व्यात्त ('व्यादा 'नु भू० कृ०) वि० पहोळु, खुल्लु करेलु [वानी रमत
व्यात्युक्षी स्त्री० सामसामे पाणी उछाळ-
व्यादा ३ उ० उघाडवु, पहोळु करवु
व्यादान न० उघाडवु ते, पहोळु करवु ते
व्यादिश् ६ प० आदेश आपवो (२) नीमवु (पद उपर) (३) उपदेशवु (४) भाखवु (भविष्य)
व्याध पु० पारधी (२) दुष्ट, दुर्जन
व्याधव्याधम् अ० वीधी वीधीने
व्याधि पु० रोग, बीमारी
व्याधित वि० बीमार, मादु
व्याधूत वि० हलावेलु, कपतु
व्यान पु० शरीरमाना पाच प्राणमानो एक (आखा शरीरमा व्यापीने रहे छे)
व्याप् ५ प० भरी काढवु, व्यापवु (२) –मुधी पहोचवु
व्यापक वि० व्यापनारु, फेलायेलु
व्यापत्ति स्त्री० आपत्ति, कमनसीब, वरवादी (२) मृत्यु
व्यापद् ४ आ० नाश पामवु, मरी जवु –प्रेरक० मारी नाखवु (२) हानि पहोचाडवी
व्यापद् स्त्री० सकट, विपत्ति
व्यापन न० व्यापवु – फेलावु ते
व्यापन्न वि० विपत्तिमा आवी पडेलु (२) निष्फळ गयेलु (३) ईजा पामेलु (४) मृत (५) नप्ट, भ्रष्ट, अभक्ष्य
व्यापादन न० हणवु ते (२) नाश
व्यापादित वि० हणेलु, मारी नाखेलु (२) ईजा पामेलु
व्यापार पु० धधो, वेपार (२) वापरवु – काममा लेवु ते (३) प्रवृत्ति, कार्य, असर (४) प्रयत्न, उद्यम (५) माथु मारवु ते (६) –उपर मूकवु ते
व्यापारित वि० निमायेलु, कामे लागेलु
व्यापृ ६ आ० [व्याप्रियते] –मा रोकावु, –ना कामे लागवु (२) कोई पदे निमावु –प्रेरक०–नीमवु, कामे लगाडवु (२) मूकवु, स्थिर करवु, नाखवु, प्रेरवु (३) वापरवु, उपयोगमा लेवु
व्यापृत वि० काममा लागेलु – रोकायेलु (२) मूकेलु, प्रेरेलु, स्थिर करेलु
व्यापृति स्त्री० कामकाज, धधो (२) कार्य, प्रवृत्ति (३) उद्यम
व्याप्त वि० व्यापेलु, विस्तरेलु (२) –थी पूर्ण (३) मेळवेलु
व्याप्ति स्त्री० व्यापवु ते (२) नित्य साहचर्य (साध्य अने साधननु, न्याय०)
व्याम पु०, **व्यामन** न० वाम (हाथ पहोळा करता थतु अतर)
व्यामिश्र वि० मिश्रित (२) विविध (३) सदिग्ध (४) व्यग्र
व्यामिश्रक न० प्राकृत वगेरे मिश्र भापाओवाळु नाटक इ०
व्यामोह पु० मोह (२) मूझवण
व्याय पु० बाण छोडता पहेला धनुष्य खेचवानी रीत
व्यायत वि० लावु, दीर्घ (२) विस्तृत (३) काममा रोकायेलु (४) दृढ (५) तीव्र, गाढ (६) बळवान (७) ऊडु
व्यायतत्व न० स्नायुओनो विकास – मजबूताई

व्यायम् १ प० [व्यायच्छति] लाबु करवु (२) लडवु (३) प्रयत्न करवो (४) क्रीडा करवी

व्यायाम पु० लाबु करवु ते (२) कसरत (३) थाक, महेनत (४) प्रयत्न (५) लडाई, झघडो

व्यायोग पु० एक प्रकारनु एकाकी नाटक

व्याल वि० दुष्ट; क्रूर, जगली (२) पु० तोफानी हाथी (३) हिंसक पशु (४) साप (५) वाघ (६) चित्तो

व्यालग्राहिन् पु० साप पकडनारो—गारुडी

व्यालमृग पु० जगली प्राणी (२) मनुष्यभक्षी चित्तो

व्यालोल वि० चचळ, अस्थिर, ध्रूजतु (२) अस्तव्यस्त, वीखायेलु

व्यावर्जित वि० वाकु वळेलु

व्यावर्तन न० घेरी लेवु ते (२) आसपास घूमवु ते (३) गूचळु (सापनु) (४) आटो, वीटो (५) रस्तानो वळाक

व्यावल् १ प० ठेकडो भरवो, कूदवु

व्यावल्गित वि० क्षुब्ध, ऊछळतु, कूदतु

व्यावहारिक वि० व्यवहार सबधी (२) वहेवारु, वहेवारमा चाली शके तेवु (३) चालु रिवाज मुजबनु (४) भ्रमथी देखाता ससार विपयक एवु (५) पु० अमात्य, सलाहकार

व्यावहासी स्त्री० परस्पर हसवु ते

व्याविद्ध वि० बधायेलु (२) परस्पर विरोधी (३) आमतेम घुमावेलु के उछाळेलु (४) अवळे ठेकाणे मुकायेलु

व्यावृ ५ उ० पसद करवु (२) सताडवु, ढाकवु (३) रुकावट करवी

व्यावृत् १ आ० पाछा फरवु (२) विमुख थवु (३) दूर थवु, जुदा पडवु (४) आसपास घूमवु (५) आथमवु (६) पुनरावृत्ति थवी

—प्रेरक० वाकात राखवु, रद करवु; मर्यादित करवु (२) —माथी पाछु फरे तेम करवु (३) नाबूद करवु (४) जुदु पाडवु (५) आसपास घुमाववु

व्यावृत वि० ढाकेलु, सताडेलु (२) उघाडेलु, खुल्लु करेलु (३) बाद करेलु, बाद राखेलु

व्यावृत्त वि० पाछु फेरवेलु, पाछु खेंचेलु (२) जुदु पाडेलु (३) वाकात राखेलु; भिन्न (४) —मा अभाव होय तेवु (५) —माथी विरक्त (६) पलटायेलु

व्यावृत्ति स्त्री० ढाकी देवु ते (२) बाकात राखवु ते, जुदु पाडवु ते (३) मा न होवु ते (४) स्तुति (५) पुनरावृत्ति

व्यास पु० भाग पाडवा ते (२) समास छूटो पाडवो ते (३) विस्तार, पहोळाई (४) वर्तुळना मध्यबिंदुमाथी पसार थई तेना परीघने बे बाजु अडती लीटी (५) गोठवणी, सकलन (६) गोठवणी के सकलन करनारो (७) वेदव्यास

व्यासक्त वि० अति आसक्त, निमग्न (२) सलग्न (३) छूटु पाडेलु

व्यासंग पु० दृढ आसक्ति (२) तत्परता; भक्ति (३) दृढ अभ्यास (४) ध्यान, लक्ष (५) अळगापणु

व्यासज् १ प० [व्यासजति] आसक्त थवु, चोटवु

व्यासिद्ध वि० मनाई करेलु

व्यासिध् १ प० वेगळु राखवु, रोकवु

व्याहत वि० रुकावट करेलु (२) पाछु धकेलेलु (३) विफळ करेलु (४) गाभरु

व्याहन् २ प० दखल करवी, सामनो करवो (२) अतिशय हणवु (३) उल्लघन करवु, भग करवो (४) विफळ—हताश करवु (५) पजववु

व्याहरण न० बोलवु ते, उच्चारण

व्याहार पु० बोलवु ते, कथन, उक्ति (२) अवाज; ध्वनि

व्याहित वि० व्याधिग्रस्त

व्याहृ १ प० बोलवु, उच्चारवु (२)

समजाववु (३) चीस – बूम पाडवी (४) विहरवु, खूब आनद करवो (५) कापी नाखवु, जुदु करवु
व्याहृत वि० बोलेलु, उच्चारेलु (२) न० बोलवु ते (३) शब्दोच्चार विनानी वाणी के गीत (पशु-पखीना)
व्याहृति स्त्री० वाणी, शब्दो (२) कथन; उक्ति (३) सध्या वखते उच्चारातो पवित्र शब्द (भूर्, भुवस् अने स्वस्)
व्युच्चर् १ प० उल्लघन करवु (२) बेवफा नीवडवु (३) व्यभिचार करवो
व्युच्छित्ति स्त्री० समूळ नाश, उच्छेद
व्युत्क्रम् १ प० [व्युत्क्रामति] उल्लघन करवु
व्युत्क्रम पु० अतिक्रमण, उल्लघन (२) ऊलटो क्रम (३) अव्यवस्था
व्युत्क्रांत वि० उल्लघेलु (२) चाल्यु गयेलु
व्युत्क्रांता स्त्री० एक जातनी समस्या
व्युत्था १ आ० [व्युत्तिष्ठते] ऊठवु, ऊभा थवु (२) वळमा वधवु, शक्तिमान थवु (३) विरोधमा कहेवु
व्युत्थान न० प्रबळ उद्योग (२) –नी सामे थवु ते, बड (३) स्वतत्रपणे कार्य करवु ते (४) समाधिमाथी ऊठवु ते (५) उठाडवु ते (हाथीने)
व्युत्थित वि० विरुद्ध अभिप्रायनु (२) शास्त्र विरुद्ध वर्तनारु
व्युत्थिति स्त्री० जुओ 'व्युत्थान'
व्युत्पत्ति स्त्री० उत्पत्ति, मूळ (२) शब्दनी मूळ उत्पत्ति (व्या०) (३) पारगतता, निष्णातपणु (४) विद्वत्ता
व्युत्पद् ४ आ० –माथी उत्पन्न थवु (२) (धातुमाथी) नीकळवु (३) –मा प्रवीण थवु (४) पाछा आववु (समुद्रमाथी)
व्युत्पन्न वि० अनुभवी, प्रवीण (२) व्युत्पत्ति शोधेलु (शब्द)
व्युदस् ४ प० विखेरवु (२) दूर फेंकवु (३) बाजुए मूकवु (४) तजी देवु
व्युदस्त वि० दूर – बाजुए फेंकी दीधेलु
व्युदास पु० बाजुए फेंकी देवु ते (२) बाकात राखवु ते (३) निषेध (४) उपेक्षा, उदासीनता (५) वध, नाश
व्युपरत वि० अटकेलु, थोभेलु
व्युपरम पु० उपशम, विराम, अत
व्युपशम पु० पूर्ण विराम – अत (२) अशाति (३) विरमवु नहि ते
व्युप्त वि० बोडेलु (२) वीखरायेलु
व्युषित वि० प्रभातकाळ थयेलु
व्युष्ट वि० बळेलु (२) प्रभातकाळ थयेलु (३) वासो रहेलु (४) न० प्रात काळ
व्युष्टि स्त्री० प्रात काळ (२) समृद्धि (३) लावण्य (४) फळ, परिणाम
व्यूढ वि० विशाळ, विकसित (२) दृढ (३) क्रममा गोठवेलु (४) अव्यवस्थित (५) परणेलु (६) मोटु
व्यूह् १ उ० सैन्यनी व्यूहरचना करवी (२) क्रममा गोठववु – मूकवु (३) जुदु पाडवु (४) अव्यवस्थित करवु
व्यूह पु० लश्करनी गोठवणी (२) लश्कर; सैन्यविभाग (३) टोळु; जूथ (४) विभाग
व्ये १ उ० सीववु (२) ढाकवु
व्योकार पु० लुहार
व्योमग पु० आकाशचारी – देव
व्योमगमनीविद्या स्त्री० आकाशमा ऊडवानी विद्या
व्योमन् न० आकाश, अतरिक्ष
व्योमसद् पु० देव (२) गधर्व
व्रज् १ प० जवु (२) पासे जवु (३) विदाय लेवी, पाछा फरवु (४) पामवु (स्थिति) (५) १० उ० [व्राजयति–ते] जवु (६) साफ – शुद्ध करवु, सस्कारवु
व्रज पु० टोळु, समूह (२) गोवाळोनो वास (३) गायोनो वाडो (४) निवासस्थान (५) मथुरा नजीकनो प्रदेश
व्रजन न० जवु ते, भटकवु ते (२) देशनिकाल थवु ते

व्रजागना स्त्री० व्रजनारी, गोपी
व्रजित न० जवु ते, भटकवु ते
व्रण् १ प० अवाज करवो (२) १० उ० घायल करवु, ईजा करवी
व्रण पु०, न० जखम, घा (२) चाठु
व्रणन न० वीधवु ते
व्रणविरोपण वि० घा रूझवनारु
व्रणित वि० घवायेलु
व्रत पु०, न० नियमपूर्वक आचरवानु पुण्यकर्म (२) अमुक करवा न करवानो धार्मिक निश्चय (३) भक्ति के श्रद्धानो विषय (४) विधि, अनुष्ठान, कार्य (५) नियम, कानून (६) ब्रह्मचर्यव्रत
व्रतति (-ती) स्त्री० वेल (२) विस्तार
व्रतपारण न० व्रत के उपवासनी समाप्ति, उपवास पछी खावु ते
व्रतवैकल्य न० व्रत-नियमनी अपूर्णता
व्रतिक, व्रतिन् वि० व्रत धारण करनारु (२) पु० ब्रह्मचारी विद्यार्थी (३) तपस्वी (४) यजमान (यज्ञ करावनारो)
व्रात पु० टोळु; मडळी (२) न० रोजे करवानी मजूरी (३) शारीरिक श्रम (४) वरात, जान
व्रातीन वि० दहाडियु, रोजे मजूरी करतु (२) हिंसा-लूटफाटथी जीवनारु
व्रात्य पु० सस्कार न करवामा आव्या होवाथी पोतानो वर्ण गुमावी बेठेलु (प्रथम त्रण वर्णनु माणस) (२) भामटो, अधम माणस (३) शूद्र पिता अने क्षत्रिय मातानो पुत्र
व्रीड् ४ प० शरमावु (२) फेकवु
व्रीड पु०, **व्रीडा** स्त्री० शरम, लज्जा
व्रीडित वि० शरमिदु करायेलु
व्रील पु० शरम, व्रीडा
व्रीहि पु० डागर, चोखा
व्ली ९ प० [व्लिनाति] टेको आपवो (२) पसद करवु (३) दबाववु, तोडी पाडवु
—कर्मणि० भागी पडवु, बेसी पडवु

श

श न० सुख, कल्याण
शक् ५ प०, ४ उ० शक्तिमान थवु; शकवु (२) सहन करवु
—कर्मणि० शकावु
शक पु० एक राजा (२) शालिवाहन राजाथी शरू थयेलो सवत (ख्रिस्ताब्दथी ७८ वर्ष बाद)
शकट पु०, न० गाडु; गाडी (२) पु० कृष्णे मारेलो एक राक्षस
शकटिका स्त्री० नानी गाडी (रमकडु)
शकन् न० मळ, छाण (शकृत्‌ना रूपमा बीजी विभक्ति द्विवचन पछी विकल्पे आवे छे)
शकल पु०, न० टुकडो; भाग (२) घडानु ठीकरु (३) तणखो
शकार पु० राजानी रखातनो भाई (नाट्य०, मूर्ख अने गर्विष्ठ होय छे)
शकाः पु० ब० व० एक देश (२) एक जातिना लोक
शकुन पु० पक्षी (२) न० भावि शुभाशुभ सूचक चिह्न (४) शुकन
शकुनि पु० पक्षी (२) दुर्योधननो मामो —गाधार देशनो राजा
शकुंत पु० पक्षी
शकुंतला स्त्री० विश्वामित्र अने मेनकानी पुत्री, दुष्यतनी पत्नी
शकुंति पु० पक्षी
शकुंतिका स्त्री० पक्षी (२) तीड, तमरु
शकृत् न० विष्टा; छाण
शकृत्पिडक पु० छाणनो पोदळो

शक्त ('शक्' नु भू० कृ०) वि० शक्तिमान, समर्थ (२) बलिष्ठ (३) समृद्ध (४) अर्थ बतावबानी शक्तिवाळु
शक्ति स्त्री० बळ, सामर्थ्य (२) राजसत्ता (३) कवित्व शक्ति (४) देवनी मूर्तिमत ताकात (तेनी पत्नी तरीके) (५) एक अस्त्र (६) भालो (७) शब्दनु अर्थ सूचववानु सामर्थ्य (अभिधा, लक्षणा, व्यंजना) (८) (शाक्तो पूजे छे ते) जगतना मूळ कारणरूप योनि
शक्तिधर पु० भालावाळो (२) कार्तिकेय
शक्तिध्वज पु० कार्तिकेय
शक्तिनाथ पु० शिव
शक्तु पु०, न० सक्तु, साथवो
शक्त्यपेक्ष वि० शक्ति इच्छतु
शक्य वि० बनी शके के करी शकाय एवु (२) सीधु दर्शावातु (जेम के शब्दनो अर्थ) (३) मधुरभाषी
शक्र पु० इंद्र (२) स्वामी (३) घुवड (४) कुटज वृक्ष (५) अर्जुन वृक्ष
शक्रगोप पु० इंद्रगोप, गोकळगाय
शक्रजित् पु० रावणनो पुत्र मेघनाद ('इंद्रने जीतनार')
शक्रध्वज पु० इंद्रना मानमा ऊभो [करातो ध्वज
शक्रभिद् पु० जुओ 'शक्रजित्'
शक्व पु० हाथी
शचि (-ची) स्त्री० इंद्राणी
शठ वि० ठग, धूर्त (२) दुष्ट, दुराचारी (३) पु० ठग-धूर्त माणस (४) जूठो प्रेमी (५) मूर्ख के आळसु माणस
शठोदर्क वि० अते छेतरनारु
शण न० भीडीनी जातनो एक छोड
शत न० सो (सख्या) (२) कोई पण मोटी सख्या
शतक वि० सो (२) सो सख्यावाळु (३) न० सैकु (४) सो श्लोकनो सग्रह
शतकुंभ पु० एक पर्वत—ज्या सोनु मळतु कहेवाय छे (२) एक यज्ञ (३) न० सोनु
शतकृत्वस् अ० सो वखत
शतकोटि वि० सो धारवाळु (२) पु० इन्द्रनु वज्र (३) स्त्री० सो करोड
शतक्रतु पु० इंद्र
शतघ्नी स्त्री० एक अस्त्र, लोखडना खीलावाळी मोटी शिला
शतचंद्र पु० सो चद्रबिंबथी शणगारेली तरवार के ढाल
शतदल न० कमळ
शतधृति पु० ब्रह्मा (२) इंद्र (३) स्वर्ग
शतपत्र पु० मोर (२) लक्कडखोद पक्षी (३) सारस (४) एक जातनो पोपट (५) न० कमळ
शतपत्रयोनि पु० ब्रह्मा
शतपथ पु० शुक्ल यजुर्वेदनो ब्राह्मण ग्रथ (सो खडवाळो)
शतपाक वि० सो वखत उकाळेलु
शतमख, शतमन्यु पु० इंद्र
शतमान न० पल वजननु रूपु
शतमुख वि० सो मुखवाळु, सो मार्गवाळु
शतयज्वन् पु० इंद्र (सो अश्वमेध यज्ञ करनारो होवाथी)
शतलोचन पु० इंद्र ('सहस्रलोचन' पण)
शतशस् अ० सो वखत (२) सेंकडो प्रकारे (३) सेंकडों — अनेक होय तेम
शतसुख न० पार वगरनु सुख
शतह्रदा स्त्री० वीजळी (२) वज्र
शताक्ष वि० सो आखवाळु
शताक्षी स्त्री० रात्री
शतानंद पु० गौतम — अहल्यानो पुत्र; जनकनो पुरोहित
शताब्द न० सैकु
शतायुस् वि० सो वर्ष जीवतु
शतिन् वि० सो, असख्य (३) पु० सो (सिक्का के चीजो) नो मालिक
शत्रु पु० हरावनारो, विजेता, नाश करनारो (२) दुश्मन, विरोधी, हरीफ (३) पडोशनो हरीफ राजा

शत्रुकर्षण वि० शत्रुने नमावनारु, शत्रुनो नाश करनारु

शत्रुघ्न पु० सुमित्रानो पुत्र; लक्ष्मणनो जोडियो भाई [पर्वत

शत्रुंजय पु० हाथी (२) गुजरातनो एक

शद् १ उ० नाश पामवु; क्षीण थवु (२) पडी जवु
 –प्रेरक० नीचे फेंकवु, कापी नाखवु (२) दूर करवु, नाश करवो

शनकैस् अ० धीमेथी

शनि पु० ए नामनो ग्रह (२) शनिवार

शनिर्भाव पु० धीमापणु

शनैश्चर वि० हळवे हळवे चालनारु (२) पु० शनिग्रह

शनैस् अ० धीमेथी, चुपकीदीथी (२) धीमे धीमे (३) क्रमे क्रमे

शप् १, ४ उ० शाप आपवो (२) सोगद खावा (३) ठपको आपवो
 –प्रेरक० सोगदथी बांधवु

शपथ पु० शाप (२) सोगद

शपथोत्तरम् अ० सोगदपूर्वक

शपमान वि० शाप देतु (२) सोगद खातु (३) गाळो देतु, निंदतु

शपित वि० शाप आपेलु

शप्त ('शप्' नु भू० कृ०) शाप दीधेलु (२) सोगद दीधा होय तेवु (३) न० शाप (४) सोगद

शफ पु०, न० खरी

शफर पु०, शफरी स्त्री० एक नानी चळकती माछली [माणस

शबर पु० पहाडी जातिनो जंगली

शबरी स्त्री० किरात जातिनी एक स्त्री (रामनी भक्त हती)

शबल वि० काबरचीतरु (२) मिश्रित (३) म्लान, फीकु (४) क्षुब्ध

शबलिमन् पु० काबरचीतरो देखाव

शब्द् १० उ० अवाज करवो, नाद करवो (२) बोलाववु

शब्द पु० अवाज, ध्वनि; नाद (२) अर्थयुक्त एक के वधारे अक्षरोनो समुच्चय (३) नाम, संबोधन (४) शास्त्रवाक्यरूपी प्रमाण (न्याय०) (५) व्याकरण (६) कीर्ति (७) प्रणव

शब्दगुण वि० शब्दरूपी गुणवाळु

शब्दपति पु० नामनो – कहेवातो पति के मालिक [ताकनारु

शब्दपातिन् वि० अवाज उपरथी

शब्दब्रह्मन् न० वेदो (२) परमात्मानु ज्ञान (३) परमतत्त्व, परमात्मा

शब्दवेधिन् वि० अवाज उपरथी निशान ताकनारु (२) पु० एक जातनु बाण (३) धनुर्धारी (४) दशरथ (५) अर्जुन

शब्दवेध्य वि० जोया विना मात्र अवाजथी वींधवानु एवु

शब्दशास्त्र न० व्याकरणशास्त्र

शब्दसाह वि० जुओ 'शब्दवेधिन्'

शब्दाख्येय वि० शब्दोमां कही शकाय तेवु

शब्दानुरूप वि० अवाजना प्रमाणमां होय तेवु; अवाज जेवु के जेटलु

शब्दायते आ० अवाज करवो (२) गर्जवु (३) बोलाववु

शब्दित ('शब्द्' नु भू० कृ०) वि० वगाडेलु, वजावेलु, (२) उच्चारेलु (३) बोलावेलु (४) नाम आपेलु (५) शीखवेलु; समजावेलु (६) न० अवाज, बूम

शम् ४ प० [शाम्यति] शांत थवु (२) बंध पडवु, अंत आववो (३) बुझाई जवु (४) १० उ० नीरखवु (५) दर्शाववु
 –प्रेरक० शांत पाडवु, बुझाववु (२) अंत लाववो, नाश करवो (३) आश्वासन आपवु (४) हराववु; वश करवु (५) तजी देवु, अटकवु

शम् अ० सुख, आरोग्य, समृद्धि वतावतो प्रत्यय; आशीर्वाद के शुभ अंत इ० बताववा वपराय छे (चोथी के छट्ठी विभक्ति साथे)

शम पु० शांति, निर्विकारपणु (२) तृप्ति; संतोष; आश्वासन (३) मोक्ष (४) रोगनु शमन

शमन वि० शांत पाडनारु (२) न० शांत पाडवु ते (३) चित्तशांति; समाधि (४) ईजा करवी ते; नाश करवो ते (५) यज्ञमा पशुने वधेरवु ते (६) पु० यमराजा [छे तेवु

शमप्रधान वि० जेमा शम-शांति विशेष

शमल न० विष्ठा (२) पाप

शमित वि० शांत पाडेलु (२) छिपावेलु, मटाडेलु (रोग, तरस इ०) (३) शांत (४) हणेलु, नाश करेलु

शमितृ पु० वध करनारो

शमिन् वि० शांत, जितेंद्रिय

शमी स्त्री० एक झाड, समडो (२) फळी, सीग

शमोपन्यास पु० शांतिनु कहेण

शम्या स्त्री० एक जातनु छबलीकु (२) लाकडी, दंडो (३६ आगळनो)

शम्याक्षेप पु० जुओ 'शम्यापात'

शम्याग्राह पु० छबलीका वगाडनारो

शम्यानिपात, शम्यापात पु० एक दंडो फेंकी शकाय तेटलु अंतर

शय वि० सूतु; ऊंघतु (समासने अंते) (२) पु० ऊंघ (३) शय्या (४) हाथ (५) लंबाईनु एक माप (६) सांप

शयन न० सूवु ते (२) पथारी

शयनभूमि स्त्री० सूवानो ओरडो

शयनसखी स्त्री० साथे सूनारी सखी (स्त्रीनी) [शयनगृह

शयनीय न० शय्या; पथारी (२)

शयनैकादशी स्त्री० अषाढ सुद अगियारस, देवपोढी

शयालु वि० ऊंघे भरायेलु (२) ऊंघणशी

शयित वि० सूतेलु; निद्राधीन (२) न० निद्रा, ऊंघ

शय्या स्त्री० सेज, पथारी (२) परोववु ते, गूथवु ते

शय्यागृह न० सूवानो ओरडो

शय्यापाल, शय्यापालक पु० राजाना शयनगृहनो संरक्षक अधिकारी

शय्यांत पु० सूवानु स्थळ

शय्योत्थायम् अ० वहेली सवारे

शय्योत्संग पु० पथारीनो मध्य भाग

शर पु० बाण (२) एक जातनु बरु (३) तर; मलाई (४) कुश; दाभ (५) पांचनी संख्या (६) न० पाणी

शरक्षेप पु० बाण जाय तेटलु अंतर

शरच्चंद्र पु० शरद ऋतुनो चंद्र

शरजन्मन् पु० कार्तिकेय

शरजाल न० वरसता बाणोनु जाळु

शरज्ज्योत्स्ना स्त्री० शरद ऋतुनी चांदनी

शरट पु० काचडो

शरण वि० जुओ 'शरण्य' (२) न० आशरो; संरक्षण (३) आशरो के शरणनु स्थान (४) घर; ओरडो (५) झूपडी, मांडवो

शरणागत, शरणापन्न वि० शरणे आवेलु

शरणार्थिन्, शरणैषिन् वि० आश्रय शोधनारु (२) कमनसीब

शरणोन्मुख वि० शरण इच्छतु

शरण्य वि० रक्षण–शरणु आपनारु (२) शरण इच्छतु, दीन (३) न० आश्रयस्थान (४) आशरो आपनारो (५) आशरो (६) हानि, ईजा

शरद् स्त्री० आसो–कार्तिक महिनावाळी ऋतु (२) वर्ष

शरदिज वि० शरद ऋतुमा थतु

शरदुदाशय पु० शरद ऋतुनु सरोवर

शरदुर्दिन न० बाणोनो वरसाद

शरधि पु० बाणनो भाथो

शरन्मेघ पु० शरदऋतुनु वादळ

शरपुंख पु० बाणनो पीछांवाळो छेडो

शरप्रवेग पु० बाणनो वेग

शरभ पु० हाथीनु बच्चु (२) आठ पग वाळु एक बळवान काल्पनिक प्राणी (३) ऊंट (४) तीड (५) तीतीघोडो

शरभंग पु० दडकारण्यना एक मुनि
शरवण न० बरुनु झुड
शरवणभव पु० कार्तिकेय
शरवन पु० जुओ 'शरवण'
शरवर्ष पु० बाणनो वरसाद (२) जोरथी पडतो पाणीनो वरसाद
शरव्य न० निशान, लक्ष्य (बाणनु)
शरव्रात पु० बाणनो समुदाय
शरसंधान न० बाण ताकवु ते
शरसंबाध वि० बाणोथी ढकायेलु
शरस्तंब पु० बरुनु झुड
शरारु वि० घातक, हिंसक (२) पु० हिंसक पशु
शराव पु० न० शकोरु, चपणियु (२) ढाकणु
शरावर (शर+आवर) पु० बाणनो भाथो (२) न० बख्तर
शरावती स्त्री० एक नगरी (रामे लवने तेनो राजा बनाव्यो हतो)
शरावरण न० ढाल
शरावाप पु० धनुष्य (२) बाणनो भाथो
शरासन पु० धनुष्य
शरीर न० देह, अग (२) घटक तत्त्व (३) शारीरिक बळ (४) शब (५) पोतानी जात, जीवात्मा
शरीरक पु० जीव (२) न० नानु-तुच्छ शरीर (३) शरीर
शरीरज पु० बीमारी (२) आवेग; कामवासना (३) कामदेव (४) पुत्र
शरीरपात पु० मोत
शरीरप्रभव पु० पिता
शरीरबद्ध वि० देहधारी; मूर्तिमत
शरीरबंध पु० देहनु चोकठु-बधारण (२) देहधारी तरीके जन्म
शरीरभाज् वि० देहधारी, मूर्त (२) पु० देहधारी प्राणी
शरीरयात्रा स्त्री० निर्वाह, आजीविका
शरीररत्न न० उत्तम शरीर
शरीरवृत्ति स्त्री० शरीरनु धारण-पोषण
शरीरसंपत्ति स्त्री० शरीरनु आरोग्य
शरीरसाद पु० शरीर सुकावु ते
शरीरस्थिति स्त्री० शरीरनु पोषण के आधार (२) भोजन लेवु ते
शरीराकार पु० शारीरिक चेष्टा
शरीरांत पु० शरीरना वाळ
शरीरिन् वि० शरीरधारी; मूर्त (२) जीवतु (३) पु० देहधारी प्राणी (४) मनुष्य (५) जीवात्मा
शरोपासन न० धनुर्विद्यानो अभ्यास
शरौघ पु० बाणनो वरसाद
शर्करा स्त्री० साकर, खाड (२) नानो पथ्थर, काकरो (३) काकरावाळी जमीन (४) टुकडो (५) ठीकरु (६) कोई पण कठण वस्तु (७) सोनावाळी जमीन
शर्कराचल पु० आठ भार साकरनो पर्वत (दानमा अपाय छे ते)
शर्कराल वि० रेताळ, रेतीना कण वाळु (जेम के पवन)
शर्मन् वि० सुखी (२) समृद्ध (३) पु० ब्राह्मणना नामने लगाडातो शब्द (उदा० विष्णुशर्मन्) (४) न० सुख; हर्ष (५) आशीर्वाद (६) रक्षण (७) घर
शर्मिष्ठा स्त्री० ययाति राजानी बीजी राणी (प्रथम राणी देवयानी)
शर्व पु० शिव (२) विष्णु
शर्वरी स्त्री० रात्री (२) साज
शर्वाणी स्त्री० पार्वती; दुर्गा
शलभ पु० पतगियु (२) तीड, तीतीघोडो
शलल न० साहुडीनु सळिया जेवु पीछु
शलंग पु० राजा (२) एक जातनु मीठु
शलाका स्त्री० सळियो, सळी (२) आजवानी सळी (३) बाण (४) छत्रीनो सळियो (५) फणगो, अकुर (६) खीटी; खीली (७) आगळी
शलाकापुरुष पु० नमूनारूप-मापवाना गज रूप-उत्तम पुरुष (जैन)
शल्य पु० मद्र देशनो राजा; नकुल-

सहदेवनो मामो (२) पु०; न० भालो (३) बाण (४) काटो (५) खीटी, खीलो (६) न० शरीरमा वहारथी खूपेली अने पीडा करती वस्तु (६) हृदयदारक पीडा करतु काई पण
शल्यक पु० वाण, तोमर (२) काटो (३) साहुडी (४) व्याध
शल्यकवत् वि० अणीदार मोवाळु
शल्यप्रोत वि० बाणथी वीधायेलु
शल्यित वि० वीधायेलु
शल्ल् १ प० जवु
शल्लकी स्त्री० साहुडी (२) एक झाड (हाथीओने बहु गमे छे)
शव पु०, न० शब, मडदु
शवाश वि० मडदु खानारु
शश् १ प० कूदवु, ठेकडो भरवो
शश पु० ससलु (२) चद्रमा देखातो मृग
शशधर, शशभृत्, शशलक्ष्मण, शशलांछन पु० चद्र (मृगना चिह्नवाळो)
शशविषाण, शशशृग न० ससलानु शिगडु (असभवित वस्तु)
शशांक पु० चद्र
शशांकलेखा स्त्री० बीजनो चद्र
शशिकला स्त्री० चद्रनी कळा
शशिकांत पु० चद्रकात मणि (२) न० पोयणु
शशिज पु० बुधग्रह
शशिन् पु० चद्र
शशिप्रभ वि० चद्रना जेवा तेजवाळु
शशिमौलि, शशिशेखर पु० शिव
शश्वत् अ० निरतर, सदा, हमेश (२) वारवार [जातनो मालपूडो
शष्कुली स्त्री० काननी नळी (२) एक
शष्प न० कुमळु घास
शष्पभुज्, शष्पभोजन पु० घास खानारु प्राणी [प्राणी वघेरवु ते
शसन न० कतल करवी ते (२) यज्ञमा
शस्त ('शस्' नु भू० कृ०) वि० प्रशसेलु (२) शुकनियाळ, शुभ (३) उत्तम (४) हणायेलु (५) घवायेलु
शस्त्र न० हथियार (२) ओजार (३) लोखड; पोलाद
शस्त्रग्राहिन् वि० शस्त्र धारण करनारु
शस्त्रन्यास पु० शस्त्र हेठा मूकवा-छोडी देवा ते
शस्त्रपूत वि० रणभूमि उपर शस्त्र वडे हणायेलु होवाथी दोषरहित एवु
शस्त्रभृत् पु० शस्त्रधारी, योद्धो
शस्त्रव्यवहार पु० शस्त्रनो अभ्यास
शस्त्रसंपात पु० एकदम शस्त्रो पडवा के वरसवा लागवा ते
शस्त्रिका, शस्त्री स्त्री० छरी, कटार
शस्य वि० वखाणवा लायक
शस्य न० धान्य; अनाज (२) छोड के झाडनो पाक के फळ
शंक् १ आ० शका करवी (२) बीवु (३) अविश्वास करवो (४) मानवु, धारवु
शंकनीय वि० शका करवा योग्य (२) कल्पवा योग्य
शंकर वि० कल्याणकर; शुकनियाळ (२) पु० शिव (३) शकराचार्य
शंका स्त्री० शक, सदेह, वहेम (२) भय, डर (३) आशा, अपेक्षा (४) भ्रम, खोटी मान्यता
शंकित ('शक्' नु भू० कृ०) वि० शका करेलु (२) अविश्वासु (३) सदिग्ध (४) डरतु, बीनेलु (५) निर्बळ, अदृढ
शंकिन् वि० शका करतु, वहेम राखतु, (समासने अते) (२) जोखम भरेलु
शंकु पु० बाण, भालो, कटार (२) थाभलो (३) खीटी; खीलो (४) बाणनी अणी (५) झाडनु ठूठु (६) १०,००० अबजनी सख्या
शंख पु०, न० एक जातना दरियाई प्राणीनु कोटलु, जेने फूकीने वगाड-वामा आवे छे (२) कपाळ उपरनु

हाडकु (३) हाथीना बे दंतूशळ वच्चेनो भाग (४) कुबेरना नव निधिमानो एक
शंखक पु०, न० शंख (२) न० शंखनी चूडी
शंखध्म (–ध्मा) पु० शंख फूंकनारो
शंखनख पु० एक दरियाई प्राणी
शंखवलय पु० शंखनी चूडी
शंखांतर न० कपाळ
शंखिनी स्त्री० स्त्रीओना चार वर्गमांनी एक (पद्मिनी, चित्रिणी, शंखिनी, हस्तिनी, सुंदर, गुणशीलयुक्त तथा कामोपभोगरसिक एवी स्त्री)
शंतनु पु० एक चंद्रवंशी राजा, भीष्मना पिता (गंगा अने सत्यवतीना पति)
शंतम वि० हितकर, कल्याणकर एवु
शंब वि० सुखी, भाग्यवान (२) दरिद्री (३) पु० वज्र (४) खेतरने बीजी वार खेडवु ते (५) लंबाईनु एक माप
शंबपाणि पु० इंद्र [एक राक्षस
शंबर वि० उत्तम (२) पु० प्रद्युम्ने हणेलो
शंबल पु० न० किनारो, तट (२) प्रवासनु भाथु [उखेडेलु (घाने)
शंबाकृत वि० बे वखत खेडेलु (२) फरी
शंबूक पु० एक जातनी छीप (२) नानो शंख (३) एक शूद्र तपस्वी (शूद्रने निषिद्ध एवी तपस्याओ करवा बदल रामे तेने हण्यो हतो)
शंभु वि० कल्याणकर, सुखप्रद (२) पु० शिव (३) आदरणीय ऋषि
शंयु वि० सुखी, समृद्ध (२) पु० यज्ञनी अधिष्ठाता देवता
शंस् १ प० कहेवु, वर्णन करवु (२) प्रशंसा करवी (३) ईजा करवी
शंसा स्त्री० प्रशंसा (२) इच्छा, आशा (३) मान्यता, धारणा
शंसित ('शंस्' नु भू० कृ०) वि० वखाणेलु (२) कहेलु (३) इच्छेलु (४) निश्चित करेलु (५) खोटो आक्षेप मूकेलु (६) अनुष्ठान करेलु, आचरेलु
शंसिन् वि० (समासने अंते) वखाणतु (२) कहेतु (३) दर्शावतु (४) भाखतु
शाक पु०, न० खाई शकाय तेवा कंद, फळ, भाजी (२) पु० सागनु झाड (३) शक लोकोनु नाम (४) शालिवाहन संवत (५) (सातमाथी) छठ्ठो द्वीप
शाकटिक पु० गाडी हांकनारो
शाकल वि० टुकडा संबंधी (२) पु० ऋग्वेदनी एक शाखा
शाकंभरी स्त्री० दुर्गा
शाकिनी स्त्री० दुर्गानी तहेनातमां रहेती दासी (पिशाचणी) [ने लगतु
शाकुन वि० शुकनने लगतु (२) पक्षी-
शाकुनिक पु० (पक्षी पकडनारो) पारधी
शाकुल, शाकुलिक वि० माछलानु
शाक्त वि० शक्ति संबंधी (२) पु० जगतना परम तत्त्व रूपे शक्तिना देवी रूपने पूजनारो
शाक्तीक पु० शक्ति-भालाथी लडनारो
शाक्तेय, शाक्त्य पु० जुओ 'शाक्त' पु०
शाक्य पु० बुद्धना कुळनु नाम
शाक्यमुनि पु० बुद्ध
शाक्र वि० इंद्र संबंधी
शाक्वर पु० बळद
शाख पु० कार्तिकेय
शाखा स्त्री० डाळी (वृक्षनी) (२) हाथ (३) विभाग, तड (४) ग्रंथनो विभाग (५) अमुक गोत्र के मंडळमां चालतो वेदनो पाठ (६) कोई पण शास्त्रनो विभाग
शाखानगर न० शहेरनु परु
शाखाबाहु पु० डाळी जेवो कोमळ हाथ
शाखाभृत् पु० वृक्ष
शाखामृग पु० वांदरु
शाखाविलीन वि० डाळ उपर बेठेलु (जेम के पखी)
शाखिन् वि० शाखावाळु (२) वेदनी कोई शाखाने अनुसरतु (३) पु०

वृक्ष (४) वेद (५) वेदनी कोई शाखानो अनुयायी

शाट पु०, **शाटक** पु०, न०, **शाटी** स्त्री० वस्त्र (२) स्त्रीनु अमुक वस्त्र (अदर पहेरातु) (३) चोळी, कचुकी

शाठ्य न० शठता, लुच्चाई, कपट

शाण वि० शणनु वनावेलु (२) पु० कसोटीनो पथ्थर (३) सराण (४) चार मासानु वजन (५) न० शणनु वस्त्र

शाणी स्त्री० कसोटीनो पथ्थर (२) सराणनो पथ्थर (३) शणनु वस्त्र (४) कथा; चीथरानु वस्त्र (५) नानो पडदो के तवू

शात ('शो'नु भू० कृ०) वि० तीक्ष्ण धार काढेलु (२) पातळु, नाजुक (३) कृश, अशक्त (४) सुदर

शातकुंभ न० सोनु

शातकौंभ वि० सोनानु

शातक्रतव वि० इद्रनु

शातन न० धार काढवी ते (२) कापी नाखवु ते (३) चीमळावु-क्षीण थवु ते

शातमन्यव वि० इद्रनु

शातह्रद वि० विद्युत सबवी

शात्रव वि० शत्रु सबंधी (२) शत्रुवट-भर्यु (३) पु० शत्रु (४) न० शत्रुओनो समुदाय (५) दुश्मनावट

शाद्वल पु०, न० घासनु मेदान

शाप पु० श्राप, शराप (२) शपथ, सोगद (३) उपद्रव

शापयन्त्रित वि० शापथी नियत्रित

शापास्त्र पु० मुनि, ऋषि (शाप जेनु हथियार छे ते)

शापांत पु० शापनो अत

शापित वि० सोगदथी बधायेलु

शापोत्सर्ग पु० शाप आपवो ते

शाब्द, शाब्दिक वि० शब्दनु, शब्द-सबधी (२) मोए कहेलु [स्थिति

शायिका स्त्री० ऊघ; निद्रा (२) सूवानी

शार वि० कावरचीतरु (२) शेतरजनु महोरु

शारणिक वि० शरण-आश्रय इच्छतु

शारतल्पिक पु० भीष्म (बाणशय्यावाळा)

शारता स्त्री० कावरचीतरापणु

शारद वि० शरद ऋतुनु (२) वार्षिक (३) कुशळ, समर्थ (४) पु० वर्ष

शारदा स्त्री० एक जातनी वीणा (२) दुर्गा (३) सरस्वती

शारि स्त्री० शेतरजनु महोरु (२) सारिका (पक्षी) (३) कपट (४) हाथीनु बख्तर के जीन

शारिका स्त्री० मेना (२) सारगी वगेरे वगाडवानी कामठी (३) शेत-रज-बाजी इ० रमवा ते

शारित वि० कावरचीतरु

शारीर वि० शरीर सबधी (२) देह-धारी, मूर्तिमत (३) पु० जीवात्मा

शारीरक न० जीवात्मा (२) तेना साचा स्वरूप सबधी तपास (शकराचार्यना भाष्यनु नाम)

शार्गाल वि० शियाळनु

शार्ङ्ग वि० शीगडानु (२) धनुष्यथी सज्ज (३) पु०, न० धनुष्य (४) विष्णुना धनुष्यनु नाम (५) एक पखी

शार्ङ्गधर, शार्ङ्गपाणि पु० विष्णु

शार्ङ्गिन् पु० धनुर्धारी योद्धो (२) विष्णु (३) शिव

शार्दूल पु० वाघ (२) (समासने अते) ते ते वर्गनो श्रेष्ठ माणस (उदा० 'नर-शार्दूल') (३) राक्षस

शार्व वि० शिवनु

शार्वर वि० रात्रीनु, रात्रीने लगतु (२) न० गाढ अधकार

शार्वरी स्त्री० रात्री

शाल् १ आ० प्रशसा-खुशामत करवी (२) -युक्त होवु, प्राप्त थयेलु होवु

शाल वि० कहेतु, बडाश मारतु (२) अवाज करतु (३) पु० एक वृक्ष (ऊचु अने भव्य) (४) वृक्ष (५) शालिवाहन

शालनिर्यास पु० शाल वृक्षनो गुदर
शालभंजिका स्त्री० पूतळी (२) वेश्या
शाला स्त्री० ओरडो (२) मकान (३) वृक्षनु थड (४) तबेलो
शालावृक पु० कूतरो
शालि स्त्री० डागर [साचवती स्त्री
शालिगोपी स्त्री० डागरनो क्यारडो
शालिग्राम पु० विष्णुनु प्रतीक मनातो पवित्र पथ्थर, शालग्राम
शालिन् वि० (मुख्यत्वे समासने अते) –थी युक्त, –वाळु; –थी शोभतु (२) सद्वर्तनवाळु, सुशील
शालिभवन न० डागरनु खेतर [वळद
शालिवाह पु० डागर वहन करवा माटेनो
शालिवाहन पु० जेना नामनो शक (ई० स० ७८ थी शरू थाय) छे ते प्रसिद्ध राजा
शालिहोत्र पु० घोडो (२) पशुचिकित्सा शास्त्रनो लेखक (२) न० पशुचिकित्सानु शास्त्र
शालीन वि० शरमाळ (२) तुल्य, समान (३) पु० गृहस्थ (४) न० अजाचकवृत्ति (५) शरमाळपणु
शालूक न० कमळनो कद (२) पु० देडको
शालेय न० डागरनु खेतर
शाल्मलि पु०, स्त्री०, **शाल्मली** स्त्री० समडानु झाड
शाल्व पु० एक देश (२) ते देशनो राजा
शाव वि० शव सबधी (२) घेरा पीळा रगनु (३) पु० पशुनु बच्चु (४) पु०, न० शव
शावक पु० पशुनु बच्चु
शाश वि० ससलानु
शाश्वत वि० नित्य, कायमनु (२) न० शाश्वतपणु (३) स्वर्ग
शाश्वतिक वि० कायमनु, हमेशनु
शास् २ प० शीखववु, उपदेश आपवो (२) राज्य चलाववु (३) हुकम करवो (४) कहेवु; जणाववु (५) सलाह आपवी (६) शिक्षा करवी (७) ताबे करवु
शासक पु० राजा (२) सजा करनारो
शासन वि० उपदेश आपनारु (२) सजा करनारु (३) न० उपदेश; तालीम, शिक्षण (४) राज्य; अमल; शासन (५) आज्ञा, हुकम (६) दानपत्र (राजाए आपेलु) (७) लेखित करार, दस्तावेज
शासनदूषक वि० आज्ञानु उल्लघन करनारु
शासनहारिन् पु० सदेशवाहक, दूत
शासनीय वि० शिक्षा करवा योग्य (२) जेना उपर शासन करवु जोईए तेवु
शासित वि० शासन के अमल चलाववानो होय तेवु (२) शिक्षा कराई होय तेवु (३) काबूमा रखायेलु
शासितृ पु० राजा, हाकेम (२) सजाकरनारो (३) शिक्षक
शास्तृ पु० शिक्षक, गुरु (२) पिता (३) राजा, हाकेम
शास्त्र न० आज्ञा, हुकम (२) धर्मशास्त्रनी आज्ञा (३) धर्मशास्त्र (४) कोई पण विषयनु तात्त्विक तेम ज व्यवस्थित ज्ञान (५) ग्रथ (६) सिद्धातज्ञान ('प्रयोग' थी ऊलटु)
शास्त्रज्ञ वि० शास्त्रनु जाणकार (२) मात्र सिद्धात जाणनारु [प्रमाणे
शास्त्रतस् अ० शास्त्रानुसार, शास्त्र
शास्त्रदृष्ट वि० धर्मशास्त्रोमा कहेलु
शास्त्रविमुख वि० शास्त्राभ्यास न गमतो होय तेवु
शास्त्रशिल्पिन् पु० काश्मीर देश
शास्त्राननुष्ठान न० शास्त्रनी आज्ञानो भग – उल्लघन [पडित
शास्त्रिन् वि० शास्त्रनु जाणकार,
शास्त्रीय वि० शास्त्र सबधी (२) शास्त्र अनुसार [अलकार बनावनारो
शाखिक पु० शख फूकनारो (२) शखना
शांत ('शम्' नु भू० कृ०) वि० शातियुक्त (२) मटी गयु होय तेवु (रोग) (३) ओछु थयेलु; दूर थयेलु; बुझा-

येलु (४) वध पडेलु; अटकेलु (५) पाळेलुं; वश करेलु (६) मद; मधुर (७) नम्र (८) विनअसरकारक बनेलु

शांतगुण वि० मृत

शांतनव पु० भीष्म (शातनुना पुत्र)

शांतनु पु० भीष्मना पितानु नाम

शांतम् अ० 'अरे ना!', 'एम ते होय!' 'ईश्वर एम न करे' —एम निवारणना अर्थमां वपरातो अव्यय

शांतरजस् वि० रज, धूळ विनानु, रजोगुण के तृष्णाओ विनानु

शांता स्त्री० दशरथ राजानी पुत्री, ऋष्यशृंगनी पत्नी

शांति स्त्री० शात पाडवु, धीमु पाडवु के दूर करवु ते (२) वेग, क्षोभ के क्रिया न होवा ते (३) क्लेश कंकास के युद्धनो अभाव (४) विश्राति, निवृत्ति (५) मानसिक के शारीरिक उपद्रव के विकारनु मटी जवु ते (६) सांसारिक तृष्णानो अभाव

शांतिमार्ग पु० मोक्षमार्ग

शात्युदक न० शाति माटेनु पवित्र जळ

शांवरी स्त्री० इद्रजाळ, माया

शांभव, शांभवीय वि० शिवने लगतु

शिक्य न०, **शिक्या** स्त्री० शीकु

शिक्ष् १ आ० शीखवु, अभ्यास करवो

शिक्षक पु० शीखनारो (२) शीखवनारो

शिक्षण न० शीखवु ते (२) शीखववु ते

शिक्षा स्त्री० शीखवु ते, अभ्यास (२) कशु करवाने शक्तिमान थवानी इच्छा (३) शिक्षण, उपदेश (४) एक वेदाग, उच्चारशास्त्र (५) शास्त्र

शिक्षित ('शिक्ष्' नु भू० कृ०) वि० शीखेलु, अभ्यास कर्यो होय तेवु (२) शीखवेलु (३) तालीम आपेलु (४) कुशळ, प्रवीण

शिक्षितव्य, शिक्ष्य वि० शिक्षण आपवा योग्य (२) शीखवा लायक

शिखर पु०, न० पर्वतनी टोच (२) झाडनी टोच (३) कलगी

शिखरिन् वि० कलगीवाळु (२) अणीदार (३) पु० पर्वत (४) झाड

शिखंड पु० चूडाकर्म वखते माथा उपर के बे बाजुए जे कानशेरियां रखाय छे ते (२) मोरनु पीछावाळु पुच्छ (३) कलगी

शिखंडक पु० माथानी बाजुओ उपर रखाता जुलफा (क्षत्रियो त्रण के पाच राखे छे) (२) कलगी (३) मोरपुच्छ

शिखडिन् पु० मोर (२) द्रुपदनो पुत्र

शिखंडिनी स्त्री० ढेल

शिखा स्त्री० माथा उपर रखाती वाळनी लट (२) कलगी (३) शिखर, टोच (४) तीक्ष्ण अणी (५) वस्त्रनो छेडो (६) ज्योत (७) किरण (८) मोरनी कलगी [माळा

शिखादामन् न० माथानी टोचे पहेराती

शिखाधर पु० मोर

शिखाधरज न० मोरनु पीछु

शिखामणि पु० माथानी टोचे पहेरातो मणि, चूडामणि

शिखावत् वि० कलगीवाळु (२) ज्योतवाळु (३) अणीदार (४) पु० अग्नि (५) दीवो

शिखावल पु० मोर

शिखिध्वज पु० कार्तिकेय

शिखिन् वि० अणीदार (२) कलगी के चोटीवाळु (३) पु० मोर (४) अग्नि

शित ('शो' नु भू० कृ०) वि० धार काढेलु (२) पातळु, कृश (३) क्षीण; अशक्त

शितधार वि० तीक्ष्ण धारवाळु

शितशूक पु० जव (२) घउ

शिताग्र पु० काटो

शिति वि० श्वेत (२) काळु (३) घेरु भूरु; नील रगनु

शितिकंठ पु० नीलकठ; महादेव

शितिरत्न न० नीलम
शितिवासस् पु० बळराम (नीलवस्त्रधारी)
शिथिल वि० ढीलु के मद (२) (बांधेलु) छोडी नाखेलु (३) खरी के गरी पडेलु (४) सुस्त; नबळु
शिथिलयति प० (ढीलु पाडवु, छोडी नाखवु, तजी देवु)
शिथिलीकृ ८ उ० ढीलु करवु, छोडी नाखवु (२) नबळु पाडवु (३) तजी देवु
शिथिलीभू १ प० ढीला पडवु (२) खरी के गरी पडवु
शिप्रा स्त्री० उज्जयिनी जेने काठे आवेली छे ते नदी
शिफा स्त्री० (वडपीपरना जेवु) लांबु लटकतु मूळ (२) कमळ कंद (३) कोई पण मूळ (४) चाबुकनो प्रहार
शिफाधर पु० शाखा, डाळी
शिफारुह पु० वडनु झाड
शिबि पु० एक देशनु नाम (ब० व०) (२) एक राजा जेणे शरणागतनी रक्षा माटे पोताना शरीरनु मास कापी आप्यु हतु
शिबिका स्त्री० पालखी (२) ठाठडी
शिबिर न० लश्करी छावणी
शिरस् न० माथु (२) टोच; शिखर (३) लश्करनी आगली हरोळ (४) (समासने अते) मुख्य के अग्रेसर एवु ते
शिरसिज पु० केश, वाळ
शिरसिजपाश पु० केशपाश; चोटलो
शिरस्तस् अ० माथामाथी
शिरस्त्र, शिरस्त्राण न० माथा माटेनो लोखडी टोप (२) पाघडी इ० माथे पहेरवानु ते
शिरस्य वि० माथानु (२) पु० चोख्खा वाळ
शिरःस्थान न० मुख्य ओरडो
शिरा स्त्री० रक्तवाहिनी, नस
शिरीष पु० एक फूलझाड (२) न० तेनु फूल (कोमळतानु दृष्टात गणाय छे)
शिरोधरा स्त्री०, **शिरोधि, शिरोध्र** पु० ग्रीवा; डोक
शिरोमणि पु० माथे धारण करवानो मणि, चूडामणि (२) पंडितोनो एक इलकाब
शिरोरुह् (–ह) पु० वाळ, केश
शिरोवेष्ट पु०, **शिरोवेष्टन** न० पाघडी; फेटो इ० माथे पहेरवानु ते
शिल पु०, न० खेतरमा पडेला कण वीणवा ते
शिला स्त्री० पथ्थर; खडक (२) घटीनो पथ्थर
शिलाकुसुम न० मन शिल
शिलावेश्मन् न० पर्वतमा कोतरेली सुशोभित गुफा
शिलाशित वि० पथ्थर घसीने धार काढेलु
शिली स्त्री० उमरो (२) बाण (३) थाभलानु माथु (४) देडकी
शिलीमुख पु० भमरो (२) बाण
शिलींध्र न० बिलाडीनो टोप (२) केळनु फूल
शिलोच्चय पु० पर्वत; मोटो खडक
शिलोंछ पु० खेतरमा गरो पडेला कण वीणवा ते (२) अल्प सग्रह
शिल्प न० कळा-कारीगरी (६४ गणाय छे) (२) कोई पण कारीगरीनी कुशळता; हुन्नर
शिल्पक न० एक जातनु नाटक (जेमां जादुना अने गूढ मत्रतत्रना प्रयोग निरूपाय छे)
शिल्पिन् वि० शिल्पने लगतु (२) यांत्रिक (३) पु० कारीगर; शिल्पी
शिव वि० शुभ; कल्याणकारी (२) सुखी, भाग्यशाळी; तदुरस्त (३) पु० शकर (४) वेद (५) न० कल्याण; सुख (६) मोक्ष
शिवताति वि० शुभ-सुखद अंतवाळु
शिवपद न० मोक्ष
शिवलिंग न० शिवनु लिंग स्वरूपी प्रतीक
शिवंकर वि० कल्याण के सुख करनारुं
शिवा स्त्री० पार्वती (२) शियाळ

शिवादेशक पु० भविष्य भाखनारो (२) शुभ समाचार लावनारो
शिवालय पु० शिवनु रहेठाण (२) न० शिवनु मंदिर (३) स्मशान
शिवौ पु० द्वि० व० शिव अने पार्वती
शिशिर वि० ठंडु; शीतळ (२) शिशिर ऋतुने लगतु (३) पुं०, न० ठंडी; हिम (४) माघ अने फागण मासनी ऋतु
शिशिरकिरण, शिशिरदीधिति पु० चंद्र
शिशिरमथित वि० ठंडीथी पीडातु
शिशिरात्यय, शिशिरापगम पु० वसंत ऋतु (शिशिर ऋतु जता आवे ते)
शिशिरांशु पु० चंद्र
शिशु, शिशुक पु० बाळक, बच्चु
शिशुपाल पुं० चेदि देशनो राजा
शिशुमार पु० एक जळचर प्राणी (२) ध्रुव पासेनु ताराचक्र
शिशुमारशिरस् न० ईशान खूणो
शिश्न न० पुरुषनी गुह्येंद्रिय
शिश्नोदरपरायण वि० जीभना स्वादमां अने कामवासनामां रत
शिष् १० उ०, ७ प० शेष-बाकी राखवुं (२) ७ प० भेद बताववो
शिष्ट ('शिष्' नु भू० कृ०) वि० बाकी रहेलु; बचेलु (२) आज्ञा करेलुं (३) सुशिक्षित; डाह्यु (४) मुख्य; आगेवान
शिष्टाचार पु० डाह्या-विद्वान-माणसोनो व्यवहार (२) सभ्य रीतभात
शिष्टि स्त्री० शासन (२) हुकम (३) सजा; शिक्षा
शिष्ट्यर्थम् अ० सुधारणा — शिक्षण माटे
शिष्य पु० विद्यार्थी (२) चेलो
शिंघ् १ प० सूंघवु [गरजवु
शिंज् १, २ आ०, १० उ० रणकवु (२)
शिंज पु० रणकार (घरेणानो)
शिंजित ('शिंज्' नु भू० कृ०) रणकतु (२) न० (घरेणानो) रणकार
शिंजिनी स्त्री० धनुष्यनी दोरी
शिंबा, शिंबि, शिंबी स्त्री० शिंग, फळी
शिंशपा स्त्री० एक झाड (२) अशोक वृक्ष
शी २ आ० शयन करवु, सूवु
शीक् १ आ० छांटवु
शीकर पु० फर फर (पाणीनी) (२) टीपु, फोरु (पाणी के वरसादनु)
शीकरवर्षिन् वि० फरफर रूपे वरसतु
शीकरिन् वि० फरफर वरसावतु
शीघ्र वि० झडपी, वेगवंत
शीघ्रचेतन पु० कूतरो
शीघ्रता स्त्री०, **शीघ्रत्व** न० झडप; वेग, उतावळ
शीघ्रम् अ० जलदीथी, वेगथी
शीघ्रलंघन वि० जलदी रस्तो कापतु
शीत वि० ठंडु, टाढु (२) मंद, सुस्त (३) न० टाढ, ठंडी (४) कफ (वातु)
शीतकिरण, शीतगु, शीतद्युति, शीतरश्मि, शीतरुच् (-चि) पु० चंद्र
शीतल वि० ठंडु (२) पीडा न थाय तेवु
शीतला स्त्री० बळियाना रोगनी देवी, ते रोग (२) रेती
शीतालु वि० टाढथी अकडाई गयेलु
शीतांशु पु० चंद्र
शीतीभू १ प० टाढु पाडवु
शीधु पु०, न० मद्य (शेरडीनु)
शीफर वि० रम्य
शीर पु० अजगर
शीर्ण ('शॄ' नु भू० कृ०) वि० चीमळाई गयेलु, सडी गयेलु (२) तूटी-फाटी गयेलु (३) सुकाई गयेलु, कृश
शीर्ष न० माथु [लायक
शीर्षच्छेद्य वि० माथु कापी नाखवा
शीर्षत्राण न० लोखंडी टोपो
शील् १ प० मनन करवु, चिंतववु (२) भजवु, पूजवु (३) आचरवु (४) १० उ० आदर करवो (५) अभ्यास-पुनरावृत्ति करवी (६) वारंवार मुलाकाते जवु (७) पहेरवु

शील न० स्वभाव, वलण (२) टेव, रिवाज (३) वर्तन (४) सदाचार
शीलखंडन न० चारित्र्यभ्रष्ट—नीति-भ्रष्ट थवु ते
शीलगुप्त वि० लुच्चु
शीलन न० वारवार अभ्यासवु ते
शीलभ्रंश पु० चारित्र्यभ्रष्टता
शीलवंचना स्त्री० चारित्र्यभ्रष्ट करवु ते
शीलवृत्त न० सद्वर्तन
शीलित वि० अभ्यासेलु (२) पहेरेलु (३) वारवार मुलाकात लीधी होय तेवु (४)—थी युक्त [शुकदेवजी
शुक पु० पोपट (२) व्यासना पुत्र—
शुकच्छद पु० पोपटनी पाख
शुकपितृ पु० व्यासमुनि
शुक्त ('शुच्'नु० भू० कृ०) निर्मळ, स्वच्छ (२) खारु
शुक्ति स्त्री० छीप (२) घोडानी छाती के गरदन उपरना वाळनो गुच्छ
शुक्र वि० तेजस्वी (२) शुद्ध, शुभ्र (३) पु० शुक्रग्रह (४) शुक्राचार्य, असुरोना गुरु (५) न० वीर्य (६) तेज
शुक्ल वि० सफेद, तेजस्वी (२) निष्कलक, निर्मळ (३) सात्त्विक (४) यशस्कर (५) तेज आपनारु (६) पु० श्वेतवर्ण
शुक्लजीव पु० एक छोड (वज्री)
शुक्लदेह वि० पवित्र शरीरवाळु
शुक्लपक्ष पु० अजवाळियु
शुक्लापांग पु० मयूर, मोर
शुच् १ प० शोक करवो (२) पस्तावो करवो (३) ४ उ० शोक करवो (४) पवित्र—स्वच्छ थवु (५) प्रकाशित करवु
शुच्, शुचा स्त्री० शोक (२) आसु
शुचि वि० निर्मळ, स्वच्छ (२) श्वेत (३) तेजस्वी (४) निष्कलक, पवित्र (५) प्रमाणिक (६) पु० श्वेतवर्ण (७) उनाळो (८) जेठ महिनो (९) अषाढ महिनो (१०) अग्नि (११) आकाश
शुचिषद् वि० सदाचारने मार्गे जनारु
शुचिसमाचार त्रि० पवित्र आचारवाळु
शुचिस्मित वि० मधुर स्मितवाळु
शुद्ध ('शुध्'नु भू० कृ०) वि० स्वच्छ (२) निर्मळ, पवित्र (३) श्वेत, काति-मान (४) डाघ विनानु (५) निर्दोष; निष्कपट (६) चूकवी दीधेलु (७) धार काढेलु (८) पु० शुक्लपक्ष (९) शिव
शुद्धवंश्य वि० पवित्र कुळमा जन्मेलु
शुद्धांत पु० राजानु अतपुर (२) राणी
शुद्धातचारिन् पु० अतपुरनो रक्षक
शुद्धि स्त्री० पवित्रता (२) तेजस्विता (३) प्रायश्चित्त
शुध् ४ प० पवित्र थवु (२) शुभ—अनुकूळ होवु (३) नि सदेह बनवु (४) चूकवी देवु
शुन पु० कूतरो
शुनी स्त्री० कूतरी
शुभ् १ आ० दीपवु, शोभवु
शुभ वि० सुदर (२) तेजस्वी (३) माग-ळिक, कल्याणकारी (४) नीतियुक्त (५) न० कल्याण, मगळ, सुख
शुभदर्श, शुभदर्शन वि० सुदर
शुभमंगल न० कल्याण, सद्भाग्य
शुभलग्न पु०, न० शुभ क्षण
शुभशंसिन् वि० भावि शुभ दर्शावनारु
शुभयु वि० भाग्यशाळी, सुखी
शुभाशुभ न० सुख-दुख, इष्ट-अनिष्ट
शुभेतर वि० अशुभ (२) अनिष्ट
शुभोदर्क वि० सुखकर परिणामवाळु
शुभ्र वि० उज्ज्वल, तेजस्वी (२) सफेद
शुल्क पु०, न० जकात, दाण (२) नफो; लाभ (३) कन्याना मातापिताने अपाती किमत (४) लग्न वखते भेट (५) परठण; दहेज (६) मूल्य, किमत (७) बानु
शुल्ब (—ल्व) न० दोरी, दोरडु (२) पाणीनी नजीकनु स्थान
शुश्रू स्त्री० माता
शुश्रूषक वि० तहेनातमा रहेनारु (२) पु० सेवक, हजूरियो

शुश्रूषा स्त्री० सेवा, चाकरी (२) साभळवानी इच्छा (३) आज्ञाकितपणु
शुश्रूषु वि० साभळवाने आतुर एवु (२) सेवा करवाने तत्पर एवु
शुष् ४ प० सुकावु (२) चीमळावु (३) क्षीण थवु (४) दु खी थवु; पीडावु
शुषिर वि० छिद्रोवाळु (२) न० फूकीने वगाडवानु वाद्य
शुषी स्त्री० सुकावु ते (२) दर (जमीनमा)
शुष्क ('शुष्'नु भू० कृ०) वि० सुकाई गयेलु, सूकु (२) चीमळाई गयेलु (३) ढोगथी करेलु (४) पोकळ, फोगट, नाहक (५) कठोर
शुष्ककलह पु० फोगट तकरार (२) ढोगी तकरार [केवळ गावु ते
शुष्कगान न० (नृत्य वगेरे विनानु)
शुष्मन् पु० अग्नि (२) न० तेज (३) वळ
शुष्मिन् वि० शक्तिशाळी, तेजस्वी
शुंग न० अकुरनो दोडो
शुंठि (–ठी) स्त्री० सूठ
शुंडा स्त्री० हाथीनी सूढ (२) मद्य, दारू (३) वेश्या (४) दारूनु पीठु
शुंडार पु० हाथीनी सूढ (२) कलाल
शुंभ पु० दुर्गाए मारेलो एक राक्षस
शूक पु०, न० तीक्ष्ण अणी के छेडो (२) अणियाळो वाळ
शूकर पु० भुड, डुक्कर
शूकशिखा स्त्री० (जव वगेरे) अनाजना पोपटा उपरनी तीव्र अणी
शूद्र पु० चतुर्थ वर्णनो माणस
शून ('श्वि'नु भू० कृ०) वि० सूजी गयेलु (२) वधी गयेलु
शूना स्त्री० कतलखानु (२) जेनाथी जीव-हिसा थाय तेवु कोई पण घरगथु साधन
शून्य वि० खाली (२) लक्ष के विषय विनानु (दृष्टि, हृदय इ०) (३) अभाव होय तेवु (४) निर्जन (५) हताश (६) –विनानु; –रहित (७) अर्थहीन (८) न० निर्जन स्थान (९) आकाश (१०) मीडु (११) अभाव (१२) एरिंग
शून्यपाल पु० अवेजी, प्रतिनिधि
शून्यमय वि० निष्फळ, बिनअसरकारक
शून्यवादिन् पु० (दरेक वस्तुनो अभाव माननारो) बौद्ध (२) नास्तिक
शून्यहृदय वि० शून्य मन के चित्तवाळु; बेध्यान (२) खुल्ला दिलवाळु, सदेह विनानु (३) लागणी विनानु, क्रूर
शूर् ४ आ० ईजा करवी, हणवु (२) १० उ० शौर्य दाखववु
शूर वि० शूरवीर, पराक्रमी (२) पु० शूरवीर माणस (३) श्रीकृष्णना दादा
शूरकीट पु० तुच्छ योद्धो (जतु जेवो)
शूरता स्त्री०, **शूरत्व** न० शूरपणु
शूरमानिन् पु० पोताना शौर्यनी खोटी बडाई मारनारो
शूरसेनाः पु० ब० व० मथुरा नजीकनो एक प्रदेश के तेना लोको
शूर्प पु०, न० सूपडु
शूर्पकर्ण पु० हाथी (२) गणेश
शूल पु० भाला जेवु अणीदार हथियार (२) त्रिशूल (३) मास सेकवानो सळियो (४) शूळी (५) शूळ; तीव्र वेदना (६) विक्रय [देव (त्रिशूलधारी)
शूलधृक्, शूलपाणि, शूलभृत् पु० महा-
शूलाधिरोपित वि० शूळीए चडावेलु
शूलारोपण न० शूळीए चडाववु ते
शूलावतंसित वि० शूळीए चडावेलुं
शूलांक पु० शिव [(त्रिशूलधारी)
शूलिन् वि० भालाधारी (२) पु० शिव
शूल्य वि० सळिया उपर शेकेलु
शृगाल पु० शियाळ
शृणि स्त्री० अकुश (हाथी माटेनो)
शृत वि० राधेलु (२) उकाळेलु
शृखल पु०, न० लोढानी साकळ (२) साकळ (लाक्षणिक पण) (३) कमरे पहेरवानी साकळी

शृखलक पु० साकळ (२) पगे डेरावाळु प्राणी (दूर चाल्यु न जाय ते माटे)
शृंखला स्त्री० जुओ 'शृखल'
शृग न० शिगडु (२) शिखर; टोच (३) ऊचाई (४) प्रभुत्व (५) रणशिगु (६) अभिमान (७) बाणनी शीगडाना आकारनी सोटी–काड
शृंगक पु०, न० शिगडु (२) पिचकारी
शृगवेर न० गगा नदी उपरनु एक शहेर (आजना मीरझापुर नजीक)
शृंगाटक न० चार रस्ता भेगा थता होय ते स्थान (२) बारणु
शृंगार पु० क्रीडा के रति माटेनी स्त्री-पुरुषनी एक बीजा प्रत्येनी स्पृहा (२) शृंगाररस (३) विलास, रति (४) शणगार (५) हाथीना शरीर उपर सिंदूरथी करेलो शणगार
शृंगारचेष्टा स्त्री० शृगारिक हावभाव
शृंगाररस पु० काव्यशास्त्रमा प्रसिद्ध आठ के नव रसमानो प्रथम
शृंगारलज्जा स्त्री० प्रेमने कारणे ऊभी थयेली लज्जा
शृंगांतर न० शिगडाना बे ऊचा छेडा वच्चेनु अतर (गाय इ० ना)
शृगिका स्त्री० एक अस्त्र (२) शिला वगेरे फेकवानु यत्र
शृगिन् वि० शिगडावाळु (२) शिखरवाळु (३) पु० पर्वत (४) हाथी (५) आखलो (६) शिव के तेमनो एक गण
शृ ९ प० चीरीने टुकडा करवा (२) हणवु, ईजा करवी [(३) शिखर, टोच
शेखर पु० कलगी, तोरो (२) मुगट
शेफ पु०, न० पुरुषनी गुह्येद्रिय (२) वृषण, गोळी [फूलछोड; शहाळी
शेफालि, शेफालिका, शेफाली स्त्री० एक
शेमुषी स्त्री० बुद्धि, समजण
शेवधि पु० कीमती खजानो
शेष वि० बाकी रहेलु (२) पु०, न० बाकी रहेलु ते (३) वधेलु ते (४) पु० परिणाम; असर (५) अत (६) मोत (७) शेषनाग (८) हाथी (९) प्रसाद; कृपा
शेषशायिन् पु० विष्णु [प्रसाद
शेषा स्त्री० देवने चडावेला फूल वगेरेनो
शेषे अ० अंते, छेवटे (२) बाकीनी बधी बाबतमा (उदा० 'शेषे षष्ठी')
शेष्य वि० उपेक्षा करवा योग्य
शैक्य वि० शीकामा लटकावेलु (२) अणीदार (३) पु० शीकु (४) शीकामा राखेलु पात्र
शैक्यायस न० लोही जेवा रगनु पोलाद
शैक्ष वि० शास्त्रादिना अभ्यासवाळु
शैघ्र, शैघ्र्य न० त्वरा, वेग
शैत्य न० ठडक [मदता, आळस
शैथिल्य न० शिथिलता; ढीलापणु (२)
शैनेय पु० सात्यकि
शैल वि० पथराळ, पथ्थरनु बनेलु (२) शिलायुक्त (३) पु० पर्वत, खडक (४) पथ्थरनो ढगलो
शैलगुरु वि० पर्वत जेटलु भारे (२) पु० हिमालय
शैलजन पु० पर्वतवासी
शैलतनया, शैलपुत्री स्त्री० पार्वती
शैलसार वि० पर्वत जेटलु दृढ के बळवाळु [वर्तणूक
शैली स्त्री० ढब, रीत, पद्धति (२)
शैलूष पु० नट
शैलूषी स्त्री० नर्तिका, नटी
शैलेय वि० घणा खडकवाळु (२) पर्वतमाथी उत्पन्न थयेलु (३) पर्वत जेवु कठण (४) न० एक सुगधी द्रव्य
शैव वि० शिव संबधी
शैवल पु० शेवाळ; लील
शैवाल पु० शेवाळ; लील (२) न० एक जातनु सुगधी लाकडु
शैशव न० बचपण
शैशिर वि० शिशिर ऋतु सबधी (२) हिममय, बरफथी आच्छादित

शो ४ प० [श्यति] तीक्ष्ण करवु
शोक पु० खेद, दिलगीरी, सताप
शोकनिहत वि० शोकथी भागी पडेलु
शोकस्थान न० शोकनु कारण
शोचिस् न० काति; तेज
शोच्य वि० अफसोस करवा योग्य
शोण वि० लाल रगनु, रातु (२) पाटलिपुत्र नजीक गगाने मळतो नद
शोणहय पु० द्रोणाचार्य
शोणित वि० रातु (२) न० लोही
शोणितपारणा स्त्री० लोही-मासनो नास्तो के भोजन
शोणितपुर न० बाणासुरनी राजधानी
शोणितभृत् पु० देहधारी–शरीरी ते
शोणिमन् पु० रताश
शोथ पु० सोजो
शोध पु० शुद्ध करवु ते (२) सुधारवु ते (३) छूटवु ते (देवामाथी) (४) वेरनी वसूलात
शोधन वि० शुद्ध करनारु (२) न० शुद्ध करवु ते, साफ करवु ते (२) भूल सुधारवी ते (४) (देवु) भरपाई करवु ते (५) (वेरनी) वसूलात (६) धातु शुद्ध करवी ते
शोधित वि० साफ करेलु, शुद्ध करेलु (२) (भूल) सुधारेलु (३) चूकवी दीधेलु (४) वदलो वाळेलु (५) (दोष के पापमाथी) मुक्त करायेलु
शोफ पु० सोजो, गाठ
शोभन वि० तेजस्वी (२) सुदर (३) शुभ (४) नीतियुक्त
शोभना स्त्री० सुदर के सद्गुणी स्त्री
शोभनीय वि० सुदर, मनोहर
शोभा स्त्री० प्रभा, तेज (२) सौंदर्य (३) शणगार
शोभिन् वि० प्रकाशतु (२) शोभतु, सुदर [जवु ते, क्षीणता
शोष पु० सुकाई जवु ते (२) चीमळाई
शोषण वि० सूकवी नाखवु ते (२) चिमळाववु ते (३) पु० कामदेवनु एक बाण (४) न० सूकवी नाखवु ते (५) चूसवु ते [थयेलु
शोषित वि० सुकाई गयेलु (२) क्षीण
शोषिन् वि० सूकवनारु-क्षीण करनारु
शौक्ल्य न० धोळापणु
शौच न० स्वच्छता (२) शुद्धि (सूतक वगेरेमाथी) (३) साफ करवु ते (४) मळत्याग करवो ते
शौटीर वि० अभिमानी, गर्विष्ठ (२) उदार, दानेशरी (३) पु० अभिमानी माणस (४) त्यागी, तपस्वी
शौटीर्य न० गर्व (२) पराक्रम
शौद्र वि० शूद्र सबधी
शौधिका स्त्री० सफेद काग [मास
शौन वि० कूतरानु (२) न० कतलखानानु
शौनिक पु० कसाई (२) पारधी
शौभनेय वि० सुदर पदार्थने लगतु (२) पु० सुदर स्त्रीनो पुत्र
शौभिक पु० जादुगर (२) पारधी
शौरि पु० कृष्ण (२) बळराम (३) वसुदेव (४) शनिग्रह
शौर्य न० पराक्रम (२) बळ; शक्ति
शौंगेय पु० गरुड (२) शकरो बाज
शौंड वि० दारूडियु (२) मदमत्त, उन्मत्त (३) कुशळ, प्रवीण
शौंडिक पु० कलाल
शौंडिकी स्त्री० कलालण
शौंडिन् पु० कलाल
शौंडिर, शौंडीर वि० गर्विष्ठ (२) ऊचु (३) समर्थ (४) न० गर्व, अभिमान
शौंडीर्य न० पराक्रम (२) अभिमान
श्च्युत् १ प० टपकवु, झरवु (२) रेडवु; छाटवु [झमवु ते, वहेवु ते
श्च्योत पु०, श्च्योतन न० झरवु ते,
श्मशान न० मसाण [शूळी
श्मशानशूल पु०, न० स्मशानमा रोपेली

श्मश्रु न० मूछ (२) दाढी (वाळ)
श्मश्रुप्रवृद्धि स्त्री० दाढी वधवी ते
श्मश्रुल वि० दाढीवाळु
श्यान ('श्यै' नु भू० कृ०) वि० नमी गयेलु (२) गाढु, चीकणु (३) सुकाई गयेलु, पातळु थयेलु
श्याम वि० शामळु; घेरु भूरु (२) पु० अल्हाबाद पासे यमुना तीरे आवेलो वड (२) तमालवृक्ष
श्यामल वि० शामळु
श्यामलिमन् पु० काळाश
श्यामा स्त्री० अधारी रात (२) छाया; छायडो (३) काळी स्त्री (४) युवानीनी मध्यमा आवेली स्त्री, अमुक वर्ण-गुण वाळी स्त्री (५) सतान न थयेली स्त्री (६) प्रियगुलता (७) कोयलनी जातनी एक पखिणी
श्यामाक पु० सामो (धान्य)
श्यामायते आ० (काळु थवु, अशुद्ध साबित थवु, जेम के सोनु इ०)
श्यामिका स्त्री० काळाश (२) अशुद्धि; मिश्रण (सोना वगेरेमा)
श्यामित वि० काळु थयेलु
श्याल पु० साळो
श्यालक पु० साळो (२) दुष्ट साळो
श्यालकी, श्यालिका, श्याली स्त्री० साळी
श्याव वि० काळाश पडता पीळा रगनु
श्यावदत्, श्यावदंत वि० घेरा पीळा रगना दातवाळु
श्येत वि० धोळु, सफेद
श्येन पु० शकरो बाज (२) सफेद रग
श्येनपात पु० बाजे एकदम झडप मारवी ते
श्येनावपात पुं० जुओ 'श्येनपात'
श्यैनंपाता स्त्री० बाज पक्षी वडे शिकार करवो ते (२) शिकार
श्रद्दधान वि० श्रद्धावाळु
श्रद्ध वि० श्रद्धावाळु
श्रद्धा ३ उ० —मां विश्वास मूकवो (२) कबूल राखवु; हा पाडवी [इच्छा
श्रद्धा स्त्री० आस्था; विश्वास (२) तीव्र
श्रद्धालु वि० श्रद्धाथी भरेलु (२) तीव्र इच्छा रांखतु (३) स्त्री० दोहदवाळी स्त्री
श्रद्धेय वि० विश्वासने योग्य
श्रपित वि० ऊकळेलु, उकाळेलु
श्रम् ४ प० [श्राम्यति] महेनत करवी, प्रयत्न करवो (२) तपस्या करवी (३) पीडावु; कष्ट पामवु
श्रम पु० परिश्रम, प्रयत्न (२) थाक (३) दुःख; पीडा (४) तप (५) कसरत, लश्करी कसरत—कवायत (७) सखत अभ्यास (८) आश्रम
श्रमजल न० परसेवो
श्रमण वि० श्रम करनारु (२) पु० तपस्वी (३) भिक्षु (जैन के बौद्ध)
श्रमणायते आ० (भिक्षु के तपस्वी थवु)
श्रमसलिल न०, **श्रमसीकर** पुं० परसेवो
श्रमांबु न० परसेवो
श्रव पु० साभळवु ते (२) कान
श्रवण पु०, न० कान (२) पु० एक नक्षत्र (३) न० साभळवुं ते (४) अभ्यास (५) कीर्ति [इतेजारी
श्रवणकातरता स्त्री० साभळवानी
श्रवणगोचर वि० साभळी शकाय तेवा अतरमा आवेलु (२) पु० कान सांभळी शके तेटलु अतर
श्रवणपथ पु० काननो साभळवानो मार्ग
श्रवणपरुष वि० कानने कठोर लागे तेवु (२) साभळवु मुश्केल
श्रवणपालि (—ली) स्त्री० काननु टेरवुं
श्रवणप्राघुणिक पु० कोईने पण काने पडतु [अतर
श्रवणविषय पु० कान साभळी शके तेटलु
श्रवणसुभग वि० कानने प्रिय लागे तेवुं
श्रवणोदर न० काननो खाडो
श्रवपत्र न० एरिंग

श्रवस् न० कान (२) कीर्ति (३) धन (४) अवाज (५) स्तोत्र
श्रव्य वि० साभळवा लायक; प्रशसापात्र
श्राद्ध वि० श्रद्धाळु (२) न० पितृओनी तृप्ति माटे श्रद्धाथी करवानी तर्पण-क्रिया (३) श्राद्धक्रियामा अपातु दान
श्राद्धेय वि० श्राद्धने योग्य
श्राव पु० लक्षथी साभळवु ते (२) वहेवु के झमवु ते
श्रावक पु० सांभळनारो (२) शिष्य (३) जैन के बौद्ध मतनो अनुयायी
श्रावण वि० कान सबधी (२) वेदे फरमावेलु (३) पु० श्रावण महिनो (४) न० सभळाववु ते, जाहेर करवु ते
श्रावस्ति, श्रावस्ती स्त्री० गगानी उत्तरे आवेलु एक शहेर
श्रावित वि० कहेलु, सभळावेलु
श्राव्य वि० साभळवा लायक ('दृश्य'थी ऊलटु) (२) साभळी शकाय तेवु (३) सभळाववा के जाहेर करवा योग्य
श्रात ('श्रम्' नु भू० कृ०) वि० थाकेलु (२) शात पडेलु (३) पु० तपस्वी
श्रि १ उ० पासे जवु (२) आशरो लेवो (३) स्थितिए पहोचवु (४) –ने वळगवु (५) –नो आधार राखवो (६) वसवु (७) योजवु, उपयोगमा लेवु
श्रित ('श्रि' नु भू० कृ०) वि० आशरा माटे पहोचेलु (२) –नो आधार लेतु, –ने आधारे रहेलु
श्रित वि० जुओ 'शृत', राधेलु, भूजेलु
श्री स्त्री० सपत्ति, समृद्धि (२) लक्ष्मीदेवी (३) राजलक्ष्मी (४) पदवी; होद्दो (५) सौंदर्य, शोभा (६) वर्ण; देखाव (७) त्रण वेदनो समूह (८) सरस्वतीदेवी (९) देव वगेरेना नाम पूर्वे मगळवाची शब्द तरीके मुकाय छे (उदा० 'श्री राम')
श्रीकंठ पु० शकर (२) भवभूति कवि
श्रीखंड पु०, न० चदन
श्रीधर, श्रीपति पु० विष्णु
श्रीपर्वत पु० एक पर्वत
श्रीपुत्र पु० कामदेव
श्रीफल न० बीलु (२) नारियेळ
श्रीमत् वि० धनवान (२) भाग्यशाळी; सुखी (३) सुदर (४) सुप्रसिद्ध
श्रीवत्स पु० विष्णु (२) विष्णुनी छाती उपरनु चिह्न (वाळनो भमरो)
श्रीवत्सकिन् पु० छातीमा वाळना भमरावाळो घोडो
श्रीवत्सलक्ष्मन् पु० विष्णु [माणस
श्रीवल्लभ पु० भाग्यशाळी के सुखी
श्रीवृक्ष पु० बीलीनु झाड (२) पीपळानु झाड (३) घोडानी छातीए अने माथे होतु वाळनु गूछळु [गूछळावाळु
श्रीवृक्षकिन् छातीए ने माथे वाळना
श्रु ५ प० साभळवु (२) अभ्यास करवो, शीखवु
–कर्मणि० [श्रूयते] शास्त्रनी आज्ञा होवी, शास्त्रमा कहचु होवु
–प्रेरक० सभळाववु, माहितगार करवु
–इच्छा० [शुश्रूषते] साभळवानी इच्छा करवी (३) शुश्रूषा – सेवा-चाकरी करवी
श्रुत ('श्रु' नु भू० कृ०) वि० साभळेलु (२) साभळवामा आवतु (३) जाणेलु, समजेलु (४) प्रसिद्ध; जाणीतु (५) कहेवातु, नामथी ओळखातु (६) वचन आप्यु होय तेवु (७) न० साभळवानो विषय (८) वेद (९) विद्या (१०) साभळवानी क्रिया
श्रुतधर वि० साभळेलु याद राखे तेवु, यादशक्तिवाळु
श्रुतवत् वि० वेदशास्त्र जाणनारु
श्रुति स्त्री० साभळवु ते (२) कान (३) अफवा, किंवदती (४) समा-

चार (५) अवाज (६) वेद, वेदवाक्य (७) वाणी (८) कीर्ति (९) ब्रह्मविद्या (१०) फलश्रुति (११) नाम (१२) अभ्यास; विद्वत्ता (१३) नादनो एक भेद (संगीतमां तेवी २२ श्रुति छे)
श्रुतिपथ पु० काने पडवुं ते
श्रुतिप्रसादन वि० कानने गमे तेवुं
श्रुतिमहत् वि० सारी पेठे वेद जाणनारुं
श्रुतिमूल न० काननुं मूळ (२) वेदवाक्य
श्रुतिविप्रतिपन्न वि० अनेक प्रकारनी श्रुतिओ –सिद्धांतो सांभळवाथी व्यग्र थई गयेलुं (२) वेदने न प्रमाणतुं
श्रुतिविषय पु० कान (२) कान सांभळी शके तेटलुं क्षेत्र के अंतर
श्रुतिसुख वि० कर्णप्रिय [तेवुं
श्रुतिहारिन् वि० कानने आकर्षे –गमे
श्रेणि पु०, स्त्री०, **श्रेणी** स्त्री० पंक्ति हार (२) टोळुं, समुदाय (३) महाजन; मंडळ (४) कोई पण वस्तुनो अग्र भाग
श्रेणिबद्ध, श्रेणिबंध वि० हारबंध
श्रेयस् वि० वधारे सारुं, पसंद करवा योग्य (२) उत्तम, श्रेष्ठ (३) वधु नसीबदार (४) न० पुण्य (५) सद्भाग्य, सुख, समृद्धि (६) कल्याण; मोक्ष (७) शुभ के मंगळ प्रसंग
श्रेयस्कर वि० सुख के कल्याण करनारुं
श्रेष्ठ वि० सौथी उत्तम (२) सौथी सुखी (३) सौथी प्रिय (४) सौथी मोटुं (उंमरमां)
श्रेष्ठवाच् वि० वक्तृत्वशक्तिवाळुं
श्रेष्ठान्वय वि० उत्तम कुळ के वंशनुं
श्रेष्ठिचत्वर न० शेठ लोको रहेता होय ते भाग –चकलुं
श्रेष्ठिन् पु० शेठ (२) महाजननो वडो
श्रोणि स्त्री० कूलो; नितंब (२) मार्ग
श्रोणिबिंब न० गोळ नितंब (२) कमरपटो
श्रोणिसूत्र न० कमरे बांधवानो दोरो (२) तरवारनो पटो
श्रोणी स्त्री० जुओ 'श्रोणि'
श्रोतस् न० कान (२) हाथीनी सूंढ (३) इंद्रिय
श्रोतृ पु० श्रोता; सांभळनारो (२) शिष्य
श्रोतोरन्ध्र न० सूंढनुं काणुं–नसकोरुं
श्रोत्र न० कान (२) वेद
श्रोत्रपरंपरा स्त्री० एकने कानेथी बीजाने काने आवेली वात
श्रोत्रपेय वि० लक्षपूर्वक सांभळवा योग्य
श्रोत्रिय वि० वेदमां पारंगत एवुं (२) पु० विद्वान ब्राह्मण
श्रौत वि० कानने लगतुं (२) वेदने लगतुं (३) यज्ञने लगतुं (४) न० कोई पण वेदोक्त कर्म (५) त्रण अग्नि (गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिण)
श्लक्ष्ण वि० नरम, मृदु (२) लीसुं, सुंवाळुं (३) नानुं, पातळुं; नाजुक (४) सुंदर; रमणीय
श्लथ् १० उ० शिथिल –ढीलुं थवुं (२) अशक्त थवुं (३) ईजा करवी –प्रेरक० ढीलुं करवुं, छोडवुं
श्लथ वि० छोडी नाखेलुं (२) छूटुं पडेलुं; सरी पडेलुं (३) अस्तव्यस्त
श्लथबंधन न० स्नायुओ ढीला करवा ते
श्लथलंबिन् वि० ढीलुं; लबडतुं
श्लाघ् १ आ० वखाणवुं (२) खुशामत करवी (३) बडाई हांकवी
श्लाघन वि० बडाश मारतुं (२) न० वखाण, खुशामत
श्लाघा स्त्री० वखाण (२) बडाश; आत्मप्रशंसा (३) खुशामत
श्लाघाविपर्यय पु० बडाश न मारवी ते
श्लाघिन् वि० गर्विष्ठ; उद्धत (२) बडाश मारतुं (३) प्रसिद्ध
श्लाघ्य वि० वखाणवा लायक (२) आदरणीय
श्लिष् ४ प० भेटवुं (२) चोटवुं; वळगवुं (३) ग्रहण करवुं, समजवुं

श्लिष्ट ('श्लिष्' नु भू० कृ०) वि० भेटेलु (२) वळगेलु (३) अवलंबेलु (४) श्लेष थतो होय तेवु (५) बराबर चोटीने पहेरातु होय तेवु

श्लेष पुं० आलिंगन (२) वळगवु ते (३) संयोग, संबंध (४) बे अर्थमा शब्द वापरवाथी ऊपजतो अलंकार

श्लेष्मन् पु० कफ (२) आखनो पियो

श्लोक् १ आ० वखाणवु (२) काव्य रचवु (३) ढगलो करवो, भेगुं करवु

श्लोक पु० काव्य वडे वखाणवु ते (२) वखाणनु काव्य (३) प्रसिद्धि, कीर्ति (४) अनुष्टुभनी कडी (५) पद, कडी

श्वन् पु० कूतरो

श्वपच् (–च) पु० चांडाल, हीन कोटीनो बहिष्कृत माणस (२) फासी-गरो, जल्लाद

श्वपाक पु० चांडाल

श्वभ्र न० काणु; छिद्र (२) गुफा; बखोल (३) नरक

श्ववृत्ति स्त्री० कूतरानु जीवन (२) [नोकरी

श्वशुर पु० ससरो

श्वशुरौ पु० द्वि० व० सासु अने ससरो

श्वशुर्य पु० साळो (२) दियर

श्वश्रू स्त्री० सासु

श्वस् २ प० श्वास लेवो (२) निसासो नाखवो, हाफवु

श्वस् अ० आवती काले (२) भविष्यमा

श्वसन पु० पवन, हवा (२) न० श्वासोच्छ्वास (३) निसासो (४) स्पर्श, स्पर्शनो विषय [वायु

श्वसनसमीरण न० श्वासोच्छ्वासनो

श्वसित ('श्वस्'नु भू० कृ०) वि० श्वास लेतु (२) निसासो नाखतु (३) न० श्वासोच्छ्वास (४) निःश्वास

श्वस्तन वि० आवती काल संबंधी (२) भविष्यनु

श्वान पु० कूतरो

श्वापद वि० जंगली, क्रूर –हिंसक – जंगली पशु (२) वाघ

श्वावराह वि० कूतरा अने सूवर वच्चेनुं (युद्ध, बेमाथी कोई पण मरे तो पण शिकारीने तो लाभ ज)

श्वाविध् पु० साहुडी

श्वास पु० श्वासोच्छ्वास (२) निःश्वास

श्वासोच्छ्वास पु० श्वास लेवो अने मूकवो ते [समृद्ध थवु

श्वि १ प० वधवु, सोजो आववो (२)

श्वित् १ आ० सफेद थवु

श्वित्र न० सफेद कोढ

श्विद् १ आ० [श्विंदते] सफेद थवु

श्वेत वि० सफेद, धोळु (२) पु० सफेद रंग (३) शुक्र ग्रह (४) धूमकेतु

श्वेतकाकीय वि० (सफेद कागडानी जेम) असाधारण; सांभळवामा न आवेलु

श्वेतच्छद पु० हंस

श्वेतद्वीप पु० वैकुंठ

श्वेतभानु पु० चंद्र

श्वेतभिक्षु पु० श्वेत वस्त्रधारी भिक्षु

श्वेतार्चिस् पु० चंद्र

श्वेताश्व पु० अर्जुन

श्वेतांबर पु० जैनोमा सफेद वस्त्रधारी साधुओनो एक पंथ

श्वेतिमन् पु० धोळाश, धोळो रंग

श्वोवसीय, श्वोवसीयस् वि० शुभ; मांगलिक (२) न० सुख, सद्भाग्य

ष

षट्क पु० छ (२) न० छनो समूह (३) काम क्रोध वगेरे षड्रिपु
षट्कर्ण वि० छ कानथी सभळायेलु (त्रीजा-त्राहित दडे सभळायेलु)
षट्कर्मन् न० ब्राह्मणोना छ कर्म (अध्यापन, अध्ययन, यजन, याजन, दान, अने प्रतिग्रह) (२) ब्राह्मणोने आजीविका माटेना शास्त्रोक्त छ कर्म (उछ, प्रतिग्रह, भिक्षा, वाणिज्य, पशुपालन, कृषिकर्म) (३) योगाभ्यास माटेना छ कर्म (धौति, वस्ती, नेती, नौलिक, त्राटक, अने कपालभाती) (४) मततत्रथी थता छ कर्म (शाति, वशीकरण, स्तभन, विद्वेप, उच्चाटन अने मारण)
षट्कोण न० वज्र (२) हीरो (३) छ खूणावाळी आकृति
षट्चक्र न० तत्रोक्त छ शारीरिक चक्रो (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञाख्य)
षट्चरण, षट्पद पु० भमरो (छ-पगो)
षट्पदज्य त्रि० भमराओ रूपी पणछवाळु (कामदेवनु धनुष्य)
षट्पदी स्त्री० छ पक्तिओनी बनेली कडी (२) भमरी (३) छ अवस्थाओ (भूख, तरस, शोक, मोह, जरा, मृत्यु; अथवा काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मान)
षडधिक वि० छ वधु होय तेवु
षडंग न० छ भागवाळु शरीर (बे जाघ बे बाहु, शिर अने कमर) (२) वेदना सहायक छ शास्त्रो (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छद, ज्योतिप) (३) गायनी छ मागलिक वस्तुओ (गोमूत्र, छाण, दूध, घी, दही, गोरोचन) (४) कोई पण छ पदार्थनो समूह
षडंघ्रि पु० भमरो
षडानन पु० कार्तिकेय
षट्गवीय वि० छ बळदथी खेचातु
षड्गुण त्रि० छ गणु (२) छ गुणवाळु (३) न० छ गुणनो समुदाय (४) विदेश-नीतिमा राजाए आचरवा योग्य छ कार्यो (सधि, विग्रह, यान के चडाई, आसन द्वैधीभाव, सश्रय)
षड्ज पु० सगीतना स्वरसप्तकमानो पहेलो – 'सा' (२) मोरनो अवाज
षड्दर्शन न० हिंदु तत्त्वज्ञानना छ शास्त्रोनो समुदाय (साख्य, योग, न्याय, वैशेपिक, मीमासा, वेदात)
षड्भाग पु० छठ्ठो भाग
षड्रस न० (मीठो, खारो, तीखो, तूरो खाटो, अने कडवो ए) छ रसनो समूह
षड्रसाः पु० ब० व० छ रसो
षड्वर्ग पु० छ वस्तुओनो समूह (२) मानव जातना छ शत्रु (काम, क्रोध लोभ, मद, मोह अने मत्सर) (३) पाच इद्रियो अने मन
षड्विध वि० छ प्रकारनु
षण्मासिक वि० छ महिनानु, छ महिने आवतु
षण्मुख पु० कार्तिकेय
षष् वि० (ब० व०) छ
षष्टि स्त्री० साठ (सख्या)
षष्टिक पु०, **षष्टिका** स्त्री० एक जातना चोखा (जलदी ऊगे एवा)
षष्टिभाग पु० शिव
षष्टिहायन पु० साठ वर्षनो हाथी
षष्ठ वि० छठ्ठु

षष्ठांश पु० प्रजा पासेथी खेतीना उत्पादनमाथी राजा कर तरीके छठ्ठो भाग ले ते (२) छठ्ठो भाग
षष्ठांशवृत्ति पु० राजा (प्रजाना उत्पादनना छठ्ठा भाग उपर जीवतो)
षष्ठी स्त्री० छठ्ठी तिथि (२) बाळकना जन्मथी छठ्ठा दिवसे पूजाती देवी
षंड पु० साढ; आखलो (२) हीजडो, व्यंढळ (३) समुदाय, टोळु (४) पु०, न० टोळु (बकरा इ० नु)
षंढ पु० हीजडो
षाड्गुण्य न० जुओ 'षड्गुण' न०
षाण्मासिक वि० छ महिने आवतु, छमासिक (२) छ महिनानी उमरनु
षिड्ग पु० रडीबाज – व्यभिचारी माणस (२) विट; बेवफा यार
षोडशन् वि० (ब० व०) सोळ
षोडशम वि० सोळमु
षोडशमातृकाः स्त्री० ब० व० गौरी, पद्मा, शची, मेधा इ० सोळ देवीओ
षोडशोपचार पु० (ब० व०) देवनी पूजाना सोळ प्रकार (आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमनीयक, मधुपर्क, आचम, स्नान, वस्त्र, आभरण, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, वंदन)
षोढा अ० छ प्रकारे
षोढामुख पु० कार्तिकेय [थूकवु
ष्ठिव् १, ४ प० [ष्ठीवति, ष्ठीव्यति]
ष्ठीवन न० थूकवु ते (२) थूक

स

स अ० 'सह' के 'सम्', 'सम', 'तुल्य' के 'सदृश' अने 'एक' अथवा 'समान'-ने बदले नाम साथे जोडाई विशेषण के क्रियाविशेषण बनावे छे (अ) –नी साथे, –थी युक्त ए अर्थमां (उदा० 'सपुत्र', 'सरोषम्') (आ) 'समान', 'सरखु' ए अर्थमां (उदा० 'सजाति', 'सवर्ण') (इ) –'ए ज', 'एक ज' ए अर्थमां (उदा० 'सोदर', 'सपक्ष')
सकरुण वि० दयाळु
सकल वि० आखु, पूरु, समग्र
सकाम वि० कामना, वासना के प्रेमवाळु (२) जेनी कामनाओ पूर्ण थई छे तेवु
सकार वि० क्रियाशील, सक्रिय
सकाल वि० समयोचित, प्रसंगोचित
सकालम् अ० वेळासर, वहेली सवारे
सकाश वि० नजरे पडतु, नजीकनु (२) पु० सांनिध्य
सकाशम्, सकाशात् अ० नजीकमां (२) नजीकथी, पासेथी
सकुल्य वि० समान, सरखु
सकृत् अ० एक वार (२) एक वखत
सकृपणम् अ० दीनताथी
सक्त ('सज्' नु भू० कृ०) वि० चोटेलु; वळगेलु (२) आसक्त (३) विघ्नित, डखल करायेलुं
सक्तवैर वि० सतत वेर राखनारु
सक्ति स्त्री० जोडाण, संबंध (२) आसक्ति
सक्तु पु० (ब० व०) साथवो
सक्थि न० साथळ
सक्रिय वि० क्रियायुक्त
सखि पु० मित्र, सोबती (समासने अंते 'सख' थाय; पहेली ए० व० नु रूप 'सखा')
सखी स्त्री० साहेली
सख्य न० मित्रता [सूर्यवंशी राजा
सगर वि० झेरवाळु (२) पु० एक
सगर्भ पु० सहोदर, सगो भाई
सगंध वि० सुगंधीदार (२) संबंधी; सगु (३) गर्विष्ठ (४) पु० सगो

सगुण वि० गुणवाळु (२) सद्गुणी (३) पणछवाळु (धनुष्य)
सगोत्र वि० एक ज गोत्र–कुटुंबनु (२) पु० समान वडवामाथी आवेलो सगो (३) न० कुटुंब
सचकित वि० बीधेलु; छळेलु
सचकितम् अ० छळ्यु–बीन्यु होय तेम
सचराचर वि० पूरेपूरु; तमाम (२) न० आखु विश्व
सचित्र वि० रंगेलु, चित्रविचित्र
सचिव पु० मित्र, साथी (२)वजीर; प्रधान; सलाहकार
सचेतस् वि० बुद्धिमान (२) लागणी-वाळु (३) होश के भानमा आवेलु
सच्चरित (–त्र) वि० सारा आचरण-वाळु; सदाचारी (२) न० सारु आचरण(३)सारा पुरुषोना चरित्रनु वृत्तांत के तेनो इतिहास
सच्चिदानंद पु०(सत्, चित् अने आनंद स्वरूपवाळु) परब्रह्म
सजल वि० भीनु, पाणीवाळु
सजुष्(–स्) वि० आसक्त, प्रेमाळ(२) सोबती; साथी
सज्ज वि० सुसज्ज; तैयार; सुसज्जित (कपडा के हथियार इ० थी)(२) पणछ उपर चडावेलु
सज्जन (सत्+जन) वि० सदाचारी, माननीय (२)पु० सदाचारी माणस
सज्जित वि० (कपडा–घरेणां आदि पहेरीने) तैयार थयेलु (२) सजा-वेलु; तैयार करेलु (३) हथियारबंध (४) आसक्त
सज्जीकृ ८ उ० सज्ज करवु, तैयार करवु (२) शणगारवु (३) पणछ चडाववी
सज्य वि० पणछवाळु (२) पणछ चडावेलु
सट न०, **सटा** स्त्री० तापसनी जटा (२) (सिंहनी) केशवाळी (३) डुक्करना वाळ (४) वाळनी लट (५) कलगी (६) छटा; प्रभा
सत् वि० अस्तित्ववाळु; हयात (२) साचु, खरु (३)सद्गुणी, पवित्र(४) उच्च (कुळ) (५)उचित;योग्य(६) उत्तम, श्रेष्ठ(७)माननीय, आदरणीय (८)डाह्यु;विद्वान(९)सुंदर; मनोहर (१०) स्थिर, दृढ (११) पु० सज्जन (१२) न० अस्तित्वमां होय ते(१३) साचु–खरु–तात्त्विक एवु ते(१४) परब्रह्म; परम तत्त्व(१५)मूळ कारण
सतत वि० हमेशा–कायम होय तेवु;चालु
सततग, सततगति पु० पवन
सततदुर्गत वि० हमेशा दुःखी
सततम् अ० हमेशा, कायम
सततयुक्त वि० सतत तन्मय रहेतु
सतत्त्व न० स्वभाव (२) स्वरूप
सती स्त्री० सदाचारिणी–पतिव्रता स्त्री (खास करीने पति पाछळ जे सहगमन करे छे ते) (२) दुर्गा, पार्वती
सतीर्थ, सतीर्थ्य पु० गुरुभाई, एक ज गुरुनो शिष्य
सत्करण न० उत्तरक्रिया, अग्निदाह
सत्कार पु० आतिथ्य(२)आदर;सन्मान
सत्कुल न० उत्तम कुळ
सत्कृ ८ उ० सत्कार करवो
सत्कृत वि० सारी रीते करेलु (२) आतिथ्य-सत्कार करेलु (३) आदर करेलु; पूजित(४)स्वागत करेलु(५) न० आतिथ्य (६) आदर
सत्क्रिया स्त्री० सत्कर्म, पुण्य के पवित्र कर्म, सदाचार (२) आतिथ्यसत्कार (३) शणगारवु ते
सत्तम वि० अत्युत्तम; श्रेष्ठ
सत्ता स्त्री० अस्तित्व, होवापणु; हयाती (२)सारापणु, उत्तमता
सत्त्र न० जुओ 'सत्र'
सत्त्रा अ० साथे, सहित

सत्रिन् पु० वारवार यज्ञो करनारो गृहस्थ (२) यज्ञ करावनार ऋत्विज (३) शाळामा साथे भणनारो

सत्त्व न० अस्तित्व; हयाती (२) सार; तत्त्व (३) गर्भ (४) प्राण; जीव (५) अंतःकरण (६) माल; मिलकत (७) महाभूत (८) सद्गुण (९) बळ; पराक्रम (१०) सत्यता, वास्तविकता (११) डहापण (१२) त्रण गुणोमानो प्रथम (सत्त्व, रजस, तमस्) (१३) विशेषता; खासियत, सहज स्वभाव (१४) लिंग शरीर (१५) पु०, न० प्राणी (१६) पिशाच, भूत

सत्त्वयोग पु० जीव मूकवो–जोडवो ते

सत्त्वलक्षण न० सगर्भा होवानु चिह्न

सत्त्ववत् वि० जीवतु, चेतन (२) सार के तत्त्ववाळु (३) सत्त्वगुणी; सदाचारी (४) पराक्रमी, बहादुर (५) पु० देह

सत्त्ववती स्त्री० सगर्भा

सत्त्वविप्लव पु० वेहोशी

सत्त्वसंशुद्धि स्त्री० अंतःकरणनी शुद्धि

सत्त्वात्मन् पु० जीव, लिंगदेह

सत्त्वानुरूप वि० पोताना सहज स्वभाव के प्रकृतिने अनुरूप (२) पोताना साधन के संपत्ति अनुसारनु

सत्पात्र न० योग्य के सद्गुणी माणस

सत्पुत्र वि० जेने पुत्र छे तेवु (२) पु० सदाचारी पुत्र (३) श्राद्धक्रिया करनारो पुत्र

सत्प्रतिपक्ष पु० हेत्वाभासनो एक प्रकार; बीजो समान हेतु विरुद्ध पक्षमा होय तेवो हेतु (न्याय०)

सत्फलद पु० बीलीनु झाड

सत्य वि० साचु, वास्तविक, खरु (२) वफादार, प्रमाणिक (३) पूर्ण – सिद्ध थयेलु (४) सद्गुणी, सदाचारी (५) अमोघ (६) पु० पृथ्वीनी उपर आवेला सात लोकमानो प्रथम (७) न० खरापणु, तथ्य; साची वात (८) सद्गुण; पवित्रता (९) वचन; प्रतिज्ञा (१०) चार युगोमानो प्रथम, कृतयुग (११) परमतत्त्व, परमात्मा [सत्यवादी

सत्यधन वि० सत्यरूपी धनवाळु, पूरेपूरु

सत्यपूत वि० सत्यथी पवित्र करेलु; साचु

सत्यभामा स्त्री० सत्राजितनी पुत्री अने श्रीकृष्णनी पत्नी

सत्यम् अ० साचे ज, खरे ज

सत्ययुग न० कृतयुग, चार युगमानो प्रथम

सत्यवती स्त्री० मत्स्यगंधा, व्यासनी माता

सत्यवद्य वि० सत्यवादी

सत्यसंगर, सत्यसंध वि० सत्यवादी; सत्य प्रतिज्ञावाळु

सत्यंकार पु० बानु; करार पेटे अगाउथी जे रकम अपाय छे ते

सत्या स्त्री० सत्यभामा (श्रीकृष्णनी पत्नी) (२) सत्यवती (व्यासनी माता)

सत्यानृत वि० साचु अने जूठु (२) देखीती रीते साचु पण खरेखर खोटु (३) न० वेपार, वाणिज्य

सत्याभिसंध वि० प्रतिज्ञा पाळनारु

सत्याश्रम पु० सन्यास

सत्र न० यज्ञ चाले तेटलो गाळो (१३थी १०० दिवसनो) (२) यज्ञ (३) आहुति (४) वन, जंगल (५) वेश, सोग

सत्रप वि० शरमाळ, लज्जाळु

सत्रम् अ० साथे, सहित

सत्राजित् पु० सत्यभामाना पिता

सत्वर वि० झडपवाळु, वेगीलु

सत्वरम् अ० उतावळे, झट, त्वराथी

सत्समागम पु० सारा माणसनी सोबत

सत्संग पु०, **सत्संगति** स्त्री०, **सत्संनिधान** न० सज्जननी सोबत

सद् १ प० [सीदति] बेसवु (२) आडा पडवु, विश्रांति करवी (३) डूबवु, डूबी जवु (४) रहेवु, वसवु (५) खिन्न–हताश थवु (६) क्षीण थवु;

नाश पामवु (७) आफतमा होवु (८) विघ्न आववु (९) थाकीने भागी पडवु —प्रेरक० [सादयति] बेसाडवु (१०) नाखवु, मूकवु (११) थकववु (१२) नाश करवो, बरबाद करवु

सदधन् वि० दही मेळवेलु

सदन न० घर, भवन (२) नाश पामवु ते, क्षीण थवु ते (३) थाकीने के हताश थईने भागी पडवु ते

सदय वि० दयाळु [हळवेथी

सदयम् अ० दयापूर्वक (२) धीमेथी;

सदर्थ पु० प्रस्तुत वात के मुद्दो

सदस् न० घर; रहेठाण (२) सभा (३) आकाश (४) न० (द्वि० व०) स्वर्ग अने पृथ्वी

सदसत् वि० सत् अने असत्, अस्तित्वमा होय तेवु अने अस्तित्वमा न होय तेवु (२) साचु अने खोटु (३) सारु अने खराब [समजवो ते

सदसद्विवेक पु० सारासारनो भेद

सदसद्व्यक्तिहेतु पु० सारा अने खराबनो भेद समजवानु कारण

सदसस्पति पु० सभाध्यक्ष

सदस्य पु० सभामा बेठेलो माणस, सभासद (२) मददनीश के निरीक्षक ऋत्विज (यज्ञमा)

सदा अ० हमेशा

सदागति पु० पवन

सदाचार पु० सद्वर्तन (२) सारा माणसो वडे आचरातो के परपरागत आचार

सदादान वि० हमेश दान आपनारु (२) हमेश (दानवारि) मद झरतु (३) पु० इद्रनो हाथी; ऐरावत (४) मद झरतो हाथी (५) गणेश

सदाशिव पु० शकर

सदृक्ष, सदृश्(–श) वि० सरखु, समान (२) उचित, अनुकूळ, लायक

सदेश वि० देशवाळु (२) एक ज स्थान के देशनु (३) पडोशनु

सदोगत वि० सभामा बेठेलु

सदोगृह न० सभागृह

सदोत्थायिन् वि० हमेश उद्यमी रहेतु

सद्गति स्त्री० सुखी स्थिति (२) सत्पुरुषोनी गति [सारो गुण

सद्गुण वि० सारा गुणवाळु; सद्गुणी (२)

सद्धर्म पु० साचो न्याय

सद्भाव पु० थवापणु; होवापणु; अस्तित्व (२) मळतावडापणु (३) सारो भाव (४) प्राप्ति

सद्मन् न० घर, रहेठाण

सद्यस् अ० आजे ज (२) तरत ज (३) जलदीथी (४) ताजेतरनु [करातु

सद्यस्कार वि० ते ज दिवसे करवानु के

सद्यस्कालिन वि० ताजेतरनु

सद्यःपातिन् वि० क्षणभगुर

सद्यःप्राणकर वि० तरत बळ आपनारु

सद्यःप्राणहर वि० तरत ज प्राण हरनारु

सद्रत्न न० हीरो

सद्वचस् न० प्रिय–अनुकूळ वाणी

सद्वसथ पु० गाम, गामडु

सद्वस्तु न० सारी चीज-वस्तु (२) नाटक के कथानो सारो विषय ('प्लॉट'), सारी वस्तुगूथणी

सद्वादिता स्त्री० हितकर सलाह

सद्वृत्त वि० सदाचारी, सद्गुणी (२) पूरेपूरु गोळ (वर्तुळ आकारनु) (३) न० सद्वर्तन (४) मळतावडो स्वभाव

सधर्मन् वि० सरखा गुणधर्मवाळु (२) सरखा कर्तव्यवाळु (३) एक ज पथ के सप्रदायनु (४) समान, सदृश

सध्रीची स्त्री० साथी स्त्री (२) पत्नी

सध्र्यंच् वि० साथे जनारु; संगाथी (२) पु० साथी (पति)

सनत् अ० हमेशा

सना, सनात् अ० हमेशा

सनातन वि० कायमी, शाश्वत (२) स्थिर, दृढ (३) पुरातन, पुराणु (४) पुं० एक प्राचीन ऋषि

सनाथ वि० रक्षक, मालिक के स्वामीवाळु (२) सहित, युक्त (३) भरपूर; पूर्ण, भीडनाळु (जेम के, सभा)
सनाथीकृ प० स्वामी – मालिकवाळु करवु (२) रक्षण आपवु
सनाभि वि० एक योनिनु (२) सवधी; ज्ञातिनु (२) समान, सदृश (३) पु० सगो भाई (४) (सात पेढी सुधीनो) सगो
सनामक, सनामन् वि० एकसरखा नामवाळु, एक ज नामवाळु
सनिकार वि० अपमान युक्त
सनिर्विशेष वि० उपेक्षा युक्त, भेदभाव विनानु, परवा विनानु
सनिर्वेदम् अ० हताशपणे, खिन्नताथी
सनित वि० आपेलु (२) मेळवेलु
सनीड(–ल) वि० एक ज माळामा (साथे) रहेतु (२) नजीक–पासे होय तेवु
सन्न ('सद्' नु भू० कृ०) वि० बेठेलु, आडु पडेलु (२) खिन्न, हताश (३) क्षीण (४) नीचु नमी गयेलु (५) नजीकनु (६) धीमु, ऊडु (अवाज)
सन्मान (सत् + मान) पु० सज्जनोनु मान के आदर
सन्मित्र न० सारो मित्र
सपक्ष वि० सवधी (२) पक्षवाळु (३) एक ज पक्षनु (४) समान, सदृश (५) पु० अनुयायी (६) सगु, सवधी
सपत्न वि० विरोधी, वेरी (२) पु० दुश्मन, हरीफ
सपत्नी स्त्री० शोक, पतिनी बीजी पत्नी
सपत्नीक वि० पत्नी साथे होय तेवु
सपत्राकृ ८ उ० अत्यंत घायल करवु (आखु बाण पीछा साथे अदर पेसे तेटलु)
सपत्राकृत वि० (आखु बाण पीछा साथे अदर घूसे ते रीने) सखत घायल करेलु
सपदि अ० क्षण वारमा (२) जलदीथी
सपरिहारम् अ० सकोच साथे
सपर्या स्त्री० पूजा (२) सेवा
सपाद वि० पगवाळु (२) चोथो भाग (पाद) वधु होय तेवु, सवायु
सपिंड पु० (पिंडदान जेने मळे ए सबधवाळो – सात पेढी सुधीनो) सगो
सप्तच्छद पु० एक वृक्ष
सप्तजिह्व, सप्तज्वाल पु० अग्नि (काली कराली, मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा अने प्रदीप्ता –ए सात ज्वाळाओवाळो)
सप्ततंतु पु० यज्ञ
सप्तति स्त्री० सित्तेर
सप्तदीधिति पु० अग्नि
सप्तद्वीपा स्त्री० पृथ्वी (जबू, प्लक्ष, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर –ए सात द्वीपोवाळी)
सप्तन् वि० सात (हमेशा ब० व०)
सप्तनाडीचक्र न० वरसाद जाणवा माटे दोरातु एक चक्र
सप्तपत्र पु० एक वृक्ष
सप्तपदी स्त्री० लग्न वखते वरकन्याने पवित्र अग्निनी आसपास सात पगला भरवानो विधि
सप्तपर्ण पु० एक वृक्ष
सप्तपर्णी स्त्री० रिसामणीनो छोड
सप्तपाताल न० अतल, वितल, सुतल, महातल, रसातल, तलातल अने पाताळ –ए सातेनो समूह
सप्तप्रकृति स्त्री० (ब० व०) राजा, प्रधान, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग अने सैन्य –ए राज्यना सात घटको
सप्तमातृ स्त्री० ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इद्राणी अने चामुडा – आ सात माताओनो समूह
सप्तरुचि पु० अग्नि, जुओ 'सप्तजिह्व'
सप्तर्षि पु० (ब० व०) मरीचि, अत्रि, अगिरस्, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु अने वसिष्ठ – आ सात ऋषिओ (२)

ध्रुवतारानी पासेना आ नामना सात ताराओ

सप्तलोका: पु० ब० व० भूर्, भुवर्, स्वर्, महर्, जनस्, तपस् अने सत्य के ब्रह्म– ए सात लोक

सप्तविध वि० सात प्रकारनु

सप्तशती स्त्री० सातसो श्लोकनो सग्रह

सप्तसप्ति पु० सूर्य (सात घोडाना रथवाळो)

सप्तसमुद्राः पु० ब० व० क्षार, क्षीर, दधि, घृत, इक्षुरस, मद्य अने स्वादूदक (मीठु पाणी) ए सात सागर (सात द्वीपनी आसपास आवेला)

सप्ताश्व पु० सूर्य

सप्ताश्ववाहन पु० सूर्य

सप्ताह पु० (सात दिवस) अठवाडियु

सप्तांग वि० सात अगवाळु राज्य (जुओ 'सप्तप्रकृति')

सप्ति पु० धूसरी (२) घोडो

सप्रतीक्षम् अ० प्रतीक्षापूर्वक

सप्रतीश वि० आदरयुक्त [वाळु

सप्रत्यय वि० विश्वास युक्त (२) खातरी-

सप्रत्याशम् अ० आशा साथे

सप्रभ वि० सदृश, समान देखावनु

सप्रमाद वि० बेदरकार; लक्ष विनानु

सप्रश्रयम् अ० खूब विनयपूर्वक

सप्रसव वि० सहोदर एवु (२) गर्भयुक्त

सफल वि० फल–परिणाम युक्त; सफळ (२) जेनो हेतु पार पडयो छे तेवु; सिद्ध, सार्थक (३) खसी न करेलु

सफलोदर्क वि० सफळ नीवडवानी खातरीवाळु

सबल वि० सेनायुक्त

सबंधु वि० निकट सबधवाळु (२) एक ज कुटुबनु (३) सगासबधीवाळु (४) मित्रवाळु (५) पु० सगो, स्वजन

सबीजयोग पु० एक समाधि, सप्रज्ञात समाधि (योग०)

सब्रह्मचारिन् पु० सहाध्यायी, एक ज गुरुनो शिष्य (२) साथे ज दु ख सहन करनारो ने (३) एक ज जातनो ते

सभा स्त्री० मेळावडो, परिषद (२) समाज, मडळी (३) सभागृह (४) अदालत (५) धर्मशाळा (६) जुगारखानु (७) वीशी, भोजनगृह

सभाकार पु० सभागृह बाधनारो

सभाज् १० उ० आदर करवो; अभिनदन आपवु; (२) मान-पूजा-सत्कार करवा (३) प्रसन्न करवु; खुश करवु (४) शणगारवु; शोभाववु

सभाजन न० सत्कार, अभिनदन (२) विनय, आदर (३) सेवा

सभाजित वि० सत्कार करायेलु; प्रसन्न करायेलु (२) विख्यात, प्रशसा करेलु

सभातल न० सभानी बेठक

सभासद् पु० सभानो सभ्य; 'मेम्बर' (२) सभा वगतनो मददनीश

सभिक, सभीक पु० जुगारनो अड्डो चलावनारो

सभ्य वि० सभा सबधी (२) सभाने योग्य (३) विनयी, सस्कारी (४) विश्वासु; वफादार (५) पु० सभानो मददनीश (६) कुळवान (७) जुगारनो अड्डो चलावनारो (८) तेनो नोकर

सम् अ० धातुओ के धातुसाधित शब्दो साथे सहित, साथे, खूब, अति, परिपूर्णता के सुदरतानो अर्थ दर्शावे (२) नामो साथे समान, सरखु, नजीक, सामे –एवा अर्थ बतावे

सम वि० समान; सरखु (२) सरखी सपाटीवाळु, खाडा टेकरा विनानु (३) बेकी (सख्या) (४) पक्षपात विनानु (५) न्यायी, प्रमाणिक (६) सीधु; सरळ (७) अनुकूळ; सरळ (८) तमाम, कुल (९) न० सपाट प्रदेश – भूमि (१०) सारा – अनुकूळ संजोगो

समक्ष वि० प्रत्यक्ष; नजर सामेनु
समक्षम् अ० –नी नजर सामे, –नी हाजरीमा
समगति पु० पवन
समग्र वि० बधु, आखु, पूरेपूरु (२) जेनी पासे बधु ज छे तेवु, कशी ऊणप विनानु
समचतुरस्र वि० चोरस
समज पु० पशुपखीनो समुदाय के टोळु
समता स्त्री० एकाग्रता; अभेद (२) सरखापणु, समानता (३) निष्पक्षता
समतिक्रम् १ उ० ओळगी जवु, उल्लंघन करवु (२) चडियाता थवु (३) व्यतीत करवु (समय)
समती [सम्+अति+इ] २ प० पार करी जवु (२) चडियाता थवु (३) बाजुए राखवु, त्यागवु (४) पसार करवु
समतीत वि० पसार थयेलु, व्यतीत थयेलु (समय)
समत्व न० जुओ 'समता'
समद वि० उन्मत्त, झनून के आवेशवाळु (२) मद झरवाने कारणे मत्त बनेलु
समदर्शन, समदर्शिन् वि० समान नजर राखनारु, निष्पक्ष
समदुःख वि० बीजाना दु खे दु खी थनारु, दु खमा भागी बननारु
समदुःखसुख वि० सुख अने दु खमा समानपणे भागीदार बननारु
समधिक वि० अत्यत; पुष्कळ (२) सामान्य करता वधी जतु, असाधारण
समधिगम् १ प० [समधिगच्छति] पारो जवु (२) अभ्यास करवो (३) प्राप्त करवु (४) चडियाता थवु, वधी जवु
समध्व वि० साथे मुसाफरी करतु
समनीक न० युद्ध
समनुज्ञा ९ उ० मजूर राखवु, कबूल राखवु (२) जवा देवु, विदाय करवु (३) क्षमा करवी [गुस्से थयेलु
समन्यु वि० दिलगीर, गमगीन (२)
समन्वय पु० अनुक्रम (२) अरसपरस सबध (३) तात्पर्य
समन्वि २ प० अनुसरवु; पाछळ के साथे जवु (२) परिणाम तरीके पाछळ आववु, परिणाम कल्पवु
समन्वित वि० युक्त (२) पाछळ आवतु, क्रममा पाछळ जोडायेलु होतु
समभिधा ३ प० सबोधवु, कहेवु (२) जाहेर करवु
समभिहार पु० पुनरावर्तन (२) एक साथे – भेगु लेवु ते (३) वधारो, आधिक्य
समम् अ० साथे, सोबतमा (२) सरखी रीते (३) समान भावे (४) एक साथे (५) तमाम (६) प्रमाणिकपणे
समय पु० वखत, काळ (२) प्रसंग; तक (३) उचित समय, योग्य काळ (४) करार, सकेत (५) रूढि, चालतो आवेलो आचार (६) शरत (७) नियम; कायदो (८) प्रतिज्ञा (९) निशानी, इशारो (१०) आज्ञा; सूचना (११) सोगद, कसम (१२) मर्यादा; हद, सीमा (१३) सिद्धात (१४) अत, निर्णय (१५) सफळता, आबादी, उन्नति; समृद्धि (१६) मुश्केलीओनो अत (१७) भाषण
समयक्रिया स्त्री० करार करवो ते
समयच्युति स्त्री० उचित समय चूकवो ते
समयपरिरक्षण न० सधि के करारनु पालन करवु ते
समयविद्या स्त्री० ज्योतिषशास्त्र
समया अ० योग्य समये (२) नियत समये (३) –नी वच्चे; दरम्यान (४) नजीक, पासे [आचार
समयाचार पु० रूढि, चालतो आवेलो
समर पु०, न० युद्ध; लडाई
समरभूमि स्त्री० रणभूमि, समरागण
समरशिरस् न० लडाईनो मोखरो
समरेख वि० सीधु

समरोद्देश पु० रणभूमि, समरांगण
समर्चन न० पूजन
समर्थ् १० उ० मानवु, विचारवु (२) समर्थन करवु, साबित करवु
समर्थ वि० बळवान, शक्तिशाळी (२) अधिकारी, लायकातवाळु (३) योग्य, उचित (४) अर्थनी बाबतमा संबंधवाळु (५) अर्थयुक्त (६) महत्त्ववाळु
समर्थन न०, **समर्थना** स्त्री० पुरवार करवु ते (२) टेको आपवो ते (३) ताकात, शक्ति (४) मतभेदनु समाधान (५) थयेला अपराध माटे वळतर आपवु ते (६) विरोध
समर्थित वि० पुरवार करेलु (२) विचारेलु, मानेलु (३) नक्की करेलु
समर्पण न० अर्पण करवु ते
समर्पित वि० अर्पण करेलु
समर्यादम् अ० चोकसपणे, निश्चितपणे
समवतार पु० नीचे ऊतरवु ते (२) नदी के तीर्थमा ऊतरवानो घाट
समवर्तिन् वि० निष्पक्ष, सौ साथे समानपणे वर्तनारु (२) पु० यमराजा
समवस्था १ आ० [समवतिष्ठते] स्थिर के अचळ रहेवु (२) तैयार ऊभा रहेवु —प्रेरक० दृढ के स्थिर करवु (२) अटकाववु
समवस्था स्त्री० स्थिर अवस्था (२) समान दशा (३) स्थिति, अवस्था
समवहार पु० मिश्रण (२) संग्रह
समवाय पु० समुदाय, संग्रह (२) ढगलो, जथ्थो (३) एवो नित्य संबंध के जेमा एक संबंधीनो नाश थता बीजो संबंधी नाश पामे (जेम के, दूध अने तेना सफेद रंगनो) (४) आकाशी ग्रह-नक्षत्रनु एकठा थवु ते — पासे आववु ते
समवायिन् वि० नित्य निकट संबंधथी जोडायेलु (२) एकत्र — जूथमा होय तेवु
समवे (सम् + अव + इ) २ प० भेगा थवु, एकठा थवु (२) समवाय संबंधथी जोडायेला होवु
समवेक्षण न० निरीक्षण; तपास
समवेत वि० एकठु थयेलु, भेगु थयेलु (२) समवाय संबंधथी जोडायेलु
समश् ५ उ० पूर्णपणे व्यापवु (२) पामवु, पहोंचवु (३) ९ प० खावु, भोगववु
समष्टि स्त्री० समग्रता, समान घटको मळीने बनतो एक समुदाय ('व्यष्टि' थी ऊलटु)
समस् ४ उ० जोडवु, साथे लाववु (२) जोडीने समास करवो
समस्त वि० जोडेलु, साथे आणेलु (२) जोडीने समास करेलु (३) समग्र
समस्या स्त्री० कोयडो, उखाणु (२) अधूरु होय तेने पूरु करवु ते
समंजस वि० योग्य, उचित (२) साचु, खरु (३) स्पष्ट, समजाय तेवु (४) सद्गुणी, न्यायी (५) अनुभवी, अभ्यासी (६) नीरोगी (७) न० योग्यता, उचितता (८) खरापणु (९) समानता
समंत वि० दरेक बाजु होतु, सार्वत्रिक (२) पूरु, आखु (३) पु० हद, सीमा
समंततः अ० बधी बाजुएथी; चोतरफथी
समंतपंचक न० कुरुक्षेत्रनो प्रदेश के तेनी नजीकनु स्थळ
समंतभद्र पु० बुद्ध
समंतात् अ० जुओ 'समंततः'
समा स्त्री० (ब० व०, पाणिनी ए० व० मा पण वापरे छे) वर्ष
समा अ० साथे, सहित
समाकरण न० बोलाववु ते
समाकर्ण् १० प० —ने साभळवु
समाकुल वि० भीडवाळु, भरपूर (२) क्षुब्ध, गूंचवायेलु, अटवायेलु
समाकृष् १ प० खेंची काढवु (२) आकर्षवु (३) निदवु
समाक्रम् १ उ० [समाक्रामति, समाक्रमते]

कबजो लेवो (२) भरी काढवु, व्यापवु (३) हुमलो करवो, ताबे करवु (४) उपर पग मूकवो – चालवु, वारवार जवु आववु

समाक्रांत वि० उपर पग मुकायो होय के चालवामा आव्यु होय तेवु (२) हुमलो करायेलु (३) पाळेलु (वचन)

समाख्या २ प० गणवु, गणतरी करवी (२) कहेवु, वर्णववु (३) जाहेर करवु

समागत वि० भेगु मळेलु (२) युक्त, सहित (३) आवी पहोचेलु (४) पासे पहोचेलु (५) न० समागम, मेळाप

समागति स्त्री० आगमन (२) सयोग, सगम (३) सहवास

समागम् १ प० [समागच्छति] भेगा मळवु (२) सोबत करवी (३) सभोग करवो

समागम पु० मिलन, मेलाप, एकठा मळवु ते (२) सोबत

समाचर् १ प० आचरवु, वर्तवु (२) खसेडवु, दूर करवु

समाचार पु० वर्तणूक, वर्तन (२) मद्-वर्तन; सारी चालचलगत (३) खबर

समाचेष्टित न० वर्तणूक, वर्तन, रीत

समाज पु० मडळी, मेळो, समुदाय (२) उजाणी के उत्सव माटेनी मडळी (३) मेळाप, मळवु ते [प्रेक्षक

समाजिक पु० कोई मडळीनो सभ्य (२)

समाज्ञा ९ उ० बराबर जाणवु के समजवु (२) ओळखवु
–प्रेरक० आज्ञा करवी

समाज्ञा स्त्री० कीर्ति (२) नाम (केटलाक उपासना एवो अर्थ आपे छे)

समादा ३ उ० लेवु, स्वीकारवु (२) पकडवु (३) बक्षिस करवु (४) पाछु वाळवु (५) समजवु (६) भेगु करवु

समादिश् ६ प० बतावबु, दर्शाववु (२) जणाववु, कहेवु (३) जाहेर करवु (४) भविष्य भाखवु (५) आज्ञा करवी (६) निमणूक करवी, सोपवु

समादिष्ट वि० दर्शावायेलु, फरमावेलु

समादेश पु० आज्ञा, हुकम, सूचना

समाधा ३ उ० एकठु मूकवु, साथे मूकवु (२) –उपर मूकवु (३) गादीए बेसाडवु (४) शात करवु, स्वस्थ करवु (५) एकाग्र करवु (६) समाधान करवु (शकानु) (७) दुरस्त करवु (८) विचारवु

समाधान न० साथे मूकवु के जोडवु ते (२) –मा स्थिर के एकाग्र करवु ते (३) स्थिरता, स्वस्थता, शाति (४) शका दूर करवी ते

समाधि पु० स्थिर के एकाग्र करवु ते (२) ऊडु ध्यान (ध्यान-ध्येय-ध्यातानु भेद-ज्ञान न रहे तेवु) (३) एकाग्रता, लवलीनता (४) ध्यान-समाधि युक्त तपस्या (५) सबध, जोडाण (६) गळानो साधो के गळानी अमुक स्थिति

समाधित वि० समाधान पामेलु, शात थयेलु, मनायेलु

समाधिन् वि० जुओ 'समाधिमत्'

समाधिभृत् वि० ध्यानमा लवलीन एवु

समाधिमत् वि० समाधियुक्त (२) पवित्र, धार्मिक

समाधूत वि० वीखरायेलु

समान वि० सरखु, सदृश, तादृश (२) पु० पाच प्राणोमानो एक (अन्न पचवनार नाभिस्थ वायु)

समानधर्मन् वि० सरखा गुण धरावनारु (२) सहानुभूतिवाळु, कदरदान

समानप्रतिपत्ति वि० समान बुद्धि के डहापणवाळु

समानम् अ० एक सरखु होय तेम

समानशील वि० सरखा स्वभावनु; सरखी प्रकृतिवाळु

समानी १ प० भेगु करवु, जोडवु (२) लाववु (३) एकत्र करवु

समाप् ५ प० मेळववु, सिद्ध करवु (२) समाप्त करवु, पूरु करवु
–प्रेरक० पूरु करवु – मारी नाखवु

समापक वि० पूर्ण–सिद्ध करनारु
समापत्ति स्त्री० मळवु–भेगा थवु ते (२)अकस्मात(३)समाप्ति
समापद् ४ आ० मेळववु, पामवु(२) बनवु; थवु(३)पूरु थवु
समापन न० समाप्त करवु ते, अत लाववो ते(२)प्राप्त करवु ते(३)नाश करवो ते (४) ऊडु ध्यान
समापना स्त्री० पराकाष्ठा, पूर्णता
समापन्न('समापद्' नु० भू० कृ०) वि० पामेलु, मेळवेलु (२) बनेलु; थयेलु (३)आवी पहोचेलु(४)पीडित
समापादन न० सपूर्ण सिद्ध करवु ते
समापित वि० समाप्त–पूरु करेलु
समाप्त वि० पूरु थयेलु, अत आव्यो होय तेवु(२)पूर्ण, भरपूर
समाप्ति स्त्री० अत(२)पूर्णता, सिद्धि (३) विकास, परिपूर्णता
समाप्लव, समाप्लाव पु० स्नान
समाभाषण न० वातचीत, सभाषण
समाम्ना १ प० [समामनति] पाठ करवो,बोली जवु(२)विधान करवु (३) परपरा स्थापित करवी
समाम्नाय पु० परपराथी चाल्यु आववु ते(२)परपराथी चाल्यो आवेलो सग्रह (शब्दोनो)(३)परपरा(४)वेद वगेरे धर्मग्रथ (५) कुल सग्रह
समायस्त वि० पीडित, दु खित
समायुक्त वि० सकळायेलु, जोडायेलु (२) –मा लागेलु; मडेलु (३) सज्ज करेलु, तैयार करेलु (४) जोगवेलु, पूरु पाड्यु होय तेवु
समायोग पु० जोडाण, योजवु ते(२) तैयारी (३) सचय, समूह (४) हेतु
समारभ् १ आ० आरभवु, माथे लेवु (२)प्रसन्न करवु, मेळवी लेवु
समारंभ पुं० प्रारभ(२)माथे लीधेलु कोई पण कार्य के प्रवृत्ति
समाराधन न० मनोरजन के प्रसन्न करवानु साधन (२) तहेनात; सेवामा रहेवु ते(३)प्रसन्नता
समारुह् १ प० उपर चडवु(२)सवारी करवी (३) मडवु; लागवु
–प्रेरक० उपर चडाववु (२) पणछ चडाववी
समारूढ वि० सवारी करी होय तेवु (२) उपर चडेलु के पडेलु (३) कबूल कर्यु होय तेवु(४)वृद्धिगत(५)रुझायेलु
समारोपण न० –उपर के –मा मूकवु ते (२) आपी देवु ते (३) पणछ चडाववी ते
समारोपित वि० चडावेलु (२) पणछ चडावी होय तेवु(३)मूकेलु(४)आपी के सोपी दीधेलु
समारोहण न० उपर चडवु ते
समार्ष वि० एक ज प्रवर(गोत्र)नु
समालभ् १ आ० ग्रहण करवु, पकडवु (२) लेप करवो, खरडवु
समालभन न० लेप; खरड
समालंब् १ आ० पकडवु (२) –ने अवलबवु (३) –ने वगळवु
समालंभ पु०, **समालंभन** न० पकडवु ते(२)बलिदान माटे पकडवु ते(३) (शरीर–सस्कार माटे) लेप वगेरे करवा ते
समालाप पु० सभाषण, वातचीत
समावस् १ प० रहेवु, वसवु(२)पडाव नाखवो, रोकावु
समावाय पु० सयोग(२)निकट सबध, समवाय (३) समुदाय, समूह
समावास पु० मुकाम, रहेठाण; पडाव
समावासित वि० पडाव नाखेलु
समाविद्ध वि० हलावेलु, वीझेलु
समाविश् ६ प० प्रवेशवु(२)पासे जवु, पहोचवु(३)व्यापवु (४) तत्परताथी सेववु, वळगवु (५) बेसवु, स्थिर थवु

समाविष्ट वि० पूरेपूरु पेठेलु, व्यापेलु (२) पकडायेलु, ग्रस्त (३) भूतप्रेतना वळगाडवाळु (४) –थी पूर्ण
समावृ ६ उ० बधी बाजुथी ढाकवु (२) घेरवु, वींटवु (३) सताडवु (४) वध करवु (६) रोकवु, अवरोधवु
समावृत् १ आ० पासे जवु (२) पाछा फरवु (ब्रह्मचारीए अभ्यास बाद) भेगा मळवु (३) सफळ थवु (४) अत आववो, पूरु थवु
समावृत वि० घेरायेलु; वींटायेलु, ढकायेलु (२) छुपावेलु (३) रक्षित (४) रोकेलु (५) वध करेलु
समावृत्त वि० पूरु थयेलु के करेलु (२) पाछु फरेलु (३) एकठु थयेलु
समावेश पु० प्रवेश (२) अतर्भाव (३) भूतपिशाचनो वळगाड (४) आवेश; जुस्सो, मनोविकार
समाश्रय पु० आश्रय, आधार, रक्षण (२) आश्रयस्थान, रहेठाण
समाश्रि १ उ० आशरा माटे जवु–दोडवु (२) अनुभववु, भोगववु (३) आचरवु; पालन करवु (४) –नो आधार लेवो (५) विश्वास मूकवो (६) पामवु
समाश्रित वि० एकठु–भेगु थयेलु (२) आशरो–अवलवन लेतु (३) –ने लगतु
समाश्लेष पु० गाढ आलिंगन
समाश्वस् २ प० आश्वासन पामवु; स्वस्थ थवु (२) –मा मानवु
समाश्वस्त वि० आश्वासन पामेलु (२) –मा विश्वास मूकतु
समाश्वास पु० छूटकारानो श्वास लेवो ते (२) आश्वासन; सात्वन (३) विश्वास
समाश्वासन न० आश्वासन आपवु ते (२) सात्वना
समास पु० एकीकरण, सयोग (२) बे के वधारे शब्दोना सयोगथी थयेलो शब्द (व्या०) (३) समुदाय (४) कुल –समग्र एवु ते (५) सक्षेप, साराश
समासक्त वि० जोडायेलु; सकळायेलु (२) आसक्त, लागेलु (३) अटकावायेलु (जेम के झेरने, व्यापता)
समासतः अ० टूकमा, सक्षेपमा
समासद् १० उ० मेळववु, प्राप्त करवु (२) पकडी पाडवु (३) हल्लो करवो
समासन न० साथे बेसवु ते
समासन्न वि० नजीकनु, पासेनु
समासंज् १ प० [समासजति] जोडवु, वळगाडवु
समासेन अ० टूकमा, सक्षेपथी
समास्या स्त्री० मुलाकात (२) साथे बेसवु ते (३) बेठक
समाहर वि० सहार करनारु
समाहर्तृ पु० कर वसूल करनारो
समाहार पु० जथ्थो, समुदाय (२) सक्षेप; टूकाण (३) एक समास (व्या०)
समाहित वि० भेगु करेलु (२) समाधान करेलु; शात पाडेलु (३) एकाग्र; समाधियुक्त (४) कबूलेलु (५) गोठवेलु (६) पूरु करेलु (७) मूकेलु, सोंपेलु (८) समशीतोष्ण (९) मोकलेलु
समाहृ १ प० लाववु, लई आववु (२) भेगु करवु (३) आकर्षवु, खेचवु (४) सहार करवो (५) पूरु करवु
समाहृत वि० भेगु करेलु, एकठु करेलु (२) पुष्कळ, अतिशय (३) लीधेलु, स्वीकारेलु (४) टूकावेलु; सक्षिप्त (५) खेंचेलु (पणछ)
समाहृत्य अ० एकी साथे, कुल सरवाळे
समाह्वय पु० आह्वान, पडकार (२) युद्ध (३) साठमारी (क्रीडा के जुगार माटे) (४) नाम
समाह्वा स्त्री० नाम
समाह्वान न० आह्वान, पडकार (२) बोलावीने भेगु करवु ते
समाह्वे १ प० आमंत्रवु; बोलाववु (२) पडकार करवो (युद्धमां) (३) कहेवु,

नामथी ओळखवु(४)१ आ० आह्वान करवु; पडकार देवो, युद्ध माटे उश्केरवु
समांघ्रिक वि० चारे पग समानपणे ऊभु रहेतु (जेम के सिंह)
समि २ प० भेगा मळवु(२)जवु; पहोचवु, पामवु(३)सामा थवु, अथडामणमा आववु
समित् स्त्री० युद्ध, लडाई
समित वि० भेगु मळेलु (२) एकठु थयेलु (३) जोडायेलु
समिति स्त्री० मिलन, सयोग(२)सभा (३)युद्ध(४)टोळु, समूह(५)सदाचारनो नियम (जैन)
समितिंजय वि० युद्धमा विजयी एवु
समिद्ध वि० सळगेलु, प्रज्वलित करायेलु (२) उश्केरायेलु (३) पूर्ण; पूरु
समिद्वत् वि० खूब इधनवाळु (अग्नि)
समिध् स्त्री० इधन, वळतण; काष्ठ (खास करीने यज्ञ माटे)
समिध् ७ आ० सळगाववु, प्रज्वलित करवु(२)उश्केरवु,वधारवु(क्रोध इ०)
समिधन न० सळगाववु ते (२) बळतण (३) उश्केरवानु साधन
समीक न० युद्ध
समीकृ ८ उ० समान – सरखु करवु
समीक्ष् १ आ० जोवु (२) लेखामा – गणनामा लेवु (३) बारीकाईथी तपासवु (४) शोधवु; तपासवु
समीक्षा स्त्री० शोध, बारीक तपास(२) समजण, बुद्धि (३) जोवानी इच्छा (४) आत्मविद्या (५) मीमांसादर्शन (६) साख्य सिद्धात
समीक्षित वि० विचारेलु, तपासेलु
समीक्ष्यकारिन् वि० विचारीने वर्तनारु
समीचीन वि० योग्य, खरुं; साचु
समीप वि० नजीकनु, पासेनु (२) न० सामीप्य, निकटता
समीपतस्, समीपम्, समीपे अ० नजीकमा; हाजरीमा, पासे
समीयते आ० (समान-सरखु मानवु)
समीर् –प्रेरक० हलाववु; खळभळाववु (२) काढवु, फेकवु (३) उच्चारवु (४) ऊचु करवु(५)अर्पवु(६)वने तेम करवु
समीर पु० पवन, हवा
समीरण पु० हवा; पवन (२) श्वास (३) न० फेकवु ते
समीरलक्ष्मन् न० धूळ, रज
समीरित वि० हलावेलु(२)फेंकेलु(३) उच्चारेलु [प्रयत्न करवो
समीह् १ आ० इच्छवु (२) करवा
समीहा स्त्री० उत्कंठा, इच्छा
समीहित वि० इच्छेलु (२) उपाडेलु; माथे लीधेलु(३)न० इच्छा; उत्कंठा
समुक्षण न० छाटवु ते, सिंचन (२) काढवु – फेकवु ते [टेवायेलु
समुचित वि० योग्य, छाजतु(२)–ने
समुच्चय पु० ढगलो, जथ्थो; समुदाय
समुच्चि ५ उ० भेगु करवु, ढगलो करवो (२) क्रमसर गोठववु
समुच्छित्ति स्त्री० समूळ नाश
समुच्छिद् ७ प० जडमूळथी नाश करवो
समुच्छेद पु० समूळ नाश
समुच्छ्रय पु० ऊचाई(२)सामनो, शत्रुता (३)ढगलो;समूह(४)युद्ध(५)पर्वत; टेकरी (६) जन्म (वौद्ध)
समुच्छ्रि १ उ० ऊचु करवु
समुच्छ्वसित न०, **समुच्छ्वास** पु० ऊडो नि श्वास; भारे निसासो
समुज्जृंभ् १ आ० बगासु खावु (२) फेलावु; पथरावु (३) देखावु (४) प्रयत्न करवो [(३)–थी छूटेलु
समुज्झित वि० त्यजेलु(२) जवा दीधेलु
समुत्क वि० उत्सुक, इतेजार
समुत्कट वि० ऊचु (२) अति; पुष्कळ
समुत्क्रम पु० ऊचे चडवु ते (२) उचित मर्यादाओनु उल्लघन

समुत्क्षेप पु० उमेरवु–उल्लेखवु ते(शब्द)
समुत्थ वि० ऊभु थतु, ऊठतु (२) -माथी उत्पन्न थतु के थयेलु
समुत्था १ प० [समुत्तिष्ठति] ऊभा थवु; ऊठवु (२) फरीथी सजीवन थवु के भानमा आववु
समुत्थान न० ऊठवु–ऊभा थवु ते(२) फरीथी सजीवन थवु ते (३) पूरेपूरा साजा थवु ते (४) धधो, व्यवसाय (५) ऊचे चडाववु ते(ध्वज)
समुत्पट् १० उ० पूरेपूरु उपाडी नाखवु; जडमूळथी उखेडी नाखवु (२) जुदु पाडवु (३) हाकी काढवु
समुत्पत् १ प० कूदवु, ऊछळवु, ऊचे चडवु (२) उद्भववु, पेदा थवु (३) वहार धसी आववु (४) हुमलो करवो (५) लुप्त थवु, विदाय थवु
समुत्पत्ति स्त्री० जन्म, उत्पत्ति, मूळ (२) वनवु–थवु ते
समुत्पद् ४ आ० थवु, वनवु (२)उत्पन्न थवु, नीकळवु (३) हाजर थवु
समुत्पिज, समुत्पिजलक पु० भारे अव्यवस्थामा पडेलु सैन्य(२)भारे अव्यवस्था
समुत्सारण न०, **समुत्सारणा** स्त्री० खसेडी मूकवु ते; हाकी काढवु ते
समुत्सुक वि० –ने माटे अधीर के आतुर वनेलु(२) दिलगीर, खिन्न
समुत्सेध पु० ऊंचाई(२)जाडाई
समुदय पु० उदय, ऊगवु ते(२)चडती; उत्कर्ष (३) समूह, ढगलो (४) आखु –समग्र एवु ते(५)महेसूल(६)उद्यम (७) युद्ध(८)हिसावकिताव, नाणातत्र (९) उत्पत्ति कारण
समुदाचार पु० शिष्टाचार(२)सवोधननी योग्य रीत (३) हेतु, प्रयोजन
समुदानय पु० भेगु करवु ते
समुदाय पु० समूह, टोळु
समुदि २ प० ऊचे जवु, ऊगवु(२)युद्ध माटे तैयारी करवी(३)एकठा थवु
समुदित वि० ऊचे गयेलु; ऊगेलु(२) उन्नत, समृद्ध(३)वनेलु, थयेलु(४) एकठु थयेलु(५)युक्त, सहित
समुदीर् –प्रेरक० उच्चारवु, कहेवु(२) उश्केरवु, प्रेरवु
समुदीर्ण वि० खूव उश्केरायेलु (२) उज्ज्वल, प्रकाशित (३) वृद्धिगत
समुद्ग पु० ढाकणवाळी पेटी
समुद्गक पु० ढाकणवाळी पेटी(२)एक प्रकारनी कृत्रिम काव्यरचना–जेनां वे अडधिया उच्चारणमां समान होय पण अर्थमा जुदा होय [(३)वोलेलु
समुद्गीर्ण वि० ओकेलु (२) ऊचकेलु
समुद्दंड वि० उगामेलु (२) भयकर
समुद्देश पु० सविस्तर वर्णन (२) पूर्ण सूचन (३) गणतरी (४) सिद्धात
समुद्धत वि० ऊचु करेलु, उगामेलु(२) उद्धत, गर्विष्ठ, असभ्य (३) तीव्र
समुद्धरण न० ऊचकवु ते (२) उद्धार (३)वहार काढवु ते(४)मुक्ति; मोक्ष; छुटकारो (५) निर्मूळ करवु ते (६) ओकी काढेलो खोराक (७) –माथी काढी लेवु ते (हिस्सो)
समुद्धर्तृ पु० उद्धारक, मुक्तिदाता
समुद्धृ १ उ० ऊचकवु, ऊंचु करवु(२) उद्धारवु, वचाववु(३)जडमूळथी नाश करवो(४)–माथी उपाडी लेवु (हिस्सो)
समुद्भव पु० उत्पत्ति
समुद्भेद पु० देखाव (२) विकास
समुद्यत वि० ऊचकेलु, ऊंचु करेलु(२) रजू करेलु; अर्पेलु(३)सज्ज, तत्पर, तैयार(४)सिद्ध थयेलु, पूरु थयेलु
समुद्यम पु० ऊचकवु ते(२)महा प्रयत्न
समुद्योग पु० उद्यम, प्रयत्न (२) उपयोगमा लेवु ते
समुद्र वि० छापवाळु; महोरवाळु (२) पु० दरियो; सागर(३)एक खूव मोटी सख्या(एक लाख खर्व)
समुद्रकांची स्त्री० पृथ्वी

समुद्रकुक्षि पु० समुद्रनो किनारो
समुद्रगा स्त्री० नदी [खेडनारु
समुद्रगामिन् वि० नौकाजीवी, वहाणवटु
समुद्रगृह न० (ग्रीष्म ऋतु माटे) पाणी वच्चे बांधेलु घर (२) स्नानागार
समुद्रनेमि(-मी) स्त्री० पृथ्वी
समुद्रपत्नी स्त्री० नदी
समुद्रपर्यंत वि० दरियाथी वीटायेलु
समुद्रफल न० एक औषधि
समुद्रफेन पु० समदर फीण, समुद्रफीण
समुद्रमहिषी स्त्री० गंगानदी
समुद्रयायिन् वि० जुओ 'समुद्रगामिन्'
समुद्रयोषित् स्त्री० नदी
समुद्ररसना स्त्री० पृथ्वी
समुद्रलवण न० दरियाई मीठु
समुद्रवेला स्त्री० समुद्रनी भरती (२) समुद्रनु मोजु (३) समुद्र-किनारो
समुद्रा स्त्री० खीजडो, शमी वृक्ष
समुद्रांता स्त्री० पृथ्वी
समुद्वह् १ प० ऊंचु उपाडवु; वहन करवु (२) परणवु
समुद्वाह पु० ऊंचकवु ते (२) लग्न
समुद्वाहित वि० ऊंचकतु, वहन करतु
समुन्न वि० भीजायेलु; भीनु (२) मलिन; मेलु
समुन्नत वि० ऊंचु, उन्नत (२) मगरूर (३) प्रमाणिक, न्यायी
समुन्नति स्त्री० ऊंचकवु ते (२) ऊंचाई (३) महत्ता (४) ऊंचो होद्दो (५) समृद्धि; चडती (६) गर्व
समुन्नद्ध वि० उंचु; उन्नत (२) अत्यंत तीव्र (३) उद्धत (४) पोतानी जातने विद्वान माननारु (५) सूजेलु; फूलेलु
समुन्नम् १ प० चडवुं, ऊंचे जवु
समुन्नी १ उ० पूरेपूरु ऊंचु करवु (२) तारववु (३) चूकवी देवु (ऋण)
समुन्नीत वि० ऊंचु करेलु, वधेलु
समुपचित वि० भू० कृ०) वि० वृद्धिगत; भेगु थयेलु
समुपविश् ६ प० बेसवु (२) उपर आडा पडवु (३) पडाव नाखवो
समुपष्टंभ, समुपस्तंभ पु० आधार, टेको
समुपस्था १ उ० [समुपतिष्ठति-ते] पासे आववु (२) हुमलो करवो (३) थवु, बनवु (४) अति निकट ऊभुं रहेवु (५) पामवु, पहोंचवु [जगा
समुपह्वर पु० ढकायेली के सतावानी
समुपागत वि० पासे आवी पहोंचेलु
समुपादाय अ० -ना उपायथी
समुपे २ प० मेळववु (२) भेगा थवु, मळवु (३) हुमलो करवो (४) पासे जवु, पहोंचवु (५) -ने भाग आवी पडवु (६) सहन करवु
समुपोढ वि० ऊंचु चडेलु, ऊगेलु (२) वधेलु (३) नजीक लावेलु के आवेलु
समुल्लस् १ प० चळकवु (२) नजरे पडवु, देखावु (३) क्रीडा करवी
समूढ वि० भेगु करेलु, एकठु करेलु (२) परणेलु (३) सवधमा आणेलु
समूल वि० मूळ सहित
समूलम् अ० जडमूळथी
समूह् १ उ० भेगु करवु, एकठु करवु
समूह पु० टोळु, समुदाय
समूहन न० भेगु करवु ते (२) संचय
समृ १ आ० [समृच्छते] मळवु, भेगा थवु (२) संघर्षमा आववु (३) भेगु करवु, रचवु
—प्रेरक० [समर्पयति] आपी देवु; समर्पण करवु (२) -उपर के -मा मूकवु (३) पाछु वाळवु
समृद्ध वि० समृद्धिवाळु, आबाद (२) सुखी, नसीबदार (३) पुष्कळ होय तेवु (४) सफळ (५) खूब विकसेलु (६) आखु, समग्र (७) वृद्धिगत थयेलु
समृद्धि स्त्री० आबादी, ऐश्वर्य, संपत्ति (२) अति वृद्धि, विपुलता
समृध् ४, ५ प० आबाद थवु, समृद्ध थवु

—कर्मणि० सफळ थवु, सिद्ध थवु (२)खूब प्राप्त थयेलु होवु
समे २ प० भेगा थवु; मळवु
समेत वि० भेगु मळेलु, एकठु थयेलु (२) पासे आवेलु (३) युक्त, सहित
समेध् १ आ० आबाद थवु, समृद्ध थवु —प्रेरक० सुखी करवु (२) पूरु पाडवु, पूर्ण बनाववु
समेधित वि० खूब ज वधेलु (२) मजबूत (३) संयुक्त
सम्यक् अ० साथे(२)खरु होय तेम; योग्य होय तेम (३) पूरेपूरु होय तेम
सम्यग्ज्ञान न० साचु ज्ञान
सम्यग्दर्शन न०, **सम्यग्दृष्टि** स्त्री० साची श्रद्धा(जैन) (२)ऊंडी नजर
सम्यच्, सम्यंच् वि० साथे जतु (२) योग्य; उचित (३) साचु, खरुं (४) आनदप्रद; अनुकूळ (६) एकसरखु; एकधारु (६) आखु, समग्र
सम्राज् पु० सम्राट, राजाधिराज (राजसूय यज्ञ कर्यो होय तेवो)
सयावक वि० लाखथी रगेलु
सयुज् वि० साथी, सोबती
सयूथ्य पु० एक ज टोळानो एवो ते
सर वि० जतु, खसतु (२) रेचक (३) पु० गति(४)बाण (५) दूध के दहीनी तरी (६) माळा, हार
सरक पु०, न० रस्तानी चालु रेखा (२) मद्य, दारू (३) मद्यपान (४) मद्यपात्र (५) दारू पीरसवो ते
सरघा स्त्री० मधमाखी
सरट पु० पवन (२) काकीडो, काचडो
सरण वि० जतु, वहेतु (२) न० झडपी गति
सरणि(–णी)स्त्री० मार्ग, रस्तो (२) पद्धति, रीत(३)सीधी चालु लीटी
सरभस वि० झडपी, वेगीलु (२) जुस्सादार, आवेशयुक्त
सरभसम् अ० शीघ्रताथी
सरमा स्त्री० कूतरी (२) देवोनी कूतरी
सरयु (–यू) स्त्री० अयोध्या जेने किनारे आव्यु छे ते नदी
सरल वि०सरळ,सीधु(२)प्रमाणिक; निष्कपट (३) भोळु (४) पु० एक जातनु देवदार वृक्ष
सरस् न० सरोवर, मोटु जळाशय(२) पाणी (३) वाणी (सरस्वती देवी)
सरस वि० रसयुक्त, रसाळ (२) स्वादिष्ट (३) भीनु (४) पसीनाथी भीजायेलु (५) प्रेमपूर्ण, कामी (६) मनोरम (७) ताजु; नवु(८) गाढु, नक्कर (९) न० तळाव
सरसिज, सरसिरुह न० कमळ
सरसी स्त्री० सरोवर; तळाव
सरस्वत् वि० पाणीवाळु (२) रसाळ (३)पु० सागर(४)सरोवर(५) नद
सरस्वती स्त्री० वाणीनी देवता (२) वाणी, शब्द; अवाज (३) एक नदी(जे रणमा हवे लुप्त थयेली छे) (४) उत्तम स्त्री
सरहस्य वि० रहस्ययुक्त; चमत्कारिक (२)गूढ मत्र के उपनिषद सहित एवु
सराग वि० रगीन (२) लाखथी रगेलु (३) राग-प्रेम युक्त
सरित् स्त्री० नदी
सरित्पति पु० समुद्र
सरिद्वरा स्त्री० गगानदी
सरीसृप पु० साप; पेटे चालतु कोई पण [प्राणी
सरूप वि० समान रूपवाळु (२) समान
सरूपता स्त्री०, **सरूपत्व** न० चार प्रकारनी मुक्तिमानी एक, देव साथे एकरूप थई जवु ते
सरोज, सरोजन्म न० कमळ
सरोजिनी स्त्री० कमळनो छोड; कमलिनी (२) कमळथी भरपूर तळाव (३) कमळनो समूह (४) कमळ

सरोरुह्, सरोरुह न० कमळ
सरोरुहिणी स्त्री० जुओ 'सरोजिनी'
सरोवर पु० मोटु तळाव
सर्ग पु० त्याग (२) सर्जन, सृष्टिनी रचना–उत्पत्ति (३) सृष्टि (४) स्वाभाविक लक्षण, स्वभाव (५) निर्णय; निश्चय (६) मळत्याग (७) शस्त्रसामग्रीनु उत्पादन
सर्गबंध पु० विविध प्रकरण के सर्ग-वाळु मोटु काव्य, महाकाव्य
सर्ज पु० साल वृक्ष (२) साल वृक्षनो गुदर, राळ
सर्जन न० त्याग करवो ते (२) छूटु करवु ते (३) उत्पत्ति, रचना (४) मळत्याग (५) ऊचकवु – ऊचु करवु ते
सर्प पु० सापनी पेठे वाकुचूकु सरकवु ते (२) साप
सर्पच्छत्र न० बिलाडीनो टोप
सर्पण न० पेटे सरकवु ते (२) बाणनी जमीनने समातर एवी गति
सर्पराज पु० वासुकि नाग
सर्पाराति, सर्पारि पु० नोळियो (२) मोर (३) गरुड   [(२) जतु, खसतु
सर्पिन् वि० पेटे सरकतु; वाकुच्कु जतु
सर्पिस् न० घी
सर्पेश्वर पु० वासुकिनाग.
सर्व स० ना०, वि० बधु, हरेक (२) तमाम, पूरु (३) पु० विष्णु (४) शिव
सर्वकालीन वि० हमेश माटेनु; कायमी
सर्वग वि० बधे फेलायेलु, व्यापेलु
सर्वगति पु० बधानु शरण एवो ते
सर्वजनीन वि० प्रख्यात (२) बधाने हितकर एवु (३) बधाने लगतु
सर्वज्ञ वि० बधु जाणनारु (२) पु० शकर (३) बुद्ध (४) परमात्मा
सर्वतस् अ० दरेक बाजुएथी (२) बधी बाजुए; सर्वत्र (३) पूरेपूरु होय तेम
सर्वतंत्र पु० बधा तत्रो-दर्शनोनो अभ्यासी
सर्वतंत्रसिद्धात पु० बधा दर्शनोए मान्य करेलो सिद्धात
सर्वतःशुभा स्त्री० प्रियगुनो छोड
सर्वतोगामिन् वि० बधे जई शकतु (२) सर्वव्यापी
सर्वतोभद्र पु० विष्णुनो रथ (२) वास (३) बधी बाजुएथी वाचवा छता सरखो ज अर्थ आपतो श्लोक (४) चारे बाजुए बारणावाळु मदिर के महेल (५) लीमडो (६) एक व्यूहरचना
सर्वतोमुख वि० दरेक जातनु; पूरेपूरु, अमर्यादित (२) पु० शिव (३) ब्राह्मण (४) न० पाणी   [होय तेवु
सर्वतोवृत्त वि० सर्वव्यापी, सर्वत्र मोजूद
सर्वत्र अ० बधे (२) सर्व काळे
सर्वत्रग पु० हवा, पवन   [पडतु
सर्वत्रगत वि० सार्वत्रिक; बधाने लागु
सर्वथा अ० बधी रीते; दरेक रीते (२) बिलकुल (नकार साथे) (३) तद्दन, सपूर्णपणे (४) बधे समये (५) खूब ज बधारे (६) कोई पण प्रकारे
सर्वदमन वि० सर्वनु दमन करनारु; सामनो न करी शकाय तेवु (२) पु० दुष्यत-शकुतलानो पुत्र; राजा भरत
सर्वदा अ० बधे समये; हमेशा
सर्वनामन् न० सर्वनाम (व्या०)
सर्वभाव पु० पोतानु समग्र अंतर - हृदय
सर्वभावकर, सर्वभावन पु० शिव
सर्वभावेन अ० पूरेपूरा अतरथी; अत - करणपूर्वक
सर्वमंगला स्त्री० पार्वती
सर्वमेध पु० एक यज्ञ   [मूळ
सर्वयोनि स्त्री० सर्वनु उत्पत्तिस्थान के
सर्ववर्णिन् वि० विविध जातनु
सर्ववेद पु० बधा वेदोनो जाणकार एवो ते
सर्ववेदस् पु० पोताना सर्वस्व वडे यज्ञ करनारो
सर्ववेदस न० पोतानी बधी मिलकत

सर्वव्यापिन् वि० सर्वव्यापी, बधे व्यापेलु
सर्वशस् अ० पूर्णपणे (२) बधे (३) बधी बाजुए [धीरजवाळु
सर्वसह वि० बधु सहन करनारु;
सर्वसहा स्त्री० पृथ्वी [नाश करनारु
सर्वसंस्थ वि० सर्वव्यापी (२) सर्वनो
सर्वसाक्षिन् वि० बधाना साक्षीरूप (२) पु० परमेश्वर (३) अग्नि (४) पवन
सर्वस्व न० पोतानु बधु ते, पोतानी बधी मिलकत (२) सार, तत्त्व
सर्वहर वि० बधु हरनारु (२) कोईनी तमाम मिलकतनु वारसदार (३) सर्वनो नाश करनारु (मृत्यु)
सर्वंकष वि० सर्वनो नाश करनारु; सर्वशक्तिमान (२) पु० ठग
सर्वंसहा स्त्री० पृथ्वी [पूरेपूरु
सर्वाकार अ० (समासमा) सपूर्णपणे;
सर्वात्मना अ० सपूर्ण रीते, पूरेपूरु
सर्वार्थसाधिका स्त्री० दुर्गा
सर्वार्थसिद्ध पु० गौतम बुद्ध
सर्वांगीण वि० आखा शरीरमा व्यापतु
सर्वोत्तम वि० सौमा उत्तम, श्रेष्ठ
सर्षप पु० सरसव, राई (२) वजननु एक नानु माप
सलज्ज वि० शरमाळ, लज्जायुक्त
सलिल न० पाणी
सलिलचर पु० मगर वगेरे जळचर
सलिलचरकेतन पु० कामदेव (मकरकेतु)
सलिलज न० कमळ
सलिलधर पु० मेघ, वादळ (२) देव
सलिलेंद्र पु० वरुण
सलिलोद्भव पु० शख
सलिंग वि० —ने अनुरूप एवु
सलील वि० लीला — क्रीडायुक्त, क्रीडाप्रिय [प्रेमपूर्वक, हेतथी
सलीलम् अ० रमतमा; लीलाथी (२)
सलेशम् अ० पूरेपूरुं
सलोकता स्त्री० इष्ट देवनी साथे एक ज लोकमा रहेवु ते (मुक्तिना चार प्रकारमानो एक)
सव पु० सोमरस निचोववो ते (२) आहुति (३) यज्ञ
सवन न० सोमरस निचोववो के पीवो ते (२) यज्ञ (३) आहुति (४) स्नान
सवनकर्मन् न० आहुति अर्पवारूपी क्रिया
सवपुष वि० मूर्तिमत
सवयस् वि० सरखी उमरनु (२) पु० समकालीन व्यक्ति (३) स्त्री० स्त्रीनी विश्वासु सखी
सवर्ण वि० एक ज रगनु (२) एक ज देखावनु, सदृश (२) एक ज वर्ण के जातिनु [विस्तृत
सविकाश (–स) वि० पूरेपूरु खीलेलु (२)
सवितर्कम् अ० विचारपूर्वक
सवितृ वि० उत्पन्न करनारु, आपनारु (२) पु० सूर्य
सवित्री स्त्री० माता (२) गाय
सविध वि० एक ज जातनु, एक ज प्रकारनु (२) नजीकनु (३) न० सानिध्य, पडोश
सविभ्रम वि० विलासी, स्वच्छदी
सविमर्श वि० विचारवत
सविलक्षम् अ० शरम के मूझवण साथे
सविशेष वि० विशिष्ट लक्षणोवाळु (२) विशिष्ट, खास एवु (३) उत्तम, श्रेष्ठ
सविशेषतस्, सविशेषम् अ० खास करीने (२) अतिशय होय तेम [साथेनु
सविस्तर वि० विस्तार युक्त; विगतो
सविस्तरम् अ० विस्तारथी, विगतथी
सविस्मय वि० आश्चर्य पामेलु (२) सदेह युक्त एवु
सविस्मयम् वि० विस्मयपूर्वक
सवेष्टन वि० पाघडी - फेंटावाळु
सवैलक्ष्य वि० कृत्रिम; यत्नपूर्वक करेलु (२) गभरायेलु, गूचवायेलु
सव्य वि० डाबु (२) दक्षिण दिशानु (३) ऊलटु; विपरीत

सव्यपेक्ष वि० –नी अपेक्षा राखतु;–ने आधारे रहेतु
सव्यम् अ० डाबे खभेथी (जनोई पहेरवानी स्वाभाविक रीत)
सव्यसाचिन् पु० अर्जुन (डाबे हाथे पण धनुष्य वापरी शकतो तेथी)
सव्याज वि० दभ युक्त; ढोगी; लुच्चुं
सव्याजम् अ० –ना बहानाथी
सव्यापसव्य वि० जमणु अने डावु (२) खरु अने खोटु
सव्येतर वि० जमणु
सव्येष्टृ पु० सारथि
सव्रीड वि० शरमाळ (२) शर्मिंदु
सशब्द वि० अवाज करतु (२) मोटा अवाजे जाहेर करेलु
सशब्दम् अ० मोटा अवाज साथे
सशल्य वि० काटावाळु (२) बाण के काटाथी वीधायेलु (३) पीडाकारक; मुश्केल [सुदर; मनोहर
सश्रीक वि० समृद्ध; भाग्यशाळी (२)
ससत्त्व वि० शक्तिशाळी (२) गर्भयुक्त (३) प्राणीओवाळु
ससत्त्वा स्त्री० सगर्भा स्त्री
ससंध्य वि० साजनु, साध्य
ससंभ्रम वि० व्याकुळ, गाभरु
ससंभ्रमम् अ० उतावळे, जलदीथी (२) गभराटमा; गूचवाईने
ससंवित्क वि० चेतना युक्त
ससाध्वस वि० बीकण, डरी गयेलु
सस्पृह वि० स्पृहावाळु, आतुर
सस्पृहम् अ० आतुरतापूर्वक
सस्मित वि० स्मितयुक्त
सस्य न० धान्य, अनाज
सस्यप्रद वि० फळद्रुप
सस्यमालिन् वि० धान्यथी भरपूर
सस्वेद वि० पसीनाथी भीजायेलु
सह् ४ प० सहन करवु (२) खुश थवु (३) सतोष आपवो (४) १ आ० सहन करवु; वेठवु (५) माफ करवु (६) धीरज धरवी (७) आधार आपवो (८) सामनो करवा के हराववा शक्तिमान थवु [करी शकाय तेवु करवु –प्रेरक० सहन करावबु (२) सहन
सह वि० सहन करनारु (२) धीरजवाळु (३) शक्तिमान (४) हरावनारुं (५) सामनो करी शके तेवु (६) उद्यमी
सह अ० साथे (२) एकी साथे
सहकार वि० 'ह' उच्चारवाळुं
सहकार पु० परस्पर मदद (२) आबो
सहकृत्वन् वि० साथे – सहकारमा काम करनारु एवु (२) पु० साथी
सहगमन न० साथे जवु ते (२) स्त्रीनु पोताना पतिना शब साथे वळवु – सती थवु ते
सहचर वि० साथे जतु के रहेतु (२) पु० सोवती, साथी, मित्र (३) अनुचर; नोकर (४) पति
सहचरी स्त्री० सखी (२) पत्नी
सहचारिन् पु० सहचर; सोवती
सहज वि० कुदरती, साथे जन्मेलु (२) आनुवशिक (३) पु० सगो भाई (४) साहजिक स्थिति
सहजारि पु० कुदरती दुश्मन
सहजित् वि० एकदम विजयी नीवडनारुं
सहदेव पु० माद्रीनो नानो पुत्र; पांच पाडवोमा सौथी नानो
सहधर्म पु० एक ज जातनु कर्तव्य
सहधर्मचारिणी स्त्री० विधि प्रमाणे परणेली पत्नी
सहधर्मचारिन् पु० पति
सहधर्मिणी जुओ 'सहधर्मचारिणी'
सहन वि० सहन करनारु (२) न० सहन करवु ते [लगोटियो मित्र
सहपांशुक्रीडिन् पु० बाळपणनो मित्र;
सहभू वि० कुदरती; सहज
सहर्षम् अ० खुशी थईने; आनदपूर्वक

सहवसति स्त्री०, **सहवास** पु० साथे रहेवु – वसवु ते

सहस् वि० वळवान (२) पु० मागशर महिनो (३) शियाळो (४) न० शक्ति; वळ; तेज (५) पाणी

सहसा अ० वळपूर्वक (२) अविचारीपणे (३) एकाएक, तरत ज

सहस्य पु० सोवती

सहस्य पु० पोष महिनो

सहस्र न० हजार (२) मोटी संख्या

सहस्रकर, सहस्रकिरण पु० सूर्य

सहस्रकृत्वस् अ० हजार वखत

सहस्रदीधिति पु० सूर्य

सहस्रधा अ० हजार रीते, हजार भागमा

सहस्रधामन् पु० सूर्य

सहस्रनेत्र पु० इंद्र (२) विष्णु

सहस्रपत्र न० कमळ (२) सारस पखी

सहस्रवाहु पु० सहस्रार्जुन; कार्तवीर्य (२) वाणासुर

सहस्रमरीचि, सहस्ररश्मि पु० सूर्य

सहस्रशस् अ० हजारोनी सख्यामा

सहस्राक्ष वि० हजार आखवाळु (२) सावध, होशियार (३) पु० इंद्र

सहस्रार पु०, न० मायानी टोचे आवेल पोलाण (ऊधा कमळ जेवु, ज्या आत्मा रहे छे)

सहस्रार्चिस् पु० सूर्य

सहस्रांशु पु० सूर्य

सहस्रिन् वि० हजारनो स्वामी – मालिक (२) हजारनु वनेलु (३) हजार जेटलु (४) पु० हजार माणसोनो समूह (५) हजारनो सेनापति

सहाध्ययन न० साथे भणवु ते

सहाध्यायिन् पु० साथे भणनारो

सहाय पु० मित्र, सोवती (२) अनुयायी (३) सहायक

सहायक पु० मददगार

सहायता स्त्री० मदद, सहाय

सहायन न० सोवत [तेवु

सहायवत् वि० –नी सहाय मळी होय

सहासिका स्त्री० सोवत, साथे बेसवु ते

सहित वि० साथे; युक्त (२) सहन करायेलु

सहितम् अ० साथे

सहिष्णु वि० सहनशील, धीर

सहृदय वि० मायाळु, प्रेमाळ (२) पु० विद्वान (३) कदरदान, रसज्ञ

सहेल वि० रमतियाळ, क्रीडाशील

सहोत्थायिन् वि० साथे वड करनारु; साथे षड्यत्र चलावनारु

सहोदर पु० सगो भाई

सह्य वि० सहन करी शकाय तेवु (२) सहन करवा योग्य (३) सहन करी शके तेवु (४) वरावरनु, पूरतु (५) अनुकूळ, मधुर (६) पु० भारतनी सात पर्वतमाळाओमानी एक

संकट वि० सांकडु (२) भीडवाळु (३) कृश करेलु (४) न० साकडो रस्तो (५) मुश्केली, जोखम, भय

संकथ् १० उ० वातचीत करवी (२) वर्णन करवु (३) समजाववु

संकथन न० वर्णन

संकथा स्त्री० सभाषण, वातचीत

संकर पु० मिश्रण, भेळसेळ (२) वर्णोनी भेळसेळ

संकर्षण न० खेंचवु ते, खेचीने भेगु करवु ते (२) आकर्षवु ते (३) खसेडवु ते (४) पु० बळराम (५) शेषनाग (६) जगतनो नाश करनारो (७) अहकार

संकल् १० उ० सरवाळो करवो (२) एकठु करवु, ढगलो करवो (३) मानवु, गणवु (४) पकडवु

संकलन न० भेगु करवु ते

संकलित वि० भेगु करेलु (२) पकडेलु (३) फरी हाथमा लीधेलु

संकल्प पु० निश्चय; मनसूबो (२) तरंग; इरादो, इच्छा (३) कल्पना, विचार (४) मन, हृदय (५) कशा व्रत-तपनी दृढ प्रतिज्ञा (६) (धर्म-कृत्यमाथी) लाभनी – फळनी अपेक्षा

संकल्पज, संकल्पजन्मन् पु० कामदेव (२) इच्छा, कामना

संकल्पप्रभव वि० संकल्प के वारवार चिंतवनथी उत्पन्न थतु (२) पु० कामदेव

संकल्पयोनि पु० कामदेव

संकल्पित वि० कल्पेलु, धारेलु; इरादो राखेलु (२) नक्की करेलु

संकालन न० शबने अग्निदाह देवो ते

संकाश वि० (समासने अंते) समान; सदृश (२) नजीकनु

संकीर्ण वि० मिश्रित, भेळसेळ थयेलु (२) वीखरायेलु, फेलायेलु (३) अस्पष्ट (४) मदमा आवेलु (५) वर्णसंकर होय तेवु (६) अशुद्ध (७) साकडु [कीर्तन, स्तुति

संकीर्तन न० प्रशसा, वखाण (२)

संकुच् १, ६ प० संकोचावु (२) बिडावु

संकुचित ('संकुच्' नु भू० कृ०) वि० सकोचायेलु, टूकु – अल्प थयेलु (२) बिडायेलु; बध थयेलु

संकुल वि० मूझायेलु, गूचायेलु (२) भीडवाळु, भरेलु (३) गाढ, तीव्र (४) न० गिरदी, भीड, टोळु (५) कोण कोनी साथे लडे छे ते पण खबर न पडे तेवी हाथोहाथनी लडाई (६) असबद्ध के विरोधी वात (७) नाश

संकृ ८ उ० करवु, आचरवु (२) बना-ववु [खेंची बाधवु

संकृष् १ प० खेंची जवु; ताणी जवु (२)

संकॄ ६ प० [संकिरति] भेळववु, भेळ-सेळ करवु (२) विखेरवु

–कर्मणि० [संकीर्यते] भेळसेळ थवु; गूचवाई जवु

संकॄत् १० उ० [सकीर्तयति–ते] वखा-णवु; स्तुति करवी (२) कहेवु (३) जाहेर करवु

संक्लृप् १ आ० [संकल्पते] सकल्प करवो; इच्छवु

–प्रेरक० निश्चय करवो; नक्की करवु (२) इरादो राखवो (३) गोठववु (४) अर्पण करवु (५) विचारवु, चिंतववु (६) कल्पवु (७) उत्तरक्रिया करवी

संकेत पु० उल्लेख (२) निशानी; सूचन (३) करार (४) प्रेमीजनने मळवा आववा करेलु सूचन के दर्शा-वेल समय अने स्थान

संकेतक पु० प्रेमीजनने मळवा बोला-ववा करेल सूचन, तेनो समय के स्थान (२) तेवी मुलाकात गोठवनार प्रेमिका के प्रेमी

संकेतन न० (प्रेमीजनो वच्चे नक्की थयेल) मळवानु स्थान के समय

संकोच पु० सकोचावु ते (२) टूकु करवु ते (३) बीडवु – बिडावु ते (४) दीनता (५) न० केसर

संक्रम् १ उ० साथे आववु के मळवु (२) जवु, ओळगीने जवु, –मा थईने जवु (३) पासे जवु (४) –मा प्रवेशवु [–तरफ लई जवु

–प्रेरक० –ने सोपवु, –ने आपवु (२)

संक्रम पु० साथे जवु ते (२) स्थळांतर; संक्रमण (३) पु०, न० साकडो के दुर्गम मार्ग (४) पुल (५) कोई वस्तु प्राप्त करवानु साधन (६) निसरणी

संक्रमण न० एक जगा के स्थितिमाथी बीजी जगा के स्थितिमा जवु ते, सचार (२) ओळगवु ते (३) प्रवेश करवो ते (४) एक राशिमाथी बीजी राशिमा जवु ते (सूर्यनु); संक्राति (५) मृत्यु

संक्रंद पु० युद्ध (२) कोलाहल (३) आक्रद (४) सोम रस काढवानु साधन
संक्रंदन पुं० इद्र (२) न० युद्ध
संक्रांत वि० —मा थईने गयेलु, —मा प्रवेशेलु (२) सोपेलु के आपेलु (३) प्रतिबिंबित थयेलु
संक्रांति स्त्री० साथे जवु के मळवु ते (२) एक स्थिति के स्थळमाथी बीजी स्थिति के स्थळमा गमन (३) एक राशिमाथी बीजी राशिमा जवु ते (सूर्यनु) (४) बीजाने आपी देवु ते (५) (पोतानु ज्ञान) बीजाने आपवानी शक्ति के आवडत (६) प्रतिबिंब
सक्रीड् १ आ० साथे रमवु ते (२) गडगडाट करवो (पैडाए)
संक्रीडित न० रथनो गडगडाट
संक्लिष्ट वि० घसरको थयेलु, छोलायेलु (२) मेलु थयेलु (दर्पण)
संक्लिष्टकर्मन् वि० दरेक काम मुश्केलीथी करी शके तेवु
संक्षय पु० विनाश (२) प्रलय (३) हानि, नुकसान (४) अत, समाप्ति (५) आश्रयस्थान (६) मृत्यु
सक्षि १, ५, ६ प० क्षीण थवु (२) पूरेपूरो नाश करवो
सक्षिप् ६ प० भेगु करवु, ढगलो करवो (२) पाछु खेंचवु, नाश करवो (३) टूकु करवु, सक्षेप करवो (४) ओछु करवु (५) दवाववु, अटकाववु
संक्षिप्त वि० एकसाथे ढगलो करेलु (२) टूकु करेलु, सकोचेलु, दवावेलु, ओछु करेलु (३) फेंकेलु (४) पकडेलु
संक्षेप पु० साथे नाखवु ते (२) टूकु करवु।— सकोचवु ते (३) टूकाण, टूकावेलु ते (४) फेकवु ते (५) सहार (६) कुल सरवाळो
संक्षोभ पु० क्षोभ, खळभळाट (२) धाधळ, धमाल
संख्य न० युद्ध, लडाई
संख्या २ प० गणतरी करवी
संख्या स्त्री० गणना, गणतरी (२) रकम, आकडो (३) बुद्धि, समजशक्ति (४) विचारणा, विवरण (५) युद्ध (६) नाम
संख्याता स्त्री० एक जातनी समस्या—कोयडो (गणतरी के आकडाने लगतो)
संख्यातिग, संख्यातीत वि० असख्य
संख्यातृ वि० परीक्षक
संख्यान न० गणतरी, गणना (२) प्रागटच, प्रादुर्भाव
सख्यापक पु० गणतरी करनार, मोजणीदार
संख्यापरित्यक्त वि० असख्य
सख्यावत् वि० सख्यावाळु (२) बुद्धियुक्त (३) पु० विद्वान
संख्यासमापन पु० शिव
सख्येय वि० गणतरी करवा योग्य, गणतरी करी शकाय तेवु
सग पु० सयोग, सबध (२) सोबत, सहवास (३) आसक्ति (४) युद्ध (५) रुकावट, विघ्न
संगणिका स्त्री० उत्तम के अप्रतिम एवी कथा के उपदेश
संगत वि० जोडायेलु, मळेलु (२) एकठु थयेलु (३) लग्नथी जोडायेलु (४) न० सबध, जोडाण (५) मित्रता, परिचय, सोबत (६) सकोचेलु, सकोचायेलु
सगति स्त्री० सयोग, सबध (२) सोबत सहवास, मेळ (३) उचितता, बधबेसता होवापणु (४) पूर्वापर सबध
सगम् १ आ० [सगच्छते] भेगा थवु, मळवु, जोडावु (२) सभोग करवो (३) सोबत करवी (४) पामवु, पहोचवु (५) सकोचावु
संगम पु० मेळाप, सबध (२) सोबत, सहवास (३) स्पर्श (४) सभोग (५) नदीओनु भेगा मळवु ते, ते स्थान

संगमन न० सगम, मेळाप
संगर पु० वचन,कबूलात(२)स्वीकारवु ते; माथे लेवु ते (३) युद्ध
संगिन् वि० सबद्ध (२) आसक्त (३) इच्छुक (४) कामासक्त (५) एक-धारु, चालु
संगीत वि० साथे गायेलु(२)न० भेगा मळीने गायेलु ते (३) गायन वादन अने नृत्यनो मेळ (४) तेनी कळा
संगीतक न० गायन, वादन अने नृत्यनो जलसो (जाहेर मनोरजन माटेनो)
संगीतार्थ पु० सगीतना जलसा माटे जरूरी साधनसामग्रीनी जोगवाई
संगुप्त वि० सारी रीते रक्षायेलु (२) सारी रीते गुप्त राखेलु
संगृहीत वि० सग्रह करेलु(२)पकडेलु (३) निग्रह करेलु (४) स्वीकारेलु (५) सक्षिप्त
संगॄ ९ उ० [सगृणाति, सगृणीते], ६ आ० [सगिरते] वचन आपवु(२) गळी जवु; खाई जवु
संगै १ प० भेगा मळीने गावु
संग्रह् ९ उ० सघरवु, एकठु करवु (२) निग्रह करवो (३) पकडवु; लेवु (४) सकोचवु (५) स्वीकारवु (६) पणछ उतारी नाखवी
संग्रह पु० पकडवु–लेवु ते(२)सरक्षण (३) अनुग्रह (४) सघरो (५) निग्रह (६) सक्षेप, टूकाण (७) सरवाळो, कुल जे होय ते (८) यादी (९)सरक्षक; शासक, व्यवस्थापक
संग्रहण न० एकत्र करवु ते (२) जडवु ते, बेसाडवु ते (२) मिश्र करवु ते, मिश्रण (४) सभोग, मैथुन (५) व्यभिचार (६) आशा (७) स्वीकृति
संग्रहणी स्त्री० सघरणीनो रोग
संग्राम पु० लडाई, युद्ध
संग्राह पु० पकडवु ते(२)मुठ्ठी (३) घोडानु आगला बे पग ऊचा करी ठेकवु ते
संग्राहक पुं० एकठु करनारो(२)सारथि
संघ पु० समूह; समुदाय, जूथ (२) घणा लोकोनु एकसाथे रहेवु ते
संघचारिन् वि० टोळामा फरतु
संघट् १ आ० मळवु; एकठा थवुं –प्रेरक० एकठु जोडवु के बाधवु (२)वगाडवु (वाजित्र)
संघटना स्त्री० जोडाण;एकठु करवु ते
संघट्ट् १ आ० वगाडवु (वाजित्र) (२) भेगु करवु (३) जोडवु, एकठु करवु(४)घसवु, घसावु(५)दबाववु
संघट्ट पु० एकबीजा साथे घसावु ते (२) अथडावुं ते, अथडामण (३) हरीफाई (४) भेटवु ते
संघट्टन न०, **संघटना** स्त्री० एकबीजा साथे घसावु – अफळावुं ते (२) गाढ सबध (३) सामसामी आवी जवु ते (४) आलिगन (प्रेमीओनु)
संघर्ष पु० घर्षण(२)अथडामण, टक्कर (३) स्पर्धा, हरीफाई (४) अदेखाई (५)वेर, दुश्मनावट
संघाट पु० सुथारीकाम; लाकडाने घडीने बेसाडवा ते
संघाटिका स्त्री० जोड, जोडी
संघात पुं० मडळ, सघ (२)समुदाय; समूह (३) वध, कतल (४) प्रवाह (५) कठण अश
संघातकठिन वि० घन पदार्थ जेवु कठण – नक्कर
संघातमृत्यु पु० एक सामटु मोत
संघातशिला स्त्री० घन के नक्कर शिला
संघाराम पु० बौद्धमठ, विहार
संघुष्ट वि० पडघो पाडतु, गाजतु; रणकतु(२)जाहेर करेलु (३) वेचाण माटे नियत करेलु (४) पु० अवाज, घोघाट
संघृष् १ प० साथे घसवु(२)हरीफाई [करवी, स्पर्धा करवी

संचक पु० वीवु (ढाळवा माटेनु)
संचय पु० ढगलो करवो–भेगु करवु ते (२)सग्रह;मोटो ढगलो(३)साधो
संचर् १ प० (वाहननी तृतीया साथे आ० पण) जवु, चालवु (२) आचरवु, वर्तवु (३) मळवु, जोडावु –प्रेरक० फेरववु; दोरवु (२) पथराय के व्यापे तेम करवु
संचर पु० मार्ग, रस्तो (२) साकडो रस्तो; केडी (३) दरवाजो
संचल् १ प० आम तेम हालवु, डोलायमान थवु (२) कपवु, ध्रूजवु (३) चोकवु (४) विदाय थवु
संचलन न० खळभळाट;कप, ध्रुजारो
संचस्कारयिषु वि० सस्कार-शुद्धि करे एम इच्छतु
संचार पु० चालवु–फरवु ते (२) –माथी पसार थवु ते (३) रस्तो, मार्ग (४) मुश्केलीभर्यो मार्ग (५) मुश्केली(६)(श्रवण-दर्शनथी)मोहित करवु ते (७) चेप लागवो ते
संचारक पु० नेता, भोमियो
संचारिन् वि० चल, जगम(२)फरतु, भटकतु (३) अस्थिर, चचळ (४) असर करी शके तेवु (५) वारसामा ऊतरे तेवु; चेपी
संचि ५ उ० एकठु करवु, सग्रह करवो (२)क्रमसर गोठववु, सीचवु
संचित ('सचि'नु भू० कृ०) वि० एकठु करेलु, ढगलो करेलु (२) सघरो करेलु (३) –थी भरेलु, –युक्त (४) गाढु (जगल)
संचित् १० उ० चितवन करवु (२) विचारणा करवी, तोलन करवु
संचूर्ण् १० उ० चूरेचूरो करी नाखवु
संछद् १० उ० ढाकवु, सताडवु (२) आच्छादन करवु (३) पहेरवु, धारणकरवु (कपडा)
संछन्न वि० ढाकेलु, सताडेलु (२) पहेरेलु (३) घेरायेलु
संछिद् ७ उ० कापवु; कापी नाखवु (२) भेदवु (३) दूर करवु (शंका इ०)(४) निकाल लाववो (प्रश्ननो)
संज् १ प० [सजति] वळगवु, वळगी रहेवु (२) बाधवु
संजन् ४ आ० [सजायते] जन्मवु; पेदा थवु (२) ऊगवु, वधवु (३) बनवु; थवु (४) व्यतीत थवु(समय)
संजन न० बाधवु – वळगाडवु ते (२) (हाथ) जोडवा ते
संजनन वि० उत्पन्न करनारु (२) न० उत्पत्ति, पेदाश (३) विकास
संजय पु० धृतराष्ट्रनो सारथि (तेणे महाभारतना युद्धनु वर्णन, दिव्यदृष्टिथी जोईने, धृतराष्ट्रने सभळाव्यु हतु)
संजल्प् १ प० वातचीत करवी
संजल्प पु० वातचीत (२) घाटाघाट (३) धुमराण
संजात ('सजन्'नु भू० कृ०) वि० उत्पन्न थयेलु(समासमा '–जेमा पेदा थयु होय तेवु,' '–युक्त बनेलु' एवा अर्थमा आवे छे, उदा० 'सजातकोप') (२)व्यतीत थयेलु(समय)
संजिहान वि० तजतु, छोडतु
संजीव् १ प० साथे रहेवु (२) (–नो धधो करीने)जीववु(३)सजीवन करावु
संजीवन न० साथे रहेवु ते (२) सजीवन करवु ते(३)चार घरनी खडकी
संजीवनी स्त्री० मरेलाने सजीवन करनारी कहेवाती औषधि(२)सजीवन करवु ते (३) अन्न
संजीवनौषधि स्त्री० मरेलाने सजीवन करी शकाय तेवी वनस्पति
संज्ञ वि० चेतना के भानवाळु (२) नामवाळु
संज्ञक वि० नाशक, कापनारु

संज्ञा ९ आ० [सजानीते] जाणवु; समजवु (२) ओळखवु (३) पहेरो भरवो, सावचेत रहेवु (४) याद करवु (५) समत थवु
 –प्रेरक० वधेरवु, कापवु
संज्ञा स्त्री० भान, चेतना (२) ज्ञान; समजण (३) बुद्धि, मन (४) सूचना, निशानी (५) नाम (६) सूर्यनी पत्नी; यम–यमीनी माता
सज्ञापन न० वध, नाश
संज्ञाविपर्यय पु० बेहोशी
संज्ञित वि० नामनु–नामथी ओळखातु
संज्वर पु० भारे ताव (२) गरमी (३) गुस्सो [करवु
संतक्ष् १ प० छोली नाखवु (२) घायल
संतक्षण न० कटाक्षयुक्त कठोर वाणी
संतत वि० विस्तृत, पथरायेलु (२) चालु; निरतर, सतत (३) कायमनु (४) घणु; अनेक
संततम् अ० हमेशा, निरतर
संतति स्त्री० फेलावो, विस्तार (२) चालु पक्ति, क्रम के प्रवाह (३) कायम चालु रहेवु ते (४) वश (५) सतान (६) ढगलो
संतन् ८ उ० ढांकी देवु, छाई देवु (२) साथे जोडवु (३) सिद्ध करवु (४) देखाडवु, बताववु
संतप् १ प० तपाववु, गरम करवु (२) शोषी – सूकवी नाखवु (३) सतापवु, पीडवु [करवो
 –कर्मणि० दु खी थवु (२) पस्तावो
संतप्त-वि० तपावेलु, लालचोळ करेलु (२) पीडित, त्रास पमाडेलु (३) बाळेलु (४) सुकायेलु; करमायेलु (५) न० दु ख, शोक
संतप्तायस् न० लालचोळ तपावेलु लोढु
संतम् ४ प० [सताम्यति] थाकी जवु (२) झूरवु
संतमस् (–स) न० सर्वव्यापी अधकार, घोर अधारु (२) महामोह
संतर्पण वि० ताजगी – स्फूर्ति आपनारु (२) न० सतोप, तृप्ति के आनद आपवो ते
संतर्पयाण वि० तृप्ति आपनारु
संतान पु०, न० विस्तार, फेलावो (२) चालु प्रवाह के परपरा (३) वश (४) सतति (५) स्वर्गना पाच वृक्षोमानु एक अथवा तेनु फूल
संतानक पु० स्वर्गना पांच वृक्षोमानु एक (२) एक लोक (गति)
संतानसंधि पु० (दीकरी परणावीने) सगपणथी सधि दृढ करवी ते
संताप पु० गरमी, दाह (२) दु ख, पीडा, परिताप (३) गुस्सो (४) पश्चात्ताप (५) तपस्या
संतार पु० ओळगी जवु ते; पार करवु ते (२) ज्याथी (नदी) पार करी शकाय ते स्थळ, उतरण [होडी
संतारनौ स्त्री० (नदी) पार करवानी
संतुष् ४ प० राजी थवु, संतोप पामवो (२) –मा खूब रुचि होवी
संतुष्ट वि० सतोष पामेलु, खुश थयेलु
संतॄ १ प० ओळगवु (२) तरवु (३) पार पामवु (४) पहोचवु, पामवु (५) –माथी वची जवु, भागी छूटवु
संतोष पु० तृप्ति, समाधान, सुख (२) होय तेटलाथी राजी रहेवु ते
संत्यज् १ प० त्याग करवो (२) दूरथी तजवु (३) बाकात राखवु
 –प्रेरक० लूटी लेवु, पडावी लेवु
सत्रस् १, ४ प० बीवु; डरवु
संत्रास पु० भय, त्रास
संदर्भ पु० गूथवु ते, पहेरवु ते (२) एकीकरण, मिश्रण (३) सुसगतता, पूर्वापर सबध (४) ग्रथ, साहित्यकृति
संदर्शन न० जोवु–निहाळवु ते (२)

दृश्य; देखाव, नजर (३) प्रयोग, उपयोग (४) देखाडवु ते
संदष्ट वि० दशायेलु, करडायेलु (२) छूदायेलु, कचरायेलु
संदह् १ प० बाळवु
संदंश् १ प० [सदशति] डसवु, करडवु (२) वळगी रहेवु, चीपकी रहेवु (३) दाववु; कचरवु
संदंश पु० साणशी, चीपियो–चीमटो
संदंशक पु०, **संदंशिका** स्त्री० साणशी; चीपियो, पकड
संदंशित वि० वस्तर पहेरेलु
संदान पु० घूटण नीचेनो हाथीनो ते भाग ज्या साकळ बधाय छे (२) न० दोरडु (३) साकळ (४) ज्याथी मद झरे छे-ते लमणा आगळनु स्थळ
संदानक न० कबूतरनो माळो
संदानित वि० बाधेलु, जकडेलु
सदिग्घ ('सदिह्'नु भू० कृ०) वि० लेपायेलु; खरडायेलु (२) अनिश्चित, शकाशील (३) –तरीके भूलथी मानी लीघेलु (४) जोखम भरेलु (५) न० अनिश्चतता (६) लेपवु ते
सदिग्घफल वि० झेर पायेला बाणवाळु
सदिग्घीकृत वि० –'ए हशे के शु' एवो सदेह पडे एवा देखाववाळु करेलु
सद्रित वि० बाधेलु, जकडेलु
सदिश् ६ प० आपवु (२) सूचना आपवी, सलाह आपवी, सदेशो मोकलवो (३) दूत तरीके सदेशो लई मोकलवु (४) नियुक्त करवु
संदिह् २ उ० चोपडवु, खरडवु (२) ढगलो करवो (३) शकाशील होवु (४) भूलथी (बीजा तरीके) मानवु
संदिहान वि० सशययुक्त
सदीप् ४ आ० सळगवु, प्रकाशवु
–प्रेरक० सळगाववु (२) **उश्केरवु**
संदीपन वि० सळगावनारु, करनारु, उश्केरनारु (२) न० सळगाववु–उद्दीप्त करवु ते
संदुष् ४ प० दूषित–कलकित थवु
–प्रेरक० दूषित–कलकित–भ्रष्ट करवु (२) आक्षेप-आरोप मूकवो
संदृब्ध वि० गूथायेलु, परोवायेलु
संदृभ् ६ प० गूथवु; बाघवु, परोववुं
संदृश् १ प० जोवु, निहाळवु (२) विचारवु, तपासवु
–प्रेरक० देखाडवु, बताववु
संदेश पु० कहेण; समाचार; खबर (२) सदेशो (३) आज्ञा
संदेशक न० समाचार, खबर
संदेशहर, संदेशहारक पु० दूत, सदेशवाहक (२) एलची
संदेशार्थ पु० सदेशा तरीके कहेवराववानु ते, सदेशो
संदेह पु० शका, वहेम (२) जोखम
संदेहपद वि० शकायुक्त
संदोह पु० दोहवु ते (२) समूह; समुदाय; कोई पण वस्तुनु समूचु ते
संद्राव पु० पलायन, पीछेहठ (२) झडप, वेग
संधा ३ उ० जोडवु, भेगु करवु, मिश्रण करवु (२) सधि–मैत्री–सुलेह करवी (३) साधवु, ताकवु (४) उत्पन्न करवु (५) पूरा पडवु, बरोबरिया नीवडवु (६) आचरवु, करवु
संधा स्त्री० जोडाण, सबध (२) सधि; करार (३) सीमा, हद
संधान न० सबध, जोडाण (२) मिश्रण (३) ताकवु ते, साधवु ते (४) मैत्री, सुलेह, सधि
संधि स्त्री० जोडाण, सबध (२) करार, समाधान (३) सुलेह, मैत्री (४) साधो (शरीरनो) (५) गडी (कपडानी) (६) बाकु, खातर (… चोरे पाडेलु) (७) बे मोटा

विभागो वच्चेनो वचगाळो (८) नाटकमा अतराल – अतरो (९) योजना, आयोजन

संधिच्छेद पु० दीवालमा बाकु पाडवु ते

संधिच्छेदन न० (भीतमा)खातर पाडवु ते (चोरी करवा माटे)

संधित वि० जोडायेलु (२)बधायेलु(३) सधि करी होय तेवु

संधित्सु वि० सधि करवा इच्छनारु

संधिदूषण न० सुलेह के सधिनो भग के उल्लघन

संधिबंध पु० साधानो स्नायु

संधुक्ष् १ आ० सळगवु (२) उश्केरावु –प्रेरक० सळगाववु, उश्केरवु

संधुक्षण न० सळगाववु ते(२)उश्केरवु ते; सकोरवु ते

संधृ १० उ० पकडवु, टेकववु(२) काबू राखवो (३) याद राखवु(४) राखवु, मालिक होवु

संधेय वि० जोडवा–जोडावा योग्य

संध्या स्त्री० जोडाण (२) साधो(३) सवार के साजनो सधिकाळ(बे समय-नें जोडनारो) (४) साज (५) सवार बपोर अने साजे करातु नित्य कर्म (६) बे युग वच्चेनो संधिकाळ

संध्यापयोद पु० समीसाजनु वादळ

संध्याबलि पु० समीसाजे अपातो बलि

संध्याभ्र न० सध्या समयनु वादळ

संध्यामंगलदीपिका स्त्री० समीसाजे प्रगटावातो मगल-दीप

संनत वि० वाकु वळेलु, ढळतु (२) हताश (३) सकोचावेलु(४)परिपूर्ण

संनतांग वि० ढळता–गोळ अवयवोवाळु

संनति स्त्री० नमी पडवु ते; वदन करवु ते; आदर करवो ते (२) दीनता; ताबेदारपणु

संनद्ध ('सनह्'नु भू० कृ०) वि० बाधेलु; जकडेलु (२) वीटेलु; वीटळायेलु(३) पहेरेलु; बाधेलु (बख्तर) (४)तैयार; सुसज्ज (५) व्यापेलु

संनद्धयोध वि० सुसज्ज सैनिकोवाळु

संनम् १ प० ढळवु; वाकु वळवु (२) तावे थवु (३) नमवु (४) तैयार थवु

संनय पु० समूह, जथ्थो; सख्या

संनह् ४ उ० बाधवु, जकडवु (२) पहेरवु (३) (बख्तर) बांधवु (४) तैयार थवु; सज्ज थवु

संनहन न० सुसज्ज थवु ते (२) तैयारी (३) जकडीने बाधवु ते (४) उद्यम

संनाह पु० युद्ध माटे सुसज्ज थवु ते (२) बख्तर (३) साधनसामग्री

संनिकर्ष पु० नजीकपणु, पडोश (२) पासे लाववु ते (३) सबध

संनिकृष्ट वि० नजीकनु; पासेनु

संनिधा ३ उ० नजीक मूकवु (२) भेगु राखवु(३) –तरफ स्थिर करवु; –तरफ प्रेरवु (४) पासे आववु – पहोचवु(५)एकठु करवु; ढगलो करवो

संनिधातृ वि० पासे होनारुं; नजीकनु (२) पु० लोकोने कचेरीमा रजू करनार कर्मचारी

संनिधान न०, **संनिधि** पु० नजीक – पासे मूकवु ते (२) नजीकपणु, पडोश, हाजरी (३) समूह, समुदाय (४) थापण तरीके मूकवु ते

संनिधेय वि० पासे राखवा योग्य

संनिपत् १ प० नीचे ऊतरवु (२) भेगा मळवु (३) हुमलो करवो (४) आवी पहोचवु, देखा देवी (५) नाश पामवु

संनिपात पु० नीचे ऊतरवु ते (२) भेगा – एकत्रित थवु ते (३)सामसामा अथडावु ते (४) सबध, सयोग(५) समुदाय, मेळो, मिलन (६) युद्ध (७) सनेपात (ज्वर)

संनिपातनिद्रा स्त्री० बेहोशी

संनिपात्य वि० उपर नाखवा योग्य

संनिबद्ध वि० जोडायेलु; वळगेलु (२) गोठवेलु, –ने माटे तैयार करेलु
संनिभ वि० सदृश, समान (समासने अंते)
संनिभृत वि० ढकायेलु, छूपु
संनियुज् ७ आ० जुओ 'नियुज्'
संनिरुद्ध वि० रोकवामा आवेलु (२) भरी काढेलु; व्याप्त
संनिरुध् ७ उ० जुओ 'निरुध्'
संनिविश् ६ आ० प्रवेश करवो, ऊंडे पेसवु (२) पडाव नाखवो (३) गाढ सबध करवो; संभोग करवो
–प्रेरक० नीमवु, मूकवु
संनिविष्ट वि० प्रवेशेलु (२) भेगु थयेलु (३) –मा ओतप्रोत थयेलु (४) नजीकनु (५) पडाव नाख्यो होय तेवु
संनिवृत् १ आ० पाछा फरवु (२) विरमवु; अटकवु [रागमन
संनिवृत्ति स्त्री० पाछु फरवु ते; पुन-
संनिवेश पु० ऊडा ऊतरवु ते, लगनी (२) समुदाय, मडळ (३) गोठ-वणी, जोडाण (४) स्थळ, स्थान; स्थिति (५) सामीप्य (६) आकृति, बांधो, घडतर (७) झूपडी, रहे-ठाण (८) योग्य जगाए बेसाडवु ते (९) पडाव, छावणी
संनिवेशन न० निवास, पडाव
संनिसर्ग पु० भलापणु
संनिहित वि० पासे पडेलु नजीक मूकेलु (२) नजीकनु (३) हाजर, मोजूद (४) तैयार (५) थापण तरीके मूकेलु [नजीकमा ज होय तेवु
संनिहितापाय वि० नाशवत (२) नाश
संनी १ उ० भेगु लाववु (२) शासन करवु, दोरवु (३) पाछु आपवु –वाळवु (४) –तरफ लई जवु (५) जोडवु – भेगु करवु, (६) गोठववु (७) मेळववु (८) परिपूर्ण करवु
संन्यस् ४ उ० मूकवु; थापण तरीके मूकवु (२) बाजुए मूकवु; तजी देवु (३) सोपवु (४) सन्यास लेवो
संन्यसन न० छोडी देवु – तजी देवु ते (२) सन्यास (३) –ने सोपवु ते
संन्यस्त वि० नीचे मूकी दीधेलु (२) सोंपेलु (३) तजी दीधेलु
संन्यास पु० त्याग करवो ते (२) ससार-व्यवहारनो त्याग (३) सन्यासाश्रम (४) थापण; सोपणी
संन्यासिन् पु० तजी देनारो (२) सन्यास लेनारो (३) थापण मूकनारो (४) आहारनो त्याग करनारो
संपत् १ प० भेगा मळवु–थवु (२) हुमलो करवो (३) बनवु, थवु
–प्रेरक० नजीक लाववु; भेगु करवु (२) नीचे फेंकवु
संपत्ति स्त्री० समृद्धि (२) सफळता, सिद्धि (३) पूर्णता, श्रेष्ठता (४) विपुलता (५) अनुकूळ स्थिति
संपद् आ० सफळ थवु; आबाद थवु (२) पूरी सख्या थवी (३) थवु; बनवु (४) उत्पन्न थवु (५) भेगा मळवु – थवु (६) युक्त थवु, –वाळा बनवु
–प्रेरक० थाय तेम करवु; निपजाववु; सिद्ध करवु (२) मेळववु (३) अर्पवु; –वाळु करवु
संपद् स्त्री० धन, सपत्ति (२) समृद्धि, आबादी (३) सद्भाग्य, सुख (४) सफ-ळता; सिद्धि (५) पूर्णता, उत्तमता (६) विपुलता, पुष्कळ होवापणु
संपद्वर पु० राजा [एकनु नाम
संपद्वसु पु० सूर्यना मुख्य किरणमांना
संपद्विनिमय पु० एकबीजाना लाभ के सेवानो अदलोबदलो
संपन्न वि० समृद्ध, आबाद (२) सुखी; नसीबदार (३) वैभवशाळी (४) पूर्ण, सिद्ध (५) युक्त, सहित (६) बनेलु, थयेलु (७) पु० शिव (८) न० समृद्धि, दोलत (९) सारी वानी

संपराय पु० युद्ध, लडाई (२) आफत (३) मृत्यु (४) मृत्यु बादनी स्थिति
संपरे (स+परा+इ) २ आ० भेगा मळवु; सामा मळवु(२)पार चाल्या जवु (परलोकमा)
संपर्क पु० मिश्रण(२)सयोग, स्पर्श, सबध(३)सोबत, सहवास
संपात पु० टोळु; भीड(२)भेगा मळवु ते (३)अथडावु ते(४)नीचे पडवु ते,नीचे ऊतरवु ते(५) (बाणनु)ऊडवु ते (६) जवु-खसवु ते(७)खसेडवु-दूर करवु ते(८)पक्षीओनी ऊडवानी एक रीत (९) मोकलवु ते(१०)सूर्य विषुव-वृत्तने ओळगे छे अने दिवस-रात सरखा थाय छे ते समय(वसत अने शरद)
संपाति, संपातिक पु० गरुडनो पुत्र अने जटायुनो मोटो भाई [पडतु
संपातिन् वि० साथे ऊडतु (२) नीचे
संपादक वि० सपादन करनारु
सपादन न० सिद्ध करवु ते,पूर्ण करवु ते(२)मेळववु ते (३) तैयार-शुद्ध -,साफ करवु ते (जेमके जमीनने)
सपिंडित वि० एक पिंडो बनावेलु(२) सकोचेलु [पीडवु, त्रास आपवो
सपीड् १० उ० दबाववु, मसळवु(२)
संपीड पु० खूब दबाववु-कचरवु ते (२)पीडा, त्रास(३)क्षुब्ध करवु ते (४)तरफ धकेलवु-प्रेरवु
संपुट पु० बखोल, खाली जगा(२) ढाकणवाळी पेटी [वाळी पेटी
संपुटका, संपुटिका स्त्री० पेटी, ढाकण-
संपूज् १० उ० पूजवु(२)भेट धरवी
सपूर्ण वि० पूरु; भरेलु (२) आखु, बधु,पूरेपूरु(३)सिद्ध थयेलु, पूरु थयेलु
सपूर्ति स्त्री० पूर्णता, सपूर्णता
सपृक्त वि० मिश्रित (२) जोडायेलु, सबद्ध(३)स्पर्शतु(४)मित्र बनावेलु
सपृच् ७ प०, २ आ० जोडवु, सबधमा लाववु(२)जोडावु, सबधमा आववु

संप्रज्ञात पु० सविकल्प समाधि; मन लीन थवा छता ध्येय वस्तुनु स्पष्ट भान रहे एवी समाधि (असप्रज्ञातमा ज्ञान अने ज्ञेयनो भेद लुप्त थई जाय छे)
संप्रति अ० हमणा, आ समये, तरत ज
संप्रतिपत्ति स्त्री० आवी पहोचवु ते(२) हाजरी(३)मेळववु ते(४)कबूलात; स्वीकार
संप्रतिपद् ४ आ० पासे जवु, पहोचवु (२) मानवु, गणावु (३) कबूल थवु (४)कबूल करवु(५)पामवु; मेळववु
संप्रती २ प० विश्वास राखवो, मानवु (२)नक्की करवु, निर्णय करवो
संप्रतीत वि० पाछु फरेलु(२)विश्वास-खातरीवाळु (३) कबूलेलु; पुरवार थयेलु (४) प्रख्यात
संप्रतीति स्त्री० पूरेपूरी खातरी (२) प्रख्याति [ख्याल
संप्रत्यय पु० दृढ खातरी(२)कबूलात(३)
संप्रदा ३ उ० आपवु;बक्षवु (२) पर-परा चालु करवी, परपराथी आपवु (३)सोपी देवु(४)परणाववु
संप्रदान न० आपी देवु ते (२) बक्षिस; दान (३) परणाववु ते(४)बक्षिस के दाननु पात्र
संप्रदाय पु० परपरा,परपरागत सिद्धात (२)एक ज देवनी पूजानो धर्मसिद्धात (३)रूढि, रिवाज (४)दान, बक्षिस
संप्रदायविगम पु० परपरानो लोप थवो ते
संप्रधारण न०, **संप्रधारणा** स्त्री० विचा-रणा(२)युक्तायुक्त-विवेक
संप्रधृ १० उ० जाणवु, नक्की करवु(२) विचारवु, चितववु(३)-उपर स्थिर करवु (४) अर्पण करवु
संप्रपद् ४ आ० जवा नीकळवु (२) पहोचवु (३) मडवु, आरभवु (४) थवु, बनवु
संप्रयुक्त वि० साथे जोडेलु; झूसरीमा

जोडेलु (२)—मा आसक्त, —मा लागेलु (३)सभोग करतु

संप्रयोग पु० सयोग, संबंध; मिलन (२) साधो, जोडाण; गाठ (३) सभोग (४) अरसपरस सबध (५) सहकार

संप्रवद् १ उ० मोटेथी बोलवु (२) बूम पाडवी, घोघाट करवो (३) एक साथे बोलवु [करवो

संप्रविश् ६ प० साथे प्रवेशवु (२) संभोग

संप्रवृत् १ आ० थवु; वनवु (२) शरू करवु (३) प्रवर्तमान थवु, चालु थवु (४) हुमलो करवो
—प्रेरक० शरू करवु, माथे लेवु (२) गतिमान करवु

संप्रसाद पु० प्रसन्नता (२) कृपा (३) स्वस्थता (४) (गाढ निद्रानी स्थितिमा) जीवात्मा (५) विश्राति, सुषुप्ति

संप्रसारण न० य्, र्, ल् अने व् बदले इ, ऋ, लृ अने उ थवा ते (व्या०)

संप्रस्था १ आ० [सप्रतिष्ठते] जवु; ऊपडवु, विदाय थवु (२) आगळ वधवु

संप्रहार पु० परस्पर प्रहार करवो ते (२) लडाई, सामनो; युद्ध

संप्राप् ५ प० पहोचवु (२) पामवु

संप्राप्ति स्त्री० प्राप्ति

संप्रिय न० सतोष; तृप्ति

संप्रीति स्त्री० आसक्ति (२) आनद; खुशी [करवी

संप्रेक्ष् १ आ० निहाळवु (२) तपास

संप्रेष् —प्रेरक० मोकलवु, मोकली देवु (२) —ने सदेश मोकलवो

संप्लव पु० डूबवु ते (२) रेल (३) नाश, लोप (४) समूह (५) वरसवु—तूटी पडवु ते (६) घाघळ, धमाल (७) अत, समाप्ति

संप्लु १ आ० तणाई जवु (२) —साथे मळवु; एकठु थवु (जेम के पाणी)
—प्रेरक० डुवाडी देवु; ताणी जवु

संफेट पुं० वे गुस्से थयेलाओ वच्चेनी तकरारना प्रसगनु वर्णन

संबद्ध वि० साथे वाधेलु (२) आसक्त (३) —नी साथे सबधवाळु, —नु सबधी

संबद्धम् अ० साथे साथे ज, भेगु ज (२) उपरातमा [न० पाणी

संबल पु०, न० मुसाफरीनु भाथु (२)

संबंध् ९ प० साथे बाधवु; जोडवु (२) वनाववु; रचवु

संबंध वि० शक्तिशाळी, समर्थ (२) योग्य, खरु, उचित (३) पु० मिलन; सयोग (४) ससर्ग, नातो (५) लग्नसवध (६) मैत्री, स्नेह (७) योग्यता, लायकात (८) सफळता; समृद्धि (९) सवधी, सगो

संबंधक वि० सबध धरावतु, सवधी (२) योग्य, लायक (३) पु० मित्र (४) जन्म के लग्नथी सवघी एवो ते (५) न० सवध, सगपण

संबंधिन् वि० सवध धरावतु, सवधी (२) —नी साथे जोडायेलु (३) पु० लग्नथी वनेलो सगो (४) स्वजन

संबाध् १ आ० पीडवु; त्रास आपवो (२) ईजा करवी (३) भीड करवी (४) दवाववु, सकोचवु

संबाध वि० —थी भीडवाळु वनेलु (२) पु० भीड (३) दवाववु—मारवु—ईजा करवी ते (४) डखल, रुकावट, विघ्न

संबुद्ध वि० सारी रीते समजेलु (२) डाह्यु, विद्वान (३) पूरेपूरु जागेलु

संबुद्धि स्त्री० पूर्ण ज्ञान के समज (२) सपूर्ण जागृति (३) सवोधन, नाम

संबुध् १ उ०, ४ आ० जाणवु; समजवु (२) जोवु; निहाळवु (३) जागवु; ऊघमाथी ऊठवु

संबोधन न० समजाववु ते (२) सवोधवु ते (३) नाम (जेनाथी सवोधाय)

संभव पु० जन्म; उत्पत्ति, पेदा थवुं ते

(२)उत्पत्ति अने उछेर(३) कारण (४)शक्यता(५)धन; समृद्धि

संभार पु० भेगु करवु ते, एकठु करवु ते (२) साधनसामग्री (कोई पण काम माटेनी)(३)घटक वस्तु(४) समूह; ढगलो(५)पोषण, पालन(६) अतिशयता, पुष्कळता

संभालयति प० (साभळवु)

संभावन न०, **संभावना** स्त्री० गणवु–मानवु–विचारवु ते (२) कल्पना, बट्टो(३)मान; आदर (४) शक्यता; सभव (५) उचितता (६) सामर्थ्य; शक्ति(७)शका(८)प्राप्ति

संभावित वि० कल्पेलु, मानेलु; विचारेलु (२) समान्य, समानित (३) उचित, लायक (५) मेळवेलु; उत्पन्न करेलु (५) आकाक्षा राखी होय तेवु (६)न० कल्पना; मान्यता

संभाव्य वि० शक्य, सभवित (२) शक्य मानी शकाय के अपेक्षा राखी शकाय तेवु (३) शक्तिमान, लायक

संभाष् १ आ० सभाषण करवु, वातचीत करवी(२)बोलवु (३) सबोधवु (४)अभिनदन करवु

संभाष पु०, **संभाषण** न० **संभाषा** स्त्री० वातचीत, सवाद

संभिद् ७ उ० भागवु, तोडवु, फाडवु; टुकडे टुकडा करवा (२) भेगु करवु; जोडवु (३) सकोचवु, दबाववु

संभिन्न वि० छेक ज तूटेलु(२)क्षुब्ध; भागी पडेलु(३)सयुक्त; जोडायेलु (४) पूरेपूरु खीलेलु (५) घन, घट्ट (६)बेवफा, बळवाखोर

संभू १ प० जन्मवु, उत्पन्न थवु (२) थवु, होवु (३) बनवु (४) शक्य होवु (५)पूरतु होवु(६)मळवु, जोडावु (७) –नी साथे सभोग करवो
–प्रेरक० धारवु, कल्पवु (२) गणवु, मानवु (३) आदर करवो; समानवु (४) अर्पण करीने खुश करवु (५) आरोप मूकवो (६) –मा भाग लेवो, माणवु
–प्रेरक० नु कर्मणि० शक्य होवु, सभवित होवु

संभूत वि० जन्मेलु, बनेलु, उत्पन्न थयेलु (२) –साथे जोडायेलु (३) लायक, पूरतु(४)युक्त, सहित

संभूति स्त्री० जन्म(२)संयोग, मिलाप (३)उचितता, योग्यता(४)विभति

संभूय अ० एकठा मळीने, एक साथे

संभूयसमुत्थान न० सहियारो धधो

संभृ ३ उ० एकठु करवु; सग्रह करवो (२) उत्पन्न करवु (३) पोषवु (४) सज्ज–तैयार करवु (५) अर्पवु (६) ऊचु करवु [सज्ज करेलु

संभृत वि० एकठु करेलु (२) तैयार–

संभृति स्त्री० समूह, सग्रह (२)तैयारी (३) पूर्णता (४) पालन; पोषण

संभेद पु० भागी पडवु–छूटु पडी जवु ते (२) जोडाण, सबध (३) मिलन (नजरनु) (४) संगम(नदीनो)(५) खीलवु–ऊघडवु ते (६) वाळवु–वाघवु ते (मूठी) (७) बळवो; दगो

संभोग पु० उपभोग; भोग(२)भोगवटो; मालकी (३) रतिक्रीडा, मैथुन

संभोजनी स्त्री० सहभोजन (२) तेने अते अपाती दक्षिणा

संभ्रम् १, ४ प० [सभ्रमति, संभ्रम्यति, सभ्राम्यति] भटकवु; रखडवु (२) भ्रममा के भूलमा होवु (३) मूझावु

संभ्रम वि० क्षुब्ध(२)गोळ घूमतु(३) पु० गोळ घूमवु ते(४)उतावळ(५) चिंता, मूझवण (६) भय, डर (७) भूल, भ्रम, भास(८)उत्साह, प्रवृत्ति (९) आदर, समान [गाभरु

संभ्रांत वि० गोळ घूमतु(२)मूझायेलु,

संमत वि० समति आपेलु (२) प्रिय,

वहीलु; मानीतु (३) समान, सदृश (४)खूब सत्कारेलु(५) युक्त, सहित
संमति स्त्री० कबूलात, मजूरी;परवानगी (२) इच्छा(३)आत्मज्ञान, तत्त्वज्ञान (४) आदर; समान (५) प्रेम
संमत्त वि० (मद्य वगेरे पीने) पूरेपूरुं मत्त थयेलु (२) हर्षोन्मत्त
संमद वि० खूब हर्षित (२) पु० अति आनद, हर्ष
संमन् ४ आ० संमत थवु (२) कबूल राखवु (३) मानवु, धारवु, गणवु (४)परवानगी आपवी; सत्ता आपवी (५)मान आपवु, अति आदर करवो
संमर्द पु० एकवीजा साथे घसावु के घसवु ते (२) टोळु; भीड (३) उपर पग मूकी चालवु–छूदवु–कचरवु–रगदोळवु ते(४)युद्ध(५)अथडामण
संमंत्र् १० आ० –नी सलाह लेवी –नी साथे मत्रणा करवी(२)वंदन करवु; अभिवादन करवु(३)सलाह आपवी; अभिप्राय आपवो
संमा ३ आ०, २ प० मापवु(२)सरखु करवु (३)सरखाववु(४)समावु; मावु
संमान पु० सत्कार; आदर(२)न० माप (३) सरखामणी
संमार्जन न० वाळवु – साफ करवु ते (२) लूछवु ते(३)लेप करवो ते (४) एठवाडो काढवो ते
संमार्जनी स्त्री० सावरणी
संमित वि० मापेलु (२)सरखा मापनु; सरखा मूल्यनु (३) –जेटलु मोटु, –सुधी पहोचतु(४) नियत करेलु
संमील् १ प० मीचवु (आख) (२) बिडावु (फूल वगेरेए)
–प्रेरक० वासवु; बध करवु (२) झाखुं पाडवु
संमुख वि० सामु; मोढामोढ होय तेवु (२)मळेलु(३)अनुकूळ होय तेवुं(४) –नी तरफ फेरवेलु के वाळेलु
संमुखम् अ० –नी समक्ष, –नी सामे; –नी हाजरीमा
संमुखीन वि० जुओ 'समुख'
संमुखे अ० जुओ 'संमुखम्' [सुंदर
संमुग्ध वि०मूढ बनेलु(२)मूझायेलु(३)
संमुग्धम् अ० मोहित करे ते रीते
संमुर्च्छ् १ आ० [समूर्च्छते] मूर्छित थवु; बेभान थवु(२)बळशाळी बनवु; तीव्र के गाढ थवु [मोह पामवो
संमुह् ४ प० मूझावु(२)मूर्ख बनवु;
संमूढ वि० बेभान (२) मूर्ख, मोहित (३)मूझायेलु (४) अस्तव्यस्त (५) भेगु – एकठु करेलु
संमूर्च्छन न० बेहोशी (२) गाढु थई जवु ते(३)वधवु ते; जामवुं ते(४) मिश्रित थवु ते
संमृज् २ प०, १० उ० साफ करवु; वाळी नाखवु(२)लूछी नाखवु(३) हाथ फेरववो, दाबवु(४)गाळवु
संमृत वि० पूरेपूरु भरेलु
संमेलन न० भेगा मळवु ते(२)मिश्रण (३)भेगु करवु ते
संमोह वि० मोहित करनारु (२) मूढ बनावनारु (३) पु० मूझवण, भ्रम (४) मोह, आकर्षण (५) मूर्छा (६) अज्ञान; मूर्खता(७)युद्ध
संमोहन पु० कामदेवना पाच बाणोमानु एक(२)न० मोह; आकर्षण
संयज् १ उ० पूजवु; यज्ञ वडे यजन करवुं (२)अर्पण करवु; चडाववु
संयत् १ आ० झघडवु, लडवु
संयत् स्त्री० लडाई, युद्ध
संयत ('सयम्'नु भू० कृ०) वि० नियत्रित, ताबे करेलु(२)बाधेलु(३) केद करेलु(४)तैयार(५)गोठवेलु
संयतमुख वि० वाणी उपर काबू राखनारु, चूप; मौन रहेतु

संयतवस्त्र वि० वस्त्रो एकठा बाधी दीधा होय के जकडी दीधा होय तेवु
सयताहार वि० खावामा सयम राखनारु; मिताहारी [राखनारु
संयतेंद्रिय वि० इद्रियोने सयममा
संयत्त ('सयत्'नु भू० कृ०) सज्ज; तैयार (२) सावचेत
संयम् १ प० [सयच्छति] नियत्रित करवु, निग्रह करवो, ताबे करवु (२) बधनमा नाखवु, केद पूरवु (३) १ आ० [सयच्छते] एकत्रित करवु (४) वासवु, बध करवु (५) भेगु करवु; भेगु करी गाठ वाळवी (वाळनी)
संयम पु० निग्रह, काबू (२) धारणा-ध्यान-समाधि ए त्रणनो समुदाय (३) तपश्चर्या (४) नाश, प्रलय (५) व्रत, तप (६) मानवता
संयमन न० निग्रह करवो ते, सयम (२) बाधवु ते (३) केद
संयमनी स्त्री० यमराजानी नगरी
संयमित वि० निग्रहमा लीधेलु (२) बाधेलु (३) अटकावेलु (४) भेगु करेलु
संयमिन् वि० निग्रह के सयममा राखनारु (२) पु० जेणे पोतानी इद्रियो उपर काबू मेळव्यो छे ते, तपस्वी
संयंत्रित वि० बधनमा नाखेलु, अटकावेलु
संया २ प० साथे जवु (२) चाल्या जवु, विदाय थवु (३) प्रवेशवु, पामवु (४) भेगा थवु (५) युद्ध करवु
संयान न० साथे जवु ते (२) मुसाफरी (३) शबने लई जवु ते (४) वाहन, गाडु (५) हाकवु ते
संयुक्त वि० जोडायेलु, जोडेलु, सबद्ध (२) मिश्रित (३) युक्त, सहित; —वाळु (४) —मा लागेलु (५) सबधी (६) —नी साथे परणेलु
संयुग पु० सयोग जोडाण, मिश्रण (२) नजीकपणु; सबध (३) युद्ध
संयुगगोष्पद न० (गायना पगलामानी) नजीवी तकरार
संयुगमूर्धन् पु० लडाईनो मोखरो
संयुज् ७ उ० भेगा थवु, जोडावु (२) चोटाडवु (३) सजवु (४) आ० जोडावु —कर्मणि०—नी साथे जोडावु (२)—नी साथे परणवु
—प्रेरक० जोडवु (२) झूसरे जोडवु (३) सजवु, सज्ज करवु
संयुज् वि० जोडायेलु, सबद्ध (२) सारा गुणोथी युक्त
संयुत वि० जोडायेलु, संबद्ध
संयोग पु० जोडाण, सबध (२) पासे होवु ते, प्राप्त थयेलु होवु ते (३) सट (घरेणा इ० नो) (४) सरवाळो (५) समान हेतु माटे बे राजाओ वच्चे सुलेह
संरक्त वि० रगीन, रातु (२) आसक्त (३) गुस्से थयेलु (४) मनोहर
संरक्ष् १ प० रक्षण करवु (२) रोकवु; दूर राखवु [ते माटे सोपण
संरक्षण न० रक्षण; सुरक्षित राखवु ते (२)
संरक्षा स्त्री० रक्षा, सभाळ
संरब्ध ('सरभ्'नु भू० कृ०) वि० उश्केरायेलु, क्षुब्ध (२) गुस्से थयेलु, वकरेलु (३) गाढपणे जोडायेलु
संरब्धमान वि० जेनु अभिमान घवायु छे — उश्केरायु छे तेवु
संरभ् १ आ० क्षुब्ध थवु (२) वकरवु, उश्केरावु (३) बीवु
संरम् १ अ० राजी थवु
संरंभ पु० आरभ (२) तोफान (३) उश्केराट (४) आवेश, जुस्सो, आवेग (५) अभिमान, गर्व (६) विरोध, वेर (७) तीव्रता
संरभरूक्ष वि० अतिशय कठोर एवु
संरंभिन् वि० उश्केरायेलु (२) गुस्से थयेलु, वकरेलु (३) गर्विष्ठ (४) लगनी-वाळु, उद्यमी [गुस्सो
संराग पु० रगवु ते (२) राग, प्रीति (३)

संराध् ४ प० सिद्ध थवु, पूर्ण थवु –प्रेरक० आराधवु, खुश करवु
संराव पु० घोघाट; अवाज
संरिहाण न० प्रेमपूर्वक चाटवु ते
संरुद्ध वि० अटकावेलु, रोकेलु (२) घेरो घालेलु (३) केद पूरेलु
संरुध् ७ उ० अटकाववु (२) रोकवु (३) बांधवु, जकडवु (४) घेरो घालवो
संरुह् १ प० वधवु (२) रुझावु
संरूढ वि० साथे ऊगेलु (२) रुझायेलु (३) ऊगेलु; फणगो फूट्यो होय तेवु (४) हिमतवाळु, विश्वासवाळु (५) भीडवाळु (६) ऊंडे पेठेलु, जड घालेलु
संरोध पु० अटकाववु–रोकवु ते (२) घेरो (३) बंधन (४) केद (५) घटवु ते
संरोधन न० अटकाववु ते (२) जकडवु ते, केद पूरवु ते [ते
संरोहण न० वाववु–रोपवु ते (२) रुझावु
संलक्ष् १० उ० जोवु, निहाळवु (२) तपासवु, परीक्षा करवी
संलक्षण न० चिह्न करवु ते
संलक्षित वि० चिह्नथी अंकित थयेलु –जुदु तारव्यु होय तेवु (२) देखायेलु, ओळखायेलु, जणायेलु
संलग्न वि० लागेलु, वळगेलु (२) हाथोहाथनी मारामारी उपर आवेलु
संलप् १ प० वातचीत करवी
संलिख् ६ प० खोतरवु, खणवु (२) लखवु (३) (वाजित्र) वगाडवु
संली ४ आ० चोटवु, वळगवु (२) उपर ऊतरवु, उपर सूवु (३) छुपावु (४) ओगळी जवु (५) –मा प्रवेशवु
संलीन वि० वळगेलु, चोटेलु (२) साथे जोडायेलु (३) छुपायेलु, संतातु (४) सकोचायेलु
संलुड् १ प० हलाववु, डखोळवु
संलुलित वि० क्षुब्ध, मूझायेलु
संवत् अ० विक्रम संवतनु वर्ष (ख्रिस्ती संवतथी ५६ वर्ष पहेला शरू थाय)
संवत्सर पु० वर्ष
संवद् १ प० वातचीत करवी (२) भेगा मळी चर्चा करवी (३) मळता आववु, सदृश होवु
संवनन न० मत्र वगेरेथी वश करवु ते (२) (देवने) वश करवानु साधन, तावीज इ० (३) मेळववु ते (४) प्रेम, राग [छुपाववु ते (३) वहानु
संवरण न० आच्छादन; ढांकण (२)
संवर्गण न० आकर्षवु–जीतवु ते (मित्रो)
संवर्त पु० प्रलय, नाश (२) प्रलय वखते जे सात मेघ वरसे छे तेमानो एक (३) सकोचावु ते
संवर्तक पु० प्रलय वखतनो अग्नि (२) वडवाग्नि (३) संवर्त मेघ
संवर्तिका स्त्री० कमळनी वेलनु कुमळु पान (२) दीवानी ज्योत
संवर्तित वि० प्रलयकाळ जेवु (२) वींटाई के घेराई गयेलु
संवर्धन न० उछेरवु ते (२) खूब वधवु ते
संवर्धित वि० उछेरेलु [रक्षवु)
संवर्मय् (ढाल धरवी, कवचनी पेठे
संवलन न० मिश्रण (२) जोडाण
संवलित वि० मिश्रित (२) छाटेलु; छटायेलु (३) जोडायेलु (४) भागेलु
संवल्गित न० अवाज, ध्वनि
संवस् १ प० रहेवु, वसवु, साथे रहेवु (२) व्यतीत करवु (समय)
संवह् १ प० लई जवु, खेंची जवु (२) मसळवु, दबाववु (३) परणवु
संवाद पु० वातचीत, सभाषण (२) चर्चा (३) समाचार, खबर (४) हा पाडवी ते (५) सादृश्य, समानता, सुमेळ होवो ते (६) मुलाकात थवी ते, मळवु ते
संवादित वि० ठरावेलु (२) खातरी करेलु
संवादिन् वि० वातचीत करतु (२) –ने मळतु आवतु, –मा बंधबेसतु थतु

संवार पु० संकोचावु ते (२) गोठवणी (३) विघ्न (४) ढाकवु – बध करवु ते
संवावदूक वि० अत्यत मळतु आवतु; अतिशय समान
संवास पु० साथे रहेवु ते (२) सोबत (३) घर, रहेठाण (४) मेदान (भेगा थवा के रमतगमत माटे)
संवाहक पु० शरीर मसळनार के दबाव-नार नोकर
संवाहन न०, **संवाहना** स्त्री० भार वहन करवो ते (२) हळवे हळवे दबाववु ते
संवाहित वि० खसेडायेलु; हलावायेलु
संविग्न ('सविज्' नु भू० कृ०) क्षुब्ध, चिंतित (२) बीनेलु (३) आम तेम हालतु के ऊछळतु
संविज् ७ प०, ६ आ० भयथी कपवु
संविज्ञान न० ज्ञान; पूरेपूरी समज
संवित्ति स्त्री० अनुभव; ज्ञान; समज
संविद् २ आ० जाणवु (२) ओळखवु (३) अनुभववु (४) तपासवु (५) ६ उ० प्राप्त करवु
–प्रेरक० जाणे तेम करवु
संविद् स्त्री० ज्ञान, बुद्धि (२) अनुभव; समज (३) करार, सकेत (४) आचार; रूढि (५) खुश करवु ते (६) वातचीत (७) मित्रता, ओळखाण (८) एकमती
संविदात वि० जाणकार, बुद्धिशाळी (२) सुसगत
संविध् स्त्री० गोठवण; तैयारी
संविधा ३ उ० करवु, आचरवु (२) गोठववु (३) मूकवु (४) नीमवु (५) हुकम करवो (६) उपयोगमा लेवु
संविधा स्त्री० व्यवस्था; गोठवण; तैयारी (२) जीवनव्यवस्था, जीवन-पद्धति
संविधान न० व्यवस्था, गोठवण (२) आयोजन
संविधानक न० नाटकना वस्तुनी के तेना प्रसगोनी गोठवणी
संविधि पु० गोठवणी, तैयारी
संविभक्त वि० जुदु पाडेलु; भाग पाडेलु
संविभज् १ उ० जुदु पाडवु (२) भाग पाडवो, वहेचवु
संविभा २ प० चिंतववु
संविभाग पु० भाग; हिस्सो (२) वहेचवु ते; आपवु ते
संविभागिन् पु० भागीदार; हिस्सेदार
संविश् ६ प० प्रवेशवु (२) सूई जवु; ऊघवु (३) सभोग करवो
संविष्ट ('सविश्' नु भू० कृ०) वि० सूतेलुं; ऊघेलु (२) साथे बेठेलुं (३) कपडा पहेरेलु
संवीत वि० पहेरेलु (२) ढाकेलु (३) वीटेलु; घेरायेलु
संवृ १, ५, ९ उ० छुपाववु; ढांकवुं (२) सामनो करवो, दबाववु
संवृत् १ आ० तरफ वळवु के जवु (२) हुमलो करवो (३) बनवु, थवु (४) पूर्ण करवु, सिद्ध करवु
संवृत वि० ढाकेलु, आच्छादित (२) छुपावेलु (३) बध करेलु (४) न० एकात – गुप्त स्थान
संवृतमंत्र वि० पोतानी योजनाओ गुप्त राखनारुं
संवृति स्त्री० ढाकवुं ते, छुपाववु ते
संवृत्त वि० थयेलु, बनेलु
संवृद्ध वि० वधेलु; विकसेलु
संवृद्धि स्त्री० पूरेपूरो विकास – वृद्धि (२) बळ, ताकात
संवृध् १ आ० वधवु (२) परिपूर्ण करवुं
–प्रेरक० उछेरवु
संवेग पु० खळभळाट, उश्केराट (२) अति वेग; झडप (३) तीव्र वेदना
संवेदन न०, **संवेदना** स्त्री० ज्ञान (२) अनुभव; वेदना
संवेल्लित वि० सवर्धित
संवेश पु० सूई जवु ते (२) स्वप्न (३) सभोग (४) सूवानो ओरडो (५) बेसवानु स्थान; आसन
संवेशन न० सूई जवु ते (२) संभोग (३)

संवेष्ट् १ आ० वीटवु; वीटळावु
संव्यवहार पु० वेपारधधो
संव्यस् ४ प० गोठववु, रचवु
सव्यान न० ढांकण (२) वस्त्र; पोशाक (३) उत्तरीय
संशप्तक पु० युद्धमाथी पराङ्मुख न थवानी प्रतिज्ञा लीधेलो योद्धो (बीजाओने भागता रोकवामा कामे लेवाय छे)
संशम् ४ प० [सशाम्यति] शात थवु (२) बुझावु; लुप्त थवु
—प्रेरक० नक्की करवु
संशय पु० सदेह, शका (२) जोखम, साहस (३) अनिश्चितता
संशयगत वि० जोखममा आवी पडेलु
संशयच्छेदिन् वि० शका दूर करनारु
संशयात्मन् वि० सशय कर्या करतु, शकाशील, अनिश्चयी
संशयालु वि० अनिश्चयी, शकाशील
संशयित वि० शकायुक्त, अनिश्चित (२) जोखम भरेलु (३) न० शका; अनिश्चितता
संशरण न० युद्धनी शरूआत (२) शरणु
संशित वि० धारदार, तीक्ष्ण (२) निश्चित, नक्की (३) पूर्ण करेलु, बराबर पार पडेलु (४) दृढताथी वळगी रहेलु (व्रतने)
संशी २ आ० सशयमा होवु, अनिश्चित होवु (२) आराम करवो, सूई जवु
संशीति स्त्री० शका, सशय
संशीलन न० नियमित अभ्यास (२) वारवार परिचय करवो ते
संशुद्ध वि० पूरेपूरु शुद्ध करेलु—थयेलु (२) साफ-स्वच्छ करेलु (३) दोष के करजमाथी मुक्त थयेलु (४) तपासेलु; अजमावेलु
संशुद्धि स्त्री० पूरेपूरी शुद्धि (२) साफ करवु ते (३) सुधारवु ते (दोष-भूल) (४) चूकते करवु—मुक्त थवु ते
संशुष् ४ प० पूरेपूरु शुद्ध थवु
—प्रेरक० पूरेपुरु शुद्ध करवु (२) भरपाई करवु, चूकते करवु (ऋण) (३) तपासवु
संशून वि० मेद—चरबीवाळु, जाडु (२) फूली गयेलु, सोजावाळु
सश्रय पु० आश्रयस्थान, रहेठाण (२) वसवु ते (३)—ने लगतु होवु ते (४) आशरो लेवो—शोधवो ते (५) आधार; अवलबन (६) आसक्ति
संश्रव पु० लक्षपूर्वक साभळवु ते (२) वचन, कबूलात
संश्रि १ उ० —ने आशरे जवु;—नो आशरो लेवो (२) —ने अवलबवु (३) पामवु, प्राप्त करवु (४) जोडावु, मळवु
संश्रित वि० आशरा माटे गयेलु (२) आश्रित, रक्षित (३) सबध पामेलु, अवलबेलु, आलिंगेलु (४) —मा रहेलु, स्वाभाविक [वचन आपवु
संश्रु ५ उ० लक्षपूर्वक साभळवु (२)
संश्रुत वि० वचन आपेलु, कबूलेलु (२) बराबर साभळेलु [चोटवु
संश्लिष् ४ प० वळगवु, जोडावु;
सश्लिष्ट वि० वळगेलु, चोटेलु, भेटेलु (२) —मा रहेलु, —मा होतु (३) जोडायेलु, सबद्ध (४) न० ढगलो, जथो, समुदाय
संश्लेष पु० आलिंगन (२) सबध
संश्लेषण न०, **संश्लेषणा** स्त्री० वळगवु ते (२) साथे बाधवानु साधन (३) बधन, सबध, गांठ
संसक्त वि० चोटेलु, वळगेलु, जोडायेलु (२) नजीक आवेलु, सबद्ध (२) मिश्रित (४) युक्त (५) आसक्त
संसक्ति स्त्री० गाढ सबध (२) अति नजीकपणु (३) गाढ परिचय (४) आसक्ति [थोथवातु (शोकथी)
संसज्जमान वि० वळगतु, चोटतु (२)

संसद् १, ६ प० [सनीदति] साथे बेसवु (२)दुःखी थवु, पीडावु

संसद् स्त्री० सभा; मंडळ(२)न्यायालय (३)टोळु, समुदाय

संसरण न० जवु ते(२)गोळ फरवु ते (३)संसार(४)जन्म अने पुनर्जन्म

संसर्ग पु० संबंध, सहवास, जोडाण (२)निकटता, परिचय(३)संगम

संसर्पण न० सरकवु ते (२) अचानक हुमलो करवो ते

संसर्पिन् वि० नजीक सरतु

संसह वि० बरोबरियु

संसज् –कर्मणि० [संसज्यते] साथे जोडावु के वळगेला होवु

संसाध् –प्रेरक० सफळ नीवडवु, पूरु करवु, सिद्ध करवु(२)प्राप्त करवु; पाछु मेळववु(३)चूकते करावबु(४) निश्चित करावबु(५)नाश करवो

संसाधन न० सफळता, सिद्धि

संसार पु० गति, मार्ग (२) ऐहिक जीवन, घरसंसार (३) जन्ममरणनी घटमाळ(४)मायानो प्रपंच

संसारिन् वि० जन्ममरणनी घटमाळमां भटकतु (२) पु० प्राणी (३)जीवात्मा

संसिद्ध वि० पूर्ण थयेलु, सिद्ध थयेलु (२)रांधेलु, तैयार थयेलु(भोजन) (३)मुक्त(४)कुशळ

संसिद्धि स्त्री० पूर्णता, सफळता, सिद्धि (२)मोक्ष(३)परिणाम

संसिध् ४ प० पूर्ण करावु; पूर्ण थवु; सिद्ध थवु(२)मोक्ष मेळववो

संसूच् १० उ० सूचववु

संसूचन न० स्पष्ट बताववु–साबित करवु ते (२) सूचववु ते (३) ठपको आपवो ते [(३)फेलावु(४)मेळववु

संसृ १ प० पासे जवु(२)गोळ घूमवु

संसृज् ६ प० संसर्गमां आववु; मळवु (२)जोडावु(३)भेटवु

संसृति स्त्री० प्रवाह; गति(२)संसार (३)जन्ममरणना [illegible]

संसृप् १ प० [illegible](२)[illegible] [illegible](३) [illegible]

संसृष्ट [illegible] [illegible]; [illegible], [illegible] (२)न० [illegible], [illegible]; [illegible]

संसृष्टता स्त्री०, संसृष्टत्व न० [illegible], [illegible] (२) [illegible] [illegible] [illegible] (भाग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible])

संसेव् १ आ० [illegible](२)[illegible] [illegible] (३)[illegible] [illegible](४)[illegible] [illegible] (५)[illegible]

संस्कर्तृ पु० [illegible], [illegible] (२) [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

संस्कार पु० शुद्ध करवु–सुधारवु–[illegible] [illegible] ते(२)तालीम; [illegible](३) तैयार करवु ते(४)[illegible] ते(५)[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ते(६)[illegible], असर(७)[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible](८)[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] १६ [illegible] [illegible] (गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म, नामकर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडाकर्म, उप-नयन, [illegible] [illegible], विवाह; [illegible] १६ [illegible] [illegible] छे)(९) मरण [illegible] [illegible] [illegible]

संस्कारभूषण न० [illegible]–शुद्ध–[illegible]

संस्कारवर्जित न० [illegible] – [illegible] [illegible]

संस्कृ ८ उ० [illegible](२)साफ करवु (३)मंत्र के प्रायश्चित्तादि विधिथी पवित्र करवु (४) केळववु; तालीम आपवी(५)तैयार–सज्ज करवु(६) रांधवु, तैयार करवु (रसोई)(७) साफ करवु(८)एकठु करवु

संस्कृत वि० संस्कारवाळु–शुद्ध करेलु (२)कृत्रिमपणे जेमां सुधारो करवामां

आव्यो छे तेवु (३) पवित्र करेलु (४) न० सस्कृत भाषा

संस्कृतोक्ति स्त्री० सस्कारेल–शुद्ध–भाषा के शब्द [पड–विछानु

संस्तर पु० पथारी (२) पादडा वगेरेनु

संस्तव पु० स्तुति, प्रसशा (२) परिचय, निकट सबध (३) एकमती

संस्तवप्रीति स्त्री० परिचयथी थती प्रीति

संस्तंभ् ५, ९ प० थोभाववु, रोकवु, निग्रह करवो (२) जड–अक्कड करी देवु (३) हिंमत धारण करवी, स्थिर–शात थवु (४) दृढ करवु, निश्चळ करवु (५) टेको आपवो

संस्तीर्ण वि० पथरायेलु, विछावेलु (२) वेरेलु, विखेरेलु [परिचित होवु

संस्तु २ प० वखाणवु (२) स्तुति करवी (३)

संस्तुत वि० वखाणेलु; प्रशसेलु (२) माथे स्तुति करेलु (३) परिचित (४) ताकेलु, इरादो राख्यो होय तेवु (५) समान, तुल्य

संस्तुति स्त्री० प्रशसा

संस्तृ (–स्तॄ) ५, ९ उ० पाथरवु; वेरवु

संस्त्याय पु० ढगलो, समूह (२) विस्तार (३) पडोश, सानिध्य (४) रहेठाण, घर (५) परिचय [वसेलु, रहेलु

संस्थ वि० रहेतु, कायम रहेतु (२) वसतु;

संस्था १ आ० [सतिष्ठते] साथे ऊभा रहेवु के वसवु (२) उपर ऊभा रहेवु (३) होवु, जीववु (४) मानवु; –प्रमाणे वर्तवु (५) पूरु थवु, सिद्ध थवु (६) अतराय आववो, अतरायथी अत आववो (७) १ प० अटकी पडवु

–प्रेरक० स्वस्थ करवु (जातने) (२) स्थिर करवु (३) निग्रह करवो

संस्था स्त्री० मडळ, सभा (२) स्थिति, हालत (३) स्वरूप, प्रकृति (४) धघो; रोजगार (५) अत (६) मृत्यु (७) प्रलय (८) करार; कबूलात

संस्थान वि० स्थावर (२) न० समूह (३) स्थिति (४) आकृति, आकार (५) रचना (६) सानिध्य (७) चार रस्ता भेगा थता होय ते स्थळ (८) विभाग

संस्थापन न० भेगु राखवु के मूकवु ते (२) नियम, व्यवस्था (३) स्थापवु ते, प्रमाणित करवु ते (४) निग्रह

संस्थापना स्त्री० निग्रह (२) शात पाडवानो उपाय

संस्थित वि० साथे रहेलु के ऊभेलु (२) रहेलु, ऊभेलु (३) नजीकनु (४) सदृश (५) एकत्रित (६) निश्चित, स्थिर (७) अटकेलु, पूरु थयेलु (८) सारा घडतर के रचनावाळु, सारा आकारनु (९) वारंवार अवरजवरवाळु (१०) न० स्थिति (११) आकृति

संस्थिति स्त्री० साथे होवु के रहेवु ते (२) सानिध्य (३) रहेठाण, आश्रय-स्थान (४) समूह (५) टकी रहेवु के चालु रहेवु ते (६) स्थिति, दशा (७) निग्रह (८) मृत्यु (९) प्रलय

संस्पर्श पु० सबध (जेम के विषय अने इद्रियोनो)

संस्पृश् ६ प० स्पर्श करवो (२) पाणी छाटवु (३) कोगळा करवा

संस्पृष्ट वि० स्पर्शायेलु, सबधमा आवेलु

संस्मरण न० याद करवु ते

संस्मृ १ प० याद करवु, चितववु

सस्मृति स्त्री० याद करवु ते

संस्रव पु० वहेवु ते, प्रवाह

संहत वि० प्रहार करायेलु, घवायेलु (२) जोडायेलु, जोडेलु, सबद्ध (३) घट्ट, दृढ (४) सपवाळु, एक साथे होय तेवु (५) एकत्रित

संहतभ्रू वि० भवा चडाव्या होय तेवु

संहति स्त्री० गाढ सबध (२) एक-सप (३) जथ्थो, समूह (४) ढगलो (५) वळ, ताकात

संहन् २ प० जोडवु, भेगु करवु (२) ढगलो करवो, सग्रह करवो

संहनन न० गाढपणु, दृढता (२) घडतर, बाघो, शरीर (३) वळ (४) हणवु ते (५) घसवु – मसळवु ते

सहननीय वि० दृढ, घट्ट

संहरण न० भेगु करवु ते (२) लेवु ते; पकडवु ते (३) सकोचवु ते (४) निग्रह (५) विध्वस (६) पाछु खेची लेवु ते

संहर्ष पु० आनद के भयथी रोमाच थवा ते (२) हरीफाई

संहार पु० भेगु करवु ते, एकठु करवुं ते (२) सकोचवु ते, सक्षेप (३) पाछु खेची लेवु ते (४) निग्रह (५) विध्वस; प्रलय (६) अत, समाप्ति (७) समूह, समुदाय

संहित वि० युक्त, साथेनु (२) सबघी; –मायी नीकळेलु (३) गोठवेलु; मूकेलु (४) नजीकनु

संहिता स्त्री० सयोग (२) समुच्चय (३) पद के लखाणनो व्यवस्थित सग्रह (उदा० मनुसहिता) (४) वेदोना मत्र भागनो सळग सग्रह

संहृ १ उ० एकठु करवु, भेगु करवु (२) खेचवु, चूसवु (३) सक्षेप करवो, सकोचवु (४) सहार करवो (५) पाछु खेची लेवु (६) निग्रह करवो, दबाववु (७) समेटी लेवु (८) अवळे मार्गे दोरवु

संहृत वि० एकठु करेलु (२) सको-चेलु, सक्षिप्त (३) पाछु खेंचेलु (४) पकडेलु (५) निग्रह करेलु (६) नाश करेलु

संहृति स्त्री० सक्षेप (२) नियमन (३) विध्वस, नाश (४) सग्रह

संहृष् ४ प० हर्ष पामवु, हर्षित थवु (२) खडु – ऊभु थई जवु (रोमाच)

संहृष्ट वि० रोमाचित थयेलु

संह्लाद पु० अवाज, घोघाट

साकम् अ० साथे, सहित (२) एकी साथे, एक ज वखते

साकल्य न० समग्रता; आखुं एवुं ते

साकल्यक वि० बीमार; मांदु

साकल्येन अ० सपूर्ण रीते; समग्रपणे

साकार वि० आकार – आकृतिवाळु (२) सुदर आकारवाळु

साकाङ्क्ष वि० अभिलाषायुक्त (२) अर्थयुक्त (३) अपेक्षावाळु

साकुल वि० व्याकुळ; मुझायेलु

साकूत वि० अर्थ के अभिप्रायवाळु (२) सहेतुक, इरादावाळु (३) विलासयुक्त

साकूतम् अ० अर्थ के अभिप्राय साथे (२) विलासयुक्त होय तेम (३) ध्यानपूर्वक

साकेत न० अयोध्या शहेर

साक्षर वि० वक्तृत्वशक्तिवाळु

साक्षात् अ० नजर सामे; –नी हाजरीमा, खुल्लंखुल्ला, सीधेसीधुं (२) जाते, स्वय (३) (समासमा) मूर्तिमंत – देहधारी होय तेम (उदा० 'साक्षाद्धर्म')

साक्षात्कार पु० प्रत्यक्ष ज्ञान, अनुभव

साक्षात्कृ ८ उ० नजरे जोवु (२) जाते अतरमा अनुभववु (३) परिणाम के फळ भोगववु

साक्षिन् वि० नजरे जोनारु, साक्षी होय तेवु (२) साक्षी (३) परमात्मा (४) जीवात्मा

साक्षिप्तम् वि० अविचारीपणे

साक्षेप वि० कटाक्षपूर्ण (२) पक्षपाती

साक्ष्य न० पुरावो, साक्षीपणु

सागर पु० समुद्र (२) भगीरथ

सागरगमा स्त्री० नदी

सागरसुता स्त्री० लक्ष्मी

सागरसूनु पु० चद्र

सागरावर्त पु० सागरद्वीप

सागरांत वि० सागरथी वीटळायेलु; सागर सुधीनु

सागरांबरा स्त्री० पृथ्वी

साग्नि वि० अग्निवाळु, होम माटे अग्नि राखनारु
साग्निक पु० गृहस्थ, अग्निहोत्री
साग्र वि० सपूर्ण, आखु, पूरु (२) अधिक; –थी वधु एवु [समय सुधी
साग्रम् अ० आखी जिदगी सुधी, खूब
साचि अ० वाकु, त्रासु, तीरछु
साचिव्य न० प्रधानपदु (२) मदद, सहाय, मैत्री [वाळवु
साचीकृ ८ उ० वाजूए वाळवु, वाकु
साजात्य न० एक जाति के वर्गना होवु ते
साटोप वि० गर्विष्ठ, उद्धत (२) भव्य (३) भरेलु, फूलेलु (४) गडगडाटवाळु
साटोपम् अ० अभिमानथी, रुआवभेर (२) उद्धतपणे (३) गुस्साथी
सात् अ० जे शब्द साथे वपराय तेना रूप पूरेपूरु वदलाईने थयु छे – एवो अर्थ वतावे (उदा० भस्मसात्) (२) अथवा तेना कावूमा सोपी देवायु होय तेवो अर्थ वतावे (उदा० ब्राह्मणसात्)
सातत्य न० कायमपणु, चालु रहेवापणु
सातिशय वि० उत्तम, अधिक
सातिसार वि० दस्त थई गया होय तेवु
सातीर्थ्य न० एक ज गुरु पासे शीखवु ते
सात्त्विक वि० खरु, तात्त्विक (२) साचु, खरु, स्वाभाविक (३) सद्गुणी, प्रमाणिक (४) शक्तिमान (५) सत्त्वगुणी (६) प्रेम वगेरे आतरिक भावथी नीपजेलु (७) पु० आतरिक भावनो वाह्य आविष्कार (काव्य०)
सात्त्विकी स्त्री० दुर्गा
सात्म्य न० सरूपता
सात्यकि पु० एक यादव योद्धो
सात्वत् पु० (श्रीकृष्णनो) उपासक; अनुयायी; भक्त (२) यादव
सात्वत वि० वैष्णव (२) भक्त (३) पाचरात्र सिद्धातने लगतु (४) पु० विष्णु (५) बळराम
सात्वताः पु०व०व० एक जातिना लोको
सात्वतांपति पु० विष्णु (२) कृष्ण
सात्वती स्त्री० नाटकनी चार शैलीओमानी एक (२) शिशुपालनी माता
साद पु० डूबवु ते, नीचे वेसवु ते (२) थाक (३) कृशता (४) नाश, अत (५) दुख, पीडा
सादन न० थकववु ते (२) नाश करवो ते (३) थाक (४) घर, रहेठाण
सादित वि० वेसाडेलु (२) थाकेलु (३) खिन्न, हताश (४) विनष्ट (५) क्षीण
सादिन् वि० नीचे वेसतु (२) थकवनारु, नाश करनारु (३) वेसनारु, सवारी करनारु (४) पु० घोडेसवार (५) हाथीसवार (६) रथसवार (७) सारथि
सादृश्य न० सरखापणु, समानता (२) प्रतिकृति, चित्र
साद्य वि० नवु
साद्यस्क वि० झडपी, तरत ज थतु (२) तरत ज परिणमतु (३) नवु; ताजु (४) पु० एक यज्ञ
साद्यंत वि० आखु, पूर्ण
साध् ५ प० पूरु करवु, सिद्ध करवु (२) जीतवु (४) ४ प० सिद्ध थवु, पूरु थवु –प्रेरक० साधवु, पूरु करवु (२) सिद्ध करवु, प्राप्त करवु (३) पुरवार करवु (४) तावे करवु; वश करवु (५) नाश करवो (६) जवु, विदाय थवु
साधक वि० सिद्ध करनारु, पूरु करनारु (२) असरकारक, कार्यक्षम (३) कुशळ, प्रवीण (४) चमत्कारी, जादुई (५) उपकारक, मददगार (६) पु० चमत्कारिक सिद्धिओवाळो योगी (७) जादुगर
साधन वि० सिद्ध करनारुं, परिणाम उपजावनारु (२) मेळवनारु (३) सूचवनारु (४) न० सिद्ध करवु–

मेळववु –उपजाववु ते (५) सिद्धि, परिपूर्णता, प्राप्ति (६) कशु सिद्ध करवा माटेनो उपाय, उपकरण (७) कारण, निमित्त, सामग्री, ओजार (८) सैन्य के तेनो विभाग (९) साबिती (१०) तावे करवु ते, कावूमा लाववु ते, वश करवु ते (११) नाश करवो ते

साधनता स्त्री० साधनोवाळा होवापणु

साधना स्त्री० सपादन करवु ते, पूर्ण करवु ते (२) पूजा, उपासना (३) प्रसन्न करवु ते [के सेनापति

साधनाध्यक्ष पु० लश्करनो निरीक्षक

साधनीय वि० कोई कार्य सिद्ध करवामा उपयोगी एवु (२) सिद्ध करवानु के मेळववानु एवु

सार्धमिक वि० एक ज धर्म के पथनु

साधर्म्य न० समान धर्म के पदवाळा होवु ते (२) स्वभाव के गुणधर्मनी समानता

साधारण वि० बे अथवा वधारेनु सहियारु (२) सामान्य (३) सार्वत्रिक (४) मिश्रित (५) समान

साधारणस्त्री स्त्री० वेश्या

साधारणीकृ ८ उ० सहियारु करवु, वहेची लेवु

साधित वि० सावित करेलु (२) प्राप्त करेलु (३) पूरू करेलु, सिद्ध करेलु

साधिमन् पु० साधुता; श्रेष्ठता, उत्तमता

साधिष्ठ वि० सौथी सारु, उत्तम ('साधु' नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)

साधीयस् वि० अधिक सारु ('साधु' नु तुलनात्मक रूप)

साधु वि० सारु (२) उचित, योग्य (३) सद्गुणी, धार्मिक (४) मायाळु, सारो भाव राखनारु (५) अनुकूळ, रुचतु (६) कुलीन (७) पु० सारो-सद्गुणी माणस (८) ऋषि, सत, मुनि (९) वेपारी, झवेरी (१०) धीरधार करनारो

साधु अ० 'वाहवाह !; 'शावाश !' (२) 'वस करो !'

साधुजात वि० सुदर

साधुफल वि० सारा परिणामवाळु

साधुमत् वि० सारु, भलु (२) सुज्ञी

साधुवाद पु० 'शावाश', 'सारु कर्यु' एवो धन्यवाद

साधुवृत्त वि० सदाचारी, सद्गुणी; नीतिमान (२) वरावर गोळ आकारनु (३) न० सदाचार

साधुशील वि० सद्गुणी, सदाचारी

साध्य वि० सिद्ध करवा – मेळववा योग्य (२) शक्य, वनी शके – मळी शके तेवु (३) सावित करवानु, पुरवार करवानु (४) जीतवानु; तावे करवानु (५) मटाडी शकाय तेवु (६) पु० एक जातनो देव (७) देव (८) न० सिद्धि, पूर्णता (९) सिद्ध करवानी – पुरवार करवानी वावत

साध्वस न० डर, भय (२) व्यग्रता, क्षोभ (३) सुस्ती [पतिव्रता स्त्री

साध्वी स्त्री० सदाचारी – पवित्र स्त्री (२)

सानंद वि० सुखी, खुश

सानंदम् अ० खुशीथी

सानाथ्य न० मदद, सहाय

सानु पु०, न० शिखर; टोच (२) पर्वतनी टोचे आवेलो सपाट भाग (३) जगल (४) फणगो

सानुकंप वि० कृपावंत

सानुक्रोश वि० दयाळु, दयार्द्र

सानुतर्षम् अ० तरसथी

सानुनय वि० विनयी; नम्र

सानुबंध वि० एकधारु, अखड (२) परिणामवाळु

सानुमत् पु० पर्वत [नीचेनो)

सानूकर्ष वि० धरीवाळो पाटडो (रथ

सान्वय वि० आनुवशिक (२) कुटुब के वशजो सहित एवु (३) सबधी (४) अर्थयुक्त

सापत्न वि० हरीफाई – अदेखाईथी करेलु (२) हरीफनु, शत्रुनु (३) पोताना पतिनी बीजी स्त्रीनु, शोकनु
सापत्नाः पु० ब० व० एक ज़ पतिनी जुदी जुदी पत्नीना वाळको
सापत्न्य न० कोईनी सपत्नी – शोक होवु ते (२) अदेखाई, दुश्मनावट (३) पु० शोकनो दीकरो (४) शत्रु (५) सावको भाई
सापदेशम् अ० बहानु काढीने
सापवाद वि० अपवाद – आळ फेलावतु (२) आळ लाग्यु होय तेवु
सापवादम् अ० ठपको आपीने, निंदापूर्वक
सापेक्ष वि० (सामान्य रीते समासमा) –नी अपेक्षा होय तेवु, –ना सबधमा होय तेवु (२) पक्षपातवाळु
साप्ततंतव पु० (ब० व०) एक पथ
साप्तपद, साप्तपदीन वि० सात पगला साथे चालवाथी थतु (२) न० वर-कन्याए अग्निनी आसपास सात प्रदक्षिणा करवी ते (३) गाढ मित्रता
साफल्य न० सफळता (२) उपयोगीपणु (३) लाभ
साबाध वि० अव्यवस्थित
साभ्यसूय वि० अदेखु, ईर्षाळु
सामग पु० सामवेद गानारो
सामग्री स्त्री० कोई कार्यमा उपयोगी एवो के साधन तरीके कामनो सामान
सामग्र्य न० समग्रपणु, पूर्णता, कुल – आखु ते (२) परिवार (३) साधन-सामग्री (४) मोक्ष
सामज, सामजात पु० हाथी
सामन् न० सात्वन, प्रसन्न करवु ते; शात पाडवु ते (२) राजनीतिना चार उपायोमानो एक – मीठी वातोथी समजावीने मेळवी लेवु ते (साम, दाम, दड, भेद) (३) स्तुतिवाळु के गाई शकाय तेवु स्तोत्र (४) सामवेदनो मत्र के पाठ (५) सामवेद (६) अवाज; स्वर
सामन्य पु० सामवेद जाणनारो ब्राह्मण; ते वेद गावामा कुशळ एवो ब्राह्मण
सामयिक वि० रूढि – परपराथी चालतु आवेलु (२) करार करेलु; कबूलेलु (३) करार मुजबनु (४) नियमित (५) समयसर होवु ते (६) नियत समये थतु के आवतु (७) तत्पूरतु; थोडा वखत माटेनु
सामयोनि पु० हाथी (२) ब्रह्मा
सामर्थ्य न० बळ, शक्ति (२) समान प्रयोजन के हेतुवाळा होवापणु (३) एक ज अर्थवाळा होवु ते
सामर्थ्यात् अ० –ना बळे; –ना कारणे
सामर्ष वि० गुस्साभर्यु [मधुर वाणी
सामवाद पु० शात पाडे तेवी मीठी–
सामवायिक वि० कोई पण मडळी सबधी (२) समवाय-सबंध सबधी (३) पु० मत्री (४) कोई मडळनो आगेवान [उद्गाता
सामविद् पु० सामवेद जाणनारो (२)
सामवेद पु० चारमानो त्रीजो वेद
सामंजस्य न० औचित्य (२) खरा-पणु, साचापणु
सामंत वि० पासे – सरहदे आवेलु (२) सार्वत्रिक (३) पु० पडोशी (४) पडोशी राजा (५) खडियो राजा
सामाजिक वि० सभा के समाजनु (२) पु० प्रेक्षक, सभ्य
सामाध्यायनिक पु० सामवेदी ब्राह्मण
सामानाधिकरण्य न० एक ज – समान परिस्थितिमा होवुं ते (२) एक ज कार्य बजाववु ते (३) एक ज पदार्थने लागु पडवापणु
सामान्य वि० सर्वसाधारण (२) समान; सरखु (३) मध्यम कक्षानु (४) तुच्छ (५) आखु, समग्र (६) न० सर्वत्र होवु ते (७) समान लक्षण

सामान्यतः अ० सामान्यपणे
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकम् अ० समान आदरथी [धधानो करारपत्र
सामायिक न० समभाव (२) सहियारा
सामासिक न० समासोनो आखो समूह
सामि अ० अर्धुं, अधूरु होय तेम (२) घृणापात्र होय तेम (३) वहु वहेलु; समय पहेला
सामिधेनी स्त्री० यज्ञाग्नि प्रगटावती वखते बोलवानी ऋचा (२) समिध
सामिष वि० मासयुक्त; मास साथेनु
सामीप्य न० समीपता, पासे होवापणु
सामुदायिक वि० समुदायनु
सामुद्र वि० समुद्रनु, समुद्रमाथी नीपजेलु (२) पु० वहाणवटी, दरियाई वेपारी (३) न० शरीर उपरनु सामुद्रिक चिह्न के लक्षण
सामुद्रिक वि० समुद्रथी नीपजेलु (२) समुद्रनी मुसाफरी करतु, समुद्र मार्गे वेपार करतु (३) शरीर उपरना लक्षणो सबधी (जे उपरथी सारु के खराब नसीब भाखवामा आवे छे)
साम्ना अ० खुशीथी
साम्य न०, **साम्यता** स्त्री० सरखापणु सादृश्य (२) समानभाव (३) मेळ, मुसगतता (४) निष्पक्षता, तटस्थवृत्ति
साम्यतालविशारद वि० सगीतना ताल अने सगतमा कुशळ [भौम राज्य
साम्राज्य न० सार्वभौमत्व (२) सार्व-
साय पु० सध्याकाळ, साज (२) अत (३) वाण
सायक पु० बाण (२) तलवार
सायकपुंख पु० बाणनो पीछावाळो भाग
सायण पु० वेदना सुप्रसिद्ध भाष्यकार (ई० स० १३७०)
सायधूर्त पु० साज रूपी ठग (२) चद्र
सायम् अ० साजे, सध्याकाळे
सायंकाल पु० साजनो समय
सायंतन वि० सध्या समयनु
सायंप्रातर् अ० साजे अने सवारे
सायाह्न पु० साज
सायुज्य न० भळी जवु – एकरूप थई जवु ते (चार प्रकारनी मुक्तिमाथी एक) (२) सरखापणु
सायुध्य वि० शस्त्रसज्ज एवु
सार वि० अगत्यनु; तत्त्वरूप (२) उत्तम; श्रेष्ठ (३) साचु, खरु (४) समर्थ; दृढ (५) बरोबर पुरवार थयेलु (६) (समासने अते) सौथी सारु, श्रेष्ठ (७) न्यायी (८) हाकी काढनारु, दूर करनारु (९) पु०, न० अर्क, कस, सत्त्व (१०) मज्जा (११) वृक्षनो रस (१२) सक्षेप; तात्पर्य (१३) वळ; शक्ति (१४) दृढता (१५) धन, मिलकत (१६) न० पाणी (१७) पोलाद
सारक वि० रेचक
सारगात्र वि० मजबूत अवयवोवाळु
सारगुरु वि० वजनने कारणे भारे एवु
सारघ न० मध
सारज न० ताजु माखण [नदी
सारणि स्त्री० नहेर, नीक (२) नानी
सारणिक वि० मुसाफरी करतु (२) पु० प्रवासी, वटेमार्गु (३) प्रवासी वेपारी
सारणी स्त्री० जुओ 'सारणि'
सारतरु पु० केळ
सारतस् अ० धन प्रमाणे (२) बळपूर्वक (३) जात प्रमाणे
सारथि पु० रथ हाकनार (२) मददनीश साथी (३) मार्गदर्शक (४) महासागर
सारथ्य न० सारथिपणु
सारफल्गु वि० उत्तम अने हलकु
सारभांड न० वेपार माटेनो माल
सारमेय पु० कूतरो
सारमेयी स्त्री० कूतरी
सारव वि० सरयु नदीनु
सारशन न० जुओ 'सारसन'
सारस वि० बूम पाडतु, बोलावतु (२)

सरोवरनु (३)पु० ते नामनु एक पक्षी (४) हस पक्षी (५) पक्षी (६) चद्र (७) न० कमळ (८) स्त्रीनो कमरबध; कदोरो

सारसक पु० चक्रवाक

सारसन न० स्त्रीनो कदोरो (२) योद्धानो कमरपट्टो (३) छाती उपरनु बखतर

सारसाक्ष न० एक रत्न

सारसाक्षी स्त्री० कमळ जेवा नेत्रवाळी स्त्री [चक्रवाकी

सारसिका स्त्री० सारस पक्षीनी मादा(२)

सारसी स्त्री० सारस पक्षीनी मादा

सारस्य न० बूम, पोकार (२) पुष्कळ पाणी होवु ते

सारस्वत वि० सरस्वती देवी सबधी (२)सरस्वती नदी सबधी(३)वक्तृत्वशक्तिवाळु (४) पु० सरस्वती नदीनी आसपासनो प्रदेश (५) ब्राह्मणनो एक वर्ग (६) वाणी; वक्तृता

सारंग वि० कावरचीतरु(२)पु० कावरचीतरो वर्ण (३) कावरचीतरो मृग (४) मृग (५) हाथी (६) मधमाखी (७) काळो भमरो (८) सिह (९) कोयल(१०)मोर(११) शख (१२) कामदेव (१३) चदन (१४) भक्त (१५) एक राग

सारंगी स्त्री० एक ततुवाद्य (२) कावरचीतरा वर्णनी मृगली

सारासार वि० कीमती अने किमत विनानु; कामनु अने नकामु (२) मजबूत अने नबळु [एक पक्षी

सारि स्त्री० सोगठु; शेतरजनु महोरु(२)

सारिका स्त्री० मेना जेवु एक पखी (२) ततुवाद्यना तार जेना उपरथी पसार थाय छे ते पुल [वाळु

सारिन् वि० जतु, सरतु (२)–ना मार-

सारिष्ठ वि० सौथी सारु

सारी स्त्री० जुओ 'सारि'

सारूप्य न० समान रूप के आकृति होवी ते (२) सरूपता, सदृशता (३) (चार मुक्तिओमानी एक) देव साथे एकरूप थई जवु – भळी जवु ते

सार्गल वि० रोकायेलु, अटकावायेलु

सार्थ वि० अर्थवाळु (२) हेतुवाळु (३) समान अर्थवाळु (४) उपयोगी (५) पैसादार (६) पु० धनी, पैसादार (७) वेपारीओनो वणजार (८) माणसोनो काफलो – सघ (९) प्राणीओनु टोळु (१०) टोळु; समुदाय

सार्थक वि० उपयोगी (२) अर्थवाळु

सार्थवाह पु०, **सार्थवाहन** पु० वणजारनो मुखियो, मुख्य वेपारी

सार्थहीन वि० वणजारमाथी पाछळ रही गयेलु; वणजारे पाछळ छोडी दीधेलु

सार्थिक वि० –साथे मुसाफरी करतु (२) पु० वेपारी (३) मुसाफरीनो साथी

सार्द्र वि० भीनु

सार्ध वि० अर्धा जेटलु वधारे होय तेवु (उदा० 'सार्धशतम्'–१५०)

सार्धम् अ० साथे, सोवतमां

सार्प पु० आश्लेषा नक्षत्र

सार्व वि० सामान्य; सार्वत्रिक (२) वधाने माफक आवे तेवु (३)पु० बौद्ध के जैन भिक्षु [करनारु

सार्वकामिक वि० वधी इच्छाओ पूरी

सार्वजनिक, सार्वजनीन वि० सर्व माटेनु; सर्वने उपयोगनु [पडे तेवु

सार्वत्रिक वि० दरेक स्थळनु; वधे लागु

सार्वभौतिक वि० वधा भूतो के भूत प्राणीओ सबधी

सार्वभौम वि० आखी पृथ्वीने लगतु (२) मननी वधी भूमिकाओने लगतु (३)चक्रवर्ती राजा (४)कुबेरनी उत्तर दिशानो दिग्गज

सार्वलौकिक वि० वधा लोको जाणता होय तेवु; वधे प्रवर्ततु; सार्वत्रिक

सार्ववेदस् पु० यज्ञमा बधी वस्तुओनु दान करनारो (२) न० माणसनी बधी मिलकत [शक्तिवाळु
सार्ष्टि वि० समान पद–स्थिति–के
सार्ष्टिता स्त्री० (चार प्रकारनी मुक्तिओमानी एक) शक्ति अने गुणोमा परमात्मानी समानता
साल पु० एक वृक्ष (२) वृक्ष
सालस वि० थाकेलु (२) आळसु, सुस्त
सालंकार वि० आभूषणयुक्त
सालावृक पु० कूतरो ('शालावृक')
सालोक्य न० देवना ज लोकमा साथे रहेवु ते (चार मुक्तिओमानी एक)
सावकाशम् अ० फुरसदे
सावज्ञ वि० अवज्ञा करतु; तुच्छकारतु
सावद्य वि० निंदापात्र; ठपकापात्र
सावधान वि० लक्ष आपतु; काळजीवाळु (२) सावध (३) उद्योगी
सावधानम् अ० काळजीथी; लक्ष आपीने
सावधारण वि० मर्यादित
सावधि वि० मर्यादावाळु; सीमित
सावन पु० यज्ञ करावनार (२) यज्ञनी पूर्णाहुति
सावयव वि० अवयवोनु बनेलु
सावरण वि० छुपावेलु, गुप्त (२) ढांकेलु; वासेलु
सावलेप वि० गर्विष्ठ, उद्धत
सावलेपम् अ० उद्धताईथी
सावशेष वि० अवशेष बाकी रहेलु होय तेवु (२) अधूरु
सावष्टंभ वि० भव्य, उदात्त; गौरवयुक्त (२) बहादुर, पराक्रमी (३) दृढ; मक्कम
सावष्टंभम् अ० मक्कमपणे; दृढताथी
सावहेलम् अ० अवहेलाथी, तुच्छकारपूर्वक
सावित्र वि० सूर्य सबधी (२) सूर्यवंशी (३) गायत्री साथेनु (४) पु० सूर्य (५) कर्ण (६) न० यज्ञोपवीत; जनोई (७) यज्ञोपवीत सस्कार (८) हस्त नक्षत्र
सावित्री स्त्री० प्रकाशनु किरण (२) गायत्री (३) यज्ञोपवीत सस्कार (४) ब्रह्मानी एक पत्नी (५) पार्वती (६) शल्य देशना राजा सत्यवाननी पत्नी (जे यमराज पासेथी पतिने छोडावी लावी हती)
साविनी स्त्री० नदी
सावेगम् अ० आवेशपूर्वक
साशंक वि० भयभीत; गाभरुं
साशंस वि० आशाभर्यु; इंतेजार
साशंसम् अ० आशा साथे
साश्चर्य वि० नवाई पमाडे तेवा वर्तनवाळुं
साश्र वि० रडतु; आसु पाडतु
साश्रु वि० आसुभर्युं
साष्टांगम् अ० आठे अंग नमावीने (बे हाथ, छाती, कपाळ, बे ढीचण अने बे पग –ए आठे अग जमीनने अडे तेम नमस्कार करवा)
सास वि० धनुष्यवाळु [विजयवत
सासहि वि० सहन करी शके तेवु (२)
सासि वि० असि–तलवारवाळु
सासुस् वि० बाणोवाळु
सासूय वि० अदेखु, ईर्ष्याळु, तुच्छकारतुं
सासूयम् अ० अदेखाईथी (२) गुस्से थईने, तुच्छकारपूर्वक
सास्ना स्त्री० बळदने गळे लटकती चामडी–गोदडी
सास्रम् अ० आखोमा पाणी लावीने
साहचर्य न० साथीपणु, मोबत (२) साथे रहेवु ते, साथे होवु ते
साहस न० बळजबरी, अत्याचार (२) चोरी–बळात्कार वगेरे कोई पण गुनो (३) धृष्टता; हिंमत (४) साहसभर्युं कृत्य (५) परिणामना विचार विना करेलु अविचारी कृत्य [चारी
साहसकारिन् वि० साहसी (२) अवि-

साहसिक वि० अत्याचारी; जुलमी; क्रूर(२)बहादुर, साहसवाळु, अविचारी(३) पु० साहस करनारो–अविचारी–मरणियो माणस (४) लूटारु, बदमाश(५)व्यभिचारी(६) न० साहसभर्युं कृत्य [जबरी

साहसिक्य न० साहसिकपणु(२)बळ-

साहस्र वि० हजार संबंधी(२)हजारनु बनेलु(३)हजारनु खरीदेलु(४)हजार-गणु(५)पु० हजार माणसनी लश्करी टुकडी(६)न० हजारनो समूह

साहायक न० मदद, सहाय (२) मैत्री (३) सहायक सैन्य

साहाय्य न० मदद(२)मैत्री(३)मुश्केलीमा मदद करवी ते

साहित्य न० समुदाय, मंडळ(२)काव्यरचना के तेवी बीजी साक्षरी रचना (३)काव्यशास्त्र(४)साधनसामग्री

साह्य न० मंडळ; समाज(२)मदद

साह्व वि० नामनु, नामे ओळखातु

साह्वय पु० जानवरोनी साठमारी; ते उपर खेलातो जुगार

सांकर्य न० संकरता, भेळसेळ

साकूजित न० घणा पखीओना कूजननो मिश्र, मोटो अवाज

सांकेतिक वि० सूचक, प्रतीक रूप(२) संकेतथी ठरावेलु, रूढिथी ऊभु थयेलु

सांख्य वि० संख्या संबंधी(२)गणतरी करनारु (३) तर्कप्रवीण (४) विवेक करनारु (५) पु०, न० छ वैदिक दर्शनोमानु कपिले प्रवर्तावेलु दर्शन (६) पु० सांख्य दर्शननो अनुयायी

सांग वि० अंग–अवयववाळु(२)दरेक अंगमा पूरु (३) छ अंगो सहित(४) पूर्ण–पूरु थयेलु

सांगतिक पु० मुलाकाती, महेमान

सांगत्य न० संगति; मिलन

सांगोपांग वि० अंग अने उपांग सहित (वेदोनो पूरो अभ्यास करवो)

सांग्रामिक वि० युद्ध संबंधी, लश्करी(२) न० युद्धनी सामग्री

सांतर वि० वच्चे खाली जगा होय तेवु (२) आछा वणाटवाळु (३) स्थिर के दृढ नहि तेवु [आपवु

सांत्व् १० उ० सांत्वन करवु; आश्वासन

सांत्व पु०, न०, **सांत्वन** न०, **सांत्वना**, **सांत्वा** स्त्री० आश्वासन; शांत पाडवु ते [सुदामाना गुरु)

सांदीपनि पु० एक ऋषि (श्रीकृष्ण अने

सांद्र वि० निबिड; गाढ (२) विपुल; जाडु, घणु (३) एक साथे–जूथमा होय तेवु (४) मजबूत; स्थूल (५) पुष्कळ; घणु (६) तीव्र (७) चीकणु (८) लीसु, सुवाळु(९)झाडी, जंगल

सांद्रीकृत वि० गाढु–जाडु बनावेलु (२) वधारेलु

सांध वि० संधि–सांधा आगळ आवेलु

सांधिविग्रहिक पु० संधि अने युद्ध माटेनो प्रधान; परदेश मंत्री [प्रात:काळनु

सांध्य वि० संध्या समयनु, सांजनु(२)

सांनहनिक वि० कवचधारी (२) युद्ध माटे तैयार थवा प्रेरनारु

सांनाय्य पु० घी साथे मेळवेलु अने अग्निने बलि तरीके आपवानु होम द्रव्य

सांनाहिक वि० जुओ 'सांनहनिक'

सांनिध्य न० पडोश, नजीकपणु (२) हाजरी, मोजूदगी

सांनिपातिक वि० परचूरण(२)गूंचवणी भरेलु (३) शरीरनी त्रण धातुओनी गूंचवणिया विकृति थवाथी थयेलु

सांपराय वि० युद्ध संबंधी (२) परलोक संबंधी (३) पु०, न० झघडो, तकरार (४) परलोक, परलोकनु जीवन (५) परलोक प्राप्त करवानो मार्ग–साधन (६) मददनीश (७) विपत्ति, आफत

सांपरायिक वि० युद्ध संबंधी(२)लश्करी

दृष्टिए उपयोगी (३)आफतभर्युं(४) परलोकने लगतु (५) उत्तरक्रिया सबधी(७)न० युद्ध; लडाई (८) पु० युद्धनो रथ [प्रस्तुत; वधवेसतु
सांप्रत वि० योग्य, उचित; अनुकूळ(२)
साप्रतम् अ० हमणा; आ समये (२) तरत ज (३) वखतसर, उचितपणे
साप्रतिक वि० चालु समयने लगतु(२) बराबर, खरु, उचित
सांब पु० शिव
सांमुख्य न० हाजरी(२)सामे मोए होवु ते (३) अनुग्रह, महेरबानी
सांयात्रिक पु० दरियाई मार्गे वेपार करनारो;वहाणवटी [महान योद्धो
सांयुगीन न० वि० युद्धकुशळ (२)पु०
सांराविण न० कोलाहल, घोघाट
सांवत्सरिक वि० वार्षिक(२)पु० जोषी (३)पचाग बनावनारो [प्रलयाग्नि
सांवर्तक वि० प्रलयकाळनु (२) पु०
साशयिक वि० अनिश्चित, संशययुक्त (२) न० जोखमभरेलु कृत्य
सांसारिक वि० ससार-व्यवहार सबधी; दुन्यवी, आ लोकनुं
सांसिद्धिक वि० स्वभावसिद्ध; सहज, नैसर्गिक (२) सिद्धिबळथी उपजावेलु
सि ५, ९ उ० बाधवु, गाठवु(२)फादवु
सिकता स्त्री० रेताळ भूमि(२)रेती (मोटे भागे ब० व०)
सिकतिल वि० रेताळ
सिक्त ('सिच्'नु भू० कृ०) सीचेलु; छाटेलु; रेडेलु
सिक्थ पु० (राघेलो) भात(२)भातनो गोळो(३)न० मीण(४)गळी
सिच् ६ उ० [सिंचति–ते] छाटवु(२) पाणी पावु, सीचवु(३)अदर रेडवु (४)अर्पण करवु(जलाजलि इ०)(५) पलाळवु [जीर्ण वस्त्र
सिचय पु० वस्त्र, कपडु(२)फाटेलु–
सित ('सो'नु भू० कृ०) वि० सफेद (२)बधायेलु;गठायेलु(३)जोडायेलु, सहित एवु (८) घेरायेलु (५) पु० सफेद रग(६)शुक्लपक्ष (७) ग्याड, साकर
सितकर पु० चद्र [जाळु
सितछत्र न० राजछत्र(२)करोळियानु
सिततुरग पु० अर्जुन(सफेद अश्ववाळो)
सितरश्मि पु० चद्र
सितवाजिन् पु० अर्जुन(सफेद घोडावाळो)
सितवारण पु० ऐरावत [ग्रह
सितसौम्यौ पु० द्वि० व० शुक्र अने बुध
सिता स्त्री० खडी साकर(२)चांदनी (३)सुदर स्त्री(४)मद्य, दारु(५) सफेद दरो
सितापांग पु० मोर (तेना आखना खूणा दूध जेवा सफेद होय छे तेथी)
सितासितगुण वि० ताणावाणामा काळो अने धोळो दोरो वाराफरती होय तेवु
सितांशु पु० चद्र
सिति वि० सफेद(२)काळु
सितेतर वि० काळु
सिद्ध ('सिध्'नु भू० कृ०) वि० पूरु थयेलु, सफळ थयेलु, प्राप्त थयेलु(२) पुरवार थयेलु, निश्चित थयेलु(३) रधायेलु (४) परिपक्व थयेलु (५) प्रख्यात, प्रसिद्ध (६)पु० आठ सिद्धिओ के चमत्कारी शक्तिओवाळो देव के मनुष्य(७)दिव्य दृष्टि के शक्तिवाळो मुनि (८) ऋषि (९) जादुगर
सिद्धयात्रिक पु० सिद्धिओ मेळववा भटकनारो
सिद्धरस पु० पारो (२) कीमियागर
सिद्धव्यजन पु० तपस्वी वेशधारी जासूस
सिद्धादेश पु० कोई मुनिए भाखेलु भविष्य(२)भविष्य भाखनार पेगबर
सिद्धान्न न० राधेलु अनाज
सिद्धापगा स्त्री० गगानदी
सिद्धार्थ वि० इच्छित वस्तु प्राप्त के पूर्ण

करी होय तेवु (२) पु० धोळा सरसव (३) गौतम बुद्धनु नाम

सिद्धार्थक पु० धोळा सरसव

सिद्धासन न० एक प्रकारनु आसन

सिद्धांगना स्त्री० सिद्ध जातिनी देवी–स्त्री [अजन

सिद्धांजन न० चमत्कारी शक्तिवाळु

सिद्धांत पुं० साचो साबित थयेलो एवो निश्चित मत के निर्णय

सिद्धि स्त्री० सफळता पूर्णता; प्राप्ति (२) समृद्धि (३) पुरवार थवु ते (४) फेंसलो (फरियादनो) (५) राधवु ते (६) चमत्कारी शक्ति (आठ गणाय छे अणिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, महिमा, ईशित्व, वशित्व, कामावसायिता)

सिद्धिद वि० सफळता आपनारु, सुख आपनारु (२) आठ सिद्धिओ आपनारु

सिध् ४ प० सिद्ध थवु, सफळ थवु, पार पडवु (२) बराबर लक्ष उपर तकावु (३) साबित के पुरवार थवु (४) जितावु (५) १ प० जवु (६) निवारवु (७) आज्ञा करवी, शासन करवु

सिध्य पु० पुष्य नक्षत्र

सिनीवाली स्त्री० चौदशयुक्त अमावास्या (ज्यारे चंद्ररेखा भाग्ये देखाय तेम ऊगे छे)

सिन्व् १ प० भीनु करवु

सिप्रा स्त्री० स्त्रीनी कटिमेखला–कदोरो (२) उज्जयिनी पासेनी नदी

सिमिसिमायते आ० (टाढ चडवी, ध्रूजवु)

सिरा स्त्री० शिरा, नस [जोडवु

सिव् ४ प० [सीव्यति] सीववु (२)

सिष्णासु वि० नाहवानी इच्छावाळु

सिसिक्षा ('सिच्' उपरथी) स्त्री० सीचवानी–छाटवानी इच्छा

सिसृक्षा स्त्री० उत्पन्न करवानी इच्छा

सिंघाणक न० लोखंडनो काट (२) नाकनी लीट

सिंचन न० सींचवु–रेडवु ते

सिंजा स्त्री० धातुना घरेणानो रणकार

सिंजित न० (झांझर इ० नो) झमकार

सिंजिनी स्त्री० धनुष्यनी दोरी

सिंदुक, सिंदुवार, सिंदुवारक पु० एक वृक्ष (निर्गुंडी?)

सिंदूर पु० एक वृक्ष (२) न० सिंदूर; पारो सीसु तथा गंधकनी मेळवणीनो लाल भूको

सिंधु पु० समुद्र, सागर (२) सिंधु नदी (३) सिंधु नदीनो प्रदेश (४) माळवानी एक नदी (५) मोटी नदी

सिंधुपिब पु० अगस्त्य मुनि

सिंधुर पु० हाथी

सिंधुरवदन पु० गणपति

सिंधुराज पु० जयद्रथ राजा [ईराननो)

सिंधुवार पु० जातवंत घोडो (सिंध के

सिंधुसौवीराः पु० ब० व० सिंधु नदीनी आसपास रहेता एक जातना लोक

सिंह पु० एक रानी हिंसक प्राणी (पशुओनो राजा मनाय छे) (२) (समासने अंते) ते ते वर्गनो उत्तम–श्रेष्ठ ते (उदा० 'पुरुषसिंह')

सिंहकर्ण पु० सिंहनी मूर्तिवाळो खूणो

सिंहद्वार न० (महेल वगरेनो) मुख्य दरवाजो

सिंहध्वनि पु० सिंहनी गर्जना

सिंहर्नादिन् वि० सिंहनी जेम गर्जतु

सिंहनाद पु० सिंहनी गर्जना (२) तेवी योद्धाओनी गर्जना

सिंहल न० सिलोन बेट

सिंहसंहनन वि० सिंह जेवा मजबूत बांधावाळु (२) सुंदर [लीट

सिंहाणक न० लोढानो कोट (२) नाकनी

सिंहावलोकन न० सिंहनी पेठे पाछळ नजर करवी ते (आगळ जता जता)

सिंहासन न० सिंहनी आकृतिवाळु उंचु आसन (राजा, देव के आचार्यनु)
सिंहिका स्त्री० राहुनी माता
सिंहिकासुत, सिंहिकासूनु पु० राहु
सिंही स्त्री० सिंहण (२) राहुनी माता
सीकर पु० फरफर, छांटा
सीता स्त्री० हळ वडे पाडेला चास (२) खेडेली जमीन (३) खेती (४) जनकनी पुत्री, रामना पत्नी (५) दारू; मद्य
सीताद्रव्य न० खेतीनु ओजार
सीताफल न० सीताफळ
सीत्कार पु०, **सीत्कृति** स्त्री० सिसकारो (श्वास अंदर खेंचवाथी थतो); टाढथी कंपवानो, निसासानो के वेदनानो अवाज
सीधु पु०, न० मद्य
सीमन् स्त्री० हद, सीमा; मर्यादा
सीमंत पु० सरहदनी रेखा, सीमाचिह्न (२) वाळ बे भागमां ओळी वच्चे पाडे छे ते सेंथी (३) जुओ 'सीमंतोन्नयन'
सीमंतयति प० (वाळना सेंथी काढी भाग पाडवा; रेखा वडे अंकित करवु के जुदु पाडवु) [जुदु पाडेलु
सीमंतित वि० सेंथी पाडेलु (२) लीटीथी
सीमंतिनी स्त्री० स्त्री
सीमंतोन्नयन न० सगर्भा स्त्रीनो एक संस्कार (चोथे, छठ्ठे के आठमे महिने करातो)
सीमा स्त्री० हद, मर्यादा (२) हदनु निशान (३) पराकाष्ठा, छेल्ली हद (४) वृषण
सीमांत पु० सरहद (२) छेवटनी हद
सीमोल्लंघन न० हद ओळंगवी ते
सीर पु० हळ
सीरध्वज पु० जनक राजा
सीरपाणि पु० बळराम, हलायुध
सीरिन् पु० बळराम
सीरोत्कषण न० हळ वडे खेडवु ते
सीव् ४ प० जुओ 'सिव्'
सीवनी स्त्री० सांध [सीसं
सीस, सीसक, सीसपत्र, सीसपत्रक न०
सु १ उ० जन्म, जणवु (२) १, २ प० सार्वभौमत्व होवु, सत्ता होवी (३) ५ उ० रस काढवो, रस निचोववो (४) अर्क गाळवो (५) रेडवु, छांटवु (६) होमवु, यज्ञ करवो (खास करीने सोमयज्ञ)
सु अ० नाम साथे कर्मधारय अने बहुव्रीहि समासोमां जोडातो तेम ज विशेषणो अने अव्ययो साथे नीचेना अर्थमां वपरातो उपसर्ग (१) सारु, उत्तम (२) सुंदर, मनोहर (३) सारी रीते; पूरेपूरु (४) सहेलाईथी (५) घणु, अत्यंत (६) आदरणीय (७) मंजूरी, समृद्धि के दुःख ए अर्थ पण बतावे
सुकन्या स्त्री० शर्याति राजानी पुत्री अने च्यवन ऋषिनी पत्नी
सुकर वि० सहेलु; शक्य
सुकल्पित वि० सुसज्ज
सुकुमार वि० नाजुक; कोमळ (२) सुंदर यौवनवाळु
सुकृत् वि० पुण्यशाळी, सद्वर्तनवाळु (२) विद्वान (३) नसीबदार (४) सारा यज्ञ करनारु
सुकृत वि० योग्य रीते करेलु (२) पूरेपूरु करेलु (३) न० कृतकृत्य (४) पुण्य (५) तपश्चर्या
सुकृतिन् वि० सत्कृत्य करनारु, धार्मिक, पुण्यशाळी (२) न्यायी (३) विद्वान (४) नसीबदार (५) उदार
सुकृत्य न० सत्कार्य, सारु काम
सुख वि० सुखी (२) सुखकर (३) सद्गुणी (४) –मां आनंद लेतु, सहेलु, सरळ (६) योग्य, उचित (७) न० (आराम –चेन–शांति–संतोष–तृप्ति– उपभोग -एवो) तनमनने गमे तेवो अनुभव (८) समृद्धि (९) आरोग्य (१०) हित, कल्याण (११) आराम, सगवड

सुखजात वि० सुखी
सुखतंत्र वि० सुख भोगवतु
सुखद वि० सुख आपनारु
सुखप्रश्न पु० कुशळसमाचार पूछवा ते
सुखम् अ० सुखेथी (२) खुशीथी (३) सहेलाईथी
सुखयति प० (खुश करवु,आनद आपवो)
सुखरूप वि० सारा देखावनुं
सुखश्रव, सुखश्रुति वि० कानने गमे तेवु, मधुर अवाजवाळु
सुखसंगिन् वि० सुखमा आसक्त एवु
सुखसाध्य वि० सहेलाईथी मेळवी शकाय तेवु (२) सहेलाईथी मटाडी शकाय तेवु
सुखस्पर्श वि० सुखकर स्पर्शवाळु (२) सुखप्रद, आनद आपनारु
सुखाकृत वि० सुखप्रद, आनददायक
सुखागत न० स्वागत, अभिवादन
सुखात्मन् पु० परमात्मा, ब्रह्म
सुखाप्लव वि० स्नान माटे योग्य एवु
सुखायते आ० (सुखी थवु; सुख आपवु, अनुकूळ थवु)
सुखालोक वि० देखावडु; सुदर
सुखावह वि० सुखद, सुख आपनारुं
सुखास्वाद वि० स्वादिष्ठ (२) सुखप्रद (३) पु० सारो स्वाद (४) आनद, उपभोग (सुखनो)
सुखित वि० सुखी, आनदित (२) न० सुख, आनद [साधु; तपस्वी
सुखिन् वि० सुखी; खुशी (२) पु०
सुखोचित वि० सुख-सगवडथी टेवायेलु
सुखोदर्क वि० सुखमा परिणमतु
सुख्याति स्त्री० अत्यत प्रख्याति
सुग वि० सुदर रीते चालनारु (२) सहेलाईथी पासे जई शकाय तेवु (३) सहेलाईथी समजी शकाय तेवु (४) पु० गधर्व (५) न० विष्ठा (६) सुख
सुगत पु० गौतमबुद्ध
सुगम वि० सहेलाईथी जई शकाय तेवु (२) सहेलु (३) समजी शकाय तेवु
सुगंध पु० सुवास (२) न० चदन
सुगंधि वि० सुवासित; खुशबोदार
सुगृह वि० सारा घरवाळु, सारा रहेठाणवाळु [बोलवु शुभ गणाय तेवु
सुगृहीत वि० सारी रीते पकडेलु (२)
सुगृहीतनामधेय, सुगृहीतनामन् वि० जेनु नाम लेवाथी पुण्य थाय तेवु
सुग्रीव वि० सुदर डोकवाळु (२) पु० वालीनो भाई, वानरोनो राजा
सुग्रीवेश पु० राम
सुघोष वि० सारा अवाजवाळु (२) पु० नकुळनो शख
सुचरित, सुचरित्र वि० सारा वर्तनवाळु; सुशील (२) न० पुण्य (३) सत्कर्म
सुचिर वि० घणु लाबु (समय)
सुचिरम् अ० लाबा समय सुधी
सुचेतस् वि० सारा अत करणवाळु (२) डाह्यु [सारा भाववाळु
सुचेतीकृत वि० सतुष्ट हृदयवाळु (२)
सुजन पु० सद्‌गुणी माणस, सज्जन (२) इद्रनो सारथि [बहादुरी
सुजनता स्त्री० सज्जनता, भलाई (२)
सुजन्मन् वि० खानदान, ऊचा कुळमा जन्मेलु (२) विधिसर लग्नथी जन्मेलु
सुजल्प पु० सारी रीते करेली वातचीत
सुजात वि० बराबर वधेलु, ऊचु (२) सारी रीते घडायेलु, घाटीलु (३) कुलीन (४) सुदर (५) कोमळ
सुजूष् (हणवु, मारवु)
सुटंक वि० तीव्र, तीणु, तीखु (अवाज)
सुत ('सु'नु भू० कृ०) वि० रेडेलु (२) निचोवीने काढेलु (३) उत्पन्न करेलु, जन्म आपेलु (४) पु० पुत्र (५) सतान (६) सोमरस (७) सोमयज्ञ
सुतनिर्विशेषम् अ० पुत्रनी पेठे
सुतनु वि० सुदर (२) नाजुक (३) कृश
सुतनु (-नू) स्त्री० सुदर स्त्री
सुतपस् वि० कठोर तपश्चर्या करनारु

(२) खूब गरमीवाळु (३) पु० तपस्वी (४) सूर्य (५) न० तीव्र ताप

सुतमाम् अ० उत्तम-श्रेष्ठ होय तेम

सुतराम् अ० वधु सारु होय तेम, घणु वधारे होय तेम (२) परिणामे

सुतल न० सात पाताळोमानु एक

सुतंगम पु० पुत्रनो पिता

सुतंत्री वि० सारी रीते तार खेंच्या होय तेवु (२) सारा अवाजवाळु (वाद्य)

सुता स्त्री० पुत्री

सुतार वि० घणा ऊंचा अवाजवाळु (२) तेजस्वी (३) सुंदर कीकीओवाळु

सुतिन् वि० पुत्र के संततिवाळु (२) पु० पिता

सुतिनी स्त्री० माता

सुतीक्ष्ण वि० तीक्ष्ण धारवाळु (२) घणु तीणु (३) खूब पीडा करे तेवु (४) पुं० एक ऋषि [समय

सुत्याकाल पु० सोमरस निचोववानो

सुत्रामन् पु० इंद्र

सुदक्षिण वि० न्यायी, प्रमाणिक (२) घणी दक्षिणाओ आपती होय तेवु (३) कुशळ, प्रवीण (४) विनयी

सुदक्षिणा स्त्री० दिलीप राजानी राणी

सुदत् वि० सुंदर दांतवाळु

सुदर्श वि० सुंदर देखावनु

सुदर्शन वि० सुंदर, देखावडु (२) सहेलाईथी जोई शकाय तेवु (३) पु० विष्णुनु चक्र (४) शिव (५) मेरु पर्वत (६) न० जंबुद्वीप (७) इंद्रनी नगरी

सुदर्शना स्त्री० सुंदर स्त्री (२) स्त्री (३) आज्ञा, हुकम [राजधानी

सुदर्शनी स्त्री० अमरावती; इंद्रनी

सुदामन् वि० उदार, दानी (२) पु० श्रीकृष्णनो मित्र ब्राह्मण

सुदि अ० शुक्लपक्षमा

सुदुरासद वि० पासे न जई शकाय तेवु

सुदुर्लभ वि० महा मुश्केलीए मळी शके तेवु

सुदूर वि० खूब दूर एवु

सुदूरम् अ० घणे दूर (२) अतिशय प्रमाणमां, अत्यंत

सुदृढ वि० खूब मजबूत (२) सज्जड

सुदृश् वि० सुंदर नयनवाळु (२) स्त्री० सुंदर स्त्री

सुधन्वन् वि० उत्तम धनुर्धारी एवु

सुधर्मन् वि० धार्मिक कर्तव्य बजावनार (२) पु० इंद्रनी सभामंडप के गोत्र

सुधर्मा स्त्री० देवसभा (२) ज्ञानसभा

सुधा स्त्री० अमृत (२) फूलनो मध (३) रस (४) चूनो (पाकतानो)

सुधाकर पु० चंद्र

सुधाधर पु० चांदलो

सुधाक्षालित वि० धोळेल

सुधाभृच्च न० पद्मोदय

सुधासित वि० चूना जेवु सफेद (२) अमृत जेवु तेजस्वी (३) अमृतथी भरपूर, अमृतमय

सुधास्यंदिन् वि० अमृत झरतु

सुधांशु पु० चंद्र

सुधी वि० बुद्धिशाळी, चतुर (२) पु० विद्वान, पंडित, ज्ञानी (३) स्त्री० सुंदर बुद्धि, ऊंडी समजण के ज्ञान

सुधूम्रवर्णा स्त्री० अग्निनी सात जीभमांनी एक

सुनय पु० सद्वर्तन (२) सारी राजनीति के व्यवहारनीति

सुनयना स्त्री० सुंदर आंखोवाळी स्त्री (२) स्त्री [बळरामनु मुसळ

सुनंद पु० एक जातनो राजमहेल (२)

सुनिभृत वि० खूब ज एकांत होय तेवु (२) अत्यंत खानगी एवु

सुनिभृतम् अ० खूब खानगी रीते; अत्यंत एकांतमा

सुनीति स्त्री० सद्वर्तन, सदाचार (२) सारी राजनीति के व्यवहारनीति (३) ध्रुवनी माता

सुनीथ वि० सारा स्वभाववाळु; सद्गुणी (२) पु० ब्राह्मण (३) शिशुपाल
सुनु न० पाणी
सुपथ पु० सारो रस्तो (२) सारु वर्तन [(३) सन्मार्ग
सुपर्ण वि० सुदर पाखोवाळु (२) सुदर पादडावाळु (३) पु० सूर्यनु किरण (४) देवताओनी एक जाति (५) गरुड (६) पक्षी
सुपर्णकेतु पु० विष्णु
सुपर्णा (-र्णी) स्त्री० गरुडनी माता
सुपर्याप्त वि० विशाळ (२) सजावेलु (३) बरोबरी करे तेवु
सुपर्वन् वि० सुदर साधावाळु (२) पु० वास (३) बाण (४) देव
सुपात्र न० सारु के योग्य वासण (२) लायक व्यक्ति, लायक माणस
सुपुष्पित वि० सारा फूलवाळु, खूब खीलेलु (२) रोमाचित थयेलु
सुपूर वि० सहेलाईथी भरी शकाय तेवु (२) सारी रीते भरी शके तेवु
सुप्त ('स्वप्' नु कर्तरि भू० कृ०) वि० सूतेलु; ऊघत् (२) निष्क्रिय (३) न० गाढ निद्रा, ऊघ
सुप्ति स्त्री० निद्रा
सुप्रतिष्ठित वि० सारी रीते स्थपायेलु (२) जेनी सारी रीते प्रतिष्ठा करी-होय तेवु (२) विख्यात
सुप्रभात न० मगल प्रभात, सुदर सवार (२) वहेली सवार
सुप्रभाव पु० सर्वशक्तिमत्ता
सुबाहु वि० सुदर हाथवाळु (२) मजबूत हाथवाळु (३) पु० एक राक्षस मारीचनो भाई
सुबोध वि० सहेलाईथी समजी शकाय तेवु (२) पु० सारी सलाह
सुब्रह्मण्य पु० कार्तिकेय (२) यज्ञना १६ ऋत्विजोमानो एक
सुभग वि० नसीबदार; सुखी (२) सुदर (३) मधुर (४) प्रिय (५) प्रख्यात (६) न० सद्‌भाग्य
सुभगा स्त्री० पतिनी प्रिय स्त्री, मानीती पत्नी (२) सौभाग्यवती स्त्री
सुभट पु० वीर योद्धो
सुभद्र वि० अत्यत सुखी, नसीबदार
सुभद्रा स्त्री० श्रीकृष्णनी बहेन, अर्जुननी पत्नी, अभिमन्युनी माता
सुभाषित वि० सारी रीते कहेलु (२) न० सुदर वाक्य, सूक्ति
सुभिक्ष न० सुकाळ (२) खूब भिक्षा मळवी ते [सुदर स्त्री
सुभ्रू वि० सुदर भमरवाळु (२) स्त्री०
सुम पु० चद्र (२) न० फूल
सुमध्य, सुमध्यम वि० पातळी केडवाळु
सुमध्यमा, सुमध्या स्त्री० सुदर स्त्री
सुमन वि० अत्यत सुदर; मनोहर
सुमनस् वि० सारा स्वभावनु (२) सतुष्ट (३) पु० देव (४) स्त्री०, न० (केटलाक ब०व० गणे छे) फूल
सुमना स्त्री० जूई [लेप इ० सामग्री
सुमनोवर्णक न० शृगार माटेना फूल,
सुमर्षण वि० सहन करी शकाय तेवु
सुमंत्र पु० दशरथनो सारथि
सुमित्रा स्त्री० दशरथनी एक राणी, लक्ष्मण अने शत्रुघ्नना माता
सुमुख वि० सुदर मुखवाळू; सुदर (२) उत्सुक (३) अणी-धारवाळु (४) पु० गणेश (५) गरुड
सुमृत वि० तद्दन मरी गयेलु
सुमेधस् वि० बुद्धिशाळी, डाह्यु
सुमेरु पु० मेरु पर्वत
सुयंत्रित वि० सारी रीते शासित थयेलु (२) स्वनियत्रित
सुयोधन पु० दुर्योधन (कटाक्षमा)
सुर पु० देव (२) सूर्य
सुरकार्मुक न० मेघधनुष्य
सुरक्त वि० सारी रीते रगायेलु (२)

राग-प्रेमवाळु (३) घणु सुंदर (४) मधुर अवाजवाळु
सुरगुरु पु० बृहस्पति (२) विष्णु
सुरत वि० रमतियाळ (२) विलासी (३) दयाळु, कोमळ (४) न० अति आनंद (५) मैथुन
सुरतप्रसंग पु० कामभोगमां तल्लीनता
सुरति स्त्री० अति भोग, अति तृप्ति
सुरद्विप पु० ऐरावत हाथी
सुरद्विष् पु० राक्षस, दानव (२) राहु
सुरधनुस् न० मेघधनुष्य
सुरधुनी स्त्री० गंगानदी
सुरपथ न० आकाश (२) स्वर्ग
सुरभि वि० सुगंधी, सुवासित (२) उज्ज्वळ, सुंदर (३) प्रिय (४) डाह्यु (५) विख्यात (६) पु० सुगंध, सुवास (७) वसंतऋतु (८) चैत्र महिनो (९) स्त्री० पृथ्वी (१०) गाय (११) कामधेनु गाय
सुरभित वि० सुगंधीदार (२) मनोहर
सुरभिमुख न० वसंतनो प्रारंभ
सुरभिवल्कल न० तज, दालचीनी
सुरभूय न० इष्ट देव साथे भळी जवु–एकरूप थई जवु ते
सुरमंदिर न० मंदिर
सुरयुवति स्त्री० अप्सरा
सुरवीथि स्त्री० नक्षत्रमार्ग
सुरस वि० स्वादिष्ट (२) रसवाळु
सुरसरित् स्त्री० गंगानदी
सुरसाल पु० कल्पवृक्ष
सुरसुंदरी, सुरस्त्री स्त्री० अप्सरा
सुरस्थान न० मंदिर
सुरंग पु० सुंदर रंग (२) धरतीमां पडेलु बाकु (३) जमीनमां खोदेलो मार्ग–भोयरु
सुरंगा स्त्री० घरनी दिवालमां पाडेलु बाकोरुं (२) जमीननां करेलो मार्ग–भोयरु [मद्यपात्र
सुरा स्त्री० दारू; मद्य (२) पाणी (३)
सुराजन् [illegible]
सुराधिप पु० इंद्र
सुरापगा स्त्री० गंगानदी
सुरापीत वि० पीधेलु, मत्त
सुरारि पु० असुर, राक्षस (देवोना शत्रु)
सुरार्पितमन् न० [illegible] ([illegible])
सुराष्ट्र पु० सोरठ देश
सुरांगना स्त्री० अप्सरा
सुरेखा स्त्री० [illegible]; [illegible]
सुरूप वि० सुंदर, देखावडु (२) विद्वान्
सुरेतस् न० [illegible]
सुरेश पु० इंद्र
सुरेश्वर पु० इंद्र
सुरेंद्र पु० इंद्र (२) विष्णु
सुलक्षण वि० शुभ चिह्नवाळु; भाग्यशाळी [illegible] (२) [illegible] (३) न० [illegible] (४) [illegible]
सुलग्न पु०, न० [illegible] –[illegible]
सुलभ वि० सहेलाईथी मळे एवु (२) –नो [illegible] (३) स्वाभाविक
सुलभकोप वि० सहेलाईथी गुस्से थई जाय तेवु [हरण; मृग
सुलोचन वि० सुंदर नेत्रवाळु (२) पु०
सुलोचना स्त्री० सुंदर स्त्री (२) इंद्रजितनी पत्नी
सुवर्चला स्त्री० सूर्यनी पत्नी
सुवर्ण वि० सुंदर रंगवाळु; सोनेरी रंगनु (२) सारी जातिनु (३) प्रख्यात (४) पु० सारो रंग (५) सारी जाति (६) न० सोनु (७) सोनानो सिक्को (८) धन; दोलत
सुवर्णकार पु० सोनी
सुवर्णचौरिका स्त्री० सोनानी चोरी
सुवर्णपुष्पित वि० सोनाथी भरपूर
सुवर्णभांड, सुवर्णभांडक न० जर-झवेरातनी पेटी
सुवर्णरोमन् पु० घेटो

सुवर्णसिद्ध पु० कीमियाथी के जादुथी सोनु प्राप्त करनारो पुरुष

सुवर्तित वि० सारुं गोळाकार (२) सारी रीते गोठवेलु

सुवसंतक पु० (चैत्र मासमा आवतो) मदनोत्सव (२) चैत्री पूनम

सुवासिनी स्त्री० पिताने घेर रहेती तरुण परिणीता स्त्री (२) सौभाग्यवती स्त्री

सुविक्रांत वि० बहादुर, शूरवीर

सुविग्रह वि० सुदर आकृतिवाळु

सुविद् पु० विद्वान, चतुर माणस (२) स्त्री० चतुर स्त्री

सुविद पु० अत पुरनो हजूरियो (२) राजा

सुविदग्घ वि० चालाक, चतुर

सुविघम् अ० सहेलाईथी

सुविनीत वि० सारी रीते केळवायेलु के तालीम पामेलु (२) नम्र, विनयी

सुविरूढ वि० सारी रीते विकसेलु (२) सारी रीते सवारी करेलु

सुविविक्त वि० एकात – निर्जन एवु

सुविहित वि० सारी रीते मूकेलु, सारी रीते सोपेलु (२) सारी रीते गोठवेलु, सारी रीते सज्ज करेलु (३) सारी रीते करेलु (४) सतुष्ट के तृप्त थयेलु (आतिथ्यथी)

सुवीरक न० एक जातनु अजन, सुरमो (२) काजी

सुवृत्त वि० सद्वर्तनवाळु, सदाचारी (२) सारु गोळाकार (३) न० सारी वर्तणूक, सद्वर्तन

सुव्रता स्त्री० पतिव्रता स्त्री

सुशिक्षित वि० सारी रीते केळवायेलु

सुशील वि० सारा स्वभावनु, मळतावडु

सुश्रुत वि० सारी रीते साभळेलु (२) वेदमा पारगत (३) पु० वैदक ग्रथना रचनार एक प्रसिद्ध ऋषि

सुश्लिष्ट वि० सुदर रीते गोठवेलु के जडेलु (२) बधबेसतु थतु

सुश्लोक्य वि० यशस्वी, प्रसिद्ध

सुषम वि० अत्यत सुदर

सुषमा स्त्री० परम सौंदर्य

सुषि स्त्री० छिद्र (२) नळी

सुषिर वि० छिद्राळु (२) न० छिद्र; काणु (३) फूकीने वगाडवानु वाद्य

सुषुप्त न०, **सुषुप्ति** स्त्री० गाढ निद्रा

सुषुप्सा स्त्री० ऊघवानी इच्छा (२) ऊघनु घेन

सुषुम्णा स्त्री० इडा अने पिंगला वच्चे आवेली एक नाडी

सुष्ठु अ० सारी रीते, सुदर रीते (२) अत्यत होय तेम (३) साचू – खरु होय तेम

सुसत्या स्त्री० जनक राजानी पत्नी

सुसमाहित वि० सारी रीते गोठवेलु, सारी रीते शणगारेलु (२) अत्यत ध्यान के लक्षवाळु

सुसमीहित वि० खूब इच्छेलु

सुसंवीत वि० सारी रीते केड ताणी बाध्यु होय तेवु (२) सारी रीते पोशाक पहेर्यो होय तेवु

सुसंवृति वि० सारी रीते छुपायेलु

सुसंस्कृत वि० सारी रीते राधेलु (२) सारीरीते गोठवेलु

सुसाधित वि० सारी रीते केळवेलु (२) सारी रीते राधेलु

सुस्थ वि० योग्य – सारा स्थानमा होय तेवु (२) नीरोगी (३) सुखी, समृद्ध, भाग्यशाळी (४) न० सुखी स्थिति, सारी स्थिति

सुस्थित वि० जुओ 'सुस्थ' (२) न० चारे बाजु ओसरीवाळु घर

सुहित वि० योग्य, उचित (२) हितकर (३) प्रेमाळ, मित्रताभर्युं (४) तृप्त, सतुष्ट

सुहृद् वि० ममताळु, हेताळ (२) पु० मित्र

सुहृद पु० मित्र

सुह्माः पु० ब० व० ए नामना लोको

सुद पु० एक राक्षस, उपसुंदनो भाई
सुदर वि० देखावडु, मनोहर (२) खरु, साचु
सुदरी स्त्री० सुंदर स्त्री
सू २, ४ प० जन्म आपवो, उत्पन्न करवु, बहार लाववु (२) ६ प० उत्तेजवु, प्रेरवु (३) चूकने पाप्य (कृ्प)
सू वि० (समासने अंते) जन्म आपनार, उत्पन्न करतु उ०
सूकर पु० डुक्कर, भूंड
सूकरी स्त्री० भूंडण; भूंडणी
सूक्त वि० सारु कहेलु, ठीक कहेल (२) न० सुभाषित, डहापणभर्यो बोल (३) वेदनु स्तोत्र – मंत्रसमूह
सूक्ति स्त्री० सारी मिष्टताभर्यो बोल (२) सुभाषित
सूक्ष्म वि० झीणु, बारीक, अणु जेवु (२) नानु (३) पातळु, नाजुक (४) सुंदर (५) अणीदार, तीक्ष्ण (६) चोकस, खरु (७) चालाक; कुशळ

सूक्ष्मदर्शिन्, सूक्ष्मदृष्टि वि० तीक्ष्ण दृष्टिवाळु (२) बारीक विवेकशक्तिवाळु (३) तीक्ष्ण बुद्धिवाळु
सूक्ष्मदेह पु० लिंगदेह
सूक्ष्मशरीर न० लिंगदेह
सूच् १० उ० बीधवु (२) दर्शाववु (३) प्रगट करी देवु, खुल्लु पाडी देवु (४) सूचववु (५) अभिनय करवो
सूचक वि० दर्शावतु, बतावतु (२) खुल्लु पाडी देतु
सूचन न०, सूचना स्त्री० वीधवु ते (२) दर्शाववु ते (३) प्रगट करी देवु ते (४) अभिनय
सूचि स्त्री० वीधवु ते (२) सोय (३) अणी, अणीदार छेडो (४) एक व्यूहरचना (५) अनुक्रमणिका, विषयोनी यादी, साकळियु
सूचित ('सूच्' नु भू० कृ०) वि० [illegible] (२) [illegible], [illegible], [illegible] (३) [illegible] प्रगट [illegible] – [illegible]
सूचिभेद्य वि० (सोयथी) [illegible] – [illegible]
[illegible] वि० [illegible] (२) [illegible]
[illegible] स्त्री० [illegible]
सूची स्त्री० जुओ 'सूचि'
[illegible] न० [illegible]
सू[illegible] [illegible]
([illegible])
[illegible]
सूतक न० जन्म (२) जन्म [illegible] लागती अशुद्धि
सूतपुत्र पु० [illegible] (२) [illegible]
सूति स्त्री० जन्म, सुवावड, प्रसव, जनन (२) संतति; संतान (३) [illegible], उत्पत्तिस्थान (४) [illegible] [illegible], [illegible]
सूतिका स्त्री० जेणे बाळकने तरतमां जन्म आप्यो होय तेवी स्त्री, सुवावडी
सूतिकागृह न० सुवावडीनो ओरडो
सूती स्त्री० जुओ 'सूति'
सूत्र् १० उ० गूंथवु (२) गोठवु (३) बांधवु (४) सूत्र रूपे टूंकामां रचवु (५) गोठववु, योजना करवी
सूत्र न० दोरो (२) तंतु (३) तार (४) पूतळीना संचालन माटेनो तार के दोरो (५) जनोई (६) प्राचीनशास्त्रकारोए रचेल मूळ संक्षिप्त वाक्य के तेनो ग्रंथ (७) नियम, व्यवस्था (८) कदोरो (९) सूचन, चिह्न

सूत्रकर्मन् न० सुतारीकाम
सूत्रकार पु० सूत्रवाक्यनो रचनार (२) सुतार [जर्जरित
सूत्रदरिद्र वि० ओछा दोरावाळु;
सूत्रधार पु० नाटकनो प्रधान नट जे नादी तेम ज प्रस्तावना भजवे छे (२) सुतार
सूत्रपिटक पु० बौद्ध ग्रथोना त्रण मुख्य सग्रहो - विभागोमानो एक
सूत्रयंत्र न० साळनो काठलो (२) वणवानी साळ [पु० जीवात्मा
सूत्रात्मन् वि० सूत्र–दोरा जेवु (२)
सूद् १ आ०, १० उ० मारवु, ईजा करवी मारी नाखवु [पाप, दोष
सूद पु० कतल, नाश (२) रसोइयो (३)
सूदन वि० नाश करनारु, हणनारु (२) न० नाश, वध
सूदशाला स्त्री० रसोडु
सून वि० जन्मेलु, उत्पन्न थयेलु (२) खीलेलु (३) खाली, शून्य (४) न० प्रसव, प्रसूति (५) फूल
सूननायक पु० कामदेव
सूना स्त्री० वधस्थान, कसाईखानु (२) मारी नाखवु ते, वध
सूनु पु० पुत्र, दीकरो (२) बाळक; सतान (३) पौत्र (४) नानो भाई
सूनृत वि० साचु अने प्रिय (२) मायाळु; ममतावाळु (३) शुभ, मागळिक (४) प्रिय, वहालु (५) न० साची अने प्रिय लागे तेवी वाणी (६) मधुर–प्रिय–विनयी वाणी
सूप पु० राब, सेरवो (२) तेजानो; मसालो (३) रसोइयो
सूपकार पु० रसोइयो
सूय न० सोमरस काढवो ते (२) होम, आहुति, यज्ञ [प्राज्ञ
सूर पु० सूर्य (२) सोम (३) विद्वान;
सूरि पु० सूर्य (२) विद्वान, प्राज्ञ; ऋषि [विद्वान, पडित
सूरिन् वि० डाह्यु, विद्वान (२) पु०

सूर्प पु०, न० सूपडु
सूर्पणखा स्त्री० रावणनी बहेन
सूर्मि(–र्मी) स्त्री० लोखडनी के धातुनी मूर्ति (२) घरनो थभ (३) तेज; ज्वाळा
सूर्य पु० सूरज
सूर्यकांत पु० एक मणि (जेना उपर सूर्यना किरण पडता अग्नि उत्पन्न थाय छे एम मनाय छे)
सूर्यतनया स्त्री० यमुना नदी
सूर्यपाद पु० सूर्यनु किरण
सूर्यपुत्र पु० जुओ 'सूर्यसुत'
सूर्यपुत्री स्त्री० वीजळी (२) यमुना नदी
सूर्यप्रभव वि० सूर्यमाथी ऊतरी आवेलु (जेमके, सूर्यवश)
सूर्यमणि पु० सूर्यकातमणि
सूर्यवार पु० रविवार
सूर्यसारथि पु० अरुण
सूर्यसुत पु० सुग्रीव (२) कर्ण (३) शनिग्रह (४) यम [पुत्री
सूर्या स्त्री० सूर्यनी पत्नी (२) सूर्यनी
सूर्यातप पु० तडको
सूर्यापाय पु० सूर्यास्त
सूर्याय् आ० सूर्यनी पेठे तेजवाळा थवु
सूर्याश्मन् पु० सूर्यकात मणि
सूर्यास्त न० सूर्यनु आथमवु ते
सूर्येंदुसंगम पु० अमास
सूर्योढ पु० साजने वखते आवेलो अतिथि (२) सूर्यास्तनो समय
सूर्योदय पु० सूर्यनु ऊगवु ते
सूर्योपस्थान न० सूर्यनी पूजा
सृ १, ३ प० [सरति, ससर्ति, धावति] जवु, सरवु (२) पासे जवु, पहोचवु (३) धसवु, हुमलो करवो (४) दोडी जवु, सरकी जवु (५) वहेवु –प्रेरक० घोमेथी हाथ फेरववो (वीणा इ० वगाडवा माटे) (२) धकेली काढवु, दूर सरकाववु
सृकाल पु० शियाळ

सृक्क न०, सृक्कणी, सृक्किणी स्त्री० सृक्किन् न० ओठनो खूणो
सृगाल पु० शियाळ
सृज् ६ प० उत्पन्न करवु, सर्जन (२) गतानोत्पत्ति करवी (३) मूकवु, लगाडवु (४) बहार फाडवु; फेंकवु (५) उच्चारवु, -बोलावी वापरवु (६) तजवु, छोडी देवु (७) न्हाखवु, वळगवु (८)४ आ० छोडवु, मोकलवु
सृणि(-णी) स्त्री० अंकुश (हाथीना)
सृत न० पलायन, नासी जवु ते
सृति स्त्री० जवु ते, सरकवु ते (२) रस्तो, मार्ग (३) वर्तन (४) जन्म-जन्मांतरमां रखडवु ते (५) सृष्टि
सृप् १ प० सरकवु, धीमेधीमे चालवु (२) फेलाव | जानवु (उपर)
सृमर वि० जवु ते, गमन (२) पु० मृग
सृष्ट ('सृज्' न भू०कृ०) वि० सर्जायेलु, उत्पन्न थयेलु (२) काढेलु, फेंकेलु (३) छूटु मूकेलु; तजेलु (४) छ करेलु; विदाय करेलु
सृष्टि स्त्री० सरजेलु ते, सर्जन (२) जगतनी उत्पत्ति - रचना (३) प्रकृति, सहजधर्म (४) छोडवु ते (५) आपी देवु ते (६) गतान | हार
सृका स्त्री० मार्ग, रस्तो (२) माळा;
सेक पु० छांटवु ते, पाणी पावु ते(वृक्षने) (२) वीर्य सींचवु ते
सेगव पु० करचलीनु बच्चु
सेचन न० जुओ 'सेक'
सेचनघट पु० पाणी पावानो घडो
सेतु पु० बंध, माटीनो आडो बांध (२) पुल (३) सीमाचिह्न (४) पर्वतनो साकडो घाट (५) सीमा, हद (६) रुकावट, विघ्न (७) मर्यादा स्थापनार नियम (८) प्रणव, ॐ
सेतुबंध पु० बंध के पुल बांधवो ते (२) लंका जवा रामे बंधावेलो पुल (अत्यारे टेकरीओ रूपे देखाडाय छे) (३) पुल

सेदिवस् [illegible]
सेना स्त्री० [illegible] (२) [illegible]
सेनानिवेश [illegible]
सेनानी, सेनापति पु० [illegible] (२) [illegible]
सेनाभि[illegible] [illegible]
सेनामुख [illegible]
सेनाग [illegible]
सेन्य [illegible]
सेव् १ [illegible] (२) [illegible] (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible] (७) [illegible]
सेवक [illegible] (२) [illegible] (३) [illegible] (४) [illegible]
सेवन न०, सेवना स्त्री० चाकरी, सेवा (२) [illegible] (३) [illegible] ते (४) [illegible] (५) [illegible] (६) [illegible] ते
सेवा स्त्री० चाकरी, नोकरी, टहेल (२) भक्ति, पूजा (३) उपभोग; उपयोग (४) [illegible]
सेवाकाकु स्त्री० चाकरी करी वगेरे जवा [illegible] ते (धीमे [illegible] ते)
सेवाकार वि० सेवारूप-सेवाना आकारनु
सेवाधर्म पु० नोकरनु कर्तव्य
सेवित ('सेव्' न भू०कृ०) वि० सेवा-चाकरी करायेलु (२) अनुसरायेलु; आचरायेलु (३) वारंवार जवायेलु, रहेवायेलु

सेवितृ पु० सेवक, नोकर
सेविन् वि० सेवा करनारु (२) अनुसरनारु (३) उपयोग करतु (४) वसतु; रहेतु (५) सभोग करतु (६) –मा आसक्त, –मा रुचिवाळु
सेव्य वि० सेवा –चाकरी –पूजा करवा योग्य (२) वापरवा लायक (३) भोगववा योग्य (४) वसवा योग्य (५) पु० स्वामी, मालिक
सेव्यसेवकौ पु० द्वि० व० स्वामी अने सेवक
सेश्वर वि० ईश्वरने स्वीकारतु; [ईश्वरमां मानतु
सैक वि० एक वधु होय तेवु
सैकत वि० रेतीनु, रेताळ (२) रेताळ जमीनवाळु (३) न० रेतीवाळो किनारो (४) रेताळ किनारावाळो टापु (५) किनारो (६) रेतीनो ढगलो
सैकतिन् वि० रेती भरेलु, रेताळ
सैत्य न० धोळापणु, धोळाश
सैनान्य, सैनापत्य न० सेनापतिपणु, सेनापति पद
सैनिक वि० सेनाने लगतु (२) पु० योद्धो; लडवैयो (३) पहेरेगीर, चोकीदार (४) व्यूहरचनामा गोठवायेलु लश्कर
सैन्य पु० योद्धो (२) पहेरेगीर, चोकीदार (३) न० लश्कर (४) छावणी
सैरध्र पु० चाकर (२) एक मिश्र जातिनो माणस (दस्यु अने अयोगव स्त्रीनो)
सैरंध्री स्त्री० अत पुरनी दासी (२) परघेर काम करनारी स्वतत्र स्त्री (३) द्रौपदी (ज्यारे विराट राजानी राणीनी दासी हती त्यारे)
सैरिभ पु० पाडो
सैरिंध्र पु० जुओ 'सैरध्र'
सैरिंध्री स्त्री० जुओ 'सैरध्री'
सैंदूर वि० सिंदूरथी रगेलु
सैंधव वि० सिंधु देशमा जन्मेलु (२) सिंधु नदी सबधी (३) नदीमा जन्मेलु (४) समुद्रनु (५) पु० सिंधु देशनो घोडो (६) जयद्रथ (सिंधनो राजा) (७) पु०, न० सिंधालूण
सैंह वि० सिंहनु, सिंहने लगतु
सैंहिक, सैंहिकेय पु० राहु
सो ४ प० [स्यति] कापी नाखवु, मारी नाखवु (२) पूरु करवु; अत आणवो
सोच्छ्वास वि० राजी, खुशी
सोढ ('सह्' नु भू० कृ०) वि० सहन करेलु
सोढृ वि० सहन करनारु (२) समर्थ; [शक्तिमान
सोत्क, सोत्कंठ वि० उत्सुक, आतुर (२) खिन्न (३) शोक करतु
सोत्कंठम् अ० उत्कठापूर्वक, आतुरताथी (२) खिन्नपणे
सोत्प्रास वि० अतिशय (२) पु० अट्टहास्य (३) पु०, न० कटाक्षयुक्त अतिशयोक्ति
सोत्प्रासहासिन् वि० कटाक्षथी हसतु
सोत्प्रेक्षम् अ० बेदरकारीथी
सोत्साह वि० उत्साहवाळु, खतीलु
सोत्साहम् अ० उत्साहपूर्वक, खतथी
सोत्सुक वि० खिन्न, दिलगीर, चितातुर (२) उत्सुक, इतेजार
सोत्सेक वि० उद्धत
सोत्सेध वि० उन्नत, ऊंचु
सोदर वि० सहोदर एवु, एक ज माने पेटे जन्मेलु (२) पु० सहोदर भाई
सोदरा स्त्री० सहोदर बहेन
सोदरीय वि० सरखु (२) पु० सगोभाई, सहोदर
सोदर्य वि० जुओ 'सोदर' (२) पु० [सहोदर भाई
सोदर्यस्नेह पु० सहोदर जेवो प्रेम
सोद्योग वि० उद्यमी, खतीलु
सोद्वेग वि० उद्वेग के बीकवाळु
सोपग्रहम् अ० मित्रताभरी रीते, गात पाडवानी रीते

सोपचय वि० नफाकारक
सोपचार वि० विनयी
सोपद्रव वि० आपत्ति के आफतोथी भरेलु
सोपघ वि० कपटी
सोपधान वि० (उत्तम) गुणो युक्त (२) ओशिकावाळु [छेतरीने
सोपधि वि० कपटी (२) अ० कपटथी;
सोपपत्तिक वि० प्रमाण–पुरावावाळु
सोपप्लव वि० आफतथी घेरायेलु (२) शत्रुओथी आक्रांत (३) ग्रस्त, ग्रहण थयु होय तेवु (सूर्य के चद्र)
सोपरोध वि० डखल करायेलु (२) कृपा करायेलु (३) कृपावत
सोपरोधम् अ० महेरबानीथी
सोपसर्ग वि० विघ्नोथी पीडित (२) भूत वगेरेना आवेशयुक्त
सोपस्नेहता स्त्री० भेज, भीनाश
सोपहासम अ० मश्करीमा, मजाकमा
सोपान न० दादर, सीडी (२) पगथियु
सोपानपंक्ति, सोपानपद्धति, सोपानपरंपरा स्त्री०, **सोपानमार्ग** पु० पगथियानी पक्ति, सीडी
सोम पु० सोमवल्ली (जेनो सोमरस यज्ञमा वपराय छे) (२) सोमरस (३) अमृत (४) चद्र (५) (समासने अते) मुख्य, उत्तम ('नृसोम') (६) इडानाडी [पितामह
सोमक पु० पाचाल देशनो राजा, द्रुपदनो
सोमकांत पु० चद्रकात मणि
सोमक्षय पु० अमावास्यानो दिवस (ज्यारे चद्र अदृश्य होय छे)
सोमदैवत न० मृगशीर्ष नक्षत्र
सोमनाथ पु० शिवनु प्रसिद्ध लिंग (प्रभासनु) [सोमयाग करनारो
सोमप, सोमपा पु० सोमरस पीनारो (२)
सोमपीथ, सोमपीथिन् पु० सोमरस पीनारो [पीयणु
सोमबंधु पु० सूर्य (२) सफेद कमळ,
सोमलतिका स्त्री० गळो (२) सोमलता
सोमवंश पु० चद्रवंश (राजाओनो)
सोमवृक्ष पु० जुओ 'सोमसार'
सोमसद् पु० एक प्रकारना पितृओ
सोमसार पु० सफेद खेर
सोमसिद्धांत पु० कापालिकोनो सिद्धात
सोमसुत पु० बुधग्रह [निचोवनार
सोमसुत्वत् वि० रस माटे सोमवल्लीने
सोमोद्भवा स्त्री० नर्मदा नदी
सोर्णभ्रू वि० भमरो वच्चे वाळना गुच्छाळावाळु [मश्करी
सोल्लुंठ पु०, **सोल्लुंठन** न० कटाक्ष,
सोल्लुंठनम्, सोल्लुंठम् अ० कटाक्षमा, मजाकमा; ठट्ठो करीने
सोष्मन् वि० गरम, ऊन
सौकर वि० सूकर–डुक्करने लगतु
सौकर्य न० सहेलापणु; सरळता (२) अमल करी शकाय तेवु होवु ते (३) चतुराई [जुवान वय होवी ते
सौकुमार्य न० नाजुकपणु, कोमळता (२)
सौखप्रसुप्तिक पु० 'ठीक ऊघ्या?' एवु पूछनारो (२) राजाने स्तुति, सगीत इ० थी जगाडनारो चारण
सौखशायनिक पु० 'ठीक ऊघ्या?' एवी खबर पूछनारो
सौखसुप्तिक पु० जुओ 'सौखप्रसुप्तिक'
सौख्य न० सुख, आनद
सौख्यशायनिक, सौख्यशायिक पु० जुओ 'सौखशायनिक' [अनुयायी
सौगत पु० बौद्धधर्मी, 'सुगत'–बुद्धनो
सौगंधिक वि० खुशबोदार; सुवासवाळु (२) पु० अत्तर वेचनारो (३) न० सफेद कमळ (४) नील कमळ
सौगंध्य न० सुगध, सुवास
सौचि, सौचिक पु० दरजी
सौजन्य न० सज्जनता, भलाई (२) उदारता (३) मायाळुता
सौति पु० कर्ण (२) एक प्रसिद्ध ऋषि (पुराणी)

सौत्य न० सारथीपणु
सौत्रामणी स्त्री० पूर्व दिशा (२) एक यज्ञ (जेमा दारू वपराय छे)
सौदर्य न० भ्रातृभाव
सौदामनी, सौदामिनी, सौदाम्नी स्त्री० वीजळी (२) एक जातनी सर्पाकार वीजळी (३) इद्रना हाथीनी मादा
सौध वि० अमृत सबधी (२) चूनो लगावेलु, धोळेलु (३) न० धोळेलु मकान, छोयेलु मोटु मकान, महेल (४) रूपु
सौधकार पुं० धोळनारो (२) कडियो
सौधोत्संग पु० महेलनी अगासी
सौन पु० कसाई; खाटकी
सौनंद न० बळरामनु मुशळ
सौनंदिन् पु० बळराम
सौनिक पु० खाटकी, कसाई
सौपर्ण वि० गरुडने लगतु, गरुडनु
सौपाक पु० एक मिश्र जाति (चडाळथी थती अने चडाळ समान धधो करती)
सौप्तिक न० ऊघ (२) रात्रिनो – राते करेलो हुमलो, ऊघता माणसो उपर करेलो हुमलो [(युद्धमा)
सौप्तिकवध पु० सूतेला माणसनो सहार
सौबल पु० शकुनि [धृतराष्ट्रनी पत्नी
सौबली, सौबलेयी स्त्री० गाधारी;
सौभ न० हरिश्चद्रनु शहेर (आकाशमा गमन करतु) (२) शाल्वोनु शहेर
सौभद्र, सौभद्रेय पु० अभिमन्यु
सौभागिनेय पु० मानीती स्त्रीनो पुत्र
सौभाग्य न० सद्भाग्य, भाग्यशाळीपणु (खास करीने स्त्री–पुरुषने एक बीजा प्रत्येनो प्रेम अने वफादारी होवा ते) (२) मागळिकता, कल्याणकारी होवापणु (३) सौंदर्य, भव्यता (४) सधवापणु (५) अभिनदन, शुभेच्छा दर्शाववी ते
सौभाग्यवती स्त्री० सधवा स्त्री [नारु
सौभाग्यविलोपिन् वि० सौंदर्यने बगाड-
सौभिक्ष न० सुकाळ
सौभ्रात्र न० बधुप्रेम, भ्रातृभाव
सौमकि पु० द्रुपद राजा [पुत्र)
सौमदत्ति पु० भूरिश्रवा (सोमदत्तनो
सौमनस वि० मनने प्रसन्न करे तेवु (२) फूल सबधी (३) न० खुशी; सतोष (४) भलाई
सौमनस्य न० खुशी, प्रसन्नता (२) फूल
सौमित्र, सौमित्रि पु० लक्ष्मण (सुमित्रानो पुत्र)
सौमुख्य न० प्रसन्नता, मधुर देखाव
सौमेरव, सौमेरुक न० सोनु
सौम्य वि० चद्रने लगतु (२) सोमरसना गुणधर्मवाळु (३) सुदर; मोहक (४) कोमळ, मृदु (५) शुभ, मागलिक (६) पु० बुधग्रह [पु० सूर्यपूजक
सौर वि० सूर्यने लगतु, सूर्य सबधी (२)
सौरभ वि० सुगधीदार (२) न० सुगधी
सौरभेय वि० सुगधीदार
सौरभेयी स्त्री० सुरभि गायनी पुत्री
सौरस्य न० सुगधी
सौरसैंधव वि० गगानदीनु [कारभार
सौराज्य न० सारु राज्य, सारो राज्य-
सौरि पु० शनिनो ग्रह
सौर्य वि० सूर्य सबधी [होवापणु
सौलक्षण्य न० शुभ लक्षणो–चिह्नोवाळा
सौवर्ण वि० सोनानु (२) न० सोनु
सौवर्णहर्म्य न० रूपानो महेल [सोनी
सौवर्णिक वि० सोनानु बनेलु (२) पु०
सौविद, सौविदल्ल पु० अत.पुरनो रक्षक
सौवीर पु० ते नामनो एक देश
सौवीरक पु० सुवीर देशनो वतनी (२) जयद्रथ
सौवीरांजन न० काळो सुरमो
सौवेल वि० त्रिकूट पर्वत सबधी
सौशाम्य न० समाधान, सुलेह
सौशील्य न० सुशीलपणु
सौष्ठव न० उत्तमपणु, घाटीलापणु; सौंदर्य (२) कुशळता, प्रवीणता (३) वधारे होवापणु (४) चपळता

सौस्थ्येन अ० सुखेथी, खुशीथी
सौस्नातिक पु० 'स्नानादि ठीक थयु ने?' एम पूछनारो
सौहार्द पु० मित्रनो पुत्र (२) न० मैत्री, प्रेमभाव
सौहार्द्य न० मैत्री, प्रेमभाव
सौहित्य न० तृप्ति, पूरतु होवानो संतोष (२) पूर्णता, समाप्ति (३) मित्रता, मायाळुता ['सौहार्द्य'
सौहृद, सौहृदय, सौहृद्य व० जुओ
सौंदर्य न० सुंदरता
स्कब्ध ('स्कभ्'नु भू० कृ०) वि० आधार आपेलु, टेको आपेलु (२) रोकेलु; अटकावेलु
स्कद् १ प० कूदवु (२) ऊंचे कूदवु–, चडवु (३) नीचे पडवु (४) नाश पामवु –प्रेरक० रेडवु, ढोळवु (२) वाकात राखवु; उपेक्षा करवी
स्कंद पु० कूदवु ते (२) कार्तिकेय (३) नदीनो किनारो
स्कंदपुत्र पु० घरफाडु, चोर
स्कंध पु० खभो (२) शरीर (३) थड (४) मोटी डाळी (५) ज्ञानना शाखा (६) प्रकरण (७) सैन्यनो विभाग (८) समूह, टूकडी
स्कंधचाप पु० कावड
स्कंधदेश पु० खभो (२) हाथी उपर ज्या महावत बेसे छे ते भाग (३) झाडनु थड [वळद
स्कंधवाह पु० भार वहन करवा केळवेलो
स्कंधावार पु० सैन्य, टुकडी (२) राजधानी, राजमहेल (३) छावणी
स्कंभ् १ आ०, ५, ९ प० रोकवु, निग्रह करवो (२) टेको आपवो
स्कभ पु० आधार, टेको
स्कु ५, ९ उ० कूदवु, ठेकडो भरवो (२) ऊंचकवु (३) छाई देवु, ढांकी देवु
स्कुंभ् ५, ९ प० रोकवु, अटकाववु
स्खल् १ प० ठोकर खावी, लपसवुं (२) लथडियु खावु; आमतेम डोलवु (३) भंग करवो (आज्ञानो) (४) स्खलन पामवु, भ्रष्ट थवु (५) भूल करवी (६) तोतडावु (७) निष्फळ जवु; असर न करवी (८) झमवु; झरवु
स्खलन न० ठोकर खावी ते, लपसवु ते; गबडवु ते (२) लथडियु खावु ते (३) भ्रष्ट थवु ते (सन्मार्गेथी) (४) भूल, चूक (५) निष्फळता (६) तोतडावु ते (७) झमवु – झरवु ते (८) अथडावु ते; भटकवु ते (९) वीर्य स्खलित थवु ते
स्खलित ('स्खल्'नु भू० कृ०) वि० ठोकर खावेलु; लथडेलु (२) गबडी पडेलु (३) अस्थिर; कंपतु; डोलतु (४) तोतडातु (५) भूल करतु (६) न० भूल (७) लथडियु (८) दोष; पाप
स्खलितसुभगम् अ० मनोहर रीते उछळतु के अफळातु वहे तेम
स्तन् १ प०, १० उ० अवाज करवो; रणकार करवो (२) निसासो नाखवो (३) मोटेथी गर्जवु
स्तन पु० थान; धाई (२) स्तननी दींटी (३) आउ, अडण (पशुनी मादानु)
स्तनकुड्मल न० (कळी जेवो) स्तन
स्तनपान पु० धाववु ते
स्तनभर पु० स्तननो भार
स्तनयित्नु पु० गर्जना; मेघगर्जना (२) वादळु (३) वीजळी
स्तनवेपथु पु० स्तननु ऊछळवु ते
स्तनंधय वि० धावतु, धावणु (२) पु० धावणु बाळक [जगा
स्तनांतर न० हृदय (२) बे स्तन वच्चेनी
स्तनित वि० अवाज करतु, ध्वनियुक्त (२) गर्जना करतु (३) न० मेघगर्जना; कडाको (४) धनुष्यनी पणछनो टंकारव
स्तनितसुभगम् अ० घेरो रव करतु होवाथी मधुर लागतु होय तेम

स्तन्य न० मातानु दूध, दूध
स्तन्यत्याग पु० दूध धावता बध थवु ते
स्तबक पु० झूमखो, गुच्छो (फूलनो) (२) मोरनु पीछु (३) पुस्तकनो अध्याय के विभाग
स्तब्ध ('स्तभ्' नु भू० कृ०) वि० अटकावेलु, रुकावट करेलु (२) अक्कड; स्थिर (३) गति के हलन-चलन विनानु (४) हठीलु, जक्की (५) कठोर (६) निष्क्रिय
स्तब्धरोमन् पु० डुक्कर, वराह
स्तब्धलोचन वि० अनिमेष आखवाळु (जेम के देव)
स्तभ् १ आ० [स्तभते] जुओ 'स्तभ्'
स्तर वि० फेलातु, बिछातु, ढाकतु (२) पु० थर, पड (३) पथारी
स्तव पु० वखाण, स्तुति
स्तवक वि० प्रशसा—स्तुति करनारु (२) पु० भाट, चारण (३) प्रशसा, स्तुति (४) स्तवक, गुच्छो (५) ग्रथनु प्रकरण के खड (६) समुदाय
स्तवन न० स्तुति, प्रशसा
स्तंब पु० भारो (घास इ० नो) (२) पूळो (कडब इ० नो) (३) झाडवु (४) कठण थड न होय तेवो छोड के झाडवु (५) हाथी बधाय छे ते थाभलो
स्तंबकरिता स्त्री० खूब थवु - नीपजवु ते (पूळा के भारीओ बाधवा पडे तेटलु)
स्तबपुर न० एक शहेर (ताम्रलिप्त)
स्तंबेरम पु० हाथी
स्तंभ् १ आ०, ५, ९ प० रोकवु, दबाववु (२) अक्कड करी देवु, जूठु पाडी देवु (३) टेको आपवो (४) अक्कड थई जवु (५) गर्विष्ठ—उद्धत थवु (६) व्यापवु, पथरावु
स्तभ पु० अक्कडपणु, स्थिरता (२) जडता, जूठा पडी जवु ते (३) रुकावट; डखल (४) दबाववु—कचरवु—निग्रह करवो ते (५) टेको (६) थांभलो (७) जडता, मूर्खता
स्तंभकरण न० अवरोधनु कारण
स्तंभन न० रुकावट, प्रतिबध, निग्रह (२) अकडाई जवु—जूठु पडी जवु ते (३) शात-स्थिर करवु ते (४) दृढ करवु ते (५) टेकववु ते
स्तंभित वि० रोकायेलु, विघ्न करायेलु (२) जड बनावायेलु; जूठु पडायेलु (३) शात-स्वस्थ करायेलु
स्तंभितबाष्पवृत्ति वि० आसु आवता रोक्या होय तेवु
स्ताव पु० स्तुति, वखाण
स्तांबेरम वि० हाथीनु
स्तिम् ४ प० भीजावु (२) स्थिर थई जवु, हलनचलन विनाना थई जवु
स्तिमित वि० भीनु; भेजवाळु (२) शात; खळभळाट वगरनु (३) स्थिर; गति विनानु (४) बध, वासेलु (५) जड—अक्कड थई गयेलु के करायेलु
स्तीम् ४ प० जुओ 'स्तिम्'
स्तु २ उ० वखाणवु (२) स्तुति करवी, सूक्तथी पूजा करवी
स्तुत ('स्तु' नु भू० कृ०) वि० वखाणेलु, स्तुति करेलु
स्तुति स्त्री० वखाण, प्रशसा (२) स्तोत्र, सूक्त (३) खुशामत, खोटी प्रशसा
स्तुतिपाठक पु० वखाण करनारो; स्तुति गानारो, भाट, चारण
स्तुत्य वि० वखाणवा लायक, स्तुतिपात्र
स्तूप पु० ढगलो, टेकरो (२) बुद्धना अवशेषो उपर करेलु घूमट जेवु बाधकाम (३) चिता (४) बळ, सामर्थ्य
स्तृ ५ उ० पाथरवु (२) विस्तारवु (३) वीखरावु (४) पहेरवु, ढाकवु
स्तृह् ६ प० मारवु; ईजा करवी
स्तॄ ९ उ० जुओ 'स्तृ'
स्तृह् ६ प० जुओ 'स्तृह्'

स्तेन पु० चोर (२) न० चोरी करवी ते
स्तेय न० चोरी; लूट (२) चोरायेली वस्तु (३) गुप्त वात, खानगी वात
स्तै १ प० पहेरवु, शणगारवु
स्तैमित्य न० (अंगोनी) जडता; अक्काई जवु ते; जूठा पडी जवु ते
स्तोक वि० थोडु; अल्प (२) टूकु (३) तुच्छ; हलकु (४) पु० टीपु, बहु थोडु ते
स्तोकक पु० चातक [वळेलु
स्तोकनम्र वि० थोडुक नमेलु, जरा
स्तोकम् अ० थोडु – अल्प होय तेम
स्तोतव्य वि० वखाणवा लायक; स्तुति करवा लायक
स्तोतृ पु० वखाण करनारो, स्तुति करनारो (२) चारण; बंदीजन
स्तोत्र न० वखाण (२) स्तुतिनु सूक्त
स्तोभ पु० प्रतिबंध, अवरोध (२) थोभवु ते (३) अनादर (४) सूक्त, स्तोत्र
स्तोम पु० स्तुति, स्तोत्र (२) यज्ञ, होम (३) सोमनो होम (४) समूह; समुदाय (५) ढगलो, जथो
स्त्यान वि० ढगलो करेलु; एकठु करेलु (२) स्थूल, भारे; जाडु (३) लीसु, चीकणु (४) न० कद के जथामा वधवु ते, भारे – जाडु एवु ते (५) आळस, सुस्ती (६) पडघो; अवाज
स्त्यै १ उ० एकठु थवु, ढगलो थवो (२) पथरावु; फेलावु
स्त्री स्त्री० नारी (२) कोई पण प्राणीनी मादा (३) पत्नी (४) नारी जाति (व्या०)
स्त्रीजित पु० स्त्रीनो तावेदार – तेना हुकम प्रमाणे वर्तनारो पति
स्त्रीधर्मिणी स्त्री० रजस्वला
स्त्रीपर वि० कामुक; व्यभिचारी
स्त्रीपुंसौ पु० द्वि० व० पति अने पत्नी (२) नर अने मादा
स्त्रीपूर्व पु० जुओ 'स्त्रीजित'
स्त्रीबुद्धि स्त्री० स्त्रीनी बुद्धि के सलाह (२) स्त्रीनी सलाह
स्त्रीयंत्र न० स्त्री रूपी यंत्र
स्त्रीरत्न न० श्रेष्ठ स्त्री (२) लक्ष्मी
स्त्रीलिंग न० नारी जाति (व्या०) (२) स्त्रीपणानु कोई पण चिह्न (स्तन इ०) (३) स्त्रीनु गुह्यांग – योनि
स्त्रीविधेय पु० स्त्रीना उपर सत्ता चलावतां होय तेवो पुरुष
स्त्रीसंग पु० स्त्रीमा आसक्ति (२) मैथुन
स्त्रीसंस्थान वि० स्त्रीनी आकृतिवाळु; स्त्रीना स्वरूपवाळु
स्त्रीसेवा स्त्री० स्त्रीमा आसक्ति
स्त्रैण वि० स्त्री संबंधी, स्त्रीनु; स्त्रीने लगतु (२) स्त्रीने उचित (३) स्त्रीमा आसक्त एवु (४) न० स्त्रीपणु (५) स्त्री जाति (६) स्त्रीओनो समुदाय
स्थ वि० (समासने अंते) रहेतु; होतु (जेमके, 'तटस्थ') (२) स्थावर
स्थग् १ प० ढांकवु, छुपाववु (२) व्यापवु, टाळवु, भरी काढवु
स्थगर पु० 'पुत्रजीवक' नामनो छोड
स्थगिका स्त्री० वेश्या, गणिका (२) तांबुलवाहकनु पद (३) पाननो डबो
स्थगित वि० ढांकेलु; छुपावेलु (२) बंध करेलु, वासेलु (३) रोकेलु; अटकावेलु
स्थगु पु० खूंध
स्थपति वि० मुख्य (२) पु० अधिपति, राजा (३) शिल्पी (४) सुतार (५) सारथि (६) अंतःपुरनो रक्षक
स्थपत्य पु० अंतःपुरनो कंचुकी
स्थपुट वि० आपद्ग्रस्त (२) ऊचु नीचु, विषम [साकडा भागमा आवेलु
स्थपुटगत वि० विषम भागमा आवेलु,
स्थल न० सूकी जमीन (२) किनारो (३) जमीन (४) स्थळ; स्थान (५) ऊंची जमीन, टेकरो (६) विवाद के चर्चानो विषय के प्रसंग (७) पुस्तकनो भाग (८) तंबू
स्थलकमल न०, **स्थलकमलिनी** स्त्री०

जमीन उपर ऊगतु कमळ (दिवसना प्रकाशमा ऊघडे छे)

स्थलचर वि० भूमि उपर चालनारु

स्थलपद्म न० जुओ 'स्थलकमल'

स्थलवर्त्मन् न० जमीनना मार्ग (जळ-मार्गथी ऊलटु) [लडाई

स्थलविग्रह पु० सरखी जमीन उपरनी

स्थलस्थ वि० सूकी जमीन उपर ऊभेलु

स्थली स्त्री० सूकी जमीन, कठण जमीन (२) जमीननो कुदरती भाग (जेम के वननो) (३) जुओ 'स्थलीदेवता'

स्थलीदेवता स्त्री० ते स्थळनी अधिष्ठाता देवता [सूनारु

स्थलीशायिन् वि० खुल्ली जमीन उपर

स्थलेशय वि० सूकी जमीन उपर सूनारु

स्थविर वि० निश्चल, स्थिर (२) वृद्ध, प्राचीन (३) पु० वृद्ध पुरुष, डोसो (४) भिखारी [भव्यता-गभीरतावाळु

स्थविरद्युति वि० वृद्ध के वडीलनी

स्थविरा स्त्री० डोसी

स्थविष्ठ वि० अत्यत स्थूल, मोटु ('स्थूल'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)

स्थवीयस् वि० वधारे स्थूल ('स्थूल'नु तुलनात्मक रूप)

स्थंडिल न० जमीननो टुकडो (यज्ञ माटे सरखो करेलो), यज्ञ माटेनी भूमि (२) उज्जड खेतर (३) ढेफानो ढगलो (४) हद, सरहद (५) स्थळ, जगा (जेम के, घर आगळनी)

स्थंडिलेशय पु० यज्ञनी भूमि उपर खुल्लामा सूनार तपस्वी

स्था १ प० [तिष्ठति] ऊभु रहेवु (२) रहेवु, वसवु (३) बाकी रहेवु (४) राह जोवी (५) अटकवु, थोभवु (६) वाजुए रहेवु; मनमा राखवु (७) होवु (८) अनुसरवु, आज्ञामा रहेवु (९) रोकावु, निग्रह थवो (१०) जीववु (११) आधार राखवो (१२) मददमा-पडखे ऊभा रहेवु (१३) आचरवु; अमल करवो (१४) १ आ० -नी सलाह मानवी (१५) जात समर्पवी (सभोग माटे)

-प्रेरक० परणाववु (२) दीक्षा आपवी, उपदेश आपवो (३) टकी रहे तेम करवु

स्थाणु वि० निश्चल; स्थिर, स्थावर (२) पु० शकर (३) थाभलो (४) खीटी (५) थूणकु, ठूठु, थडियु

स्थाणुभूत वि० स्थिर बनेलु, गतिहीन बनेलु (झाडना थूणका पेठे)

स्थातृ वि० ऊभु रहेलु, चालतु नहि तेवु

स्थान न० ऊभा रहेवु ते; चालु रहेवु ते, वसवु ते (२) चालवु-खसवु नहि ते (३) स्थिति, दशा (४) स्थळ (५) पद, होद्दो (६) मोभो, दरज्जो (७) रहेठाण, घर (८) प्रवेश (९) शहेर (१०) विषय, हेतु (११) प्रसग, कारण (१२) योग्य स्थळ (१३) वर्णो-च्चारनु स्थान (उर, कठ, शिर, जिह्वा-मूल, दात, नासिका, होठ, तालु - ए आठ) (१४) तीर्थस्थान (१५) स्थिर दशा, वचली दशा (१६) आश्रम (जीवननो) (१७) भूमि (१८) पोषण

स्थानक न० स्थिति, प्रसग, विशिष्ट प्रसग (२) शहेर (३) पद, होद्दो

स्थानकुटिकासन न० गृहत्याग

स्थानचिंतक पु० सिपाईओना मुकाम अने खावापीवा वगेरेनो वदोबस्त राखनारो अमलदार

स्थानभ्रष्ट वि० नोकरी के होद्दामाथी बरतरफ करेलु (२) उचित स्थानमाथी खसेडायेलु

स्थानिक वि० ते स्थानने लगतु

स्थानिवद्भाव पु० मूळ स्वरूप जेवी स्थिति

स्थाने अ० उचित होय तेम, योग्य रीते

(२)–ने बदले (३) –ने कारणे (४) –नी जेम [नारु, नियममा राखतु
स्थापक वि० स्थापनारु; स्थापित कर-
स्थापत्य पु० अंत पुरनो रक्षक (२) न० मकान बांधवा ते, शिल्प
स्थापन न० स्थापवु ते, स्थिर करवु ते; ऊभु करवु ते [संचालन करवु ते
स्थापना स्त्री० स्थापवु ते(२)गोठववु ते,
स्थापित वि० स्थिर करेलु; मूकेलु (२) ऊभु करेलु, पायो नाखेलु (३) चालु करेलु, नियत करेलु (४) नीमेलु (५) परणावेलु
स्थाप्य वि० मूकवानु; सोंपवानु (२) स्थापना करवानु (३) नियुक्त करवानु (४) बंध करवानु; पूरवानु (५) पु० देवनी मूर्ति (६) न० थापण [हणहणाट
स्थामन् न० बळ; पराक्रम (२) घोडानो
स्थायिन् वि० रहेतु, वसेलु, ऊभेलु (समासने अंते) (२) कायम रहेनारु, टकाउ (३) निवास करतु; रहेतु (४) पु० जुओ 'स्थायिभाव'
स्थायिभाव पु० चित्तनी स्थिर–कायमी लागणी (आठ छे रति, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा, विस्मय)
स्थायीभू १ प० स्थिर थवु; कायमी थवु
स्थायुक वि० टकी रहे तेवु, कायमी (२) स्थिर, स्थावर (३) रहेलु, वसेलु
स्थाल न० थाळी, रकाबी (२) रांधवानु वासण, तपेली [कडाई
स्थाली स्त्री० रांधवानु वासण, तपेली;
स्थालीपुलाक पु० तपेलीमानो भात
स्थावर वि० एक जगाए स्थिर रहेनारु, खसे नही तेवु ('जंगम' थी ऊलटु) (२) जड, निष्क्रिय, धीमु (३) स्थापित थयेलु (४) पु० पर्वत (५) न० कोई पण जड वस्तु (६) स्थूल शरीर, भौतिक शरीर
स्थावरजंगम न० खसे तेवी अने न खसे तेवी मिलकत (२) सजीव अने निर्जीव वस्तुओ
स्थावरात्मन् वि० स्थावर स्वरूपवाळु
स्थाविर न० वृद्धावस्था
स्थासक पु० सुगंधी पदार्थथी शरीरने लेप करवो ते (२) पाणी के प्रवाहीनो परपोटो [स्वभाववाळु (२) कायमी
स्थास्नु वि० स्थिर-निश्चळ रहे तेवा
स्थित ('स्था'नु भू० कृ०) वि० ऊभेलु; रहेलु (२) ऊभु रहेलु (३) ऊभु थयेलु (४) होत, रहेलु (५) थयेलु, बनेलु (६) स्थाने नियुक्त थयेलु (७) अनुसरतु, अनुकूळ रहेलु (८) स्थिर थयेलु; आसक्त (९) दृढ; स्थिर (१०) निश्चयवाळु (११) प्रमाणिक; नीतिमान (१२) न० ऊभा रहेवानी रीत, (१३) योग्य मार्ग उद्यम
स्थितधी, स्थितप्रज्ञ वि० स्थिर बुद्धिवाळु
स्थितसंकेत, स्थितसंविद् वि० करार के वचननु पालन करनार
स्थिति स्त्री० रहेवु – ऊभा रहेवु – बनवु ते (२) एक स्थितिमा स्थिर रहेवु ते (३) दृढ – कायम रहेवु ते (४) दशा, अवस्था (५) स्वभाव; प्रकृति (६) हमेश चालु रहेवु ते (७) नीतिमर्यादानु पालन, सद्वर्तनना मार्गने अनुसरवु ते (८) शासन; शिस्त (९) पद, मोभो (१०) पोषण; निर्वाह (११) मर्यादा, नियम (१२) विचार; गणना
स्थितिज्ञ वि० नीतिमर्यादा जाणनारु
स्थितिपद न० योग्य मार्ग
स्थितिभिद् वि० नीतिमर्यादानु उल्लंघन करनारु
स्थितिमत् वि० दृढ, स्थिर (२) कायमी (३) मर्यादामा रहेतु (४) नीतिमर्यादाने पाळतु [मार्ग
स्थितिमार्ग पु० (मनने) स्थिर करवानो
स्थितिस्थापक वि० पूर्व स्थितिमा पाछु आवी शके तेवु
स्थिर वि० टकी रहे तेवु; कायमी (२)

अचळ; स्थावर, खसे नहीं तेवु (३) कठोर; निर्दय [उद्यमी
स्थिरकार्य वि० कर्मने वळगी रहेतु;
स्थिरता स्त्री० दृढता; मननी मजबूताई
स्थिरधी वि० दृढ मननु, निश्चयी
स्थिरप्रतिज्ञ वि० हठीलु; जक्की (२) वचन पाळनारु [मक्कम, हठीलु
स्थिरप्रतिबंध वि० विरोध करवामा
स्थिरसंगर वि० सत्यवचनी, साचु
स्थिरात्मन् वि० दृढ मनवाळु, निश्चयी
स्थिरापाय वि० सतत क्षीण थतु एवु
स्थिरीकृ ८ उ० दृढ करवु (२) आश्वासन आपवु (३) समर्थन करवु
स्थूणा स्त्री० घरनो थाभलो (२) स्तभ, थाभलो (३) एरण
स्थूणाकर्ण पु० रुद्रनु एक स्वरूप
स्थूरीपृष्ठ पु० जेने हजी नाथ्यो के केळव्यो नथी एवो घोडो
स्थूल वि० मोटु; मोटा कदनु (२) जाडु (३) जोरवाळु (४) जड बुद्धिनु, मूर्ख (५) खरबचडु, कर्कश (६) न० तवू
स्थूलता स्त्री० मोटापणु, जाडापणु (२) जडता; मूर्खपणु
स्थूलनासिक पु० भूड; डुक्कर
स्थूललक्ष, स्थूललक्ष्य वि० दानवीर; उदार (२) डाह्यु, विद्वान
स्थूलशरीर न० पचभूतात्मक देह (लिंग–सूक्ष्म देहथी ऊलटु)
स्थूलहस्त पु० हाथीनी सूढ
स्थूलेच्छ वि० अमर्याद कामनाओवाळु
स्थूलोच्चय पु० पर्वतनी गवडी पडेली मोटी शिला (२) हाथीनी मध्यम गति
स्थेमन् पु० स्थिरता; दृढता, मक्कमता
स्थेय वि० मूकवानु (२) नक्की करवानु (३) पु० बेनी तकरारनो निवेडो लाववा चूटेलो मध्यस्थी
स्थेयस् वि० वधारे मक्कम ('स्थिर'न तुलनात्मक रूप)
स्थेष्ठ वि० खूब मक्कम ('स्थिर'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)
स्थैर्य न० स्थिरता, दृढपणु (२) मननी दृढता; निश्चयीपणु (३) धीरज (४) कठोरपणु, घनता (५) जितेंद्रियत्व
स्थैर्यज वि० स्थावर
स्नपन न० स्नान करवु ते
स्ना २ प० नाहवु; स्नान करवु (२) गुरुने त्याथी पाछा फरती वखते स्नाननो विधि करवो
स्नात ('स्ना' नु भू० कृ०) वि० नाहेलु (२) भणेलु, विद्वान (३) पु० जेनो विद्याभ्यास पूरो थयो छे ते
स्नातक पु० ब्रह्मचर्यव्रत परिपूर्ण करेलो ब्राह्मण (२) गुरुने घेरथी आवी गृहस्थाश्रममा प्रवेशेलो ब्राह्मण (३) व्रतने कारणे भिक्षुपणु करतो ब्राह्मण (४) कोई पण गृहस्थाश्रमी
स्नान न० नाहवु ते, डूबकु मारवु ते (२) मूर्तिने नवराववानो विधि (३) नाहवामा वपरायेलु जे काई ते (४) धोई काढवु ते, साफ करवु ते
स्नानगृह न० नाहवानो ओरडो
स्नानतृण न० दर्भ
स्नानवस्त्र न० जे वस्त्र पहेरीने नाह्या होईए ते [वस्त्र
स्नानशाटी स्त्री० नाहती वखते वीटवानु
स्नानीय वि० स्नान माटेनु, स्नान वखते पहेरवानु (२) न० स्नानोपयोगी पाणी के चदन – चूर्ण वगेरे सामग्री
स्नापक पु० स्नान करावनार के स्नान माटे पाणी लावनार नोकर
स्नापित वि० नवरावेलु [दोरी
स्नायु पु० मासनी पेशी (२) धनुषनी
स्निग्ध ('स्निह्' नु भू० कृ०) वि० स्नेहवाळु, प्रेमाळ (२) तेलवाळु, चीकणु (३) चोटी जाय तेवु (४) चळकतु (५) माया-ममताभर्यु (६) सुदर, मनोहर (७) गाढु (८) पु० मित्र (९) न० तेल

स्निग्धजन पु० स्नेही माणस
स्निह् ४ प० स्नेह करवो, ममता होवी (२)चीकणु होवु, चीकाशवाळा होवु –प्रेरक० तेल चोपडवु, तेल ऊजवु
स्नु २ प० टपकवु, झमवु (२)वहेवु
स्नु पु०, न० उच्च प्रदेश (२)शिखर, टोच (प्रथम पाच रूप नथी अने द्वितीया बहुवचनथी 'सानु'ने बदले विकल्पे आना रूप मुकाय छे)
स्नुषा स्त्री० पुत्रवधू
स्नेह पु० प्रेम, ममता (२)चीकणापणु (३)भेज, भीनाश (४)चरबी, तेल वगेरे स्निग्ध पदार्थ
स्नेहप्रवृत्ति स्त्री० स्नेह करवो ते
स्नेहप्रसर, स्नेहप्रस्राव पु० स्नेह प्रगट थवो – रेलवो ते
स्नेहव्यक्ति स्त्री० स्नेह प्रगट थवो ते
स्नेहांकन न० स्नेहनु चिह्न–लक्षण
स्पर्ध् १ आ० हरीफाई करवी; सरसाई करवी (२)पडकार करवो
स्पर्धा स्त्री० चडसाचडसी, सरसाई (२)अदेखाई (३)पडकार
स्पर्धित वि० सरसाई करतु होय तेवु (२)पडकार कर्यो होय तेवु
स्पर्धिन् वि० हरीफाई करतु, सरसाई करतु (२)अदेखु (३)अभिमानी
स्पर्ध्य वि० इच्छा करवा योग्य (२) कीमती [भेटवु
स्पर्श् १० आ० अडकवु (२)जोडावु (३)
स्पर्श पु० अकडवु ते (२)सपर्क, सयोग (३)लागणी, वेदना (४)त्वच् इद्रियनो गुण (५)'क्'थी 'म्' सुधीनो कोई पण व्यजन (६)सभोग
स्पर्शमणि पु० पारसमणि
स्पर्शयज्ञ पु० होमवानी वस्तुनो मात्र स्पर्श करीने करातो यज्ञ
स्पर्शरसिक वि० विषयी, कामुक
स्पर्शवत् वि० मृदु, कोमळ (२)स्पर्शथी जेनु ज्ञान थई शके तेवु
स्पर्शानुकूल वि० स्पर्श करतां आनद आपे तेवु
स्पर्शित वि० अर्पण करेलु
स्पश पु० जासूस, चर (२)युद्ध; लडाई
स्पष्ट वि० चोख्खु देखी शकाय तेवु; प्रगट (२) साचु; खरु (३)प्रफुल्लित; खीलेलु [तेवु
स्पष्टाक्षर वि० शब्दो स्पष्ट सभळाय
स्पद् १ आ० फरकवु, धबकवु (२) ध्रूजवु, कपवु (३)जवु, फरवु
स्पंद पु० धबकवु ते, फरकवु ते (२) हलनचलन; गति
स्पदन न० फरकवु ते, कपवु ते (२) कप, ध्रूजारो (३) झडपी गति
स्पंदित ('स्पद्' नु भू० कृ०) वि० फरकेलु; कपेलु (२) गयेलु (३) न० फरकवु ते (४)क्रिया, गति (मननी)
स्पृश् वि० (समासने अते) स्पर्श करतु, अडकतु, वीधतु, असर करतु (उदा० 'मर्मस्पृग्')
स्पृश् ६ प० अडकवु, स्पर्श करवो (२) हाथ फेरववो (३) चोटवु, वळगवु (४) पाणी छाटवु, पाणीथी धोवु (५) पहोचवु (६) पामवु (७) स्थिति–दशा पामवी (८)असर करवी (९)उल्लेखवु
–कर्मणि० अपवित्र थवु, दूषित थवु
–प्रेरक० अर्पवु, बक्षवु
स्पृश्य वि० स्पर्शेंद्रियथी जणाय तेवु (२) कबजामा लेवा योग्य
स्पृष्ट ('स्पृश्नु भू० कृ०)वि० स्पर्श करायेलु (२) स्पर्शतु, सबद्ध (३)पहोचतु (४) असर पामेलु, –थी ग्रस्त (५) अपवित्र थयेलु, दूषित थयेलु
स्पृष्टक न० एक प्रकारनु हळवु आलिगन (पासे थईने जता जता करेलु)
स्पृष्टि, स्पृष्टिका स्त्री० स्पर्श, अडकवु ते
स्पृह् १० उ० इच्छवु, स्पृहा करवी; झखवु (२) अदेखाई करवी

स्पृहणीय वि० स्पृहा – कामना करवा योग्य (२) अदेखाई थाय तेवु
स्पृहयालु वि० उत्सुक, आतुर
स्पृहा स्त्री० इच्छा, आतुरता, झखना
स्प्रष्टव्य वि० स्पर्श करवा योग्य (२) न० स्पर्श, लागणी
स्फटिक पु० एक जातनो सफेद कीमती पथ्थर के रत्न
स्फटिका स्त्री० फटकडी
स्फटिकाचल पु० मेरु पर्वत
स्फटिकाद्रि पु० कैलास पर्वत
स्फटित वि० फाटेलु, फाडेलु
स्फर् ६ प० 'स्फुर्' जुओ
स्फल् १ प० ध्रूजवु, फरकवु (२) १० उ० हलाववु [प्रकाशित
स्फाटिक वि० स्फटिक जेवु उज्ज्वळ–
स्फाय् १ आ० जाडा थवु, मोटा थवु (२) ऊचु थवु, वधवु
–प्रेरक० वधे तेम करवु, वधारवु
स्फार वि० विस्तीर्ण, मोटु (२) पुष्कळ, विपुल (३) मोटु (अवाज)
स्फारित वि० पहोळु थयेलु के करेलु
स्फारीभू १ प० वधवु, विस्तरवु
स्फालन न० कपवु ते (२) हलाववु ते (३) घसवु ते, घर्षण (४) थाबडवु ते
स्फिच् स्त्री० नितब, कूलो
स्फिर वि० पुष्कळ, अत्यत, विशाल
स्फीत ('स्फाय्' नु भू० कृ०) वि० वधेलु, मोटु थयेलु (२) जाडु, मोटु (३) घणु; पुष्कळ (४) समृद्ध, सफळ (५) पहोळु थयेलु
स्फीति स्त्री० वृद्धि, विपुलता
स्फुट् ६ प०, १ उ० फाटवु, चिरावु; तूटवु (२) ऊघडवु, खीलवु (३) भागी जवु; वीखराई जवु (४) प्रगट थवु, नजरे पडवु (५) १० उ० फाडवु; चीरवु (६) प्रगट करवु, खुल्लु करवु
स्फुट वि० फूटेलु, फाटेलु (२) विकसित (३) स्पष्ट, प्रगट (४) प्रख्यात (५) उज्ज्वळ, स्वच्छ [कमळ)
स्फुटपुडरीक न० खीलेलु हृदय (रूपी
स्फुटम् अ० स्पष्टपणे, प्रगट रीते
स्फुटार्थ वि० समजाय तेवु, स्पष्ट (२) अर्थयुक्त [खड
स्फुटिका स्त्री० भागेलो नानो टुकडो,
स्फुटित ('स्फुट्' नु भू० कृ०) वि० फाटेलु, तूटेलु (२) खीलेलु, विकसेलु (३) प्रगट करायेलु, बतावायेलु
स्फुर् ६ प० ध्रूजवु, फरकवु (२) अमळावु (३) आगळ धसवु, कूदको मारवो (४) पाछु ऊछळवु (५) बहार नीकळवु, फूटवु (६) प्रगट थवु, नजरे पडवु (७) चमकवु, झगमगवु (८) आगळ आववु, विख्यात थवु
स्फुर् वि० (समासने अते) ध्रूजतु; फरकतु, धवकतु
स्फुर पु० ध्रूजवु–फरकवु ते
स्फुरण न० ध्रूजवु ते, फरकवु ते (२) फूटवु ते; प्रगट थवु ते (३) चमकवु ते
स्फुरद्गध पु० फेलायेलो गध
स्फुरित ('स्फुर्' नु भू० कृ०) वि० फरकेलु, कपेलु (२) हालेलु (३) चमकेलु (४) अस्थिर (५) प्रगट थयेलु (६) न० स्फुरण (७) चमकारो
स्फुर्ज् १ प० [स्फूर्जति] गर्जवु, कडाको थवो, फूटवु (२) चमकवु (३) फूटी के फाटी नीकळवु [नो तणखो
स्फुलिंग पु०, न०, **स्फुलिंगा** स्त्री० अग्नि-
स्फूर्ज पु० कडाको, गर्जना (२) इद्रनु वज्र
स्फूर्जथु पु० वीजळीनो कडाको
स्फूर्जा स्त्री० कडाको, गडगडाट
स्फूर्ति स्त्री० कपवु –ध्रूजवु ते (२) कूदको (३) खीलवु –ऊघडवु ते (४) प्रगट थवु – नजरे पडवु ते (५) मनमा चमकारो
स्फेयस् वि० वधारे मोटु ('स्फिर' नु तुलनात्मक रूप)

स्फेष्ठ वि० सौथी मोटु ('स्फिर' नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)
स्फोट पु० फोडवु–फूटवु–फाटी नीकळवु ते (२) खुल्लु –प्रगट थवु के करवु ते (३) फोल्लो
स्फोटन न० अचानक फोडवु –फाडवु ते (२) अनाजने फडाकाथी ऊपणवु ते (३) आगळीनो टचाको बोलाववो ते
स्फ्य न० यज्ञमा वपरातु खड्गना आकारनु एक साधन (२) एक जातनु हलेसु
स्म अ० धातुना वर्तमान काळ साथे आवी भूतकाळनो अर्थ दर्शावे (२) पादपूरक प्रत्यय (नकारवाचक 'मा' नी साथे सामान्य रीते वपराय छे)
स्मय पु० आश्चर्य (२) गर्व
स्मयदान न० देखाडपूर्वक करेलु दान
स्मयमान वि० नवाई पामतु
स्मर पु० स्मरण, याद (२) प्रेम (३) मदन, कामदेव
स्मरण न० स्मृति, याद (२) चिंतन; चिंतवन (३) परंपराथी चाल्यु आववु ते ('श्रुति' थी ऊलटु)
स्मरणपदवी स्त्री० मृत्यु
स्मरणानुग्रह पु० अनुग्रहपूर्वक करेली याद (२) याद करवा रूपी कृपा
स्मरणी स्त्री० जपमाळा
स्मरदशा स्त्री० कामज्वरथी थती शरीरनी दशा (दश प्रकारनी गणावाय छे); प्रेममा पडया होवानी स्थिति
स्मरप्रिया स्त्री० रति, कामदेवनी पत्नी
स्मरमय वि० काममूलक, प्रेमने कारणे उत्पन्न थयेलु
स्मरशासन पु० शकर
स्मरसख पु० चद्र (२) वसत ऋतु
स्मरहर पु० शकर
स्मराकुल, स्मरार्त वि० कामातुर; [कामार्त
स्मरोन्माद पु० कामवासनाथी उत्पन्न थयेली उन्मत्तता के मूर्खता
स्मर्तव्य वि० याद करवा लायक
स्मर्तृ पु० शिक्षक, अध्यापक
स्मार वि० कामदेवने लगतु; कामदेवनु (२) न० स्मरण, याद
स्मारण न० याद करावबु ते (२) गणतरी करवी ते, हिसाब मेळववो ते
स्मार्त वि० याददास्त सबधी, याद करायेलु (२) याददास्तमा होय तेवु (३) स्मृतिशास्त्रना आधारवाळु; स्मृतिशास्त्रमा कहेलु (४) पु० स्मृतिशास्त्रमा पारगत ब्राह्मण (५) स्मृतिशास्त्रने अनुसरनारो
स्मि १ आ० स्मित करवु, धीमेथी हसवु (२) खीलवु, ऊघडवु
स्मित वि० स्मित करतु (२) प्रफुल्लित; खीलेलु (३) न० मद हास्य
स्मितपूर्वम् अ० स्मित करीने
स्मृ १ प० याद करवु (२) देवनु ध्यान करवु, देवना नामनो जप करवो (३) स्मृतिशास्त्रे आज्ञा करवी, विधान करवु (४) उत्सुकतापूर्वक याद करवु
स्मृत ('स्मृ' नु भू० कृ०) वि० याद करेलु (२) नोधायेलु; उल्लेखायेलु, गणेलु, मानेलु (३) स्मृतिशास्त्रे आदेश कर्यो होय तेवु (४) न० स्मृति, याद
स्मृति स्त्री० स्मरण, याद (२) स्मरणशक्ति (३) धर्मशास्त्र, मानवरचित कायदाओनो ग्रथ ('श्रुति' अपौरुषेय गणाय छे) (४) सारासारविवेक
स्मृतितंत्र न० कायदापोथी; धर्मशास्त्र
स्मृतिपथ पु० याददास्तनो विषय
स्मृतिपथंगम् १ प० मरण पामवु (याददास्तनो विषय बनी जवु)
स्मृतिपाठक पु० कायदाशास्त्री
स्मृतिभ्रंश पु० याददास्त नाश पामवी ते
स्मृतिमत् वि० पूरेपूरा भानवाळु (२) पूर्वजन्म याद होय तेवुं (३) डाह्यु, शाणु (४) स्मृतिशास्त्रमा प्रवीण एवु
स्मृतिरोध पु० याददास्त लुप्त थवी ते

स्मृतिविभ्रम पु० जुओ 'स्मृतिभ्रंश'
स्मृतिविषय पु० जुओ 'स्मृतिपथ'
स्मृतिशेष वि० मृत, मरेलु
स्मृतिहीन वि० भुलकणु
स्मेर वि० स्मित करतु, हसतु (२) प्रफुल्लित; खीलेलु (३) गर्विष्ठ
स्यद पु० वेग; गति
स्यन्न ('स्यद्' नु भू० कृ०) वि० झरेलु; गळेलु, टपकेलु
स्यम् १ प०, १० उ० अवाज करवो; मोटेथी बूम पाडवी
स्यमंतक पु० एक कीमती मणि (रोज आठ भार सोनु आपतो)
स्यंद् १ आ० झरवु; झमवु, टपकवु; वहेवु (२) दोडवु, नासी जवु (३) देखावु, थवु (४) वरसवु
स्यंद पु० झमवु–टपकवु ते (२) वेगे जवु – खसवु ते (३) रथ
स्यंदन वि० झडपी, वेगीलु (२) वहेतु, झडपथी जतु (३) पु० युद्धरथ, रथ (४) न० टपकवु ते, झमवु ते
स्यंदनिका स्त्री० लाळनु टपकु (२) झरो, झरणु
स्यंदिन् वि० झमतु, झरतु, वहेतु (२) जतु (३) वेगे धसतु
स्यात् अ० कदाच एम पण होय
स्याद्वाद पु० 'अमुक दृष्टिए एम पण होई शके' एवो निराग्रहीपणानो जैन वाद – दार्शनिक सिद्धांत
स्यूत ('सिव्' नु भू० कृ०) वि० सोयथी सीवेलु (२) वीधायेलु; परोवायेलु (३) साथे वणायेलु–जोडायेलु (४) पु० कोथळो, गूण
स्रग्दामन् न० हारनो गाठ वाळवा [माटेनो छेडो
स्रग्धर वि० हार पहेरेलु [तेवु
स्रग्विन् वि० माळा के हार पहेर्यो होय
स्रज् स्त्री० फूलनी माळा (२) हार
स्रव पु० झरवु के झमवु ते, वहेवु ते (२) टीपानी धार (३) झरो
स्रवद्रंग पु० बजार, मेळो
स्रवंती स्त्री० नदी, झरणु
स्रष्टृ पु० स्रष्टा, सर्जक (२) विधाता; ब्रह्मा (३) शिव
स्रस्त ('स्रस्' नु भू० कृ०) वि० पडी गयेलु, छूटी गयेलु (२) शिथिल थयेलु, नीचे नमी गयेलु (३) लटकतु, लबडतु
स्रस्तर पु० अढेलाय–आडा पडाय तेवु [आसन, पथारी
स्रंस् १ आ० सरी पडवु, नीचे पडी जवु (२) भागी पडवु, छूटु पडी जवु (३) जवु (४) टीगावु, लटकवु
–प्रेरक० ढीलु करवु, धीमु पाडवु
स्रंसन न० नीचे पडवु के पाडवु ते (२) गर्भस्राव (३) जुलाब
स्रंसिन् वि० सरकी जतु, ढीलु पडतु; छूटु पडतु (२) ढीलु लटकतु
स्राक् अ० जलदीथी, झडपथी
स्राव पु० झरवु ते, झमवु ते, वहेवु ते
स्रु १ प० झरवु, झमवु, टपकवु (२) वहेवराववु, वहेवा देवु (३) जवु, खसवु (४) टपकी जवु, सरी जवु, क्षीण थवु, नाश थवो (५) सरकी जवु
स्रुघ्न पु० एक प्रदेश के जिल्लानु नाम (पाटलिपुत्रथी एकाद दिवसनी मजले)
स्रुच् स्त्री० घी होमवानु लाकडानु कडछी जेवु साधन
स्रुत् वि० (समासने छेडे) वहेवरावतु, [टपकावतु
स्रुत ('स्रु' नु भू० कृ०) वि० झरेलु, टपकेलु (२) गयेलु
स्रुति स्त्री० सरवु ते, टपकवु ते (२) प्रवाह, झरणु
स्रुव पु०, **स्रुवा** स्त्री० यज्ञमा वपराती [कडछी
स्रू स्त्री० यज्ञनी कडछी
स्रोतस् न० प्रवाह, वहेळो (२) वेगथी वहेतो प्रवाह (३) नदी (४) मोजु (५) पाणी (६) इंद्रिय (७) हाथीनी सूंढ (८) शरीरनु रंध्र (९) जवु ते

स्रोतस्वती, स्त्रोतस्विनी स्त्री० नदी
स्रोतोरंध्र न० हाथीनी सूढनु छिद्र
स्रोतोवह्(-हा) स्त्री० नदी
स्व स० ना०, वि० पोतानु (२) कुदरती, सहज, स्वाभाविक (३) पोतानी ज्ञाति के जातिनु (४) पु० पोतानी जात (५) सगो (६) विष्णु (७) पु०, न० धन, मिलकत (८) स्वभाव
स्वक वि० पोतानु (२) पु० मित्र, बंधु, सगु (३) न० पोतानी मिलकत
स्वकर्मन् न० स्वधर्म, पोतानु कर्तव्य
स्वकीय वि० पोतानुं (२) पोतानु सगु
स्वगतम् अ० एक बाजुए, पोताने ज कहेतो होय तेम (नाट्य०)
स्वगोचर वि० पोतानी शक्तिनी मर्यादामा होय तेवु
स्वच्छ (सु+अच्छ) वि० घणु चोख्खु; निर्मळ, तेजस्वी (२) सफेद (३) सुंदर (४) नीरोगी
स्वच्छंद वि० निरंकुश, पोतानी मरजी मुजब वर्तनारु (२) जंगली (३) पु० पोतानी मरजी के वृत्ति
स्वच्छंदम् अ० पोतानी मरजी मुजब
स्वच्छा स्त्री० सफेद दरो
स्वज वि० पोतामाथी के पोता थकी जन्मेलु (२) स्वाभाविक (३) पु० पुत्र के संतान (४) परसेवो
स्वजन पु० सगो, संबंधी (२) पोतानी ज्ञातनो के घरनो माणस
स्वजनगंधिन् वि० दूरनी सगाईवाळु
स्वजनायते आ० (सगो मनाय छे-गणाय छे) [पोतानामाथी
स्वतस् अ० आपोआप, पोतानी मेळे (२)
स्वतंत्र वि० स्वाधीन, कोईना ताबामा नही तेवु (२) मनस्वी, पोतानी मरजी मुजब चालनारु (३) उमरलायक, पुख्त
स्वतःसिद्ध वि० जाते ज प्रमाणरूप-आपोआप सिद्ध होय तेवु (जेने बीजा प्रमाणनी जरूर नथी)
स्वता स्त्री० पोतापणु, पोतानु मानवु ते (२) मालकीपणु
स्वत्व न० मालकी-हक, मालकीपणु
स्वद् १ आ० गमवु, मधुर लागवु; स्वादिष्ट लागवु (२) चाखवु; खावु
स्वदन पु० भक्षण, आस्वाद
स्वदित ('स्वद्' नु भू० कृ०) वि० खाधेलु, चाखेलु (२) न० श्राद्धमा पिंड आप्या पछी 'नमने भाव्यो-गम्यो' ए जातनो उद्गार
स्वदेश पु० पोतानो देश, वतन
स्वधर्म पु० पोतानो धर्म-पंथ (२) पोतानु कर्तव्य, पोताना वर्णनु कर्तव्य
स्वधा स्त्री० पितृओने अपातो पिंड (२) श्राद्ध (३) अ० पितृओने पिंड आपता करातो उच्चार
स्वधाप्रिय पु० अग्नि [कुहाडी
स्वधिति पु०, स्त्री०, स्वधिती स्त्री०
स्वधीति वि० (वेदनो) सारी रीते पाठ करनारो, ब्रह्मचारी
स्वन् १ प० अवाज करवो (२) गुंजारव करवो (३) गावु
स्वन पु० अवाज, ध्वनि
स्वनित वि० अवाज करतु
स्वनित न० गर्जना, मेघगर्जना (२) अवाज, ध्वनि
स्वप् २ प० ऊंघवु, ऊंघी जवु (२) आडा पडवु, सूई जवु (३) लीन थवु
स्वपक्ष पु० पोतानो पक्ष-बाजु (२) मित्र (३) पोतानो अभिप्राय
स्वपन न० सूवु ते, निद्रा (२) स्वप्न आववु ते [ऊंघमा भासतो देखाव
स्वप्न पु० ऊंघ, निद्रा (२) समणु;
स्वप्नज् वि० ऊंघतु; ऊंघमा आवेलु
स्वप्नज वि० स्वप्नमा उत्पन्न थयेलु-देखातु
स्वप्नदोष पु० स्वप्नमा वीर्यपतन
स्वप्नधीगम्य वि० स्वप्न जेवी समाधि अवस्थामा बुद्धि वडे जोवातु

स्वप्ननिकेतन न० शयनखंड [-भ्रम
स्वप्नप्रपंच पु० स्वप्नमा देखाती दुनिया
स्वप्नशील वि० ऊंघणशी
स्वप्रकाश वि० पोताना ज प्रकाशथी प्रकाशित (२) पोतानी मेळे समजाय तेवु
स्वप्रयोगात् अ० जातमहेनतथी
स्वभाव पु० प्रकृति, मूळ गुण, सहजधर्म (२) स्वाभाविक वलण [स्वाभाविक
स्वभावसिद्ध वि० कुदरती, साथे जन्मेलु;
स्वभावात्मक वि० साहजिक कुदरती
स्वयम् अ० जाते, पोतानी जाते (२) आपमेळे, महेनत वगर
स्वयंग्रह पु० पोतानी मेळे लई लेवु ते (रजा विना)
स्वयग्राह वि० स्वैच्छिक, ऐच्छिक (२) वळजबरीथी लेनारु (३) पु० पोतानी पसदगी
स्वयंभु पु० ब्रह्मा
स्वयंभुव पु० प्रथम मनुनु नाम (२) ब्रह्मा (३) शकर
स्वयभू वि० पोतानी मेळे उत्पन्न थयेलु; जेनु बीजु कोई कारण नथी तेवु (२) पु० ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव
स्वयंवर पु० जाते पति पसद करवो ते
स्वयंवरा स्त्री० जाते पति पसद करनारी कन्या
स्वयूथ्य पु० सगो
स्वयोनि वि० पोताना मातृपक्षनु सवधी (२) स्त्री० वहेन के नजीकनी सगी
स्वर् अ० स्वर्ग, पुण्यशाळीओनु मृत्यु पछीनु तात्कालिक स्थान (२) त्रण व्याहृतिओमानी एक (प्रथमा, द्वितीया, षष्ठी अने सप्तमीना अर्थमा वपराय छे)
स्वर पु० अवाज; ध्वनि, सूर (२) सगीतना सात सूरमानो दरेक (३) जेनो पूर्ण उच्चार कोईनी मदद विना थई शके तेवो वर्ण (व्या०)
स्वरब्रह्मन् न० नाद रूपे प्रगटेलु ब्रह्म
स्वरमंडल न० स्वरोनी गोठवण, स्वरोनी रचना [अवरोह
स्वरसंक्रम पु० स्वरोनो आरोह-
स्वरसंदेहविवाद पु० एक रमत
स्वरसंयोग पु० स्वरोनु जोडाण (२) अवाज, सूर
स्वराज् वि० स्वयप्रकाश [गगा
स्वरापगा स्त्री० स्वर्गगगा (२) आकाश-
स्वरित वि० अवाज करेलु, ध्वनित (२) सुरीलु (३) पु० स्वरना त्रण विभागमानो एक, जेमा उदात्त अने अनुदात्त बनेना लक्षण होय
स्वरितत्व न० अर्थ नीकळवो ते; अर्थवाळा होवु ते [बाण
स्वरु पु० लाकडो (२) यज्ञ (३) वज्र (४)
स्वरुचि स्त्री० पोतानी खुशी
स्वरूप वि० तुल्य, सरखु (२) सुदर (३) विद्वान, डाह्यु (४) न० कुदरती आकार (५) कुदरती स्थिति, कुदरती स्वभाव (६) स्वभाव, प्रकृति (७) विशिष्ट लक्ष्य (८) प्रकार, जात
स्वर्ग पु० देवोनो लोक
स्वर्गत वि० मृत
स्वर्गतरंगिणी स्त्री० गगानदी
स्वर्गति स्त्री० मृत्यु (२) स्वर्गमा जवु ते
स्वर्गद्वार न० स्वर्गनु बारणु, स्वर्गमा प्रवेश
स्वर्गपति पु० इद्र
स्वर्गपथ पु० आकाशगगा
स्वर्गरोदःकुहर पु० स्वर्ग अने पृथ्वी वच्चेनु पोलाण
स्वर्गवधू स्त्री० अप्सरा
स्वर्गसद् पु० देव
स्वर्गस्त्री स्त्री० अप्सरा
स्वर्गंगा स्त्री० जुओ 'स्वरापगा'
स्वर्गिन् वि० स्वर्गनु, स्वर्ग सवधी (२) पु० देव (३) मरी गयेलो माणस

स्वर्गीय वि० दैवी, स्वर्गने लगतु(२) स्वर्गे लई जनारु
स्वर्गौकस् पु० देव
स्वर्ग्य वि० जुओ 'स्वर्गीय'
स्वर्ण न० सोनु (२) सोनानो सिक्को
स्वर्णकाय पु० गरुड
स्वर्णकार पु० सोनी
स्वर्णनाभ पु० शालग्राम
स्वर्दृश् पु० इन्द्र (२) अग्नि(२)सोम
स्वर्धुनी स्त्री० स्वर्गगगा
स्वर्भानु पु० राहु
स्वर्भानुसूदन पु० सूर्य
स्वर्योषित् स्त्री० अप्सरा
स्वर्लोक पु० स्वर्ग
स्वर्वधू स्त्री० अप्सरा
स्वर्वैद्य पु० अश्विनीकुमारोनु नाम
स्वल्प वि० अति अल्प–थोडु
स्वल्पक वि० घणु थोडु (माप के सख्यामा); घणु नानु
स्वल्पबल वि० घणु दुर्बळ
स्ववश वि० पोताने वश के पोताना काबूमा होय तेवु (२) स्वतंत्र
स्वविषय पु० पोतानो देश, पोतानु घर
स्ववृत्ति वि० स्वप्रयत्ने ज आजीविका चलावतु होय तेवु
स्वसा, स्वसृ स्त्री० वहेन
स्वस्ति स्त्री० हित, कल्याण(२) अ० 'सारु थाओ', 'भलु थाओ' ए अर्थनो उद्गार (पत्रनी शरूआतमा वपराय छे)
स्वस्तिक पु० साथियो, एक सद्भाग्य-सूचक आकृति (२) जेनाथी सद्भाग्य प्राप्त थवा माडे एवी वस्तु (३) चार रस्ता भेगा मळे ते स्थान (४) चोकडी पडे तेम हाथ ऊभो अने आडो एम गोठववा ते (५) एक जातनो चारण, बदीजन (६) पु० न० एक आसन (योग०) (७) बेठक; पीठ (देव माटे तैयार करेल) (८) खास आकारनु मकान के मदिर
स्वस्तिकपाणि वि० स्वस्तिक आकारे हाथ करनारु (२) हाथमा मागळिक वस्तुओवाळु
स्वस्तिमत् वि० सुखी, सुरक्षित
स्वस्तिवाचन, स्वस्तिवाचनक, स्वस्तिवाचनिक न० यज्ञादि धार्मिक क्रियाओनी शरूआतमां करातो प्रारभिक विधि(२)शुभेच्छाओ अने आशीर्वादो सहित फूल वगेरे अर्पवा ते
स्वस्त्ययन वि० शुभ, मागलिक (२) न० समृद्धि मेळववानो उपाय–मार्ग (३) मत्र वगेरे विधिथी अनिष्ट दूर करवु ते (४) ब्राह्मणने दक्षिणा आप्या पछी ते जे आशीर्वाद आपे ते
स्वस्थ वि० स्वाश्रयी; पोताना ज प्रयत्न उपर आवार राखतु (२) दृढ, स्थिर, निश्चयी (३) स्वतत्र (४)तदुरस्त, सुखी(५)सतुष्ट
स्वस्थान न० पोतानु घर के स्थान
स्वस्रीय पु० भाणेज
स्वस्रीया स्त्री० भाणी; भाणेजी
स्वस्रेय पु० भाणेज
स्वस्रेयी स्त्री० जुओ 'स्वस्रीया'
स्वहस्त पु० पोताना हस्ताक्षर
स्वहस्तिका स्त्री० कुहाडी
स्वहित वि० पोताने लाभदायक एवु (२) न० पोतानु हित, लाभ के स्वार्थ
स्वञ्ज् १ आ० [स्वजते] भेटवु, आलिगन करवु (२) वीटळावु
स्वंत वि० सुखी अंत के छेवटवाळु
स्वाकृति वि० सुडोळ, घाटीलु
स्वागत न० 'भले पधार्या' एवु अभिनदन
स्वातन्त्र्य न० स्वतत्रता [तलवार
स्वाति(–ती)स्त्री० पदरमु नक्षत्र(२)
स्वाद पु० रसनेन्द्रियथी थतो अनुभव (२)रस, आनद(३)चाखवु ते
स्वादिष्ठ वि० घणु ज स्वादु('स्वादु'नु श्रेष्ठतादर्शक रूप)

स्वादीयस् वि० वधारे स्वादु ('स्वादु' नु तुलनात्मक रूप)
स्वादु वि० स्वादवाळु, मीठु (२) लहेजतदार, रुचे तेवु, मधुर (३) पु० मधुर रस (४) न० स्वाद; रस (५) मधुरता, सुदरता
स्वाद्य न० रस
स्वाधिकार पु० पोतानी फरज, पोतानो होद्दो (२) पोतानो अमल ज्या चालतो होय ते भाग [मानु एक (योग०)
स्वाधिष्ठान न० शरीरमाना छ चक्रो-
स्वाधीन वि० पोताने तावे होय तेवु; पोताना कावूमा होय तेवु (२) स्वतत्र
स्वाधीनकुशल वि० पोतानु योगक्षेम पोताना हाथमा होय तेवु
स्वाधीनपतिका, स्वाधीनभर्तृका स्त्री० जेनो पति पोताना वशमा छे तेवी स्त्री
स्वाध्याय पु० पोतानी जाते–एकला पाठ करी जवो ते (२) वेदोनो पाठ –अभ्यास (३) वेद
स्वाध्यायार्थित् पु० अध्ययन वखते अन्नवस्त्र मागनारो
स्वान पु० ध्वनि, अवाज
स्वानुभव पु० धन-मिलकत माटेनो प्रेम
स्वानुभूति स्त्री० जात-अनुभव (२) आत्मज्ञान, आत्मसाक्षात्कार
स्वानुरूप वि० स्वाभाविक (२) पोताने उचित होय तेवु [आळस, घेन
स्वाप पु० ऊघ (२) स्वप्न (३)
स्वापतेय न० द्रव्य, धन
स्वाभाविक त्रि० स्वभावसिद्ध, नैसर्गिक, कुदरती
स्वाभास वि० भव्य, यशस्वी
स्वामिन् पुं० मालिक, शेठ (२) अधिपति, राजा (३) पति (४) परमहस, यति (घणुखरु विशेषनामने लगाडाय छे)
स्वामिनी स्त्री० मालिक स्त्री, शेठाणी
स्वाम्य न० स्वामीपणु, मालकीपणु (२) (शरीर मननी) स्वस्थता, स्वास्थ्य
स्वायत्त वि० पोताना हाथमा होय तेवु, पोतानी उपर अवलबतु
स्वायंभुव वि० ब्रह्मा सबधी (२) ब्रह्मा-माथी ऊतरी आवेलु (३) पु० प्रथम मनु
स्वारसिक वि० रसाळ (काव्य०) (२) (बीजाना दबाण विना) आपमेळे करेलु
स्वाराज् पु० इद्र
स्वाराज्य न० इद्रपद, स्वर्गनु राज्य (२) ब्रह्मत्व, ब्रह्म साथे एकता
स्वार्थ पु० पोतानु हित, पोतानो लाभ (२) पोतानो – मूळ अर्थ (३) पुरुषार्थ
स्वार्थतृष् वि० स्वार्थी
स्वार्थपर, स्वार्थपरायण वि० स्वार्थी; पोतानु ज हित साधवामा तत्पर एवु
स्वार्थपंडित वि० पोतानी बाबतोमा कुशळ (२) स्वार्थ साधवामा कुशळ
स्वालक्षण वि० सहेलाईथी जोई शकातु
स्वालक्षण्य न० मूळ स्वभाव, विशिष्ट लक्षण [धरवेलु
स्वाशित वि० सारी पेठे खवरावेलु–
स्वाश्लिष् ४ प० गाढ आलिंगन करवु
स्वास्तर पु० पथारी माटे सारु घास
स्वास्थ्य न० स्वाश्रय (२) दृढता, निश्चयीपणु (३) आरोग्य (४) सुख-समृद्धि (५) सतोष
स्वाहा स्त्री० अग्निनी पत्नी (२) बधा देवोने आपेली आहुति (३) अ० देवोने आहुति आपती वखते करातो उच्चार
स्वांत न० मन, अत करण (२) गुफा (३) पोतानु मोत [अर्थ बतावे छे
स्विद् अ० प्रश्न, वितर्क अने पादपूरणनो
स्विद् ४ प० पसीनो थवो (२) १ आ० तेलवाळु थवु, चीकणु थवु (३) लेपथी खरडावु [तेवु
स्विद् (समासमा) परसेवो थतो होय
स्विन्न ('स्विद्' नु० भू० कृ०) वि० परसेवावाळु थयेलु (२) राधेलु, उकाळेलु

स्विष्ट वि० अति इष्ट, अतिप्रिय
स्वीकरण न०, **स्वीकार** पु० स्वीकारवु ते, लेवु ते (२) कबूल राखवु ते (३) लग्न
स्वीकृ ८ उ० स्वीकार करवो (२) कबूल राखवु (३) मजूर करवु
स्वीकृति स्त्री० जुओ 'स्वीकरण'
स्वीय वि० पोतानु
स्वेच्छा स्त्री० पोतानी मरजी
स्वेच्छाचार पु० पोतानी मरजी मुजब वर्तवु ते [वराळ
स्वेद पु० परसेवो (२) गरमी (३)
स्वेदज वि० पसीनो के बाफथी उत्पन्न थयेलु (जीवडु) [लाववो ते
स्वेदन न० पसीनो थवो ते (२) पसीनो
स्वेदित वि० बाफ आपेलु, नरम करेलु
स्वैर वि० स्वेच्छाचारी, स्वच्छंदी; मनस्वी (२) सकोच विनानु, खानगीमा सकोच विना करेलु (३) धीमु, सौम्य (४) सुस्त, आळसु
स्वैरकम् अ० स्वतत्रपणे, सकोच विना
स्वैरचारिन् वि० स्वतत्र
स्वैरम् अ० मरजी मुजब, स्वेच्छा प्रमाणे (२) आपमेळे (३) धीमेथी, हळवेथी (४) धीमा अवाजे
स्वैरवृत्ति वि० मनस्वी प्रमाणे वर्तनारु
स्वैरालाप पु० खानगी वातचीत
स्वैरिणी स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री (२) मुनिश्रेणी
स्वैरिन् वि० स्वच्छदी, मनस्वी
स्वोत्थ वि० सहज, कुदरती

ह

ह अ० पादपूरणार्थे वपराय छे (२) भार दर्शाववा 'खरेखर', 'चोक्कस' ए अर्थ बतावे (३) तुच्छकार के मजाक दर्शाववा वपराय [बोलाववु ते
हक्कार पु० होकारो करवो ते;
हक्काहक्क पु० बोलाववु – पडकारवु ते
हट्ट पु० बजार, हाट [बेसनारी)
हट्टविलासिनी स्त्री० वेश्या (बजारमा
हठ् १ प० ठेकडो भरवो (२) दुष्टता करवी (३) त्रास गुजारवो (४) थाभले बाधवु (५) बळजबरीथी लेवु
हठ पु० बळजबरी (२) दुराग्रह, जक (३) अणधार्यो लाभ
हठपर्णी न० शेवाळ
हठबुद्धि स्त्री० अणधार्यो लाभ थवानी श्रद्धा (महेनत विना)
हठयोग पु० एक प्रकारनो योग ('राजयोग'थी जुदो)
हठवादिक पु० चार्वाक जेवा मतनो– पुरुषार्थमा न माननारो अने अणधार्या लाभमा श्रद्धावाळो माणस
हठात् अ० बळात्कारे (२) अचानक
हठायात वि० छेक ज आवश्यक; अनिवार्य
हठिका स्त्री० मोटो अवाज, धाधळ
हठेन अ० बळात्कारे (२) अचानक
हडि पु० हेडबेडी, लाकडानी हेड
हड्ड न० हाडकु
हत ('हन्'नु भू०कृ०) वि० हणायेलु, मरायेलु (२) ईजा करेलु, घा करेल (३) खोवायेलु (४) विनानु थयेलु के करायेलु (५) हताश (६) बरबाद, नष्ट (७) गुणेलु (८) कमनसीब, कगाळ, तुच्छ
हतक वि० नीच, दुष्ट, असस्कारी (मुख्यत्वे समासने अंते) (२) पु० नीच-हीन-कायर माणस
हतकटक वि० काटा के शत्रु विनानु बनेलु [मूढ
हतचेतस् वि० मूझायेलु, अकळायेलु;

हतच्छाय वि० कांति नाश पामी होय तेवुं [वातचीत
हतजल्पितानि न० ब० व० नकामी
हतत्रप वि० बेशरम [तेवुं
हतत्विष् वि० तेज झांखुं पडी गयुं होय
हतदैव वि० कमनसीब, दुर्भागी
हतप्रभाव वि० सत्ता के शक्ति विनानुं
हतप्रमाद वि० प्रमाद के बेदरकारी विनानुं बनेलुं के करायेलुं [एवुं
हतबुद्धि वि० बुद्धि बहेर मारी गई होय
हतभाग्य वि० कमनसीब [विनानुं
हतविनय वि० दुष्ट, शिष्टताना ख्याल
हतवीर्य वि० जुओ 'हतप्रभाव'
हतश्री वि० कंगाल, दरिद्र
हतसाध्वस वि० भयमुक्त
हताश वि० निराश (२) निर्बळ; अशक्त (३) क्रूर, निर्दय (४) वध्य
हति स्त्री० वध, नाश (२) घा; प्रहार (३) खोट; हानि (४) दोष, अपूर्णता (५) गुणाकार
हतेक्षण वि० अंध [शकेतुं
हतोत्तर वि० जवाब न आपतुं के आपी
हतोद्यम वि० जेनो प्रयत्न दबावी देवामां आव्यो छे तेवुं
हत्या स्त्री० वध, कतल
हत्वन् वि० वध करनारु
हद् १ आ० मलोत्सर्ग करवो, अघवुं
हन् २ प० हणवुं, मारवुं, वध करवो (२) प्रहार करवो; घा करवो (३) पीडवुं; त्रास आपवो (४) तजवुं, निग्रह करवो (५) दूर करवुं; नाश करवो (६) जीतवुं; हराववुं (७) विघ्न करवुं, अवरोधवुं (८) उछाळवुं, उराडवुं (९) जवुं
हन् वि० मारनारु, घातक (समासने अंते; उदा० वृत्रहन्, पितृहन्)
हन पु० वध, नाश
हनन न० वध (२) ईजा (३) गुणाकार
हनु पु०, स्त्री० हडपची (२) स्त्री० शस्त्र (३) रोग (४) मृत्यु (५) वेश्या
हनुमत् पु० हनुमान, मारुति
हनू पु०, स्त्री० जुओ 'हनु'
हनूमत् जुओ 'हनुमत्'
हम् अ० क्रोध, विनय, आदर – ए अर्थ बतावतो उद्गार
हय पु० घोडो [एक दैत्य
हयग्रीव पु० विष्णुनो एक अवतार (२)
हयन न० बंध गाडी, ढांकेली गाडी
हयमुख पु० जुओ 'हयग्रीव'
हयवाहन पु० कुबेर
हयसंयान न० घोडाने काबूमां राखवा –केळववा के हांकवा ते [सारथि
हयंकष पु० सारथि (२) मातलि, इंद्रनो
हया, हयी स्त्री० घोडी
हर वि० लई जनारुं, दूर करनारुं, रहित करनारु (२) लावनारु, वहन करनारु (३) पकडनारु (४) आकर्षनारु (५) दावो करनारु, हकदार (६) व्यापनारुं; रोकनारु (७) पु० शिव
हरगौरी स्त्री० शंकर अने पार्वतीनुं एकत्रित स्वरूप
हरचूडामणि पु० चंद्र
हरण न० लेवुं ते, पकडवुं ते (२) लई जवुं ते; चोरी जवुं ते (३) दूर करवुं ते; नष्ट करवुं ते (४) लग्ननी भेट
हरनेत्र न० शिवनी आंख (त्रीजी)
हरवल्लभ पु० धतूरो
हरवाहन पु० नंदी, आखलो
हरसख पु० कुबेर
हरसूनु पु० कार्तिकेय, स्कंद
हराद्रि पु० कैलास पर्वत
हरि वि० पोपटी रंगनुं; लीलाश पडतुं पीळुं (२) बदामी, कपिल रंगनुं (३) पीळुं (४) पु० विष्णु (५) इंद्र (६) शिव (७) पवन (८) घोडो (९) इंद्रनो घोडो (१०) वानर (११) इंद्रिय
हरिकेश पु० शिव
हरिचंदन पु०, न० एक प्रकारनुं पीळुं

चदन (वृक्ष के लाकडु) (२) पाच देववृक्षोमांनु एक

हरिण वि० फीकुं; धोळाश पडतु पीळु (२)पीळाश पडतु धोळु (३) किरणोवाळु (४) पु० मृग, हरण (५) सूर्य (६) विष्णु (७) शिव (८) धोळो रग

हरिणक पु० हरण, मृग [वाळो)

हरिणलांछन पु० चद्र (हरणना चिह्न-

हरिणाक्ष वि० हरण जेवी आखवाळु (२) पु० शिव [वाळी स्त्री

हरिणाक्षी स्त्री० हरण जेवी सुदर आखो-

हरिणांक पु० चद्र

हरिणी स्त्री० हरणनी मादा, मृगली (२)स्त्रीओना चार वर्गमानो एक–चित्रिणी

हरिणीदृश् वि० हरण जेवी आखोवाळु (२)स्त्री० हरण जेवी आखोवाळी स्त्री

हरित् वि० लीलु, लीलाश पडतु (२) पीळु, पीळाश पडतु (३) लीलाश पडतु पीळु (४) पु० लीलो के पीळो रंग (५) सूर्यनो घोडो (६) झडपी घोडो (७) पु०, न० घास (८) दिशा, प्रदेश (९) खूणो, दिशा

हरित वि० लीलु, लीला रगनु (२) घेरु भूरु, नील रगनु (३) पिंगळा रगनु (४) पु० लीलो रग (५) सिह (६) एक जातनु घास

हरितक न० लीलु घास

हरितच्छद वि० लीला पानवाळु

हरितहरि पु० सूर्य

हरिताल न० हरताल, एक उपधातु

हरित्पति पु० दिक्पाल

हरिदश्व पु० सूर्य

हरिदंत पु० दिगत, दिशानो छेडो

हरिदंतराणि (हरित् + अतराणि) न० ब०व० जुदी जुदी दिशाओ, जुदा जुदा प्रदेशो

हरिद्रा स्त्री० हळदर

हरिन्मणि पु० लीलम मणि

हरिप्रिय पु० कदब वृक्ष (२) शख (३) शिव [पृथ्वी

हरिप्रिया स्त्री० लक्ष्मी (२) तुलसी (३)

हरिरोमन् वि० अति युवान (कोमळ वाळवाळु)

हरिवल्लभा स्त्री० लक्ष्मी (२) तुलसी

हरिवाहन पु० गरुड (२) इद्र (३) सूर्य

हरिवाहनदिश् स्त्री० पूर्व दिशा

हरिशर पु० शकर (त्रिपुर वाळवा शकरना बाण तरीके विष्णु थया हता)

हरिश्चद्र पु० एक सूर्यवशी राजा (सत्यवादी तरीके प्रसिद्ध छे)

हरिसख पु० गधर्व

हरिसुत, हरिसूनु पु० अर्जुन (इद्रनो पुत्र)

हरिहय पु० इद्र (२) सूर्य (३) गणेश

हरिहेति स्त्री० सुदर्शन चक्र (२) मेघधनुष्य

हरिहेतिहूति पु० चक्रवाक पक्षी

हरीतकी स्त्री० हरडे; हीमज

हर्तृ वि० हरण करनारु; लूटी जनारु (२)पु० चोर, डाकु

हर्म्य न० महेल, हवेली [ओरडो

हर्म्यतल, हर्म्यपृष्ठ न० महेलनो उपरनो

हर्म्यस्थल न० महेलनो ओरडो

हर्यक्ष पु० सिंह (२) कुबेर (३) शिव (४) हिरण्याक्ष

हर्यश्व पु० इद्र (२) शकर

हर्ष पु० हरख; आनद (२) रोमाच (३) तीव्र इच्छा

हर्षगर्भ वि० आनददायक [गयेलुं

हर्षजड वि० अति आनदथी स्तब्ध थई

हर्षण वि० हर्ष उपजावनारु (२) रोमाच खडा करे तेवु (३) पु० कामदेवना पाच बाणमानु एक (४) न० आनद; हर्ष (५) हर्ष उपजाववो ते (६) लश्करनो जुस्सो प्रेरवो ते

हर्षदोहल पु०, न० कामवासना

हर्षवर्धन पु० उत्तर हिंदनो एक महान

राजा, शक-प्रवर्तक गणाय छे (ई०स० ६०५ के ६०६)
हर्षित वि० हर्ष पामेलु; आनदित थयेलु (२) न० आनद, हर्ष
हर्षुल वि० मजाकी, परिहासशील (२) कामुक [माटे अयोग्य)
हर्षुला स्त्री० दाढीवाळी कन्या (लग्न
हल न० हळ (२) कदरूपापणु, विरूपता (३) विघ्न (४) तकरार
हलगोलक पु० एक कीडो
हलदी स्त्री० हळदर
हलधर, हलभृत् पु० बळराम
हला स्त्री० सखी; बहेनपणी (२) पृथ्वी
हला अ० सखीने बोलाववा वपरातु सबोधन
हलायुध पु० बळराम
हलाहल पु०, न० समुद्रमथन वखते नीकळेलु अति तीव्र झेर (२) तीव्र झेर
हलिन् पु० खेडूत, खेडनारो (२) बळराम
हलिप्रिय पु० कदब वृक्ष
हलिप्रिया स्त्री० मद्य
हल्य वि० खेडवालायक, खेडवानु (२) कुरूप, विरूप (३) न० खेडेलु खेतर (४) कुरूपता, विरूपता
हल्लीश न० १८ उपरूपकोमानु एक; एक अकनु नाटक (एक पुरुप अने ७ थी १० स्त्री नटोनु मुख्यत्वे गावा-नाचवा रूपी) (२) कूडाळे वळी करातु एक नृत्य
हल्लीशक पु० कूडाळे वळी करातु नृत्य
हल्लीष न० जुओ 'हल्लीश'
हल्लीसक जुओ 'हल्लीशक'
हव पु० होम (२) यज्ञ (३) आह्वान
हवन न० आहुति होमवी ते (२) होम; यज्ञ (३) पु० अग्नि
हवनीय वि० होमने लगतु (२) न० होमवानु ते (३) घी
हविर्भुज् पु० अग्नि
हविष्मती स्त्री० कामधेनु गाय
हविष्य न० होमवानु ते; होमवानु द्रव्य (२) घी (३) घी अने चोखा
हविष्यान्न न० व्रत के उपवासना दिवसोमा खावा लायक खोराक
हविष्याशिन् पु० अग्नि
हविस् न० होमवानु द्रव्य (२) घी (३) पाणी (४) शिव (५) यज्ञ (६) अन्न
हव्य वि० होमवानु ते (२) न० घी (३) देवोने अपाती आहुति (पितृओने अपाती ते 'कव्य') (४) आहुति
हव्यकव्य न० देव अने पितृओने अपाती आहुति
हव्यवाह्, हव्यवाह, हव्यवाहन पु० अग्नि (आहुतिने लई जनार)
हस् १ प० हसवु, धीमेथी हसवु (२) मजाक करवी, मश्करीमा हसवु (३) चडियाता थवु, पाछळ पाडी देवु (४) –ना जेवा देखावु (५) खीलवु, ऊघडवु (६) हर्षमा आवी जवु
हसत् वि० हसतु (२) मजाक करतु (३) पाछळ पाडी देतु
हसन न० हसवु ते, हास्य
हसनी, हसंतिका, हसती स्त्री० सगडी
हसित ('हस्' नु भू० कृ०) हसेलु; हसतु (२) खीलेलु, ऊघडेलु (३) न० हास्य (४) मजाक (५) कामदेवनु धनुष्य
हस्त पु० हाथ (२) हाथीनी सूढ (३) १३ मु नक्षत्र (४) २४ आगळ (१८ इच) जेटलु माप (५) हस्ताक्षर, सही (६) (६) साबिती, पुरावो (ला०) (७) मदद, टेको (८) जूथ, समूह (समासमा, केश इ० साथे) (९) न० चामडानी धमण (१०) कुशळता (हाथनी)
हस्तक पु० हाथ (२) हाथनी स्थिति (३) हाथ जेटली लबाई-माप
हस्तकमल न० कमळ जेवो हाथ (२) हाथमानु कमळ

हस्तगत, हस्तगामिन् वि० हाथमा रहेलु; हाथमा आवेलु
हस्ततल न० हथेळी (२) सूढनो अग्रभाग
हस्ततुला स्त्री० हाथमा लईने ज वजन जाणवु ते [ते
हस्तधारण न० (हाथ वडे) प्रहार खाळवो
हस्तपाद न० हाथ तेम ज पग
हस्तप्राप्य वि० हाथथी पहोची शकाय तेवु [नासी छूटेलु
हस्तभ्रष्ट वि० हाथमाथी छूटी गयेलु—
हस्तरोधम् अ० हाथमा पकडीने
हस्तलाघव न० हाथचालाकी, चपळता
हस्तलेख पु० कळाकृति रचता पहेला हाथ वडे आकृति दोरवी ते
हस्तवत् वि० कुशळ, हाथचालाकीवाळु
हस्तवर्तिन् वि० हाथमा पकडेलु, हाथमा रहेलु (२) मेळवेलु, मळेलु
हस्तवाप पु० हाथ वडे बाण छोडवा ते
हस्तसंवाहन न० हाथथी दवाववु ते, चपी करवी ते [दोरो
हस्तसूत्र न० कडु अथवा हाथे बाधेलो
हस्तस्वस्तिक पु० हाथनो स्वस्तिक रचवो ते (आडा हाथ धरवा ते)
हस्तंगत वि० हाथमा गयेलु, —ने कबजे पडेलु [सही
हस्ताक्षर न० पोताना हाथनु लखाण;
हस्ताग्र न० आगळी (हाथनो छेडो)
हस्तामलक न० हाथमा रहेलु आमळु (तेवी रीते स्पष्ट देखाती के समजाती वस्तु ला०) [टेको, मदद
हस्तावलंब पु०, **हस्तावलंबन** न० हाथनो
हस्तावाप पु० आगळीओने धनुष्यनी पणछ न वागे ते माटे वपरातु रक्षण माटेनु मोजु (२) हाथनी बेडी
हस्ताहस्ति अ० हाथोहाथनु, हाथोहाथ आवी जवाय तेम
हस्तिक न० हाथीओनो समूह
हस्तिजागरिक पु० महावत, हाथीनी सभाळ राखनारो
हस्तिदंत पु० हाथीनो दतूशळ (२) दीवालमा खोसेली खीटी (३) न० हाथीदात [पु० हाथी
हस्तिन् वि० हाथवाळु (२) सूढवाळु (३)
हस्तिनख न० किल्लाना दरवाजाना रक्षण माटेनो एक बुरज
हस्तिनपुर, हस्तिनापुर न० हस्तिन् राजाए वसावेलु शहेर; पाडव—कौरवो- नी राजधानी (अत्यारना दिल्हीथी ५० माईल उत्तरपूर्वमा)
हस्तिनी स्त्री० हाथणी (२) स्त्रीओना चार वर्गोमाथी एक
हस्तिप, हस्तिपक पु० जुओ 'हस्त्यारोह'
हस्तिमद पु० हाथीना लमणामाथी नीकळतो एक प्रकारनो रस
हस्तिमल्ल पु० ऐरावत
हस्तियूथ पु०, न० हाथीओनु टोळु
हस्तिवक्त्र पु० गणपति
हस्तिवाह पु० अकुश (२) महावत
हस्तिशाला स्त्री० हाथीखानु
हस्तिस्नान न० हाथीनु स्नान (ने नाह्या पछी सूढथी धूळ शरीर उपर नाखे छे, तेना जेवी निरर्थक क्रिया)
हस्तिहस्त पु० हाथीनी सूढ
हस्तेकृ ८ उ० हाथमा लेवु, कबजे लेवु
हस्त्याजीव पु० महावत
हस्त्यारोह पु० हाथी उपर सवारी करनारो के हाथीने हाकनारो
हस्र त्रि० हसतु, स्मित करतु (२) मूर्ख
हंजा स्त्री० दासी, नोकरडी
हंजा अ० दासीने सबोधन
हंजिका स्त्री० दासी
हजे अ० दासीने सबोधन
हंडा अ० हलकी कक्षानी स्त्रीओ माटेनु सबोधन (२) हलकी वर्णनी स्त्रीओनु अरसपरस सबोधन (३) स्त्री० मोटो माटीनो हाडो (४) दासी
हडिका, हडी स्त्री० हाडी, माटीनु वासण

हंत अ० आनद, आश्चर्य, दया, खेद —ए अर्थो बतावे (२) कई करवानो आग्रह दर्शाववा के ध्यान खेंचवा वपरातो उद्गार
हंतृ वि० मारनारु, वध करनारु(२) दूर करनारुं, नाश करनारु(३)पु० खूनी(४)चोर, डाकु
हतोक्ति स्त्री० 'अरेरे !' एम बोली दया बतावावी ते
हंबा स्त्री० ढोरनु भाभरवु ते
हंबारव पु० गायनु भाभरवु ते
हंभा स्त्री० जुओ 'हंबा'
हंभारव पु० जुओ 'हंबारव'
हंस पु० एक पक्षी (तेनु काव्यमय वर्णन घणु मळे छे ब्रह्मानु ते वाहन छे, वर्षाकाळे मानस सरोवर तरफ चाल्यो जाय छे; दूध अने पाणी जुदा पाडवानी शक्ति धरावे छे इ०) (२) परब्रह्म, परमात्मा (३) जीवात्मा (४) सूर्य (५) एक प्राणवायु (६) एक खास वर्गनो परिव्राजक (७) रूपु, चादी
हंसक पु० हस(२)नूपुर
हंसकांता स्त्री० हसी, हसनी मादा
हंसगति वि० हस जेवी चाल के गतिवाळु
हंसगामिनी स्त्री० हंसनी माफक सुदर गतिवाळी स्त्री
हंसतूल पु०, न० हसना कोमळ पीछां
हंसमाला स्त्री० ऊडता हसोनी पक्ति
हंसरथ, हंसवाहन पु० ब्रह्मा
हहो अ० 'अहो', 'हे' एवो उद्गार(२) आश्चर्य, तुच्छकार, प्रश्न एवो अर्थ बतावे छे
हा अ० खेद, हताशा, दुःख, आश्चर्य, क्रोध —ए अर्थो बतावतो उद्गार
हा ३ आ० जवु (२) पहोचवु (३) ३ प० तजवु, छोडी देवु (४) जतु करवु (५) पडवा देवु (६) दुर्लक्ष करवु
—कर्मणि० [हीयते] तजी देवावु; भुलावु (२)—थी वाकात रखावु, —थी तजावु (३) —थी रहित होवु, विनाना होवु (४)क्षीण थवु (५)हारवु (दावमा)
—प्रेरक० तजे के छोडे तेम करवु(२) हाकी काढवु (३) खोवु (४) दुर्लक्ष करवु, बेदरकार रहेवु, ढील करवी
हाटक वि० सोनेरी, सोनानु (२) न० सोनु (३) एक चमत्कारी पेय – पीणु
हान न० तजवु ते(२)हानि(३)नासी छूटवु ते(४)अपूर्णता, अभाव
हानि स्त्री० तजवु ते, छोडी देवु ते(२) अभाव, निष्फळता(३)नुकसान(४) अपूर्णता, क्षीणता(५)उल्लघन, भग (६)व्यतीत करवु ते, नकामु जवा देवु ते(७)गति ('हा' ३ आ० उपरथी)
हानिकर वि० नुकसान करनारु
हायक वि० त्यागनारु, तजनारु
हायन पु०, न० वर्ष
हार पु० लई जवु ते, दूर करवु ते(२) हमाल, मजूर(३)मोती वगेरेनी गळे पहेरवानी माळा [माळा
हारक पु० चोर (२)ठग(३)मोतीनी
हारगुटिका, हारगुलिका स्त्री० माळामानु मोती के मणको
हारयष्टि स्त्री० मोतीनी माळा
हारावलि(—ली) स्त्री० मोतीनी माळा
हारि स्त्री० पराजय(२)सघ, वणजार
हारित वि० लई जाय के पकडे तेम करेलु(२)बक्षिस करेलु—धरेलु(३)खेचायेलु(४)लूटायेलु(५) खोवायेलु(६) हरावायेलु(७)पु० लीलो रग(८)एक जातनु पारेवु
हारिद्र पु० पीळो रग(२)न० सोनु
हारिन् वि० लई जनारु, वहन करनारु (२) चोरनारु, पडावी लेनारु (३) आकर्षे तेवु, मुग्ध करे तेवु(४)चडियातु, हरावे तेवु (५) हारवाळु

हारीत पु० एक जातनु पारेवु (२) ठग
हार्द वि० हृदयनु, हृदय सबधी (२) न० स्नेह, प्रेम (३) मायाळुता (४) अभिप्राय, इच्छा
हार्दिक्य पु० कृतवर्मा (२) मित्रता
हार्य वि० लई जवा योग्य (२) वहन करवा योग्य (३) पडावी लेवा योग्य (४) खसेडवा के उपाडी जवा योग्य (५) चलित करवा योग्य, चलित थई शके तेवु (निश्चय इ०) (६) आकर्षी शकाय तेवु, जीती शकाय तेवु, मेळवी शकाय तेवु (७) नाश करवा योग्य (८) निवारवा योग्य (प्रहार इ०) (९) सुदर, आकर्षक
हाल पु० हळ (२) बळराम
हालभृत् पु० बलराम
हालहल न० भयकर झेर, हळाहळ
हालहली स्त्री० मद्य, दारू
हाला स्त्री० मद्य, दारू
हालाहल न० अत्यत उग्र झेर, हळाहळ (२) मद्य, दारू
हालाहली स्त्री० मद्य, दारू
हालिक पु० खेडूत (२) हळ खेचनार पशु (बळद इ०) (३) हळ वडे लडनारु
हाली स्त्री० साळी, पत्नीनी नानी बहेन
हाव पु० आमत्रण, बोलाववु ते (२) स्त्रीओनी शृगारिक चेष्टा
हावु [हा३वु] अ० आनदनो उद्गार
हास पु० हसवु ते, हास्य (२) आनद, मजा (३) विनोद, उपहास, मश्करी (४) गर्व, अभिमान (५) खीलवु –ऊघडवु ते (कमळ इ० नु)
हासक पु० भाड, मश्करो
हासन वि० हसावे तेवु, मश्करु
हासस् पु० चद्र
हास्तिक पु० महावत (२) हाथी उपर सवारी करनारो (३) न० हाथीओनो समूह [(२) न० हस्तिनापुर
हास्तिन वि० हाथी जेटलु ऊडु (पाणी)
हास्य वि० हसवा योग्य, हासीपात्र (२) न० हसवु ते (३) आनद मोज (४) मजाक, मश्करी (५) पु० आठ (के नव) रसोमानो एक (काव्य०)
हास्यकार पु० मश्करो
हास्यपदवी स्त्री० हासी मश्करी
हास्यरस पु० आठ रसमानो एक (काव्य०)
हास्यशील वि० मश्करीखोर, मश्करु
हास्यास्पद न० हासीने पात्र एवु ते
हाहा पु० एक गधर्व [उद्गार
हाहा अ० दुःख, शोक के आश्चर्यनो
हाहाकार पु० शोक, विलाप (२) युद्धनो कोलाहल
हाहारव पु० 'हाहा' एवो अवाज
हि अ० (वाक्यनी शरूआतमा न वपराय) कारण के खरेखर, चोकस, दाखला तरीके, जाणीतु छे तेम, मात्र, फक्त, ए एकलु ज – ए अर्थ बतावे (२) मात्र पादपूरक तरीके पण वपराय छे
हि ५ प० मोकलवु (२) फेकवु (३) उश्केरवु, प्रेरवु (४) प्रसन्न करवु (५) जवु (६) नजवु, भूलवु
हिक्क् १ उ० हेडकी जेवो अस्पष्ट अवाज करवो (२) १० आ० हिसा करवी, ईजा करवी
हिक्का, हिक्किका स्त्री०, **हिक्कित** न० हेडकी (२) अस्पष्ट अवाज
हिडिब पु० भीमे हणेलो एक राक्षस
हिडिबा स्त्री० हिडिब राक्षसनी बहेन, भीमनी पत्नी
हित ('धा'नु भू० कृ०) वि० मूकेलु (२) मोकलेलु (३) योग्य, हितकर (४) लाभदायक, पथ्य (५) –नी तरफ माया-ममता-प्रेमवाळु (६) मोकलेलु, धकेलेलु (७) आगळ गयेलु (८) पु० मित्र, सलाहकार (९) न० भलु; कल्याण
हितकर वि० हित करनारु (२) लाभदायक, उपयोगी (३) पु० मित्र, उपकार करनारो

हितकर्तृ वि० हितकर [हितेच्छु
हितकाम वि० हित करवानी इच्छावाळु,
हितकाम्या स्त्री० बीजाना हितनी इच्छा
हितकारक, हितकृत् वि० हितकर (२) पु० हित करनारो
हितबुद्धि वि० हितेच्छु
हितवचन न० हितकर सलाह
हितानुबंधिन् वि० हित करनारु
हितान्वेषिन् वि० हितेच्छु
हिताशंसा स्त्री० हित इच्छवु ते
हितेच्छु वि० हित – भलु इच्छनारु
हितैषिन् वि० हितचिंतक, हितेच्छु
हितोपदेश पु० मित्रताभरी सलाह, हितकर उपदेश
हिम वि० ठंडु (२) झाकळभर्यु (३) पु० हेमंत ऋतु, शियाळो (४) चंद्र (५) हिमालय पर्वत (६) न० बरफ (७) घणो सखत ठार (८) अतिशय ठंडी
हिमकर पु० चंद्र
हिमगिरि पु० हिमालय पर्वत
हिमगु पु० चंद्र (शीतळ किरणवाळो)
हिमगृह न० ठंडक थाय तेवा साधनोवाळो ओरडो
हिमदीधिति, हिमद्युति पु० चंद्र
हिमद्रुम पु० लीमडो
हिमद्रुह् पु० सूर्य [वरसवो ते
हिमपात पु० ठंडो वरसाद (२) बरफ
हिमरश्मि पु० चंद्र
हिमवत् वि० बरफवाळु, झाकळवाळु (२) पु० हिमालय पर्वत
हिमवत्पुर न० हिमालयनी राजधानी (औषधिप्रस्थ)
हिमवत्सुता स्त्री० पार्वती (२) गंगा
हिमवालुक पु०, **हिमवालुका** स्त्री० कपूर
हिमश्रथ पु० चंद्र [सरोवर
हिमसरस् न० ठंडु पाणी (२) बरफनु
हिमस्रुत् पु० चंद्र
हिमस्रुति स्त्री० बरफनो वरसाद
हिमागम पु० हेमंत ऋतु, शियाळो
हिमाचल पु० हिमालय
हिमाचलजा, हिमाचलतनया स्त्री० पार्वती (२) गंगा नदी
हिमाद्रि पु० हिमालय पर्वत
हिमाद्रिजा, हिमाद्रितनया स्त्री० पार्वती (२) गंगा नदी
हिमानी स्त्री० बरफनो जथ्थो–ढगलो
हिमापह पु० अग्नि (ठंडी दूर करनारो)
हिमाराति पु० सूर्य (२) अग्नि
हिमारि पु० अग्नि
हिमारिशत्रु पु० पाणी
हिमार्त वि० ठंडीथी पीडायेलु
हिमालय पु० हिमालय पर्वत
हिमालयसुता स्त्री० पार्वती [झाकळ
हिमांबु, हिमांभस् न० ठंडु पाणी (२)
हिमांशु पु० चंद्र
हिमाश्वभिख्य न० रूपु
हिमित वि० बरफ थई गयेलु
हिमोस्र पु० चंद्र
हिरण्मय वि० सोनानु (२) पु० ब्रह्मा
हिरण्य न० सोनु (२) सोनानु पात्र (३) रूपु (४) कोई पण कीमती धातु (५) समृद्धि, धन, दोलत
हिरण्यकर्तृ पु० सोनी [पिता
हिरण्यकशिपु पु० एक दानव, प्रह्लादनो
हिरण्यगर्भ पु० ब्रह्मा (२) विष्णु (३) सूक्ष्म शरीरयुक्त आत्मा
हिरण्यद पु० समुद्र
हिरण्यदा स्त्री० पृथ्वी
हिरण्यनाभ पु० मैनाक पर्वत (२) विष्णु
हिरण्यय वि० सोनानु, सुवर्णमय
हिरण्यरेतस् पु० अग्नि (२) सूर्य (३) शिव
हिरण्यव पु० देवनु द्रव्य (२) सोनानु घरेणु [भाई
हिरण्याक्ष पु० हिरण्यकशिपुनो जोडियो
हिल् ६ प० हळवु, रमवु (२) कामभाव प्रकट करवो
हिल्लोल पु० मोजु, तरंग
हिंगु पु०, न० हिंगनु वृक्ष (२) हिंग

हिंगुल, हिंगुलु पु०, न० हिंगळोक
हिंजीर पु० हाथीने पगे बांधवानु दोरडु
हिंड् १ आ० जवु, भटकवु
हिंताल पु० एक जातनो ताड
हिंदोल पु० हिंडोळो, झूलो
हिंदोलक पु०, हिंदोला स्त्री० हिंडोळो (२) पारणु
हिंस् १, ७ प०, १० उ० हणवु, मारवु (२) ईजा करवी (३) त्रास आपवो, पीडवु (४) वध करवो, कतल करवी (५) नाबूद करवु [क्रूर
हिंसक वि० ईजा करे तेवु (२) जंगली,
हिंसन न० मारी नाखवु ते
हिंसनीय वि० हिंसा करवा योग्य
हिंसा स्त्री० ईजा, त्रास, पीडा (२) हणवु ते, वध करवो ते, कतल करवी ते (३) लूट
हिंसारुचि वि० हिंसा के तोफानमां प्रीतिवाळु, ते करवाने तत्पर एवु
हिंसालु वि० हिंसक, घातक
हिंसित वि० ईजा करायेलु (२) न० ईजा, पीडा
हिंस्य वि० हिंसा करवा योग्य
हिंस्र वि० घातक, क्रूर, भयंकर; जंगली (२) पु० हिंसक पशु (३) हिंसा करनारो (४) शिव (५) भीम (६) न० क्रूरता
ही अ० आश्चर्य, थाक, खेद के शोक दर्शाववा वपरातो उद्‌गार
हीन ('हा'नु भू० कृ०) वि० त्यजेलु (२) रहित, विनानु (३) वाकात राखेलु (४) क्षीण (५) हलकु, ऊतरतु (६) नीच, दुष्ट
हीनप्रतिज्ञ वि० बेवफा
हीनवर्ण वि० हलका वर्णनु
हीनवादिन् वि० मूगु (२) खोटी साक्षी आपनारु
हीनसेवा स्त्री० हलका लोकोनी सेवा
हीनांग वि० अपंग, शारीरिक खोडवाळु
हीर पु०, न० इंद्रनु वज्र (२) हीरो
हीरक पु० हीरो [उद्‌गार
हीही अ० आश्चर्य के आनंद दर्शावतो
हु ३ प० होमवु (२) यज्ञ करवो (३) खावु
हुंड पु० घेटो (२) लोढानो सोटो-दंड
हुडु पु० घेटो
हुडुक्क पु० डमरू (२) आगळियो
हुत ('हु'नु भू० कृ०) वि० होमेलु (२) आहुति अपाई होय तेवु (३) पु० शिव (४) न० आहुति
हुतभुज्, हुतवह पु० अग्नि
हुताग्नि वि० आहुति अर्पी होय तेवु (२) पु० यज्ञनो अग्नि
हुताश, हुताशन पु० अग्नि (२) शिव
हुताशनी स्त्री० फागणनी पूनम
हुम् अ० प्रश्न, संमति, संशय, क्रोध, याद, मंत्रोक्त उच्चार, निवारण – आ अर्थो सूचवतो उद्‌गार
हुच्छंन न० कपट, कुटिलपणु
हुल् १ प० जवु (२) सताडवु
हुल पु० एक जातनु ओजार के छरी
हुलहुली स्त्री० स्त्रीओनो आनंददर्शक उद्‌गार
हुलिहुलि स्त्री० लग्न वखतनु संगीत (२) घूरकवु ते, गरजवु ते
हुहु, हूहू पु० एक गंधर्व
हुंकृ ('हुम्' एम गर्जना करवी)
हू अ० आमंत्रण, तिरस्कार, शोक अने गर्व – ए अर्थ बतावतो उद्‌गार
हूण पु० जंगली माणस, परदेशी (२) ए लोकोना देशमां प्रचलित सोनानो एक सिक्को [देशना लोको
हूणाः पु० ब० व० एक देश अथवा ते
हूत ('ह्वे'नु भू० कृ०) वि० बोलावेलु, आमंत्रेलु [ते (३) नाम
हूति स्त्री० बोलाववु ते (२) पडकारवु
हून पु० जुओ 'हूण' [उद्‌गार)
हूम् अ० जुओ 'हुम्' (गुस्सो दर्शावतो

हूहु, हूहू पु० एक गधर्व
हृ १ उ० लई जवु (२) दूर उपाडी जवु (३) लूटवु, चोरवु (४) दूर करवु, मटाडवु, नाश करवो (५) आकर्षवु, जीती लेवु; वश करवु (६) मेळववु; प्राप्त करवु (७) पाछळ पाडी देवु; चडियातु थवु (८) परणवु
हृच्छय पु० कामदेव (२) प्रेम (३) अतर्यामी
हृणिया स्त्री० ठपको (२) शरम
हृणीयते आ० (गुस्से थवु, शरमावु; शरमिंदु बनवु)
हृणीया स्त्री० जुओ 'हृणिया'
हृत् वि० (समासने अते ज) लई जतु, आकर्षतु, दूर करतु इ०
हृत ('हृ'नु भू० कृ०) वि० लई जवायेलु (२) पकडायेलु (३) आकर्षायेलु (४) स्वीकारायेलु इ०
हृतसर्वस्व वि० जेनु सर्वस्व हरी लेवायु छे तेवु [लेवायो होय तेवु
हृतसार वि० सार के उत्तम अश हरी
हृतोत्तर वि० निरुत्तर करायेलु
हृत्पिड पु०, न० हृदय
हृत्सार पु० धैर्य, धीरज
हृद् न० (प्रथम पाच रूप नथी; द्वितीया व०व० थी 'हृदय'ने बदले विकल्पे मुकाय छे) मन, हृदय (२) छाती (३) आत्मा (४) कोई पण वस्तुनु हार्द
हृदय न० ज्याथी लोही शरीरमा धकेलाय छे ते अवयव (२) हैयु, दिल, अत करण (३) छाती (४) प्रेम, स्नेह (५) कोई पण वस्तुनो अतर भाग के सार भाग (६) गुप्त विद्या; साचु के दिव्य ज्ञान (७) वेद (८) इरादो (९) अहकार
हृदयग्रंथि पु० जेना वडे आत्मा बधाय ते (अविद्या) (२) जेथी हृदयने पीडा थाय ते
हृदयग्राहिन् वि० हृदयने आकर्षे तेवु
हृदयज्ञ वि० हृदयनी गुप्त वात जाणनारु
हृदयदौर्बल्य न० हृदयनी दुर्बळता
हृदयप्रमाथिन् वि० हृदयने मथी नाखे –फाडी नाखे तेवु
हृदयप्रस्तर वि० क्रूर; क्रूर हृदयनु
हृदयवेधिन् वि० हृदय वीधी नाखे तेवु
हृदयशल्य न० हृदयनो घा; हृदयमा वागेलो काटो (२) तेना जेवी पीडा करतो हृदयनो रोग
हृदयसंमित वि० छाती जेटलु ऊचु
हृदयस्थ वि० हृदयमा रहेलु, हृदयमा सघरेलु
हृदयंगम वि० हृदयने स्पर्शे–कपावे तेवु (२) सुदर (३) आकर्षक; मधुर (४) उचित (५) प्रिय [हृदयवाळु
हृदयालु वि० कोमळ हृदयनु; मायाळु
हृदयेश, हृदयेश्वर पु० पति
हृदय्य वि० हृदयने प्रिय [भमरो
हृदावर्त पु० घोडानी छाती पर वाळनो
हृद्गत वि० हृदयमा – मनमा रहेलु; चितवेलु (२) न० इरादो
हृद्देश पु० हृदयस्थान; हृदयनो भाग
हृद्रोग पु० हृदयनो रोग (२) शोक, चिंता (३) प्रेम
हृद्य वि० हृदयपूर्वक होय तेवु (२) प्रिय (३) आह्लादक, रम्य (४) मायाळु (५) भावे तेवु, रुचिकर [दु खावो
हृल्लेख पु० ज्ञान (२) तर्क (३) हृदयनो
हृल्लेखा स्त्री० चिंता; अफसोस
हृष् १, ४ प० हर्ष पामवो (२) रोमाच खडा थवा
हृषित ('हृष्'नु भू० कृ०) वि० प्रसन्न –खुश–हर्षित थयेलु (२) रोमाच खडा थया होय तेवु
हृषीक न० इद्रिय [स्वामी)
हृषीकेश पु० कृष्ण; विष्णु (इद्रियोनो
हृष्ट ('हृष्'नु भू० कृ०) वि० आनंदित, हर्षित (२) रोमाचित
हृष्टचित्त, हृष्टमनस्, हृष्टमानस वि० प्रसन्न; खुश थयेला अतरवाळु

हृष्टरूप वि० खुशीमा आवी गयेलु; खुशमिजाज
हृष्टि स्त्री० आनद, सुख, प्रसन्नता
हे अ० सबोधन, आह्वान, मत्सर, असमति –ए अर्थ दर्शावतो उद्‌गार
हेक्का स्त्री० हेडकी
हेड् १ आ० अवगणवु, तिरस्कारवु (२) १ प० वीटवु, घेरवु (३) पहेरवु
हेति पु०, स्त्री० शस्त्र, आयुध (२) प्रहार (३) सूर्यकिरण (४) प्रकाश, तेज (५) ज्वाळा (६) साधन, ओजार
हेतु पु० कारण, प्रयोजन, निमित्त (२) मूळ, उत्पत्तिस्थान (३) अनुमान करवानु तार्किक कारण (४) तर्कशास्त्र (५) ससार, प्रपच (जीवात्माना बधनु कारण) (६) किंमत, मूल्य
हेतुक वि० उत्पन्न करतु (समासने अते) (२) पु० कारण (३) साधन (४) तर्कशास्त्री
हेतुगर्भ वि० सकारण, सहेतुक
हेतुदुष्ट वि० तर्कसगत नहि एवु
हेतुना अ० –ने कारणे, –ना हेतुथी
हेतुवाद पु० वादविवाद, चर्चा (२) कपट (३) शकाशीलता के नास्तिकताथी तर्क उठाववो ते
हेतोः अ० –ना कारणथी
हेत्वाभास पु० भ्रामक हेतु (न्याय०)
हेम, हेमक न० सोनु
हेमकुभ पु० सोनानो घडो
हेमकूट पु० एक पर्वत
हेमकेश पु० शकर
हेमगिरि पु० सुमेरु पर्वत
हेमन् न० सोनु (२) धतूरो
हेममालिन् पु० सूर्य
हेमल पु० सोनी (२) कसोटीनो पथ्थर
हेमसूत्र, हेमसूत्रक न० गळानु एक घरेणु
हेमत पु०, न० छ ऋतुओमानी एक, ठडीनी ऋतु (मार्गशीर्ष अने पोष ए बे महिना)
हेमाद्रि पु० सुमेरु पर्वत
हेमाह्वि पु० जगली चपो (२) धतूरो
हेमांक वि० सोनाथी सुशोभित
हेमांग वि० सोनानु
हेमाभोज, हेमांभोरुह न० सोनेरी कमळ
हेय वि० त्याज्य
हेर न० एक जातनो मुगट (२) हळदर (३) आसुरी माया
हेरक पु० जासूस, गुप्तचर
हेरंब पु० गणेश
हेरंबजननी स्त्री० पार्वती
हेरिक पु० जासूस, गुप्तचर
हेरुक पु० रुद्रनो एक गण (२) गणेश
हेल् १ आ० अवज्ञा करवी
हेलन न०, हेलना स्त्री० अवहेलना; तिरस्कार
हेला स्त्री० अवज्ञा, तिरस्कार (२) शृंगारचेष्टा, विलास (३) आनद, लीला (४) उत्कट कामवासना (५) अनायास, सरळता, सहेलाई (६) चादनी
हेलि पु० सूर्य (२) स्त्री० शृंगारचेष्टा; विलास (३) आलिंगन (४) वरघोडो
हेवाक पु० इतेजारी, आतुरता
हेवाकिन् वि० आतुर, इतेजार
हेष् १ आ० हणहणवु, गर्जवु
हेष पु०, हेषा स्त्री०, हेषित न० घोडानु हणहणवु ते, हणहणाट
हेषिन् पु० घोडो
हैडिब, हैडिबि पु० घटोत्कच, हिडिबा अने भीमनो पुत्र
हैतुक पु० तर्क करनारो, बुद्धिवादी (२) नास्तिक
हैम वि० ठडीने लगतु, ठडु (२) हिमथी थयेलु (३) सोनानु बनेलु (४) सोनेरी रगनु (५) पु० शिव (६) न० हिम, झाकळ
हैमन वि० ठडु, ठडीने लगतु (२) हेमत ऋतु सबधी (लाबु, जेम के रात्रि)

(३) शियाळामा थतु; शियाळाने लगतु (४) सोनानु, सोनानु बनेलु (५) पु० हेमंत ऋतु
हैममुद्रा, हैममुद्रिका स्त्री० सोनामहोर
हैमवत वि० बरफवाळु (२) हिमालय पर्वतमाथी नीकळतु (३) हिमालयमां रहेतु, हिमालय संबंधी (४) न० भारत
हैमवतिक वि० हिमालयमा रहेतु
हैमवती स्त्री० पार्वती (२) गंगा
हैमंत, हैमंतिक वि० शियाळानु, ठंडु (२) हेमंत ऋतुमा थतु, हेमंत ऋतु संबंधी (३) न० एक प्रकारना चोखा
हैयगव, हैयंगवीन न० आगला दिवसना दूधनु घी (२) ताजु माखण
हैरण्य वि० सोनानु, सोनानु बनेलु
हैरण्यवासस् वि० सोनाना पीछावाळु (जेम के बाण)
हैरिक पु० चोर
हैहय पु० यदुराजानो प्रपौत्र, सहस्रार्जुन
हैहयाः पु० ब० व० एक देशनु नाम, ते देशना लोकोनु नाम
हो अ० आह्वान, संबोधन, के आश्चर्य –ए अर्थमा वपरातो उद्गार
होड् १ आ० अनादर करवो
होड पु० तरापो, होडी
होढ न० चोरायेलो माल
होतृ वि० होम करनार (२) पु० यज्ञ वखते ऋग्वेदनी ऋचाओ गानारो पुरोहित (३) होम–यज्ञ करनारो (४) अग्नि
होत्र न० आहुति (२) यज्ञ
होत्रा स्त्री० स्तुति (२) ऋत्विज
होत्रिन् पु० होम करनारो ऋत्विज
होत्री स्त्री० होम करनार (शिवना आठ स्वरूपोमानु एक)
होम पु० अग्निमा होम करीने देवोने आहुति अर्पवी ते (२) आहुति (३) यज्ञ
होमतुरंग पु० यज्ञनो घोडो
होमधेनु स्त्री० आहुति माटे दूध आपनारी गाय
होम्य न० घी (२) होम द्रव्य
होरा स्त्री० राशिनो उदय (२) राशि के लग्ननो अर्धो भाग (३) अढी घडी; कलाक (४) जन्मकुंडळी के ते परथी भविष्य भाखवानी विद्या [पोंक
होलक पु० ओळा, चणाना पोपटानो
होलाका, होलिका, होली स्त्री० होळीनो उत्सव (२) फागण सुद पूनम
ह्नु २ आ० लई लेवु, लूटी लेवु (२) छुपाववु, संताडवु (३) संताई जवु
ह्यस् अ० गई काले, काले
ह्यस्तन वि० गई कालनु [खाडो
ह्रद पु० धरो, ऊंडु सरोवर (२) ऊंडो
ह्रदिनी स्त्री० नदी (२) वीजळी
ह्रस् १ प० अवाज करवो (२) क्षीण थवु, अदृश्य थवु
ह्रसित ('ह्रस्'नु भू० कृ०) वि० अवाज करेलु (२) टूंकु करेलु
ह्रसिष्ठ वि० सौथी अल्प ('ह्रस्व'नु श्रेष्ठत्वादर्शक रूप)
ह्रसीयस् वि० (बेमा) वधारे अल्प ('ह्रस्व'नु तुलनात्मक रूप)
ह्रस्व वि० अल्प, थोडु (२) वामणु; नीचु (३) टूंकु [करवी
ह्राद् १ आ० अवाज करवो, गर्जना
ह्राद पु० घोंघाट, अवाज, गर्जना
ह्रादिनी स्त्री० इंद्रनु वज्र (२) नदी (३) वीजळी
ह्रास पु० अवाज, घोंघाट (२) घटवु ते, क्षीणता (३) नानी संख्या (४) अछत
ह्रिणीयते आ० जुओ 'हृणीयते'
ह्रिणीया स्त्री० निंदा, ठपको (२) शरम; लज्जा
ह्री ३ प० शरमावु, विनय देखाडवो –प्रेरक० शरमिंदु करवु
ह्री स्त्री० शरम, लज्जा
ह्रीण, ह्रीत ('ह्री'नु भू० कृ०) वि० शरमावेलु

ह्रीति स्त्री० शरम, लज्जा
ह्रीनिषेव वि० शरमाळ
ह्रीपद न० शरमनु कारण
ह्रीमूढ वि० शरमथी विह्वळ बनी गयेलु
ह्रीयंत्रणा स्त्री० शरमनो सकोच
ह्रीवेर, ह्रीवेल न० एक प्रकारनी सुगधी, (वीरणनो वाळो)
ह्रेपण न० शर्मिंदु करवु ते(२) मूझवण [पाडी दीधेलु
ह्रेपित वि० शर्मिंदु करेलु(२)पाछळ
ह्रेष् १ आ० हणहणवु [हणाट
ह्रेषा स्त्री०, ह्रेषित न० घोडानो हण-
ह्लाद् १ आ० आनद पामवु (२)अवाज करवो (३) आनददायक नीवडवु
ह्लाद, ह्लादक पु० आह्लाद; आनद
ह्लादन न० आनद पामवु ते(२)आनद आपवो ते
ह्लादित वि० आनद पामेलु
ह्लादिन् वि० आनद आपतु (२) मोटा अवाजवाळु
ह्वल् १ प० जवु (२) हालवु; ध्रूजवु (३) ठोकर खावी, गबडवु
–प्रेरक० ध्रुजाववु; हलाववु
ह्वान न० बोलाववु ते(२)अवाज; बूम (३)पडकार(युद्ध माटे)
ह्वे १ उ० बोलाववु, नाम दईने बोलाववु(२)पडकारवु(३)हरीफाई करवी (४) याचवु

परिशिष्ट १ : विशेषनाम-सूची

[व्यक्तिओ तथा स्थळो वगेरेनां विशेषनाम]

अकंपन पुं० एक राक्षस, रावणनो दूत.

अगस्ति, अगस्त्य पु० एक प्रख्यात ऋषि; मित्रावरुणना पुत्र ऊचा विंध्य पर्वतने आडो पाडी, ओळगीने दक्षिण तरफ गया. दक्षिण तरफ आर्य सस्कृति लई जनार ते प्रथम पुरुष गणाय तेमनी पत्नीनु नाम लोपामुद्रा समुद्रमा रहेनारा कालकेय राक्षसनो समुद्र पी जईने तेमणे नाश करेलो

अघ पु० कसना पक्षनो असुर; श्रीकृष्णे तेनो वध कर्यो हतो.

अज पु० सूर्यवशी राजा; रघुनो पुत्र अने दशरथनो पिता. तेनी राणीनु नाम इदुमती, जेना अणधार्या मृत्युथी अजे करेलो विलाप कालिदासे 'रघुवश' महाकाव्यमा वर्णव्यो छे

अजामिल पु० कान्यकुब्जनो एक ब्राह्मण पछी एक शूद्र स्त्रीनी लते चडी गयो हतो मरती वखते तेना पुत्र नारायणने बोलाववा जता तेने भगवाननु नाम याद आव्या जेवु थयु अने ते सुधरी गयो

अत्रि पु० एक प्रजापति, सप्तर्षिमाना एक, अनसूया तेमना पत्नी, दत्तात्रेय तेमना पुत्र

अदिति स्त्री० दक्षना पुत्री, कश्यपना पत्नी, विष्णु-इद्र वगेरे देवोना माता. बार आदित्यो तेमना पुत्र

अनसूया स्त्री० अत्रिऋषिना पत्नी; दत्तात्रेय-दुर्वासाना माता, महा पतिव्रता तथा तपस्विनी गणाय छे ब्रह्मा-विष्णु-महेश पोतानी पत्नीओना कहेवाथी तेमना पतिव्रतापणानी परीक्षा लेवा आव्या; त्यारे तेमणे तेमने बाळक बनावी दीधा हता.

अनंतशयन न० त्रावणकोर; श्रीरगपट्टन. (अनत - शेषनाग उपर सूतेला विष्णुना मदिरोनु धाम)

अनिरुद्ध पु० श्रीकृष्णना पुत्र प्रद्युम्ननो पुत्र, बाणनी पुत्री उषा (ओखा) नी साथे गुप्त रीते लग्न करेलु

अनुराधपुर न० सिलोननी प्राचीन राजधानी. बुद्धगयाथी बोधिवृक्षनी डाळी लावीने अशोकना पुत्र महिदे अही रोपेली.

अनूपदेश पु० नर्मदा नदी उपर आवेलो प्रदेश, दक्षिण माळवा, हैहय, महिष, अने माहिषक नामे पण ओळखाय छे राजधानी माहिष्मती सहस्रार्जुन तेनो राजा हतो

अपरात पु० उत्तर कोकण शूर्पारक तेनी राजधानी. अशोकनो एक शिलालेख आ भागमा ताजेतरमा मळी आव्यो छे.

अप्पय्य दीक्षित पु० अलकार विषेना ग्रथ 'कुवलयानद'ना कर्ता दक्षिण हिंदमा जन्मेला, १७ मा सैकाना पूर्वार्धमा थई गया

अभिमन्यु पु० अर्जुन अने सुभद्रानो पुत्र विराट राजानी पुत्री उत्तराने परणेलो परीक्षित तेनो पुत्र. महाभारतना युद्ध वखते कौरवोनो चक्रव्यूह तेणे एकलाए भेद्यो खरो; पण पछी कौरवपक्षी छ वळियाओए भेगा थई तेने हण्यो.

अमरकंटक पु० एक पर्वत. नर्मदा नदी

तेमाथी नीकळे छ. गोंडवननी मेकल पर्वतमाळानो भाग छे. 'मेघदूत'ना १७ मा श्लोकमा वर्णवेल आम्रकूट आ हशे.

अमरसिंह पु० प्रसिद्ध कोशकार विक्रमादित्यना दरबारना नव रत्नोमानो एक गणाय छे. ते जैन हतो. पाचमा सैकामा थई गयो. तेना प्रसिद्ध 'अमरकोश'मा आशरे १५९२ अनुष्टुप छदना श्लोको छे अने सस्कृत भाषाना २५००० शब्दोनो अर्थ ते आपे छे

अमरु, अमरुक, अमरू पु० 'अमरुशतक'नो कर्ता. आठमा सैकानो आनदवर्धन तेनो उल्लेख करे छे शकराचार्य कामशास्त्र शीखवा ते राजाना मृत शरीरमा पेठा हता एम कहेवाय छे.

अरट्ट पु० जुओ 'आरट्ट'

अरुण पु० कश्यप-विनतानो पुत्र सूर्यनो सारथि. गरुडनो मोटो भाई सपाति अने जटायुनो पिता प्रसवकाळ पहेला जन्म्यो होवाथी तेने चरण नहोता

अरुंधती स्त्री० वसिष्ठनी पत्नी. कर्दमनी पुत्री पतिव्रतापणाना आदर्शरूप गणाय छे लग्नविधि वखते सप्तर्षिमाना वसिष्ठना तारा पासे आवेला अरुधतीना तारानु दर्शन तेथी वरवहुने कराववामा आवे छे

अर्जुन पु० (१) कार्तवीर्य, सहस्रार्जुन परशुरामे तेने हणेलो (२) पाच पाडव पैकी कुतीना त्रण पुत्रोमानो त्रीजो कुतीने इद्रथी प्राप्त थयेलो गाडीवधारी श्रीकृष्णे तेना सारथि थईने महाभारतना युद्ध वखते गीता उपदेशेली.

अलकनंदा स्त्री० (१) हिमालयमा आवेल वसुधारामा आ नदीनु मूळ छे. गगाने मळे छे (२) गगा नदीनु नाम.

अलिंद पु० पूर्व तरफनो देशविशेष.

अवंति(–ती) स्त्री० आजनु उज्जयिनी हिंदुओना सात पवित्र नगरोमानु एक त्या मरवाथी मोक्ष प्राप्त थतो मनाय छे (अयोध्या - मथुरा - माया- काशी - काचि - अवतिका - द्वारावती.) मालवदेश (माळवा)नी राजधानी

अश्मक पु० आ प्राचीन देश क्या आव्यो हशे ते चोक्कस कही शकातु नथी. अशोकना वखतमा ते महाराष्ट्रनो भाग हतो बौद्धो जेने अस्सक कहे छे ते गोदावरी अने माहिष्मतीनी वच्चे नर्मदा नदी उपर आव्यो; तेनी राजधानी प्रतिष्ठान

ते त्रावणकोरनु प्राचीन नाम पण छे.

अश्वघोष पु० बौद्ध लेखक ईसवी सनना प्रथम सैकामा थयो हशे 'बुद्धचरित' तेनो जाणीतो ग्रथ

अश्वत्थामन् पु० द्रोणाचार्यनो पुत्र. चिरजीवी गणाय छे पाडवोना सूतेला पाच पुत्रोने तेणे मारी नाख्या हता तेथी थयेला युद्ध वखते तेणे ब्रह्मास्त्र छोडयु हतु

अश्वपति पु० (१) सावित्रीनो बाप, मद्रदेशनो राजा (२)कैकेयीनो पिता

अश्विनीकुमार पु० सूर्यने सज्ञाथी थयेला जोडका पुत्रो देवोना वैद्य तरीके प्रसिद्ध छे

अष्टावक्र पु० कहोड ऋषिनो पुत्र पिताए गुस्से थई शाप आपवाथी आठ अगे वाको जन्म्यो हतो

असिक्नी स्त्री० पजाबनी एक नदी— चिनाब.

अहल्या स्त्री० गौतम ऋषिनी पत्नी. इन्द्रे छेतरी तेनु पातिव्रत्य नष्ट कर्यु होवाथी शाप पामी ते शल्या बनी गई हती रामे तेनो पाछो उद्धार कर्यो.

अहिच्छत्रा स्त्री० द्रुपद राजानी नगरी.

उत्तर पचाल (रोहिलखड) -नी राजधानी

अंगद पु० (१) वालिनो पुत्र. रामे तेने रावणने त्या विष्टि करवा मोकल्यो हतो (२) दशरथ-पुत्र लक्ष्मणनो पुत्र

अंगिरस् पु० ब्रह्माना १० मानस पुत्रोमाना एक, सप्तर्षिमाना एक, बृहस्पतिना पिता

अंजना स्त्री० केसरी वानरनी पत्नी; हनुमाननी माता मरुत् देव (पवन) तेने देखी मोहवश थई गया हता, पण ते तेमने वश न थई पछी मात्र मरुत् देवनी कामेच्छाथी ज तेने पवनना जेवो बळवान पुत्र थयो. हनुमान तेथी मारुति पण कहेवाय छे.

अंतर्वेदि (–दी) स्त्री० गगा-यमुना वच्चेनो, प्रयागथी हरद्वार सुधीनो पवित्र प्रदेश

अंधक पु० (१) एक असुर तेने हजार माथा हता स्वर्गमाथी पारिजात वृक्ष हरी जवा गयो त्यारे शिवे तेने मार्यो हतो (२) यदुनो वशज अने श्रीकृष्णनो पूर्वज तेना भाई वृष्णि साथे ते अधक-वृष्णिओना प्रसिद्ध कुळनो पूर्वज गणाय

अंध्र पु० आजनो तेलगण प्रदेश. पश्चिमे घाट, उत्तरे गोदावरी, दक्षिणे कृष्णा.

अबरीष पु० मनुवैवस्वतनो पौत्र अने नाभागनो पुत्र मोटो विष्णुभक्त गणाय छे (२) सगरनो वशज अने दशरथनो पूर्वज, त्रिशकुनो पुत्र

अबष्ठ पु० तक्षशिलानी पूर्वे आवेलो प्रदेश तथा तेना वतनी आजनो लाहोर तरफनो प्रदेश.

अंबा स्त्री० काशीराजानी पुत्री. तेनी बे बहेनो साथे भीष्म तेने विचित्रवीर्य साथे परणाववा हरी लावेला, पण तेनी सगाई शाल्वराज साथे थयेली होवाथी भीष्मे तेने पाछी मोकली, पण ते राजाए बीजाने घेर गयेली तेने स्वीकारवा ना पाडी, भीष्मे पण पोताना ब्रह्मचर्यव्रतने कारणे तेनी साथे परणवा ना पाडी आथी भीष्मनु वेर वाळवा तेणे शिवने आराध्या बीजे जन्मे ते शिखडी तरीके भीष्मना मृत्युनु कारण थई

अंबालिका स्त्री० (जुओ अबा) काशी राजानी त्रीजी कन्या, पाडुनी माता

अंबिका स्त्री० (जुओ अबा) काशी राजानी बीजी कन्या, धृतराष्ट्रनी माता

आनर्त पु० (१)वैवस्वत मनुनो पौत्र, शर्यातिनो पुत्र, एक सूर्यवशी राजा (२)हालनु सौराष्ट्र,द्वारका (आनर्त नगरी) तेनी राजधानी, पछी वलभी तेनी राजधानी बन्यु प्रभास-तीर्थ तेमा आव्यु.

आनर्तपुर, आनंदपुर न० उत्तर गुजरातनु आजनु वडनगर ह्युएनत्सागे तेनी मुलाकात लीधी हती

आपगा स्त्री० मद्र देशनी एक नदी; आजनी अयक, तेने काठे शाकल नगर आव्यु हतु

आभीर पु० भारतना पश्चिम किनारा उपरनो देश (तापीथी देवगढ सुधीनो), गुजरातनो दक्षिण-पूर्व प्रदेश आ प्रदेश चोक्कस क्या आव्यो ते कहेवातु नथी महाभारतमा (२.३१) जणाव्या प्रमाणे आभीरो दरिया किनारा नजीक अने सरस्वती (सोमनाथ-गुजरात नजीकनी)नदीने किनारे रहेता हता एक श्लोकमा जणाव्यु छे के कोकणनी दक्षिणे, तापीना पश्चिमी किनारे विंध्य पर्वतमा आभीर देश छे

आरट्ट पु० पंजावनी उत्तर-पूर्वमा आवेलो देश; तेना घोडाओ माटे जाणीतो. (रावळपिंडीमा गुजरातना लोको हजु पोताना देशने हैरत के ऐरत देश कहे छे.)

आरण्य, आरण्यक पु० उज्जैन अने विदर्भनी दक्षिणे आवेलो देश, तगर तेनी राजधानी.

आर्जीकीया स्त्री० विपाशा नदी (पजाबनी वियास)

आर्यभट्ट पु० प्रसिद्ध ज्योतिषी. जन्म ई० स० ४७६. तेमनो प्रसिद्ध ग्रथ 'आर्यसिद्धात' उच्च गणितने आधारे रचायो छे.

आर्यावर्त पु० पूर्व अने पश्चिम समुद्र वच्चेनो, तथा उत्तरे हिमालय अने दक्षिणे विंध्य पर्वतनी वच्चेनो प्रदेश; आर्योनु रहेठाण आर्यावर्त अने दक्षिणापथनी वच्चे नर्मदा नदी सरहद रूप

इक्षुमती स्त्री० कालिंदी नदी. रोहिलखडना कुमाऊमा थईने अने कनोज प्रदेशमा थईने वहेती.

इक्ष्वाकु पु० सूर्यवशनो प्रथम राजा; वैवस्वत मनुनो पुत्र

इरावती स्त्री० पजावनी रावी नदी.

इंदुमती स्त्री० अजराजानी पत्नी. दशरथनी माता

इंद्रजित् पु० रावणनो पुत्र, महापराक्रमी योद्धो छवटे लक्ष्मणने हाथे मरायो

इंद्रप्रस्थ न० यमुनाने डावे काठे आवेलु प्राचीन नगर, युधिष्ठिरनी राजधानी. अत्यारनु जूनु दिल्ही (जोके जमणे किनारे छे) ए नगरना स्थान तरीके गणावाय छे

उग्रसेन पु० मथुरानो राजा, कसनो पिता

उज्जयंत पु० रैवतक पर्वत; आजनो गिरनार

उज्जयिनी स्त्री० माळवामा आवेल आजनु उज्जैन; विक्रमादित्यनी राजधानी हिन्दुओनी सात पवित्र नगरीओमानी एक ('अवति'); हिंदुओनु प्रथम याम्योत्तर वृत्त त्याथी पसार थाय छे

उत्कल पु० आजनु ओरिसा (ताम्रलिप्तनी दक्षिणे अने कपिशा नदी सुधी विस्तरेलो प्रदेश) कटक अने पुरी तेना मुख्य शहेर छे. कलिंगनो उत्तरनो भाग पण ते कहेवातु ('उत्कलिङ्ग'); वैतरणी नदी तेनी उत्तरनी हद.

उत्तर पु० विराट राजानो पुत्र

उत्तरकुरु पु० जगतना नव विभागोमानो एक. हिमालयनी पेली बाजुए आवेलो मनाय छे तथा त्यां नित्यसुख प्रवर्ते छे एम कहेवाय छे.

उत्तरकोसल पु० अयोध्याप्रात.

उत्तरपंचाल पु० रोहिलखड.

उत्तरा स्त्री० विराट राजानी पुत्री; अभिमन्युनी पत्नी

उत्तानपाद पु० ध्रुवनो पिता

उदयन पु० वत्सदेशनो राजा उज्जयिनीनो राजा चडमहासेन तेने पोताना नगरमा ठगीने लई आव्यो, पण उदयन पोताना प्रधाननी मददथी चडमहासेननी पुत्री वासवदत्ता साथे नासी छूटयो पछी राजकीय कारणोथी मगधना राजा प्रद्योतनी पुत्री पद्मावती साथे पण तेनु लग्न गोठववामा आव्यु तेनी राजधानी कौशावी.

उर्वशी स्त्री० बदरिकाश्रममा तप करता नर-नारायणने लोभाववा इद्रे अप्सराओ मोकली; त्यारे नारायणे पोताना उरुमाथी उर्वशीने पेदा करी, जेने जोईने पेली अप्सराओ शरमाई गई एक वार शाप पामी उर्वशी पृथ्वी उपर आवी त्यारे पुरूरवाना प्रेममा पडी अने तेनी पत्नी तरीके रही.

उलूपी स्त्री० नागकन्या; अर्जुन गगामा स्नान करतो हतो त्यारे तेने जोई मोहित थई ने तेने पाताळमा खेंची गई अर्जुनथी तेने एक पुत्र थयो - इरावान्

उशनस् पु० दैत्योना आचार्य, तेमने काव्य के शुक्राचार्य पण कहे छे

उशीनर पु० (१) कदहार देश (२) भोज देशनो राजा, शिबिनो पिता.

उषा स्त्री० बाणासुरनी पुत्री; अनिरुद्धनी पत्नी (जुओ अनिरुद्ध)

ऊर्मिला स्त्री० जनकनी औरस पुत्री; दशरथपुत्र लक्ष्मणनी पत्नी

ऋक्षवत् पु० जुओ 'ऋष्यवत्'

ऋतुपर्ण पु० इक्ष्वाकु वशनो एक राजा. नळराजा बाहुक रूपे तेने त्या रहेला. नळ तेमनी पासेथी पोतानी अश्वविद्याना बदलामा अक्षविद्या - जूगटु रमवानी विद्या शीखेलो.

ऋषिक पु० काबोजनी उत्तरे आवेलो एक देश.

ऋष्यमूक पु० पपा सरोवर पासे मतग पर्वतनु शिखर वालिथी छुपातो सुग्रीव त्या रहेतो हतो. तुगभद्राने काठे अणगुदीथी आठ माईल दूर छे.

ऋष्यवत् पु० सात कुलाचल पर्वतोमानो एक. नर्मदा किनारे (रेवा प्रात) आवेलो

ऋष्यशृग पु० विभाडक मुनिना पुत्र; जगलमा ज ऊछर्या होई तेमणे कदी स्त्री जोई न हती अगदेशना लोमपाद राजाए पोताने त्याथी अनावृष्टि दूर करवा तेमने एक वेश्या द्वारा लोभावी पोताना राज्यमा आण्या. दशरथ राजाने तेमणे सतान माटे यज्ञ करावेलो

एकलव्य पु० निषाद राजानो पुत्र; क्षत्रिय सिवाय बीजाने धनुर्विद्या न शीखवता द्रोणाचार्यनी मूर्तिनी स्थापना करी तेणे धनुर्वेद साध्यो. पछी क्षत्रियोने कनडे नहि ते माटे गुरुदक्षिणा तरीके द्रोणाचार्ये तेनो अगूठो मागी लीधो.

ओघवती स्त्री० सरस्वतीना सात प्रवाहोमानो बीजो, तेनी पासे ज महाभारतनु युद्ध थयेलु.

ककुत्स्थ पु० सूर्यवशी राजा; इक्ष्वाकुनो पौत्र. असुरो सामेनी लडाईमां इद्रे तेने मददे बोलावेलो पछी इद्रे साढनु रूप लई तेने पोतानी खूध उपर सवारी करावी, अने तेणे असुरोने हराव्या तेथी ते (ककुद्) खूध उपर सवारी करनार (स्थ) कहेवाय छे तेनी पछी बधा सूर्यवशी राजाओ 'काकुत्स्थ' नामे पण ओळखाय छे

कच पु० देवोना गुरु बृहस्पतिनो पुत्र; असुरोना आचार्य शुक्राचार्य पासे सजीवनी विद्या शीखवा रहेलो. शुक्राचार्यनी पुत्री देवयानी तेना प्रेममा पडेली, तेणे अनेक वार कचने असुरोना रोषमांथी बचावरावेलो

कणाद पु० वैशेषिक दर्शनना प्रवर्तक एक ऋषि (तेमना दर्शनने 'कणअणुनो वाद' कही शकाय)

कण्व पु० कश्यपना कुळमा उत्पन्न थयेल एक ऋषि मालिनी नदी तीरे तेमनो आश्रम, शकुतलाने तेमणे उछेरेली.

कद्रू स्त्री० कश्यपनी पत्नी, सर्पोनी माता, शेष, वासुकि, कर्कोटक, तक्षक, अनत इ० तेना पुत्रो

कनखल न० एक तीर्थ, हरद्वारथी बे माईल दूर आवेलु छे

कपिल पु० साख्य शास्त्रना प्रवर्तक मुनि कर्दम-देवहुतिना पुत्र सगरना अश्वमेधना अश्वने शोधवा नीकळेला ६० हजार पुत्रोने तेमणे बाळी नाखेला.

कपिलवस्तु न० बुद्धनु जन्मस्थान; उत्तर प्रदेशना बस्ति जिल्लाना उत्तर-पश्चिम भागमा आवेल भुइल ते छे एम गणाय छे

कपिशा स्त्री० (१) काबुल नदीनी उत्तरनो प्रदेश पाणिनी जेने कापिशी कहे छे ते; उत्तर अफघानिस्तान (२) ओरिसानी सुवर्णरेखा नदी. (३) बगाळना मिदनापुर जिल्लामाथी वहेती कासाई नदी (जुओ 'सुह्म').

कयाधु स्त्री० हिरण्यकशिपुनी स्त्री; प्रह्लादनी माता.

करतोया स्त्री० 'सदानीरा' पण कहेवाय छे रगपुर, दिनाजपुर अने बोगरा जिल्लाओ वच्चे थईने वहेती पवित्र नदी बगाळ अने कामरूप ए बे राज्यो वच्चेनी सरहद

करूष पु० अयोध्या अने मिथिला ए बेनी वच्चेनो देश.

कर्ण पु० कुतीने लग्न पहेला सूर्यथी थयेलो पुत्र धृतराष्ट्रना अधिरथ नामना सारथिए तथा तेनी पत्नी राधाए उछेरेलो तेथी ते 'सूतपुत्र' के 'राधेय' नामे पण ओळखाय छे.

कलिंग पु० ओरिसानी दक्षिणे गोदावरीना मुख सुधी विस्तरतो प्रदेश ब्रिटिश अमल हेठळना उत्तर सरकार. कलिंगनगर तेनी राजधानी— दरियाकिनाराथी थोडी दूर आवी हती. कदाच आजनी राजमहेन्द्री होय.

कल्हण पु० 'राजतरगिणी' नो कर्ता. काश्मीरना जयसिंह राजा (११२९–११५०)नो समकालीन ए ग्रथमां काश्मीरना घणा राजाओनी माहिती मळे छे

कश्यप पु० कर्दमपुत्री कळाथी मरीचिने थयेल पुत्र दक्षनी १३ पुत्रीओ— अदिति, दिति, दनु, सिंहिका, विनता, कद्रु इ० ने परण्या. देव, दैत्य, दानव, सर्प इ० पुत्रो तेमनाथी थया.

कंबोज पु० जुओ 'काबोज'.

कंस पु० यादववर्गीय उग्रसेन राजानो पुत्र, मथुरानो राजा तेनी बहेन (काकानी दीकरी) देवकी श्रीकृष्णना पिता वसुदेवने परणावेली. जरासधनी कन्या बेने ते परणेलो

कान्यकुब्ज पु० कनोज काली नदीने किनारे गाधिराजानी राजधानी अने विश्वामित्रनु जन्मस्थान पछी घणा राज्योनी राजधानी बनेलु

काम पु० कामदेव, तेनी पत्नी रति. शिवने पार्वती तरफ मोहित करवा प्रयत्न करवा जता शिवे तेने त्रीजु लोचन उघाडी भस्मीभूत करेलो पछी ते श्रीकृष्णना पुत्र प्रद्युम्न तरीके जन्म्यो वसत ऋतु तेनो मित्र गणाय छे; अने ते पाच फूलरूप बाणोवाळो 'पचशर' गणाय छे

कामधेनु स्त्री० समुद्रमथन वखते नीकळेला चौद रत्नोमानु एक ते वसिष्ठने त्या रहेती इच्छित वस्तु ते आपती.

कामरूप पु० आसाम करतोया नदीथी आजना आसामना छेडा सुधी विस्तरेलु राज्य उत्तरे हिमालय अने पूर्वमा चीननी सरहद सुधी ते विस्तर्यो हशे. तेनो राजा दुर्योधनी मददे किरातो अने चीन लोकोनु सैन्य लईने आवेलो. तेनी प्राचीन राजधानी 'प्राग्ज्योतिष'. ('लौहित्य' अथवा ब्रह्मपुत्रानी बीजी बाजुए)

कामाख्या स्त्री० आसामनु गौहत्ति. तेने प्राग्ज्योतिषपुर गणवामा आवे छे.

काम्यक वन न० इद्रप्रस्थनी पश्चिमे सरस्वती नदीने किनारे आवेलु वन. पाडवो वनवास दरम्यान त्या घणा

दिवस रह्येला. आ वन कुरुजागल देशमा आवेलु गणातु

कार्तवीर्य पु० एक यदुवशी राजा तेने हजार हाथ दत्तात्रेयनी कृपाथी मळेला. माहिष्मती तेनी राजधानी. परशुरामे तेने पोताना पितानी गाय हरवा बदल मारेलो तेनु 'अर्जुन' के 'सहस्रार्जुन' नाम पण जाणीतु छे. ते न्याय अने धर्मथी राज्य करतो एम प्रसिद्ध छे

कार्तिकेय पु० शिवना पुत्र शिवनु वीर्य अग्निमा नाखेलु ते झीली न शक्यो तेथी तेणे तेने गगामा नाख्यु (शर-वरुना झूडमा ते पड्यु होवाथी कार्तिकेयनु नाम 'शरजन्मन्' पण छे) त्याथी ते वीर्य ६ कृत्तिकाओ गळी गई; तेमणे दरेके एक एक पुत्रने जन्म आप्यो; पण पछी ते बधानी एक आकृति थता छ माथा अने बार हाथवाळी आकृति थई तेथी कार्तिकेय षण्मुख कहेवाय छे. ते देवोना सेनानी छे, अने तारकासुरनो तेमणे नाश करेलो तेमनु वाहन मोर

कालकवन न० बिहारनी राजमहल टेकरीओ आर्यावर्तनी पूर्वनी हद आनाथी बधाती

कालकेय पु० एक असुर वृत्रासुरने इद्रे मार्यो त्यारे ते समुद्रमा छुपाई गयो रात्रे बहार नीकळी सौने त्रास आपतो अगस्त्ये समुद्र शोषीने तेनो नाश करेलो

कालयवन पु० एक यवन राजा. श्रीकृष्णनो अने पाडवोनो शत्रु

कालिदास पु० 'अभिज्ञानशाकुतल', 'विक्रमोर्वशीय', 'मालविकाग्निमित्र', 'रघुवश', 'कुमारसभव', 'मेघदूत' अने 'ऋतुसहार'ना विख्यात कर्ता. तेमना समय विषे निश्चितता नथी. लोकपरपरा तेमने विक्रमादित्य राजाना दरबारमा मूके छे, जेमनो विक्रम सवत (ई० स० पू० ५६) गणाय छे पण केटलाक विद्वानो विक्रमादित्यना सवत्ने ई० स० ५४४ मा मूके छे छता, चोथा सैकाना गुप्त राजाओना अमलमा कालिदास थयेला एम घणा विद्वानो माने छे तेमना निवासस्थान बाबत पण मतभेद छे.

काश्यपपुर न० मुलतान, रावी नदीना जूना वहेण आगळ

काचीपुरी स्त्री० काजीवरम् मोक्षदायक मनाती सात पुरीओमानी एक चोल राजाओनी राजधानी.

कांपिल्य न० द्रुपदराजनी दक्षिण पचालमा आवेली नगरी आजनु कापिल, बुदाऊ अने फरुकाबादनी वच्चे गगानदीना जूना वहेण आगळ छे.

कांबोज पु० आजनो उत्तर अफघानिस्तान प्रदेश. घोडा अने शाल माटे प्रसिद्ध

किरात पु० सिलहट अने आसाम मळीने थतो देश ऋग्वेदमा पण आ प्राचीन प्रदेशना लोकोना नामनो उल्लेख आवे छे

किष्किधा स्त्री० वालि अने सुग्रीवनो देश, तथा तेनी राजधानीनु नाम. मैसूर अने हैदराबादनी वच्चे ते प्रदेश आव्यो कहेवाय तुगभद्राने काठे हपी-विजयनगर पासे किष्किधा नगरीनु स्थळ बतावाय छे

किनर, किंपुरुष पु० जबुद्वीपनो एक विभाग-वर्ष, हिमालयनी उत्तरे

कीकट पु० मगध देश, आजनु बिहार

कुबेर पु० धननो देवता, यक्षो अने किन्नरोनो राजा रावणनो ओरमान भाई कैलास तेनो वास, त्रण पग, आठ दात अने आखने बदले पीळु चाठु एवो कदरूपो आकार

कुब्जा स्त्री० कंसनी खूधी जुवान

दासी. कंस माटेनु चंदन लई जती हती त्यारे कृष्णे तेनी पासे ते चंदन माग्यु. तेणे खुशीथी आप्यु. कृष्णे तेने पछी सीधी बनावी दीधी.

कुरु पु० (१) चंद्रवंशीय कौरव-पांडवोनो मूळ पुरुष. तेणे कुरुक्षेत्र वसाव्यु. (२) दिल्हीनी आसपासनो एक देश. तेनी राजधानी हस्तिनापुर.

कुरुक्षेत्र न० (१) ब्रह्मावर्तनी पश्चिमे आवेला देशनु नाम. (२) कुरुदेशनु प्रसिद्ध स्थान; त्या महाभारतनु युद्ध थयेलु; कुरुराजाए त्या तप करेलु; सरस्वती अने दृषद्वती नदीओनी वच्चे आवेलु छे.

कुरुजांगल न० कुरु प्रदेशनी वायव्ये आवेलो एक देश; हस्तिनापुर तेमा आवेलु.

कुरुपंचाल पु० कुरुप्रदेशनी पूर्वे आवेलो ' एक देश

कुलिंद पु० गढवाल (सहरानपुर जिल्ला समेत), दिल्हीनी उत्तरे.

कुलूत पु० जालधर दोआबनी उत्तर-पूर्वे आवेलो शतद्रुना जमणा काठानो प्रदेश. नगरकोट तेनी राजधानी

कुशस्थली, कुशावती स्त्री० दक्षिण-कोशल देशनी राजधानी, नर्मदानी उत्तरे, पण विंध्यनी दक्षिणे, बुदेल-खडनु रामनगर ते हशे.

कुसुमपुर न० पाटलिपुत्र.

कुंडिनपुर न० विदर्भनी राजधानी; वर्धा नदीथी अमरावती सुधी पथरा-येली होवानु कहेवाय छे.

कुंतल पु० चोल देशनी उत्तरे आवेलो देश. तेने कर्णाट पण कहेता, कल्याणी तेनी राजधानी, हैदराबादनो दक्षिण-पश्चिम भाग.

कुंतिभोज पु० एक राजा; कुंतीनो पिता. शूर राजानो मित्र. पोताने संतति न हती तेथी शूरराजानी कन्या कुंतीने तेणे दत्तक लीधेली.

कुंती स्त्री० यदुवंशी शूर राजानी कन्या; कुंतिभोजे दत्तक लीधेली. पांडु राजानी पत्नी. कर्ण, युधिष्ठिर, भीम, अर्जुननी माता.

कुंभकर्ण पु० रावणनो नानो भाई. वर्षमा छ महिना ऊघ्या करतो.

कृतवर्मन् पु० यदुवंशी योद्धो; कौरव पक्षे महाभारतना युद्धमा कृपाचार्य, अश्वत्थामा अने कृतवर्मा एटला ज बच्या हता यादवास्थळी वखते सात्यकिए पछी तेने हणेलो

कृपाचार्य पु० अश्वत्थामानो मामो; कौरवोने पक्षे लडेलो, सात चिरंजीवी-ओमानो एक.

कृशाश्व पु०(१)एक ऋषि अने प्रजापति. (२) नाट्यशास्त्रना एक आचार्य. (३) अस्त्रविद्याना एक आचार्य

कृष्ण पु० वसुदेव-देवकीना पुत्र; विष्णुना आठमा अवतार, कंसना भाणेज, कुंतीनी सगाईथी पांडवोना मामात भाई थाय.

कृष्णद्वैपायन पु० व्यासजी, पराशरना पुत्र; काळा होवाथी कृष्ण, सत्यवतीनी कुवारी अवस्थामा जन्मेला तेमने द्वीप उपर छोडी दीधेला तेथी द्वैपायन, वेदोनी व्यवस्था करनार तेथी 'व्यास'

कृष्णा स्त्री० द्रौपदी.

केकय पु० बियास अने सतलज वच्चेनो देश कैकेयीनो पिता आ देशनो राजा.

केकयी स्त्री० कैकेयी

कैकसी स्त्री० रावणनी' माता.

कैकेयी स्त्री० दशरथनी पत्नी (त्रण-मानी एक), भरतनी माता.

कैटभ पु० एक बळवान असुर, तेने विष्णुए मारेलो तेथी तेमनु नाम 'कैटभारि' पण छे.

कोशल, कोसल पु० एक देश, उत्तर अने दक्षिण एवा तेना बे विभाग हता. उत्तर कोशलनी राजधानी श्रावस्ती अने दक्षिण कोशलनी अयोध्या.

कौशल्या, कौसल्या स्त्री० दशरथनी पत्नी; रामनी माता.

कौशांबी स्त्री० वत्स देशनी राजधानी. अत्यारना कोसम नजीक (अलाहाबादनी उपर ३० माईल) आवेली; यमुनाने डावे किनारे

कौशिकी स्त्री० बिहारनी एक नदी ('पारा'); दरभगानी पूर्वे. तेने काठे ऋष्यशृगनो आश्रम हतो.

क्षेमेंद्र पु० ११ मा सैकानो एक काश्मीरी लेखक, 'भारतमजरी', 'बृहत्कथामंजरी' वगेरेनो कर्ता

खर पु० एक राक्षस, रावणनो संबधी; जनस्थानमा रहेतो हतो. रामे तेने वनवास वखते हण्यो हतो.

खरोष्ट्र आजनु काशगर

खांडव (**-वन, -प्रस्थ**) न० कुरुक्षेत्र प्रदेशनु एक वन, अर्जुने तेने बाळ्यु हतु; त्या पछी पाडवोए इद्रप्रस्थ राजधानी वसावेली.

गणेश पु० शिव अने पार्वतीना पुत्र, मस्तक हाथीनु; सर्व मागलिक कार्योनी शरूआतमा तेमनी स्तुति थाय छे. परशुराम साथेनी लडाईमा एक दतूशळ तूटी गयेलो तेथी 'एकदंत' पण कहेवाय छे उदर तेमनु वाहन. व्यासजी पासे बेसी 'महाभारत'नी हस्तप्रत तेमणे लखेली

गरुड पु० कश्यप अने विनतानो पुत्र, अरुणनो नानो भाई पक्षीओनो राजा अने सर्पोनो दुश्मन सफेद मुख, लाल पाखो, अने सोनेरी शरीर विष्णुनु वाहन.

गर्ग पु० यादवोना उपाध्याय कृष्ण बळरामना जातसस्कार तेमणे करेला. मोटा ज्योतिषी.

गंगा स्त्री० भारतनी पवित्र नदी तथा तेनी अधिष्ठाता देवता ते देवता ब्रह्माना शापथी पृथ्वी उपर आवी अने शतनु राजानी प्रथम पत्नी बनी. तेने आठ पुत्रो थया, तेमानो सौथी नानो भीष्म. ('भगीरथ' तथा 'जह्नु' पण जुओ)

गाधि पु० विश्वामित्रना पिता. इद्रनो अवतार.

गाधिपुर न० कनोज

गांधार पु० (कदहार) भारत अने ईरान वच्चेनो देश काबुल नदीने किनारे तथा खोसपस (कुनार) अने सिंधु नदीनी वच्चे आवेलो. तेनी राजधानीओ पुरुषपुर (पेशावर) अने तक्षशिला

गांधारी स्त्री० गाधार देशना राजा सुबळना पुत्री अने धृतराष्ट्रनां पत्नी; कौरवोना जननी पति अध होवाथी पोते पण लग्न बाद आखे पाटा बाधी राखता

गिरिव्रजपुर न० बिहारनु राजगिर. मगधनी प्राचीन राजधानी बौद्ध ग्रथोमा तेनु 'राजगृह' नाम आवे छे

गुणाढ्य पु० भारतनो आगेवान वार्ता-लेखक. तेनी मूळ बृहत्कथा 'पैशाची प्राकृत'मा लखायेल तेना उपरथी सोमदेवे 'कथासरित्सागर' रच्यु ई. स. ना प्रथम सैकामा गोदावरी तीरे प्रतिष्ठानमा थई गयो

गुर्जर पु० गुजरात. पहेला तेमां खानदेश अने माळवाना मोटा भागनो समावेश थतो. ह्यु एनत्सागना समयमा सौराष्ट्रनो समावेश तेमां नहोतो करातो. आजनु मारवाड ते वखते 'गुर्जर' नामथी ओळखातु

गुह पु० शृंगवेरपुरना [illegible] राजा. रामनो भक्त.

गोकर्ण न० दक्षिण भारतमां आवेलुं पवित्र तीर्थ

गोकुल न० मथुरा पासे [illegible] ज्यां श्रीकृष्ण अने बलराम बाळपणमां रह्या हता

गोनर्द पु०(१) [illegible] काश्मीरना [illegible] राजाए [illegible] तेना नाम [illegible] (२) [illegible] गाम [illegible] (महाभाष्यकार)नुं जन्मस्थान.

गोपराष्ट्र पु० नासिक जिल्लाना इगतपुरी विभाग. [illegible] दक्षिण [illegible]

गोमती स्त्री० [illegible] पासे [illegible] नदी

गोमंत पु० एक पर्वत, [illegible] पासे कृष्ण अने बलराम [illegible] [illegible]

गोमतक पु० गोवा प्रांत

गोवराष्ट्र पु० जुओ 'गोपराष्ट्र'

गोवर्धन पु०(१) [illegible] [illegible] जिल्लानो एक पर्वत कृष्णे जेने [illegible] तेथी श्रीकृष्ण 'गोवर्धनगिरिधारी' कहेवाय छे (२) नासिक जिल्ला. नासिक पासे गोवर्धन नामे गाम [illegible]

गोवर्धनाचार्य पु० 'आर्यासप्तशती'नो कर्ता बंगाळना लक्ष्मणसेनना राजकवि. 'गीतगोविंद'ना कर्ता जयदेवनो समकालीन

गौड, पुण्ड्र आखा बंगाळने पूर्व गौड अने उत्तर कोशलने उत्तर गौड कहेता. गोंडवन ते पश्चिम गौड [illegible] किनारो ते दक्षिण गौड

घटकर्पर पु० 'घटकर्परकाव्य'नो कर्ता घणा तेने काळिदासनो समकालीन गणे छे पण बीजा तेने काळिदासनी पूर्वे थई गयेलो माने छे 'नीतिसार' नामे बीजुं काव्य पण तेणे लख्युं छे

घटोत्कच पु० हिडिंबा राक्षसीने भीमथी [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

चंद्रभागा स्त्री० [illegible] [illegible] [illegible]

चंद्रवती स्त्री० [illegible] [illegible]

[illegible] पु० [illegible] [illegible] प्रसिद्ध [illegible] [illegible]

चंपा स्त्री० (१) [illegible] भागलपुरथी [illegible] पश्चिमे (२) [illegible] (३) [illegible] अने [illegible] (४) [illegible] अने [illegible] वच्चे आवेली एक नदी (५) [illegible] प्रदेश.

चाणक्य पु० बीजुं नाम 'कौटिल्य' 'कौटिलीय अर्थशास्त्र'नो कर्ता. बीजुं नाम विष्णुगुप्त के विष्णुशर्मा. नंद वंशने उखेडीने चंद्रगुप्त मौर्यने

मगधना सिंहासने बेसाड्यो (ई० स० पूर्वे ३२१).

चाणूर पु० कंसनो एक मल्ल. श्रीकृष्णे तेने मारेलो.

चार्वाक पु० एक राक्षस; दुर्योधननो मित्र. पांडवोनो शत्रु (२) एक नास्तिक मतप्रवर्तक जडवादी.

चित्रकूट पु० प्रयागनी दक्षिणे १० माईले आवेलो डुंगर तेनी उत्तरे मंदाकिनी नदी. वनवास दरम्यान रामचंद्रजी अहीं थोडुंक रहेला; भरतनी भेट अहीं थयेली.

चित्ररथ पु० गंधर्वोनो राजा.

चित्रांगद पु० शंतनु अने सत्यवतीनो पुत्र. नानपणमां ज गंधर्वोए वनमां मारी नाखेलो विचित्रवीर्यनो मोटो भाई

चित्रांगदा स्त्री० अर्जुननी पत्नी; बभ्रुवाहननी माता.

चेदि पु० (१) यदुवंशीय राजा. तेना उपरथी देश तेम ज वंशनु ते नाम पडेलु (२) एक देश, विदर्भनी ईशानमां हालनु बुंदेलखंड पांडवोना समये त्यानो राजा शिशुपाल हतो

चेर पु० मैसूर, कोइंबतूर, सालेम, दक्षिण मलबार, त्रावणकोर अने कोचीन एटला प्रदेशोनो तेमां समावेश थतो चेर नाम केरळनु भ्रष्टरूप कहेवाय ई० स० त्रीजाथी ७ मा सैका सुधी आ राज्य आगळ आव्यु हतु

चोल पु० (१) कोरोमंडळ किनारो तेनी एक राजधानी कांचिपुर पछीथी आ राज्य दहेज तरीके पांड्य राज्यमां गयु (२) कावेरीना किनारा उपर आवेलु राज्य, मैसूरनो दक्षिण भाग. पछीथी ते कर्णाटक नामे ओळखायो.

जगन्नाथ पंडित पु० एक अर्वाचीन लेखक. 'रसगंगाधर', 'भामिनीविलास' इ० ना कर्ता दिल्हीना शाहजहान बादशाहना वखतमां थई गया १६२० थी १६६० सुधीमां तेमनो मुख्य प्रवृत्तिकाळ कहेवाय.

जटायु, जटायुस् पु० एक पक्षीराज. अरुणनो नानो पुत्र, दशरथनो मित्र, रावण सीताने लई जतो हतो त्यारे तेणे सामनो कर्यो हतो

जनक पु० (१) विदेहवंशीय राजाओनु सामान्य नाम (२) सीताना पालक पिता

जनमेजय पु० अर्जुनपुत्र अभिमन्युनो पौत्र तेना पिता परीक्षित सर्पदंशथी मृत्यु पाम्या हता तेथी तेणे सर्पसत्र आरंभेलो पछी आस्तिक मुनिए ते बंध करावेलो.

जनस्थान न० दंडकारण्यनो भाग पंचवटी त्यां आवेली. केटलाक पंचवटीने नासिक पासे माने छे, केटलाक वेनगंगा साथे गोदावरी मळे छे त्यां आवेली माने छे वनवास वखते राम त्यां रहेला

जमदग्नि पु० एक ऋषि, परशुरामना पिता.

जयदेव पु० (१) 'गीतगोविंद' नो कर्ता. बंगाळना वीरभूम जिल्लानो वतनी. १२ मा सैकामां थई गयो हशे. (२) (पीयूषवर्ष) 'चंद्रालोक' अने 'प्रसन्नराघव' नो कर्ता १२ मा सैकाथी वधु प्राचीन नथी

जयद्रथ पु० सिंधुदेशनो राजा. धृतराष्ट्रनी कन्या दुःशलानो पति. द्रौपदीनुं काम्यकवनमांथी हरण करी गयेलो. अभिमन्युनो कोठायुद्धमां तेणे वध करेलो पछी अर्जुनने हाथे हणायो

जरासंध पु० पुरुकुलना बृहद्रथ राजानो पुत्र बे माताथी बे टुकडा रूपे जन्मेलो, जरा नामनी राक्षसीए ते सांधीने एक बनावेलो. मगध देशनो राजा. कंसनो ससरो

जह्नु पु० एक चद्रवशी राजा यज्ञ करतो हतो त्यारे गगानदीनु पाणी फरी वळ्यु तेथी ते आखी गगा पी गयो पछी देवो अने ऋषिओए स्तुति करता तेणे कानमाथी तेनो प्रवाह नीकळवा दीधो. तेथी गगानु नाम 'जाह्नवी' पड्यु.

जंबुद्वीप पु०, न० पृथ्वीना सात महाद्वीपोमानो प्रथम. मेरु पर्वतनी आसपास गोळ थाळी जेवो ते आवेलो छे तेनी आसपास लवण समुद्र वीटळायेलो छे.

जालंधर पु० बियास अने सतलज वच्चेनो देश.

जांबवत् पु० एक वानर लकानी चढाई वखते रामनी सेनानो एक सेनापति. (२) रीछोनो राजा तेनी पासे स्यमतक मणि आवेलो कृष्णे तेने युद्धमा हराव्यो एटले तेणे मणि साथे पोतानी पुत्री जाबवती पण श्रीकृष्णने अर्पी दीधी.

जांबवती स्त्री० श्रीकृष्णनी पत्नी; साबनी माता.

जीमूतवाहन पु० विद्याधरोनो राजा. 'नागानद' नाटकनो नायक. मोटो परोपकारी अने उदार अत:करणवाळो हतो

जैमिनि पु० व्यासना एक शिष्य; पूर्वमीमासादर्शनना कर्ता.

ज्योतिर्मठ पु० शकराचार्ये स्थापेला चा रमठोमानो एक (बदरीनाथ पासे).

झारखंड पु० छोटानागपुर प्रदेश बीरभूम अने बनारस वच्चेनो आखो डुगराळ प्रदेश. (सताल परगणा सहित.)

तक्ष पु० दशरथपुत्र भरतनो पुत्र. तेणे तक्षशिला नगर स्थाप्यु हतु

तक्षक पु० एक सर्प परीक्षित राजाने दश करेलो. जनमेजयना सर्पसत्रमाथी जीवतो रहेलो

तक्षशिला स्त्री० पजाबना रावळपिडी जिल्लामा आवेलुं. एक वखत गधार देशनी राजधानी; त्या ई० स० ना पहेला सैका सुधी उत्तर हिंदनु प्रसिद्ध विश्वविद्यालय हतु.

तमसा स्त्री० (१) कोसल देशनी एक नदी. सरयूथी ऊगमणी बाजु १०–१५ माईल दूर आवेली. दशरथ राजाए तेने तीरे श्रवणकुमारने मारेलो (२) रेवा प्रातमाथी ईशान बाजुए वहीने भागीरथीने मळनारी नदी तेने कांठे वाल्मीकिनो आश्रम हतो.

ताम्रपर्णी स्त्री० (१) बौद्धग्रथोमां सिलोननु प्रसिद्ध नाम. (२) पाड्य देशनी एक नदी (तिनेवेलीमा आवेली तवरवरी) तेना मुखमा मोती मळता.

ताम्रलिप्त न० 'सुह्म' (पश्चिम बगाल)नी राजधानी आजनुं तामलूक; कलकत्ताथी नैर्ऋत्यमा ४२ माईल दूर.

तारक पु० एक राक्षस ब्रह्मानु वरदान हतु के सात दिवसना बाळक सिवाय कोईथी न मरे. पछी कार्तिकेये जन्म बाद सात दिवसे तेने मार्यो. तेना त्रण पुत्रोए वसावेला त्रण नगरो ते 'त्रिपुर' कहेवाय छे

तारा स्त्री० (१) वालिनी स्त्रीनु नाम; अगदनी माता (२)हरिश्चद्रनी राणीनु नाम; तारामती (३) बृहस्पतिनी एक स्त्री

तारामती स्त्री० हरिश्चद्रनी राणी; तारा रोहितकुमारनी माता

तिमिध्वज पु० इद्रे मारेलो असुर (शबरासुर), दशरथ राजा ते युद्धमां इद्रनी मददे गयेला; त्या कैकेयीए तेमनु जीवन बचावीने बे वरदान मेळवेला.

तिलोत्तमा स्त्री० एक अप्सरा विश्वामित्रे सुद अने उपसुद बे राक्षस

भाईओना विनाश माटे सर्जेली. तेनाथी मोहित थई ते बन्ने आपसमा लडीने नाश पाम्या.

त्रिकूट पु० (१) पूना जिल्लानु जुन्नर. टॉलेमी तेनु नाम 'तगर' जणावे छे (२) सिलोनना दक्षिण-पूर्व खूणे आवेलो एक पर्वत.

त्रिगर्त पु० जालधर प्रदेश प्राचीन काळमा ते सूका निर्जळ प्रदेश तरीके ओळखातो लुधियाणा-पतियाला वगेरे भाग

त्रिपुर न०, **त्रिपुरी** स्त्री० नर्मदा किनारे आवेलु आजनु 'तेवुर' – जबलपुरथी ६ माईल दूर शिवे त्रिपुरासुरने मारी तेना त्रण पुरोनो नाश करेलो

त्रिवेणी स्त्री० गगा-यमुना-सरस्वती ए त्रण नदीनो सगम – प्रयाग

त्रिशंकु पु० इक्ष्वाकु कुळनो सूर्यवशी राजा, हरिश्चद्रनो पिता. सदेहे स्वर्गे जवा विश्वामित्र पासे यज्ञ कराव्यो, पण इद्रे तेने पेसवा न दीधो अने पाछो नीचे गबडाव्यो विश्वामित्रे तेने नीचे आवतो रोक्यो; अने अधवच नवु स्वर्ग वगेरे रचवा माडचु आथी अतरियाळ स्थिति माटे त्रिशकुनो दाखलो अपाय छे

त्वष्टृ पु० एक प्रजापति, विश्वकर्मा, देवोनो शिल्पी इद्रे तेना पुत्रने मार्यो तेथी इद्रनु वेर लेवा तेणे वृत्रासुरने उत्पन्न कर्यो हतो

दक्ष पु० ब्रह्माना दश मानसपुत्रोमा प्रथम तेनी एक पुत्री सती, शकर वेरे परणावेली शकर साथे वेर थता तेणे यज्ञमा सतीने तथा शकरने न बोलाव्या छता सती त्या गई अने अपमान थता यज्ञमा बळी मरी. शकरे पछी तेना यज्ञनो ध्वस कर्यो. सती बीजा जन्ममा पार्वती थईने शंकरने फरी पाम्या.

दक्षिणापथ पु० भारतनो दक्षिण भाग; नर्मदाथी दक्षिणे आवेलो

दत्त, दत्तात्रेय पु० अत्रि अने अनसूयाना त्रण पुत्रोमाना एक ज्याथी कई बोध मळ्यो तेवी जडचेतन अनेक वस्तुओने तेमणे गुरुस्थाने स्थापेली

दधीच पु० एक ऋषि, अथर्वण ऋषिना पुत्र वृत्रासुरना वध माटे पोताना अस्थि इद्रने आप्या, इद्रे ते अस्थिनु वज्र बनावरावी वृत्रने मार्यो

दनु स्त्री० कश्यपनी एक स्त्री, दानवोनी माता

दमयंती स्त्री० विदर्भ देशना राजा भीमनी पुत्री, नळराजानी राणी.

दमिल पु० केरळ; मलबार किनारो अथवा दक्षिण मलबार सिलोन (नागद्वीप)नी नजीक आवेलो

दरद काश्मीरनी उत्तरे आवेलो एक देश. दर्दिस्तान

दर्भवती स्त्री० गुजरातनु डभोई.

दशपुर न० एक प्राचीन नगर, रतिदेवनी राजधानी आजनु धोळपुर. अवतिथी उत्तरे केटलाक तेने माळवानु मदसोर गणे छे

दशरथ पु० इक्ष्वाकु कुळना एक सूर्यवशी राजा, रामना पिता. कौशल्या, सुमित्रा, कैकेयी ए त्रण राणीओ. कौशल्याथी राम, सुमित्राथी लक्ष्मण अने शत्रुघ्न तथा कैकेयीथी भरत एवा चार पुत्र.

दशार्ण पु० माळवानो पूर्व भाग. तेनी राजधानी विदिशा (आजनु भिलसा) – वेत्रवती नदीने किनारे.

दशार्णा स्त्री० माळवानी एक नदी. हालनी दशान.

दशार्ह पु० यदुवशीय राजा. तेना उपरथी 'दाशार्ह' नामनु कुळ.

दंडकारण्य न० (१) विंध्य अने शैवाल

पर्वतोनी वच्चेनो प्रदेश. तेनो एक भाग 'जनस्थान' नामे ओळखातो. (२) बुंदेलखंडथी कृष्णा नदी सुधीनो जंगलनो प्रदेश.

दंडिन् पु० 'दशकुमारचरित' अने 'काव्यादर्श' नो कर्ता सातमा सैकामा थयेलो गणाय

दंतपुर न० कलिंगनी प्राचीन राजधानी. ओरिसानु पुरी सिलोन लई जवा पहेला बुद्धनो दांत त्यां राखवामा आवेलो

दाक्षिणात्य पु० दक्षिण भारत, विंध्यपर्वतथी दक्षिणनो भाग.

दारुक पु० श्रीकृष्णनो सारथि

दारुकावन, दारुवन न० नागेश नामना ज्योतिर्लिंगवाळु जंगल मराठवाडामा.

दाशार्ह पु० यदुवंशीयकुळ

दाशेरक पु० माळवा देश

दिति स्त्री० दैत्योनी माता, कश्यपनी एक पत्नी, दक्षनी पुत्री.

दिलीप पु० (१) सूर्यवंशीय राजा; भगीरथनो पिता (२) रघुनो पिता, पत्नी सहित तेणे नंदिनी गायनी सेवा करीने रघु पुत्र मेळव्यो.

दुर्योधन पु० धृतराष्ट्र–गांधारीनो पुत्र. सो कौरवोमा मोटो

दुर्वासस् पु० अत्रि-अनसूयाना पुत्र; क्रोधनी मूर्ति सम गणाय छे शकुंतलाने तेमणे शाप आपेलो

दुष्यंत पु० चंद्रवंशी, पुरुकुळमा जन्मेलो राजा सर्वदमन–भरतनो पिता; शकुंतलानो पति.

दुःशला स्त्री० दुर्योधननी वहेन; जयद्रथनी पत्नी

दुःशासन पु० धृतराष्ट्रना सो पुत्रोमानो एक द्यूत पछी द्रौपदीने सभामा खेंची लावी तेना चीर तेणे खेंचेला भीमे तेना साथळ भांगवानी तथा तेनु लोही पीवानी प्रतिज्ञा लीधेली.

दूषण पु० खर राक्षसनो जनस्थानवासी एक सेनापति

दृषद्वती स्त्री० अंबाला अने सरहिंदमा थईने वहेती नदी, हवे रजपूतानाना रणमा लुप्त थाय छे कुरुक्षेत्रनी दक्षिण सरहद, आर्यावर्तनी पूर्व सरहद, सरस्वती नदीने पहेला मळती हती

देवकी स्त्री० उग्रसेनना भाई देवकनी पुत्री वसुदेवनी पत्नी, श्रीकृष्णनी माता.

देवगिरि पु० (१) चर्मण्वती नदी नजीकनो एक पर्वत (२)दौलताबाद

देवयानी स्त्री० दैत्योना गुरु शुक्राचार्यनी एकनी एक लाडली दीकरी (जुओ कच); ययाति राजाने परणेली. पोतानी दासी तरीके साथे आणेली शर्मिष्ठा साथे राजाने गुप्त प्रेम करतो जोई, तेने अकाळ वृद्धावस्थानो शाप अपावेलो शर्मिष्ठाना पुत्र पुरुए पछी पोतानी जुवानीना बदलामा ययातिनी वृद्धावस्था लई लीधेली

देवहूति स्त्री० कर्दम ऋषिना पत्नी, सांख्याचार्य कपिलनां माता. कपिले तेमने आत्मज्ञान उपदेश्यु हतु.

द्रमिल पु० जुओ 'दमिल'

द्रविड पु० दक्षिणनो देश, कृष्णा अने पोलर नदी वच्चेनो. गोदावरीनी दक्षिणनो आखो कोरोमंडळ किनारो तेमा आवी जाय. पण सामान्य रीते कावेरीनी पारनो देश गणाय कांची तेनी राजधानी

द्रुपद पु० पांचाल देशनो राजा; धृष्टद्युम्न, शिखंडी इ० छ पुत्रो अने द्रौपदीनो पिता द्रोणाचार्यनो सहपाठी. पण पछी द्रोणाचार्य ज्यारे ते मित्रता याद करी धन मागवा आवेला, त्यारे तेणे तेमनु अपमान करेलु, द्रोणे अर्जुन

मारफत तेने पकडी मगावेलो दक्षिण-पचाल देश तेनो रहेवा दई, तेने जीवतो जवा दीधेलो यज्ञ मारफते द्रोणनो वध करनार धृष्टद्युम्न पुत्र पछी तेणे मेळव्यो माकदी, छत्रवतो, कापिल्य, अहिच्छत्रा आदि नगरो तेणे वसावेला.

द्रोण पु० पाडव कौरवोना प्रसिद्ध शस्त्राचार्य अश्वत्थामा तेमनो पुत्र.

द्रौपदी स्त्री० पचाल देशना द्रुपद राजानी पुत्री (तेथी 'पाचाली'); पाचे पाडवोनी पटराणी

द्वारवती स्त्री० गुजरातनु द्वारका. मथुराथी भागी आव्या बाद श्रीकृष्णनी राजधानी

द्वैतवन न० सरस्वती नदीने किनारे मरुधन्वा देश नजीक आवेलु, पाडवो वनवास वखते थोडो वखत त्या रहेला मीमासक जैमिनिनु वतन

धनकटक अत्यारनु आध्र प्रदेशनु बेझवाडा ई० स० पू० २०० थी जाणीतु हतु

धनंजय पु० 'दशरूप' नो कर्ता. अलंकार अने नाट्यशास्त्रनो प्रमाणभूत लेखक धारना मुज राजानो दरबारी, ई० स० १० मा सैकाना पूर्वार्धमा थई गयो.

धन्वंतरि पु० समुद्रमंथन वखते उत्पन्न थयेला १४ रत्नोमानु एक आयुर्वेदना प्रवर्तक, देववैद्य हाथमा अमृतकुभ लईने प्रगट थयेला

धरणीकोट जुओ 'धनकटक'.

धर्म, धर्मराज पु० युधिष्ठिर पाडवोमा मोटा कुतीना त्रण पुत्रोमाना एक

धर्मारण्य न० गया जिल्लानु बौद्ध तीर्थ

धवलगिरि पु० ओरिसानी धौली टेकरी. त्या अशोकनो शिलालेख छे

धृतराष्ट्र पु० कौरवोनो पिता. जन्माध गाधारी पत्नी बीजी एक वैश्य स्त्रीथी युयुत्सु नामनो पुत्र.

नकुल पु० माद्रीनो पुत्र, पाडवोमानो चोथो. अश्विनीकुमारनो अश अति सुदर गणातो

नचिकेतस् पु० गौतम गोत्रना अरुणि ऋषिनो पुत्र यमराजा पासेथी वरदानमा आत्मविद्या मेळवी लाव्यो हतो.

नमुचि पु० इद्रनो मित्र एवो एक असुर. छूपी रीते इद्रनु बळ पी जतो इद्रे तेनो पछी वध करेलो.

नरक पु० भूमिपुत्र एक असुर तेना अत्याचारोथी जगत पीडित थत श्रीकृष्णे तेनो नाश कर्यो तेना अत-पुरमाथी १६१०० केदी स्त्रीओने श्रीकृष्णे छोडावी ते बधी तेमने पति तरीके पछी वरी हती

नरनारायण पु० बदरिकाश्रममा तप करता बे प्राचीन ऋषिओ इद्रे तेमने मोहित करवा अप्सराओ मोकली, त्यारे नारायणे जाघमाथी उर्वशीने उत्पन्न करी अने ते बधीने शरमावी. नर ए अर्जुन अने नारायण ए श्रीकृष्ण एम पण कहेवाय छे

नल पु० (१) निषध देशनो राजा, दमयतीनो पति (२) एक वानर, जेणे राम माटे सेतु बाधेलो

नलकूबर पु० कुबेरनो पुत्र तेना भाई मणिग्रीव साथे ते नारदना शापथी अर्जुनवृक्ष रूपे गोकुळमा अवतरेलो बनेनो श्रीकृष्णे खाडणियो भरावीने उद्धार कर्यो

नहुष पु० पुरूरवानो पौत्र एक राजा ययातिनो पिता थोडो वखत इद्रपद मळेलु ते वखते इद्रपत्नी शचीनी कामना करवा जता सप्तर्षिना शापथी साप रूपे अवतरेलो

नंद पु०(१)गोकुळनो अधिपति वसुदेवनो मित्र; बळराम-कृष्णनो पालक पिता यशोदा तेनी स्त्री (२) पाटलि-

पुत्रनो राजा, नदवशनो मूळ पुरुष तेने चद्रगुप्ते चाणक्यनी मददथी मारी मौर्यवश स्थाप्यो

नंदनवन न० इद्रनु उपवन–बगीचो.

नंदिग्राम पु० अयोध्यानी पासेनु एक गाम राम वनवासमाथी पाछा न फर्या त्यां सुधी भरत त्या रहेलो.

नंदिनी स्त्री० वसिष्ठ पासेनी कामधेनुनी पुत्री–गाय. एनी सेवाथी दिलीपने पुत्र थयो

नारद पु० (१) प्रख्यात देवर्षि वीणावादक. हरिकीर्तन करनार कलहप्रिय. देव-मनुष्य वच्चे आवजा करनार (२) एक स्मृतिकार

नारायण पु० (१) जुओ 'नरनारायण'. (२) 'हितोपदेश' नो कर्ता, १४ मा सैकामा थयो होय.

निमि पु० इक्ष्वाकुनो एक पुत्र जनकनो पूर्वज. तेणे मिथिलानो वैदेह वश स्थाप्यो हतो

निषध पु० (१) नळराजाना देशनु नाम. तेनी राजधानी अलका, अलकनन्दा नदी उपर आवेली. उत्तर हिंदना कुमाऊँनो भाग हशे (२) जबुद्वीपनो एक वर्षधर पर्वत

नील पु० (१) वानर सेनापति (रामनो). (२) दक्षिण हिंदनो एक पर्वत.

नैमिषारण्य न० प्राचीन ऋषिओनु निवासस्थान एवुं एक वन अही सौतिए महाभारत सभळावेळु उत्तर प्रदेशमा गोमती नदीने डावे किनारे आवेलु.

नैषध पु० निषध देशनो राजा–नळ

पतंजलि पु० पाणिनिना सूत्रो अने कात्यायनना वार्तिक उपरना महाभाष्यनो कर्ता योगसूत्र पण तेमना लखेला कहेवाय छे ई० स० पू० बीजा सैकामा थयेल मनाय छे

पद्मपुर न० भवभूति कविनु जन्मस्थान. अमरावतीथी थोडे दूर चंद्रपुर (चांदा) नजीक.

पद्मावती स्त्री० माळवाना 'नरवार' (नलपुर) तरीके ओळखावाय छे सिंधु नदीने काठे भवभूतिना 'मालती-माधव' नाटकनी भूमि

पयोष्णी स्त्री० विंध्याद्रिमाथी नीकळनी एक नदी. नळ राजाए तेने काठे यज्ञ करेलो. आजनी पूर्णा

परशुराम पु० भृगुवशीय जमदग्नि ऋषिना पुत्र विष्णुना अवतार. कार्तवीर्य राजाना पुत्रोए तेमना पितानो वध करेलो, तेथी तेमणे २१ वार पृथ्वी नि क्षत्रिय करेली रामचन्द्रे तेमनु तेज हरेलु पितानी आज्ञाथी माता रेणुकानो शिरच्छेद करेलो

पराशर पु० वसिष्ठना पुत्र तेमने सत्यवतीथी व्यास पुत्र जन्मेला.

परीक्षित् पु० अभिमन्युनो पुत्र, अर्जुननो पौत्र. गर्भावस्थामा हतो त्यारे श्रीकृष्णे तेने अश्वत्थामाना ब्रह्मास्त्रथी बचावेलो. तेनो पुत्र जनमेजय तेना राज्यकाळथी कळियुग बेठेलो कहेवाय छे तक्षकनागना दशथी मरण पामेलो. तेणे ते वखते 'भागवत'नी कथा साभळेली

परुष्णी (पुरुष्णी) स्त्री० पंजाबनी रावी नदी वेदकालीन दाशराज्ञ युद्ध त्या थयेलु.

पंचजन पु० एक असुर. शंखरूपधारी एवा तेने श्रीकृष्णे मारेलो.

पंचनद पु० पजाबदेश शतद्रु, विपाशा, इरावती, चन्द्रभागा अने वितस्ता –ए पाच नदीओनो देश.

पंचवटी स्त्री० नाशिक पासे गोदावरीना उत्तर किनारे आवेलु तीर्थस्थळ. त्यां वडनां मोटा पांच झाड हता

पंचाल पु० यमुना अने गगानी वच्चेनो प्रदेश उत्तरपचाल (रोहिलखड)नी राजधानी अहिच्छत्रा ते प्रदेश द्रोणाचार्ये द्रुपद पासेथी लई लीधो हतो दक्षिणपचाल (अतर्वेदी)नो राजधानी कापिल्य ए भाग द्रुपद पासे वाकी रह्यो

पंपा स्त्री० वेलारी जिल्लामा आवेल एक प्रसिद्ध सरोवर तथा तुगभद्राने मळती नदीनु नाम पपा नदी ऋष्यमूक पर्वतमाथी नीकळे छे

पाटलिपुत्र न० गगा अने शोण नदीना सगम उपर आवेलु मगधनु राजधानीनु शहेर तेने कुसुमपुर पण कहेता ई स. पूर्वे ४८० मा ते वैशालिना वज्जीओनो सामनो करवा वधायेलु मौर्यो अने गुप्तोनी समृद्ध राजधानी छठ्ठा सैकाथी तेनी पडती थवा लागी अने ह्युएनत्सागे तेने जोयु त्यारे ते एक सामान्य गामडु वनी गयु हतु

पाणिनि पु० व्याकरणना सूत्रो लखनार प्रसिद्ध मुनि

पारसीक पु० ईरान देश, तथा तेनो वतनी. वायव्य सरहदनी पारना देशोना वतनी माटे पण ते शब्द वपराय छे

पारियात्र, पारियात्र पु०(१) विध्य पर्वतनो पश्चिम भाग भारतना पश्चिम किनारानो मोटो भाग रामायणमा तेने पश्चिम समुद्र उपर आवेल कह्यो छे (२) सात कुलाचल पर्वतोमानो एक

पार्वती स्त्री० हिमालय-मेनानी पुत्री रूपे जन्मेला सती कालिदासना 'कुमारसभव'मा तेमना शिव साथेना लग्ननी वात छे

पाडु पु० एक राजा, पाडवोनो पिता; धृतराष्ट्रनो नानो भाई. कुती अने माद्री वे राणीओ.

पाड्य पु० भारतनी दक्षिणनी अणीए आवेलो देश चोलदेशनी दक्षिण पश्चिमे मलय पर्वत अने ताम्रपर्णी नदी अत्यारनु तिन्नेवेल्ली रामेश्वरनो पवित्र टापु आ राज्यमा आवे

पुरु पु० चद्रवशनो छठ्ठो राजा ययातिनो नानो पुत्र,शर्मिष्ठाथी थयेलो. कौरवो अने पाडवोनो पूर्वज ययातिनी वृद्धावस्थानो अदलोवदलो तेणे पोतानी जुवानी साथे करेलो

पुरुषपुर न० पेशावर गाधारनी राजधानी. कनिष्क राजाए तेने राजधानी बनावेली.

पुरूरवस् पु० बुधनो इलाथी थयेलो पुत्र चद्रवशी राजाओनो मूळ पुरुष तेना उर्वशी साथेना प्रेमनी कथा 'विक्रमोर्वशीय' नाटकमा छे

पुरोचन पु० दुर्योधननो म्लेच्छ मत्री तेणे पाडवोने वाळी नाखवा लाक्षागृह वाधेलु पाडवो ते गृहने सळगावी चाल्या गया त्यारे तेमा ते वळी मूओ.

पुलस्त्य पु० ब्रह्मदेवना मानसपुत्र तेमना पुत्र अगस्त्य

पुलिंददेश पु० बुदेलखडनो पश्चिम प्रदेश अने सागर जिल्लो मळीने बनतो देश

पुंड्रदेश (पौड्र) पु० एक देश पूर्वे करतोया, पश्चिमे कौशिकी, उत्तरे हेमकूट पर्वत अने दक्षिणे गंगा नदी.

पृथु पु० वेन राजानो प्रसिद्ध पुत्र तेणे पृथ्वीने सपाट बनावी पृथ्वीने गाय कल्पीने अनेक रत्न अने औषधिओ दोही तेना उपरथी 'पृथ्वी' ए नाम पड्यु

प्रतिष्ठान न० (१) पुरूरवानी राजधानी प्रयागनी सामे. गगायमुनाना सगम उपर (२)औरगाबाद – मराठवाडामा आवेलु पैठण गोदावरीने किनारे

शक सवत (ई. स. ७८) प्रवर्तावनार शालिवाहन त्या जन्मेलो

प्रद्युम्न पु० श्रीकृष्ण-रुक्मिणीनो पुत्र शकरे मदनने बाळी नाख्यो त्यार पछी ते प्रद्युम्न तरीके जन्म्यो हतो अनिरुद्धनो पिता.

प्रद्योत पु० उज्जयिनीनो राजा तेनी पुत्रीने वत्सराज परण्यो.

प्रमीला स्त्री० स्त्रीराज्यनी स्वामिनी. अश्वमेध यज्ञ वखते अश्व पाछळ अर्जुन गयेलो त्यारे तेनी साथे लडेली. हार्या बाद अर्जुननी पत्नी थई.

प्रयाग न० गगा यमुनाना सगम उपर-नु प्रसिद्ध तीर्थक्षेत्र.

प्रस्रवण पु० 'जनस्थान'मा आवेलो एक पर्वत.

प्रह्लाद पु० हिरण्यकशिपु-कयाधुनो मोटो पुत्र मोटो विष्णु भक्त नरसिंह अवतार तेने बचाववा थयेलो.

प्राग्ज्योतिष न० नरकासुरना पुत्र भग-दत्तनु नगर कामरूपनु प्राचीन नाम.

प्लक्ष पु० पृथ्वीना सात द्वीपोमानो एक.

फल्गु स्त्री० एक नदी तेना काठे गया क्षेत्र आवेलु छे

बक पु० एक असुर जटासुरनो पुत्र एकचक्रा नगरी पासेना वनमा रहेनारो तेनो भीमे वध कर्यो हतो

बदरिकाश्रम, बदरी हिमालयनी पर्वत माळामा एक शिखर त्या नर-नारा-यणनु मदिर छे—अलकनदाना पश्चिम किनारे

बभ्रुवाहन पु० अर्जुन अने चित्रागदानो पुत्र मणिपुरनो राजा. अश्वमेघ वखते अर्जुन अश्व पाछळ त्या गयेलो; त्यारे बभ्रुवाहन वदन करवा आव्यो. तेने अर्जुने टाणो मार्यो पछी लडाई थई, तेमा अर्जुन ठार थयो अर्जुनपत्नी उलूपी पछी शेषनाग पासेथी सजी-वनमणि लई आवी अने अर्जुनने सजीवन कर्यो.

बल, बलभद्र, बलराम पु० वसुदेवना पुत्र बळराम रोहिणीना पुत्र श्रीकृष्ण-ना मोटा भाई. शेषना अवतार मनाय छे गदायुद्धमा निष्णात. भीम अने दुर्योधन तेमनी पासे गदायुद्ध शीखेला. हळ-मुसळ तेमनु शस्त्र गणाय छे

बलि पु० प्रह्लादना पुत्र विरोचननो पुत्र. बाणासुरनो पिता विष्णुए वामन अवतार धारण करी तेने पाताळमा दबाव्यो चिरजीवी गणाय छे.

बाण पु० (१)'बाणासुर' बलिराजानो पुत्र तेनी कन्या उषा (ओखा). अनिरुद्ध तेने परणेलो (२) बाणभट्ट, 'हर्षचरित', 'कादबरी' इ नो कर्ता. कान्यकुब्जनो हर्षवर्धन राजा तेनो मित्र-आश्रयदाता हुएनत्सागे (ई स. ६२९—६४५) तेना राज्यकाळनुं वर्णन कर्यु छे, एटले बाण कवि ७ मा सैकाना उत्तरार्धमा थयो होय

बाल्हीक, बाहीक पु० जुओ 'बाह्लिक'

बाहुक पु० (१) सगर राजानो पिता. (२) नळराजा ऋतुपर्णनो सारथि थयो ते वखते तेणे धारण करेलु नाम.

बिल्हण पु० महाकाव्य 'विक्रमांकदेव-चरित', 'चौरपचाशिका' 'बिल्हण-चरित' अने 'कर्णसुदरी' नो कर्ता. काश्मीरी ब्राह्मण 'कर्णसुदरी' ए अणहिलवाडना राजा कर्णदेव (ई. स १०६४—७४) ना विद्याधर-कुमारी कर्णसुदरी साथेना प्रेमलग्ननी नाटिका छे ते ११ मा सैकाना उत्तरार्धमा थई गयो

बुद्ध पु० बौद्ध मतना प्रवर्तक. शाक्यसिंह नामे पण ओळखाय छे 'सिद्धार्थ कुमार' गृहस्थाश्रमनु नाम कपिल-

वस्तुमा जन्म. विष्णुनो नवमो अवतार पण गणाय छे.

बुध पु० पुरूरवानो पिता; चद्रनो पुत्र.

बृहस्पति पु० देवोना आचार्य तेमनी पत्नी तारानु सोम (चद्र) हरण करी गयो ब्रह्माए पाछी अपावी, पछी तेने पुत्र बुध जन्म्यो जेने तेणे चद्रनो पुत्र कह्यो. ते बुध पछी चद्रवशी राजाओना वशनो स्थापक बन्यो

बोपदेव पु० 'मुग्धबोध', 'कविकल्पद्रुम' आदिना कर्ता हेमाद्रिनो समकालीन. देवगिरिना यादव राजाओना दरबारमा जता आवता हता १३ मा सैकाना उत्तरार्धमा थई गया

ब्रह्मन् पु० हिदु त्रिमूर्तिना प्रथम, स्रष्टा–विधाता कहेवाय छे विष्णुना नाभिकमळमाथी प्रगट थयेला पुत्री सरस्वती स्वयभू. प्रथम मरीचिने उत्पन्न कर्या तेमनी पछी कश्यप–विवस्वत्–मनु ए क्रमे मानव सृष्टि उत्पन्न थई

ब्रह्मपुरी स्त्री० काशीक्षेत्र

ब्रह्मावर्त पु० (१) सरस्वती अने दृषद्वती नदी वच्चेनो देश (२) कानपुर नजीक गगा किनारे आवेलु बिथुर (तीर्थ)

भगदत्त पु० प्राग्ज्योतिष देशनो राजा. नरकासुरनो पुत्र कौरवपक्षीय. गजयुद्धमा कुशळ

भगीरथ पु० सगरनो प्रपौत्र तेणे तप करी गगाने स्वर्गमाथी पृथ्वी उपर आणी, जेथी कपिल मुनिना शापथी भस्मीभूत थयेला सगरपुत्रोनो उद्धार थाय.

भट्टनारायण पु० 'वेणीसंहारनो' कर्ता ७ मा सैकाना पूर्वार्धमा थई गयो.

भट्टि पु० 'भट्टिकाव्य' नो कर्ता. ई. स. ५०० थी ६०० वच्चे थई गयो.

भट्टोजीदीक्षित पु० 'सिद्धातकौमुदी' (पाणिनिना व्याकरण सूत्रोनी उपर) लखनार. १७ मा सैकामा थई गया.

भरत पु० ऋषभदेवनो मोटो पुत्र. तेना उपरथी अजनाभवर्षनु भरतवर्ष नाम पड्यु ते ज पछी जडभरत नामे ओळखायो. (२) दशरथ-कैकेयीनो पुत्र रामनो भक्त (३) पुरुवशीय दुष्यत अने शकुतलानो पुत्र ते चक्रवर्ती थयो हतो. (४) नाटच अने सगीत शास्त्रना प्रवर्तक

भरतवर्ष (भारतवर्ष) पु० हिंदुस्तान दुष्यंत-शकुतलाना पुत्र भरत चक्रवर्ती उपरथी पहेला तेनु नाम हिमाह्लवर्ष हतु

भरद्वाज पु० एक ऋषि. द्रोणाचार्यना पिता

भरुकच्छ पु० भरूच. यज्ञ वखते बलिराजाने वामने आ स्थाने पाताळमा दबावेलो

भर्तृहरि पु० (१) शृगार-नीति-वैराग्य शतकोनो कर्ता. एमनु नाम दंतकथाओमा अटवायेलु छे केटलाक तेमने ई० स० ना पहेला के बीजा सैकामा मूके छे, केटलाक छठ्ठा के सातमामा. (२) व्याकरणशास्त्री, 'वाक्यपदीय'-नो कर्ता. बौद्ध हतो, ई० स० ६५१ मा गुजरी गयो.

भवभूति पु० 'महावीर चरित', 'मालती-माधव' अने 'उत्तररामचरित' नो कर्ता विदर्भनो वतनी. कान्यकुब्जना यशोवर्माना [जेने काश्मीरना ललितादित्ये (ई स ६९३–७२९) हरावेलो] राजदरबारमा अवरजवर तेथी ई० स० ७ मा सैकाना अतमा थयेलो मनाय

भागीरथी स्त्री० गगा नदी, भगीरथ राजा स्वर्गमाथी लावेला तेथी

भारवि पु० 'किरातार्जुनीय' महाकाव्य-

नो कर्ता अर्थगौरववाळी शैली माटे जाणीतो. ७मा सैकाना प्रारभमा थई गयो.

भास पु० 'स्वप्नवासवदत्त', 'प्रतिज्ञा-यौगधरायण' वगेरे नाटकोनो कर्ता. ई स १९१२ पहेला मात्र कालि-दास अने बाण कवि मारफते करायेली प्रशसा ज जाणीती हती, १९१२–१५ वच्चे तेना १३ नाटको केरलमाथी जडी आव्या ई० स० पूर्वे ५ मा सैकामा थई गयेलो मनाय छे

भास्कराचार्य पु० 'सिद्धातशिरोमणि' नामे ज्योतिष तथा गणित विषेना ग्रथनो कर्ता (तेना ४ विभाग ते–लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित अने गोलाध्याय) १२ मा सैकानो

भीम पु० (१) विदर्भ देशनो राजा, दम-यतीनो पिता (२) पाडव भीमसेन

भीमसेन पु० पाडवो पैकी बीजो. कुतीना त्रण पुत्रोमा वचलो होवाथी 'मध्यम' पण कहेवाय छे गदायुद्धमा कुशळ दु शासने द्रौपदीनु अपमान कर्यु हतु तेथी तेना लोहीथी द्रौपदीनी छूटी वेणी बाधवानी प्रतिज्ञा लीधेली 'वेणीसहार' नाटकमा ते वस्तु छे हिडिबा राक्षसीथी घटोत्कच पुत्र

भीष्म पु० शतनु राजाना गगाथी थयेला पुत्र शतनुने पछी सत्यवती (मत्स्यगधा) साथे परणवु हतु तेथी सत्यवतीना पालक पितानी मागणीथी, सत्यवतीना पुत्रने गादी मळे ते सारु, आजन्म ब्रह्मचारी रहेवानी प्रतिज्ञा तेमणे लीधी हती पाडव-कौरवोना 'पिता-मह' होवाथी भीष्मपितामह नामे ओळखाय छे

भीष्मक पु० विदर्भ देशनो राजा, रुक्मिणीनो पिता.

भृगु पु० एक ब्रह्मर्षि. ब्रह्माना मानस-पुत्रोमाना एक. जमदग्नि–परशुराम इ० एमना वशमा थया ब्रह्मा-शकर-विष्णु ए त्रणमाथी कोण श्रेष्ठ एनी परीक्षा करवा गया. ब्रह्माए तेमनो बरोबर सत्कार न कर्यो, तेथी तेमने शाप आप्यो के, तमारु पूजन नहि थाय, शकर पत्नी साथे होई तेमनो सत्कार करवा न आव्या एटले तेमने शाप आप्यो के तमे लिग-रूपे पूजाशो विष्णु सूतेला हता तेमने छातीमा लात मारी जगाड्या, तो ते ऊलटा 'तमने वाग्यु तो नथी ?' –कहीने तेमनी सारवार करवा लाग्या. तेथी देवो–मनुष्योमा तमारु पूजन थशे, एवो आशीर्वाद तेमने आप्यो.

भृगुकच्छ, भृगुक्षेत्र जुओ 'भरुकच्छ'

भोज पु० (१) विदर्भ देशनो राजा अज राजानो ससरो (२) कुतिभोज राजा, यादव, कुतीने दत्तक लेनारो (३) माळवानो (धारा नगरीनो) एक राजा सस्कृत विद्यानो पुरस्कर्ता ११ मा सैकाना प्रारभमा थयो. 'सरस्वतीकठाभरण' इ० नो कर्ता.

भोजकट न० विदर्भनी बीजी राजधानी. रुक्मिणीना भाई रुक्मिए स्थापी तेने 'भोजपुर' पण कहेछे भोज राजाओ विदर्भ उपर पण राज्य करता हता

भोजपति पु० कस

भोजपाल भोपाल धारना भोजराजे बधावेला बध उपरथी

भोजपुर न० (१) जुओ 'भोजकट' (२) मथुरा, भोजराजाओनी प्राचीन राजधानी

मगध पु० दक्षिण बिहार तेनी प्राचीन राजधानी 'गिरिव्रज' (राजगृह) –पाच टेकरीओनी अदर वसेली (विपुलगिरि, रत्नागिरि, उदयगिरि, शोणगिरि अने वैभार) तेनी बीजी राजधानी ते पाटलिपुत्र मगधनु बीजु नाम 'कीकट' पण छे मगध एक

वखत गगानी दक्षिणे पण विस्तरेलो हतो सिंगभूम सुधी

मणिपुर न० बभ्रुवाहनना राज्य कलिंग-नी राजधानी सरोवरना मुख आगळ बंदर

मत्स्यदेश पु० विराट राजानो देश धोल-पुरनी पश्चिमे पांडवो तेमा रोहितक अने शूरसेनोना देशमा थईने यमुनाना किनारेथी दाखल थया हता. वैराट तेनी राजधानी (आजनु वैरात जैपुरथी ४० माईल उत्तरे)

मद्र पु० पंजाबनो एक देश रावी अने चिनाबनी वच्चे तेनी राजधानी शाकल

मधु पु० (१) एक राक्षस तेने विष्णुए मारेलो तेथी तेमनु नाम 'मधुसूदन' (२) यदुवंशीय एक प्रसिद्ध कुळ. तेथी श्रीकृष्णनु नाम 'मधुपति'.

मधुपुर न० मथुरा

मधुवन न० यमुनाना तीरे आवेलु एक वन तेमा मधु नामनो राक्षस रहेतो हतो आ वननो ज पछी शूरसेन देश थयो शत्रुघ्ने त्या मथुरा स्थापी.

मध्यदेश पु० कुरुक्षेत्रमा सरस्वती, अल्हाबाद, हिमालय अने विंध्य वच्चेनो प्रदेश पंचाल, कुरु, मत्स्य, यौद्धेय, पटच्छर, कुन्ति अने शूरसेन —आ देशोनो समावेश मध्यदेशमा थतो

मध्व पु० एक वैष्णव पंथना प्रवर्तक आचार्य ब्रह्मसूत्र उपर भाष्य रच्यु छे.

मनु पु० प्रजापति स्वायंभुव मनुष्यो-मानवोनो पिता दरेक कल्पमा १४ मनु थाय प्रथम मनु ते स्वायंभुव मनु सातमा मनु वैवस्वत मनु (सूर्यथी जन्मेला) कहेवाय छे. ते अत्यारना प्राणीओना उत्पादक कहेवाय छे. विष्णुए मत्स्यावतार लईने तेमने पूरमाथी बचावेला ते अयोध्याना सूर्यवंशी राजाओना स्थापक छे. दरेक मनुनो समय 'मन्वंतर' कहेवाय छे. तेवा १४ मन्वंतर होय छे. दरेक मन्वंतरनो समय ४,३२०,००० मानव-वर्षनो गणाय अर्थात् ब्रह्माना दिवसनो १४ मो भाग.

मम्मट पु० 'काव्यप्रकाश' नो कर्ता काश्मीरनो वतनी पण बनारसमा शिक्षण लीधेलु ११मा सैकामा थयेलो.

मय, मयासुर पु० असुरोनो शिल्पी. खांडववन बाळती वखते तेने अर्जुने बचावी लीधेलो, तेथी तेणे पांडवोने राजसभा बांधी आपेली.

मयूर पु० 'सूर्यशतक' नो कर्ता बाणनो निकटनो संबंधी अने बंने हर्षना दरबारमा साथे

मरीचि पु० कश्यपना पिता, दश प्रजापति पैकी एक

मरु पु०, **मरुस्थली** स्त्री० मारवाड सिंधनी पूर्वनु महारण आखा रज-पूताना माटे पण ए नाम वपराय छे

मलज, मलद पु० अयोध्या अने मिथिला ए बेनी वच्चेनो देश शहाबाद जिल्ला-नो पूर्व भाग ताटका राक्षसी त्या रहेती हती

मलय पु० भारतनी सात मुख्य पर्वत-माळाओमानी एक घणुखरु तेने मैसूरथी दक्षिणे लवाती अने त्रावण-कोरनी पूर्व सरहद बांधती घाटनी पर्वतमाळा गणवामा आवे छे त्या चंदनना झाड खूब थाय छे भवभूति एम कहे छे के, तेनी आसपास कावेरी नदी वीटळाती ('कावेरीवलयितम्') कालिदास मलय अने दर्दुर ए बे पर्वतोने दक्षिण भूमिना बे स्तनो कहे छे

मल्लदेश पु० मुलतान जिल्लो. तेनी राजधानी मुलतान

मल्लिनाथ पु० कालिदास, माघ, भारवि वगेरेना ग्रथोनी जाणीती टीका लखनार. आध्रना कोलाचल कुळनो तेलुगु ब्राह्मण १४ मा सैकामा थयानो अदाज छे

महाकाल पु० उज्जयिनीमा आवेलु शकरनु स्थान, बार ज्योतिर्लिंगमानु एक

महाकोसल पु० उत्तरे अमरकटक आगळना नर्मदाना मूळ-स्थानथी माडीने दक्षिणे महानदी सुधीनो, अने पश्चिमे वैनगगार्थी माडीने पूर्वे हरडा अने जोक नदीओ सुधीनो प्रदेश.

महानदी स्त्री० बगाळना उपसागरने मळती एक नदी

महेंद्र पु० भारतनी सात मुख्य पर्वत-माळाओमानी एक, महानदी अने गोदावरी वच्चेनी पूर्व तरफनी आखी घाटमाळा गजमने महानदीनी खीणथी जुदी पाडनार 'महेद्रमाल'. रामे तेजोहरण कर्या पछी परशुराम त्या चाल्या गया हता.

महोदय न० कनोज (कान्यकुब्ज). ७ मा सैकामा ते घणु प्रसिद्ध स्थान हतु. रामायणमा तेनो उल्लेख छे

मंदाकिनी स्त्री० चित्रकूट नजीकनी एक नदी

माकंदी स्त्री० द्रुपदे पाचाल देशमा गगाना किनारे स्थापेली नगरी

माघ पु० 'शिशुपालवध' नो कर्ता. उपमा, अर्थगौरव अने पदलालित्यनो स्वामी गणाय छे ७ मा सैकाना पूर्वार्धमा थयो गणाय छे.

मातंग पु० आसामना कामरूपनी दक्षिण-पूर्वे आवेलो प्रदेश हीरानी खाणो माटे प्रसिद्ध.

माद्री स्त्री० शल्य राजानी बहेन; पाडुनी बीजी पत्नी; नकुल-सहदेवनी माता

माधव पु० (१) मधु यादवनो वशज (सात्यकि तथा श्रीकृष्ण माटे वपराय छे). (२) माधवाचार्य; प्रख्यात ऋग्वेद भाष्यकार सायणाचार्यना भाई. तेमनु 'विद्यारण्य' नाम पण प्रसिद्ध छे. विजयानगरना हिंदु राज्यनी स्थापना तेमणे करेली.

मानस न० हाटक (लडाख) प्रदेशमा आवेल सरोवर तेनी उत्तरे उत्तरकुरुनो हरिवर्ष आवेलो गणाय छे. किन्नरोना धाम तरीके प्राचीन काळमा जाणीतु, वर्षा ऋतु आवता हसो त्या चाल्या जता कहेवाय छे

माया स्त्री० गौतमबुद्धनी माता.

माया, मायापुरी स्त्री० हरद्वार अने कनखल अही दक्षयज्ञ थयेलो, जेमा सतीए पोतानी जातने होमी दीधी हती.

मायावती स्त्री० प्रद्युम्ननी पत्नी. पूर्वजन्मनी रति.

मारीच पु० एक राक्षस. सुद अने ताटकानो पुत्र सुवर्णमृगनु रूप धारण करी, सीताहरणमा तेणे रावणने मदद करेली

मारुति पु० हनुमान, अजना वानरीने वायु (मरुत्) थी थयेल पुत्र. रामना परम भक्त. आजन्म ब्रह्मचारी.

मालव पु० (१) ७ मा– ८मा सैका पहेला आ प्रदेश अवती नामे ओळखातो; तेनी राजधानी उज्जयिनी. १० मा सैकामा तेनी राजधानी धारानगर. (२) मल्लोनो देश; तेनी राजधानी मुलतान.

मालिनी स्त्री० (१) चपानगरी (२) पश्चिम रोहिलखडनी एक नानी नदी. आने काठे कण्वनो आश्रम हतो

माल्यवत् पु० एक पर्वत. (मध्य एशियामा ?) (२) किष्किधा नजीक एक नानो पर्वत. वालिना वध पछी राम-

लक्ष्मण त्या वर्षाकाळ पूरो थता सुधी रहेला

माहिषक पु० नर्मदा किनारानो एक देश तेनी राजधानी माहिष्मती.

माहिष्मती स्त्री० नर्मदा किनारे आवेलु एक शहेर, आजनु मडला, कार्तवीर्यनी नगरी (२) किष्किधानी दक्षिणे आवेलु एक शहेर

मिथिला स्त्री० विदेह देशनी राजधानी. (जुओ 'विदेह') दरभगा जिल्लानु जनकपुर.

मुर पु० नरकासुरना पक्षनो एक राक्षस. तेने श्रीकृष्णे मारेलो तेथी तेमनु नाम 'मुरारि' प्रसिद्ध छे.

मुरारि पु० रामायणनी वार्ता उपरथी ७ अकना नाटक 'अनर्घराघव'नो कर्ता. ८ मा सैकाना अतमा के ९ मानी शरूआतमा थई गयो.

मेकल पु० अमरकटक पर्वत नर्मदा त्याथी नीकळती होवाथी तेनु नाम 'मेकलकन्यका' छे विध्य पर्वतमाळानो एक भाग.

मेघनाद पु० रावणपुत्र इद्रजित्

मेनका स्त्री० एक अप्सरा तेणे विश्वामित्रना तपनो भग कर्यो, ते बन्नेनी पुत्री ते शकुतला

मेना स्त्री० हिमालयनी पत्नी.

मेरु पु० सुवर्ण पर्वत मनाय छे सातद्वीपोनी मध्यमा सूर्य तेनी प्रदक्षिणा करतो मनाय छे.

मैनाक पु० एक पर्वत हिमालय-मेनानो पुत्र इद्रे बीजा पर्वतोनी पाखो तोडी नाखी त्यारे ते दक्षिण समुद्रमा छुपाई गयो एटले तेनी पाखो रही गई छे

मोहिनी स्त्री० समुद्रमथन वखते नीकळेला अमृतने असुरोना कबजामाथी काढी लाववा विष्णुए धरेलो स्त्रीरूप अवतार.

यज्ञपुर न० ओरिसानु जैपुर वैतरणी नदीने काठे छठ्ठा सैकामा स्थपायेलु

यदु पु० ययाति अने देवयानीनो मोटो पुत्र यादवोनो पूर्वज

ययाति पु० नहुषनो पुत्र शुक्राचार्यनी पुत्री देवयानी तथा असुरराजनी पुत्री शर्मिष्ठा ए बे राणीओ देवयानीने यदु अने तुर्वसु ए बे पुत्र, शर्मिष्ठाने द्रुह्यु, अनु अने पुरु शर्मिष्ठा देवयानीनी दासी तरीके आवेली पण ययातिए गुप्त रीते तेने पत्नी बनावी तेथी शुक्राचार्ये तेने वृद्धावस्था प्राप्त थवानो शाप आप्यो पुरुए ए वृद्धावस्था स्वीकारीने पिताने फरी जुवानी प्राप्त करावी.

यवद्वीप पु० जावा तेने 'पूर्वकलिग' पण कहेता

याज्ञवल्क्य पु० एक ब्रह्मर्षि; वैशपायनना शिष्य तेमने मैत्रेयी अने कात्यायनी बे स्त्रीओ हती वाजसनी शाखाना प्रवर्तक मोटा ब्रह्मनिष्ठ. देवरात – जनकने ब्रह्मविद्या आपेली

यामुनगिरि पु० (१) हिमालयनु शिखर. त्या पाडवो थोडो समय रहेला. अजगररूप धारी नहुष त्या भीमने गळी गयेलो, त्यारे धर्मे तेने छोडावेलो. (२) गगा तथा यमुना वच्चेनो एक पर्वत.

यास्क पु० चोथा वेदाग 'निघटु' उपरनी टीका 'निरुक्त'नो कर्ता वैदिक शब्दो अने मत्रोना अर्थ समजावे छे भारतनो अग्रणी भाषाशास्त्री कहेवाय ई स पूर्वे ८मा के ७मा सैकामा थई गयो

युगधर पु० कुरुक्षेत्र नजीक आवेलो यमुनाना पश्चिम किनारा उपरनो प्रदेश.

युधाजित् पु० केकय देशना अश्वपति

राजानो पुत्र, कैकेयीनो भाई भरतनो मामो

युधिष्ठिर पु० 'धर्मराज' नाम पण छे. पाच पाडवोमा मोटा

युयुत्सु पु० धृतराष्ट्रने वश्य दासीथी थयेलो पुत्र महाभारतना युद्ध वखते पाडवोना पक्षमा हतो

युयुधान पु० सात्यकि, यादव योद्धो; पाडवोना पक्षनो.

यौधेय पु० वितस्ता (झेलम) अने सिधु वच्चेनो देश.

रघु पु० सूर्यवशीय दिलीपराजानो पुत्र. अजनो पिता, दशरथनो दादो ते एटलो बधो प्रख्यात थयो के, तेना उपरथी रघुवश नाम ऊभु थयु

रघुनंदन, रघुनाथ पु० रघुवशमा उत्पन्न थयेल श्रीरामचद्र, रघुना कुलमा सौथी श्रेष्ठ होवाथी

रसातल न० सात पातालमानु एक पश्चिम तार्तरी–हूणोना देश तरीके ओळखाय छे

रंतिदेव पु० पुरुवशीय राजा तेणे गोसव नामनो यज्ञ करेलो तेमा एटला बधा पशु वधेरायेला के तेमना चामडा-माथी चर्मण्वती नदी उत्पन्न थई एम कहेवाय छे

राजगृह न० (१) राजगिर मगधनी प्राचीन राजधानी. (२) पजाबमा वियास नदीना उत्तर किनारे आवेल राजगिरि केकय राजाओनी राजधानी.

राजशेखर पु० 'बालरामायण', 'बाल-भारत', 'काव्यमीमासा' आदिनो कर्ता १०मा सैकाना पूर्वार्धमा थई गयेलो.

राढ जुओ 'सूह्म'

राधा स्त्री० कर्णनी पालक माता. अधिरथ सारथिनी पत्नी तेना उपरथी कर्णनु नाम 'राधेय' पण छे. कर्णनु नाम 'सूतपुत्र' पण तेथी ज पडचु छे.

राम पु० (१) परशुराम (२) दशरथ-कौशल्याना पुत्र रामचद्र (३) श्री-कृष्णना मोटाभाई बलराम.

रामगिरि पु० नागपुरनी २४ माईल उत्तरे आवेल रामटेक (२) अथवा छोटानागपुरना सिरगुजामा आवेल रामगढ कालिदास 'मेघदूत'ना वातने रामगिरिथी शरू करे छे तेने शवल-गिरि पण कहे छे

रावण पु० पुलस्त्यना पुत्र विश्रवा अने कैकसीनो पुत्र, लकानो राजा. मयासुरनी पुत्री मदोदरी तेनी स्त्री. कुबेर पासेथी पुष्पक विमान पडावेलु. तेणे करेलु सीताहरण वगेरे कथा 'रामायण'नु वस्तु छे

राहु पु० विप्रचित्ति अने सिंहिकानो पुत्र दानव अमृत देवोने वहेचातु हतु त्यारे गुप्त वेशे देवोमा पेसी अमृत पीवा लागेलो पण सूर्य-चद्र तेने जोई गया तेथी विष्णुए तेनु गळु कापी नाख्यु गळा सुधी अमृत गयेलु, तेथी तेनो तेटलो भाग अमर थयो ते सूयचद्रने वेर राखीने ग्रसे छे

रुक्मिणी स्त्री० विदर्भ देशना राजा भीष्मकनी पुत्री श्रीकृष्णनी पत्नी. तेनो विवाह प्रथम शिशुपाळ वेरे ठरावेलो तेथी श्रीकृष्ण साथे शिशु-पाळने वेर थयेलु.

रुद्रट पु० 'काव्यालकार', 'शृगार-तिलक' आदिनो कर्ता ९मा सैकामा थई गयेलो

रेणुका स्त्री० परशुरामनी माता; जमदग्निनी पत्नी चित्ररथ गधर्व प्रत्ये आसक्त थवाथी जमदग्निए तेनो वध करवा पुत्रोने हुकम कर्यो परशु-रामे पितानी आज्ञानु पालन करी तेनो वध कर्यो हतो

रेवती स्त्री० बळरामनी पत्नी

रेवा स्त्री० नर्मदा नदी.

रैवत रैवतक पु० गिरनार पर्वत.

रोहिणी स्त्री० वसुदेवनी पत्नी, बळरामनी माता.

रोहित पु० हरिश्चद्र-तारामतीनो पुत्र

लक्ष्मण पु० (१) दशरथ-सुमित्रानो पुत्र राम साथे वनवास गयेलो रावणना पुत्र इद्रजितनो वध करेलो. (२) दुर्योधननो पुत्र, अभिमन्युए तेने महाभारतना युद्ध वखते हणेलो

लक्ष्मणा स्त्री० दुर्योधननी कन्या कृष्णपुत्र साब तेने हरी गयेलो

लक्ष्मणावती स्त्री० (१) गौड देशनी राजधानी. गगाने डाबे किनारे (२) अयोध्या प्रातनु लखनौ

लव पु० राम-सीतानो पुत्र कुशनो भाई तेनी राजधानी श्रावस्ती

लंका स्त्री० रावणनी राजधानी, कुबेर पासेथी रावणे जीती लीधेली.

लाढ पु० मही अने तापी नदीनो वच्चेनो दक्षिण-गुजरात. खानदेशनो समावेश तेमा थतो सुरत, भरूच, खेडा अने वडोदरानो केटलोक भाग तेमा आवे.

लोपामुद्रा स्त्री० अगस्त्य मुनिनी पत्नी. विदर्भराजनी कन्या

लोमपाद पु० चद्रवशीय वृहद्रथनो पुत्र. तेना राज्यमा बार वर्ष अनावृष्टि थता ऋष्यशृग मुनिने पोताना राज्यमा लावी वृष्टि करावेली अग देशनो राजा; दशरथनो मित्र

लोमश पु० एक ऋषि वनवास दरम्यान पाडवो साथे तीर्थयात्रा करेली अने तेमने अनेक इतिहास सभळावेला.

लौहित्य पु० ब्रह्मपुत्रा नदी.

वज्र पु० श्रीकृष्णना पौत्र अनिरुद्धनो पुत्र सर्व यादवोनो सहार थता ए ज बाकी रह्यो हतो. तेने अर्जुन इद्रप्रस्थ लई गयो

वडवा स्त्री० विश्वकर्मानी पुत्री सज्ञा; सूर्यनी पत्नी वडवा –घोडीरूपे फरती हती ते वखते अश्वरूपधारी सूर्यथी तेने अश्विनीकुमारो रूपी बे पुत्रो जन्म्या हता

वत्स पु० प्रयागनी पश्चिमे आवेलो एक देश कौशाबी तेनी राजधानी. उदयन तेनो राजा

वत्सला स्त्री० बळरामनी पुत्री, अभिमन्युनी पत्नी.

वररुचि पु० कवि अने वैयाकरणी. विक्रम राजाना नव रत्नोमा एक गणाय छे केटलाक तेने पाणिनिना सूत्रो उपर वार्तिक लखनार कात्यायन गणे छे

वराहमिहिर पु० प्रसिद्ध ज्योतिषशास्त्री, 'बृहत्सहिता'–नो कर्ता परंपरा तेने विक्रमादित्य राजाना नव रत्नोमा एक गणावे छे ते ई. स ना छठ्ठा सैकामा थई गयो होय तेम लागे छे

वर्धमान पु० (१) बगाळनु अत्यारनु बर्दवान (२) सौराष्ट्रनु अत्यारनु वढवाण (३) 'कथासरित्सागर'मा जणाव्या प्रमाणे अल्हाबाद अने बनारस वच्चे आवेलु

वलभी स्त्री० सौराष्ट्र-गुजरातनु बंदर अने राजधानीनु शहेर ७मा सैकामा पश्चिम भारतमा ते बौद्ध विद्यापीठनु मथक हतु

वसिष्ठ पु० एक प्रख्यात ब्रह्मर्षि मित्रावरुणना पुत्र तेमने त्या कामधेनु हती. ते अगे विश्वामित्र साथे वेर थयेलु. सूर्यवशी राजाओना कुलगुरु

वसुदेव पु० यदुवंशीय शूर राजाना पुत्र श्रीकृष्ण अने बळरामना पिता

वंग पु० पूर्वबगाळ ('गौड' नामे उत्तर बगाळनु छे) तेने 'समतत' पण कहे छे एक वखत त्रिपुरा अने गारो टेकरीओनो पण तेमा समावेश थतो.

वाकाटक पु० बगाळना अखात अने श्रीशैल्य पर्वत (दक्षिण हैदराबाद) वच्चेनो देश. आना राजाओ २५०-५२५ दरम्यान विदर्भ उपर राज्य करता हता.

वात्स्यायन पु० 'कामसूत्र'नो कर्ता. ई. स पूर्वे २ जा सैकामा थई गयेलो केटलाक माने छे, तो केटलाक तेनो समय ई स ना ४था सैकामा मूके छे.

वामन पु० विष्णुनो पाचमो अवतार. बलिराजानो निग्रह करवा माटे ठीगणु रूप धरेलु त्रण पगलामा त्रिलोक व्यापी लई, बलिने पाताळमा दबावेलो.

वामनभट्ट बाण पु० 'पार्वतीपरिणय', 'नलाभ्युदय' वगेरेना कर्ता बाण कवि जेवी शैली होवाथी 'अभिनव बाण' तरीके ओळखाय छे त्रिलिग देशना वेन भूपालना दरबारनो कवि. १५मा सैकाना पूर्वार्धमा थई गयो.

वारणावत न० हस्तिनापुर नजीक एक स्थळ

वाराणसी स्त्री० बनारस वारणा अने असि नदीना सगम उपर छे पण पहेला गगा अने गोमतीना सगम उपर हतु. काशी देशनी राजधानी.

वालि पु० मोटो वानर राजा सुग्रीवनो मोटो भाई रामे तेनो वध करी, तेनी पत्नी ताराने सुग्रीव साथे परणावी

वाल्मीकि पु० आदि कवि रामायणना कर्ता नारदे तेमने भक्तिने मार्गे वाळेला सीतानो परित्याग कर्यो त्यारे ते आ ऋषिना आश्रमे रहेला अने तेमणे तेमना बे पुत्रो लवकुशने उछेरेला अने तेमने पछी रामायण शीखवेलु.

वासवदत्ता स्त्री० अनेक लोककथाओ तेनी आसपास गूथाई छे. 'रत्नावली' मा तेने प्रद्योतनी पुत्री कही छ; 'कथासरित्सागर'मा तेने उज्जयिनीना चंडमहासेननी पुत्री कही छे. वत्सराज उदयन तेनु हरण करी गयेलो भवभूति एम जणावे छे के तेनो सजय राजा साथे विवाह थयेलो पण ते पोते उदयनने वरेली सुबधुनी वासवदत्ता वळी जुदी ज कथानी नायिका छे.

वासुकि पु० प्रसिद्ध सर्पराज – नाग. कश्यपनो पुत्र

वाह्लिक, वाह्लीक अत्यारनु वल्ख. रामायणमा जणाव्या प्रमाणे आ देश अयोध्या अने केकयनी वच्चे आवेलो. तेनु बीजु नाम 'वाल्हीक' पण छे. 'त्रिकाडशेष' ना जणाव्या प्रमाणे वाह्लिक अने त्रिगर्त एक ज देशना नाम छे

विचित्रवीर्य पु० भीष्मनो ओरमान भाई, धृतराष्ट्र-पाडुनो पिता तेना मृत्यु पछी तेनी पत्नी अबिका अने अबालिकाथी व्यासजीए ए बे पुत्रो उत्पन्न करेला.

वितस्ता स्त्री० जेलम नदी.

विदर्भ पु० अत्यारनु वराड. प्राचीन समयनु महान राज्य. कृष्णाना किनाराथी माडीने नर्मदाना किनारा सुधीनु. कुडिनपुर प्राचीन राजधानी वरदा नदी तेना बे भाग पाडती उत्तरना भागनी राजधानी अमरावती, अने दक्षिणनी प्रतिष्ठान. पुराणोमा आवता भोज राजाओ विदर्भना हता प्राचीन समयमा भोपाल तथा नर्मदानी उत्तरे भिलसानो समावेश विदर्भमा थतो.

विदिशा स्त्री० माळवानु भिलसा. प्राचीन दशार्ण देशनी राजधानी. भोपाळनी ईशानमा ३० माईल उपर.

विदुर पु० विचित्रवीर्यनी पत्नी

अविकाए पोताने बदले व्यासजी पासे मोकलेली दासीना पुत्र. नीतिज्ञ तथा व्यवहारकुशळ. धृतराष्ट्र तथा कौरवोने तेमणे पांडवो साथे विरोध न करवा खूब समजावेला.

विदेह पु० मगधनी उत्तर-पूर्वमा आवेलो देश तेनी राजधानी मिथिला (अत्यारनु दरभगा जिल्लानु जनकपुर). प्राचीनकाळमा नेपाळनो भाग, तिरहूट जिल्लानो उत्तरनो भाग तथा चपारणनो उत्तर-पश्चिम भाग पण तेमा गणातो बुद्धना वखतमा ते वज्जीओनो देश गणातो तेना राजा जनकनी पुत्री होवाथी सीता वैदेही गणाती

विद्यानगर न० तुगभद्रा नदी उपरनु हपी - विजयनगर.

विनता स्त्री० कश्यपनी पत्नी; दक्ष प्रजापतिनी पुत्री, तेने अरुण अने गरुड ए बे पुत्र थयेला

विनशन न० एक तीर्थ सरहिंद जिल्लानुं रेतीनु रण. सरस्वती नदी अही आगळ रेतीमा लुप्त थई गई

विनाशिनी स्त्री० गुजरातनी बनास नदी.

विपाश्, विपाशा पंजाबनी वियास नदी. महाभारत (१ १७९) मा तेना नामनी उत्पत्ति जणावी छे · वसिष्ठजी पुत्र-शोकथी पाश बाधी आ नदीमां आत्महत्या करवा पडेला, पण नदीए तेमने पाश तोडी किनारे पहोचाडेला.

विभांडक पु० ऋष्यशृगना पिता.

विराट पु० (१) मत्स्य देशनो राजा. पाडवो गुप्तवास तेने त्या रहेला तेनी कन्या उत्तरा अभिमन्यु वेरे परणावी. (२) विराट देश धोलपुरनी पश्चिमे आवेलो. पाडवो तेमा यमुनाना काठेथी रोहितको अने शूरसेनोना देशमा थईने पेठेला. (दशार्णनी उत्तरे) तेनी राजधानी वैराट ते आजनु बैरात जैपुरथी उत्तरे ४० माईल (तेने मत्स्यदेश पण कहे छे)

विरोचन पु० प्रह्लादनो पुत्र, बलि-राजानो पिता

विशाखदत्त पु० 'मुद्राराक्षस' नाटकनो कर्ता. तेनो समय ५ माथी नवमा सैकानी वच्चे अनिश्चित छे.

विशाखा स्त्री० बौद्ध काळमा अयोध्यानु नाम ते आजनु लखनौ छे एम पण कहेवामा आवे छे.

विशाखापत्तन न० आजनु विझागापट्टम

विशाला स्त्री० (१) उज्जयिनी (२) बिहारना मुझफ्फरपुरमा आवेलु बेसाड बौद्धकाळनु वैशाली.

विश्वनाथ पु० 'साहित्यदर्पण'ना कर्ता. 'काव्यप्रकाश'ना टीकाकार. ई. स. १३८४मा तेमनो साहित्यदर्पण ग्रथ लखायेलो

विश्वामित्र पु० चद्रवशी गाधिराजाना पुत्र; क्षत्रिय होई तपोबळथी ब्रह्मर्षि थया, वसिष्ठ साथे वेर चालेलु; तेमना तपनो भंग करवा इद्रे मेनका मोकलेली, तेथी शकुतला नामे कन्या जन्मेली त्रिशकुने स्वदेहे स्वर्गमा जवु हतु, विश्वामित्रे तेने यज्ञ कराव्यो, देवोए तेने न पेसवा दीधो त्यारे तेमणे अतरियाळ बीजु स्वर्ग रच्यु हतु. ताटका राक्षसी तेमना यज्ञनो भग करती तेथी रामनी मदद लीधेलो; तेने मारी पछी जनकने त्या जता सीता साथे रामनु लग्न थयु

विंध्याचल पु० विंध्य पर्वत.

विंध्याटवी स्त्री० विंध्य पर्वतमाळानी पश्चिम बाजु दक्षिण तरफ आवेलु मोटु वन खानदेश अने औरंगाबादनो घणो भाग तेमा आवे

वृत्र पु० त्वष्टृ प्रजापतिना पुत्र विश्वरूपने इंद्रे मार्यो. तेथी इंद्रने मारवा अग्नि पासेथी तेमणे मेळवेलो पुत्र. पछी तेने इंद्रे वज्रथी मार्यो हतो

वृषकेतु पु० कर्णना पुत्रनु नाम

वृषपर्वन् पु० असुरोनो राजा, शर्मिष्ठानो पिता शुक्राचार्यनी मददथी तेणे देवो साथे युद्ध करेलु.

वृष्णि पु० यदुवंशीय एक राजा. श्रीकृष्णना पूर्वज

वेणा, वेणी, वेण्वा, वेण्या स्त्री० (१) कृष्णाने मळती एक नदी. (२) नागपुर जिल्लानी वैनगंगा नदी, गोदावरीनी शाखा.

वेत्रवती स्त्री० विंध्याद्रिमाथी नीकळती नदी हालनी बेटवा (माळवामां).

वेन पु० सूर्यवंशी राजा, पृथुनो पिता. यज्ञनी बंधी फरमावता ऋषिओए तेनो वध करेलो

वेस्सनगर न० (भोपाल) सांचि नजीकनु आजनु बेसनगर भिलसाथी त्रण माईल दूर. बेस अने बेटवाना संगम उपर दशार्णनी प्राचीन राजधानी.

वैजयंत न० निमिराजानी नगरी. मिथिलानु जूनु नाम.

वैजयंती स्त्री० उत्तर कानडानु वनवासी कदंबोनी राजधानी. केटलाक तेने दक्षिणना विजयदुर्ग तरीके ओळखावे छे.

वैतरणी स्त्री० आ नामनी घणी नदीओ छे. महाभारतमा कलिंग देशमा आवेली एक वैतरणीनो उल्लेख छे बीजी दतुरानो ऊगम नासिक पासे छे

वैद्यनाथ पु० अत्यारना पंजाबनो कांगरा जिल्लो तेने कीरग्राम पण गणवामा आवे छे.

वैवस्वत पु० सातमा मनु इक्ष्वाकुना पिता. हालमा तेमनो मन्वंतर चाले छे.

वैशंपायन पु० एक ऋषि याज्ञवल्क्यना मामा तथा गुरु व्यासजीना एक प्रख्यात शिष्य. पुराणो संभळाववामा निपुण जनमेजयने महाभारत संभळावेलु

वैशाली स्त्री० (तिर्हुत) मुझफ्फरपुर जिल्लाना दक्षिण भागमा आवेलो प्राचीन प्रदेश. तेनी उत्तरे विदेह अने दक्षिणे मगध. वैशाली तेनी राजधानी

व्यास पु० पराशरथी सत्यवतीने (कुंवारी अवस्थामा) थयेल पुत्र वेदोनो विभाग करनार महाभारतना कर्ता तेमणे विचित्रवीर्यनी स्त्रीओमा धृतराष्ट्र अने पांडु ए पुत्रो उत्पन्न कर्या तेमने जन्मती वखते माताए नदीनो वच्चेना द्वीपमा तजी दीधेला तेथी ते 'द्वैपायन' अने काळा होवाथी 'कृष्ण द्वैपायन' नामे पण ओळखाय छे.

व्रज पु० मथुरा नजीक आवेलु गोकुल. त्या बचपणमा श्रीकृष्ण नंदने घेर ऊछरेला.

शकस्थान न० सिस्तन, ज्या शको पहेलवहेला आवीने वस्या

शकुनि पु० गांधार देशना सुबल राजानो पुत्र गांधारीनो भाई दुर्योधननो मामो एणे दुर्योधनने द्यूत रमवा प्रेर्यो हतो कपटद्यूत रमवामां कुशळ. सहदेवने हाथे मार्यो गयो

शकुंतला स्त्री० विश्वामित्र – मेनकानी कन्या मेनका जन्म पछी तेने छोडी गई, तेथी कण्व ऋषिए तेने उछेरी. दुष्यंत साथे गांधर्वविवाह कर्या. सर्वदमन – भरत तेनो पुत्र

शक्ति पु० वसिष्ठ-अरुंधतीनो पुत्र; पराशरनो पिता

शतद्रु पु० पंजाबनी सतलज नदी. वसिष्ठ त्या डूबी मरवा गयेला त्यारे ते नदी सेंकडो प्रवाहोमा छिन्नभिन्न

थई गई अने तेमने डूबवा न दीधा. तेथी ते नाम पहेलानु नाम हैमवती

शत्रुघ्न पु० दशरथ-सुमित्रानो पुत्र तेणे लवणासुरने मारेलो शूरसेन देश स्थाप्यो मथुरा तेनी राजधानी.

शरयू स्त्री० सरयू नदी

शरवण न० हिमालयमा शिव-पार्वतीनु क्रीडास्थान कोई पुरुष त्या जाय तो स्त्री थई जाय एवी पार्वतीए मर्यादा बांधेली इल राजा त्या जई इला बनी गयो हतो

शरावती स्त्री० (१) साबरमती नदी. (२) सरस्वतीनु बीजु नाम

शर्मिष्ठा स्त्री० असुरराज वृषपर्वानी कन्या तेणे देवयानीने बचपणनी तकरारमा कूवामा धकेलेली ययातिए देवयानीने बचावी पछी देवयानीए पोताना पिता शुक्राचार्य द्वारा असुर-राजाने धमकावी शर्मिष्ठाने दासी तरीके मेळवी पछी ययातिए तेनी साथे छूपु लग्न करेलु

शल्य पु० मद्र देशनो राजा माद्रीनो भाई कौरवोना पक्षमा तेने जवु पडेलु. कर्णनो सारथि बन्यो महाभारतना युद्धमा १८मे दिवसे कौरवोनो सेनापति थयेलो युधिष्ठिरे तेनो वध कर्यो हतो

शंकराचार्य पु० वेदातमतना प्रसिद्ध आचार्य ब्रह्मसूत्र उपरना 'शारीर-भाष्य'ना कर्ता ई स ७८८–८२० ३२ वर्षनी उमरे देहात केटलाक तेमने छठ्ठा के सातमा सैकामा पण मूके छे

शंख पु० (१) एक स्मृतिकार. लिखितनो भाई (२) शखासुर तेने मत्स्यावतारमा विष्णुए मारेलो

शंतनु पु० चद्रवशी राजा गगाथी भीष्म अने सत्यवतीथी चित्रागद तथा विचित्रवीर्य पुत्रो

शंबर पु० एक असुर तेने कृष्णपुत्र प्रद्युम्ने मारेलो

शाकटायन पु० यास्क अने पाणिनि पहेलानो एक वैयाकरणी

शाकद्वीप पु०, न० शक जातिनो देश मध्य एशियाना तुर्कस्तान सहितनो तार्तरी देश शक लोकोने स्काइथियन लोको गणवामा आवे छे

शाकल पु० मद्र देशनी राजधानी. लाहोर विभागनु सियालकोट ते होय एम कहेवाय छे

शाक्य पु० गौतमबुद्ध

शालिवाहन पु० शक प्रवर्तावनार राजा. ई. स ७८ना वर्षथी तेनो सवत चालु थयो हतो

शालिहोत्र पु० अश्वशास्त्रनो रचनार. कपिलनो पुत्र

शाल्मलिद्वीप पु०, न० चाल्डिया, मेसो-पोटेमिया के आसीरिया पृथ्वीना सात द्वीपो (विभागो) मानो एक

शाल्व पु० (१) जोधपुर-जयपुर अने अलवरना अशो मळीने थतो प्रदेश तेने 'मृत्तिकावती' पण कहेता तेनी राज-धानी शाल्वपुर ए आजनु अलवर (२) शाल्व देशनो एक राजा काशी-राजनी कन्या अबा तेने मनथी वरेली तेथी भीष्मे तेने पाछी मोकलेली पण बीजाथी जितायेली तेने तेणे न स्वीकारी (३) शाल्व देशनो एक राजा रुक्मिणीना लग्न वखते कृष्णे तेने हराव्यो

शिखंडिन् पु० द्रुपदनो पुत्र भीष्म प्रत्येनु वेर लेवा अबा ज (जुओ 'शाल्व') बीजे जन्मे शिखडी थई तेने आगळ राखीने अर्जुने भीष्मनो वध करेलो अश्वत्थामाने हाथे मरायो

शिबि पु० (१) एक चद्रवंशी राजा ययातिनो दौहित्र तेनी दानशीलतानी

परीक्षा करवा इद्र अने अग्नि बाज अने होलानु रूप धारण करीने आवेला. (२) जयद्रथना ताबानो देश सिंधुनी पश्चिमे

शिशुपाल पु० दमघोषनो पुत्र चेदि देशनो राजा. पुराणो प्रमाणे हिरण्यकशिपु अने रावण रूपे पण ए ज अवतरेलो. पांडवोना राजसूय यज्ञ वखते अत्यत निंदा करवा बदल श्रीकृष्णे तेनो वध कर्यो.

शुक पु० व्यासना पुत्र जन्मथी ज तत्त्वज्ञानी अने ब्रह्मचारी रभाए तेमने मोहित करवा निष्फळ प्रयत्न करेलो व्यासे तेमने भागवत शीखव्यु; पछी तेमणे परीक्षितने सभळाव्यु.

शुक्र पु० भृगु ऋषिना पुत्र, च्यवनना भाई. दैत्योना गुरु इद्रकन्या जयती तेमनी पत्नी देवयानी तेमनी पुत्री.

शूद्रक पु० 'मृच्छकटिक' नाटकनो कर्ता. ई स. ना पहेला सैकामा थयो हशे

शूर पु० (१) मगध देशनो राजा; सुमित्रानो पिता (२) वसुदेव, कुती, श्रुतश्रवा (शिशुपालनी माता)नो पिता शिशुपालनो मातामह

शूरसेन पु० एक देश शत्रुघ्ने तेनी राजधानी मथुरा स्थापेली.

शूर्पणखा स्त्री० रावणनी बहेन दडकारण्यमा रहेती हती. राम उपर मोहित थयेली लक्ष्मणे तेनु नाक कापी नाखेलु. पछी तेणे सीतानु हरण कराव्यु.

शूर्पारक पु० थाणा जिल्लानु सोपारा. अपरात (उत्तर कोकण) देशनी प्राचीन राजधानी परशुरामे समुद्र हटावी पोताने रहेवा माटे करेलु स्थान

शृगवेर पु० गगाना उत्तर किनारे मिरझापुर नजीकनु एक नगर. निषादोनो राजा गूह त्या रहेतो

शैब्य पु० (१) विष्णुना रथना चार घोडा पैकी एक (२) पाडवपक्षीय एक राजा.

शैवल पु० विंध्याचळनी दक्षिणे अडोअड आवेलो एक पर्वत.

शोण पु० एक महानद. गौडवनमांथी नीकळी पटणा आगळ गगाने मळे छे.

शोणा स्त्री० अयोध्या अने मिथिला वच्चेनी एक नदी.

शोणितपुर न० बाणासुरनी नगरीनु नाम.

शौनक पु० नैमिषारण्यवासी कुलपति ऋषि. तेमणे सूतने भारतादि इतिहास सभळावेलो

श्रावण पु० पोताना वृद्ध मातापिताने तीर्थयात्रा कराववा नीकळेलो एक जुवान वैश्य. दशरथे भूलथी तेने मारता, पुत्रवियोगनो शाप मळेलो.

श्रावस्ती स्त्री० उत्तर कोशलनी राजधानी त्या लव राज्य करतो हतो तेने शरावती पण कहे छे. अयोध्यानी उत्तरे आवेल सहेतमहेतने तेना अवशेष रूपे ओळखावाय छे.

श्रीक्षेत्र न० ओरिसानु पुरी.

श्रीपर्वत, श्रीशैल पु० दक्षिणनो एक पर्वत कृष्णा जिल्लामा कृष्णा नदीने किनारे आवेलो छे

सगर पु० सूर्यवशी राजा, रामनो पूर्वज. तेना अश्वमेध यज्ञना अश्वनी पाछळ नीकळेला तेना ६०,००० पुत्रो कपिल मुनिना शापथी भस्मीभूत थयेला, त्यारे तेमना उद्धार माटे तेनो वशज भगीरथ गगाने तप करी पृथ्वी उपर लावेलो.

सगरना अश्वनी शोध वखते तेना पुत्रोए पाताळमा जवा खाडो खोदेलो, तेथी समुद्रनी हद वधी गई अने ते 'सागर' कहेवायो.

सती स्त्री० दक्ष प्रजापतिनी कन्या,

शिवना पत्नी. पिताने घेर यज्ञ वखते पतिनु अपमान थयेलु जोई, अग्निमा देहत्याग कर्यो. बीजे जन्मे ते ज पार्वती बन्या.

सत्यभामा स्त्री० सत्राजित्‌ना पुत्री; श्रीकृष्णनां पत्नी. तेमने माटे पारिजात वृक्ष स्वर्गमाथी लाववा श्रीकृष्णे इद्र साथे युद्ध करेलु

सत्यवत् पु० शाल्वदेशना द्युमत्सेननो पुत्र; सावित्रीनो पति. मृत्यु बाद सावित्री तेने यमराज पासेथी छोडावी लावेली

सत्यवती स्त्री०(१) गाधिराजानी कन्या, विश्वामित्रनी बहेन; जमदग्निनी माता. (२) त्रिशकुनी पत्नी, हरिश्चंद्रनी माता. (३) उपरिचर वसुने मत्स्य स्त्रीथी थयेल कन्या ते मत्स्यगधा, योजनगधा इ० नामे पण जाणीती छे कुवारी अवस्थामा पराशर ऋषिथी तेने व्यास पुत्र थयेला. शतनु राजा साथे लग्न बाद तेने चित्रागद अन विचित्रवीर्य बे पुत्र थया.

सत्राजित् पु० सत्यभामानो पिता, सूर्य पासेथी तेने स्यमतक मणि मळ्यो हतो. तेमाथी रोज आठ भार सुवर्ण नीकळतु. ते मणि मेळववा घणा युद्धो थयेला.

सत्यव्रत पु० 'त्रिशकु'.

सदानीरा स्त्री० 'करतोया' नदी.

सन, सनक, सनत्कुमार, सनंदन पु० ब्रह्मदेवना चार मानस पुत्रो

समतट पु० भागीरथीनी पूर्वमा अने पुड्रनी दक्षिणे आवेलो प्रदेश तेनी राजधानी कर्मान्त(कोमिल्ला नजीक)

समंतपंचक न० कुरुक्षेत्र नजीकनु स्थळ. त्या परशुरामे क्षत्रियोनो सहार करी लोहीना पाच धरा भरेला.

सरयू स्त्री० अयोध्या नजीक वहेती नदी तेने गोग्रा पण कहे छे.

सरस्वती स्त्री० एक नदी. ते गगाजमुनाने प्रयाग पासे गुप्त रीते मळी त्रिवेणी-सगम बने छे एम कहेवाय छे कुरुक्षेत्र आ नदीने किनारे आवेलु.

सहदेव पु० पाच पांडवोमाथी पाचमो; माद्रीनो पुत्र खड्गयुद्धमा निष्णात. ज्योतिषमा निपुण.

सह्य पु० सह्याद्रि

संजय पु० धृतराष्ट्रनो सारथि अन मत्री. तेणे महाभारतनुं युद्ध दिव्यदृष्टिथी नजरे जोई धृतराष्ट्रने वर्णवी बतावेलु.

संज्ञा स्त्री० विश्वकर्मानी पुत्री; सूर्यनी पत्नी, यम, यमुना, वैवस्वत अने अश्विनीकुमारो – ए तेना सतान.

संपातिन् पु० अरुणनो पुत्र; जटायुनो भाई. सीताने रावण लका लई गयो छे ए खबर सुग्रीवने तेणे आपेली

संरोचन पु० गोमती नदी नजीकनो एक पर्वत.

सात्यकि पु० यदुवशी योद्धो. पाडवोना पक्षमा रहेलो

सायण पु० वेदोनो सुप्रसिद्ध भाष्यकार. ई. स १३७० ना अरसामा थई गयो

सारस्वत पु० एक प्रदेश, इद्रप्रस्थनी पश्चिमे. पश्चिम – मत्स्य अने मरु भूमिनी वच्चे, सरस्वतीने काठे.

साल्व पु० एक देश – शाल्व.

सावित्री स्त्री० मद्र देशना अश्वपतिराजानी कन्या; सत्यवाननी पत्नी. महापतिव्रता. पति मरण पामता ते यमनी पाछळ गयेली अने अनेक प्रकारे प्रयत्न करी पतिना जीवने पाछो लावेली

सांदीपनि पु० बळराम-कृष्णना अध्यापक. गुरुदक्षिणा तरीके तेमणे पचजन असुर वडे हरायेलो पोतानो पुत्र मागेलो. श्रीकृष्ण समुद्रमा जई, असुरने मारी तेने छोडावी लावेला.

सांब पु० कृष्ण-जाबवतीनो पुत्र; दुर्योधननी कन्या लक्ष्मणानो पति

सिंधु पु० सिंधु नदी (२) सिंध प्रात

सिंधु-सौवीर पु० जुओ 'सौवीर'

सीता स्त्री० सीरध्वज जनक राजाना पालित पुत्री, श्रीरामना पत्नी, जमीन खेडती वखते जनकने मळेला

सीरध्वज पु० विदेहवशीय जनक राजाओमाना एक मिथिला राजधानी. सीतानो पालक पिता. तेनी पोतानी कन्या ऊर्मिला, लक्ष्मण वेरे परणावेली

सुग्रीव पु० वानरोनो राजा, वालिनो भाई सीतानी शोधमा तथा रावणने हराववामा रामने मदद करेली

सुदामन् पु० एक अत्यत दरिद्री ब्राह्मण श्रीकृष्णनो गुरुभाई

सुनीथ पु० शिशुपाल

सुबल पु० गाधार देशनो राजा; शकुनि अने गाधारीनो पिता

सुबंधु पु० 'वासवदत्ता' नो कर्ता. बाणनो समकालीन.

सुभद्रा स्त्री० कृष्ण-बळरामनी बहेन. अर्जुनना पत्नी, अभिमन्युनी माता दुर्योधन वेरे परणाववानी बळरामनी इच्छा हती पण अर्जुने श्रीकृष्णनी समतिथी यतिवेश धारण करी तेनु हरण करेलु

सुमित्रा स्त्री० मगध देशना शूर नामना राजानी कन्या, दशरथनी बीजी पत्नी. लक्ष्मण अने शत्रुघ्न ए बे पुत्र.

सुमेरु पु० गढवालनो रुद्र-हिमालय पर्वत त्या गगा नदीनो ऊगम छे बदरिकाश्रमनी नजीक परपरा प्रमाणे केदारनाथ पर्वत मूळ सुमेरु गणाय छे.

सुवेल पु० लकानो त्रिकूट नामनो पर्वत

सुह्म पु० वग देशनी पश्चिमे आवेल एक देश तेनी राजधानी ताम्रलिप्त, जे प्राचीनकाळमा मोटु बदरी मथक हतु सुह्मना लोकोने राढ पण कहेवामा आवे छे

सेक पु० चबलनी दक्षिणे अने अवंतीनी उत्तरे आवेलो एक देश

सोमदेव पु० 'कथासरितसागर'नो सपादक (गुणाढ्यनी पैशाची 'बृहत् कथा' उपरथी) काश्मीरना 'अनत' राजानो (१०२९–१०६४) दरबारी.

सौराष्ट्र पु० 'आनर्त' पण कहेवाय छे द्वारकाने पण 'आनर्त नगरी' कहे छे प्राचीन द्वारका मधुपुर नजीक अर्थात् (द्वारकाथी) ९५ माईल दक्षिण-पूर्व अने रैवतक पर्वत (गिरनार) नी नजीक आवेली सौराष्ट्रनी बीजी राजधानी वलभी. प्रख्यात प्रभास सरोवर पण दरिया किनारे ए ज प्रदेशमा आवेलु.

सौवीर पु० आजनो सिध प्रात केटलाक लेखको तेने सिधु अने झेलम वच्चे आवेलो गणे छे

स्यमंतक पु० सत्राजिते सूर्य पासेथी मेळवेलो एक मणि रोज आठ भार सुवर्ण आपतो तेने कारणे घणी खटपट जागेली श्रीकृष्णने पण सडोवावु पडेलु.

स्यंदिनी स्त्री० गोमतीने मळनारी एक नदी, आजनी साई

स्रुघ्न पु० स्थानेश्वर (कुरुक्षेत्र)नी ईशाने ३०–४० माईल उपर आवेलो एक प्रदेश

हनुमत्, हनूमत् पु० जुओ 'मारुति'. (२) 'हनूमन्नाटक'ना कर्ता आ नाटक हनुमाने पोते लखेलु कहेवाय छे.

हरिद्वार न० गगा हिमालय छोडी सपाट प्रदेशमा प्रवेशे छे त्या आवेलु प्रसिद्ध तीर्थस्थळ

हरिश्चंद्र पु० इक्ष्वाकुवंशीय राजा त्रिशकुनो मोटो पुत्र विश्वामित्रे तेना सत्यवादीपणानी परीक्षा करेली तारामती राणी. रोहित पुत्र.

हर्ष पु० 'नागानद', 'रत्नावली', अने 'प्रियदर्शिका' ए त्रण नाटकोनो कर्ता. माळवाना हर्ष राजाए पोते आ नाटको लख्या कहेवाय छे. पण धावक अने बाण जेवा तेना दरबारी कविओए लख्या हशे एम मनाय छे

हलायुध पु० 'कविरहस्य' (धातुओनो कोष)नो कर्ता साथे साथे तेमा राष्ट्रकूट राजा कृष्णराज त्रीजा (ई स ९४०– ९५६)ना गुणगान चाले छे तेनो बीजो ग्रथ 'अभिधान-रत्नमाला' (कोष) ते दशमा सैकामा थई गयो

हस्तिन् पु० चद्रवशी पुरुकुलोत्पन्न एक राजा तेणे हस्तिनापुर स्थापेलु

हस्तिनापुर न० 'हस्ती' राजाए स्थापेलु नगर, कौरवोनी राजधानी. मीरतथी अग्निखूणे २२ माईल दूर, तथा विजनोरथी नैर्ऋत्य खूणे गगाना दक्षिण किनारे आव्यु हतु अत्यारे गगाना प्रवाहमा नामशेष थई गयु छे.

हिंडिब पु० एक राक्षस. भीमे तेने मारेलो.

हिंडिबा स्त्री० हिंडिब राक्षसनी वहेन. भीमनु रूप देखी मोहित थई तेने परणी घटोत्कच तेनो पुत्र.

हिरण्यकशिपु पु० प्रह्लादनो पिता राक्षस राजा कश्यप-दितिनो पुत्र. नृसिहरूप धरी विष्णुए तेनो वध कर्यो

हिरण्यबाहु पु० शोणनद

हिरण्याक्ष पु० हिरण्यकशिपुनो भाई. तेने वराहअवतार लई विष्णुए मार्यो

हूण पु० हिन्दुस्तानना वायव्ये आवेलो एक देश अने तेना लोक.

हेमकूट पु० हिमालयनी उत्तरे आवेलो एक पर्वत कालिदास तेने पूर्व अने पश्चिम सागरने स्पर्शतो कहे छे कैलास पर्वतनु बीजु नाम.

हैहय पु० खानदेश, औरगाबाद अने दक्षिण माळवानो भाग मळीने बनतो प्रदेश तेने 'अनूप देश' पण कहे छे. तेनी राजधानी माहिष्मती.

ह्लादिनी, ह्लादिनी स्त्री० पश्चिमे केकय अने पूर्वमा शतद्रु (सतलज) नदी वच्चे आवेली नदी केकयथी अयोध्या जता भरतने ते ओळगवी पडली

परिशिष्ट २ : न्यायसंग्रह

१. **अजाकृपाणीयन्यायः** बकरीनु आववु अने तरवारनु पडवु जुओ 'काकतालीयन्याय'.

२. **अजागलस्तनन्यायः** बकरीना गळा आगळ स्तननी दीटडी जेवु जे होय छे ते ते आचळ नथी, खाली मासनी के चामडीनी गाठ जेवु होय छे कशा उपयोगनी नहि एवी वस्तु माटे आ दाखलो अपाय छे

३. **अजातपुत्रनामोत्कीर्तनन्यायः** पुत्र जन्म्यो नथी, ते पहेला नाम पाडवानी धमाल तेना जेवी हास्यास्पद प्रवृत्ति

४. **अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः** पहेलेथी ज गूमडु होय, तेना उपर वळी बीजा गूमडानो सोजो थाय! एक मुश्केली होय अने तेने माथे बीजी उमेराय तेने माटे

५. **अरण्यचन्द्रिकान्यायः** गाढ जगलमा चादनी रेलाती होय, तेने जोनार-भोगवनार कोण? एम कदरदान भोक्ता विनानी वस्तु नकामी ज.

६. **अरण्यरोदनन्यायः** अरण्यमा गमे तेटलु रुदन करे, तो ते साभळे कोण अने मददे आवे कोण? ए प्रमाणे निरर्थक प्रवृत्ति माटे.

७. **अरुंधतीप्रदर्शनन्यायः** सप्तर्षिमा वसिष्ठना तारा साथे बहु झाखो एवो अरुधतीनो तारो छे एने बताववो होय, तो प्रथम तो पासेनो मोटो (वसिष्ठनो) तारो बतावको पडे अने पछी तेनी साथेनो नानो तारो ए अरुधती—एम कहेवु पडे छे. तेम कोई पण सूक्ष्म वस्तु समजाववा प्रथम तो विनअगत्यनी स्थूल वस्तु ग्रहण करावववी पडे, अने पछी, ते नहि पण तेनी पासेनी सूक्ष्म वस्तु ते खरी वस्तु छे, एम समजाववु ते.

८. **अर्धकुक्कुटीन्यायः** अर्धी मरघडी खावी छे पण खरी अने बाकीनी अर्धी ईंडा माटे राखी मूकवी छे—ए ते बने? 'हसवु ने लोट फाकवो'—ए बने साथे केवी रीते सभवे?

९. **अर्धजरतीयन्यायः** जो कोई वस्तु स्वीकारवी होय तो आखी स्वीकारवी जोईए, अने त्यागवी होय तो आखी ज त्यागवी पडे—अर्धी स्वीकारवी अने अर्धी त्यागवी एम केम बने? कोई अर्ध-वृद्ध प्रौढ स्त्री होय, तेनु मुख हजु पूरेपूरु वृद्ध न थयु होय तेथी स्वीकारवु होय, अने तेना बाकीना अगो न गमे तेवा थया होय तेथी त्यागवा होय, एम केम बने? का तो आखी त्यागो अथवा आखी स्वीकारो.

१०. **अर्धवैशसन्यायः** अर्धु (अंग) कापवु (अने अर्धु जीवतु रहे एम इच्छवु)—एवी व्यर्थ प्रवृत्ति 'अर्धकुक्कुटीन्याय' तथा 'अर्धजरतीयन्याय' जेवु

११. **अशोकवनिकान्यायः** रावण सीताने लकामा लई गयो, त्यारे तेनी पासे घणा उपवनो हता छता अशोकवनिकामा ज तेमने शा माटे राख्या, एनु कशु कारण आपी शकातु नथी. तेम अनेक मार्गो सामे होय तेमाथी कोई अमुक ज मार्ग शाथी लीधो, एनु कशु कारण न आपी शकाय

१२. **अश्मलोष्टन्यायः** रू करता माटीनु ढेफु कठण कहेवाय, पण माटीनु ढेफु पथरा करता पोचु कहेवाय.

तेम वन्ने वस्तुओ खराब होय, छता एकनी अपेक्षाए बीजी कोई सारी कही शकाय – एवो अर्थ 'पाषाणेष्टक-न्याय.' अर्थात् पथ्थर करता ईंट पोची

१३. **अस्नेहदीपन्याय:** तेल वगरनो दीवो एनी मेळे बुझाई जाय तेम पाछळथी प्रेरनार बळ न रहे, एटले आगळनी प्रवृत्ति आपोआप थभे.

१४. **अहिकुंडलन्याय:** साप अने तेना गूचळा एक ज वस्तु छे एक ज सापने फणा तथा तेना एक-बे-त्रण एम गूचळानी रीते भले गणावो, पण 'घाट घड्या पछी नामरूप जूजवा, अंत तो हेमनु हेम होय'

१५. **अंतर्दीपिकान्याय:** वच्चेना ऊमरा उपर मूकेलो दीवो बने बाजु प्रकाश आपे जुओ 'देहलीदीपन्याय'

१६. **अंधकवर्तकीयन्याय:** आंधळानो पग अकस्मात् बटेर पक्षी उपर पडे ते. जुओ 'काकतालीयन्याय'

१७. **अंधगजन्याय:** आंधळाओ हाथीना एक एक अंगने अडकीने ते ते अंग जेवो हाथीने गणे ते कान पकडनारो हाथीने सूपडा जेवो कहे, सूंढ पकड-नारो साप जेवो कहे, पग पकडनारो थांभला जेवो कहे इ० हाथीनु साचु स्वरूप वर्णववा समग्र हाथीनु ज्ञान होवु जोईए ईश्वरनी बाबतमा पण ए ज रीते जुदा जुदा वाद होय छे

१८. **अंधगोलांगूलन्याय:** आंधळो माणस मार्ग जाण्या वगर भटकतो होय, तेने गायनु पूछडु पकडावी देवु, 'आने पकडीने चाल्यो जा, तारे जवानु छे त्यां जशे' पछी जे अनर्थपरंपरा सरजाय ते खोटा वादोनु पूछडु अंधश्रद्धाथी पकडनाराती पण एवी वले थाय.

१९. **अंधदर्पणन्याय:** आंख वगरनाने दर्पण! –निरर्थक प्रवृत्ति. जुओ 'अरण्यरोदनन्याय', 'जलताडनन्याय'.

२०. **अंधपरंपरान्याय:** एक आंधळाने बीजो आंधळो दोरे, तेने त्रीजो आंधळो दोरतो होय – एना जेवी वले, अंध-श्रद्धाथी वगर विचार्ये बीजाने अनु-सरनारनी थाय

२१. **आकाशमुष्टिहननन्याय:** आकाशने मुक्का मारवा जेवो मिथ्या प्रयत्न

२२. **आम्रसेकपितृतर्पणन्याय:** आंबाने पाणी मळे अने पितृओने अंजलि पण: 'एक कांकरे बे पक्षी मारवा'

२३. **आशामोदकतृप्तन्याय:** (कल्पनाना लाडवा, लाडवानी वातोथी तृप्त थवु) 'आकाशी घोडा दोडाववा', 'शेखचल्लीनी कल्पनाओ' – 'वातोना वडा'

२४. **इतो व्याघ्र इतस्तटी:** आ बाजु वाघ ने बीजी बाजु कराड बने बाजु मोत

२५. **उष्ट्रकंटकभक्षणन्याय:** ऊंट कांटा खाय त्यारे पोताना मोमाथी लोही नीकळे, एनो स्वाद कांटानो ज माने अने कांटाने वधु स्वादथी खावा जाय.

२६. **उष्ट्रलगुडन्याय:** ऊंट जे लाकडीनो भार ऊचकतु होय, ते लाकडीथी ज तेने मार पडतो होय सामो प्रतिपक्षी एवी दलीलो करे के जे तेने ज चूप करवामा काममा आवे

२७. **ऊषरवृष्टिन्याय:** ऊखर जमीनमा वरसाद शा कामनो?

२८. **कदलीफलन्याय:** केळने फळ बेसे एटले तेनो नाश थाय, खच्चरी गर्भ धारण करे एटले तेनु मोत थाय

२९. **कदंबकोरकन्याय:**, कदंबमुकुल-न्याय. कदंब वृक्षने बधी डाळीए एक सामटा फूल फूटी नीकळे छे (एकसाथे बनती क्रियाने जणाववा वपराय छे)

३०. **कफोणिगुडन्याय.** कोणीए गोळ! बाळकने गोळ आपे पण कोणी उपर लगाडे, पेलाने हाथवेंतमा लागे पण चाटे ज शी रीते!

३१. **करविन्यस्तबिल्वन्याय:** हाथमां बीला जेवु (स्पष्ट)

३२. **कंठचामीकरन्याय:** गळामां ज हांसडी, अने आखु गाम खोळी वळे. वगलमा छोकरु अने गाममा खोळे

३३. **कंबलनिर्णेजनन्याय:** कामळाने पग उपर पछाडे, तेथी कामळानी धूळ पण ऊडी जाय अने पोताना पग पण साफ थाय एक काकरे बे पक्षी

३४. **काकतालीयन्याय:** कागनु बेसवु अने ताडनु पडवु बे क्रियाओ अचानक साथे बने, तेथी एकने बीजीनु कारण न कही शकाय

३५. **काकदंतगवेषण(-परीक्षा)न्याय:** कागडाना दात गणवा जेवी मिथ्या प्रवृत्ति

३६. **काकपिकन्याय:** कागडो ने कोयल रूप-रगे सरखा, पण गावानु आवे त्यारे फेर जणाय

३७. **काकाक्षिगोलकन्याय:** कागडाने एक ज डोळो होय छे (एकाक्ष), परतु जरूर प्रमाणे ते एक आखमाथी बीजी आखमा सरकावी लावे छे— एवी मान्यता छे. (एक काकरे बे पक्षी जेवी वात माटे वपराय छे)

३८. **काचमणिन्याय:** देखावमा सरखा, पण गुणमा फेर

३९. **कूपमंडूकन्याय:** कूवामानो देडको. सकुचित दृष्टिवाळाने व्हारनी विशाळतानी शी खवर होय?

४०. **कूपयत्रघटिकान्याय:** रेंटना घडानी पेठे चडती-पडतीना वाराफेरा थया ज करे

४१. **कृतक्षौरस्य नक्षत्रपरीक्षा** हजामत करी लीधा पछी, नक्षत्र पूछवा जवु परण्या पछी वरनी परीक्षा करवी.

४२. **क्षते क्षारम्** घा उपर मीठु भभरावव‌ु 'दाझ्या उपर डाम'

४३. **क्षीरदग्धजिह्वान्याय:** दूधनो दाझ्यो छाश फूकीने पीए

४४. **क्षीरनीरन्याय:** बे वस्तुओ एकबीजी साथे एटली बधी भळी जाय के जेम दूध अने पाणी तल अने तादळानो सबध एथी ऊलटो होय छे. झट जुदो पाडी शकाय तेवो.

४५. **खलेकपोतन्याय:** खळा उपर कबूतरनु टोळु ऊतरे अने दाणा साफ करी जाय, तेमा नाना मोटा कोणे नुकसान कर्यु ए न कही शकाय. तेम एक कार्य अनेक कारणोथी थयु होय, त्या अमुक कारणथी थयु एम जुदु न बतावी शकाय.

४६. **गगनारविंदन्याय:** 'आकाशमा कमळनु फूल'—तेना जेवी असभवित वात

४७. **गड्डरिकाप्रवाहन्याय.** गाडरनु टोळु अधपणे एकनी पाछळ बीजु एम दोडयु ज जाय

४८. **गुडजिह्विकान्याय:** ताळवे गोळ लगाववो दवानो कडवो घूटडो पिवरावता, बाळकने मोमा गोळ लगावे

४९. **घटीयंत्रन्याय:** जुओ 'कूपयत्रघटिकान्याय'

५०. **घट्टकुटीप्रभातन्याय:** नाकु न भरवु पडे माटे गाडावाळो रातने वखते दूर फरीने जवा जाय, अने सवार थाय त्यारे जुए तो चकरावामा फरी बराबर टोल-नाकानी ओरडी पासे ज आवीने ऊभो होय!

५१. **घुणाक्षरन्याय:** कीडाए कोरेला लाकडामा के पुस्तकना पानामा कोई अक्षरनी आकृति अकस्मात् थई होय तेना जेवु

५२. **चौरापराधान्माडव्यनिग्रहन्याय.** पाडाने वाके पखालीने डाम माडव्य मुनि मौनव्रती हता राजाना सेवको चोर शोधता त्या आव्या अने मुनिने

पूछवा लाग्या मुनि बोल्या नहि, पण चोर एमना ज आश्रममा सताई रहेला पकडाया एटले मुनिने पण शूळी उपर चडावी दीधा.

५३. **जलताडनन्याय:** पाणी वलोववा जेवी मिथ्या प्रवृत्ति.

५४. **तक्रकौंडिन्यन्याय:** बधा ब्राह्मणोने दही आपवानु होय, पण एकला कौंडिन्यने छाश आपवा जेवो अपवाद करवो ते

५५. **तिलतंडुलन्याय:** डागर अने तल भेगा न मळे; अने भेळवीए तो पण झट जुदा पाडी शकाय. 'क्षीरनीर न्याय' थी ऊलटु

५६. **तुषकंडनन्याय:** ढूणसा खाडवा जेवो मिथ्या प्रयत्न

५७ **तुष्यतुदुर्जनन्याय:** दुर्जननु मो चूप करवा एक वखत तेनी वात स्वीकारी लेवी, अने पछी योग्य रीते तेनो जवाब वाळवो दुर्जन साथे कोई वातनी वावतमा जके चडवाथी ते वधु जक्की थाय, तेना करता तेनी वात स्वीकार्या जेवु करी तेने ठडो पडवा देवो, अने पछी तेने योग्य जवाब वाळवो.

५८. **दग्धबीजन्याय:** भूजेलु बी पछी ऊगे नहि कारणनो नाश थता कार्यनी आशा नहि.

५९. **दंडापूपिकान्याय:** लाकडी पडी, तो तेनी साथे बाधेला रोटला पण पड्या ज गणवा जोईए

६०. **देहलीदीपन्याय:** बे ओरडानी वचला ऊमरा उपर मूकेलो दीवो बने बाजुना ओरडाने प्रकाश आपे (एक क्रियाथी बे परिणाम नीपजे ते माटे)

६१. **धान्यपलालन्याय:** धान्य साथे फोतरा होय ज. पण धान्य लईने फोतरा फेकी देवाय. तेम जे बे वस्तुओ साथे ज मळे तेम होय, तेमाथी कामनी लई लेवी अने बीजीने वेठी लेवी के पडती मूकवी.

६२. **नटांगनान्याय:** रगभूमि उपर नटी जेनी पत्नीनो स्वाग भजवती होय तेनी वहु कहेवाय, सीता बनी होय तो राम बननारा नटनी, अने मदोदरी बनी होय तो रावण बननारा नटनी.

६३. **नष्टाश्वदग्धरथन्याय:** बे जणा बे रथमा बेसी दूरनी मुसाफरीए नीकळ्या होय; तेवामा मार्गमा एकना घोडा मरी जाय अने बीजानो रथ भागी जाय, तो एकना बाकी रहेला घोडा अने बीजाना बाकी रहेला रथथी बने मळी मुसाफरी पूरी करी शके जेम, आधळो अने पागळो, एकनी आख अने बीजाना पगथी बने मळी पोतानु काम चलावी शके.

६४. **न हि विवाहान्तरं वरपरीक्षा** परण्या पछी वरनी जात न पुछाय

६५. **न हि सहस्रेणाप्यन्धैः पाटच्चरेभ्यो गृह रक्ष्यते** आधळा हजार भेगा थाय, पण तेओ चोरथी घरने शी रीते वचावे?

६६. **न ह्येष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति** आधळो ठूठु न जुए अने तेनी साथे अथडाय, एमा ठूठानो शो वाक ?

६७. **निर्धनमनोरथन्याय:** निर्धन माणस कल्पनाना घोडा दोडावे, तेना जेवु शेखचल्लीना तरग जेवु

६८. **नीरक्षीरन्याय:** हस जेम दूध-पाणी भेगा होय तेमाथी दूध जुदु पाडीने पी जाय छे तेम सारासारनो विवेक करवो

६९. **नृपनापितन्याय** राजाए हजामने राज्यमाथी सुदरमा सुदर छोकरो शोधी लाववा कह्यु, हजाम बधे फरी वळयो, पण कोई छोकरो तेने नजरमा न आव्यो छेवटे, पोतानो छोकरो (जे कदरूपो ज हतो) ते मो

करता सुदर लाग्यो, एटले तेने ज ते लई आव्यो वरने कोण वखाणे ? वरनी मा.

७०. **न्यग्रोधबीजन्यायः** वडनु बीज देखवामा नानु होय छे, पण तेमाथी केवु मोटु वृक्ष थाय छे ?

७१. **पदातिन्यायः** शेतरजनी रमतमा प्यादानु सोगठु सीधु चाले छे, पण आगळना सोगठाने मारवानु होय त्यारे वाकु पण जई शके छे, तेम दुर्जन सीधो जतो होय तो पण क्यारे वाको थई घा करशे, ते कही न शकाय

७२. **पंकप्रक्षालनन्यायः** कादवमा खरडाईने पछी धोवा जवु, तेना करता पहेलेथी ज न खरडावु सारु

७३. **पंग्वंधन्यायः** आधळो अने पागळो परस्पर सहायथी मजल पूरी करी शके आने 'अंधपगुन्याय ' पण कहे छे.

७४. **पंजरचालनन्यायः** एक पाजरामा पुरायेला अगियार पखी जो परस्पर मळीने प्रयत्न करे, तो पाजराने खसेडी जई शके, पण छूटो छूटो —विरोधी प्रयत्न करे, तो कशु न थाय.

७५. **पाटच्चरलुंठिते वेश्मनि यामिकजागरणम्** चोर चोरी करी जाय त्यार पछी पहेरेगीर जागतो चोकी करवा बेसे

७६. **पिपीलिकागतिन्यायः** कीडीनी गति धीमी होय छे, छता ते सतत चालती रहे तो झाडनी टोच उपरना फळनो स्वाद पण चाखे

७७. **पिष्टपेषणन्यायः** दळेलाने फरी दळवु — मिथ्या प्रवृत्ति

७८. **पुष्टलगुडन्यायः** आगळना भसता कूतरा उपर लाठी नाखीए, तो आसपासना बीजा कूतरा पण चूप थई जाय के भागी जाय.

७९. **प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायः** मुख्य मल्लने हरावीए एटले पछी बाकीना तो हारी गया ज समजवा

८०. **बधिरकर्णजपन्यायः** बहेराना कानमा गुसपुस — अरण्यरुदन जेवी नकामी प्रवृत्ति

८१. **बीजवृक्षन्यायः, बीजाकुरन्यायः** बीजमाथी वृक्ष पेदा थाय छे, अने वृक्षमाथी बीज थाय छे कयु पहेलु ए शी रीते नक्की थाय ? इंडु पहेलु के पखी पहेलु ?

८२. **ब्राह्मणग्रामन्यायः** ब्राह्मणो वधारे वसता होय तेथी आखु गाम 'ब्राह्मणग्राम ' कहेवाय; परतु तेथी तेमा बीजा वर्णो छे ज नहि एवु नथी होतु मुख्य वस्ती ब्राह्मणनी छे एटलु ज समजवु

८३. **भक्षितेऽपि लशुने न शांतो व्याधिः** लसण अभक्ष्य छे छता ते पण खाधु; परतु रोग तो छताय मटचो नहि.

८४. **भस्मनि आज्याहुतिः** राखमा घी होमवु व्यर्थ प्रवृत्ति

८५. **भिक्षुपादप्रसारणन्यायः** भिक्षा मागवा आवीने आखो पगपेसारो करे — आगळी आपता पजो पकडे. आरबना ऊटनी वात

८६. **भिल्लीचंदनन्यायः** भीलडी चदनना लाकडा बाळीने रोटला घडे. भीलडी चदनना वनमा ज रहेती होय तेने ए लाकडानी शी किमत ?

८७. **भूलिंगशकुनिन्यायः** हिमालय पासे भूलिंग पखी थाय छे, आखो वखत 'मा साहसम्' (साहस न करो !) एवो उच्चार काढचा ज करे छे. छता जाते तो सिह शिकार करी मास खातो होय त्यारे तेना दातमा भरायेल मासना टुकडा काढी खावा तराप मारे छे बीजाने उपदेश आपवो, पण पोते तो तेम न करवु — पोथीमाना रीगणा जेवु.

८८. **मधु पश्यसि दुर्बुद्धे प्रपातं नानुपश्यसि** मध लेवा झाडनी पातळी डाळी सुधी जनारो मध सामे ज नजर

राखे छे पण नीचे पडी जान जशे ते जोतो नथी

८९. **मर्कटमदिरापानादिन्यायः** मूळे माकडु, तेमा दारू पीधो, (अने पछी वीछी करड्यो) – हवे कूदाकूदमा शी मणा रहे ?

९०. **मंडूकप्लुतिन्यायः** देडकानो कूदको वच्चेनो क्रम छोडी झट आगळनी वात उपर ठेकडो मारवो ते (सारु न गणाय)

९१. **मात्स्यन्यायः** मोटु माछलु नानाने गळे – ए न्याय बळियाना बे भाग

९२. **यः कुरुते स एव भुंक्ते** करे ते भोगवे.

९३. **यत् करभस्य पृष्ठे न माति, तत् कंठे निबध्यते** ऊटनी पीठ उपर न माय तेने तेनी डोके बाधे दु खमा दु ख उमेराया ज करे

९४. **याचितकमंडनन्यायः** मागेला घरेणाथी सारा देखावु.

९५. **यादृशो यक्ष स्तादृशो बलिः** जेवो यक्ष तेवा तेने बाकळा छाणना देवने कपासियानी आखो

९६. **वटे यक्षन्यायः** वडना झाडमा भूत रहे छे – एवी लोकवायका ज चाल्या करे छे, कोईए नजरे जोयु होतु नथी.

९७. **वदतोव्याघातः** पोतानी ज वातनु खडन पोते ज करे तेना जेवु – जेम के, मारी मा वाझणी छे, मारो बाप ब्रह्मचारी छे इ०

९८. **वध्यघातकन्यायः** उदर ए बिलाडी माटे भक्ष्यरूप छे, तेथी ते बे प्राणीओ साथे न रही शके ते प्रमाणे जे बे वस्तुओ एक साथे न रही शके ते बतावना आ न्याय वपराय

९९. **वनसिंह-व्याघ्रन्यायः** वन सिंहने आधार आपे छे अने सिंहथी वनने रक्षण मळे छे, तेम एकबीजाने टेका-रूप बनती बे वस्तुओ बताववा.

१००. **वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात्** आजनु (ध्रुव) कबूतर कालना (अध्रुव) मोर करता वधु सारु

१०१. **वराटकान्वेषणे प्रवृत्तश्चिन्तामणि लब्धवान्** खोवायेली कोडी शोधवा जता चिंतामणि जडवो

१०२. **विक्रीते करिणि किमंकुशे विवादः** हाथी वेची दीधा वाद अकुश माटे तकरार शा माटे ?

१०३. **विषक्रिमिन्यायः** विष बीजाओने घातक नीवडे, पण तेमा ज जन्मता अने वधता जतु माटे तो आधाररूप ज थाय छे, एक जणनु झेर ते बीजाने अमृत

१०४. **विषवृक्षन्यायः** झेरी झाड पोते वावीने ऊछेर्यु होय, तो पछी पोताने हाथे शी रीते कापी नखाय ?

१०५. **विहगमन्यायः** कीडी धीमी चाले; तेना करता वादरु एक झाडथी बीजा झाड उपर कूदी जलदी रस्तो कापे पण पखी तो सीधी लीटीमा ऊडी सौथी वहेलु पहोचे उत्तम अधिकारीनु दृष्टात

१०६. **वीचितरंगन्यायः** समुद्रमा एक मोजु बीजा मोजाने आगळ धकेले छे, अने एम छेवटे सौ किनारे पहोचे छे.

१०७. **वृक्षप्रकपनन्यायः** झाड उपर चडेलाने नीचे उभेलाओमाथी एक जण एक डाळी हलाववानु कहे, बीजो बीजीने, अने त्रीजो त्रीजीने इ०, पछी पेलो आखु झाड ज हलावे, तो सौने पोते मागेली डाळी हलावी एम लागे एक ज प्रयत्ने अनेकने सतुष्ट कराय

१०८. **वृद्धकुमारी-वाक्य (–वर) न्याय.** परण्या वगर रही गयेली कोई प्रौढाने देव वरदान मागवानु कहे अने ते एम मागे के, 'मारा पुत्रो सोनानी थाळीमा कढेला दूधनी खीर खाय', तो तेमा पति, पुत्र, ढोरढाख, सोनु-रूपु वधु एकसाथे एक वाक्यमा मागी लीवु तेम

१०९. **वृद्धिमिष्टवतो मूलमपि ते नष्टम्** व्याज खावा गयो ने मूडी पण खोई आव्यो लेने गई पूत और खो आई खसम.

११०. **व्यालनकुलन्यायः** साप अने नोळिया वच्चे जातिगत वेरनो ज सबध छे तेम, बे बाबतो वच्चे स्वभावगत विरोध होय ते बताववा.

१११. **शरपुरुषीयन्यायः** बाण छोडचु ते वखते ज दीवाल उपरथी माणसे मो ऊचु कर्यु अने तेने वाग्यु – एम 'कागनु बेसवु अने ताडनु पडवु' जेवी अणधारी बनती वात

११२. **शलभन्यायः** पतगियु दीवानी ज्योतना प्रकाशनी अदेखाई करी तेने ओलववा पोतानी पाख तेना उपर फफडाववा जाय छे अने नाश पामे छे तेम मूर्खताथी मोत तरफ धसी जनार माटे

११३. **शशविषाणन्यायः** ससलानु शीगडु – जेवी असभव वात 'आकाश-कुसुम'

११४. **शाखाचंद्रन्यायः** जो पेली डाळ उपर चद्र देखाय – एम कही स्थूल के नजरे देखाती वस्तुने आधारे दूरनी सूक्ष्म वस्तु बतावाय छे ते. 'अरुधतीप्रदर्शनन्याय'

११५. **शान्ते कर्मणि वेतालोदयः** कोई अनिष्ट दूर करवा होम-विधि करी रहीए ने वेताल डोकियु काढे, तेम प्रयत्न करी एक अनिष्ट दूर करी रहीए ने बीजु मोटु अनिष्ट आवीने ऊभु रहे, ते माटे.

११६. **शीर्षे सर्पो देशान्तरे वैद्यः** साप तो माथे आवीने ऊभो छे अने वैद्य परदेशमा छे

११७. **श्वश्रूनिर्गच्छोक्तिन्यायः** भिखारी भीख मागवा आव्यो होय, तेने वहु एम कहीने पाछो काढे के, 'जा, घरमा कशु नथी' पण सासु ते जोई पोतानी वडाई स्थापवा पेला भिखारीने पाछो बोलावे छे अने ते आवे त्यारे कहे के, 'जा, घरमा कशु नथी' तेना जेवु.

११८. **सिकताकूपवत्** रेतीमा कूवो खोदता जाओ तेम पुरातो ज जाय.

११९. **सिकतातैलन्यायः** रेती पीलीने तेल काढवा जेवु – असभवित.

१२०. **सिंहावलोकनन्यायः** सिंह आगळ वधता पहेला डोकु पाछु फेरवी नजर करतो रहे छे तेम – पुनरावलोकन माटे.

१२१. **सुभगाभिक्षुकन्यायः** सुभगा एटले घरमा वडी सत्तावाळी सासु जुओ 'श्वश्रूनिर्गच्छोक्तिन्याय'.

१२२. **सूचिकटाहन्यायः** लुहारने कोई सोय बनाववानु कहे, अने बीजो कढाई बनाववानु कहे. तो ते पहेला नानु – जलदी थनारु (सोयनु) काम ज हाथमा ले, तेम

१२३. **स्थालीपुलाकन्यायः** तपेलीमा चोखा रधाता होय तो तेमानो कोई एक दाणो पण दबावी जोईने आखी तपेलीना चोखा रधाया छे के नहि ते जाणी शकाय छे तेम

१२४. **स्थूणानिखननन्यायः** थाभलो के खीलो रोपवो होय, तो हलावी हलावीने अदर धकेलवामा आवे छे, के बराबर स्थिर थयो के नहि तेनी खातरी करवामा आवे छे, तेम पोतानी वातनु वारवार बीजा पूरक दृष्टातोथी समर्थन करवु ते

१२५. **हस्तामलकन्यायः** हाथमा रहेलु आमळु जेम स्पष्ट जोई शकाय छे, तेम जे परिणाम स्पष्ट देखी शकातु होय, तेने माटे वधु समर्थननी जरूर नथी रहेती.

परिशिष्ट ३ : संख्यावाचक शब्द

एक वि० एक
द्वि वि० बे
त्रि वि० त्रण
चतुर् वि० चार
पंचन् वि० पाच
षष् वि० छ
सप्तन् वि० सात
अष्टन् वि० आठ
नवन् वि० नव
दशन् वि० दश(–स)
एकादशन् वि० अगियार
द्वादशन् वि० बार
त्रयोदशन् वि० तेर
चतुर्दशन् वि० चौद
पंचदशन् वि० पदर
षोडशन् वि० सोळ
सप्तदशन् वि० सत्तर
अष्टादशन् वि० अढार
नवदशन् वि०, एकोनविंशति स्त्री०, ऊनविंशति स्त्री०, एकान्नविंशति स्त्री० ओगणीस
विंशति स्त्री० वीस
एकविंशति स्त्री० एकवीस
द्वाविंशति स्त्री० बावीस
त्रयोविंशति स्त्री० तेवीस
चतुर्विंशति स्त्री० चोवीस
पंचविंशति स्त्री० पचीस
षड्विंशति स्त्री० छव्वीस
सप्तविंशति स्त्री० सत्तावीस
अष्टाविंशति स्त्री० अठ्ठावीस
नवविंशति स्त्री०, एकोनत्रिंशत् स्त्री० ऊनत्रिंशत् स्त्री०, एकान्नत्रिंशत् स्त्री० ओगणत्रीस
त्रिंशत् स्त्री० त्रीस
एकत्रिंशत् स्त्री० एकत्रीस
द्वात्रिंशत् स्त्री० बत्रीस
त्रयस्त्रिंशत् स्त्री० तेत्रीस
चतुस्त्रिंशत् स्त्री० चोत्रीस
पंचत्रिंशत् पात्रीश
षट्त्रिंशत् स्त्री० छत्रीस
सप्तत्रिंशत् स्त्री० साडत्रीस
अष्टात्रिंशत् स्त्री० आडत्रीस
नवत्रिंशत् स्त्री०, एकोनचत्वारिंशत् स्त्री०, ऊनचत्वारिंशत्, स्त्री०, एकान्न-चत्वारिंशत् स्त्री० ओगणचाळीस
चत्वारिंशत् स्त्री० चाळीस
एकचत्वारिंशत् स्त्री० एकताळीस
द्वाचत्वारिंशत् स्त्री०, द्विचत्वारिंशत् स्त्री० बेताळीस
त्रयश्चत्वारिंशत् स्त्री०, त्रिचत्वारिंशत् स्त्री० तेताळीस
चतुश्चत्वारिंशत् स्त्री० चुमाळीस
पंचचत्वारिंशत् स्त्री० पिस्ताळीस
षट्चत्वारिंशत् स्त्री० छेताळीस
सप्तचत्वारिंशत् स्त्री० सुडताळीस
अष्टाचत्वारिंशत् स्त्री०, अष्टचत्वारिंशत् स्त्री० अडताळीस
नवचत्वारिंशत् स्त्री०, एकोनपंचाशत् स्त्री०, ऊनपंचाशत् स्त्री०, एकान्न-पंचाशत् स्त्री० ओगणपचास
पंचाशत् स्त्री० पचास
एकपंचाशत् स्त्री० एकावन
द्वापंचाशत् स्त्री०, द्विपंचाशत् स्त्री० बावन
त्रय:पंचाशत् त्रिपंचाशत् स्त्री० त्रेपन
चतु:पंचाशत् स्त्री० चोपन
पंचपंचाशत् स्त्री० पचावन
षट्पंचाशत् स्त्री० छप्पन
सप्तपंचाशत् स्त्री० सत्तावन
अष्टापंचाशत्,अष्टपंचाशत् स्त्री० अठ्ठावन

नवपचाशत्, एकोनषष्टि, ऊनषष्टि, एकान्नषष्टि स्त्री० ओगणसाठ
षष्टि स्त्री० साठ
एकषष्टि स्त्री० एकसठ
द्वाषष्टि, द्विषष्टि स्त्री० बासठ
त्रयःषष्टि, त्रिषष्टि स्त्री० त्रेसठ
चतुष्षष्टि स्त्री० चोसठ
पंचषष्टि स्त्री० पांसठ
षट्षष्टि स्त्री० छासठ
सप्तषष्टि स्त्री० सडसठ
अष्टाषष्टि, अष्टषष्टि स्त्री० अडसठ
नवषष्टि, एकोनसप्तति, ऊनसप्तति, एकान्नसप्तति स्त्री० अगणोसित्तेर
सप्तति स्त्री० सित्तेर
एकसप्तति स्त्री० एकोतेर
द्वासप्तति, द्विसप्तति स्त्री० बोतेर
त्रयस्सप्तति, त्रिसप्तति स्त्री० तोतेर
चतुस्सप्तति स्त्री० चुमोतेर
पंचसप्तति स्त्री० पचोतेर
षट्सप्तति स्त्री० छोतेर
सप्तसप्तति स्त्री० सित्तोतेर
अष्टासप्तति, अष्टसप्तति स्त्री० इठ्ठोतेर
नवसप्तति, एकोनाशीति, ऊनाशीति, एकान्नाशीति स्त्री० अगण्याएंशी
अशीति स्त्री० एंशी
एकाशीति स्त्री० एकचाशी
द्व्यशीति स्त्री० ब्याशी
त्र्यशीति स्त्री० त्याशी
चतुरशीति स्त्री० चोर्याशी
पंचाशीति स्त्री० पचाशी
षडशीति स्त्री० छयाशी
सप्ताशीति स्त्री० सित्याशी
अष्टाशीति स्त्री० इठ्याशी
नवाशीति, एकोननवति, ऊननवति, एकान्ननवति स्त्री० नेव्याशी
नवति स्त्री० नेवु
एकनवति स्त्री० एकाणु
द्वानवति, द्विनवति स्त्री० बाणु
त्र्योनवति, त्रिनवति स्त्री० त्राणु
चतुर्नवति स्त्री० चोराणु
पंचनवति स्त्री० पंचाणु
षण्णवति स्त्री० छन्नु
सप्तनवति स्त्री० सत्ताणु
अष्टानवति, अष्टनवति स्त्री० अठ्ठाणु
नवनवति स्त्री०, एकोनशत न०, ऊनशत न०, एकान्नशत न० नव्वाणु
शत न० सो
सहस्र, दशशत न० १०००
अयुत न० १०,०००
लक्ष न०, लक्षा स्त्री० १००,०००
प्रयुत न० १,०००,०००
कोटि स्त्री० १०,०००,०००
अर्बुद न० १००,०००,०००
अब्ज न० १,०००,०००,०००
खर्व पु०, न० १०,०००,०००,०००
निखर्व पु०, न० १००,०००,०००,०००
महापद्म पु० १,०००,०००,०००,०००
शंकु पु० १०,०००,०००,०००,०००
जलधि पु० १००,०००,०००,०००,०००
अंत्य न० १,०००,०००,०००,०००,०००
मध्य न० १०,०००,०००,०००,०००,०००
परार्ध न० १००,०००,०००,०००,०००,०००

पूर्ति

[चालु वपराशना वधु शब्दो]

अ

अकंपन पुं० जुओ पृ० ५९७
अकालकुसुम न० असमये खीलेलु फूल (अनिष्टसूचक)
अकालक्षम वि० विलव सहन करी न शके तेवु
अकालजलदोदय पु० असमये वादळनु घेरावु ते (२) धूमस
अकालज्ञ वि० समय के असमयनो विचार न करतु
अकांडपातजात वि० जन्मीने तरत नाश पामतु
अकीर्ति स्त्री० अपकीर्ति
अकुलीन वि० हलका कुळनु (२) दैवी, अपार्थिव
अकूज वि० अवाज विनानु; चूप
अकृशलक्ष्मी वि० पूर्ण समृद्धिवाळु (२) स्त्री० पूर्ण आबादी
अकृष्टपच्य वि० खेड्या विना ऊगतु
अक्क पु० घरनो खूणो
अक्लिष्टवर्ण वि० स्पष्ट सभळाय के समजाय तेवा शब्दोवाळु
अक्षय्यभुज् पु० अग्नि
अक्षरभूमिका स्त्री० लखवा माटेनु फलक – पाटियु इ०
अक्षरशिक्षा स्त्री० गुह्य मत्राक्षरोनुं शास्त्र (२) ब्रह्मतत्त्वनो सिद्धात
अक्षरार्थ पु० शब्दोनो अर्थ - मर्म
अक्षसूत्र न० मणकानी माळा
अक्षिस्पंदन न० आख फरकवी ते
अक्षोभ्य पु० क्षोभ न पामे तेवु
अखंडम् अ० अखडपणे, सतत
अखिन्न वि० थाकेलु के कटाळेलु न होय तेवु (२) थाक न लागे तेवु
अगज वि० पर्वत के वृक्षमा उत्पन्न थयेलु के थतु (२) पर्वतोमा रखडतु
अगजा स्त्री० पार्वती
अगजाजानि पु० शिव (पार्वतीना पति)
अगम वि० चाली न शके तेवु
अगम्यरूप वि० जेनु स्वरूप अनुपम के अज्ञेय छे तेवु
अगस्ति, अगस्त्य पु० जुओ पृ० ५९७
अगस्त्योदय पु० भादरवा महिनाना अत भागमा अगस्त्य-मडळनो उदय थवो ते (त्यारथी पाणी स्वच्छ बनवा लागे छे)
अगंड पु० हाथ-पग विनानु घड
अगाधसत्त्व वि० अगाध बळवाळु
अगूढ वि० स्पष्ट, खुल्लु
अगोचर वि० इद्रियातीत, अगम्य (२) न० इद्रिय गोचर नही एवी वस्तु (३) माहिती के ज्ञाननो अभाव (४) ब्रह्म
अग्निकार्य न० अग्निमा होम करवो ते
अग्निचित् पु० नियमित होम करनारो
अग्निदायक वि० आग लगाडनारु (२) भूख लगाडनारु
अग्निधारण न० अग्निमा विधिपूर्वक नियमित होम करवो ते
अग्निप्रस्कंदन न० अग्निमा होम करवाना कर्तव्यनु उल्लघन

अग्निमुख पु० देव (२) ब्राह्मण (३) अग्निहोत्री (४) माकण
अग्नियोग पु० चार बाजु अग्नि अने उपर सूर्यनो ताप – एम पाच अग्नि तपवारूपी तपस्या
अग्निविहरण न०, **अग्निविहार** पु० अग्निमा आहुति अर्पवी ते
अग्निशरण, अग्निशाल न० अग्निहोत्रनु स्थान
अग्निशिख वि० टोचे अग्निवाळु
अग्निष्ठ न० रसोडु , [धुमाडो
अग्निसख, अग्निसहाय पु० पवन (२)
अग्निसाक्षिकम् अ० अग्निने साक्षी तरीके राखीने (करेलु लग्न)
अग्निसात्कृ ८ उ० बाळी नाखवु; भस्मीभूत करवु
अग्निसुत, अग्निसूनु पु० कार्तिकेय
अग्न्यगार, अग्न्यागार पु०, न० होमनो अग्नि राखवानु स्थान
अग्रकेश पु० आगळना वाळ
अग्रदूतिका स्त्री० आगळथी सदेश लावनारी दूती
अग्रपातिन् वि० पहेला थतु के बनतु
अग्रपाद पु० पगना पहोंचानो आगळनो –टोचनो भाग
अग्रप्रदायिन् वि० अगाउथी आपतु
अग्रभागिन् वि० (शेष रहेलानो) प्रथम भाग लेनारु के तेनो दावो करनारु
अग्रभाव पु० आगळ - प्रथम होवु ते
अग्ररंध्र न० छिद्र के बाकोरानो शरूआतनो के टोचनो भाग
अग्रशोभा स्त्री० शिखरोनी शोभा (२) श्रेष्ठ शोभा
अग्रसंख्या स्त्री० प्रथम स्थान के पद
अग्रसंध्या स्त्री० वहेली सवार, मळसकु
अग्राक्षि न० तीक्ष्ण नजर, त्रासी नजरे जोवु ते
अग्रेसरिक पु० (मालिकनी आगळ चालनारो) सेवक (२) नेता

अघ पु० जुओ पृ० ५९७
अचलकन्यका, अचलसुता स्त्री० पार्वती
अचिरांशु स्त्री० वीजळी
अचिंतितोपनत वि० अणधार्यु के अणचिंतव्यु थतु के बनतु
अज पु० जुओ पृ० ५९७
अजननि स्त्री० उत्पत्ति ज न थवी ते (अस्तित्व न होवु ते)
अजप पु० नियमित के विधिसर जप न करनारो ब्राह्मण
अजाकृपाणीयन्यायः जुओ पृ० ६३०
अजागलस्तनन्यायः जुओ पृ० ६३०
अजाजि (–जी) स्त्री० जीरु [६३०
अजातपुत्रनामोत्कीर्तनन्यायः जुओ पृ०
अजामिल पु० जुओ पृ० ५९७
अजाविक न० घेटाबकरा वगेरे जानवर
अजिह्मगामिन् वि० सरळ, सीधु, प्रमाणिक (वांकु न चालनारु)
अजीवनि स्त्री० मरण, मृत्यु
अतऊर्ध्वम् अ० जुओ 'अत परम्'
अतटप्रपात पु० ऊभी भेखड के कराड उपरथी पडवु ते
अतर्कितागत, अतर्कितोपनत वि० ओचितु आवी पडेलु
अतःपरम् अ० आनाथी आगळ, आथी वधु, आनाथी पछी
अतिकोप वि० क्रोधरहित, शात
अतिगृहक न० ऊचु घर (२) अगाशी
अतिचिरम् अ० घणु मोडु होय तेम (२) लावा समय सुधी
अतिच्छेद पु० अतिशय अतर
अतिजित वि० पूरेपूरु हरावेलु
अतितृष्णा स्त्री० वधारे पडतो लोभ
अतिथिधर्म पु० आतिथ्यनो हक के अधिकार (२) अतिथि प्रत्ये बजाववानु कर्तव्य
अतिदिश् ६ प० सोपी देवु, आपी देवु (२) अन्यने लागु करवु

अतिधर्म पु० ऊचामा ऊचो धर्म, मोटामा मोटो धर्म
अतिपात्य वि० विलव करवा योग्य, मुलतवी राखवा योग्य
अतिप्रसक्ति स्त्री० अति आसक्ति (२) मर्यादानु उल्लघन करवु ते (३) भळते ठेकाणे नियम खेचीने लगाडवो ते (४) अतिव्याप्ति (५) शब्दाळुता, लावु लावु – कटाळो आवे तेवु बोलवु ते (६) निकट सबध
अतिबला स्त्री० एक वनस्पति (औषधि) (२) विश्वामित्रे रामने शीखवेल शक्तिशाळी विद्या के मत्र
अतिब्रू २ उ० अपमान करवु, गाळ भाडवी (२) चर्चा करवी
अतिभर, अतिभार पु० भारे बोजो
अतिभारिक वि० भारे बोजारूप एवु
अतिमान वि० अमाप, अति विस्तृत (२) पु० उद्धताई, अति गर्व (३) विस्तार, हद
अतिराग पु० उत्साह; उमग
अतिलंघन न० अति उपवास करवा ते (२) उल्लघन
अतिलघिन् वि० भूलचूक करनारु (अभिनय आदिमा)
अतिलोल वि० अति नाजुक
अतिवक्तृ वि० वातोडियु
अतिवर्धन न० विनजरूरी उमेरो करवो ते
अतिविस्तर पु० अति विस्तार
अतिशक्ति स्त्री० शक्ति वहारनु ते
अतिशस्त्र वि० शस्त्र करता पण वधु ईजा करनारु
अतिशायन न० पाछळ पाडी देवु ते, श्रेष्ठता, चडियातापणु
अतिसक्ति स्त्री० निकट सबध के सानिध्य (२) भारे आसक्ति
अतिसर्ग पु० दान (२) परवानगी, रजा (३) काढी मूकवु ते; विदाय (४) कृपा, महेरबानी
अतिसर्पण न० जोरथी हालवु–खसवु ते
अतिसर्व वि० सर्व करता चडियातु (२) सर्वथी पर
अत्यच्छ वि० सदाचारी, शीलवान
अत्यंतीन वि० अत्यत चालनारु के अति वेगथी चालनारु (२) लावो समय टकी रहेनारु [पाडी देतु
अत्यादित्य वि० सूर्यना तेजने पाछळ
अत्यारूढ वि० अतिशय वधी गयेलु (२) न० अति ऊचु स्थान, अति उन्नति
अत्यारूढि स्त्री० अति उन्नति
अत्रि पु० जुओ पृ० ५९७
अथर्वविद् पु० अथर्ववेदनो जाणकार
अदत्तपूर्वा वि० स्त्री० पहेला जेनो विवाह नथी थयो तेवी
अदर्शन न० जोवु नहि ते (२) दर्शननो अभाव के लोप (३) उल्लेखनो अभाव (४) अज्ञान
अदान वि० कजूस, दान न करे तेवु (२) मद न झरतो होय तेवु
अदिति स्त्री० जुओ पृ० ५९७
अदूर वि० दूर नहि तेवु, नजीक (२) न० नजीकपणु, सानिध्य
अदृष्टकर्मन् वि० बिनअनुभवी
अदृष्टपुरुष पु० वच्चे मध्यस्थी राख्या विना बने पक्षे जाते ज करेली सुलेह
अदेवमातृक वि० नहेरो वगेरेथी पाणी-नी सीचाई थती होय तेवु (देव अर्थात् वरसादथी ज नहि)
अदेशकाल पु० अनुचित स्थळ अने समय
अदोष वि० निर्दोष (२) लेखनना दोषनो अभाव (३) पु० दोष न होवो ते
अदोह पु० जे समये दोहवु शक्य नथी ते समय (२) दूध न देवु ते
अद्यतनीय वि० आजनु, अद्यतन
अद्यश्वीन वि० आजकालमा बने तेवु

अद्रव्य न० नकामी के तुच्छ वस्तु (२) अपात्र शिष्य
अद्रिकुक्षि पु० पर्वतनी गुफा के खीण
अद्रिसार वि० पर्वत जेवु कठण (२) पु० लोढु [अति कठण
अद्रिसारमय वि० लोखडनु बनावेलु (२)
अद्वद्व वि० भेदबुद्धि के वेर विनानु
अधिकरणभोजक पु० अदालतनो अधिकारी, न्यायाधीश
अधिकरणमंडप पु० अदालतनो ओरडो
अधिकरणिक पु० न्यायाधीश (२) सरकारी कर्मचारी [ते
अधिज्यता स्त्री० पणछ चडावेली होवी
अधित्वत् अ० तारा उपर
अधिदीधिति वि० अति तेजस्वी
अधिमर्म अ० मर्मस्थाने
अधिया २ प० भागवु, नासी छूटवुं
अधियोध पु० उत्तम योद्धो के वीर
अधिरुह् वि० (समासने अंते) –नी उपर ऊगतु
अधिरूषित वि० चदन वगेरेनो लेप करेलु [करनारो
अधिरोह पु० हाथी उपर सवारी
अधिवास् १० पु० सुवासित करवु
अधिश्रि १ उ० व्यापवु, पथरावु (२) चडवु (३) उपर मूकवु
अधिश्री वि० ऐश्वर्यवान, श्रेष्ठ
अध्यग्नि अ० अग्निनी साक्षीए, अग्नि समक्ष
अध्यर्घ वि० अर्धुं वधारे होय तेवु; दोढु
अध्यवसित वि० निर्णय करेलु
अध्यवसिन् वि० व्रतधारी
अध्यंच् वि० श्रेष्ठ, उत्तम
अध्यारोपण न० ऊचु करवु ते; ऊभु करवु ते (२) चडाववु के आरोपवु ते
अध्याशय पु० बीजकोश, कर्णिका
अध्वनीन, अध्वन्य वि० मुसाफरी करवाने शक्तिमान, वेगे मजल कापतु
अध्वर वि० अकुटिल; शास्त्रोक्त (२) भंग के उल्लंघन न थयेलु; अगाढ (३) ईजा के हिंसा न करनार; अडग (४) पु० यज्ञ
अध्वान वि० चूप, मूंगु
अन् २ प० श्वास लेवो (२) जीववु; हालवु-चालवु
अनक्षरम् अ० एक शब्द बोल्या विना, मूगा मूगा [नथी तेवु
अनन्यगुरु वि० जेनाथी मोटो बीजो गुरु
अनन्यज, अनन्यजन्मन् पु० कामदेव
अनन्यदृष्टि वि० स्थिरताथी–एकाग्रपणे जोतु
अनन्यपरता स्त्री० एकांतिक भक्ति के आसक्ति [आसक्त नहि तेवु
अनन्यपरायण वि० अन्य (स्त्री)मां
अनन्यशासन वि० (पोता सिवाय) बीजो कोई जेनो राजा नथी तेवु
अनन्यसदृश वि० अनुपम, जेनो समान बीजु कोई नथी तेवु
अनन्यसाधारण, अनन्यसामान्य वि० असाधारण, बीजा कोईने लागु न पडतु होय तेवु (२) एकनिष्ठ
अनपत्यता स्त्री० निःसंतानपणु
अनपार्थ वि० सकारण एवु
अनप्सरस्, अनप्सरा स्त्री० अप्सरा जेवु नही ते, अप्सराने उचित नहि ते
अनभिवादक वि० विरोधी, असमत
अनभ्यंतर वि० अणजाण, अज्ञ
अनभ्यावृत्ति स्त्री० पुनरावर्तन न करवु ते, फरीथी न करवु ते
अनभ्र वि० वादळ विनानु
अनम्र वि० उद्धत, गविष्ठ
अनराल वि० वाकु नहि तेवु; सीधुं
अनर्घेय वि० अमूल्य
अनर्थसंशय पु० जोखमभरेलु काम, महान अनिष्ट (२) पैसानु जोखम न होवु ते [रहेवानु तप
अनवकाशिका स्त्री० एक पगे ऊभा

अनवधान वि० लक्ष विनानु, बेध्यान, काळजी विनानु (२) न० दुर्लक्ष
अनवन वि० रक्षण न आपतु
अनवम वि० हीन नहि तेवु, उच्च
अनवरतम् अ० सतत
अनवसर वि० अवकाश के फुरसद वगरनु (२) उचित काळ विनानु (३) न०, पु० फुरसद न होवी ते (४) उचित समय न होवो ते [दुराचारीपणु
अनवस्थान न० संदिग्धता; अनिश्चय (२)
अनवस्थित वि० अस्थिर, चंचळ (२) बदलायेलु, पलटायेलु (३) व्यभिचारी (४) रहेवा माटे असमर्थ एवु
अनवस्थितम् अ० क्रममा नहि तेम, अव्यवस्थितपणे [रसोडु
अनस् न० गाडु (२) रांधेलु अन्न (३)
अनसूया स्त्री० जुओ पृ० ५९७
अनसूयु वि० असूया के अदेखाई विनानु
अनहंवादिन् वि० गर्वरहित, नम्र
अनंगद वि० प्रेम अथवा काम उत्पन्न करनारु (२) कडु के वलय विनानु
अनंतक वि० अंत विनानु, नित्य
अनंतगुण वि० अनंत गुणोवाळु (२) असंख्य [के छेडा विनानु
अनंतपार वि० अनंत विस्तारवाळु, पार
अनंतर वि० पछीनु (२) नजीकनु (३) अंतर वगरनु, अखंड (४) न० नजीकपणु, सांनिध्य
अनंतरज पु० पोतानी तरत पहेला के पछी जन्मेलो (औरस) भाई
अनंतविजय पु० युधिष्ठिरनो शंख
अनंतशयन न० जुओ पृ० ५९७
अनाकाश वि० पारदर्शक नहि तेवु (२) पारदर्शक आकाश विनानु
अनाकुल वि० स्वस्थ, आकळु नहि तेवु (२) क्रमसर एवु
अनाक्रंद वि० वेदनाथी मूढ बनेलु
अनागत वि० नहि आवेलु (२) नहि मळेलु (३) भावि, भविष्य काळनु (४) न० भावि समय, भविष्य
अनागतविधातृ पु० भविष्यने माटे तैयारी राखनारु के संघरो करनारु
अनातुर वि० आतुर के उत्सुक नहि तेवु (२) थाक्या विनानु (३) नीरोगी, आरोग्यवान
अनात्मज्ञ, अनात्मवेदिन् वि० आत्मज्ञान विनानु (२) पोतानी जातने न जाणनारु के समजनारु, मूर्ख, अज्ञान
अनात्मसंपन्न वि० मूर्ख – अज्ञ (२) आत्मवान के निग्रही नहि तेवु
अनादर वि० आदर विनानु (२) पु० तिरस्कार, अपमान (३) सहेलाई, मुश्केली के महेनत न पडवी ते
अनादृत वि० अनादर करायेलु, अनादर पामेलु (२) परवा न करतु
अनार्यसमाचार पु० दुराचार, दुर्वर्तन
अनालोक वि० बीजा वडे प्रकाशित नहि तेवु, स्वयंप्रकाश
अनावाप वि० नवु कशु न मेळवनारु
अनाशिन् वि० अविनाशी, अव्यय
अनास्वादित वि० चाख्यु के भोगव्यु न होय तेवु
अनाहार पु० उपवास, भूख्या रहेवु ते
अनियंत्रण वि० नियंत्रण के अंकुश विनानु, स्वतंत्र
अनिरिण वि० खाडा-टेकरा विनानु
अनिरुद्ध पु० जुओ पृ० ५९७
अनिर्लोकित वि० बराबर विचार्यु के तपास्यु न होय तेवु
अनिर्वाण वि० नघरावेलु नहि तेवु
अनिर्विद वि० थाकेलु नहि तेवु
अनिर्वेद पु० खिन्नता के हताशानो अभाव, आत्मविश्वास, हिंमत
अनिविष्ट वि० न परणेलु
अनीर्षु वि० ईर्ष्या न करतु
अनील वि० श्वेत [घोडो)
अनीलवाजिन् पु० अर्जुन (सफेद घोडा-

अनीहा स्त्री० उपेक्षा; बेदरकारी
अनुकाम वि० स्वेच्छा मुजबनु (२) कामनायुक्त (३) पु० योग्य इच्छा
अनुकामम् अ० स्वेच्छा मुजब
अनुकामीन वि० स्वेच्छा मुजब जनारु के वर्तनारु
अनुकूलयति प० (मनाववु, रीझववु)
अनुकूलित वि० आदरातिथ्य करेलु; सत्कारेलु
अनुक्रंद् १ प० –ना अवाजनो जवाब आपवो, –नी पाछळ अवाज करवो
अनुक्षणम् अ० दरेक क्षणे; सतत
अनुक्षपम् अ० दरेक राते
अनुगीत न० –ना जवाबमा गावु ते
अनुगुणयति प० (अनुकूळ बनाववु, मनाववु)
अनुघटन न० –नी साथे जोडवु ते
अनुचरित वि० अनुसरायेलु, सेवायेलु
अनुजन पु० परिजन, परिवार
अनुजन्मन् पु० नानो भाई
अनुज्ञात वि० परवानगी के समति आपेलु (२) शीखवेलु, भणावेलु
अनुज्ञान न० परवानगी, समति
अनुतर्ष पु० तरस, पीवानी इच्छा (२) तृष्णा (३) मद्य, दारू
अनुत्तरंग वि० मोजायी कपतु नहि तेवु, स्थिर, अक्षुब्ध
अनुत्सूत्र वि० सूत्र के नियम बहारनु नहि तेवु, अनियमित नहि तेवु
अनुदार वि० पत्नीने वळगी रहेतु के पत्नी वडे अनुसरातु (२) अनुकूळ के लायक पत्नीवाळु
अनुदित वि० न कहेलु के उच्चारेलु (२) उदय न पामेलु, न देखातु
अनुद्धत वि० उद्धत नहि तेवु, विनयी
अनुद्रष्टृ वि० हितेच्छु; हित करनारु
अनुध्येय, वि० शुभेच्छा दर्शाववा योग्य; कृपा करवा योग्य
अनुनादिन् वि० पडघो पाडतु
अनुनायिक वि० मनावनारु
अनुनिशीथम् अ० मधराते
अनुनीति स्त्री० अनुनय
अनुनेय वि० अनुकूळ एवु; सात्वन पमाडे तेवु (२) जेनो अनुनय करवो जोईए तेवु
अनुपदिन् वि० अनुसरतु (२) –ने शोधतु
अनुपपन्न वि० अयोग्य, अघटित
अनुपस्कार वि० अध्याहार न करवो पडे तेवु
अनुपस्कृत वि० असल, अकृत्रिम (२) राधेलु नहि तेवु (३) सशयरहित (४) स्वार्थ के प्रयोजन विनानु
अनुपातिन् वि० परिणामरूपे आवतु के प्राप्त थतु (२) पु० अनुयायी
अनुप्रकीर्ण वि० पूरेपूरु छवाई गयेलु
अनुप्रवण वि० अनुकूळ; आनददायक
अनुप्रवाद पु० अफवा, लोकवायका
अनुप्रसद् –प्रेरक० खुश करवु – मनाववु
अनुप्रहित वि० पाछळ मोकलेलु
अनुप्लु १ आ० –नी पाछळ दोडवु, अनुसरवु
अनुभाषितृ वि० जवाबमा बोलतु के कहेतु
अनुमंतृ वि० अनुमति आपनारु; थवा देनारु
अनुमंत्र् १० आ० मत्र वगेरे बोली विदाय करवु, आशीर्वाद आपी विदाय करवु
अनुमात्रा स्त्री० निर्णय, निश्चय
अनुमार्गम् अ० मार्गे, रस्ते
अनुयात्र न०, **अनुयात्रा** स्त्री० अनुयायी वर्ग (२) पाछळ जवु – अनुसरवु ते
अनुयात्रिक पु० अनुयायी; हजूरियो
अनुयुक्त वि० पगारदार शिक्षक पासे भणतु
अनुयुंजक वि० अदेखु, ईर्ष्याळु
अनुयोक्तृ पु० पगारदार शिक्षक
अनुरागवत् वि० प्रेममां पडेलु, आसक्त
अनुराधपुर न० जुओ पृ० ५९७

अनुरूप वि० –ना जेवु (२) तुल्य (३) योग्य (४) न० सादृश्य, सरखापणु (५) उचितपणु

अनुरोधन न० समति (२) आग्रह

अनुलालित वि० खुश के प्रसन्न करायेलु

अनुलीन वि० छुपायेलु (२) चोटेलु

अनुलोमग वि० सीधी लीटीमा जनारु

अनुलोमार्थ वि० अनुकूळ बोलनारु

अनुवंश पु० पेढीनामु, वशवृक्ष

अनुवाक्या स्त्री० देवताना आह्वान माटे होता वडे बोलाती ऋचा

अनुविषय पु० स्वाद

अनुवृत्त वि० अनुसरतु (२) सतत चालु रहेतु (३) क्रमश वर्तुलाकार एवु

अनुवेशन न० मोटा भाईना लग्न पहेला नाना भाईना लग्न थाय ते

अनुशासनपर वि० आज्ञाकित;आज्ञाधीन

अनुष्ण वि० ठडु; शीतळ

अनुसरण न० पूठ पकडवी ते

अनुसंहित वि० बारीक तपास करेलु (२) जोडायेलु, सबद्ध (३) –अनुसार होय तेवु

अनुसारक, अनुसारिन् वि० अनुसरतु (२) पीछो पकडतु (३) –ने पाले पडतु (४) बारीक तपास करतु

अनुसृत वि० –ने अनुसरतु (२) वहेतु, सरतु (३) –नो आशरो लेतु

अनूपदेश पु० जुओ पृ० ५९७

अनृच् (–च) वि० ऋग्वेदनो अभ्यास नहि करनारु, जनोई धारण न करवाथी वेदोना अध्ययन माटे लायक नहि एवु

अनृतवाच्, अनृतवादिन् वि० जूठु बोलनारु [होवाथी)

अनेकप पु० हाथी(सूढ अने मोथी पीतो

अनेकमुख वि० वीखरायेलु, जुदी जुदी दिशाओमा जतु

अनेकाग्र वि० अनेक कामोमा व्यग्र एवु (२) मूझायेलु

अनेडमूक वि० बहेरु अने मूगु

अनेहस् पु० समय, काळ [रायेलु

अनैतिह्य न० परपराथी नहि स्वीका-

अनौद्धत्य न० उद्धतपणानो अभाव(२) समता, शाति [ढळेलु

अन्यसंक्रांत वि० बीजा तरफ वळेलु के

अन्यान्य वि० अन्योन्य, परस्पर

अन्योन्यकार्य न० सभोग, मैथुन

अन्वक्षम् अ० पछीथी, त्यार पछी

अन्वयवत् वि० कुलीन(२)सबधवाळु; परिणामे आवतु

अन्ववाय पु० वश, जाति, कुळ

अन्ववेक्षा स्त्री० विचार, गणतरी

अन्वारभ् १ आ० आरभ करवो(२) स्पर्श करवो

अन्वारुह् १ प० –नी पाछळ चडवु (चिता उपर) (२)आरोहण करवु

अन्विष्ट वि० अन्वेपण करेलु, शोधेलु

अन्वीक्षिक वि० भलु इच्छनारु, हिताहितनी दरकार करनारु

अन्वेषिन्, अन्वेष्टृ वि० तपास करतु, शोधतु, खोळतु

अपघन पु० अवयव, अग

अपत्रपिष्णु वि० शरमाळ, लज्जाळु

अपथप्रपन्न वि० आडे मार्गे चडेलु (२) खोटे मार्गे वापरेलु

अपथ्यकारिन् वि० अपराधी (२) शत्रुवट दाखवनारु

अपधूमत्व न० धुमाडा विनानु होवु ते

अपध्वसज पु०, अपध्वसजा स्त्री० मिश्र –हलका वर्णनी व्यक्ति (मानो वर्ण पिताना वर्ण करता ऊचो होय तेवु)

अपनस वि० नाक विनानु

अपनिधि वि० गरीब

अपपयस् वि० पाणी विनानु

अपभय वि० भयरहित, निर्भय

अपमन्यु वि० शोकमुक्त

अपमार्ग पु० आडरस्तो (२) पपाळवु ते, हाथ फेरववो ते

अपमृषित वि० असह्य, अणगमतु
अपयान न० नासी छूटवु ते (२) उपेक्षा; बेदरकारी [(हाथ, पग इ०)
अपरगात्र न० गौण अवयव के अग
अपरथा अ० बीजी रीते [आगळ
अपरापरम् अ० उत्तरोत्तर, आगळ ने
अपरांत पु० जुओ पृ० ५९७
अपरिक्रम वि० आसपास फरवाने अशक्तिमान एवु [कर्यु होय तेवु
अपरिनिष्ठित वि० बरावर स्थापित न
अपरिसंस्थित वि० कोई जगाए स्थिर न रहेतु एवु
अपरोप पु० गादीएथी उठाडी मूकवु ते
अपर्याप्तवत् वि० असमर्थ
अपर्वन् वि० पर्वनो दिवस न होय तेवु (२) योग्य समय के मोसम विनानु
अपलापिन् वि० छुपावतु, ढाकी देतु
अपलाषुक वि० तरस अथवा तृष्णाथी मुक्त एवु (२) तरस्यु
अपवत्सय बहु लाड नहीं तेम बहु बेदरकारी नहीं एम सावचेतीथी वर्तवु
अपवलिगत वि० टींगावेलु, लटकावेलु
अपवाद पु० निंदा, गाळ (२) आळ, कलक (३) सामान्य नियममा बाध (४) हुकम, आज्ञा (५) हरणोने लोभाववा वगाडातु वाद्य
अपवादिन् वि० अपकीर्ति करतु, निंदतु (२) विरोध करतु
अपवारक पु० पडदो, आड
अपवाहित वि० हाकी काढेलु; दूर करेलु
अपविघ्न वि० विघ्न के अतराय विनानु
अपविद्या स्त्री० अज्ञान; माया; अविद्या
अपवोढृ वि० लई जनारु, दूर करनारु
अपश्री वि० सौंदर्य के शोभा विनानु
अपष्ठु अ० खोटी रीते, असत्य रीते
अपसार पु० बहार नीकळवु ते, नासी जवु ते (२) बहार नीकळवानो मार्ग
अपसृत वि० नीचे पडेलु के गरेलु (२) फेलावेलु (३) छोडेलु, फेंकेलु
अपसृष्ट वि० जेणे छोडी के नर्जी दीधु छे तेवु [कोई पण भाग
अपस्कर पु०,न० पैंडा सिवायनो गाडीनो
अपस्नात वि० स्वजनना मृत्यु पछी स्नान कर्यु होय तेवु (बीजी उत्तरक्रिया करवा माटे)
अपस्पश वि० जासूस विनानु [वाळु
अपस्मारिन् वि० फेफरु – वाईना व्याधि-
अपहार पु० लाववु ते, लई आववु ते
अपहारिन् वि० लई जनारु, उपाडी जनारु (२) चोरी जनारु
अपाकरिष्णु वि० दूर करनारु (२) पाछळ पाडी देनारु, चडियातु
अपाकृत वि० दूर करेलु (२) विनानु, रहित [नीपजती लागणी
अपाकृति स्त्री० क्रोध, भय वगेरेथी
अपात्रभृत् वि० नालायकने पोषतु
अपानृत वि० साचु, खरु [स्त्री
अपांसुला स्त्री० सती, अव्यभिचारिणी
अपिपरिक्लिष्ट वि० खूब हेरान थयेलु
अपुष्कल वि० पुष्कळ नहि तेवु (२) हीन, अधम
अपुंस्का स्त्री० पति विनानी स्त्री
अपूर्विन् वि० पत्नी साथे पहेला परिणीत जीवन न भोगव्यु होय तेवु
अपृथक्त्विन् वि० (पुरुष अने प्रकृतिनो) भेद न करी शके तेवु
अपेक्षिन् वि० –नी राह जोतु, अपेक्षा राखतु, दरकार करतु
अपोहित वि० दूर करेलु (२) खडन करेलु
अप्रकाश वि० प्रकाशित नहि एवु
अप्रकाशम्, **अप्रकाशे** अ० छूपी रीते; छानी रीते
अप्रख्यता स्त्री० अपकीर्ति
अप्रतिभट वि० बिनहरीफ एवु
अप्रतिम वि० अनुचित
अप्रतिमान वि० बिनहरीफ, अनुपम
अप्रतिमानुष वि० असाधारण

अप्रतिशासन वि० हरीफ राजा विनानु, एकचक्री एवु

अप्रदक्षिणम् अ० डावामाथी जमणु होय तेम (२) प्रतिकूळ होय तेम

अप्रधान वि० मुख्य नहि तेवु, गौण

अप्रवृत्त वि० कामे नहि लागेलु (२) नहि प्रेरेलु (३) अनुचित

अप्रसक्त वि० निर्विघ्न, रुकावट विनानु

अप्रसहिष्णु वि० (–ने माटे) असमर्थ

अप्रसिद्ध वि० अजाण्यु, अगत्य विनानु (२) असामान्य

अप्रस्ताविक वि० अप्रस्तुत

अप्रहत वि० हणायेलु – घवायेलु नही तेवु (२) खेडाया विनानु, पडतर (३) नवु–कोरु (वस्त्र)

अप्राप्तयौवन वि० यौवनने प्राप्त नहि थयेलु, पुख्त वयनु नही तेवु

अफलप्रेप्सु वि० फळेच्छारहित

अफल्गु वि० लाभकारक, उत्पादक

अबंधुकृत वि० सगा सबधीओथी नहि करायेलु, स्वाभाविक रीते ज विकसेलु

अबाह्य वि० बाह्य नहि तेवु, अदरनु (२) परिचित, प्रवीण [अग्नि

अबिंधन पु० वडवाग्नि; समुद्रमा रहेलो

अबुद्धम् अ० अजाण्ये, बुद्धिपूर्वक नहि एम [मागवु ते

अभययाचना स्त्री० अभयदान के रक्षण

अभाविन् वि० न बनवानु के न थवानु एवु

अभिकर्षण न० खेतीनु ओजार

अभिकाम वि० प्रेमासक्त, कामातुर

अभिक्रमण न० हुमलो; चडाई (२) पासे जवु ते [प्रसिद्ध करवु

अभिख्या २ प० –प्रेरक० जाहेर करवु;

अभिगुप् १० प० बचाववुं, रक्षण करवु

अभिगुप्ति स्त्री० सरक्षण (२) निग्रह

अभिगृध्न वि० लोभी

अभिगै १ प० –ने गाई सभळाववु (२) गीतोथी गाजतु करवु

अभिघार पु० घी (२) यज्ञमा आहुति उपर घी रेडवु ते

अभिचारक, अभिचारिन् वि० मेली विद्यानो प्रयोग करनारु

अभिजनन वि० पोताना खानदानने छाजे तेवु

अभिजनवत् वि० ऊचा कुळनु; खानदान

अभिजुष् ६ आ० सेववु, वारवार जवु

अभिज्ञता स्त्री० ज्ञान, समज

अभिज्ञात वि० जाणतु, समजतु

अभिज्ञानाभरण न० ओळखाण –याद-दास्त तरीके आपेलु घरेणु (वीटी)

अभिडीन न० –नी तरफ ऊडवु ते

अभितड् १० प० मारवु, ठोकवु

अभितप् १ प० तपाववु, गरम करवु (२) सतापवु

अभिताप पु० सताप

अभिताम्र वि० खूब रातु एवु

अभिद्रुह ४ प० द्रोह करवो; धिक्कारवु; ईजा करवा इच्छवु

अभिद्रोह पु० द्रोह, कावतरु (२) क्रूरता, जुलम (३) निंदा, गाळ (४) दु ख, त्रास

अभिधायिन् वि० व्यक्त करतु, अर्थ बतावतु (२) कहेतु, जणावतु

अभिधाव् १ प० –नी तरफ दोडवु, हुमलो करवो

अभिनभ. अ० आकाश तरफ; आकाशमा

अभिनम्र वि० खूब नीचु झूकेलु–वळेलु

अभिनिर्मुक्त वि० सूर्यास्त समये ऊघतु अने कर्तव्यकर्मो न बजावतु

अभिनिर्वृत्ति स्त्री० सिद्धि, पूर्णता

अभिनिविष्ट वि० तत्पर, परायण (२) दृढ, स्थिर (३) युक्त, सपन्न (४) जक्की, दुराग्रही (५) प्रवीण

अभिनिवेशिन् वि० आसक्त; परायण (२) आनंदित करावतु

अभिनिष्पत् १ प० बहार नीकळवु

अभिनिष्यन्द पु० टपकवु ते; झरवु ते
अभिनीति स्त्री० चेष्टा, हावभाव (२) मैत्री, स्नेह
अभिनुन्न वि० व्यथित; क्षुब्ध
अभिनेय वि० भजववा लायक एवु
अभिपत्ति स्त्री० पासे जवु ते (२) समाप्ति (३) रक्षण (४) उपपत्ति, समर्थन
अभिपद्म वि० अति सुदर
अभिपरिप्लुत वि० डूबी गयेलु, परिपूर्ण; व्याप्त (२) आक्रमण पामेलु, –थी व्याकुळ बनेलु [नाश
अभिपात पु० सचार, गति (२) मृत्यु,
अभिपाडु वि० करमायेलु, निस्तेज
अभिपूज् १० प० पूजा करवी (२) समानवु, मान्य राखवु
अभिपॄ ३,९ प० पूरवु, भरी काढवु
अभिप्रणी १ प० मन्त्रो वडे पवित्र करवु
अभिप्रवृत् १ आ० –नी पासे जवु के पहोचवु (२) –मा पडवु, –ने मळवु
अभिप्रवृत्त वि० –मा प्रवृत्त थयेलु, मडेलु, मचेलु
अभिप्लु ४ आ० –नी तरफ कूदवु (२) ऊभरावबु, तरबोळ करवु; डुबाडवु
अभिबल न० युक्तिथी तपास के परीक्षा करवी ते (काव्य०)
अभिभर्त्सित वि० तिरस्कृत
अभिभा २ प० चळकवु, प्रकाशवु
अभिभाषिन् वि० –नी साथे वात करतु, –ने सबोधतु
अभिभू पु० अहकार
अभिभूष् १० उ० शोभा अर्पवी
अभिमनस् वि० इच्छावाळु, आतुर
अभिमनायते आ० (खुश थवु, प्रसन्न थवु, उत्सुक थवु)
अभिमन्यु पु० जुओ पृ० ५९७
अभिमर्शक, अभिमर्शिन्, अभिमर्षक, अभिमर्षिन् वि० स्पर्श करतु (२) हुमलो करतु, बळात्कार करतु, सभोग करतु
अभिमान न० प्रमाण
अभिमुखता स्त्री० हाजरी, सानिध्य (२) अनुकूळ होवापणु
अभिमुखयति प० (खुश करवु, प्रसन्न करवु, वश करवु)
अभिरक्ष् १ प० रक्षण करवु; मदद करवी (२) शासन करवु
अभिरक्षा स्त्री० बधी बाजुएथी रक्षण
अभिराध् –प्रेरक० प्रसन्न करवु
अभिराधन न० मनाववु ते; खुश करवु ते
अभिरुचित पु० प्रेमीजन [करेलु
अभिलक्षित वि० चिह्नोवाळु (२) पसद
अभिलक्ष्य वि० लक्षमा लेवा लायक (२) ताकवानु होय एवु (३) चिह्नथी अकित करवा लायक
अभिलंघ् १, १० प० ओळगी जवु; कूदी जवु (२) उपर धसी जवु (३) उल्लघन करवु
अभिलाव पु० लणणी, कापणी
अभिलाषक, अभिलाषिन्, अभिलाषुक वि० उत्कट अभिलाषावाळु
अभिली ४ आ० –मा प्रवेशवु, –मा छुपावबु
अभिलीन वि० वळगेलु (२) आलिंगतु
अभिवक्तृ वि० तोछडाईथी बोलनारु
अभिविक्रम वि० पराक्रमी, शूरवीर
अभिवीज् –प्रेरक० पखो नाखवो
अभिवृष् १ प० वरसवु, छटकाव करवो
अभिवृष्ट वि० वरसाद के छटकाव थयो होय तेवु
अभिशप् १ उ० शाप आपवो
अभिशस्त वि० खोटो आक्षेप-आरोप मुकायो होय तेवु, अपमानित (२) हुमलो करायेलु, ईजा करायेलु
अभिशंक् १ आ० शका करवी (२) –थी डरवु
अभिशंकित वि० वहेमीलु, शकाशील (२) डरतु

अभिषक्त वि० (भूतना) वळगाडवाळु (२) पराजित, अपमानित (३) निंदित, शापित
अभिषवण न० स्नान
अभिषु ५ प० जळसिंचन करवु, छटकाव करवो, भीजववु
अभिषेचन न० जळसिंचन (२) राज्याभिपेक (३) राज्याभिषेकनी सामग्री
अभिष्टुत वि० स्तवन के स्तुति करेलु
अभिसर पु० अनुयायी, हजूरियो (२) साथी, सोबती
अभिसरि (–री) स्त्री० अनुसरवु ते (२) मददे चडवु ते
अभिसंबंध पुं० संबंध, संपर्क
अभिसायम्, अभिसायार्कम् अ० सूर्यास्त समये, सांज टाणे
अभिसारण न० प्रियतमने संकेत प्रमाणे मळवा जवु ते [हुमलो करतु
अभिसारिन् वि० मळवा जतु; धसी जतु;
अभिसांत्व् १० प० आश्वासन आपवु
अभिस्नेह पु० आसक्ति, स्नेह
अभिस्रवत वि० रेलावतु, वक्षतु
अभिहार पु० उपाडी जवु ते; लूटी जवु ते; चोरी जवु ते (२) हुमलो (३) शस्त्रसज्ज थवु ते (४) नजीक लाववु ते
अभीप्सिन् वि० अभीप्सा-इच्छा राखतु
अभूयःसंनिवृत्ति स्त्री० फरीथी संसारमा पाछा न आववु ते; मोक्ष
अभृत वि० भाडे के रोजीए नहीं राखेलु (२) नहि पोषेलु
अभ्यक्त वि० लेप करेलु, खरडेलु
अभ्यनुज्ञात वि० संमति आपेलु, मंजूर राखेलु (२) कृपा करेलु
अभ्यमित्रम् अ० दुश्मन सामे के तरफ
अभ्यमित्रीण, अभ्यमित्र्य पु० दुश्मननो वीरतापूर्वक सामनो करनारो
अभ्यर्गला स्त्री० सांनिध्य, समीपता
अभ्यर्थनीय, अभ्यर्थ्य वि० विनती के आजीजी करवा लायक; जेने विनती करवी पडे तेवु
अभ्यवहारमंडप पु० भोजनखंड
अभ्यवहित वि० दबायेलु, बेसाडी दीधेलु (धूळ इ०)
अभ्यसूयति प० (द्वेष करवो, ईर्ष्या करवी) [वारवार
अभ्यस्तम् अ० आथमवा तरफ (२)
अभ्यंतरीकरण न० प्रवेश के परिचय करावववो ते (२) गुप्त वात कहेवी ते (३) निकटनु मित्र बनाववु ते (४) अंदर (पेटमां) नाखवु ते
अभ्याकर्ष पु० पडकार करवा छाती ठोकवी ते [आच्छादन विना
अभ्याकाशम् अ० खुल्लु होय तेम,
अभ्यागमन न० आगमन, मुलाकात
अभ्यासयोग पु० चित्तने एक स्वरूपमा परोववु ते [होय तेवु
अभ्युपस्थित वि० मददमा के सोबतमा
अभ्युपाश्रय पु० शरण, आशरो
अभ्रघन पु० वादळानो समूह
अभ्रविलायम् अ० जेम वादळा वेराई जाय तेवी रीते समूह
अभ्रवृंद न० वादळांनी हारमाळा के
अभ्रावकाश वि० वरसाद वखते पण खुल्लामा रहेनारु [राक्षस इ०
अमनुष्य पु० माणस नहि ते – पिशाच,
अमरकंटक पु० जुओ पृ० ५९७
अमर्त्य वि० दिव्य, अमर (२) पु० देव
अमलपतत्रिन् पु० हंस, जंगली हंस
अमलयति प० (निर्मळ-शुद्ध करवु, उज्ज्वळ करवु)
अमलिन वि० निर्मळ, पवित्र
अमंत्रतंत्र वि० मंत्रतंत्रना प्रयोग विनानु
अमंद वि० जड नहि तेवु; चपळ, चालाक (२) अति, पुष्कळ, उग्र
अमात् वि० अपरिमित, अमर्यादित
अमातृ, अमातृक वि० मा विनानु

अमानित्व न० नम्रता; आत्मस्तुति न करवी ते
अमितविक्रम वि० अपार पराक्रमवाळुं
अमित्रक न० शत्रुनु कार्य; अपकार
अमित्रता स्त्री० दुश्मनावट, वेर
अमित्रायते आ० (दुश्मननी जेम वर्तवु; धिक्कारवु)
अमृज वि० शोभा-शणगार विनानु
अमृतरस पु० अमृतरूपी के अमृत जेवो रस (२) ब्रह्म
अमृता स्त्री० शरीरमा रहेली पाच नाडीओमानी एकनु नाम
अमृतायते आ० (अमृत जेवु थवु नीवडवु)
अमृषोद्य न० सत्य वाणी
अमृष्टभोजिन् वि० स्वादिष्ट भोजन नहि जमनारु [न शकाय तेवु
अमोच्य वि० छूटी न शके-तेवु, छोडी
अयत् वि० प्रयत्न न करतु
अयत्नलभ्य वि० सहेलाईथी प्राप्त थाय तेवु [असामान्य
अयथापूर्व वि० अपूर्व, अप्रतिम;
अयथार्थ वि० अर्थ विनानु, निरर्थक (२) असबद्ध, अनुचित (३) खोटु
अयमपरो गण्डस्योपरि स्फोटः जुओ पृ० ६३०
अयवत् वि० भाग्यशाळी, सद्‌भागी
अयःकणप न० लोखंडना गोळा फेकतु एक प्रकारनु अस्त्र [मळेलु
अयाचितोपस्थित वि० माग्या विना
अयान्वित वि० भाग्यशाळी, सद्‌भागी
अयुगसप्ति पु० (सात घोडावाळो) सूर्य
अयुग्मच्छद पु० सप्तपर्ण वृक्ष
अयोगुड पु० लोखडनो गोळो (२) लोखडना गोळावाळु एक हथियार
अयोदंड पु० लोखडनी गदा
अरघटी स्त्री० रेंट उपरनो घडो
अरट्ट पु० जुओ 'आरट्ट'
अरण्यचंद्रिकान्यायः जुओ पृ० ६३०
अरण्यधर्म पु० जगली अवस्था के दशा (२) वानप्रस्थ धर्म
अरण्यरोदनन्यायः जुओ पृ० ६३०
अरण्यसद् वि० वनमा रहेतु; वनवासी
अरविंदनाभ पु० विष्णु (जेनी नाभि के दूटीमाथी नीकळेला कमळमाथी ब्रह्मा प्रगट थया हता) [कदर विनानु
अरस वि० नीरस, स्वाद विनानु (२)
अराग वि० राग के आसक्ति विनानुं
अराम वि० अळखामणु, अप्रिय
अरालपक्ष्मन् वि० चक्रना आरा पेठे फेलाती पापणोवाळु [शाळी शत्रु
अरिभद्र पु० मुख्य के सौथी वधु बळ-
अरिष्टताति स्त्री० कल्याणपरपरा
अरिष्टशय्या स्त्री० सुवावडीनो खाटलो
अरिहन् पु० शत्रुनु निकदन करनारो
अरुण पु० जुओ पृ० ५९८
अरुणिमन् पु० लालाश; लाल रंग
अरुंधती स्त्री० जुओ पृ० ५९८
अरुंधतीप्रदर्शनन्यायः जुओ पृ० ६३०
अरूपहार्य वि० रूपथी आकर्षी के जीती न शकाय तेवु [अदृश्य
अरूपिन् वि० आकृति रहित (२)
अरोगत्व न० तदुरस्ती, आरोग्य
अर्कप्रकाश वि० सूर्य समान प्रकाशित
अर्कमूल पु० आकडानु मूळ
अर्गलित वि० आगळाथी बध करेलु
अर्चनीय, अर्चयितव्य वि० पूजवा लायक, आदरणीय [प्रकाश
अर्चि स्त्री० प्रकाशनु किरण (२) तेज;
अर्चित वि० पूजेलु, सत्कारेलु
अर्च्य वि० जुओ 'अर्चनीय'
अर्जुन पु० जुओ पृ० ५९८
अर्णस् न० पाणी, मोजु, प्रवाह
अर्णोरुह न० कमळ
अर्थकार्श्य न० दरिद्रता
अर्थकृत्य न० धधोरोजगार; कामकाज

अर्थकोविद वि० निपुण, अनुभवी
अर्थगृह न० खजानो
अर्थदर्शन न० पदार्थोने जोवा ते
अर्थपद न० पाणिनि-सूत्रोनु वार्तिक
अर्थवत्ता स्त्री० संपत्ति, धन; मिलकत
अर्थविद्या स्त्री० व्यवहारज्ञान
अर्थविभावक वि० धन आपनारु
अर्थसंग्रह, अर्थसंचय पु० धन, मिलकत के खजानो मेळववो के संघरवो ते
अर्थहारिन् वि० धन चोरनारु
अर्थाधिकार पु० संपत्तिनी सोंपणी
अर्थानुयायिन् वि० शास्त्रने अनुसरतु
अर्थापत्ति स्त्री० जेने न स्वीकारीए तो वस्तुस्थितिनो खुलासो न ज मळी शके एवु अनुमान (न्याय०) (२) एक अलंकार, जेमां एक वात कहेवाथी बीजी वातनी सिद्धि नि शक छे, एम बताववामा आवे छे (काव्य०)
अर्थिभाव पु० याचकपणु (२) याचना
अर्थिसात् अ० याचकोने आपी दीधु के वहेंची दीधु होय तेम
अर्धकुक्कुटीन्यायः जुओ पृ० ६३०
अर्धजरतीयन्यायः जुओ पृ० ६३०
अर्धपाद पु० पाद (वार आगळ) नो अर्धो भाग
अर्धपुलायित पु० अर्धो ठेकडो भरातो होय तेवी (घोडानी) गति
अर्धरथ पु० रथमा बेसीने लडतो पण पूरो कुशळ नहि तेवो योद्धो
अर्धरात्र पु० मध्यरात्रि (२) बार कलाकनी रात्रि
अर्धवैशस न० अधूरु खून, अर्धी हत्या
अर्धवैशसन्यायः जुओ पृ० ६३०
अर्धहार पु० ६४ सेरनो हार
अर्धहारिन् वि० अर्धो भाग रोकतु
अर्धाक्षि न० तीरछी नजर – कटाक्ष
अर्धासि पु० एक बाजु धारवाळी नानी तरवार

अलकनंदा स्त्री० जुओ पृ० ५९८
अलकसंहति स्त्री० वाळनी लटो
अलकांत पु० वाळनी लटनो छेडो
अलक्ष्मन् वि० अशुभ चिह्नोवाळु
अलक्ष्यजन्मता स्त्री० जन्मस्थान अज्ञात होवु ते
अलभ्य वि० प्राप्त न करी शकाय तेवु
अलय वि० भटकतु, घरबार विनानु (२) अविनाशी
अलवण वि० मीठा विनानु
अलघनीयता स्त्री० ओळगी न शकाय के पासे जई न शकाय तेवा होवु ते
अलंतराम् अ० अत्यंत
अलंबुष पु० तुवडु (२) घटोत्कचे मारेलो एक राक्षस (३) रावणनो प्रधान (४) आगळीओ फेलावेलो पंजो
अलाघव न० क्षुद्रतानो अभाव; उदारता
अलास्य वि० नृत्यरहित
अलिकलेखा स्त्री० कपाळ उपरनु चिह्न
अलिंदाः पु० ब० व० जुओ पृ० ५९८
अलीकसुप्त, अलीकसुप्तक न० ऊघवानो ढोंग करवो ते
अलुप्त वि० कापी नहि नाखेलु, ओछु नहि करेलु (२) सुरक्षित
अलोलुप वि० तृष्णा विनानु
अल्पच्छद वि० ओछा वस्त्रवाळु
अल्पता स्त्री०, अल्पत्व न० नानापणु; सूक्ष्मता (२) बालिशता, तुच्छता
अल्पविषय वि० मर्यादित क्षेत्रवाळु; मर्यादित शक्तिवाळु
अवकर्णन न० साभळवु ते, श्रवण
अवखंड् १० प० कापवु, टुकडा करवा (२) क्षीण थवु, व्यतीत थवु
अवगल् १ प० सरकी पडवु; नीकळी पडवु
अवगुठ् १० प० ढांकवु; छुपाववु, वीटाळवु
अवगुठनवत् वि० घुरखावाळु
अवचर पु० परिचारक

अवचाय पु० चूटवु के वीणवु ते
अवचूर्णित वि० चूरो करेलु
अवच्छद पु० ढाकण, आच्छादन
अवजय पु० पराजय, —नी उपर विजय
अवज्ञात वि० अनादर-अपमान करेलु
अवतति स्त्री० व्यापवु ते
अवतप् १ प० —नीचे तेज फेकवु ते
—प्रेरक० तपाववु, प्रकाशित करवु
अवतमस न० झाखो अधकार, अधारु
अवतन् अ० नीचे, पाताळमा
अवतंसक पु० काननु घरेणु (२) कोई पण घरेणु [वापरवु)
अवतंसयति प० (कानना घरेणा तरीके
अवताडन न० कचरी नाखवु ते, रोळी नाखवु ते
अवतारण न० नीचे ऊतरे तेम करवुं ते (२) वळगाड (भूतप्रेतादिनो) (३) (ग्रंथनी) प्रस्तावना, उपोद्‌घात (४) अवतरण, प्रागट्य
अवधूपित वि० धूपथी सुवासित एवु
अवनतांग वि० नीचे झूकता अवयवोवाळु (सुदरतानी निशानी)
अवनत्र वि० नमेलु, झूकेलु
अवनाम पु० नमी पडवु ते (२) नीचे नमाववु ते
अवनामिन् वि० नीचे नमतु
अवनिज् ३ उ० धोवु, साफ करवु
—प्रेरक० धोई नखाववु (२) व्यापवु; भरी नाखवु
अवनीपति, अवनिपाल पु० राजा
अवनींध्र पु० पर्वत [जवा योग्य
अवनेय वि० नीचे लई जवा योग्य; दोरी
अवपत् १ प० नीचे पडवु, नीचे ऊतरवु; नाशी जवु
अवपतित वि० नीचे पडेलु, नमी पडेलु
अवपाटित वि० फाडमा पाडेलु के फाडी नाखेलु
अवपात्रित वि० दूरी करेलु (२) नाखेलु
अवबंध् ९ प० बाधवु, जकडवु
अवबुद्ध वि० जाणेलु, शीखेलु
अवबोधित वि० जगाडेलु
अवभंग वि० हरावतु, नमावतु (२) खडित करेलु, ईजा पमाडेलु
अवभंज् ७ प० भागी नाखवु; तोडी पाडवु [अंकुशने न गाठे)
अवमतांकुश पु० मदमा आवेलो हाथी (जे
अवमर्दन वि० कचरी नाखतु; पीसी नाखतु (२) न० दबाववु-चपी करवी ते (३) दमन, कचरी नाखवु ते
अवमर्दिन् वि० ठार मारनारु
अवमर्ष पु० हुमलो (२) आलोचना, तपास
अवमानिन् वि० अवगणना करतु, तिरस्कार करतु, किंमत ओछी आकतु
अवमूर्च्छ् शात पडवु (तकरारनु)
अवमृद् ९ प० कचरी नाखवु, पीसी नाखवु
अववा २ उ० जाणवु, समजवु (२) टाळवु, दूर करवु
अवरक्षणी स्त्री० घोडाओने बाधवानु दोरडु
अवरजा स्त्री० नानी बहेन
अवरुग्ण वि० तूटेलु; भागेलु (२) रोगिष्ठ
अवरुदित वि० जेना उपर आसु पडचा होय तेवु
अवरुद्धिका स्त्री० अंत:पुरमा अळगी राखेली स्त्री [घालतु
अवरोधक वि० विघ्न करतु (२) घेरो
अवरोधन न० घेरो (२) विघ्न; अटकाव (३) अंत:पुर (राजमहेलनु) (४) पत्नी, राणी
अवरोधिका स्त्री० अंत:पुरनी स्त्री
अवरोपित वि० उखेडी नाखेलु (२) नीचे उतारी पाडेलु
अवलग्न वि० वळगेलु; संबद्ध, लटकतु
अवलंबिन् वि० लटकतु (२) अवलंबन लेतु (३) आधार आपतु

अवली ४ आ० चोटवु; लटकवु (२) वळवु, नमवु (३) –मा छुपावु
अवलुप् ६ उ० [अवलुंपति–ते] उपर धसी जवुं (जेमके, शिकार उपर) (२) खाई जवु; गळी जवु (३) कचरी नाखवु; दबावी देवु
अवलोकक वि० –नी तरफ जोतु, –ने जोवा इच्छतु
अवलोकिन् वि० जोतुं; निहाळतु
अवशप्त वि० शापित
अवशिका स्त्री० स्वतंत्र एवी स्त्री
अवष्टंभमय वि० सोनानु, सोनेरी (२) एटवाळु, बहादुरीवाळु
अवसादक वि० खेद-थाक-मूर्छा करतु
अवसादिन् वि० हताश थतु, बेसी पडतु, मूर्छित थतु
अवसुप्त वि० ऊघेलु
अवसृ १ प० व्यापवु, फेलावु
अवस्कन्न वि० हुमलो करायेलु, वळात्कार करायेलु [करतु
अवस्कंदिन् वि० हुमलो करतु; वळात्कार
अवस्नात वि० नाहेलु पाणी
अवस्फूर्ज् अवाजथी भरी काढवु
अवस्फूर्जित न० गर्जना [काढवु
अवहस् १ प० हासी करवी, हसी
अवहसन न० हासी, ठेकडी
अवहास्य वि० हासी करवा लायक
अवहीन वि० त्यजायेलु, छोडी दीधेलु; पाछळ मूकेलु
अवंति (–ती) स्त्री० जुओ पृ० ५९८
अवाप्तव्य वि० मेळववा योग्य
अवार्य वि० दूर करी न शकाय तेवु; वारी न शकाय तेवुं
अविकारिन् वि० वदलाय नहि तेवु, अफर (२) वफादार
जविक्षत वि० अखडित; ईजा न पामेलु
अविक्षित वि० ईजा न पामेलु, ओछु न थयेलु [तेवु
अविक्षोभ्य वि० अजेय; क्षोभ न पामे
अविगान, अविगीत वि० विसवाद रहित
अविचारणीय वि० विचार्या के प्रश्न पूछ्या विना पालन करवा योग्य
अविच्छिन्न वि० सळग होय तेवु; अखडित (२) सामान्य
अविज्ञेय वि० जाणी के ओळखी न शकाय तेवु
अवितर्कित वि० नहि कल्पेलु
अवितृ वि० रक्षणहार
अविद अ० ओ रे! ओ रे!
अविदित वि० जाण्या विनानु; अजाणमा ज गयु होय तेवु
अविदूर वि० नजीक होय तेवु
अविधवा स्त्री० जेनो पति जीवतो होय तेवी स्त्री
अविघा अ० 'धाजो!' 'धाजो!' (एवो मदद माटेनो पोकार)
अविधि वि० विधि के नियम प्रमाणे न होय तेवु (२) पु० ब्रह्म (जेनो निर्देश न करी शकाय)
अविधेय वि० काबूमा न रखाय तेवु
अविनाश पु० अमृतत्व, मोक्ष, निर्वाण
अविनिर्णय पु० अनिश्चय
अविप्रहत वि० अवर-जवर विनानु
अवियुक्त वि० सयुक्त, अविभक्त
अविरलित वि० खूब नजीक होय तेवु, वच्चे अतर विनानु
अविरुद्ध वि० विरुद्ध के विसगत नहि तेवु (२) योग्य, उचित
अविरोध पु० सुसगतता, विरोधी न होवु ते (२) डखल के रुकावटनो अभाव [विनानु
अविलुप्त वि० अक्षत, ईजा पाम्या
अविश्वस्त वि० विश्वासु न होय तेवु, विश्वास न करवा लायक
अवीक्षिन् वि० न जोतु, जोवा न पाम्यु होय तेवु
अवृक्ष वि० झाड विनानु

अवृथार्थ वि० सफळ, निरर्थक नहि तेवु [योग्य
अवेक्षणीय वि० आदरणीय, विचारवा
अवेक्षमाण वि० जोतु; निहाळतु
अवेक्षा स्त्री० जोवु ते, निहाळवु ते (२) लक्ष, काळजी
अवेदनाज्ञ वि० पीडा नहि जाणनारु
अव्यक्तमूर्ति वि० जेनु स्वरूप प्रगट के स्पष्ट नथी तेवु
अव्यक्तादि वि० जेनो आरभ अप्रगट छे एवु, जेनी पूर्वनी स्थिति जोई शकाती नथी एवु
अव्यक्तिक वि० अव्यक्त; अप्रगट
अव्यथिन् वि० वेदना के पीडाथी रहित (२) पीडा न करतु (३) भयरहित, निर्भय
अव्यपेक्षा स्त्री०असावधानता, बेकाळजी
अव्ययात्मन् वि० अविनाशी, नित्य स्वरूपवाळु (२) पु० आत्मा
अव्याक्षेप पु० विलब के मूझवणनो अभाव
अव्याहृत न० मौन [अविच्छिन्न
अव्युच्छिन्न वि० सतत-चालु एवु,
अव्रत वि० धार्मिक विधि के विधान न पाळतु होय एवु
अशकुन पु०, न० अपशुकन
अशकुनीभू अपशुकन बनी रहेवु
अशम् अ० कल्याणकर न होय तेम
अशस्त्र न० जे शस्त्र नथी ते (रणमा शस्त्रथी थयेलु मरण यशस्वी गणाय)
अशात वि० शाति विनानु, जप विनानु
अशिथिल वि० ढीलु नहि तेवु, दृढ (२) असरकारक, खातरीवाळु
अशिरस्क वि० मस्तक विनानु
अशिशिररश्मि पु० सूर्य
अशीतल वि० गरम, उष्ण
अशीतिभाग पु० एशीमो भाग
अशुचिता स्त्री० गदकी; स्वच्छतानो अभाव (२) जेठ अने अषाढ महिना (चालता होवा ते)
अशून्य न० खाली न होवु ते (२) एकलु न रहे माटे साथे मोकलवानु ते
अशेषयति प० सपूर्ण रीते पूरु करवु
अशोकवनिका स्त्री० अशोकवृक्षोनी वाटिका के उपवन
अशोकवनिकान्यायः जुओ पृ० ६२०
अश्नीतपिवता स्त्री० खानपान माटे (उजाणीमा) आमत्रण
अश्मक पु० जुओ पृ० ५९८
अश्मकाः पु० ब० व० ते देशना लोको
अश्मकुट्ट, अश्मकुट्टक पु० वानप्रस्थ
अश्मलोष्टन्यायः जुओ पृ० ६३०
अश्रुति वि० कान विनानु (२) पु० साप (३) स्त्री० न साभळवु ते, विस्मृति
अश्रुपूर्ण वि० आसु भरेलु
अश्रुमुख वि० आसु रेलावतु
अश्वकर्णक पु० एक वृक्ष, साग
अश्वचर्या स्त्री० घोडाओनी सभाळ
अश्वतीर्थ न० गगा नदीने किनारे कान्यकुब्ज नजीक आवेलु एक तीर्थ
अश्वत्थामन् पु० जुओ पृ० ५९८
अश्वपति पु० जुओ पृ० ५९८
अश्वमेधिक वि० अश्वमेध माटे योग्य; अश्वमेध सबधी
अश्ववाजिन् वि० घोडानी शक्तिवाळु
अश्ववार पु० अश्वपाल; घोडानी देखरेख राखनारो
अश्विनीकुमार जुओ पृ० ५९८
अश्वीय वि० अश्व सबधी (२) न० घोडाओनो समूह
अष्टपादिका स्त्री० एक फूल-वेल
अष्टादशन् वि० अढार
अष्टावक्र पु० जुओ पृ० ५९८
अष्टाशीति स्त्री इठ्ठ्याशी
अष्ठीला स्त्री० गोळ पथ्थर

असको वि० आ के ते (२) आ दुष्ट; ए दुष्ट [सिद्धांत के आचार
असत्पथ पु० खराब मार्ग (२) खराब
असत्यसंध वि० वचन नहि पाळनारु, दगाबाज [फेकवु ते
असन पु० एक वृक्ष (२) न० नाखवु–
असपत्न वि० हरीफ पत्नी-शोक विनानु (२) हरीफ के दुश्मन नहि तेवु, मित्रताभर्युं (३) शत्रुरहित, निष्कंटक
असमग्रम् अ० पूरेपूरु नही तेम, अधूरु
असमय पु० मोसम के ऋतु न होवी ते (२) योग्य नहि तेवो समय
असमान वि० अजोड, अनुपम
असमाप्त वि० अपूर्ण; अधूरु
असमायुक्त वि० बराबर नाथेलु के पलोटेलु नही तेवु
असवर्ण वि० जुदी जाति के वर्णनु
असह्यपीड वि० सहन न थई शके तेवी पीडावाळु
असंकल्पित वि० नहि कल्पेलु
असंगचारिन् वि० रुकावट विना फरतु
असंपूर्ण वि० अपूर्ण, आंशिक
असंबोध पु० अज्ञान
असंभेद्य वि० सबधमा न लाववा जेवु
असंमुख वि० विमुख
असंरोध पु० ईजा न करवी ते
असंविदान वि० अज्ञानी; मूर्ख
असंवृत वि० उघाडु, खुल्लु
असंशब्द्य वि० बोलवा के उल्लेख करवाने अयोग्य
असंसक्त वि० असबद्ध (२) अनासक्त
असहार्य वि० रोकी न शकाय तेवु (२) बीजे के अवळे मार्गे न दोराय तेवु
असाद वि० नहि थाकेलु; अश्रांत
असारता स्त्री० रस के सार विनाना होवापणु, तुच्छता (२) तात्त्विकता न होवी ते
असाहसिक वि० साहस न करतु, अविचारीपणे न वर्ततु
असांनिध्य न० नजीक नहि होवापणु, गेरहाजरी [नही तेवु
असांप्रदायिक वि० परंपरा प्रमाणेनु
असि अ० 'तु' के '-ते' (एवा अर्थमा)
असिक्नी स्त्री० जुओ पृ० ५९८
असिचर्या स्त्री० शस्त्रोनो अभ्यास
असितनयन वि० काळी आंखोवाळु
असितयवन पु० कालयवन (यादवोनो-कृष्णनो एक प्रबळ शत्रु)
असिताश्मन् पु० नीलम
असिद्धार्थ वि० कृतकृत्य नहि बनेलु; पोतानु लक्ष्य सिद्ध न थयु होय तेवु
असिधारा स्त्री० तलवारनी धार
असिहस्त पु० जमणा हाथमा राखेली तलवारथी मारवु ते
असुतर वि० दुस्तर; पार न कराय तेवु
असुभंग पु० प्राणनो नाश; मृत्यु
असुमत् वि० जीवतु (२) पु० जीवतु प्राणी [नाशवंत
असुरक्ष वि० रक्षण करवु मुश्केल,
असुरद्रुह् पु० देव (असुरनो शत्रु)
असुलभ वि० मुश्केलीथी प्राप्त थाय तेवु
असुसु पु० बाण, शर [अनुचित
असुंदर वि० सुंदर नहि तेवु (२)
असूय वि० नाखुश
असूयति प० (ईर्ष्या करवी, नाखुश थवु, गुस्से थवु)
असूर्त वि० अप्रकाशित (२) अंधारियु (३) अवरजवर विनानु, अज्ञात
असृष्टान्न वि० अन्नदान विनानु
असेवितेश्वरद्वार वि० भगवानना आंगणा न सेवतु – न जनारु
असौम्यकृत् वि० भाग आपनारु
अस्तकरुण वि० निर्दय
अस्तगिरि पु० अस्ताचल
अस्तनिमग्न वि० आथमेलु – अस्त पामेलु
अस्तब्ध वि० दृढ नहि तेवु (२) चालाक, चपळ, अक्कड नहि तेवु (३) हठीलु के दुराग्रही नहि तेवु, नम्र

अस्तम् अ० घेर (२) अस्ताचळ उपर (३) दूर थाय के अत आवे तेम
अस्तमित वि० आथमी गयेलु, अत आव्यो होय तेवु, दूर थयु होय तेवु
अस्तरुष् वि० जेनो क्रोध शात थयो छे तेवु [वीखरायेलु
अस्तव्यस्त वि० वेरणछेरण, आमतेम
अस्तशिखर पु० अस्ताचळनी टोच
अस्तसमय पु० आथमवानी वेळा (२) आखरी घडी
अस्तसख्य वि० असख्य
अस्त्रग्राम पु० हथियारोनो ढगलो-समूह
अस्त्रभृत् पु० अस्त्र फेकनारो, अस्त्रधारी
अस्त्रयंत्र न० एक प्रकारनु अस्त्र
अस्त्रवेद पु० अस्त्र फेकवानी विद्या
अस्त्रिन् वि० अस्त्र वडे लडतु; अस्त्रधारी
अस्थायिन् वि० कायमी नही तेवु, नाशवत
अस्थास्नु वि० अधीरु
अस्थिवंधन न० स्नायु [अत्यत कठोर
अस्थिभेदिन् वि० हाडकाने भेदे तेवु –
अस्थिस्नेह पु० मज्जा
अस्नेहदीपन्यायः जुओ पृ० ६३१
अस्पृष्ट वि० स्पर्श कर्या विनानु (२) (शब्दथी) उल्लेखित नहि तेवु
अस्त्रि पु० खूणो
अस्वर वि० खराब अवाजवाळु (२) अस्पष्ट के धीमा अवाजवाळु
अस्वाधीन वि० अस्वतत्र, पराधीन
अहरादि पु० परोढ, सवार
अहर्दिवम् अ० दररोज, दिवसे दिवसे
अहल्या स्त्री० जुओ पृ० ५९८
अहजुष् वि० पोतानो ज विचार करनारु
अहंपूर्व वि० प्रथम होवानी इच्छावाळु
अहंयु वि० अहकारी; स्वार्थी
अहंवादिन् वि० पोताने विषे ज कहेतु; अहकारी [तेवु होवापणुं
अहार्यत्व न० कोई हरी जई न शके

अहिकुंडलन्यायः पु० जुओ पृ० ६३१
अहिच्छत्रा स्त्री० जुओ पृ० ५९८
अहितहित न० सारु नरसुं
अहिमदीधिति, अहिममयूख, अहिमरोचिस् पु० सूर्य [शून्यमनस्क
अहृदय वि० हृदय विनानु (२) बेध्यान;
अहेतु वि० निष्कारण, कृत्रिम नहि तेवु; स्वाभाविक
अह्न पु० दिवस ('अहन्'नु समासमां थतु एक रूप, जेमके, 'मध्याह्न')
अह्री वि० निर्लज्ज (२) स्त्री० निर्लज्जता
अंकुशग्रह पु० (हाथीनो) महावत
अंगद पु० जुओ पृ० ५९९
अंगसंहति स्त्री० शरीरनो बांधो; शरीरनी सुरेखता [राजा-कर्ण
अंगाधिप, अंगाधीश पु० अगदेशनो
अंगारकारिन् वि० वेचवा माटे कोलसा तैयार करनारु
अंगिरस पु० जुओ पृ० ५९९
अंगुलित्र, अंगुलित्राण न० बाणावळीओ पणछथी आगळीने बचाववा पहेरे छे ते खोळी [कदनु
अंगुष्ठमात्र वि० अगूठा जेटलु; तेटला
अंघो अ० गुस्सो के दिलगीरी बतावनार उद्गार [वाळी स्त्री
अंचितभ्रू स्त्री० वाकी के सुदर भमरो-
अंजना स्त्री० जुओ पृ० ५९९
अंजलिक पु० अर्जुनना एक बाणनु नाम (२) उदरना मुखना आकारनु बाण
अंजलिकर्मन् न० हाथ जोडवा ते, नम्रताथी नमस्कार करवा ते
अंजलिका स्त्री० नानी उदरडी
अंजलिकावेध पु० युद्धनो एक व्यूह
अंडक न० नानु ईंडु (२) घूमट
अंतरज्ञ वि० रहस्य के तत्त्व जाणनारु, डाह्यु, शाणु (२) अगमचेतीवाळु
अंतरतस् अ० अदर, वचमा
अंतरय पु० अतराय

अंतरयति प० (अतराय करवो, विरोध करवो, दूर खसेडी काढवु, धकेलवु; वच्चे आवे तेम करवु; वदली काढवु)
अंतरस्थ वि० अदर रहेलु (२) वच्चे आवतु होय तेवु (३) अतरमा बेठेलु (जीव) [जतु के फरतु
अंतरिक्षगत वि० आकाशमा–हवामा
अंतर्गिरम्, अंतर्गिरि अ० पर्वतमा
अंतर्जानुशय पु० ढीचण वच्चे हाथ राखीने ऊघनारो
अंतर्दीपिकान्यायः जुओ पृ० ६३१
अंतर्धि स्त्री० देखाता बध थवु ते
अंतर्भू १ प० –मा समावेश थवो
अंतर्मदावस्थ वि० मद झरवानी दशा अदर छुपाई रही होय तेवु, मदमत्त थवानी तैयारीमा होय तेवु [वस्त्र
अंतर्वस्त्र, अंतर्वासस् न० अदर पहेरवानु
अंतर्वेदि (–दी) स्त्री० जुओ पृ० ५९९
अंतश्चर वि० अदर व्यापेलु–फरतु
अंतसंश्लेष पु० साधो, जोडाण
अंतःकोप पु० आतरिक क्षोभ (२) आतरिक गुस्सो
अंतःपातित, अंतःपातिन् वि० अदर दाखल करेलु के आवेलु (२)–मा समावेश थतो होय तेवु
अंतःप्रकृतिप्रकोपज वि० आतरिक विखवादथी जन्मेलु
अंतःसरल वि० अदरखाने सरळ एवु (२) सरल (नामना) वृक्षो अदर आवेला होय तेवु
अंतेवासित्व न० शिष्य होवापणु
अंतोष्ठ पु० अधरोष्ठ, नीचलो होठ
अंत्यावसायिन् पु० हलकामा हलकी वर्णनो माणस (चाडाल ने निषादी स्त्रीथी थयेलो)
अंधक पु० जुओ पृ० ५९९
अंधकवर्तकीयन्यायः जुओ पृ० ६३१
अंधगजन्यायः जुओ पृ० ६३१
अंधगोलांगूलन्यायः जुओ पृ० ६३१
अंधदर्पणन्यायः जुओ पृ० ६३१
अंधपरंपरान्यायः जुओ पृ० ६३१
अंध्राः पु० व० व० जुओ पृ० ५९९
अंबरलेखिन् वि० गगनचुबी, खूब ऊचु
अंबरीष पु० जुओ पृ० ५९९
अंबरीषक पु० गुप्त अग्नि
अंबष्ठाः पु० व० व० जुओ पृ० ५९९
अंबा स्त्री० जुओ पृ० ५९९
अंबालिका स्त्री० जुओ पृ० ५९९
अंबिका स्त्री० जुओ पृ० ५९९
अंबुक्रिया स्त्री० पितृओने जलाजलि
अंबुवेग पु० पाणीनो मोटो प्रवाह
अंबूकृत न० रीछनो हणहणाट
अंभोजयोनि पु० ब्रह्मा (विष्णुना नाभिकमळमा जन्मेला)
अंमय वि० जलमय, पाणीनु बनेलु

आ

आकंप् १ आ० ध्रूजवु, कपवु
आकंप पु० ध्रूजवु–कपवु ते
आकंपित वि० ध्रूजेलु, कपतु
आकाशजननी स्त्री० किल्लानी दीवालमा राखेलु बाकु
आकाशबद्धलक्ष वि० नजरे न देखाती चीज तरफ नजर ताकी होय तेवु (पागल) [६३१
आकाशमुष्टिहननन्यायः पु० जुओ पृ०
आकुलत्व न० भीड (२) व्याकुळता
आकुलीकृ ८ उ० भीड करवी, भरी काढवु (२) व्याकुळ करवु
आकुंचन न० दाका वाळवु ते, सकोचवु के सकोचावु ते (२) ढगलो करवो ते, भेगु करवु ते (३) एक लश्करी हिलचाल
आकृष्टि स्त्री० आकर्षण (२) खेचीने वाळवु ते (धनुष्य) [मत्र
आकृष्टिमंत्र पु० आकर्षण करवा माटेनो

आकेकर वि० अर्धु बध तथा अर्धु खुल्लु एवु (आख)
आकोप पु० हळवो गुस्सो
आकौशल न० कुशळतानो अभाव
आक्रांतितः अ० बळजबरीथी
आक्रीडपर्वत पु० क्रीडा के विहार माटेनो (नानो के कृत्रिम) पर्वत
आखंडलसूनु पु० इद्रनो पुत्र (अर्जुन)
आख्यात न० प्रयाण करवा माटे शुभ मुहूर्त कहेवु ते (मत्रेला दुदुभिना ध्वनि उपरथी)
आख्यायक वि० कहेतु, समाचार आपतु (२) पु० सदेशवाहक; दूत (३) छडी पोकारनारो [आपतु
आख्यायिन् वि० कहेतु, समाचार
आगत न० आगमन; आवी पहोचवु ते
आगस्कृत् वि० अपराधी
आगस्त्यायन वि० अगस्ति सबधी
आगुरव वि० अगरु सबधी [ऋत्विज
आग्नीध्र पु० यज्ञनो अग्नि सळगावनार—
आग्नेय वि० अग्नि सबधी, अग्निनु (२) अग्नि जेवु (३) अग्नि प्रज्वलित करे तेवु (घी इ०) (४) जठराग्नि वधारनारु (५) न० कृत्तिका नक्षत्र (६) भस्म लगावीने स्नान करवु ते
आचमनधारिन्, आचमनवाहिन् पु० पाणी भरनारो
आचारधूमग्रहण न० विधि अनुसार धुमाडो श्वासमा लेवो ते
आचारलाज पु० (ब० व०) वधाववा माटे फेकाती धाणी (राजा इ०ने)
आचार्योपासना न० गुरुसेवा [ते
आचांति स्त्री० मो धोवा कोगळो करवो
आचेष्टित न० माथे लीधेलु, करेलु
आच्छादनवस्त्र न० नीचेना भाग उपर पहेरातु वस्त्र (उत्तरीयथी ऊलटु)
आच्छादिन् वि० ढाकतु, छुपावतु
आच्छुरित वि० मिश्रित (२) नखना उझरडावाळु
आज्यपाः पु० ब० व० पितृओनो एक वर्ग (वैश्यलोकोना)
आज्ञाकरत्व न० दासपणु, पराधीनता
आज्ञाभंग पु० हुकम उथापवो ते
आटरूष पु० एक वृक्ष (अरडूसी)
आढ्यंकरण वि० श्रीमत बनावनारु
आढ्यंभविष्णु वि० श्रीमत बनतु; अग्रणी बनतु
आतपलंघन न० लू लागवी ते
आतपवत् वि० सूर्यनो प्रकाश पडतो होय तेवु
आतपवारण न० छत्र, छत्री
आतिथेयी स्त्री० परोणागत
आतिशयिक वि० पुष्कळ; अतिशय
आतिष्ठद्गु अ० गायो दोहवाय त्या सुधी (साज पछी कलाक के दोढ कलाक सुधी)
आत्मकर्मन् न० स्वकर्तव्य
आत्मकृत वि० पोते करेलु
आत्मघातिन् वि० आत्महत्या करनारु
आत्मत्राण न० आत्मरक्षण (२) सिपाई, सरक्षक [होय ते
आत्मना सप्तम पु० पोते जेमा सातमो
आत्मलाभ पु० जन्म; उत्पत्ति, मूळ
आत्मवत्ता स्त्री० आत्मसयम (२) शाणपण
आत्मवर्ग्य वि० पोताना पक्षनु—वर्गनु
आत्मशक्ति स्त्री० पोतानु बळ के तेज
आत्मसम वि० बरोबरियु; पोताना सरखु
आत्मसंस्थ वि० आत्मामा स्थिर एवु
आत्मंभरि वि० पेटभरु, आपमतलबी
आत्मानुगमन न० सेवामा जाते हाजर रहेवु ते
आत्मोदय पु० पोतानी उन्नति
आत्रेयी स्त्री० अत्रिकुळमा जन्मेली स्त्री (२) अत्रिनी पत्नी (३) सगर्भा स्त्री (४) रजस्वला स्त्री
आदाय अ० लईने ('साथे' एवा अर्थमा पण वपराय छे)

आदाल्म्य न० निर्भयता
आदितः अ० शरूआतमा, प्रारभथी
आदित्सु वि० लेवानी इच्छावाळु
आदिदेव पु० मुख्य–प्रथम देव(नारायण, विष्णु, शिव, ब्रह्मा)
आदिपुरुष पु० सृष्टिनो अधिष्ठाता (२) विष्णु (३) श्रीकृष्ण
आदिभव वि० सौथी प्रथम उत्पन्न थयेलु (२) पु० ब्रह्मा (३) विष्णु (४) मोटो भाई
आदिष्टिन् वि० हुकम करनारु (२) पु० शिष्य; ब्रह्मचारी (ब्राह्मण-वर्णनो) (३) प्रायश्चित्त करनारो
आदृश् १ प० जोवु, निहाळवु –प्रेरक० दर्शाववु [सुधी
आदृष्टिप्रसरम् अ० दृष्टि पहोचे त्या
आदेशकृत् पु० गामनो मुखी
आदौ अ० प्रथम ज, प्रथमथी
आद्यकालिक वि० मात्र वर्तमान जोनारु
आधर्मिक वि० धर्म विरुद्धनु, अन्यायी
आधाराधेयभाव पु० आधार के पात्रनो आपेली के मूकेली वस्तु साथेनो सबध के तेना उपर थती असर
आधिरथि पु० कर्णनु नाम
आधृ १० प० थोभाववु, अध्धर राखवु
आधेय न० आधान, मूकवु ते
आनर्तपुर न० जुओ पृ० ५९९
आनर्ताः पु० ब० व० जुओ पृ० ५९९
आनंदपुर जुओ पृ० ५९९
आनंदि पु० आनद; सुख
आनाह पु० बाधवु ते (२) मळ के मूत्रनो अवरोध [प्रमाणे
आनुपूर्व्येण अ० एक पछी एक, क्रम
आनुयात्र न० अनुचर; परिवार
आनुसूय वि० अनुसूयाए आपेलु
आपगा स्त्री० जुओ पृ० ५९९
आपगेय पु० नदीनो पुत्र, भीष्म
आपणवीथिका स्त्री० दुकानोनी पक्ति, बजार
आपव पु० वसिष्ठ
आपातदुष्प्रसह वि० जेनो हुमलो असह्य छे तेवु [असह्य एवु
आपातदुःसह वि० पहेला हुमला वखते
आपूर्ण वि० पूर्ण
आप्यान वि० जाडु, मजबूत, स्थूल (२) खुश; सतुष्ट (३) न० विकास; वृद्धि (४) प्रेम [उमर
आबाल्य न० बाळपण सुध्धा (एवी)
आब्रह्म अ० ब्रह्मापर्यंत, ब्रह्मा सुध्धा
आभंग न० थोडीक वाकी वळेली आकृति
आभीराः पु० ब० व० जुओ पृ० ५९९
आमकुंभ पु० काची माटीनो घडो
आमज्वर पु० एक प्रकारनो ताव (जेमा वाफ–परसेवो लाववो जोईए)
आमलक न० आवळु
आमंत्रित न० वातचीत (२) सबोधन
आमिक्षा स्त्री० गरम दूध अने दहीनु मिश्रण
आमित्र वि० शत्रुपक्षीय
आमीलन वि० आखो मीचवी ते
आमोदन न० आनदित करवु ते (२) सुगधित करवु ते
आम्नातिन् वि० वेदविद्, वेदाभ्यासी
अम्नायवत् वि० परपरागत शास्त्र-ज्ञानयुक्त [६३१
आम्रसेकपितृतर्पणन्यायः पु० जुओ पृ०
आम्रेड् –प्रेरक० पुनरावृत्ति करवी
आयतलेख वि० लाबी रेखावाळु
आयतायति स्त्री० लाबो वखत टकी रहेवु ते [ते समये
आयतीगवम् अ० गायो घेर पाछी फरे
आयथातथ्य न० यथायोग्य–यथोचित न होवु ते
आयल्लक पु० अधीराई, उत्कठा
आयस्त वि० पीडा के त्रास पामेलु (२) ईजा पामेलु (३) न० मोटो प्रयास
आयान न० आगमन (२) स्वभाव (३) घोडानो एक शणगार
आयामवत् वि० लाबु, विस्तृत

आयामिन् वि० निग्रह करतु (२) लाबु; दीर्घ (स्थळ के समयनी दृष्टिए)
आयासक वि० थकवे तेवु, कटाळा भरेलु [करतु, मथतु
आयासिन् वि० थाकेलु (२) प्रयास
आयुध् ४ आ० लडवु, हुमलो करवो
आयुधपाल पु० शस्त्रागारनो रक्षक-अधिष्ठाता
आयुधपिशाचिका स्त्री० हथियार वापरवानी चळ, लडाईनो आवेश
आयुधागार न० शस्त्रो राखवानो ओरडो
आयुधीय पु० योद्धो
आयुःशेषजीवित वि० जे हजु लाबु जीववानु छे तेवु
आयुःशेषता स्त्री० हजु जीववानु बाकी होय तेवी स्थिति
आरकूट पु०, न० पित्तळ
आरट्ट पु० जुओ पृ० ६००
आरण्य, आरण्यक पु० जुओ पृ० ६००
आरभ्य अ० –थी माडीने के शरू करीने
आरव पु० बूमाबूम (२) अवाज
आरवडिंडिम पु० एक जातनु ढोल
आरालिक पु० रसोइयो (२) मदमत्त हाथीओने अकुशमा राखनारो
आरोण वि० पूरेपूरु सुकाई गयेलु
आरुच् –प्रेरक० पसद पडवु, गमवु
आरोपयितृ वि० (शरीर उपर) धारण करनारु, पहेरनारु
आरोपित वि० चडावेलु (२) मूकेलुं (३) पणछ चडावेलु
आर्जीकिया स्त्री० जुओ पृ० ६००
आर्जुनि पु० अर्जुननो पुत्र (अभिमन्यु)
आर्त्विजीन वि० ऋत्विजना स्थान माटे योग्य एवु [उतारवा)
आर्द्रपृष्ठ वि० पाणी छाटेलु (थाक
आर्द्रभाव पु० भीनाश (२) पीगळी जवु ते (हृदयनु)
आर्द्रयति प० (भीनु करवु)
आर्यभट्ट पु० जुओ पृ० ६००
आर्यावर्त पु० जुओ पृ० ६००
आल पु० विष (झेरी प्राणीए काढेलु) (२) छळकपट
आलानिक वि० हाथी बाधवाना थाभला तरीके काम देतु
आलीढा स्त्री० रजस्वला स्त्री
आलू ९ उ० (हळवेथी) चूटवु
आलेख्यसमर्पित वि० चीतरेलु
आलोकनीयता स्त्री० (चित्रनी पेठे) जोवा-निहाळवानी दशा, स्थिति के योग्यता
आवप् १ उ० वेरवु, विखेरवु (२) वाववु (३) आहुति आपवी (४) विधि के अनुष्ठान करवु (जेम के श्राद्धनु) –प्रेरक० कापी नाखवु, मूडवु (२) ओळवु, व्यवस्थित करवु
आवरीतृ वि० ढाकनारु
आवरीवस् वि० ढाकी देनारु
आवर्तिन् वि० पाछु फरनारु
आवस्थिक वि० परिस्थितिने अनुरूप एवुं
आवारित वि० चारे बाजुए व्याप्त
आविर्मंडल वि० (पूरा) वर्तुळनो आकार प्रगट करतु (जलदी बाण छोडवाथी, धनुष्य)
आविलयति प० (दूषित-मलिन करवु)
आवीरजा स्त्री० रजस्वला स्त्री
आवृत वि० ढाकेलु, छुपावेलु (२) घेरायेलु (३) ढकायेलु, व्याप्त (४) पूर्ण [तेवु
आव्यक्त वि० स्पष्ट; समजी शकाय
आव्यध् ४ प० वीधवु, घायल करवु (२) पहेरवु (३) ताकीने फेंकवु (४) फेंकी देवु (५) घुमाववु (६) हाकी काढवु
आशक न० खावु ते
आशंकित वि० जेनो डर राख्यो होय तेवु (२) शका राखी होय तेवु

आशंकिन् वि० डर राखतु; शका करतु (२) शका के भयवाळु
आशंसितृ, आशंसिन् वि० इच्छतु, आशा राखतु (२) जाहेर करतु
आशाजनन वि० आशा प्रेरतु [६३१
आशामोदकतृप्तन्यायः पु० जुओ पृ०
आशितंभव वि० तृप्त करे – धरवे तेवु (२) न० तेवु अन्न (३) न०, पु० सतोष, तृप्ति
आशिंजित वि० खणखण अवाज करतु (जेम के, हाथपगना घरेणा)
आशी स्त्री० सापनी दाढ
आश्चर्यभूत वि० अद्भुत [छटकाव
आश्चोतन, आश्च्योतन न० सिंचन,
आश्यै १ आ० सुकावु, जामी जवु
आश्रमगुरु पु० सप्रदायनो मुखियो
आश्रयणीय वि० आशरो लेवा योग्य (२) आचरवा – अनुसरवा योग्य
आश्रयिन् वि० –ने आशरे रहेलु(२) –ने लगतु, –ना सबधी(३)आशरो लेतु, भजतु
आश्रु ५ प० ध्यानथी साभळवु(२) वचन आपवु (३) स्वीकारवु
–प्रेरक० आकर्षवु, वश करवु
आश्वासिक वि० विश्वासपात्र, भरोसा-पात्र [करतु
आषाढिन् वि० खाखरानो दड धारण
आषाढी स्त्री० अषाढ महिनानी पूनम
आसनबधधीर वि० बेसवाना निश्चय-वाळु, स्थिरपणे बेसतु
आसनमचडक न० वीर्य
आसन्नचर पु० आसपास पासे फरतु
आसन्नपरिचारक पु० हजूरियो, अग-रक्षक [छे तेवु
आसन्नशरीरपात वि० जेनु मृत्यु नजीक
आसमुद्रांतम् अ० दरिया किनारा सुधी
आसंजन न० शरीर उपर पहेरवु ते (२) वळगवु – गूचवावु ते
आसंदी स्त्री० आरामखुरशी(२)सभा-गृहनु ऊचु आसन
आसबाध वि० रूधायेलु, व्याप्त
आससार, आसंसृति अ० सासारिक जीवनना अत सुधी, ससारना अत सुधी(२)आखा सासारिक जीवनमा, ससारमा बधे
आसिंजित वि० खणखणाट करतु (जेम के, हाथपगना घरेणा)
आसुरी स्त्री० राक्षसी
आस्कंदन न० हुमलो, बळात्कार(२) उपर चडवु ते, उपर पग मूकवो ते (३) तिरस्कार
आस्कदिन् वि० हुमलो करतु
आस्थाननिकेतन न० सभागृह
आस्फोटित न० ताळी पाडवी ते (२) हाथ थाबडवा ते
आस्माक वि० आपणु, अमारु
आस्राव पु० घा (२) वहेवु ते
आहवन न० यज्ञ
आहितुडिक पु० मदारी, गारुडी
आहिड् १ आ० भटकवु, रखडवु
आहुतीकृ होमवु
आहुतीभू बलिदान बनवु
आगारिक पु० कोलसा पाडनारो (झाड कापी – सळगावीने)
आजलिक पु० अर्धचद्राकार बाण
आंजलिक्य, आंजल्यक न० याचना माटे हाथ जोडवा ते [धुजाववु
आदोल्य प० हलाववु, हीचवु;
आध्य न० अवापो

इ

इक्षुमती स्त्री० जुओ पृ० ६००
इक्ष्वाकु पु० जुओ पृ० ६००
इच्छारत न० इच्छा मुजबनो भोग
इच्छु वि० इच्छुक, इच्छा राखतु

इतरेतरयोग पु० एकबीजा साथे सबध
इतिहासनिबंधन न० दतकथामूलक रचना
इतिहासवाद पु० दतकथा
इतो व्याघ्र इतस्तटी जुओ पृ० ६३१
इत्थंगते अ० आ परिस्थितिमा
इरावती स्त्री० जुओ पृ० ६००
इरिण पु० वरु (२) न० ऊखर जमीन
इषुप्रयोग पु० बाण फेकवु ते
इष्टकाचित वि० ईंटोनु बनेलु
इष्टजन पु० स्नेहीजन, प्रेमीजन (स्त्री के पुरुप)
इंदुमती स्त्री० जुओ पृ० ६००
इंदुव्रत न० चाद्रायणव्रत
इंद्रगोप, इंद्रगोपक पु० गोकळगाय (एक जीवडु)
इंद्रजित् पु० जुओ पृ० ६००
इंद्रप्रस्थ न० जुओ पृ० ६००
इंद्रयज्ञ पु० इद्रने निमित्ते एक उत्सव (२) वर्षाऋतु
इंद्राणी स्त्री० इद्रनी पत्नी
इंद्रियवर्ग पु० इद्रियोनो समूह
इंधन न० वळतण (२) वासना

ई

ईक्षणश्रवस् पु० साप, सर्प (आख ए जेने कानरूप छे)
ईजिकाः पु०ब०व० एक जातिना लोक
ईप्सु वि० प्राप्त करवानी इच्छावाळु (बीजी विभक्ति साथे, अथवा समासमा)
ईषत्कार्य वि० सहेलाईथी-थोडा प्रयत्ने थई शके तेवु
ईषादंड पु० हळनो हाथो
ईषादंत पु० हळनो हाथो (२) दतूशळ

उ

उक्थ्य वि० उत्पादक (२) स्तुत्य (३) स्तुति सहित एवु
उक्षतर पु० गोधो, बळद
उखा स्त्री० तपेली, हाडी
उख्य वि० तपेलीमा राधेलु
उग्रदंड वि० कठोर, क्रूर (२) पु० कडक शासन
उग्रपूति वि० उत्कट गधवाळु
उग्रसेन पु० जुओ पृ० ६००
उच्च पु० ऊचु स्थान
उच्चक्षुस् वि० आंखो ऊची करी होय तेवु, ऊचे जोतु
उच्चगिर् वि० मोटा अवाजवाळु
उच्चसंश्रय वि० उच्च स्थान वाळु (ग्रह माटे)
उच्चंड वि० भयकर, उग्र (२) झडपी (३) मोटा अवाजवाळु (४) क्रोधी
उच्चारणज्ञ पु० भाषाशास्त्री
उच्चित्र वि० स्पष्ट देखाता चित्रोवाळुं
उच्चुंब्य अ० ऊचु करीने चुबन करीने
उच्चैर्भुजतरु वि० हाथ पहोळा कर्या होय तेवा आकारनां वृक्षवाळु
उच्चैस्तमाम् अ० अतिशय ऊचु होय तेम (२) घणे मोटेथी
उच्चैस्तराम् अ० वधु ऊचुं होय तेम
उच्छलत् वि० ऊछळतु, कूदतु;

(२) प्रकाशतु, हालतु (३) देखातु; नजरे पडतु

उच्छित्ति स्त्री० उच्छेद, नाश

उच्छृंगित वि० ऊंचां शिंगडावाळु

उच्छेषण न० शेष वधेलु-रहेलु ते

उच्छ्रायिन् वि० ऊंचु

उच्छ्रि -प्रेरक० वधारवु (२) ऊंचु करवु

उच्छ्वसन न० ऊंडो श्वास लेवो ते (२) ऊंचु थवु-ऊपसवु ते (३) ढीलु थवु ते, छूटी जवु ते

उच्छ्वासिन् वि० श्वास लेतु (२) ऊछळतु, ऊंचु-नीचु थतु (३) निसासा नाखतु (४) झाखु पडतु, ऊंडी जतु

उज्जयत पु० जुओ पृ० ६००

उज्जयिनी स्त्री० जुओ पृ० ६००

उज्जिहाना स्त्री० एक नगरी

उतथ्यानुज पु० बृहस्पति (देवोना आचार्य)

उतूलाः पु०ब०व० एक जातिना लोको

उत्कयति प० (उत्कंठित करवु, उद्विग्न करवु)

उत्कल पु० जुओ पृ० ६००

उत्कंठते आ० (आतुर थवु, झंखवु)

उत्कंप वि० कंपतु (२) पु० कंप, ध्रुजारी, क्षोभ

उत्कार पु० धान्य ऊपणवु ते (२) धान्यनो ढगलो करवो ते

उत्कूर्चक वि० हाथमां कूचडो होय तेवु

उत्कूलित वि० किनारे धकेलायेलु

उत्कोचिन् वि० रुश्वतखोर, लांचियु

उत्क्रुष्ट न० बूम, पोकार

उत्क्रोशपात पु० एक प्रकारनु नृत्य

उत्क्लेद पु० भीनु थवु ते

उत्क्वथ् -कर्मणि० काढानी रीते उकाळावु-ऊकळवु

उत्क्षेपण न० ऊंचकवु-ऊंचु करवु ते

उत्खचित वि० गूंथेलु-वणेलु-जडेलु

उत्तमगुण वि० उत्तम गुणवाळु, श्रेष्ठ

उत्तमव्रता स्त्री० पतिव्रता स्त्री

उत्तमाधममध्यम वि० उत्तम कोटीनु, हीन कोटीनु अने मध्यम कोटिनु

उत्तर पु० जुओ पृ० ६००

उत्तरकुरवः पु०ब०व० जुओ पृ० ६००

उत्तरकोसलाः पु०ब०व० कोसल देशनो उत्तरनो भाग

उत्तरच्छद पु० पथारी उपरनी चादर (२) आच्छादन

उत्तरण न० ओळंगवु-पसार करवु ते

उत्तरदायक वि० उद्धत, सामो जवाब आपतु

उत्तरपचालाः पु० जुओ पृ० ६००

उत्तरवस्त्र न० उपर पहेरवानो झभ्भो

उत्तरंग पु० ऊंचु चडेलु मोजु

उत्तरा स्त्री० जुओ पृ० ६००

उत्तराधरौ पु०द्वि०व० उपरनो अने नीचेनो ओठ

उत्तरारणि स्त्री० अग्नि प्रगटाववा वपराता अरणिना बे लाकडामांथी रवैयानी पेठे फेरववानु उपरनु लाकडु

उत्तंस वि० जीभने उत्तेजक एवु, चटाकेदार (२) पु० जुओ पृ० ९२

उत्तंसयति प० (वाळने बांधवा, कलगी तरीके वापरवु; शोभाववु)

उत्तानपाद पु० जुओ पृ० ६००

उत्तानशय वि० चत्तु सूतेलु

उत्तानित वि० ऊंचु करेलु (२) उघाडेलु (३) फेलावेलु

उत्तेजना स्त्री० उश्केरवु ते (२) धार काढवी ते

उत्थातृ वि० उत्पन्न थतु, ऊठतु

उत्थानशीलिन् वि० उद्यमी

उत्थायिन् वि० ऊठतु, [illegible], देखातु

उत्पतित वि० [illegible], [illegible]

उत्पतिष्णु वि० ऊंचे [illegible],

उत्पाटिन् वि० ([illegible]) [illegible] [illegible] [illegible]

उत्पातपवन, उत्पातवात पु० आंधी
उत्पादित वि० उत्पन्न करेलु
उत्पीडन न० दाबवु, दबाववु
उत्सवसंकेताः पु०ब०व० हिमालयमा वसनी एक जंगली जातिना लोको
उत्सकलित वि० पग्वानगी आपेलु
उत्संगित वि० सबध-ससर्गमा आवेलु, सहित, व्याप्त (२) खोळामा लीधेलु
उत्सादित वि० नाश करेलु (२) तेल वगेरेथी मालिश करेलु के सुगंधित करेलु [माटेनी योजना
उत्साहवृत्तांत पु० उत्साहित करवा
उत्साहहेतुक वि० उद्यम करवा उत्साहित करनारु
उत्सुकयति प० (उत्सुक के आतुर करवु)
उत्सूर्यशायिन् वि० सूर्योदय समये पण ऊंघतु – सूई रहेतु
उत्सेकिन् वि० ऊभरातु, अतिशय एवु (२) गर्विष्ठ, उद्धत
उत्स्वप्नायते आ० (ऊंघमा वात करवी, अमूझणने कारणे स्वप्नु आववु)
उदकक्रिया स्त्री० पितृतर्पण, पितृओने जलांजलि अर्पवी ते
उदकग्रहण न० पाणी पीवु ते
उदकप्रवेश पु० जळसमाधि लेवी ते
उदकशील वि० स्नान करनारु
उदगावृत्ति स्त्री० उत्तरमाथी पाछा फरवु ते
उदग्रनख पु० हाथ जोडवा ते, अजलि
उदग्रदति प० (स्पष्ट देखाई आवे तेम प्रगट करवु)
उदन्यति प० (पाणी सीचवु; तरस्या थवु)
उदमथ पु० जवनु पाणी – एक मिश्रण
उदयक्रम पु० क्रमे क्रमे वधारवु ते
उदयगिरि पु० जुओ 'उदयाद्रि'
उदयन पु० जुओ पृ० ६००
उदयाद्रि पु० उदयाचळ (सूर्य-चद्र ज्याथी ऊगता मनाय छे ते पूर्व तरफनो पर्वत. तेथी ऊलटो अस्ताचल)
उदयिन् वि० ऊंचे चडतु (२) नीकळतु; वहेतु
उदयेंदु पु० इंद्रप्रस्थ नगर
उदवज्र पु० पाणीना धोध के झापटा रूपी वज्र
उदवसित न० घर; निवासस्थान
उदवास पु० पाणीमा ऊभा रहेवु के वसवु ते
उदवासिन् वि० पाणीमा ऊभु रहेनु
उदश्वित् न० दही घोळेलु ज पाणी मेळवीने करेली जाडी छाश
उदानी आ० उन्नत – ऊंचु करवु
उदारचरित वि० उत्तम चरित्रवाळु
उदारदर्शन वि० सारा देखाववाळु (विशाळ आंखोवाळु)
उदारधी वि० असाधारण बुद्धिवाळी (२) उदारचरित [अलौकिक
उदाररमणीय वि० भव्य अने रम्य,
उदारवृत्तार्थपद वि० उत्तम शब्द, अर्थ अने छंदवाळु
उदारसत्त्वाभिजन वि० उत्तम चारित्र अने कुळवाळु
उदासितृ वि० निरपेक्ष; उदासीन
उदीर्णवेग वि० अतिशय वेगवाळु
उदूढ वि० परणेलु (२) मेळवेलु, प्राप्त करेलु (३) ऊंचु, ऊपसेलु (४) पुष्ट, जाडु (५) अतिशय
उदेजय वि० कपावनारु, ध्रुजावनारु
उदेजया स्त्री० मूंझवण, क्षोभ
उदेष्यत् वि० वधतु, उदय पामतु
उद्गद्गदिका स्त्री० निसासा नाखवा ते
उद्गाढ वि० ऊंडु, गाढ, पुष्कळ
उद्गुर् ६ आ० धमकाववा माटे अवाज के शस्त्र ऊंचा करवा – उगामवा
उद्गूर्ण वि० उगामेलु
उद्घ पु० उत्तमता, श्रेष्ठता (समासने अंते, उदा० 'ब्राह्मणोद्घ' उत्तम के श्रेष्ठ ब्राह्मण) (२) सुख (३) अग्नि

उद्घट्टित वि० उघाडी नाखेलु (ताळु इ० खोलीने) (२) जुदु –छूटु पाडेलु
उद्घन पु० सुतार लाकडु घडती वेळा नीचे राखवा वापरे छे ते डीमचु
उद्घर्षण न० घसवुं ते (२) कठण पदार्थथी चामडी घसवी ते
उद्दंडित वि० ऊचु करेलु (दड इ०)
उद्दान न० पकडवु ते, बाधवु ते (२) वश करवु ते [कलक चडावीने
उद्दूष्य अ० जाहेरमा आळ मूकीने –
उद्देशतः अ० दृष्टातरूपे, साराशमा (२) स्पष्टताथी, उद्देशीने
उद्धारकविधि पु० परत करवानी रीत (करजने)
उद्धृति स्त्री० उद्धार (पापमाथी)
उद्ध्य पु० एक नदीनु नाम
उद्बधनी स्त्री० गळे फासो खावानु दोरडु [काढवु
उद्बृह् १, ६ प० ऊचु करवु, बहार
उद्भावयितृ वि० ऊचे चडावनारु, उन्नतिकर
उद्भ्रम् १, ४ प० भटकवु, भमवु
उद्यति स्त्री० उद्यम
उद्यमन न० ऊचु करवु ते (२) उद्यम (३) प्रयोग, उदाहरण
उद्यमभृत् वि० उद्यम करनारु
उद्यमित वि० उद्यम करवा प्रेरायेलु
उद्यानपाल पु० माळी, वगीचानो रक्षक
उद्योजित वि० चडी आवेलु, एकठु थयेलु (वादळ)
उद्रिक्तचेतस् वि० उच्च के उदार चित्तवाळु (२) गर्विष्ठ
उद्वम् १ प० वमन करवु, ऊलटी करवी (२) उच्चारवु (वरदान), पाडवु (आसु)
उद्वह्नि वि० तणखा फेकतु
उद्वाश् रडता रडता पोकारवु
उद्वात वि० वमन करेलु (२) च्युत थयेलु; नीकळी पडेलु
उद्वेगकर वि० उद्वेग करावनारु, चिंता के क्षोभ उपजावनारु
उद्वेजयितृ वि० उद्वेग करावे तेवु
उन्नतत्व न० उन्नतपणु, भव्यता
उन्नतिमत् वि० ऊपसी आवेलु, भरावदार (२) ऊचु, भव्य
उन्नद् १ प० मोटेथी गर्जवु
उन्नम्र वि० ऊचु (२) टटार
उन्नस वि० ऊचा नाकवाळु
उन्नाय पु० ढगलो (२) ऊचाई
उन्नाल वि० दाडो ऊचो देखातो होय तेवु
उन्नेय वि० अनुमान करवा योग्य
उन्मज्जक पु० गळा सुधी पाणीमा रही तप करनारो [करवु
उन्मनीकृ ८ उ० क्षुब्ध, खिन्न के अस्वस्थ
उन्मनीभू १ प० क्षुब्ध, खिन्न के अस्वस्थ थवु [फादो
उन्माथ पु० तीव्र वेदना (२) जाळ,
उन्मादयितृक वि० उन्मत्त – मोहित करे तेवु
उन्मार्गम् अ० ऊधे रस्ते, अवळे मार्गे
उन्मार्जन न० लूछी काढवु – भूसी काढवु – दूर करवु ते
उन्मीलित वि० उघाडेलु (२) खीलेलु, विकसेलु (३) चीतरेलु
उन्मुखता स्त्री० इंतेजारी, उत्कंठा
उन्मूल वि० मूळमाथी उखेडी नाखेलु
उन्मेषिन् वि० चमकतु
उपकर्ण् १० उ० साभळवु
उपकर्मन् न० जनोई देती वखते वटुकनु माथु सूघवामा आवे छे ते विधि
उपकारक वि० उपकार करनारु, मददगार
उपक्रम्य वि० हाथमा लेवा – प्रारभ करवा योग्य (२) मटाडी शकाय तेवु (रोग)
उपक्षय पु० शिव (२) खर्च, व्यय
उपक्षेपण न० उपेक्षा, बेदरकारी (२) निंदा (३) फेकवु – नीचे नाखवु ते

उपगति स्त्री० नजीक जवु ते; पासे आववु ते
उपगामिन् वि० नजीक आवतु
उपग्रस् १ प० ग्रसी – गळी जवु
उपग्राह्य वि० अनुग्रह करवा के नोकरीमा चालु राखवा योग्य (२) पु० नजराणु
उपघ्रा प० सूघवु; मो वडे स्पर्शवु
उपचक्र पु० एक प्रकारनु चक्रवाक पखी
उपचर्य वि० सेवाचाकरी के आदर करवा लायक
उपचारपद न० केवळ खुश करवा वापरेल – औपचारिक – शब्द
उपच्छद पु० आवश्यक साधनसामग्री (२) समजावट; आजोजी
उपजप् १ प० कानमा खानगी रीते समजावीने पोताना पक्षमा लई लेवु (२) दगो, कावतरु के बळवो करवा माटे उश्केरवु
उपजिगमिषु वि० नजीक जवा इच्छतु
उपजीव्य वि० निर्वाहनु साधन पूरु पाडनारु (२) पु० जेमाथी पोताने लखाण माटेनु वस्तु के सामग्री मळी रहे ते (३) न० निर्वाहनु साधन
उपतट पु० घार, किनारी, सरहद
उपतपन वि० सतापनारु, पीडनारु
उपदातृ वि० आपनारु, बक्षनारु
उपदीक्ष् ८ उ० बक्षिस तरीके आपवु
उपदृश् १ प० जोवु, निहाळवु –प्रेरक० दर्शाववु, बताववु (२) रजू करवु, जाण करवु, –सामे मूकवु
उपदेशता स्त्री० नियम; सिद्धात (२) शिक्षण, उपदेश
उपधानीय न० उशीकु
उपधायिन् वि० उशीका तरीके वापरतु
उपधृ १, १० प० धारण करवु, टेको आपवो, वहन करवु (२) मानवु, धारवु, गणवु (३) समजवु, अनुभववु, साक्षात् करवु
उपनम्र वि० पासे आवतु, हाजर थतु
उपनिधि पु० थापण तरीके सोंपेली वस्तु (२) कपट, छळ
उपनिर्गमन न० वहार जवानो मार्ग
उपनिवेशित वि० वसावेलु, स्थापेलु; राखेलु [लागवु
उपनिषेव् आ० –मा लीन थवु, –मा
उपनेतव्य वि० पासे लाववा योग्य (२) नोकरीए राखवा योग्य
उपन्यस्त न० छाती आगळ हाथ राखवा ते (लडवानो एक दाव)
उपप्रलोभन न० ललचाववु ते (२) लाच, वक्षिस
उपप्लविन् वि० सकटग्रस्त, पीडित (२) जुलम सहन करतु
उपप्लव्य न० मत्स्यदेशनी राजधानी
उपभृ ३ उ० वहन करवु, ऊचकवु
उपमाद्रव्य न० उपमा आपवा वपराती वस्तु
उपमृद् ९ उ० मर्दन करवु, कचरी नाखवु; टुकडा करवा, नाश करवो
उपमेखलम् अ० ढोळाव के वाजु उपर
उपयाच् १ उ० याचना करवी; मागवु
उपयाचित वि० याचेलु, मागेलु (२) न० याचना, आजीजी (३) देवनी बाधा तरीके मानेली वस्तु (वलिदान तरीके आपवानी) (४) बाधा, मानता
उपयाचितक न० जुओ 'उपयाचित' न०
उपयाज पु० यज्ञोना पुरवणी मत्र
उपरथ्या स्त्री० नानो रस्तो (धोरी मार्गथी ऊलटो)
उपरितल न० उपरनो भाग
उपरुद्ध वि० डखल-रुकावट-अटकायत करायेलु (२) ढकायेलु, आच्छादित; छुपायेलु (३) पु० केदी; वदीवान
उपरोधक वि० अटकायत–रुकावट करनारु (२) घेरतु, वीटळातु

उपरोधिन् वि० रुकावट–अटकायत करनारु
उपलक्ष्य वि० मेळववा योग्य, प्राप्त करी शकाय तेवु (२) प्रशसनीय; भलामण करवा योग्य
उपली ४ आ० नजीक पडवु, वळगवु
उपवद् १ आ० मनाववु, समजाववु; खुशामत करवी [करवु
उपवर्ण् १० प० विगतवार वर्णन
उपवस् १ प० निवास करवो (२) उपवास करवो [रागनु मडाण
उपवहन न० गावानु शरू करता पहेला
उपवंचित वि० छेतरायेलु, निराश करायेलु
उपवीज् १ प० पखो नाखवो
उपवीणयति प० (देव समक्ष वीणा वगाडवी)
उपवीणित न० वीणा साथे गावु ते
उपशम् ४ प० शात पडवु, शात थवु (२)वध पडवु (अग्नि, अवाज, कोप)
उपशल्य पु० भालो, खीलो (वारणानो)
उपशाय पु० वाराफरती सूवु ते (पहेरो भरता)
उपशायिन् वि० नजीक सूतेलु (२) ऊघतु, सूतु (३) शात पाडतु (४) वाराफरती जागीने पहेरो भरतु
उपशूर वि० शूर करता हीन कोटीनु
उपशोभा स्त्री० शोभाशणगार
उपशोष पु० सूकवी नाखवु ते, करमावी नाखवु ते
उपसर पु० सळग पक्ति (२) गर्भाधान माटे पासे जवु (साढनु)
उपसर्या स्त्री० गर्भाधान माटे तैयार थयेली गाय
उपसंग्रह् ९ प० अनुभववु, वेळवु (२) स्वीकारवु (३) पकडवु (४) कबजे लेवु (५) जीती लेवु, मनावी लेवु (६) भेटवु [होय तेम
उपसंध्यम् अ० लगभग मध्याकाळ
उपसभाष पु० वार्तालाप, वातचीत (२) सात्वन [शोभीतु, पूर्ण
उपसंस्कृत वि० राधेलु; तैयार करेलु (२)
उपसंहित वि० युक्त, सहित (२) सबधी
उपसात्व् १० प० शात पाडवु
उपस्कार पु० पूर्ति, पुरवणी (२) अध्याहार (३) शणगारवु ते (४) शणगार (५) स्वाद इ० माटेनी मसालानी वस्तु [छोडतु
उपस्नुत वि० दूझतु, दूधनी धारा
उपस्नेह पु० भीनु थवु ते
उपस्नेहयति प० (स्नेह करतु थाय तेम करवु)
उपस्पृश् ६ प० स्पर्श करवो (पाणीने), नाहवु (२) कोगळा करवा (३) छाटवु
उपस्मृति स्त्री० स्मृतिशास्त्रनो गौण ग्रथ (१८ मनाय छे) [उष्णता
उपस्वेद पु० परसेवो (२) गरमी,
उपहतदृश् वि० झखवाई गयेलु, आधळु थई गयेलु
उपहन् २ प० मारवु, ठोकवु (२) व्यय करवो, नाश करवो (३) –ना खोसवु (४) पाठ करी जवामा भूल करवी
उपहव पु० आमत्रण, बोलाववु ते
उपहस्तिका स्त्री० पानसोपारीनो बाटवो
उपहारिन् वि० आपतु, वक्षतु, लावतु (२) होमतु, वधेरतु, बलिदान आपतु [वानो बलि
उपहार्य न० देव-पितृ आदिने आप-
उपहास्यता स्त्री० उपहास के हासीने पात्र थवा के होवापणु
उपह्वर पु० एकात स्थान (२) नानि[illegible]
उपह्वे १ आ० आह्वान करवु (२) बोलाववु
उपाकृत वि० मत्रथी पवित्र करेलु (२) अशुभ (३) उपयोगमा लीधेलु (४) पीडित, व्याकुळ [[illegible]
उपाग्निका स्त्री० पिप्पलि [illegible]

उपाघ्रा प० सूघवु (२) होठ लगाववा; चूमवु [मशहूर थयेलु

उपात्तवर्ण गीतमा गायेलु, गीतमा

उपाधि पु० अवेजी, वदलीमा मूकेलो माणस [आलिंगेलु

उपाश्लिष्ट वि० पकडेलु, जकडेलु,

उपासग पु० सानिध्य (२) ढगलो (३) हाथी, घोडा उपर मुकातो भाग

उपासीन वि० –नी नजीक बेठेलु (२) मरभरा करतु

उपास्तमन न० सूर्यास्त

उपास्ति स्त्री० उपासना, सेवा, पूजा

उपास्थित वि० चडेलु, ऊभेलु (२) तहेनात-मरभरा-पूजा करतु (३) तृप्त थयेलु के करेलु

उपातिक न० नजीकनु, पासेनु

उपेयिवस् वि० पासे गयेलु के पहोचेलु

उपोढ वि० वृद्धिगत, सचित (२) नजीकनु, नजीक लावेलु (३) आरभेलु (४) परणेलु

उपोढा स्त्री० बीजी – मानीती स्त्री

उभयविभ्रष्ट वि० बनेमाथी भ्रष्ट थयेलु, बने गुमावी बेठेलु

उभयवेतन वि० विश्वासघाती, बने पक्ष पासेथी पैसा लेतु

उमाकान्त पु० शिव

उरच्छद पु० छातीनु वस्तर

उरुकीर्ति वि० प्रख्यात, जाणीतु

उरुग्राह पु० मोटो निग्रह

उरुजन्मन् वि० खानदान कुटुंबमा जन्मेलु

उरुसत्त्व वि० महा बळवान

उर्वशी स्त्री० जुओ पृ० ६००

उलूपी स्त्री० जुओ पृ० ६०१

उलूलुध्वनि पु० कल्याणादि उत्सव प्रसंगनो- गान करीने स्त्रीओना गीतनो ध्वनि

उल्बणरस पु० वीर रस

उल्मुक पु० [illegible]

उल्लसति पु० (ऊकळतु, फूलतु)

उल्लप् (उद्+लप्) उच्चार ऊंचा स्वरे

उल्लापिक वि० [illegible], सूचवतु (२) पु० रोग, [illegible]

उल्लेखिन् वि० घसतु; खोतरतु

उशनस् पु० जुओ पृ० ६०१

उशीनर पु० जुओ पृ० ६०१

उषा स्त्री० जुओ पृ० ६०१ [६३१

उष्ट्रकंटकभक्षणन्यायः पु० जुओ पृ०

उष्ट्रलगुडन्यायः पु० जुओ पृ० ६३१

उष्णवारण पु०, न० छत्री, छत्र

उष्णा स्त्री० गरमी (२) पित्त

उष्णालु वि० गरमी सहन न करी शकतु, गरमीथी थाकेलु

उष्णीषिन् वि० मुगटधारी

उष्णोदक पु० गरम पाणी (२) अगमर्दक

उष्णोष्ण वि० अत्यंत गरम

उस्रा स्त्री० उषा, परोढ (२) गाय

उंछ पु० (खेतरमा पडेला) दाणा वीणवा ते

ऊ

ऊनविंशति स्त्री० ओगणीस

ऊनाशीति स्त्री० अगण्याएंशी

ऊरी अ० समति के स्वीकार बतावे (जुओ 'उररी')

ऊरुद्भव वि० साथळमाथी जन्मेलु

ऊर्जमेध वि० अति बुद्धिशाळी

ऊर्ध्वकर्ण वि० ऊभा करेला कानवाळु

ऊर्ध्वपाद न० एक प्रकारनु नृत्य

ऊर्ध्वमूल वि० ऊचे मूळवाळु

ऊर्ध्ववाल न० चमरीपुच्छ

ऊर्ध्वशोषम् अ० उपरनु सूकवी नाखे तेम
ऊर्मिका स्त्री० मोजु (२) आगळीए पहेरवानी एक जातनी वींटी (पाणीना तरगनी जेम चमकती)
ऊर्मिला स्त्री० जुओ पृ० ६०१
ऊषरवृष्टिन्यायः पु० जुओ पृ० ६३१
ऊषरायते आ० (ऊखर जमीन जेवा थवु – जेथी वासनाओ ऊभी न थई शके)
ऊष्मप वि० गरमागरम अन्ननी वराळ पीतु (२) पु० पितृओनो एक वर्ग
ऊष्माण न० वराळ

ऋ

ऋक्षवत् जुओ पृ० ६०१
ऋक्षहरीश्वर पु० सुग्रीव (रीछो अने वानरोनो राजा)
ऋज्वायत वि० सीधु – टटार एवु
ऋणकर्तृ वि० देवु करनारु
ऋणनिर्मोक्ष पु० ऋणमाथी मुक्त थवु ते (पूर्वजो इ०ना)
ऋतुजुष् स्त्री० ऋतुकाळे समागम करती स्त्री (जेथी सतान थाय)
ऋतुपर्ण पु० जुओ पृ० ६०१
ऋद्धित वि० समृद्ध करेलु
ऋद्धिमत् वि० समृद्ध
ऋभु पु० देव (२) देवो जेने पूजे छे ते देव (३) देवोना अनुचरोनो एक वर्ग (४) रथकार
ऋश्य पु० धोळा पगवाळु हरण
ऋषभक पु० एक पर्वत (२) साढ
ऋषिक पु० जुओ पृ० ६०१
ऋष्यमूक पु० जुओ पृ० ६०१
ऋष्यवत् पु० जुओ पृ० ६०१
ऋष्यशृग पु० जुओ पृ० ६०१

ए

एक न० मन (२) एकम
एककुंडलिन् पु० कुबेर
एकचित्त न० एक विषय उपर चित्तनु एकाग्र थवु ते (२) एकमती
एकज वि० एकलु जन्मेलु (२) एकलु ऊगेलु (वृक्ष)
एकताल वि० एक ज ताडवृक्षवाळु
एकपक्ष पु० एक पक्ष (२) एक दृष्टि-बिंदु
एकपदे अ० अणधार्यु, ओचितु
एकपिंग, एकपिंगल पु० कुबेर (एक आखने बदले पीळु चाठु, पार्वती उपर कुदृष्टि करवाने लीधे शापथी थयेलु)
एकपुरुष पु० परमात्मा, परमपुरुष
एकपुष्कर पु० एक वाजित्रनु नाम
एकप्रहारिक वि० एक ज प्रहारथी मृत्यु पामेलु
एकरथ पु० प्रखर योद्धो
एकरश्मि वि० प्रकाशमान
एकरूपता स्त्री० समानता
एकलव्य पु० जुओ पृ० ६०१
एकवेणीधरा स्त्री० पतिना वियोगमा केशने सेथो पाडया विना एक ज जूडामा बाधी राख्या होय तेवी स्त्री
एकशल्य पु० एक प्रकारनी माछली
एकस्थ वि० एक स्थळे केंद्रित थयेलु, एक ज व्यक्तिमा रहेलु
एकसंस्थ वि० एक स्थळे रहेतु

एकस्थान न० ए ज स्थान (२) नजीक नजीक आवेलु–ऊभेलु होवु ते
एकादशन् वि० अगियार
एकान्नविंशति स्त्री० ओगणीस
एकान्नाशीति स्त्री० अगण्याएशी
एकावली स्त्री० मोती के मणकानी एक ज सेर
एकाहार्य वि० एक ज आहारवाळु; भक्ष्याभक्ष्यनो भेद न करतु
एकांश पु० जुदो विभाग–खड
एकैकम् अ० एक पछी एक
एकोनविंशति स्त्री० ओगणीस
एकोनाशीति स्त्री० अगण्याएशी
एतद्योनिन् वि० ए ज जेनु समान उत्पत्तिस्थान छे तेवु
एता स्त्री० हरणी
एतावन्मात्र वि० एटला कदनु; एटलु
एधित वि० वधेलु, विकसेलु (२) उछेरवामा आव्यु होय तेवु, उछेरेलु
एवमादि वि० एवा गुणधर्मवाळु, एवा प्रकारनु
एवंगुण वि० एवा गुणवाळु
एवंप्राय वि० ए प्रकारनु, ए जातनुं
एवंवादिन् वि० एम बोलतु
एष् १ उ० पासे जवु (२) सरकवु (३) जाणवु

ऐ

ऐकगुण्य न० सादा एकमरूप होवु ते (बेगणु–त्रण गणु नही)
ऐकमुख्य न० पूरेपूरु मालकीपणु (२) तावेदारी
ऐकांतिके एकातमा; खानगीमा
ऐक्ष्वाक पु० इक्ष्वाकुनो वशज (२) इक्ष्वाकुना वशजोनो देश
ऐषीक वि० वरु के नेतरनु बनावेलुं
ऐंगुद वि० इगुदी वृक्षनु (२) न० इगुदीनु फळ
ऐंद्रशिर पु० एक जातनो हाथी
ऐंद्राग्न वि० इंद्र अने अग्नि सबंधी
ऐंधन वि० बळतणथी उत्पन्न थयेलुं (अग्नि)

ओ

ओघवती स्त्री० जुओ पृ० ६०१
ओजायते आ० (पराक्रम दाखववु)
ओत वि० वाणानी रीते वणायेलु
ओतप्रोत वि० ताणा-वाणानी पेठे वणाईने एक थयेलु
ओरंफ पु० मोटो वलूरो –घसरको
ओषधिज पु० अग्नि
ओषधिप्रस्थ पु० हिमालयनी राजधानी
ओष्ठावलोप्य वि० होठ वडे खवाय तेवु
ओंकार पु० ॐ; प्रणव (२) तेनो उच्चार (३) प्रारभ; शरूआत (ला०)

औ

औक्षक न० बळदोनो समूह
औचथ्य वि० उतथ्यना वशनु–गोत्रनु
औडव वि० ताराओनुं
औत्तंक वि० उत्तक मुनिनु
औत्पातिक न० भावि उत्पात के अनिष्ट सूचवनारु

औदक वि० जळचर; जळवासी
औदका स्त्री० पाणीथी वीटळायेली नगरी
औदरिक वि० जेनु पेट फूली गयु छे तेवु
औदर्य वि० गर्भाशयनु (२) गर्भाशयमा पडेलु (३) पु० पुत्र
औदुंबर वि० उबराना वृक्षनु (२) तांबानु (३) न० उबरानु फळ–उमरडु (४) तांबानु पात्र
औपनीविक वि० नीवि–पेट उपर पहेरेला वस्त्रनी गाठ नजीकनु, त्या राखेलु
औपयिक पु०, न० उपाय
औपवास्य न० उपवास
औपसंध्य वि० प्रातःकाळ सबधी
औपस्थितिक पु० अनुचर, सेवक
औपहारिक न० बलि, आहुति; दान
औपेंद्र वि० उपेंद्र सबधी (जुओ पृ० १०८) [कामळो
औरभ्र न० घेटानु मास (२) ऊननो
और्जित्य न० मोटाई, महानता
और्वर वि० पृथ्वीनु, धरतीनु
औशीर न० पखो के चामरनो हाथो (२) पथारी (३) बेसवानु आसन (४) उशीर–वीरणवाळानो लेप (५) वीरणवाळो (६) वि० वीरण-वाळानु बनावेलु [के प्रकाश
औषसातप पु० वहेली सवारनो तडको

क

ककुत्स्थ पु० जुओ पृ० ६०१
ककुभ पु० अर्जुन वृक्ष (२) न० कुटज-वृक्षनु पुष्प
कक्कोली स्त्री० ककोलनो छोड
कच पु० जुओ पृ० ६०१
कच्छांत पु० सरोवर के नदीनी किनार उपरनी भेजवाळी जगा
कज्जलित वि० काजळवाळु – काळु करेलु के थयेलु
कटपूतना स्त्री० पिशाचीओनो एक प्रकार; एक पिशाच योनि
कटभू स्त्री० हाथीनु गडस्थल
कटांत पु० गडस्थलनो छेडानो भाग
कटिका स्त्री० केड; कमर
कटीरक न० कूलो, ढगरो
कटुक न० कडवी वाणी (२) कडवाश (समासने अते 'खराब' अर्थमा उदा० दधिकटुकम् – खराब दही)
कठकालापाः पु० ब०व० (यजुर्वेदनी) कठ अने कालाप शाखाना अनुयायीओ
कठिन न० कोदाळी (२) माटीनी हाडी
कठिनता स्त्री० कठोरता, क्रूरता
कठोरगर्भ वि० पुख्त गर्भावस्थावाळु
कठोरयति प० (मजरीओ के कळीओथी भरी काढवु, खिलावबु)
कठोरित वि० व्यायाम-परिश्रमथी दृढ के मजबूत बनावेलु
कडंकर, कडगर पु० जुदा जुदा कठोळनी कडब (२) एक जातनी गदा
कणाद पु० जुओ पृ० ६०१
कण्व पु० जुओ पृ० ६०१
कथनिक पु० कथाकार, वार्ताकार
कथवीर्य वि० कया सामर्थ्यवाळु
कथानायक, कथापुरुष पु० वार्तानु मुख्य पात्र [विक भाग
कथामुख न० वार्ता के कथानो प्रस्ता-
कथोद्घात पु० वार्ता के कथानो उद्-आत – प्रारंभ [तिरस्कारवु)
कदर्थयति प० (कनडवु; [illegible];
कदर्थीकृत वि० तिरस्कृत

कदलीफलन्यायः जुओ पृ० ६३१
कदंबकोरकन्यायः, कदबमुकुलन्यायः जुओ पृ० ६३१
कदंबानिल पु० वर्षा ऋतु (२) कदबना पुष्पोथी सुवासित एवो पवन
कदंबी स्त्री० एक छोड (देवडागर)
कद्रथ पु० खराब रथ के वाहन
कद्रू स्त्री० जुओ पृ० ६०१ [नीच
कद्वद वि० खराब के खोटु बोलतु (२)
कनककदली स्त्री० केळनो एक प्रकार
कनकदडिका स्त्री० सोनानु म्यान
कनखल न० जुओ पृ० ६०१
कनप पु० एक अस्त्र – शक्ति
कनयति प० (नानु करवु, घटाडवु)
कनीयस् पु० नानो भाई
कन्यकाजन पु० युवान कन्या
कन्यागर्भ पु० कुवारी कन्यानो दीकरो
कन्याभैक्ष्य न० कन्यानी याचना करवी ते
कन्यामय वि० कन्यारूपी
कन्यारत्न न० अत्यत सुदर कन्या
कन्याव्रतस्था स्त्री० ऋतुधर्ममा आवेली – रजस्वला स्त्री
कन्यांत.पुर न० अत पुर
कप पु० राक्षसोनो एक वर्ग
कपटपटु वि० छळकपट के हाथचालाकीमा कुशळ एवु [वाळी सुलेह
कपालसंधि पु० बन्ने पक्षे समान शरतो
कपित्थ न० छाश, तक्र
कपिल पु० जुओ पृ० ६०१
कपिलवस्तु न० जुओ पृ० ६०२
कपिशा स्त्री० जुओ पृ० ६०२
कपिशित वि० रतूमडु बनी गयेलु (तपवाथी)
कपोलपत्र न० गाल उपर चीतरेलु चित्र
कफोणिगुडन्याय. जुओ पृ० ६३१
कबंध पु०, न० पाणी
कमितृ पु० पुरुष, नर, पति
कयाधु स्त्री० जुओ पृ० ६०२
करकृतात्मन् वि० दरिद्र, रक (माड हाथमा आवे तेनाथी निर्वाह करतु)
करटमुख न० हाथीनु गडस्थळ ज्याथी फाटे छे ते जगा
करतोया स्त्री० जुओ पृ० ६०२
करविन्यस्तबिल्वन्यायः जुओ पृ० ६३२
करंबित वि० मिश्रित [हाथी
करिवर, करीश्वर पु० गजराज, श्रेष्ठ
करुणम् अ० दयाजनक रीते
करूष पु० कलुषितता, गदकी (२) जुओ पृ० ६०२
कर्का स्त्री० सफेद घोडी
कर्ण पु० एक वृक्ष (२) जुओ पृ० ६०२
कर्णक पु० सफेद वाळ, पळियु
कर्णचूलिका स्त्री० एरिंग
कर्णजाह न० काननु मूळ
कर्णज्वर पु० कानमी पोडा
कर्णमागम् काने पहोचवु, जाण थवी
कर्णमूल न० काननु मूळ
कर्णलता स्त्री० कानना पुट
कर्णस्रोतस् न० कानना मेल – मळ
कर्णदा ध्यानथी साभळवु
कर्णीरथ पु० स्त्री माटेनी बध पालखी
कर्णीसुत पु० कर्णीनो पुत्र – मूलदेव (चोरविद्यानो प्रवर्तक)
कर्दमित वि० कादववाळु (२) कादव जेवु घट्ट थयेलु – जामेलु
कर्पर पु० काचबानु पीठ उपरनु हाडकु
कर्मगति स्त्री० भाग्य के दैवनी गति
कर्मचडाल, कर्मचाडाल पु० अत्यत हीन कर्म करनारु
कर्मचोदना स्त्री० अमुक कर्म करवा माटेनो विधि के नियम (२) धर्मकृत्य करवा माटेनो प्रेरक हेतु
कर्मज वि० कर्म करवाथी परिणमतु – प्राप्त थतु (२) पु० स्वर्ग (३) नरक (४) कळियुग
कलमगोपवधू स्त्री० डागरना क्यारडानी रखवाळण

कलविशुद्ध वि० मधुर अने स्पष्ट
कलविंक पु० एक जातनी चकली (२) डाघ [घटवु ते
कलाक्षय पु० चद्रनी कळानु क्षीण थवु —
कलाभृत् पु० चद्र
कलिंगाः पु०व०व० एक प्रदेशनु नाम अने तेना लोको, जुओ पृ० ६०२
कलिंदजा स्त्री० यमुना नदी
कलुषमानस वि० दुष्ट मनवाळु, अनिष्ट करवानी इच्छावाळु [करवु
कलुषीकृ ८ उ० मेलु, झाखु के कलुषित
कल्प पु० वळ, सामर्थ्य
कल्पसूत्र न० सूत्रोना रूपमा जुदा जुदा विधिओनो सग्रह
कल्याणी स्त्री० पवित्र गाय
कवरीभर पु० सुदर मोटो अबोडो
कवलयति प० (खावु;कोळियो करी जवु)
कशात्रय न० घोडाने चाबुक मारवानी त्रण रीत
कश्यप पु० जुओ पृ० ६०२
कष्टतपस् वि० कठोर तपस्या करतु
कस्तूलिका स्त्री० ओस, झाकळ
कंकवदन न० पकड, साडशी, चीपियो
कंकेलि पु० एक जातनु वृक्ष (शरदमा फूल बेसे छे)
कटक पु० वास (के तेवु बीजु झाड) (२) दोष (३) कारखानु (४) मकर (कामदेवनु ध्वजाचिह्न)
कंटकद्रुम पु० काटानु झाड
कंठचामीकरन्यायः जुओ पृ० ६३२
कठत्र पु० हार, कठी [समान)
कंठनाल न० गळु, कठ (कमळनी नाळ
कंठवर्तिन् वि० कठे आवेलु (वहार नीकळवानी तैयारीमा होय तेवु)
कंठसूत्र न० एक प्रकारनु गाढ आलिंगन
कंडूयति(–ते) (वलूरवु, खजवाळवु)
कडूयनक पु० कान खोतरवानी सळी
कंडूयितृ वि० वलूरनारु, खजवाळनारु
कंदल न० ए नामनु फूल
कबलनिर्णेजनन्यायः जुओ पृ० ६३२
कंबोजाः पु० व० व० जुओ 'कांबोज' पृ० ६०३
कंस पु० जुओ पृ० ६०२
कसकृष् पु० श्रीकृष्ण (कसने हणनार)
काकतालीयन्यायः जुओ पृ० ६३२
काकदंतगवेषणन्यायः जुओ पृ० ६३२
काकपिकन्याय जुओ पृ० ६३२
काकमद्गु पु० एक जातनी जळकूकडी
काकयव पु० अदर दाणो न होय तेवो वाझियो यव (पोपटु)
काकाक्षिगोलकन्यायः जुओ पृ० ६३२
काक्ष न० गुस्साभरी तीरछी नजर
काचमणिन्यायः जुओ पृ० ६३२
काज न० लाकडानी मोगरी (हथोडी)
कात्यायन पु० पाणिनिना सूत्रो उपर वार्तिक लखनार विख्यात वैयाकरणी
कादल वि० 'कदली' जातना हरणनु
काद्रवेय पु० एक प्रकारनो साप
कानिष्ठिका स्त्री० नानी आगळी
कानिष्ठिनेय पु० सौथी नाना सताननु सतान (२) सौथी नानी पत्नीनु सतान
कान्यकुब्ज पु० जुओ पृ० ६०२
कापालिकत्व न० क्रूरता, वर्बरता
कापालिन् पु० शिव
कापाली स्त्री० खोपरीओनी माळा, मुडमाळा (२) चालाक स्त्री
कापिल वि० कपिलनु; कपिले प्रवर्तावेलु
कापिशायन न० मद्य, दारू
काम पु० जुओ पृ० ६०२
कामचारिन् वि० यथेच्छ विहरतु (२) स्वच्छदी (३) मनस्वी
कामज पु० क्रोध
कामजित् वि० कामविकारने जीतनारु (२) पु० स्कद (३) शिव
कामदुघ वि० दरेक इच्छा पूरी पाडनारु
कामधेनु स्त्री० जुओ पृ० ६०२

कामरसिक वि० कामी [पृ० ६०२

कामरूपाः पु० ब०व० जुओ 'कामरूप',

कामा स्त्री० कामना, इच्छा

कामाख्या स्त्री० जुओ पृ० ६०२

कामाश्रम पु० कामदेवनो आश्रम

कामेश पु० बधा धननो मालिक; सर्वधनसंपन्न (२) कुबेर

काम्यक पु० एक वन के सरोवरनु नाम, जुओ पृ० ६०२

काम्यगिर् वि० मधुर अवाजवाळु

कायक्लेश पु० शरीरनी तकलीफ; शरीरने पीडा

कारणता स्त्री० कारण होवु ते

कारणबलवत् वि० हेतुने कारणे दृढ एवु

कारणात् अ० –ने कारणे

कारणिक वि० न्यायाधीश; परीक्षक(२) कारणरूप, कारणभूत (३) उपदेशक; शीखवनारु [करावदानु

कारयितव्य वि० करावदानु, अमल

कारावर पु० चामडियो, मोची(निषाद बाप अने वैदेही स्त्रीथी जन्मेलो मिश्र जातिनो मनुष्य)

कारीर वि० वांस के वरुना फणगावाळु

कारुक पु० कारीगर (सुतार-वणकर-हजाम-धोबी-मोची)

कारूष न० क्षुधा; भूख (२) पु० व्रात्यवैश्य पिता अने वैश्य मातानो वचली वर्णनो माणस

कार्तयुग वि० कृतयुग–सत्ययुग संबंधी

कार्तवीर्य पु० जुओ पृ० ६०३

कार्तिकेय पु० जुओ पृ० ६०३

कार्पटिक पु० विश्वासु अनुचर (२) यात्राळु (३) पवित्र नदीओनु पाणी वहन करीने निर्वाह करनारो माणस (४) यात्रीओनो संघ (५) अनुभवी माणस (६) चालाक के कपटी माणस

कार्मणत्व न० वशीकरण

कार्यसिद्धिन् वि० कोई कार्य सिद्ध करवाना ध्येयवाळु [उष्ण

कार्शानव वि० अग्नि संबंधी (२) अति

काल न० लोखंड (२) एक सुगंध

कालकटंकट पु० शंकर

कालकवन न० जुओ पृ० ६०३

कालकेय पु० जुओ पृ० ६०३

कालक्षम वि० विलंब सहन करी शके तेवु [करवो ते

कालक्षेप पु० विलंब (२) समय पसार

कालखंड न० काळजु

कालज्येष्ठ वि० उमरमां मोटु

कालत्रय न० त्रण काळ (भूत, वर्तमान, अने भविष्य)

कालदष्ट वि० मृत्युग्रस्त; मरवानी तैयारीमां होय तेवु [चक्र

कालपर्याय पु० काळनी गति; काळनु

कालबंधन वि० काळने अधीन

कालमुख पु० वांदरानी एक जात

कालयवन पु० जुओ पृ० ६०३

कालयोगतः अ० काळनी गति के मर्यादा अनुसार [साप

कालसर्प पु० काळो अने भयंकर झेरी

कालसंकर्षिन् वि० काळ-समयने टूंकु करनारु (जेम के तेवो मंत्र के विद्या)

कालसंग पु० विलंब

कालसार वि० काळी कीकीवाळु

कालंजर पु० बुंदेलखंडनो एक पवित्र पर्वत (तपस्या माटे जाणीतो)

कालापक न० 'कातंत्र' व्याकरण

कालाम्र पु० एक जातनी केरी

कालांग वि० काळा-भूरा रंगनु (जेम के तरवार)

कालांजन न० एक जातनु काजळ

कालिदास पु० जुओ पृ० ६०३

कालिय पु० यमुनानो एक मोटो नाग (श्रीकृष्णे तेने नाथ्यो हतो)

कालिंग पु० कलिंग देशनो राजा (२) ते देशनो एक साप (३) हाथी

कालीयक पु०,न० कृष्णागुरु (२)पीळु चदन (३) एक जातनी हळदर
कावेरी स्त्री० दक्षिण भारतनी एक नदी (२) वेश्या (३) हळदर
काशेय वि० काशी सबधी, काशीमा जन्मेलु [एक छोड
काश्मरी स्त्री० गाभारी नामे ओळखातो
काश्मल्य न० मानसिक विषाद, हताशा
काश्मीरक वि० काश्मीरमा जन्मेलु के उत्पन्न थयेलु
काश्मीरपक्र पु० कस्तूरी
काश्यपपुर न० जुओ पृ० ६०३
काश्यपेय पु० दारुक (कृष्णनो सारथि) (२) सूर्य (३) वार आदित्योनु नाम (४) गरुड (५) देवो अने दानवो
काष्ठभर पु० लाकडानु अमुक वजन
काष्ठभगिन् पु० लाकडानो कीडो
काष्ठभारिक पु० लाकडा ऊचकनारो
काचनसधि पु० समान शरतोए कराती उत्तम सुलेह [चहेरावाळी स्त्री
काचनागी स्त्री० सुवर्ण समान रगना
काचीगुणस्थान न० कदोरो ज्या पहेराय छे ते कमरनो के नितवनो भाग
कांचीपुरी स्त्री० जुओ पृ० ६०३
कांदिग्भूत वि० दिग्मूढ, गाभरु, नासभाग करतु
कादिश् वि०-नासभाग करतु
कापिल्य न० जुओ पृ० ६०३
कापिल्ल, कापिल्लक पु० एक जातनु वृक्ष (२) एक सुगध (शुडारोचनी)
कांबोज पु० कावोजदेश (२) ते देशनो वतनी (३) ते देशना घोडानी जात
काबोजास्तरण न० धावळो, कामळो
कांस्य पु०,न० पित्तळनो के कासानो प्यालो
कास्यदोह, कास्योपदोह वि० कासानो हाडो भरीने दूध आपतु (एक टके)
कियच्चिरम् अ० केटला समय सुधी
कियदेतद् शा उपयोगनु ?
कियद्दूरम् अ० केटले दूर ?
कियन्मात्र पु० नजीवी-तुच्छ वस्तु
किराताः पु० जुओ पृ० ६०३
किराती स्त्री० किरात जातिनी स्त्री (२) चामर ढोळनारी दासी (३) पार्वती (४) कुट्टणी
किर्मीर वि० काबरचीतरा वर्णनु (२) पु० भीमे मारेलो एक राक्षस (३) नारगीनु झाड
किर्मीरित वि० रगबेरगी, कावरचीतरु (२) वच्चे वच्चे भळ्यु होय तेवु – मिश्रित
किलकिलायति (–ते) (दात ककडाववा; दात घसीने अवाज करवो)
किलकिंचित न० प्रेमावेगमा हसवु-रडवु-रिसावु ते (प्रेमी साथे)
किष्किधा स्त्री० जुओ पृ० ६०३
किष्कु पु० स्त्री० एक हाथ जेटलु – २४ आगळनु माप (२) मापवानो गज
किंकार्यता स्त्री० 'शु करवु' एनी समज न पडे तेवो प्रसग
किंकृते अ० शा माटे
किंचन्य न० मिलकत
किंनर पु० जुओ पृ० ६०३
किंनरी स्त्री० किंनर स्त्री
किंपुरुष पु० जुओ पृ० ६०३
किंविवक्षा स्त्री० वदनामी, जूठी निंदा
कीकटाः पु० व० व० जुओ पृ० ६०३
कीकस पु०, न० हाडकु
कीटावपन्न वि० कीडा पडेलु, जीवडाए कोरी खाधेलु [के तुच्छ जतु
कीटिका स्त्री० नानो कीडो (२) अल्प
कीर्णवर्त्मन् वि० रस्ता उपर वीखरातु पडे तेम करतु
कु २ प० गणगणवु, गुजारव करवो (२) ९ उ० [कुनाति, कुनीते, कूनाति, कूनीते] चीस पाडवी

कुक् १ आ० लेवु, स्वीकारवु, पकडवु
कुकुराः पु०ब०व० दशार्ह देशनु नाम (जुओ पृ० ६०९) (२) यादवोनी एक जातिना लोक
कुकूलाग्नि पु० ढूणसानो अग्नि
कुक्षिगत वि० पेटमा – कूखमा होय तेवु
कुक्षिज पु० पुत्र [दुराचारी
कुचर वि० प्रवास करतु (२) चोर,
कुटकारिका, कुटहारिका स्त्री० दासी–नोकरडी [बुद्धिवाळु
कुटिलमति, कुटिलाशय वि० दुष्ट
कुटीचक पु० एक जातनो भिक्षु (अजाण्या गाममा घेरघेर भिक्षा मागीने जीववाना व्रतवाळो)
कुटुंबकलह पु०, न० कुटुब साथे थयेलो झघडो (२) कुटुबनो आतरिक झघडो
कुटुंबभर पु० कुटुबनो भार, कुटुबनी सभाळ राखवानो बोजो
कुट्टिम पु०, न० नाना पथ्थर जडेली –फरसबधी जमीन
कुड्मल न० बाणना फळानी अणी
कुतप पु० दिवसनु आठमु मुहूर्त (पदरमाथी) [सिद्धात
कुतर्क पु० खोटी दलील (२) नास्तिक
कुतूहलिन् वि० कुतूहल, उत्कठा के उत्सुकतावाळु [हेतुवाळु
कुतोनिमित्त वि० कया कारण अथवा
कुथ पु० कुश, दर्भ
कुनख न० नखनो रोग
कुबेर पु० जुओ पृ० ६०३
कुब्ज पु० वाकी (कटार जेवी) तरवार (२) पीठ उपरनी खूध (३) एक जातनु माछलु [जतु
कुब्जगामिन् वि० वाकुचूकु जतु, विमार्ग
कुब्जलीला स्त्री० खूधा माणसनी चाल के रीतभात
कुब्जा जुओ पृ० ६०३
कुमारी स्त्री० कुवारी कन्या (१० थी १२ वर्षनी) (२) छोकरी, पुत्री
कुमारीपुर न० कुवारी कन्याओ माटेनो ओरडो के अत पुर
कुमुदानन्द वि० (राते खीलता) कमळोने आनद आपनारु – विकसावनारु
कुरंट पु० एक पीळु फूल
कुरु पु० जुओ पृ० ६०४
कुरुक्षेत्र न० जुओ पृ० ६०४
कुरुजांगल न० जुओ पृ० ६०४
कुरुनंदन पु० अर्जुन
कुरुपंचालाः पु० ब०व० जुओ पृ० ६०४
कुरुराज पु० दुर्योधन
कुरुविंद पु०,न० माणेक; रत्न [नारु
कुलकलंकित वि० कुळने कलक लगाड-
कुलक्षय पु० कुळ के वशनो नाश
कुलगृह न० सारु घर, खानदान घर
कुलघ्न वि० कुळघातक, वशनो नाश करनारु [कठोळ
कुलत्थ पु० कळथी; एक जातनु हलकु
कुलदूषण वि० कुळने कलक लगाडनारु
कुलधर्म पु० कोई पण कुळनो पोतानो आगवो धारो, रूढि के आचार
कुलनाशन न० कुळनो नाश करनारु ते
कुलव्रत पु०, न० कुळमा चालतु आवेलु व्रत के नियम [स्त्री
कुलस्त्री स्त्री० ऊचा कुळनी – खानदान
कुलाभिमानिन् वि० कुळ के वशनु अभिमान राखनारु [बेसवु ते
कुलायनिलाय पु० माळामा ईंडाने सेववा
कुलांकुर पु० कुळनो वशज
कुलिशकर पु० इद्र (हाथमा वज्र धारण करनार)
कुलिंदाः पु० ब० व० जुओ पृ० ६०४
कुलूताः पु० ब० व० एक देश के तेना राजाओ (जुओ पृ० ६०४)
कुवम पु० सूर्य
कुवलयित वि० नीलकमळथी शणगारेलु
कुवलयिन् वि० नीलकमळवाळु
कुविक्रम पु० खोटी जगाए दर्शावेलु पराक्रम

कुवेधस् पु० दुर्दैव, कमनसीब
कुशचीर न० दाभनु बनावेलु वस्त्र
कुशध्वज पु० जनक राजानो नानो भाई
कुशमुष्टि स्त्री० दाभनी झूडी
कुशलिन् वि० सुखी, समृद्ध (२) एक हलकी कारीगर वर्णनु
कुशस्थली स्त्री० जुओ पृ० ६०४
कुशाग्रीय वि० दर्भना अग्रभाग जेवु, सूक्ष्म – तीक्ष्ण [पृ० ६०४)
कुशावती स्त्री० कुशनी राजधानी (जुओ
कुशील वि० खराब स्वभाववाळु, खराब चारित्र्यवाळु [जमीन
कुष्ठल न० खराब स्थळ (२) धरती,
कुसुमचित वि० पुष्पोनो ढगलो जेना उपर करवामा आवेलो होय तेवु, पुष्पोथी व्याप्त [वृक्ष
कुसुमद्रुम पु० पुष्पोथी भरपूर छवायेलु
कुसुमपुर न० पाटलिपुत्र (जुओ पृ० ६०४) [करवा
कुसुमय प० पुष्पित करवु, फूल उत्पन्न
कुसुमशयन न० फूलोनी पथारी - शय्या
कुसुमशर पु० कामदेव
कुहलि पु० नागरवेलनु पान
कुहूकाल पु० महिनानो छेल्लो दिवस, अमावास्या (ज्यारे चंद्र न देखाय)
कुंजरग्रह पु० हाथीने पकडनारो
कुंजरारोह पु० महावत
कुंडधार पु० एक मेघ (२) एक नाग
कुंडपाय्य पु० यज्ञ
कुंडलना स्त्री० (शब्दनी) आसपास कूंडाळु करवु ते (तेने छोडी देवानो छे के विचारवानो नथी एम दर्शाववा)
कुंडलीकरण न० धनुष्यने अति जोरथी खेचवु ते (जेथी ते वर्तुळ जेवु देखाय)
कुंडिनपुर न० जुओ पृ० ६०४
कुंडोध्नी स्त्री० मोटा अडणवाळी गाय (२) पुष्ट स्तनवाळी स्त्री
कुंतलाः पु० ब० व० जुओ पृ० ६०४
कुंतिभोज पु० जुओ पृ० ६०४
कुंती स्त्री० जुओ पृ० ६०४
कुंभकर्ण पु० जुओ पृ० ६०४
कुंभीनसी स्त्री० रावणनी बहेननु नाम
कुंभोदर पु० शिवना एक पार्षदनु नाम
कुंभोलूक पु० एक जातनु घुवड
कू १ आ० [कवते], ६ आ० [कुवते] बूम पाडवी, चीस पाडवी
कूटलेख पु० बनावटी के खोटो दस्तावेज
कूपमंडूकन्यायः जुओ पृ० ६३२
कूपयंत्रघटिकान्यायः जुओ पृ० ६३२
कृकल पु० एक जातनु पखी (२) पाचनक्रियामा मदद करतो प्राण-वायु (३) काचिंडो, सरडो
कृतकम् अ० ढोंग करीने, देखाव करीने
कृतक्रिय वि० कृतकृत्य
कृतक्षौरस्य नक्षत्रपरीक्षा जुओ पृ० ६३२
कृतजन्मन् वि० जन्म आपेलु, पेदा करेलु, बीज वावेलु
कृततीर्थ वि० सुगमताथी जई शकाय तेवु करेलु (२) तीर्थयात्रा करेलु (३) गुरु पासे अभ्यास करतु होय तेवु (४) उपायो शोधवामा पावरधु
कृतनिश्चय वि० जेणे निश्चय कर्यो होय तेवु [हुमलो अने सामनो
कृतप्रतिकृत न० आघात अने प्रत्याघात;
कृतप्रयोजन वि० जेणे पोतानो धारेलो हेतु प्राप्त कर्यो छे तेवु
कृतवर्मन् पु० जुओ पृ० ६०४
कृतव्यावृत्ति वि० पदच्युत करेलु, उतारी मूकेलु
कृतशौच वि० पवित्र थयेलु
कृतसंकेत वि० संकेत के वायदो कर्यो होय तेवु [होय तेवु
कृतसंस्कार वि० [illegible]
कृतहस्तता स्त्री० कुशळता (२) शस्त्र वापरवामा कुशळता, [illegible]
कृताकृत वि० थोडु [illegible] अने थोडु [illegible] करेलु (अधूरु) (२) पु० [illegible]

कृतोदक वि० नाहेलु [होय तेवु
कृतोपकार वि० मदद के अनुग्रह कर्यो
कृत्य न० सुतार वगेरे कारीगरनु ओजार
कृत्रिमपुत्रक पु० ढींगली
कृत्रिमपुत्रिका स्त्री० दत्तक लीधेली पुत्री
कृप पु० कृपाचार्य, जुओ पृ० ६०४
कृपाणिका स्त्री० कटार, जमैयो
कृशगव वि० दूबळी गायोवाळु
कृशर पु० तल चोखानी दूधमा राधेली खीचडी [न आपनारु
कृशातिथि वि० अतिथिने पूरतुं भोजन
कृशाश्व पु० जुओ पृ० ६०४ [नफो
कृषिफल न० खेतीनी ऊपज, खेतीनो
कृष्ण पु० जुओ पृ० ६०४
कृष्णगति पु० अग्नि
कृष्णच्छवि स्त्री० काळु वादळ (२) काळियार मृगनु चामडु
कृष्णद्वैपायन पु० जुओ पृ० ६०४
कृष्णमृग पु० काळो मृग, काळियार
कृष्णा स्त्री० मच्छलिपट्टण आगळ समुद्रने मळती दक्षिणनी नदी
कृष्णायते आ० (श्याम-काळु करवु)
कृष्णायस न० लोढु, लोखंड
कृसर पु० जुओ 'कृशर'; तल-चोखानी दूधमा राधेली खीचडी
केकयाः पु० ब० व० एक देश (जुओ पृ० ६०४) के तेना लोको
केकयी स्त्री० कैकेयी
केतयति प० (दर्शाववु, बोलाववु; सलाह आपवी, समय नक्की करवो)
केदारखंड न० पाणीने रोकवा करेलो नानो बध के पाळी
केन अ० शेनाथी, केवी रीते
केरलाः पु० ब० व० दक्षिण हिंदनो एक देश (आजनु मलबार) के तेना वतनीओ
केलिकला स्त्री० क्रीडाकुशळता, कामक्रीडाना हावभाव (२) सरस्वतीनी वीणा [थयेलु
केलिकुपित वि० कामक्रीडामा गुस्से
केलिपल्वल न० क्रीडा माटेनु तळाव
केलिवन न० क्रीडा माटेनु उपवन
केलिशयन न० क्रीडा के आराम माटेनो पलग के सोफा
केलिसदन न० क्रीडास्थान; क्रीडा माटेनो खानगी ओरडो
केवलता स्त्री० मोक्ष, अद्वैतभाव
केवलात्मन् वि० केवळ अद्वैत स्वरूपवाळु
केशकारिन् वि० केश ओळवा-गूथवानु काम करनारु
केशग्रह पु० माथाना केशथी पकडवु ते (रतिक्रीडामा के युद्धमा)
केशबंध पु० केशनो बध, केश बधाय ते माटेनु मुकुट इ० साधन (२) नृत्य वखत हाथनी एक मुद्रा
केशशूल न० वाळनो एक रोग
केशशूला स्त्री० वेश्या
केशसंवाहन न० वाळ ओळवा ते
केसर न० बकुल वृक्षनु पुष्प
केसरि पु० हनुमानना पितानु नाम
केसरिणी स्त्री० सिहण
कैकसी स्त्री० रावणनी मातानु नाम
कैकेयी स्त्री० जुओ पृ० ६०४
कैटभ पु० जुओ पृ० ६०४
कैतक वि० केतकीनु फूल
कैतवक न० जूगटु, जुगार
कैतववाद पु० जूठ, जूठाणु
कैदारिका स्त्री० खेतरनो समूह
कैरातक वि० किरातोनु; किरात सबधी
कैलातक न० एक प्रकारनो दारू
कैशिकी स्त्री० नाटकनी चार शैलीओमानी एक (कौशिकी)
कैकिरात पु० विलासी–कामी पुरुष
कोकनदिनी स्त्री० रातु पोयणु
कोकामुख न० एक पवित्र तीर्थ
कोक्काण वि० कोंकणनु
कोपजन्मन् वि० क्रोधथी उत्पन्न थयेलु
कोपना स्त्री० क्रोधी स्त्री [राखतु
कोपयिष्णु वि० गुस्से करवानो इरादो

कोयष्टिक पु० एक पखी (२) नानु (धोळु) बगला जेवु पखी
कोशलाः पु० ब० व० कोशल देश के तेना वतनीओ (जुओ पृ० ६०५)
कोशवारि न० देवमूर्ति नवरावेलु पाणी (पोतानी सच्चाईनी परख कराववा आरोपी त्रण वार पीए छे)
कोशातकी स्त्री० पटोलि (परवळ-काकडी-डोडी)नो वेलो
कोष्ठीकृ घेरी लेवु, वीटी वळवु
कोसलनक्षत्र न० एक नक्षत्र
कोसलाः पु० ब० व० कोशल देश के तेना लोको (जुओ पृ० ६०५)
कोंकणाः पु०ब०व० सह्याद्रि अने समुद्र वच्चेनी पट्टीवाळो प्रदेश के तेना लोक
कौक्कुट वि० कूकडानु
कौतुकमंगल न० लग्नविधि
कौतुकवत् अ० कुतूहलथी
कौतुकागार पु० विलासक्रीडानु स्थान
कौतुकिता स्त्री० कुतूहल, उत्कठा
कौतुकिन् वि० आनदोत्सव माणतु
कौत्स पु० वरततुनो एक शिष्य
कौमारचारिन् वि० सयमी, ब्रह्मचारी
कौमारबधकी स्त्री० वेश्या
कौमारिक वि० पुत्री उपर प्रेम राखतु (२) पु० कन्याओनो बाप
कौमुदीमुख न० चादनीनु दर्शन
कौरव पु० कुरुनो वशज
कौलटेय न० जारकर्म
कौलाल पु० कुभार
कौलूत पु० कुलूत देशनो राजा (जुओ [पृ० ६०४)
कौशल्या स्त्री० जुओ पृ० ६०५
कौशांबी स्त्री० जुओ पृ० ६०५
कौशिकी स्त्री० जुओ पृ० ६०५ (२) नाट्यलेखननी चार शैलीमानी एक
कौसल्य वि० कोसल देशना लोकोनु
कौसल्या स्त्री० जुओ पृ० ६०५
कौसुम न० फूलनो पराग (२) कासाजळ
कौसुंभ पु० कसूबानु फूल
कौंकाः, कौंकणाः पु० ब० व० एक देश, तेना लोको के तेना राजाओ
कौंजर न० योगीओनु एक आसन
क्रतुद्विष् पु० राक्षस (२) रावण
क्रथकैशिकाः पु० ब० व० एक देश (विदर्भ)
क्रमयोगेन अ० क्रमपूर्वक, योग्य क्रमे
क्रमिक वि० आनुवशिक; वशपरपरागत
क्रमुक पु० सोपारीनु झाड
क्रव्याद पु० शिकारी प्राणी (जेम के वाघ)
क्रशयति प० (दुर्बळ – कृश बनाववु)
क्रदित वि० जेनी समक्ष धा नाखी होय – पोकार कर्यो होय तेवु
क्रियापवर्ग पु० कार्यनी समाप्ति (२) मोक्ष, कर्ममाथी मुक्ति
क्रियायज्ञ पु० धार्मिक विधि – सस्कार (जेम के गर्भाधान सस्कार)
क्रियार्थ वि० कोई प्रयोजन माटे जरूरी –उपयोगी एवु
क्रियासमभिहार पु० कोई कार्य वारवार [करवु ते
क्रियासक्रांति स्त्री० पोतानु ज्ञान बीजाने शीखववु ते
क्रीडाकानन न० क्रीडा–विहार माटेनु [उपवन
क्रीडाकोप पु० कृत्रिम गुस्सो
क्रीडाकौतुक न० नकामु कुतूहल (२) क्रीडा, विलास (३) मैथुन
क्रीडामयूर पु० क्रीडा – आनद माटे पाळेलो मोर
क्रीडाशैल पु० क्रीडा – विहार माटे बनावेलो कृत्रिम पर्वत
क्रुंच् पु० हस जेवु एक पक्षी
क्रूरकर्मन् वि० घातकी कृत्य करनारु
क्रूरदृश् वि० अनिष्ट नजरवाळु, जेनी नजर पडता अनिष्ट थाय तेवु (२) पु० शनि के मगळ ग्रह
क्रूरम् अ० भयकर रीते
क्रोडी स्त्री० भूडण, डुक्करी
क्रोडीकृ आलिंगनमा लेवु, भेटवुं

क्रोधमूर्च्छित वि० गुस्साथी गाडा जेवु वनी गयेलु होय एवु
क्रौंचवर्ण पु० एक जातनो घोडो
क्लिश्नत् वि० दूर करतु
क्लेशित वि० व्यथित
क्लेशिन् वि० व्यथा के ईजा पमाडतु
क्लोम न० मूत्राशय (२) फेफसु
क्वत्य वि० कयानु
क्वथन न० उकाळवु ते
क्वथित वि० उष्ण, ऊकळतु
क्षत्रवेद पु० धनुर्विद्या
क्षत्रियका स्त्री० क्षत्रिय स्त्री
क्षत्रियहण (–न) पु० परशुराम
क्षत्रिया, क्षत्रियिका स्त्री० क्षत्रिय स्त्री
क्षपण न० उपवास(२)शरीरनु दमन (३)अशौच, सूतक(४)नाश करवो ते
क्षपाट पु० निशाचर, राक्षस
क्षययुक्ति स्त्री० विनाश करवानी तक
क्षवथु पु० उधरस, छीक(२) गळामा खरखरी वाझवी ते
क्षार न० खार
क्षारक पु० पक्षी पकडवानी जाळ
क्षारक्षत वि० मूरोखारथी नुकसान पामेलु
क्षितिधेनु स्त्री० पृथ्वी रूपी गाय
क्षितिवर्धन पु० शव, मडदु
क्षितिसुत पु० वृक्ष (२) विष्णुए मारेलो नरकासुर (३) कीडो (४) मगळग्रह
क्षितीश्वर पु० राजा
क्षिप्नु वि० –फेकतु(२)मारतु; हणनारु
क्षीणबल वि० जेनु जोर के वळ क्षय पाम्यु छे तेवु (जेम के रोग)
क्षीरकुंड न० दूध दोहवानु वासण
क्षीरदग्धजिह्वान्याय: जुओ पृ० ६३२
क्षीरनीरन्याय: जुओ पृ० ६३२
क्षीरस्निग्ध वि० दूध जेवा रसथी चीकणु –भीनु बनेलु
क्षीरोर्मि पु० क्षीरसागरनु मोजु
क्षुद्रक पु० एक जातनु बाण
क्षुद्रता स्त्री० नानापणु, तुच्छता(२) सूक्ष्मता
क्षुधाशांति स्त्री० भूखनी तृप्ति थवी – धराई जवु ते
क्षुब्ध पु० वलोववानो रवैयो
क्षुरप्रमाला स्त्री० चन्द्रकळाना आकारना मणकाओनो हार
क्षुरभाड न० हजामनी कोथळी
क्षेत्रिय वि० खेतर संबंधी (२) बीजा जन्ममा मटे तेवु, आ जन्ममा न मटे तेवु (३) पु० याचक
क्षेपणीय न० गोफण जेवु पथ्थर वगेरे फेकवानु हथियार
क्षेप्तृ वि० फेकनारु, मोकलनारु
क्षेप्य वि० –मा मूकवा लायक (२) फेकवा – नाखवा लायक
क्षेमाश्रम पु० गृहस्थाश्रम
क्षेमेंद्र पु० जुओ पृ० ६०५
क्षोदक्षम वि० तपास के कसोटीमा टकी शके तेवु (२) नक्कर, दृढ
क्ष्माय् १ आ० कपाववु, ध्रुजाववु
क्ष्वेडन न० अस्पष्ट उच्चार करवो ते (२) गणगणवु ते, सुसवाट करवो के सिसोटी जेवो अवाज करवो ते

ख

खग वि० आकाशमा गतिवाळु
खट्वयति प० (खाटलानी जेम उपयोग करवो)
खड्गधारा स्त्री० तलवारनी धार
खधूप पु० दारूगोळाथी फेकातु बाण
खनित्रक न०, **खनित्रिका** स्त्री० नानी कोदाळी [स्थानमा रहेतो हतो)
खर पु० रावणनो ओरमान भाई (जन-

खरकंडूयन न० (घाने खण्या करे तेनी पेठे) नगडेळाने वधु बगाडवु ते
खरायित न० गधेडानु वर्तन
खरी स्त्री० गधेडी (२) खच्चरी
खरीवात्सल्य न० खच्चरीनु बच्चा प्रत्येनु वात्सल्य (बच्चु जन्मता मा मरी जती होवाथी नकामु गणाय)
खर्जूरी स्त्री० खजूरनु झाड
खलीकृत वि० अपमानित करेलु, वद-मागनी जेम वर्तवामा आव्यु होय तेवु
खलेकपोतन्यायः जुओ पृ० ६३२
खडशर्करा स्त्री० खडी साकर
खंडितविग्रह वि० जेनु अग खडित थयु छे तेवु
खांडव न० जुओ पृ० ६०५
खाडवराग पु० एक प्रकारनी मीठाई
खेलगमन, खेलगामिन् वि० विलास-पूर्ण के राजवी चालवाळु
खेशरीर न० छायापुरुषनु शरीर
खोरक पु० जानवरना पगनो एक रोग

ग

गगनारविंदन्यायः जुओ पृ० ६३२
गज् १ प० गर्जवु, वराडवु (२) मदमत्त थवु
गजच्छाया स्त्री० सूर्यग्रहण समये श्राद्ध माटे योग्य एवो अमुक समय
गजनासा स्त्री० हाथीनी सूढ
गजपति पु० ऊचो उत्तम हाथी (२) हाथीनो मालिक के महावत
गजपुष्पी स्त्री० एक फूल, नागपुष्पी
गजमुख, गजवक्त्र, पु० गणेश
गजवत् वि० हाथीओ युक्त
गजवदन पु० गणपति
गजसाह्वय न० हस्तिनापुर
गड्डुरिकाप्रवाहन्यायः जुओ पृ० ६३२
गणपूर्व पु० मुखियो (टोळी के वर्गनो)
गणभर्तृ पु० शकर (२) गणेश (३) टोळी के वर्गनो मुखियो
गणवल्लभ पु० सेनानायक
गणित न० गणवु ते, तेनु शास्त्र
गणेय वि० गणी शकाय तेवु
गणेश पु० जुओ पृ० ६०५
गतिमत् वि० गति करी शके तेवु; गतिमान (२) साधनसपन्न (मिलकत, पुस्तको इ०)
गभस्तिनेमि पु० विष्णु
गमक पु० स्वरना उत्थाननो प्रकार (सात छे, सगीत०)
गम्य पु० (कामभोग माटे स्त्री जेने मेळवी शके तेवो) लपट-कामी पुरुष
गरल्लि पु० (गळानो) घरघर अवाज
गरुड पु० जुओ पृ० ६०५
गर्धन न० इच्छा, लालच
गर्भग्राहिका स्त्री० दाई, दायण
गर्भभर्मन् पु० गर्भनु पोषण
गर्भसंभूति स्त्री० गर्भ रहेवो ते
गर्व् १ प०, १० आ० गर्व करवो ('गर्वित' एवु भू०कृ० ज वपराय छे)
गर्वित वि० गर्विष्ठ (२) न० गर्व
गलग्रह पु०, गलग्रहण न० गळु दाबवु ते (२) एक रोग (गळानो) (३) कृष्णपक्षनी ४ थी, ७ मी, ८ मी, ९ मी अने १३ मी तिथि
गलवार्त वि० गळाना काममा (खूब खाईने पचाववामा) समर्थ एवु
गलहस्तित वि० गळेथी पकडेलु
गलितक पु० नृत्यनो एक प्रकार
गलितनखदंत वि० नख अने दात पडी गया होय तेवु (वृद्ध)
गलितयौवन वि० युवानी चाली गई होय तेवु
गलु पु० एक मणि (चद्रकात)

गल्वर्क पु० बिलोरी काच (२) मणि (३) दारू पीवानु पात्र [शिंगडु
गवल न० जगली पाडो (२) पाडानु
गवानृत न० गायना जूठा सोगन खावा ते
गवामय पु० एक यज्ञ (एक वर्ष सुधी चालतो) [(ते आपवानु एक व्रत)
गवाह्निक न० गायनु एक दिवसनु खाण
गवेधुका स्त्री० एक जातनु घास
गंगा स्त्री० जुओ पृ० ६०५
गंडफलक न० पहोळो गाल
गंडस्थली स्त्री० गाल
गंडूष न० एक जातनो दारू
गंभीरवेदिन् वि० मदमत्त (हाथी); अकुशने न गणकारतु
गंभीरा स्त्री० ते नामनी एक नदी
गाढालिंगन न० गाढ आलिंगन
गाढांगद वि० चपसीने वेसतु कडु के ककण पहेर्युं होय तेवु
गाढोद्वेग वि० अत्यत उद्विग्न के पीडित
गातृ पु० गवैयो
गात्रयष्टि स्त्री० पातळु – नाजुक शरीर
गात्रावरण न० ढाल
गाधि पु० जुओ पृ० ६०५
गाधिपुर न० कनोज, जुओ पृ० ६०५
गामुक वि० गति करतु, जतु
गार्ध्र वि० गीध पक्षीनु
गार्ध्रवासस् पु० गीधनां पीछावाळु बाण
गाण्डीमय वि० गेंडानु बनावेलु (अर्जुननु धनुष्य)
गांधर्वशाला स्त्री० सगीतशाळा
गांधर्वशिक्षा स्त्री० सगीत
गांधार पु० जुओ पृ० ६०५
गांधारी स्त्री० जुओ पृ० ६०५
गिरिचर वि० पर्वतमा फरतु – विचरतु
गिरिजाधव, गिरिजापति पु० शकर
गिरिधातु पु० गेरु
गिरिव्रजपुर न० जुओ पृ० ६०५
गिरिस्रवा स्त्री० पर्वतमाथी नीकळती नदी के झरणु
गुडक पु० गोळो, गोळ आकारनु जे काई होय ते
गुडजिह्विकान्यायः जुओ पृ० ६३२
गुडशृंगिका स्त्री० गोळा फेंकवानु यत्र
गुणज्ञ वि० गुणनी कदर करनारु
गुणभोक्तृ वि० पदार्थोना गुणोने जाणनारु के भोगवनारु
गुणवत् वि० गुणवान, गुणी, उत्तम
गुणाढ्य पु० जुओ पृ० ६०५
गुणानुराग पु० बीजाना गुणो तरफ प्रेम के तेमनी कदर
गुण्य वि० गुणोवाळु (२) गणवा के गुणाकार करवा योग्य
गुरुतल्प पु० आचार्यनी पथारी (पत्नी) (२) आचार्यनी पत्नी साथे व्यभिचार
गुरुतल्पग, गुरुतल्पिन् पु० आचार्यनी पत्नी साथे व्यभिचार करनारो
गुरुत्व न० जुओ 'गुरुता' (पृ० १५८)
गुरुश्रुति स्त्री० (गायत्री) मत्र
गुर्जर पु० जुओ पृ० ६०५
गुलुच्छ पु० गुच्छ, झूमखु, झुड
गुल्फदघ्न वि० घूटी सुधी पहोंचतु
गुल्मिन् वि० जूथ के झुडमा ऊगतु
गुह पु० जुओ पृ० ६०६ [गुप्तता
गूढत्व न० (अर्थनी) गहनता (२)
गूढम् अ० गुप्त रीते
गृध् ४ प० (–प्रेरक०) लालसावाळु के लोलुप करवु (२) आ० छेतरवु
गृध्य वि० लुब्धपणे इच्छेलु
गृहकपोत पु० घरमा पाळेलु कबूतर
गृहकर्मदास पु० घरकामनो नोकर
गृहकर्मन् पु० घरना व्यवहारनी बाबत (२) घरमा प्रवेश वखते करवानो विधि
गृहजन पु० कुटुब, कुटुबनु माणस; (खास करीने) पत्नी
गृहदेवता स्त्री० घरनी देवता (२) (ब० व०) घरना देवोनो एक वर्ग
गृहदेहली स्त्री० घरनो उबरो
गृहपोषण न० घरनु भरणपोषण

गृहबलिभुज् पु० कागडो (२) चकलो
गृहयज्ञ पु० गृहस्थ (२) घरमा करवानो एक यज्ञ
गृहशुक पु० घरमा पाळेलो पोपट
गृहाचार पु० घरनो व्यवहार
गृहीतनामन् वि० नाम दईने बोलावेलु
गृहीतार्थ वि० अर्थ जाणतु
गृहीभू घरनी गरज सारवी
गृंजन पु० गाजर (२) लाल मूळो (३) गाजो (४) न० झेरी बाणथी मारेला प्राणीनु मास
गोकुल न० जुओ पृ० ६०६
गोग्रह पु० गायो घेरवी ते—पकडवी ते
गोजीव वि० ढोर पाळीने आजीविका करनारु (गवळी)
गोतम पु० एक ऋषि (अहल्याना पति) (२) न्यायदर्शनना प्रवर्तक आचार्य
गोधर्म पु० खुल्लामा मैथुन आचरवा रूपी पशुओनी रीत
गोनर्द पु० जुओ पृ० ६०६
गोपराष्ट्र पु० जुओ पृ० ६०६
गोपालिका स्त्री० गोवाळण
गोपित्त न० गाय-बळदनु पित्त (जेमाथी गोरोचन बने छे)
गोप्रतर पु० ढोर नदी पार करी शके तेवु स्थान (२) सरयू नदी उपरनु एक तीर्थ
गोमती स्त्री० सिंधु नदीने मळती एक नदी; जुओ पृ० ६०६ (२) गोहत्याना प्रायश्चित्त माटे जपवानो वैदिक मत्र
गोमंत पु० जुओ पृ० ६०६
गोमंतक पु० गोवा प्रात, जुओ पृ० ६०६
गोमिन् पु० चारण (वैश्य) (२) ढोरनो मालिक
गोमूत्रक वि० वाकुचूकु जतु (२) पु० वैदूर्य मणि (३) न० गदायुद्धनो एक पेतरो के मडळ
गोमेध पु० गाय होमीने करातो एक यज्ञ
गोरथ पु० बळदगाडी
गोलांगूल पु० काळा शरीरनो, लाल मो अने गायना जेवी पूछडीवाळो एक वानर
गोवर्धन पु० जुओ पृ० ६०६
गोविकर्तृ पु० गायने मारनारो (२) खेडूत (धरती खेडनारो)
गोविषाणिक पु० एक वाजित्र
गोव्रत वि० ए नामनु व्रत पाळनारो (गमे त्या सूवु, गमे ते खवडावे ते खावु इ०)
गोशीर्ष पु०, न० एक प्रकारनु पीळु चदन (२) एक प्रकारनु अस्त्र (बाण?)
गोसव पु० गाय होमीने करातो एक यज्ञ (कळियुगमा नथी करातो)
गौड पु० जुओ पृ० ६०६ (२) (ब०व०) ते देशना लोक
गौडी स्त्री० काव्यरचनानी एक रीति-वृत्ति-शैली
गौल्मिक पु० वन-जगलनो निरीक्षक
गौष्ठीन न० पहेला गायोनो वाडो होय ते स्थान
ग्रहपति पु० चद्र (२) सूर्य
ग्रहपीडा स्त्री० ग्रहण (२) ग्रह द्वारा थती पीडा
ग्रामधान्य न० खेडेलु अनाज, भात, डागर
ग्रामविशेष पु० (षड्ज आदि सगीतना) स्वर (सगीत०)
ग्रामवृद्ध पु० गामनो घरडो माणस
ग्रामाक्षपटलिक पु० गामनो पटेलियो
ग्रामाधिप पु० गामनो मुखियो
ग्राम्यमृग पु० कूतरो
ग्रासीकृ गळी जवु, कोळियो करी जवु
ग्लास्नु वि० थाकेलु

घ

घटीयंत्रन्यायः जुओ पृ० ६३२
घटोत्कच पु० जुओ पृ० ६०६
घट्टकुटी स्त्री० जकातनु नाकु
घट्टकुटीप्रभातन्यायः जुओ पृ० ६३२
घनीभू १ प० गाढु बनवु, ऊटु बनवु
घनोरू स्त्री० घन साथळवाळी स्त्री
घटाकर्ण पु० शिव, स्कद के कुवेरनो गण (चैत्र महिनामा पूजन थाय छे) (२) एक राक्षस
घंटाल पु० हाथी
घातस्थान न० वधस्थान (ज्या कतल कराय)
घाटिक पु० घट वगाडनारो
घुणक्षत वि० कीडाए कोरी खाधेलुं
घुणाक्षरन्यायः जुओ पृ० ६३२
घूत्कार पु० 'घू' 'घू' एवो अवाज
घृताची वि० घी भरेलु (२) पाणीवाळु (३) चमकतु (४) स्त्री० रात्री (५) सरस्वती (६) स्वर्गनी एक अप्सरा
घृतार्चिस् पु० भभूकतो अग्नि

च

चकोरव्रत न० चद्रना किरणोनु पान करवानी चकोर पक्षीनी टेव
चकोराय आ० चकोर पक्षीनी जेम वर्तवु
चक्रतुड पु० एक जातनी माछली
चक्रभ्राति स्त्री० पैडानु गोळाकार फरवु ते [यत्र
चक्राश्मन् न० पथ्थरोने दूर नाखवानु
चक्रीकृ ८ उ० वर्तुल बनाववु, धनुष्यनी जेम गोळ वाळवु
चक्रीवत् पु० गधेडो [करनारुं
चक्षुर्हन् वि० मात्र दृष्टिपातथी ज नाश
चटकामुख पु० चकलीना मुख जेवा अग्रभागवाळु एक प्रकारनु बाण
चटुलय प० आम तेम हलाववु
चटुलाय आ० मनोहर गति के चाल-वाळु होवु
चतुरशीति स्त्री० चोर्याशी
चतुर्दशन् वि० चौद
चतुर्मुख वि० चार मुखवाळु (२) पु० ब्रह्मा (३) न० चार मो (४) चार द्वारवाळु घर [जोडचा होय तेवु
चतुर्युज् वि० जेने चार (घोडा वगेरे)
चतुश्चत्वारिंशत् स्त्री० चुमालीस
चतुश्चित्य पु० चोतरो – ओटलो
चतुष्षष्टि स्त्री० चोसठ
चतुस्त्रिंशत् स्त्री० चोत्रीस
चतुस्सप्तति स्त्री० चुमोतेर
चतुःपंचाशत् स्त्री० चोपन
चपलाजन पु० चचळ स्त्री
चरणपतित वि० पगे पडेलु
चर्चुर न० दातनो कचकचाटभर्यो अवाज, दात पीसवानो अवाज
चर्मण्वती स्त्री० जुओ पृ० ६०६
चर्मविकर्तृ पु० मोची [करेली चाच
चन्चुपुट चंचूपुट पु०, न० पक्षीनी वध
चंडि स्त्री० दुर्गा; पार्वती [स्त्री
चंडी स्त्री० क्रोधी स्त्री, उग्र कोपवाळी
चंडीश पु० शकर
चंडीशमडन न० कालकूट विष (ए झेर शकरे कठे धारण कर्युं होवाथी)
चंडीश्वर पु० शकर
चंदनपक पु० चदननो लेप
चंद्रकेतु पु० जुओ पृ० ६०६
चंद्रप्रभ न० जुओ पृ० ६०६

चंद्रभागा स्त्री० जुओ पृ० ६०६
चंद्रवती स्त्री० जुओ पृ० ६०६
चंद्रशिला स्त्री० चंद्रकांत मणि
चंद्रहास पु० जुओ पृ० ६०६
चंपा स्त्री० जुओ पृ० ६०६
चाटुशत न० सेंकडो प्रिय वाक्य, घणी ज खुशामद
चाणक्य पु० जुओ पृ० ६०६
चाणूर पु० जुओ पृ० ६०७
चातुर्होत्र न० चार पुरोहितोनो समुदाय
चामरग्राहिणी स्त्री० राजाना मस्तक उपर चामर ढोळनार स्त्री
चारित्रदेवता स्त्री० पवित्रतानी देवी
चारी स्त्री० भ्रमण
चार्वाक पु० जुओ पृ० ६०७
चांदनिक वि० चंदनथी करेल शोभा-वाळु, चंदनरसथी महेकतु
चित्तनाथ पु० हृदयनो देव, स्वामी
चित्तयोनि पु० कामदेव
चित्तरक्षिन् वि० बीजानु मन राखवा तेनी इच्छा प्रमाणे वर्तनारु
चित्रकूट पु० जुओ पृ० ६०७
चित्रकृत्य न० चित्रकाम
चित्रभाष्य न० कूटनीतिपूर्ण वाणी
चित्रयोधिन् वि० आश्चर्यकारक युद्ध करनारु (२) पु० अर्जुन
चित्ररथ पु० जुओ पृ० ६०७
चित्रलेख वि० रम्य रेखाओवाळु, ऊंची कमानोवाळु
चित्रशिखंडिन् पु० सात ऋषिओनु उपनाम (मरीचि, अंगिरस, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु अने वसिष्ठ)
चित्रारंभ पु० चित्रनी रूपरेखा
चित्रार्पितारंभ वि० चित्रमा चीतरेलु
चित्रांगद पु० जुओ पृ० ६०७
चित्रांगदा स्त्री० जुओ पृ० ६०७
चित्रीयते आ० (आश्चर्य पमाडवु, आश्चर्यनो विषय बनवु–थवु)
चिपिटघ्राण, चिपिटनासिक वि० चपटा नाकवाळु
चिरायति प० विलंब करवो, ढील [करवी
चीनवासस् न० रेशमी वस्त्र
चीरक पु० एक मोटु पक्षी [तमरु
चीरि स्त्री० नेत्र ढाकवानु वस्त्र (२)
चूचुक वि० बोलवामा तोतडातु
चूतयष्टि पु० आंबानी डाळ
चेदयः पु० ब० व० जुओ पृ० ६०७
चेर पु० जुओ पृ० ६०७
चोला पु० ब० व० जुओ पृ० ६०७
चौरापराधान्मांडव्यनिग्रहन्यायः जुओ पृ० ६३२
चौर्यरत न० गुप्त मैथुन

छ

छत्रीकृ –नो छत्रीनी जेम उपयोग करवो
छनच्छन् अ० (पाणीना टीपा पडवानो) छमछम अवाज थाय तेम
छलयति प० (छेतरवु, ठगवु)
छंवंकारम् अ० निष्फळ थाय तेम

ज

जगत्स्वामित्व न० आखा जगत उपर चक्रवर्तीपणु
जज पु० सैनिक, योद्धो
जटायु, जटायुस् पु० जुओ पृ० ६०७
जटिलय जटा गूंथवी, कलगीवाळु करवु, भरी काढवु
जठरज्वलन न० क्षुधा, भूख
जडयति प० (जड बनावी देवु)

जनक पु० जुओ पृ० ६०७
जनमेजय पु० जुओ पृ० ६०७
जनस्थान न० जुओ पृ० ६०७
जन्मप्रतिष्ठा स्त्री० माता (२) जन्मभूमि
जमदग्नि पु० जुओ पृ० ६०७
जयदेव पु० जुओ पृ० ६०७
जयद्रथ पु० जुओ पृ० ६०७
जया स्त्री० (विश्वामित्रे रामने शीखवेली) मंत्रविद्या
जयाजयौ पु० द्वि० व० जय-पराजय
जरासंध पु० जुओ पृ० ६०७
जलज न० कमळ
जलजासन पु० ब्रह्मा (कमळना आसनवाळा)
जलताडनन्यायः जुओ पृष्ठ ६३३
जलपथ पु० दरियानी मुसाफरी
जलशय्या स्त्री० पाणीमा सूई रहेवु ते (एक व्रत)
जलस्थाय पु० तळाव, सरोवर
जल्पाक वि० वातोडियु
जह्नु पु० जुओ पृ० ६०८
जंबुद्वीप पु०, न० जुओ पृ० ६०८
जंबूप्रस्थ पु० एक गामनु नाम
जंभक पु० औषधोपचार (२) दगाबाज माणस (३) बिजोरु
जंभसाधक वि० वैद्यकना ज्ञानवाळु
जाटासुर पु० अलबुष नामनो राक्षस
जातिगृद्धि स्त्री० जन्म धारण करवो ते
जातुष वि० लाखनु बनेलु के बनावेलु
जापक पु० जप करनारो
जालंधर पु० जुओ पृ० ६०८
जांववत् पु० जुओ पृ० ६०८
जाववती स्त्री० जुओ पृ० ६०८
जिल्लिकाः पु० ब० व० ए जातना लोक
जिह्मेतर वि० मंद के जड नहि तेवु
जीमूतवाहन पु० जुओ पृ० ६०८
जीवग्राहम् अ० जीवतु होय तेम
जीवंती स्त्री० एक मिष्टान्न
जूति स्त्री० गति, त्वरा
जूर् ४ आ० –नी उपर क्रोध करवो
जृंभक पु० एक जातनो राक्षस (२) तेने दूर करवानो मंत्र
जैमिनि पु० जुओ पृ० ६०८
ज्ञातिचेल न० नीच कुळमा जन्मेलो
ज्ञातेय न० बंधुकृत्य; सगाने छाजे तेवु काम
ज्ञानयज्ञ पु० तत्ववेत्ता, ज्ञानी
ज्ञानाग्नि पु० ज्ञानरूपी अग्नि
ज्येष्ठामूल पु० जेठ महिनो
ज्यैष्ठिनेय वि० मोटी के मानीती पत्नीथी जन्मेलु
ज्वरगंड पु० एक रोग
ज्वल पु० अग्निनी ज्वाळा, झाळ
ज्वालालिंग न० शंकरनु ए नामनु धाम

झ

झणझणायमान, झणझणायित वि० झणकार करतु (घरेणानो)
झलंझल पु० आजी नाखे तेवो चळकाट
झषध्वज पु० कामदेव, मकरकेतु
झिल्लिक पु० तमरु

ट

टंकित वि० बांधेलु; जकडेलु

ठ

ठ पु० ठणठणाट (गागर गबडता थाय ते)

ड

डिका स्त्री० पाखोवाळु नानु जीवडु

ढ

ढौकित वि० नजीक आणेलु

त

तक्रकौंडिन्यन्यायः जुओ पृ० ६३३
तक्ष पु० जुओ पृ० ६०८
तक्षक पु० जुओ पृ० ६०८
तक्षन् पु० सुथार
तक्षशिला स्त्री० जुओ पृ० ६०८
तटभू स्त्री० किनारो
तटच पु० शकर
तदात्व न० वर्तमान समय
तदानींतन वि० त्यारनु, ते वखतनु
तद्गुण पु० कोई पण वस्तुनो गुण के धर्म
तपस्यति प० (तपस्या करवी)
तपोयज्ञ पु० तपरूपी यज्ञ करनारो
तपोर्थीय वि० तप कर्या करवा निर्मायेलु
तप्तवालुका स्त्री० ब० व० गरम रेती
तमसा स्त्री० जुओ पृ० ६०८
तरलयति प० (कपाववु, डोलायमान करवु)
तरलित वि० हालतु, कपतु
तरंगवती स्त्री० नदी
तरुणयति प० (वधारवु, फेलाववु)
तरुणायते आ० (जुवान रहेवु; ताजु रहेवु)
तरुवल्ली स्त्री० वेल
तलक पु० सळगता अगारावाळी नानी [गाडी
तलवद्ध वि० हाथ उपर चामडानु मोजु पहेर्यु होय तेवु (धनुर्धारी)
तलवारण न० धनुर्धारीए पहेरवानु चामडानु मोजु
ताम्रधातु पु० तावु
ताम्रपर्णी स्त्री० पृ० ६०८
ताम्रलिप्त न० जुओ पृ० ६०८
ताम्रोष्ठ, ताम्रौष्ठ पु० लाल परवाळा जेवो होठ
तारक पु० जुओ ६०८
तारकसूदन पु० कार्तिकेय (तारक राक्षसने हणनार)
तारणेय पु० सूर्यनो उपासक
तारस्वर वि० तीणा अवाजवाळु
तारा स्त्री० जुओ पृ० ६०८
तारामती स्त्री० जुओ पृ० ६०८
तार्किकत्व न० तर्कवाद, फिलसूफी
तार्ण वि० तृण सबधी, तृणनु बनावेलु
तांबूलाधिकार पु० तांबूलनी पेटी उपाडवानु काम
तिक्तायते आ० (कडवो स्वाद लागवो)
तिमिध्वज पु० जुओ ६०८
तिरयति प० (खलेल करवी, रुकावट करवी; छुपाववु)
तिलतडुलन्यायः जुओ पृ० ६३३
तिलवेनु स्त्री० तलनी गाय बने तेटला के गाय ढकाई रहे तेटला वस्त्रमा

समाय तेटला तल (गोदान तरीके ब्राह्मणने आपवा ते)
तिलोत्तमा स्त्री० जुओ पृ० ६०८
तीक्ष्णरस पु० विष, झेरी प्रवाही (२) सूरोखार
तीव्रद्युति पु० सूर्य
तुच्छयति प० (खाली के कगाळ करवु)
तुत्थ् १० उ० छाई देवु, ढाकी देवु
तुभ् ४,९ प० हणवु, प्रहार करवो
तुरंगम पु० घोडो
तुरगमेध पु० अश्वमेध यज्ञ
तुरीयजाति पु० शूद्र (चतुर्थ वर्ण)
तुलागुड पु० (शस्त्र तरीके वपरातो) एक जातनो गोळो
तुल्यनिंदास्तुति वि० निदा अने प्रशसामा समान बुद्धिवाळु
तुषकडनन्यायः जुओ पृ० ६३३
तुषारकण पु० हिमकण, झाकळबिंदु
तुष्यतुदुर्जनन्यायः जुओ पृ० ६३३
तुहिनय प० वरफथी आच्छादित करवु
तुहिनरुचि पु० चद्र(शीतळ किरणवाळो)
तुंदिलीकरण न० जाडु–फूलेलु करवु ते
तुंबी स्त्री० तुबडीनो वेलो
तूर्यमय वि० वादित्रनु
तृणज्योतिस् न० रात्रे चळकती एक वनस्पति (ज्योतिष्मती)
तृणता स्त्री० धनुष्य (२) तुच्छता
तृणपीडम् अ० दोरडु आमळती वखते तातणा अमळाय तेम (कुस्तीनो दाव)
तृणभुज् वि० तृणभक्षी
तृणभूत वि० तणखला जेवु, बधी प्रकारनी ताकात छीनवी लीधेलु
तृणय प० तणखलानी जेम तुच्छ गणवु
तृप्तियोग पु० सतोष
तैलक्षौम न० एक जातनु तेलिया कपडु (जेनी राख घा उपर लगाडाय छे)
तैलपायिन् पु० एक जातनो वदो (२) तलवार
तैलपूर वि० तेल पूरवाथी नळगतु रहेतु (दीपक) (रत्नो दीवा तरीके काम दे ते 'अतैलपूर दीपक' कहेवाय)
तैलप्रदीप पु० (तेलनो) दीवो
तोयाग्नि पु० वडवानल
तोयाधार पु० सरोवर, जळाशय
तोयोत्सर्ग पु० वरसाद [मुमेळ
तौर्यत्रिक न० नृत्य गीत अने वाजित्रनो
त्रयस्त्रिंशत् स्त्री० तेत्रीस
त्रयःपंचाशत् स्त्री० त्रेपन
त्रयःषष्टि स्त्री० त्रेसठ
त्रयीसंवरण न० गुप्त राखवानी त्रण क्रियाओ (पोताना छिद्र, शत्रुना छिद्रनी तपास, मसलत)
त्रस न० जगम प्राणीओनो समूह (२) वन (३) पशु-प्राणी
त्रिकूट पु० जुओ पृ० ६०९
त्रिगर्त पु० जुओ पृ० ६०९
त्रिजटा स्त्री० एक राक्षसी (रावणे अशोकवाटिकामा सीता उपर पहेरो भरवा राखी हती, पण सीता प्रत्ये भाव राखती हती)
त्रिणाचिकेत पु० यजुर्वेदना अध्वर्यु-यज्ञनो एक भाग(२)तेने लगता व्रतनु अनुष्ठान करनारो (३) नाचिकेत अग्निनु अनुष्ठान त्रण वखत कर्युं होय तेवो
त्रिदशीभूत वि० देव वनेलु
त्रिपचाशत् स्त्री० त्रेपन
त्रिपुर न० जुओ पृ० ६०९
त्रिपुरदाह पु० त्रण नगरोनु दहन (शकरे करेलु)
त्रिपुरद्विष्, त्रिपुरहर पु०शकर (त्रिपुरनो नाश करनार)
त्रिपुरी स्त्री० जुओ पृ० ६०९
त्रिभाग पु० त्रीजो भाग
त्रिमूर्धन् पु० एक राक्षस
त्रिवृत् पु० त्रण दोरानो कदोरो (२) त्रण सेरनु ताविज

त्रिवेणी स्त्री० जुओ पृ० ६०९
त्रिशंकु पु० जुओ पृ० ६०९
त्रिशाख वि० त्रण करचलीवाळु, त्रण वाक पड्या होय तेवु
त्रिषष्टि स्त्री० त्रेसठ
त्रिसंध्यम् अ० सवार, बपोर अने साजनी सध्याओ वखते
त्रिसाधन वि० त्रण प्रकारनी कारणतावाळु
त्रिसामन् वि० त्रण साम (वेदमत्र) गानारु
त्रुटि पु०, त्रुटी स्त्री० एक अति सूक्ष्म समयनु माप (क्षणनो चोथो भाग)
त्वक्पत्र न० तज, दालचीनी
त्वक्सार पु० वास (२) तज; दालचीनी
त्वरम् अ० त्वराथी
त्वष्टृ पु० जुओ पृ० ६०९
त्सरुमार्ग पु० तलवारना आटापाटा

द

दक्ष पु० जुओ पृ० ६०९
दक्षविध्वंस पु० शकर
दक्षिणापथ पु० जुओ पृ० ६०९
दग्धबीजन्यायः जुओ पृ० ६३३
दत्त पु० दत्तात्रेय (जुओ पृ० ६०९)
दत्तनृत्योपहार वि० नृत्यनी भेट आपेलु
दत्तात्रेय पु० जुओ पृ० ६०९
दत्त्रिम वि० दाननु, दानमा मळेलु
दधिकुल्या स्त्री० दहीनो प्रवाह
दधीच पु० जुओ पृ० ६०९
दमयंती स्त्री० जुओ पृ० ६०९
दमिल पु० जुओ पृ० ६०९
दरद पु० जुओ पृ० ६०९
दरीभृत् पु० पर्वत
दरीमुख न० गुफारूपी मो (२) जुओ 'दरिमुख' (पृ० २०४)
दर्भवती स्त्री० जुओ पृ० ६०९
दशकंठारि पु० राम (रावणना शत्रु)
दशगुणित वि० दशनी सख्याथी गुणेलु, दशगणु
दशधर्म पु० व्यथा
दशपुर न० जुओ पृ० ६०९
दशमुखरिपु पु० राम (रावणना शत्रु)
दशयोजन न० दश योजन जेटलु अतर
दशरथ पु० जुओ पृ० ६०९
दशरश्मिशत पु० सूर्य (हजार किरणवाळो)
दशवर्ग पु० (पोताना तेम ज शत्रुना) अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग, कोश अने दड—ए पाच पाच वर्ग
दशशताक्ष पु० इद्र (हजार आखवाळो)
दशाधिपति पु० दश माणसोनो जमादार
दशार्णा स्त्री० जुओ पृ० ६०९
दशार्णाः पु० ब० व० जुओ पृ० ६०९
दशार्ह पु० जुओ पृ० ६०९
दस्रौ पु० द्वि० व० देवोना वैद्य—बे अश्विनीकुमारो
दहन न० दाह, बाळवु ते
दंडकारण्य न० जुओ पृ० ६०९
दंडकाष्ठ न० लाकडानो दडो
दंडनिधान न० क्षमा, माफी
दंडापूपिकान्यायः जुओ पृ० ६३३
दंडिन् पु० जुओ पृ० ६१०
दंतपुर न० जुओ पृ० ६१०
दंतप्रवेष्ट न० दतूशळनी खोळी
दंतवेष्ट पु० दतूशळ उपरनु कडु (२) अवाळु, पेढु
दंतादंति अ० एकबीजाने दात वडे बचका भरीने (लडवु)
दंध्वन पु० जेमाथी सिसोटी वाग्या करे छे तेवु नेतर-वरु
दंभोलि पु० इंद्रनु वज्र
दाक्षायण्य पु० सूर्य

दाक्षिणात्य पु० जुओ पृ० ६१०
दानवज्र पु० वैश्यवर्णनु उपनाम
दारुक पु० जुओ पृ० ६१०
दारुकावन न० जुओ पृ० ६१०
दारुण न० (मृग,पुष्य, ज्येष्ठा अने मूल ए) प्रतिकूळ नक्षत्रोनो वर्ग
दारुवन न० दारुकावन (जुओ पृ०६१०)
दार्दुर वि० दर्दुर पर्वतनु
दाशार्हाः पु० ब० व० दशार्ह राजाना वंशजो, यादवो
दाशेरक पु० जुओ पृ० ६१०
दासजन पु० दास, नोकर
दासता स्त्री० दासपणु, गुलामी
दासमीयाः पु० ब० व० एक देश अने तेना लोको (२) उच्च वर्णनी स्त्रीने शूद्रथी थयेला संतान
दिग्देश पु० दूरनो प्रदेश (२) प्रदेश
दिग्बंध पु० दिशा-यंत्रथी दिशाओ नक्की करी लेवी ते
दिति स्त्री० जुओ पृ० ६१० [इच्छा
दिधीर्षा स्त्री० टेको के आधार आपवानी
दिनच्छिद्र न० राशि के नक्षत्र (२) अर्धा दिवसने प्रारंभे के अंते चंद्रनु स्थळांतर थवु ते
दिननाथ पु० सूर्य दिवस
दिनस्पृश् न० त्रण दिवसने स्पर्शतो चांद्र
दिलीप पु० जुओ पृ० ६१०
दिवसीकृ रात्रिने दिवसमां पलटी नाखवी
दिवाकीर्ति पु० वाळंद, हजाम (२) घुवड (३) हलका वर्णनो माणस, चांडाल
दिवानिशम् अ० दिवसे अने राते
दिव्य पु० दैवी सत्त्व, देव (२) जव (३) यम
दिव्यमानुष पु० उपदेवता
दिव्यरस पु० पारो (२) प्रेम
दिव्यौषधि स्त्री० सापनु झेर उतारी नाखे तेवी अलौकिक शक्तिवाळी वनस्पति
दिश्य वि० दिशाने लगतु, दिशामां आवेलु (२) परदेशनु, बहारनु
दिष्टभाज् पु० देव
दीक्षित पु० यज्ञनो प्रारंभविधि करतो ऋत्विज के पुरोहित (२) शिष्य (३) जेणे के जेना पूर्वजोए ज्योतिष्टोम जेवा यज्ञविधि कर्या होय ते [स्त्री
दीपिकाधारिणी स्त्री० दीवो ऊंचकनारी
दीप्तकिरण पु० सूर्य
दीप्तनिर्णय पु० निश्चित परिणाम
दीर्घतपस् पु० गौतम (अहल्याना पति)
दीर्घतमस् पु० उतथ्य ऋषिनो पुत्र (ते गुरुना शापथी आंधळो थयो हतो)
दीर्घयज्ञ वि० लांबा समय सुधी यज्ञ करतु
दीर्घीकृ ८ उ० लांबु करवु, लंबाववु
दुकूलपट्ट पु० सुंदर रेशमी वस्त्रनो फेंटो
दुरारोप वि० जेनी पणछ चडाववी मुश्केल होय तेवु (धनुष्य)
दुरावर्त वि० प्रतीति कराववु मुश्केल होय तेवु
दुर्गतता स्त्री० दुर्दशा
दुर्गतरणी स्त्री० सावित्री
दुर्गसंस्कार पु० जूना किल्लानु समारकाम
दुर्जनायते आ० (दुष्ट बनवु, वेरी बनवु)
दुर्जनीकृ निंदापात्र के दोषित बनाववु
दुर्जातजायिन् वि० फोगट जन्म धारण करनारु; व्यर्थ जीवनवाळु
दुर्जातबंधु पु० आपत्तिने वखते साथे रहेनारो
दुर्बाध वि० निवारी न शकाय तेवु
दुर्मनायते आ० (खिन्न के दुःखी थवु, मूंझावु)
दुर्मर्षित वि० उश्केरेलु, चडावेलु
दुर्योधन पु० जुओ पृ० ६१०
दुर्लक्ष्य न० खराब लक्ष्य
दुर्वासना स्त्री० दुष्ट भावना के इच्छा
दुर्वासस् पु० जुओ पृ० ६१०
दुर्विद त्रि० अज्ञेय, अगम्य

दुश्च्यवन पु० इन्द्र
दुष्ठु वि० दुःखी, कंगाळ, पीडित (२) बीमार (३) अ० खोटी रीते, खोटु ज
दुष्यंत पु० जुओ पृ० ६१०
दुःखलव्य वि० भेदवु के कापवु मुश्केल होय तेवु
दुःखीयति प० (पीडावु; दुःखी थवु)
दुःखोच्छेद्य वि० जितावु के उखेडी नाखवु मुश्केल एवु
दुःशला स्त्री० जुओ पृ० ६१०
दुःशासन पु० जुओ पृ० ६१०
दूतमुख वि० प्रतिनिधि द्वारा बोलतु
दूतयति प० (दूत तरीके मोकलवु)
दूत्य न० दूत तरीकेनु काम
दूरपातन न० दूर रहेला निशानने वीधवु ते
दूरीभू दूर थवु; अळगा थवु
दूरे कृ दूर करवु, तजवु
दूरे तिष्ठतु (भले थाय, काई परवा नहि)
दूर्वांकुर पु० दरोनी कुमळी कूपळ के कुमळु पान
दूषण पु० जुओ पृ० ६१०
दृगृध (दृश् + रुध) वि० दृष्टिने रोकतु
दृढग्राहिन् वि० मक्कम, आग्रही
दृढधन्विन् पु० बाणावळी
दृढमुष्टि वि० कजूस (२) पु० तरवार (३) सखत मूठी
दृढीकार पु० समर्थन, पुष्टि
दृश्यस्थापित वि० झट नजरे चडे ते रीते मूकेलु
दृषद्वती स्त्री० जुओ पृ० ६१०
देवकी स्त्री० जुओ पृ० ६१०
देवगिरि पु० जुओ पृ० ६१०
देवताप्रतिमा स्त्री० देवनी मूर्ति
देवयात्रा स्त्री० देवनी मूर्तिनो वरघोडो
देवयानी स्त्री० जुओ पृ० ६१०
देवव्रतत्व न० ब्रह्मचर्य व्रत
देवशत्रु पु० असुर, राक्षस
देवसात् अ० देव स्वरूपे
देवसात् भू देव बनी जवु
देवसेना स्त्री० देवोनु सैन्य (२) स्कंद - कार्तिकेयनी पत्नी
देवहूति स्त्री० जुओ पृ० ६१०
देवातिदेव पु० श्रेष्ठ देव (२) विष्णु (३) शिव (४) बुद्ध
देवानुचर पु० देवनो हजूरियो [वेद
देवार्पण न० देवने चडावेली वस्तु (२)
देशकालम् अ० समय अने स्थळ मुजब
देशकालौ पु० द्वि० व० समय अने स्थळ
देहलीदीपन्यायः जुओ पृ० ६३३
देहांतरप्राप्ति स्त्री० अन्य शरीर के बीजो जन्म प्राप्त थवो ते
दैप वि० दीवानु
दैवी स्त्री० दैव विवाहनी रीते परणेली स्त्री (२) वि० स्त्री० देव संबंधी
दैष्टिक वि० दैव के नियतिथी नक्की थयेलु (२) पु० नियतिवादी, बधु नसीबथी नियत थयेलु छे एवु माननारो
दोहददुःखशीलता स्त्री० गर्भावस्था
दोहदधूप पु० खातर तरीके वपरातु एक सुगंधी द्रव्य
दौस्थ्य न० दुःखी स्थिति
द्युनिवास, द्युसद् पु० देव
द्यूतकरमंडली स्त्री०, द्यूतमंडल न० जुगारीओनी मंडळी (२) जुगारीनी आसपास दोरेलु वर्तुल (देवु न चूकवी दे त्या सुधी तेनी बहार न जई शके)
द्यूतलेखक पु०, न० जुगारनी होड नोंधनारो [बांधनारो
द्योकार पु० शिल्पी (ऊंचा महेलो
द्रढयति प० (सखत बांधवु, समर्थन करवु, टेको आपवो)
द्रमिल पु० जुओ पृ० ६१०
द्रविडाः पु० ब० व० जुओ पृ० ६१०
द्राघयति प० (लांबु करवु, विस्तारवु, विलंब करवो)

द्रुपद पु० जुओ पृ० ६१०
द्रोण पु० जुओ पृ० ६११
द्रौपदी स्त्री० जुओ पृ० ६११
द्वंद्वमोह पु० सुखदुःखादि द्वंद्वोथी थतो मोह (२) द्विधा-संशयथी उत्पन्न थती मूंझवण [वरस चाले तेवु
द्वादशवार्षिक वि० बार वरसनु, बार
द्वारवती स्त्री० जुओ पृ० ६११
द्विचरण वि० बे-पगाळु, बे पगवाळु
द्विचंद्रमति पु० (तिमिर नामना आंखना रोगथी) बे चंद्र देखावानो भ्रम
द्विबाहु पु० मनुष्य
द्विवक्त्र पु० एक जातनो राक्षस (२) बे मोंवाळो साप
द्वैतवन न० जुओ पृ० ६११
द्वैधीभाव पु० बे भाग पडवा-पाडवा ते (२) बे भाग होवापणुं (३) शंका; अनिश्चय (४) 'आ के ते' एम बेमांथी शु स्वीकारवु ते न समजावुं ते (५) बहारथी जुदु अने अंतरथी जुदु एम 'बेवडी रमत' (६) सैन्यना बे भाग पाडीने शत्रुनी पजवणी करवी ते
द्वैपक्ष न० बे पक्ष पडी जवा ते
द्व्यक्ष वि० बे आंखवाळु

ध

धनायति प० (धननी इच्छा करवी)
धनाशा स्त्री० धननी आशा-इच्छा
धन्वन पु० एक झाड (धमासो)
धन्वंतरि पु० जुओ पृ० ६११
धर्म, धर्मराज पु० जुओ पृ० ६११
धर्मारण्य न० जुओ पृ० ६११ (२) तपोवन
धर्षणा स्त्री० धर्षण, अपमान (२) अत्याचार, बळात्कार (३) पराभव, पराजय
धवलगिरि पु० जुओ पृ० ६११
धातुमय वि० लाल धातुओथी भरेलु
धातुरस पु० धातुनु बनावेलु प्रवाही (लखवा माटे)
धान्यपलालन्यायः जुओ पृ० ६३३
धान्वंतर्य न० धन्वंतरि देवतावाळो होम
धामकेशिन्, धामनिधि पु० सूर्य
धाय्या स्त्री० इंधण, बळतण (२) यज्ञनो अग्नि सळगाववानो होय त्यारे गवाती ऋचा
धारय पु० देवादार
धाराश्रु न० आंसुओनु पूर
धुर्यता स्त्री० आगेवानी; नेतृत्व
धूपग्रह पु० धूपदानी
धूपवर्ति पु० एक प्रकारनी सिगरेट-बीडी [जथो
धूमलता स्त्री० गूंचळा वळतो धुमाडानो
धूलिहस्तयति (धूळवाळा हाथ करवा)
धृतगर्भ वि० गर्भ धारण कर्यो होय तेवु
धृतराष्ट्र पु० जुओ पृ० ६११
धृतिगृहीत वि० धृतियुक्त, अडग
धृतिं कृ अडग रहेवु; स्थिर रहेवु, तृप्ति के संतोष मेळववा
धृतिं बंध् धीरज दाखववी, मक्कमता बतावववी; मन स्थिर करवु)
धैर्यकलित वि० दृढ, स्थिर
धोरणि, धोरणी स्त्री० सततपणु; परंपरा [तेवु
धौतमूल वि० जेना मूळ धोवाया होय
ध्यानयोग पु० एकध्यान थवारूपी योग
ध्रु १, ६ प० स्थिर थवु (२) जवु, खसवु (३) निश्चितपणे जाणवु (४) हणवु
ध्वृ १ प० वांकु वाळवु (२) हणवु

न

नकिंचन वि० अति दरिद्र—गरीब
नकुल पु० जुओ पृ० ६११
नक्तमाल पु० एक वृक्ष (करज)
नखायुध पु० वाघ
नगराध्यक्ष पु० मुख्य पोलीस अधिकारी, कोटवाळ
नग्नाचार्य पु० वदीजन, चारण
नचिकेतस् पु० जुओ पृ० ६११
नचिर वि० लांबो समय नहि तेवु
नटागनान्यायः जुओ पृ० ६३३
नड्वल न० पुष्कळ वरुवाळो प्रदेश
नमनीय वि० आदरणीय
नमुचि पु० जुओ पृ० ६११
नयनत्व न० आखोनी दशा-स्थिति
नरक पु० जुओ पृ० ६११
नरनारायणौ पु० द्वि० व० जुओ पृ० ६११
नर्द्धि (न+ऋद्धि) पु० आपत्ति, तगी
नल पु० जुओ पृ० ६११
नलकूबर पु० जुओ पृ० ६११
नष्टाश्वदग्धरथन्याय. जुओ पृ० ६३३
नस्य न० छीक लावे तेवी वस्तु
न हि विवाहान्तर वरपरीक्षा जुओ पृ० ६३३
न हि सहस्रेणाप्यन्धैः पाटच्चरेभ्यो गृहं रक्ष्यते जुओ पृ० ६३३
नहुष पु० जुओ पृ० ६११
नह्येष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति जुओ पृ० ६३३
नद पु० जुओ पृ० ६११
नदनवन जुओ पृ० ६१२
नंदिग्राम पु० जुओ पृ० ६१२
नन्दिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१२
नंद्यावर्त पु० एक आकृति (२) ते आकृतिमा बाधेलु मकान (पश्चिममा द्वार न होय तेवु) (३) ते आकारनु पात्र-थाळी

नाकनायक पु० इद्र
नाकिन् पु० देव
नागकेतु पु० कर्ण
नागराज पु० मोटो हाथी (२) शेपनाग
नाडीचक्र न० शरीरमा (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर इ०) नाडीओना १६ चक्रोनो समूह
नापितोच्छिष्टता स्त्री० हजामत पछी स्नान न करवु ते
नामत्याग पु० नाम छोडी देवु ते
नायकायते आ० (हारना मुख्यमणिनो भाग भजववो ते, आगेवाननो भाग भजववो ते)
नारक पु० नरक (२) नरकनो जीव
नारद पु० जुओ पृ० ६१२
नारायण पु० जुओ पृ० ६१२
नार्पयति (राजाने सोपी देवुं—मिलकत)
नावमिक वि० नवमु
नासत्ययुग न० सत्ययुग (२) बे अश्विनीकुमारनु जोडकु
नास्तिक्य न० नास्तिकपणु
निकुलीनका, निकुलीनिका स्त्री० वशपरपरामा आवेली कोई पण कळा, विशिष्ट कोम के जातिनी कळा (२) ऊडवानी एक रीत
निक्षेपवणिक् पु० जेने त्या मालसामान थापण तरीके मूकवामा आवे तेवो वेपारी
निगडयति प० (साकळथी जकडवु—बाधवु)
निगुप् सताडवु, छुपाववु
निगृ ६ प० गळी जवु; खाई जवु
निग्रथि पु० पुस्तकनु पूठु
निजबोध पु० आत्मज्ञान, अध्यात्म ज्ञान
नितातकठिन वि० तीव्र
नित्ययुक्त वि० निरतर लवलीन रहेतु
नित्यवैरिन् वि० सनातन शत्रु

नित्यसत्त्वस्थ वि० हमेशा सात्त्विक वृत्तिवाळु, नित्य सत्य वस्तु विषे स्थित
नित्याभियुक्त वि० निरंतर समाधियुक्त चित्तवाळु [वर्षाऋतुनु
निदाघवार्षिक वि० उनाळानु अने
निबंद्ध पु० लेखक (२) टीकाकार
निमय पु० अदलोबदलो; विनिमय
निमा ३ आ० मापवु, तुलना करवी (किंमतनी)
निमि पु० जुओ पृ० ६१२ [कारण
निमित्तनैमित्तिक न० (द्वि०व०) कार्य-
निमित्तमात्र न० मात्र निमित्तरूप एवु ते [करतु
नियमस्थ वि० नियम पाळतु, तपस्या
निराकृति पु० अंगोपांग सहित वेदाभ्यास न कर्यो होय तेवो ब्रह्मचारी (२) यथोचित स्वाध्याय न करनारो ब्राह्मण (३) पंच महायज्ञ न करनारो
निरादान वि० कशुं ज न लेतु – स्त्री-कारतु (बुद्धनु विशेषण)
निराधार वि० अनाथ [ते
निरायसत्व न० टूकु-सांकडु-नानु होवु
निराशक पु० हताश
निराहार वि० आहार वगरनु, उपवासी
निरुक्तज पु० नियोग विधिथी थयेलो – क्षेत्रज पुत्र
निरूढ वि० रूढ, प्रचलित
निर्गल् १ प० गळी-टपकी-झरी जवु
निर्गृह वि० घर विनानु
निर्जय पु० पूरेपूरो विजय
निर्णिक्ति स्त्री० प्रायश्चित्त
निर्दरवासिन् वि० पर्वतनी गुफामा रहेनारु
निर्धनमनोरथन्यायः जुओ पृ० ६३३
निर्बंधिन् वि० आग्रही, जक्की
निर्मक्षिकम् अ० माखीओ वगरनु होय तेम; निर्जन होय तेम
निर्मत्सर वि० अदेखाई विनानु
निर्मन्यु, निर्मन्युक वि० क्रोधरहित
निर्मंत्र वि० वेद-मंत्र न भणेलु (२) मंत्र बोल्या विनानु (विधि)
निर्मानमोह वि० मान अने मोहरहित
निर्मांस वि० मांसरहित
निर्मिति स्त्री० रचना; सर्जन, कृति
निर्मुमुक्षु वि० मोक्षने झखतु
निर्वत्सल वि० (संतान प्रत्ये) वात्सल्य विनानु
निर्वात पु० पवन विनानु स्थळ
निर्वारित वि० निवारेलु
निर्विचेष्ट वि० उद्यम रहित, हाल्या चाल्या विनानु
निर्विनोद वि० आनंद-प्रमोद विनानु
निर्विषय वि० घर के रहेठाणमाथी काढी मुकायेलु (२) क्षेत्र न होय तेवु (३) विषयभोगमा अनासक्त
निर्विषयीकृत वि० घरबार विनानु करायेलु [वाळु
निर्वीर वि० वीरो-बहादुरो वगरनु (२)
निर्वीरा स्त्री० पति-पुत्र मरी गया होय तेवी स्त्री
निर्व्याजम् अ० निखालसताथी
निर्हारिन् वि० दूर सुधी फेलातु (२) सुगंधी (३) पु० बीजी गंधने दबावी दे तेवी गंध
निर्लिप पु० देव
निर्लिपाधिप पु० इंद्र
निवासरचना स्त्री० इमारत
निविड वि० निबिड; गाढु [करनारु
निवृत्तमांस वि० निरामिप आहार
निशानिशम् वि० दरेक राते, दररोज
निषद् स्त्री० यज्ञदीक्षा (२) यज्ञकर्मनी देवता वगेरेनु निरूपण करनार कृति
निषध पु० जुओ पृ० ६१२
निषंगिन् वि० आसक्त; वळगेलु (२) भाथावाळु (३) तरवारवाळु
निष्प्रचार वि० एक जगाए स्थिर रहेनारु, हालचाल न करनारु

निष्प्रताप वि० तेज के प्रभाव विनानु
निह्राद पु० अवाज, ध्वनि
नीकाश वि० सदृश [मूळ
नीतिबीज न० राजकारण-खटपटनु
नीप न० कदंब वृक्षनु फूल
नीरक्षीरन्यायः जुओ पृ० ६३३
नीराजित वि० प्रकाशित
नील पु० जुओ पृ० ६१२
नू[illegible]त् अ० सम्भवत
नृपनापित-[illegible]न्यायः जुओ पृ० ६३३
नेत्रविष वि० जेनी आंखमा दाहक झेर छे तेवु (ब्राह्मण)
नैमिषारण्य न० जुओ पृ० ६१२
नै[illegible] न० घरवखरीनु कोई पण साधन के वासण

नैषध पु० जुओ पृ० ६१२
नोदयितृ वि० प्रेरनार, धकेलनार
[illegible]न्यायः जुओ पृ० ६३४
न्यङ्कु पु० [illegible] जातनु हरण (२) [illegible] मुनि
न्यङ्ग पु० निशान (२) प्रकार (३) कलंक
न्यच् १ प० नीचे जवु, नमी जवु (२) व्यतीत थवु, घटवु
न्यच् वि० नीचे नमेलु (२) नीच, हलकु, क्षुद्र (३) आखु (४) ऊंडु
न्यंत पु० पश्चिमार्ध, छेडो (२) नजीक-पणु
न्यायनिर्व[illegible] पु० [illegible] ([illegible] वागणाडा)

प

पक्षहत वि० पक्षाघात थयेलु, एक बाजुए लकवो थयेलु
पक्षाहार पु० पखवाडिये एक ज वार भोजन करनारो
पङ्क्ती स्त्री० समूह
पटुघंटा स्त्री० तीव्र अवाजवाळो घंट
पणस्त्री स्त्री० वेश्या [घोडो
पतत्रिन् पु० पक्षी (२) बाण (३)
पतत्रिवर पु० गरुड (पक्षीओमा श्रेष्ठ)
पतञ्जलि पु० जुओ पृ० ६१२
पत्ररथेन्द्रकेतु पु० विष्णु (पत्ररथ–पक्षी, तेमना राजा गरुड जेनी ध्वजामा छे)
पयो[illegible] पु० [illegible]
प[illegible]न्यायः जुओ पृ० ६३४
प[illegible]ती स्त्री० जुओ पृ० ६१२
प[illegible]यति, पयायते ([illegible] प्राप्त थवु)
पयोष्णी स्त्री० जुओ पृ० ६१२
परकल[illegible]भिगमन न० [illegible] साथे व्यभिचार

परगुण पु० बीजानो गुण
परथा अ० अन्यथा, बीजी रीते
परपु[illegible] न० [illegible] फूल
पर[illegible]क वि० [illegible] खाईने जीवनारु (दास) (२) बीजानु [illegible] जनारु [[illegible]
पर[illegible] वि० बीजा[illegible]
पर[illegible] पु० [illegible]
पर[illegible] पु० जुओ पृ० ६१२
प[illegible] पु० [illegible]
परा[illegible] पु० जुओ पृ० ६१२
परि[illegible] वि० [illegible]
परि[illegible]दिन् वि० [illegible]
परि[illegible] पु० [illegible]
परि[illegible] वि० [illegible]
परिम्ला [illegible]
[illegible]
परि[illegible] वि० [illegible]
परि[illegible] वि० [illegible]
परि[illegible] [illegible]

परिडीन न० गोळ कूडाळु करता ऊडवु ते (पक्षीनी ऊडवानी एक रीत)
परितर्कण न० विचारणा; विमर्श
परित्यागिन् वि० परित्याग करनारु (सन्यासी) [सूकवी नाखवु
परिदह् १ प० पूरेपूरु बाळी नाखवु,
परिदिव्, परिदेव् १, १० प० विलाप करवो, शोक करवो
परिपठ् –प्रेरक० भणाववु, शीखववु
परिपणित वि० सोगन लीधेलु, वचन आपेलु [करवु ते
परिपूरण न० भरी काढवु ते, परिपूर्ण
परिपृच्छिक, परिपृष्टिक वि० आग्रह करीने आपे त्यारे ज लेनारु
परिबर्हण न० परिवार (२) मालमता, सामग्री (३) वृद्धि (४) आराधना
परिबाध् १ आ० कनडवु, पीडवु
परिभविन् वि० पराभव-अपमान करनारु (२) अपमान वेठनारु (३) जीतनारु, हरावनारु
परिमर्द पु० दबाववु–कचरवु–छूदवु ते (२) विनाश (३) ईजा करवी ते (४) आलिंगवु ते (५) वापरी नाखवु – भोगवी नाखवु ते
परिमंडल न० गोळ कूडाळु (२) दडो (३) पैडानी नेमि
परिरक्षण न० सरक्षण, जाळवणी (२) वळगी रहेवुं – उल्लघन न करवु ते
परिवर्तक वि० गोळ फरे तेम करतु (२) बदलो करतु (३) गोळ फरतु (४) अत लावतु [पास फरतु
परिवर्त्य वि० वारवार आवतु, आस-
परिवाप पु० मुडन (२) वावणी (३) जलाशय (४) साधनसामग्री (५) परिवार (६) वाणी, पौवा (७) थोभवानु स्थळ
परिवीज् १ आ० पखो नाखवो
परिवेष्टृ पु० पीरसनारो (२) आहुति आपनारो
परिशेष पु० बाकी रहेवु ते (२) अंत; विनाश (३) समाप्ति (४) पुरवणी
परिसंख्या स्त्री० गणतरी (२) सरवाळो, कुल सख्या [जगा
परिस्तूर न० आसरी ने ठाड करेली
परिस्पंद पु० थरकारो, हलनचलन (२) जुओ पृ० २७२
परिस्फुर् ६ प० थरकवु; कपवु
परीक्षित् पु० जुओ पृ० ६१२
परुष्णी स्त्री० जुओ पृ० ६१२
पर्यवस्थातृ पु० विरोधी, सामावाळियो
पर्यश्रुनयन वि० आसु वदरती आखोवाळु
पर्याकुलत्व न० अस्तव्यस्त होवापणु
पर्यागल् १ प० चोमेर गळवु–टपकवु
पर्वकार पु० वेषांतरधारी, बहुरूपी
पर्वसंधि पु० पूनम अने पडवानी सधि
पर्षद्बल पु० परिषदनो सभ्य
पष्ठौही स्त्री० जुवान गाय, बाल-गर्भिणी गाय
पस्त्य न० निवासस्थान, रहेठाण, घर
पस्पश पु० पतजलिना महाभाष्यना प्रथम अध्यायनु प्रथम आह्निक (२) उपोद्घात ('अ-पस्पशा' एटल प्रथम आह्निक वगरनी शब्दविद्या; तेम ज 'अप-स्पशा' एटले जासूस विनानी राजविद्या)
पकप्रक्षालनन्यायः जुओ पृ० ६३४
पंकयति प० (कादववाळु करवु; डहोळु करवु)
पंक्तिदूष पु० जेनी साथे एक पगते जमवा बेसी न शकाय तेवो, पगतने अभडावनारो
पंक्तिशः अ० पक्तिसर
पंगवधन्यायः जुओ पृ० ६३४
पंचजन पु० जुओ पृ० ६१२
पंचतंत्र न० विष्णुशर्मा रचित पाच प्रकरणवाळ नीतिशास्त्र
पंचत्वमाप्, पंचत्वं गम् मरी जवु (पाच महाभूत छूटा पडी जवा)

पंचत्वं नी मारी नाखवु, नाश करवो
पंचनद पु० जुओ पृ० ६१२ [चाल
पंचबिंदुप्रसृत न० नृत्यमा एक प्रकारनी
पंचवटी स्त्री० जुओ पृ० ६१२
पंचष वि० (ब०व०) पाच अथवा छ
पंचसट पु० वच्चे वच्चे वाळनी पाच लट राखीने मूडी नाखेलो
पंचाप्सरस् न० मडकर्णि ऋषिए बनावेलु एक सरोवर
पंचाल पु० जुओ पृ० ६१३
पंचांगविनिर्णय पु० राजनीतिना पाच अग (जुओ पृ० २७७) बराबर छे क नहि तेनो निश्चय
पंजरचालनन्यायः जुओ पृ० ६३४
पंपा स्त्री० जुओ पृ० ६१३
पाकयज्ञ पु० घरमा करातो सादो यज्ञ
पाकशासन पु० इद्र (पाक नामना राक्षसने हणनार)
पादकुंजरलुंठिते वेश्मनि वासिकजागरणम् जुओ पृ० ६३४
पाटलिपुत्र जुओ पृ० ६१३
पाणिनि पु० जुओ पृ० ६१३
पातालमुख न० पाताळना मो जेवो मोटो खाडो
पातित्य न० जातिभ्रष्टता
पात्रबलि प० (पाणी पीवाना वासण तरीके वापरवु)
पात्रसंचार पु० भोजन-समारभ वखते वासणो मूकवा ते
पादज पु० शूद्र
पादरक्ष. पु०ब०व० रणागणमा हाथीना पगनु रक्षण करता सशस्त्र सैनिको
पादाष्ठील पु० पगनो गूडो – नळो
पानप वि० दारूडियु
पापक पु० पापी माणस (२) अनिष्ट असर करनार ग्रह [जन्मेलु
पापवंश वि० भ्रष्ट – पापी कुळमा
पारवर्ग्य वि० शत्रुपक्षनु
पारशवी स्त्री० शूद्र स्त्रीथी थयेली ब्राह्मणनी पुत्री
पारश्वधिकराम पु० परशुराम [पुत्र
पारसव पु० शूद्र स्त्रीथी थयेलो ब्राह्मणनो
पारसीक पु० जुओ पृ० ६१३
पारियात्र पु० जुओ पृ० ६१३
पारिभद्र पु० देवदारनु वृक्ष (२) मदार वृक्ष (३) कडवो लीमडो
पारिमाण्ड न० वेरावो, परिघ
पारियात्र पु० जुओ पृ० ६१३
पार्थिवपुत्रपौत्र पु० युधिष्ठिर राजा (पार्थिवपुत्र–सूर्य, तेनो पुत्र यम–धर्मराज, तेनो पुत्र)
पार्वती स्त्री० जुओ पृ० ६१३
पार्षत पु० द्रुपद (२) धृष्टद्युम्न
पार्षती स्त्री० द्रौपदी (पार्षत–द्रुपदनी पुत्री) [हाडी
पालिका स्त्री० पाळी–छरी(२)पळी(३)
पावकीय वि० सळगतु, अग्निमय
पावन न० पावन – पवित्र करवु ते
पावित वि० पावन – शुद्ध करेलु
पाशकपीठ न० जुगार खेलवानु घर के मेज
पाशुपाल्य न० पशु पाळवा-उछेरवा ते
पांक्तेय वि० भोजन वखते एक ज पक्तिमा बेसवा योग्य
पांचालेय पु० द्रौपदीनो पुत्र
पांचाल्य पु० द्रुपद (पाचालोनो राजा)
पांडु पु० जुओ पृ० ६१३
पांडुसोपाक पु० ते नामे एक मिश्र जाति
पांड्य पु० जुओ पृ० ६१३
पांथदुर्गा स्त्री० रस्ता उपरनी देवता
पांसुविकर्षण न० जमीन उपर थतु मुष्टियुद्ध, कुस्ती-दगल (२) रेतीमा रमवु ते
पिचंड पु०, न० उदर, पेट
पितृमेध पु० पितृओने उद्देशीने करवामा आवतो यज्ञ, पितृतर्पण [पित्तक्षोभ
पित्तभेद पु० पित्त धातुनी विकृति,

पिपीलिकागतिन्यायः जुओ पृ० ६३४
पिशग वि० पीगळो रग
पिशुन पु० चाडियो, निंदाखोर (२) नारद (३) कागडो
पिष्टपेषणन्यायः जुओ पृ० ६३४
पिष्टातक पु० अबील, सुगधी चूर्ण
पीठमर्दिका स्त्री० नायिकाने तेना प्रेमीनो सग प्राप्त करवामा मदद करनार सखी
पीलु पु० परमाणु (२) बाण (३) हाथी (४) ताडनु थड (५) ताडनु झुड (६) पीलुनु झाड
पुटीकृ पडियानो आकार बनाववो; सपुटनो आकार बनाववो
पुण्यक न० स्त्री पतिनो प्रेम जाळवी राखवा तथा पुत्र मेळववा जे व्रत करे छे ते [प्रकारनी रीत
पुनर्डीन न० पक्षीनी ऊडवानी एक
पुरमार्ग पु० नगरनो रस्तो - मार्ग
पुरंदरक्ष्माधर पु० महेंद्र पर्वत (जुओ पृ० ६१८)
पुरु पु० जुओ पृ० ६१३
पुरुषपुर न० जुओ पृ० ६१३
पुरुषशीर्षक पु० चोरनु एक साधन (भीतमा पाडेला बाकामा खोसवानु बनावटी माथु)
पुरूरवस् पु० जुओ पृ० ६१३
पुरोचन पु० जुओ पृ० ६१३
पुलस्त्य पु० जुओ पृ० ६१३
पुलिंददेश पु० जुओ पृ० ६१३
पुष्टलगुडन्यायः जुओ पृ० ६३४
पुष्पदंत पु० शिवनो एक गण (२) महिम्नस्तोत्रनो कर्ता (३) वायव्य खूणानो दिग्गज [-वीटण
पुस्तकास्तरण न० हस्तलिखित पुस्तकनु
पुस्तिकापूलिक पु० हस्तप्रतोनो सग्रह
पुंगवकेतु पु० शकर (ध्वजमा वृषभवाळा)
पुंड्रदेश पु० जुओ पृ० ६१३

पुंनाग पु० मनुष्योमा हाथी – श्रेष्ठ एवो ते (२) सफेद हाथी (३) सफेद कमळ (४) नागकेशर वृक्ष (५) एक वृक्ष (६) जायफळ
पूर्वपितामह पु० पूर्वज [(२५मु)
पूर्वप्रोष्ठपदा स्त्री० पूर्वभाद्रपदा नक्षत्र
पूर्वसंध्या स्त्री० प्रभात; परोढ
पृथग्धर्मिन् वि० द्वैतवादी
पेषीकृ दळवु, कचरवु
पौनर्भव पु० पुनर्लग्न करेली विधवानो पुत्र (२) स्त्रीनो बीजो पति [ते
प्रकांडक पु० थड (२) कोई वर्गनु श्रेष्ठ
प्रक्ष्विद् गुजवु, गाजवु, सुसवाट करवो
प्रघाण पु० घरना दरवाजा आगळनु कमानदार ओरडा जेवु बाधकाम
प्रचषाल न० यज्ञस्तभ उपरनो चक्र जेवो शणगार [पडी जवु ते
प्रच्युति स्त्री० च्यववु–गबडवु ते; –माथी
प्रणयवत् वि० प्रेमपूर्ण (२) झखतु
प्रतर्क् १० उ० अनुमान करवु (२) धारवु, मानवु [शोक
प्रतिकामिनी स्त्री० प्रेममा हरीफ स्त्री,
प्रतिकारविधान न० दवा वगेरे उपचार
प्रतिपक्षकामिनी, प्रतिपक्षलक्ष्मी स्त्री० सपत्नी, शोक
प्रतिपत्तिपराङ्मुख वि० हठीलु, जक्की
प्रतिपत्तिविशारद वि० चतुर, होशियार
प्रतिपल्लव पु० सामे आवेली – वधु लबाती डाळी
प्रतिपाण पु० होड, सामी होड
प्रतिपात्रम् अ० दरेक पात्रना सबधमा
प्रतिप्रास्थानिक वि० अध्वर्युना मददनीशनु
प्रतिबंधृता स्त्री० खडन, विरोध
प्रतिबंधु पु० समान दरज्जानो माणस
प्रतिब्रू २ उ० जवाब आपवो
प्रतिमाचंद्र पु० चद्रनु प्रतिबिंब
प्रतिमात्रा स्त्री० माया-प्रयोगनी सामेनो (तेना निवारण माटेनो) माया-प्रयोग

प्रतिवप् १ प० वाववु (२) रोपवु (३) जडवु; सखत चोटाडवु
प्रतिविघातव्यम् 'सावचेती राखवी जोइए'; 'सामां पगला लेवा जोईए'
प्रतिशाखा स्त्री० डाळीमाथी फूटेली डाळी, उपशाखा
प्रतिष्ठान न० जुओ पृ० ६१३
प्रतीप पु० दुश्मन, विरोधी (२) शंतनु राजाना पिता, भीष्मना दादा
प्रत्यधिदेवता स्त्री० सामे के नजीक रहेती कुळदेवी
प्रत्यरि पु० बरोबरियो शत्रु (२) जन्म-नक्षत्रथी ९मु, १४मु के २३मु नक्षत्र (३) स्वनक्षत्रथी दिननक्षत्र सुधीनी संख्याने नवे भागता पाचमी तारा
प्रत्याम्नाय पु० प्रतिनिधि, अवेजी
प्रत्याश्वास पु० श्वास लेवो ते, विश्रांति
प्रद्युम्न पु० जुओ पृ० ६१४
प्रद्योत पु० जुओ पृ० ६१४
प्रधानमल्लनिबर्हणन्यायः जुओ पृ० ६३४
प्रपंचन न० निरूपण,. विस्तार
प्रपंचयति प० (विस्तारथी समजाववु)
प्रब्रू २ उ० जाहेर करवु (२) पोकारवु (३) कहेवु (४) शीखववु (५) प्रशंसा करवी
प्रभाववत् वि० शक्तिशाळी (२) भव्य
प्रमहस् वि० महा तेजस्वी के प्रभाववाळु
प्रमिला स्त्री० जुओ पृष्ठ ६१४
प्रमृष्टि स्त्री० लूछवु–माजवु–साफ करवु ते
प्रयाग न० जुओ पृ० ६१४
प्रलंबबाहु वि० नीचेनी बाजु लटकता हाथवाळु [पेट
प्रवण न० सीधो ढोळाव (२) कराड (३)
प्रश्नपूर्वकेन अ० परीक्षा पछी
प्रसृष्टा स्त्री० आगळ लबावेली आंगळी (२) लडाईमा एक दाव (आखा शरीरने सकजामा लेवु)
प्रस्फुरिताधर वि० नीचलो होठ कपतो होय तेवु [तेवु
प्रस्रवण पु० जुओ पृ० ६१४
प्रहतमुरज वि० ढोल-मृदंग वागता होय
प्रह्लाद पु० जुओ पृ० ६१४
प्रह्वल् १ प० कंपवु, ध्रूजवु
प्राग्ज्योतिष न० जुओ पृ० ६१४
प्राची स्त्री० पूर्व दिशा
प्राजितृ पु० सारथि [माननारु
प्राज्ञमानिन् वि० पोताने पंडित-डाह्यु
प्रातिकूलिक वि० प्रतिकूळ के विरोधी एवु [मुख्यत्वे
प्राधान्यत. अ० मुख्य मुख्य होय एम,
प्रायश्चेतन न० प्रायश्चित्त
प्रार्च् १ प० प्रशंसा करवी
—प्रेरक० सन्मानवु, पूजवु
प्रार्थनासिद्धि स्त्री० इच्छा पूर्ण थवी ते
प्रियदत्ता स्त्री० पृथ्वी (मान्त्रिक नाम)
प्रीतिच्छेद पु० आनंदनो नाश
प्रैष्य न० नोकरी, चाकरी, दासत्व
प्रोड्डी (प्र+उद्+डी) ऊंचे ऊडवु
प्रोद्दीप्त वि० सळगतु, बळतु
प्रोन्नत वि० शक्तिशाळी, मजबूत
प्लक्ष पु० जुओ पृ० ६१४ [वाळो)
प्लावयितृ वि० पार करावनारु (होडी-

ब

बक पु० जुओ पृ० ६१४
बदरिकाश्रम पु० जुओ पृ० ६१४
बदरीतपोवन न० बदरिकाश्रम पासेनु तपोवन
बधिरकर्णजपन्यायः जुओ पृ० ६३४
बभ्रुवाहन पु० जुओ पृ० ६१४
बल, बलभद्र, बलराम पुं० जुओ पृ० ६१४

बलहंतृ पु० इन्द्र (वल राक्षसने हणनार)
बलि पु० जुओ पृ० ६१४
बलिपुष्ट पु० कागडो
बहिर्वृत्ति स्त्री० बहारनी बाजु; बहारनो देखाव
बाण पु० जुओ पृ० ६१४
बाणासनयंत्र न० एक प्रकारनु धनुष्य (यान्त्रिक करामतथी बाण छोडतु)
बाल्वज वि० वाल्व घासनु बनावेलु (वैश्यनो कदोरो)
बाल्हीक, बाह्लीक पु० जुओ पृ० ६१४
बाहुक पु० जुओ पृ० ६१४
बाहुकंटक न० लडाईनो एक प्रकार (वच्चेथी चीरी नाखवु ते)
बिसकंठिका स्त्री० बगली
बीजवृक्षन्यायः, बीजांकुरन्यायः जुओ पृ० ६३४
बुक्क् १ प०, १० उ० भसवु
बुद्ध पु० जुओ पृ० ६१४
बुद्धिग्राह्य वि० बुद्धिथी अनुभवाय एवु, बुद्धिथी ग्रहण करवा योग्य
बुध पु० जुओ पृ० ६१५
बृहस्पति पु० जुओ पृ० ६१५
बैल्व वि० बीलाना झाडनु
ब्रह्मदूषक वि० वेदने जूठा पाडनारु
ब्रह्मन् पु० जुओ पृ० ६१५
ब्रह्मराक्षस पु० एक प्रकारनु भूत (जे ब्राह्मण परस्त्रीनु तथा ब्राह्मणनी मिलकतनु हरण करे ते मरीने अरण्य के निर्जळ देशमा एवु भूत थाय)
ब्रह्मावर्त पु० जुओ पृ० ६१५
ब्रह्मांजलि पु० वेदपाठनी शरूआतमा तेम ज अते गुरुने हाथ जोडवा ते
ब्राह्मणग्रामन्यायः जुओ पृ० ६३४

भ

भक्षितेऽपि लशुने न शांतो व्याधिः जुओ पृ० ६३४
भगघ्न पु० शकर (भग-आदित्यनी आखो फोडनार)
भट्टार वि० समाननीय; आदरणीय
भरत पु० जुओ पृ० ६१५
भरतवर्ष पु० जुओ पृ० ६१५
भरद्वाज जुओ पृ० ६१५
भरु पु० सुवर्ण, सोनु (२) पति (३) शिव (४) विष्णु
भरुकच्छ पु० जुओ पृ० ६१५
भस्मनि आज्याहुतिः जुओ पृ० ६३४
भागीरथी स्त्री० जुओ पृ० ६१५
भार्योढ वि० परणेलु (पुरुष)
भिक्षुपादप्रसारणन्यायः जुओ पृ० ६३४
भिल्लीचंदनन्यायः जुओ पृ० ६३४
भीम पु० जुओ पृ० ६१६
भीमसेन पु० जुओ पृ० ६१६
भीष्म पु० जुओ पृ० ६१६
भीष्मक पु० जुओ पृ० ६१६
भूमिपति पु० राजा, सम्राट
भूलिंगशकुन पु० पखीनी एक जात (पर्वतमा थती)
भूलिंगशकुनिन्यायः जुओ पृ० ६३२
भूषा स्त्री० आभूषण (२) रत्न
भृगु पु० जुओ पृ० ६१६
भैक्ष्याश्रम पु० सन्यासाश्रम (२) ब्रह्मचर्याश्रम
भोज पु० जुओ पृ० ६१६
भोजपति पु० जुओ पृ० ६१६
भ्रांतिमत् वि० गोळ फरतु (२) भ्रममा पडेलु

म

मगध पु० जुओ पृ० ६१७
मणिपुर न० जुओ पृ० ६१७
मत वि० मानेलु; धारेलु, गणेलु (२) संमान करेलु (३) ध्यान करेलु (४) इच्छेलु (५) समति आपेलु
मत्स्यदेश पु० जुओ पृ० ६१७
मदनकलह पु० मैथुन, सभोग
मदावस्था स्त्री० मद झरवानी स्थिति (२) पीधेली दशा (३) कामोन्मादनी दशा
मद्र पुं० जुओ पृ० ६१७
मधु पु० जुओ पृ० ६१७
मधुपर्किक पु० समानित अतिथिना सत्कार-विधि वखते स्तुतिगान के मगळगान करनारो
मधु पश्यसि दुर्बुद्धे प्रपातं नानुपश्यसि जुओ पृ० ६३४
मधुपुर न० मथुरा
मधुवन न० जुओ पृ० ६१७
मध्यदेश पु० जुओ पृ० ६१७
मनु पु० जुओ पृ० ६१७
मनोवहा स्त्री० हृदयनी मध्यमा रहेली एक नाडी
मय, मयासुर पु० जुओ पृ० ६१७
मरीचि पु० जुओ पृ० ६१७
मर्कटमदिरापानादिन्यायः जुओ पृ० ६३५
मलज, मलद पु० जुओ पृ० ६१७
मलय पु० जुओ पृ० ६१७
मल्लदेश पु० जुओ पृ० ६१७
महाकाल पु० जुओ पृ० ६१८
महाकोसल पु० जुओ पृ० ६१८
महाडीन न० पक्षीनी ऊडवानी एक रीत
महानदी स्त्री० मोटी नदी (२) जुओ [पृ० ६१८
महापथिक वि० राजमार्ग के धोरीमार्ग उपर जकात उघरावनारु (२) मोटी मुसाफरीओ करतु
महास्मृति स्त्री० पडगो अने स्मृति- [ग्रथोनो समूह
महेंद्र पु० जुओ पृ० ६१८
महोदय न० जुओ पृ० ६१८
मंडूकप्लुतिन्यायः जुओ पृ० ६३५
मंदाकिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१८
माकंदी स्त्री० जुओ पृ० ६१८
माघ पु० जुओ पृ० ६१८
माठर पु० व्यास (२) एक ब्राह्मण (३) दारू गाळनारो (४) सूर्यनो एक अनुचर – परिपार्श्विक (५) एक गोत्र
मात्स्यन्यायः जुओ पृ० ६३५
माद्री स्त्री० जुओ पृ० ६१८
माधव पु० जुओ पृ० ६१८
मानस न० जुओ पृ० ६१८
माया स्त्री० जुओ पृ० ६१८
माया, मायापुरी स्त्री० जुओ पृ० ६१८
मायावती स्त्री० जुओ पृ० ६१८
मारीच पु० जुओ पृ० ६१८
मारुति पु० जुओ पृ० ६१८
मालव पु० जुओ पृ० ६१८
मालिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१८
माल्यवत् पु० जुओ पृ० ६१८
माहिषक पु० जुओ पृ० ६१९
माहिष्मती स्त्री० जुओ पृ० ६१९
मिथिला स्त्री० जुओ पृ० ६१९
मीढ्वस् वि० उदार, दानेश्वरी (२) वीर्यस्राव करतु (३) शिव
मुट् १ प०, १० उ० कचरी-छूदी नाखवु (२) मारी नाखवु
मुनिता स्त्री० वानप्रस्थपणु
मुर पु० जुओ पृ० ६१९
मुरारि पु० जुओ पृ० ६१९
मृगराज् पु० सिंह

मेकल पु० जुओ पृ० ६१९
मेघनाद पु० जुओ पृ० ६१९
मेनका स्त्री० जुओ पृ० ६१९
मेना स्त्री० जुओ पृ० ६१९
मेरु पु० जुओ पृ० ६१९
मेषशृंग पु० एक जातनु वृक्ष
मेहन न० मूतरवु ते (२) मूतर (३) पुरुषनी इंद्रिय
मैत्रायण न० सर्व प्रत्ये मित्रभाव
मैत्री स्त्री० मित्रता, निकट संबंध
मैनाक पु० जुओ पृ० ६१९
मोक्षिन् वि० मुमुक्षु
मोहपरायण वि० मोहमा पडेलु, मूढ बनेलु
मोहिनी स्त्री० जुओ पृ० ६१९
म्लानमुख वि० हताश; खिन्न

य

यक्ष्मिन् वि० क्षयरोगी
यजमानशिष्य पु० यज्ञ करनार ब्राह्मणनो [शिष्य
यज्ञपुर न० जुओ पृ० ६१९
यज्ञसंस्तर पु० यज्ञनी ईंटो गोठववी ते
यत् करभस्य पृष्ठे न माति तत् कंठे निबध्यते जुओ पृ० ६३५
यथास्व वि० पोतपोतानु
यदु पु० जुओ पृ० ६१९
ययाति पु० जुओ पृ० ६१९
यः कुरुते स एव भुंक्ते जुओ पृ० ६३५
याचितकमंडनन्यायः जुओ पृ० ६३५
याज्ञवल्क्य पु० जुओ पृ० ६१९
यादृशो यक्षस्तादृशो बलिः जुओ पृ० ६३५
यामुनगिरि पु० जुओ पृ० ६१९
युगंधर पु० जुओ पृ० ६१९
युधाजित् पु० जुओ पृ० ६१९
युधिष्ठिर पु० जुओ पृ० ६२०
युयुत्सु पु० जुओ पृ० ६२०
युयुधान पु० जुओ पृ० ६२०
योगयुक्त वि० योगमा लीन
यौधेय पु० जुओ पृ० ६२०

र

रक्ताशोक पु० लाल रंगनु अशोक पुष्प
रक्षाकरंडक न० जुओ 'रक्षाकरंड' (पृ० ४०३)
रघु पु० जुओ पृ० ६२०
रघुनंदन, रघुनाथ पु० जुओ पृ० ६२०
रघुवंश पु० रघुराजाओनो वंश (२) न० ए नामनु कालिदासकृत महाकाव्य
रथंतर न० साम मंत्र, सामगान (२) 'अहं ब्रह्मास्मि' ए महावाक्य
रसातल न० जुओ पृ० ६२०
रंतिदेव पु० जुओ पृ० ६२०
रंध्रागत न० घोडाना गळानो एक रोग
रागखांडव पु० चोखानी गोळपापडी
राजगृह न० जुओ पृ० ६२०
राजपिंड पु० राजा तरफथी मळती [जिवाई
राजपौरुषिक पु० राजसेवक
राजी स्त्री० पंक्ति, रेखा
राज्यतंत्र न० राजवहीवट, तेनु शास्त्र
राढ पु० सुह्म (जुओ पृ० ६२८)
राधा स्त्री० जुओ पृ० ६२०
राम पु० जुओ पृ० ६२०
रामगिरि पु० जुओ पृ० ६२०
रावण पु० जुओ पृ० ६२०
राशिवर्धन वि० संख्यामा उमेरो करनारु (२) निरुपयोगी, व्यर्थ (ला०)
राहु पु० जुओ पृ० ६२०

रीति स्त्री० स्त्री० रसोत्पत्तिमां उपकारक एवी पदरचना वगेरेनी चार शैलीमानी दरेक (वैदर्भी, गौडी, पाचाली, लाटिका)
रुक्मिणी स्त्री० जुओ पृ० ६२०
रुचक पु० विजोरु (२) कबूतर
रूपज्ञ वि० दृश्य पदार्थो जोई शकनारु
रूपोपजीवन न० सुदर रूप वडे आजीविका मेळववी ते (२) पातळा वस्त्रनी पडदा पाछळ चामडानी आकृतिओथी नाटक देखाडवु ते
रेणुका स्त्री० जुओ पृ० ६२०
रेतज न० सतान
रेवती स्त्री० जुओ पृ० ६२०
रेवा स्त्री० जुओ पृ० ६२१
रैवत, रैवतक पु० जुओ पृ० ६२१
रोहिणी स्त्री० जुओ पृ० ६२१
रोहित पु० जुओ पृ० ६२१
रौहिण पु० चदन वृक्ष(२)वडनु झाड

ल

लक्ष्मण पु० जुओ पृ० ६२१
लक्ष्मणा स्त्री० जुओ पृ० ६२१
लघुमन् ४ आ० तुच्छ मानवु
लट्वाका स्त्री० एक जातनु पक्षी
लव पु० जुओ पृ० ६२१
लंका स्त्री० जुओ पृ० ६२१
लाढ पु० जुओ पृ० ६२१
लाम्य वि० मेळववा योग्य एवु
लावण वि० लवणवाळु
लोकोक्ति स्त्री० कहेवत, उखाणु
लोपामुद्रा स्त्री० जुओ पृ० ६२१
लोमपाद पु० जुओ पृ० ६२१
लोमश पु० जुओ पृ० ६२१
लोहकुंभि स्त्री० लोढानी कढाई
लोहचर्मवत् वि० लोखडना पतराथी मढेलु—ढाकेलु
लौहित्य पु० जुओ पृ० ६२१

व

वचा स्त्री० वज (मूळ)
वज्र पु० जुओ पृ० ६२१
वटे यक्षन्यायः जुओ पृष्ठ ६३५
वडवा स्त्री० जुओ पृ० ६२१
वत्स पु० जुओ पृ० ६२१
वत्सला स्त्री० जुओ पृ० ६२१
वध्यघातकन्यायः जुओ पृ० ६३५
वनसिंह-व्याघ्र-न्यायः जुओ पृ० ६३५
वरमद्य कपोतः श्वो मयूरात् जुओ पृ० ६३५
वराटकान्वेषणे प्रवृत्तश्चितामणि लब्धवान् जुओ पृ० ६३५
वर्तका, वर्तकी स्त्री० एक प्रकारनुं [वटेर पक्षी
वर्षरात्र पु० वर्षाऋतु
वसिष्ठ पु० जुओ पृ० ६२१
वसुदेव पु० जुओ पृ० ६२१
वट पु० घोडो (२) बळदनी [illegible] (३) वाहन (४) जुओ पृ० ४२५
वग पु० जुओ पृ० ६२१
वाङ्निमित्त न० भविष्यकथन ([illegible] करीने रोग अने)
वाट्य पु० जवनी धाणी
वामदेव्य न० एक [illegible] तेनी विद्या (तेमां [illegible])
वामन पु० जुओ पृ० ६२२
वाराणसी स्त्री० जुओ पृ० ६२२

वार्तिका स्त्री० समाचार (२) धंधो-रोजगार
वालि पु० जुओ पृ० ६२२
वाल्मीकि पु० जुओ पृ० ६२२
वासवदत्ता स्त्री० जुओ पृ० ६२२
वासुकि पु० जुओ पृ० ६२२
वाह्लिक, वाह्लीक जुओ पृ० ६२२
विक्रीते करिणि किमंकुशे विवादः जुओ पृ० ६३५
विचित्रवीर्य प० जुओ पृ० ६२२
वितस्ता स्त्री० झेलम नदी [सर्जवु
वितायू १ आ० फेलाववु, विस्तारवु,
विदर्भ पु० जुओ पृ० ६२२
विदिशा पु० जुओ पृ० ६२२
विदुर पु० जुओ पृ० ६२२
विदेहाः पु० व० व० जुओ पृ० ६२३
विद्राण वि० जागतु रहेलु, न ऊंघेलु (२) जगाडेलु (४) हताश, उदास
विधर्मिन् वि० अनृत, असत्य (२) जुदा प्रकारनु
विनता स्त्री० जुओ पृ० ६२३
विनशन न० जुओ पृ० ६२३
विपाश्, विपाशा स्त्री० जुओ पृ० ६२३
विप्रलू चूटवु, तोडवु
विमृश् ६ प० स्पर्शवु, हाथ फेरववो (२) विचारवु (३) परीक्षा करवी
विराज पु० मंदिरनो एक आकार
विराट पु० जुओ पृ० ६२३ [लीधेलु
विरिक्त वि० मलत्याग करेलु, जुलाब
विरोचन पु० जुओ पृ० ६२३
विलिंगस्थ वि० नहि समजवानु एवु, न समजाय तेवु
विशाखा स्त्री० जुओ पृ० ६२३
विशाला स्त्री० जुओ पृ० ६२३
विश्वामित्र पु० जुओ पृ० ६२३
विषकृमिन्यायः जुओ पृ० ६३५
विषमस्थ वि० आपद्ग्रस्त (२) पहोंची न शकाय तेवु
विषवृक्षन्यायः जुओ पृ० ६३५
विहंगमन्यायः जुओ पृ० ६३५
विंध्याटवी स्त्री० जुओ पृ० ६२३
वीचितरंगन्यायः जुओ पृ० ६३५
वीणादंड पु० वीणानो दांडो
वृक्षप्रकंपनन्यायः जुओ पृ० ६३५
वृक्षाधिरूढ पु० वेलो वृक्षने वींटळाय ते रीते स्त्रीए करेलु आलिंगन
वृत्र पु० जुओ पृ० ६२४ [६३५
वृद्धकुमारी-वाक्य(-वर)न्यायः जुओ पृ०
वृद्धभाव पु० वृद्धावस्था [पृ० ६३६
वृद्धिमिष्टवतो मूलमपि ते नष्टम् जुओ
वृषकेतु पु० जुओ पृ० ६२४
वृषपर्वन् पु० जुओ पृ० ६२४
वृष्णि पु० जुओ पृ० ६२४
वेणा, वेणी, वेण्ना, वेण्या स्त्री० जुओ पृ० ६२४
वेदवाद पु० कर्मकांड (२) वेदनी चर्चा
वेन पु० जुओ पृ० ६२४
वैजयंत न० जुओ पृ० ६२४
वैतरणी स्त्री० जुओ पृ० ६२४
वैवस्वत पु० जुओ पृ० ६२४
वैशंपायन पु० जुओ पृ० ६२४
वैशाली स्त्री० जुओ पृ० ६२४
व्यतिपु २ प० भेळववु, मिश्रित करवु
व्याल-नकुल-न्यायः जुओ पृ० ६३६
व्यास पु० जुओ पृ० ६२४
व्रज पु० जुओ पृ० ६२४

श

शकटोर्वी स्त्री० सपाट जमीन
शकस्थान न० जुओ पृ० ६२४
शकुनि पु० जुओ पृ० ६२४
शकुर वि० पाळेलु, पलोटेलु
शकुंतला स्त्री० जुओ पृ० ६२४
शतगुणित वि० सो गणु थई गयेलु

शतद्रु पु० जुओ पृ० ६२४
शतरुद्रिय न० रुद्राध्याय, महाभारतनु एक शिवस्तोत्र
शत्रुघ्न पु० जुओ पृ० ६२५
शफरुक पु० पेटी, पात्र
शबरबल न० पहाडी लोकोनु सैन्य
शब्दादि वि० शब्द जेमा प्रथम छे तेवु (इद्रयोना पाच विषय)
शरपुरुषीयन्यायः जुओ पृ० ६३६
शरयू स्त्री० सरयू नदी
शरवण न० जुओ पृ० ६२५
शराग्नि पु० पात्रीसनी सख्या
शरावती स्त्री० जुओ पृ० ६२५
शर्मिष्ठा स्त्री० जुओ पृ० ६२५
शलभन्यायः जुओ पृ० ६३६
शल्य पु० जुओ पृ० ६२५
शशविषाणन्यायः जुओ पृ० ६३६
शंकराचार्य पु० जुओ पृ० ६२५
शंकुकर्ण वि० अणीदार कानवाळु (२) पु० गधेडो
शंख पु० जुओ पृ० ६२५
शंतनु पु० जुओ पृ० ६२५
शंबर पु० जुओ पृ० ६२५
शाकद्वीप पु०, न० जुओ पृ० ६२५
शाकल पु० जुओ पृ० ६२५
शाक्य पु० जुओ पृ० ६२५
शाखाचद्रन्यायः जुओ पृ० ६३६
शातोदरी स्त्री० पातळी कमरवाळी स्त्री
शारद्वती स्त्री० कृपाचार्यनी पत्नी (कृपी)
शार्दूलविक्रीडित न० वाघनी रमत, वाघनु वर्तन (२) एक छद
शालिवाहन पु० जुओ पृ० ६२५
शालिहोत्र पु० जुओ पृ० ६२५
शाल्मलिद्वीप पु०, न० जुओ पृ० ६२५
शाल्व पु० जुओ पृ० ६२५
शांते कर्मणि वेतालोदयः जुओ पृ० [६३६
शिखंडखंडिका स्त्री० चूडाकरण सस्कार
शिखंडिन् पु० जुओ पृ० ६२५
शिथिलायते आ० (ढीलु–शिथिल थई जवु)
शिबि पु० जुओ पृ० ६२५
शिशुपाल पु० जुओ पृ० ६२६
शीर्षे सर्पो देशातरे वैद्यः जुओ पृ० ६३६
शुक पु० जुओ पृ० ६२६
शुक्र पु० जुओ पृ० ६२६
शूर पु० जुओ पृ० ६२६
शूरसेनाः पु० ब० व० जुओ पृ० ६२६
शूर्पणखा स्त्री० जुओ पृ० ६२६
शृंगवेर जुओ पृ० ६२६
शैब्य पु० जुओ पृ० ६२६
शैवल पु० जुओ पृ० ६२६
शोण पु० जुओ पृ० ६२६
शोणा स्त्री० जुओ पृ० ६२६
शोणितपुर न० जुओ पृ० ६२६
शोधनक पु० फोजदारी अदालतनो अधिकारी
शौनक पु० जुओ पृ० ६२६
श्मशानवाट पु० स्मशाननो वाडो
श्रावण पु० जुओ पृ० ६२६
श्रावस्ती स्त्री० जुओ पृ० ६२६
श्रीपर्वत, श्रीशैल पु० जुओ पृ० ६२६
श्रुतिमंडल न० कानतो पुट (२) सगीतना नादोनु आखु चक्र
श्वश्रूनिर्गच्छोक्तिन्यायः जुओ पृ० ६३६
श्वित्रिन् वि० पतियु

स

सकलवर्ण वि० क अने ल (+ह = कलह) -वाळु, कजियो करतु
सगर पु० जुओ पृ० ६२६
सती स्त्री० जुओ पृ० ६२६
सत्त्वस्थ पु० योगी
सत्यभामा स्त्री० जुओ पृ० ६२७

सत्यवत् पु० जुओ पृ० ६२७
सत्यवती स्त्री० जुओ पृ० ६२७
सत्यव्रत पु० जुओ पृ० ६२७
सत्राजित् पु० जुओ पृ० ६२७
सदानीरा स्त्री० जुओ पृ० ६२७
सन, सनक पु० जुओ पृ० ६२७
सनत् पु० ब्रह्मा [एक
सनत्कुमार पु० ब्रह्माना चार पुत्रोमाना
सनत्सुजात पु० ब्रह्माना सात मानस पुत्रोमाना एक [भवत्' पृ० १८८
सभवत् स० ना०, वि० पु० जुओ 'तत्र-
समज्ञा स्त्री० कीर्ति
समतट पु० जुओ पृ० ६२७ [करवु
समद् (सम्+अद्) खाई जवु; भक्षण
समस्थ वि० सुखी सजोगोमा होय तेवु
समंतपंचक न० जुओ पृ० ६२७
सरयू स्त्री० जुओ पृ० ६२७
सरस्वती स्त्री० जुओ पृ० ६२७
सर्वस्वार पु० एक यज्ञ (जेमा असाध्य रोगथी कटाळेलो यजमान आत्महत्या करे छे)
सहदेव पु० जुओ पृ० ६२७
सह्य पु० जुओ पृ० ६२७
संज्ञा स्त्री० जुओ पृ० ६२७
संडीन न० पक्षीनी ऊडवानी एक रीत
संधि ६ प० सधि करवी
संपातिन् पु० जुओ पृ० ६२७
संपूजन वि० प्रशसा करतु, स्तुति करतु
संयोगविधि पु० जीव अने ब्रह्मनु ऐक्य प्रतिपादन करतु वेदातदर्शन
संवांछ् अभिलाषा राखवी, वाछवु
संशब्द् १० उ० –ने बोलाववु – सबोधवु
संसुप्त वि० सूतेलु, ऊघेलुं
संस्वृ १ आ० दु ख आपवु (मात्र 'सस्वरिषीष्ठा' बीजो पुरुष एक-वचननु रूप जाणमा ,छे)
—प्रेरक० पीडवुं; कनडवु
सात्यकि पु० जुओ पृ० ६२७
साधुता स्त्री०, **साधुत्व** न० सारापणु; पवित्रता
साधुमन् ४ आ० सारु के उत्तम मानवुं
सायण पु० जुओ पृ० ६२७
सारस्वत पु० जुओ पृ० ६२७
साल्व पु० जुओ पृ० ६२७
सावित्री स्त्री० जुओ पृ० ६२७
सांदीपनि पु० जुओ पृ० ६२७
सांब पु० जुओ पृ० ६२८
सिकताकूपवत् जुओ पृ० ६३६
सिकतातैलन्यायः जुओ पृ० ६३६
सिध्मा स्त्री० कोढनो डाघ; रक्त-पित्तनो डाघ (२) दम-श्वासनो रोग
सिंधु पु० जुओ पृ० ६२८
सिंधुसौवीराः पु० ब० व० जुओ पृ० ६२८
सिंहावलोकनन्यायः जुओ पृ० ६३६
सीता स्त्री० जुओ पृ० ६२८
सीरध्वज पु० जुओ पृ० ६२८
सुग्रीव पु० जुओ पृ० ६२८
सुडीनक न० पक्षीनी ऊडवानी एक रीत
सुदामन् पु० जुओ पृ० ६२८
सुनीथ पु० जुओ पृ० ६२८
सुबल पु० जुओ पृ० ६२८
सुभगंमन्य वि० पोतानी जातने भाग्य-शाळी मानतु
सुभगाभिक्षुन्यायः जुओ पृ० ६३६
सुभद्रा स्त्री० जुओ पृ० ६२८
सुमनीभू सुखी – निश्चित थवु
सुमित्रा स्त्री० जुओ पृ० ६२८
सुमेरु पु० जुओ पृ० ६२८
सुरेभ वि० मधुर अवाजवाळु
सुवेल पु० जुओ पृ० ६२८
सुह्माः पु० ब० व० जुओ पृ० ६२८
सूचिकटाहन्यायः जुओ पृ० ६३६
सूचिन् पु० जासुस (२) एक प्रकारनु बाण
सूत्रकर्मविशेषज्ञ पु० वणकर
सेक पु० जुओ पृ० ६२८

सौभांजन पु० सरगवानु झाड
सौराष्ट्र पु० जुओ पृ० ६२८
सौवीर पु० जुओ पृ० ६२८
स्थाणव वि० वृक्षोना थडनु बनतु; वृक्षोना थडमाथी मळतु
स्थालीपुलाकन्यायः जुओ पृ० ६३६
स्थिरकर्मन् वि० उद्यमी, कर्ममां मच्यु रहेतु
स्थूणानिखननन्यायः जुओ पृ० ६३६
स्नाता स्त्री० रजस्वला थईने नाहेली स्त्री
स्पर्शन न० स्पर्शेंद्रिय
स्यमंतक पु० जुओ पृ० ६२८
स्यंदिनी स्त्री० जुओ पृ० ६२८
स्रुघ्न पु० जुओ पृ० ६२८
स्वर्वारवामभ्रू स्त्री० अप्सरा

ह

हनुमत्, हनूमत् पु० जुओ पृ० ६२८
हरिद्वार न० जुओ पृ० ६२८
हरिश्चंद्र पु० जुओ पृ० ६२८
हस्तामलकन्यायः जुओ पृ० ६३६
हुंकार पु०, **हुंकृति** स्त्री० 'हं', 'हं' एवो उद्गार (२) धमकी – पडकारनो उद्गार (३) गर्जना (४) धनुष्यनो टकारव
हुंभा स्त्री० ढोरनु भाभरवु ते
हृदयाविध् वि० हृदय वींधी नाखे तेवु

ગૂજરાત વિદ્યાપીઠનાં કેટલાંક પ્રકાશનો

માણ્ડૂક્યોપનિષદ
મેકોલે કે ગાંધીજી?
મહાવીર સ્વામીનો આચાર ધર્મ
મહાવીર સ્વામીનો સંયમ ધર્મ
દોઢ સદીનો આર્થિક ઇતિહાસ
પ્રાચીન અર્થવિચાર
ગુજરાતીમાં બાળસાહિત્ય
ગુજરાતી-ભીલી વાતચીત
ભાષા વિવેચન
અખંડ ભારતમાં સંસ્કૃતિનાં કેન્દ્રો
ઇતિહાસ સંશોધન
ઇતિહાસની વિભાવના
કવિજીવન
કાવ્ય પરિચય ભા. ૧
કાંતણવિદ્યા
ગુજરાતનો સાંસ્કૃતિક વારસો
દસ્તાવેજો વાચન અને મુશ્કેલીઓ
ધમ્મપદ (નવનીત)
પાશ્ચાત્ય નાટ્યસાહિત્યના સ્વરૂપો
મધર ટેરીઝા
વસતિશિક્ષણ
શીખ ધર્મદર્શન
સમાજજીવન
कन्नड भाषा साहित्य संस्कृति
गांधीजी और कर्णाटक
गुजरातकी हिन्दुस्तानी काव्यधारा